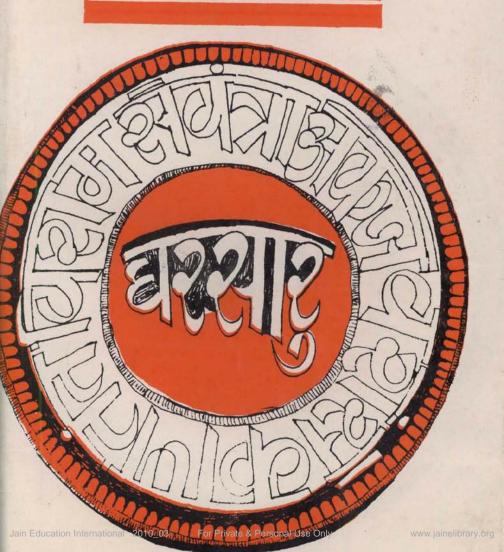
मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

संपादक

जयंत कोटारी



जयंत कोटारी (ज.२८-१-१९३०) अमदावादनी कॉलेजोमां गुजराती भाषासाहित्यना अध्यापक तरीके वर्षो सुधी कार्य करी निवृत्त थया छे. वच्चे गुजराती साहित्य परिषदमां 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)'ना संपादक तरीके (१९८१–१९८४) अने मानाई संपादक तरीके (१९८४–१९८७) कार्य कर्युं.

एमनी बीजी महत्त्वनी कामगीरी ते मोहनलाल दलीचंद देशाई संयोजित 'जैन गूर्जर कविओ'नुं नवसंस्करण. एना सात भाग प्रसिद्ध थई चूक्या छे (१९८६–१९९१) अने आठमो भाग मुद्रणाधीन छे.

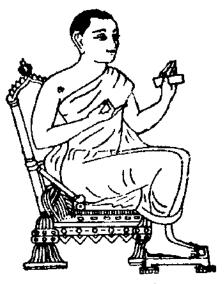
एक ज विषयनी छ मध्यकालीन गुजराती कृतिओने समावती ने एमनो तुलनात्मक अभ्यास रजू करती 'आरामशोभा रासमाळा' (१९८९) एमनुं एक नमूनेदार संपादन छे.

साहित्यना तत्त्वविचार, विवेचन, संशोधन ने आस्वादनी एमनी प्रवृत्ति 'भारतीय काव्यसिद्धांत' (नटुभाई राजपरा साथे, १९६०)थी मांडीने आज सुधी अनवरत चालती रही छे अने आ प्रकारना १५ ग्रंथो एमनी पासेथी मळ्या छे.

१९९४मां पांचमी आवृत्तिमां प्रवेशेल 'भाषापरिचय अने गुजराती भाषानुं स्वरूप' (१९७४) स्नातक कक्षाना शिक्षणनी आवश्यकता पूरी पाडनार अनन्य ग्रंथ बनी रह्यो छे. शाळाकक्षानां व्याकरणोमां पण एमणे पोतीकी सूझथी काम कर्युं छे.

आ उपरात एमणे शैक्षणिक जरूरियातने अनुलक्षीने तेमज बीजां घृणां साहित्यिक संपादनो पण कर्यां छे.

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्पृति संस्कार शिक्षण निधि



श्री हेमचन्द्राचार्य

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सम्यक् प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति ।

योग्य रीते जाणेलो अने योग्य रीते प्रयोजायेलो एक शब्द स्वर्गमां अने पृथ्वीमां इच्छित सर्व आपनार नीवडे छे. पतंजिल

> इदम् अन्धम् तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् । यदि शब्दाहृयं ज्योतिः आसंसारं न दीप्यते ॥

जो समस्त संसारमां शब्द नामे ज्योति प्रकाशे नहीं तो आ त्रिभुवन आखुं गाढ अंधकार रूपे परिणमे.

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

संपादक जयंत कोंटारी

प्रकाशक कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्पृति संस्कार शिक्षण निधि अमदावाद

Madhyakalina Gujarafi Sabdakosa (Medieval Gujarati Dictionary), ed. Jayant Kothari, Pub. Kalikala-Sarvajna Śri Hemcandracarya Janma-Satabdī Smrti Samskara Siksana Nidhi, Ahmedabad, 1995

© जयंत कोठारी, रोहित कोठारी

प्रथम आवृत्ति : जून १९९५

नकल : १०००

किंमत: ह. ३००.००

प्रकाशक :

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधि, लालभाई दलपतभाईनो वंडो, पानकोरनाका, अमदावाद ३८० ००१

विक्रेताओं :

- 9. गूर्जर साहित्य भवन, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००९
- २. आर. आर. शेठनी कंपनी, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००९ तथा शामळदास गांधी मार्ग, मुंबई ४०० ००२
- ३. के. बी. बुकसेलर्स, बालाहनुमान, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८० ००१
- ४. सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतनपोळ, अमदावाद ३८० ००१

लेसर टाइपसेटिंग अने मुद्रणस्थान : निर्मळाबहेन ठाकोरलाल शाह शारदा मुद्रणालय जुम्मा मस्जिद सामे, गांधी मार्ग, अमदावाद ३८०००१

सद्गत भृगुराय अंजारियाने

आ काम करती वखते सतत सामे रह्या ते तमे ज, पोताथीये जलदी राजी न थनारा, विषयने संलग्न सर्व कंई खूंदी वळनारा ने संपूर्णता माटे मध्या करनारा तमे.

आर्थिक सहयोग

- 🕷 श्री प्राकृत जैन विद्याविकास फंड, अमदावाद
- श्री शाहपुरी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ, कोल्हापुर
- 🟶 श्री विश्वनंदीकर जैन संघ, पालडी, अमदावाद
- श्री प्रेमवर्धक घंटाकर्ण महावीरदेव ट्रस्ट, धरणीधर सोसायटी, अमदावाद

प्रकाशकीय निवेदन

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यनी नवमी जन्मशताब्दीनी मंगल स्मृतिमां, पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसूर्योदयसूरीश्वरजी महाराजनी शुभ प्रेरणाधी स्थपायेला आ द्रस्टना माध्यमथी, भारतीय संस्कृतिना अणमोल वारसारूप अनेक ग्रन्थोना प्रकाशन रूपे सम्यग्ज्ञाननी भक्ति करवानो अवसर प्राप्त थतो रहे छे ते द्रस्ट माटे धन्य अनुभव छे. पं. श्री शीलचन्द्रविजयजी गणिनी प्रेरणाथी आपणा साहित्यना तथा आपणी भाषाना नामांकित मूर्धन्य विद्वज्ञनो द्वारा सर्जित अने संशोधित-संपादित प्रकाशनोने मुद्रित करवानुं श्रेय आ द्रस्टने मळतुं रहे छे ते पण गौरवनी वात छे.

आपणा, मध्यकालीन गुर्जर साहित्यना प्रकांड अभ्यासी विद्वान प्रा. श्री जयंतभाई कोठारीए, वर्षोना सूझबूझभर्या परिश्रमना अंते 'मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश' नामें आ एक सुन्दर सन्दर्भग्रंथ तैयार कर्यों छे. ''मध्यकालीन साहित्यना अध्येताओ माटे आ कोश एक मार्गदर्शक दीवादांडीरूप बनी रहे तेम छे, अने तेथी ट्रस्ट द्वारा एनुं प्रकाशन करवा योग्य छे,'' एवी प्रेरणा अमने पं. श्री शीलचन्द्रविजयजी द्वारा प्राप्त थतां ज, अमोए ते प्रेरणाने बधावी लीधी, अने प्रा. जयंतभाईए तथा प्राकृत जैन विद्याविकास फंडना डॉ. के. आर. चन्द्राए अमारी विनंति स्वीकारीने आ प्रकाशननो लाभ अमारा ट्रस्टने आप्यो ते बदल अमो तेओना खूब ऋणी रहीशुं. प्राकृत जैन विद्याविकास फंडे आ ग्रंथना प्रकाशनखर्चमां रू. ३०,०००नुं मातबर योगदान आपेल छे तेनी पण अमे साभार नोंध लईए छीए.

आपणा मूर्धन्य कवि श्री उमाशंकर जोशीए "जे जन्मतां आशिष हेमचन्द्रनी पामी विरागी जिन-साधुओ तणी" एम कहीने गुर्जरी गिरानो अनुबन्ध श्री हेमचन्द्राचार्य साथे जोडी आप्यो छे ए ज गुर्जर साहित्य-गत शब्दोनो कोश श्री हेमचन्द्राचार्यना नाम साथे जोडायेला एक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित थाय त्यारे एक सुभग योगानुयोग सहजपणे रचातो अनुभवाय छे.

आ प्रकाशन माटे विविध धर्मसंस्थाओए आर्थिक सहयोग आप्यो छे ते सौनो हार्दिक आभार मानीए छीए.

आ कोशनो जिज्ञासुओ खूब उपयोग करे तेवी भावना साथे

मार्च, १९९५ लालभाई दलपतभाईनो वंडो पानकोर नाका अमदावाद ३८० ००१ किलकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधिनो द्रस्टीगण

संपादकनुं निवेदन

मध्यकालीन गुजराती साहित्यनी कृतिओ साथे काम पाडवानुं थतुं हतुं त्यारे मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशनी खोट हंमेशां सालती हती. केटलांक मध्यकालीन कृतिसंपादनोमां शब्दकोश छे एनी मदद लेवानो प्रयास हुं करतो हतो. पण एकाद शब्द माटे आम जुदाजुदा ग्रंथोना शब्दकोशो जोवानुं घणुं अगवडभर्युं हतुं. ए श्रम पछीये कशुं हाथमां न आवे एम बने. आ परथी विचार आव्यो के संपादित ग्रंथोमां रहेला शब्दकोशोने संकलित करी लेवानुं तो, ओछामां ओछुं, थवुं जोईए. एनी व्यवस्थित योजना करवानी तो मने अनुकूळता नहोती पण मारा अंगत रसथी अने अंगत उपयोग माटे में मध्यकालीन संपादित कृतिओना शब्दकोशोनां कार्ड कराववानुं शरू कर्युं. ए काम घणुं धीमुं चालतुं केमके केटलाक ग्रंथोमां 'करइ' जेवा सामान्य उच्चारभेदवाळा तेमज आजे जाणीता घणा शब्दो पण शब्दकोशमां समावाया हता ते बाद करीने कार्ड करवा आपवानुं मारे थतुं.

आ काम शरू कर्या पछी एक वखत डॉ. हरिवल्लभ भायाणी साथे मारे वात थई. एमणे आने बदले कृतिओमांथी सीधा ज शब्दो लेवानुं अने प्रथम तबके चौदमी-पंदरमी सदी सुधीनी कृतिओने ज समाववानुं सूचन कर्युं; एमनी पासे आवां केटलांक कार्ड तैयार हतां ते तेओ मने आपशे एम पण कह्युं. मने ए काम मारी शक्ति बहारनुं लाग्युं. कृतिओमां तो अनेक एवा शब्दो पडेला होवाना (ने संपादके जो शब्दकोश कर्यो होय तो एमां समावेश न पामेला होवाना) जेना अर्थो निर्णीत करवानुं अत्यंत कपरुं होयानुं. आरंभकाळनी कृतिओमां तो स्वाभाविक रीते अपभ्रंश शब्दोनुं घणुं भरणुं होय. मारा जेवा प्राकृत-अपभ्रंशथी अनिभन्न माणसनुं एमां शुं गजुं ? अंधारामां अथडावानुं ज थाय, खोवाई जवानुं ज थाय. में कह्युं, "ए काम तो डॉ. भायाणी ज करी शके." तैयार शब्दकोशोमां केटलीक तकलीफो तो होवानी, पण एमां जे-ते ग्रंथना संपादके करेला श्रमनो लाभ मळे अने एने सहारे आगळ वधवानुं सुकर बने.

डॉ. भायाणी मारी साथे संमत थया हता एवं तो नहीं, परंतु एमणे एमनी लाक्षणिक उदार विद्याप्रीतिथी मने मारे मार्गे जवा दीधो. एटलुं ज नहीं, हुं गुजराती साहित्य परिषदना साहित्यकोशना कार्यमांथी परवारवामां हतो त्यारे मे १९८७मां तो एमणे प्राकृत जैन विद्याविकास फंडना मंत्री डॉ. चन्द्रानो प्रस्ताव मारी समक्ष मूक्यो के हुं मारी रिप्तनो मध्यकालीन शब्दकोश तैयार करी आपुं. त्यां सुधीमां तो बहु ओछां पुस्तकोनां कार्ड तैयार थयां हतां ने चकासणीनुं काम तो आरंभायुं ज नहोतुं, परंतु

साहित्यकोशना कार्यमांथी हुं परवारवामां होई हवे आ योजना पाछळ वधु समय आपवानी स्थितिमां हुं हतो तेथी में ए प्रस्ताव होंशथी स्वीकारी लीधो.

प्राप्त शब्दकोशोने केवळ संकलित करी लेवानो आशय तो नहोतो. एक शक्य तेटलो प्रमाणभूत कोश रचवानो आशय हतो. जे-ते संपादके पोताने प्राप्त साधनो ने पोतानी सज्जता तथा समजने आधारे अर्थ आप्या होय. अनुमानथी अर्थ आपवानुं बनी गयुं होय अने क्यांक गेरसमज पण प्रवर्ती होय. आजनी आपणी समज अने आजे प्राप्त साधनथी अर्थोने चकासीए तो ज प्रमाणभूत कोश ऊभो थई शके. अर्थोने त्यारे ज चकासी शकाय ज्यारे शब्दनो ज्यां प्रयोग थयो होय ए स्थान सुधी आपणे पहोंचीए. आयी आ योजनामां एवी मर्यादा पहेलेथी ज स्वीकारी हती के आमां एवा शब्दकोशो ज संकलित करवा जेमां शब्दो वर्णानुक्रमे अपायेला होय अने शब्द कृतिमां जे स्थाने वपरायो होय तेनो निर्देश होय.

बधा शब्दार्थी कंई चकासी शकाय नहीं, चकासवाना होय नहीं, ज्यां शंका जाय त्यां ज चकासी शकाय. पण चकासीने सुधारवा पडे एवा शब्दार्थों धार्या करतां घणा वधारे नीकळ्या. डॉ. भायाणीने आ प्रकारना संकलन सामे जे वांधो हतो के एमां साफसूफीनी महेनत वधी पडे ने एना करतां तो कृतिमांथी ज स्वतंत्र रीते कोश करवानुं सुगम पडे एनुं वाजबीपणुं समजाय एवी परिस्थिति सामे आवी. आम छतां में जोयुं के कृतिमां तो शब्दकोशमां न समावायेला होय एवा घणा कूट शब्दो पडेला हता अने शब्दकोशोमां पण विद्वानीए घणे स्थाने, हुं सहेलाईथी ज्यां पहोंची शक्यों न होत एवा अर्थो निर्णीत करी आपेला हता. चकासवा पडे एवां घणां स्थानो मळवा छतां मने जे तैयार सामग्री मळती हती ए ओछी न हती अने स्वतंत्र रीते कोश करवानुं काम तो आधी अनेकगणुं महेनतभर्युं बनी गयुं होत, मारा गजा बहारनुं बनी गयुं होते ए प्रतीति तो मारी छेवटे रही ज.

कृतिमांथी सीधा शब्दो लईने तैयार करेला शब्दकोशनुं महत्त्व स्वयंस्पष्ट छे. एनुं स्थान आ संकलित कोश न ज लई शके. पण ए कदाच एक व्यक्तिनुं काम न होई शके, ए एक व्यवस्थित विभाग द्वारा ज वधारे सारी रीते थई शके. एमां पण डॉ. भायाणीए विचार्युं हतुं तेम बारमी सदीथी सैकावार जवानुं ज ठीक पडे. मने तो एम लागे छे के पहेलां एक-एक कृतिना विस्तृत ने सर्वग्राही कोशो तैयार करवा जोईए. 'षडावश्यक बालावबोध' के 'विमलप्रबंध' जेवी कृतिओना केटलाबधा लाक्षणिक मध्यकालीन शब्दो त्यां आपेला शब्दकोशनी बहार रह्या छे! आवी एक कृतिनो संपूर्ण शब्दकोश पण श्रमभर्यो प्रकल्प बनी रहे.

पण आपणी पासे डॉ. भायाणीए एमनां संपादनोमां आपेला अने प्राच्य विद्यामंदिरनी

ग्रंथमाळामां डॉ. सांडेसराना शब्दकोशो छे ज. डॉ. भायाणीनी प्रमाणभूतता तो अनन्य जेवी छे. आधार विना के अटकळे ए कशुं न आपे. डॉ. सांडेसराए पण पोतानी सघळी सज्जता कामे लगाडीने ने प्रमाणमां विस्तृत शब्दकोशो आपेला छे. 'गुर्जर रासावली'मां मधुसूदन मोदीए पण केवो मोटो शब्दकोश आपेलो छे! आ बधुं अंके करी लेवा जेवुं खरुं ज. आ सामग्री आमतेम वेरविखेर पडी रहे तेना करतां आवा कोश रूपे संकलित थाय त्यारे ज एनी खरी उपयोगिता सिद्ध थाय. आ कोशनी आ एक सार्थकता छे.

आम आ कोश पासे केटलीक उत्तम सामग्री आवी छे अने चकासवा-सुधारवानी मोटी कामगीरी पण एने करवानी धई छे. काम करतां-करतां संपादकनी नजर घडाती गई अने शंकानां स्थानो वधारे ने वधारे पकडावा लाग्यां. भेगां थयेलां घणा संदर्भों अने कोशो वगेरेमांथी चावीओ जड़ती गई अने डॉ. प्रबोध पंडित, डॉ. भायाणी अने डॉ. सांडेसरा जेवा आपणा प्रथम पंक्तिना विद्वानोए आपेला अर्थोने छोड़वा-सुधारवानुं पण क्यांक-क्यांक एमनाथी घणा नाना आ संपादकने हाथे बन्युं जे आ कोश-रचना माटे स्वीकारेली पद्धतिनी सार्थकतानी निशानीरूप गणाय. चकासणी अने शुद्धिनी प्रक्रिया केवी झीणवट ने तीव्रताथी चाली छे ए ए परथी समजाशे के मारा पोताना ताजा ज संपादन 'आरामशोभा रासमाळा'ना थोडाक शब्दार्थों पण अहीं सुधारवाना थया छे.

आम थतां कोशनुं काम संकलन करतां वधारे तो संशोधननुं बनी गयुं. केटलीक वार तो एकएक शब्द माटे अनेक साधनों फंफोसवानां थयां. डॉ. भायाणी मने सतत थोडोक वारता रह्या. केटलाक शब्दो पाछळ महेनत करवी वृथा हती एम ए सूचवता रह्या, परंतु हाथवगां साधनोमां फरी वळवानो लोभ हुं खाळी शक्यो नहीं, भले केटलीक वार एनुं परिणाम शून्य ज आव्युं. संपादकीय कामगीरी आम विस्तरती गई तेम मारो श्रम वधतो गयो अने समय लंबातो गयो. एक वर्षमां जे कार्य करवा धार्युं हतुं एने सात वरस थयां ! केटला कलाको में आ कोशरचना पाछळ आप्या छे तेनो तो कोई हिसाब ज नथी. केटलीक वार तो दिवसना आठदश कलाक पण कोशना काम पाछळ मंड्यो रह्यो छुं. पण मने एनो थाक कदी वरतायो नथी. ऊलटुं, मध्यकालीन शब्दोनी दुनियाने में आश्चर्यवत् जोई छे ने एनी गलीकूंचीओमां भटकवानो में आनंद माण्यो छे. मारे माटे तो मारा कामनुं आ ज खरुं वळतर बनी रह्यं छे.

एक संशोधित ने शक्य तेटलो प्रमाणभूत कोश आपी शक्यानो मने उमंग छे. मारी जिंदगीनुं आ एक मोटुं अने वधु टकाउ काम हुं गणुं छुं. छतां मारा कामने मर्यादाओ वळगेली छे ए हुं समजुं छुं. डॉ. भायाणीनी जेवी नजर पहोंचे तेवी मारी न ज पहोंचे. भ्रष्ट पाठ पकडायो न होय, अर्थ बराबर न होवानी शंका ज न गई होय के में सुधारेला

अर्थोमां पण सरतचूक के गेरसमज काम करी गई होय. मारी सजता अने समजनी मर्यादाओं आ कोशरचनामां भाग भजवे ज. एटले आ कोशमां पण केटलुंक वकासणीपात्र होवानुं अने विद्वानो एवां स्थानोनी चर्चा करशे तो आपणा मध्यकालीन शब्दार्थज्ञानमां निःशंक वधारो यशे तेमज भविष्यना आधीये सध्यर कोश माटेनो मार्ग रचातो जशे.

संशोधनात्मक कोशरचना जेवुं आवुं मोटुं काम अनेक प्रकारनां साधन, सगवड अने सहाय विना न थई शके. ए पूरां पाडनार सौनो हुं ऋणी छुं. एमां सौथी मोटुं ऋण डॉ. भायाणीनुं छे. डॉ. भायाणी होय नहीं ने आ अने आवी कोश होय नहीं. एमणे प्राकृत जैन विद्याविकास फंडने आ कोशना प्रकाशनने माटे भलामण करी अने पछीथी पण सतत मार्गदर्शन-मदद पूरां पाड्यां. कोशनुं काम व्यवस्थित शरू करतां पहेलां एमां कया प्रकारना शब्दो समाववा ए में एमने पूछीने ज नकी कर्युं अने पछी मारी संघळी मथामण पछी कूट रहेला शब्दोना अर्थ माटेये वारंवार दोडी गयो एमनी पासे ज. आ छेल्लो कचरो हतो अने एमांथी सार शोधवानुं मुश्केल हतुं (आवा शब्दो एमना हाथमां आववाथी ज हुं कंईक वृथा श्रम करी रह्यो छुं एम डॉ. भायाणी मानता थया हता), पण बे स्थाने पण डॉ. भायाणी पासेथी प्रकाश सांपडतो हतो ए मारे माटे घणो मूल्यवान हतो. एक शब्दनो पण निश्चित रूपे साचो अर्थ हाथमां आवे एनो मने रोमांच पण हतो. मनमां तो एवं थतुं के कोशना हजु घणा शब्दो पर डॉ. भायाणीनी नजर पड़े तो केवं सारुं ! पण, एमना अत्यंत प्रेमोत्साहभर्या सहकार छतां, मने एमनो वध् समय लेवानो हंमेशां संकोच रह्यो. जे शब्दो हुं एमने तपासवा आपतो ए पण एमने एम कहीने आपतो के तमे बहु श्रम न लेशो, सहजपणे सूझे ए ज नोंधशो. आन छतां ए घणी वार संदर्भों, आधारो पण पूरा पाडता. पाछळथी कंई याद आवे के हाथमां आवे तो तरत फोनथी जणावे. हुं पण चालु कामे कंई मूंझवण ऊभी थाय तो एमने फोनथी ज पूछी लउं. आ कोशकार्यमां डॉ. भायाणीनां हंफाळो साथ ने शीळी छाया में हंमेशां अनुभव्यां छे. अंते, आ ग्रंथनुं प्रोत्साहक पुरोवचन लखी आपीने एमणे एमना सद्भावने जाणे शग चडावी छे.

शब्दार्थ परत्वे अन्य केटलीक व्यक्तिओनो मरद पण मळी छे. मुनिश्री प्रद्युप्निक्ययजीने जैन परंपराना शब्दो विशे वारंवार पूछवानुं थयुं अने मुनिश्री शीलचन्द्रविजयजी समक्ष पण पण थोडाक शब्दो मूकेला. डॉ. भोगीलाल सांडेसराने मारी 'आरामशोभा रासमाळा' जोवानी थतां एमणे केटलाक शब्दो विशे नोंध लखी मोकलेली ते आ कोशमां मने काममां आवी ! उकेल मागता शब्दो विशे जे-ते क्षेत्रना अनुभवी ने जाणकार मित्रो-स्नेहीओ साथे तक मळ्ये गोष्ठी करी छे. यज्ञविधिना बेएक शब्दो श्री शरद पंडिते आबाद खुझा करी आपेला एनुं सुखद स्मरण अत्यारे थाय छे.

पण आवा बधा प्रसंगो कई अत्यारे याद न आवे. टीपेटीपे सरोवर भराय एवं आ कोशरचनामां थयुं छे. आ सौ प्रत्ये हुं ऊंडी कृतज्ञता अनुभवुं हुं.

एवी ज कृतज्ञता हुं में जे शब्दकोशो वगेरे साधनोनो आ कोश रचवा माटे उपयोग कर्यो छे एमना निर्माताओ प्रत्ये पण अनुभवुं छुं. आ कोशने साधार बनाववामां एमनो फाळो घणो छे.

अने जेमना ग्रंथोनी शब्दार्थसामग्री अहीं लीघी छे एमने केम भुलाय ? एमना खभा पर तो हुं ऊभो छुं.

आ ग्रंथनां घणांखरां कार्ड अने ग्रेसकॉपी दीति शाहे, एक वाणिज्यना विद्यार्थी पासे सहेलाईथी आशा न राखी शकाय एवी चोकसाईथी अने एवा रसथी तैयार करी आप्यां छे. कांतिमाई शाह, कीर्तिदा जोशी, नीता कोठारी, लिप कोठारी, गामाजी ठाकोर वगेरे केटलाके पण प्रसंगोपात आ कोशना काममां हाथ बटाव्यो छे. आ प्रकारनी स्नेहमावभरी सेवा मेळववा माटे हुं मारी जातने सद्भागी गणुं छुं.

आवा संदर्भग्रंथना निर्माणने ग्रंथालयो ने ग्रंथपालोनी कृपा विना केम चाले ? श्रीमती सद्गुणा सी. यु. आर्ट्स कॉलेज ना आचार्यश्रीओ अने ग्रंथपालिका श्री मृदुलाबहेन महेताए ग्रंथालय मारे माटे हंमेशां खुल्लुं राख्युं. ने एवं ज जी. एल. एस. आर्ट्स कॉलेजना आचार्य श्री मधुसूदन बक्षी तथा ग्रंथपाल श्री भोईवालाए कर्युं. आमणे कोईए मने विरल पुस्तको आपतां पण संकोच न अनुभव्यो ने मारे जेटलो समय राखवां पडे एटलो समय राखवा दीधां. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरनुं ग्रंथालय तो संशोधको-विद्वानो माटेनुं ज ग्रंथालय छे. एनी उदार व्यवस्थानो में भरपूर लाभ उठाव्यो छे. गाभाजी ठाकोर मारफत गुजरात युनिवर्सिटीना पण अदेय विभागनां पुस्तको मने प्राप्य बन्यां. आटला लांबा समय सुधी चालेलुं कोशकार्य ग्रंथालयोनी आ उदार मदद न मळी होत तो केवी रीते चाल्युं होत एवो विचार सहेजे आवे छे अने ह्वय अत्यंत आभारवश बनी जाय छे. विद्याग्रीति अने विश्वासनुं आ परिणाम हतुं एम हुं समजुं छुं.

आ कोशनी योजना मने सोंपनार प्राकृत जैन विद्याविकास फंड अने एना मंत्री डॉ. के. आर. चन्द्रा, एने माटे प्रारंभिक आर्थिक जोगवाई पूरी पाडनार कस्तूरभाई लालभाई ट्रस्ट, एक तबक्रे एना प्रकाशनमां रस बतावनार शारदाबहेन चीमनभाई एज्युकेशन रिसर्च सेन्टर तथा एना नियामक डॉ. जितेन्द्र शाह, अने छेवटे ए मोटी जवाबदारी पोताने माथे लेनार किलकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम शताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधि तथा एमां प्रेरक बननार मुनिश्री शीलचन्द्रविजयगणी – आ सीनो हुं खरे ज उपकारवश छुं. एमणे मने एक उत्तम विद्याकार्य करवानी ने एने जाहेरमां

मुकवानी तक पूरी पाड़ी छे. आवा ग्रंथनुं छापकाम पण धणी सुझ, चीवट अने महेनत मागे. शारदा मुद्रणालय (लेसर विभाग)ना रोहित कोठारीए अंगतभावथी सधन, सुंदर टाइपसेटिंग ने ले-आउट करी आप्या ने भाग्ये ज भूल होय एवां प्रफ मारा सुधी पहोंचाड्यां ए एक विरत अनुभव छे ने रोहित मारी पुत्र होवाथी हूं एनो उल्लेख न करुं तो हुं नगुणो कहेवाउं. प्रेसने तो मारी मांदगीने कारणे, थयेलुं कम्पोझ घणो समय साचवी राखवानुं पण थयुं.

आजुबाजू तैयार थयेलां कार्डनां बॉक्स, जेमांथी शब्दो लेवामां आव्या होय ए पुस्तको अने शब्दकोशो तथा अन्य संदर्भग्रंथोनो पथारो करी घरमां कलाको सुधी बेसी रहेनार मने सहन करी लेनार स्वजनोना स्नेहने पण दाद आपवी ज जोईए ने ?

आ कोशरचनाए, आम, अनेक रीतना समृद्ध अनुभवनुं भाशुं पूरुं पाड्युं छे. मारी विद्यायात्रामां - अने जीवनयात्रामां - पण ए हंमेश प्रेरकपोषक बनी रहेशे -बनी रही !

२० मार्च, १९९५

जयंत कोटारी

एक नूतन शिखरनुं सफळ आरोहण

मित्र जयंत कोठारी एक पीढ अने खडतल पर्वतारोहक छै. तेमनी अत्यारनी कृश काया अने कांईक डगमग चाल जोईने मारुं आवुं विधान वांचतां 'तमारी मित तो ठेकाणे छे ने ?' एवो प्रश्न केटलाक जरूर करे. पण जयंतभाईए 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)' अने 'जैन गूर्जर किवओ'नुं नक्संस्करण — एवां बे उन्नत शिखरो सर कर्या पछी हवे आ त्रीजुं शिखर पण सर कर्युं छे — नानीमोटी टूंकोनुं तेमनुं आरोहण तो ते साथे चालु ज होय छे — ते जोतां मारा विधाननी सार्थकता अवश्य प्रतीत थशे.

मने याद छे तें प्रमाणे एक वार अमारी वधे जूनी गुजरातीनो शब्दकोश तैयार करवो घणो जरूरी छे एवी वात थयेली. पण सातसीएक वरसना गाळानी हजारो कृतिओमांथी शब्दसंचय करवानुं भगीरय काम तो जो आपणी पासे जूनी गुजरातीना जाणकारोनुं तेमज कोशविज्ञानना जाणकारोनुं एक जूथ होय, अने कोई मातबर संस्था ए योजना हाथ धरे तो ज पार पड़ी शके ए देखीतुं हतुं. सद्गत विद्वान डॉ. भोगीलाल सांडेसरा द्वारा वडोदरा युनिवर्सिटी तरफथी जे यशस्वी प्राचीन गूर्जर प्रथमाळा संपादित-प्रकाशित करवामां आवी हती, तेनो एक हेतु, पछीथी, ते ग्रंथमाळामां प्रकाशित थयेली कृतिओना महत्त्वना शब्दोनुं संकलन करीने संक्षिप्त प्राचीन गुजराती कोश तैयार करवानो पण हतो एवो मारो ख्याल छे. ते पछी हुं ज्यारे गुजराती कोश तैयार करवानो पण हतो एवो मारो ख्याल छे. ते पछी हुं ज्यारे गुजरात युनिवर्सिटीना भाषाभवन साथे संकळायेलो हतो त्यारे में पण ए दिशामां एक चाळो सद्गत उमाशंकरभाईनी प्रेरणाथी कर्यो हतो, अने वीशपचीश जूनी गुजराती कृतिओमांथी नोंधपात्र शब्दोनो संचय, प्रयोगवाक्योनां उद्धरणो साथे तैयार करवानुं आरंभ्युं हतुं, पण विविध कारणे तेमांथी कशुं नीपजी न शक्युं.

जयंतभाईनी विद्याप्रीति जेटली गाढ, तेटली ज तेमनी दृष्टि पण व्यवहारु. तेमणे अमारी वातचीत दरिमयान कह्युं के जूनी गुजरातीनी अनेक प्रकाशित कृतिओमां अंते महत्त्वना शब्दोनी जे ससंदर्भ, सार्थ सूचिओ आपेली होय छे ते सूचिओने संकलित करवानुं काम उपयोगी अने व्यवहारु छे. थोडाक सहायकोनी मददथी ते धार्या समयमां अवश्य पार पाडी शकाय. एटलुं ज नहीं, ए कामनी पोते शुभारंभ करी दीधो होवानुं पण तेमणे मने जणाव्युं !

आ तो थोडांक वरस पहेलांनी वात. अनेक विद्याकार्यो वसे तेमनुं आ काम पण चालतुं रह्युं, डॉ. चंद्राए प्राकृत जैन विद्याविकास फंड द्वारा जयंतभाईनुं ए काम पुरस्कार्युं, अने साहित्यसंशोधन अने पांडित्य प्रत्ये सतत सक्रिय आदर सेवता अने

[94]

तेना प्रोत्साहन माटे दत्तचित्तं मुनिश्री शीलचंद्रविजयगणिना अनन्य सद्भावने परिणामे हवे ए कोश अध्येताओना करकमळमां पण आवे छे.

जयंतभाईए मात्र शब्दसूचिओनुं संकलन ज नथी कर्युं. एम करे तो जयंतभाई शाना ? तेमणे ज्यांज्यां अर्थ वगेरे बाबत शंकास्पद जणाई त्यांत्यां चोकसाई अने शुद्धि करी छे, अने ते माटे अनेक कोशो उथलाव्या छे, अनेक मूळ कृतिओ के संलग्न कृतिओने तपासीने यथाशक्य प्रामाण्य साधवानी मथामण करी छे. आ कोशथी मूळ कृतिओने समजवामां सहाय मळशे, ते उपरांत घणी अर्थघटननी गूंचो पण ककलशे, अने तुलनात्मक सामग्री गुजराती शब्दोना इतिहास माटे पण सहायभूत बनशे. स्वास्थ्य अत्यंत खखडी गयुं हतुं, कार्यशक्ति लुप्तप्राय धवानां डरामणां एंघाण वरतातां हतां, ते बधा सामे टक्कर झीलीने दृढ संकल्पबळे आवा कोशनुं परिश्रमसाध्य काम पार पाडवा माटे 'धन्यवाद' शब्द तो घणो मोळो लागे. पण शब्दप्रयोग हीरो बने के कथीर तेनो आधार तो प्रयोजकनी भावना पर ज होय छे. जयंतभाईए जे नानो छोड उछेर्यो छे तेमांथी आगळ जतां वृक्ष बने एवी आशा अने श्रद्धा आपणे केम न राखीए ? १ मार्च १९९५

न वीसरवा जेवो वारसो

बारमी सदीथी ओगणीसमी सदी पूर्वार्ध सुधीनुं गुजराती साहित्य, जेने आपणे प्राचीन के मध्यकालीन गुजराती साहित्य तरीके ओळखीए छीए ए आपणो एक न वीसरवा जेवो, मूल्यवंतो वारसो छे. आम कहेवानुं प्राप्त धाय छे ते एटला माटे के ए साहित्य आपणे माटे हवे केटलुं प्रस्तुत रह्युं छे ए विशे आपणने शंका छे अने शाळा-महाशाळाना आपणा अभ्यासक्रमोमां एनुं स्थान घटतुं जई रह्युं छे. मध्यकालीन साहित्य एटले भक्तिवैराग्यनुं गाणुं अने ऊछरती पेढीने एना पाठ भणाववानुं औचित्य केटलुं एवो प्रश्न करवामां आवे छे अने महाशाळानी कक्षाए पण एना अभ्यासनी सार्थकता आपणने झाझी वरताती नथी. शाळाकक्षानां पाठ्यपुस्तकामां मध्यकालीन कृतिओनुं प्रतिनिधित्व अत्यारे चारछ कृतिओ पूरतुं – पाठ्यपुस्तकामां पांचमा-छञ्ज भाग जेटलुं थई गयुं छे अने गुजरात युनिवर्सिटीना द्वितीय वर्ष बी.ए.ना मध्यकालीन गुजराती साहित्यना प्रश्नपत्रमां हमणां ज नर्मदयुगने जोडी दईने मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासने पांखो बनावी देवामां आव्यो छे.

पाश्चात्य प्रजाना संपर्क पछी, आपणने एवं लागे छे के, आपणां जीवन अने साहित्यनी दिशा एटलीबधी बदलाई गई छे के आपणे पूर्वकाळधी जाणे विच्छिन्न धई गया छीए. आपणी रहेणीकरणी, आपणां साधनसगवड, आपणां विश्वासो-मान्यताओ, आपणां ज्ञानविज्ञान, आपणां तंत्रो-संस्थाओ — आ बधांमां क्रान्तिकारक परिवर्तन आव्यां छे अने आपणा साहित्ये जुदां ज आदर्शों, प्रयोजनो अने रचनारीतिओ धारण कर्यां छे. पूर्वकाळना साहित्यमां रस लेवानुं, तेथी, आपणे माटे बहु ओछुं शक्य रह्यं छे अने ए साहित्यप्रणालिका आजे आपणने कंई काममां आवी शके एवं पण आपणने खास देखातुं नथी. मध्यकालीन साहित्य धर्मना संकुचित वाडामां बंधायेलुं छे — जीवननी विशाळता एमां व्यक्त थती जणाती नथी, ए परंपरानिष्ठ छे — एमां मौलिकतानो अनुभव आपणने खास थतो नथी, ए हेतुलक्षी छे — एमां कळासर्जननी स्वायत्तता प्रतीत थती नथी.

ए वात साची छे के मध्यकालीन साहित्य बहुधा कंईक ने कंईक धार्मिक-सांप्रदायिक संदर्भ लईने आवे छे. आनुं कारण ए छे के मध्यकाळमां धार्मिक-सांप्रदायिक संस्थाओए साहित्यने आश्रय आप्यो छे अने वधारे अगत्यनुंशो ए छे के मध्यकाळमां प्रजाजीवन धर्मसंप्रदायबद्ध हतुं. केटलीक वार जैन साहित्यने ज सांप्रदायिकतानी छाप लगाववामां आवे छे, जाणे के जैनेतर साहित्यमां सांप्रदायिकता न होय. आ यधार्थ दर्शन नथी. ब्राह्मणधर्म के हिन्दुधर्मनां तत्त्वो विशाळ जनसमाजमां फेलायेलां छे अने इतर प्रजावगींनेये

एटलांबधां परिचित छे के एमां सांप्रदायिकता भासती नथी. जैनधर्मीओए पण एमांनुं केटलुंक स्वीकारी लीधुं छे. त्यारे जैन धर्मनां तत्त्वो एटलां अन्यपरिचित नथी. नवकारमंत्रनो महिमा, नवपदपूजा, दानमहिमा, कर्मवाद, दीक्षा वगेरेमां सांप्रदायिकता छे, तो अवतारवाद, अद्वैतवाद, यज्ञयागादि कर्मो, कृष्ण-शिव-शक्तिभिक्त, वर्णाश्रमधर्म वगेरेमां सांप्रदायिकता नथी एम केम-कहेवाय ? शामळनी कौतुकरसप्रधान लोकवार्ताओमां पण आवी रेखाओ तो जड्यानी. हिंदु संस्कार बहुमती संस्कार छे, एनाथी अलिप्त बीजा प्रजावर्गो भाग्ये ज रही शके. त्यारे जैन, मुस्लिम, ख्रिस्ती वगेरे लघुमती संस्कार छे. ए अलग पडी जवाना अने तथी एमां सांप्रदायिकता सहेजे प्रतीत थवानी. सांप्रदायिकतानुं ओछुंवतुं भारण ए जुदी चीज छे अने सांप्रदायिकताने वटी जती बौद्धिक प्रतिभा अने काव्यशक्ति प्रवर्ते ए पण जुदी बाबत छे. एथी कृतिमां धार्मिक-सांप्रदायिक संस्कारनी भूमिका होवानुं मिथ्या यतुं नथी.

मध्यकाळमां प्रजाजीवन धर्मसंप्रदायबद्ध हतुं एनो अर्थ एवो थतो नथी के ए समयना लोको, मुनशी कहे छे तेम, परलोकपरायण धई गया हता, भक्तिवैराग्यमय जीवन जीवता हता ने ऐहिक जीवनरसो परत्वे अनासक्त हता. प्रजाजीवनना केन्द्रमां धर्म हतो, पण एनी आजुबाजु संसार — एना सर्व रंगो साथे — विस्तरेलो हतो. मध्यकाळमां ज्ञानभक्तिवैराग्यनां गाणां ज मळे छे एवुं थोडुं छे ? आख्यानो, लोकवार्ताओ, रासाओ आदिनुं साहित्य पण विपुल प्रमाणमां मळे छे, जेमां ऐहिक जीवनना घणा रसो व्यक्त थया छे, भले एमां ओछोवत्तो धार्मिक संदर्भ रहेलो होय. अने भक्तिसाहित्य — खास करीने कृष्णभक्तिनुं साहित्य लौकिक मानवभावो — सहज मानवसंवेदनोथी नथी धबकतुं शुं ? मध्यकालीन साहित्य जीवनरसथी अनैभिज्ञ प्रजानुं सर्जन नथी ज, भले एना जीवनादर्शी जुदा होय.

अने आपणुं जीवन पाश्चात्य संस्कृतिने रंगे शुं एटलुंबधुं रंगाई गयुं छे के आपणे मध्यकालीन साहित्य साथे कशो अनुबंध न अनुभवी शकीए ? आकाशवाणी वहेली सवारमां ज (अने पछीथी पण) भजनसंगीत रेलावे छे, लोकसाहित्यना डायराओमां लोको ऊमटे छे अने गुजराती फिल्म-उद्योग मध्यकालीन कथावार्ता पर ज नभे छे एनुं शुं ? समाजनो एक मोटो वर्ग कया वातावरणमां श्वसे छे एनो ए संकेत नथी शुं ? हिंदी फिल्मोमां निरुपातुं परंपरागत कुटुंबजीवन अने एनी समस्याओ लोकोने पोतीकां नथी लागतां ? वस्तुतः आपणुं आधुनिक जीवन पाश्चात्य संस्कारो अने परंपरागत भारतीय संस्कारोना अजब मिश्रण समुं छे. संयोगोए आपणा कुटुंबने विभक्त कर्युं छे, पण विच्छित्र कर्युं नथी. हजु आपणे सामाजिक प्रसंगोथी, कर्तव्योथी, अपेक्षाओथी, मावनाओथी बंधायेला रह्या छीए अने सांसारिक-सामाजिक-कौटुंबिक सुखदुःखोना

अनुभव आपणे माटे अशेष थई गया नथी. आपणी ज्ञातिसंस्थानुं अस्तित्व मट्युं नथी, एणे नवां कार्यो स्वीकारी पोतानी जातने टकावी राखी छे. धार्मिक संस्थाओ हजु मजबूत अने प्रभावक रही छे, अने धार्मिकता-आध्यात्मिकताना नवां मोजां पण लहेरातां देखाय छे. मध्यकालीन साहित्यनी दुनिया आपणे माटे सर्वांशे परायी थई गई होय एवं लागतुं नथी. एमां एवा अंशो जरूर छे जेनी साथे आपणुं चित्त अनुबंध जोडी शके. ऊलदुं आधुनिक साहित्यना केटलाक मनोभावो बहुजनसमाजने पराया जेवा लागे छे अने एमां रस लेवानुं एमनाथी थतुं नथी.

मध्यकालीन साहित्यमां केटलाक जीवनप्रदेशो-अनुभवक्षेत्रो बाकात रह्यां छे जरूर, पण एनी दुनिया आपणे मानी लीधी छे एटली सांकडी छे के केम ए विचारवा जेवुं छे. स्थूळ रीते ज जोईए तो ज्ञान-भक्ति-वैराग्यना विपूल पदसाहित्य उपरांत एमां फागु-बारमासा जेवां केवळ प्रकृतिवर्णन ने मनोभाववर्णननां काव्यो छे, पौराणिक-लौकिक-ऐतिहासिक कथाकाव्यो छे, चरितकाव्यो छे, रूपककाव्यो छे, तत्त्वविचारात्मक ने खंडनमंडनात्मक कृतिओं हे, विवादकाव्यों हे, तथा अनेक प्रकीर्ण प्रकारनी कृतिओ छे. आपणा साहित्य-इतिहासो मध्यकाळना साहित्यना सर्व आविष्कारोनी पूरती नोंध भाग्ये ज लई शके छे. जेमके, आपणे गणतर ऐतिहासिक काव्योनी नोंध लई, ए प्रकारना साहित्यनी ओछपनी फरियाद करता होईए छीए, पण जैन कविओने हाथे श्रेष्ठीओ तथा साधुओनां चरित्र तेमज तीर्थयात्राओ वर्णवता जे अनेक रासाओ रचायेला छे एमां पडेली इतिहाससामग्री आपणा लक्ष बहार होय छे. ऋषभदासकृत 'हीरविजयस्रि रास'मांथी मळतो मोगलकाळनो केटलोक इतिहास आनो एक दाखलो छे. समकालीन प्रजाजीवननी घणी रेखाओ पण आ रासाओमां गूंथायेली होय छे. वैष्णव आचार्योनां केटलांक चरितकाव्योमां पण आवी सामग्री छे, जेने विशे आपणे लगभग कशुं जाणता नथी. स्वानिनारायण संप्रदायमां सहजानंद स्वामी विशनां अनेक काव्योमांथी पण आ प्रकारनी सामग्रीनो अभ्यास करवानं हज् बाकी छे. सांस्कृतिक अध्ययननी तो भरपूर सामग्री मध्यकालीन साहित्यमां वेरायेली पडी छे. वर्णकोने रूपे एवी सामग्री संचित पण थई छे. भोगीलाल सांडेसरा-संपादित 'वर्णकसमुच्चय'ना बे भागमां वर्णको ने एनो अभ्यास प्रस्तुत थयां छे ए आना नमूनारूप छे – एमां आवरी लेवायेला विषयो केटलाबधा छे : भोजनसामग्री, वस्त्रो, आभूषणो अने सुशोभनो, रत्नो, विद्याकला अने मंत्र, लिपि, वार्जित्र-वाद्य, देशप्रदेश स्थानविशेष आदि, नगररचना अने स्थापत्य, राजलोक अने पौरलोक, राजवंश, शस्त्रास्त्रो अने युद्धसामग्री, अश्वजाति, करवेरा, नौयान, रोग, व्रत, लब्धि, आ विषयोनी केटली वीगतो प्राप्त छे ए जोईए तो आशरे ३५० जेटलां खाद्य पदार्थों अने वानगीओ नोंधायेल छे; पदार्थोनी जुदीजुदी जातिओ अने बनावटो पण एमां छे, जैसके चोंखानी ३० जेटली जातो, लाडुना ५० जेटला प्रकारी अने १०० जेटलां शाक, केटलीक वानगीओ केम बनावाय हे तेनी प्रक्रिया वर्णवाई हे तेमज भोजननी बेठकव्यवस्था अने पिरसणविधिनां मनोरम चित्रो आलेखायां ष्ठे. आ वर्णको उपरांतनो बीजो घणो रसिक सांस्कृतिक संभार मध्यकालीन कृतिओमां सचवायेलो छे. पण सामान्य रीते एने बाजु पर राखीने ज कृतिनो आस्याद करवा आपणे टेवायेला छीए तेथी घणी वीगतो आपणा लक्ष बहार रहे छे. नरसिंह महेता जेवा आपणा प्रियतम कविनां पदोमां रहेली वैष्णव परंपरानी केटलीक लाक्षणिक सांस्कृतिक रेखाओंने ओळखवा आपणे प्रयास कर्यो नथी ने एथी काचां अर्धघटनो पर निर्भर अधूरा काव्यास्वादोधी आपणे रीझ पानीए छीए. मध्यकालीन गद्यसाहित्यनी समृद्धियों तो आपणे जजाण जेवा छीए. मोटा भागनी कृतिओं तो हजू प्रकाशनी राह जोती हस्तप्रतभंडारोमां दटायेली पडी छे. एमां कथावार्ता, चरित्र, तीर्थ-इतिहास, गच्छा-परंपरा, धर्मोपदेश, आचारविधि, तत्त्वज्ञान, योग, गणित, ज्योतिष, सामुद्रिकशास्त्र, शकुनशास्त्र, कोकशास्त्र, रमलतंत्र, वैदक, शिल्प, अलंकारशास्त्र, व्याकरण, कोश, संगीतविद्या आदि अनेक विषयो खेडायेला जोवा मळे छे. गद्यसाहित्य बहुधा बालावबोधो रूपे - संस्कृत-प्राकृत-गुजरातीना कोई मूल ग्रंथना विवरण रूपे - जैन साध्कविओ पासेथी प्राप्त थाय छे एटले जैन शास्त्रोनी एमां प्रधानता होय ए समजाय एवं छे पण उपर नोंधेला विविध विषयोना अने 'भगवद्गीता' 'अमरुशतक' जेवी कृतिओना बालावबोधोनो पण एमां समावेश छे ए आ गद्यसाहित्य द्वारा केवी व्यापक ज्ञानोपासना धर्ड छे अने लोकशिक्षणनो केवो मोटो उद्यम ययो छे ए बतावे छे.

मध्यकालीन साहित्यनी देखीती एकविधतानी नीचे जिवाता जीवननां अने जगतज्ञाननां केवां वैविध्योने अवकाश मळ्यो छे एनुं आ दिग्दर्शनमात्र छे. हस्तप्रतभंडारोमां दटायेलुं मध्यकालीन साहित्य हजु बहार आवशे अने एनो सूक्ष्मताथी, गहनताथी अने सर्वांगीपणे अभ्यास यशे त्यारे एना वैविध्यनी आपणने कदाच वधारे प्रतीति यशे.

बारमाथी ओगणीसमा सैका सुधीना सातसो वरसना गाळामां सैकावार जे विपुल साहित्य गुजराती भाषामां मळे छे ए जगतसाहित्यमां एक विरल घटना छे. भाषाविकासनुं अने भाषाभिव्यक्तिनी कलानुं एक समृद्ध चित्र एमांथी आपणने मळे छे. एनां शब्दराशि, स्रविप्रयोगो, वाक्यछटाओ, वाग्भेंगिओ — सर्व कंईमां आपणा रसविषय बनवानी क्षमता छे. ए भाषाजगतनो विहार कौतुकभर्यो बने तेम छे. आपणे अखाभगत के प्रेमानंदनी वाक्शक्तिने पिछानीए छीए अने एना पर वारी जईए छीए, पण सातसो वरसना साहित्यना भाषावैभवने प्रत्यक्ष करवो आपणे बाकी छे. ए मोटो पुरुषार्थ मागे पण ए पुरुषार्थनुं पूरतुं वळतर मळी रहे तेवो ए वैभव छे. एना शब्दजगतनी कंईक झांखी अहीं रजू

थयेला मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशथी थशे, तो भाषाविकास, रुढिप्रयोगो, दार्ग्मीगओ वगेरेनो एक नानकडो दस्तावेज हरिवझभ भायाणीना "गुजराती भाषानुं ऐतिहासिक व्याकरण'मांथी सांप्रडशे पण अनेक प्रकाशित-अप्रकाशित कृतिओमां सावधानपणे विहरवुं अने एना भाषावैभवने झीलवो ए जुदी वात छे. बालावबोधोनी गद्याभिव्यक्ति, जे वधारे जीवंत अने वास्तविक छे एनो तो आपणने अंदाज ज नथी. आपणे एम मानीने चालीए छीए के मध्यकाळमां गद्य कां तो 'पृथ्वीचंद्रचरित्र' जेवुं पद्यकल्प गद्य छे, कां तो विवरणनुं शास्त्रीय गद्य छे. वास्तविक व्यवहारु गद्य तो जाणे पहेली वार ज 'वचनामृत'मां सांपडे छे. पष्प मध्यकाळमां शास्त्रीय बालावबोधोमां पण — खास करीने एमां आवती दृष्टांतकथाओमां तळपदा शब्दो ने रुढिप्रयोगो तथा बोलाती वाणीनी लढणो धरावतुं जीवंत गद्य आपण्यने मक्के ज छे.

बारमाथी ओगणीसमा सैका सुधीनुं जे विपुल साहित्य आपणने मळे छे ते जैन संप्रदाये ऊभा करेला ज्ञानमंडारोने आभारी छे. स्वाभाविक रीते ज एमां जैन साहित्य वधारे सचवायुं होय. प्राप्त मध्यकालीन साहित्यमां जैन संप्रदायनी हिस्सी घणी मीटो - **लगभग ७५ टका जेटली - छे एन् कंईक कारण** एमांथी आपणने जडी आवे छे. आ जैन साहित्यमांथी घणुं आपणे सांप्रदायिक गणीने आपणा अभ्यासनी बहार राख्युं छे. पण ते उपरांत पृष्टिसंत्रदायना सघळा साहित्यने पण आपणे लक्षमां लीधुं नथी, भले, नरसिंह, मीरां, दयाराम जेवां कृष्णमक्तिना कविओमां आपणे घणो रस लीधो होय. स्वामिनारायण संप्रदायना साहित्यनो आपणो अध्यास बहु योडा साधुकविओ पूरतो मर्यादित छे तो रविसाहेब जैवा कबीरपरंपराना संतकविओ, मुस्लिम संतकविओ वगेरे अनेक धार्मिक सांप्रदायिक साहित्यप्रवाहोना कविओनो आपणे संपूर्ण अभ्यास कर्यों छे एवं कहेवाय एवं नथी. खीजा कविओ ने अनेक रूखडिया संतकविओ अने भजनिको तरफ तो आपणे नजर पण करी नथी. प्रणामी संप्रदायना प्रवर्तक प्राणनाथ स्वामी अने एमना साहित्यिक प्रदाननी हजु हमणां ज आपणने खबर पडी छे. आवा अनेक नानामोटा धर्मसंप्रदायो अने परंपराओए मध्यकाळना गुजराती साहित्यनुं धडतर कर्युं छे अने एमने ज्यारे योग्य न्याय मळशे त्यारे मध्यकालीन साहित्यनुं आपणुं दर्शन बदलाशे, पूरिपूर्ण बनशे अने अनेक नृतन प्राप्तिओ आपणने थशे. जयंत गाडीत घणा वखतथी मध्यकाळना धार्मिक-सांप्रदायिक साहित्यप्रवाहोनो अभ्यास करवानी अभिलाषा सेवी रह्या छे, ते एमनी अभिलाषा वहेलासर फळीभूत थाय एवं आपणे इच्छीए.

मध्यकालीन गुजराती साहित्य बहुधा परंपराग्रस्त छे अने एमां मौलिक सर्जकतानी अनुभव ओछो थाय छे ए फरियादना संदर्भमां बेत्रण बाबतो लक्षमां राखवी जोईए. एक तो ए के औपचारिक शिक्षणव्यवस्था नहींवत् हती एवा ए समयमां साहित्य पर

लोकशिक्षणनी अने परंपराना सातत्वने नभाववानी जवाबदारी आवी पडी हती. आ कारणे मौलिकतानुं आजना जेवुं मूल्य के महत्त्व ए वखते ऊभुं थयुं नहोतुं अने अनुसर्जन, अनुकरण के ऊछीनूं लेवामां कशो बाघ मनातो न हतो. प्रेमानंद जेवा प्रथम पंक्तिना आख्यानकार आखुं ने आखुं कडवुं पुरोगामीमांथी उठावी लेवामां कशुं अनुचित न माने, सर्जकता परंपरानो लाभ लईने आगळ वधवामां जाणे धन्यता अनुभवती हती. मौलिकता करतां परिणामनी उत्तमता एने माटे जाणे वधारे महत्त्वनी हती. छेवटे, परंपराने झीलवानां सुझ-सामर्थ्य होय छे अने परंपराना सर्जनात्मक-कलात्मक विनियोग जेवी पण कोई चीज होय छे. तेथी परंपरानिष्ठता पोते कोई अपमूल्य नथी, जेम केक्क मौलिकता पण, कदाच, आपोआप कोई मूल्य नथी. 'वसंतविलास', जयवंतसुरिकृत 'शुंगारमंजरी' अने गणपतिकृत 'माधवानलकामुकंदलाप्रबंध' पर संस्कृत-प्राकृत साहित्यपरंपरानो प्रबळ प्रभाव छे, परंतु आ परंपरा तो बीजाओ पासे पण हती. आवुं परिणाम अन्य कोई सिद्ध करी शकतुं नथी ए शुं बतावे छे ? आ कृतिओंना रचयिताओं पासे परंपरानी जे अभिज्ञता अने रसज्जता छे ते कंईक अनन्य छे अने पोलानी सर्जकताने एमणे परंपरानी भूमिमां रोपी छे एम कहेवाय. अखाभगतमां ज्ञानमार्गी कविताधासनी तो प्रेमानंदमां आख्यानकवितानी परंपरानी उत्कर्ष छे. अने दयाराम पासे तो कृष्णभक्तिनी परंपरानो केटलो लांबो वारसो छे ! पण ए वारसाने, रामनारायण पाठक कहे छे तेम, एमणे दीपाव्यो छे, उजाळ्यो छे. मध्यकालीन साहित्ये परंपराबद्ध रहीने पण भावविचारद्रव्य, कथाघटको, वर्णनरूढिओ, पद्यबंधो, प्रास, ध्र्वा, वाग्मंगिओनी जे समृद्धि निपजावी छे ए असाधारण छे अने अखाभगत, प्रेमानंद वगेरे थोड़ा कविओना जेवा प्रतिभावंत सर्जको तो आज सुधीना गुजराती साहित्यमां आपणने गणतर ज सांपडे छें. गुजराती भाषा जेमने माटे हंमेशां गौरव अनुभवी शके एवा ए साहित्यस्वामीओ है.

बेशक, मध्यकालीन साहित्य बहुधा हेतुलक्षी छे – पछी ए हेतु वैचारिक मतनी स्थापनानो होय, धर्मबोधनो होय, सांप्रदायिक महिमागाननो होय के लोकशिक्षणनो होय. मध्यकाळना रचयिताओ पोताने कवि तरीके ओछुं ओळखावे छे, ए भक्तो छे, ज्ञानीओ छे, संतो छे, कथा कहेनारा 'मटो' छे. कविकर्मनी सभानता एमनामां केटली हशे ए कहेवुं मुश्केल छे. पण ए याद राखवुं जोईए के कोई पण प्रकारनी हेतुलिक्षताथी साव अलिप्त, केवळ रसलक्षी कहेवाय एवी थोडीक, 'वसंतविलास' 'माधवानल-कामकंदलाप्रबंध' जेवी कृतिओ आपणने मध्यकाळमां मळे ज छे. जैन साधुकविने हाथे पण 'विराटपर्व' के 'वसंत फागु' जेवी धर्मबोधना ने सांप्रदायिकतानाये स्पर्श विनानी कृतिओ मळे छे. एवी तो अनेक कृतिओ मळे छे, जेनी भोंय घोक्कस धर्मसंस्कारनी

[२२]

परंपरानी होय पण समग्र निरूपण रसलक्षी ज होय. राधाकृष्णविषयक बारमासा वगेरे प्रकारनी घणी कृतिओ आमां आवे, तो जयवंतस्र्रिना 'स्यूलिभद्रकोशाप्रेमविलास फाग' जेवी कृतिमां पण वस्तु जैन परंपरानुं छे, ए बाद करीए तो ए शुद्ध विरहकाव्य ज बनी रहे छे. एमां जैनत्वनी बीजी कशी छाया पडेली नथी. अने धर्मीपदेशनो के एवो हेतु गौण के आनुषंगिक बनी जतो होय अने कविकौशलनुं प्रवर्तन ने रसदृष्टि मुख्य बनी जतां होय एवी कृतिओनो तो मध्यकाळमां तोटो नथी. आख्यानकविता अने जैन रासाओ निर्मायेला तो छे कशाक धार्मिक सांस्कृतिक बोध माटे, एवी सम्मग्री एमां ओछीवत्ती होय छे, छतां एनी साथेसाथे एमां कथारस, जनस्वभावरस, वर्णनरस अने पद्यस पण वहे छे. शामळ भट्टमां कवित्व कई ऊँची कोटिनुं नथी, ने एमनी वारताओनो एक महत्त्वनो हेतु लोकशिक्षण छे, तेम छतां कथाकौतुकरसथी ए वार्ताओ छलकाय छे अने आस्वाद्य बने छे. कविनी प्रतिज्ञा के एना प्रगट हेतुथी आपणे भ्रान्तिमां पडी एनाथी विमुख थई जवा जेवुं नथी.

छेवटे, साहित्यनी शुद्धता ए कई कलात्मकतानो पर्याय नथी अने हेत्निष्ठता कंई अनिवार्यपणे कलात्मकताने अवरोधक नथी. ज्ञानवैराग्यभक्तिना भावो ने उपदेशवृत्ति सध्यां काव्योचित विषय होई शके छे. काव्यभावनी व्याख्या संकृचित करवानी जरूर नथी. भारतीय काव्यशास्त्रे मावो(संचारिभावो)नी लांबी यादी करी छे अने आपणे एमां उमेरो करी शकीए. भक्तिनो भाव तो मध्यकाळमां वारवार हृदयंगम अभिव्यक्ति पान्यो छे अने ज्ञानविचारने पण अखाभगत जेवामां केवी अद्भूत मूर्तता सांपडी छे ! हेतुनिष्ठता होवा छतां अने कविपणानो दावो न करवा छता मध्यकालीन साहित्यना रचयिताओए जे अनेकविश्व प्रकारनां कविकर्मी अने काव्यसिद्धि प्रगट कर्यां छे ते काव्यरसिकोने मांटे मोटी वस समान छे ने अंके करी लेवा जेवां छे. माणिक्यसुंदरना 'पृथ्वीचंद्रचरित'नी गद्यलीला, जयवंतसूरिनां भावप्रवणता अने सुभाषितकौशल, गणपतिना 'माधवानलकामकंदला प्रबंध'मो वर्णनवैभव, विश्वनाय जानीना 'प्रेमपचीशी'नी नाट्यगीतात्मक भावाभिव्यक्ति, यशोविजयजीनुं बुद्धिचातूर्य अने अलंकारचातुर्य - आवुं तो केटकेटलूं, मध्यकालीन साहित्यसृष्टिमां आपणे आपणी काव्यरसिकताने मोकळी मुकीए त्यारे, आपणी सामे आवे छे ! बेशक कोई पण समयनी चोक्कस साहित्यिक परिपाटीओ होय छे अने एनो आस्वाद एनी शरतोए ज लेवानो होय छे. मध्यकाळनां प्रासचातुर्य, ध्रवानाचीन्य, पद्यगामछटावैविध्य वगेरे केटलांक कविकौशलो पण छे अने एमां आपणे रस लई शकीए तो मध्यकालीन साहित्यनो आपणो आस्वाद वधारे समृद्ध बने.

आपणे जाणीए छीए के मध्यकालीन साहित्य कई एकांतमां अंगत वाचन माटेनुं

साहित्य न हतुं. प्रत्यक्ष रज्ञात अने समूहभाग्यतानी दृष्टियी ए रचातुं हतुं अने एनो एना स्वरूपांनर्गणमां महत्त्वनो फाळो हतो. लोकोनी मध्यकालीन साहित्यना सर्जनमां परोक्ष सामेलगीरी हती. लोकोनी विविध जरूरियातो संतोषवा निर्मायेलुं, सर्व प्रकारनां काव्यचातुर्योनो आश्रय लेतुं अने गानादि कळाने पण पोतानी सहायमां लेतुं मध्यकालीन साहित्य शुद्ध साहित्य नहोतुं पण, कहो के, संपूर्ण साहित्य हतुं. हा, जेम संपूर्ण रंगभूमि (टोटल थिएटर) जेवी कोई वस्तु छे, तेम संपूर्ण साहित्य (टोटल लिटरेचर) जेवी कोई वस्तु पण होई शके. मध्यकालीन साहित्यने संपूर्ण साहित्यनां धोरणोथी माणवुं-नाणवुं जोईए.

मध्यकाळथी आपणे आजे ठीकठीक दूर पडी गया छीए. आजे आपणे जुदी हवामां श्वसीए छीए, मध्यकाळना साहित्यनो रस माणवामां, तेथी, आपणने अवश्य केटलांक विघ्नो नडे - भाषाप्रयोगोथी मांडीने सांस्कृतिक परिवेश सूधीनां, तेम छतां आ विघ्नोनूं आपणे निवारण न करी शकीए एवं नथी, केमके ए आपणी ज पूर्व परांपरा छे. संस्कारभूमिकानी केटलीक समानता एनी साथे आपणे शोधी शकीए, एनी साथे आत्मीयता साधी शकीए तेमज एनो रस माणी शकीए. जरूर छे मात्र एना प्रत्ये अभिमुख थवानी. अंग्रेजी साहित्यथी प्रभावित कवि कान्तने एक वखते प्रेमानंद मात्र पद्यजो इ लागेला, परंतु न्हानालाले एमनी पासे प्रेमानंदनां आख्यानो वांच्या पछी एमनो अभिप्राय बदलायेलो. आधुनिक बोधना गूजराती आदिकवि निरंजन भगत हमणां मध्यकालीन कविओ विशे नियमित रीते व्याख्यानो आपी एमने पोतीकी रीते प्रकाशित करें। रह्या छे अने आपणा आधुनिक कवि लाभशंकर ठाकर पण प्रेमानंदना आख्यानना पठनना जाहेर कार्यक्रमो करी लोकोने एनो रसास्वाद करावो रह्या छे ने ए रीते मध्यकालीन साहित्यवारसानी मूल्यवत्ता स्थापित करी रह्या छे. सर्जको माटे तो मध्यकालीन साहित्य खरेखर एक अखुट खजानो छे. आजे आपणा सर्जको लोकभाषा, लोकजीवन अने तळपदी साहित्यप्रणालिओनो कार्यसाधक विनियोग करी पोतानां सर्जनोमां ताजगी अने नृतनता नथी आणी रहेला देखाता ? तो ए रीते मध्यकालीन साहित्यपरंपरानो पण नृतन सर्जनात्मक विनियोग जरूर थई शके. एनां शब्दराशि, रूढिप्रयोगो ने वाक्छटाओमांथी तो घणुं पुनर्जीवित करवा जेवुं मळी रहे. में अखाभगतना छप्पाओना अर्थविचारना लेखो लखेला एमां आधूनिक साहित्यना सर्जक कोईकोई कविमित्रोए रस लीधानुं में जाण्यं त्यारे पहेलां तो मने आश्चर्य थयेलुं पण पछी ए स्वाभाविक लागेलुं (जोके ए लेखोनं, १९८९ना वर्षना विवेचनविषयक सन्धान क्रिटिक्स एवॉर्डने पात्र बनेलं पुस्तक घणुं ओछं वेचाय छे ने एनं कशे अवलोकन धयुं नधी ए पण एक वास्तविकता छे). आ संदर्भमां भृगुराय अंजारियाए युवाकवि हरीन्द्र दवेने आपेली शीख

याद आवे छे :

"तमे नवीन कविओनुं ज वाचन करो छो. एथी बहु तो आ जमानानी काव्यप्रतिभाना अनुयायी (कॅम्प-फॉलोअर) बनी शको. तमे जो नरसिंह, प्रेमानंद, अखो, दयाराम बराबर वांची शको तो सारुं. अर्वाचीनमां ठाकोर, कान्त अने न्हानालाल.

मध्यकालीन कविता बने तेटली काव्यदोहननां पुस्तको द्वारा वधारे वांचो."

बंधा ज लोको मध्यकालीन साहित्यमां रस लेता थाय के एनो अभ्यास करता थाय एवी अपेक्षा राखवानी न ज होय. पण साहित्यना रसियाओ अने अध्येताओ पासे ए ओछुंवत्तुं रहे एवी इच्छा राखवामां कई वधु पडतुं नथी. शिक्षणमां मध्यकालीन साहित्यनुं स्थान टकी रहेवुं जोईए - अलबत्त, विवेकपूर्वकनुं अने सूझबूझपूर्वकनुं. हमणां धोरण १९ अने १२नां गुजराती पाठ्यपुस्तकोना मध्यकालीन विभाग जीवानी प्रसंग कभो थयो हतो. धोरण ११मामां तो छापभूलो ने पाठदोषो एटलांबधां हतां के आमां भणनार-भणावनारनुं शुं थाय ए प्रश्न गंभीरपणे उपस्थित थतो हतो. ते उपरांत बन्ने पाठ्यपुस्तकोमांथी बीजा महत्त्वना मुद्दा पण सामे आवता हता. आपणे मध्यकालीन साहित्यकृतिनी पसंदगी केवी रीते करीए छीए ? जूनां पाठ्यपुस्तकोमांथी कृतिओ उपाडी लईए छीए के नवेसरथी श्रम करीने योग्य कृतिओ खोळीए छीए ? हाथमां आवी ते वाचना स्वीकारी लईए छीए के शुद्ध अने उत्तम वाचनानो आग्रह राखीए छीए ? पसंद करेली कृतिओमां अर्थघटननी कोई मूंझवण नथी एनी आपणे खातरी करी होय छे ? विद्यार्थीओ अने शिक्षकोने भटकवानुं न थाय ए माटे शब्दार्थनी पर्याप्त सहाय पूरी पाडेली होय छे ? में जोयुं के कदाच संपादको पण संतोषकारक रीते अर्थ न करी शके एवी पंक्तिओ आ संपादनोमां नजरे पडती हती, शब्दार्थ ने समजूती क्यांक खोटां हतां. तो आपवा जोईता घणा शब्दार्थो अपाया न हता, केटलाक शब्दोनी मध्यकाळनी विशिष्ट अर्थछाया पकडी शकाई न हती. आ रीते तो आपणे मध्यकालीन साहित्य प्रत्येनी अभिमुखता नहीं विमुखता केळववामां ज फाळो आपी शकीए.

शाळाकक्षाए मध्यकालीन कृतिओने केवी रीते रजू करवी ए पण हवे नवेसरथी विचारवा जेवुं लागे छे. धोरण १२ना पाठ्यपुस्तकमां राजेनुं एक पद रमेश जानीना ताजेतरमां प्रसिद्ध धयेला संपादनमांथी लेवायेलुं. रमेश जानीए उक्त संपादनमां हस्तप्रतमां जे ग्राम्य उद्यारण-लेखन मळ्यां ते यथावत् राखेल छे. घणा शब्दो एमां एवे स्वरूपे मळे छे जे मध्यकाळमां पण मान्य के व्यापक हता एम न कहेवाय. एथी अवबोधमां मोटो अंतराय ऊभो थाय छे ने अभ्यासीए पण जरा विचार करवा घोभवुं पडे एवुं थयुं छे. विशाळ शिक्षकवर्गनुं तो आमां शुं गजुं ? आपणे शब्दार्थनी मदद पूरी पाडीए, पण ए श्रम पछीये शुं ? मूळ कृति साथे मननो मेळ रचावो मुश्केल. आ कक्षाए तो

कृतिने मान्य शब्दस्वरूपोधी ज रजू करवानुं इष्ट नहीं ? अंग्रेजी भाषामां तो शेक्स्पिअर पण शाळाकक्षाए आधुनिक लेबासमां ने संक्षिप्त रूपे रजू थाय छे. आपणे मध्यकालीन साहित्यने पण थोडा संमार्जन-संपादनपूर्वक न मूकवुं जोईए ? अलबत्त, मध्यकालीन साहित्यनी मध्यकालीनता नष्ट न थाय एनी काळजी राखवी जोईए. वधारे जूनां के ग्रान्य उच्चारणरूपोने स्थाने पाछळना समयनां उच्चारणरूपो स्वाकारी शकाय, परंतु मध्यकालीन शब्दोने स्थाने अर्वाचीन शब्दोनुं भरणुं न करी शकाय. दुर्बोध रहेता अंशोने छोडी दई शकाय, पण अणसमजमां कंई अगत्यनुं नीकळी न जाय एनी काळजी राखवी जोईए. सरेराश शिक्षक सहेलाईथी गति करी शके अने विशाळ विद्यार्थीवर्गनुं मन जेमां लागी शके एवां मध्यकालीन कृतिओनां संपादन-रजूआत होवां जोईए. आ अधिकार गमे ते व्यक्तिने न ज होई शके, ए काम ए माटेनी सञ्जता अने सूझ धरावती व्यक्तिने हाथे ज थवानो आग्रह राखवो जोईए.

कॉलेज अने युनिवर्सिटीकक्षाए अलबत्त मध्यकालीन कृतिओनी शास्त्रीय रीते संपादित थयेली अधिकृत वाचनाओ ज नियत करवी जोईए.

कॉलेजकक्षाए मध्यकालीन साहित्यना एक पूरा प्रश्नपत्रमां काप न ज मूकी शकाय. ए पगलुं तो मध्यकालीन साहित्यनी विशाळताथी आपणे बेखबर छीए एम ज बतावे. मध्यकालीन साहित्याभ्यासने सांस्कृतिक अभ्यास साथे सांकळी एने जीवंत बनाववो जोईए, अने मध्यकाळना नानामोटा सर्व साहित्यप्रवाहोनी अभिज्ञता केळवाय एवो प्रयत्न करवो जोईए. पांच-छ मोटा कविओना अभ्यासमां ज मध्यकालीन साहित्य सीमित थई जाय छे ए निवारवुं जोईए. आम करवा जतां कदाच एक प्रश्नपत्र पण ओछुं पडे एवो संभव छे. तो ए माटे पण कंईक व्यवस्था विचारवी जोईए.

पण मध्यकार्ल न साहित्यनी विशिष्ट तालीम पामेलो एक नानकडो वर्ग आपणे ऊभी नहीं करी शर्काए तो उपर सूचवेली व्यवस्थाओ पार पडवा संभव नथी. जेमनी पासे संस्कृत-प्राकृत ए पूर्वपरंपरानुं पण ज्ञान छे एवी मध्यकालीन साहित्यनी पारंगत पेढी तो हवे लुप्त श्वामां छे, नव-अभ्यासीओ घणा ओछा प्राप्त थई रह्या छे, एमनी सजता पांखी पडी रही छे – ऊणी ऊतरी रही छे ने सूंठने गांगडे गांधी गणाई जवाय एवी स्थिति प्रवर्तवा मांडी छे. विदेशोमां मध्यकालीन गुजराती साहित्यकृतिओनां संपादनो थाय छे, मध्यकालीन परंपराओ विशे परिसंवादो योजाय छे अने मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासनी सगवडो पण ऊभी थाय छे त्यारे आपणे आपणा आ समृद्ध वारसा परत्ये जाणे उदासीन छीए. हजु तो हस्तप्रतभंडारोमां अभ्यासीओनी राह जोतुं विपुल साहित्य पडेलुं छे. एनो उद्धार कोण करशे ? आनो कईक नक्कर उपाय आपणे विचारवो जोईए.

[२६]

एम लागे छे के मध्यकालीन साहित्यना अभ्यासने ज बरेली एक विद्यासंस्था जोईए अने युनिवर्सिटीओमां अनुस्नातक कक्षाए मध्यकालीन गुजराती साहित्यनो बे प्रश्नपत्रोनो — भले वैकल्पिक रूपे पण — अलायदो अभ्यासक्रम जोईए. एमां हस्तप्रतवाचन, पाठसंपादन, भाषाविकास, संस्कारपरंपराओ, पद्यबंधो अने अन्य साहित्यप्रणालिओना ऊंडा झीणवटभर्या अभ्यासनो समावेश होय. मध्यकालीन कृतिओना अने एने विशेना अभ्यासोना प्रकाशननी एक मातबर व्यवस्था जोईए अने नव-अभ्यासीओना उद्यमने सल्कारतुं, नानीनानी मध्यकालीन कृतिओने तथा अभ्यासलेखोने प्रकाशित करतुं एक सामयिक एण जोईए. वडोदरानी महाराजा स्याजीराव युनिवर्सिटीमां एक क्खते प्राचीन गूर्जर ग्रन्थमालानी प्रवृत्ति सध्यर रीते चाली हती ए आजे तो एक रोमांचक स्मरण अने भविष्यनुं स्वप्न बनी गयेल छे, एने पुनर्जीवन मळवुं जोईए. शब्दकोशादि साधनो पण ऊभां थवां जोईए.

हा, अहीं रजू करेली अपेक्षाओ शमणांओ समी भासे एम छे. पण मध्यकालीन साहित्यना समृद्ध वारसाने आपणे वीसरवा न मागता होईए तो ए शमणांओ साचां पाडवां पडशे. भले ए दिशामां एक पछी एक नानांनानां डग भरीए. आ मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश पण ए दिशामां एक नानकडुं डग छे. ए मध्यकालीन साहित्यना अवबोधमां सहायरूप थशे अने मध्यकालीन साहित्यना आपणा अभ्यासोने वधु अर्थपूर्ण बनावशे तो एमां एनी सार्थकता हशे.

१४ मार्च १९९५

जयंत कोठारी

संपादकीय भूमिका

आ कोश एक संकलित कोश छे. एमां मध्यकालीन कृतिओना अनेक संपादित ग्रंथोना शब्दकोशनी सामग्री भेगी करवामां आवी छे. पण ए सामग्री जेम मळी छे तेम मूळी देवामां नथी आवी. एमां हानोपादाननो विवेक करवामां आव्यो छे, सामग्रीने संशोधित करवामां आवी छे अने एमां पूर्ति पण करवामां आवी छे. देखीती रीते ज, आ माटे केटलीक नीतिरीतिओ पहेलेथी नकी करवी पडे अने सामग्रीनी रजूआतनी पण चोकस पद्धित निपजाववी पडे. एवुं अहीं करवामां आव्युं छे पण, काम घणो लांबो समय चाल्युं अने संपादकनी मांदगीनो पण मोटो विक्षेप पाम्युं तेथी, एमां सो टका एकरूपता रही शकी नथी, जोके ए माटे शक्य सघळो प्रयास करवामां आव्यो छे.

आ कोशनी सामग्रीनी पसंदगी, शुद्धिवृद्धि वगेरेनी नीतिरीति अने रज्ञातनी पद्धित एवी विशिष्ट छे के एनी वीगते अने सदृष्टांत समजूती आपवी आवश्यक छे. कोशना चार विभागो – शब्दसामग्री, आधारग्रंथो, शब्दार्थ अने शब्दमूळ – ने अनुलक्षीने ए समजूती आपीशुं.

शब्दसामग्री

अहीं आरंभे घाटां बीबांमां जे शब्द छे ते आधारग्रंथना शब्दकोशमांथी प्राप्त थयेलो मध्यकालीन शब्द छे.

एक नियम तरीके अहीं एवा शब्दकोशो समाध्या छे, जे वर्णानुक्रमिक होय, जेमां शब्द कृतिमां क्यां वपरायो छे एनो निर्देश होय अने शब्दनो अर्थ पण साथे ज नोंधवामां आप्यो होय. एवा संपादित ग्रंथो पण मळे छे के जेमां शब्दकोश वर्णानुक्रमिक न होय, जेमके के. का. शास्त्री अने चैतन्यबाळा ज. दिवेटिया संपादित 'प्रेमानंदनां त्रण आख्यान', शिवलाल जेसलपुरा संपादित 'प्राचीन मध्यकालीन बारमासा संग्रह' वगेरे (आमां शब्दो एमना प्रयोगना स्थानना क्रममां छे), अथवा शब्दकोश वर्णानुक्रमिक होय परंतु शब्दना प्रयोगस्थाननो निर्देश न होय, ेमके ह. चू. भायाणी, र. म. शाह अने गीताबहेन संपादित मेरुसुंदरगणिविरचित 'शालोप श्रेभाला बालावबोध' वगेरे, अथवा शब्दकोश वर्णानुक्रमिक होय, स्थाननिर्देश पण होय परंतु अर्थ दर्शाववामां आव्यो न होय, एने माटे टिप्पणनो हवालो आपवामां आव्यो होय, जेमके के. ह. ध्रुव संपादित भालणकृत 'कादंबरी : उत्तर भाग', मंजुलाल मजमुदार संपादित प्रेमानंदकृत 'रणयइ' वगेरे. आवा शब्दकोशो आ संकलित कोशमां समाव्या नथी अने पंक्तिक्रमे अपायेला टिप्पणोमां रहेला शब्दार्थोनो समावेश तो स्वाभविक रीते ज न होय. आमां

एक अपवाद कर्यों छे ते 'उक्तिरलाकर'नो. एमां वर्णानुक्रमिक शब्दसूचि छे ने स्थाननिर्देश पण छे पण अर्थ तो निर्दिष्ट स्थाने आपणे जोवानो रहे छे. आ ग्रंथनो अपवाद करवानुं कारण ए हतुं के ए मध्यकाळमां ज रचायेलो शब्दकोश छे अने तेथी मध्यकाळमां जा शब्दो कया अर्थमां वपराता हता तेनी प्रमाणभूत माहिती एमांथी मळे छे. एना आ रीतना महत्त्वने अनुलक्षीने, डॉ. भायाणीना सूचनथी, आ अपवाद कर्यों छे.

छेबटे, आ कोशमां पाछळ यादी आपी छे ते मुजब ६६ संपादित ग्रंथोना ७१ शब्दकोशो (चार ग्रंथोमां अलगअलग कृतिओना अलग शब्दकोशों आपेला छे) संकलित करेला छे. बे ग्रंथोनी बीजी आवृत्तिना शब्दकोशोंने पण उपयोगमां लीधा छे. आ बधा शब्दकोशो एक दृष्टिथी तैयार थयेला न ज होय. ए ग्रंथोनो हवे पछी परिचय आप्यो छे ते मुजब केटलाक संपादकोए उदारताथी शब्दो लीधा छे – सामान्य उच्चारमेदवाळा शब्दो लीधा छे अने अत्यारे वपराशमां होय एवा थोडा शब्दो पण आववा दीधा छे, तो केटलाक संपादकोए शब्दपसंदगी चुस्त मध्यकालीनताना धोरणे करी छे अने सामान्य उच्चारमेदवाळा शब्दो टाळ्या छे. कोईए विभक्ति के काळ-अर्थना रूपभेदोने पण कोशमां दाखल थवा दीधा छे तो कोईए विभक्तिप्रत्ययो टाळ्या छे अने क्रियापदोनुं कोई एक ज रूप – विध्यर्थ-कृदंतनुं रूप ('करवुं') के धातुरूप ('कर-') – आपवानुं राख्युं छे. आनी पाछळनां प्रयोजनो जुदांजुदां पण रह्यां छे. अंग्रेजी भाषाना माध्यमयी ग्रंथो तैयार थया छे त्यां संपादकनी नजर सामे गुजराती भाषा न जाणतो होय एवो वर्ग पण होवाथी एमणे सर्वग्राही थवानी नेम राखी छे, तो बीजा केटलाके सहज उदारताथी, सर्वसंग्रहनी वृत्तिथी आम कर्युं छे.

उपयोगमां लेवायेला ग्रंथोमां भले शब्दसामग्री परत्वे एकरूपता न होय, आ शब्दकोशना संपादके तो ए निपजाववी ज रहे. एम करवा जतां केटलाक कोयडाओ ऊभा थाय एनो सामनो पण करवो रह्यो अर्ने घटतो उकेल शोधवो रह्यो.

एक नियम तरीके अहीं

(१) आजना शब्दथी साव सामान्य उच्चारभेद दर्शावता ने तेथी सहेलाईथी समजाई जता शब्दो छोड़ी देवामां आव्या छे. जेमके, अंत्य स्थाने 'ए' 'ओ' 'औ'ने बदले 'अइ' 'अउ'वाळा शब्दो (अनइ, घोड़उ), 'श'ने स्थाने 'स'वाळा शब्दो (निरास, प्रकासुं), 'ळ'ने स्थाने 'ल'वाळा शब्दो (उजलउं), संयुक्त व्यंजनना विश्लेषवाळा शब्दो (निरासल), 'ह' श्रुतिवाळा शब्दो (अह्यारु) वगेरे.

आम छतां आवा एकथी वधु उद्यारंभेदो एकसाथे होय के अन्य कोई शब्द साथे संप्रम थवानी शक्यता होय के शब्द कंईक अपरिचित बनी जतो होय त्यां आवा शब्दो साचव्या पण छे. (२) अन्य केटलाक उच्चारभेदवाळा शब्दो साचवी लीघा छे. जेमके अनंत्य स्थाने 'ए' 'ओ' 'औ'ने बदले 'अइ' 'अउ'वाळा शब्दो (पर्इसइ, कउण), 'न'ने बदले 'ण'वाळा शब्दो (अल्य=अति), 'इ'कारवाळा शब्दो (लिखइ, राति), 'अय'ने बदले 'ए'वाळा शब्दो (अतिशे), संयुक्त व्यंजनने बदले एकवडा व्यंजनवाळा शब्दो (उछेद, उघार), अंत्य स्थाने अंगविस्तारवाळा शब्दो (अमीअ) वगेरे.

आयी वधारे वर्णभेदवाळा शब्दो तो स्वाभाविक रीते ज अहीं होय.

- (३) सहेलाईथी समजाय पण अत्यारे ए रूपे न वपराता शब्दो पण साचव्या छे. जेमके 'करतउ' शब्द नथी लीधो पण 'अकरतउ' लीधो छे. ए ज रीते 'अचींतविउ' शब्द राख्यो छे, केमके आपणे अत्यारे 'अणिंवतव्युं' बोलीए छीए पण 'अर्वितव्युं' नहीं. सामान्य रीते जेने क्रियापद तरीके आपणे वापरता नथी तेवा 'आनंदए' जेवा शब्दो पण लीधा छे. 'उजलउं' नहीं पण 'उजल' अहीं मळशे ते पण आ कारणे.
- (४) अत्यारे व्यापक रीते प्रचित्त शब्दो तो न ज लेवाना होय पण एनो विवेक एटलोबधो सरळ नथी बन्यो. अत्यारे प्रचित्त शब्दो विशिष्ट अर्थछ्यया धरावता देखाया छे ते साचव्या ज छे. अहीं 'अटकवुं' 'आदरवुं' 'आछउं (⇒आछुं)' 'अखाडउ' 'अंग' 'अंत' बगेरे शब्दो जोवा मळशे ते आ कारणे. जे संस्कृत शब्दो अत्यारे काव्यमां वपराता होय पण व्यापक रीते परिचित होवानुं शंकास्पद होय ते छोडवानुं योग्य गण्युं नथी. सामे, तळपदा व्यवहारमां आ के ते प्रदेशमां अत्यारे वपराता पण शिष्ट वर्गने अजाण्या होवानो संभव जणायो तेवा शब्दोने पण छोड्या नथी. आ कारणे, अत्यारना शब्दकोशोमां जोवा मळता केटलाक शब्दो पण आ कोशमां मळशे. केटलीक वार तो एवं बन्युं छे के अत्यारनो शब्दकोश पण आ शब्द नोंधे छे ए संपादकने मोडेथी जाणवा मळेलुं. एटलेके ए शब्द हजु सुधी क्यांक टकेलो छे एवी एनेय खबर नहोती.

अत्यारे प्रचलित केटलाक जैन शब्दो साचववानुं राख्युं छे – समग्र जैनेतर समाजने ए परिचित न पण होय एवा ख्यालथी.

- (५) 'आनंदघन बावीशी' परना ज्ञानविमलसूरिना स्तबकमां जीवा मळता बौद्ध, न्याय वगेरे दर्शनोना अत्यंत पारिभाषिक शब्दो अहीं लीधा नथी केमके साहित्यमां अन्यत्र ए जीवा मळवानो संभव भाग्ये ज छे अने ए शब्दो विशिष्ट समजूती मागे एवा छे. ब्राह्मण अने जैन परंपराना केटलाक पारिभाषिक शब्दो उपयोगी जणावाथी साचव्या पण छे – जैन दर्शनना खास, केमके ए विशाळ जनसमाजने अजाण्या होवानी शक्यता छे.
- (६) पात्रनामो सामान्य रीते लीधां नथी. ऐतिहासिक नामो ने स्थळादिनां नामो महत्त्वनां होय ते राखवानुं वलण रह्यं छे पण एमां पूरी सुसंगतता साचवी शकाई नथी.

जेमके, महीराजकृत 'नलदवदंती रास'मां आवतां बधां ज देशनामो आ कोशमां समावेश पाम्यां के

- (७) हिंदी भाषाना 'इसउं' 'इसिउं' जेवा आजे परिचित शब्दो पण मध्यकालीन भाषाना अंगभूत गणी रहेवा दीधा छे.
- (८) संपादित ग्रंथोमां एवी कृतिओ पण संग्रहाई छे जेनी भाषा प्राकृत के अपभ्रंश छे. एना शब्दो पण तै-ते ग्रंथना शब्दकोशमां आवेला छे. आ शब्दोने गुजराती भाषाना शब्दो केटले अंशे गणवा ए एक विचारणीय मुद्दो छे. आम छतां, गुजराती भाषाने ए भाषास्वरूप साथे निकटनो संबंध छे, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशना अनुसंधानमां मध्यकालीन गुजराती विकसी छे, तेथी एवा शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान आपवानुं इष्ट गण्युं छे.

परंतु 'प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ'मां संग्रहायेल 'शामळदासनो विवाह' जेवी कोई कृति अर्वाचीन होवानुं निश्चित थाय छे तेना शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान आप्युं नथी, केमके अर्वाचीन कृतिओना शब्दो लेवानुं आ कोशनी मूळभूत कल्पनाथी विरुद्ध गणाय.

- (९) मूळ संपादित ग्रंथोमां जे शब्दोना अर्थ आपी शकाया न होय ने संकलित कोशना संपादक पण आपी शके तेम न होय तेवा शब्दो प्राथमिक तबक्के छोड़ी दीघा हता. पछी एम लाग्युं के आ शब्दो तो साचवी लेवा जोईए. एथी, छोड़ी दीघेला शब्दो पाछा दाखल करवानो श्रम कर्यो छे, पण ए काम पूरी चोकसाईथी थई शक्युं हशे के केम ते विशे शंका छे.
- (५०) एवं तो बने ज के जुदाजुदा ग्रंथोमांथी रूपभेदे एक ज शब्द प्राप्त थाय (कोई संपादित ग्रंथमां तो एक ज शब्दना एवा रूपभेदो अलग नोंधायेला छे). आवा रूपभेदो साचववा जतां आ संकलित कोशमां मोटुं जंगल ज ऊभुं थाय. ए रूपभेदोनुं सरलीकरण करवुं अनिवार्य.हतुं. ए माटे एक सामान्य रूप ज स्वीकारवानुं धोरण अहीं अपनाव्युं छे. नामिक रूपो परत्वे सामान्य रीते विभक्तिप्रत्यय विनानुं रूप आपवानुं राख्युं छे. पण कोई एक ज ग्रंथमांथी, कोई एक ज विभक्तिप्रत्ययवालुं रूप आव्युं होय तो ते एम ने एम रही गयानुं पण देखाशे. उपरांत, थोडी बदलाती अर्थछाया, बीजा कोई शब्द साथे संभ्रम थवानी स्थिति के एवा कोई कारणथी विभक्तिप्रत्ययं विनानुं ने विभक्त प्रत्ययवालुं एम बन्ने रूप साचव्यां छे. जेमके 'अकाज' अने 'अकाजि'.

क्रियापदोनां रूपोनो कोयडो जरा वधारे अटपटो बन्यो छे. विविध काळ-अर्थनां रूपो एमां प्राप्त थाय, जेमके 'भिलइ' 'भिलिउं' 'भिली' 'भिल्यउ'. केटलाक संपादकोए विध्यर्थकृदंतनां 'वुं'वाळां रूपो (जेमके 'भिलवुं') आप्यां छे, तो कोईए मूळ धातु ज

('भिल-') आपेल छे. आ स्थितिमां सामान्य रीते कोई एक ज रूप स्वीकारवानुं राख्युं छे, बहुधा 'भिलइ' ए वर्तमानकाळनुं रूप, तो केंटलीक बार विध्यर्थकृदंतवाळुं रूप के मूळ धातु. आम छतां अहीं पण कोई एक ज रूप प्राप्त थयुं छे त्यां एम ने एम राख्युं छे अने आवश्यकता जणाई त्यां एकथी वधु रूपो पण रहेवा दीघां छे.

एक ज रूप अंत्य स्वरना भेदयी पण आवी शके छे, जेमके 'पूगइ' 'पूगे' 'पूगे'. आवुं बन्युं छे त्यां सामान्य रीते जूनुं 'पूगइ' ए रूप आपवानुं राख्युं छे ने आवश्यकता जणाई त्यां रूपभेद साचच्या पण छे.

रूपभेद के जोडणीभेदनुं आवुं सरलीकरण के एकीकरण करीए एटले एक कोयडों तो ऊमो थाय. एकीकृत रूपनी सामे आधारग्रंथों तो बधा निर्देशाय, जेमां वास्तविक रीते ए एकीकृत रूप नहोतुं, जुदां रूपो हतां. एथी जे-ते ग्रंथमां ए शब्द शोधवामां अगवड ऊमी थाय. 'भिल्यउ' 'भिलइ'मां समाई जाय एटले जे ग्रंथमां 'भिल्यउ' होय त्यां पण आपणे 'भिलइ' ज शोध्या करीए अने ए आपणने न मळे. आपणे याद राखवुं पडे के क्रियापदरूप अन्य पण होई शके छे. आ अगवडमांथी बचवानो कोई रस्तो नहोतो ने संकलित कोशथी आगळ जनार जूज अभ्यासीओने ज आ अगवड वेठवानो वारो आवशे एवी समजण रही छे, तेथी रूपवैविध्य टाळीने कोई एक ज रूप आपवामां कशो बाध मान्यों नथी.

क्रियापदोमां, अलबत्त, कर्मणि, प्रेरक ने कृदंतनां रूपो अलग साचव्यां छे. मूळभूत रीते शब्द अत्यारे वपराशमां होय त्यां पण आ रूपो अत्यारथी जुदां पडतां देखायां तो ए खास साचव्यां छे. जेमके 'रहइ' लेवानी जरूर नहीं, पण 'रहतउ' (अत्यारे 'रहेतो'), 'रहितउं' 'रहीतूं' 'रहीइ' (कर्नणि), 'रहिवउं' 'रहाविउ' ए रूपो लीधां छे.

(११) ज्यां एक ज लिंगनुं रूप मळ्युं छे त्यां एम ने एम राख्युं छे, परंतु भिन्नभिन्न लिंगनां रूपो मळ्यां त्यां एक ज लिंगनुं – सामान्य रीते नपुंसकलिंगनुं रूप राख्युं छे. आम छतां आवश्यकता लागी त्यां भिन्नभिन्न लिंगनां रूपो साचव्यां छे.

एक नियम तरीके आवुं बधुं विचारेलुं छे, छतां, आरंभमां कह्युं तेम, एमां सो टका एकरूपता रही हशे एवी खातरी आपी शकाय तेम नथी. थयुं छे एवुं के साव प्राथमिक तबके मारा अंगत रसथी हुं प्राप्त शब्दकोशोमांथी कार्ड करावतो हतो त्यारे उच्चारभेदवाळा तथा संस्कृत अने अन्य घणा मने परिचित लागता शब्दो काढी नाखतो हतो. पछीथी प्राकृत जैन विद्याविकास फंडने आश्रये में विधिसर रीते योजना हाथमां लीधी त्यारे शब्दपसंदगीनी बाबतमां डॉ. हरिबञ्चभ भायाणीनी साथे चर्चा करी. एमणे थोडा उदार थवानी भलामण करी. खास करीने एटला माटे के आपणे त्यां मध्यकालीन भाषानुं ज्ञान घणुं ओछुं छे ने थोडा वधु शब्दो हशे तो ए उपयोगी थशे ज. आम जे

पुस्तकोनां कार्ड थई गयां हतां एमां केटलाक शब्दो फरीने दाखल करवानी स्थिति आवी. एनो प्रयत्न तो कर्यो छे, पण ए प्रयत्न पूरो सफळ थयो हशे, एकसरखो नियम प्रवर्त्यो हशे एम कहेवुं मुश्केल छे.

संपादित ग्रंथोमांथी शब्दो लेवा जतां सौथी वधु मूंझवनारी बाबत तो ए बनी छे के एमां कृतिपाठना भूलभरेला वाचनने कारणे अथवा पाठनी भ्रष्टताने कारणे केटलाक खोटा शब्दो आवी गया छे. शब्द ज खोटो होय तो आ संकलित कोशमां केवी रीते आवी शके ? एटले आरंभमां तो आवा शब्दो छोड़ी देवानुं राख्युं हतुं. पण पछी देखायुं के केटलेक स्थाने पाठदोष के वाचनदोष तो पकडाय छे, पाठांतरनी मददयी के तर्कथी पाठने सुधारी शकाय छे, ने परिणामे मध्यकाळनो एक लाक्षणिक शब्द हाथमां आवे छे. ए शब्द केटलीक वार अन्यत्रथी भाग्ये ज मळतो होय. आवा शब्दने जतो करवानुं जिगर केम चाले ? पण आ रीते हाथमां आवेलो शब्द कंई मूळ संपादित ग्रंथमां न होय. तो एने आ संकलित कोशमां मूळ ग्रंथनो आधार आपीने केवी रीते मूळी शकाय ? मथामण करतां आ गूंचनो मार्ग मळ्यो. मूळ ग्रंथनो शब्द तो राखवो ज ने कोंसमां साचो शब्द मूळवो. ए साचा शब्दने पाछो एना वर्णक्रममां मूळवो अने त्यां मूळ ग्रंथना शब्दनो प्रतिनिर्देश करवो.

दाखलाओथी आ वात बराबर समजाशे. मूळ आधारग्रंथमां 'उथउ' शब्द नोंधायेलो छे. पण संदर्भमां 'ओघो', जैन मुनिनुं रजोहरण' ए अर्थ स्पष्ट छे तेथी पाठ 'उघउ' ज होवो जोईए. 'उथउ' ए हस्तप्रतनो भ्रष्ट पाठ होय के संपादकनो वाचनदोष होय. आ हकीकतने आ संकलित कोशमां आ रीते रजू करी छे :

उधउ जुओ उथउ

"उघउ [उघउ] " उपवा. [ओघो, जैन मुनिनुं रजोहरण]

शब्दनी पूर्व मूकेली फूदडी * ते पाठ खोटो के शंकास्पद होवानी निशानी छे.

[] चोरस कौंसमां मूकेल छे ते पाठ आ संकलित कोशना संपादके विचारेलो छे.

संकलित कोशना संपादकने पोते विचारेला पाठनी खातरी न होय एवं पण बने. पण मूळ पाठ संगत न लागतां एक तर्क रूपे बीजो पाठ मूक्यो होय. त्यां एनी पूर्वे पण पूदडी पूकी छे. जेमके,

"आरेणि ["आराडि]

***उपवी** [*उपची]

केटलीक वार पाठांतरमांथी ज साचो पाठ सांपड़्यो छे. ते () गोळ कौंसमां ज मूकेल छे. जेमके,

करमि (करमइता)

घाडि सईनी (घाडि सईनी)

खोटा वाचनमां केटलीक वार खोटो शब्दभंग रहेलो होय छे. जेमके, 'अनुभाव' ते खरेखर 'अनु भाव' (=अने भाव) छे. 'घडी अरघ घडी आल ज करे' ए पंक्तिमां संपादके 'आल' शब्द वांच्यो छे ते खरेखर 'घडीआल' (=समय दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर) वांचवानो छे. अहीं पण खरुं वाचन () गोळ कींसमां आपेल छे :

अनुभाव (अनु भाव)

आल (घडीआल)

कोई वार खोटो अब्दभंग बे शब्दोने स्पर्शे छे. 'तिप उतारीउ अचट' एम वांची संपादके 'अचट' शब्द शब्दकोशमां लीधो होय, परंतु 'तिप उतारी उअचट' एम 'उअचट' शब्द वांचवो वधु योग्य होय. 'दीवटी आकडिइ' एम संपादके वांच्युं होय अने ए वे शब्दोने शब्दकोशमां दाखल कर्या होय, परंतु 'दीवटीआ कडिइ' एम वांचवुं योग्य होय तेथी बन्ने शब्दो बदलाई जाय. आ छेल्ला दाखलामां शब्दो आ रीते आपवाना थया छे:

आकडिइ (दीवटीआ कडिइ)

कड़ जुओ आकड़िइ

दीवटी (दीवटीआ)

केटलीक वार एवुं बन्युं छे के मूळ ग्रंथना संपादके आपेलो शब्द आम बराबर होय परंतु एटलाथी अर्थ बराबर न थती होय के खोटो थतो होय ने मूळमांथी वधारे संदर्भ लेवो जरूरी होय. 'इक आछण पानी छांडती'मां संपादके 'इक आछण'ने शब्दकोशमां लीधेल होय पण 'आछण'नो संबंध 'इक' साथे नहीं, 'पाणी' साथे वास्तविक रीते होय, 'आछण पाणी' एटले 'नितरामणनुं पाणी' एवो अर्थ होय. त्यां 'इक आछण'ने स्थाने 'इक आछण पाणी छांडती' पूरी उक्ति आपवानी जरूर पडे.

केटलीक वार शब्दने अलग जोवा करतां रूढिप्रयोगना भाग रूपे जोवानुं वधारे अर्थपूर्ण होय छे. त्यां एम करवानुं पण आ संकलित कोशमां इष्ट गण्युं छे. जेमके,

अउले (अउले खाले वहे)

अधर (अधर किया)

अलजो (अलजो जाय)

अहीं नोंधवुं जोईए के कोई वार कौंसमां उक्तिनो वधारानो अंश मूकवानुं के

पाठ सुधारवानुं मूळ संपादके पण कर्युं होय छे. जोके झाझे ठेकाणे तो आवुं आ संकलित कोशना संपादके ज करवानुं थयुं छे.

प्राथमिक तबक्के छोडी देवायेला खोटा शब्दो बधा ज चोकसाईथी पाछा दाखल नहीं थई शक्या होय. ते उपरांत जेनां पाठांतरो कशो प्रकाश पाडनारां नहोतां के जेनो कोई अर्थ बेसाडी शकातो नहोतो एवा भ्रष्ट जणायेला केटलाक शब्दो तो आ संकलित कोशमां छोड्या ज छे. ज्यां भ्रष्ट पाठने सुधारतां हाथमां आवतो शब्द अत्यारे परिचित होय त्यां ए पण न ज लेवानो होय. जेमके 'सीगरि'ने स्थाने 'सागरि' पाठ नक्की यतो होय, तो 'सीगरि' शब्द अहीं लेवानी जरूर होय नहीं.

मूळ आधारग्रंथोना शब्दकोशोमां केटलीक छापभूलो ने सरतचूको पण पकडाई छे. शब्दकोशमां 'अखर', 'उत्तरीअ', 'कडुक' ने 'जटाजूटो' होय पण कृतिपाठमां 'अखर', 'उत्तरीअ', 'कटुक' ने 'जटाजूटा' होय. आवां स्थानोए केटलीक वार शब्द आ संकलित कोशमां सीधो सुधारीने ज मूक्यो छे; तो केटलीक वार मूळ शब्द राखी सुधारेलो शब्द बाजुमां () कौंसमां मूक्यो छे. ज्यां शब्द सीधो सुधारी लेवामां आव्यो छे त्यां मूळ ग्रंथमां शब्द ए रूपे न मळे ए देखीतुं छे. पण अभ्यासीने मूळ शब्द पकडी पाडतां मुश्केली नहीं पडे. ज्यां संभ्रमनी शक्यता होय त्यां मूळ शब्द ने सुधारेलो शब्द बन्ने आप्या ज छे.

मध्यकालीन लेखनपद्धितमां 'ख' 'ष' तरीके लखातो, 'ज'ने स्थाने 'य' लखातो अने 'ब'-'य' वच्चे अभेद जेवुं हतुं. 'वीसळदेव रासो'ना संपादके 'ख' उच्चारणवाळा शब्दो 'ष'मां ज आप्या छे, तो 'उक्तिरत्नाकर'मां एवा शब्दो 'ख'मां तेमज 'ष'मां पण अपायेला छे. अलबत्त, मोटा भागना कोशो आवा शब्दो 'ख'मां ज बताये छे. आ संकलित कोशमां आवा शब्दो 'ख'मां लई लीधा छे, सिवाय के 'ष' उच्चारण ज ज्यां अभिप्रेत होय. जा संकलित कोशमां 'ख'थी आरंभाता शब्दो मूळ ग्रंथमां शोधती वखते आ स्थिति लक्षमां राखवानी रहेशे.

'व'ने स्थाने 'ब' के 'ब'ने स्थाने 'ब' मूकवाथी शब्द वधारे स्पष्ट थतो होय तो अहीं एवुं कर्युं छे, मूळ शब्दनी बाजुमां सुधारेलो शब्द मूक्यो छे ने सुधारेलो शब्द एना वर्णक्रममां मूकी प्रतिनिर्देश कर्यों छे. जेमके,

अबंझ [अवंझ]

अवंद्र जुओ अबंझ

'ज'ने स्थाने 'य' लखायो होय त्यां पण आवुं कर्युं छे. जेमके,

जिमवरं जुओ यमिवउं

जसउ जुओ यसउ

[३५]

यमिवउं [जमिवउं] यसउ [जसउ]

छेहे, आ संकलित कोशमां शब्दोनो जे वर्णानुक्रम गोठववामां आव्यो छे ते विशे थोडी स्पष्टता जरूरी छे. एक महत्त्वनो फेरफार करवामां आव्यो छे ते 'क'ना स्थान परत्वे. गुजरातीमां 'क' वर्णमाळामां छेहें मुकाय छे. परंतु घणा शब्दोमां 'ल' 'क' वैकल्पिक छे. जेमके कल — कळ, कलियुग — कळियुग, घडियाल — घडियाळ. उपरांत, मध्यकाळनी लिपिमां तो 'ल' ज हतो ने 'ळ' पण 'ल' चिह्नथी दर्शावातो. केटलाक संपादकोए 'ल'नो 'ळ' कर्यों होय, केटलाके न कर्यों होय. 'वीसळदेव रासो'मां तो राजस्थानी उद्यारने अनुलक्षीने सर्वत्र 'ळ' ज छे, 'ल' नहीं. 'ल'-'ळ'ना भेदे शब्दोने अलग राखीए तो वस्तुतः एक ज छे ते शब्द वे ठेकाणे नोंधाय. एने कारणे एक ज शब्दना संदर्भो पण बे ठेकाणे चहेंचाई जाय अने शब्द तेमज शब्दार्थनुं समग्र चित्र ऊपसवामां अंतराय ऊमो धाय. आथी, आ संकलित कोशमां 'ळ'ने 'ल'नी साथे ज मूक्यो छे. आथी नीचेना जेवो शब्दक्रम नजरे पडशे.

- अतलिबळ, अतलीबल, अतुलीबल
- अमल, अमळ
- आगत्तिथु आगळो आगल्यो
- आलति, आलती आळपंपाळ आलरां

मध्यकाळनी गुजराती कृतिओनी हस्तप्रतो जोडणीनी एकरूपता दर्शावती नथी. केटलीक वार अल्पशिक्षित, अणघड लिहयाओने हाथे लखायेली हस्तप्रतो जोडणीनी अराजकता प्रगट करे छे. मध्यकालीन कृतिओना संपादको पण जोडणीनी एकरूपता भाग्ये ज ऊभी करे छे. सामान्य रीते आपणे त्यां हस्तप्रत मुजब ज जोडणी राखवानुं स्वीकारायुं छे. एमां फेरफार करवा जतां अनेक कोयडाओनो सामनो करवानो आवे. आथी एवुं बने छे के एक ग्रंथमां जे शब्द हस्व 'इ' के 'त'वाळो होय ते बीजा ग्रंथमां दीर्घ 'ई' के 'ऊ'वाळो होय; एक ग्रंथमां सानुस्वार शब्द होय ते बीजामां निरनुस्वार होय; एक ग्रंथमांनो 'श'वाळो शब्द बीजा ग्रंथमां 'स'वाळो होय, वगेरे. आवा शब्दो वेरियखेर ज रहे तो एमना विशेनी माहिती पण वेरियखेर रहे, जे कोई वार शब्दार्थनी प्रमाणभूतता प्रगट करवामां बाधक बने. आवा शब्दोने कोई पण रीते सांकळी शकाय

ए जरूरी हतुं. एक रस्तो जेम 'ल'-'ळ'नो भेद अवगण्यो हती तेम 'इ'-'ई' वगेरेनो भेद अवगण्यो एमने एक ज वर्णक्रममां मूकवानो हतो. परंतु आ कोशमां आवुं वारेवारे करवानुं श्राय तो एथी एनो उपयोग करनारना मनमां गूंच ऊभी धाय अने एमनी अगवडमां खारसो वधारो थाय. एथी जे शब्दो आवा जोडणीभेदथी आव्या होय तेमने एक स्थाने भेगा करी, बीजे स्थाने प्रतिनिर्देश करवो एवी पद्धति स्वीकारी. जेमके,

आलिंघन, आलीघन, आर्लीघन

आलीधन जुओ आलिंघन

आर्लीयन जुओ आलियन

आम भेगा करवानुं सळंगसूत्र रूपे थयुं नथी ने बन्ने ठेकाणे प्रतिनिर्देश करी बे शब्दोने सांकळवानुं पण कर्युं छे. 'श'-'स'ना भेद परत्वे तो एम ज कर्युं छे. आ बेमांथी एकेय प्रक्रिया न धई होय एवा शब्दो पण रही गया हशे. परंतु विरलपणे मळता के अर्थदृष्टिए ध्यान खेंचता शब्दो ज्यारे उच्चारणभेदथी आव्या होय त्यारे एमने कोई ने कोई रीते सांकळी लेवानी काळजी राखी छे.

पूर्वे अनुनासिक व्यंजनवाळो जोडाक्षर गुजरातीमां अनुस्वारथी दर्शाववानी व्यापक रूढि छे – 'अङ्क'ने स्थाने 'अंक', 'अन्त'ने स्थाने 'अंत'. मध्यकाळमां पण व्यापक रीते सानुस्वार रूप ज मळवुं छे. तेथी बज्ने रूपो मळवां छे त्यां एक ठेकाणे एकठां करी बीजा रूपने एने स्थाने मूकी प्रतिनिर्देश कर्यो छे. जेमके,

अन्तरि जुओ अंतरि

अंतरि, अन्तरि

ज्यां एकलुं अनुनासिक व्यंजनवाळुं रूप मळ्युं छे त्यां पण अनुस्वारवाळा रूपमां एने दर्शावी प्रतिनिर्देश करवानुं वलण राख्युं छे, जेथी अनुस्वारवाळा रूपे तो आवा शब्दो बधा मळे ज. जेमके,

चन्द्रोदय

चंद्रोदय जुओ चन्द्रोदय

आम छतां, जे शब्दो एना अनुनासिक व्यंजनवाळा रूपमां सहेलाईथी समजी शकाय तेवा होय ने एनुं सानुस्वार रूप अन्यत्रथी मळतुं ज होय त्यां बे रूपोने जोडवानों के प्रतिनिर्देश करवानों हंमेशां आग्रह राख्यों नथी.

आ संकलित कोशमां समावायेला शब्दकोशो जे कृतिओने आवरे छे ते बारमाथी अढारमा सैका सुधीमां रचायेली छे. आटला लांबा समयगाळामां भाषास्वरूप खास्सुं परिवर्तन पाम्युं होय अने ए परिवर्तनने झीलता शब्दो आ कोशमां दाखल थया होय. एटलेके एक ज शब्द भिन्नभिन्न स्वरूपे प्राप्त थयो होय. जेमके, अउखघ, उखघ,

ओखध; अउलवइ, उलवइ, ओलवइ; खइडां, खेडुं; कइलि, कयिल, केलि; किण, केण; उपत्रउं, उपन्युं; उब्भइ, ऊभइ वगेरें. 'ह', स्वार्थिक 'ल', 'इ', 'उ'ना प्रक्षेपो के लोपयी शब्दस्यरूप बदलायुं होय, के बीजां केटलांक ध्वनिपरिवर्तनो पण थयां होय. जेमके, उशंकल, ओशंकल, ओशंकल, ओशंकल; ऊलखउ, ऊलिखउ; उमाहउ, उमाहलउ; कउतिग, कुतम, कुतिक, कुहुतग, कौतग, कौतिक, कौतुक; कियारइ, किवारइ, किहारि, किहारे, किहिवारि वगेरे. आवा शब्दो अहीं जुदीजुदी रीते रजू थयेला देखाशे. केटलीक वार आवा शब्दोने एक स्थाने एकठा करी लेवामां आव्या छे ने पछी दरेक शब्दन एने स्थाने पण मूक्यो छे ने प्रतिनिर्देश कर्यो छे. केटलीक वार आवा शब्दोने अलग ज राखी प्रतिनिर्देश कर्यो छे. तो केटलीक वार शब्दोने अलग राख्या छे ने प्रतिनिर्देश पण कर्यो नथी. खास करीने जे शब्दस्वरूप अने अर्थ परत्ये कशी भ्रान्तिने अवकाश न होय ते परत्ये प्रतिनिर्देश करवानुं अनिवार्य लेख्युं नथी. अने ज्यां शब्दस्वरूपोनुं मळतापणुं जलदी ख्यालमां आवे एवं न होय के ज्यां अर्थनी लाशणिक छायाओ विकसी होय के लीधेला अर्थने घणा आधारोथी पृष्ट करवानो होय त्यां ए शब्दस्वरूपोने भेगा करवानुं अथवा जुदा राखी प्रतिनिर्देश करवानुं आवश्यक लेख्युं छे.

अहीं ए नोंधवुं जोईए के केटलीक वार आयां शब्दस्वरूपो मूळ ग्रंथना संपादके ज भेगां करेलां होय छे.

आधारग्रंथो

आ शब्दकोशमां दरेक मूळ शब्दो पछी तरत ए ज्यांथी प्राप्त थयो छे ते सघळा आधारग्रंथोनो निर्देश त्रांसां (इटॅलिक) बीबांथी करवामां आव्यो छे. ए माटे आधारग्रंथोना नियत करेला संक्षेपाक्षरो वापरवामां आव्या छे (जे संक्षेपाक्षरो पाछळ मूकेली आधारग्रंथोनी सूचि साथे जोडवामां आव्या छे). केटलीक वार एवं बन्युं छे के मूळ आधारग्रंथाना शब्दकोशमां शब्दनो जे अर्थ आपवामां आव्यो होय ते पछी शुद्धिपत्रकमां सुधारवामां आव्यो होय. आ संकलित कोशमां ए शुद्धिपत्रकनो अर्थ आमेज करवामां आव्यो छे अने तेथी आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरने 'शु' जोडीने दर्शाववामां आवेल छे. जेमके, आरारा-शु. केटलीक वार मूळ आधारग्रंथमां शब्दकोश उपरांत टिप्पण के अनुवाद पण होय छे. शब्दकोशमां अर्थ आपवामां न आव्यो होय ते टिप्पण के अनुवादमांथी मळे अथवा शब्दकोशना अर्थ करतां टिप्पण के अनुवादमां कंईक जुदो अर्थ होय अने ए वधारे बंधबेसतो होय एवं पण बन्युं छे. आ स्थितिमां टिप्पण के अनुवादनो आधार लेवानुं थयुं छे अने ए 'टि' के 'अनु' जोडीने दर्शाव्यं छे. जेमके, गुर्जरा-टि., हरिवि-अनु.

आधारग्रंथना निर्देश पूर्वे * निशानी आवे छे ते एम सूचवे छे के ए आधारग्रंथमां नोंधायेलो अर्थ यथायोग्य नहीं होई अहीं छोडी देवामां आव्यो छे. जेमके, अणगाल *अभिक. [अकाल, खराब समय] चीरस कौंसमांना अर्थो संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थ छे.

अच**र्यु** अखाका. अखाछ. अखेगी. "नरका. न कहेलुं, अवर्णनीय

आ दाखलामां *नरका*.नो अर्थे छोडवामां आव्यो छे पण बाकीना त्रण ग्रंथोमां तो शब्दनो अहीं नोंधेलो साचो अर्थ ज मळे छे एम समजवानुं छे.

अजमाल * अखाका. *अखाछ. चित्तसं. ?, [*उजमाळ, *उञ्चल, *प्रकाशमान, *प्रकाशित]

आ दाखलामां अखाका. अने अखाछ.ना अर्थो छोडवामां आव्या छे, ज्यारे चित्तसं.मां अर्थने स्थाने '?' छे एम समजवानुं छे. चोरस कौंसमां संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थो पण केवळ तर्करूप ने तेथी संदेहास्पद छे एम फूदडीनी निशानी बताये छे.

आधारग्रंथमां शब्द जे स्थाने होवानुं निर्देशायुं होय त्यां ए घणी वार मळ्यो नथी. आनुं कारण, अलबत्त, पृष्ठ के कडी-पंक्तिना अंकोमां थयेली छापभूल होय छे. आ कोशना संपादके साचो स्थाननिर्देश शोधवा प्रयत्न कर्यो छे अने घणी वार मळी पण गयो छे. तो स्थाननिर्देश घणा प्रयत्नो पछी पण न मळ्यो होय एवुंये बन्युं छे. केटलीक वार आधारग्रंथना संपादकधी स्थाननिर्देश करवानुं चुकाई गयुं होय छे. स्थाननिर्देश न जङ्यो होय त्यां शब्दार्थनी चकासणी न थई शकी होय ए स्वाभाविक छे. आ स्थितिने दर्शाववा आधारग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे ० मींडानी निशानी करेल छे. जेमके,

किलिट्ड *०ऐतिका. क्लि*ष्ट

अहीं एम समजवानुं छे के *ऐतिका*.मां आ शब्दनो स्थाननिर्देश नथी अथवा खोटो छे ने साचो स्थाननर्देश मेळवी शकायो नथी. अर्थ, अलबत्त, स्वीकार्य ज लाग्यो छे.

डुडी कामा(त्रि). ०कामा(शा). दांडी, ढंढेरो

अहीं एम समजवानुं छे के आपेलो अर्थ तो कामा(शा).मांथी मळ्यो छे, परंतु एमां स्थाननिर्देश नथी अथवा साचो नथी.

ए ध्यानमां राखवानुं छे के आ संकलित कोशना संपादके घणे स्थाने साची स्थानिर्देश शोधी लीधो छे पण ए कंई आ कोशमां आपी न शकाय. एटले मूळ आधारग्रंथ सुधी जनारने अहीं ० निशानी न होय तेवा ग्रंथमां पण निर्दिष्ट स्थाने शब्द न जडे एवुं बनशे. ते उपरांत जे शब्दनो अर्थ चकासवानी जरूर पड़ी होय तेनुं स्थान ज आ संकलित कोशना संपादके शोध्युं होय. अन्य शब्दो परत्वे खोटा स्थाननिर्देशो होय तोपण अहीं ० निशानी न होय.

आ संकलित कोशमां अमुक प्रकारना उच्चारभेदोथी आवेला शब्दो केटलीक वार साथे लई लीधा छे ने बधा आधारग्रंथोने एकसाथे मूकी दीधा छे. त्यां कया उच्चारभेदवाळो शब्द कया आधारग्रंथमांथी छे एनी स्पष्टता नथी थती. तेथी मूळ ग्रंथ सुधी जनारने ए बधा विकल्पोनो प्रयत्न करी जोवानो रहेशे. जेमके,

अधकेर, अधिकेर उपवा. प्रवोप्र. षडावा.

आ दाखलामां निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी कोईमां अधकेर ने कोईमां अधिकेर हशे, कोईमां बन्ने पण होई शके. ए हकीकतने लक्षमां राखीने मूळ ग्रंथ सुधी जनारे एमां शब्द शोधवानो रहेशे.

केटलीक वार उच्चारभेदोने लुप्त करी शब्दनुं कोई सामान्य रूप स्वीकार्युं छे त्यां मूळ ग्रंथमां शब्द शोधवानुं थोडुं वधारे मुश्केल बनवानुं ए वात आगळ करी छे. एनो दाखलो लईए तो आ संकलित कोशमां

पडखड़ उक्तिर. कार्द(शा). "गुर्जरा. जिनरा. नलरा. नलख्या. प्रेमाका. विराप. शंगामं. राह जुए, थोभे; "अखाका. [थोभे, विचारे]

आम मळे छे, तेमां निर्दिष्ट आधारग्रंथोमां वस्तुतः पडख-, पडखइ, पडखतउ, पडिख, पडखी, पडखीने, पडखे एम जुदाजुदा शब्दो छे. (पडिखइ, अलबत्त, अलग राखेल छे.) मूळ आधारग्रंथमां शब्द शोधनारे आ स्थिति लक्षमां राखवानी रहेशे.

'ख'वाळो शब्द मूळ आधारग्रंथमां 'ष'मां होय एवुं पण बनवानुं ते वात पण आपणे आगळ करी गया छीए. *उक्तिर. उपवा. देवरा. वीसरा.* ए ग्रंथोमां 'ख'वाळा शब्द 'ष'मां मुकायेला छे.

उपरांत, जुदाजुदा ग्रंथनी शब्दक्रमनी थोडी जुदीजुदी पद्धति जोवा मळी छे. जेमके, प्रवोप्र.मां 'क्ष' वर्णमाळाने छेडे छे, 'क'ना जोडाक्षरना स्थाने नहीं. ऐतिरा.मां अनुस्वारवाळा शब्दो अनुस्वार वगरना शब्दो पूर्वे मुकाया छे, जेमके 'आ' पूर्वे 'आं'. (जोके 'अं'मां आ नियम जळवायो नथी.) षडाबा.मां अनुस्वारवाळा शब्दो जे-ते वर्णना सर्व स्वरांत रूपो पूरा थया पछी आवे छे. जेमके, 'का', 'कि', 'कु' वगेरे पछी 'कां' 'किं' 'कुं' वगेरे. मूळ आधारग्रंथोनी वर्णक्रमनी आवी भिन्नभिन्न रीतने कारणे पण एमां शब्द शोधवामां थोडी महेनत पडवानी.

छेल्ले, मूळ आधारग्रंथोमां अवारनवार सरतचूकथी वर्णक्रमभंग पण थयो छे, कोई वार तो मोटो. ए स्थिति पण आ संकलित कोशनो शब्द आधारग्रंथोमां शोधवामां आडे आववानी.

पण आ संकलित कोशनो उपयोग करनारे एटली खातरी राखवानी छे के अहीं

नोंधायेलो शब्द आधारग्रंथमां उद्यारभेदथी, क्रमभेदथी के क्रमभंगथी पण जरूर मळवानो. तेथी ए माटे ए जरा आमतेम खांखांखोळां करे ए जरूरी छे.

आधारग्रंथोनी केटलीक खासियतो आ वछी ए ग्रंथोनो संक्षिप्त परिचय आप्यो छे एमांथी जाणवा मळी शकशे.

शब्दार्थ

आधारग्रंथोना निर्देश पछी शब्दार्थ सादां अने सीधां बीबांमां आपेल छे. केटलाक आधारग्रंथोमां शब्दार्थ अंग्रेजीमां छे – जेमके उपवा., गुर्जरा., वसंवि(व्रा)., वीसरा. अने षडावा.मां; केटलाकमां हिंदीमां छे – जेमके ऐतिका. तथा जिनरा.मां; तथा कोईकमां संस्कृतमां – जेमके उक्तिर. अने प्राचीसं.मां. अहीं आ शब्दार्थोंनो गुजरातीमां अनुवाद करी लीधो छे, सिवाय के हिंदी के संस्कृत शब्द गुजरातीमां पण वपरातो होय.

आ एक संकलित कोश होई एनो मुख्य आशय तो शब्दो तेमज शब्दार्थो बन्ने मूळ आधारग्रंथोमां होय ते ज आपवानो होय. परंतु मूळ आधारग्रंथमां जेम खोटा पाठवाचनने कारणे के भ्रष्ट पाठने कारणे खोटा शब्द आदी गया छे एम एने लीधे के संपादकनी समजफरने लीधे खोटा शब्दार्थ पण आवी गया छे. आ कोशने मात्र संकलित कोश नहीं पण संशोधित कोश बनाववानो आशय रह्यो होवाथी जेम पाठसुधारणा करवानी थई तेम शब्दार्थसुधारणा पण करवानी थई छे. पाठसुधारणा करतां मूळ ग्रंथनो शब्द बदलायो, छतां मूळ ग्रंथनो शब्द राखीने ज सुधारेलो शब्द आप्यो, केमके मूळ ग्रंथमां शब्द जेम होय तेम राखवो अनिवार्य हतो. ए द्वारा ज मुळ ग्रंथना प्रयोग सुधी पहोंची शकाय. पण शब्दार्थ बदलातो होय त्यां मूळ शब्दार्थ साचववो अनिवार्य न हतो केमके एथी मूळ ग्रंथ सुधी पहोंचवामां कोई बाधा ऊभी थती नहोती. ने मूळ शब्दार्थ शुं हतो ए जाणवा इच्छनार मूळ ग्रंथ सुधी पहोंचीने ए सहेलाईथी मेळवी शके तेम हतूं. बीजी बाजुथी खोटा शब्दार्थीथी आ कोशने भरी देवाथी एनो उपयोग करनार मोटा भागना वर्ग उपर निरर्थक बोजो पडे ने एने निरर्थक गुंचवावानुं थाय एवं बनतुं हतुं. वळी, शब्दार्थ साचो होवा विशे शंका जाय पण ए खोटो होवानुं खात्रीपूर्वक कही न शकाय अथवा तो ए अपर्याप्त होय अने एनी पूर्ति ज करवानी जरूर होय एवं पण केटलाक दाखलाओमां देखातुं हतुं. आम शब्दार्थनी कंईक संकूल परिस्थिति सामे आवी अने शब्दार्थने केम रजू करवा ते जरा कोयडारूप बन्यू.

उपरांत, मूळ ग्रंथना शब्दार्थ छोडवाना थाय के ए शंकास्पद लागे के एमां पूर्ति करवानी थाय त्यारे कोशना संपादक पोताना अर्थ आपी शके के न आपी शके, के खातरीपूर्वक न आपी शके – केवळ तर्क रूपे ज आपी शके, आम विविध स्थितिओ संभवती हती. आ बधी स्थितिओमां शुं करवुं अने शब्दार्थने केम रजू करवा ए विशे चोक्कस नीतिनियम नक्षी करवा जरूरी हता. केटलीक मधामणने अंते शब्दार्थ रजू करवानी नीचे प्रमाणेनी पद्धति नीपजी आवी:

(9) मूळ ग्रंथमां स्पष्ट रिते खोटो शब्दार्थ होय ते आ शब्दकोशमां न ज लेवो. आ कोशना संपादक पोताना तरफथी अर्थ आपी शके तेम होय त्यां ए [] चोरस कौंसमां मूकवो, एणे आपेलो अर्थ खातरीपूर्वकनो न होय, तर्करूप होय त्यां एनी आपळ * फूदडी करीने ए स्थिति दर्शाववी अने ए कोई प्रकारनो अर्थ आपी शके तेम न होय त्यां प्रश्नार्थ ज मूकवो. कोई एक ग्रंथमांथी एक शब्दनो खोटो अर्थ छोडवानो थाय अने बीजा ग्रंथोमांथी एनो साचो अर्थ मळी रहेतो होय त्यां, देखीती रीते ज, आ कोशना संपादके कई करवानुं न रहे. एणे जे ग्रंथनो अर्थ छोड्यो होय तेना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे * फूदडी मूकीने परिस्थितिनो निर्देश मात्र करवानो रहे.

थोडा दाखला जोईए :

पड (पड पितराई) *प्रेमाका. [पितराईना पितराई, वधु एक पेढी दूरना पितराई] पड-पितराई *नरका. [दूरना पितराई]

प्रेमाका.मां 'पड' शब्द छे ने एनो अर्थ आप्यो छे 'रणपट, युद्धनुं मेदान'. कृतिमां शब्दनो प्रयोग आम मळे छे — मेल मेल रे पड, पितराई ! दुर्योधनपुत्र लक्ष्मण अभिमन्युना सकंजामां आवतां ए आंखमां आंसु साथे आ उक्ति बोले छे. मूळ ग्रंथना संपादके आपेलो अर्थ पहेली दृष्टिए बेसतो लागे, पण जरा विचार करतां आपणने शंका थाय छे के लक्ष्मण अभिमन्युने युद्धमेदान छोडवानुं कहे के पोताने छोडवानुं कहे ? आ ज कृतिमां अन्यत्र थयेलो 'पड पितराई' प्रयोग पण आपणी नजर सामे आवे छे :

मस्तक छेदवा आवतो दीठो ज्यारे **पड-पितराई** पड्यां पड्यां अभिमन्यूने क्रोध आच्यो भराई.

दुःशासनपुत्र काळकेतु अभिमन्यु सामे आवे छे तेनो अहीं उझेख छे. देखीती रीते अहीं काळकेतुने ज 'पड-पितराई' कह्यो छे. हिंदीमां प्रपौत्र माटे परपोता, पडपोता एवा शब्दो छे ते जोतां 'पडपितराई'मां 'पड' 'प्र'मांथी आवेलो छे एनी शंका रहेती नथी. प्रपौत्र, परपोता के पडपोता एटले पौत्रनो पुत्र, तो 'पडपितराई' एटले पितराईनो पितराई, वंधु एक पेढी दूरनो पितराई. अर्जुन ने दुर्योधन के दुःशासन ए पितराई, तेथी अभिमन्यु अने लक्ष्मण के काळकेतु ए पडपितराई. तेथी 'मेलमेल रे, पड-पितराई' एम पाठ सुधारी लक्ष्मण पोताना पडपितराई अभिमन्युने पोताने छोडी देवा वीनवे छे

एम अर्थ लेवानो थाय. परिणामे मूळ ग्रंथनो अर्थ छोडी आ कोशना संपादकने पोतानो अर्थ मूकवानो थयो छे. मूळ ग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे * फूदडी करीने अने कोशना संपादकनो अर्थ चोरस कौंसमां मूकीने आ दर्शाववामां आव्युं छे.

नरका.मां 'पडिपितराई'नो 'पितराईओनो समुदाय' एवो अर्थ आपवामां आव्यो छे, पण कृतिमांनी पंक्ति आ प्रमाणे छे : पड-पितराई भोजाई वहेवाईनां शोधी शोधी दीधां वस्त्र पोती. कुंवरबाईना मामेराप्रसंगे थती पहेरामणीनुं आ वर्णन छे. भगवान पहेरामणी करवा बेठा एटले कुंवरबाईनां सासिरयांने केटलो लोभ लाग्यो ते दर्शावती आ पंक्ति छे. एटले एमां 'पितराईओनो समुदाय' नहीं, 'दूरना पितराई' एवो अर्थ ज धिटत गणाय, अने उपर जोयुं तेम ए अर्थने ज भाषादृष्टिए टेको मळे तेम छे. 'समुदाय'नो अर्थ आपनार आ शब्दमां कशुं नथी. एटले ए अर्थ छोडवो ज पडे. अहीं पण मूळ ग्रंथना संक्षेपाक्षर पूर्वे * फूदडी करी अने कोशना संपादकनो अर्थ [] चोरस कौंसमां मूठीने आ स्थितिनो निर्देश कर्यों छे.

पडोचा *उषाह. [*अपेक्षा] [*प्रा.पडुच्चा, सं.प्रतीत्य]

उषाह.मां आ शब्दनो अर्थ 'विलाप' आप्यो छे. करी पडोचा कुंवरी रडइ ए पंक्तिमां ए अर्थ बेसी जाय छे माटे अनुमानथी ए आपवामां आव्यो जणाय छे पण आ शब्दनो ए अर्थ लेवा माटे कशो आधार नथी. 'विलाप करीने रडे छे' एम आमां पुनरुक्ति पण थाय छे. तेथी संकलित कोशना संपादके प्राकृत कोशना शब्दने आधारे 'अपेक्षा' एवा अर्थनो तर्क कर्यो छे. स्वप्नमांथी जागेली अने अनिरुद्धनो संग गुमाव्यो छे एवी उषानी आ उक्ति होई ''अनिरुद्धनी अपेक्षा करीने रडे छे'' एम कदाच अर्थ होई शके. आ अर्थ खातरीपूर्वकनो नहीं, पण एक अटकळ रूपे होई एना पूर्वे * फूदडी मूकी छे.

परगडउ आरारा. *ऐतिका. ऐतिरा. प्राचीफा. प्रकट, प्रसिद्ध

अहीं एम समजवानुं छे के *ऐतिका*.मां आपेलो अर्थ छोडवानो थयो छे अने साचो अर्थ अन्य निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी मळयो छे ते ज छे.

(२) मूळ ग्रंथनो अर्थ खातरीपूर्वक साचो के खोटो कही शकाय तेवुं न होय एटलेके शंकास्पद लागतो होय त्यां ए अर्थ आपी एनी पूर्वे * फूदडी करवी. संकलित कोशना संपादक अर्थ उमेरी शके त्यां उमेरे – खातरीपूर्वक के अटकळे. जेमके,

परिजयो नरका. *परिजयो सोनी, [*कोई अलंकार]

अहीं नरका.नो 'परिजयो सोनी' ए अर्थ शंकास्पद लाग्यो छे, ते साथे संकलित कोशना संपादके आपेलो 'कोई अलंकार' ए अर्थ पण अटकळरूप छे एम समजवानुं छे. **पराभव** *गुर्जरा*. अपमान, [तिरस्काऱ] (सं.); *लावल*. *पराजय, [तिरस्कार, अनादर]

अहीं *लावल.*नो 'पराजय' अर्थ शंकास्पद छे, पण 'तिरस्कार, अनादर' ए अर्थ संदर्भमां बराबर बेसे छे एम समजवानुं छे.

"परालें [पडाळे] *नरप.* "राते, [परसाळे]

ं अहीं मूळ ग्रंथनो 'परालें' पाठ अने तेनो 'राते' ए अर्थ बन्ने शंकारपद छे तेमज 'पडाळे' पाठ अने एनो 'परसाळे' अर्थ लेतां संदर्भमां बराबर बेसे छे एम समजवानुं छे.

(३) मूळ ग्रंथमां ज आपेला अर्थ सामे प्रश्नार्थ मूकी संशय व्यक्त कर्यो होय त्यारे जो अर्थ साधार ठरतो होय तो प्रश्नार्थ रद करवो; ए अर्थ साव खोटो ज साबित थतो होय तो छोडी देवो; अन्यथा एम ने एम राखी संकलित कोशना संपादकथी खातरीपूर्वकनो के अटकळे अर्थ आपी शकातो होय तो आपवो. जेमके,

परीकरी प्रेमप. वींटाळी ?

अहीं मूळ ग्रंथना संपादके ज पोते आपेला अर्थ परत्वे संशय व्यक्त कर्यो छे ने संकलित कोशना संपादकने एमां कंई सुधारवा जेवुं लाग्युं नथी एम समजवानुं छे.

परीभव कामा(त्रि). हार, अपमान ?, [कष्ट, पीडा]

अहीं मूळ ग्रंथना संपादके संशयपूर्वक आपेला अर्थ खोटा छे एम खातरीपूर्वक कही शकातुं नथी, पण 'कष्ट, पीडा' ए अर्थ योग्य रीते बेसी जाय छे एम समजवानुं रहे छे.

पुंछ सिंहा(शा). झडपी ?, [*पहोंच, *गित]

अहीं मूळ ग्रंथनो अर्थ तो शंकास्पद रह्यो ज छे ते साथे संकलित कोशना संपादके आपेला अर्थ पण अटकळपूर्वकना ज छे एम समजवानुं छे.

(४) मूळ ग्रंथना संपादकने शब्दार्थ बेठो न होय तेथी एणे कोई शब्दार्थ आप्यो ज न होय के केवळ प्रश्नार्थ मूकी चलाव्युं होय एम पण जोवा मळे छे. मूळ ग्रंथमां शब्दार्थ न होय त्यां '–' गुरुरेखा मूकी ए स्थिति दर्शाववी अने प्रश्नार्थ होय त्यां एम ने एम राखवो तथा संकलित कोशना संपादकथी अर्थ आपी शकाय तो आपवो. (जो के आरंभमां '–' के '?' मूकवाने बदले मूळ ग्रंथनो अर्थ छोड्यानी निशानी करी हती जे पछी सुधारी लीघुं छे, पण क्यांक सुधारवानुं रही गयुं पण हशे.)

दाखला तरीके.

अरंण (अरंण मूके) मदमो. -, [*अरण्यमां मूके, *दूर राखे, *छोडे] अहीं मूळ ग्रंथना संपादके अर्थ आप्यो नथी अने संकलित कोशना संपादके अर्थनी अटकळ करी छे एम समजवानुं छे.

पांडर *प्राचीसं.* ?, [*फिक्कुं]

अहीं मूळ ग्रंथमां शब्दार्थने स्थाने केवळ प्रश्नचिह्न छे. संकलित कोशना संपादकने 'फिक्कुं' ए अर्थनी शक्यता जणाई छे एम समजवानुं छे.

पिहिति आरारा. ?, [रांधेली दाळ, लचको]

अहीं पण मूळ ग्रंथना संपादके कोई शब्दार्थ न आपतां प्रश्नचिह्न मूक्युं छे, पण संकलित कोशना संपादकने 'रांधेली दाळ, लचको' ए निश्चित अर्थ जणायो छे एम समजवानुं छे.

उक्तिर.ना शब्दार्थ आ संकलित कोशमां रजू करवामां जरा जुदी रीत अपनाववानी थई छे ए तरफ खास ध्यान दोरवं जोईए. उक्तिर.मां संस्कृत पर्यायो आपवामां आव्या छे, एनो अहीं गुजराती अनुवाद करी लेवानुं राख्युं छे, पण एमां मुंझवणभरी परिस्थितिओ सामे आवी छे. केटलाक संस्कृत शब्द एकथी वधारे अर्थ धरावता होय, केटलाक शब्द संस्कृत शब्दकोशोमां मळे नहीं अने प्राकृत के देश्य शब्दने संस्कृत रूप अपायुं होवानो संभव लागे, केटलीक वार मुळ शब्दनुं ज कृत्रिम संस्कृतीकरण करी नाखवामां आव्युं होय. आथी उक्तिर.ने कयो अर्थ अभिप्रेत हशे ते नक्की करवानुं मुश्केल बनी जाय. उक्तिर.मां जूज अपवादो बाद करतां शब्द वाक्यमां वपरायेलो नथी. तेथी ए चावी तो अहीं आपणा हायमां नथी. उक्तिर ना जे शब्दो अन्य ग्रंथोमां पण वपरायेला मळे छे त्यां एना अर्थ पण आपोआप मळी जाय छे. ते उपरांत, *उक्तिर* ना घणा शब्दो अमुकअमुक जूथमां नोंधायेला छे, जेमके खाद्यपदार्थने लगता शब्दो, जीवजंतुओने लगता शब्दो, घरवखरीने लगता शब्दो, विविध प्रकारनी स्थितिओने लगता शब्दो वगेरे. आमांथी केटलीक वार सूचन मळे छे ने अर्थनिर्णय थई शके छे. पण बधी वखते एम थई शकतुं नथी. अने जूथमां न गोठवाता होय, छूटा रही जता होय एवा शब्दो पण घणा होय छे ज. आथी उक्तिर.ना शब्दार्थ रज् करवामां आवी पद्धति अपनाववी पडी छे.

(9) ज्यां अपायेलो संस्कृत शब्द परिचित ज होय त्यां ए ने एम ज राखी देवो. जैमके,

अउघ उक्तिर. अयोध्या

(२) ज्यां संस्कृत शब्दनो एक अर्थ निश्चित थई 'शकतो होय त्यां ए मूकवो अने गुजराती शब्दनी व्युत्पत्तिनी के एवी कोई दृष्टिए आवश्यक होय तो संस्कृत शब्द कौंसमां बताववो. जेमके,

अउधारिबुं उक्तिर. अवधारवुं, ध्यानमां लेवुं

[४५]

अउलवइ उक्तिर. ओळवे, कपटथी पडावी ले (सं.अपलपति)

३. ज्यां एक अर्थनी अटकळ ज धई शकती होय के एकथी वधु अर्थनी शक्यता देखाती होय त्यां एवा अर्थो संपादकना [] चोरस कौंसमां फूदडी करीने ज दर्शाववा. जेमके,

पाटलउ उक्तिर. [*पाटले वेसाडी करातो सत्कार] (सं.पाटाचारः) वकोर उक्तिर. [*शोर, *हांसी] (सं.वर्करिका) [दे.बक्कर]

(४) ज्यां अपायेला पर्यायनो कोई अर्थ पकडी ज न शकाय त्यां संकलित कोशना संपादक तरफथी [] चोरस कौंसमां '?' मूकवो. आ संयोगोमां पर्याय-शब्द कृत्रिम संस्कृतीकरणवाळो होय तोपण कौंसमां मूकी साचववो. जेमके,

फसलसीधुं उक्तिर. [?] (सं.उल्लासित-संधिकम् / उत शलंध्रं)

जुदाजुदा ग्रंथोमांथी एक ज शब्दना अर्थ एकथी वधु पर्यायो रूपे मळ्या होय त्यारे अहीं एने संकलित करी लीधा छे. ने जरूर लागी त्यां पर्यायोमांथी पसंदगी करी लीधी छे तेमज क्यांक शाब्दिक फेरफार करी लीधो छे. आथी निर्दिष्ट ग्रंथोमांथी कोईमां शब्दनो अहीं अपायेलो अर्थ बराबर ए ज शब्दरूपमां न मळे एम बने, पण ए त्यां तत्त्वतः तो जोई ज शकाशे.

तत्त्वतः एक ज अर्थ जुदाजुदा पर्यायशब्दोथी दर्शावातो होय त्यारे ए पर्यायशब्दो अल्पविराम-विह्नथी जुदा पाडी एकसाथै लीघा छे; पण जे अर्थो के अर्थछायाओ तत्त्वतः भिन्न छे तेमनी वद्ये अर्धविरामचिह्न मूक्युं छे. आमां ज्यां जुदाजुदा आधारग्रंथो जुदाजुदा अर्थो आपता होय त्यां एमने पण जुदा पाड्या छे. जेमके,

उफराटुं, उफराटुं, ऊफराटुं, ऊफरांटुं दशस्क (१). प्रेमाका. ऊंचुं करेलुं, उलाळेलुं; *कादं(शा). *नलाख्या. *प्रबोप. *प्रेमाका. [पराङ्मुख, अवळुं, पीठ फेरवेलुं]; शृंगामं, सिंहा(शा). अवळुं, [प्रतिकूळ]; शृंगामं. आडुं, अवळुं, [ऊलटी दिशामां]; [अवळो भाग, पूंछडुं]

अर्धविरामचिह्न ';' थी जुदी पाडेली आ शब्दनी पांच अर्थछायाओ अहीं नोंधायेली छे एम कहेवाय. बीजी रीते जोईए तो आ शब्द प्रेमाका.मां बे अर्थछायाओमां अने शृंगामं.मां त्रण अर्थछायाओमां वपरायेलो मळयो छे.

आ संकलित कोशमां घणा अर्धनिर्णयो करवाना थया छे एमां मुख्य परिवळ अने चावी तो शब्दोना कृतिओमां थयेला वास्तविक प्रयोगो छे. प्राप्त अर्थ, शब्द कृतिमां जे रीते वपरायो होय ए जोतां असंगत के शंकास्पद लागे एटले साचो अर्थ शोधवा तरफ वळवानुं थाय. केटलीक वार तो शब्दना घणा प्रयोगो एकठा थवाथी एमांथी ज खरा अर्थनो संकेत थयो छे. पछी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशी, फारसी, उर्दू, हिंदी, राजस्थानी अने गुजराती कोशोनी भरपूर मदद लीधी छे. आ कोशोए कोई वार शब्दना अर्थने आबाद उघाडी आप्यो छे. अलबत्त, शब्द त्यां उद्यारभेदथी पडेलो होय ने एना सुधी पहोंचवा मथामण करवी पडी होय एवं बन्युं छे. डॉ. भायाणीनी शब्दचर्चाओ-शब्दकथाओ, डॉ. सांडेसरानां *लेक्सिकोग्रेफिकल स्टडिझ इन जैन संस्कृत* ने वर्णकसमूचय जेवां संपादनो, वनस्पतिकोशो, जैनधर्मविचारना ग्रंथो वगेरे प्रकारनां केटलांक इतर साधनोनो पण वारंवार उपयोग कर्यो छे अने ए उपयोग सार्यक पण थयो छे. डॉ. भायाणीना परामर्शननो लाम वारंवार लीघो छे ते उपरांत जुदाजुदा विषयना केटलाक जाणकारोने पूछवानुं पण अवारनवार बन्युं छे. आ संपादकनी पोतानी मध्यकालीन भाषासाहित्यनी जाणकारी पण केटलेक स्थाने काम आवी होय. एक ज शब्द माटे अनेक साधनोमां खांखांखोळां करवा पड़्या छे ने अंते संपादके पोतानां सूझ अने विवेक वापरवा पड़्यां छे एवुं पण बन्युं छे. आ आखी प्रक्रिया अहीं बतावी न शकाय तेमज आ संकलित कोशमां मूळना अर्थो ज्यां बदल्या छे त्यां कया आधारे एम कर्युं छे ए पण कोशमां न दर्शावी शकाय. पण संपादके ज्यां अर्थ बदल्या छे त्यां आधारपूर्वक ज एम कर्युं छे एनी खातरी जरूर आपी शकाय. ज्यां नवा अर्थ विशे पूरी खातरी थई शकी नथी त्यां शंकाचिह्न मूकवानी पण काळजी राखी छे. आम छतां संपादकनी सरतचूक के गेरसमज काम नहीं करी गई होय एवं तो साव न कही शकाय.

आ कोशमां अर्थनिर्णयनी प्रक्रिया केवी रीते चाली छे एनो थोडो अंदाज आ ग्रंथमां पाछळ थोडीक शब्दार्थचर्चा मूकी छे तेना परथी आवशे.

कोशमां अर्थनिर्णय माटे उपयोगमां लीधेला ग्रंथोनी यादी पण पाछळ जोडवामां आवी छे.

शब्दमूळ

शब्दार्थ आप्या पछी कौंसमां शब्दमूळ एटलेके व्युत्पत्ति आपवामां आवेल छे. गोळ कौंस()मां छे ते मूळ ग्रंथमांथी प्राप्त थयेल शब्दमूळ छे, चोरस कौंसमां छे ते आ संकलित कोशना संपादके आपेल छे. आ विशे आरंभे ज स्पष्टता करवी जोईए के कौंसमां बधे चुस्त रीते व्युत्पत्ति अभिप्रेत नथी. केटलेक स्थाने मळतापणुं ज अभिप्रेत छे. एटले मध्यकालीन गुजराती शब्दने मळतो शब्द अन्यत्र प्राप्त थतो होय तो ए पण नोंध्यो छे. कौंसमां भीली, कच्छी, हिंदी, मराठी, पंजाबी, पालि वगेरे भाषाना शब्दो नोंध्या छे त्यां समान्तरता ज समजवानी छे.

आम तो, डॉ. भायाणीनो अभिप्राय एवो हतो के व्युत्पत्तिना विषयमां बहु पडवा जेवुं नथी. आपणे त्यां धणी वार व्युत्पत्ति अपाय छे ते आधारभूत होती नथी, ए गमे तेम बेसाडी देवामां आवेली होय छे के अटकळे मुकायेली होय छे. छतां व्युत्पत्ति आपवी ज होय तो अत्यंत प्रमाणभूत होय तेवी ज आपवी. खोटी व्युत्पत्तिना प्रसार-प्रचारमां आपणे साधनरूप न थवुं.

खरी वात छे के व्युत्पत्ति ए एक स्वतंत्र ने अलायदुं विषयक्षेत्र छे अने ए जुदी ज सजता ने जुदो प्रयास मागे. आ कोश मुख्यत्वे शब्दार्थकोश छे, ए ने माटे व्युत्पत्ति आपवी अनिवार्य नथी. एटले डॉ. भायाणीनी ए सलाह योग्य ज हती के व्युत्पत्ति मर्यादित रूपे ने एकदम प्रमाणभूत होय ते ज आपवी. परंतु प्राप्त व्युत्पत्तिनी प्रमाणभूतता चकासवानी आ कोशना संपादकमां पूरी योग्यता नहोती अने हानोपादाननो विवेक करवो एने माटे मुश्केल हतो. बीजी बाजुथी एम जोवा मळतुं हतुं के निर्दिष्ट व्युत्पत्तिओ के समान्तरताओथी घणी वार शब्दने वघारे सारी रीते ओळखी शकातो हतो ने एना अर्थने टेको प्राप्त थतो हतो. घणी वार शब्दना अर्थनो निर्णय करवानी प्रक्रियामां संस्कृतादि भाषाना शब्दो मळी आव्या छे. एम पण लाग्युं के शब्दमूळ अंगेनी जे कंई सामग्री प्राप्त थती होय ए एक वखत संकलित थई जाय तो एमां कंई खोटुं नथी. मूळ संपादित ग्रंथो सिवायनां साधनोमांथी एवी सामग्री मळती होय तो एनेये, आ दृष्टिए, आमेज करवी जोईए.

आम, आ कोशमां शब्दना स्वरूप अने प्रयोग पर प्रकाश पाडनार व्युत्पत्तिनी के एवी सामग्री आपवामां संकोच राख्यो नथी. पण साथेसाथे डॉ. भायाणीनी प्रमाणभूतता माटेनी जिकरने अवगणी पण नथी. मूळ ग्रंथोमां के अन्यत्रथी प्राप्त व्युत्पत्तिओ पोताना मर्यादित ज्ञानथी पण संपादकने निराधार जणाई त्यां ए छोडी ज दीधी छे. ज्यां संपादकथी निर्णय थई शक्यो नथी त्यां फूदडी मूकी शंका दर्शायी छे. मूळ ग्रंथमांनी अने अन्यत्रथी प्राप्त के संपादके विचारेली एम बन्ने व्युत्पत्तिओ साथे मूकवानुं पण घणी वार बन्युं छे. संस्कृतनां कल्पित रूपो पण एना संकेत साथे साचवी लीधा छे – ए मान्य प्रणालिका होवाथी. अकिराना संस्कृत शब्दो तो व्युत्पत्तिनी दृष्टिए टकी शके तेम न होय त्यां पण, अर्थप्रकाशक होवाने कारणे साचवी लेवानुं बन्युं छे.

ए हकीकत ध्यानमां राखवानी छे के मध्यकालीन शब्दनी व्युत्पत्ति दर्शावती वखते ए ज विभक्तिरूप के क्रियापदरूप आपवानो आग्रह राख्यो नथी. शब्दनुं मूळ कोई पण रीते सूचवाय ए ज पर्याप्त लेख्युं छे.

ज्यां शब्दार्थ रूपे ज संस्कृतादि भाषानो मूळ शब्द आवी जतो होय त्यां पछी व्युत्पत्तिना विभागमां ए शब्द फरी बताववानुं राख्युं नथी, केमके आ कंई व्युत्पत्तिकोश नथी ने अहीं तो गमे ते रीते मूळ शब्द दर्शावाय ते चाली शके.

थोडाक दाखलाओथी आ बधा मुद्दा समजीए:

अक्खइ पष्टिप्र. कहे छे (सं.आख्याति)

अहीं गोळ कौंसमानी व्युत्पत्ति मूळ ग्रंथमांथी छे एम समजवानुं छे.

अज़िव ऐतिका. आज पण [सं.अद्यापि]

अहीं चोरस कौंसमांनी व्युत्पत्ति संपादके पूरी पाडेली छे एम समजवानुं छे.

अजगनाइ उक्तिर. ध्यानमां न ले (सं.अपकर्णयति) [सं.अवकर्णयति]

गोळ कौंसमां आपेली व्युत्पत्ति मूळ ग्रंथमांथी छे पण एने माटे पूरो आधार नथी एम फूदडी करीने दर्शाव्युं छे. चोरस कौंसमां मूकेली व्युत्पत्तिने माटे आधार छे एम समजवानुं छे.

अत यडावा. *अहीं, [*आ वाबतमां] (सं.अत्र), [*कदाच, *संभवतः] [सं.उत]

आ दाखलामां मूळ ग्रंथमां अतने सं.'अत्र'मांथी व्युत्पन्न करी अर्थ आपवामां आव्यो छे, जे शंकारपद जणायो छे. आथी संपादके एनी सं.'उत'मांथी व्युत्पत्ति साधी बीजा अर्थनो तर्क कर्यों छे.

अतांड प्रेमाका. खूव ऊंचेथी [*सं.उत्तान]

अहीं मूळ ग्रंथमां व्युत्पत्ति आपवामां आवी नथी, ने आ कोशना संपादके पण तर्क कर्यों छे.

आफरिउ गुर्जरा. विराप. आफरो चडेलुं, [उन्माद चडेलुं]; प्रयुचु. आफरो चडेलुं, फुलेलुं (सं.आ+स्फर्) [सं.आ+स्फर्]

अहीं मूळ ग्रंथमां अपायेली व्युत्पत्ति उपरांत संपादके उमेरेली व्युत्पत्ति पण शक्य छे एम समजवानुं छे. वस्तुतः संस्कृतमां ज 'आ+स्फ़र्' परथी 'आ+स्फर्' थयेल छे.

आ रीते एक करतां वधु ग्रंथोमांथी शब्द मळेलो होय त्यां व्युत्पत्ति एमांना कोई एक के वधु ग्रंथमां अपायेली समजवानी छे, एनी तस्त पूर्वे निर्दिष्ट ग्रंथमांथी ज छे एम समजवानुं नथी.

आखंडे प्रद्युद्यु. ठोकर खाय; *अखाका. कादं(शा). नेमिछं. *प्रेमाका. लथडी पडे; *नरका. [लंडे] (सं.आस्खलित) [सं.*आक्षुटित]

अहीं मूळ ग्रंथमां अपायेली व्युत्पत्ति सामान्य रीते स्वीकृत व्युत्पत्ति छे सं. 'आक्षुटित'मांथी शब्द वधारे सारी रीते व्युत्पन्न थई शके तेम होवाथी संपादके ए व्युत्पत्ति उमेरी छे, पण 'आक्षुटित' ए संस्कृतमां प्रयोजातुं रूप नहीं पण कल्पित रूप छे एम एनी पूर्वे फूदडी करी छे ते परथी समजवानुं छे. संस्कृतमां 'क्षुट्' शब्द मळे छे, 'आक्षुट्' शब्द मळतो नथी.

आमलीय तेरका. आंबळो (सं.*आमलिका, अप.आमलीय) अहीं एम अभिप्रेत छे के संस्कृतमां 'आमलिका' शब्द मळतो नथी, पण एवा शब्द परधी ज अपभ्रंशमां मळतो 'आमलीय' शब्द आवी शके.

आमोडउ *प्राचीसं*. अंबोडो (सं.आम्रमुक्ट) दि.आमोडो]

मूळ ग्रंथमां व्यूत्पत्ति आपी छे ते बराबर छे, पण साथे 'आमोडो' शब्द देश्य शब्द तरीके पण नोंधायेलो मळे छे ए संपादकना उमेरणनुं तात्पर्य छे.

अजमाण नरका. अजमो [हिं.अजवाइन]

अहीं संपादके हिंदी शब्दनी समान्तरता दर्शावी छे एम समजवानुं छे एटलेके 'सरखावो हिं.अजवाइन' ए तात्पर्य छे.

अडसीला * नेमिछं. [हठीला] [रा.अडसाला]

अहीं राजस्थानीमां 'अडसाला' शब्द आ अर्थमां प्राप्त थाय छे एटलुं ज तात्पर्य छे. अडसीलामां पाठदोष जोई शकाय एवं नधी तेथी बन्ने शब्दो एम ज राख्या छे.

कणि आरारा. कन्या, पुत्री (रा.; सं.कनी)

अहीं एम दर्शाववामां आव्युं छे के किणिनुं मूळ सं. 'कनी'मां छे, पण राजस्थानीमां पण किष्क शब्द नोंधायेली है।

आ साथे ज ए स्पष्टता करवी जोईए के ज्यां शब्दने राजस्थानी, हिंदी वगेरे कह्यों छे त्यां ए केवळ राजस्थानी के हिंदी छे एम हंमेशां तालर्य नथी, भगवदगोमंडल जेवो कोश पण घणी वार ए शब्द आपतो होय छे अने घणी गुजराती कृतिओमां ए प्राप्त यतो होय छे, परंतु राजस्थानी के हिंदी कोशमांथी ए शब्दने समर्थन मळे छे ए बताववानुं तात्पर्य होय छे.

आराडि षडावा. आक्रंद, चीस, बराडा (सं.आरटते)

अहीं, जोई शकाय छे के, संज्ञारूपना मूळ तरीके क्रियापदरूप अपायेलुं छे. संस्कृतमां संज्ञारूप मळतुं न होवाथी क्रियापदरूप परथी ए सधायुं होवानी धारणा एनी पाछळ छे.

अकयत्य आरारा. एके; ऐतिका. अकृतार्थ, [जेनुं जीवन सार्थक नथी एवो] अहीं अकयत्थनुं मूळ सं. 'अकृतार्थ' छे, जे शब्दार्थ तरीके ज आवेल छे तेथी व्युत्पत्ति-विभागमां एने दर्शावेल नथी.

अणगाल *अभिऊ. [अकाल, खराब समय] प्रा.]

अणगाल सं. 'अकाल' मांथी आवेल छे. जे शब्दार्थमां आवी गयेल छे. पण प्राकृतमां 'अणगाल' मळे छे ते अहीं दर्शाववामां आव्युं छे.

अशाबो नरप. असवाब, सरसामान, अलंकार

अहीं अशाबोनुं मूळ अरबी/फारसी 'असबाब' शब्दार्थमां आवी गयेल छे. तेथी अलग दर्शावेल नथी.

संपादके व्युत्पत्ति के समान्तरता दर्शावी छे एमां अन्य साधनोनी घणी मदद लेवामां आवी छे. व्युत्पत्तिनी बाबतमां, सामान्य रीते, डॉ. भायाणीए एमना ग्रंथोमां आपेली व्युत्पत्तिओ वधु साधार लेखवानुं वलण रह्युं छे. छतां संपादक पोताना आ प्रयासनी अधूरपथी समान छे ज. एथी ज एवी विनंती करवानी छे के अभ्यासीओ अहीं अपायेली व्युत्पत्तिओने कामचलाउ रीते अपायेली लेखे अने प्रमाणभूत व्युत्पत्ति माटे मान्य लेखातां साधनोनो आश्रय ले. हवे तो डॉ. हरिवल्लम भायाणीना गुजराती भाषानो लघु व्युत्पत्तिकोशमां घणी व्युत्पत्तिओ हाथवगी पण थई छे. अलबत्त, ए अर्वाचीन गुजराती शब्दोनो व्युत्पत्तिकोश छे, तेथी केवळ मध्यकाळमां प्रचलित शब्दोनी व्युत्पत्ति एमांथी नहीं जडे. जेवी छे तेवी आ संकलित कोशमां अपायेली व्युत्पत्तिओ थोडी पण काम आवशे तो संपादके ए माटे करेलो श्रम लेखे लागशे.

आधारांथो

(शब्दसामग्री माटे उपयोगमां लीधेला संपादित ग्रंथोनो परिचय, एमना संक्षेपाक्षरोने क्रमे)

अखाका. अखानी काव्यकृतिओं खंड २, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९८८.

> आ संपादन अखाभगतनां पदो उपरांत बीजी केटलीक कृतिओने समावे छे. कोई कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग निश्चित छे.

> आमां आशरे १५०० शब्दोने समावतो कोश छे. एमां संस्कृत शब्दो अने रूढिप्रयोगो पण नोंघवामां आव्या छे. 'शुद्धि अने वृद्धि'मां पण शब्दकोशने लगती शुद्धिवृद्धि छे.

अखाछ. अखाना छप्पा, संपा. उमाशंकर जोशी, प्रका. वोरा, अमदावाद, त्रीजी आवृत्ति १९७७.

> आ कृतिने पण रचनावर्ष नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग सुनिश्चित छे.

> आमां ४५०० जेटला शब्दोने समावती शब्दसूचि छे ते उपरांत छप्पाओनी साथे टिप्पण रूपे पण अर्थ ने समजूती आपेलां छे. टिप्पणमां अपायेला शब्दार्थीमांथी केटलाक शब्दसूचिमां आव्या न होय एवुं देखाय छे. शब्दकोशमां शब्दो परत्वे एकथी वध् स्थाननिर्देश कर्या छे.

अखेगी. अखेगीता, संपा. उमाशंकर जोशी अने रमणलाल जोशी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, बीजी आवृत्ति १९७८. आ कृतिनुं रचनावर्ष १६४९ (सं.१७०५) मळे छे.

२०० उपरांत महत्त्वना शब्दोनो कोश आमां छे. आमां पण शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे. शब्दकोश उपरांत विस्तृत टिप्पण पण हो

अभिक्र. (देहलकृत) *अभियन-ऊझणुं*, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. पोते, अमदावाद, १९६२.

> कृतिनो रचनासमय नथी, पण एनी हस्तप्रतन् लेखनवर्ष १६२४ मळे छे. कर्ता १५०० आसपास हयात होवानुं अनुमान थयुं छे.

> शब्दकोशमां ४०० उपरांत शब्दो छे. शब्दोना व्याकरणी पदप्रकार दर्शावेल छे जने घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे.

(कीक वसहीकृत) *अंगद-विष्टि*, संपा. हरिनारायण आचार्य. जुओ *कृष्णवा*. (वाचक मंगलमाणिक्य विरचित) अंबड विद्याधर रास, संपा. बलवंतराय क. ठाकोर, प्रका. एन. एम. त्रिपाठी लिमिटेड, मुंबई, १९५३.

कृतिनं रचनावर्ष १५८३ (सं.१६३९) मळे छे.

कृतिनो मूळ पाठ छपाया पछी बलवंतराय ठाकोरनं अवसान धयेलं. एमनी आंखनी तकलीफने कारणे प्रफवाचननी घणी भूलो रही जतां भोगीलाल सांडेसराए विस्तृत पाठशोधन आप्यूं छे अने शब्दकोश पण उमेर्यों छे. एमां २५० जैटला शब्दो नोंघायेला छे. केटलाक शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश करेल छे. 'ब'ने 'ख'ना क्रममां मूकेल छे. जेमके 'षासर' (=खासर).

'आनंदधन बावीसी' पर ज्ञानविमलसूरिकृत स्तवक, संपा. कुमारपाळ देसाई, आनस्त प्रका. कौशल प्रकाशन, अमदावाद, १९८०,

> स्तवकनुं रचनावर्ष नथी, परंतु सौधी जूनी हरतप्रत १७१३ (सं.१७६९)नी लंखायेली मळे छे जे ज्ञानविमलसूरिना जीवनकाळ (१७२६ सुधी हयात)नी छे. एटले ए वर्षे के एनी पूर्वेनां थोडां वर्षोमां स्तबक रचायो हशे एम अनुमान धई शके.

> आशरे ७०० शब्दोने समावतो विस्तृत शब्दकोश आमां छे. 'नीपजइ' 'पदार्थनइ' जेवा अंत्य स्थानना सामान्य उद्यारणभेदवाळा घणा शब्दो ने 'अकस्मात भय' जेवा चालू शब्दो नोंघाया छे. जे आ संकलित शब्दकोशमां छोडी दीधा छे. ते उपरांत, जैन, बौद्ध, न्याय वगेरे दर्शनोना घणा पारिभाषिक शब्दोनी समजूती पण एमां छे. ए शब्दो पण चालु भाषाना

अंगवि. अंबरा.

न होई अने दार्शनिक संदर्भ धरावता होई सामान्य रीते छोडी दीघा छे. आम छतां जैन दर्शनना केटलाक शब्दो अन्य मध्यकालीन कृतिओमां सामान्यपणे वपराता जणाया ते साचववानुं पण बन्युं छे.

शब्दो परत्वे एकयी वधारे स्थानोनो निर्देश थयो छे.

संपादके शब्दकोशमां मात्र स्तबक-अंतर्गत शब्दो ज समाव्या छे. स्तवनोमां रहेला शब्दो लीघा नथी पण स्तबकोमां मूळ शब्द आपी एनो अर्थ नोंधवानी एक रुढि छे तेथी स्तवनना केटलाक शब्दोने स्थान मळ्यूं छे. जेमके स्तबकमां गंजी जीति न सकड़ एम छे त्यां 'गंजी' मूळ स्तवननो शब्द छे ने एनो स्तबककारे 'जीति' अर्थ आप्यो छे. पण स्तबकमां मूळना बंघा शब्दो आव्या नथी जने तेथी केटलाक लाक्षणिक मध्यकालीन शब्दो स्तवनोमां ज रह्या छे. एमने शब्दकोशमां स्थान मळ्यूं नथी.

स्तबककारे पोते शब्दना अर्थ कर्या छे ने क्यारेक पर्याये कथन कर्युं छे तेथी मध्यकालीन शब्दार्थ के कर्ताने अभिप्रेत शब्दार्थ प्रमाणभूत रीते आपणा हाथमां आवे एवं अहीं बन्यं छे. जीके संपादक एनो लाभ न लई शक्या होय एवां स्थानो पण देखाय छे. जेमके 'वृष'नो अर्थ संपादक 'श्रेष्ठ' आपे छे, परंतु 'ऋषम' (वृषभ) शब्द समजावतां स्तबककारे आम लखेल छे : "वृष कहेतां आत्मभावरूप धर्म... भ कहेतां शोभइ..." संस्कृत कोशो पण 'वृष'ना 'धर्म, नीति, सत्कर्म' वगेरे अर्थो नोंधे छे.

आरारा.

आरामशोभा रासमाळा, संपा. जयंत कोठारी, प्रका. प्राकृत जैन विद्याविकास फंड, अमदावाद, १९८९.

अहीं समाविष्ट आरामशोभा कथानकने वर्णवती छ कृतिओ १४७९थी १७०५ सुधीनां रचनावर्षो धरावे छे.

शब्दकोश २००० उपरांत शब्दोने समावे छे. एकथी वधारे स्थानोनो निर्देश पण छे. शुद्धिपत्रकमां थोडाक शब्दोना अर्थ सुधारवामां आव्या छे, जेनो अहीं लाभ लेवायो है, शब्दकोशमां क्यांक क्रमभंग है,

आरारा(व). उपर्यक्त ग्रंथनो वनस्पतिकोश. एमां आशरे २५० शब्दो छे. (साधुसुन्दरगणी विरचित) *उक्तिरत्नाकर*, संपा. जिनविजय <u>म</u>्नि, प्रका. उक्तिर. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, १९५७.

> कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु कर्तानो सर्जनकाळ १६२४थी १६२७ जाणवा मळे छे. ग्रंथमां आ कृति उपरांत अन्य बे अज्ञातकर्तक औक्तिको पण छे.

आ कृतिओ गुजराती माषानां शब्दो, व्याकरणस्पो अने वाक्योंने संस्कृत पर्यायो आपीने समजावे छे. छेड़े सर्व सामग्रीने आवरी लेतो विस्तृत शब्दानुक्रम छे, जेमां ४००० उपरांत शब्दो ने शब्दसमूहो नोंधाया छे. आ केवळ शब्दानुक्रम छे, त्यां अर्थ नोंधेल नथी, पण निर्दिष्ट स्थाने अर्थ — अलबत्त संस्कृतमां — मळे छे. सत्तरमी सदीना शब्दार्थोना एक प्रमाणभूत दस्तार्वेज तरीके आ ग्रंथनी सामग्रीनुं मोटुं मूल्य छे. तेथी संस्कृतना आधारे गुजराती अर्थ करीने आ ग्रंथना शब्दकोशनो लाभ लेवानुं इष्ट मण्युं छे. सत्तरमी सदीमां वपराता शब्दोमां आजे वपराता शब्दो पण होय ज. ए अहीं लेवाना न होय ए स्पष्ट छे.

मध्यकाळमां 'ख' माटेनुं लिपिचिद्ध पण 'ष' हतुं. आ पुस्तकना शब्दानुक्रममां 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ख'मां तेमज 'ष'मां एन बन्ने स्थाने मुकायेला छे. 'ष'मां 'ष(ख)ईइ' एम करीने शब्दो नोंध्या छे. आ संकलित शब्दकोशमां बधा शब्दो 'ख'ना क्रममां ज लीधा छे.

उपबा.

अ स्टडी ऑव् ध गुजराती लैंग्विज इन ध सिक्स्टिन्थ सेन्व्युरी (वी.एस.) विथ स्पेशिअल रेंफरन्स टु ध एमएस. बालाववोध टु उपदेशमाला, त्रिंबकलाल एन. दवे, ध रॉयल ॲशिआटिक सोसायटी, लन्डन, १९३५.

आमां नन्नसूरिरचित बालावबोध समाविष्ट छे. ए १४८७मां रचायेलो हे

बालावबोधना लगमग १६०० शब्दोने समावतो शब्दकोश आमां छे. कृतिपाठ, शब्दकोश वगेरे सघळुं रोमन लिपिमां छे. शब्दो परत्ये लगमग अशेषपणे स्थाननिर्देश करवानो प्रयत्न देखाय छे अने दरेक स्थाने वपरायेला शब्दना व्याकरणी रूपने पण ओळखाव्युं छे. शब्दोना अर्थ अंग्रेजीमां छे, जेनो अहीं गुजराती अनुवाद करवामां आव्यो छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शाववामां आवी छे. 'ख' 'घ' रूपे लखायेलो होवाथी एनाथी आरंभाता शब्दो (जेमके 'खउरउ') 'घ'ना क्रममां ज मूकेला छे, जे आ कोशमां 'ख'ना क्रममां लई लीधा छे.

उषाह.

(वीरसिंहकृतं) *उषाहरण*, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९३८.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी पण प्राप्त प्रतनुं लेखनवर्ष १५१३ (सं.१५६९) छे ने एनो रचनाकाळ पंदरमी सदीनुं त्रीजुं चरण होवानुं अनुमान थयुं छे. शब्दकोशमां आशरे ४०० शब्दो छे. मूळ संस्कृत-प्राकृत-देश्य शब्दो ऐतिका.

तया समांतर हिंदी, मराठी, आधुनिक गुजराती शब्दो पण नोंध्या छे. ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह, संपा. अगरचंद नाहटा, भंवरलाल नाहटा, प्रका. शंकरदान शुभैराज नाहटा, कलकत्ता, सं.१९९४.

आमां बारमी सदी पूर्वोधेंथी ओगणीसमी सदी पूर्वार्ध सुधीनी कृतिओ संघरायेली छे.

शब्दकोशमां लगभग १३०० शब्दो छे. अत्यारे गुजरातीमां अत्यंत अपरिचित एवा 'अढळक दान' जेवा कोईक शब्दो पण नोंधाया छे, ते राजस्थानी प्रदेशमां अत्यारे वपराशमां नहीं होय ते कारणे हशे. आ ग्रंथमां अर्थ हिंदी भाषामां आपवामां आव्या छे, तेनो आ कोशमां सामान्य रीते अनुवाद करी लीधो छे.

ऐतिरा.

ऐतिहासिक राससंग्रह, भाग पहेलो, संपा. विजयधर्मसूरि, प्रका. यशोविजय ग्रंथमाळा, भावनगर, सं.१९७२.

ग्रंथमां पंदरमी सदी उत्तरार्थथी सत्तरमी सदी पूर्वार्ध सुधीनी कृतिओ संगृहीत थई छे.

शब्दकोशमां आशरे ३५० शब्दो छे. प्रथमाक्षरमां "अं'कारवाळा शब्दो ('भंति') जुदाजुदा ऋमे मुकाया छे पण 'आं'कारवाळा शब्दो 'आ'कारनी पूर्वे ज मुकाया छे. 'खं'थी आरंभाता शब्दो 'घ'मां छे, जो आ कोशमां 'ख'मां लई लीधा छे.

कर्पूमं.

(मंतिसारकृत) *कर्पूरमंजरी,* संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९४१.

कृति १५४९(सं.१६०५)मां रचायेल छे.

शब्दकोश आशरे १०० शब्दोंने समावे छे. संस्कृत-प्राकृत-देश्य ने क्वचित फारसी शब्दमूळ तेमज हिंदी, मराठी, जर्वाचीन गुजराती, प्रादेशिक गुजराती वगेरे प्रकारनां समान्तर रूपो दर्शाव्यां छे. 'ए' 'नि' कगेरे प्रत्ययो लीधा छे ते आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे.

कस्तुवा.

(शामळ भट्ट कृत) *कस्तुरचंदनी वारता*. जुओ *नंदब*.

कादं(ध्र). (कविश्री भालणकृतं) कादंबरी, पूर्व भाग, संपा. केशवलाल ह. श्रुव, अहा. पोते, अमदावाद, १९९७६.

> कृतिनो रचनासमय मळतो नथी. पण भालणनो जीवनकाळ सोळनी सदी पूर्वार्घ जासमासनो होवानुं अनुमान अर्धु छे.

'केटलाक असाधारण शब्दो' ए शीर्षक नीचे २०० उपरांत शब्दोना 🦠

अर्थ आपवामां आव्या छे. शब्दो परत्वे काव्यपंक्तिनो तेमज टिप्पणना पृष्ठनो संदर्भ आपेल छे. आथी, क्यांक अर्थ नोंध्या नथी ('पोतृ' 'प्रणीता' जेवा खास शब्दोना) त्यां टिप्पणमांथी मेळवी शकाय छे ते उपरांत केटलाक शब्दोनी विशेष समज्ती पण त्यांथी मेळवी शकाय छे.

कादं(शा). (कवि भालणकृत) कादंबरी, पूर्व भाग, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. भारत प्रकाशन, अमदावाद, बीजुं संस्करण १९६९; (कवि भालणकृत) कादंबरी, उत्तर भाग, संपा. प्रका. ए ज, प्रथम संस्करण १९६९.

बंने ग्रंथोमां बन्ने भागोने आवरी लेतो समान शब्दकोश आपवामां आव्यो छे. ए शब्दकोशमां आशरे ६०० शब्दो छे. थोडा शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देशो छे. व्युत्पत्तिविषयक ने व्याकरणविषयक नोंधो बधा शब्दोमां आपी छे.

कामा(त्रि). (लोकवार्ताकार शिक्दासकृत) कामावती, संपा. भूपेन्द्र बा. त्रिवेदी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९७२.

कृतिनुं रचनावर्ष १५१७ (सं.१५७३) मळे छे.

शब्दकोशमां आशरे २०० शब्दो छे. उद्यारणभेदयी आवता शब्दो साथे ज लई लीधा छे. जेमके, 'ओहोलास, होलास [५९० व.] – उल्लास'. आथी थोडाक शब्दो एमना वर्णानुक्रमधी अलग स्थाने नोंधाया होवानी स्थिति ऊभी थाय छे.

कामा(शा). कामावतीनी कथानो विकास अने कवि शिवदासकृत 'कामावतीनी वार्ता', प्रवीण अ. शाह, प्रका. पोते, विरमगाम, १९७६.

> शब्दकोशमां २०० उपरांत शब्दो छे. अहीं पण उद्यारभेदवाळा शब्दो साथे लीधा छे. थोडाक शब्दो परत्वे स्थानिर्देश आपवानो चुकाई गयो छे.

कृष्णच. (अज्ञात कविकृत) कृष्णचरित्र. जुओ कृष्णबा.

कृष्णवा. (कीकु वसहीकृत) कृष्ण-बालचरित तथा अन्य मध्यकालीन रचनाओ, संपा. हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९९२. अन्य मध्यकालीन रचनाओमां कीकु वसहीकृत अंगदिविष्टि, अज्ञात किवकृत कृष्णचरित्र अने अज्ञात किवकृत रावणचरितनो समावेश छे.

> एकेय कृति रचनावर्ष धरावती नथी. परंतु कीकु वसही पंदरमी सदीना अंते के सोळमी सदीना आरंभे हवात होवानुं अनुमान थयुं छे अने अज्ञातकर्तृक बे कृतिओ अनुक्रमे पंदरमी सदी अंतभाग अने तेरमी

शताब्दी लगभगनी होवानुं अनुमान थयुं छे.

रावणचरित सिवायनी त्रणे कृतिओना अलग शब्दकोश आपवामां आव्या छे, जे अनुक्रमे १००, ५० अने १०० शब्दोने समावे छे. अगदिविष्टिना शब्दकोशने मथाळे भूलथी कृष्णविष्टि छपायुं छे.

गुर्जरा.

गुर्जररासावली, संपा. बी. के. ठाकोर, एम. डी. देसाई, एम. सी. मोदी, प्रका. ऑरिएन्टल इन्स्टिट्यूट, बरोडा, पुनर्मुद्रण १९८१.

आ ग्रंथमां १३५४(सं.१४१०)थी १४२९(सं.१४८५) सुधीनी कृतिओ संघरायेली छे. २२६ पानांमां विस्तरता शब्दकोशमां ३५०० जेटला शब्दो छे. शब्दोनां विविध विभक्तिओ के काळ-अर्थनां रूपो नोंध्यां छे, एमनां प्रयोगस्थानो प्रचुरताथी निर्देश्यां छे अने दरेक शब्द परत्ये व्युत्पत्तिविषयक, व्याकरणविषयक, अर्थविषयक नोंध वीगते आधारो साथे आपी छे. केटलाक शब्दोना अर्थ टिप्पणमां सुधार्या छे, जेनो आ संकलित कोशमां उपयोग करी लीधो छे. शब्दकोशमां सर्वग्राही बनवानो हेतु होवाथी 'द्रौपदीअ' 'धणियाणी' 'नागिणी' 'नाचइ' जेवा शब्दो पण आप्या छे, जे आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे. ग्रंथमां अर्थी अंग्रेजीमां आपेला छे तेनुं अहीं गुजराती करी लीधुं छे.

चतुचा.

(विश्वनाथ जानीरचित) चतुरचालीसी, संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. क. ला. स्वाध्यायमंदिर, अमदावाद, १९८६.

आ कृति रचनावर्ष धरावती नथी, पण विश्वनाथ जानी, १६५२नी अन्य रचनाओ मळे छे.

शब्दसूचिमां २५० उपरांत शब्दो छे.

चंद्रवा.

(शामळ भट्टकृत) चंद्र-चंद्रावती वारता, संपा. हीरा रा. पाठक, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९६८.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोशमां ३०० जेटला शब्दो छे. एकथी वधु स्थाननिर्देशो थया छे ने उद्यारभेदवाळा शब्दो एकसाथे लई लीघा छे. अर्थ निश्चित न थई शक्यो होय तेवां स्थानोए प्रश्नार्थ मूक्यो छे.

शब्दकोशने मथाळे ''पहेलो क्रम पृष्ठनो छे, बीजो कडीनो छे'' एम कह्युं छे ते भूल छे. पहेलो अंक कडीनो ने बीजो चरणनो छे.

चारफा. पंदरमा शतकनां चार फागुकाव्यो, संपा. कान्तिलाल ब. व्यास, प्रका.

फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५५.

संगृहीत कृतिओ रचनावर्ष धरावती नथी, पण ए १४००थी १४७५ना आसपासना गाळामां रचायेली होवानुं नकी थई शके छे.

शब्दकोशमां १५० जेटला शब्दो छे. शब्दोना संस्कृत-प्राकृत-देश्य मूळ दर्शाच्यां छे.

चित्तसं.

(अखाजीकृत) *चित्तविचारसंवाद*, संपा. कीर्तिदा जोशी, प्रका. पोते, अमदावाद, १९९२.

कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु अखाभगतनो कवनकाळ सत्तरमी सदी मध्यभाग नक्की थई शके छे.

शब्दकोश है विभागमां वहेंचायेलो छे - सामान्य शब्दकोश तथा पारिभाषिक अने पौराणिक कोश. आ संकलित शब्दकोशमां सामान्य शब्दकोशना शब्दो ज लीधा छे, परंतु एमां पारिभाषिक कोशनो हवालो आप्यो छे त्यां पारिभाषिक कोशने आधारे आ संकलित कोशमां अर्थ आप्यो हे

सामान्य शब्दकोशमां ६०० उपरांत शब्दो छे. शब्दो परत्वे प्राप्त बधा संदर्भी नोंध्या छे. थोड़ाक शब्दो वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे.

जिनराजसूरि-कृति-कृसुमांजलि, संपा. अगरचन्द नाहटा, प्रका. सादूल जिनसः राजस्थानी रिसर्च इन्स्टिट्यट, बिकानेर, सं.२०१७.

> आमां समाविष्ट बे दीर्घ कृतिओ १६०८ अने १६२२नां रचनावर्षो धरावे छे. पण बीजी घणीबधी लघु कृतिओ रचनावर्षो धरावती नथी. ते उपरांत जयकीर्तिगणिनो जिनराजसारि रास पण आमां समावायो छे. जिनराजसुरिनो जीवनकाळ १५९१थी १६४३ अने कवनकाळ १६०८थी १६४३ प्राप्त छे. जिनराजसूरि रास एमनी ह्यातीमां ज रचायो छे.

> शब्दकोशमां आशरे ५०० शब्दो छे. संगृहीत कृतिओमां कोईक प्राकृत छे ने घणा जैन पारिभाषिक शब्दो धरावे छे तेना शब्दो पण आ कोशमां छे. एकथी वधु स्थानो निर्देशायां छे, पण केटलाक शब्दोना अर्थ आपवाना रही गया छे. अर्थ हिंदी भाषामां आप्या छे तेनुं आ संकलित -कोशमां, जरूर लागी त्यां, गुजराती करी लीधुं छे. शब्दो क्वचित वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे.

तेरका.

तेरमा-चौदमा शतकनां त्रण प्राचीन गुजराती काव्यो, संपा. हरिवझभ चू. भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५५. संगृहीत कृतिओ

तेरमी सदी पूर्वार्धथी चौदमी सदी पूर्वार्धना गाळानी छे.

शब्दकोशमां आशरे १२५० शब्दो छे. लगभग अशेषपणे शब्दो नोंधवानुं वलण जणाय छे, तेथी 'आसो' 'आहार' 'इंद्रमंडप' जेवा शब्दो जोवा मळे छे, जेना अर्थो आपवानी संपादकने जरूर जणाई नथी. बधा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे ने सघळा स्थाननिर्देश कर्या छे. क्रियापदो मूळ धातु रूपे ज दर्शाव्या छे, जेमके 'अवगङ्ग'. ग्रंथपाठ शंकास्पद लाग्यो छे त्यां प्रश्नार्थ मूक्यो छे. ते ज रीते ज्यां अर्थ आपी शकायो नथी त्यां पण प्रश्नार्थ मूक्यो छे. त्रणे कृतिओना अनुवाद आपवामां आव्या छे त्यां आवां स्थानोनो अर्थ बेसाडवानी कोशिश करी छे, जेनो आ संकलित कोशमां लई शकायो त्यां आधार लीधो छे.

दशस्कं(१). दशमस्कंध-१, संपा. उमाशंकर जोशी अने हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९६६.

> प्रेमानंदनी आ कृतिमां रचनावर्ष नथी, पण आ अधूरी रहेली कृति एमनी छेल्ली कृति होवानुं समजाय छे तेथी एनो रचनासमय सत्तरमी सदीनुं बीजुं चरण गणाय.

> शब्दसूचिमां ५०० उपरांत शब्दो छे. केटलाक शब्दो परत्वे एकथी वधु स्थाननिर्देश छे. आ शब्दसूचि उपरांत कृतिनां पंक्तिवार टिप्पणो करेलां छे तेमां पण शब्दार्थी आपेला छे. आ संकलित कोशमां एनी क्वचित् मदद लीधी छे.

दशस्कं(२). दशमस्कंध-२, संपा. उमाशंकर जोशी अने हरिवछभ भायाणी, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९७१.

> आ ग्रंथनी शब्दसूचिमां आशरे २५० शब्दो छे. अहीं पण टिप्पणो छे.

देवरा. (अज्ञात कविकृत) *देवकीजी छ भायारो रास*, संपा. बिपिनचंद्र जी. झवेरी, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न का**र्या**लय, अमदावाद, १९५८.

> कृतिमां रचनावर्ष नथी पण एनी रचना अढारमी सदी पूर्वार्धनी अनुमानवामां आवी छे.

> शब्दसूचिमां आशरे ७०० शब्दो छे. काव्यनी शरूआतनी बेत्रण ढाळोमांथी प्रत्येक शब्द नोंध्यो छे, तेथी जेनो अर्थ आपवानी जरूर नथी लागी तेवा 'अचरज' जेवा शब्दो पण सूचिमां जोवा मळे छे. उद्यारभेदथी आवेला शब्दोने एमना क्रममां ज मूक्या छे, पण आ एक ज शब्दना

उद्यारभेदो छे ए दर्शावती निशानी करी छे. 'ख'थी आरंमाता शब्दो 'ख'ना तेम 'ष'ना क्रममां पण मुकाया छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति संस्कृत, अरबीफारसी वगेरेमांथी नोंधी छे. विस्तृत टिप्पणो छे तेमां पण शब्दार्थी नोंधाया छे. शुद्धिपत्रकमां शब्दसूचिना कोई शब्दार्थनो ने केटलीक व्युत्पत्तिओनो सुधारो नोंधायो छे.

नरका. नरसिंह महेतानी काव्यकृतिओ, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९८१.

> नरसिंह महेतानी कोई कृतिमां रचनावर्ष मळतुं नथी, यण नरसिंह महेतानो समय पंदरमी सदी मानवामां आच्यो छे. जोके नरसिंहने नामे पाछळधी घणुं उमेरायुं होवानी शक्यता छे तेथी आ ग्रंयनो शब्दकोश पंदरमी सदीनो ज छे एम कहेवुं मुश्केल छे.

> शब्दकोश्र आशरे १३०० शब्दोने समावे छे. क्वचित पाठांतरमांथी पण अब्द लीधेल छे. 'अंतराय' 'आभरण' जेवा अत्यारे वपराता थोडा शब्दो पण एमां जोवा मळे छे.

नरका—२. नरसिंह महेतानी काव्यकृतिओ, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, बीजी संशोधित आवृत्ति, १९८९.

> आ आवृत्तिमां पहेली आवृत्तिमां लीधेली केटलीक कृतिओ छोडी देवामां आवी छे ने तेथी शब्दकोशमां पण केटलोक फेरफार थयो छे. पहेली आवृत्तिना थोडा शब्दो आमां नथी, थोडाक नवा संदर्भो दाखल थया छे ने क्यांक अर्थनो फेरफार पण जोवा मळे छे. आ फेरफारो पूरतो, आवश्यकता जणाई तेटलो, आ बीजी आवृत्तिना शब्दकोशनो आ संकलित कोशमां उपयोग कर्यों छे.

> शब्दकोशनी शब्दसंख्या पहेली आवृत्तिथी खास फरक बतावती नथी.

नरप. नरसैं महेतानां पद, संपा. केशवराम का. आस्त्री, प्रका. गुजरात साहित्य समा, अमदावाद, १९६४.

> जा ग्रंथमां आफ्ररे १६५० सुधीनी **बे हस्तप्रतो**मांथी ज पदो लेवामां उपाय्यां छे.

> शन्दकोश नानकडो – आशरे ७५ शब्दोनो छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति आपेली छे. कोईक शब्द क्रमभंगधी मुकाया छे. 'ज्योवन-नाडा' शब्द छेक 'छेडी' पछी आवे छे ! 'चाउख'ने बदले 'उख' छपायुं छे.

नरसिंह महेतानां पद (अप्रकाशित), संपा. रतिलाल वि. दवे, प्रका. नरप(द). लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९८३.

> आ संग्रहनां धणां पदोनुं भाषास्वरूप ए धणा मोडा समयनी रचनाओ होवानो संकेत करे है.

शब्दकोशमां आशरे १५० शब्दो छे.

(महीराजकृत) नलदवदंती-रास, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. नलरा. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५४, बीजी आवृत्ति, 9900.

> कृति १५५६(सं.१६१२)मां रचायेली छे. एनी साथे जोडवामां आवेल अज्ञात कविकृत नलदवदंती-चरित्रमुं रचनावर्ष नथी. पण एनी एक प्रतनं लेखनवर्ष १४८३ (सं.१५३९) छे. ए कृति पंदरमा शतकना त्रीजा चरणमां रचायेली होवानुं अनुमान थयुं छे.

बन्ने कृतिओने आवरी लेता शब्दकोशमां लगभग १२०० शब्दो छे. शब्दो विशे व्युत्पत्तिविषयक तेमज अर्थविषयक नोंधो आपवामां आवी छे अने मध्यकालीन गुजराती वगेरेना प्रयोगोना आधारो पण घणा शब्दो परत्वे दर्शाच्या छे. उच्चारभेदथी आवेला शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां दर्शाव्या छे. जेमके 'परिष'नो अर्थ आपी पछी एना पेटामां 'परिषी' 'परीखडी' नोंध्या छे. आथी, देखीती रीते ज, वर्णक्रमभंग थाय. 'ख' उच्चारवाळा पण 'ष'नी जोडणीवाळा शब्दो 'ख'ना क्रममां ज मूक्या छे.

(भालपकृत) नलाख्यान, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. महाराजा नलाख्याः संयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, आवृत्ति बीजी १९६५.

> आ कृति रचनावर्ष धरावती नथी, परंतु भालणनो जीवनकाळ सोळमी सदी पूर्वार्ध आसपासनी होवानुं अनुमान थयुं छे.

> १९० पानां सुधी विस्तरता शब्दकोशमां आशरे ९०० शब्दो छे. लगभग अशेषपणे शब्दकोश आपवानं घार्यं जणाय छे, केमके एमां 'अजगर', 'अढार', 'अधमुआ', 'अपार', 'अभिराम' जेवा आजे जाणीता घणा शब्दो जोवा मळे छे (जे आ संकलित कोशमां लीधा नथी). शब्दो विशे व्युत्पत्तिदर्शक, व्याकरणविषयक अने अर्थविषयक वीगते नींध छे. (शामळ भटकृत) नंदबत्रीसी अने कस्तुरचंदनी वारता, संपा. इंदिरा मरचंट, रमेश जानी, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९६७.

बेमांथी एकेय कृति रचनावर्ष धरावती नथी पण कस्त्ररचंदनी वारता,

नंदब.

[६१]

सिंहासन बत्रीसीनी २३मी वार्ता होई ए १७२९थी १७४५ सुधीमां रचायेली गणाय. शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

बन्ने कृतिओना अलग शब्दकोशो छे. नंदबनीसीना शब्दकोशमां आशरे ९० तथा कस्तुरचंदनी वारताना शब्दकोशमां आशरे ७५ शब्दो छे.

नेमिछं.

(कवि त्नावण्यसमयविरचित) नेमि रंगरत्नाकर छंद, संपा. शिवलाल जैसलपुरा, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९६५.

कृति १४९०(सं.१५४६)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ९०० जेटला शब्दो छे. 'अणावइ' 'करि' (=करमां, कर वडे) जेवा केवळ मध्यकालीन अंत्य प्रत्ययवाळा शब्दोनो समावेश छे अने 'मयणंगण' 'गयणंगणं' 'गयणंगणि' ए जुदां विभक्तिस्त्रपोवाळा शब्दो पण अलग नोंध्या छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो घणे स्थाने ओळखाव्यां छे ने व्युत्पत्ति पण दर्शावी छे.

पंचवा.

(अज्ञात गुजराती गद्यकार विरचित) *पंचदंडनी वार्ता*, संपा. सोमाभाई घू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७४.

कृतिनुं रचनावर्ष नथी, परंतु एनी हस्तप्रतनुं लेखनवर्ष १६८२ (सं.१७३८) मळे छे.

शब्दकोशमां आशरे २०० शब्दो छे. '०का' जेवा कोई प्रत्ययनो पण एमां समावेश छे. शब्दो विशे व्युत्पत्तिदर्शक विस्तृत नोंध छे ते उपरांत केटलाक शब्दोना अर्थने पूर्वपरंपरा आपीने वीगतथी समजाव्या छे. लेखनमां 'ष' पण उच्चारमां 'ख'थी आरंभाता शब्दो 'ख'ना क्रममां ज लीधा छे.

'उणे' (=एणे), 'उवा' (=ए), 'क' (=के), 'कणे' (=कोणे), 'क्युं' (=कह्युं) वगेरे शब्दो बतावे छे के कृतिनी हस्तप्रत तद्दन लौकिक, ग्राम्य उद्यारणोने अनुसरे छे.

प्रद्युचु.

(वाचक कमलशेखरकृत) *प्रद्युप्नकुमार चुपई*, संपा. महेन्द्र बा. शाह, अमदावाद, १९७८.

कृतिनुं रचनावर्ष १५५० (सं.१६२६) छे.

शब्दकोश आशरे २०० शब्दोने समावे छे. घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे अने केटलाक शब्दोना अर्थो माटे आधारो आप्या छे. प्रवोप्र.

(भीमकृत) प्रबोधप्रकाश, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९३६.

कृतिनुं रचनावर्ष १४९० (सं.१५४६) छे.

शब्दकोश आशरे २५० शब्दोने समावे छे. शब्दमूळ दर्शाविल छे ने क्वचित् शब्दनुं व्याकरणी रूप ओळखावेल छे. मध्यकाळमां 'ज'ने स्थाने केटलीक वार 'य' लखातो. अहीं एवा शब्दो 'य'मां ज रहेवा दीघा छे. जेमके, 'यिशु' (=जिशु) 'यीव' (=जीव), 'यीवता' (=जीवतां). 'क्ष'ने 'क'ना जोडाक्षरना क्रममां नहीं, पण अंते 'ह' पछी मूकेल छे.

प्राचीका.

सत्तरमा शतकनां प्राचीन गूर्जर काव्य, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९४८.

समाविष्ट कृतिओ १६०४ (सं.१६६०)थी १६९८ (सं.१७५४)नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोशमां आशरे ४०० शब्दो छे. शब्दोनां संस्कृत-प्राकृतादि मूळ दर्शविल छे, समांतर हिंदी, वंगाळी, मराठी, अर्वाचीन गुजराती, प्रादेशिक गुजराती शब्दरूपो नोंध्यां छे ने क्वचित् अन्य प्रयोग पण आपेल छे.

प्राचीफा.

प्राचीन फागुसंग्रह, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, सोमाभाई धू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, वीजी आवृत्ति १९६०.

संग्रह १२८५ आसपासथी १६८२ आसपासनी कृतिओने समावे छे.

प्राचीसं.

शब्दकोशमां आशरे ६०० शब्दो छे. एमां '०चइ' जेवा केटलाक प्रत्ययोनो पण समावेश छे. शब्दो विशे पंचवा.ने घोरणे नोंघो थयेली छे. प्राचीन गूर्जर काव्यसंचय, संपा. ह. चू. भायाणी, अगरचंद नाहटा, प्रका. लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७५.

संगृहीत कृतिओ बारमीथी चौदमी सदी सुधीमां रचायेली छे. जूना समयनी केटलीक कृतिओनी भाषा अपभ्रंशप्रधान छे.

शब्दकोशमां आशरे ८०० शब्दो छे. शब्दोना अर्थ संस्कृतमां आप्या छे. ते पछी घणे स्थाने गुजराती, हिंदी, मराठी वगेरेना मळता आवता शब्दो नोंध्या छे. आ संकलित कोशमां संस्कृतनुं गुजराती करी लीधुं छे. क्रियापदो धातु रूपे ज नोंध्या छे – 'खिझ्' वगेरे. उच्चारभेदवाळा शब्दो साथे लई लीधा छे – 'वछ' 'वाछ' 'वाछडउ' – तेथी वर्णक्रमभंग थाय छे. शब्दोनी व्यूत्पत्ति पण आपी शकाई त्यां आपी छे. प्रेमपः (विश्वनाथ जानीरचित) प्रेमपचीसी, संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. गूर्जर ग्रंथरल कार्यालय, अमदावाद, १९९२.

> कृति रचनावर्ष धरावती नधी, परंतु कविनी अन्य बे कृतिओ १६५२(सं.१७०८)मां रचायेली मळे छे.

> शब्दकोश १५० जेटला शब्दोनो छे. एमां क्यांक वर्णक्रमभंग थयो छे.

प्रेमाका. प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ खंड १ अने २, संपा. केशवराम का. शास्त्री, शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. साहित्य-संशोधन प्रकाशन, अमदावाद, १९७८ अने १९७९.

> प्रेमानंदनी कृतिओ १६६७ (संमवतः) के १६७१थी १६९०नां रचनावर्षो दर्शवे छे.

> आ संग्रहमां शामळशानो विवाह प्रेमानंदनी अधिकृत रचना नथी, ए अर्वाचीन समयनी सरजत होय एवं ज जणाय छे. शाद्ध पण प्रेमानंदनी कृति नथी पण ए मध्यकालीन तो छे ज, प्रेमानंद पछीना समयनी. ऋक्मिणीहरण, सप्तमस्कंध जेवी बीजी थोडीक कृतिओ पण प्रेमानंदनी होया विशे शंका छे. ए पण पाछळना समयनी होया संभव छे.

आ ग्रंथमां आशरे ३२०० शब्दोने अने रूढिप्रयोगोने समावतो मोटो कोश छे. एमां 'आणे' (=लावे), 'आदरुं' (=शरू करुं), 'आणुं' जेवा अत्यारे प्रचलित थोडा शब्दो छे ते आ संकलित कोशमां छोडी दीधा छे, ते उपरांत शामळशानो विवाह मध्यकालीन कृति न होई एना शब्दो पण छोडी दीधा छे.

मदमो. (शामळ भटकृत) मदनमोहना, संपा. हरिवछभ चू. भायाणी, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९५५.

> कृतिमां रचनावर्ष नथी. परंतु शामळनी अन्य कृतिओ १७१८थी १७६५नां रचनावर्षो बतावे छे.

> ग्रंथमां ५०० उपरांत शब्दोने समावतो शब्दकोश छे. केटलाक शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे.

मदमो-२. (शामळ भटकृत) मदनमोहना, संपा. हरिवछभ चू. भायाणी, प्रका. पार्श्व प्रकाशन, अमदावाद, १९८९.

> पहेली आवृत्ति तरीके ओळखायेली आ वस्तुतः बीजी आवृत्ति छे. आ आवृत्तिनो शब्दकोश एकवे स्थाने अर्थनो सुधारो बतावे छे तेटला

[**ξ**४]

पूरतो अहीं एनो उपयोग कर्यो छे.

मोसाच. (विश्वनाथ जानीरचित) मोसाळाचरित्र, संपा. महेन्द्र अ. दवे, प्रका. परिमाण प्रकाशन, अमदावाद, १९८७.

आ कृतिनुं रचनावर्ष १६५२ (सं.१७०८) छे.

शब्दकोशमां आशरे ८० शब्दो छे.

रूपच. (शिवदासकृत) रूपसेन चतुष्पदिका, संपा. कनुभाई व्र. शेठ, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९६८.

> कृतिमां रचनावर्ष नथी, परंतु कवि शिवदास सोळमी सदीना अंतमां के सत्तरमी सदीना आरंभमां थया होवानुं अनुमान थयुं छे.

> शब्दकोशमां ७० जेटला शब्दो छे. एमां क्वचित् वर्णक्रमभंग देखाय छे.

रूस्तमः (कवि शामक भट्टरचित) रूस्तमनो सलोको, संपा. हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. फार्बस गुजराती सभा, मुंबई, १९५६.

कृतिनी रचना १७२५(सं.१७८१)मां ययेली छे.

शब्दकोशमां ८० जेटला शब्दो छे. एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे.

परिशिष्ट रूपे एक प्रतमांनी टिप्पणीओ नोंधी छे तेमां केटलाक शब्दार्थी छे ते शब्दकोशना शब्दो परत्वे पण क्यांक मार्गदर्शक बने छे.

(क्षमाकलशकृत) *लितांगकुमार रास*, संपा. कनुभाई व्र. शेठ, धनवंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृतिनुं रचनावर्ष १४९७ (सं.१५५३) छे.

शब्दकोशमां आशरे ८० शब्दो छे. एमां छापभूलो छे ने स्थाननिर्देशमां पण क्यांक भूल थयेली छे.

लावल. कवि लावण्यसमयनी लघु काव्यकृतिओ, संपा. शिवलाल जेसलपुरा, प्रका. पोते, विरमगाम, १९६९.

> संगृहीत कृतिओ १४९७(सं.१५५३)थी १५३१ (सं.१५८७) आसपासनां रचनावर्षों दर्शावे छे.

> शब्दकोशमां १४०० उपरांत शब्दो छे. एमां 'गढ' 'दोट' जेवा अत्यारे जाणीता कोई शब्दो छे, 'नइ' 'नवउ' 'नडइ' जेवा अत्यारना शब्दथी केवळ अंत्य स्वरनो ज उच्चारभेद दर्शावता शब्दो छे, ने 'पइठउ' 'पइठा' जेवा केवळ व्याकरणी रूपे करीने जुदा पडता शब्दो पण छे.

नित्रा.

शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे अने क्वचित् शब्दमूळ दर्शाविल छे. स्थाननिर्देश एकथी वधु करेल छे.

वसंफा., वसंतविलास फागु, संपा. मधुसूदन मोदी, प्रका. राजस्थान प्राच्य विद्या वसंफा(ल). प्रतिष्ठान, जोधपुर, १९६०.

> कृतिनुं रचनावर्ष नथी, पण एना रचनासमय विशे १२५०थी १३५० सुधीनां अनुमानो थयां छे.

> आ संग्रहमां वसंतिवलासनी बृहद् वाचना तथा लघु वाचना बन्ने आपवामां आवेल छे अने बन्नेना अलग शब्दकोश आपवामां आवेल छे. लघु वाचनाना शब्दकोशमां आशरे ५०० अने वृहद् वाचनाना शब्दकोशमां आशरे ८०० शब्दो छे. एमां 'अति' 'अपार' 'अवतार' 'उदर' जेवा अत्यारे प्रचलित शब्दो पण छे ते बतावे छे के शब्दकोश लगभग अशेषपणे करवानी नेम छे. शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शाववामां आवी छे. अर्थी अंग्रेजीमां छे, जेनो आ संकलित कोशमां अनुवाद करी लेवामां आव्यो छे. शुद्धिपत्रकमां शब्दकोशिवषयक शुद्धिओ पण छे ने कृति विशे टिप्पणो छे तेमां पण शब्दार्थ-समजूती छे.

वसंवि. वसंतिवलास, संपा. कान्तिलाल ब. व्यास, प्रका. एन. एम. त्रिपाठी प्रा. लि., मुंबई, पुनर्मुद्रण १९६९.

> आमां पण बृहद् अने लघु बन्ने वाचना समाविष्ट छे. शब्दकोश बन्ने वाचनाने आवरी लेतो भेगो ज छे. एमां ९०० जेटला शब्दो छे. 'अंग' 'अधीर' 'अनइ' जेवा शब्दो बतावे छे के शब्दकोश लगभग अशेषपणे आपवानी नेम राखी छे. शब्दोनां व्याकरणी रूप ओंळखाव्यां छे, एकथी वघु व्याकरणी रूप नोंध्यां छे अने व्युत्पत्ति पण आपी छे. अर्थ गुजराती तेमज अंग्रेजी बन्ने भाषामां आप्या छे, जेनो आ संकलित कोशमां लाभ लीधो छे. कृतिनां टिप्पण अने अनुवाद आपेलां छे ते पण मददरूप थई शके.

> कोईक उपयोगी शब्दो पेटामां जता रह्या छे तेथी शब्दकोशमां सीधा जोवा न मळे एवुं बन्युं छे. जेमके 'अलि'ना पेटामां 'अलिजन' 'अलिराज' शब्दो छे, 'नवी'ना पेटामां 'नवनेह' 'नवरंग' वगेरे शब्दो छे.

वसंवि(ब्रा). ध वसंतविलास, संपा. डबल्यू. नॉर्मन ब्राउन, प्रका. अमेरिकन ऑरिएन्टल, न्यूहेवन, १९६२.

आमां पण बन्ने वाचना छे. शब्दकोश बन्नेनो भेगो ज छे. अन्य

संपादनोमां पाठांतर रूपे ज रहेलां पद्योना शब्दो पण अहीं शब्दकोशमां स्थान पाम्या छे. शब्दकोश सर्वग्राही छे अने १००० जेटला शब्दोने समावे छे. शब्दोनां व्याकरणी रूप ओळखाव्यां छे अने शब्दमूळ दर्शावेल छे. समासात्मक शब्दो समास रूपे नोंधाया छे, ते उपरांत पाछळनो शब्द घणी वार अलग पण आप्यो छे. 'वंदरवाल' जेवो शब्द तो बे टुकडे 'वंदर' अने 'वाल' एम ज मळे छे.

वाग्भवा. (मेरुसुन्दर उपाध्याय कृत) वाग्भटालंकार बालावबीध, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७५.

बालावबोधनी रचना १४७९ (सं.१५३५)मां थयेल छे.

शब्दकोशमां १३० जेटला शब्दो छे. '०तु' जेवा प्रत्ययोनी पण एमां समावेश छे. स्थाननिर्देश एकथी वधु – क्यांक बघा ज – करेला छे. मूळ संस्कृत कृति पण आपेल होई अर्थोने चकासवानी एक सगवड मळे छे.

विक्रच. (राजशीलकृत) विक्रमखापराचरित्र, संपा. कनुमाई व्र. शेठ, धनवंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृति १५०७(सं.१५६३)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां १२० जेटला शब्दो छे. केटलाक शब्दो परत्वे शब्दमूळ दर्शावेल छे.

विक्ररा. (उदयभानुकृत) विक्रमचरित्र रास, संपा. बलवंतराय ठाकोर, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५७.

कृति १५०९(सं.१५६५)मां रचायेली छे.

बलवंतराय ठाकोरना आ मरणोत्तर प्रकाशननो शब्दकोश रणजित पटेले तैयार कर्यो छे. एमां आशरे ३०० शब्दो छे. उद्यारभेदवाळा शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां नोंध्या छे. तेथी 'भारोट'ना पेटामां 'भारविट्ट' मळे छे.

विमप्र. (लावण्यसमयविरचित) विमलप्रवंध, संपा. धीरजलाल धनजीभाई शाह, प्रका. गुजरात साहित्य सभा, अमदावाद, १९६५.

कृति १५१२(सं.१५६८)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ७०० उपरांत शब्दो छे. एमां '०हि' वगेरे केटलाक प्रत्ययोनो पण समावेश थाय छे.

विराप. (शालिसूरिविरचित) विराटपर्व, संपा. चिमनलाल त्रिवेदी, कनुभाई शेठ,

[£@]

प्रका. गूर्जर ग्रंथरल कार्यालय, अमदाबाद, १९६५.

कृति पंदरमी सदीमां १४२२ पूर्वे रचाई होवानुं नकी थाय छे.

शब्दकोशमां ४५० जेटला शब्दों छे. 'रखे' 'रडवडइ' 'रूपइ' 'रूडउं' जेवा सामान्य उद्यारमेदथी अत्यारे प्रचलित शब्दों पण नोंधाया छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे ने व्यूत्पत्ति दर्शावी छे.

वींसरा. **ध वींसकदेव रास, ए रेस्टोरेंशन ऑव् ध** टेकस्ट, ज्हॉन डी. स्मिथ, प्रका. केन्द्रिज युनिवर्सिटि प्रेस, केन्द्रिज, १९७६.

> कृतिमां रचनावर्ष नथी, पष एनी रचना १४५० आसपासमां धई होवानुं अनुमानवामां आच्युं छे.

> शब्दकोश आशरे १४५० शब्दोने समावे छे. एकेएक शब्द अने एकेएक प्रयोग नोंधवामां आव्यो छे. एमां अत्यारे प्रचलित घणा शब्दो पण होय ज. देखीती रीते ज आ बघा शब्दोने आ संकलित कोशमां स्थान न होय. शब्दोना व्याकरणी पद्मकार दर्शाववामां आव्या छे. क्रियापदो धातु रूपे ज नोंध्यां छे. शब्दमूळ दर्शाव्यां छे अने शब्दोनी विशेष समजूती माटे टिप्पणनो हवालो आप्यो छे. कृतिनो अनुवाद छे ते पण अर्थने स्पष्ट करवामां काम आवे तेम छे. अर्थो अंग्रेजीमां छे तेनो आ संकलित कोशमां गुजराती अनुवाद करी लीघो छे.

राजस्थानी भाषानी एक लाक्षणिकता तरीके अहीं सर्वत्र 'ळ' राखवामां आव्यो छे, 'ल' नहीं, जोके वर्णक्रममां ए 'ल'ने स्थाने ज छे. 'ख' उद्यारवाळा शब्दो 'ष' लिपिविह्नथी अने 'ष'ना ज क्रममां मुकाया छे. आ संकलित कोशमां एने 'ख'ना क्रममां लई लीधा छे.

वैताप. (शामळ भट्टकृत) वेतालपचीसी, संपा. अंबालाल स. पटेल, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९६२.

कृतिनुं रचनावर्ष १७४५ (सं.१८०१) छे.

शब्दकोशमां आशरे १७५ शब्दो छे.

शब्दकोश हरिवल्लम भायाणीए तैयार करेलो छे.

शीलक. (उदयकलशकृत) शीलवती कथा, संपा. कनुभाई द्र. शेठ, धनयंत ति. शाह, प्रका. समता प्रकाशन, अमदावाद, १९८२.

कृतिनुं रचनावर्ष १५५२ (सं.१६१८) छे.

शब्दकोशमां आशरे १०० शब्दो छे. थोडा शब्दोमां व्युत्पत्ति दर्शावी छे. कोईक शब्दो वर्णक्रमभंगथी मुकाया छे. शृंगामं.

षडावा.

(जयवंतसूरिकृत) शृंगारमंजरी (शीलवतीचरित्र रास), संपा. कनुभाई व्र. शेठ, प्रका. लालभाई दलपत्तभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७८.

कृति १५५८(सं.१६१४)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां ५०० उपरांत शब्दो छे. केटलाक शब्दोमां व्युत्पत्ति दर्शावी छे. शब्दकोशमां केटलीक छापभूलो रही गई छे. असंगत शब्द अने अर्थ पण एक स्थाने आवी गयेल छे ने वर्णक्रमभंग पण थयो छे. (तरुणप्रभाचार्यकृत) पञ्चवश्यक बालावबोध, संपा. प्रबोध बे. पंडित, प्रका. भारतीय विद्याभवन, मुंबई, १९७६.

कृति १३५५(सं.१४९९)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे २३०० शब्दो छे. शब्दकोश सर्वग्राही करवानो आशय जणाय छे तेथी 'अमुक' 'अरण्य' 'आदित्युं' 'आकर्षइ' जेवा शब्दो जोवा मळे छे, जोके छतां कृतिमांना अनेक मध्यकालीन शब्दो कोशमां आवी शक्या नथी. शब्दोना अर्थ अंग्रेजीमां छे ने एमने विशे व्याकरण तथा व्युत्पत्तिविषयक वीगते नोंध छे, अन्यत्र मळता समांतर प्रयोगो पण नोंध्या छे. अनुस्वारवाळा शब्दो जेते वर्णमां छेझे लीधा छे, जेमके 'कौशाम्बी' पछी 'कंपावतउ' 'कांगुण' वगेरे आवे छे, जोके 'कृमि' ए पछी छे. शब्दोना रूपभेदो पेटामां मूक्या छे ने एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे.

षष्टिप्र.

(नेमिचन्द्र भंडारीविरचित) *षष्टिशतक प्रकरण* (त्रण बालावबोध सहित), संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९४३.

मूळ प्राकृत कृति परना त्रण बालावबोधो १४४०(सं.१४९६)थी १४६९(सं.१५२५)नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोश स्वाभाविक रीते ज त्रण गुजराती बालावबोधोनो छे. एमां २७५ जेटला शब्दो छे. शब्दोनां व्याकरणी रूपो ओळखाव्यां छे, व्युत्पत्ति आपी छे अने अर्थविषयक विस्तृत नोंधो करी छे. स्थाननिर्देश बधा ज करवानी नेम जणाय छे. 'रुलइ' पछी 'कुटकइं' अने 'हूइ' आवे एटलो मोटो वर्णक्रममंग पण थयेल छे. उद्यारभेदवाळा शब्दो एक मुख्य शब्दना पेटामां दर्शाव्या छे.

त्रण बालावबोधो लगभग समांतर चालता होई, एक बालावबोधना शब्दनो खुलासो बीजा बालावबोधमांथी मळे एवुं बने छे. सम्यचो.

(यशोविजयजीविरचित) सम्यक्त षट्स्थान चउपइ (स्वोपङ्ग बालावबोध सहित), संपा. प्रद्युन्नविजयजी गणि, प्रका. अंधेरी गुजराती जैन संघ, मुंबई, सं.२०४६.

कृति तथा बालावबोध बन्ने मुजरातीमां छे. बालावबोध १६८५ (तं.१७४१)मां रचायो होय एम समजाय छे. यशोविजयजीनी अन्य कृतिओ १६५५यी १६८३नां रचनावर्षो बतावे छे.

शब्दकोश नानकडो - ३३ शब्दोनो ज - छे, जेमां स्वामाविक रीते ज घणा मध्यकालीन शब्दो बाकात रह्या छे. अहीं लाभ ए छे के मूळ गाथाना शब्दनो स्वोपज्ञ वृत्तिमां ज अर्थ करेलो छे. तेथी तत्कालीन शब्दार्थनी सीधी माहिती मळे छे.

सिंहा(म). (मलयचन्द्रकृत) सिंहासनबत्रीसी, संपा. रणजित मो. पटेल ('अनामी') प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७०.

कृति १४६३ (सं.१५१९)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां १२० जेटला शब्दो छे. घणा शब्दोनी व्युत्पत्ति आपी छे, एकथी वधु स्थाननिर्देश कर्या छे अने अर्थविषयक नोंधो पण छे. क्रियापदो धातु रूपे आपी पछी कृतिमांनुं एनुं व्याकरणी रूप पण आप्युं छे. क्वचित् उद्यारभेदवाळो शब्द पेटामां मुकायो छे, जेमके 'अखन्न'ना पेटामां 'अखंत्र'.

सिंहा(शा). (शामळ मङ्कृत) सिंहासनबत्रीशी, संपा. हरिवक्कम भायाणी, प्रका. भारतीय विद्यामवन, मुंबई, १९६०.

> आमां संघरायेली *सिंहासन-बंबीशी*नी वार्ताओ १७२९थी १७४५ना गाळामां रचायेली छे.

> शब्दकोशमां २५० जेटला शब्दों छे. स्थाननिर्देश बधा कर्या होय एवुं जणाय छे. केटलाक शब्दोनी व्युत्पत्ति दर्शावीं छे.

स्यूलिफा. (हलराजकृत) स्यूलिभद्र फागु - एक परिचय, संपा. कनुभाई व्र. शेठ, स्वाध्याय पु.८ अं.३, एप्रिल १९७१.

कृति १३५३(सं.१४०९)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे ७० शब्दो छे. क्वचित् वर्णक्रमभंग थयो छे.

हम्मीप्र. (अमृतकलशकृत) हम्मीरप्रबंध, संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, सोमाभाई धू. पारेख, प्रका. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९७३. कृति १५१८(सं.१५७५)मां रचायेली छे.

[00]

शब्दकोशसां २०० उपरांत शब्दो छे. उद्यारभेदवाळा शब्दो पेटामां मूक्या छे. केटलाक शब्दोमां स्थाननिर्देश एकथी वधु कर्यो छे.

हरिख्या. (रलदासकृत) हरिश्चन्द्राख्यान, संपा. केशवलाल ह. ध्रुव, प्रका. गुजरात विद्यासभा, अमदाचाद, १९२७.

कृति १६४८(सं.१७०४)मां रचायेली छे.

शब्दकोशमां आशरे २७५ शब्दो छे 'दारिद्रश्च' 'दिनकर' जेवा घणा जाणीता संस्कृत शब्दो एमां छे. शब्दमूळ दर्शावेल छे.

हरिवि. (अज्ञातकर्तृक) *हरिविलास : रासलीला*, संपा. हरिवल्लभ भायाणी अने अन्य, प्रका. पोते, अमदावाद, १९८८.

> कृतिनुं रचनावर्ष नथी, पण एनो रचनासमय १४५०थी १५५० (विक्रमनी सोळमी शताब्दी) अनुमानवामां आव्यो छे.

> संग्रहमां बीजी कृतिओ पण छे, परंतु शब्दार्थ *हरिविलास*ना ज आपवामां आव्या छे. एमां ९० जेटला शब्दो छे. थोडा शब्दोमां व्युत्पत्ति आपी छे.

> कृतिनो अनुवाद आपवामां आव्यो छे तेसांथी केटलाक शब्दार्थनी चावी मळे छे.

शब्दकोश माटे उपयोगमां लेवायेला ग्रंथोनी समयानुक्रमणी

आम तो, केटलाक ग्रंथो समयना लांबा गाळाने आवरे छे, छतां भाषाना विकास-इतिहासनो अभ्यास करनारने आ समयानुक्रमणीमांथी केटलोक आधार अवश्य सांपडी रहेशे.

१२मीयी १४मी सदी १२मी पूर्वार्धयी १४मी पूर्वार्ध १३मी पूर्वार्धयी १४मी पूर्वार्ध १२५०थी १३५० दरम्यान १२८५ आसपासथी १६८२

समय

9343

१३५४थी १४२९

9344

१४००थी १४७५ आसपास

१५मी सदी

ग्रंथ के कृति

प्राचीन गूर्जर काव्यसंचय ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह

तेरमा-चौदमा शतकनां त्रण प्राचीन-गुजराती काव्यो

वसंतविलास (फागु)

प्राचीन फागुसंग्रह

स्थूलिमद्र फागु गुर्जर रासावली

षडावश्यक बालावबोध

पंदरमां शतकनां चार फागुकाव्यो

नरसिंहनी काव्यक़ृतिओ, नरसैं महेतानां पद, नरसिंह

महेतानां पद

[60]

१५मी पहेलूं चरण विराटपर्व १४४०थी १४९० 'षष्टिशतक प्रकरण'ना त्रण बालावबोध वीसळदेव रास १४५० आसपास हरिविलास १४५०थी १५५० दरम्यान १५मी त्रीज़्ं चरण उषाहरण १५मी उत्तरार्धथी १७मी पूर्वार्ध ऐतिहासिक राससंग्रह सिंहासनबत्रीसी (मलयचंद्र) 9863 वाग्मटालंकार बालावबोध १४७९ १४७९थी १७०५ आरामशोभा रासमाळा उपदेशमाला बालावबोध 9820 नेमिरंगरत्नाकर छंद, प्रबोधप्रकाश 9890 ललितांगकुमार रास 9860 १४९७थी १५३१ लावण्यसमयनी लघु काव्यकृतिओ १५मी अंतभाग कृष्णचरित्र १५मी अंत के १६मी आरंभ अंगदविष्टि, कृष्ण-बालचरित १५०० आसपास अभिवन-ऊझण् १६मी पूर्वार्ध आसपास कादंबरी, नलाख्यान विक्रमखापराचरित्र 9400 विक्रमचरित्र रास 9408

 १५०७
 विक्रमखापराचरित्र

 १५०९
 विक्रमचरित्र रास

 १५१२
 विमलप्रबंध

 १५१७
 कामावती

 १५१८
 हम्मीरप्रबन्ध

 १५४९
 कर्पूरमंजरी

१५५० प्रद्युम्नकुमार चुपई
 १५५२ शीलवती कथा
 १५५६ नल-दवदंती रास
 १५५८ शृंगारमंजरी

9५८३ अंबड विद्याघर रास 9६मी अंत के १७भी आरंभ रूपसेन चतुष्पदिका

9७मी पूर्वार्ध उक्तिरलाकर, जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि १६०४थी १६९८ सत्तरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य

[ও ২

१७नी मध्यभाम अखानी काव्यकृतिओ, अखाना छप्पा, चित्तविचार-

संवाद, चतुरचालीशी, प्रेमपचीसी

9६४८ हरिश्चन्द्राख्यान9६४९ अखेगीता

१७मी उत्तरार्घ प्रेमानंदनी काव्यकृतिओ

१६५२ मोसाळाचरित्र १७मी चोथुं चरण दशमस्कंध १६८२ पहेलां पंचदंडनी वार्ता

 9६८५ के १७मी उत्तरार्ध
 सम्यक्त्व षट्स्थान चउपइ

 १८मी पूर्वार्ध
 देवकीजी छ भायारो रास

१७१३ के ते पूर्वे आनंदघन वादीसी स्तबक

१७१८थी १७६५ आसपास चंद्र-चंद्रावती वारता, नंदबत्रीसी, मदनमोहना

१७२५ रूस्तमनो सलोको

१७२९थी १७४५ दरम्यान कस्तुरचंदनी वारता, सिंहासनबन्नीशी (शामळ)

१७४५ वेतालपचीसी

संदर्भग्रंथो

(शब्दार्थनिर्णय तथा व्युत्पत्तिना विषयमां सहायरूप थयेला महत्त्वना ग्रंथोनो परिचय) अनुशीलनो, हरिवल्लभ चू. भायाणी, प्रका. धी पॉप्युलर पब्लिशिंग हाउस, सूरत, १९६५.

आ ग्रंथमां पृ.७८-९२ पर प्राकृत-अपभ्रंश अने ग्राचीन गुजरातीना २५ जेटला शब्दोनी प्रयोगोनी नोंधपूर्वक चर्चा छे ते अहीं उपयोगी थई छे.

अभिधान विन्तामणि कोश (हेमचन्द्रचार्यविरचित), अनु. संपा. विजयकस्तूरसूरिजी, प्रका. जसवंतलाल गिरधरलाल शाह, अमदावाद, वि.सं.२०१३.

आ नामकोश छे. नामो जुदाजुदा वर्गीमां रजू थयां छे, जेमके देवाधिदेवी, देवी, मनुष्यो, तिर्यंचो, नारकी, साधारण पदार्थो वगेरे. एमां घणा पेटावर्गो पण पडे छे जेमके तिर्यंचोमां पृथ्वीकाय, वनस्पतिकाय, कृमिओ, स्थलचारो, खेचर, जलचर, वगेरे; साधारण पदार्थोमां चीजवस्तुओ, मावो, गुणो, क्रियाओ वगेरे. वळी नामोना सघळा पर्यायो पण आपवामां आव्या छे. आ रीते, आ कोश संस्कृत भाषानां सर्व नामोने अशेषपणे संघरे छे. तेम प्राकृत-अपभ्रंश-देश्य भाषाथी प्रभावित नामो पण एमां छे. कुल १५००० जेटलां नामो एमां छे. अनुवादमां एना गुजराती पर्यायो नोंधाया छे. पाछळ संस्कृत शब्दोनी तेमज गुजराती शब्दोनी एम दे वर्णानुक्रमिकसूचिओ छे. केटलाक विरल शब्दार्थोमां आ कोश चावीरूप बन्यों छे.

उर्दू हिन्दी शब्दकोश, संपा. मुहम्पद मुस्तफां खां 'मद्दाह', प्रका. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९८९ (षष्ठ संस्करण)

सानुस्वार वर्णो पहेलां अने निरनुस्वार पछी ए वर्णक्रम अहीं छे. एटलेके 'कं' पहेलां अने 'क' पछी. मध्यकालीन गुजरातीमां वपरायेला केटलाक फारसी-अरबी शब्दो माटे तेमज केटलाक शब्दोनी एमनी आजे अपरिचित अर्थछाया माटे आ कोश काममां आव्यो छे. आ कोशमां ३५००० उपरांत शब्दो छे.

गुजराती भाषानो लघु व्युत्पत्तिकोश, संपा. हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. गुजरात साहित्य अकादभी, गांधीनगर, १९९४.

अत्मारे प्रचलित गुजराती शब्दोनी व्युत्पत्ति आमां आवी छे. व्युत्पत्तिमां प्राकृत अने संस्कृत भूमिकानां शब्दरूपो नोंध्यां छे. टर्नरने अनुसरी संस्कृत-प्राकृतनां कल्पित रूपोनो पण आश्रय लीधो छे. आशरे ३००० शब्दो आमां समावेश पाम्या छे. पाछळ केटलाक शब्दो विशे व्युत्पत्ति तथा प्रयोगविषयक टूंकी नोंध आपी छे तेमां मूळ शब्दकोशमां नहीं आवेला प्राचीन शब्दो पण जोवा मळे छे.

आ कोशना ठीकठीक शब्दो उद्यारभेदे मध्यकाळमां मळे छे एटले व्युत्पत्तिना विषयमां आ ग्रंथ घणो मार्गदर्शक बन्यो छे.

गुजरातीमां प्रचलित फारसी शब्दोनो सार्थ ब्युत्पत्ति कोश, भाग १थी ४, संपा. छोटुभाई रणछोडजी नायक, प्रका. गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद, १९७२–१९८८.

आ कोशमां गुजरातीमां प्रचलित शब्दोनां मूळ अरबी-फारसी रूप तेमज अर्थ दर्शाववामां आव्यां छे अने गुजरातीमां शब्द जे अर्थ के अर्थोमां प्रचलित होय ते पण आपवामां आवेल छे. केटलेक ठेकाणे शब्दना प्रयोग दर्शावती पंक्तिओ पण उद्धृत थई छे. कोशमां आशरे छ हजार शब्दो छे.

उद्धृत थयेली केटलीक पंक्तिओं मध्यकालीन कृतिओमांथी छे, ते उपरांत पण मध्यकाळमां वपरायेला केटलाक फारसी शब्दो अहीं जडे छे, तेथी अर्थनिर्णयमां आ कोश पण उपयोगी थयो छे.

देशी शब्दकोश, संपा. मुनि दुलहराज, प्र**का. जै**न विश्वभारती, लाइनुं, १९८८.

आ ग्रंथमां देशी शब्दो एना अर्थ ने प्रयोगना स्थाननिर्देश साथे आपवामां आवेल छे. केटलेक स्थाने उक्ति पण उद्धृत थई छे. अर्थ हिंदी भाषामां आपवामां आव्या छे. आशरे ११००० शब्दोनो एमां समावेश छे. परिशिष्ट रूपे उत्तरकालीन प्राकृत ग्रंथोमां एमना संपादकोए आपेला शब्दकोशोने संकलित करी लेतो एक कोश आपवामां आव्यो छे, जेमां आशरे २००० शब्दो छे. बीजा परिशिष्टमां देशी धातुओनो अर्थ साथेनो अने केटलेक स्थाने आधार पण निर्देशतो कोश छे, जेमां १६००

जेटला धातुशब्दो छे. परिशिष्टना बन्ने कोशोना घणा शब्दो, स्वामाविक रीते ज, मूळ कोशमां मळे छे. वर्णक्रम आ पछीना प्राकृत कोश प्रमाणे छे.

मध्यकाळमां वपराशमां रहेला देशी शब्दो परत्वे आ कोश घणो उपयोगी थयो छे.

पाइअसद्दमहण्णवो, पंडित हरगोविंदास त्रि. शेठ, प्रका. प्राकृत ग्रंथ परिषद्, वाराणसी, १९६३ (द्वितीय संस्करण).

प्राकृत भाषाना जा कोशमां शब्दार्थ आधारग्रंथना निर्देश साथे आपवामां आव्या छे. क्वचित् पंक्ति पण उद्धृत धई छे. अर्थ हिन्दी भाषामां छे. समाविष्ट शब्दोमां संस्कृतमांथी ऊतरी आवेला तेमज देश्य भाषाना शब्दो पण छे. सानुस्वार वर्णो निरनुस्वार वर्णोनी पूर्वे छे, पण पाछळ स्वरवाळा वर्णो पहेलां मुकाया छे. जेमके, क, कइ बगेरे, पछी कं, कंइ वगेरे, पछी कंक, कंकड वगेरे, पछी ककाणि, कडुघ वगेरे. कोशमां आशरे ५७००० शब्दो छे.

प्राचीन गुजराती भाषानो प्राकृत भाषा साथेनो संबंध घणो गाढ होई केटलाक अब्दोनी चावी उकेलवामां आ कोश खास काममां आव्यो छे.

बृहद् गुजराती कोश खंड १--२, केशवराम का. शास्त्री, प्रका. युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बॉर्ड, अमदावाद, १९७६ अने १९८१.

सार्थ गुजराती जोडणीकोश उपरांत भगवद्गीमंडल आदि कोशोनी सहाय लईने रचायेला आ कोशमां ७५०००थी ८०००० शब्दो समाविष्ट छे. जोके संस्कृत तत्सम शब्दोने बाद करतां आ कोश सार्थ गुजराती जोडणीकोशथी खास विशेष सामग्री आपतो जणातो नथी. शब्दना अर्थ नोंधवा उपरांत शक्य बन्धुं त्यां, शब्दनां मूळ पण दर्शावेल छे. साधित अने सामासिक शब्दो स्वतंत्र राख्या छे, पण रूढिप्रयोगो शब्दना पेटामां मूक्या छे.

बृहद् हिन्दी कोश, संपा. कालिकाप्रसाद वगेरे, प्रका. ज्ञानमंडल लि., वाराणसी, १९८४ (पंचम संस्करण).

आ कोशमां हिन्दी शब्दो एना हिन्दी पर्याय साथे आपवामां आव्या छे. क्वचित् शब्दनो प्रयोग दर्शावती पंक्ति टांकवामां आवी छे. सामासिक शब्दो अने रूढिप्रयोगो शब्दना पेटामां लीधा छे. आमां संस्कृत शब्दो मोटा प्रमाणमां समावी लेवाया छे. अने केटलाक मध्यकालीन शब्दो पण जोवा मळे छे. सानुस्वार वर्णो पहेलां अने निरनुस्वार वर्णो पछी एवो वर्णक्रम छे. कुल शब्दसंख्या १,४०,३०० छे.

नोंधायेला केटलाक जूना हिन्दी शब्दो, केटलाक फारबी-अरबी मूळना शब्दो अने केटलाक संस्कृत शब्दोना आ कोशना अर्थो मध्यकालीन गुजराती शब्दोना अर्थनिर्णयमां उपयोगी थया छे.

भगवद्गोमंडल भाग १थी ९, भगवतसिंहजी, प्रका. प्रवीण प्रकाशन, राजकीट, १९८६ (पुनर्मुद्रण).

अनेक संस्कृत शब्दो, मध्यकालीन शब्दो, विकिध विद्याशाखाना पारिभाषिक शब्दो, ऐतिहासिक नामो — व्यक्तिओ वगेरेनां — ने समावतो आ कोश मात्र शब्दार्थ-कोश नहीं पण कंईक अंशे सर्वसंग्रह बनवा ताके छे. जोके एमां पूरी अधिकृतता साधी शकाई नधी. शब्दोना अनेक अर्थो नोंधाय छे ते घणी वार तो काचांपाकां साधनोमांधी भेगा करेला जणाय छे. मध्यकालीन शब्दो परस्त्रे घणी वार एना प्रयोग दर्शावती पंक्ति उद्धृत करवामां आवी छे. परंतु करवामां आवेलो अर्थ एमां बंध बेसती न होय एवं पण कोईकोई वार जोवा मळ्युं छे. तेम छतां काळजीपूर्वक उपयोग करीए तो आ ग्रंथमांथी काची सामग्री अवश्य मळी रहे छे. आ ग्रंथमां २,८१,००० उपरांत शब्दो छे.

राजस्थानी सबद कोस खंड १थी ४ ग्रंथ १थी ९, सीताराम लालस, प्रका. राजस्थानी शोध संस्थान, (पछीथी) उपसमिति, राजस्थानी सबद कोस, जोधपुर, १९६२–१९७८.

आ कोश राजस्थानी शब्दोना अर्थ हिंदी भाषामां आपे छे. सानुस्वार वर्णों निरमुस्वार वर्णोंनी पूर्वे मुकायेला छे ते उपरांत वर्णक्रमनी एक घ्यान खेंचती लाक्षणिकता ए छे के एमां ल-क्रने एकरूप गणी 'ल'ना क्रममां साथे ज राखेल छे. 'श' ने 'ष' नथी, एकत्लो 'स' छे. एटले 'श'वाळा शब्दो 'स'मां ज शोधवाना रहे छे. शब्दार्थोंनी साथे घणी वार उदाहरणरूप पंक्तिजों – एकथी वधु पण – टांकी छे. चारणी भाषाना घणा शब्दोनो समावेश छे, ते उपरांत घणा उद्यारभेदोने समावी लेवाया छे. अपायेला अर्थों सो टका प्रमाणभूत नथी, पण कदाच भगवद्गोमंडल करतां आ कोशनी प्रमाणभूतता वधारे छे. आ कोशमां आशरे २,००,००० शब्दों छे.

मध्यकालीन गुजरातना जैन साधुकविओ राजस्थान-गुजरातमां विहार करनारा हता. तेथी राजस्थानीमां टकेला अने गुजरात लुह थयेला घणा शब्दार्थी एमनी कृतिओमां जोवा मळे छे. एवा शब्दार्थी परत्वे आ कोश खूब उपयोगी थयो छे. एम पण कही शकाय के मध्यकालीन गुजराती शब्दकोशने सौथी वधु उपयोगी थयेलो आ कोश छे.

लेक्सिकोग्रॅफिकल स्टडिझ इन जैन संस्कृत, बी. जे. सांडेसरा अने जे. पी. ठाकर, प्रका. ऑरिएन्टल इन्स्टिट्यूट, बरोडा, १९६२.

आमां त्रण जैन प्रबंधोना शब्दो, कृतिवार अलगअलग आपवामां आवेल छे.

ভিহ্

रही गयेला शब्दो पूर्ति रूपे आपवामां आवेल छे. संस्कृत शब्दोना अंग्रेजीमां अर्थ आपवामां आव्या छे अने घणे स्थाने शब्दनो प्रयोग दर्शावती मूळनी पंक्तिओ उद्धृत करी छे. शब्दो नागरी लिपिमां अने संस्कृत कोशना वर्णक्रममां छे. बधी कृतिओना धईने कुल ४००० जेटला शब्दो नोंधायेला छे, परंतु एक शब्द एकथी वधु कृतिओमां मळतो होय एवा दाखला पण घणा छे.

जैन संस्कृत देशी शब्दोना संस्कृतीकरण माटे जाणीतुं छे. केटलाक शब्दोमां विशिष्ट अर्थछायाओ पण विकसी छे. मध्यकालीन गुजरातीमां पण आमांना केटलाक शब्दीनुं अनुसंधान देखाय छे ने तेथी केटलाक लाक्षणिक शब्दप्रयोगोमां आ कोश मार्गदर्शक बन्यो छे.

वनौषधिकोश, संपा. केशवराम का. शास्त्री, प्रका. प्राच्यविद्या मंदिर, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९८२.

आ ग्रंथनो मुख्य भाग ते वनस्पतिओनां संस्कृत नामोनो कोश छे. मूळ शब्द, एना एक के वधु गुजराती पर्यायो मूळ शब्दना अन्य संस्कृत पर्यायो, लॅटिन पारिभाषिक पर्याय अने मळी शक्या ते मराठी, हिंदी, पंजाबी, बंगाळी, तामिळ अने अंग्रेजी पर्याय — ए रीते बधां वनस्पतिनामो अकादिक्रमे आपवामां आव्यां छे. आ कोशमां आशरे ४५०० वनस्पतिनामो छे. चार परिशिधोमांथी पहेलामां कच्छी नामो गुजराती पर्याय साथे, बीजामां लॅटिन नामो संस्कृत पर्याय साथे, त्रीजामां गुजराती नामो संस्कृत पर्यायो साथे अने चोथामां 'सोढल-निघंटु'मां मळतां नवां वनस्पतिनामो समावायां छे.

मध्यकालीन गुजराती वनस्पतिनामोने उकेलवामां आ कोश उपयोगी थयो छे.

वर्णकसमुद्धय भाग १ अने २, (भाग १) संपा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, (भाग २) भोगीलाल ज. सांडेसरा अने रमणलाल ना. महेता, प्रका. महाराजा संयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा, १९५७ अने १९५९.

पहेला भागमां वर्णको छे अने बीजा भागमां एने आधारे करवामां आवेलुं सांस्कृतिक अध्ययन अने शब्दसूचिओ छे. शब्दसूचिओ वे प्रकारे छे — विषयवार अने सामान्य. विषयवार शब्दसूचिमां भोजनसामग्री, वस्त्र, अलंकार, देशप्रदेश, नगररचना अने स्थापत्य, राजलोक अने पौरलोक, शस्त्रास्त्रो, अश्वजाति वगेरेनां नामोनी सूचिओ छे अने सामान्य शब्दसूचिमां ए सिवायना सर्व शब्दोनी सूचि छे. शब्दसूचिमां पहेला भागनो स्थाननिर्देश मात्र छे, अर्थो नथी, परंतु जुदाजुदा विषयोना जे शब्दो छे तेनी समजूती ए विषयोना सांस्कृतिक अध्ययनोमांथी मोटे भागे मळे

छे, जोके आ शब्दो परत्ये आ बीजा भागना सांस्कृतिक अध्ययननो पृष्ठांक आपी शकायो नथी ए अगवड रही गई छे. सामान्य शब्दोना अर्थ माटे तो ए ज्यां वपरायो छे ते स्थान जोतां संदर्भ परथी घणी वार अर्थ ऊकले छे. पहेला भागमां परिशिष्ट २ तरीके मुकायेल क्रयाणक-वस्त्र-आभरण नामाविलना शब्दो सूचिमां आव्या नथी. विषयवार शब्दसूचिमां आववा जोईता थोडा शब्दो सामान्य शब्दसूचिमां रही गया छे. विषयवार शब्दसूचिमां ३५०० जेटला अने सामान्य शब्दसूचिमां २८०० जेटला शब्दो छे.

मध्यकालीन गुजरातीना केटलाक शब्दोना उक्तिप्रयोगो आ ग्रंथमांथी मळे छे ए रीते एणे अर्थनिर्णयमां घणी वार मदद करी छे.

व्युत्पतिविचार, हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. युनिवर्सिटी ग्रंचनिर्माण बॉर्ड, अमदावाद, १९७५.

आ ग्रंथना बीजा खंडमां संस्कृतथी अर्वाचीन गुजराती सुधीना ध्वनिविकासमां जोवा मळता नियमो उदाहरण सिहत आपवामां आव्या छे अने त्रीजा खंडमां केटलाक शब्दो विशे व्युत्पत्ति ने अर्थविषयक नोंधो छे. बन्नेमां आवता गुजराती शब्दोनी अकारादि सूचि पाछळ पृष्ठांकनिर्देश साथे आपी छे. ते द्वारा शब्दनां व्युत्पत्ति ने अर्थ सुधी पहोंची शकाय छे. शब्दसूचिमां १४०० उपरांत शब्दो छे.

आमांनी घणी व्युत्पत्तिओं तो 'गुजराती भाषा लघु व्युत्पत्तिकोश'मां हवे अकारादि क्रमे प्राप्त थई छे, पण शब्दार्थ-विषयक नोंधोनी पोतानी जुदी उपयोगिता छे, जेनो लाभ आ संकलित कोशमां लेवामां आव्यो छे.

शब्दकथा, हरिवल्लम भायाणी, प्रका. क. ला. स्वाध्याय मंदिर, गुजराती साहित्य परिषद, अमदावाद, १९८३.

आ पुस्तकमां शब्दोनां स्वरूप, इतिहास अने अर्थछायाविषयक नोंधो छे. एमां संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिंदी, मराठी वगेरे भाषाओमां जोवा मळता शब्दार्थरूपोने आवरी लेवायां छे. १५० जेटली नोंधो छे पण एक नोंधमां एकथी वधु शब्दो विशे पण चर्चा थई छे. पाछळ आपेली शब्दोनी सूचिमां उल्लेखायेला सघळा शब्दो छे ने ए २८०० जेटला छे जेमां एक शब्दना उद्यारभेदोनो पण समावेश छे.

आमां अपायेलो शब्दना स्वरूप अने अर्थनो इतिहास आ संकलित कोशमां अवारनवार सहायरूप थयो छे.

शब्दपरिशीलन, हरिवल्लभ भायाणी, प्रका. गूर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, अमदावाद, १९७३.

आ पुस्तकना विभाग बीजामां केटलाक प्राचीन शब्दप्रयोगी विशे नोंघो छे. नोंघो १२ छे पण एमां समाविष्ट शब्दप्रयोगो २२ जेटला छे. ए नोंघो आ संकलित कोशमां अर्थनिर्णय परत्वे मददरूप धई छे.

संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी,सर मॉनिएर-विलिअन्झ, प्रका. मारवाह पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ही, १९६६ (पुनर्मुद्रण).

आ कोशमां संस्कृत शब्दों नागरी तेमज रोमन लिपिमां आपेला छे, जोके मुख्य शब्दना पेटामां आवता सामासिक शब्दों केवळ रोमन लिपिमां आपेला छे. अर्थों अंग्रेजी भाषामां छे. शब्द जे-ते अर्थमां ज्यां वपरायों छे ते कृतिओं पण निर्देशी छे. उपरांत, अन्य शब्दकोशो वगेरेमांथी मळता शब्दों पण समावी लीघा छे. आम आ कोश सर्वग्राही यवा जाय छे. आ कोशना शब्दक्रमनी एक लाक्षणिकता खास ध्यानमां राखवा जेवी छे के एमां मूळ घातु परथी साधित वयेला शब्दों, एना वर्णानुक्रमने बदले, घातु पछी तस्त आपवामां आव्या छे. जेमके कृ पछी करण, कर्तृ वगेरे. आ संवर्धित आवृतिमां आशरे १,८०,००० शब्दों छे. थोडा शब्दों पूर्ति रूपे छे.

सर्वग्राही कोश होवाने कारणे केटलाक विरल शब्दोनां स्वरूप अने अर्थनी चावी एमांथी मळी छे.

संस्कृत साहित्यमां वनस्पति, बापालाल ग. वैद्य, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९५३.

आम तो, आमां जुदीजुदी वनस्पतिओ संस्कृत साहित्यमां क्यांक्यां निर्देशाई छे ए पंक्तिओ उद्धृत करीने दर्शाव्युं छे. साथे ए वनस्पतिनी लाक्षणिकताओ वर्णवी छे, एनां संस्कृत नामान्तरो नोंघ्यां छे अने गुजराती वगेरे भाषाओणां ए वनस्पति कये नामे ओळखाय छे ते पण बताव्युं छे. अनुक्रम अकारादि क्रमे छे तेमां १९० वनस्पतिओ उद्घेखाय छे, परंतु पाछळनी शब्दसूचिमां संस्कृत उपरांत गुजराती वगेरेनां वनस्पतिनामो आवरी लेवायां छे. एमां १८०० उपरांत शब्दो छे, जेमां थोडा ग्रंय, व्यक्ति वगेरेनां नामो छे.

वर्णनात्मक होवाने कारणे आ ग्रंथ केटलांक वनस्पतिनामोने ओळखवामां विशेष उपयोगी थयो छे.

संस्कृत-हिन्दी कोश, (छात्र-संस्करण), वामन शिवराम आप्टे, प्रका. नाग प्रकाशक, दिल्ली, १९८८ (पुनः मुद्रित संस्करण)

आ कोशमां संस्कृत शब्दोनुं घडतर दर्शाववामां आव्युं छे, एना हिन्दी अर्थो आपवामां आव्या छे अने शब्दो ज्यां वपराया छे ए कृतिओना निर्देशो पण छे. केटलीक वार पंक्ति पण उद्धृत थई छे. कोशमां आशरे २५,००० शब्दो छे. शब्दना पेटामां मुकायेला सामासिक वगेरे शब्दो जुदा. परिशिष्ट रूपे ५००० शब्दो पाछळथी उमेरायेला छे.

खास करीने संस्कृत मूळना मध्यकालीन शब्दोना योग्य आधुनिक पर्यायो

मेळववामां आ कोश उपयोगी थयो छे.

सार्थ गूजराती जोडणीकोश, प्रका. गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद, १९६७ (पांचमी आवृत्ति).

शब्दोना गुजराती पर्यायो आपवा उपरांत एना संस्कृतादि मूळनो शक्य होय त्यां निर्देश कर्यो छे. साधित शब्दो मूळ शब्दोना पेटामां लीघा छे ने रूढिप्रयोगो पण त्यां लई लीघा छे. कोशनी आ पांचमी आवृत्तिमां ६८४६७ शब्दो छे.

आ कोशना केंटलाक तळपदा शब्दो मध्यकाळ साथे समान छे, तेथी अर्थ निश्चित करवामां आ कोशनो उपयोग थयो छे.

आ उपरांत, शब्द अने अर्थ (भोगीलाल सांडेसरा), लोकसाहित्य शब्दकोश तथा संतसाहित्य शब्दकोश (जेठालाल त्रिवेदी), डिक्शनरी ऑव् इन्डो-आर्यन लॅंग्वेजीझ, अन्य केटलाक कोशो तेमज केटलाक जैनधर्मविषयक ग्रंथोनो प्रसंगोपाल उपयोग करवानो थयो छे.

सांकेतिक चिह्नो अने सामान्य संक्षेपाक्षरो

- आ कौंस सर्वत्र संपादकीय नोंधने निर्देशे छे.
- (9) आ कौंसमां मुकायेला मध्यकालीन शब्द मूळ कृतिमां पाठांतर रूपे मळे छे एम समजवानुं छे. (२) आ कौंसमां मुकायेली व्युत्पत्तिओ मूळ आधारग्रंथमां छे एम समजवानुं छे.
- फूदडीनी निशानी (9) मध्यकालीन शब्दनी पूर्वे होय त्यारे ए शब्दनुं ए लप शंकास्पद होवानुं दर्शावे छे; (२) आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे होय त्यारे ए आधारग्रंथनो अर्थ छोडवामां आव्यो छे एम दर्शावे छे; (३) आपेला अर्थनी पूर्वे होय त्यारे ए अर्थ विशेनो संशय दर्शावे छे अने (४) अपायेली व्युलित्तनी पूर्वे होय त्यारे ए व्युलित्तनी प्रमाणभूतता शंकास्पद होवानुं दर्शावे छे, पण संस्कृत शब्दरूपनी तरत पूर्वे होय त्यारे ए कल्पित रूप छे एम दर्शावे छे.
- मींडानी निशानी आधारग्रंथना संक्षेपाक्षरनी पूर्वे ज आवे छे अने मध्यकालीन शब्द ए आधारग्रंथमां निर्दिष्ट पृष्ठ पर मळतो नथी, अथवा तो एमां पृष्ठांकनो निर्देश नथी एम दर्शावे छे.
- अ. अरबी
- अपभ्रंश
- **ত.** তর্বু
- क. कन्नड

[60]

काठियावाडी का. गुजराती गुज.

देश्य दे.

पंजाबी ų̈́.

पाली षा.

प्राकृत . आ.

फारसी फा.

बहुवचन ब.व.

भी. भीली

मराठी म.

सरखावो सर.

संस्कृत सं.



अनुक्रम

प्रकाशकीय निवेदन • [७] संपादकन्रं निवेदन • [८] एक नूतन शिखरनुं सफळ आरोहण • हरिवल्लभ भायाणी • [१४] न वीसरवा जेवो वारसो • जयंत कोठारी • [१६] संपादकीय भूमिका • [२७] मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश • १-५६४ थोडी शब्दार्थचर्चा • ५६५-६२७

9. अउले खाले वहै ● ५६८; २. अउल्हाइ ● ५६८; ३. अउगनाइ ● ५६८; ४. अउगउ, उगउ • ५६९; ५. अखाडो • ५६९; ६. अछूतउ • ५७०; ७. अकज, अकाज • ५७१; ८. अखत्र, अखंत्र, अखतर, खत्र • ५७२; ९. अगम, निगम • ५७३; १०. अगाज • ५७५; ११. अघाट (आघाट) ऊभो • ५७५: १२. अच्छउं. आधुं • ५७६; १३. अज उभां • ५७६; १४. अजंग • ५७७; १५. अडसाला/अडसीला • ५७७; १६. अणगाल/अगाल • ५७७; १७. अणाथ, अणाथि, आथ, आथि, आथ्य • ५७८; १८. अणिख • ५७९; १९. अणिअ/अणीय आखइ • ५७९; २०. अणीसर • ५७९; २१. अणूरुं, अणूरति • ५८०; २२. अत • ५८१; २३. अतिधज • ५८२; २४. अतिसंता • ५८२; २५. अधरास, ओलववुं, ऊलववुं • ५८२; २६. अनिवड, निवड • ५८४; २७. अनुभाव, अनु भाव • ५८६; २८. अप्रमाण • ५८६; २९. अवाह • ५८७; ३०. अभोखउ, आगोखउ, अभोखण, अभोखणुं, अंबोषण, अबोखण • ५८७; ३१. अमलीमाण, अमलीमान • ५८९; ३२. अमाइ, अमामो, अमाणुं, अभान, अमानी • ५८९; ३३. अनिआउ, अन्या, अंत्रा, अत्रैयो, अन्याई • ५९०; ३४. अरज • ५९३; ३५. अलगूं, अलगेरी • ५९३; ३६. अंक भरवो • ५९५; ३७. आयुं, आयेरुं • ५९६; ३८. आडइ, आडौ • ५९७; ३९. आदर, आदरवं • ५९८; ४०. करो • ६०९; ४९. खगां, खगमंडल, खगाकार • ६०९: ४२. खराप • ६०२; ४३. गान, किण गानइ • ६०२; ४४. उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसीकल, ओशिंगळ, ओशींकल, ओशींगल, ओसंकल, ओसीकल • ६०३; ४५. काण, काणि, काणी, काणि, कुलकाणि, मुहकाणि • ६१३

अंग्रेज, फ्रेन्च वगेरे पाश्चात्य प्रजाओए पोताना वापरमांथी के शब्दकोशोमांथी जुनवाणी शब्दो के रूढिप्रयोगो पर ढांकण दईने भाषाना कलेवरने शोषावा न देतां तेमने जीवता राख्या अने तेमां नवा अने नरवा अर्थभाव (कन्टेन्ट)नां टॉनिक पूरीने भाषाना हाडने पृष्ट राख्युं छे, ज्यारे आपणे त्यां आजनी आपणो शिष्ट वर्ग एवी सामग्रीना वापर सामे मों मचकोडे छे.

भाषा ए धरती परनो पाणीवीरडो छे. जनवाणी ए एनी अखूट सरवाणी छे. घडा पाणीना वीरडाने वाडकी के छालियाथी उलेच्ये जाओ ने सो बेडां पाणी भरी ल्यो. न उलेचो तो वीरडानुं पाणी घडों ज रहेशे. एम वाडकी-छालियाथी एने उलेचवानी प्रक्रिया पण जनवाणी ज छे. एनाथी रोजेरोज उलेचाया वगर वीरडो मेलो ने बंधियार बनी जशे. भाषारूपी वीरडानुं पाणी जनवाणीने वाटके चडे त्यारे ज ए फिल्टर अने क्लॉरिनेट धईने प्रजाना वापर माटे नखुं थयुं गणाय.

स्वामी आनंद

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

शब्दो थकी चित्त पंखाळुं बनी जाय छे. ॲरिस्टॉफनीझ

जूनी वस्तुओ वेचनार एक दुकानदारने त्यां में एक टेबल जोयेलुं. लागतुं हतुं तो सामान्य पण एनी किंमत हजारो रूपियामां अंकाई हती. एनुं कारण पूछतां एणे कह्युं : "जूनुं छे एटले मोंघुं छे. एना उपर घणा हाथ बेठा छे, एनुं काष्ठ घणी आंगळीओना स्पर्शथी सुंवाळुं बन्युं छे... आ टेबल उपर पेढीओनो इतिहास बेठो छे एटले मूल्यवान छे. जाणकार घराक ए बराबर जाणे छे."

भाषा ए पुराणी चीजवस्तुओनो भंडार. दरेक शब्द ज्ञाननो रत्नजडित नानकडो कोश छे. ज्ञानी घराकनी जेम एनी कदर करतां श्रीखीशुं तो एनो पहेलो लाभ आपणने ज मळशे.

फाधर बालेस

अ पष्टिप्र. निश्चयार्थ अव्यय, जि (सं.च) **अड** *तेरका*. अति **अइंढि** *लावल.* एंठ, उच्छिष्ट [सं.*आचष्ट] **अइरावण** *तेरका*. ऐरावण, [इंद्रनो हाथी] **अइसा** नरप. आवा (सं.ईदृश) [हिं.] अइसिउं नलरा. एवं (सं.ईदृश) **अइहवि** गुर्जरा-टि. सौभाग्यवती स्त्री (सं. अविधवा) **अउ** उक्तिर. आ (सं.अयम्) **अउआरणे** *कर्पूमं*. ओवारणे [सं.अपवारण] **अउखघ** *प्राचीसं*. औषध अजगनाड *उक्तिर*. ध्यानमां न ले (*सं. अपकर्णयति) [सं.अवकर्णयति] अउगनिया जुओ अडगनिया, अवगनियां, उगनियुं **अउगी** **तेरका. प्राचीसं.* मूगी; जुओ उगउ **अउन** *उक्तिर*. अयोध्या **अउट. अऊट** अंबरा. उक्तिर. नलरा. स्थ्रलिफा. साडा त्रण (सं.अर्धचतुर्थ) **अउत** मदमो. अयुत्त, दश हजार अउचारितं उक्तिर. अवधारतं, ध्यानमां लेतुं **अउलवड** उक्तिर, ओळवे, कपटथी पडावी ले (सं.अपलपति); जुओ ओलवइ अउ**ले (अउले खाले वहे) ***जिनरा. अवळी खाळे वहे, ऊभराय, छलकायी अउलेवेवउं षडाबा. ओळववुं (सं.अपलप्) अउल्हाइ जिनरा. *संकृचित धाय, [पाछुं पडे, खिन्न थाय] दि.ओह्ली **अउहटइ** *जिनरा*. दूर थाय, [आघुं खसे] अउंगउ-मुगड *उक्तिर*. ऊगोमूगो, मूगो

अकज अखाका. न करवा जेवुं काम, [न थवा जेवूं, अघटित] दशस्कं(२). प्रेमाका. सिंहा(शा). नकामुं, व्यर्थ (सं. अकार्य) **अकयत्य** *आरारा.* एके; ऐतिका. अकृतार्थ, [जेनुं जीवन सार्थक नथी एवो] **अकरणि** *षडाबा***. नहीं** करवामां **अकरतउ** *षडाबा*. नहीं करतो अकलि ऐतिरा. नहीं कळातुं, नहीं समजातुं **अकह** *प्राचीफा*. अकथ्य, अवर्णनीय (सं. अकथ) अकाचीन सिंहा(शा). ?, [*अकिंचन, **"**कर्मशून्य] **अकाज** *अखाछ. आरारा. शीलक.* नकामुं, व्यर्थ, खोटुं; अखाका. अकार्य, न करवा जेवं काम, [हानि]; *उपबा. चतुचा*. *ऋपचः अघटित कार्य **अकाजि** *गुर्जरा. विराप.* अकारण, [खोटी रीते, खराब रीते, खोटुं करीने] (सं.अकार्य) **अकाम** *अखाका*. निष्काम अकारिम प्राचीफा. अकृत्रिम, स्वाभाविक (सं.अ+कार्मिक ?) **अकिसी** *जिनरा.* अकीर्ति, अपयश अपावनार नामकर्मभेदो जि.ो **अकीघड** *षडाबा***. व**णकीधे, वणकर्ये **अकुप्य** *वाग्भबा.* सोनुं-चांदी [सं.] अकुढीणउ वीसरा. अकुलीन [रा.] **अकेकलां** कादं(शा). एकेक,

(सं.अवाङ्मूक); जुओ उगउम्गउ

अऊठ जुओ अउठ

(सं.एकैक)

अकोटडो, अकोटी नरका. प्रेमाका. स्त्रीओ-नुं कानमां पहेरवानुं एक घरेणुं [सं. अर्कपत्रिका]; जुओ अखूटी अक्खइ षष्टिप्र. कहे छे (सं.आख्याति) **अक्खर** बष्टिप्र. अक्षर **अक्खीण** *षडाबा.* अक्षीण, अनश्वर **अक्रत्य** *देवरा.* अकृत्य, [द्रष्कृत्य] **अक्रित** *प्रेमाका.* अकृत्य, दुष्कृत्य अक्षर प्रेमाका. विधिना लेख. भाग्यलेख अधुरस विमप्र. शेरडीनो रस [सं.इक्षुरस] अक्षाणुं आरारा. शुभ कार्यमां भरवामां आवतुं चोखा वगेरे अखंड अनाजनुं पात्र, पूजानो उपहार (सं.अक्षतवायन) [सं.अक्षतदान]; जुओ अख्याणुं अक्षोद कार्द(शा). अखोडना वृक्षन् लाकड् (सं.) अखइ तितरा. अक्षय, *अखूट, [अनश्वर, हानिरहित] अखउत्र आरारा. पूजानी सामग्री (सं.

अक्षतपात्र) **अखडाय** *प्रेमाका.* अथडाय, अफळाय अखडावखडी उपवा. खाडाखबडावाळी अखत जुओ झखत

अखत्र, अखंत्र आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. *सिंहा(म). *हरिख्या. अयोग्य, निंद्य, खराब, अनिष्ट (सं.अक्षात्र); जुओ खत्र अखय नेमिछं. लावल. अक्षय

अखयदान आनंस्त. अक्षयदान, अभय-दान]

अखंच विमप्र. खचकाया विना अखंज अभिक्तः अक्षयः, [अखंड] सिं.अ+ खंजी

अखंत्र जुओ अखत्र

अखंप अभिक. [खांप -- खामी वगर], पुष्कळ, [पूरेपूरुं] [सं.]

अखा उषाह. ओखा (सं.उषा)

अखाडउ उक्तिर. "गुर्जरा. "विराप. [शौर्य-स्पर्धा], शौर्यस्पर्धानुं मेदान (सं.अक्ष-पाटक)

अखाडामंडप "षडाबा. क्रीडाभूमि, रमतनुं मेदान] (सं.अक्षपाट+मंडप)

अखाडे *अखाका*. अथडावे. अफळावे जिनरा. अखियात आख्यात,

[प्रसिद्धि]; **ऐतिका*. [प्रसिद्ध, यशस्वी] अखी जिनरा. अक्षय, [अमर]

अखीक *गुर्जरा.* कह्युं (सं.आख्यातम्)

अखीणमहाणस ऐतिका. लई आवनार पोते न जमे त्यां सुधी भिक्षान्न खुटे नहीं एवी शक्ति [सं.अक्षीण+महानस]

अखूटइ *गुर्जरा. प्रद्युचु.* आयुष्य खूट्या वगर

अखूटी *नेमिछं*. अकोटी, काननुं एक आभूषण; जुओ अकोटडो

अखे अखाछ. दशस्कं(१). प्रेमाका. अक्षय, न खूटे एदुं

अखेतरिया उतराबी * नरका. जोवडावी शुं वळग्युं छे ते नक्की करावो] अखेदपणइ आनंस्त. अखेदपणे, [तकलीफ विना, सहजपणे]

अखेपव चित्तसं. अक्षयपद, ब्रह्मपद **अखेपात्र** *अखेगी*, अक्षयपात्र अखेर कामा(त्रि). कामा(शा). चंद्रवा. अक्षर

अखेला *अखाका*. खेल्या वगर

अखोड *आरारा(व). उक्तिर.* ऐतिका. अखरोटनुं वृक्ष (सं.अक्षोटक)

अख्याणां *प्रेमाका*, मंगळ प्रसंगे भरवामां आवतुं अखंड अनाजनुं पात्र [सं.अक्षत-वायन, अक्षतदान]; जुओ अक्षाणुं

अगड *नरका. प्रेमाका*. प्रतिज्ञा, बाधा [*अ.अक्द]

अगड नलरा. साठमारीनुं मेदान **अगडी** *ऐतिका*. अभिग्रह, व्रित, बाधा] [*अ.अक्द]

अगत्य दशस्कं(१). अगम्य गति अगषीउ आरारा(व). वृक्षविशेष, अगथियो, सेगरो (सं.अगस्ति)

अगनि-झाला *लावल*. अग्निनी ज्वाळा अगनि साधी जुओ साधी

अगम दशस्कं(२). अमंगळ भाविना संकेत: **अखाका. *नरका.* आिगम, मूळ शास्त्र – वेद]; जुओ अगंम, आगम

आरारा(व). उक्तिर. ऋषिरा. अगर कामा(शा). तेरका. नरका. नलरा. वसंवि(ब्रा). अगुरु, एक जातनुं सुगंधी लाकडुं

अगरज वसंवि: अगुरुवृक्ष, अगरजा अगररस नरका. अगुरु(सुगंधी लाकडुं)नो रस

अवरु प्रेमाका. ए नामना वृक्षनी छालनो भुको

अगरु उखेव- *प्राचीसं*. अगर उखेववुं, अगरनो धूप उडाडवो; जुओ उखेवे **अगवाणि** *वीसरा*. आगेवान, अग्रणी (सं.

अग्रयावन्)

अगस्ति *विराप***, अगस्य ऋषि अगंजिड** *ऐतिका.* अपराजित [सं.अगंजित] **अगंजी** नेमिछं, गांज्यो न जाय तेवो अगंग मदमो. आगम. *शैव शास्त्रो, पिरंपरा-प्राप्त मूळ शास्त्रो - देद]; जुओ अगम अगाज आरारा. दुष्कर; शृंगामं. अग्राह्य, [अस्वीकार्य]: *प्रेमाका*. अग्राह्य, अगाध, [पार न पामी शकाय एवं]; *विमप्र. [*अग्राह्य - मोटो उत्सव]; जुओ

अगाध *सम्यचो*. निस्तरंग, [स्थिर] **अगाल** प्रवोप्र. प्राचीफा. अकाळ. अयोग्य समय, कवखत

अधराज

अगावती चंद्रवा. वृक्षवाळी (सं.अग परथी) अगाश, अगास गुर्जरा. विमप्र. विराप. आकाश

अगाहा *आरारा.* अगाध, ऊंडी **अगि** गुर्जरा. आग (सं.अग्नि) अगिअर. अगियर नलाख्या. प्रेमाका. अजगर

अगिया *प्रेमाका*. आगिया **अगिलंड** *वीसरा*. अग्रणी, महान (सं.अग्र) **अगुण** *तेरका*. एक वनस्पति अपुरुल्ह् जिनराः अगुरुलघुपर्याय, शिरीर- नी अगुरु (स्थूळ के भारे नहीं) तथा अलघु (कृश के हळवी नहीं) स्थिति, सप्रमाणता, ए प्राप्त करावनार नामकर्म-भेद] [जै.]

अगेवाण उक्तिरः आगेवान (सं.अग्र परथी) अगेवाणु उक्तिरः आगळ रहेनार, मोखरानुं; गुर्जराः नेतृत्व

अगोचरनी गत्य *प्रेमाका*. अदृश्य रहेवानी शक्ति

अगोप *दशस्कं(१). प्रेमाका*. गोप्य, गुप्त अग्गिल *तेरका*. आगळ, [पासे, समक्ष] (सं.अग्र परथी)

अग्गली नलरा. आगळ पडती, विशिष्ट, आगली

अगि प्राचीसं. अग्नि, आग अग्गिम उक्तिर. आगळ रहेलुं, अग्रिम अग्गेवाणि *आरारा*. आगळ चालनार, अग्रेसर

अग्गेवाणु *उक्तिर.* आगळ रहेनार, मोखरानुं अग्यर *चतुचा.* अगुरु, अगर अध *नरका. हरिख्या.* पाप [सं.]

अघउ विमप्र. शोभ्यो

अघ-ओघ *प्रेमाका*. पापसमूह [सं.]

अघ-ओघ-दहन *दशस्कं(१)*. पापसमूहने बाळे तेवुं [सं.]

अधगम सिंहा(शा). आगम ने निगम साथे गणावेलो एक शास्त्रप्रकार, [*अधमर्षण मंत्र] (सं.अध+गम=पापविनाशक)

अधमर्षण कादं(शा). पापनो नाश करनार मंत्र के मंत्रविधि (सं.) अधराज नरका. अग्राह्म, ग्रहण न करी शकाय एटलोबधो, अगाध; जुओ अगाज

अघाट (उभो अघाट) *नंदब. चारे आघाट — सीमा वच्चे ऊभो रहीने, जाहेरमां, खुल्लेखुल्लुं]; जुओ आघाट

अधाती आनंस्त. अधाती कर्म, जीवना मूळ गुणोनो घात नथी करतुं ते कर्म [जै.]

अघोरा *ऐतिका.* जे घोर नथी होतुं ते, [सौम्य, सुंदर]; जुओ उअचट

*अचट (*उअचट) *चारफा. [गर्व] [सं.उज्ञटा]; जुओ उअचट

अचरत भदमो. अचरज

अचरिज, अचरिज, अचरीज आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. देवरा. नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. विक्ररा. अचरज, आश्चर्य

अचल जुओ अवल

अचयुं अखाका. अखाछ. अखेगी. *नरका. न कहेलुं, अवर्णनीय; अखाछ. ब्रह्म

अचंभ *आरारा*. आश्चर्यकारक, नवतर (सं.अत्यद्भुत); जुओ असंभि

अचंभड, अचंभू ऋषिरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. अचंबो (सं.अत्यद्भुत)

अचालनिउ *षडावा*. अडग, दृढ (सं. अचालनीय)

अचाते नंदव. अनिवार्यपणे, [न चालतां] अचित्त कादं(ध्र). बावरुं

अचिरज, अचिरत, अचीरीज आनंस्त. प्राचीफा. वेताप. सिंहा(शा). अचरज, आश्चर्य अचिरेण शृंगामं. तरत (सं.) अचितु गुर्जरा. अणचितव्युं, ओचितुं (सं. अचितित) अचीरीज जुओ अचिरज

अचीरीज जुओ अचिरज अचींतविज *गुर्जरा.* अणचिंतव्युं अचीरिजं *षडाबा.* वणचीरेलुं

अच्चभु गुर्जरा. अत्यंत विस्मयकारक (सं. अत्यद्भुत)

अच्चन्भुय प्राचीसं. अति आश्चर्यकारक (सं. अत्यद्भुत)

अच्छइ, अछइ, अछि आरारा. उक्तिर. उषाह. गुर्जरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रबोप्र. प्राचीफा. प्राचीसं. विराप. हरिवि. छे (सं.आक्षेति); प्राचीसं. रहे *अच्छक (उच्छक) जिनरा. उत्सुक अच्छय तेरका. आछुं, [सुंदर] (सं.अच्छ)

अच्छर, अच्छरा, अच्छरी तेरका. प्राचीसं. अप्तरा; जुओ कइच्छरी

अच्छरक *हम्पीप्र*. आज्ञाभंग

अच्छरा जुओ अच्छर

अच्छरायण * चारफा. [नृत्य]; जुओ अछरायण

अच्यंत *चित्तसं.* अचिंत्य, घणुं

अच्छरी जुओ अच्छर

अच्छेरा *षष्टिप्र.* अचरज (सं.आश्चर्य)

अच्यंत *चित्तसं.* अचिंत्य, घणुं

अछइ जुओ अच्छइ

अछतउ उक्तिर. होतो, रहेतो

अखतो अखाका. अखाछ. जिनरा. प्रबोप्र. जेनुं अस्तित्व नथी तेवो, असत्, मिथ्या अखरायण *प्राचीफा*. नृत्य (सं. अप्सरायन?); जुओ अच्छरायण अखं *आरारा*. छुं

अछाड्बुं दशस्क(१). पछाडवुं (दे.अच्छोड) अछाणिइ षडाबा. गाळ्या वगरनुं (सं.क्षण् परथी); जुओ अणछाणियां

अछि जुओ अच्छइ

अछिवउं उक्तिर. होवुं, रहेवुं

अछीउं *उक्तिर*. रखातुं

अधूत उक्तिर. स्पर्शदोषना अभाववाळुं, निर्मल (सं.अच्छुप्त)

अछेद *आनंस्त*. अछेद्य

अछेप *जिनरा*. अस्पृश्य

अष्ठेरं षष्टिप्र. अचरज[भरी घटना], [अपूर्व घटना] (सं.आश्चर्य)

अछेह *आरारा*. छेडा वगरनुं, पार वगरनुं, खूब [सं.अ+छेद]

अछोपादि *षडाबा. [अस्पृश्यता वगेरे] अज अखाका. अखेगी. नरका. ब्रह्मा [सं.];

प्रेमाका. बकरुं [सं.]

अज (अजउमाँ) *सिंहा(शा).* ?, [*अत्यारे ज. ऊभाऊभी

अजइ *वीसरा*. हजी, हवे (सं.अद्यैव)

अजमाण *नरका.* अजमो [हिं.अजवाइन] अजमाल **अखाका. *अखाछः चित्तसं.* ?,

[*उजमाळ, *उज्ज्वल, *प्रकाशभान, *प्रकाशित]

अज़बज़ाइ उपबा. [जीवरक्षानी] जतन – संमाळ विना

अजयजाबंत थिय्र. जयणा विनाना, [हिंसा

यळवानी काळजी विनाना]

अजर अभिऊ. कस्तुवा. चंद्रवा. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा). ढील, विलंब (अ.अज्)

अजर अखाका. प्रेमाका. जरा – वृद्धत्व विनानुं, जीर्ण न थाय तेवुं; नरका. पच्युं नथी एवुं, [टक्युं नथी एवुं, गुमादेलुं, नष्ट] [सं.]

अजरभ-जरण *अखाका*. अजीर्णता अने जीर्णता

अजस *उपबा. गुर्जरा*. अपयश

अजस *नरका.* सतत, [निरंतर] [सं.] **अजंज** *मदमो.* अजंपो, [अस्वस्थता, क्लोवाट] [अ.अज्न]

अरुजा *अखाका. अखेगी. प्रेमाका*. माया [सं.]; *प्रेमाका*. माया, [जोगमाया]; बकरी [सं.]

अजाचिक *आरारा*. अयाचक, अजाचक, न मागवुं पडे तेवा

. अजाणतो *उपवा. विराप. षडाबा.* नहीं जाणतो, अजाण (सं.अ+ज्ञान परधी)

अजाणि वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). अज्ञान, मूर्ख (स्त्री)

अजाणिवरं *उपबा. षष्टिप्र.* [न जाणवुं ते], अज्ञान

अजापित अ*खाका. अखेगी*. मायानो पित, ब्रह्म [सं.]

अजारो नंदब. इजारो

अजिउ तेरका. हजी (सं.अद्यापि+खलु); जुओ अञ्जिउ

अजिय वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). हजी

[सं.अद्यापि]

अजिर कादं(शा). आंगणुं (सं.)

अजी *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा.* हजी (सं.अद्यापि)

अजीउ *गुर्जरा.* हजी (सं.अद्यापि); जुओ अञ्जिउ

अजीय गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(द्वा). हजीये, हजी पण (सं.अद्यापि)

अजुआली शृंगामं. अजवाळी, [शुक्ल पक्षनी]; ऐतिका. उज्ज्वल [करी]

अजूआलउं ऋषिरा. षष्टिप्र. अजवाळुं (सं.उज्ञ्वालयितम्) (सं.उज्ञ्वालकम्)

अजूआने *लावल*. अजवाळे, प्रकाशित करे अजू**टुं** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. अजीटुं, एटुं [*सं.आजुष्ट]

अजूयालउं विराप. *अजवाळुं, गुर्जरा. [उजाळायेलुं] (सं.उड्यालयितम्)

अजोगी जिनरा. अयोगी [केवली], सर्वव्यापाररहित केवल – शुद्ध ज्ञाननी आत्मावस्था] [जै.]

अञ्च *तेरका*. आर्य [आदरवाचक]

अज-कि प्राचीसं. आजकालमां, [थोडा समयमां] [सं.अद्य+कल्य]

अञ्जवसरण जिनराः अध्यवसाय, [आत्मा-नो] परिणामविशेष, [भावोक्कर्ष] [जै.]

अज्ञवि *ऐतिका.* आज पण [सं.अद्यापि] अज्ञा *नेमिछं.* आर्या. साध्वीओ

अजिउ, अजिय, अजिउ, अजीय, अजीउ प्राचीसं. हजु, हजी, [सं.अद्यापि]

अजीउ *गुर्जरा.* हजी (सं.अद्यापि)

अजो प्रबोप. महानुभाव (सं.आर्यः)

अटकण *अखाका*. अंतराय; *नरका*. न बोली शकाय एवुं, [आडुंतेडुं, मनफावतुं (वचन)]

अटकती *आरारा*. अनुमान करी, विचारी, नक्की करी

अटकबुं *दशस्कं(९)*. युद्ध करवा बाथ भीडवी; *प्रेमाका*. अटकी जवुं, चोंटवुं, लुब्ध बनवुं

अटकाणंड जिनरा. अटकी रह्यो, [थंभी गयो]

अटणाता *प्राचीका*. अथडाता (सं.अट्)

अटाट अखाका. अखाछ. नकामुं, फोगट; नकामी प्रवृत्ति

अटारडुं, अटारुं नरप(द). नरका. ग्रेमप. प्राचीका. शृंगामं. वांकुं, अटकचाळुं [*सं.अट्ट]

अटाल, अटालि, अटाळी दशस्कं(२). प्राचीफा. प्रेमाका. रूपच. अटारी, बारी, झरूखो (सं.अट्टालिका)

अंट्ड *तेरका. नेमिछं*. आठ (सं.अष्ट)

अट्टम तप *जिनरा.* एक साथे त्रण दिवसना उपवास [सं.अष्टम+तपस्]

अद्ठमि, अद्ठमी *गुर्जरा. नेमिछ.* आठम (सं.अष्टमी)

अट्ठाणक संड षडाबा. एकसो अञ्चाणुं (सं.अष्टानवति+शत)

अट्ठावय गुर्जरा. तेरका. अष्टापद [पर्वत] **अट्ठेतालीस** षडाबा. अडतालीस (सं.अष्ट-चत्वारिंशत्) अद्ठोतरु सच गुर्जरा. यडाबा. एकसो आठ (सं.अष्टोत्तरशत)

अद्वेत्तरु सहस्सु *षडाबा.* एक हजार आठ (सं.अष्टोत्तर-सहस्र)

अठ आरारा. गुर्जरा. तेरका. आठ (सं.अष्ट) अठतालीस *उक्तिर*. अडतालीस (सं.अष्ट-चत्वारिंशत)

अठत्रीस उक्तिर. आडत्रीस (सं.अष्टत्रिंशत्) अठम आरारा. सळंग त्रण दिवसना उपवास अठिम, अट्टिम आरारा. आठमनो (सं. अष्टमी)

अठसट्टि यडाबा. अडसठ (सं.अष्टाषष्टिः) अठहत्तरि उक्तिर. अठ्योतेर (सं.अष्ट-सप्ततिः)

अठंगी *प्रेमाका*. अढेली, टेको दई **अठार** *उक्तिर*. अढार (सं.अष्टादश)

अठाही उक्तिर. अठाई, आठ दिवसनुं तप [सं.अष्टाह्निका]

अित्सालीस षडाबा. अडतालीस (सं.अष्टा-चत्वारिंशत्)

अठील *पडाबा***. बे**डी

अष्ट्रीम जुओ अठमि

अट्टसट्टा विमप्र. अडसठ [सं.अष्टाषिः]

अड्डोतेर सो *प्रेमाका.* एकसो ने आठ [सं. अद्येत्तरशत]

अट्टोत्तर सो आनंस्त. एकसो ने आठ अड ऐतिका. जिनरा. प्राचीसं. अष्ट, आठ अडकदडक प्रेमाका. दडी जवाय – गबडी पडाय तेवी

***अडगनिया [अउगनिया]** *ऐतिका.* काननुं

एक आभूषण

अडनउथ सर्थं *षडावा.* एकसो अठाणुं (सं. अष्टानवतिशत)

अडयाला *पडाबा***. अ**डतालीस [सं.अष्ट-चत्वारिंशत्]

अडवडे उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. डगडगतो पडी जाय, लथडियां ्खाय, गोथां खाय (दे.)

अडबण *ग्रेमाका*. जोडा वगरना, उघाडा (सं.अनुपानह्); जुओ अणवण

अडवन जिनरा. अञ्चवन [सं.अटानवित]

अडवुं दशस्कं(१). प्रेमाका. अथडामणमां आववुं, लडवुं; चंद्रवा. सिंहा(शा). वळगवुं, चोंटवुं; चंद्रवा. नरका. मदमो. अटकवुं, अटकीने रहेवुं, धया विना रहेवुं; मदमो. सस्तस. लावल. पहोंचवुं, थवुं; प्रेमाका. अटकाववुं; मदमो. नडवुं

अडसीला * नेमिछं. [हठीला] [रा.अडसाला] अडागर अंबरा. प्राचीफा. नागरवेलनां पान अडागर पान वसंवि(ब्रा). नागरवेलनां पान अडाणा विमप्र. [गीरवे लीधेला], भाडेथी

अडाया *लावल*. लगाड्या

अडीअल मदमो. छंदविशेष

अडी बेसलुं *प्रेमाका.* हठ, जीद करवी; जुओ हडी

अहुयो वेताप. अडवो, [आमूषण वगरनो] अहुयो-पहुयो वेताप. अडवो-पडवो, साव अडवो, [आभूषण वगरनो]

अडूई *विमप्र*. अडवे (खाली), [आभूषण वगरना] **अडे** *चित्तसं.* नडे **अडोली** *जिनरा.* आभरणहीन, [अडवी]

अ**डिय** *प्राचीसं*. आडी [*सं.अड्ड]

अड्युं राखे *प्रेमाका***. विनानुं राखे, अटकावी** राखे

अड्युं रहेतुं चित्तसं. अटकी रहे छे अबर्ड पडाबा. अदी (सं.अर्धत्रियः)

अखर भार आरारा. प्रेमाका. अखर जातनी, बधी जातनी (वनस्पति)

अद्यरोतक संज यडाबा. एकसो अद्यर [सं.अष्टोत्तरशत]

अण *जिनरा. [अनंतानुबंधी, अनंतकाळ सुधी आत्माने संसारमां भ्रमण करावनार] [प्रा.] [जै.]

अणआधारिइं उपवा. आधार – आश्रय -- मदद विना

अणआलोई ऋषिरा. आलोचना विना, गुरु समक्ष दोषनो स्वीकार कर्या विना

अणआलोची *षडावा. [विचार्या विना] (सं.आलोच्)

अणकिंगिइ उपवा. वणऊग्ये, ऊग्या पहेलां अणकर्ठी यडावा. ऊठ्या विना, बरखास्त थया विना

अणकरतं उपवा. वाग्भवा. नहीं करतो अणकरिं उपवा. गुर्जरा. वणकर्ह्यं अणकीषद् उपवा. वणकर्ये, कर्या विना अणख वीसरा रोष [दे.अणक्ख;सं.अनीक्षा] अणखिले उपवा. न चूके एवो (सं.अन्+ स्खलित)

अणखाइय *प्राचीसं*. अप्रसन्न, रुष्ट

अणखि. अणखी *नरका. नेमिछं*. क्रोध, रोष, अणगमो (दे.अणक्ख) सिं. अनीक्षा

अणखूरि *अंगवि*. आयुष्य खूटे ते पहेलां अणगमी गुर्जरा. न गमी (अण+सं.गन्यते) अणगल *अभिऊ.* पुष्कळ (सं.अनर्गल) अणगार आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. घर विनाना, परिव्राजक, साधु (सं. अनागार)

अणगाल *अभिक. अकाल. खराब समयो प्रा.ो

अणगुक उक्तिर. अणगो, राध्या विनानं भोजन(सं.अनग्निपक्वः)

अणघातिइ षडाबा. नाख्या विना **अणचव्युं** *अखाका. अखाछ. अखेगी.* न कहेलूं, अवर्णनीय, ब्रह्म

अणछतं *अखाका*. अखेगी. अखाछ. चित्तसं. जेन् अस्तित्व नथी तेवुं, असत्, मिथ्या; *उपबा.* न होय तेवुं

अण**छाणियां** *षडाबा***. गाळ्या** विनानां. जुओ अछाणिइ

अण**छांडीइं** *उपवा*. वणछांड्ये, छांड्या विना अणछेदिउं *उपन्ना*. वणछेद्यं, छेद्या विनानुं **अणजस** *उपदा*. अपयश

अणजाण्युं *उपबा. गुर्जरा*. न जाण्युं अणद्मप्रांतउ *गुर्जरा. युद्ध* न करतो

अणडही गुर्जरा. गाय (सं.अनडुही)

अणतेडिउं *गुर्जरा*. वणतेड्युं, वणनोतर्युं

अणतोष्ठडकं उपवा. तोछडुं नहीं तेवुं (सं.

अन्+तुच्छ)

अणत्यि**इं** नेमिछं. अनर्यथी, [अनिष्टताथी, बुराईथी]

अणदीघउं *उपवा. षडावा*. वणदीधुं, न दीधेलू

अणदेवरं उपवा. न देवा जेवुं, [न देवुं ते] **अणनमतः** *उपवा*. नहीं नमतो

अणपडिहिं जि *पडाबा.* न पड्युं [न नाख्युं] होय त्यारे ज

अण परी गुर्जरा. आ रीते

अणपरीष्ठिउं *उपचा.* [वणपारख्युं], बराबर न जाणेलुं [सं.अन्+परीक्ष]

अणपनोट *प्रेमाका*, पलोट्या विनाना अणपामिछ *उपवा*. वणपाम्युं, नहीं पामेलुं अणपूराइ वडावा. आवी पहोंच्या वगर, [(प्रहर) चड्या वगर, थया वगर]

अणपृष्ठिउ *उपना. षडाना*. वणपूछ्युं अणपूंजतउ उपवा. न वाळनारो, साफसूफ न करनारो

अणप्रीछिडं, अणप्रीछविडं नेमिछं. लावल. प्रीक्ष्या के जाण्या वगर

अणबीह *जिनरा*. निर्भय

अणबीहतउ *गुर्जरा. विराप.* न बीतो, निर्भय (अण+सं.बिभेति)

अणिभिडिउ *ऐतिका*. सामे नहीं आवेलो, मुकाबलो कर्या विना

अणभोगक्ता *उपना*. नहीं भोगवता

अणमणतां *नरका.* मन वगर [उदास – खिन्न – अस्वस्थ थतां]

अजमणुं *नरका. प्राचीफा. मोसाच***. मन** विनानं, उदास (सं.अन्+मनस्)

अणमवी अखाछ. अणमापी, अमित अणमारे गुर्जरा. विराप. वणमार्ये अणमिलतुं कादं(ध्रु). अजुगतुं; उपबा. अणसरखुं, [मळतुं न आवतुं] अणमूज गुर्जरा. वणमूजं, न मूएलुं अणरमिवजं उपबा. आनंद न पडवो ते अणरस प्राचीफा. अरसिक (सं.अन्+रस) अणरहिवजं उपबा. न रहेवुं ते अणरागिय गुर्जरा. अनुरागी अणलहतज पष्टिप्र. नहीं मेळवतो (सं.अन्+ लभ्) अणलंग अखेगी. अणलिंगी, [ब्रह्मज्ञानी]

अणलागइ उपवा. न लागेलुं होतां, लाग्या विना

अणलाजमणाउं उपदा. लखा नहीं करावनारुं अणलाधाउ विष्ट्रप्र. अणलाध्यो, [वण-मेळव्यो]

अणितंग अखेगी. लिंग वगरनुं, ब्रह्म चित्तसं अणितंगी, ज्ञान, ब्रह्मस्वरूप

अणितंगी अखाका. देहभावथी मुक्त, ब्रह्मज्ञानी

अणलेखे प्रेमाका. हिसाब वगरनो, घणो अणलेहेतुं प्राचीका. मोसाच. अणसमजु, बाळकबुद्धि

अणवट अभिक. दशस्कं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका. स्त्रीना पगना अंगूठानुं एक घरेणुं

अणवण वेताप. सिंहा(शा). अडवाणुं, [पगरखां विनानुं] (सं.अन्+उपानह्) अणवरी नरका. वर्या विनानी, अपरिणीत

अणवाणे चंद्रवा. अडवाणे, खुल्ले, जोडा वगर [सं.अन्+उपानह्] अणवांष्ठताउ उपवा. न इच्छतो अणविमासिउं गुर्जरा. वणविचार्युं (अण+ सं.विमर्शितम्)

अणबिहरतां थडाबा. विहार न करतां अणबूंटिं शृंगामं. वरस्या वगर

अणसण *आरारा. ऋषिरा. नलरा. प्रद्युचु. षडाबा.* अनशन, उपवास

अणसणीआ *उपवा*. उपवासी अणसत्र *नलरा*. आहारत्याग, उपवास (सं.

अनशन)

अणसरइ, अणिसरइ नलरा. प्रबोप्र. पाछळ जाय; अभिक. प्रबोप्र. अनुसरे, अनुयायी थाय, [-नुं पालन करे]; ऋषिरा. अनुसरे, [-नी प्रमाणे करे]; नलाख्या. अनुसरे, [-नी दिशा ले]

अणसंदहितु शृंगामं. अश्रद्धावान, अंदेशो करतो

अणसार, अणसारो दशस्कं(१). प्रेमाका. इशारो, निशानी [सं.अनुसार]

अणसीझतइ *उपबा*. असिद्ध थतां, पार न पडतां

अणहारच उक्तिर. अनुकरणरूप (सं. अनुहारः); जुओ अणुहार अणहितूआ उपवा. अहित करनारा

अणहुति *ऐतिरा. [न होवा छतां] अणहुंणी आरारा. न थनार अणहुतु अखेगी. जे थयुं नथी ते

अणहूंतुं *षडाबा*. नथी तेवुं

अणहूंतीइ उपबा. न होतां अणंगु गुर्जरा. वसंफा(ल). अनंग, कामदेव अणंत गुर्जरा. अनंत अणंतकाई *गुर्जरा. [जेमां अनंत जीवो छे तेवी (वनस्पति)] (सं.अनंतकायिक) अणंतरु तेरका. पछी (सं.अनंतरम्) अणाथ, अणाथि, अणाय्य दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. *ललिरा. सिंहा(शा). दारिक्र्य, गरीबी; आरारा. नंदब. दरिद्र, गरीब (सं.अन्+अस्ति) अणादि गुर्जरा. अनादि

अणावण आरारा. अणायवुं ते, तेडाववुं ते अणाह आरारा. उषाह. प्राचीका. अनाथ, रंक, गरीबडुं, दीन; गुर्जरा. विराप. अनाथ, असहाय

अणिअ आखइ लावलं. आखी अणीए, अणीशुद्ध, [अखंड] [सं.अनीक+ अक्षत]; जुओ अणीय आंखइ

अणिख *अभिऊ. [*सुंदर, *अद्भुत, *भयानक, *तेजस्वी] [अ.अनीक; रा. अणीख]

अणि परि *गुर्जरा.* आ रीते **अणिमा** शृंगामं. सूक्ष्मता, [पातळापणुं] (सं.)

अणिसरइ जुओ अणसरइ अणीइं अभिऊ. सेनामां (सं.अनीक) *अणीय आंखइ [अणीय आखइ] *लावल. [अखंडपणे, संपूर्णपणे] [सं.अनीक+ अंक्षत]; जुओ अणिअ आखइ अणीसर *विकरा. [आरपार] अणु *प्राचीस*. अने [सं.अन्यद्] अणुआंणे *वेताप*. अडवाणे, [जोडा वर्णरने,

खुल्ले] [सं.अन्+उपानह]

अणुकामि *ऐतिका.* अनुक्रमे, [एक पछी एक]

अणुजणावद् *उपबा.* अनुज्ञा — रजा आपे अणुठाणु *षडावा.* अनुष्ठान

अणुत्तरि *गुर्जरा*. अनुत्तर, जैनोना पांच देवलोकमांनुं एक

अणुदिण गुर्जरा. दररोज (सं.अनुदिन)

अणुपुचि जिनराः आनुपूर्वी, [नामकर्मनो एक भेद, वर्तमान शरीर मूक्या पछी एने ऊपजवाना स्थळ तरफ खेंची जनार कर्म] [जै.]

अणुरत्तउ *प्राचीफा*. अनुरक्त, आसक्त

अणुराउ नलरा. अनुराग, प्रेम

अणुरागु *तेरका*. अनुराग

अणुवाइ *षडाबा.* **अभ्यास करनार (सं.** अनुवाचिन्)

अणुवाणो मदमो. अडवाणी [पगरखां विनानो] (सं.अनुपानह)

अणुसरइ आरारा. अनुपालन करे; ऐतिका. गुर्जरा. अनुसरण करे, [अनुपालन करे, सेवे]

*अणुहण (अणुहाण) विमप्र. अडवाणुं, उघाडुं, [पगरखां विनानुं] [सं. अनुपानह्)

अणुहर- तेरका. अनुसरवुं (सं.अनु+हर्) अणुहाण, अणुहाणुं प्राचीका. लावल. हरिख्या. अडवाणुं, उघाडुं, पगरखं विनानुं (सं.अनुपानह्); जुओ अणुहण अणुहार, अणुहारि, अणुंहार आरारा. जिनरा. देवरा. अनुकरणरूप, -ना जेवां; जुओ अनुहार

अणूरढं आरारा. नलरा. विमप्र. न्यून, ओछुं, अधूरुं (सं.अन्+पूर्); *नेमिछं: गुर्जरा. [ओछपवाळुं], वणपुरायेली आशावाळुं, असंतुष्ट

अणूर्तते *आरारा*. अधूरापणुं, ओछापणुं, [न्यूनता, खोट] (अण+सं.पूर्ति)

अणूवांणे *देवरा.* अडवाणे, जोडा विना (सं.अनुपानह्)

अणूहाण नलरा. पगे जोडा पहेर्या विना, अडवाणा (सं.अनुपानह)

अणूहार, अणूंहार *देवरा.* ना जेवा (सं. अनुहार)

अणूंअर नलरा. अणवर (सं.अनुवर)

अणोसरं *उषाह*. उदास

अत *चतुचा.* अति

अत षडावा. *अहीं, [*आ बाबतमां] (सं. अत्र), [*कदाच, *संभवतः] [सं.उत]

अतयान शृंगामं. अतिजाण, समजु

अतिबब्द, अतिबब्द, अतुनीबन नरका. मदमो. प्रेमाका. सिंहा(शा). अतुनित-बल, अतुल — अपार बळवाळो

अतंतर *देवरा*. बेकाबू, पार विनानो (सं. अतंत्र)

अतांड *प्रेमाका*. खूब ऊंचेथी, जेमतेम, [खुझेखुझुं] [*सं.उत्तान]

अतिकाळ *प्रेमाका*. मोडुं

अतिकुंअल, अतिकूंअलि, अतिकूंबली वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). अति-कोमळ

अतिक्रम्यु आरारा. वटाव्युं, छोड्युं अतिक्रमाब्द्द षडाबा. वितावे, पसार करे अतिखूत ऋषिरा. अत्यंत खूंपी गयेलो अतिषण अभिक. गुर्जरा. अतिषणुं (सं. अतिषन)

अतिचरिउं षडाबा. भंग कर्यो (सं.अतिचर्) अतिचार उपबा. [ब्रत के नियमनो] भंग (सं.)

अतिजाण गुर्जरा. घणुं जाणनार

अतिधज *विक्ररा. [भारे मोटो, भव्य] (सं.अतिध्यज)

अतिलील ऋषिरा. अतिसुंदर

अतिवंकुड वसंवि(ब्रा). घणी वांकी (सं. अतिवक्र)

अतिविस उक्तिर. अतिवख, एक वनौषधि (सं.अतिविषा)

अतिशि, अतिसि नलाख्या. घणुं, खूब (सं.अतिशय)

अतिशे चित्तसं. अतिशय

अतिसच, अतिसय *षडाबा.* अतिशय वधारे प्रमाण; [चमत्कारिक] प्रभाव; *देवरा.* महिमा, प्रभाव [प्रभावक चमत्कारिक लक्षण] (सं.अतिशय); जुओ यतिसय

अतिसयवंत नलरा. महिमावंत, प्रभावशाळी

अतिसय ज्ञानी आरारा. विशिष्ट ज्ञान धरावता, खास करीने अन्य काळनुं ज्ञान धरावता ज्ञानी अतिसंता *ऋथिरा. [विश्रांत, अत्यंत आराम पामेल] (सं.अतिश्रान्ता)

अतिसंगदा ऋषिरा. घणो हर्ष [सं.अति-संमुदा]

अतिसि जुओ अतिशि

अतिसी षडाबा. अळसी (सं.अतसी)

अतिहि, अतिहिं उपवाः गुर्जराः विरापः खूब ज

अतीत अखाका. पर थयेलो, अलिप्त [सं.]

अतीत अखाछ. प्रेमाका. अतिथि, भिक्षुक, साध्-संन्यासी

अतुली *आरारा*. अतुल्य, अमाप

अतुलीबल जुओ अतलीबल

अतोल अखाका. कस्तुवा. प्रेमाका. अतुल, अतुल्य

अत्तागम *आनंस्त*. आत्मागम, [भगवान महावीर पासेथी प्राप्त थयेलो सिद्धांत] [जै.]

अत्थ जिनरा. अर्थ, [तात्पर्य]

अत्यत्य ऐतिका. अर्थ-अर्थ, [विभिन्न अर्थ]

अत्थमण शृंगामं. आधमवुं ते (सं.अस्तमन)

अत्यि *ऐतिका.* छे (सं.अस्ति)

अत्य चंद्रवा. चित्तसं. प्रेमप्. मदमो. अति

अत्यारताइ पंचवा. अत्यार सुधी (सं.अत्र+ वार)

अत्र-अमुत्र ऋषिरा. आ लोकमां अने परलोकमां [सं.]

अत्रिसुत प्रेमाका. सूर्य [सं.]

अध किंवा *दशस्कं(२).* तो शी गणना ? [सं.] अयगी ऋषिरा. अटक्या विना, [थाक्या विना] [दे.अत्थक्क]

अथा *अखाछ*. अथाग, [अत्यंत] [सं. अस्थाघ]

अथाह *उक्तिर*. अगाध, ऊंडुं (सं.अस्थाघ) अथिर *जिनरा*. अस्थिर, [नामकर्मनो एक

भारत जनरा. आस्थर, [नामकमना एक भेद, जेना उदयथी कान, पांपण, जीभ वगेरे अवयवो चपळ होय] [सं.]

अधिर, अधीर अभिक्र. ऐतिस. देवस. अस्थिर

अधिरता *आनंस्त*. अस्थिरता

अथीर जुओ अथिर

अवपडियाळी *प्रेमांका.* अडधी मींचेली; जुओ अधपडियाळी

अदबद, अदबदा अखाका. अखाछ. अखेगी. चित्तसं. नरका. अद्भुत, अलौकिक. परम तत्त्व

अदबुद, अदभुद प्राचीफा. प्राचीसं. आश्चर्य-जनक, अद्भुत

अदभूय *गुर्जरा*. अद्भुत

अदंसण शृंगामं. अदर्शन, [न देखावुं ते]

अदाप *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दुःख, वेदना, त्रास

अदिकेसं रूस्तसः अदकेरं, अधिकतर

अदीण *आरारा*. अदीन, गौरववाळो

अदृष्टायका कृष्णच. अधिष्टात्री

अदेखता *षडाबा*. नहीं देखता

अदेखवा प्रेमाका. अदेखा, ईर्षाकु

अदेसउ *उक्तिर*. उपदेशक, मार्गदर्शक (सं. उद्देशक) अधकु मदमो. अधिक अधाप अखाका. अद्यापि, हजु सुधी अधापिक प्रेमाका. अद्यापि, हजु सुधी अद्रि चित्तसं. पर्वत अद्रीत दशस्कं(२). अद्वैत, अनन्य अधकी चतुचा. वधारे [सं.अधिक] अधकरडी *मदमो. [अदकरी, घणीबधी] (सं.अधिकतर+डी)

अधकेरु, अधिकेरुं उपवा. प्रवीप्र. षडावा. अदकेरुं, वधारे (सं.अधिकतर)

अधन *आरारा*. अधन्य, पापी

अधपडियाळी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* अडधी बीडेली; जुओ अदपडियाळी

अधर अखाका-शु. धारण न करी शकाय एवुं; ०अखाका-शु. निरालंब; चित्तसं. अध्यर, ऊंचे

अघर वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). नीचुं

अधर (अधर किया) वसंवि. नीचे (उतारी पाड्यां)

अघरइ *गुर्जरा*. धारण करे छे (सं.आधरति)

अधरवटे प्रेमाका. ऊर्ध्व वाटे, [स्वर्गे]

अधरास * नरका. * नरपः [अधरासव, अधरामृत]

अधल**उं, अधलूं** उपवा: नलरा. अर्धुं

अधवधरा, अधिवधिरा *आरारा. नरका.* अधकचरा, ओछी समजवाळा

अधवारुं *अखाका. [भागीदारी, सहियारा-पणुं, समकक्षता] [सं.अर्ध+वारक]

अधिविचि उपवा. अधवचे [सं.अर्ध+ *व्यच्य] अधसस्ता प्रेमाका. अधमूआ [सं.अर्ध+ श्वस्)

अधार वीसरा. आधार

अधाशण प्रद्युयु. अधीसन, उभडक बेसवुं ते

अधांध नरप(द). "पुष्कळ

अधिकरी उक्तिर. अधिष्ठित करीने, -मां रहीने

अधिकार उपबा. ऐतिरा. नलरा. लावल. वृत्तान्त, विषय, विभाग (सं.)

अधिकेरउं जुओ अधकेरुं

अधिरातिइ आराराः अधराते, अर्धी रात्रे

अधिवधिरा जुओ अधवधरा

अधिवासियां षडावा. [धूप आपी अच्यी] (सं.अधिवासित)

अधिष्टत आरारा. अधिष्ठित, -मां रहेलो अधीकार कामा(त्रि.) कामा(शा). अधिक संख्यामां

अधुर कामा(त्रि). चतुरा. नरका. मदमो. अधर, नीचलो होठ, होठ

अधेन *देवरा*. अधन्य, [खराब] (कार्य)

अधोपचार अ*खाका*. अधकचरा उपचार के उपाय

अध्यारु नलरा. प्रेमाका. सिंहा(शा). अध्यापक, शिक्षक, गुरु (सं.अध्वर्यु)

अच्यास वित्तसं. वस्तुनुं अन्य रूपे भासवुं ते

अन *चतुचा.* अन्य

अन *वीसरा*. अन्न

अनइरुं *वाग्भवा*. अनेरुं, बीज़ुं [सं.

अन्यतर]
अनकुळ *प्रेमाका. [प्रतिकूळ]
अनख नरप(द). ईर्षा, [रोष]; जुओ
अणखी
अनडां ऐतिका. अनम्र, [उद्दंड, निर्बंध]
अनडही विराप. गायो (सं.)

अनपत्य कादं(शा). अपत्य – संतान विनानुं (सं.)

अनपुरांण सिंहा(शा). अन्नपूर्णा अनमे अखाका. ग्रेमाका. अभय, निर्भयता अ-नमणा ग्रेमाका. असुंदर, न गमे तेवा अनमान आरारा. अपमान अनमिष आरारा. अनिमेष, अपलक अनमी कस्तुवा. ग्रेमाका. अणनम *अनय गुर्जरा. अने [सं.अन्य] अनरत सिंहा(शा). अनृत, असत्य

अनल अखाका. अखाछ. अगनपंखी, एक पंखी, जे पोतानी मेळे बळी मरे छे अने तेनी भरममांथी बीजुं अनलपंखी उत्पन्न थाय छे

अनहात **उषाह.* [असंभव – वधारे पडती वात] [*रा.अणहोतो; *हिं.अनहोता]

अनंतर जुओ घनंतर अनंतरामा अध्यान

अनंतरागम *आनंस्त*. भगवाने पोताना शिष्यने सीधुं शीखवेलुं शास्त्र [जै.]

अनाघात प्रेमाका. *ताजुं, *सबळ

अनाड *उक्तिर*: जार, उपपति (*सं.अनाट) [दे.अणाड]

अनाणी *प्राचीका*. अज्ञानी अनादेय जुओ नादेय अनाम नलरा. हम्मीप्र. इनाम, बक्षिस अनामिक हरिख्या. चंडाळ (सं.अनामक) अनारिज गुर्जरा. अनार्य

अनाधिका कृष्णच. अनाधृष्टि [एक नाम] अनाशातना *आनंस्त*. आशातना न करवी ते. विनय

अनाशंसा *आनंसा*. निष्काम भाव, [कामनाथी अलिप्तपणुं] [सं.]

अनाहूत प्रेमाका. पूछ्या विनानुं, [वण-बोलाव्युं] [सं.]

अनिआउ * *उषाह*. [दोष]; जुओ अन्या, अन्याय

अनिक अभिक. अनेक

अनिमिष *ऐतिरा.* [जेने आंखनो पलकारो नथी तेवा], देव [सं.]

अनिमेषी *गुर्जरा. विराप*. जेनी आंखमां पलकारा नथी थता ते, देवी

अनियट जिनरा. अनिवृत्ति, [जीवोनी विशुद्धिमां तारतम्य न होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

अनिर्वाची *नरका.* वर्णवी न शकाय एवो, [अनिर्वचनीय]

अनिवड *आरारा. *जिनरा. [निःस्नेही, अ रागी] [सं.अ+निकट/निबिड]

अनिवार *आरारा*. अनिवारित, अपार; *नेमिछं*. *सतत, [खूब]

अनी गुर्जरा. अने (सं.अन्य परथी)

अनीठ, अनीठउं *अखाछ. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). शृंगामं. अनंत, अपार, अखूट (सं.अनिष्ठित) अनीत *प्रेमाका*. अनीतिभर्युं अनीरा षष्टिप्र. बीजा (सं.अन्यतर) अनीलभू**खक** *चंद्रवा*, पवननो भक्षक, साप **अनु** *गुर्जरा. चारफा. तेरका. प्राचीफा.* अने (सं.अन्यत्); जुओ अनुभाव **अनुकार** *आरारा.* जेवा [सं.] अनुक्रमी *प्रेमाका*. [एक पछी एक] पसार करी ***अनुक्रम्ये** अखाका. [अनुक्रमे, -ना अनुक्रममां, वगेरे] ***अनुखळ** *प्रेमाका.* खांडणियो; जुओ ऊखल **अनुग्रह** *प्रेमाका. हरिख्या.* शाप पाछो खेंचवानी कृपा के ए माटेनो उपाय, दंडनुं निवारण, माफी (सं.) **अनुचार** *प्रेमाका.* सेवक, नोकर (प्रास माटे 'अनुचर'नुं रूप) अनुदिन लावल. दरेक दिवसे, हंमेशां [सं.] **अनुप** चित्तसं. अनुपम, जुदुंजुदुं, जुदुं; जुओ अनूप **अनुभाव** *गुर्जरा*. प्रताप, [गौरव, महिमा] (सं.) **अनुभाव [अनुभाव]** **आनंस्त.* [अने भाव] **अनुमत** देवरा. अनुमति **अनुमनइ** *षडाबा.* माने (सं.अनुमन्यते) **अनुमिणइ** *पडाबा*. अनुमान करे, अनुमान-पूर्वक जाणे (सं.अनुमिमान) **अनुसारि** *आरारा*. जेवी **अनुहार** *देवरा*. -ना जेवा (सं.) अनुंघ कृष्णच. अमर्याद, अत्यंत [रा.अनूंतौ]

चंद्रवा. नलाख्या. प्रेमाका. अनुपम, उत्तमः, जुओ अनुप **अनेकप** गुर्जरा. हाथी (सं.) **अनेकि परि** *गुर्जरा*. अनेक रीते **अनेतइ, अनेति** उक्तिर, अन्यत्र अनेषइ, अनेषि, अन्येषि उक्तिरः ऐतिराः जिनरा, नलरा, वाग्भबा, *विमप्र, षष्टिप्र. बीजे स्थाने. बीजे स्थळे [सं.अन्यत्र] अनेरउं आनंस्त. आरारा. उपवा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. चित्तसं. तेरका. देवरा. नलरा. प्राचीसं. लावल. वाग्भबा. विमप्र. षष्टिप्र. षडाबा. बीजुं; जुदुं (सं. अन्यतरक); *उक्तिर*. बीजुं, वळी **अनेरडउ** *जिनरा*. बीजो **अनेरि परि** उक्तिर, बीजी रीते **अनेरिसिउ** *उक्तिर*. अनोखुं, (सं.अन्यादृशः) अनेरी बार, अन्येरी बार उक्तिर. बीजी वखते **अनेसउ** *उक्तिर, प्राचीसं*, अनोखो (सं. अन्यादृशः) अनोपम नलाख्याः वसंफाः वसंफाः(ल)ः वसंवि. वसंवि(ब्रा). अनुपम ***अनोहक** *गुर्जरा.* वृक्ष (सं.अनोकह) अन्तरि जुओ अंतरि **अन्तेउर** जुओ अंतेउर अव जुओ अंन **अन्नड** *गूर्जरा*. अने (सं.अन्य परथी) **अन्नति गढिउ** *ऐतिका.* अन्नल राजानो गढ **अत्रैयो** *नरका.* *वांकाबोलो, अणचियो, [अळवीतरो, तोफानी] **अन्या, अन्याय "**कस्तुवा, चतुचा, "नलरा.

अनुष "अखाका-श्रु. आरारा. कादं(शा).

*प्रेमाका. *वेताप.* दोष, वांक, दुष्कर्म; जुओ अंत्रा

अन्याइ नलाख्या. अन्यायी, अन्याय करनार, [खोटुं करनार]

अन्वेषि जुओ अनेथि

अन्येरी बार जुओ अनेरी वार

अप चित्तसं. पाणी

अपघात देवरा. मुश्केली (सं.उपघात)

अपछर, अपछरा आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. दशस्कं(१). प्रद्युचु. "विमप्र. वीसरा. अप्सरा

अपजत जिनरा. अपर्याप्त, [नामकर्मनो एक प्रकार, स्वयोग्य पुद्गळोनो संचय पूरो न थयो होय एवी जीवदशा, कर्मदशा] [जै.]

अपणंड अभिक. वीसरा. आपणी, पोतानी (सं.आत्मनक)

अपत्थिय जिनरा. वणमाग्युं [मोत], (सं. अप्रार्थित)

अपत्य चित्तसं बाळक, संतान [सं.] अपभ्राजना कृष्णच. निंदा [सं.]

अपमत्त जिनरा. अप्रमत्त [विरत], [अप्रमाद-पूर्वकनी विरति जेमां होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

अपर पाख *प्राचीसं.* अपर पक्ष, [कृष्ण पक्ष, वद], [अहीं] श्राद्ध पक्ष

अपराधइ *उक्तिर.* -नो अपराध करे, [-ने हानि करे] (सं.अपराध्यति)

अपराठी *विराप*. विमुख; जुओ उपराठी अपवरन, अपवर्ग *आरारा. चित्तसं*. मोक्ष [सं.अपवर्ग]

अपबाद नरका. आळ, आक्षेप, दोषारोपण [सं.]

अपसोस *आरारा.* अफसोस, विषाद अपहरद *षडाबा.* लई ले, लूंटी ले; गुर्जरा. अपहरण करे, उपाडी जाय (सं. अपहरति)

अपाइ षडावा. दुःखमां, मुश्केलीमां (सं. अपाय)

अपान आनंस्त. गुदा [सं.]

अपाय कर्पूमं. उपाय

अपाया ऋषिरा. संकटो (सं.अपाय)

अपिर कादं(शा). हुं पार पाडुं छुं (सं. आपारये), हुकम बजावी नवीय छे (सं.आपार्यते)

अपारि कादं(शा). अपार, घणुं अपांगरंग कादं(ध्रु). कटाक्षलीला [सं.] अपुणीक नलरा. पुण्य विनाना (सं. *अपुण्यिक)

अपूरणु षडाबा. परिपालन न करवुं अपूरब वीसरा. अपूर्व, असाधारण अपूरब आरारा. नवुं

अपोपा *अभिक. [पोते]; जुओ आपोपुं अप्प आरारा. आपणी, पोतानी (सं.आत्म) अप्पड आरारा. पोताने

अप्पण *तेरका.* आपणुं; पोताने (सं.आत्मनः)

अप्पणउं *प्राचीसं*. आपर्णु, पोतानुं (सं. आत्मनः)

अप्पशुइ *षडावा.* पोतानी जातनी प्रशंसा (सं.आत्मस्तुति)

अप्पाण *प्राचीसं. ललिरा.* पोताने (सं.

आत्मानम्)

अप्पियउं *ऐतिका. नेमिछं*. आप्युं [सं. अर्पित]

अप्रमाण, अप्रमांण आरारा. असिद्ध, [नहीं बननारी हकीकत]; *गुर्जरा. [असिद्ध, नकामुं] (सं.)

अप्रार्थक आनंस्त. इच्छारहित [सं.]

अ-प्रोजन कादं(शा). कारण विना (सं. अप्रयोजन)

अफराटां चतुचा. पीठ फेरवेलुं, [अवळुं] अफ् *अंबरा.* अफीण

अफेडणु *घडाबा.* नष्ट न थवुं ते

अवछरा *मदमो*. अप्सरा

अवद मदमो. वरस (सं.अब्द)

अबल वसंफा. वसंफा(ल). अबळा, स्त्री अबलख, अबलखा मदमो. हम्मीप्र. घोडानी एक जात, काबरचीतरो (घोडो)

अबलिय *ऐतिका. [अबळा]

अबंब [अवंब्र] *ऐतिरा*. अवंध्य, सफळ अबाह *गुर्जरा. [अबाध, अन्तराय विना, खूब]

अबाहु *गुर्जरा*. अबाध, अंतराय विना, खूब; [जेने कशो अंतराय नडतो नथी एवो वीर पुरुष]

अबांधतं पडावा. न बांधतो, बांध्या वगर अबीर नलरा. नेमिछं. एक प्रकारनुं सुगंधी-दार सफेद चूर्ण, अबील (अ.)

अबीह, अबीहो अखाका. ऋषिरा. जिनरा. विमप्र. स्थूलिफा. बीक विनानुं, निर्भय (सं.अ+भी); (जुओ अविह) अबुह ऐतिका. अबोध, [अज्ञानी] अबूके [हबूके] नरप. धबकारा करे, [धडके]

अबूझ, अबूझणा, अबूझ्या अभिक. आरारा. लावल. शीलक. अज्ञानी, समज विनाना (सं.अ+बुध् परथी)

अबूझी आरारा. अज्ञानी (स्त्री)

अबोखण सिंहा(शा). अपोशंण, [भोजन वखते आचमन करवुंते] (सं.आपोशान)

अन्तुष प्राचीसं. अर्बुद, आबू पर्वत

अभव्य षष्टिप्र. मोक्षनो अनिधकारी (जै.) अभराख नेमिछं. अभरखो, [अभिलाषा, तृष्णा] [रा.अभलाष]

अभरे भर्युं *प्रेमाका*. पुष्कळ [भरेलुं]

अभंड विमप्र. असभ्य, [अशोभनीय] [सं. उद्भांड; दे.उट्धंड]

अभावडि *षष्टिप्र*. अभाव, अणगमो

अभिख प्राचीफा. अभक्ष्य, नहीं खावा जेवुं अभिगम देवरा. [जिनदेवने वांदवा जतां पाळवाना] शुद्धि ने विनयना नियमो (जै.)

अभिष्पह, अभिग्रह ऐतिका. तेरका. नलरा. प्राचीफा. प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम (सं. अभिग्रह)

अभिचार कादं(शा). तांत्रिक-मांत्रिक धर्मक्रिया (सं.)

अभि-वान *देवरा*. अभयदान, जीवतदान अभिषा *ऐतिका*. नाम

अभिष्यान *अंबरा*. अभिधान, नाम **अभिष्यान** *सम्यज्ञे*. अभिमुख ध्यान, [चितन]

अभिनवेरज ऐतिका. [साव] नवुं अभिप्राज षडावा. अभिप्राय, मत, विचार अभिमान-तन दशस्कं(१). अभिमन्युपुत्र परीक्षित

अभिवनु गुर्जरा. अभिमन्यु
अभिषेचन प्रेमाका. अभिषेक, स्तान [सं.]
अभिसिंचावइ षडावा. अभिषेक करावडावे
अभिहाण ऐतिका. नाम (सं.अभिधान)
अभीतर, अभींतर कामा(शा). कामा(त्रि).
अभ्यंतर, अंदर, अंतरमां
अभीयांन, "अवीधांम कामा(शा). नाम
अभीरांम कामा(त्रि). कामा(शा). आनंद
[सं.अभिराम]
अभीर षडावा. निर्मय (सं.)

अभीतर जुओ अभीतर

अभीतर जुओ अभीतर

अभूमीयज् *वीसरा. [अ-भोमियो, मार्ग नहीं जाणनारो]

अभूल अखाछ. भूलचूक वगर अभेदान *नरका*. अभयनुं दान

अभेपद *नरका*. अभयपद

अभोखर, अभोखु उक्तिर. *विक्रच. [सत्कार रूपे पाणीनुं] सिंचन, छंटकाव (सं.अभ्युक्षण); जुओ आभोखइ

अभोखण, अभोखणुं उक्तिर. *विमप्र. *लावल. [सत्कार रूपे पाणीनुं] सिंचन, छंटकाव (सं.अभ्युक्षणम्); जुओ अंबोषण

अभोखु जुओ अभोखउ

अभोगत अखाछ. चित्तसं. भोगव्या

(अनुभव्या) विनानो

अभ्यसइ उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा). अभ्यास करे, तालीम ले, शीखे; षडाबा. अभ्यास करे, प्रयोग करे, करे; चित्तसं. सेवन करे

अभ्यंतर प्रेमप. अंतरमां [सं.]

अभ्याख्यान ऋषिरा. ऐतिका. आळ, खोटुं तहोमत, अढार पापस्थानकमांनुं एक (जै.)

अभ्यास आरारा. हंमेशां बनती क्रिया; गुर्जरा. पुनरावर्तन (सं.)

अमकइ षष्टिप्र. अमुकमां (सं.अमुके); जुओ उमकु

अमग्गउ ऐतिका. कुमार्ग, मिथ्यात्व [जै.]

अमर्थुं *अखाका. दशस्कं(१). एमनुं एम; प्रेमाका. [एम ने एम ज], कारण वगर

अमथां नाखीए *प्रेमाका*. नकामां गणीए, निकामां गणी एम ने एम राखीए]

अमयो रह्यों *प्रेमाका*. [एम ने एम रह्यों], नकामो थई पड़्यों

अमन, अमंन अखाका. अखाछ. एषणा के इच्छा विनानुं मनः मननी पारनी (अतिमनस) स्थितिः एवी स्थितिए पहोंचेलुं

अममा देवरा. अममदेव, आवती चोवीसीना एक तीर्थंकर

अमया *उषाह*. उमिया

अमरख नलरा. विमप्र. अदेखाई (सं.अमर्ष)

अमरख *अखाछ.* *व्यर्थ, [मिथ्या] [सं.*मृषा परथी]; *खरेखर [सं.अ+मृषा]

अमरतां *उपवा*. न मरतां

अमरविमाण *आरारा*. देवविमान, देवलोक, स्वर्ग

अमरसाल गुर्जरा. देवलोक, [स्वर्ग] (सं. अमरशाला)

अमराजरि गुर्जरा. अमरापुरी, देवनगरी, [स्वर्ग]

अमरिख प्रबोप. कोध (सं.अमर्ष)

अमरी प्रद्युचु. प्राचीफा. विक्ररा. देवांगना (सं.अमर परथी)

अमरी प्राचीफा. कसबी वस्त्र (सं.अंबर) अमरेसर तेरका. अमरेश्वर, [देवोनो अधिपति इन्द्र]

अमल, अमळ अखाका. अखेगी. नरका. प्रेमाका. मल वगरनुं, निर्मळ, पवित्र

अमल *अखाका. अखाका-शु. अफीण, केफी पदार्थ

अमल करे चित्तसं. वर्ते, वर्तन करे अमलीमाण * ऐतिका. जिनरा. [अमर्दित मानवाळो], अपराजित

अमंदो *लावल.* अमंद, तेजस्वी

अमंन जुओ अमन

अमाइ तेरका. ?, [ऊभराय] [सं.अ+मा]

अमाणुं *अखाकाः [मान — माप वगरनुं, अनंत]

अमान "अखाका. [मान — माप वगरनुं, अनंत]

अमानी *अखाका. [मान – माप वगरनी, अनंत]

अमामो *जिनरा. [अमाप, पुष्कळ] अमाय *आनंस्त.* माया विनानुं, [निष्कपट, सरळ]

अमारि, अमारी *आरारा. उपवा. ऐतिका.* गुर्जरा. विक्ररा. अहिंसा, हिंसानिषेघ, जीवितदान (सं.)

अभावस, अभावसि *उक्तिर*. अमास (अं. अमावास्या)

अमिअ-काणी चारफा. अमृत समी वाणी-वाळा

अभित चित्तसं. अमाप, ऊंडो [सं.] अभिय, अभीय ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. प्राचीफा. वसंफा(ल). अमी, अमृत

अमिय-कलश, अमीय-कलसा वसंवि. वसंवि(ब्रा). अमृतभर्या कळश

अभिय वूठ प्राचीसं. अमृत-वृष्टि

अमीअ लावल. अमृत

अमीउ विराप. अमी, अमृत

अमीकंदा *लावल. [अमृतनो कंद, अमृत-मय मृळियुं]

अमीछंटा नांखी प्रेमाका. कृपा करी अमीनिधि प्रेमाका. अमृतनो भंडार, चंद्र

अमीय जुओ अमिय

अमीयकलसा जुओ अमिय-कलश

अमीसारणी *प्राचीफा*. अमृतनो प्रवाह (सं. अमृतसारणी)

अमुजाबुं वेताप. अकळावुं [सं.*आमुह्यति] अमुत्र कादं(शा). परलोकमां (सं.); जुओ अत्र-अमुत्र

अमुनित विष्टेप्र. अज्ञात (प्रा.मुण परथी) अमुलीक जुओ अमूलक

अमूझ *नलरा.* दिकता, आकळो (सं.मुह्य

परथी)

अमूलक, अमूलिक, अमुलीक अभिक्र. आरारा. ऐतिका. नलाख्या. प्रेमाका. रूपच. षडाबा. सिंहा(शा). अमूल्य, कीमती (सं.अमूल्यक)

अमृतकुंडली *प्रेमाका***. एक वाद्य अमेल्हतउ** *षडाबा.* न छोडतो, छोड्या वगर असोध चित्तमं, निष्फळ के अफळ न थाय तेवं, कायमी

अमोरी आरारा. कोईक वस्त्रप्रकार अम्ब प्रबोप्र. आंबानुं वृक्ष

अम्मा-पिड, अम्मा-पिउ *प्राचीसं.* मातापिता (सं.अम्बा-पित्)

अम्मीणा *शुंगामं*. अमारा

अम्ह नेमिछं, वसंफा, वसंवि, वसंवि(ब्रा). अमारा *गूर्जरा. षडाबा.* अमे (सं.अस्मद्)

अम्हासिउ *गूर्जरा*. अमारा जेवा अस्मादृश)

अम्हासित *उक्तिर*. अमारा जेवा (सं. अस्मादृश)

अय शंगामं. लोढुं (सं.अयस्)

अवरावइ ऐतिका. ऐरावत, [इंद्रना] हाथी अयाण आरारा. जिनरा. ऐतिका. प्रबोप्र. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वसंफा(ल). विक्ररा. षष्टिप्र. अज्ञानी, अजाण, मूर्खं;

जुओ एआण

अयुत *प्रेमाका.* दश हजार [सं.] **अर** *पंचवा. वीसरा.* अने (सं.अपर)

अरड जिनरा. अरति, [इन्द्रियोने प्रतिकूळ विषय मळे त्यारे चित्तमां थतो उद्वेग.

चारित्रमोहनीय कर्मनो प्रभेदो जि.] **अरडंपरडं** *आरारा*. आजुबाजु [सं.आरात्-परात्

अरगचा *ऐतिका.* **अरगजा**

अरगजा, अरघजा कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो. एक सुगंधी भूकी ***अरघल (*परघल)** *प्राचीफा.* पुष्कळ,

जुओ परघल

अरचइ उक्तिर. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). अर्चे, पूजे

अरचनियाण *नरका*. अर्चना – पूजाने योग्य [*सं.अर्चनीयानाम् परथी]

अस्वा *आरारा.* पूजा; **ऐतिका.* [अंगलेप]; *प्रेमाका*. अर्चा, कपाळे चंदनादि लगाडवां ते

अरची लावल. अर्चेली, सुसञ्ज, [शोभित] **अरज** * मदमो. [निवेदन, रज्ञात] [अ. अर्जी

अरजना *प्रेमाका*. कमाणी (सं.अर्जन) **अरड ***विमप्र. [हठ]

अरडक-मञ्ज उक्तिर, ऐतिरा, प्राचीका. अजेय मल्ल, शूरवीर

अरडावुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* आरडवुं अरडी पंचवा. भेंकडो ताणीने (सं.आ+रट्) अरदूसउ, अरडूंसु उक्तिर. आरारा(व). अरड्सो, एक वनस्पति (सं.अटरूष)

अरणइ, अरणए उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). अरति, असुख, पीडा, शोक, चिंता

अरणि ऋषिरा. *जिनरा. दशस्कं(२). अरणिनुं जंगली वृक्ष, इंधण (सं.); अखाका. सूर्य [सं.]

अरणी ऋषिरा. घसवाथी अंग्नि पेदा करनार काष्ठ (सं.)

अरणेटउ *षडाबा.* एक प्रकारनी धोळी माटी अरणोदय *आरारा.* अरुणोदय

अरत-परत *उक्तिर.* आकृतिए-प्रकृतिए, [*आमथी-तेमथी, *बधी रीते] [सं. आरात्-परात्]

अरित गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विराप. दुःख, वेदना, [असुख] (सं.)

अरथइ *उक्तिर*. मागे, विनंती करे (सं. अर्थयति)

अरिषया अखाका. अर्थ – उद्देशवाळा, [इच्छुक, अभिलाषी] [सं.अर्थिन्] "अरद कामा(त्रि). अर्ध

अरदास *आनंस्त. देवंस. वीसरा. हम्मीप्र.* प्रार्थना, अरजी, विनंती (फा.अर्जदास्त)

अरध-जरध *नरका*. अधः अने ऊर्ध्व, पाताळथी आकाश

अरधंगी नरप(द). अर्थांगना

अरत्र *तेरका*. अरण्य

अरबद विचरः मांसनी लोधो, काची गर्भ (सं.अर्बुद)

अरभ मदमो. बाळक (सं.अर्भक)

अरभक चित्तसं. अर्भक, बाळक

अरि ऐतिका. अरेरे [सं.अरेअरे]

अरलू *आरारा(व)*. अरडूसो, अरलवो, एक वनस्पति (सं.अरलु)

अखाकी, अर्वाकी *अखाका. अखेगी.

अर्वाचीनो, [पाछळना समयना] अरस *अखाका. [रसनो अभाव, स्वादनो अभाव]

अरसविरस आरारा. लूखुंसूकुं

अरहट उक्तिर. गुर्जरा. नलरा. रहेंट (सं. अरघट्ट)

अरहु *उक्तिर. विमप्र.* नजीक [सं.आरात्]; जुओ उरहउं

अरह-परह अंबराः ऋषिराः आमतेम, आगळ- पाछळ [सं.आरात्-परात्]

अरंण मदमो. अरण्य

अरंण (अरंण मूके) मदमो. -, [*अरण्यमां मूके, *दूर राखे, *जतुं करे]

अराति प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). शत्रु (सं.)

अरापरी *सिंहा (शा)*. आधीपाछी (प्रा. अरहुपरहु); जुओ अरुंपरुं

अरियण, अरीअण, अरीयण ऐतिसः. गुर्जराः जिनसः. अरिजन, शत्रु

अरिरम, अरीरम उक्तिर. वीजे दिवसे ("सं. अपरेद्युः); जुओ अरीम

अरिष्ट दशस्कं(१). ग्रेमाका. अनिष्ट, पीडा; कादं(ध्र). लीमडो [सं.]

अरिष्या प्रेमप. ईर्घ्या

अरीअण जुओ अरियण

अरीगंजण *चंद्रवा*. शत्रुविनाशक [सं. अरिगंजन]

अरीटा *लावल*. अरिष्ट, पाप

अरीम *उक्तिर*. बीजे दिवसे (*सं.अपरेयुः); जुओ अरिरम

अरीयण जुओ अरियण अरीरम जुओ अरिरम

अरु आरास. चारफा. प्राचीसं. वीसरा. के. बीजा, अने (सं.अपर) अरु, अरुं अखेगी. विमप्र. पासे, नजीक [सं.आरात्]; जुओ अहरं **अरुजपण** *आरारा*. लालाश अरुणी ऋषिरा. ज्वाला, लालिमा, लालाश (सं.अरुण) **अरुपरुह्न** *कादं(शा)*. आसपास, आमतेम, (सं.आरात्-परात्) अहं जुओ अरु अरुंपरुं कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नरप(द). प्रेमाका. मदमो. आधुंपाछुं, आडुंअवळुं, अहींतहीं, आगळपाछळ (सं.आरात्-परात्, अरह-परह); जुओ अहरुपरु ***अरु** कामा(त्रि). उर, स्तन **अरूट** *प्रेमाका.* अप्रसन्न [सं.आरुष्ट] **अरोग** *अखाका*. आरोग्य **अर्क** अखेगी. नरका. सूर्य (सं.); प्रेमाका. सुर्यना प्रकाशमां, दिवसे; *हरिख्या*. आकडो (सं.) ***अर्खेकर्खे [अर्खेपूर्खे] ****अखाछ.* [आगळ के पाछळी अर्घ हरिख्या. पूष्प-चंदनवाळी अंजलि आपी सत्कार करवो ते [सं.] **अर्घपाद** ऋषिरा. पग धोवा वगेरे सत्कार-सामग्री सि.]

अर्जुन *चित्तसं*. मोर [सं.] **अर्ण** *वेताप*. अरण्य. वन **अर्थत् वाग्भवा**. अर्थात् **अर्थी** *हरिख्या*. गरजु (सं.) अर्द्धासिनि शुंगामं. अडधे आसने **अर्धचंद्र बाण** *पंचवा*. बीजना चंदनो आकार जेनो होय छे ते बाण (सं.) ***अर्धपादार्ध** अ**र्धपादार्घ** **पंचवा.* [फूल वगेरे अर्पवा अने पग धोवारूपी सत्कारी [सं.अर्घपाद्यार्घ] **अर्वसी** *प्राचीफा*. उर्वशी, एक अप्सरा अर्वाकी जुओ अरवाकी **अर्वाक्ये** अखाछ. अर्वाकीए, अर्वाचीनोए, [पष्ठी आवनाराओए] **अर्वाची** अखाछ, वाचाथी पर **अर्हपद** *गुर्जरा.* मुक्तिपद (सं.अर्हत्+पद) अलका ऋषिरा. वाळनी लट (सं.अलक) अलक्ष आनंस्त. अलक्ष्य, सिंसारीथी कळी न शकाय एवो । अलखत, अलखत्य कस्तुवा. चंद्रवा. मदमो. रूस्तसः सिंहा(शा). धनदोलत, समुद्धि अलग विमप्र. दू. विगळा : वसंवि. अञ्जो. [वेगळो] (अं.अलग्न) **अलगुं** आरारा. *कादं(शा). *नलाख्या. *नेमिछं. लावल.* दूर, आघुं, वेगळुं अलगेरी उषाह. अळगी. विधारे आघी] (सं.अलग्नतर) अलष्ठ मोसाच. फूवड स्त्री [सं.अलक्ष्मी]

अलज, अलजउ, अलज्यो आरारा. उक्तिर.

मार्ग

अर्घपादार्घ जुओ अर्घपादार्घ

अर्चिमारम अखाकाः तेजनो – उगल्पज्ञाननो

ऐतिका. "कादं(शा). "गुर्जरा. चतुचा. नरका. प्रेमाका. लावल. विमप्र. शृंगामं. आतुर, उत्कंठ; आतुरता, उत्कंठा अलजईआं "विमप्र. [उत्कंठापूर्वक]

अलजइंआ *विमप्र. [उत्कठापूर्वः

अलजउ जुओ अलज

अलजो (अलजो जाय) *ऐतिका.* उत्कंठित थवाय

अलज्यज जिनरां. नरका. प्रेमाका. विराप. शृंगामं. उल्कंठित थयो, तलस्यो, ओरतो थयो

अलज्यो जुओ अलज

अलझी *नरका. "नरप.* अलजी, आंतुर थई अलप *मदमो*. गुप्त, लुप्त

अलपाइ, अळपाये अखाका. ढंकाय, वींटाय; चित्तसं. लपाय, छुपाय, लुप्त थाय, समाय

अल पूरीउ जुओ पूरीउ

अलव *नरप(द.)* *अटकचाळुं, *अडपलुं, [*लीला, *नखरां]

अलवइ अखाका. ऋषिरा. कर्पूमं. जिनरा. दशस्कं(र). नरका. नरप. नरप(द). नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). *विमप्र. वेताप. शृंगामं. सिंहा(म). अनायासे, सहजभावे, लीला-पूर्वक, रमतमां, हळवेथी, सुंदर रीते

अत्वेसर गुर्जरा. *जिनरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). हम्मीप्र. अलबेलो, सुंदर, वरणागियो, रसीलो

अलसाणड जिनरा. आळस्यो अलसिवेल उक्तिर, अळसीनुं तेल (सं. अतसीतैलम्)

अलस्यां *नरका.* शिथिल, मदभर्यां, [आळस- भर्यां]

अलंकरिउ उक्तिर. वाग्भबा. अलंकृत कर्युं, शणगार्युं

अलंगकत *मदमो*. अलंकृत **अलाधो** जुओ अलाधो

***अलाघो [अलाघो**] *सम्यचो*. अळगो, जुदो [रा.अलागौ]

अलाप अखाका. आलाप, वाणी

अलाबु कादं(शा). तूंबडुं (सं.) अलाभइ ऋषिरा. न मळतां, [प्राप्त न थतां]

अलाभइ ऋषिरा. न मळता, [प्राप्त न थता] [सं.अलब्ध]

अतिअ *ऐतिका.* अग्निय, [अनिष्ट] (सं. अलीक); जुओ अलीय

अतिअल, अतीअल, अतीयल प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). भमरो, (सं.अतिकुल)

अलियरपणुं अखाका. भ्रमरवृत्ति अलीअल जुओ अलिअल

अलीअल-आण * वसंवि(ब्रा). [भमराओनी सत्ता]

अलीक जिनरा. शृंगामं. मिथ्या, [खोटुं] (सं.)

अलीय "ऐतिका. [अप्रिय, अनिष्ट] (सं. अलीक); जुओ अलिअ

अलीयल *हरिवि.* भ्रमर [सं.अलिकुल]; जुओ अतिअल

अलीयल हरिवि. मिथ्या वचन ?

अलूक अंवरा. ऊलूक, घुवड

अलूणिय गुर्जरा. असुंदर (सं.अलवणिका)

अलूणुं कादं(शा). असुंदर, वरवुं (सं.अलव-णकम्)

अत्र्रं कृष्णवा. अळवीतराई करवी, [परेशान करवुं, हानि करवी] [प्रा. उल्लूर]

अतेल *अखाछ. [नियमरहित, निराळुं] [दे.अछिलह]

अलेहेती प्रेमाका. अज्ञान, अणसमजु अलोकित वेताप. सिंहा(शा). अलौकिक अलोकि प्राचीका. अलौकिक अल्पायींउ उपबा. दरिद्र

अल्यावि प्रद्युचु. अलावो, अपावो अल्ल- प्राचीसं. आलवुं, [आपवुं]

अवकर वीसरा. अपमान, निंदा[युक्त वचन], [अपशब्द] [सं.अपकृ-; प्रा.)

अवगत्य अखाछ. अवगतिए गयेलो अवगनियां जिनरा. काननुं एक आभूषण; जुओ अउगनिया

अवगत्र- तेरका. अवगणवुं (सं.अव+गण्) अवगाह कादं(शा). स्नान (सं.)

अवगाहरू *ऐतिका. अवगाहन करे, [ऊंडे सुधी जाय]; *कादं(ध्रु). वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). डूबकी मारे, स्नान करे (सं.अवगाहति)

अवगाहनारूपइ *आनंस्त. [अंगभूत रीते] अवगुणउं *ऋषिरा. [अवगणुं, छोडी दउं] अवग्रह *गुर्जरा*. केदखानुं (सं.)

अवघट शृंगामं. मुश्केल, [विकट, दुर्गम]; जुओ ऊघड, ओघट

अवधाय अखाका. चित्तसं. डूबी जाय,

[अवगाहन करे]

अवछरा *मदमी*. अप्सरा **अवज्या. अव**द्या *प्राचीफा. ड*

अवज्झा, अवङ्गा *प्राचीफा. प्राचीसं.* अयोध्या

अवटाडिड *शृंगामं. [मूंझव्युं, दुःखी कर्यु] [सं.आवर्त्]

अवटाय *ऋषिरा. [भमे, आधडे]; ऋषिरा. *नरका. *प्रेमाका. मूंझाय, दुःखी थाय, [पीडा अनुभवे] [सं.आवर्त्]; प्रेमाका. ऊछळे; जुओ आवटे

अवटावि * नलाख्या. [पीडे, दुःखी करें] (सं.अप+वृत्) [सं.आवर्त्]

अवडा ऐतिका. अयोध्या अवतंस कादं(शा). काननुं घरेणुं (सं.) अवतारीइं "आनंस्त. [संशोधीए, घटावीए] अवतारीक मदमो. जन्मथी; अवतारी, अवतार धारण करेलो

अवस्था आरारा. अवस्था

अवदात * ऐतिका. ऋषिरा. नलरा. वृत्तान्त; ऐतिका. ऐतिरा. *गुर्जरा. जिनरा. यशस्वी वृत्तान्त, चरित्र; यश; गुण; सम्यचो. चरित्र; प्रकट; विक्ररा. दुश्चरित, [करतूत]; अंवरा. वृत्तान्त; [करतूत] (सं.)

अवधारइ, अविधारइ अखाका. अभिऊ. आनंस्त. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नरका. प्रेमाका. ध्यानमां ले, विचारे, धारे; नकी माने; धारण करे, सांभळे

अविध आरारा. अविधिज्ञान, दूर रहेला पदार्थनुं इन्द्रियोनी मदद विना ज्ञान अवधिज्ञान, अवधीयनांन देवरा. नलरा. अतीन्द्रिय ज्ञानविशेष, दिशा या कालनी अमुक सीमा सुधीनी घणी या सर्व बाबतो जोई शकवानी शक्ति [सं.]

अवध्य *हम्मीप्र.* अवध्यत, वेरागी अवध्य *प्रेमाका.* अवधि, मर्यादा, हद अवध्यत नलरा. मस्त, [उन्मत्त]; *ऋषिरा. [उन्मत्त, धेलो, सुद्ध]

अवन आनंस्त. जतन करवुं [सं.]

अवनी चित्तसं. पार्थिव तत्त्व [सं.]

अवने चतुचा. अविनय

अवभंगिहिं, अविभंगिहिं यसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). अंतराय विना, (सं. अविभंगेन)

अवयरिउ *ऐतिका*. अवतर्यो **अक्यार** *तेरका*. अवतार

अवयारिय तेरका. उतार्युं (सं.अवतारित)

अवर वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). बीजुं, अथवा वळी, [अने, वळी] (सं.अपर)

अवस्तउ *प्राचीसं*. अभिलाष, औरतो [सं. आतुरत्व]

अवरथा *प्रेमाका*. व्यर्थ, नकामुं [सं.वृथा परथी]

अवरल विकरा. पुष्कळ [सं.अविरल]

अवराउं * प्रेमाका. [ओवारणां लउं, ओवारी जाउं]

अवराह, अवराहु *गुर्जारा. शृंगामं*. अपराध, दोष

अवरि *नलाख्या. [वळी] (सं.अपरे) अवरी *आरारा*. बीजी अवरोध गुर्जरा. विरोध विना, [मेळपूर्वक] (सं.अविरोधम्)

अवरोह * ऐतिका. [आग्रह, अनुरोध] [सं. उपरोध]

अवल प्राचीफा. "मुख्य, [उत्तम] (अ. अव्यल)

अवल प्रेमाका. अवळ, अवळां, ऊंधां [सं.उद्वल]

"अवल [अचल] "*ऐतिका.* [निश्चल, स्थिर] **अवलवणु "***पडावा.* [द्रोह] (सं.अपलपु)

अवलसवल चित्तसं. अवळी अने सवळी बाजु, पाछळनी अने आगळनी वाजु; [सं.उद्बलसुवल]

अवलासवर्ता आंक चंद्रवा. समस्या वगेरे जेवो एक रचनाप्रकार

अवलोइंयइ *ऐतिरा. तेरका.* अवलोकीए, जोईए

अवलोण *तेरका*. अवलोकन

अवशमिव, अवशमेव, अवसमेव कादं(शा). नलाख्या. अवश्यमेव, जरूर अवसम्पिणि गूर्जरा. अवसर्पिणी, एक

अवनतिकारक काळविभाग [जै.]

अवसमेव जुओ अवशमिव

अवसर प्राचीफा. समारंभ, [उत्सव], सभा अवसाण जिनरा. मोको, तक

अवसोयण *प्राचीसं*. अवस्वापिनी, [ऊंघाडी देनारी विद्या]

अवस्ता वेताप. माठी दशा [सं.अवस्था] अवहथइ उक्तिर. त्याग करे (सं.अप-हस्तयति)

अवहरइ आरारा. ऐतिका. हरी ले, लई

ले, दूर करे अवहित चित्तसं. अविहित, शास्त्रमां जेनुं विधान नथी तेवुं (कर्म), अनुचित (कर्म) अवहील. अवहीला *आरारा*. अवहेलना, अवगणना, तिरस्कार **अवहेल** *उपवा.* अपमान, तिरस्कार [सं.] **अवहेलइ** उपवा. गूर्जरा. धडाबा. अवहेलना करे. तिरस्कार करे. अपमान करे अवंझ जुओ अवंझ अवाच्यक चित्तसं. अवाचक, मूंगा **अवाच्यवीर्ज्य** चित्तमं. अवाच्यवीर्य, अवाच्य एटले ब्रह्म - तेनी शक्ति जेनामां छे ते अवाठी *गूर्जरा. विराप.* स्थान पामेली, वसेली (सं.उपस्थिता) [सं.अवस्थिता] अवाइउ उक्तिर. प्रतिकृतः; जुओ उवडु **अवाणगू** जिनसा. गुमसुम, [निस्तेज] [*अ+ रा.बाणको **अवारिय सत्त** *प्राचीसं*. अवारित सत्र. [अणअटकाव्युं – अविरत चालतुं – अन्नसत्री अवारी, अवारीय, अवेरी मदमो. *विमप्र. सिंहा(शा). अविरत, निरंतर (सं. अवार्य); जुओ आवारी अवारी-स्थंभ प्रेमाका. यूप, यज्ञस्तंभ, [अश्वमेध यज्ञनो (*अप्रतिरोधसूचक) स्तंभी

अवांष्ठतउ *पडाबा*. न वांछतो, न इच्छतो अवि उपवाः वळी (सं.अपि) **अविकत्थना** ऋषिरा. बडाश न मारवी ते अविकल *विराप*. संपूर्ण, [अखंड] (सं.) **अविकुल** *गुर्जरा*. अविकल, अखंड अविगत, अविगति, अविगती, अविगत्य अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरकाः, नरपः, प्रेमाकाः, अव्यक्तः अविघन विक्रचः अविघनः, [निर्विघनता] अविष्ठन आरारा. अविष्ठित्र. अखंड **अदिणउ** गुर्जरा. अविनय **अविणासी** श्रंगामं. अविनाशी अवितथ आनंस्त. साचुं [सं.] अवितयनामा नलाख्याः यथार्थनामा (सं.) **अवित कादं(शा)**. निर्धन, बापडूं [सं.] अविधारङ् जुओ अवधारङ् **अविनि** कादं(शा). अविनय अविभीगिहिं जुओ अवभीगिहिं **अवियुगतूं** *गुर्जरा.* अवियुक्त, छुटूं न पडेलूं अविरति लावल. अधिरक्तिः आनंस्त. व्रतनो अभाव, जिसंयम, अविरक्ति [सं.] अविलोक. अविलोकन दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. अवलोकन **अविलोकवुं** *दशस्क (१)*. अवलोकवुं अविष्ठ (अबीष्ठ) देवरा. न बीधेलूं, निर्भय (सं.अ+भी) अविहड ऐतिका. ऐतिरा. कर्पूमं. "गुर्जरा. *जिनरा. नलरा. विक्ररा.* अभग्न, सातत्य-युक्त, अतूट, अखंड (सं.अविधट)

अवारीय जुओ अवारी

अवाली जुओ सवाली

अवाश, अवास *गूर्जरा*ः

नलाख्या. वीसरा. आवास

कादं(शा).

अवयद

*अवीधांन, *अवीधाम, *अवीधांम कामा(त्रि). अभिधान, नाम; कामा(शा). जुओ अभीधांन अवीससिवं उपवा. अविश्वासपात्र अवीसास उपवा. अविश्वास अवेरी जुओ अवारी अवेला, अवेलां, अवेली, अवेलु अभिऊ. उपवा. कवेळा; *गुर्जरा. देवरा. *विराप. मोडुं अवेव, अव्येव अखाका. अखेगी. कादं(शा).

अव्येर चंद्रवा. अवर, अधम अव्येर जुओ अवेव अशकटा धडाबा. जेनी पासे गाडुं नथी तेवा अशुद्ध षडाबा. प्रामाणिक, सञ्जन

चित्तसं. दशस्कं(१). नरप(शा). श्रेमाका.

अशनपणे, असनपणे नरका. नरप. प्राचीका. प्रेमप. *निर्दोषताथी, अज्ञान-थी, अजाणतां, अणसमजमां; अंगवि. मूर्छा – बेभानदशामां (सं.असंज्ञ-)

अशतरी कामा(त्रि). स्त्री

अशमेन कामा(शा). चोक्कस (सं.अवश्य-मेव)

अशर्णाशर्ण *दशस्कं(१)*. अशरणनु शरण **अशंभरथे** मटमो. असामर्थ्ये

अशाबो *नरप.* असबाब, सरसामान, अलंकार

अशिम उषाह. बेधारुं खड्ग अशुकुनु षडाबा. अपशुकन (सं.ज+शकुन) अशुं अखाका. चित्तसं. आवुं, एवुं (सं.ईदृश)

अश्या *प्रबोप्र*. आवा प्रकारना

अश्रज, असरज, अस्रज कामा(त्रि) आश्चर्य

अश्वत्थळ *दशस्कं(१)*. अश्वत्यनुं स्थळ, पीपळवृक्ष

अश्वबंध, अस्वबंधु गुर्जरा. विरापः अश्वपाल (सं.)

अश्वमुख कादं(शा). किन्नर, [एक देवकल्प योनि] (एनां मोढां घोडानां जेवां होय छे) [सं.]

अश्वमेव *दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या.* अवश्यमेव, अवश्य

अश्ववार गुर्जरा. विराप. असवार (सं.)

अष्ट कर्म विक्ररा. [जीवने वळगतां] आठ प्रकारनां कर्मपुद्गल (जै.)

अष्ट कुल कृष्णवा. आठ कुलपर्वत अष्ट मासीध चंद्रवा. आठ प्रकारनी महा-सिद्धिओ

अष्टादश भार *दशस्कं(१)*. अढार प्रकारनी वनस्पति

अधापद नलरा. एक पौराणिक पर्वत (सं.) असउण गुर्जरा. खराब शुकन (सं.अशकुन)

असक्ता *षडाबा.* **अशक्त**

असगाह प्राचीसं. दुराग्रहथी, [हठपूर्वक, अटक्या वगर, खूब ज] (सं.असद्ग्राह)

असर्गा विमप्र. सगां न तेवां

असथान *गुर्जरा*. सभाखंड (सं.आस्थान); जुओ अस्थान

असवारंभ *आनंस्त. [आरंभनो अभाव,

व्यवहारिक्रयामांथी निवर्तन] [सं.] असद्ग्रही आनंस्त. असद् ग्रहण करनार, [दुष्टजन] [सं.]

असन, असन, असंन ०अखाका-शु. अखाछ. प्रेमाका. हरिख्या. अज्ञानी, अबूझ, मूढ (सं.असंज्ञ); चतुचा. भोळुं, निर्दोष; *नरका. शृंगामं. शून्यमनस्क; जुओ आसनउं

असनपणे जुओ अशनपणे असनादिक *आरारा.* खावापीवानुं (सं.अश-नादिक)

असन जुओ असन

असबी *षडावा*. जेने मननी इन्द्रिय नथी तेयो (जीव) (जै.) (सं.असंज्ञी)

असप**ख** हम्मीप्र. तंबु माटे उपयोगमां लेवातुं एक प्रकारनुं कापड

असबाब *पंचवा.* सरसामान, [मालमिल्कत] [अ.]

असमत्यु *पष्टिप्र*. असमर्थ

असमाध्य गुर्जरा. प्रेमाका. शृंगामं. षष्टिप्र. चितनी अस्थिरता, अस्वस्थता, अशांति [सं.]

असमाधियो *आरारा*. आकुल, अस्वस्थ, [दु:खी]

असमाध्य जुओ असमाधि

असमान, असमानि, असमानौ अभिकः. आराराः. *ऐतिकाः. अद्वितीय, असाधारण, मोटुं, भारे

असम्भावि *प्रबोप्र.* न कळी [धारी, विचारी] शकाय तेवुं (सं.असंभाव्य)

असरज जुओ अश्रज

असराल, असरालउ आरारा. "ऐतिका. जोरावर, भयंकर, भारे (रा.); आरारा. "देवरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. हम्मीप्र. पुष्कळ, अत्यंत, मोटुं, विशाळ; जुओ सरालउ

असरीखर्ज *गुर्जरा*. अणसरखुं, असमान (सं.अ+सदृक्ष)

असलेष, असलेस उक्तिर. प्राचीसं. आश्लेषा नक्षत्र

असंकल कृष्णवा. ऋणमुक्तः; जुओ उशंकल असंकलेस आनंस्त. क्लेश विनानी स्थिति, [समाधि – शुद्धिनी अवस्था]

असंकात चित्तसं. असंख्य

असंख आरारा. गुर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ज्ञा). असंख्य

असंख्यात उप*दा. प्रेमाका*. असंख्य

असंघउ *गुर्जरा*. अश्वपालक; जुओ अश्व**बं**ध

असंन जुओ असन

असंबो सिंहा(शा). अचंबो; जुओ असंभि असंभम अंबरा. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. सिंहा(म). सिंहा(शा). असंभव, अशक्य, हेरतभर्युं

असंभवि नलाख्या. असंभाव्य, असंभवित असंभावना, असंभाव्य चित्तसं. जीव अने ब्रह्मनी एकता विशे संशय होवो ते [सं.] असंभावि जुओ असम्भावि

असंभाव्य जुओ असंभावना

असंभि *प्राचीका.* आश्चर्यजनक (*सं. असंभव) [*सं.अत्यद्भृत]; जुओ अचंभ, असंबो

असाबु *नेमिछं. [आंगळीओ] [अ.असाबे]

असाय जिनरा. अशाता, [शारीरिक,
मानसिक पीडा, व्याधि, वेदनीयकर्मनो
एक प्रकार] [जै.]

असारइ *नेमिछं. [निःसार – निर्बळ धईने]

असांभरताई षडावा. न सांभरतां पण

असिउं नलरा. लावल. एवं (सं.ईदृश)

असिपद अखाका. ब्रह्मपद, [*तत्त्वमसिपद, — ते ब्रह्म हुं छुं एवी स्थिति]

असिणि ऐतिका, अश्विनी (नक्षत्र)

असिपत्र नेमिछं. जैन धर्मनी मान्यता अनुसार नर्लमां आवेलुं, तरवार जेवां पांदडांवाळुं एक वृक्ष के एनुं पांदडुं, पापीओने शिक्षा करवा जेनो उपयोग थाय छे [सं.]

असिय ऐतिका. भक्षित (सं.अशित) असिव ऐतिका. गुर्जरा. अकल्याण, अमंगल (सं.अशिव)

असी उक्तिर. प्राचीसं. वीसरा. एंसी (सं.अशीति)

असीमउ उपवा. एंसीमो

असी-सउ *षडावा.* एकसो एंसी (सं.अशीति +शतम्)

असुणिउ *उक्तिर*. अपशुकनियाळ (सं.अश-कुनिक)

असुर-मळतो प्रेमाका. असुरोनो मळितयो
 असुह ऐतिस. असुख
 असुहाणी आसरा. अणशोधती के असुख

असुं आरारा. एवुं, आम [सं.ईदृश]
असूझतां उपबा. अशुद्ध
असूत्र प्रेमाका. शास्त्र विरुद्ध
असूर ऋषिरा. सांज, [सूर्य आधम्या पछीनो
समय, रात] (सं.उत्सूर, अ-सूर);
नरका. नलाख्या. प्रेमाका. मोडुं
असेस आरारा. गुर्जरा. वीसरा. अशेष,
संपूर्ण, खूब

असोई *उक्तिर.* उपश्रुति, [श्रवण; वचन; संमति]

असोय तेरका. अशोक वृक्ष असोच शीलक. अशुद्ध [सं.अशौच] अस्त, अस्ति अखाछ. दशस्कं(२). नंदव. "वेताप. सिंहा(म). अस्थि, हाडकां अस्तीरज कर्पूमं. स्त्रीराज्य, त्रियाराज अस्त्री अभिक्त. आरारा. ननरा. विक्रस. वीसरा. स्त्री

अस्थ *प्रेमाका.* अस्थि अस्थर *हम्मीप्र. [चामडी] [सं.आस्तर] अस्थान *सिंहा(म). [सभामंडप] [सं. आस्थान]; जुओ असथान

अस्पेद *प्राचीका.* जरूर (सं.अवश्यमेव) **अस**ज जुओ अश्रज

अस्वबंधु जुओ अश्वबंध

अह गुर्जरा. प्राचीफा. हवे (सं.अथ); तैरका. गेय पंक्तिने आरंभे आवतो एक अलंकारार्थ उद्गार (सं.अथ)

अहिंड विक्रता. हेड, पगमा नाखवानी लाकडानी बेडी

अहनसि, अहनिशि, अहनिसि आरारा.

आपनारी, अणगमती

नेमिछं. गुर्जरा. लावल. अहर्निश, दिवस अने रात, रोजेरोज

अहमति गुर्जरा. अहंभाव (सं.अहं+मति) अहमेव अखाका. दशस्कं(२). चंद्रवा. प्रेमाका हरिख्या. अहंभाव. अहंकार

अहर उपाह. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. यीसरा. शंगामं. अधर, होठ

अहरुपरु, अहरुंपहरुं चतुरा. नंदव. आम-तेम [सं:आरात्+परात्]; जुओ अरुंपरुं

अहरुं अखाका. *अखाछ. चित्तसं. जीरुं, नजीक, पारं, [अही], [सं.आसत्]; जुओ अरु

अहरेक "अखाउ. [अहीं, नजीक, पारो] [संआया]

अहर्यणी अखंगीः सूर्य [सं.अहः+गु.धणीः] अहली, अहल्यउ, अहिलउ आरासः जिनमः व्यर्थ, एळे (सं.अफल)

अह्य *तेरना.* एक चनस्पति, [संभवतः अफल, आवृक]

अहव गुर्जरा, प्राचीका, प्राचीका, अथवा अहबहुहब आरारा, अविधवा अने सथक — सौभाग्यवती स्त्रीओ (द्विरुक्त प्रयोग); जुआ इहिविस्हियि

अहरा *आरारा*, अथवा

अहदातन अभिकः अहेवातण, सौभाग्य (तं.अधिधवा+त्वन)

अहिं चारफा. "प्राचीफा. "अथवा, "के अहिंद, अहिंदि प्रद्युचु. प्राचीफा. प्राचीसं. विक्रसः अविथवा, सीभाग्यवती स्त्री अहंकार कार्द(धू)-टि. ब्रह्मभाव, (अहं- ब्रह्मास्मि रूपे अहंपणुं) **अहंकृत्य** अखेगी. अहंकृति, अहंकार **अहार** *देवरा.* आहार

*अहारम (आहारम) जिनरा. आहारक शरीर, [योगबळे प्राप्त अन्य सूक्ष्म शरीर]; जुओ आहारग

अहां *उक्तिर. उपबा.* अहीं

अहिडी, अहेडी नलाख्या. पंचवा. वीसरा. शिकारी (सं.आखेटिक)

अहिठाल ऋषिरा. ऐतिका. विक्ररा. विमप्र. शृंगामं. अधिष्ठान, स्थान

अण्णिव आरारा. तेरका. अभिनव, नूतन अहित्रुं उपवा. अहित करनारुं

*अहिधर [*अहिवर] *शृंगामं. [सर्प]
अहिनशे, अहिनसि, अहेनश जादं(शा).
नामाच्यां. थिमप्र. अहर्निश, रासदहाडों,
दररोज

अहिनाण, अहिनाणि, अहिनाणी, अहिनाणी, अहिनाणी, अहिनाण आसरा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. कृष्णच गुर्जरा. जिनसा. नलसा. प्रद्युचु, प्राचीसं. विरुप्त. विराप. वीसरा. शीतक. शृंगामं. षरिष्र. ऐधाण, एंधाणी, निशानी (सं.अभिज्ञान)

अहि^{ित} *शृंगामं*, रात अने दिवस [सं.ज**ि**र्ग]

***अहियासने [अहियासे]** ऐतिकाः अनुभव करे, सहन करे [सं.अधि+आस्]; जुओ अहीआसइ

अहिराणी *प्राचीका*. सिर्पणी (सं.अहिराझी) अहिरु *प्राचीफा*. होठ (सं.अधर) अहिलंड जुओ अहलौ **अहिलास** शुंगामं. अभिलाष, इच्छा अहिलोक सिंहा(म). जगत, इहलोक आहिवर जुओ अहिधर अहिंबा उक्तिर. विधवा (सं.अधवा) **अहिवि** जुओ अहवि **अही** चित्तसं. सर्प **अहीअं** *वाग्भवा*. अहीं [सं.अस्मिन्] **अहीआसइ ***उपवा. ऋषिरा. सहन करे (सं.अधि+आस्); जुओ अहियासने **अहीआसणहार** **डपबा.* [सहन करनार] अहीणुं उक्तिर. गाय वगरनुं (सं.अधेनुकम्) **अहींकणि** कादं(शा.) *अहीं नजीकमां, [अहींयां] (सं.अस्मिन्+*कर्णस्मिन्) अहुण, अहुंण, अहुण उक्तिर. वेताप. हमणां; आ काळे, ओण (सं.अधुना) **अहरणी** करतूवा. वेताप. सिंहा(शा). ऋण-मुक्त, (सं.उत्+ऋण) अहंण जुओ अहुण अहुठ गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. प्रेमाका. षडाबा. ऊठ, साडा त्रण (सं.अर्धचतुर्थ) **अहूण** जुओ अहुण अहे प्राचीफा. हवे (सं.अय) **अहेडइ** *गुर्जरा.* शिकारमां (सं.आखेटक) अहेडी जुओ अहिडी अहेनश जुओ अहिनशे **अहेंली** सिंहा(शा). हेली. [निरंतर वर्षा] **अहा** लावल. वसंवि. अमारुं; गुर्जरा. अमे (सं.अस्मद्)

(सं.आरात्-परतः) अंक कादं(ध्र). चिह्न, अभिज्ञान [सं.] **अंक भरतां ***नरका. [आलिंगन लेतां] [हिं.] **अंकुरियइ** *गुर्जरा*. अंकुरित थाय **अंकुल** *तेरका*. अंकोलवृक्ष **अंके *** नरका. [निश्चित, खरेखर] अंकोर अखाका. अखेगी. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. अंकूर; नंदब. सिंहा(शा). अंकुर, मूळ, मर्म, रहस्य, भेद **अंकोल** उक्तिर. ए नामनुं वृक्ष, अंकोठ **अंखि** *गुर्जरा*. आंख (सं.अक्षि) अंखी लावल. जोईने [सं.अक्ष्] **अंग** *आरारा. ऐतिका*. जैन अंग-शास्त्रो: आरारा, प्रकारो: उक्तिर, अंगदेश **अंगउ** वीसरा. अंग. भाग अंगडवंग ऐतिरा. अंग अने उपांग निःमनां जैन शास्त्रों]; जुओ अंगोवंग **अंगओलग्रं** नलरा. *अंगरक्षक, अंग-सेवको अंगचेन कामा(शा). अंग उपरनां लक्षणो [सं.अग+चिह्न] अंगण तेरका. लावल. आंगणुं [सं.] अंगद वसंफा. बाजुबंध, कांडा परने कड़े (ti.) **अंगऱ्यास** *प्रेमाक:*. शरीरनां जुदांजुदां अंगोने हाथथी स्पर्शी ते-ते अंगमां मंत्रन् आरोपण करवानो विधि सिं.] **अंगरखी** *उक्तिर. प्रेमाका. हम्मीप्र*. अंगनुं – शरीरन् रक्षण करनार, बख्तर (सं. अंगरक्षिका) **अंगरेची** *हस्तस*, अंग्रेज

अहरुपहुरु कादं(शा). आसपास, आमतेम

अंगलूहणउं षडाबा. शरीर लूछवानुं वस्त्र (सं.अंग+लूष्) अंगा लितरा. एक प्रकारनुं बख्तर

अंगारसगडी उक्तिर. सगडी (सं.अंगारशक-टिका)

अंगारु नलरा. अंगारारूप, [दाहक] अंगारो अखाका. जुवार इत्यादि अनाजनो एक रोग, तेथी बीज-दाणा बळी जाय छे अंगित ऋषिरा. नलरा. संकेत, इशारो, चेष्टा (सं.इंगित)

अंगीकरे, अंगेंकरे ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका. षडाबा. अंगीकार करे, स्वीकारे; अखाका. अंगीकार करे, *पकडे, [ले, धारण करे]

अंगीठउ, अंगीठडी, अंगीठी उक्तिर. ऋषिरा. प्रेमाका. सगडी (सं.अग्नि-ष्ठिका)

अंगुल गुर्जरा. आंगळ (माप) (सं.) अंगुलफरस नलरा. आंगळीनो स्पर्श अंगुल मोड्या *आरास*. टाचका फोड्या, निंदा करी

अंगूठी प्रेमाका. हाथनी आंगळीए पहेरवानी वींटी [सं.अंगुष्ठ+इका]

अंगूंबल "कृष्ण*बा.* [आंगळीओ] [सं.अंगुल-स्थल]

अंगूषली *रूपच. [आंगळी]

अंगेंकरे जुओ अंगीकरे

अंगोल *ऐतिका.* पुत्र

अंगोवंग जिनरा. [शरीरनां] अंगोपांग, [ए निर्णित करतो नामकर्मभेदं] [जै.]; जुओ अंगउवंगः

अंगोहल विमप्र. अंघोळ, स्नांन [सं. अंगहोल] अंघोल, अंघोळ, अंघोलि कृष्णच. प्रेमाका. विमप्र. स्नान, नाहवुं ते, माथुं पलाळ्या

विनानुं स्नान [सं.अंगहोत्त] **अंघोळवुं** *आनंस्त. दशस्कं(१). "प्रेमाका.*

अधाळवु *आनस्त. दशस्क(१). "प्रमाका.* नाहवुं

अंच *अखाका. [अग्निनी आंच]; गुर्जरा. दुःख, बळतरा (सं.अर्चिष्)

अंच- *ऋषिरा. प्राचीसं. अर्चवुं, पूजवुं; *प्राचीफा. [अर्चवुं, कपाळे लगाडवुं] अंचल उथाह. आंचळ, [स्तन, छाती] [सं.] अंज- तेरका. आंजवुं (सं.)

अंजण *आरारा(व). तेरका.* अंजनवृक्ष अंजत प्राचीफा.काजळ आंजेल (सं.अञ्जित) अंजल, अंजळ *आरारा. वीसरा*. अंजलि, प्रणाम

अंजुित अंवरा. अंजित, [हाथजोड, प्रणाम] अंड अखाका. ईंडुं [सं.]

अंदुउ षडावा जेना हाथमां हथोडो छे ते, [हथोडाथी काम करनार व्यवसायीनुं नाम]

अंदुय *षडावा.* हथोडो

अंत कादं(ध्रु). वसंवि. भाग, छेडो; लावल. अणी; कादं(ध्रु). सुधी, [अंते]

अंतक्षर *गुर्जरा.* अंत्य अक्षर

अंतगड प्राचीफा. ए ज जन्ममां मुक्ति पामनार (सं.अंतकृत्)

अंतर *विमप्र*. भेदभाव

अंतरउ *गुर्जरा.* आंतरो, फरक (सं.अंतरक)

अंतर करी कामा(शा). वशे पडदो राखी **अंतरगत, अंतर्गत** *दशस्कं(२),* अंतःकरणः *प्रेमाका*. अंतरमां **अंतरगति** *नलाख्या***. मनमां (सं.अंतर्**+गत) **अंतरघट** नरप(द). मनमां **अंतरदार** *चित्तसं***. मर्म**. रहस्य **अंतरपथ** *तेरका*. वद्येनो मार्ग **अंतरपुर** *दशस्कं(२).* अंतःपुर **अंतरभूत** *चित्तसं.* अंदर समायेलूं **अंतरमंहां** चित्तसं, अंदर **अंतराइ** ऋषिरा. नरका. अंतराय, अडचण, [विघ्न]; *प्रेमाका.* अंतराय, जुदाई, तफावत अंतराइ, अंतराय आनंस्त. गुर्जरा. नलरा. अंतरायकर्म, जे शुभ कार्योमां विघ्नरूप थाय छे (जै.) **अंतराल** *गुर्जरा. विराप.* *मध्य भाग, [अंतरीक्ष] (सं.) अंतरानि ऋषिरा, वद्ये अंतरि, अन्तरि गुर्जरा. *प्रबोप्र. विराप. [अंतरमां], अंदर, वचमां **अंतरे** *तेरका.* वद्येवद्ये (सं.) अंतर्गत जुओ अंतरगत **अंतर्गृह** *कादं(ध्र)*. अंतःपुर **अंतर्ध्यान** *दशस्कं(१)*. अंतर्धान, [अदृश्य] **अंतर्य** *चित्तसं*. अंदर अंतरकर्ण *दशस्कं(१)*. अंतःकरण

प्रद्युचुः, प्राचीकाः, प्राचीफाः, लावलः, विमप्र. वीसरा. सिंहा(म). हम्मीप्र. अंतःपुर, राणीवासः राणीओ अंतेजरि, अंतेजरी, अंतेवरी अंगवि. अंवरा. उक्तिर. आरारा. उपवा. उषाह. कादं(ध्र). लावल. विक्ररा. हम्मीप्र. राणीओ (सं.अंतःपुर उपरयी) **अंतेवारा *** नेमिछं. [राणीओ] अंत्यावरी मदमो. राणी (सं.अंतःपुर+इका) **अंत्रस** *प्रेमाका***. आंतरो, जुदाई अंथ** अखाछ, चित्तसं, प्रेमाका, सहेज पण, लेश पण, [साव, बिलकुल]; "मदमो. [साव, बिलकुल, पूरेपूरुं] **अंदर** देवरा. इंद्र अंदोह आरारा. *गुर्जरा. जिनरा. नलरा. प्रद्युः, विक्रचः, *विनप्रः, *शंगामं, सिंहा(म). चिंता, विनासण, खेद **अंद्र** उषाह, प्राचीका, इन्द्र अंद्रगोप प्राचीका. चोमासामां थतुं एक जीवड् (सं.इन्द्रगोप) अंद्रजाल प्राचीका. इंद्रजाल, एक प्रकारनुं जाद् **अंद्रासन** *प्राचीका.* इन्द्रन्ं आसन (सं. इन्द्रासन) **अंद्री** *प्राचीका*. इन्द्रिय **अंद्रीव्रत्य** *प्राचीका*. इन्द्रियवृत्ति, [इंद्रिय-व्यापार, इंद्रियसुख] **अंघ** *लावल.* *अंधारी, *काळी, [*अर्ध] **अंधकार** कादं(ध्रू). अंघापो **अंबक्ए** *"विक्रच*. नि देखाय

अंति *आरारा*. अंदर. -मां

अंतेजर अंबरा. आरारा. उक्तिर. ऐतिरा.

कादं(शा). गुर्जरा. नलरा.

नेमिछं.

कशाकथी ढांकेलो, छानो कूवो] **अंधण** *षष्ट्रप्र***. अंधा**पो अंध-धंध जुओ धंध, धंध-धुवारी **अंघल** सम्यची, आंधळी **अंधमूंधपणइ** *उक्तिर*. ऊंधमूंधपणे, ऊंधे माथे, बेभानपणे [सं.अवमूर्धा+मूर्धा] **अंधेर** *चित्तसं*. अंधकार [सं.अंधकर] **अंध्य** *नलरा*, आन्धप्रदेश अंन, अत्र आराराः गुर्जराः चतुचाः तेरकाः अन्य, बीजूं **अंनमी** चंद्रवा, न नमे तेवो, अणनम **अंजा, अन्या** *चंद्रवा*. दोष, वांक, खोड-खांपण **अंब** *उषाह. चित्तसं*. पाणी (सं.अम्बु) **अंब** *आरारा*. अंबा, माता अंब, अंबर अभिक, आरारा(व). तेरका. प्राचीफा, लावल, वीसरा, षडाबा, आंबो (सं.आम्र) **अंबर** कामा(शा). *नरका. वस्त्र [सं.] अंबर *तेरका*. एक वनस्पति **अंबवण** *तेरका, प्राचीफा,* आंबावाडियुं (सं. आम्रवन) **अंबा** *भोसाच.* माता (सं.) **अंबाइय** *प्राचीसं*. अंबामाता, अंबाई अंबाएवि ऐतिका. अंबादेवी अंबाङ्य तेरका. एक वनस्पति, अंबाडो (सं.आम्रातक) **अंबार** *मोसाच. शृंगामं. हरिख्या*. ढगलो, भंडार **अंबाविज** *प्राचीसं*, प्रचलित कर्यो, प्रवर्ताव्यो

अंबिक तेरका. नलरा. अंबिका देवी
अंबिक गुर्जरा. अंबिका देवी
अंबिक तेरका. आंबेल, [एक जैन तपप्रकार, जेमां छ प्रकारना विकृतिजनक
आहारनो त्याग होय छे] (सं.आचान्ल)
अंबिलीय तेरका. आमली (सं.अन्लिका)
*अंबोषण [अभोखण] *अभिऊ. [सत्कार
रूपे पाणी सींचवुं ते]; जुओ अभोखण
अंस कादं(धु). *कादं(शा). *लगार
अंसु तेरका. अश्रु

आइ *प्रबोप्र*. आयु **आइ, आई** कादं(शा). प्राचीका. माता, (*सं.आर्या) [सं.*आप्पिका] **आइ** *गुर्जरा*. आ वडे आइ आरारा. आवीने **आडखड** *आरारा.* कहे (सं.आचक्षते) **आइम** *जिनरा.* आदिम, [पहेलूं] [प्रा.] **आइबुं** *आरारा*. आववुं आइस गुर्जरा. प्रबोप. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्थूलिफा. आदेश, आजा आइसु वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(व्रा). आवं (सं.एतादृश) आई जुओ आइ **आउ** जिनरा. आयु [नामनां कर्मपुद्गल], किई गतिमां केटलो काळ गाळवो एनं निर्माण करतां कमी जि.ो

आउ, आऊ गुर्जरा. महमो. विमप्र: आयुष्य

(सं.आयू)

आउकार जिनरा. आवकार, स्वागत आउख, आउखउ, आऊखउ उक्तिर. उपवा. ऐतिका. कामा(शा). गुर्जरा. जिनरा. प्राचीसं. विमप्र. आयुष्य आउज गुर्जरा. प्राचीसं. आतोद्य, एक वाद्य आउद्य नलाख्या. नेमिछं. आयुघ, शस्त्र आउद्यशालां नेमिछं. शस्त्रशाळामां आउति आरारा(व). शृंगामं. आवळ (सं. आहुल्य)

आउव जुओ वुझोय **आउवुझोय** जुओ वुझोय

आऊ जुओ आउ

आफखउ जुओ आउखउ

आएस *ऐतिका. तेरका. प्राचीफा.* आदेश, अनुज्ञा

आक अखाका. अखेगी. आरारा(व). उक्तिर. नरका. वीसरा. आकडो (सं.अर्क)

आक-इंधण ऋषिरा. आकडानुं बळतण (सं.अर्क+इन्धन)

आकडिइ (दीवटीआ कडिइ) *विमप्र.
[गोळाकारे वींटळायेला मशालची]
[सं.दीपवर्तिक + सं.कटिकत, प्रा. कडइअ]

आकमदार आरारा(व). आकडो ए ज मदार के मंदार (सं.अर्कमदार)

आकरखबुं *चतुचा*. आकर्षवुं, [पासे खेंचवुं]; *दशस्कं(९)*. आकर्षवुं, [खेंची तेवुं, तई तेवुं]

आकरसी ऋषिरा. आकर्षीने, खेंचीने आकर्षड उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा. खेंचे, ताणे

आकरो चित्तसं. न छूटे तेवो, दृढ आकलइ उक्तिर. गुर्जरा. *नलाख्या. समजे, जुए (सं.आकलयति)

आकर् कादं(ध्रु). गीच (सं.आकुलम्) आकंप गुर्जरा. कंप, ध्रुजारी (सं.) आकंपियड गुर्जरा. स्थूलिफा. कंप्यो आकारण प्रद्युचु. नोतरुं, तेडुं, कहेण, संदेशो (सं.)

आकुड्य षडाबा. दीवालने अढेलीने बेसवुं ते (सं.कुड्य परथी)

आकुलउ, आकुळउ उपवा. व्याकुळ, [धेरायेलो]; वीसरा आकळो, रोषीलो, (सं.आकुल); गुर्जरा. व्याकुळ, व्यिस्त, लीन]; विराप. व्याकुळ, अस्वस्थ

आक्रमइ, आक्रमिइ उक्तिर. उपबा. षडावा. आक्रमण करे, हल्लो करे, चढी आवे

आक्रंदइ *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* आक्रंद करे, रडे

आक्रुसिड *उक्तिर.* निंदित, शापित (सं. आक्रुष्टः)

आक्षर जुओ ए आक्षर आक्षान चंद्रवा. मदमो. आख्यान आक्षेप चित्तसं. विस्तार [सं.] आखइ उक्तिर. ऐतिरा. बोले (सं.आख्याति) आखड उक्तिर. वीसरा. चोखा (सं.अक्षत)

*आखउंडली [आंखउडली] उक्तिर, पोपचुं (सं.अक्षिपटलिका)

आखडी आरारा. ऋषिरा. ऐतिरा. जिनरा.

नेमिछं. प्रेमाका. विक्रच. विमप्र. शृंगामं. जिनरा. व्रत, नियम, बाधा, मानता आखडे प्रद्युचु. ठोकर खाय; *अखाका. कादं(शा). नेमिछं. *प्रेमाका. लथडी पडे; *नरका. [लडे] (सं.आस्खलित) [सं. *आक्षुटित]

आखपाखनो नेह जुओ आंखपांखनो नेह आखर *पडाबा*. अक्षर; *वीसरा*. पत्र आखंडल *विमप्र*. समग्र भूमंडळ आखा "प्रद्युचु. [नाम, ओळखाण] [सं. आख्या]

आखा *उक्तिर*. चोखा (सं.अक्षताः)

आखा तीज, आखा त्रीज उक्तिर. ऐतिका. अक्षयतृतीया, [अखा त्रीज]

आखा पाणी *प्रद्युचु*. चोखा अने पाणी (सं.अक्षत) [+सं.पानीय]

आखी अणी *प्रेमाका.* अक्षत अणीए, संपूर्ण सलामत; जुओ अणिअ आखइ

आसुडइ उक्तिर. आखडे, ठोकर खाय (सं.आस्खलति) [सं.*आक्षुटति]

आखे *प्रेमाका.* **अक्षत, चोखा**

आखेट पंचवा. प्राचीफा. हरिख्या. शिकार, मृगया (सं.)

आखेप जिनरा. प्रबोप्र. आक्षेप, [नाखवुं ते]; आळ, आरोप, [टीका]; ऐतिरा. आक्षेप, [परिश्रम, यत्न] [रा.]

आख्यपाख्य *नरप.* आसपास, फरते (सं.पाश्वी); जुओ आंखपांखनो नेह

आख्यान कांदं(शा). वात, कथा (सं.) आगड्ड उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. नरका. नेमिछं. वसंप्रा. वसंप्रा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विकरा. शृंगामं. जागळ, खगाउ, पूर्वे, पहेलां, अगाउथी (सं.अप्रे); लावल. *अग्रिमपणे, [पूर्वेथी]; गुर्जरा. विराप. वडाबा. आगळ, समझ; बडाबा. आगळ, हवे पछी; विराप. पूर्वेनुं

***आगउ (अस्तुओ)** *चित्तसं.* अग्रयायी, आगळ चालनार [सं.*अग्रगृ]

आग**न्या** *आरारा. कार्द(शा). नलाख्या.* **आ**झा

आगम *आरारा.* खागमन; *ग्रेमाका.* भविष्य-नुं दर्शन, [यनार वस्तुनी एंद्याणी]; *ऋषिरा. विकरा. शास्त्र; जुओ अगम

आयम**एं** *प्रेमाका***. अ**वायुं

आगमिचि *उधाह*. आगमच, आगळ्यी; [तरत ज, एकाएक]

आगमो अभिकः मोवडी (सं.जिब्रिम)

आगर *आनंस्त. उक्तिर. उपना. ऐतिरा.* तेरका. पंडार, समूह (सं.आकर); अखाका. सामर, पिल्पीनों) पंडार

आगर *ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. नेमिछ. मकान, घर, निवास (सं.जागार)

आगरंज *जीकर.* खाग्रा नगर (सं. अर्गलापुरम्)

अत्यत *उक्तिर.* खागळो (सं.वर्गता)

आयत, **वानत्त्व, व्यन्त्वे** आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा. चंद्रवा. नत्तरा. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. मदमो. वीसरा. जागळ, जागळ पडतो, अग्रजी, चडियातो, श्रेष्ठ (सं.जग्र परथी)

आग**लि, आगडि** *आनंसा. उक्तिर. उपवा*.

कारं(शा). युर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. "विराप. वीसरा. जागळ, पासे, समस (सं.जग्र+ल); उपना. रूपच. लावल. शीलक. जागळ, [अग्रस्थाने]; वसंप्रत. वसंवि. वसंवि(त्रा). आगळ, समस, [नी तुलनामां]; उपना. गुर्जरा. पहेलां, पूर्वे; आनंस्त. लावल. आगळ, [ह्ये पछी]

कार्यत्यु शृंगामं. जारळ्यी, पहेलांथी कार्यत्ये जुडो अस्मल कार्यत्ये अखाका. जारळनो, *भूत-पविष्यनो, [*प्रत्यक्ष पदार्यनो] कार्यापिउं बडाबा. जागामी, आवनारुं कार्या अखाका. प्रेमाका. निवासस्थान, रहेळाण, [मकान] [सं.]

व्यक्त उक्तिर, खाकाश

कान्यतमामिजी *थडाबा.* **आ**काशगामिनी विद्या

खारि अपिड. नलाख्या. अगार, पूर्वे (सं.चम्)

ब्हानि, ब्हानी उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. षडावा. षष्टिप्र. आग (सं.अग्नि)

कारियेय *मुर्जरा.* छम्निमय (बाण) (सं. जाम्नेय)

व्यक्तिर खीतरः वाग्रेसर

व्यक्तिनं, व्यक्तिनं उक्तिर. आगळ, आगळनुं (सं.चग्र); आनंस्त. हवे पष्ठीनुं; उपना. षद्धाना. आगळनुं, पूर्वेनुं, आगळ रहेतुं

व्यक्तिबाच *प्राचीसं*. खागेदान

आगी जुओ आगि
आगुओ जुओ आगउ
आगुओ जुओ आगउ
आगुओ नरका. अगाउनी, पहेलांनी
"आगुं [आंगुं] नलरा. एक प्रकारनुं बखार
(सं.अंग परथी)
आगे चित्तसं. आगळ, पहेलां
आगेवाणि "विक्रच. [आगेवान, अग्रणी,
आगळ चालनार]; जुओ अगेवाणि
आघ "विक्रच. [पासे, नजीक] (सं.अग्र)
आघउ "अभिऊ. "नलाख्या. प्रद्युचु. षडाबा.
[पोताना स्थळथी] आगळ; आरारा.

उक्तिर. [पोताना स्थळथी] आगळ, [बीजानी नजीक]; नरप(द). गुर्जरा. विराप. *षडाबा. आगळ, नजीक, पासे],

समक्ष (सं.अग्र परथी)

आधल विमप्र. नजदीक (सं.अग्र)

आधाट *नलरा. [सीमा, चारे सीमा, चारे सीमा साथे] [सं.]; जुओ अधाट *आ घी [*आ घी] गुर्जरा-शु. आ विचार आधुं, आधेरं अखाका. नलाख्या. [आगळ], *दूर; चित्तसं. आगळ, आगळनं, आगळनी स्थिति

आचमइ *उक्तिर*. आचमन करे (सं. आचामति)

आचरणी *हरिख्या*. धार्मिक क्रिया आचरतुं, आचार पाळतुं

आचाम्त षष्टिप्रः व्रतविशेष, जेमां लूखुंसूकुं खावानुं होय छे, आंबेल [सं.] (जै.)

आचारज, आचारिज *अखाका. अखेगी. आरारा. उक्तिर. प्रेमाका*. आचार्य

आचारी *हरिख्या.* आचार पाळनार (सं.)

आचार्यांस उक्तिर. आचार्यवर (सं.आचार्य-मिश्राः)

आस्थिदइ उक्तिर. आंचके, झूंटवी ले (सं.आ+छिद्)

आछइ *आरारा. जिनरा. प्राचीसं.* छे [सं.आक्षेति)

आछउं "गुर्जरा. [भले रह्युं, पडतुं रह्युं] **आछउं** *प्राचीफा.* "झीणुं, [संदर]; *उक्तिर*.

ा**७७** प्राचाकाः ज्ञाणु, [सुदर]; जकरः *वीसरा*ः सुंदर, सरस (सं.अच्छ)

आछटे *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पछाडे, झापटे; *हरिख्या*. पछाडा खाय

आछडतां *प्रेमाका*. पछाडतां

आछण ऐतिरा. *नलरा. लावल. षडाबा. नीतरामण, आछरेलुं पाणी; जुओ इक आछण

आछणची (आछण चीनउ भात) *जिनरा. चिणा भात – एक प्रकारना जंगली चोखा – नुं नितरामण, धोवण]

आछाई प्रद्युचु. आच्छादन करी (सं. आच्छादित)

आछोटई उक्तिर. पछाडे (सं.आछोट्यति) आजतां जुओ जतां-आजतां

आजूणउं, आजूनुं उक्तिर. कृष्णच. जिनरा. "षडाबा. आजनुं, अद्यतन, हमणानुं [सं.अद्य+खलु+गु.नउं]

आज्य अखेगी. प्रेमाका. घी (सं.)

आटारणमां गई लत्तस. अटामणमां गई, धूळधाणी थई

आटारेहण जाय *आरारा.* अटामणमां जाय, नकामुं नीवडे आटीने चतुचा. ?

आटकाठ अखाछ. आटकाठ, कमठाण

आठगुणउं *गुर्जरा*. आठ गणुं (सं.अष्ट-गुणकम्)

आठिम जिक्तर. उपबा. आठम (सं.अष्टमी) आठबड्ड ज्याह. स्थापित करे, विचारे; *गुर्जरा. *विराप. योजे, विचारे, गोठवे; लावल. मूके, गोठवे (सं.आस्थापयति)

अदु मदमो. वेदाप. आठेय (सं.अष्ट+खलु)

आठोठ अखाछ. व्यापेलुं **आठोडवं ***अखाका. [खंखेरवं]

आड, आड्य *अखाका*. अंतराय, विघ्न

आड चंद्रवा. *हठ [करीने]

आडइ * नेमिछं. [हठे, आडाइए]; *जिनरा. [शरणमां] [रा.]; *प्रेमाका.* वद्ये, [मददे] [रा.]; जुओ आडौ

आडउ *जिनरा.* हठ, [आडाई, अडपलुं]

आडण *उक्तिर.* अंगमंडन, अंगशोभा

आडणी गुर्जरा. लावल. जमती वखते थाळी मूकवानो पाटलो; विमप्र. अढेलीने बेसवा माटेनुं आसन, [*थाळी टेकववा माटेनो पाटलो]

आडल मदमो. छंदविशेष, [अडिल्ल]

आडाखोडी *लावल.* *अनादर, [आडखीली, विघ्न]

आडाबंग उक्तिर. अडबंग, ढंगधडा विनानुं, विलक्षण, अटपटुं

आडांत्रेडां *उपबा. प्राचीसं.* आडांअवळां, वाकां

आडि ऋषिरा. आड, [कपाळमां करवामां

. आवती रेखा]

आडि उक्तिर. एक पक्षीनुं नाम (सं.आटिः)

आडि शृंगामं. जीद, हठ (दे.अडु)

आडी लीट बळी जुओ वळी आडी लीट

आडे जुओ सीध्यां आडे

आडे चड्यो प्रेमाका. तोफाने चड्यो, [हठे

भरायो]

आडौ [आडौ आसै] *जिनरा*. काममां आवशे, [मददस्त्प थशे] [रा.]; जुओ

आडइ

आड्य जुओ आड

आढउ उक्तिर. अनाजनुं एक माप (सं. आढकः)

आढवइ उक्तिर, आरंभे [दे,]

आण, आंण अखाका. आरारा. उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा. आज्ञा, सत्ता; चतुचा. वीसरा. आज्ञा, सोगंद, मनाई

आणइ आरारा. कार्वे(शा). लावल. आ(मां), आ (वडे)

आणनहार उक्तिर. आणनार (सं.आनय्)

आणंदइ *वसंवि*. आनंद आपे; *वीसरा.* आनंद करे

आणंदिण *ऐतिका. वसंफा. वसंदि. वसंवि(ब्रा).* आनंदजनक

आणा *ऐतिका. ऐतिरा*. आज्ञा

आणावी आरारा. बोलावीने [सं.आनय्]

आणि नलाख्या. आण, शपथ सिं.आज्ञा

आणि अभिक्त. आणा माटे, [तेडुं करवा] (सं.आ+नय्)

आणि, आणी *आरारा. चित्तसं. प्रेमाका.* आ **आणीतउं** *उक्तिर.* अणातुं, लवातुं (सं. आनीयमानम्)

आणी बार दशस्कं(१). आ वारे, आ वखते आणे आरारा. चतुचा. प्रेमाका. आ

आणेश कान अखाका. सांभळीश

आतपत्र आनंस्त. छत्र [सं.]

आतमलक्ष चित्तसं. आत्मबोध

आता कादं(ध्रु), कादं(शा). दशस्कं(१). नरप(द). प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका. पुत्रने लाडमां करातुं 'बापा'ना प्रकारनुं संबोधन [सं.*अत्त]

आती *प्रेमाका* आटली

आतुरी *प्रेमाका.* आतुरताभर्यो, [कामातुर] **आतुंपोतुं ***विमप्र. [मूडी, थापण]

आत्थि हम्मीप्र. धन, साधनसामग्री [सं. अस्ति]; जुओ आथ, आथि

आत्मनिष्टित *आनंस्त.* आत्मनिष्ठ, [आत्म-भावमां स्थित]

आध अखाका. अखाछ. अंबरा. जिनरा. देवरा. सिंहा(शा). धन, पूंजी, समृद्धि [सं.अस्ति]; जुओ आय, आधि

आथडी नलाख्या. अथडाई, [भटकाई पडी] आथमण थडावा. आथमवुं ते (सं.अस्तमन)

आथर अभिक. उक्तिर. आच्छादन, पाथरणुं, पशुनी पीठ उपर नाखवामां आवती डळी (सं.आस्तरः)

आथि आरारा. छे (सं.अस्ति)

आषि, आष्य अखाका. अंबरा. आरारा. कस्तुवा. नंदब. प्राचीका. मदमो. विक्रच. विभग्न. वेताप. हम्मीग्न. पूंजी, धनवैभव, साधनसंपत्ति (सं.अस्ति); जुओ आत्थि आयो "देवरा. [पूंजी, संपत्ति, (प्रास माटे 'आथ'नुं 'आथो')] आष्य जुओ आथि

आच्य जुआ आाथ आवड उक्तिर. अदु (सं.आईकम्) आवशण (आ वशण) "शृंगामं. [आ साचुं] आव पुरुष प्रेमप. आदिपुरुष विष्णु आवर "अखाका. [आश्रय]; अखाछ. अखेगी. प्रयत्न

आवरण *जिनरा.* स्वीकार

आवरतुं अखाछ. अखेगी. "प्रेमाका. प्रयत्न-शील थवुं, [प्रवृत्त थवुं, करदुं]; आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. "आनंस्त. आरारा. "नरका. लावल. स्वीकारवुं, आश्रय लेवो, पामवुं; आरारा. गुर्जरा. विवाह करवो, सगपण करवुं; उपबा. नलाख्या. "शरू करवुं, [मांडवुं, करवुं]

आदरी *गुर्जरा. [आदरपूर्वक]
आवानभय आनंस्त. मागणी मुजब मळशे
के नहीं तेवो भय
आदिसर गुर्जरा. आदि अक्षर
आदित, आदीत कामा(त्रि). कामा(शा).
आदित्य, सूर्य
आदिशबुं उक्तिर. आदेश आपवो
आदिस देवरा. आदेश, आज्ञा

आदेशकार ऐतिका. आज्ञाकारी, [आज्ञा-नुवर्ती, आज्ञा पाळनार] आदेसडइ लावल. आदेशथी, आज्ञाथी आच चित्तसं. -थी मांडीने आग्रे वेई जुओ देई आव्रहणु उत्तिर. आंधण, उकाळवुं ते [सं. आदहन]

आध्र, आध्य अखाका. अखाछ. कामा (त्रि). कामा (शा). आधि, मानसिक पीडा, चिंता आध्रउ उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा. अर्धो आधरण उक्तिर. आंधण, उकाळवुं ते [सं. आदृह]

आधाकर्मी षष्टिप्र. साधु माटे खास तैयार करेलुं भोजन, जे जैन साधु माटे लेवानुं निषिद्ध छे (प्रा.आहाकम्मिय) (जै.)

आधानु *गुर्जरा*. गर्भाधान आधावेध *प्रेमाका.* हूंसातूंसी, अंदरोअंदरनो विरोध

आधीन चित्तसं. परवश, गौण, ऊतरतुं आधेन मदमो-२. अध्ययन आधोरण कादं(शा). गुर्जरा. हाथीनो महावत (सं.)

आध्य जुओ आध

आध्यार *अंबरा*. आधार

आध्ये-व्याध्ये *नरका.* आधि अने व्याधिऐ आनपान षडावा. श्वासोच्छ्वास (सं.आन+ प्राण)

आनंदए वसंफा. आनंद आपे आनुपूरवी ऐतिका. [नाम]कर्मनो एक भेद, [वर्तमान शरीर मूक्या पछी एने ऊपजवा-ना स्थळ तरफ लई जनार कर्म] [जै.]

आदीतवार कामा(त्रि). रविवार

आदे *देवरा*. आदि, [वगेरे]

आन्या *आरारा*. आज्ञा

आप आनंस्त. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका. लावल. वीसरा. पोतानी जात, पोते (सं.आत्मा); कादं(ध्रु). दशस्कं(२). प्रेमाका. शरीर, स्वरूप; अखाका. चित्तसं. आत्मा, आत्म-स्वरूप, आत्मभाव; अहंभाव; जुओ आपो

आप अखाका. पाणी (सं.अप्) आपइणी उक्तिर. जाते, पोतानी मेळे आपडड उक्तिर. आवी पडे (सं.आपतति)

आपडियइ षडाबा. आवी पडे आपण षष्टिप्र. पोतानुं; वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). आपणुं, आपणे, आपणी

वद्ये (सं.आत्मन्)

आध्यह *आरारा. लावल.* पोताने

आपणउं आरारा. उक्तिर. उपबा. दशस्कं(२). नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. विराप. वीसरा. षडाबा. पोतानुं (सं. आत्मनः); चित्तसं. पोतापणान, आत्म-तत्त्वनुं

आपजडइ *जिनरा.* आपणे, पोताने

आपणपइ *आरारा*. आपणाथी, आपणे, पोते; जुओ आपोपे

आपणपउं, आपण्पुं आरारा. उपबा. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. षडाबा. षष्टिप्र. पोतानी जात, पोते (सं. आत्मन्+त्व); कादं(शा). आत्मत्व, स्वत्व; जुओ आपोपुं

आपणहार *गुर्जरा.* आपनार

आपणी घायउ *उक्तिर.* आत्मसंतुष्ट (सं.आत्मना धातः) **आपणीहीज** *आनंस्त.* आपोआप ज, [पोतानी मेळे]

आप-नैवेदी *प्रेमाका.* पोतानी रसोई पोते बनावी जमनारो, स्वयंपाकी

आपन्या *अखेगी. शाता,* [तृप्ति]

आपहणी *आरारा. उपबा. "विक्रच.* आपमेळे. आफणिये, जाते

आपहे *षडाबा.* जाते

आपापणा, आप्पपणा आनंस्त. आरारा. चंद्रवा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. विक्रच. पोतपोताना, एमना पोताना, पोताना, आपणा

आपापर *अखाका. अखेगी.* पोते अने अन्य आपुण *प्राचीफा.* पोतानी (सं.आत्मन)

आपुत्तं चारफा. नरका. नैमिछं. प्राचीसं. पोतानुं (सं.आत्म परधी)

आपुं *अखाछ.* पोतापणुं; जुओ आपोपुं **आपे** *वीसरा.* आपणे

आपेच्य चंद्रवा. *आप्येथी, [आपे] [प्रासार्थे 'आपे'नुं आपेथ्य]

आपो *अखाका.* अहंभाव; आत्मा; जुओ आप

आपोपुं अखेगी. ऐतिरा. "नरका. पोतापणुं, स्वरूपत्व; अखाका. आत्मतत्त्व; चित्तसं. पोतापणुं, अहंभाव, हुंपणुं; अखाका. "अखेगी. अहंभाव, देहभाव; जुओ आपणपउं, आपुं

आपोपे दशस्कं(२). नरप(द). मदमो. आपे, जाते, पोते; जुओ आपणपइ

आपोह ऋषिरा. विचारणा, [तर्क] (सं.

अपोह)

आपपणा जुओ आपापणा

आप्यायमान कादं(शा). पोषित थतुं, भराव-दार थतुं (सं.)

आप्तवन कादं(शा). कूदवुं ते (सं.)

आफणी, आफणिये, आफणीए अखाका. अखेगी. अंबरा. उषाह. कादं(शा). कामा(त्रि). कामा(शा). चतुचा. चित्तसं. दशस्कं(१). नरका. प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका. सिंहा(म). हरिख्या. हरिवि. पोतानी मेळे, आपमेळे, आपोआप

आफरिउ गुर्जरा. विराप. आफरो चडेलुं, [उन्माद चडेलुं]; प्रद्युचु. आफरो चडेलुं, फूलेलुं (सं.आ+स्फुर्) [सं.आस्फर्]

आफलइ, आफळइ गुर्जरा. चित्तसं. प्रेमाका. *शृंगामं. अथडाय, [भटकाय]

आफाणी जिनरा. पोते, जाते ज आभ दशस्कं(२). आभा

आभ अधारी *प्राचीफा***. कांचळी** माटेनुं एक कीमती काळुं वस्त्र

आभर्ज, आभूर्ज *उक्तिर. नलरा.* वादळुं (सं.अभ्र)

आभडछोत अखाछ. आभडछेट, छूताछूत आभडबुं अखाका. हरिख्या. अडकवुं आभर्ज नलाख्या. आभरण, घरेणुं आभले कादं(शा). आकाशमां (सं.अभ्र परथी)

आमसे चतुचा. वारंवार करे (सं.अभ्यस्) आमा ऋषिरा. वादळ (सं.अभ्र) आमाची जुओ आभीषी आभिडइ *उक्तिर. -*नी तरफ जाय, मळे, भेगुं थाय; *मुर्जरा.* ज**यडाय, स्पर्जे (प्रा.** अब्मिड्)

आभिओविक *षडावा.* देवीनो एक प्रकार (जै.) (सं.आभियोविक)

आभीर *नलरा.* देशविशेष, आभीरोनो – आहीरोनो देश

"आमीषी [**"आमनी**] *"बडाबा.* [कही]

आभुक्षण *मदमो*. आभूषण आभूउं जुओ खामउं

आभूयानुं *अकिर.* प्रस्कृटित वर्तु, खंकुरित थतुं (सं.उद्भिवमानम्)

आभोखइ *आरारा*. सत्कार रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां (सं.जभ्युद्मण); जुजो अभोखउ

आभोखो "जिनरा. ["उपभोग] आभ्यंतर चित्तसं. अम्यंतर, अंदर आभ्र दशस्कं(१). अभ्र, [आकाश्र, वादकं] आभ्रण अखाका. आमरण, श्रणमार आम उषाह. कर्पूमं. अमरा, मारा (सं. अस्मद्, प्रा.अम्हअ); नतरा. अमे; पोताना; मारा

आमखि **विगप्र.* [भक्ष्य] (सं.आभिष) आमण *चतुचा.* गूंशणी ?

आमणदूमणी *आरारा. जिनरा. प्रबुचु.* **निराश, उदास, सर्वित (सं.अमनदुर्गन);** जुओ कमण**दूमण**ख

आमय *अक्षेगी. प्रबोघ.* रो**न** (सं.) आमल्ड, **आमळ्ड** *आरारा. "जिनरा.* **नरका. "प्रबोध. ललिस. वळ: देष.** खार**; रीस;** *विमाग***ः "मूंच, "**मर्म, ["वळ, "वर्तु**काकार** विस्तार]

व्यापतनेतम् अकिरः रसोईगां खटाश माटे वपराता आंबली, कोकम जेवा पदार्थ (सं.जान्तवेतस), ज्यान्तवेत – एक सताफळ [रा.]

व्यापसरावर उकिर. वेरका. आमलक, मंदिरशिखरना कळश नीचेनो भाग

व्यक्तसम्बन्धः "पंचवाः. [आमळा जेवडां, **मोटाँ]**

क्षापतीय *तेरका.* जांबको, एक वनस्पति (सं.^{*}जामक्तिका, जप-आमिलय)

व्यान, व्यापक प्रवृतुः ग्रेमाकाः संध्या विनानुं, कार्चुं अनाज, सीधुं [सं.आमात्र] व्याने अखाकाः आमात्र, पीडाः, रोग

कार्गडर प्राचीसं खंबोडो (सं.आग्रमुकुट) दि.जामोडी

का-अब *ऐतिका***. [शास्त्र]परंपरा,** संप्रदाय [सं.]

आन्यकंत *आनंस्त* [शास्त्र]परंपरानी जामकार

व्यक्तित जुओ ऑबिस

कार कर्मुवा. खाई, मा [सं.*आपिका]

खन *अश्वाका. नेमिछं. *विमप्र.* आयुष्य (सं.कायु)

अवस्थित ग्राचीसं. जाकृर, खेंचेलुं **कावत कार्द(शा).** प**होकुं** (सं.)

बार्सुं जिंकर. ने खधीन [सं.आयत्त]

काक्पर *उपना*. आवक, (पेदाश, लाभ) (सं.) **आयरिय** *ऐतिका.* आचार्य

आयरिस प्राचीफा. आरीसो (सं.आदर्श)

आयस अभिक. उषाह. कर्पूमं. कृष्णवा. गुर्जरा. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि(ब्रा). आदेश. आज्ञा

आयसइ *आरारा. उक्तिर.* आदेश आपे आयास *चतुचा. चित्तसं. कष्ट*, तकलीफ, श्रम

आयासी *प्रेमाका*. कष्ट सहन करनार, [(तपनो) श्रम करनार]

आर नंदब. आहार

आरउ *गुर्जरा*. नियत काळविभाग (सं. आरक); जुओ आरा

आरखे *ऐतिका*. प्रकारे, [समान] [रा.] आरठी *आरारा.* अरीठी, एक वनस्पति (सं.अरिष्ट)

आरडे गुर्जरा. जिनरा. विराप. आक्रंद करे, रडे (सं.आरटित); उपवा. प्रेमाका. बराडा पाडे

*आरणि [आरेणि] *अभिक. [सेनानी प्रथम हरोळ, युद्धनो मोखरो]

आरत, आरति अखेगी. आरारा. उक्तिर. चतुचा. "चारफा. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. हरिख्या. दुःख, पीडा (सं.आति)

आरतवंत **हरिख्या.* [दुःखी]

आरति जुओ आरत

आरित ध्यान आराराः इष्टवियोग वगेरेथी उत्पन्न थती दुःखभरी मनस्थिति [सं. आर्तध्यान]

आरतियां शृंगामं. आतुर, [कामातुर] (सं. आर्त) आरतीक *दशस्कं(२). प्रेमाका.* आरती (सं.आरात्रिक)

आरतीयासह उक्तिर. आरतीनो ओरडो (सं.आरात्रिकावसरः)

आरति तेरका. आरती (सं.आरात्रिक)

आरंभ *उषाह.* [उत्सव], आनंद; *आरारा.* प्रयत्न [सं.]

आरा *ऐतिका. [नियत कालावधि, काळ-विभाग] [जै.]; जुओ आरउ

आराडि *षडाबा.* आक्रंद, चीस, बराडा (सं. आरटते); जुओ आरेणि

आराधण्हार *षष्टिप्र.* आराधना करनार, [सेवनार, श्रद्धापूर्वक करनार]

आराम *अखाका. चतुचा. सुखशांति, प्रसन्नता [फा.]

आराम, आरांम आरास. गुर्जस. तेरका. नलरा. वाग्भवा. विक्रस. बगीचो, उपवन (सं.)

आरामी *उषाहं.* माळी (सं.आराम परथी) आरासणउं *प्राचीसं*. आरासणुं, एक गाम आराहड *आरारा*. आराधे

आराहण ऐतिका. आराधना, [पूजा]

आरांम जुओ आराम

आरिज ऐतिका. आर्य, [महानुभाव]; ऐतिका. गुर्जरा. शीलक. आर्य[देश]

आरिमकारिम *आरारा.* ? [*दानादि अद्भुत कार्यो]

आरीसउ उक्तिर. उपवा. प्रबोप्र. लावल. षडाबा. अरीसो, दर्पण (सं.आदर्श) आहत शृंगामं. अवाज खास करीने पंखी- ओनो] (सं.)

आरुहड् उक्तिर. ऐतिका. प्रद्युचु. आरोहे, चडे

*आरेणि [*आराडि] अभिक. त्राड [चित्कार, नाद] [दे.आराडी]

आरेणि, आरेणी *अभिक. *प्रबोप्र. [सेना-नी प्रथम हरोळ, युद्धनो मोखरो]; जुओ आरणि

आरोग *आरारा*. आरोग्य

आरोग्य *प्रेमाका*. तंदुरस्ती, सलामती, [क्षेमकुशळता]

आरोट *विमप्र. [पराक्रमी] [रा.आरोड] आरोडइं गुर्जरा. *अवरोधे (*सं.आरुणद्धि) [आक्रमण करे, आक्रमक शब्दो बोले] [दे.]

आरोपीनइं *आनंस्त*. आरोपीने, [रोपीने, सर्जीने, ऊभी करीने], चित्तसं. रूपक वगेरेमां थती आरोपणनी क्रिया करीने आरोविय तेरका. मूक्युं (सं.आरोपित)

आल, आळ चतुचा. नरका. अटकचाळुं, अडपलुं, अभिऊ. *उपबा. तेरका. प्राचीसं. *वीसरा. वेताप. हरिख्या. असत्य, मिथ्यावचन, नकामुं वेण (दे.); ०जिनरा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. विमप्र. आळ, मिथ्यारोप, आक्षेप [दे.]; *गुर्जरा. देवरा. एळे, [व्यर्थ, नकामुं]; जुओ आलि

आल (घडीआल) *कामा(त्रि). [समय * दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर] आलइ शृंगामं. निष्फळ, [एळे] आलउ षडावा. धर (सं.आलय) **आलउनीलउ** *आरारा.* लीलुंछम (सं. आर्द्रनील)

आलउं, आलूं *उक्तिर. प्रधुचु.* आर्द्र, लीलुं, भीनुं

आतजात, आळजाळ उक्तिर. असंगत, अर्थहीन; अखाका. उपाधि, खोटी जंजाळ [दे.]

आतत्व प्राचीफा. अळतो (सं.अलक्तकः) आतति, आतती लावल. हरिख्या. आलाप सि.आलप्ति

आळपंपाळ अखाका. मिथ्या वस्तुओ; प्रेमाका. आडुंअवळुं, [कालुंघेलुं, पटामणुं, खुशामतभरेलुं]

आलरां सिंहा(शा). ?

आलवड कृष्णवा. गुर्जरा. नलरा. प्रद्युचु. वसंफा. वसंवि. सिंहा(शा). *स्थूफा. हरिख्या. आलाप करे, गाय, वगाडे (सं.आलपित)

आलवणी प्रयुचुः वीणा (सं.आलापिनी) आलवाल कादं(शा). क्यारो (सं.)

आलस आरारा. आळसु (सं.); वसंवि(ब्रा). आळसभर्युं, सुस्त (सं.)

आलिसयां वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). अलस बन्यां, [सुस्त बन्यां] (सं.आलिसत)

आलंगन कामा(शा). आलिंगन आलंगिन ऐतिका. आलिंगन आप्युं, [भेट्यो] आलंघन *कादं(ध्रु). [आलिंगन]; जुओ आल्यघंन

आलंबडु शृंगामं. आलंबन, आधार **आलाणयंभ** उक्तिर. हाथीने बांधवानो स्तंभ (सं.आलानस्तंभः)

आलालुंबु *चित्तसं. शृंगामं.* तृष्णा, लालसा, [लालच]

आलातुंबे लाय *अखाका. [तृष्णाने वळगे] आलावउ जित्तर. षडाबा. पाठ, परिच्छेद, ग्रंथांश (सं.आलापकः)

जालि *विमप्र. हरिवि.* आप, दे, लगाड [सं.आ+ली-]

आति, आळि *चारफा. *नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वीसरा. तोफान, मजाक, मस्ती, आळवीतराई, [अटकचाळो]; उषाह. झघडो, [लडाई]; *प्रबोप्र. [मिथ्या, खोटुं]; ऐतिका. *नलरा. लावल. विराप. प्राचीसं. एळे, व्यर्थ, नकामुं; जुओ आल आति, आती कादं(शा). प्राचीसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(खा). हरिवि.

नाल, जाला *फाद (सा). प्राचास. वसफा.* वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(**ब्रा**). हरिवि. सखी, सहियर (सं.)

आतिजा जुओ आलीजा, जातिजा

अतिंघन, आतीघन, आतींघन चतुचा. दशस्कं(२). नलाख्या. नंदब. सिंहा(शा). आलिंगन

आली जुओ आलि

आलीगारज उक्तिर. "चतुचा. नरका. प्रद्युचु. अटकचाळो, तोफानी, मस्तीखोर

आलीयन जुओ आलिंघन

आलीजा *ऐतिका. [उत्कंठा]; जुओ आलिजा

आलीमाली प्रद्युचु. आलीलीली, लीलीछम आलींघन जुओ आलिंघन आलुं *नरप(द). [अटकचाळा] (ब.व.) आलुजइ उक्तिर. मूंझाय [रा.] **आतूं** जुओ आलउं **आले. आळे** *अखाका. दशस्कं(९).*

दशस्कं(२). प्रेमाका. एळे, फोगट, निरर्थक: *चित्तसं*. तोफाने

निरर्थक; *चित्तस*. तीफान

आले *अखाका.* आलय, रहेठाण

आळे चडवुं दशस्कं(१). तोफाने चडवुं

आलोअण, आलोयण आरारा. ऐतिका. स्यूलिफा. गुरु पासे पोताना दोषो बतावी प्रायश्चित लेवुं ते (सं.आलोचना)

आलोइ *आरारा. प्राचीसं. षष्टिप्र. षडाबा.* आलोचे. प्रायश्चित्त करे

आलोच स्यूलिफा. मनन, चिंतन [सं.]

आलोचइ आरारा. उक्तिर. "यडाबा. विचारे

आलोडइ *कादं(ध्रु). कादं(शा)*. हलावे, डखोळी नाखे (सं.आलोडयति)

आलोयण जुओ आलोअण

आलोवुं जिनरा. आलोचना करुं, [प्रायश्चित्त करुं]

आल्य, आळ्य नरप(द). आळ, [आक्षेप]; जुओ आल

आल्यधंन, आल्यंघन कादं(शा). मदमो. आलिंगन; जुओ आलंघन

आवइ कादं(ध्रु). गुर्जरा. पंडाबा. आवडे, जाणे (*सं.आवर्तते) [सं.आपयति]

आबटे "अखाछ. कामा(शा). "दशस्कं(१). "दशस्कं(२). नलरा. "प्रबोप्र. प्रेमाका. शृंगामं. मूंझाय, दुःखी थाय; अंगवि. "ऊकळे, ऊष्ठळे [सं.आवर्तयति]; जुओ अवटाय

आवटे (जई आवटे) **अखाछ.* [जई पहोंचे]

आवटे (वढी आवटे) *अखाछ. [वढी पडे, वढी मरे]

आवट्टिय * *प्राचीसं.* [आथडी रहेला, खदबदी रहेला]

आवडली * नेमिछं. [आवडीक]

आवण *आरारा*. आववुं ते

आवणहार *उक्तिर. षडाबा.* आवनार

आवतिया *ऐतिरा.* **आवे छे**

आवरजइ, आवर्जइ *विक्ररा.* प्रसन्न करे. (सं.आवर्जयित)

आवरत ऐतिरा. लहेर, तरंग [सं.आवर्त्त]

आवरिया, आवरीआ वसंफा. वसंफा (ल). वसंवि. वसंवि (ब्रा). आवर्या, ढांक्या, गोपन कर्युं (सं.आवृत)

आवरो *नरका*. आवक लखवानो हिसाबनो चोपडो

आवर्जइ जुओ आवरजई

आवर्जन विक्ररा. प्रसन्न करवुं ते

आवर्छितु *पडाबा.* प्रसन्न, राजी (सं. आवर्जित)

आवर्जिया उपबा. प्रसन्न (सं.आवर्जित)

आवर्त "ऐतिका. [वंदन करतां पूर्वे जोडेला हाथने गोळाकारे फेरववा ते, एक प्रकारनी उत्कृष्ट वंदनक्रिया] [जै.]

आवला चतुचा. *विमप्र. उतावळा (सं. आकुल)

आवती यडावा. जैन परंपरा मुजबनुं एक सूक्ष्म कालपरिमाण (सं.आविलिका)

आवस ऋषिरा. घर, [आवास] [सं. आवसथ] आवसत, आवसव कस्तुवा. प्रेमाका. अग्निशाळा, वेदी, घरमां अखंड प्रज्वलित राखवामां आवतो अग्नि, पांच अग्निप्रकारोमांनो एक (सं.आवसथ्य)

आवसही जिनरा. निवृत्तिमांथी आवश्यक प्रवृत्तिमां जवुं (धर्मस्थानमांथी नीकळती वखते बोलातो शब्द) [जै.]

आवागमण, आवागमन अखाका. नरका. प्रेमाका. प्राचीसं. आववुं अने जवुं, जन्म अने मरणना फेरा

आवाठउं *गुर्जरा*. उपस्थित थयुं, आवी पहोंच्युं (सं.उपस्थितकम्)

आ बारकी *दशस्कं(9)*. आ वारे, आ वखते

***आवारी [अवारी] *** प्रेमाका. [अवारित, अटक्या विना]; जुओ अवारी

आवीतर्ज *उक्तिर*. अवातुं [*सं.आ+या परथी]

आवीस चंद्रवा. मदमो. आयुष्य

आव्रण अखाका. आवरण

आशरो "प्रेमाका. [गज़ें]

आशवासना, आसवासना कामा(शा). दशस्कं(१). प्रेमाका. वेताप. आश्वासना, आसनावासना

आशंक *उक्तिर. प्रेमाका.* आशंका, [अंदेशो, *खटको, *संकोच]

आशंशा *पंडाबा.* इच्छा, अभिलाष (सं. आशंसा)

आशिका विमग्र. आशीर्वाद आशिका प्रबोप्र. आशीर्वाद (सं.आशिष्) आशी नरका. प्रबोप्र. मोसाच. आशीर्वाद (सं.आशिष्)

आशी अखाका. *आशयवाळा, [आशा – झंखनावाळा)

आशे *अखाका. अखाछ. अखेगी.* आशय **आश्या** *कादं(शा).* आशा

आश्रद्ध *उक्तिर. उपचा.* आश्रय ले (सं. आश्रयति)

आश्रज कामा(त्रि). कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका. आश्चर्य

आश्रयंड *उक्तिर*. आश्रयं करनार, आश्रयं रहेनार

आश्रयी *षडावा. [-ने आश्रय करीने, अनुतक्षींने]

आश्रव प्राचीका. कर्मीनुं प्रवेशद्वार, [कर्म-वंधनुं कारण] [जै.]

आश्री *आनंसा.* आश्रयी [-ने आश्रये रहेनार]

आश्रीनइ आनंस्त. आश्रय करीने

आश्वास *प्रेमाका.* आश्वासन, [आसना-वासना]

आश्लेषिउ उक्तिर, भेट्यो

आध्या नलरा. आशा, इच्छा

आस *अभिकः. उपबाः. गुर्जराः. देवराः. विकराः. वीसराः आशा

आस *प्राचीसं*. अश्व

आस *आरारा*. मुख, धार, छेडो (सं.आस्य)

आस नलाख्या. आनुं, [एने] (सं.अस्य)

आसउज *प्राचीसं. षडाबा.* आसो मास (सं. आश्वयुज)

आसदु आरारा(व). आसद, अश्वत्य,

पींपळो ? आसोंद, अश्वगंधा ? **आसडी** ऋषिरा. आशा **आसण** *उपबा*. आसनः, गुर्जरा. योगासन आसन आरारा. पासेनी (सं.आसन्न) **आसन्छं** *विमप्र.* अजाणतां, [अज्ञानपूर्वक] (सं.असंज्ञक); जुओ असन **आसनउं, आसंबं** *गूर्जरा.* पूर्ण, [समाप्त, नष्ट] (सं.आसत्र); आरारा. ऐतिरा. कृष्णच. लावल. पासे, पासेनुं (सं.आसन्न); आरारा. *विमप्र. रहेलुं (सं.आसन्न) **आसन्नसिद्धि** *ऐतिका*. नजीकना समयमां मुक्ति पामी शके एवा **आसमुद्द** *गुर्जरा*. समुद्र सुधी (सं.आसमुद्र) आसरज, आम्रज कामा(शा). आश्चर्य **आसर्यु** *आरारा*. सामे थयो (दे.आसरिअ) **आसवामता** *गुर्जरा.* **अ**श्वत्थामा आसवासना जुओ आशवासना **आसं** *आरारा*. आशा **आसंकी ***नरका. सिभावना – कल्पना करी] [सं.आशंक्] **आसंसु** कादं(शा). विश्वास, भरोसो (दे. आसंघ) **आसंग, आसंगा ***जिनरा. आसिक्ते, अनुराग, "भरोसो] [रा.] **आसंगायत** *ऐतिका. जिनरा.* *आश्रित, *आधीन, [अनुरागवश, आसक्त] **आसंगो** *नरका*. आसक्ति **आसंजिका** कादं(शा). नानी बेठकवाळी पाटली (सं.आसंदिका) **आसंघि** *आरारा(व).* आसोंद, एक वनस्पति

(सं.अश्वगंधा) आसंत्रं जुओ आसनउं आसंस देवरा. इच्छावाळो, आसक्त [सं. आशंस्] आसंसादि आनंस्त. कामना वगेरे सिं. आशंसादि **आसा** *प्राचीफा*. दिशा (सं.आशा) **आसात** *प्रेमाका*. आशातना, पीडा, व्यथा **आसातन** *गूर्जरा.* दिःख लगाडवं ते], आशातना, अविवेक, अनादर जिै.] **आसासिउ** *गुर्जरा. तेरका.* आश्वासन आप्युं (सं.आश्वासित) आसांचरीजि गुर्जरा. संचर्या, गया आसि आरारा. छे (सं.अस्ति) **आसि** देवरा, आवशे **आसि** *तेरका*. हतुं (सं.आसीत्) **आसि** *गुर्जरा*. आशा **आसी** *आनंस्त*. आशाभरेली, आशायुक्त **आसू** *उक्तिर*. आसो मास (सं.आश्विन) **आसेविवड** *षडाबा*. आचरवूं, करवूं **आसोज** *वीसरा.* आसो मास (सं.अश्वयूज) **आसोजी** *षष्टिप्र.* आसो मासनी (सं. आश्वयूज) आसोय प्राचीसं. आसो मास (सं.आश्वयूज) **आस्ता** शीलक. षष्टिप्र. आस्था, श्रद्धा **आस्त्य** अखाछ. अखेगी. अस्ति (छे) एवी भाव, अस्तित्व, होवुं ते आस्त्य-नास्त्य अखाका. अस्तित्व अने तेनो अभाव

आस्फोटन "प्रेमाका. [ठोक लगाववी ते]

[सं.]

प्रदेशना

आस्वागत नंदब. स्वागत **आस्या** *आरारा*. आशा **आसन** जुओ आसरज आस्वासइ उक्तिर. आश्वासन आपे **आह** *गुर्जरा.* हवे **आह, आहि** *आरारा.* आ आह, आहि, आहा अंबरा. कर्पूमं. नलरा. प्रद्युच्, प्रेमाकाः लावलः हरिविः शक्तिः, हिंमत (सं.आय) आहण *प्राचीफा*. प्रहार (सं.आ+हन्) आहणइ उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. षष्टिप्र. षडाबा. प्रहार करे, मारे, कुटे. फटकारे, ठपकारे (सं.आ+हन्) **आहरइ** उपवा. षडाबा. खाय (सं.आहरति) आहर-जाहर, आहार-जउहार आरारा. *उक्तिर. शृंगामं.* आवजा, आवरोजावरो आहव गुर्जरा. विराप. युद्ध (सं.) **आह्यू नलरा.** आवो, आ प्रकारनो आहारम जिनराः आहारक शरीर, योगबळे प्राप्त सूक्ष्म शरीर]; जुओ अहारग आहारजडहार जुओ आहर-जाहर आहि जुओ आह आहिडी, आहेडी अंबरा. उक्तिर. गुर्जरा. दशस्कं(र). नरका. नलाख्या. प्रेमाका. विमप्र. रुखस. वाग्भवाः षडांबा.

सम्यचां. शिकारी, पारधी (सं. आखेटकः) आहीटाण जिनरा. अधिस्थान, [ठेकाणुं] आहीरिंड अभिक. आहीरोना, [आभीर

आहुकार कस्तुवा. आवकार **अहुलां** अखाका. आवलां, फांफां, मिथ्या **आहेडइ** *गुर्जरा*. शिकारे (सं.आखेटक) आहेडउ उक्तिर. नलरा. विमप्र. षडावा. शिकार, मृगया (सं.आखेटकः) आहेडी जुओ आहिडी, आहेरडी आहेरडी. आहेडी चंद्रवा. शिकारी, पारधी **आह्य** जुओ आह **आं** कर्पूमं. आंय, अहीं **आंकडीआ** विमप्र. एक प्रकारनुं घरेणुं **आंकडो ***आनंस्त. [अंदाज, निश्चय] **आंकणी** गुर्जरा. प्राचीफा. ध्रवपंक्ति, टेकनी पंक्ति (सं.अंकनिका) **आंकिलु** *गुर्जरा*. अंकित, निश्चित (सं.अंक परथी) आंक्रुडी वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). आंकडी, छेडेथी वांक् वाळेलुं शस्त्र (सं.अंकुट) **आंकुरीइं** विरापः अंकुरित थाय, जिभा थायो **आंकुस** *उक्तिर.* अंकुश **आंखउडली** जुओ आखउंडली *आंख-गांखनो [आखपाखनो] **नरका.* आसपास – पासेपासे होवानो -- निकटतानो स्नेह]; जुओ आख्यपाख्य आंखि उक्तिर, उपबा, वीसरा, विराप, आंख (सं.अक्षि)

"आंखुडी ["आंटडी] "गुर्जरा.

मुश्केली] **आंखुलडी** विराप. आंख **आंग** *षडाबा. षडाबा*. शरीरनो अवयव (सं.अंग): *षष्टिप्र. षडाबा.* अंग, जैन आगमसाहित्यनो एक विभाग; *षष्टिप्र.* अंग, [भाग] **आंगडणु** उक्तिर. अंगमंडन आंगमइ षष्ट्रिय. स्वीकारे, [पामे] (सं.अंग+ **आंगलु** *प्राचीका. प्रेमप. प्रेमाका.* झमलुं, अंगरखुं (सं.अंग उपरथी) आंगा विक्ररा. हम्मीप्र. एक प्रकारनां बख्तर **आंगी** *प्राचीफा*. जैन मूर्तिनो शणगार **आंगीगमइ** *आरारा. षष्टिप्र. स्*वीकारे, ले, [पामे] (सं.अंग+गम्) आंगुं जुओ आग् **आंगुलि** *षडाबा*. आंगळी (सं.अंगुलि) **आंगळियउ** वीसरा. आंगळी (सं.अंगुलि) आंगुली, आंगुळी, आंगुळी उक्तिर. उपवा. नलरा. वीसरा. आंगळी (सं.अंगुलि); **वीसरा.* [*वींटी] [सं.अंगुलीयक] **आंच (आंच दीधी)** मदमो. धमकी [दीधी] आंचलि, आंचली प्राचीफा, लावल, टेकनी पंक्ति, ध्रुवपद (सं.अंचल परथी) **आंचो** **प्रेमाका.* [हरकत, आफत] [सं. अर्चि: ो **अंजणी** वीसरा. *स्त्री **आंटडी** जुओ आंखुडी . **आंटलीए वले** चतुचा. आडा फरे आंटि (आंटि देतां) *कादं(ध्रु). [पग भरावताः, पग लगाडतां

आंटीयो *चंद्रवाः [आंटी, कोयडो] **आंटे ***नरका. [आंट - हठ के टेकथी] **आंटो** अखाका. गूंच, मुश्केली आंड उक्तिर. ईंड्रं (सं.अण्डम्) आंण जुओ आण **आंतरइ** *आरारा*. वच्चे, -मां, आश्रये; आंतरे, पछी **आंतरणी ****षडाबा***. [**तूटकपणुं, खंडितपणुं] आंतर्ह **ऋषिरा.* विहेरो. भेदभावी: *आनंस्त.* अंतर, छेटापणुं, [जुदाई] आंतरो अखाका. भेद, जुदाई, अंतर; *प्रेमाका.* अंतर. समयगाळो **आंतलुहण, आंत्रलुहण** जिनरा. आत्मज, [संतान] **आंत्र** *उक्तिर. षडाबा.* आंतरडां (सं.अन्त्र) **आंत्रलूहण** जुओ आंतलूहण **आंदोल थया** *प्रेमाका*. हली ऊठ्या **आंधर, आंधो** *आनंस्त. गुर्जरा.* आंधळो (सं.अंध) **आंब** अभिऊ. नलरा. आंबानुं झाड (सं.आम्र) **आंबडरा** *उक्तिर*. आंबाना **आंबर** प्राचीफा. कीमती वस्त्र, (सं.अंबर) **आंबळी** प्रेमाका. मरडी आंबुलु वसंफा-श्रु. वसवि. वसंवि(ब्रा). पति. प्रियतम आंबल, आंबल प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). आंबलो, आंबो (सं.आम्र) **आंबलो, आंबळो** *नरका. वेताप*. आमळो, अमळाट, खार, [रीस]

आंबिल, आम्बिल उक्तिर. ऐतिका. षडाबा. आयंबिल, आंबेल, जैन तपप्रकार [जेमां विकृतजनक आहारनो त्याग होय छे] (सं.आचाम्ल)

अंबिलवर्धमानु गुर्जरा. एक प्रकारनुं तप, एक आंबेलनी साथे वधता जता उपवासना दिवसो [के एक उपवासनी साथे वधता जता आंबेलना दिवसो] (सं.आचाम्लवर्धमान)

आंबिती उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. वसंफा. वसंवि. विराप. आमलीनुं झाड (सं. अम्लिका)

आंबुलउ *वसंवि(ब्रा)*. आंबानुं **आंबुलु** जुओ आंबलु

आंम तात कृष्णच. आदरणीय वडील, [आप वडील]

आंगला गुर्जरा. विनाशक (सं.आ+मृद्) आंहां प्रेमाका. अहीं, अहींयां

इ, इं, ई **षष्टिप्र*. [५ण, छतां] [सं.अपि]; *उपबा. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा. *पष्टिप्र*. [अंतर्भावात्मक] पण, य (सं.अपि)

इ, इं, ई *उपबा. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा. षष्टिप्र. निश्चयार्थ अव्यय, ज (सं.च)

इ, इं, ई, ईं अभिऊ. उक्तिर. नरप(द). नलरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). आ, ए (सं.इदम्, एतत्)

इउ थडाबा. अहीं, आ तरफ (सं.इतः)

इड, यड *तेरका. षडाबा.* आ, आम (सं. इदम्)

इक ऐतिसः गुर्जसः नेमिछं. लावलः

वसंफा(त). वसंवि. एक; गुर्जरा. कोई-एक, केटलाक; *विराप. [केटलाक]

इक आछण (इक आछण पाणी छांडती) *विमग्र. [एक नित्तरामणनो पण त्याग करती]

इकलास जिनरा. प्रीति [फा.इखलास] इकवीस उक्तिर. एकवीस (सं.एकविंशत्) इक-संथ प्राचीसं. एक वखत सांभळवाथी जेने बराबर याद रही जाय ते (सं. एकसंस्थ)

इकावन उक्तिर. एकावन (सं.एकपंचाशत्) इकि षष्टिप्र. एक ज इक गुर्जरा. तेरका. षष्टिप्र. एक इक्काह ऐतिका. एकेक, [दरेक] [सं.एकैक] इकारस तेरका. अगियार (सं.एकादश) इकिकाई गुर्जरा. एकएक वडे [सं.एकैकेन] इक्षरस लावल. इक्षुरस, शेरडीनो रस इक्षक प्रेमाका. शेलडी इक्ष्वाकुळ दशस्कं(२). इक्ष्वाकु कुळ इखू शंगामं. शेरडी (सं.इक्षु)

इष् शुगाम. शरडा (स.इसु) इग, इर् उक्तिर. नेमिछ. प्राचीफा. एक इगतालीस उक्तिर. एकतालीस (सं. एकचत्वारिंशत्)

इयसिं *उक्तिर. प्राचीसं*. एकसठ (सं. एकषष्टि)

इगसय जिनरा. एक सो [सं.एकशत] इगहत्तरि जिक्तर. एकोतेर (सं.एकसप्ततिः) इगार थडावा. अगियार (सं.एकादश) इगारमज थडावा. अगियारमो इगु जुओ इग **इगुणचालीस** *उक्तिर*. ओगणचालीस (सं. एकोनचत्वारिंशत्)

इगुणतीस, इगुणत्रीस उक्तिर. रूपच. षडाबा. ओगणत्रीस (सं.एकोनत्रिंशत्)

इगुणनवइ थडाबा. नेट्यासी (सं.एकोन-नवतिः)

इगुणपचास, इगुणपंचास अक्तिर. षडाबा. ओगणपचास (सं.एकोनपंचाशत्)

इगुणवीस उक्तिर. षडावा. ओगणीस (सं. एकोनविंशतिः)

इगुणसिं उक्तिर. ओगणसाठ (सं.एकोन-षष्टिः)

इगुणहत्तरि *उक्तिरः गुर्जराः* औगणोसित्तेर (सं.एकोनसप्ततिः)

इगुणीसमड उक्तिर. ओगणीसमो (सं.एकोन-विंशतितमः)

इगुण्यासी *उक्तिर*. ओगणाएंसी (सं.एकोना-शीतिः)

इग्यार उपबा. गुर्जरा. अगियार (सं.एकादश) इग्यारमड आनंस्त. उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. अगियारमुं (सं.एकादशम)

*इच्छे-वेय [इत्थिवेय] जिनरा. स्त्रीवेद, [स्त्रीने पुरुष साथे कामभोगनी इच्छा थाय ते] [प्रा.] [जै.]

इजि *उपवा*. केवळ, मात्र, [ज] **इटाल, इंटाल** ऐतिका. लावल. ईंट, ईंटाळा, [पथ्थरना रोडा] [सं.इष्टा]

इठ शृंगामं. इष्ट

इंडिया लावल. एंठा [सं.*आचष्ट]

इण, ईण आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. तेरका.

देवरा. नेमिछं. प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. ए, आ (सं.एतेन) इण ताल आरारा. अत्यारे

इण ताल *आरारा.* अत्यारे इण परि, इणि परि, ईण परि उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. आ प्रकारे, आ रीते इणि, ईणि आनंस्त. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. विराप. षडाबा. आ (-ए, -थी, -ने, -मां), ए (-ए, -थी, -ने, -मां) (सं.एनेन)

इणि उपाइ *आरारा.* एने लीघे इणि परि जुओ इण परि इतउ *पडाबा.* -थी, वडे, पूर्वक

इतराइ कृष्णच. *आरुकलापणुं, [गर्वनो देखाडो, फुलाञ्च, बडाञ्च] [हिं.ईतराना]

इतस्तत *अखाका.* आमतेम इति *अंबरा.* अति

इत्तलज प्राचीसं. एटलुं [सं.इयत्+तुल्य] इत्थिवेय जुओ इच्छेवेय

इथी *उषाह*. स्त्री [प्रा.इत्यि]

इधाण कार्द(शा). नलाख्या. एंधाण, निशान, चिह्न (सं.अभिज्ञान)

इधूणि *प्राचीका.* एंघाणी (सं.अभिज्ञान) इभ्य *आरारा. ऋषिरा.* धनवान, धनाढ्य शेठ (सं.)

इम, इंम, ईम अभिउ. उक्तिर. उपना. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या. नेभिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. षद्मना. आम, आ प्रमाणे, एम (सं.एवम्)

इमइ, इमे, ईमइंड तेरका. एम ने एम

(सं.एवम्+अपि); उक्तिर. आम ज, एम ज **इमेबइ नेमिछं. जा ज रीते (**सं.एवमेव) इमै जुओ इमइ इव तेरका. आटलुं, आलुं, आम (सं.इति) **इब. इबर्ड** *चारफा. बडाबा.* आ, आर्वु (सं.इयम्) **इरियायडी** *षडावा.* हलनचलन वगेरे शारीरिक चेष्टा(वी नीपजतां कर्म) (सं.ईर्यापथिकी) जि.] इसि ऐतिका. पृथ्वी पर [सं.इला] **इत्स्कि, इसी** *आनंस्त*. इयक [सं.] **इच्छै** *जिनरा*. खावा. आवडा इसी, इसी आराराः कादं(शा)ः तेरकाः आवी, एवी (सं.ईद्रशिका) **इस** *लावल.* ईश्र. ईश्वर **इस** *गुर्जरा.* आवुं (सं.ईद्रश्ल) इसर्ड उक्तिर. गूर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. *वीसरा. षडाबा.* आ, आवूं, आ प्रकारनुं, आम (सं.ईद्रश) **इसडे** *ऐतिका.* एवा (हिं.ऐसा) **इसर, ईसर गुर्जरा. विमप्र. शंगामं.** महादेव, शिव (सं.ईश्वर) **इसाऽरति** *शंगामं***. ईर्षा अने अर**ति – अरुचि **इक्ति** उपवा. नेमिछं. तावल. आवुं, एवुं (सं.ईद्रशम्) इसी जुओ इशी इसी षडावा. एंशी (सं.अशीतिः)

आ प्रकारनो, आवो, एवो, (सं.ईदृश) इह, इहु, ईह, ईह, ईहं आरारा. गुर्जरा. *तेरका. षडावा.* ए, आ (सं.एषः) इड आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा. अहीं (सं.); तेरका. आ, अहींनूं (सं.) इहकार प्रबोप. अहंकार (पात्रनुं नाम) **इहरति** *प्राचीसं*. आ लोकमां सिं.इहत्र, प्रा. "इहरत्ती इहां, ईहां, ईहां आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. नरका. पंचवा. विराप. षडाबा. अहीं, अहींयां इहां किणड आरारा. अहींयां **इहि, ईही** प्रबोप्र. षडाबा. अहीं, आ लोकमां] (सं.इह) **इंडिनाणि** *आरारा.* एंघाण, निशानी (सं. अभिज्ञान) **इहिनिश** *प्रबोप्र*. अहर्निश, दिनरात इहिवातन कृष्णवा. हेवातन, [सौभाग्य-वतीपणुं] [सं.अविधवात्वन] इहिविसूहिवि जुओ विस् इ**हीणइ** ० उपवा. एणे इह जुओ इह इहे आनंस्त. आवा, [आ] इंजओ इ इंगिट *लावल. तिबलाना तालसुचक ध्वनि-शब्दी इंटाल जुओ इटाल **इंद** *नरका. नलाख्या.* इन्द्र, चंद्र इंब, इंबा ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. इन्द्र

इस्बन उक्तिर, उषाह. लावल. वसंफा. षष्टिप्र.

इस्त्री *प्राचीका*. स्त्री

इंदियाल *प्राचीसं*. इन्द्रजाल, [जादु] **इंदिरा** ऋषिरा. लक्ष्मी (सं.) **इंदु** *गुर्जरा*. इन्द्र **हुंद्र निदान** *प्रेमाका*. नक्की चंद्र **इंद्रजाल, इंद्रजाळ** *अखेगी. प्रेमाका.* जादु [सं.] **इंडजिमलवेला** *आरारा*. इन्द्रयमलवेला, [कोई ज्योतिषयोग] **इंद्रवारणो** *प्रेमाका*. कडवा पण सोनेरी रंगना [इंद्रवारुणीना] फळ जेवो, सोनेरी इंद्रवारुणी प्रेमाका. देखावे सुंदर पण झेरी फळवाळो एक छोड सिं.] इंब्राइसि गुर्जरा. इंद्रना आदेशथी **इंद्रिलोक** *गूर्जरा*. इंद्रलोक **इंद्री** *नलाख्या.* इन्द्रियो इंग जुओ इम **इंहिक्** *पडाबा*. आ लोकनुं, ऐहिक

ई जुओ इ

ईष्ठाइ कादं(ध्रु). यथेच्छ

ईष्ठाचारी आनंस्त. स्वेच्छाचारी, [स्वेच्छाथी

वर्तनार]

ईट जिक्तर. ईट (सं.इष्टिका)

ईव नलरा. ईडुं (सं.अंड)

ईण जुओ इण

ईणइ उपवा. वसंफा. वसंवि(ब्रा). एणे

(सं.एतेन)

ईण परि जुओ इण परि

ईण *षष्टिप्र. [एनाथी] (सं.एतेन)

ईणं लाजीड *उक्तिर*. आनाथी शरमाय

इंणि जुओ इणि **ईतर-स्यूं** *लावल.* बंनेथी, बंने वडे ऐतिका. धान्यादिकने हानि पहोंचाडनार उंदर वगेरे प्राणी [सं.] **ईघण** उक्तिर: ईंघण (सं.इन्धनम्) ईम मदमो. हायी (सं.इम) ईम जुओ इम ईमहड् जुओ इमइ **ईयाह्य** अखाछ. पोतानी इच्छायी बळी जनारुं अने स्वाति नक्षत्रमां वर्षाबिंदुथी फरी सजीवन थतुं (काल्पनिक) पंखी ईरजा-सुमति, ईर्या-सुमति ऐतिका. देवरा. चालवामां संयम्. विवेक (सं.ईर्या-समिति) [जै.] **ईरजादी** *देवरा.* चालवामां जीवादि प्रत्ये संयम वगेरे (सं.ईयांदि) [जै.] ईर्या-सुमति जुओ ईरजा-सुमति **ईश** ऋषिरा. महादेव, शंकर ईष जुओ हलरी ईष **ईस** उक्तिर, धरी, धूंसरी (सं.ईषा) **ईसउ** जिंतर. आवो (सं.ईदृशः) ईसर जुओ इसर ईंड ज़ुओ इह **ईहड** *प्राचीसं***. षष्टिप्र. इ**च्छे (सं.ईह) **ईहणां** *जिनरा.* इच्छुक, [याचक] [सं.ईह परथी] [रा.] ईंडां जुओ इहां **ईही** जुओ इहि ई जुओ ई **द्धं चड्युं** *प्रेमाका*. शिखर चड्युं, विजय थयो, नामना यई

ईंडुं राख्युं *नरका.* श्रेष्ठता सिद्ध करी **ईंह, ईंहं** जुओ इह **ईंहां** जुओ इहां

उ आरारा. ए; कृष्णवा. हरिवि. ओ उअचट प्राचीफा. अभिमान [सं.उचटा]; जुओ अचट उअर, उयर ऐतिका. नैमिछं. उदर उअहाणउ गुर्जरा. उखाणुं, कहेवत (सं. उपाख्यान)

उआरणां अभिक्र. ओवारणां [सं. अपवारण]

उइलढु *ऐतिका*. उपेक्षा करो **उइलउ** उक्तिर. ओलुं, पेलुं [सं.अवर+प्रा. इल्लो

उइसइ *उक्तिर.* बेसे (सं.उपविशति)

उकडच्छी *गुर्जरा. [उभडक आसन करी] [सं.उत्कटुक+आसनिक]; जुओ उत्कडु

उकसइ, फकसइ जिनरा. उन्नत बने, ऊंचुं थाय (सं.उत्कर्ष्)

उकांटउ, ऊकांटउ *ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). *चतुचा. *नलाख्या. षष्टिप्र. रोमांच, कंप, ध्रुजारी; रोमांचित, कंपाय-मान (सं.उत्कंटक)

उक्तंदिज *ऐतिका.* उत्कंदित थयो

उक्ता नलाख्या. बळद (सं.)

उ**खध, उखधी, ऊखध** कस्तुवा. वीसरा. शीलक. औषघ, औषघि

उद्याण**उ, ऊखाणउ** अंबरा. जिनरा. षष्टिप्र. कहेवत (सं.उपाख्यानकम्) **उखांगे** *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* आरडे **उखुडइ** *उक्तिर.* ऊखडे, तूटे [प्रा.; सं. उत्स्कृत]

उखेलड, ऊखेलड उक्तिर. षष्टिप्र. उखाडे, उखेडे (सं.उत्कीलयति) [दे.उक्खिल]; आरारा. खोले (रा.)

उखेवे, ऊखेबे ऐतिका. कादं(शा). प्रेमाका. छांटे, ऊंचे उडाडे, धूप करे (सं.उत्क्षेप्); जुओ अगरु उखेव-, उवेखे

उगउ *षडाबा. [मूगो]; जुओ अउगी

उगउमुगउ, उगमुगउ उक्तिर. मूगो; जुओ अउंगउ-मुगउ

उगट, उगटण, उगटी, ऊगट, ऊगिट अभिऊ. आरारा. तेरका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नेमिछं. प्राचीका. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. स्थूलिफा. हरिवि. सुगंधी पदार्थोनो लेप, अंगराग (सं.उद्वर्तन)

उगणत्रीस *उपबा.* ओगणत्रीस (सं.एकोन-त्रिंशत्)

उगणीस *उक्तिर*. ओगणीस (सं.एकोन-विंशति)

उगणीसमा आनंस्त. ओगणीसमा

उगत आरारा. उक्त, कह्युं

उगनिउं *अभिउ. नरका. नलरा. स्त्रीनुं काने पहेरवानुं एक घरेणुं; जुओ अउगनिया

उगमइ विक्ररा. ऊगे [सं.उद्+गम्) **उगमुगउ** जुओ उगउमुगउ

उगरतउ उपवा. नरका. षडाबा. बचेलो,

बाकी रहेतो, वधेलो [*सं.उद्+वृ]
उगाल प्रद्युचुः पाननो चावेलो कूचो [देः उग्गाल]
उगाह पंचवाः साक्षी [*फा.गवाह]
उगा- तेरकाः ऊगवुं (सं.उद्+गा)
उग्गमणे ऐतिकाः उदित थतां, ऊगतां [सं. उद्गमने]

उग्रबुद्धि अखाका. *कुशाग्र के सूक्ष्म बुद्धि, [अग्रबुद्धि, आगळ जनारी - दूरदर्शी बुद्धि]

उग्रह- वीसरा. ऊभराय, उत्पन्न थाय, [बहार नीकके] (सं.उद्ग्रह्)

उग्रहणी उक्तिर. उघराणी, चूकवणी माटे तकादो (सं.उद्ग्रहणिका)

उपड नलरा. जैन साधुनुं रजोहरण, ओघो (सं.अवग्रह); जुओ उथउ

उघरेटी *नरका. नरप.* ऊंघरेटी, निद्राळु, ऊंघथी भरेली

उघेला जुओ उघेला

उचरन *पंचवा.* बोलवा (सं.उच्चर्)

उचल्**वं, ऊचल्वं, ऊचळ्वं, ऊंचलवं** दशस्कं(१). प्रेमाका. ऊंचकवुं, उपाडवुं [सं.उचल्]; उचाळा भरवा; कादं(शा). ऊपडी नीकळवुं, चाली नीकळवुं

उचाट्यो *अभिकः [विनाशक बन्यो] (सं. उद्याट्); जुओ ऊचाटइ

उचितबोलु नलरा. प्रसंगानुसार उचित वाणी बोली राजानुं मनरंजन करनार उचीतु अभिक. ओचिंतुं (सं.अचिंत्य) **उचेल, ऊचेल ***अखाका. *कादं(शा). [खोळो, गोद]

उच्छक, उछक आरारा. कादं(शा). जिनरा. नलरा. प्रबोप्र. विमप्र. उत्सुक, आतुर; जुओ अच्छक

उच्छरंग, उछरंग *आरास. ऐतिका. देवस.* उत्साह, [उमंग], आनंद

उच्छव, उछव आरारा. उक्तिर. कार्द(शा). गुर्जरा. देवरा. प्रेमप. षडावा. उत्सव उच्छंग, उछंग अखाका. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. कार्द(शा). चतुचा. तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. खोळो (सं.उत्संगः)

उच्छाह, उछाह, उछाहो, ऊछाह आरारा.

उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. देवरा. नरका. नलाख्या. पंचवा. प्रेमाका. *वीसरा. उत्साह, उमंग; प्राचीसं. उत्साह, गीतकाव्यनो एक प्रकार उच्छाहिनडं उक्तिर. उत्साह आपवो, प्रेरवुं उच्छांछली आरारा. चंचळ, तरल, थरकती उच्छुकपणउ उक्तिर. उत्सुकता उच्छेब घात्खुं दशस्क(१). सत्यानाश करवो उछउं, कछउं अभिकः अंबरा. उपबा. नलरा. नेमिछं. विमप्र. ओछुं, अधूरुं, ऊणुं (दे. उच्छ) [*सं.ओच्छ]; जुओ उछं उछक जुओ उच्छक

उछरंग जुओ उच्छरंग

ऊडे [सं.उच्छलति]

उछव जुओ उच्छव

उछराण *कर्पुमं*. आनंद, [हर्षोक्लास]

उछलड, ऊछलड् *अंबरा. जिनरा.* फरफरे,

उछहामणउ *जिनरा*. तरवरियो, [मस्त, उन्मत्त, नटखट] [रा.] **उर्छ** *कर्पूमं*. ओछुं; जुओ उछउं **उछंक** *कामा(शा)*. उच्छंखल उछंकल, उछंगल दशस्कं(१). प्रेमाका. ंउच्छंखल, स्वच्छंदी उछंग जुओ उच्छंग **उङंग** *गुर्जरा*. होंश, उमंग, उमकको सि.उत्संगो **उछंगल** जुओ उछंकल **उछाह, उछाहो** जुओ उच्छाह उ**छांइ** *प्रद्युच्*. उत्साहथी **उछांइयो** *अखेगी.* ओछायो [सं.अपच्छाया] **उछांग** *अखाका.* उछाळो, पुरस्करण, विस्तरण] [*दे.उच्छंगिय] **उछेद** *चित्तसं*. दूर करवुं ते, नाश **उछेरइ** *जिनरा*. रमाडे, [लालन करे] **उछेरडउ** नलरा. वधारे प्रमाणमां ओछं (प्रा.उच्छ) [सं.*ओच्छ] उजम, उजंम, ऊजम अंबरा. उपवा. कर्पूमं. उद्यम, प्रयत्न; कामा(त्रि), कामा(शा). *प्रेमाका. हरिख्या.* उमंग, उत्साह **उजमदार** *प्रेमाका*. उद्यम करनार, श्रिम करनार, कामवाळोे **उजल** *नंदब***, उ**ञ्चल **उजवालण** *ऐतिका.* अजवाळनार (सं.उज्वल् परथी) उजंग जुओ उजम उजाइ, ऊजाइ अखाका. अभिक. अंगवि. उक्तिर. कर्प्मं. कादं(ध्र).

कादं(शा). कृष्णबा. *गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. विक्ररा. श्रंगामं. दोडे, दोडीने जाय, धसमसे (सं.उद्+याति) **उजागरता** *आनंस्त.* उजागरो [सं.उज्जागर+ ता **उजाडि** *शृंगामं*. उज्जडपणुं (दे.उज्जड) जनाडी जुओ लोक-उजाडो उजाणी, ऊजाणी आरारा. नरका. * नलाख्या. *नेमिछं. धसमसी. दोडी, चाली नीकळी (सं.उद्+या); जुओ उज्जाणउ उजाती नरका. *नरप. दोडती (सं.उद्+या) **उजेणी** *दशस्कं(१).* उजाणी [सं.उद्यानिका] **उजेणी, ऊजेणी** कस्तुवा. गुर्जरा. उज्जयिनी **उजेशकार *प्रेमाका**. [उजाश, ऊजळूं काम] **उञ्जलो** *गुर्जरा.* ऊजळो (सं.उञ्जल) **उज्राणउ** *प्राचीसं*. दोडतो (सं.उद्+या); जओ उजाणी **उज़िल** *तेरका.* गिरनार (सं.ऊर्जयंत परथी) **उजित** *तेरका*. गिरनार (सं.ऊर्जयंत) **उझोइउ** *ऐतिका*. प्रकाशित कर्युं [सं. उद्योतित] **उज्जोब** *जिनरा*. उद्योत, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं शरीर शीतल प्रकाश आपे] [जै.]; जुओ वुजेय] **उज्जोयकर व**ष्टिप्र. प्रकाश करनार (सं. उद्योतकर) **उद्मल** प्रद्युच्. ओझल, पडदो, बुरखो **उद्मेडो** *प्रेमाका*, उद्मरही नाखो **उक्षित** जिनरा. [शुष्क, लूखुं] दि.उज्झिअ] **उट** *सिंहा(शा)*. ओट [सं.अवघट्ट]

उट्ठीय गुर्जरा. ऊठी, [(आग) लागी] (सं. उत्थित)

उठंम *उपबा*. आधार, टेको [सं.उपष्टम्भ]; जुओ ओठंभ

उठां मेली जुओ ठांमेली

उठींगणि, उट्टीगणि लावल. विमप्र. ओठींगणे, अढेलवा माटे

जहबणी, जटबणी "गुर्जरा. "विमप्र. [आक्रमण, हल्लो] (सं.उत्थापनिका) [रा.]; जुओ ऊटवणिय जद्दीगणि जुओ उठींगणि

उडगण चित्तसं. उडुगण, ताराओनो समूह उडद विक्रच. अडद [दे.]

उडपति *चित्तसं*. उडुपति, ताराओनो राजा, चंद्र

च्डल सिंहा(शा). बाथ; जुओ उंडल च्डबचं अंबरा. ऋषिरा. गुर्जरा. पर्णशाला, झूंपडुं (सं.उटज)

पडवुं, पढवुं ऐतिरा. सिंहा(म). सिंहा(शा). ओडवुं, आगळ धरवुं, मागवा माटे हाथ लंबाववो; नलाख्या. ओडवुं, होडमां मूकवुं (दे.हुडु); जुओ ओडइ

उडीस, उडीसउ नलरा. वीसरा. ओरिस्सा (सं.ओड्डदेश)

उदुकारकरणु एडाबा. ओडकार खावो ते **उदुगण** *नरका.* तारा [सं.] ***उदुय** [उ**द]** **विमप्र*. [उदय हो]; जुओ

डुय [उ<u>द्</u>य] **विमप्र***. [उदय हो]; जुअ** उदो

उद्दमर *प्राचीसं*. उग्र भय, [विप्लव वगेरेनी स्थिति] [सं.उत्+डमर] उड्ड *नलरा*. वर्तमान ओरिस्सा प्रान्तनो प्रदेश [सं.ओड्ड]

उढण *प्राचीसं.* परिधान, [पहेरवेश] उढणरं, कढणूं *आरारा. उपना. उषाह.* कादं(शा). विमन्न. ओढणुं, [ओढवानुं वस्त्र] (दे.ओङ्ढण)

उद्धं जुओ उड्युं

चब्तुं, कब्तुं उपना. उषाह. कादं(शा). विभग्न. ओटवं

उष *ऐतिका. पंचवा. वीसरा.* **ए (सं.एन** परथी)

उषम *सिंहा(शा)*. खामी (सं.कन+म) उषमण *सिंहा(शा)*. खामी

जणहार वीसरा. मुखाकृति, [अणसार] (सं. अनुहार) (रा.)

उणि, उणी *आरारा. पंचवा.* **ए (स्त्री)** (सं.एन पर**यी)**

उत**इं** *गुर्जरा*. जा बाजु, आम उतपत *देवरा*. उत्पत्ति

उतपति *गुर्जरा*. उत्पत्ति, जन्म

उतलीबल *प्रद्युचु*. अतलीबल, अतुल्य बळ-वाळो

उतापइ *शृंगामं*. संतापे [सं.उत्तापयित] उत्सद्ध "*षडाबा.* [उभडक, लपाईने] (सं. उत्सदुक); जुजो उकडच्छी, ककडू

उत्तर-उत्तर *आरारा*. एक पछी एक, क्रमशः (सं.)

उत्तरपोग्रह "गुर्जरा. [उत्तर दिशामां गायोने वाळी जवानो प्रसंग] (सं.) "उत्तराचम् *उक्तिर.* ऋषमुक्तः, जुजो ऊतरिण्य

उत्तरासण *आनंस्त. नलरा.* **उत्तरासंग, वंदन** करती वखते उत्तरीय वस्त्रने शरीर उपर अमुक रीते राखवूं ते [जै.]

उत्तरी, उत्तरीअ ऋषिरा. कादं(शा). उपर **ओढवानुंवस्त्र, पछेडी, खेस (सं.**उत्तरीय)

उत्तंग *आरारा*. ऊंची कोटिनुं, मोटुं: *आरारा*. ऐतिका. उत्तंग, ऊंचुं

"उतंभ, ["उतंभ] ऋषिरा. "चेन न पडवुं, [खित्र, रुद्धिम] [प्रा.उत्तम्म]

क्तीरण *हरिख्याः* पार उत्तरेलुं, मुक्त थयेलुं (सं.उत्तीषी)

ज्**रविय, उथन्पिय** *ऐतिका***. उथा**पी [सं. उत्स्था-]

उत्पत्य ग्रेमाका. उत्पत्ति

उत्पात *चित्तसं*. मुश्केली

उत्सत्राविधि *ऐतिका***. उत्सत्र** [सत्रविरुद्ध] तथा अविधि [विधिविरुद्ध]

***उक्ट उम्रिट** **उपदा.* (ओघो, जैन साधुनं रजोहरण] [सं.उपग्रह]

उष्यपिय जुओ उत्यपिय

उदल वाए भदमो. ऊथली पडे [सं.उत्थल्]

उचाप *अखाछ*. उथापवुं ते [सं.उत्स्थाप] **उदापतां ***चंद्रवा. [अवगणतां, टाळतां]

उदइ आरारा. उदय; गुर्जरा. ०षडाबा. उदयमां. उदये

उदक, ओदक *ंकामा(शा).* **पाणी** [सं.] उदकर्तुं दशस्तं(१). (आवेशयी) ऊछळवं.

[सफाळा ऊमा थवुं, चोंकी ऊठवुं];

जुओ उघडकर्व

उदपात *चंद्रवा*. उत्पात **उदभीज** *दशस्कं(१).* उद्भिज, वनस्पति उदभुत नलरा. अद्भुत; जुओ उद्भुत

उदमाद *दशस्कं(१). प्रेमाका.* उधमात, तोफान-मस्ती

उदयो, उदियो, ऊदीओ *दशस्कं(१)*. प्रेमाका, मदमो, उदित थयो, ऊप्यो

उदवस, उदवस्त दशस्कं(१). सिंहा(शा). उज्जड (सं.उद्ध्यस्त)

उदंत *आरारा. ऋषिरा.* समाचार, वृत्तीत (सं.; रा.)

उदंप, ऊदंप वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). गर्विष्ठ, हर्षाविष्ट, मदमत (सं.उद्दक्ष)

उदार आरारा. विशाळ (सं.)

उदारव, उदारव सिंहा(म). उदारता (सं. औदार्य)

उदालइ, ऊदालइ अखाछ. अंबरा. आरारा. गुर्जरा. नरका. प्रद्युच्. प्राचीफा. ललिरा. विराप. झूंटवे, छीनवे, बळात्कारे पडावी ले, खेंची ले (दे.उद्दाल); जुओ ओदाली

उदासन *षष्ट्रिप*. तटस्थ (सं.उदासीन)

उदास *चित्तसं*, उदासीन, तटस्थ

उदाहरणतु वाग्भबा. उदाहरण आपतां **उदाहरी** *षडाबा.* उदाहरण आप्यूं (सं.उदाह)

उदियो जुओ उदयो

उदी, ऊदी कामा(त्रि). कामा(शा). आछा वादळी रंगनी [फा.ऊद्]

उदीओं जुओ उदयो

उदीपक, ऊदीपक वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). अजवाळतो (सं.उद्दीपक)

उदीरने जिनरा. प्रयत्नपूर्वक निपजावीने उदीसइ शृंगामं. उदय थशे, ऊगशे [सं. उदिश्यति]

चढुं जुओ उडुय चढुंबर हरिख्याः उमरडानुं झाड (सं.) चढे अखाकाः देवराः नरकाः प्रेमाकाः उदय चढेरा, ऊदेग आरासः उपवाः ऐतिकाः उद्वेग चढेराइ उक्तिरः उद्वेग पामे, दुःखी थाय चढेगामण्डं, ऊदेगामण्डं उक्तिरः उद्वेग-जनक

जंदेही, फदेही *जिक्तर, षडाबा,* ऊधई [दे. जंदेही]

उदो उदो *आरास*. उदय हो, जय हो; जुओ उदु

उद्गता ऐतिकाः उदित थतो, ऊगतो **उदिसी** पडावाः उद्देशीने

उद्धरइ प्रेमाका. उद्धार करे, िऊंचे लई जाय, तारे]; तेरका. उद्धार करे, समरावे उद्धारकरे. तायाी

द्धरियति *प्राचीसं*. उद्धार कथौ**, [**तायो] (सं.उद्धृत)

उद्धसइ, ऊद्धसइ, ऊधसइ विराप. शृंगामं. षडाबा. (संवाडा) ऊभां थाय (सं.उद्+ हर्षति); *गुर्जरा. [रोमांचित थाय, उल्लास पामे]; जुओ उधसइं, ऊधसइ

उद्धर्सी जुओ उद्धसी

उद्भिन्न, जुर्नरा. नाश करवा (सं.उद्ध्वस्) **उद्भिन्न, उद्भीज** अखेगी. प्रेमाका. वनस्पति [सं.]

उद्भुत, उद्भूत नलरा. नेमिछं. शृंगामं. अद्भुत; जुओ उदभुत उद्यम *आरारा. नलाख्या*. ऊजम, खंत, उत्साह, उमंग [सं.]

उद्यमइ *उक्तिर*. उद्यम करे **उद्यमभरे** *आरारा*. प्रयलपूर्वक

उद्धस कादं(शा). उज्जड, नष्ट (सं.); जुओ ऊवस, उध्वस

*जबसी [जबसी] गुर्जरा. (खवाडां) ऊभां थई गयां (सं.उद्+हर्षित)

उद्यस्त *हरिख्या*. उज्जड [सं.उद्ध्वस्त]

उधडकतुं नरका. प्रेमाका. चोंकी ऊठवुं, [आवेशथी ऊछळवुं]; जुओ उदकवुं, उधरकवुं

उधन *नेमिछं*. ओधान, गर्भधारण **उधमाद** *प्रेमाका*. उन्मादं, धमपछाडा

उधरकवुं, उध्रकवुं, ऊधरकवुं उक्तिर. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. धडकवुं, (आवेशथी) ऊछळवुं; जुओ उधडकवुं

उघरी *लावल. [उतारवामां आवे, लखवा-मां आवे]

उघरं लावल. उद्धारं

उद्यसइं कृष्णच. झडपथी धसे; जुओ उद्धसइ

उद्याण, ऊधाण, ऊघाणह अखाका. *ऋषिरा. दशस्कं(१). प्रेमाका. विमप्र. समुद्रनी मोटी भरती

उधाणी *नरका.* उधाण – मोटी भरती पामी, [वृद्धि पामी]

उचार *उक्तिर.* उद्धार, [उगार, बचाव] उचार्त्वं, ऊचार्त्वं *आरास. वीसस.* उद्धारवुं, बचावतुं **उधारो** *प्रेमाका*. उधार, बाकी, मुलतवी राखवुं ए, [विलंब]; *प्रेमप*. ओछप, [खोट]

डिये गुर्जरा. अवधि, सीमा; जुओ ओधि डियेला ["डियेला] ऐतिरा. खर्च, [उठाळवुं ते, वापरवुं ते]; जुओ ऊघलवुं डियेक्कं जुओ उधरकवुं

उध्यक्ष्य शृंगामं. ऊंचा हाथ राखीने (सं. उर्ध्वभुज)

उध्वस, उध्वस्त दशस्कं(१). प्रेमाका. उज्जड [सं.उद्ध्वस्त]; जुओ उद्वस, उद्वस्त

उनइओ *शृंगामं*. आकाशमां झळूंबी रहेली [सं.उन्नत]

उनपचासं *नरका.* ओगणपचास [सं.एकोन-पंचास]

उनमे, ऊनमे *प्रेमाका***.** ऊमटे, [ऊंचे चडे] [सं.उन्नमति]; जुओ ऊनविउ

उनमेख शृंगामं. आंखनो पलकारो (सं. उन्मेष)

उन्नयउं, ऊनयउ, ऊन्नयउ अंगवि. आरारा. ऋषिरा. प्राचीफा. स्थूलिफा. उन्नत, ऊंचे रहेलो, ऊंचे चढी आवेलो, उपर छवायेलो

उन्मनी *नरका.* योगीना चित्तनी अंतिम अवस्था, [मननी पारनी अवस्था]

उन्माद *दशस्कं(२)*. उत्पातं, तोफान

उन्मारन, उन्मार्ग उपवा. प्रेमाका. खोटो के अवको मार्ग

उन्मूलइ उक्तिर. उन्मूलन करे, उखेडी नाखे उन्हालडइ लावल. उनाळामां [सं.उष्णकाल] उप *गुर्जरा*. पाणी (सं.अपस्) उपइ, ऊपइ उथाह. ऐतरा. कर्पूमं. नेमिछं. ओपे, शोभे, [दे.ओप्प]

उपकरइ, उपगरइ उक्तिर. उपकार करे (सं.उपकरोति)

उपकंट अखाका. कामा(शा). प्रेमाका. किनारो [सं.]

उपकीर्ति *ग्रेमाका*. अपकीर्ति

उपसाणा *नरप*. उखाणां, [कहेवत] (सं. उपाख्यान)

उपगरइ जुओ उपकरइ

उपगरण *आरारा. *उपबा. देवरा.* साधन (सं.उपकरण)

उपगार *आरास. उपबा. गुर्जस. नलस.* प्राचीफा. उपकार

उपघात कामा(त्रि). कामा(शा). ईजा, हानि (सं.)

उपचईइ उक्तिर. उपचय पामे, वृद्धि पामे (सं.उपचीयते)

उपचार अभिज. आचार, रीत, [व्यवहार] · (सं.)

उपची जुओ उपवी

उपजण्य चित्तसं. उत्पन्न थयेलुं तत्त्व उपतृष्ट्यो *अखाका. [तृष्णाविहीन थयेलो] [सं.अप+तृष्ट]

उपतृष्णा चित्तसं. तृष्णा विना (सं.अपतृष्ण) उपतेज चित्तसं. अपतेज, तेजहीनता, अंधारुं उपविश्वह, उपविस्तइ उपवा. ऐतिका. वडावा. उपदेश आपे

ज्पविशा नलरा. खराब दशा, अवदशा (सं.अपदशा) जपविसद्द जुओ उपदिशइ जपवेश **नरका.* [चिह्न, ठेकाणुं] [सं. अपदेश]

उपधान ऐतिका. तपविशेष, जिमां नियमानु-सार उपवास अने एकासणां करवानां होय छे] जि.]

उपनरं, उपश्चरं, ऊपन्युं अखाका. आनंस्तः आरारा. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(१). देवरा. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. शृंगामं. षडाबा. उत्पन्न थयुं, उत्पन्न थयेलुं

उपनय आनंस्त. "वस्तुनो उपसंहार करीने कहेवुं ते, [दृष्टांतना अर्थने प्रस्तुत वात साथे जोडवो ते] [सं.]

उपनले *ऐतिका.* उत्पन्न थया

उपम, उपमा, ऊपम उपवा. गुर्जरा. उपमा; वसंफा. सरखुं होवुं ते [सं.औपन्य]; *उपवा. हरिख्या. वडाई, [महिमा, गौरव]; *नरका. [शोभा]; जुओ ओपम

उपम जाइ *वसंवि*. उपमा आपी शकाय, [सरखावी शकाय]

उपमा जुओ उपम

उपमाप *तेरका*. उपमान

डपमान्तुं *कृष्णवा.* अपमानवुं

उपमांन सिंहा (शा). अपमान

उपरछतुं अखाका. उपरउपरनुं, [बाह्य]; अखाछ. उपर थईने, [-थी उपरनुं, उपरवट]

उपरणा *प्रेमाका*. खेस **उपरम ***कादं(शा). [मृत्यु] (सं.) **उपरमि**उ *षडावा*. विलीन थयो [सं.उपरम्]

उपरबद्ध प्राचीसं. अधिक, [चडियातो] उपरवाड, ऊपरवाड नरका. "षडाबा. गामनी नजीकनो [बहारनो] भाग; जिनरा. उपरनो मार्ग, [उपरनो भाग – प्रदेश]

उपराजन *शृंगामं*. उपार्जन, [प्राप्ति]

उपराजइ, ऊपराजइ ऋषिरा. दशस्कं(२). सिंहा(शा). उपार्जन करे, प्राप्त करे, कमाय

उपराठउ, ऊपराठउ उक्तिर. गुर्जरा. विराप. पराङ्मुख, अवर्त्नु, पीठ करीने; उपबा. [विमुख, ऊलटुं, विरुद्ध]

उपरि, ऊपरि उक्तिर. उपद्या. कार्द(शा). तेरका. नेमिछं. उपर (सं.); वीसरा. उपरनुं; गुर्जरा. षंडाबा. उपर, [तरफ] उपरि ठाइ उक्तिर. उपर रहेलुं (सं.उपरि

उपरियामणुं *उक्तिर*. व्याकुळता, खेद; जुओ उफरियामणु

स्थायी)

उपरेज *वेताप.* उपरनुं पाथरणुं, ओछाड [सर. उपरणुं]

उपरोध * गुर्जरा. [आग्रह, अनुरोध] (सं.) उपलभी वडाबा. प्राप्त करी

उपवाद, ऊपवाद कामा(त्रि). कामा(शा). सिंहा(म). निंदा (सं.अपवाद)

***उपबी [*उपची] ***रूपच. पुष्ट करी, एकत्र करी, पिंड रूपे बांधी]; जुओ उपचर्ड्ड

उपशम उपबा. शांत थवुं ते, शमन (सं.); ऐतिका. [कषायादि] शांत थवा ते, [इन्द्रियनिग्रह, वैराग्य] [जै.] [सं.] उपशमावइ उपबा. शांत करे, शमन करे **उपशमिउं** वडाबा. उपशम पाम्युं, शांत थयुं, [नष्ट थयुं]

उपशहीअर *प्राचीका*. संकेली ले, (सं. उपसंहर)

उपसमण *ऐतिका*. उपशमन, [कषायोनुं शमन] [जै.]

उपसमवासी *ऋषिरा*. कषायोने शांत करनार [जै.]

उपसमी *आरारा*. उपशमी, शांत थई, दूर यई

उपसर्ग उपवा. नलरा. विध्न, अंतराय (खास करीने तपश्चर्यामां) (सं.) [जै.]

उपसंहरतउ *षडाबा*. पूरुं करतो

उपस्ती प्रेमाका. सेवक, अनुचर [सं.उपस्ति के उपास्ति]; जुओ उवस्ती

उपस्थगुद्धा आनंस्त. लिंग, [जननेंद्रिय] [सं.]

उपहरुं, ऊपहरुं, ऊपहिरु सिंहा(म). उपर; उषाह. -थी उपर, [ऊंचे]; उपबा. -थी उपरांतनुं, [-ना सिवाय]; विमप्र. षडाबा. उपरांतनुं, [वधु समय के अंतरनुं]; *षष्टिप्र. [-थी उपरवट, -थी आगळ जईने]; जुओ उफरुं

उपंग कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. एक प्रकारनुं वाद्य

उषाइ *गुर्जरा. प्रबोप्र*. उपाय; *विराप*. *उपाये, [कारणे]

उपाइ, ऊपाइ ऐतिरा. ऋषिरा. गुर्जरा. कादं(धु). नलाख्या. उपजावे, उत्पन्न करे (सं.उत्+पद्)

उपाउ उपाटः, उपायः, गुर्जरा. उपायः, [कारण] उपाडी, •ऊपाडी गुर्जरा. हरिवि. उखेडी, उखाडी (सं.उत्पाट्); *गुर्जरा. विराप.* उगामी

उपाध्यायांस *उक्तिर.* उपाध्यायवर (सं. उपाध्यायमिश्राः)

उपान, उपानह आनंस्त. कादं(शा). ग्रेमाका. जोडां, पगरखां

उपायउं, ऊपायु अखाका. अखाछ. आरारा. कादं(ध्रु). कादं(शा). प्रद्युचु. प्रगट्युं: उत्पन्न कर्युं, उपजाब्युं (सं. उत्पादित)

उपायनां *षष्टिप्र.* **मानता, आख**डी (सं. उपायन)

उपारजइ, उपार्जइ *उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा.* उपार्जन करे, मेळवे

उपासी जुओ कुंभकर्णना उपासी

उपांगे *प्रेमाका*. उपाये

उपोषितु षडाबा. उपवासी (सं.उपोषित)

उप्पत्त ऐतिका. उत्पत्त, कमल

उफराढुं, उफराढुं, ऊफराढुं, ऊफरांढुं दशस्कं(१). प्रेमाका. ऊंचुं करेलुं, उलाळेलुं; *कादं(शा). *नलाख्या. *प्रबोप्र. *प्रेमाका. [पराङ्मुख, अवळुं, पीठ फेरवेलुं]; शृंगामं. सिंहा(शा). अवळुं, [प्रतिकूळ]; शृंगामं. आडुं, अवळुं, [ऊलटी दिशामां]; [अवळो भाग, पूंछडुं]

उफरं, ऊफरं कादं(शा). ऊंचुं, [ऊंचुं करेलुं]; अखाका. उपर, [उपरवट, पर]; अलग [थईने]; चित्तसं. उपरवट, अलग; कर्पूमं, [उपरांत], विशेष; कामा(त्रि). दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलरा. प्रेमाका. उपरवट, ऊंचुं, चिडयातुं; जुओ उपहरुं उबकी प्रद्युचुः ऊलटीथी [सं.*उब्बक्क] उबरणुं, ऊवटणउ उक्तिरः नरप(द). खुशबोदार मर्दन, अंगलेप (सं.उद्वर्तन) उबरन ऐतिकाः ऊंबरानुं वृक्ष (सं.उदुम्बर) उबाड, उंबाडुं, ऊंबाडुं गुर्जराः यडाबाः उंबाडियुं, सळगतुं लाकडुं (*दे. उम्माडिय); जुओ उमाड उबारी *नरकाः [ऊभराती, छलकाती, आवेशभरी] उबार्या नरकाः उभरायेलां, [आवेशभर्या] उबीटउं, उबीटउं, ऊबीटं, ऊबीटं

उबीठउ, उवीठउ, ऊबीट, ऊबीटउं आरारा. अरुचिवाळो, अनुराग वगरनो (सं.उद्+द्विष्); नेमिछं. *प्राचीफा. *वसंफा(ल). वसंवि. षडाबा. अरुचि-भर्युं, अकारुं, अणगमतुं; जुओ ऊभीठउ

उब्ध- *प्राचीसं*. ऊर्भु करवुं (सं.ऊर्ध्व); जुओ ऊभइ

उभगइ, जभगइ ऐतिका. जिनरा. शृंगामं. उद्विग्न थाय, निर्वेद अनुभवे, अरुचि थाय (सं.उद्भग्न); जुओ उभाजणी

उभजइ, ऊभजइ *ऋषिरा. शृंगामं. उद्देग करे, [अरुचि अनुभवे, कंटाळे] (सं.उद्+ भंज); जुओ ओभजउं

उभाखरु *विमप्र. [भटकतो] [रा.] उभाजणी जुओ गुभाजणी

उभात अखाछ. भात मटी जवी ते, [भात - छाप विनानी स्थिति]; जुओ ऊभिति उभे प्रेमाका. उभय, बे उभकु षडाबा. अमुक (सं.अमुक); जुओ अमकइ

उमगर्बुं, ऊमगर्बुं नरका. [उत्साहथी] ऊछळवुं; नरका. नरप. ऊभरावुं, ऊलटवुं (सं. उन्मग्न); अखाका. *ऊभरावुं, [उद्धसवुं]; चित्तसं. प्रसरी रहेवुं, स्फुरी रहेवुं, फेलावुं

जमन्तु विष्टिप्र. आडो मार्ग, [खोटो मार्ग] (सं. उन्मार्ग)

उमता *हम्मीप्र*. उन्मत्त

उमाइ देवरा. उमंगयी [दे.उम्माहिअ]

उमागि *प्राचीसं*. उन्मार्गे

उमाड *उक्तिर*. उंबाडियुं [दे.उम्माडिय]; जुओ उबाड

उमाह- वीसरा. ऊभरांचुं, विकसवुं, फेलावुं (रा.उमहणौ); *प्राचीफा.* उत्साहित थवुं; जुओ उम्माहियउ

उमाह, उमाहउ, उमाहतउ, ऊमाह, ऊमाहउ, ऊमाहतउ अंबरा. आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. वीसरा. शृंगामं. उमंग, उत्साह, होंश (दे.उम्माह)

उमाहतुं प्रद्युचु. आतुर, उत्सुक (सं.उन्माथ, प्रा.उम्माह)

चमी *गुर्जरा*. गरम थईने, तपीने (सं.ऊष्माइत)

उमेलइ *कृष्णवा. [उखेडी नाखे]; *गुर्जरा. [प्रकाशमान थाय, उछसे] (सं. उन्मील् परथी); जुओ ऊमेल्यां

उमेहि आरारा. उमंगथी, उत्साहथी, इच्छाथी (दे.उम्माहिअ)

उम्माहियउ, ऊमाहिउ *गुर्जरा. तेरका.

नलाख्या. प्राचीसं. विराप. उत्कंठित, [उत्साहसभर, आनंदपूर्ण] (सं. उन्माथित); जुओ उमाह- उम्मूलिय, उम्मूलिय कृष्णच. ऐतिका. उन्मूलित करी, उखेडी उयर जुओ उजर उयार बडाबा. ओवारो (सं.अवतारक) उयार आरारा. उतारी ? पार उतारी ? उर (बरि) वसंवि. उदर (उपरनी); जुओ उजर

उरन *तेरका. प्रेमाका*. नाग [सं.] **उरज** अखाका. कादं(शा). नरका. प्रेमाका. स्तन (सं.उरोज)

उत्त्रयां नरप. [अलज्यां], आतुर थयां; जुओ अलज्यउ

उरडउ *अंबरा. नेमिछं. प्राचीफा. शृंगामं.* ओरडो (सं.अपवरक)

उरणी (परणी-उरणी) वीसरा. निरर्थ प्रति-ध्वनि शब्द, [परणी करीने]

उस्तड, ऊरतु कर्पूमं. कस्तुवा. गुर्जरा. विमप्र. विराप. शृंगामं. ओरतो, अभिलाष (सं.आतुरत्वम्)

उरध, ऊरध कादं(शा). दशस्कं(२). नलरा. कर्घ्व, ऊंचुं, ऊंचे

उन्निर्जं *उक्तिर*. ओलुं, [पेलुं] [प्रा.अवरिल्ल] उरक*ारस*क्त. [क्वनी स्तन]

उरवसी, उरवंशी *नेमिछ. वेताप***. उर्वशी,** ए नामनी अप्सरा

उरहउं *उक्तिर. षडाबा.* अहीं, आ बाजु, पासे; *आरारा. *उपवा.* आ तरफ, आम; *आरारा.* आपणी पासे, पाछुं; जुओ अरहु, उहरउं, ओरहुउं उरहभरि *उषाह*. छाती वडे, छातीभेर [सं. उरस्] उरहां परहां जुओ परहां उरंगी शृंगामं. नागिणी [सं.]

उरा प्रद्युंचु. ओरडा, कोठडी (सं.अपवरक); जुओ ओरि

उराउर प्रेमाका. सामी छातीए डिर लावल. उदरमां; जुओ उअर डिर वीसरा. छाती (सं.उरस्) डिर, डैर जिनरा. *रूपच. अहीं, [आ बाजु] [रा.]; जुओ ओरइ

उत्तखड्ड, कलखड्ड, कळखड्ड अभिक. आनंस्त. आरारा. उपवा. उषाह. कादं(शा). नलरा. न्लाख्या. प्रबोप्र. वीसरा. शृंगामं. षष्टिप्र. ओळखे (सं. उपलक्षति)

उत्तग, ऊत्तग अंबरा. नंदब. सेवक, दास; अंबरा. उषाह. कर्पूमं. गुर्जरा. प्राचीफा. विमप्र. सिंहा(शा). हम्मीप्र. ओळग, सेवा, चाकरी; वीसरा. परदेशमां राजसेवा (दे.ओलग्गा) (क.ऊळिग); जुओ ओलग

उत्तगइ, फत्तगइ नलरा. लावल. हम्मीप्र. सेवा करे; वीसरा. परदेशमां राजसेवा करे; जुओ ओलगइ

उलगाण, उळगाण जिनरा. सेवक; वीसरा. परदेशी राजसेवक; जुओ ओलगाणउ उलझण अखाका. गूंच, [मूंझवण, मुश्केली] उलट, उळट, जलट अभिऊ. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. जिनरा. नरका. नलाख्या. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. विमप्र. उत्साह, होंश, उमंग (दे.उल्लह)

उत्तर-भाव *देवरा*. उल्लास — उमंगनी भाव **उत्तपट** वीसरा. "छाती पर राखवानुं वस्त्र, [एक वस्त्रप्रकार]

उत्तपति अंवरा. गुप्तता, [छुपाववुं ते] [सं. अप+लप्]

उलमड *आरारा*. ओलंमो, ठपको, टीका (सं.उपालंभ); जुओ उलंभउ

उत्तिये, ऊत्तियइ जिनरा. ऊंधुं पडी जाय, [ऊताळ ते, पाछळ ढळी जाय] [सं.उद्गलयित]; उक्तिर. उताळे (सं. उल्लालयित)

उत्तवइ, ऊलवइ उपवा. नलरा. ओळवे, पचावी पाडे; अंबरा. सिंहा(म). छुपावे, संताडे; आनरत. उपवा. लोप करे, द्रोह करे (सं.अपलपति); जुओ ओलवइ

उलविवापूर्वक *वाग्भवा*. अपह्नुतिपूर्वक, ढांकवा साथे

उलकी हरिवि. संताई, [छेतरी]

उत्तवे, ऊलवे प्राचीका. *गुप्त स्थानमां, [आडशमां, पडछे]; वेताप. ओळवेथी, [आडशमांथी, गुप्त रीते, संताईने] [सं. अपलप्]; जुओ ओलवे

उत्तश-बात्तसः वेतापः आकळविकळ, ऊंधो-नीचो

उलसतङ् जिनरा. प्रकाशित थतां उलंब, कलंब कादं(ध्रु). कादं(शा). चंदरवो (सं.उल्लोच) उलंभउ, ऊलंभु अभिक अंबरा आरारा कादं(शा). जिनरा नलरा प्राचीफा शृंगामं. उपालंभ, ठपको, कहेणी, [महेणुं]; जुओ उलभउ, ओलंभउ

उ**लंभडउ, ऊलंभडउ** वीसरा. शृंगामं ठपको, महेणुं (सं.उपालंभ)

उताण *नलाख्या.* ओलाण, शांति (दे.ओल्हव)

उलाद, उल्लाद मदमो. वेताप. सिंहा(शा). आह्नाद, उल्लास

उलालो, उलाळो, उलाळ अखाका. अखेगी. उछाळो, उदय, [उल्लसवुं प्रगट थवुं] उलाकी अभिक्त. अवलंबन आपी उलास, ओलाश, ओहोलाश कामा(शा). उल्लास

उति, उती *ऐतिरा. नेमिछं. विमप्र. हम्मीप्र.* हार, पंक्ति [सं.आवलि]; जुओ ओल, ओली

जित्ह पष्टिप्र. पेलामां, ओल्यामां जित्रं *षडावा. [पेली तरफ] [प्रा अवरिल्ल]; जुओ ओलिउं जनूरह उक्तिर. तूटे [प्रा.]

उलोच *गूर्जरा.* चंदरवो (सं.उल्लोच) **उद्घर** जुओ उलट

उद्धसं शृंगामं. उद्घास पामे; तेरका. शोभे; [देदीप्यमान बने, विस्तीर्ण बने]; बडाबा. प्रकाशित धाय, प्रगट धाय; गुर्जरा. प्रकाशे [शोभे]; चित्तसं. चाले, गति करे, प्रवृत्त धाय, प्रगटे

उद्धते *चित्तसं*. उल्लासथी, प्रगटीकरणथी **उद्धाद** जुओ उलाद **उल्लाळ** जुओ उलालो **उल्लावइ** *उक्तिर.* मोटेथी पोकारे, बकवाद करे (सं.उल्लापयति)

उद्गीचइ उक्तिर. उलेचे, खाली करे [सं. उद्+रिच्]

उत्होच ऋषिरा. चंदरवो (सं.)

उद्घोय आरारा. चंदरवो (सं.उल्लोच)

उल्हव्दुं नलरा. प्रद्युचु. शृंगामं. ओलववुं, (दे.उल्हव) [सं.उद्र परथी]

उत्हारो *प्राचीसं. [ऊमटवुं ते, छलकावुं ते] [रा.]

उत्हावइ शृंगामं. ओलवे, [बुझावे] (प्रा. ओल्हव)

उवइसइ *जिनरा*. उपदेश आपे

जबएस आरारा. उपकेश, ए नामनो गच्छ – साधुसमुदाय [जै.]

उक्एस आरारा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. विकरा. उपदेश

जनवाइ जिनरा. उपघात, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी शरीरना अवयवो-थी पीडा थाय] [जै.]

उक्ज्याय, उबद्गाय ऐतिका. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. उपाध्याय, जैन साधुनी एक पदवी

उवट, ऊबट उक्तिर. उपवा. जिनरा. नलरा. प्रयुचु. प्राचीका. प्राचीफा. "सम्यची. आडो रस्तो, अवळो रस्तो, खोटो रस्तो (सं.उद्वर्स); जुओ ऊवट्टहं

उवठाणसाल *देवरा. [सभामंडप, विश्राम-मंडप] [सं.उपस्थानशाला] **उव्हु *शृंगामं**. [अवत्तुं, प्रतिकूळ]; जुओ अवाङ्कुउ

उवर *प्राचीसं*. उदर

उबरि, ऊबरि *तेरका.* उपर, उपरवट (सं. उपरि)

उबरे *पंचवा*. बचे, बाकी रहे (सं.उद्वरित); जुओ ऊवर्यंउ

उपलक्ख प्राचीसं. ओ ळखवुं (सं .उपलक्ष्) उपली *गुर्जरा. [पाछी फरी] (सं.उद्घलिता); जुओ ऊवलइ

उबसम्म *ऐतिका.* उपसर्ग, विघ्न

उवसम *तेरका*. उपशम, [वैराग्य]

उवसमघोडां चारफाः इन्द्रियनिग्रहरूपी घोडां (सं.उपशम+गु.घोडा)

उक्संत जिनरा. उपशांत[मोह], [मोहनीय कर्म ज्यां उपशांत — ढंकायेलां रहे छे तेवी आत्मावस्था] [जै.]

जबितमिय जिनरा. औपशमिक, [उपशम पामेला, शांत थयेला]

उवस्ती *प्रेमाका. [साथीदार, सहायक] [सं.उपस्ति, उपास्ति]; जुओ उपस्ती उवा पंचवा. ए (स्त्री) (सं.एषा)

उबाट अखाका. कृष्णवा. प्रेमाका. उन्मार्ग, अवळो मार्ग, आडो मार्ग (सं.उद्+वर्ल)

उबाणउ ठाण *उक्तिर.* चूलो (सं.उद्वानं स्थानम्)

उबारणइ *आरारा*. ओवारणे, सामानुं दुःख लई लेवा माटे थती विधिमां [सं. अपवारण]

उवारु शृंगामं. उगारो, बचाव

उवास *प्राचीसं.* उपवास **उवीठउ** जुओ उबीठउ

जबीली कादं(ध्रु). यज्ञनुं कोई पात्र के साधन, [यज्ञनुं एक साधन, मंद्यन- दंडनो उपलो भाग जेमां घूमे ते] [सं.ओवीली]

उवेख *जिनरा.* उपेक्षा; *चित्तसं*. उपेक्षा, इन्कार

उनेखे ऐतिरा. [उखेव], पार्छु हठावे, [फेंके]; दशस्कं(२). *नरका. प्रेमाका. उछाळे, प्रसरावे (सं.उद्+क्षिप्); जुओ उखेवे

उशंकल, उसंकल, ओशंकल, ओशिंकळ *कस्तुवा. *वेताप. [ऋणमुक्त; बदलो वाळवो ते]; उपबा. सिंहा(शा). ऋण चूकवेल, ऋणमुक्त (सं.उत्+शृंखल); जुओ गुणउसंकल, उसीकल, ओशिंगळ

उशीर कादं(शा). सुगंधी वाळो (सं.) उषि प्राचीका. दवा (सं.औषधि)

उषर, ऊषर अ*खाका. प्रेमाका*. खारवाळी जमीन (सं.)

ज्यू अखाका. ऊंट [सं.]

उसन्नइं उपना. आचारभ्रष्ट साधुवर्गमां (सं. उत्सन्न) जि. ने

उसन्नापणं उपवा. शिथिलाचारीपणुं [जै.] उसम्पिण गुर्जरा. उत्सर्पिणी, उन्नतिकारक कालविभाग [जै.]

उसभ ऐतिका. ऋषभदेव

उसर, ऊसर *अंबरा. उषाह. गुर्जरा. नृत्य (*सं.अप्सरस् परथी) [सं.अवसर] उसरइ, ऊसरइ प्रद्युतः *शंगामं. पाछा हठवं (सं.अप+स्); सिंहा(शा). -थी दूर भागवुं, शरमावुं; अखाछ. *अंबरा. ओसरे, पूरुं थाय; जुओ ओसरे

उसर्या वेताप. 'रोया', 'रड्या' के 'मुआ' जेवी एक गाळ

उसि आरारा. ऊंची धरीने (अप.ऊसविय) उससइ, ऊससइ उक्तिर. नलरा. खीले, विकास पामे (सं.उत्+श्वस्) [प्रा.]; *गुर्जरा. *वीसरा. [आवेश अनुभवे, उद्धरे, उमंगयी ऊछळे]

उसह *षडावा*. औषधि

उसंकल जुओ उशंकल

उसंख- नलरा. संकोच पामवो, ओशंकावुं (सं.उत्+शंक)

उसाई लावल. ओसावीने [सं.अवसाव्] उसारण अखाछ. उसरडी लेवुं ते, ओसरवुं ते [सं.उत्+सार्]

उसास, ऊसास उपवा. श्वास लेवो ते; गुर्जरा. षडावा. उच्छ्वास; जिनरा. उच्छ्वास, [एक नामकर्म, जेना उदयथी श्वासोछ्वासनी तकलीफ न थाय] [जै.]

उसासे जुओ सासे-उसासे

उत्तिणीस *प्राचीसं*. पाघडी, साफो, मुगट (सं.उष्णीष)

उसिरि कादं(शा). *-ने निमित्ते

उसीआलु उक्तिर. [*ओशियाळुं] (*सं. अस्पृष्टालयम्) [सं.अवशी परयी]

उसीकल * नलरा. * सिंहा (म). [ऋणमुक्त, बदलो वाळवो ते] [सं.उत्+शृंखल], शृंगामं. *ऋणमुक्त, [(वचन) पाळवुं

ते]; जुओ उशंकल उसीसउं, ऊसीसउं उक्तिर, प्राचीसं, वीसरा, ओशीकूं (सं.उच्छीर्षकम्) उसर उक्तिर. प्राचीसं. असूरुं, मोडुं (सं. उत्सूर) उस्सासहि ऐतिका. आनंदित थाय. उत्साहित याय उहरउं, उद्धरउं अभिक. उक्तिर. ओर्स. अहीं, पासे; जुओ उरहउं **उहना** आरारा. एना उहलाइ, ऊहोलाइ नलाख्या. शुंगामं. ओलवाय, बुझाय (दे.ओल्हव) **उहति(?)** तेरका. ? उडां पंचवा. त्यां (सं.अमुष्मात्) **उहिं** *गुर्जरा.* त्यां **उहुण** गुर्जरा. ओण, आ वरसे (सं.अधुना) **उहुरउं** जुओ उहरउं **उद्घाद** *नलाख्या.* आह्नद, आनंद · **उद्घास** *नलाख्या*. उल्लास, उमंग **उंकार** *चंद्रवा***. ओमकार** `**उंघांवता** *आरारा.* ऊंघ आवतां **उंछ** श्रृंगामं. वीणी लीधेली वेरायेली वस्तु (सं.) **उंजइ** *उक्तिर*. ऊंजे, तेल सींचे (सं. उदंजयति) **उंजणी नासवी वेताप**. मंत्र भंणीने कपडुं, मोरपींछ, सावरणी इत्यादिना छेडाथी रोगने काढवानी क्रिया करवी **उंझरं** अभिक्त. आण्ं (प्राप्त माटे 'ऊझण्ं'न् पंडल, पंडल, फंडल, फंडल अंगवि. करतुवा. दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. वेताप. बाथ, आलिंगन; जुओ उडल पंण सिंहा(शा). अत्यारे (सं.अधुना) पंविर, फंविर उक्तिर. उपवा. षडावा. उंदर (सं.उन्दुर) पंबर, फंबर आरारा(व). उक्तिर. उपवा. तेरका. विक्रच. उंबरो, उमरो, एक वृक्ष (सं.उदुम्बर)

उंबर-पाट शृंगामं. उंबराना लाकडानी पाट, [(घरना) उंबरानो पृष्ठो] **उंबरा** चित्तसं. उंबराना वृक्षनां फळ **उंबरा, ऊंबरा** ऐतिका. हम्मीप्र. उमराव **उंबाडु** जुओ उबाड

कअरसरि चारफा. उदररूपी सरोवर

ऊआरणउं नलरा. ओवारणुं [सं.अपवारण]

जआस प्राचीसं. उपवास
जकडू, जकूडउ उक्तिर. उभडक (सं.
उत्कृदुक); जुओ उत्कडु
जकदइ उक्तिर. ऊंचे कूदे, ऊछळे,
(*सं.उत्कूर्दते)
जकतंबई गुर्जरा. जकडीने लटकावे,
फांसीए लटकावे (प्रा.उक्कलंब-)
जकसइ जुओ उकसइ
जकास अखेगी. अवकाश, खाली जग्या
जकांटउ जुओ उकांटउ
जकुडउ जुओ उकांटउ
जकुडउ जुओ उकांट्र
जकांड आरारा. भार लांचे (रा.उखणी)
जक्षांड जुओ उखध

'उंझरुं'); जुआ ऊझणूं

उक्तिर. **ऊखल, ऊखळ, ऊखल**उ दशस्कं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका. षडाबा. खांडणियो (सं.उदूखलः) कखाणड जुओ उखाणउ **ऊखेलइ** जुओ उखेलइ जलेवे जुओ उखेवे **ऊगट** जुओ उगट **फगटइ** आरारा. उक्तिर. कृष्णवा. *जिनरा. अंगलेप करे (सं.उद्धर्तयति); *अखाछ. [आगळ जाय, उपरवट थाय] [सं. उद्वर्तयति] **ऊगटि** जुओ उगट **ऊगरतड** जुओ उगरतड **उगवियां कादं(शा). स्**कव्यां **कगाइ** *नलाख्या. प्राचीफा*. सुकाय **फगाहउ** ऐतिका. लई जाओ, चढावो **ऊघर** जुओ ऊधड **ऊघडदूघडउ** उक्तिर. गूंचवायेलुं (*सं. उद्घट-दुर्घटम्) [पं.अघडादुघडा] *अखेगी*. मर्यादा मुकवी, [छलकावुं]; "प्रेमाका. [विदाय थवुं] [सं.उद्घल्]; जुओ उघेला **ऊचट-** वीसरा. नष्ट थवुं (सं.उच्चट्यते) **जचलवुं, जचळवुं** जुओ उचलवुं **ऊचाटइ** *उक्तिर*. नाश करें (सं.उच्चाट्यति); जुओ उचाट्यो **कचालडा** *श्रंगामं***. उचाळा [सं.उचाल] कचेल** जुओ उचेल **जरूउं** जुओ उछउं

ऊछय जुओ उच्छव **कछाह** जुओ उच्छाह **ऊजउ-उधारउ** *आरारा.* उछीउधारुं **ऊजड यळबुं** *दशस्कं(१)***. पायमाल करवुं,** ठेकाणे करी नाखबुं [दे.उज्जड] **ऊजंडे** *प्रेमाका*, उज्जड थाय **ऊजम** जुओ उजम **ऊजमणा** *आरारा*. उजवणा, उत्सव (सं. उद्यापन) **फजमवंत** उपवा. उद्यमवंत, प्रयत्नशील **ऊजमाल** *उपबा*. उद्यमशील **कजित** *गुर्जरा.* उर्जयंत - गिरनार पर; जुओ ऊजिल **जजलिगिरि** चारफा. ऊर्जयंत गिरि, गिरनार पर्वत **ऊजाइ** जुओ उजाइ **ऊजाणां ****नलाख्या*. [धसमसतां, दोडतां] (सं.उद्+या) **ऊजाणी** जुओ उजाणी **ऊजिल** तेरका. प्राचीसं. ऊर्जयन्त गिरि. ऊजल गिरि, गिरनार; जुओ ऊजलि **ऊजेणी** जुओ उजेणी **ऊझणुं** अभिऊ. कन्याने सासरे विदाय करवी ते. आण्ं (सं.उज्झन) **ऊझरा** *देवरा***. ऊछ**र्या **ऊटवणिय ****प्राचीसं.* [आक्रमण, हुमलो] [रा.] (सं.उत्थापनिका); जुओ उड्डवणी **फटंटइ** उक्तिर. [*उन्मूक्त बने, *उन्मत्त बने (*सं.उदुबन्धयति) दि.उट्टेंट] **फटाटीयुं** उक्तिर. [*मोटी उधरस] [*सं. उट्टीकनम्]

ऊष्टलइ जुओ उछलइ

ऊठ *अखाका. नरका. प्रेमाका.* साडा त्रण [सं.अर्धचतुर्थ] **ऊटमण** उपबा. [दीक्षानी] अंतिम विधि, विडी दीक्षा सिं.उपस्थापना **ऊटवणी** जुओ उड्डवणी **ऊड** *षडाबा.* ओड. खोदकाम करनारी एक जाति [दे.**ओ**ड्ड] **फड** *उक्तिर.* ओरिस्सा (सं.उड्ड) **ऊडण** *गुर्जरा.* ढाल (दे.अङ्डण) ऊडण-पीपळी, ऊडन-पीपळी *दशस्कं(१)*. प्रेमाका. एक बाळरमत **ऊडी** अखाछ. क्दको [म.] **ऊदुपति** अखाका. ताराओनो पति, चंद्र [सं.] **ऊढिण** *उषाह.* ओढवामां, पहेरवामां **जडणी, ऊंडणी** दशस्कं(१). प्रेमाका. ईंढोणी; जुओ ऊंडहणुं **ऊढणूं** जुओ उढणउं **फरतुं** जुओ उढवुं **ऊजीञ्चजी** जिनरा. उदास **फणोदरी** आरारा. ओछुं खावूं ते, एक तप (सं.ऊन+उदर) **कतिजङ्ग** *गुर्जरा*. तजाय (सं.उत्त्यज्यते) **फतरिण्यु** उक्तिर. ऋणमुक्त (*सं.उत्तारित-ऋणम्) [हिं.उतरिन]; जुओ उत्तराण **फतारणउं** उक्तिर. षष्टिप्र. उतारणुं, उतारीने फेंकी देवं ते, [वारी जवुं ते] (सं. उत्तारणम्, अवतारणम्) **फतारु** विमप्र. उतारो, [ऊतरवानुं स्थळ]

फत्रेबिंड नेमिछं. उतरेड, एक पर एक मूकेलां वासण के माटलांनी हार दि.उत्तिरिविडि)

ऊथड्या अखाछ. खोटे मार्गे टिचाता. [आथङ्या] **ऊयानदशा** *चित्तसं* उन्नत दशा **कथापणी** ऋषिरा. स्थानभ्रष्ट करवूं, घर बहार काढी मूकवुं ते (सं.उत्यापन) **ऊदलइ** उक्तिर. आंचके, झूंटवी ले **ऊवंप** जुओ उदंप **कदारिक** *ऑनंस्त*. औदारिक, स्थूळ, [मनुष्य के तिर्यंचनुं] (शरीर) [जै.] **ऊदालइ** जुओ उदालइ **ऊवालिवउं ***उपबा. [छीनवी लेवुं] दि. उद्दाल जदी जुओ उदी **कदीपक** जुओ उदीपक **ऊदेग** जुओ उदेग **ऊदेगामणउं** जुओ उदेगामणउं **कवेगियड** *षडाबा*. उद्वेग पामे कवेही जुओ उदेही **ऊदोत** *देवरा*. भपको, [शोभा] (सं.उद्योत) **ऊद्धसइ** जुओ उद्धसइ **ऊध(मुखि)** गुर्जरा. नीचे [मुखे], ऊधे – ऊलटे [मुखे] ***ऊथड [*ऊघड**] *अखाका.* *अटुकळ, *मननी कल्पनाओ, [मुश्केली] [सं. अवघट]; जुओ अवघट, ओघट **ऊधरइ** अखाका. उपबा. गुर्जरा. लावल. ऊंचके, उपाड़े, उपर काढ़े, बहार लावे [सं.उद्धरति]; *प्रेमाका*. *उत्कर्ष पामे, [ऊछरे]; वीसरा. उद्धार पामे **ऊधरकदुं** जुओ उधरकवुं

ऊधसइ जुओ उद्धसइ **ऊधंघलु, उधांघलु** उक्तिर. झांखुं ("सं. उद्धलिकम्) **ऊधाण, ऊधाणह** जुओ उधाण **ऊधारइ** उक्तिर. उधारे, उधार, बाकी (सं. उद्धारके) **ऊघारवुं** जुओ उधारवुं **ऊधांघल** जुओ ऊधंधलू **ऊधि व**डाबा. गाडानो धोरियो, बहार ताणेलां वे लाकडांनी मांडणी [सं.उद्धि] **ऊप्रसइं** गुर्जरा. (स्वाडा) ऊमां थाय (सं. उद्+हषी; जुओ उद्धसइ **ऊनधां (उनयां)** *ऐतिका.* उद्दंड [सं.उन्नद्ध/ उद्+नाथ] **फनमे** जुओ उनमे **ऊनयउ** जुओ उनयउ **ऊनवा** *प्रेमाका.* पेशाबनी बळतरा [सं.उष्ण +वात] **ऊनविड** ऐतिका. ऊमट्या; जुओ उनमे **ऊपइ** जुओ उपइ **ऊपज-** *हरिख्या.* [मनमां उत्पन्न थवुं], सूझवुं [सं.उत्पद्यते] **ऊपज्य** चित्तसं. उत्पत्ति. परिणाम **ऊपणइ** *उक्तिर.* झाटके, साफ करे (सं. उत्पूनाति) कपनउं, उपन्नउं, कपन्युं जुओ उपनउं **ऊपम** जुओ उपम **ऊपरवाड** जुओ उपरवाड कपराजइ जुओ उपराजइ **ऊपराठउ** जुओ उपराठउ

ऊपरि जुओ उपरि **ऊपरिलुं** उक्तिर. उपर रहेलुं, उपरनुं **कपर्क** *उक्तिर*. उपरनुं, उपरांत **ऊपवाद** जुओ उपवाद **ऊपहरउं, ऊपहिरु** जुओ उपहरुं **ऊपाइ** जुओ उपाइ **ऊपाउपहार** *ललिरा*. उपाडनार **ऊपाडी** *थडाबा.* **प्राप्त करी [*सं.उत्पातय] ऊपाडी** जुओ उपाडी **ऊपातु** कादं(शा). प्राचीका, प्रेमप. उत्पन्न थतुं, उत्पन्न करतुं (सं.उत्पादित परथी) **ऊपाय** कारं(ध्रु). हरिख्या. उपजावीने (सं. उत्पाद्य) **ऊपायु** जुओ उपायउं **ऊपावेवा** आरारा. उपार्जन करवा, मेळववा (सं.उत्पादय्) **कपेला** *षडाबा*. उपर, उपरांत (प्रॉ. उप्पेलिअ) **ऊफरढुं** **प्रेमाका*. [उपरांत]; जुओ उफरुं **ऊफराटुं, ऊफरांटुं** जुओ उफराटुं **ऊफरं** जुओ उफरं, ऊफरइं **ऊफरे** *अखाका*: उपर, [उपरवट] **ऊफिरीयामणु** उक्तिर. व्याकुळता, खेद; जुओ उपरियामणु **ऊबर्यं जियं** जिनरा. बची गयो, [ऊगरी गयो]; जुओ उवरे **ऊबाहुल** तेरका. प्राचीसं. उत्कंठित (दे.

उव्याहुल)

ऊबीट, ऊबीटउं जुओ उबीठउ, उभीठउ

ऊभइ *विक्ररा. [ऊंचुं करे, (बीडुं) जाहेर

करे, फेरवे]; *उषाह. [ऊंचो करे]; [सं.ऊर्ध्व परथी]; जुओ उब्म-**क्रभगइ** जुओ उभगइ **ऊभगउ, ऊभंगउ** *आरारा. "उपबा*. उद्घिग्न (सं.उद्भग्न) **कमजइ** जुओ उभजइ कमड आरारा. उद्धत (प्रा.उब्मड) **फमडू प**डावा. उभडक (सं.ऊर्ध्व-) **"ऊभति क्रिभति**] विष्टिप्र. खराब भात — चित्रामण (सं.उद् +भक्ति); जुओ उभात जुओ कुमति **ऊभलुंखी** *षडाबा.* [(तेल चोपडेली पण) अर्धी लूखी – तेल वगरनी], ओछा तेल-वाळी (तावी) जभविय ऐतिका. [ऊभी करी], ऊंची करी **कभंगउ** जुओ ऊभगउ **ऊभारा** *नेमिछं*. ऊभरा, [उत्साह, आवेश] (सं.उद्भारः) **ऊभार्युं ***अभिऊ. [(बीड्) धर्युं, राख्युं] (सं.उद्+भु-) **ऊमांभली** ऋषिरा. *मुंझायेली, *ऊंचा मनवाळी, [अत्यंत अरुचिवाळी] **कभीटउ *गूर्जरा.** [अणगमतो] [सं.उद्+ हिष्]; जुओ उबीठउ **कमग्वं** जुओ उमग्वं **ऊमटे** *चित्तसं*. थाय, आवी पडे [स.उन्मुष्ट] **ऊमटे (ऊमडे)** अखाका. ऊखडी पडे **कमडे** चित्तसं. नष्ट थाय, (सं.उन्मर्द्, प्रा. उम्मड); जुओ ऊमटे **कमणदूमणउ** *गुर्जरा*. चिंतातुर, [उदास]

(सं.उन्मन-दुर्मन); जुओ आम्बादूमणी, ऊंमणदूमणु **ऊमहड्ड** ऐतिरा. होंश राखे (दे.उम्माहिअ) **फमही** *आरारा.* उमंगथी, उिमंग राखी] (दे.उम्माहिअ) **ऊमाह, कमाहउ, कमाहलउ** जुओ उमाह **ऊमाह्युं** कृष्ण*बा*. ऊत्कंठित थवुं **ऊमाहिउ** जुओ उम्माहियउ **कमाहे** *आरारा*. फेलाय. छवाय (रा.ऊमहणौ = ऊमडवुं, ऊभरावुं) **ऊमेल्यां** कादं(शा). उखेडी नाख्यां (सं. उन्मेलितानि); जुओ उमेलि **क्रयेणी** ललिरा. उञ्जयिनी **कर** *कादं(ध्र). गुर्जरा.* ऊरु, साथळ **ऊरण, ऊरिण** अंबरा. ऋषिरा. गुर्जरा. प्रद्युच्. प्राचीसं. लावल. विक्ररा. ऋणम्क (सं. उद्+ऋण) **ऊरणा अखेगी**. ऊन, [करोळियानी] लाळ सिं.ऊणी **ऊरतु** जुओ उरतउ **ऊरध** जुओ उरध **करींह** *चारफा.* [छाती साथे], छाती वडे **ऊरिण** जुओ ऊरण **ऊर्णनाम, ऊ**र्णनामि *अखाका. अखेगी.* करोळियो [सं.] **फलखइ, फळखइ** जुओ उलखइ कलखंड, कलिखंड, ओलखंड *उक्तिर*. *उपबा*. खास करीने हाजते जती वखते वपरातुं पाणीनुं नानुं वासण, जैन साधुनुं एक उपकरण

कलग जुओ उलग कलगइ जुओ उलगइ **फलट** जुओ उलट **फलटभेद "अखाका.** [मनना उमळकारूपी मर्म - युक्ति **ऊलटमान** कादं(शा). ऊभरातुं **फलटबुं *** नरका. जित्साहित थवुं, आनंदित थवं]; वीसरा ऊपरावं [प्रा उलह-] **फलडड** *उक्तिर.* फेंकी दे, नष्ट करे (दे.उल्लड) **ऊलतु** कादं(शा) अळतो, लाखनो रंग (सं. अलक्तकः) **कलियइ** जुओ उललियै कलवड्ड जुओ उलवड् कतर्वे जुओ उलवे **जलसो** देवरा. उल्लस्यो, ऊछळ्यो, ऊभरायो **फलंच** जुओ उलंच **कलंभडउ** जुओ उलंभडउ कतंभु जुओ उलंभउ **कतिखर** जुओ ऊलखर **ऊवट** जुओ उवट जबटड उक्तिर. अंगलेप करे (सं.उद्वर्त्तयति) **जवटणउ** जुओ उबटणुं **कबट्टहं** कृष्णच. आडवाटे; जुओ उवट **ऊबरवड़** नलरा. व्यर्थ करे, [खोटुं पाडे, उद्यापे] (*सं.उद्+व्यर्थ) **ऊबरि** जुओ उबरि **ऊवर्यर** जुओ ऊबर्यर **फक्लइ** *अंबरा*. [पाछुं वळे], दूर थाय [सं.उद्वलित]; जुओ उवली **ऊबलतउ** उक्तिर. पाछो वळतो (सं.उद्वलन्)

कवस *शुंगामं.* उज्जंड (दे.उच्चस) सिं. उद्घ्वस]; जुओ उद्वस **जवेजड** प्रबोप. उद्धेग करे (सं.उद्धेजयति) जवेडइ उक्तिर. छोडे, जुद्रं करे (सं.उद्वेष्टते) जब्ध, ऊसम उपना प्रबोप्र. विकरा. षडाबा. औषध **ऊबर** जुओ उषर **कस** *गुर्जरा.* बळद (सं.ऋषभ) **ऊसध** जुओ ऊषध **ऊसनड** उपदा. विनष्ट; क्षीण; प्रष्ट (सं. उत्सन्न); *गुर्जरा. [*क्षीण, *खिन्न] [*सं.अवसन्न]; नलरा. विमप्र. क्षीण थयेल, बरबाद थयेल **ऊसर** जुओ उसर **ऊसरइ** जुओ उसरइ **ऊसरीइ** अभिक्र. ओसरे, खसी जाय (सं.अप+स्) **ऊसलसीधुं** *उक्तिर*. [?] (सं.उझसित-संधिकम् के उत शलंघं) **कससइ** जुओ उससइ **कसारइ** लावल. उपाडे, [दूर करे] (सं.उत् +₹-) **ऊसास** जुओ उसास **ऊसिय "**प्राचीसं. [-थी व्याप्त, -मां रोकायेलुं] [सं.उत्सत] **ऊसीसउं** जूओ उसीसउं **ऊस् षडाबा.** ओस, झाकळ (सं.अवश्या, अवश्याय)

ऊहटइ *अंबरा*. दूर जाय [सं.अपघट्ट]

जहाइउ उक्तिर. आंचळ (*सं.ऊघस्)

फहोताइ जुओ उहलाइ **फंचलवुं** जुओ उचलवुं **फंटां** *अंवरा: [ओठां, दृष्टांतरूप कहेवत] [*सं.अवष्टंभ]

ऊंडल, ऊंडळ *दशस्कं(र). नरका. प्रेमाका.* बाय, आलिंगन

फंडळगूंडळ *प्रेमाका*. जेमतेम वींटेली, [धाट-घूट वगरनी, बेडोळ]

ऊंडहणुं उक्तिर. उढाणुं, ईंढोणी [दे.ऊंड+ सं.धा]

जंडणी जुओ ऊढणी

ऊंदिर, ऊंदिरउ *उक्तिर. उपबा.* उंदर (सं.उन्दुर)

ऊंध *प्रेमाका.* गाडानी धूंसरी अने मांचडाने जोडतो भाग

ऊंबर जुओ उंबर **ऊंबरा** जुओ उंबरा

फंबाडु जुओ **उ**बाड

ऊंमणदूमणुं कृष्णचः ऊचक मनवाळुं, व्याकुळ, उन्मनस्कः, जुओ ऊमणदूमणउ

त्रातुषान *ग्रेमाका.* गर्भ रखाववो ते, संभोग

ऋवइ, ऋवय आरारा. हृदय, हृदयमां **ऋविमती** ऐतिका. तपगच्छवाळाओनुं एक उपनाम [जै.]

ए *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* आ (सं.एषः) **एअ** *गुर्जरा.* आ **ए.अ. गु**र्जरा. आ शब्दो, विण,

चिट्ठी]

एआण, ऐआण, ऐयाण प्रबोप्र. अज्ञानी; जुओ अयाण

एउ *उक्तिर. वसंफा. विराप. षडाबा.* अर, ए (सं.एषः)

एक गुर्जरा. वसंफा. *वसंवि. षडाबा. कोई, केटलाक (सं.)

एकउडउ उक्तिर. एकवडुं वस्त्र (सं.एक-पटिकः)

एकएकने चित्तसं. दरेकने

एकचोई हम्मीप्र. [एक थांभलावाळो,
नानकडो] एक प्रकारनो तंबु

एकण जिनसः देवसः एक ज

एकण बार जिनरा. एक ज वार

एकताई *प्रेमाका*. कीमती [एक पनावाळो बारीक] उपरणो

एकपखी आनंता. एकपक्षी, एक बाजुनी एकपत्य *अखाका. [एकाधिपत्यवाळुं, चक्रवर्ती]

एक परि *उक्तिर.* एक प्रकारे

एकभवी अखाछ. एक भवमां साक्षात्कार मेळवनार, [पुनर्जन्ममांथी मुक्कि मेळवनार]

एकमनल, एकमंनउ *अखाका. उपवा. ऋषिरा. नरका. एक मनवाळो, दृढ मनवाळो, स्थिर मननो; कादं(शा). गुर्जरा. एकमन, [एकचित्त, एकाग्र]

एकरस्यो *ऐतिका. जिनरा.* एक वार एकलमझ चित्तसं. मस्त, एकलविहारी ब्रह्मज्ञानी एकवटाह जुओ वटाह
एकवारकु दशस्कं(१). एक वार
एकवार्सु अखाछ. एक मारगे जतुं: [एक
तरफ ढळतुं, एकपक्षी]

एकसरा, एकसरां गुर्जरा. एकी वखते, [एकी साथे] (*सं.एकसरक); वीसरा. सीधेसीधा, तरत ज (दे.एकसरिसं)

एकसाटिक आनंस्त. एक वस्त्रवाळुं [सं. एकशाटिक]

एकहयी अखाछ. एक हाथे **एकहु** आनंस्त. एक ज

एकहुत्तरि वडावा. एकोतेर (सं.एक-सप्तति) **एकंत** आरारा. एक बाजु; आरारा. गुर्जरा. एकांत; *ऐतिरा. लावल*. एकलो

एकाउलि नंलरा. एक सेरनो (हार), एकावळ (हार) (सं.एकावलि)

एकाएक आरारा. एकेएक, दरेक

एकातीत अखाका. एक अने [सर्वथी] अतीत – [पर], परब्रह्म

एकारो प्रेमप. गर्वभर्यो उद्गार, वर्तन [सं.अहंकार]; जुओ एंकार

एकावलहार *आरारा.* एक सेरनो हार (सं. एकावलि)

एकाशनी *विक्ररा*. दिवसमां एक वार जमनार [सं.]

एकांत चित्तसं. संपूर्णपणे, हंमेशां [सं.] एकीमाव आनंस्त. एकभाव, [एकरूप धवुं ते]

एकु अखाका. उपबा. दशस्कं(१). प्रेमाका. एकेय [सं.एक+खलु] एकु संज सतेतालु थडाबा. एकसो सुडतालीस (सं.एकशत+सप्तचत्वारिंशत्) एके चित्तसं. दरेक एको प्रेमाका. एके, एकेय एकोई अभिक्त. एक पण (सं.एकः अपि) एकोत्तर संज जित्तर. एकसो एक (सं. एकोत्तरं शतम्)

एख *श्रंगामं*. आ (सं.एष)

एखटा, एखठा कादं(शा). नलाख्या. एकठा, साथे, एकत्रित थयेल (सं. एकस्थकाः)

एखलो दशस्कं(१). दशस्कं(२). एकलो एग आरारा. जिनरा. षडावा. एक एगरिम जिनरा. अगियारमे [सं.एकादशम] एगाविल देवरा. एकसेरो (हार) (सं. एकाविल)

एगासण *तेरका*. एकासणुं, एकटाणुं (सं. एकासना)

एज *सिंहा(शा).* गरम ?, [*एज्य, *पूज्य, _ *पवित्र]

एणं *वारभवा.* एणे, ए वडे, [आणे, आ वडे] [सं.एतेन]

एणि लावल. ए(मां) (सं.एनेन)

एजी *आनंस्त. चित्तसं. नलाख्या.* ए, [आ] (सं.एतेन)

एणी *आरारा. नलाख्या.* हरणी (काळा रंगनी एक जात) (सं.)

र्**णीनयणी** ऋषिरा. हरिणी जेवी आंखो-वाळी, मृगाक्षी

एत [ए ति] *विराप. [ए ते] ्

एतइ *गुर्जरा*. एटलामां; *नेमिछं*. एटलाथी (सं.एतद् परथी)

एतवं, एतु आरारा. गुर्जरा. पंचवा. मदमो. लावल. शृंगामं. एटलुं, एवडुं (सं.एतद् परथी) (सं.एतावत्)

एतलइ अभिऊ. आनंस्त. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विराप. एटला वडे; एटले, माटे; एटलामां

एतलउं आनंस्त. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. रूपच. षडाबा. आटलुं, एटलुं [सं.इयत् +तुल्य]

एतलं *गुर्जरा.* एटलामां

ए ति जुओ एत

एतुं जुओ एतउं

ए-थां कादं(शां). एनाथी

एषाण नलाख्या. एंघाण, निशान, चिह्न (सं.अभिज्ञान)

एन अखाका. *मदमो. *वेताप. असल, खरुं, [खरेखरुं] (अ.ऐन); जुओ येन एम-थो नरका. एम ने एम, एवो ने एवो एमंतो देवरा. अतिमुक्त, [एक मुनिनुं नाम] एय, एयु उक्तिर. गुर्जरा. आ (सं.एतद्) एरसउ गुर्जरा. आवो (सं.ईदृश)

एराकण *आरारा. कृष्णवा. षडाबा.* इंद्रनो हाथी (सं.ऐरावण)

एरिस, एरिसु ऐ*तिका. तेरका. विराप.* आवुं, एवुं (सं.एतादृश)

एला ऋषिरा. इलायची (सं.)

एतियज *उक्तिर.* एकियो, एक प्रकारनुं गंधद्रव्य, [कुंवारपाठाना रसमांथी थतो पदार्थ] (सं.एलेयम्)

एळे अखाछ. वगर महेनते, फोगटमां, [अनायास] [सं.अफल]

एवड, एवडउं आरारा. उक्तिर. जिनरा. नलरा. प्राचीसं. *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). एटलुं, एवुं, आटलुं (सं. एतावत्)

एवंविष्ठ *गुर्जरा*. आ प्रकारनुं, आवुं (सं. एवंविध)

एवातण नरका. प्रेमाका. सौभाग्यवतीपणुं (सं.अविधवा+त्वन)

एवाल उक्तिर. बकरा चरावनार [सं. अजापाल] [रा.]

एषणासुमित *ऐतिका*. एषणासिमिति, निर्दोष आहारनुं ग्रहण, [साधुनो मिक्षाचर्या-विषयक विवेक] [जै.]

एषा आरारा. आ (स्त्री)(सं.)

एस अखाका. ओसरतां, दूर थतांथतां, [विनाश] [*अ.ऐस]

एस, एसु गुर्जरा. विराप. आ (सं.एष) **एह** आनंस्त. उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. वीसरा. षडाबा. ए, आ (सं.एष:)

एड भणी उपवा. एवी एडिवूं नलाख्या. एवं एडी ज आनंस्त. ए ज

एह *गुर्जराः* आवुं, आ; *तेरकाः* ए (सं.एषः) **एहे** उपवाः आनाथी, एनाथी (सं.एषः)

एहेवो स्थो चित्तसं. एवा प्रकारनो **एहेशी** *रूतस*. एंशी [सं.अशीति]

एंकार नरका. अहंकार, अभिमान; जुओ

एकार

ऐआण, ऐयाण जुओ एआण
ऐरावण ऐतिका. हाथी [सं.]

ऐशवर्ष चित्तसं. ऐश्वर्य

ऐंद्र प्राचीका. इन्द्र

ऐंद्री प्राचीका. इन्द्रिय

ओकली *गूर्जरा. षडाबा.* ओकळी, तरंग, तरंगनी भात (सं.उत्कलिका) **ओखण्डं** *प्रेमाका. विमप्र.* खांडवुं, छडवुं दि.उक्खण]सि.उत्सण्] **ओखणो** *प्रेमाका*. खांडणियो ओखद. औखद दशस्कं(२). प्रेमाका. वेताप. औषध. ओसड ओखघ, ओखघी *कादं(शा). प्राचीका. औषधि, दवा **ओखर** विमप्र, विष्ठानं भोजन [सं.अवस्कर] **ओखांगे** *प्रेमाका*. बराडा पाडे **ओगालइ** *उक्तिर*. फरीफरीने चाववूं, वागोळवं [प्रा.ओग्गाल] **ओगुणीस** षडावा. ओगणीस [सं.एकोन-विंशति ओघ अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका. जथ्यो, भंडार, समूह (सं.) **ओघउ** *उक्तिर. षडाबा.* ओघो, जैन साधुओ-न् रजोहरण (सं.अवग्रह) **ओघट** *अखाछ*. मुश्केली [सं.अवघट्]; जुओ अवघट, ऊघड

सामान्य अवस्था, [लोकबुद्धि, चीलाचालु समजो सि.ो **ओचरे** *नलाख्या. प्रेमाका.* उच्चरे **ओच्छव** *नरका. प्रेमाका.* **उ**त्सव ओछरंग कामा(त्रि). कामा(शा). उछंग, खोळो [सं.उत्संग] ओछंग कामा(शा). दशस्कं(१). प्रेमाका. उत्संग, खोळो **ओछाबल्ल** *पड़ाबा***. ढां**कवुं ते अवच्छादन) **ओझउ, ओझा** *उक्तिर. जिनरा*. उपाध्याय, शिक्षक **ओझड** *नरका.* झपट ओंझा जुओ ओझउ **ओट** *अखाका. अखाछ*. पडदो, आवरण, [आडश, अंतराय]; **कादं(शा).* [ओठुं, *आडश, *अंतरपट] [सं.अपवृत्ति] **ओटड** *नेमिछं. लावल. विमप्र.* ओटला उपर **ओटइ** *उक्तिर.* ढांके [दे.ओहट्ट] **ओटहिया** *षडाबा.* **(धूळ**मां) रगड्या **ओठंभ *** *जिनरा. षष्टिप्र*. आलंबन, [सहारो] (सं.अवष्टम्भ); जुओ उठभ **ओठंभइ** *उक्तिर. षडाबा*. टेको आपे, अढेले (सं.अवष्टम्भते)

ओठी उंक्तिर, ऊंटसवार (सं.औष्ट्रिकः) [रा.]

ओढ़ं प्रेमाका. पडदो, अंतराय; *लावल*.

ओडे *अखाका.* ओथे, नी पाछळ, [आडशे]

ओठीडा *ऐतिका*. ऊंटसवार

समर्थन माटे दृष्टांत

ओघराळा *प्रेमाका*. लपेडा. रेला

ओघसंज्ञा *आनंद्रत*. "चित्तनी विचारशून्य

ओड उक्तिर. ओरिस्सा (सं.ओड्रः) ओडइ "षडाबा. प्रितिरूप -- समान आकार-ने लीधे] [दे.अवडअ=चाडियो] **ओडइ** *नलाख्या*. होडमां मूके (दे.हुडू); जुओ उडवुं ओडइ, ओढे अभिऊ. ऐतिरा. चतुचा. नरका. नलाख्या. प्रेमाका. मोसाच. लावल. वेताप. सिंहा(शा). (हाय) लंबावे, धरे, जुओ उडवुं ओडक उक्तिर. अटक, शाख, अवटंक **ओडणु** *विराप.* ढाल (प्रा.अङ्कुण) **ओडवर्तुं** गुर्जरा. प्राचीसं. विराप. साने धरवुं, तैयार करवूं **ओडाव्युं** *कृष्णवा.* लंबावव् ओडियां नलाख्या. शरतमां - होडमां मूक्यां (दे.हडू) ओडो (ओडो बांध्यो) *नरका.* अंतराय, अटकायत [करी], [आंतया] ओढ़े जुओ ओडइ **ओतराडुं** *प्रेमाका*. उत्तरादुं, उत्तर दिशानुं **ओतळी** *अखाका*. सरी जर्ड, जिाघो जर्डी **ओतावल** विमप्र. उतावळो **ओधार ****प्रेमाका.* [दुःखप्न] **ओदओ** *ऐतिरा.* ऊग्यो (सं.उदित) **ओरक** जुओ उदक **ओवाली पडावा.** झूंटवी [दे.उद्दाल]; जुओ उदालड **ओधम** *नलाख्या*. उद्यम, प्रियली ओधरे कामा(त्रि). कामा(शा). उद्धार पाने **ओधाण** *प्रेमाका*. उधाण, मोटी भरती

ओधार *प्रेमाका*. उद्धार **ओधारि** *षडाबा.* उधार, उछीनुं (सं.उद्धार) ओधाहुली उक्तिर. ऊंघाफूली, एक वनस्पति (सं.अधःपुष्पी) **ओषि** *गुर्जरा. विराप.* मर्यादा, अवधि; जुओ उधि **ओपटी *** प्रेमाका. [मूश्केली, संकडामण] **ओपम** *उषाह. मदमो*. औपम्य, उपमा, सरखामणी: जुओ उपम **ओपमा** *अखेगी. देवरा. नलाख्या*. उपमा, [सरखामणी] (सं.औपम्य) ओपरी विमप्र. उपर **ओपाए** *चतुचा*. उपाये **ओपाणुं** अखाछ. [घसाईने] ओप (चळकाट) पाम्यूं **ओभजउं ***विमप्र. [पाछो हठुं, नासुं] [सं. उद्+भंज्]; जुओ उभजइ **ओयणु** *गुर्जरा.* बगीचो (सं.उपवन) **ओयरइ** *षडाबा.* ओरे, रांधवा नाखे [सं. अवपूरयति] **ओर** *आनंस्त*. बीजुं [हिं.] **ओर** *अखाका.* **पट, असर ओरइ** *षडाबा.* **नजीकमां, ओरुं, वहेलूं** (सं.अवरः) [सं.आरात्]; जुओ उरि **ओरणी ****अखाका.* ओरण, खेतरमां अनाज ओरवानं साधन] **ओरस, ओरसीउ, ओरसु** उक्तिर. गुर्जरा. विमप्र, ओरसियो, चंदन घसवानो पथ्यर (सं.अवधर्षक) [दे.ओहरिस]; जुओ ओरीसउ

ओरहुउं *उक्तिर. *षडाबा.* अहीं, आ बाजु; ृजुओ उरहउं, ओहरी

ओरि *प्राचीका. [ओरडी, स्थान]; [रा. [सं.अपवारिका]] जुओ उरा

ओरिओ, ओरियो कादं(शा). प्रेमाका. ओरतो, अभिलाष, लहावो

ओरिया वीतवा *दशस्कं(१)*. ओरता पूरा थवा

ओरी *प्रेमाका*. सुधीमां, [लगभग]

ओरीसज उक्तिर. ओरिसयो, चंदन घसवानी पथ्यर (सं.अवघर्ष) [दे.ओहरिस]; जुओ ओरस

ओर्वशी नलाख्या. उर्वशी

ओल हस्तस. जामीन [हिं.]

ओल, ओळ * अखाछ. [रेखा, लीटी]; अखाका. पंक्ति, [वर्ग, प्रकार] [सं. आवलि]; जुओ उलि

***ओळ [ओर**] *अखाका.* गर्भ

ओलं उक्तिर. ओलो, चूलानी पाछळनो नानो चूलो

ओलखर जुओ ऊलखउ

ओलखाणउ *उक्तिर*. परिचय, प्रसिद्धि [सं. उपलक्षण]

ओलखियड *आरारा.* स्वीकार्यो, बनाव्यो (सं.उपलक्षित)

ओलग, ओलिग उक्तिर. गुर्जरा. चंद्रवा. नरका. नरप. विक्ररा. *विमप्र. विराप. सेवा (दे.ओलग्गा); जुओ उलग

ओलगइ, ओळगइ उक्तिर. ऐतिका. जिनरा. नरका. षडाबा. हरिख्या. सेवा करे (दे. ओलग्गा) [सं.अवलग्यति]; जुओ उलगइ

ओलगाणउ पंचवा. प्राचीसं. सेवक (क. कळिंग परथी); जुओ उलगाण

ओलजो **जिनरा.* [क्लेश अनुभवो]

ओलण *षडाबा. [ओसामण, आई करवुं ते, द्रवरूप] [दे.उल्लण]

ओलतु कार्द(शा). अळतो, लाखनी रंग (सं.अलक्तकः)

ओळपाणां *नरका*. झांखां पाड्यां, [सर. अळपाणां]

ओलवइ, ओळवइ उक्तिर. *गुर्जरा. विराप. छुपावे, संताडे (सं.अपलपति); नरका. *नरप. *पचावी पाडे, [चोरी ले, झूंटवी ले]; जुओ अउलवइ, उलवइ

ओलवडे नरका. *नरप. [आडशे], ओये ओलवा *नलाख्या. [आडश, पडदो, ओथ] ओलवे अखाछ. ओथे, [आडशे]; जुओ उलवे

ओलंघन *प्रेमाका*. उल्लंघन

ओलंडवुं *उक्तिर. वेताप.* ओळंगवुं (सं. ओलंडयति) [दे.ओलंड]

ओलंभइ *उक्तिर*. ठपको आपे, टोणो मारे (सं.उपालभते)

ओतंभड आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नरप(द). प्रेमप. उपालंभ, ठपको, मर्मप्रहार; जुओ उलंभड

ओलाश जुओ उलास **ओलां** *चतुचा.* भोळां **ओलि** *कृष्णवा.* [आडशे], गुप्त स्थाने

ओस अखाका. उक्तिर. झाकळ

ओलिउ जुओ दिथ ओलिउ **ओलिउं. ओल्यउं** *उक्तिर. विक्ररा.* ओल्युं, पेलुं, [आ] [सं.अवरिझ]; जुओ उलिउं **ओलिग** जुओ ओलग **ओली** *उक्तिर. ऋषिरा.* पंक्ति, श्रेणी (सं. आवली); जुओ उलि **ओलीजे ***जिनराः [क्लेश अनुभवीए]; जुओ ओलजो **ओले** *नरका.* ओथे, [आडशे] **ओढे चढ्यं** *अखाका.* बराबर तैयार थयुं [वावेतरनी - इंडानी हार थई] **ओळोसोळो *** *प्रेमाका.* जित्सव-अवसरी [गु.सोहलो परथी] **ओल्पउं** जुओ ओलिउं **ओत्हाणी** सपच. ओलायेली आग **ओवर (ओवरर)** *उक्तिर*. ओरडो (सं. अपवरकः) **ओशंकल, ओसंकल** **विक्ररा.* [ऋणमूक्त] [सं.उत्+शृंखल]; जुओ उसंकल **ओशंके. ओसंके** *नरका. प्रेमाका*. शरम के संकोच अनुभवे (सं.अपशंक्) ओशिकळ जुओ उशंकल ओशिंगळ. ओशीकल. ओशींकल. ओशींगल, ओसीकल, ओसीकळ

अवश्यायः) **ओसउ** *ऐतिका*. औषध **ओसप्पिणिसप्पिण** गुर्जरा. अवसर्षिणी-उत्सर्पिणी, ए नामना काळविभागो [जै.] **ओसरे** *नरका. *प्रेमाका. सिंहा(शा).* पाछा हठे, -थी दूर भागे, शरमाय; *उषाह.* दूर जाय (सं.अपसरति); जुओ उसरइ **ओसह** *षडाबा*. औषध ओसंकल जुओ ओशंकल **ओसंके** जुओ ओशंके **ओसाण ****दशस्कं(२). प्रेमाका.* **[स्व**त्व, पोतापण्], हिंमत, जुस्सो; *प्रेमाका.* ओळखनी निशानी, स्मरण **ओसामणु *य**डावा. आर्द्र करवुं ते, द्रवरूप] [सं.अंवस्रावण] **ओसार** *प्रेमाका***. पीछेहठ** [सं.अप-सार] **ओसीकल, ओसीकळ** जुओ ओशिंगळ ओसीसउं आरारा. नलरा. प्राचीफा. प्रेमाका. ओशीक् (सं.उत्शीर्षक); जुओ उसीसउं **ओहट्ट-** तेरका. घटवूं, ओछूं थवूं (सं.अव+ *घट्ट) **ओहड** **तेरका.* [रुकावट] [रा.ओहडणौ] [सं.अवघट] **ओहडणु ****षडाबा.* [रोकवुं ते, रुकावट] दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नलाख्या. [त्त.] प्रेमाका. मदमो. ऋण के भारमांथी मुक्त, **ओहरी** *विक्ररा.* [ओरी], नजीक; जुओ [बदलो वाळवो ते]; (सं.उत्+शंखल); ओरहुउं *हरतसः [ऋणमुक्त, बदलो वाळनार]; **ओहली** **षडाबा.* [घसीने] [प्रा.ओहलिय] **ओही ***षडाबा. [साधुनां वस्त्ररूप उपकरणो]

जुओ उशंकल

ओषधी *चित्तसं*, मादक पदार्थ

[सं.उपधि]

जोही बींट उक्तिर. साधुना वस्त्ररूप उपकरणोनो वींटो (सं.उपधिवेष्टिका) जोहोणुंका प्रेमाका. आ सालना, आ वर्षना, चालु समयना [सं.अधुना परथी] जोहोलाई प्रेमाका. ओलाई, शांत थई जोहोलावीए अखाका. ठंडुं करीए [दे. ओल्हव] [सं.उद्र परथी] जोहोलाश, ओहोलास कामा(त्रि). प्रेमाका.

उल्लास; जुओ उलास **ओहलाद** कादं(शा). आनंद (सं.आह्लाद)

औखद जुओ ओखद **औलिखि** *उषाह*. ओळख, ओळखाण कर

क गुर्जरा. पंचवा. के, अथवा (फा.के) **कइ**ं गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. केटलीये, केटलीक (सं.कापि) [सं.केऽपि]; जुओ केइ

कइ आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. कां [तो], अथवा, के

कइ *ऐतिका*. कृत, [कर्युं]

कइच्छरी *गुर्जरा.* कोई अप्सरा; जुओ अच्छर **कइजिनइ** *षष्टिप्र. कोईकना ज*

कड्य गुर्जरा. क्यारे, [क्यारें पण] (सं.कदा+ अपि)

कड्यइ जिनरा. क्यारेय; **ऐतिका**.क्यारेक, कोई वार

कइर विक्ररा. शृंगामं. स्थूलिफा. केरडो, वृक्षविशेष [सं.करीर]

कइरीय *हरिवि*: केरी (फळ) कइलि प्राचीफा. केळ (सं.कदली) कइवार वसंफा. वसंवि. वसंवि (ब्रा). *विभप्र. *श्रंगामं. सिंहा(म).* प्रशंसा; जुओ कयवार **कइसा** लावल. केवा [सं.किद्रशकम्] **कउ** आरारा. कहो **कउ** वीसरा. केरुं, -नुं **कउगला** जिनसः कोगळा कउछ उक्तिर. कौवच, ए नामनी वनस्पति (सं.कपिकच्छू:) **कउट** आरारा(व). उक्तिर. षडाबा. कोठुं, ए नामनी वनस्पति (सं.कपित्य) **कउडां, कउडी** उक्तिर. उपद्या. प्राचीसं. *षडाबा.* कोडी (सं.कपर्दिका) कउडि-जक्ख तेरका. कपर्दियक्ष, एक यक्ष **कउण** गुर्जरा. वीसरा. षडाबा. कोण (सं.कः कउतिग *गुर्जरा. षष्टिप्र*. कौतुक, आश्चर्य, [नवाईभर्यु]; आरारा. तेरका. प्राचीफा.

कउतिय गुर्जरा. षष्टिप्र. कौतुक, आश्चर्य, [नवाईभर्यु]; आरारा. तेरका. प्राचीफा. कौतुक, आश्चर्य; लावल. षडाबा. कौतुक, [विनोद, गम्मत]; *वीसरा. [अभिवादन]; जुओ कुतिग, कुतिक, कुहुतग, कौतग

कडितयामणी *उपवा*. कौतुक उपजावनारी, [मनोरंजक, रसभरी]

कउमुदि भेर *देवरा*. भेरीनो एक प्रकार **कउरव** *गुर्जरा*. कौरव

कउल गुर्जरा. विराप. कोळियो (सं.कवल) कउलिउ, कउली प्राचीफा. प्राचीसं. *पंजो, [मूठी] (सं.कवल)

कडसीसउ *उक्तिर. प्राचीसं*. कोसीसां. कांगरां

(सं.कपिशीर्षकम्); जुओ कोसीस **कए** *ऐतिका.* करातां [सं.कृते]

ककाण नलरा. बलूचिस्तान पासेनो देश, कयकाण, केकाण

ककाह आरारा(व). एक प्रकारनो कपास (हिं.ककही) ?

कक्षापुट प्रेमाका. काख, बगल(सं.)

*कखर(खर) विमप्र. खर कर्म, [कठोर कर्म], [जेमां अनेक जीवोनी हानि थाय छे एवां काम – धंधा]; जुओ खंतिक्खर

कखा अखाछ. कषाय, मेल, विकार

क्र**कांवर** सिंहा(शा). काषाय वस्त्र, [भगवां वस्त्र]; जुओ काषांबर

कच नलरा. कच्छ देश; जुओ काछ

कचकडउ *ऐतिका.* वस्तुविशेष, [*कचकडानुं आभूषण के रमकडुं]

कचको *नरका.* *कचकचाट, *नकामी माथा-फोड, [मरडाट]

कचकोल *चंद्रवा. [भिक्षापात्र] [फा. कच्कूल]

कचनारि *आरारा(व)*. कचनार, एक वृक्ष (सं.कांचनार)

कचपच, कचिपिच प्राचीफा. [कचकच], ककळाट, [नकामी माथाफोड, तकरार]; नलरा. न समजाय तेवो अवाज, [*ककळाट]

ंकच-भूषण *प्रैमाका.* वाळनुं भूषण, चोटलानो गोफणो(सं.)

किंच आरारा(व). एक वनस्पति, किंचियुं के काचकुं ?

कवित्र नलाख्याः कुचित्र, कडूपुं

कचुंडली विमप्र. कचोळुं, [(फूल माटेनुं) पात्र] [प्रा.कचोलय]

कचूर *आरारा(व)*. कचूरो, एक वनस्पति (सं.कर्चूर)

"कचूंबरि ["कचूदरि] गुर्जरा. कच — वाळनी उपर

कचोल, कचोळ ऐतिका. वीसरा. कचोळुं: जुओ कचुंडली, कंचोला

क्योलडी जिनरा. कचोळुं

कचोल्डु, कचोलय तेरका. नलरा. प्यालो, [कचोळुं] [प्रा.कचोलय]

कचोली, कचोलीय वसंवि. वसंवि(ब्रा). कचोळुं (प्रा.कचोलय)

कचोलक यडाबा. कचोळुं (प्रा.कचोलय) **कच्छ** *प्रेमाका. का*चबों (सं.कच्छप)

कछोटी नलरा. लंगोटी (प्रा.कच्छोटी) [सं. कक्षापट्टिका]

कछचो *प्रेमाका.* कस्यो, बांध्यो; जुओ काछ कछवो

कज अंबरा. *प्राचीका. कमळ (सं.) **कजा** *अखाछ. [हुकम, फेंसलो, निर्माण] (फा.)

कजाकजीया *सिंहा(शा)*. कलहटंटा(अ.) **कजामणु (तिलक जामणु)** **विमप्र*. [जमणे अंगे टीलुं]

कज आरारा. कार्य; काजे, माटे कज़ल तेरका. –, [काजळ] (सं.) कज़ारंभ ऐतिका. कार्यारंभ, कार्यप्रवृत्ति कज़ि उपाह. गुर्जरा. काजे, माटे (सं.कार्ये) कट प्रेमाका. कटि, केड; जुओ केसरी-कटे कटक चित्तसं. कड्डं [सं.]

कटकाइ मदमो. रूस्तस. पराक्रम, बहादुरी [सं.कटक परथी]

कटरि ऐतिका. आश्चर्य अने प्रशंसासूचक अव्यय अप.ो

कटले देवरा. केटले [सं.कियत्+त्ल्य]

कटा *नलरा. विमप्र. कट्टा, कट्टर, दूढ, अणनम (योध्दा)]

कटाभेद "अखाका. ["आवरणभंग]; जुओ कटाह

कटारं लावल. कटार [सं.कत्तरिक]

कटाव ग्रेमाका. रंगीन कापडना वेलबुट्टा जेना पर सीवेला होय तेवं कापड

कटाह * अखाका. [*आवरण] [सं.]; जुओ कराभेद

कटिक कादं(शा). लश्कर, सेना (सं.कटक)

कटिमेखला प्रेमाका. कमर पर बांधवानो घूधरीवाळो कंदोरो [सं.]

कटिलंक कशस्कं(१). केडनो वळांक

कटीरक *गुर्जरा.* पोलो भाग, खाडो(सं.) **कटुक** *षडाबा.* कडवुं (सं.)

कट्ट प्राचीसं. कापवुं (सं.कृन्तु)

कर्डु ऐतिका. कष्ट, [कष्टकारक कर्म]. [पापकर्म]

कडिणुं *प्रेमाका.* कठण[पणे], घणुं, भारे]

कठूबरि आरारा(व). कोठींबडी, कोठीमडी (सं.कपित्य परथी)

कठोदर *आरारा.* कबजियात (सं.कष्टोदर)

कडू (कडू लेसर्ज) शीलक, काष्ट्रभक्षण करीश, चिता सळगावी बळी मरीश

कड उषाह. ऐतिरा. नेमिछं. केड (सं.कटि) कड तेरका. एक वनस्पति, [एक प्रकारनें घास, खस]

कडउ उक्तिर. कडुं, [आभूषण], (सं.कटक) कडकडइ उक्तिर. [*चकळवकळ थाय] (सं.कटकटायते) [*दे.कडयडिअ]

कडकडता *षष्ट्रियः शिद्ध कियावंत, दृढ आचारशील]

कडक्ख तेरका. प्राचीफा. कटाक्ष, प्रेमभरी वांकी दृष्टि

कडखंड प्राचीफा, आंखनो कटाक्ष करे

कडलु शृंगामं. आंखनो कटाक्ष

कडग *देवरा.* कडुं, [हाथनुं आभूषण] (सं. कटक)

कडिंज *नलराः [कसीने पहेर्यो]

कडडेरा (?) तेरका. वधु करडा ? [*कठोर, *रुक्षी

कडण, कडणि *उक्तिर. तेरका.* [पर्वतनो] चडाव, टूंक

कडवले *प्रेमाका*. केड मांडीने. लंबावीने] [सं.कटिस्थल]

कडनौ *जिनरा. [केडनो, पासे छे ते]

कडब अक्तिर. विमप्र. सूकी चार, (सांठा)

कडली *नेमिछं.* हाथना कांडानुं एक आभूषण (सं.कटक+अप.इल्ल)

कडवड वीसरा. कडी, [पद्यनो एकम] (सं. कडवक)

कडहटड उक्तिर. [*कटासणुं – साधुओनुं ऊननुं पाथरणुं] (*सं.कटाइकम्)

कडाजुड *प्रेमाका*. भींसोभींस, पिरस्पर

भिडायेला

कडाह *आरारा(व). तेरका*. वृक्षविशेष (प्रा.) (सं.कटाह)

कडाह, कडाउह गुर्जरा. षडाबा. कडाई, कडायो (सं.कटाहः)

कडि * नलरा. [पाछलो भाग]

किंड उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. *विराप. वीसरा. केंड, कमर (सं. किंट); विक्ररा. केंड उपर

कडिइ जुओ आकडिइ

कडिचीर गुर्जरा. केड पर पहेरेलुं अधोवस्त्र

कडिदोरज *उक्तिर*. कंदोरो [सं.कटि+दे.दोर]

कडियाली *षडाबा. [लगाम] [रा.]

कडिलंक जुओ कंडिलंक

कडीआरा *कामा(त्रि).* एक जातना सोनी **कडीउ** जुओ कंडीउ

कडु, कडुं, कडू आरारा(व). उक्तिर. नरका. कडो, अंदरजो (सं.कटुक, कुटजे)

कडु (कुड) *अखाका. [भारे कपट, कुडकपट]

कडुआवीया शृंगामं. दुभाव्या, [पीडित, संतप्त] (दे.कडुयाविय)

सतता (द.कडुयावय) **कडुउं** *कादं(शा). गुर्जरा*. कडवुं (सं.कटुक)

कडुछ उक्तिर. कडछो [दे.कडुच्छय]

बहुडी उक्तिर. कडछी [दे.कडुच्छय]

कडुय *तेरका.* कडवुं (सं.कटुक)

क्डुक्ड वीसरा. कडवुं, कठोर (सं.कटुक)

कडुं, कडू *नरका*. जुओ कडु

कड्कं उपबा. नलरा. वाग्भवा. शृंगामं. कडव्रं (सं.कट्क) कडे कीयां नरका. *जीत्यां, [प्रभुत्व मेळव्युं] कडेवर आनंस्त. प्राचीसं. कलेवर, शरीर कडे जिनरा. केडे. पाछळ

कड्ढीय *गुर्जरा.* काढी, खेंची (सं.कर्ष्)

कड्यें अखाष्ठ. कटिए, केड पर

कडा अखाका. प्रेमाका. मदमो. वेताप. कडाई (सं.कटाहिका)

कडावुं लीह *लावल. [हद वाळुं, शिरमोर ठहं]

कण **नलरा*. [अनाजना दाणा, भिक्षान्न] [सं.]

कणअर विमप्र. करेणनां फूल [सं.कर्णिकार] कणइअर प्राचीफा. करेणनुं झाड, (सं. कर्णिकार)

कणइर-कंब प्राचीसं. करेणनी सोटी (सं. कर्णिकारकम्बा)

कणज्ज उक्तिर, कनोज (नगर) (सं.कन्य-कुद्भम्)

कणग देवरा. सोनुं (सं.कनक)

कणगाविल गुर्जरा. तपनो एक प्रकार, जेमां उपवासोनी हारमाळा होय छे [जै.] (सं.कनकाविल)

कणदियो नरका. स्त्रीओना हाथना कांडा उपर पहेरवानुं एक घरेणुं

कणदोरो ऐतिरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. कंदोरो (सं.कनकदोर)

कणब *चारफा*. कुटुंब

कणमण्तुं शृंगामं. [कणकणवुं], त्रासवुं, दुःखी धवुं

कष्म्य ऐतिका. गुर्जरा. विक्रच. सोनुं

(सं.कनक)

कणपर आरारा(व). उक्तिर. ऋषिरा. करेण-नुं झाड (सं.कर्णिकार)

कणयाचल *ऐतिका. विक्ररा*. कनकाचल, मेरु पर्वत

कणंवटिया *प्रेमाका.* कण – दाणानी भिक्षा मागनारा ब्राह्मण (सं.कणवृत्ति परयी)

कणवार * नलरा. *सिंहा(म). [सारसंभाळ]

कणहतज *उक्तिर. "विमप्र.* रोजी तरीके अपातुं अनाज (सं.कणभक्तम्)

कणहू वाग्भबा. कोईक [सं.कः परथी]

कणि *आरारा*. कन्या, पुत्री (रा./सं.कनी) कणि कर्पमं. कोणे (सं.केन)

किण दशस्कं(२). नलाख्या. कने, पासे [सं.कर्णे]

किंग [तीहां किंग] सिंहा(म). पासे, कने, [त्यां] (सं.कर्णे); जुओ तिहां किणइ

कणिक "यडाबा. [कणेक, पाणीथी बांधेलो लोट] [सं.कणिका; दे.कणिका]

कणियार *उक्तिर.* करेण (सं.कर्णिकार)

कणे *पंचवा*. कोईए [सं.कः परथी]

कणेर-काम, कणेरकांब दशस्कं(१). प्रेमाका. करेणनी सोटी [सं.कर्णिकार-कम्बा]

कतीफा *हम्मीप्र. [मखमलनुं कपडुं] [अ.; रा.]; जुओ कथीपा

कतूहल नलरा. [कुतूहल], कौतुक, [विनोद; विनोदक्रीडा]

कतेब अखाका. *किताब, *ग्रंथो, [इस्लामी धर्मग्रंथ], कुरान [हिं.; रा.] कत्तिग, कत्तिय तेरका. प्राचीसं. कारतक (सं.कार्तिक)

कथलो कीजे *मोसाच.* कूचो करवो, बगाडवो

कथातां प्रेमप. कथतां, कहेतां

कथीपा *ऐतिका.* वस्त्रविशेष; जुओ कतीफा **कथीर** गुर्जरा. एक हलकी धातु

कदधस (कदध स) सिंहा(म). संकट ?, [*ते संकट] [*सं.कद्+अध]

कदर्ज *प्रेमाका*. कदरूप (सं.कदर्य); जुओ कदर्य, कद्रज

कदर्बिवरं उपवा. *अपमान करवुं ते, [सताववुं ते] [सं.कदर्थय्]

कदर्य दशस्कं(२). कृश, [कदरूपुं] (सं.); जुओ कदर्ज

कदिल, कदली आरारा(व). तेरका. प्रेमाका. केळ (सं.); जुओ कंदली

कवलीवल आरारा. केळनो गर्भ

कदलीयंभा *लावल.* केळना स्तंभ

कदलीपत्र *प्रेमाका*. केळनुं पांदडुं, [तेना जेवो वांसो]

कदलीहर वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(म). कदलीगृह, केळ-नो मंडप

कवही, कदिहिं ऋषिरा. प्राचीसं. क्यारेय पण [*सं.कदा+हि, किं+दिवि+हिं]

कदाचि कादं(शा). नलाख्या. कदाच (सं. कदाचित्)

कद्रज *प्रेमाका*. कदरूप; *अखाका*. मेल (सं.कदर्य); जुओ कदर्ज **कडु-जात, कडु-सुत** दशस्कं(१). प्रेमाका. कडुनां संतान, नाग

कनक अंबरा. आरारा(व). धंतूरो (सं.)

कनककेलबंध *प्रेमाका*. सोनेरी के सुवर्णना चूनाथी बद्ध – युक्त

कनककेवडी *आरारा(व)*. केवडानी मादा जात (सं.कनककेतकी)

कनकफल जिनरा. धत्रा[नां बी] (सं.)

***कनकवजी (कनवजी)** *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात, [*कनोजी, *कनोज प्रदेशना]

कनात *नरका.* तंबुनी कपडांनी भींत, कापडनो पडदो

कनेजर गुर्जरा. काननुं एक घरेणुं (सं.कर्णपूर) कन्त जुओ कंत

कन्य गुर्जरा. प्रबोप्र. खांध, खभो (सं.स्कन्ध) कन्न उपाह. तेरका. कान (सं.कणी)

कन्न *गुर्जरा. तेरका.* कन्या

कम *गुर्जरा.* कर्ण (सारथिपुत्र)

कन्यो *दशस्कं(२).* अत्यंत प्रचंड कदनी कन्या

कन्ह *गुर्जरा. प्राचीसं.* कृष्ण

कन्हड् उक्तिर. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. विराप. धडाबा. षष्टिप्र. कने, पासे (सं.कर्णे)

कन्हड *गुर्जरा*. कृष्ण

कन्हित उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. विक्ररा. कने, पासे (सं.कर्णे)

कन्हा जिनरा. पासे [सं.कर्णे].

कन्हेली प्राचीफा. कने, पासे (सं.कर्णे)

कपर्दक *पड़ाबा.* कोडी (सं.) कपाट नरका. प्रेमाका. धडाबा. कमाड, बारणुं

(सं.)

किपला, किपलावर्णी अखाका. प्रेमाका. धेरा बदामी रंगनी (सं.)

कपीलंड उक्तिर. कंपीलो, एक वनस्पति (सं.काम्पिल्यम्)

कपीलकृत *मदमो*. केशपाशनुं उपमान, [काळा रंगनुं]

कपीवार *कामा(त्रि). [रविवार] [सं. कपिवार]

कपोल *आरारा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा)*. गाल (सं.)

कपोले कर वड़ *प्रेमाका.* [गाले हाथ मूकी], निराश थई

कप्पड *ऐतिका.* कपडां, वस्त्र [स.कर्पट]

कप्पतरो *ऐतिका.* कल्पतरु, कल्पवृक्ष

कप्पयर *ऐतिका.* कल्पतरु, कल्पवृक्ष

कप्पिय *तेरका*. काप्युं (सं.कर्तित)

कफ *चित्तसं.* कप, चकमकना तणखा झीलवानुं रू, जामगरी

कबची *हम्मीप्र.* *एक प्रकारनुं बख्तर, [*कवच धारण करनार सैनिक]

कवधी *विमप्र.* कुबुद्धि, कमअकल **कवरी** अधिरा, दशस्कं(१), प्रेमाका, चीव

कबरी ऋषिरा. दशस्कं(१). प्रेमाका. चोटलो (सं.)

कबही *आरासा.* क्यारेय (हिं.) [सं.क्व+हि] कबंघ *गुर्जरा. प्रेमाका.* धड (सं.)

कबाइ *वीसरा*. जामो, झभ्मो (फा.कबा) **कबाडी** *सिंहा(म)*. कठियारो कबाड्या पंचवा. कदरूपा, खराब, [खवायेला, सडेला, भांग्यातूट्या] (*सं. कर्बट); जुओ कवाड्यउ

कबाडी अभिऊ. *शिकारी; *लुची, *प्रपंची, , *जूठी

कबाहि विक्रच. जरीनो जामो, वाघो (फा. कबाह); जुओ कुलह कबाइ

कवांन *प्राचीफा. मदमो*. कामठुं, धनुष्य (फा.कमान)

कबुएक मदमो. क्यारेक (हिं.कबहु+क) [सं.क्व+खलु+क]

कबुध सिंहा(शा). कुबुद्धि

कबुषक सिंहा(शा). कदीक; जुओ कबुएक

कबुल करो मदमो. [अपनावो], पोताना तरीके स्वीकारो

कभाअ, कभाय कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेमाका. अंगरखुं, झभ्भो, कसबी वाघो [फा.कबाह]

कम चतुचा. क्यम, केम

कमकेंहे चंद्रवा. कमखे (फा.कम्खा)

कमन्य प्राचीसं. चरणाग्र (सं.क्रमाग्र)

कमठ *प्रद्युचु. [ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्मबंधनो] (सं.कर्म+अष्ट); जुओ कमढ

कमठाय प्राचीसं. कमठाण, [वांस वगेरेथी ऊभुं करेलुं काचुं माळखुं] [सं.कमठ परथी]

कमढ [कमठ] *प्राचीसं. [ज्ञानावरणीय आदि आठ कैर्मबंधनो]; जुओ कमठ कमज गुर्जरा. विक्ररा. कोण, कयुं [सं.कः पुनः]

कमल *वेताप.* मस्तक, ब्रह्मरंघ; *अभिक.* शीश [सं.]

कमलउ उक्तिर. *कमळो (सं.कामलकः)

कमलणी *आरारा*. कमलिनी

कमलनहीणे प्रेमप. कमलनयने कृष्णे

कमलमाखणी चतुचा. कमलतंतुनो आहार करनार हंस, हंसिणी [सं.कमल+भर्स]

कमलभू अखाका. कमळमांथी उत्पन्न थयेला ब्रह्मा [सं.]

कमलभू-तन दशस्कं(१). ब्रह्माना पुत्र नारद कमल-मृणाल वसंवि. वसंवि(ब्रा). कमल-नाळ, कमलदंड (सं.)

कमलंतरि गुर्जरा. कमळनी अंदर

कमल-सकुंअला लावल. कमळ जेवा सुकोमळ, सुंवाळा

कमला आरारा. लक्ष्मी, श्री, वैभव; *ऐतिका.* लक्ष्मी [सं.]

कमलाइ *आरारा. कामा(त्रि).* करमाय [सं. कलाम्]

कमलागेह गुर्जरा. लक्ष्मीना निवास समान, [धनसमृद्ध] (सं.)

कमलाणी *आरारा*. करमाणी [सं.कलाम्] कमलिणि *गुर्जरा*. कमळनो छोड (सं. कमलिनी)

कमली, कवली उक्तिर. वांसनी पट्टी अने कपडानुं बनेलुं पोथीओनुं एक प्रकारनुं बंधन [*दे.कवलिआ]

कमाइ *आरारा. नेमिछं.* करे, कामकाज करे, (तैयार) करे, [बनावें] (सं.कर्म परथी) [सं.कर्मापय]; जुओ कुडकमाइ
कमाण आरारा. [धनुष्यनी] कमान
कमायुं आरारा. लावल. कर्युं (सं.कर्म
परथी); आरारा. कामकाज कर्युं
कमावइ आरारा. तैयार करे, [चढवे, रांधे]
[सं.कर्मापय]
कमावीइं आरारा. -नी तैयारी थाय
कमेडी वीसरा. एक जातनुं कबूतर
कमोवनी दशस्कं(२). कुमुदिनी
कमूहरित हम्पीप्र. खराब मुहूर्तमां
कम्म उपवा. कर्म; तेरका. नेमिछं. कर्म(बंधन)
कम्म "जिनरा. [कार्मण शरीर — जे जीवने

कम्म *जिनरा. [कार्मण शरीर – जे जीवने वळगेलां कर्मोनुं बनेलुं होय छे, आ शरीरनी प्राप्ति करावनार नामकर्म] [जै.]

कम्मपयि *ऐतिका.* कर्मप्रकृति, [कर्म-बंधनना प्रकार]

कय *नलरा. प्राचीसं. अथवा, के **कयत्य** तेरका. कृतार्थ

क्यर *आरारा. उक्तिर. नलरा.* एक वृक्ष-विशेष, केरडो (सं.करीर)

कयित *प्राचीसं.* केळ (सं.कदली)

कयवन्नउ प्राचीसं. कयवन्नो, कृतपुण्य, एक श्रावकनुं नाम

कयवार *प्राचीफा. *विमप्र*. प्रशस्ति; जुओ कड्वार

क्यंब तेरका, कदंब

कया कृष्णबा. काया (छंद खातर 'कया') कयाणउं प्राचीसं. करियाणुं (सं.क्रयाणकम्) कयावि जिनरा. कदापि, [क्यारेय] करं पंचवा. कह्यं (सं.कथित) करअल *गुर्जरा. [हाथ] (सं.करतल) करकडा वेताप. ककडा, कटका करकडा प्रेमाका. कागारोळ, [दुःखना चित्कार] [हिं.करकना]

करकरो "नरका. प्रेमाका. [खरबचडो], घसाया विनानो [सिक्को]; अखाका. "कठण, [करडो, आकरा स्वभावनो]

करकस, करकसु * वसंफा. ***वसंफा(ल)**. **वसंवि. *वसंवि(ब्रा). विमप्र.* आकरा, [दृढ, कसीने] (सं.कर्कश)

करखे नरप. खेंचे, [*उत्तेजित थाय] (सं. कृष्) [हिं.]

करगर * अखाका. *कर्पूमं. विकरा. *विमप्र. कचकच, [ककळाट]; जुओ किरगिरइ

करजडो अभिक. [कणजी], कणेजरो, एक प्रकारनो छोड [सं.करंज]

करजाळी *दशस्कं(२).* कजराळी, काजळनी दाबडी

करट ऐतिका. हाथीनुं गंडस्थळ, लमणुं [सं.]

करिंट ऐतिका. हाथी [सं.]

करडउ जुओ सरडउ

करिंड प्राचीसं. वाद्यविशेष [दे.करटी]

करण आरारा. लावल. कर्ण, कान

करणइ "गुर्जरा. नेमिछं. विमप्र. रडे, आक्रंद करे, [कणसे]

करणकतूडल "गुर्जरा. [ज्योतिषविषयक एक ग्रंथ, ज्योतिषशास्त्र] (सं.करण-कुतूहल)

करणढ *चंद्रवा.* करणाट नामे एक वाहः;

जुओ करणाट

करणहार, करणहारु उक्तिर. उपवा. नलरा. करनार (सं.करण+कार)

करणाट करतास. एक वाजुं; जुओ करणढ करणाहर उक्तिर. करनार, करवा इच्छनार करणी ऋषिरा. हस्तिनी, हाथणी (सं.करिणी) करणी विमप्र. काज, वरा

करणी, करणीअ नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). करेण (सं.कर्णिकार)

करणीकर *आरारा.* हाथणीनी **सूं**ढ (सं. करिणीकर)

करणीकर *आरारा(व).* गरमाळो (सं कर्णिकार)

करतम्य, करतव्य चित्तसं. कर्तव्य, कर्म, क्रियाकारित्व

करताकारैता अखेगी. कर्ता अने कारयिता, करता-कारवता

करतार गुर्जरा. प्राचीसं. सृष्टिकर्ता, किरतार, [ईश्वर] [सं.कर्ता]

करतारथ *आरारा*. कृतार्थ

करतारि *आरारा*. *करत्तलमां, *हथेळीमां, [हाधमां]

करतुत, करतुं, करत्रुत प्रेमाका. वेताप. सिंहा(शा). करतूक, [कार्य, कृत्य], आचरणरूप प्रवृत्ति

करपट, करपटि आरारा(य). तेरका. करपटी, कांकडनुं झाड

करपण *आरारा.* कृपण, लोभी

करपा *लावल.* *करपडी, *कापवानुं एक ओजार, [*दांता]

करपा [*करभा] *लावल.* [मदनियां]

करपी *नंदब. प्रेमाका. *मदमो*. कृपण, कंजूस; *मदमो.* –, [कृपण] जुओ क्यरपी, क्रपी

करब तेरका. एक वनस्पति

करबक गुर्जरा. कुरबक, [कांटासेरियो], एक वृक्ष

करबुज *दशस्कं(२).* **कु**ब्जा, [कूबडी]

करम *आरारा.* ऋषिरा. ऊंट (सं.)

करमा जुओ करपा

करम प्रेमाका. कर्म, भाग्य; विमप्र. कर्म, [भाग्यनिर्माण]; तेरका. कर्म[बंधन]

करम *प्रेमाका*. डगलां, पगलां (सं.क्रम)

करमइता जुओ करमि

करम काढवां प्रेमाका. फळ पामवां, परिणाम मेळववुं, [पराक्रम बताववुं]

करमना भोग *प्रेमाका*. नसीबनी माठी दशा करमने पार *प्रेमाका*. कर्म — भाग्य पण

न बनादी शके तेवुं, असाधारण

करमपासो लावल. कर्मनां बंधन [सं. कर्मपाश]

करमलो नरका. दहींमिश्रित भात [सं.करंभ] करमा-धरमा ग्रेमाका. करेलां कर्म अने धर्म प्रमाणेना, [कर्मधर्म अनुसार]

करिम (करिमता, करमइता) लावल. कर्मी, कार्य- कुशळ

करमो दशस्कं(१). नरप(द). प्रेमाका. दहीं-भात (सं.करंभ)

करयल *गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा*. हथेकी, हाथ (सं.करतल)

करत *आरारा. प्राचीफां*. वाळ, वाळनो

बांधेलो गुच्छो (सं.कुरुत्त); जुओ कुरुल करलकेस रूपच. चांकडिया वाळ (दे.कुरुल+ सं.केश)

करलीइ ऐतिरा. कचवाय, [ककळाट करे]; जुओ कुरलइ

करवर गुर्जरा. विराप. करवडो, [नाळचा-वाळो लोटो] (सं.करक)

करवडो *दशस्कं(१). प्रेमाका.* नाळचावाळो लोटो

करवतुं *हरिख्या. [इंगोरो, नानी डांग] [सं.करवेत्रक]

करवर तेरका. एक वनस्पति, [*करवीर, *करेण]

करषठ *विमप्र. [मृत्यु]

करवंदी तेरका. करमदी (सं.करमर्दिका)

करवाल *आरास. गुर्जस. विक्रच. विक्रस.* शीलक. तलवार (सं.)

करवाहुं *प्रेमाका*. देवाळुं

करवी लावल. करवडी, नाळचावाळी लोटी [सं.करक]

करबीर तेरका. एक वनस्पति, [करेण] (सं.) करशंपुट करी कामा(शा). हाथ जोडी

करशण सिंहा(शा). खेती, ऊभो मोल (सं. कर्षण)

करशंजी *मदमो.* खेडूत (सं.कर्षण+ई)

करसंख उक्तिर. खेडूत (सं.कर्षक)

करसण अखाछ. अखेगी. ऐतिरा. कृष्णबा. *लावल. खेती, वावेतर [सं.कर्षण]

करसणी अखाछ. अखेगी. उपबा. सम्यचो. खेडूत (सं.कर्षण+इ) करसणु उक्तिर. खेती (सं.कर्षण)

करसाण "अखाका. [अग्नि] [सं.कृशानु] करहती "उषाह. [करेढी, गढ के महेल परनी रक्षको माटेनी ओटली के पाळ]

करह, करहउ, करहु उक्तिर. प्राचीफा. वीसरा. षडाबा. ऊंट (सं.करभ); अभिऊ. ऊंट, [सांढणी]

करहला आरारा. ऊंट (सं.करभ)

करहा विमग्न. करा (बरफना) [सं.करक] करहा, करहां उषाह. विमग्न. ऊंट (सं. करम)

करहु जुओ करह

करंक ऋषिरा. कस्तुवा. हाडपिंजर, हाडकां (सं.)

करंकइ प्रद्युचु. (कागडो) ककळे करंगी प्राचीफा. हरणी (सं.कुरंगी)

करंड ऋषिरा. कादं(शा). विक्रच. करंडियो (सं.)

करंबच *उक्तिर.* दहींमिश्रित भात (सं. करंभः)

करंबक गुर्जरा. दहींमिश्रित भात (सं. करंभक)

करंबता, करंबा *नेमिछं. लावल.* दहींमिश्चित भात (सं.करंभक)

करंबु, करंबुत्तच आराराः वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). दहींमिश्रित भात

करंम मदमो. कपाळे; जुओ कर्म

कराअइ *उक्तिर.* कराय **कराड** *नरका.* भेखड

कराडा *दशरकं(२)*. भेखडो

कराडी *आरारा*. करावीने करार. करारु *आरारा. मदमो.* शांति, शाता (फा.) करालिउ, करालिय, करालियड, करालीय उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा.) पीडित (सं.करालित) **करावणहार** *षडीबी.* करावनार **करावणु** ०*षडाबा*. करावर्वु ते करां मोसाच. करे; पंचवा. करोशं, [करुं] करांबला, करांबुला *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). एक वृक्ष [बिजोरी के] करमदी (सं.करान्तक) करांबुल वसंफा. वसंवि. वसंवि (ब्रा.) करंबी, [दहींमिश्रित भात] (सं.करम्भक) करि आरारा, विमप्र, जाणे के (सं.किल) करि देवरा. -थी. थकी **करिअल** "गुर्जरा. [हाथ] (सं.करतल) करिकुंभा ऋषिरा. हाथीनां कुंभस्थळ [- लमणां] (सं.करिक्रम्भ) **करि जाणे** उषाह. जाणे के करियल कृष्णच. चारफा. स्थूलिफा. हाथ (सं.करतल) करिवउं उक्तिर. करवू करिवाल प्राचीफा. तलवार (सं.करवाल) करिंदो गुर्जरा. करीन्द्र, उत्तम हाथी करी प्रेमाका. हाथी [सं.करिन्] करी नरका. परहेजी. चरी **करी** *आरारा. देवरा.* -ने लर्डने. -थी वडे करी (तीणि करी) *विराप. तिने लीधे, तेवी रीते

करीमि कादं(शा). हाथीमय, हाथीथी भरपूर (सं.करिमय) लंकनी ["केसरी-लंकनी] *करी *रिांहा(शा). [सिंह जेवी कमरवाळी] करीस उक्तिर: छाणुं (सं.करीषः) **करुण** **गुर्जरा. तेरका.* एक वनस्पति, [करुणी] **करुण पताव** *चारफा*. करुण प्रलाप, आक्रंद करुणी, करुणीअ *वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा). एक पुष्पवृक्ष (सं.) **करुंडइ** *आरारा.* करंडियामां (सं.करंड) करुंबु उषाह. दहींमिश्रित भात (सं.करंभ) करूप नलाख्या. कुरूप, कडूपूं करेळी प्रेमाका. *कमकमाटी. रिरोषनी झाळी **करेवर** *आरारा-श्र***. कागडो (रा.)** करो *नंदब. [खेडूत] [रा.करौ] करोट, करोटक, करोटी षडाबा. एक वासण, कटोरो (सं.) करोडि गुर्जरा. करोड [संख्या] (सं.कोटि) **करोत** *चंदवा* करत करोस प्रबोप, करीश कर्णाटो प्रेमाका. कनातो, [तंबुनी कपडांनी भीति कर्णिके विमप्र. कानमां सि.कर्णके] **कर्त** *प्रेमाका*. कृत्य **कर्तुमकर्तुम्** दशस्कं(१). प्रेमाका. करवाने अने न करवाने, सर्जवाने अने नष्ट करवाने **कर्ष** *प्रेमाका*. कृप, कृपाचार्य कर्पासनां वस्त्र उक्तिर. सुतराउ चस्त्र **कर्बुज** *प्रेमाका*. कूबडी

कर्म आरारा. नरका. प्रेमाका. भाग्य; दशस्कं(२). प्रेमाका. कपाळ, ललाट; जुओ करंम

कर्मइंजिनइ *षष्टिप्र.* कर्मने ज कर्मक्षयाबास *आनंस्त.* कर्मक्षय करीने प्राप्त करेलुं [सं.]

कर्मडां *प्रेमाका*. *तुच्छ कर्मों, *चेनचाळा, [*भाग्य]

कर्मनिकाय ऋषिरा. कर्मसमूह(सं.)

कर्मलडो *मोसाच*. [दहींमिश्रित भात], [करमानो] कोळियो [सं.करंभ]

कर्मविपाक *आनंस्त. आरारा.* कर्मनी परिपाक, परिणाम [सं.]

कर्मी *नेमिछं*. (मोटां) **कर्म** करनारो, [पराक्रमी; भाग्यशाळी] [सं.]

कर्म्माइं विमप्र. करमाय, चिमोडाय [सं.कूर्मायते]

कर्योस लिलरा. "करीश, ["करशो, "करशे] **कल** प्राचीसं. कादव [प्रा.: सं.कल्क]

कल षडावा. [स्थळनुं] अंतर, [योजननो एक अंशो जि.]

कल *चतुचा*. कळियुग [सं.कलि]

कलक वेताप. औषधनो छूंदो, [चूर्ण] (सं. कल्क)

कलकलड़ गुर्जरा. विराप. कोलाहल करे, गाजे; कादं(शा). ककळाट करे; *चित्तसं. *नेमिछं. [तपे, धगे, दाझे]

कलकलतर्षे *षडाबा.* कळकळतुं, ऊकळतुं, दाझतुं (सं.कलकल्)

कलकंठी *ऋषिरा. [मधुर कंठवाळी स्त्री]

(ti.)

कलगलीय *गुर्जरा.* कोलाइल करी (सं. कलकल्)

कलगेर *प्रेमाका*. एक प्रकारनुं रेशमी वस्त्र के रेशमी साडी

कल घूटवी चित्तसं. कळ वळवी, मूर्छा दूर थवी

कलण अखाछ. चित्तसं. कलन, कळवुं (समजवुं) ते

कळण अखाका. खूंची जवाय एवो कादव कलणा अखाछ. कलना, कळवुं ते

कततरु *सिंहा(शा)*. [खेतरमां पार्केतुं] धान्य कळनार, [अंदाज काढनार] [सं.कल् परथी ?]

कळतो अखाका. [कादवमां] खूंची जतो कलत्र आरारा. नरका. प्रेमाका. स्त्री, पली (सं.)

कलश्रुक वेताप. खेतरमां पाकेलुं धान कळनार, [अंदाज काढनार] [सं.कल् परथी ?]

कलपइ आरारा. देवलोकमां (सं.कल्प)

कलपतरो *गुर्जरा*. कल्पतरु

कलपना *नरका. [दुःख, पीडा]

कळपना *अखाका. नरका. प्रेमाका.* कल्पांत, दु:ख, वलोपात

कळपावो *प्रेमाका.* **दुःखी करो**

कलपांत *गुर्जरा.* प्रलय (सं.कल्पान्त); जुओ कल्पांत

कलपे उक्तिर. प्रेमाका. कळपे, कल्पांत करे कलम ऋषिरा. चोखानी एक उत्तम जात (सं.)

कलमाधुरी नरका. अवाजनी सुंदरता, [स्वर-माधुर्य] •

कलमे शरीख अखाछ. कलामे शरीफ, कुरान कलयल गुर्जरा. तेरका. प्रद्युचु. कोलाहल (सं.कलकल)

कळककळ अखाछ. युक्ति अने विशेष युक्ति, [युक्तिप्रयुक्ति]

कळक्कळिया *प्रेमाका***. युक्तिबाज, विच**क्षण **कळविकळ** *नरका. [युक्तिप्रयुक्ति]

कलवो प्रेमाका. वरने जानीवासेथी नीकळतां पहेलां कन्यापक्ष तरफथी मोकलवामां आवतुं हळवुं भोजन, [सं.कल्यवर्त]; जुओ कलुवो; कलेवउ

कलश नेमिछं. समाप्तिनी कडीओ (सं.)

कलस, कलसा तेरका. वसंफा. वसंवि(ब्रा). षडाबा. कळश, घडो

कलहंसा ऋषिरा. हंस, [एक हंसजाति] (सं.)

कलही चित्तसं. कलाई, सीसानो ढोळ कलंकिय, कलंकीय वसंफा. वसंफा(ल).

वसंवि: वसंवि(ब्रा). कलंकित, जेनामां डाघ छे ते

कलंबी नलरा. लिलरा. कणबी, खेडूत (सं. कुटुंबी)

कला, कळा हरिख्या. मुखकळा, मुखमुद्रा, [शरीरकांति]; वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). (चंद्रनो) अंश, भाग

कलाई *उक्तिर*. कोणीयी कांडा सुधीनो हाथनो भाग [प्रा.कलाइआ] कलाउ *प्राचीफा*. [मोरनो] कलाप **कळाकर** *प्रेमाका***.** मोर

कळा पाडी *नरका. प्रेमाका*. [शरीरनी कांति झांखी पाडी], स्वरूप ढांकी, नवुं स्वरूप करी

कलामीय वसंफा. क्लान्त, थाकेल (सं. क्लामित)

कळा मूके *प्रेमाका*. क्षीण थाय, [कांति ओछी करे]

कलायु *लावल*. कळायो, समजायो, ओळखायो

कलाल *उक्तिर. विक्रच.* मद्य – दारूनो वेपारी (सं.कल्यपाल)

कलावी शृंगामं. कलापी, मोर

कलांण *कामा (शा)*. चंद्रवा. कल्याण

कलि *ऐतिरा*. कळवामां, समजवामां

कलि *आराम.* काळे (सं.काल)

कति तेरका. कलियुग

किल, किळ *आरारा. वीसरा.* कजियो, झघडो (सं.)

किलिट्टु **षष्टिप्र*. [कठिन, क्लेशजनक] (सं.क्लिष्ट)

किति कादं(शा). नेमिछं. प्रेमप. जाण्यो, ओळख्यो [सं.कलितः]; *कादं(शा). नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. डूब्यो, खूंप्यो, [गरकाव थयो] (सं.कलितः)

किल-कुरंग *लावल. [पापबुद्धिनो खराब रंग]

कित ज विराप. समज ज, मान ज कित्य, कितीय वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). (फूलनी) किळी; *वसंफा. वसंवि(ब्रा). (दीवानी) शग (सं.कलिका)

कतुवो नरका. कलवो, परणवा आवनार वरने माटे कन्यापक्ष तरफथी मोकलवामां आवतुं जमणनुं भाणुं [सं.कल्यवती; जुओ कलवो

कलुस तेरका. कलुष, [मेल]

कतुडु प्रबोप्र. कजियो (सं.कलह); जुओ कलवो

कलेक्ड उक्तिर. कलवो, कऱ्यापक्ष तरफथी वरने अपातुं प्रारंभिक हळवुं भोजन (सं.कल्यवर्त)

कली नंदब. जाणी

कलो अखाका. अखाछ. नरप(द). कलह, कजियो

कलोडी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एके वेतर न थयेली गाय, [वाछडी] (दे.कल्होडी)

कलोल ऋषिरा. प्रेमाका. विमप्र. कछोल, आनंद; चित्तसं. कछोल, [सागरनां] मोजां

कल्प प्रेमाका. चार युग जेटलो समय

कल्प अखाका. *-ने योग्य; [*कामकला, *कामोपभोग]

कल्पद्रम *गुर्जरा*. कल्पवृक्ष

कल्परस *अखाकाः [*कामरस, *कामोप-भोग]

कल्पवरखी चतुचा. कल्पवृक्ष समी

कल्पवेलि आनंस्त. इच्छित फळ आपनार वेल [सं.]

कल्पा *गुर्जरा*. [धारेला], निश्चित करेला (सं.कल्पिता) **कल्पांत** गुर्जरा. अखाका. विराप. युगनो अंत, प्रलय (सं.); दशस्कं(१). कल्पांत-कारी, भयंकर; जुओ कलपांत

कत्मध *हरिख्या*. पाप, मळ (सं.)

कल्याणय तेरका. कल्याणक, [जिन भगवानना जीवनना मंगल अवसर]

कल्यावंत *अंबरा*. कलावंत

कल्लाणवल्ली लावल. कल्याणरूपी वेली

कञ्चाळ "वीसरा. [शराब वेचनार] (सं. कल्यपाल)

कहां प्रेमाका. कडलां, स्त्रीओना पगनां कांडां पर पहेरवानां घरेणां [सं.कटक+लां]

कल्लोल *प्रेमाका*. छोळ, मोजां

कत्कार आरारा(व). धोळुं सुगंधी कमळ (सं.कह्नार)

कल्होडउ उक्तिर. वाछडो (दे.)

कवडउ उक्तिर. कोडो (सं.कपर्दकः)

कवडप्रपंच *गुर्जरा.* कपटजाळ

क्यडि-जक्खप्राचीसं. एक यक्ष, कपर्दियक्ष

कवण आरारा. गुर्जरा. तेरका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. रूपच. लावल. कोण, केवो, कयो, शो (सं.कः पुनः)

कवरधुं *प्रेमाका.* वधु पडतुं खराब, [वांकुं, अघटित]

कवराव ऐतिका. कविराज [रा.]

कवर्ते अखाका. खराब रीते वर्ते

कवली जुओ कमली

कवाड उक्तिर. कमाड (सं.कपाटम्)

कवाङ्यउ * वीसरा. [खवायेलुं, भांग्युंतूट्युं, सडेलुं]; जुओ कवाङ्या किंव लावल. केटलांये (सं.के अपि, प्रा. केवि)

कवि आरारा. कवे, वर्णवे (सं.कवति) कवित, कवित्त गुर्जरा. प्राचीसं. विराप. काव्य (सं.कवित्व)

कविता, कवीता अखाछ. अखेगी. कर्पूमं. ०कामा(शा). प्राचीका. प्रेमाका. मदमो. कविया, कवन करनार, कवि कविया आरारा. नेमिछं. विक्ररा. कविजन कवियाजा नेमिछं. कविजनोनो समूह कविता, कविळ उत्तिर. वीसरा. घेरा बदामी रंगन्ं (सं.किप्तः)

कविळास वीसरा. कैलास पर्वत (प्रा.)

कविसमय वाग्भवा. काव्यरचना अंगेनी प्रचलित संकेतपरंपरा, [काव्यरूढि]

कवीता जुओ कविता

कवीयण जुओ कवियण

कव्य *ऐतिका.* काव्य

कव्यट्ठ *ऐतिका.* कवित्त, काव्य

कशकशतो * मदमो. [थनगनतो]

कशण नरप. कापडानी कस – दोरी [सं. कशा]

कशिम, कसिम प्राचीका. कुसुम, फूल कशुं चित्तसं. केटलुं [सं.कीदृशकम्] कश्चपी मदमो. कश्यपनी, आसुरी

कश्यपसुत, कस्यपसुत कामा(त्रि). कामा(शा). सूर्य

कब *देवरा.* कष्ट

कषाय अखाका. आनंस्त. आरारा. उपबा. ऐतिका. चित्तविकार, दुर्वृत्ति; क्रीध, मान, माया, लोभ ए चार संसारहेतुओं कषायां नलाख्या. खराब, गंदा (सं.कषाय) किषयइ थडाबा. खेंचाय, घसडाय (सं.कष्) कष्टइ नलाख्या. प्रेमाका. कष्ट आपे, दुःखी करे

कस *लावल*. कोई (हिं.किस)

कस जुओ कसप्रहार

कसउटउ उपवा. कसोटी करवानी पथ्यर [तेना समो], [परीक्षा करनारो] (सं. कषपट्टक)

कसकसी नरका. खेंची, तरणी, [कसीने, तंग करीने] [सं.कष्]

कसण अखाका. *अभिक्र. कादं(शा). नरका. नरप(द). प्रेमाका. *स्यूलिफा. हरिवि. कस, चोळी के कापडाने बांधवानी दोरी [सं.कशा]

कसतां *ग्रेमाका. [कसकसतां, कूदतां] कसत्तुरीय गुर्जरा. कस्तूरी (सं.कस्तूरिका) कसथूरिय प्राचीफा. कस्तूरी (सं.कस्तूरिका) कसप्रहार आरारा. चाबुकना प्रहार (सं.कश-प्रहार)

कसमस, कसमसतु प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. खेंचातुं, तणातुं, [कसकसतुं], तंग

कसमसे नरका. खूब खेंचाय, [तंग रहे] कसमीर उक्तिर. तेरका. काश्मीर देश (सं. कश्मीराः)

कसवट्टउ *प्राचीसं*. कसोटीनो पथ्यर (सं. कषपट्टकः)

कसा लावल. कोई (हिं.किस्या)

कसार *प्राचीसं*. कंसार दि.] किस नलरा. कसोटी (सोनानी), [कस, आंक] (सं.कष) किंसिउं नलरा. शुं, [कोई]; किंम, शा माटे] (सं.कीदृशकम्); लावल. शुं, केवुं कसिण नेमिछं. काळी (सं.कृष्ण) किसम जुओ कशिम कसिया प्रेमाका. कसेला [सं.कषित्] कसी उक्तिर. चाबुक (सं.कशिका) कसी आरारा. लावल. केवी [हिं.कैसी] कसीदो कामा(शा). जरीनुं भरतकाम [फा. कशीदो]; जुओ हाथकसीदो कसुटी विमप्र. कसोटी [सं.कषपट्टिका] कसुं मदमो. शुं [प्रश्नार्थक] (सं.कीदृशकम्) कसुंबो नरका. कसुंबनां फूल जि केसरी - लाल रंगनां होय छे कसुंभउ आरारा(व). कसुंबो (सं.कुसुम्भ) **कसूंबिया नरका**. कसूंबाना रंगना — लाल रंगना **कसे** *प्रेमाका.* पीडे, दुःख दे [सं.कष्] **कसै** *जिनरा*. कष्ट आपे करमली गुर्जरा. विराप. श्याम – धूंधकी (सं.कश्मलित) कस्यड लावल. *कसेलो, [*खेंचीने बांधेलो], [*केवो, *केवो सुंदर] **कस्यपसुत कामा**(त्रि). सूर्य; जुओ कश्यप-सुत कर्युं प्रेमाका. कशूं, केवुं, शी गणनामां [सं. कीदशकम्]: चित्तसं. कयं

झाड (सं.कोशाम्र) ? **कहड** *आरारा.* क्यांय कारण आरारा. ऋषिरा. नलरा. पंचवा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). कहेवुं ते (सं. कथ्) **करणहार** *उपदा*. कहेनार **करने** *चतुचा*. क्यां **कहर** *ऐतिका.* *मोत, दिवी आफतो अि. **कहरा** करतुवा. करा, विरसादी बरफना कणो] [सं.करक] **कहं** *पष्टिप्र.* तुं कहे (छे) **कहा** ऋषिरा, कथा **कहाणउ** *जिनरा*. कहेवायो **कहाणी** *उक्तिर. प्राचीफा.* वात, वृत्तान्त, [घटना] (सं. *कथानिका) कहाणी लावल. कहेवाई **कहां "**षडाबा. [कहे छे] किह नलरा. वाग्भवा. कोई (सं.कापि):) उपवा. षडाबा. कोण; जुओ कही **कहि न** *चारफा*, कहे ने कहियड उक्तिरक्र्यारेक्यारेक कहिं, कहीं षडाबा, क्यारेक, कोई वखते: *प्रेमाका. व*यांक: [क्यारेय]: *नरका.* क्यांय, कोई स्थळे; चित्तसं. क्यां; शुं **कही** चतुचा. कई; *षडाबा.* कोई (सं. कस्यापि): *आरारा.* क्यांय, कदी; *तेरका*. क्यांय (सं.कस्मिन्); जुओ कहि, क्यहीं कहीओं गूर्जरा. क्यां (सं.कस्मिन्+चित्)

कड़ीड आरारा. कादं(शा).क्यारे (सं.कस्मात्

कह-अंब आरारा(व). कोसंबो - लाखन्ं

परथी); आरारा. क्यांय; उपबा.क्यांय; क्यां; उक्तिर. क्यारेय; जुओ कंहीए **कहीइ** उपबा. एटलेके कही चाहीजड आरारा. कहेवी जोईए कहीं जुओ कहिं कहींड कादं(शा).क्यारे पण, [क्यारेय] **कहींए** *प्रेमाका. क्यारे: चित्तसं.* क्यांय **कहींएक** प्रेमाका, क्यारेक कहींय उक्तिर, क्यारे, क्यारेय कहींये *प्रेमाका. क्यारे] **कहुआलउ** उक्तिर, कोलाहल कहर कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र. कने, [-नी पासे किणे] कहलि वाग्भवा. कने, पासे सिं.कर्णे **कंक** ऋषिरा. बगलो (सं.) कंकण प्राचीका कंकर, कांकरो (सं.कर्कर) कंकणी चत्चा. घूघरी [सं.किंकिणी] कंकरी प्राचीका. दासी (सं.किंकरी) **कंकुम** नलरा. कंकु (सं.कुंकुम) **कंकोड**उ *उक्तिर*. कंकोडानूं झाड (सं. कर्कोटक) दि.कंकोडी **कंकोडी** अखाछ. अखाछ-टि. एक जातनी कठण माटी, एक वनस्पति, जे गङ्रा जेवी होय छे: आरारा(व). कंकोडा -कंटोलानुं झाड (दे.कंकोड) कंख *ऐतिका. [शंका] [सं.कांक्षा] कंचकी चतुचा. कंचुकी, कांचळी कंचण गूर्जरा. तेरका. लावल. कंचन, [सोन्] **कंचनवत्रि** *गुर्जरा.* कांचनवर्णी, सोना जेवा वाननी

कंचल उषाह. कांचळी [सं.कंचुक] कंचवो नरका. कांचळी, कमखो [सं.कंचुक] कंचु नरका कंचवो, कमखो (सं.कंचुक) कंचुक वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कांचळी (सं.) कंचुकिउ *विराप. [-नं बख्तर पहेर्यं छे एवो, -ना आवरणवाळो]; जुओ कुंचुिकउ **कंचुकी** *प्रेमाका*. कांचळी, कमखो [सं.] **कंचुयउ** *वीसरा*. कांचळी (सं.कंचुक) **कं**चुलिय, कंचुली अखेगी. तेरका. कांचळी (सं.कंचुलिका) **कंचुवा** *देवरा.* कांचळी (सं.कंचुककः) कंच् प्राचीसं. वीसरा. कांचळी (सं.कंच्क) कंचुअउ ऐतिका. कंचवो, कांचळी **कंयुअडउ** *लावल*. कंचवो, कांचळी [सं. कच्की कंचूउं प्राचीफा. कांचळी (सं.कंचुक) **कंचोला** *प्राचीफा*. कचोळां, प्यालां (प्रा. कद्योलअ); जुओ कचोल कंझार (लीलां कंझार) सिंहा(शा). (लीलां)-छम (कणझर उपरथी) **कंट** *गुर्जरा.* कांटो (सं.कंटक) कंटकसंकट वसंवि. कंटकोथी भरेला (सं. कंटक+संकट) कंटेलइ आरारा. ऊंटने प्रिय वनस्पति, कंटोली, कंकोड़ी, ऊंटकंटो **कंठ** *आरारा*. कंठमाळ, ए नामनो रोग कंट अखाका. किनारे, कांठे; जुओ कूआ-

कठड

कंठमां (कंठे) कांटा पडवा अखाका. प्रेमाका. खूब तरस लागवी, शोष पडवो कंठीर (कंठीरव) ऐतिका. सिंह [सं.]

"कंडिलंक [कडिलंक] स्थूलिफा. केडनो लांक - वळांक [सं.कटि+दे.लंक]

***कंडीउ [कडीउ**] *नलरा.* कडियो (दे. कडइअ)

कंडुक दशस्कं(२). कंडुक, दडो

कंत, कन्त आरारा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्रबोप. लावल. पति, कंथ (सं.कान्त); आरारा. प्यारा (सं.कान्त); जुओ कंन *कंन [कंत] *प्राचीफा. [कान्त, प्रियतम]

कंदा *आरारा. लावल.* कान्ता, पली; पति, कंदा (सं.कान्त)

कंति, कंती *ऐतिरा. तेरका. नेमिछं.* कान्ति, प्रकाश, रूप

कंथा ऋषिरा. गोदडी, [चींथरानुं वस्त्र, साधु-वस्त्र] (सं.)

कंयेर *आरारा(व). मदमो.* एक हलकी कांटाळी वनस्पति (सं.)

कंद *अखाका. गुर्जरा. *नरका. लावल. मूळ, गांठ (सं.); चित्तसं. मूळ, मूळ स्थिति

कंदए वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). खांडे, चूरो करे (सं.कंडयति)

कंदर्प-दर्प-तर्प *प्रेमाका*. कामदेवना गर्वने तृप्त करे तेवा

कंदल * नेमिछं. प्रद्युचु. लडाई, [झघडो], वादविवाद (सं.)

कंदली दशस्कं(९). दशस्कं(२). केळ (सं.

कदली); जुओ कदलि, कदली कंदुक ऋषिरा. प्रेमाका. दडो (सं.) कंदु चारफा. कुंदनां फूलो कंद्रप नरका. कामदेव [सं.कंदप]; चित्तसं. कामवासना

कंघ जुओ कन्ध

कंघरा अखाका. कादं(शा). गरदन, डोक (सं.)

कंपवाय प्रेमाका. कंपवायु, कंपारी, धुजारी कंपीर तेरका. एक वनस्पति (*कंपिल्ल, *कपीलो)

कंब, कंव नलरा. प्राचीफा. सोटी, छडी (सं.कम्बा)

कंबित उषाह. आभूषणविशेष, कांबडी, [बंगडी]

कंबु प्रेमाकाः शंख (सं.)

कंबुवत दशस्कं(१). शंख जैवो

कंबोज नलरा. एक देशनाम, अफघानिस्तान (सं.कांबोज)

कंभ *प्राचीफा.* घडो (सं.कुम्भ)

कंमिण *ऐतिका.* कर्मथी, कृत्यथी

कंद जुओ कंब

कंवल *धडाबा. [गायभेंस वगेरेने गळामां नीचे लटकती चामडी] [सं.कंबल]; जुओ गलकंवल

कंस नलाख्या. पात्र, वासण, (लक्षणार्थे) विचार, आत्मा, [जात, प्रकृति]

कंसाल आरारा. उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. स्थूलिफा. एक वाद्य-विशेष – कांसीजोडना प्रकारनुं (सं. कांस्यताल, कांस्याल)

कंहीए चतुचा. क्यांये, क्यारेय; जुओ कहीइं का *षडाबा*. कोई (सं.)

काअ कामा(त्रि). कोई पण [सं.काऽपि]; काइ आरारा. कोई [सं.काऽपि]

काइ तेरका. शुं (सं.किम्, अप.काइं), जुओ कांइ

काइ चित्तसं. काया, शरीर; वडाबा. कायाथी

काइया वडावा. शारीरिक (सं.कायिका)

काइर *प्रबोप्र.* बायलो (सं.कातर)

काई गुर्जरा. तेरका. वीसरा. षडाबा. केम, शा माटे (सं.कानि; अप.काई)

काइं गुर्जरा. कांई, कंईक; षडाबा. कांई, कंई (सं.कानिचित्)

काउसग, काउसगा आरारा. उक्तिर. ऐतिका. देवरा. षडाबा. कायोत्सर्ग, देहथी पर धवुं ते, एक जैन ध्यानक्रिया

काकडासींगी उक्तिर. एक वनस्पति (सं. कर्कटशृंगिका)

काकबर पडाबा. शेरडीनो अर्घो काढेलो रस

काकर, काकरज, कांकर अखाका. अंबरा. उक्तिर. विमप्र. कांकरो (सं.कर्कर)

काकींडउ *उक्तिर*. काचंडो (दे.कखिंड)

काकूंबर उपबा. वृक्षविशेष, [एक जातनो उंबरो] [सं.काकोदुम्बर]

काख बजाई जिनरा. काखली कूटीने, आनंदमां आवीने

कागमुं प्रेमाका. "रथ उपर फरकती धजानो दंडो, ["रथनुं अडा आगळनुं लाकडुं] कागलंड, कागुलंड वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कागडो (सं.काकः)

कागळ चढशे लेखे *प्रेमाका*. भणतर लेखे लागशे, सफळ थशे

काग-वांझ प्रेमाका. एक ज वार फळनार वनस्पति [सं.काकवंध्या]

कागिणी *उपबा. [कोडी, एक मूल्य तरीके] (सं.काकिनी)

कागु उक्तिर. कागडो (सं.काक)

कागुलंड जुओ कागलंड

काचकी बाझवी *प्रेमाका*. शोष पडवो, गळुं सुकाई जवुं

काचली जिनरा. लाकडानुं नानकडुं पात्र, [नाळियेरनुं भांगेलुं कोचलुं]; जुओ काछली

काचसकल जिनरा. काचना टुकडा [सं. काचशकल]

काछ नलरा. कच्छ देश

काछ *नरका. प्रेमाका*. कच्छ, कछोटो; जुओ वाच-काछ

काष्ठउ उक्तिर. कछोटो (सं.कच्छः)

काष्ठ कष्ठवो *दशस्कं(१)*. कच्छो मारवो, [कछोटो बांधवो]

काछड *नलरा*. काछडो, कछोटो (सं.कक्ष +ड)]

काछडा (काछडा करवा) *अभिऊ. [*पेंतरा करवा]

काछबा *उपबा*. काचबा (सं.कच्छप)

काष्ठली जिनरा. लाकडानुं नानकडुं पात्र, [भिक्षापात्र]; जुओ काचली **काछबउ** *उक्तिर. षडाबा.* काचबो (सं. कच्छप)

काष्ठ वाच निकलंक *जिनरा*. चारित्र्यमां अने वाणीमां निष्कलंक

का**छे देश *** अखाका. [वस्त्र पहेरे]; जुओ काछ कछवो

काज *उपबा. गुर्जरा. देवरा*. कार्य, काम; *उपबा. गुर्जरा. प्रयोजन, कारण

काजइ आनंस्त. गुर्जरा. प्रबोप्र. माटे [सं. कार्ये]

काज *धडावा. [कचरो, पूंजो] [दे.कञ्ज] काजगरज *अखाका. उपवा. चित्तसं. उपयोगी, काममां आवे एवुं, [फायदा-

कारक] (सं.कार्यकारक)

काजल हरिवि. काळी गाय ? जिनी

आखना चारे बाजुना भाग काळा होय

एवी गाय] [हिं.काजरी]

काजळराणी *नरका. [काजळिया त्रीज, श्रावण वद त्रीज]

काजलवाइ * गुर्जरा. [काजळभरी] (सं. कञ्जल-)

काजळी नरका. वीसरा. [काजळिया त्रीज, श्रावण वद त्रीज], एनो उत्सव

काजु विराप. कार्य; षडावा. काम; [उपयोग]

काट- अखाका. कापवुं; वीसरा. (दिवस) निरर्थक पसार करवा (सं.कर्तति) [हिं. काटना]

काट *अखाछ. [दांतथी कापीने, कटकट करीने]

काटका *गुर्जरा. प्रेमाका*. कडाका, मोटा अवाज **काटयउ** *उपबा*. काट लागेलो, [मार मरायेलो, हणायेलो]

काटल लावल. वजन करवानां काटलां काटी अक्तिर. लोखंडनो काट दि.कट्ट; रा.]

काट्ठ कर्पूमं. लाकडुं (सं.काष्ठ)

काठ उक्तिर. मदमो. वीसरा. लाकडुं

काठउ *उक्तिर. जिनरा. नेमिछं.* कठोर, पाकुं, मजबूत [सं.कष्ट]

काठ खातुं, काष्ट मुख देवुं, काष्ट लेवुं पंचया. चितामां प्रवेशी बळी मरवुं

काठिमी, कांठिमी उषाह. काष्ठमय, [लाकडानी]; काष्ठनुं बळतण

काठिया, काठीआ, काठीया उक्तिर.

*गुर्जरा. प्राचीफा. लावल. जे कारणोथी
जीव हितकारी ज्ञान प्राप्त न करी शके
ते आळस वगेरे तत्त्वो (जै.) (सं.
*कष्टिक)

काठीहारच *उक्तिर.* कठियारो (सं.काष्ठ-हारकः)

काढउ वीसरा. काढो, उकाळो (सं.क्वाथ) काण आरारा. जिनरा. *हरिख्या. संकोच, शरम (रा.); *अखाका. [संकोच] जुओ काणि

काणण *गुर्जरा.* कानन, जंगल

काणि, काणी, कांणी *अंबरा. आरारा. प्रद्युचु. *प्राचीसं. हरिवि. शरम, संकोच (रा.); *कर्पूमं. [संकोच, खटक, शल्य]; *नलाख्या. [संकोच, खटक, वसवसो] *प्राचीका. [कष्ट] [हिं.कानि]; *वीसरा. [संकोच, कुलमर्यादा, लोकलजा; कष्ट,

दु:ख]; **गुर्जरा*. [संकोच, खटक, वसवसो]; सभ्यचो. खोट, हानि; जुओ काण, कुलकाणि, मुहकाणि **काणीकथा** *चतुचा*. कहाणीकथा **काणेतर** *मोसाच*. विचित्र दृश्य ? , [*कौतुक-भर्यो बनाव. "विघ्नरूप घटना **कातत**ड *उक्तिर. षडाबा.* कांततो (सं.कृत्) कातरणी उक्तिर. ऋषिरा. कातर (सं.कर्तरी) कातारे उक्तिर. कातर (सं.कर्तरी) **कातरो** अखाछ. केळांनी लूम **कातळो** अखाका. कातरो, केळांनी लूम कातिग वीसरा. कारतक (सं.कार्तिक) काती उक्तिरं. प्रद्युचु. कारतक (सं.कार्तिक) काती अखाका. कामा(त्रि). प्रेमाका. छरी सि कर्तकी कातुं प्रेमाका. मोटी छरी [सं.कर्तक] **काव** *नेमिछं. वीसरा*. [पानमां वपरातों] काथो[सं.क्वाथ] कादम उक्तिर, प्राचीफा, षडाबा, षष्टिप्र, कादव (सं.कर्दम) **कादी** हम्मीप्र. काजी, इस्लामी विद्वान (फा.) **कान आणेश** जुओ आणेश कान कानडे लावल. कानमां सिं.कणी ***कानन** *पंचवा*. काननां **काना लगी** प्रेमाका. वासणनी उपरनी किनारी - टोच - [धार] सुधी कानियी कादं(शा). कनेथी, पासेथी (सं. कर्णे) कानी उक्तिर. [*कमलनो बीजकोश, *फळ-

कान्ह गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा. कृष्ण **कान्हअडा** लावल. कृष्ण कान्हड् प्राचीसं. समीपे, कने [सं.कर्णे] **कान्हजी** *उषाह*. कृष्ण **कान्हड** *प्राचीफा*. कृष्ण **काप** *उक्तिर*. प्रक्षालन, धोव् ते (सं.कल्प) कापड षडाबा. कपडां, वस्त्र (सं.कर्पट) कापडी उक्तिर. कामा(त्रि). कामा(शा). *गुर्जरा. नलरा. विक्ररा. सिंहा(म). साघु, तापस (सं.कार्पटिक) **कापुरिस ऐ**तिरा. कायर पुरुष [सं.कापुरुष] **काबरउ** *षडाबा*. काबरचीतरो. विविधरंगी [सं.कर्बुर] काम वसंफा(ल), वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामदेव **काम, कामइ** *आरारा.* कामे, काजे, माटे, अर्थे **कामकुंभोपम** *ऐतिका.* कामकुंभ[इच्छित वस्तु आपनार कुंभनी समान]नी समान [सं.] **कामगबी** *ऐतिका. जिनरा.* कामधेनु **कामण** *जिनरा*, कामिनी **कामणगारिउ** नलरा, कामण करनार. कामणगारो (सं.कार्मणकररक) कामणि, कामणी आरारा. वीसरा. कामिनी कामणियां नरका. कामण [सं.कार्मण] **कामणी** *नरका.* कामण कर्यं, वश करी

नी डांखळी सिं.कर्णिका

कामणी जुओ कामणि

आपनारी गायो सिं.ौ

कामदुषा अखाका. कामधेनु, [इच्छित वस्तु

कामदुरषा दशस्कं(२). मदमो. इन्छित वस्तुओ आपनारी गाय, कामध्रेनु (सं. कामदुधा)

कामतुर्गा प्रेमाका. इच्छित वस्तुओ आपनारी गाय, कामधेनु (सं.कामदुघा)

कामना क्रोड प्रेमाका. [जाणे] करोडो कामदेव

कामाक्षा नलरा. नलरा. कामाख्या देवीनुं पीठ ज्यां आवेलुं छे एवो प्रदेश, कामरूप अर्थात् आसाम

कामासण शीलक. कामशास्त्रमां वर्णवायेलां आसन

कामालय *गुर्जरा. [कामदेवनुं मंदिर] कामिणि गुर्जरा. विराप. कामिनी, स्त्री कामिय तेरका. कामी, [प्रेमी] कामिय गुर्जरा. अभिलाषावातुं, [अभिलाषा-ओनं]

कामी अखाका. कामनावाळी, इच्छावाळी **कामीक** नलाख्या. काम्यक वन

कामीय वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामी-जन, प्रेमीजन

कामु, कांमु गुर्जरा. इच्छा; कामभाव, रितभाव; कामदेव

कामुक वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामीजन, प्रेमीजन

कामुरडां *प्रेमाका*. बाळको, नानां छोकरां काम्य *आनंस्त*. इच्छित, [इष्ट, प्रिय, मन-गमता]

काम्यउ "ऐतिरा. [इच्छ्युं, कामना करी] काय गुर्जरा. कांई (सं.कानिचित्) कायउ वीसरा. शो, केवो (सं.किम् परथी ?) **काया हरिख्या**. जात

कायाकल्प अखाकाः शरीरनुं रूपांतर, [औषधिओनाउपयोगयीजर्जरितशरीर-ने नवुं बनाववुं ते, एक सिद्धि] [सं.]

कायि प्रबीप्र. काजे, माटे (सं.कार्यै)

कायोच्चर्ग आरारा. देहयी पर थयुं ते, एक प्रकारनीजैनध्यानक्रिया; जुओकाउसग्ग

कार *कस्तुवा. देवरा. प्रेमाका. मदमो. *शीलक. वक्कर, शाख, आबरू, [कुलवट]

कार नलरा. एक प्रदेश (सं.कारा)

कारग तेरका. करनारुं (सं.कारक)

कारग *जिनरा. [शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया [प्रा.]

कारज *अखाका. अखाछ. देवरा. नरका. प्रेमाका.* कार्य, काम, [प्रयोजन]

कारज्य चित्तसं. कार्य

कारज्यवादी चित्तसं. कार्यवादी, परिणाम-वादी

कारियो उक्तिर. प्रद्युचु. कायटियो, मरनार-ना अगियारमाने दिवसे करवामां आवती क्रिया करावनार ब्राह्मण, [हलको ब्राह्मण] (सं.करट; दे.करट्ट)

कारण कामा(त्रि). [न बनवा जेवुं], अकस्मात, उपाधि, संकट; कृष्णबा. चमत्कार; *दशस्कं(२)*. चमत्कारी, [दिव्य]

कारण (कारणरूप) * कामा (त्रि). चिमत्कारी,

दिव्य]; जुओ कारणरूप **कारण-अवतार** नरका. चमत्कारी [दिव्य] अवतार

कारणइ आरारा. माटे, तरफ, उपर, -ने,-उपायथी

कारणपणईं *उपचा*. कारण तरीके, कारण रूपे

कारणस्प दशस्कं(१). प्रेमाका. अगन्य शक्ति के परचो धरावनार, चमत्कारी, [दैवी, अद्भुत]

कारमुक नरका. ओचिंतुं

कार्सुं आरारा. वेताप. कृत्रिम, बनावटी (दे.कारिम); मदमो. अद्भुत; प्रेमाका. "अजुगतुं, [असाधारण, अद्भुत]; नवाईभर्युं, [आश्चर्यचिकत]; [कोमळ, निर्बळ] नरका. [कारमुंक], ओचिंतुं; "देवरा. [खोटुं, मिथ्या]; जुओ कारिमउं

कारमोक नरका. ओचितो कारवं प्रेमाका. आकारनां कारवंड ऐतिका. करावे काराग्रेह प्रेमाका. कारागृह, केदखानुं काराभवन प्रेमका. कारागृह, केदखानुं कारिम आरारा. अद्भुत [दे.]

कारिमडं चारफा. जिनरा. "नलरा. "लावल. "सिंहा(म). व्यर्थ, खोटुं, [मिथ्या]; आरारा. कर्पूमं. कृत्रिम, बनावटी; सिंहा(शा). अद्भुत (दे.कारिम); "प्राचीसं. [निर्बळ, नश्वर]; जुओ कारमुं

कारिय *तेरका*. कराव्युं (सं.कारित) **कारी** *आरारा*. करावीने

कारी प्रेमाका. कारमां, भयंकर

कारीय वसंफा. करवामां आवी, [करीने, करावीने]

कारीया *हम्मीप्र. [करनार] [सं.कार] कारु, कारू उक्तिर. नलरा. विकरा. विमप्र. गांछा, छीपा, लुहार, मोची, दरजी ए पांच कारीगरजाति (सं.)

कारुण्ण "ऋषिरा. [करुण, शोकभर्यु] **कारू** जुओ कारु

कार्तस्वर ऐतिका. सुवर्ण [सं.]

काल लावल. *काळ, *विनाश, [*विलंब, *आवती काल]

कालक, काळक वेताप. काळप; अखाछ. काळप, कलंक; जुओ कालीक

कालट, काळट दशस्कं(१). प्रेमाका. काळप, काळाश; जुओ कालिटि

कालपराण ऋषिरा. काळबळ, [कालदेवता — यमदेवनुं सामर्थ्य] (सं.कालप्राण)

काळभाषी प्रेमाका. काळ जेवो योद्धो

कालभुयंगम ऋषिरा. काळरूपी सर्प, [मृत्युदेवरूपी सर्प] (सं.कालभुजंगम)

कालमुहु * उपवा. *गुर्जरा. [काळा पडी गयेला मुखवाळुं, शोकमग्न, निराश] (सं.कालमुखकं)

कालवन आरारा. काळा वर्णनुं कालंद्री प्रेमाका. कालिंदी, यमुना नदी काला प्रेमाका. अणसमजु, [भोळा, लाडका, प्रेमभीना] [सं.कल्य]

कालाखरिज उक्तिर. धीमेथी अक्षर शीखनार, वांचतां शीखवानुं शरू ज कर्युं होय तेवो (सं.कालाक्षरिक) **काळाग्रह, काळाग्रेह** *दशस्कं(९). दशस्कं(२).* कारागृह

काळानी कच "अखाका. [*काला – अणसमजुनो निरर्थक बबडाट]

काळाभोवन *दशस्कं(१)*. काराभवन, कारा-गृह

कातिज *उक्तिर. वसंवि.* काळजुं (सं. कालेय)

कालिट अंबरा. काळाश; जुओ कालट कालियु उक्तिर. सारस; बगलो (सं. कालिक:); क्रींच पश्ची (हिं.)

कार्लिब्री *दशस्तं(१)*. कार्लिदी, यमुना

काली मदमो. कालिदास [कवि]

काळी प्रेमाका. कोयल

कालीडं नलरा. स्त्रीनो एक अलंकार, [काळा पारानी कंठी]

कालीक वेताप. काळप; जुओ कालक कालीरोली मदमो. रोळीकोळी, सांजनी (वेळा)

कातुंबरि आरारा(व). एक करियाणुं; काळो उंबरो, धुरडो (सं.काकोदुम्बर) ?

कालूनूं उक्तिर. कालनुं, गई काल साथे संबंध धरावतुं (सं.कल्यतनम्); जुओ काल्हनउं, काल्हूणउं

कालेयक *षडावा*. काळजुं (सं.)

काल्यु (?) नलाख्या. काळो

काल्डनउं उक्तिर. कालनुं, गई कालने लगतुं (सं.कल्यतन); जुओ कालूनुं

काल्डा *जिनरा*. कालो, भोळो, अज्ञानी [*दे.काहल] काल्डि, काल्डे उक्तिर. वीसरा. षडाबा. काले (सं.कल्ये)

काल्यूणउं उक्तिर. कालनुं, गई काल साथे संबंध धरावतुं (सं.कल्यतनम्); जुओ कालूनुं

कात्हे *वीसरा.* जुओ काल्हि

काल्डे वाल्डे *जिनरा. [कालावाला करीने] कावडि उक्तिर. कावड दि.]

कावडीया ऋषिरा. कपटकरनारा, [मायावी] (सं.कार्पटिक)

कावजि *उक्तिर*. [?] (सं.कायाटनी, काया-वालिनी वा)

का वित जिनरा. कोण वळी

कावली *प्राचीफा.* बंगडी, चूडी

काश्मीरमुद्रा ऋषिरा. केसरनी कानसळा, [योगीओनुं एक आभूषण]

काषांबर *प्रेमाका.* भगवां वस्त्र [सं. कषायांबर]; जुओ कखांबर

काष्ट *गुर्जरा. विराप.* काष्ठ, लाकडुं

कार मुख देवुं, कार लेवुं जुओ काठ खा**वुं**

काष्ठा *उक्तिर*. अवधि, छेल्ली हद (सं.) **कास** विमप्र. नानी नहेर, निकी

कासग गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं. एक प्रकारनी जैन ध्यानक्रिया (सं.कायोत्सर्ग); जुःओ काउसग

कासडली *नरका.* कासळ, नडतर, पीडा **कासर** *नलरा.* जंगली पाडो (सं.)

कासक अखाका. अखाछ. आङखीली, [नडतर, पीडारूप वस्तु] [सं.काश];

जुओ कांसलि कासंघरड आरारा(व). कासंदरो (सं. काशमदी; जुओ कासुंदउ कासी आरारा. कांसी, एक वाद्य कासंबंध उक्तिर. कासंबरो, एक वनस्पति (सं.काशमदी); जुओ कांसधरउ] **कार्स** *आनंस्त*. केम, शा माटे काहणी विकरा. [कहाणी], कथनी [सं. कथा परथी। काहरि अभिक्र क्यारे काहल, काहली *गूर्जरा*. [ढोल के भेरीना प्रकारनं] एक वाद्य (सं.); जुओ रणकाहल **काहला** *आरारा*. काला, घेला काहली जुओ काहल कारवानूं(?) * नलाख्या. [*कंटाळावाळुं, *श्रमित, *दुःखी काहाणी नलाख्या, कथनी (सं.कथनिका) काहाली *ऋषिरा. कादं(शा). ढोल के भेरी-ना प्रकारनुं वाद्य (सं.काहल) **काहावी** *नलाख्या*. कहेवडावीने (सं. *कथापय) **काह्** *आरारा*. कोईने काह्यरपणुं मदमो. कायरपणुं [सं.कातर-] कां गुर्जरा. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं. लावल. विराप. केम. शा माटे कांइ ऋषिरा. कयां (सं.क्व) **कांर्ड** उक्तिर. उपद्या. कादं(शा). लावल. वीसरा. केम, शा माटे (सं.किम् परथी); जुओ काइ

कांकडु *प्रेमाका*. [कांगडु], चड्या वगरनो, करडू, [दे.कंकडुअ] **कांकण** उपवा. कंकण, बंगडी **कांकणिया** *नरका***. हाथना कां**डे पहेरवानां आभूषण, कांगरावाळी चूडी **कांकणी** *मदमो*, कंकण **कांकर** जुओ काकर **कांकसी** *जितार* कांसकी दि.कंकसी] **कांकसीआ ***विमप्र. [एक वनस्पति, कांकचियो े **कांकिमएणउं नलरा**. हांकी काढवानी प्रवृत्ति **कांकोल** *नरका*. कांटावाळी एक वनस्पति [सं.कंकोल]; जुओ कंटेलइ **कांगर** उक्तिर. कांग, एक हलकूं धान्य [स.कंगू] **कांगवा *** नरका. *प्रेमाका. [एक हलकुं धान्यो **कांगुण** *षडाबा*. एक वेल, [मालकांगण] कांचलडी, कांचू लावल. हरिवि. कांचळी, स्त्रीओनुं छाती उपर पहेरवानुं वस्त्र, कापडुं [सं.कचुलिका] कांठलि *जिनरा*. कंठमां, गळामां कांटिमी जुओ काठिमी **कांडी** उक्तिर. [*एक वनस्पति, *तणखलुं, *सळी (**सं**.काण्डी) कांणि जुओ काणि **कांत** *चतुचा*. कान्ति, प्रकाश कांतिमत्ता वाग्भवा. कान्तिमत्व, कांतिमय होवं ते **कांत्य** अखाका. कांति, शोभा

कांइजइ जुओ जइ

कांत्युं थाय कपास अखाका. *हतुं तेवुं थाय, [करेलो श्रम एके जाय]

कांदमी जाइ आरारा(व). जाईनी कोई जात (सं.कर्दमी जाति ?)

कांदे वाग्भवा. कंद [एक वनस्पति, जंगली कांदो] यडे

कांपे *प्रेमाका*. कादव के कीचड वडे कांब चतुचा. नरका. प्राचीफा. छडी, सोटी (सं.कम्बि)

कांबडी उक्तिर. छडी, सोटी (सं.कंबि)

कांबी उक्तिर. सोटी, छडी (सं.कम्बिः); नरका. स्त्रीना पगनुं घरेणुं

कांबु नेमिछं. कांब, छडी (सं.कम्बा)

कांम कामा(त्रि). कामदेव; मदमो. कामिनी कांमकोट *कामा(शा). कोटि — करोडो

कामदेव समान]

कांमु जुओ कामु

कांग्य मदमो. कामिनी, स्त्री

कांम्यी भदमो. कामी

कांस गुर्जरा. कंस

कांसित आनंस्त. खटक, वसवसो; जुओ कासळ

कांसीवाजउ *उक्तिर*. कांसीजोड, झांझ (सं. कांस्यवाद्यम्)

कांडनासोरी *ऐतिरा*. छानी वात कानमां कहेवी ते, [कानफूसी]

कांडां प्रेमाका. क्यां, केम, शा माटे; नलाख्या. क्यां, कये स्थळे (सं.कस्मात्)

कि * वसंफा. * वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). जाणे के, जाणे, जेवुं के; कादं(शा). गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. षडाबा. के, अथवा (सं.किम्); तेरका. वीसरा. शुं (सं.किम्)

किअ * नेमिछं. ['सारुं', 'खरे' जेवो उद्गार] किइ आरारा. कां, अथवा; आरारा. जाणे के

किउ, कीउ आरारा. प्रबोप्र. विमप्र. कर्यो (सं.कृत+क)

किउ, किउं, क्यउं, क्युं वीसरा. केम, शा माटे, केवी रीते (सं.किम्+एवम्)

किछ्जं *प्राचीसं*. केवुं, शानुं (सं.कीदृक्षकम्) किड्ज *उक्तिर.* चटाई (सं.कटः)

किण आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल. वीसरा. षडाबा. कयुं, केवुं, कोण, कोई (सं.केन परथी)

किणइ जुओ तिहां किणइ

किण गानइ आरारा. कई विसातमां; जुओ केणइ गान, गाने

किण परि आसरा. केवी रीते, कोई रीते, गमे तेम

किण मेलि *आरारा*. कोई मेळथी, कोई संयोगथी

कित्ति ऐतिका. कीर्ति

कित्र ऐतिका. कृष्ण

किन्नरकंठि, किनरकंठि वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). किन्नर [एक देवकल्प योनि]ना जेवा मधुर कंठवाळी स्त्री

किम, कीम उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या. पंचवा. लावल. वीसरा. षडाबा. केम, शा माटे; केवी रीते

किमइ आनंस्त. कादं(शा). "गुर्जरा. तेरका.

केमेय, मुश्केलीए (सं.कथमिप) [अप.]; उक्तिर. नरका. नेमिछं. केमे, कोई पण रीते; वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(बा). केमेय, कोई पण रीते, मुश्केलीए

किमइय, किमए गुर्जरा. मुश्केलीए पण; कोई पण रीते

किमकिम उपवा. केवीकेवी रीते, कईकई रीते

किमहि, किमही आनंस्त. कादं(शा). केमेय (सं.कथम्+हि परथी)

किमाड *वीसरा-अनु*. कमाङ, बारणुं (सं. कपाट)

किम्हइ *उक्तिर*. केमे, कोई पण रीते (सं. कथमपि)

किय तेरका. लावल. कर्युं (सं.कृत)

किय**उ, कीयउ** उक्तिर. नरका. लावल. वीसरा. कर्यो (सं.कृत)

कियय तेरका. कर्युं (सं.कृत+क)

किया आरारा. क्रिया

किया प्रबोप्र. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ज्ञा). कर्या (सं.कृत)

कियारइ *विमप्र. [*कोई वार]

किर, किरि उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. खरेखर, समजो के, मानो के, जापे के (सं.किल); जुओ किरि

किरिगरइ उक्तिर. कचकच करे, ककळाट करे; जुओ करगर

किरडा नलाख्या. केरडानो छोड (सं.करीर) किरणी अखाका. अखेगी. सूर्य (सं.) किरतारथ *देवरा*. कृतार्थ किरवाण *वीसरा*. किरपाण, तरवार (सं. कृपाण)

किराण प्राचीसं. करियाणुं (सं.क्रयानक) किरातः उक्तिर. करियातानो छोड (सं. किरातः)

किरि उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(लं). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भवा. षडावा. खरेखर, जाणे के (सं. किल); जुओं किर

किरिया आरारा. क्रिया

किरुण *प्राचीफा*. करुण

किलकइ प्रद्युचु. किलकारी, करे [सं. किलकिल परथी; रा.]

किलंबिलादु विरापः किलंकिलाट, [कल-बलाट, शोर] (सं.किलंकिल परथी)

किलामण जिनरा. कष्ट, [धाक, खेद] [सं. क्लमना]

किलिट्ट ० ऐतिका. क्लिप्ट

किलूषीउ, किल्विषीआ उपबा. [चांडाळना प्रकारनां हलकां कार्यो करनार एक देवजाति] [जै.] (सं.किल्विष)

किलेश *आनंस्त.* क्लेश

किलेस *आरारा*. क्लेश

किलोळ *वीसरा*. किल्लोल, आनंदप्रमोद

कित्मिष, कीलमीश अखाका. दशस्कं(१). पाप (सं.)

किल्विषीआ जुओ किलूषीउ

किव *गुर्जरा*. कृपाचार्य, पांडवोना गुरु **किवहर** *गुर्जरा*. कृपाचार्यनुं घर (सं.कृपगृह)

किवाड प्राचीसं. कमाड (सं.कपाट) **किवाडी** उक्तिर. कमाड, झांपली (सं. कपाटिका) किवाज ऐतिका. कृपाण, [तलवार] कि वार आरारा. क्यारेय [सं.किं वारम्] किवारइं उपबा. "नेमिछं. क्यारेय, कोई वार (सं.किं वारम्) **किवाहरइं ***वारभवा. [क्यारेक] **किवि** गुर्जरा. केटलांक (सं.केऽपि)

किकारि अंबरा. क्यारे, [कोई वार, थोडी वार] [सं.कस्मिन् वारे]

किशइ प्रबोप्र. केवी रीते (सं.कीदश) किशल *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). किसलय, कूंपळ

किशलकृपाण वसंवि. वसंवि(ब्रा). कूंपक-रूपी तरवार

किशलसंतान * वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कूंपळोनी हार

किशलय * *वसंफा.* [कूंपळ]

किशलयकोमल वसंवि. वसंवि(ब्रा). कूंपळ जेवं कूण्

किशा वसंफा. वसंवि(ब्रा). शा माटे; अखाका. कादं(शा). नरका. नलाख्या. केवा, शा (सं.कीदृश)

किश्ं *वाग्भवा*. श्रं (प्रश्नार्थक)

किशोर वसंफा. वसंवि(ब्रा). युवान (सं.)

किसउं आनंस्त. उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. षडावा. शुं, केवुं, केटलुं, कशुं, केम (सं. कीदृश)

किसण *ऐतिका. जिनरा.* कृष्ण पक्ष

किसल वसंवि(ब्रा). कूंपळ किसलय "वसंफा. [कूंपळ] [सं.] **किसले** अखाका. किसलय, कूंपळ किसा वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). शा माटे **किसानउं** *आरारा*, कशानी किसिइं नेमिछं. शाथी (सं.कीद्रश परथी) किसिउं आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल. वाग्भवा. केवुं, शुं, कयुं, कई (सं. कीदृश)

किसोयरी प्राचीफा. पातळी कमरवाळी (सं. कुशोदरी)

किसोर *हम्मीप्र.* *वछेरो, घोडानी एक जात, किसोयरा] [*सं.कृशोदर]

किसोर तेरका. किशोर, बच्चं

किर्स्यं ऋषिरा. नरका. लावल. वसंफा. वसंवि. केवुं, शुं, केम (सं.कीदृश)

किस्योर्ड *आनंस्त*. कशोय

किह, किहडं, कीहं आरारा. "ऐतिस. *गुर्जरा.* क्यां, क्यांय (सं.कस्मिन्)

किहाडा अभिक्त. एक जातना घोडा किहारि, किहारे, किहिवारि कादं(शा).

नलाख्या. क्यारे (सं.कस्मिन् वारे)

किहां, कीहां आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. वीसरा. षडाबा. क्यां (सं.कस्मात्)

किहांई गुर्जरा क्यांय

किहांतर उपना, वाग्भवा, क्यांथी किहां हुतउ उक्तिर. क्यांथी, कये स्थळेथी **किहि** कादं(शा). गुर्जरा. क्यांय(सं.कस्मिन्) किहि प्रबोप्र. कहे (सं.कथयू)

किहिण नलाख्या. कहेण, [कहेती, लोक-प्रसिद्ध कथनी] (सं.कथनी) किहिबारि जुओ किहारि किहिं गुर्जरा. क्यांय

किही गुर्जराः वनाव किही गुर्जराः कोई [सं.कति, प्रा.कइ परथी]

किही नलाख्या. *क्यांय, *कोई स्थळे[क्यां]

किहीं कादं(शा). नलाख्या. क्यां, कये स्थळे, क्यांक (सं.कस्मिन्)

किंदु *उषाह.* (सं.कीदृश)

किहो नरका. कयो, शो [सं.कीदृश]

किह्यां *गुर्जरा. [क्यां] (सं.कस्मात्)

किं *प्रेमाका*. तेथी शुं, [शुं थयुं जो]

किंकणी *प्रेमाका*. झीणी घूघरी [सं. किंकिणी]

किंकिणि, किंकिणी *तेरका. नरका.* यूघरी, नानी घंटडी [सं.]

किंगाई ऋषिरा. केकारव करे [सं.केकायते] किंचूण वडावा. थोडुंक ओछुं, [लगभग प्रुहं] (सं.किंचित्+ऊनम्)

किंनर, कीनर कामा(शा). नेमिछं. एक देवकल्प योनि, व्यिंतरदेवनी एक जाति] [सं.]

किनरकंठि जुओ किन्नरकंठि

किंनरय *तेरका.* किञ्चर, [व्यंतरदेवनो एक प्रकार] (सं.किञ्चरक)

किंपि आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. "विराप. कंई पण (सं.किमपि)

किंबा दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. पण, तोपण; अथवा; शुं धयुं जो, तेथी शुं, छोने (सं.) की पंचवा. केवी रीते (सं.कथं)

की *पंचवा*. क्यां (सं.कुत्र)

की नरका. केवी, शी; वीसरा. शुं (प्रश्नार्थक) (सं.किम्)

कीउ जुओ किउ

कीकर मदमो. किंकर

कीकीयउ जिनरा. कीकलो, बाळक

कीगरी कामा(शा). सारंगी [सं.किंनरी]; जुओ कीनरी

कीच अखाका. कीचड, कादव

कीजइ आनंस्त. उपवा. कराय, करवामाः आये [सं.क्रियते]

कीजड उक्तिर. तेरका. करायुं

कीजतः उक्तिर. वडावा. करातुं (सं.क्रिय-माणम्)

कीजिसिइ उक्तिर. कराशे

कीटउं षडाबा. कीटुं, घीमां जमा थतो मेल (सं.किट्टम्)

कीटिका थडावा. कीडी (सं.)

कीटी उक्तिर. रूमां वळगेलुं कस्तर के तेल-घीनुं कीटुं (सं.किट्टिका)

कीडीउं नलरा. नानो काचनो मणको, [एनो टगीनो] (दे.चीड)

कीर्डा-नगरे *आरारौं.* कीडियारां, कीडीनां दर

कीड्य *वेताप.* खजवाळ, चळ

कीणइ उपवा. कोनाथी (सं.केन)

कीध, कीधर्ष आनंस्त. उपवा. ऋषिरां. नलाख्या. लावल. वीसरा. षडाबा. कर्युं (सं.कृतम्)

कीहो *प्रेमाका*, कयो

कीन आरारा. कर्युं, कीधुं, प्रवर्ताव्युं (रा.) कीनर जुओ किंनर कीनरी, कींगरी कामा(त्रि). सारंगी [सं. किंनरी]; जुओ कीगरी कीम जुओ किम कीयंड जुओ कियंड कीर अखाका. कामा(त्रि). पोपट (सं.) कीर प्रद्युच्. देशविशेष, [काश्मीर] (सं.) कीर-आनन प्रेमाका. पोपटनी चांच **कीरत** नरप(द). कीर्तन, [भक्तिगान] कीरत अखाका. कामा(शा). कीर्ति कीरत्य अखेगी. कीर्ति **कीरपी** *वेताप. सिंहा(शा).* कृपण **कीर्त्तइ** *जिक्तर. षडाबा.* स्तुति करे, यश गाय (सं.कीर्तयति) कीलइ *ऐतिकाः [डामर वडे] कीलमीश जुओ किल्मिष **कीव** *गुर्जरा*. पावैयो (सं.क्लीव) कीवाचारु गुर्जरा. पावैयाओनो आचार्य (सं.क्लीवाचार्य) **कीसी** गूर्जरा. कोई पण (सं.कीदृशानि) कीहं जुओ किह **कीहा** चतुचा. प्रेमाका. कयां [सं.कीदृश] **कीहा** *पंचवा.* क्यां (सं.कस्मात्) कीहां जुओ किहां **कीहि** कादं(शा). कये कींद्व रूस्तस. कयुं **कीहूं** *कादं(ध्र). कादं(शा).* कयुं **कीहे ***अखाछ. दशस्कं(१). प्रेमाका. कये;

कींगरी जुओ कीनरी कींगाइ, कींगायइ उक्तिर. शृंगामं. केकारव करे (सं.केकायते) **क्** नेमिछं. कोई, कोईक; गुर्जरा. तैरका. कोण (सं.कः); जुओ कु जि **कुई** *उषाह. तेरका.* कोई (सं.कोऽपि) कुउ, कुयु, कूउ आरारा. उक्तिर. वाग्भवा. कुवो (सं.कूप) **कुउण** *षष्टिप्र*. कोण (सं.कः पूनः) कुएक नलाख्या. कोईएक, कोक (सं.कोऽपि एक:) कुकतु वाग्भवा. ग्रहण करतो, लेतो, उज्जार करतो] [*सं.कु; प्रा.कुक्क]; जुओ कूकइ कुगला आरारा. कादं(शा). कोगळा **कुग्गह** *ऐतिका*. कुग्रह, दुष्ट ग्रह **कुघाट** *उक्तिर.* [?] (सं.) **कुच** वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). स्तन (सं.) कुचभर * वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). स्तननी परिपूर्णता, [पृष्टता] (सं.) क्चभरभार वसंफा. वसंवि. वसंवि(बा). स्तननी पृष्टतानो भार (सं.) **कुचेल** उक्तिर. एक वनस्पति, काळी पाठ (सं.कूचेला) **कुच्छि** ऐतिका. कुक्षि, कूख कुच्छित, कुछित, कुछित्र उक्तिर. निंद्य, नीच, गंदो (सं.कुत्सितः); नलाख्या. नलरा. *निंद्य, [गंदुं, कदूप, मेलुं] कुछनज वीसरा. फूवड, [हलका] [सं.

कया

कुत्स परथी] कुछोभी मदमो. निर्लञ्ज ?, [*कलंकिनी, "दुष्ट] **कुलकोइ** *जिनरा*. हरएक, सर्व **"कुजर [कुंजर]** कामा(त्रि). हाथी **कु जि** *उक्तिर.* [*कोई ज, *कंई ज]; जुओ कु **कुटकई** *पष्टिप्र*. टुकडो पण **कुटम** *देवरा.* कुटुंब **कुटल** *आरारा.* कुटिल, कपटी **कुटंब** गुर्जरा. कुटुंब **कुटी** ऋषिरा. कुटणी, वेश्यानी दलाली करनार स्त्री (सं.कृष्ट्रिनी) **कुटीरड**उ * गुर्जरा. *विराप. [एक छोड] [सं. कुटीर] कुटुंबी षडावा. कुटुंबवाळो, गृहस्थ **कुटो** *मदमो*. भंगार [सं.कुट्ट-] **कुट्टि** उक्तिर. कोंटियो, खूंघो (*सं.कुट्टी) कुट्टिम कादं(शा). फरसबंधी (जमीन) (सं.) कुठ आरारा(व). कोठी, कोठुं (सं.कपित्थ) **कुडंब**ज *आरारा.* कुटुंब **कुडा** *तेरका. वाग्भवा.* कुटज, वृक्षविशेष कुडि प्राचीसं. शरीर (सं.कुटि) कुडि नलरा. कोडी, शंखलुं (सं.कपर्दिकां) कुड़ी (कूडी) उक्तिर. चामडानी कुप्पी ("सं. कुतूः); जुओ कूडी **कुडीरउं** *प्राचीसं*. कुटीर, झूंपडी **कुडुछी** *षडाबा.* कडछी [दे.कडच्छू] **कुडुं** *ऐतिका. देवरा.* मिथ्या, खोटी; जुओ कुई

कुडुंबड *गुर्जरा.* कुटुंब कुडुंबी उक्तिर. कुटुंबी, [*कणबी] **कुड्मल** कादं(शा). कूंपळ (सं.) **कुढार** *दशस्कं(२)*. कुहाडो [सं.कुठार] **कुढि** उक्तिर. कोढियो, कोढवाळो (सं. कुष्ठी) **कुण, कुंण, कूण, कूंण** *आरारा. उक्तिर.* उपबा. गुर्जरा. नलाख्या. वाग्भवा. वीसरा. कया, कोण, कोई (सं. कः पुनः) **कुणइ** **षडाबा.* [कोणे] (सं.कः पुनः) कुणउं आरारा. कूणूं, निर्बळ **कुणएक** *उपबा*. कोईएक, कोईक कुणओ चारफा. [बाळक], अधूरो, [काचो] (दे.कृणिअ?) [सं.कुणक] **कुणप** ऋषिरा. मडदूं (सं.) **कुणबी** *सिंहा(म)*. खेडूत (सं.कुटुंबी) **कुणबु** *आरारा. गुर्जरा.* कुट्रंब **कुणहड़, कुणहि** गुर्जरा. वाग्भवा. कोई पण, कोईक कुणंति ऐतिका. कहे, [गणगणे] [सं.कुण्] कुणिकि कादं(शा). कोईके (सं.कः पुनः) कुणे मदमो. खुणे [सं.कोण] **कुणेक *** नलाख्या. [कोईएक, **कोई**क] कुण्डी उक्तिर. कमंडळ (सं.) कुतकुं, कुतको सिंहा(शा). दंड्को; दस्तो (फा.कुकः) **कुतिंग** *नेमिछं*: आश्चर्यथी, [कृत्हतथी], [विनोदमां] (सं.कौतुक); जुओ कउतिग **कुतबी** *हम्मीप्र*. कुलुद्दीने पडावेली (महोर)

कुतिक, कुतिग कर्प्मं विक्ररा शीलक. कुत्हल, इंतेजारी; आरारा. विक्ररा. सिंहा(म). नवाई, [नवाईभरी घटना -बाबत**ो:** *गुर्जरा. नलरा.* **कौतुक, गिम्म**त, विनोद]; नेमिछं आश्चर्य, [मनोरंजन]: *आश्चर्यकारक हावभाव [विनोदात्मक चेष्टो]; गुर्जरा. विराप. कौतुक, इच्छा, [उमंग]; [तमाशो]; जुओ कउतिग कुतिगीउ उक्तिर. विमप्रं. हम्मीप्र. [कुत्हलवाळो] (सं.

कौतुकिकः) **कुतूहल** सम्यची. कौतुक, गम्पत, [विनोद, कल्पनाविलास, मनोरंजन] [सं.]

कुतोहल, कुतोहक कादं(शा). कौतुक, [उत्कंठा] (सं.कृतूहल); *दशस्कं(१)*. कौत्क, [कौतुकभरी, नवाईभरी]

कुष कादं(शा). सादडी (सं.कुथा)

कुद्दल *पडाबा*. कोदाळी (सं.)

कौतुकयुक्त,

क्यात आनंस्त. हलकी के उपेक्षणीय धात् **कुपड़** *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा.* कोपे, गुस्से थाय (सं.कुप्यते)

कुबेर हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात कुभित षष्टिप्र. खराब भात - चितरामण (सं.कुभक्ति); जुओ ऊभति

कुमर गुर्जरा. तेरका. देवरा. विक्रसा. कुमार, कुंबर

कुमर-सरोवर तेरका. कुमारी सरोवर, [एक सरोवरनुं नाम]

कुमरि, कुमरी आरारा. कुमारिका; गुर्जरा. वीसरा. दीकरी, राजकुंवरी

कुमलाइ *अंबरा.* करमाय [सं.क्लाम्यति] कुमळाणड वीसरा. करमायेली कुमाग ऐतिराः कुमार्ग

कुमाणस उपबा. खराब माणस (सं.कू+ मानुष)

कुमारीपुर कादं(शा). कुमारीओने रहेवानो वास

कुमास *प्राचीसं*. अडद, अडदना बाकळा (सं.कुल्माष)

कुयु जुओ कुउ

कुर, कुर आरारा. ऐतिरा. नरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा)*. भात, [रांधेला चोखा] [सं.कूर]

कुरकट मदमो. कूकडो (सं.कुक़ुट)

कुरडबरडादिकनी आनंस्त. कुरंड, बरुड (मनुष्यनी हलकी जातिनां नाम) आदिनी

करणी प्राचीफां. करेण (सं.करेण)

कुरबक, कुरुबक ऋषिरा. कादं(शा). *तेरका*. एक प्रकारनुं झाड, [कांटा-शेरियो] (सं.)

कुरमाणी गुर्जरा. शीलक. करमाई, खिन्न थई (सं.क्लाम्यति परथी) सि.कूर्मायते परधी

कुररी अखेगी. विराप. टिटोडी (सं.); जुओ कुरुरी

प्राचीफा. वसंफा. कुरळइ कुरलइ, वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. हम्मीप्र. टहुके, चीसो पाडे, आक्रंद करे, का का करे, बोले, [अवाज करे] (दे.कुरुल)

कुरव *गुर्जरा*. कौरव कुरवदल अभिक्त. कौरवोनुं सैन्य **कुरंग** वसंफा. कमळ (सं.); वसंवि. वसंवि(ब्रा). कुरंग, मोगरा जूई-जाईनी जातिनो] छोड (सं.) कुरंग, कुरंगो ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. हरण (सं.) कुरांण सिंहा(शा). करुणा, [कृपा, दया] **कुरुखेत, कुरुखेत्र** *उक्तिर. गुर्जरा.* कुरुक्षेत्र **कुरुटतउ** *उक्तिर*. खोतरतो, कातरतो **कुरुत** *अखाका.* कृत्य, कर्म **कुरुवल** *गुर्जरा. विराप.* कौरवोनुं सैन्य **कुरु-नरिंदु** *गुर्जरा.* कुरुराज (सं.कुरुनरेन्द्र) कुरुबक जुओ कुरबक कुरुरी गुर्जरा. टिटोडी (सं.कुररी) कुरुल प्राचीफा. वांकडिया (सं.कुरल) **कुरुविंद** शृंगामं. हींगळी [सं.] **कुरुंआइय** *तेरका*. करमाव्युं (सं.कूर्मायित) **कुल** तेरका. समूह [सं.]; कादं(ध्रु). समूह, जथ्थो; [(गुरु)गृह] **कुलकरणी** ऋषिरा. कुलना आचार के रिवाज (सं.) कुलकाणि कादं(ध्र). कादं(शा). कुलनी मर्यादा, प्रतिष्ठा [रा.]; जुओ काणि **कुलखंपण** *प्रवोप्र. विक्ररा.* कुलकलंक, [कूळनी खांपण, एब] **कुलख्यणा** *आरारा*. कुलक्षणवाळा कुलय, कुलथी उक्तिर. कळथी, एक अनाज (सं.कुलत्थ)

कुलदेविल गुर्जरा. कुलदेवी कुलबाला *ऋषिरा*. खानदान कुटुंबनी स्त्रीओ [सं.] क्क-बेडो प्रेमाका. कुळने तारनार [नाव] [सं.कूल+दे.बेड] **कुलबोई** *गुर्जरा. विराप.* कुळने बोळनार **कुलमंडण** *गुर्जरा. विकरा*. कुलमंडन, कुलना आभूषणस्वप **कुलवट** *आनंस्त. गुर्जरा*. कुलाचार, कुळनी रूढि; जुओ कुलिवट **कुछ-वत्रेक** *प्रेमाका*. कुळथी विरुद्ध, [कुळथी जुदो], [*कुलश्रेष्ठ] [सं.कुल-व्यतिरेको **कुलिसणगारी** *गुर्जरा.* **कुळना शणगाररू**प (स्त्री) कुळह वीसरा. टोपी (फा.कुलाह) कुलह कबाइ, कुलह कबाहि हम्मीप्र. प्रीतिदान तरीके अपातां वस्त्रालंकार. [टोपी-झम्भो, अमीरोनो एक पोषाक] [फा.कुलाह+कबा]; जुओ कबाहि **कुलंछणु** *गूर्जरा.* खराब लांछन, [एब] (सं. कुलांछन) **कुलाचल** नेमिछं. लावल ए नामनो पौराणिक पर्वत [सं.] **कुलाहल** *दशस्कं(१). ह्रस्तस*. कोलाहल **कुलिबट अभि**ऊ. कुळवट, कुलीनता (सं. कुल+वर्त्म); जुओ कुलवट **कुली** अभिक. आरारा. गुर्जरा. "विमप्र. हरिवि. कळी (सं.कलिका) **कुली** **वसंवि(ब्रा)*. [*कूला, *नितंब,

कुलदेवति *लावल*. कुलदेवता

*थापा] [दे.कुझ]; जुओ कूलीय कुळी वीसरा. कुळ, वंश कुलीक *जिनरा. [कलंक, लांछन] कुल्डड वीसरा. कूलडी, नानुं वासण (दे. कुझड)

कुश-अग्र ऋषिरा. डाभ — एक घास — नी अणी (सं.)

कुशम प्राचीफा. फूल (सं.कुसुम) कुशलीखेम कामा(शा). क्षेमकुशळ कुशोभो नलरा. शोभानो अभाव, अपकीर्ति कुष्ट कादं(ध्रु). उपलेट, [कोठुं, एक करियाणुं]; [कोढ]; [श्लिष्ट शब्द] [सं.कुष्ठ]

कुटी ऋषिरा. पंचवा. कोढियो (सं.कुष्ठिन्) कुस आरारा. कुश, एक प्रकारनुं घास कुसइ उक्तिर. रुए, आक्रंद करे (सं. क्रोशति)

कुसका प्रेमाका. फोतरां [दे.कुक्कुस] कुसणइ उक्तिर. कसणे, [दाळभात वगेरे] चोळे [दे.कुसण परथी] कुसलखेमि आरारा. क्षेमकुशळ

कुसहिज *सिंहा(म).* अनुदारता, कृपणता; जुओ सहिज

कुसा *षडाबा.* नाना सिळया जेवा टुकडाओं कुसाटि *आरारा.* खोटो सोदो कुसि *जिक्तर.* दोरडी, लगाम (सं.कुशा)

कुसुघउ गुर्जरा. अमंगल (सं.कु+शुद्ध)

कुसुमचय लावल. पुष्पोनो समूह [सं.]

कुतुमबाण *तेरका.* [कुसुम जेनां बाण छे ते] कामदेव (सं.) कुसुमायुष वसंफा. वसंफा(त). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कुसुम जेनां शस्त्र छे ते कामदेव (सं.)

कुसुंब *प्रेमाका.* कसुंबो, [*पीतांबर – नीचेनुं वस्त्र]

कुसुंभ कांद(शा). कसुंबल — राता रंगनुं (सं.कौसुंभ)

कुसूत *वीसरा*. खराब गोठवण, खराब रचना (सं.कुसूत्र)

कुहइ *जिकर*. कोहे, सडी जाय, नाश पामे (सं.कुथ्यति)

कुहका आरारा. कुहु कुहु अवाज **कुहणी** *उक्तिर. वीसरा. षडाबा.* कोणी (सं.कफोणि)

कुहरिया * वसंफा. * वसंवि. वसंवि(ब्रा). कोयलना अवाजथी गुंजी ऊठ्या (प्रा. कुहुरिअ)

कुहाडि (मत्थइ भागी कुहाडि) नेमिछं. माथे अतिशय दुःख नाख्यां

कुहिउं *उक्तिर. शीलक. षडाबा.* कोहेलुं, सडी गयेलुं, वासी (सं.कुथितम्)

कुहु *नलाख्या.* कहो (सं.कथय)

कुहुतग कर्पूमं. आश्चर्य, [मनोविनोद] (सं. कौतुक); जुओ कउतिग

कुहुने कादं(शा). कोने

कुहुंनइ ऋषिरा. कोईने

कुहे नलाख्या. कोई (सं.कः अपि)

कुहिन नलाख्या. कोने

कुंअर *उक्तिर. गुर्जरा.* कुमार, राजकुमार **कुंअलउं** *उक्तिर. प्राचीफा. लावल.* कोमल, नाजुक; विमग्न. कोमळ, नम्न **कुंआरे** उक्तिर. कुमारी **कुंआरे** आरारा(व). कुंवार, **कुं**वारपाठुं (सं. कुमारी)

कुंआरि, कुआरी *उक्तिर. गुर्जरा.* कुमारी **कुंकउती** *ऐतिका.* कुंकुमपत्रिका

कुंकण नलरा. नेमिछं. एक देश, कोंकण; केळानी एक जात सूचवतुं विशेषण [कोंकणना ?]

कुंकण आरास(व). रातुं कमळ (दे.) **कुंकणा** हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात,

[कोंकणना]

कुंकमरोल ऋषिरा. *विमप्र. मंगल माटे ज्यां कंकु रेलायेलुं होय ते, [कंकुनो छंटकाव]

कुंकावटी *दशस्कं(१)*. कंकावटी

कुंकुमधोल वसंवि. वसंवि(ब्रा). केसर [कंकु] घोळेलुं पाणी, कंकुनो रगडो [सं.कुंकुम+प्रा.घोल]

कुंक् उक्तिर. कंकु (सं.कुंकुम); जुओ कूंकम **कुंच, कूंच** अंवरा. प्राचीस. *विमप्र. दाढी; दाढी-मूछ [सं.कूर्च]; जुओ मूछकूछ

कुंचकी प्राचीफा. कांचळी (सं.कंचुकी)

कुंचुकिउ (कंचुकिउ) *गुर्जरा. [-नुं बख्तर पहेर्युं छे एवो, -ना आवरणवाळो]; जुओ कंचुकिउ

कुंजर नरका. प्रेमाका. वीसरा. हाथी (सं.); जुओ कुजर

कुंजर-शौचपणुं अखाका. (हाथी नहावाना शोखीन होय छे, छतां मेला देखाय छे ते परथी) मिथ्या बाह्याचार कुंझीबाल अखाका. फ्लेमिंगो के बगला जेवा एक पक्षीनां बद्यां, [कुंजडीनां बद्यां] कुंठसस्त्र उक्तिर. कुंठित – बूठुं शस्त्र (सं. कुंठं शस्त्रम्)

खुंडल, खुंडळ तेरका. नरका-२. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). हम्मीप्र. काननुं आभूषण

कुंडळी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* कुंडाळुं – गूंचळुं वळेलां शींगडांवाळी

कुंडलूं *नलाख्या*. कूंडाळुं, [गूंचळुं] (सं. कुंडलकम्)

कुंडी जुओ कुण्डी

कुंडे चडतुं [कूडे चडतुं] प्रेमाका. लडाईमां दावपेच खेलवा; जुओ कूडे चडवुं कुंडे फरे [कूडे फरे] प्रेमाका. दावपेच खेले कुंड उक्तिर. मंद, मूर्ख, आळसु (सं.कुंठम्) कुंडगोठि उक्तिर. मूर्खाओनी मंडळी (सं.कुंठ-

गोष्ठी) **कुंढली** जुओ कूंढली **कुंग** जुओ कुण

कुंतल रुस्तमः घोडा (उ.कोतल) [तु. कुतल]; जुओ कोतल

कुंतार *दशस्कं(२). प्रेमाका*. महावत [*सं. कुन्त परथी]

कुंथुया *षडावा.* एक नानकडुं जीवडुं [प्रा. · कुंथु]

कुंद *तेरका.* मोगरो (सं.)

कुंवकुपुम वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कस्तूरी मोगरो (सं.)

प्रा.कुक]; जुओ कूकइ

कुंदण *नलाख्या.* कुंदन, सोनुं **कुंब** हरिवि. कंबु, शंख **कुंभकर्णना उपासी** *प्रेमाका*. कुंभकर्णना उपासक], कुंभकर्ण जेवा ऊंघणशी **क्रुंभी** उक्तिर. घडो – धान्यनुं एक माप (सं.) **कुंभीय** *गुर्जरा*. हाथी (सं.कुंभिन्) **कुंमख** *सत्तस*. कुमक, [मदद], [सहायता अर्थे मोकलेली सेना] **कुंभारउ (कुंमारउ सोन**उ) *उक्तिर.* शुद्ध सोनुं (सं.कुमारं सुवर्णम्) **कुंगर विक**रा. कुंवर, कुमार **कुंबरि** गुर्जरा. कुंवरी, राजकुंवरी **कुंयारी** *आरारा*. कुंवारी **क्अडा** *हम्मीप्र.* कूवा [सं.कूप] कुआकंठइ उक्तिर. कूवाकांठे (सं.कूपकंठे) **क्टू, कूए** अभिक्त. उपबा. गुर्जरा. कूवामां **कूउ** जुओ कुउ **कुओ** *प्राचीफा*. वहाणनो एक भाग, क्वायंभ (सं.कूप) क्कइ उक्तिर. बोलावे [सं.कु, प्रा.कुक्क]; जुओ कुकतु, कूकूइ, कोक-क्कट अखाका. दंभ, [कपट, जूठ, मिथ्या] क्कर उक्तिर. विक्रच. षष्टिप्र. कृतरो (सं. कुकुर) क्टूकस अखाका. अखाछ. नलरा. वीसरा. सिंहा(म). कुशका, फोतरां (दे.कुक़ुस) कुका उक्तिर. तीव्र स्पृहा, उत्कंठा **कूकुद्र** *प्रद्युचु***. कू कू** एम अवाज करे, [बडबडे, दुःखनो अवाज करे] [सं.कु,

कूखडी *नेमिछं.* कूख, उदर (सं.कुक्षि) **कूछ** जुओ मूछकूछ **कूट** अखाछ. कूड़ी, [भूंडी, खोटी] (सं.) **कूटकानी** *अखाछ*. कूडभर्यो ज्ञानी, [मिथ्या-ज्ञानी **कूटणज** *उक्तिर.* कूटणुं, कूटवुं ते (सं. कुट्टनम्) **कूटणी** *वीसरा*. वेश्यानी दूती – दलाल (सं.कुट्टिनी) **कूटतारूढ** *षडाबा.* खोटां वजनियां मूकवां **कृटिवइ** *उपबा*. कृटवामां, मारवामां (सं. कुट्ट) **कूड** अखाका. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. नरका. नलाख्या. लावल. *विराप. *वीसरा.* कपट, छळ, प्रपंच (सं.कूट); *जिनरा*. *मिथ्या, [*खोटुं], [*कपट] **कूडउं** उपवा. षडावा. असत्यमय, जूठु कुडकमाइ (कूड कमाइ) * नेमिछं. [कपट करे]; जुओ कमाइ **कूडकला** *आरारा*. छळकपटनी कळा (सं. क्टकला) **कूडछी** *उक्तिर*. कडछी [दे.कडच्छु] **क्डाबोलउ** उपबाः खोटाबोलो **कूडी** *षडाबा*. चामडानी कुप्पी; जुओ कुडी **कुडीड** *गुर्जरा*. कपट करनार (सं.कूटिक) कड़ी कड़ी नरका. "खोटी, ["नकामी, *अमधी कुर्डुं आरारा. कपटी, बनावटी (सं.कूट);

अभिक. प्रेमाका. कपटयुक्त, खिदुं, खराब]; *नलाख्या. [खोद्र]; जुओ कुडुं **कूडे चडतुं** *दशस्कं(१)*. लडाईमां दावपेच खेलवा; जुओ कुंडे चडवुं क्ट्रे फरे जुओ कुंडे फरे **कूण** *उपबा*. कोण; जुओ कुण कृति "वडाबा. [एक प्रकारनी मधमाखी] [दे.कुत्तिका] कृतिर, कृतिरख आनंस्त. विक्रच. षडाबा. षष्टिप्र. कूतरो (सं.कुक़ुर; प्रा.*कुतुर) [दे.कुत्ती] कूपइ उक्तिर. कोपे, गुस्सो करे (सं.कुप्यति) क्रपचक अखेगी. कूवानो रेंट [सं.] **कूपल, कूपळ** *गुर्जरा. वीसरा.* कूंपळ (सं.कुड्मल) **कूभार** *गुर्जरा.* कुंभार (सं.कुंभकार) **क्या** *आरारा. षडाबा*. कूवा (सं.कूप) **कूर** गुर्जरा. क्रुर, [निर्दय] **कूर** जुओ कुर **कूरी** *प्रेमाका.* कूर, भात, रांधेला भात कुर्म्म आरारा. काचबो (सं.) कूलउं उपवा. [कूलुं], अविकसित, [पोचुं] (सं.कोमलकम्) कुल-झरो चंद्रवा. ?, [*कुळना प्रवाहरूप, *कुळने आगळ लई जनार] कुलिरि सिंहा(म). धी-गोळ साथे चोळेलो बाजरीनो लोट, कुलेर (दे.कुल्लुरी) **कुलीय** **गुर्जरा.* [*कूला, *नितंब, *थापा] [दे.कुझ]; जुओ कुली

कूलेरा जुओ वेलाकुले **कूल** *उक्तिर*. नहेर, खाई (सं.कुल्या) **कूव** *गुर्जरा*. कृपाचार्य क्वडउ उक्तिर. गाडा वगेरेनो आगळनो भाग, धूंसरीनुं लाकडुं (सं.कूवरः) क्षडिय तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. नानो कूवो, कूई (सं.कूपिका) **कुशके** *नरका***. फोतरा**मां **कुंअर** *नलाख्या*. राजपुत्र [कुंवर, दीकरो] (सं.कुमार); *नेमिछं*. कुंवर **क्ंअलउं** *उक्तिर. वसंवि.* कूंलुं, सुकुमार (सं.कोमल) **क्ंकम, क्ंकूं** *वीसरा.* कंकु (सं.कुंकुम); जुओ कुंकु **कूंकूय** *गुर्जरा.* कुंकुम **कूंच** जुओ कुंच कुंढली (कुंढली) अक्तिर. वर्तुळाकार शिगडा-वाळी (सं.कुंडलितशृङ्गी) **कूंण** *गुर्जरा.* कोण (सं.कः पुनः); जुओ कुण कूंपली प्रेमप. कुप्पी, [चानडानी शीशी] क्रंपी वीसरा. शीशी, चामडानुं सांकडा मोंनुं पात्र [सं.कृतुप] ***कूंपु [खूंपु]** **अभिऊ*. [माथा परनो फूलनो एक शणगार, शहेरो] दि.खुंपा] **कूंभट** *उक्तिर*. कूब्जकंटक, [*गोरडियो बावळ. *एक कांटाळी वनस्पति जेनां फळनां बी शाकमां वपराय छे] [रा. कुभटौ

कुंभी *उक्तिर.* यांभला नीचेनी पथ्थर अथवा

कूलु *गुर्जरा.* कांठो (सं.कूल)

लाकडानी बेसणी (सं.कुम्मी) **क्रूंभी** *गुर्जरा. षडाबा.* नानो घडो (सं. कुम्भिका)

कूंयर *ऐतिरा. गुर्जरा.* कुंवर, राजकुंवर (सं. कुमार)

कूंयर *गुर्जरा. विराप.* कुंवरी, राजकुंवरी (सं.कुमारिका)

क्ंयरपणइं *नेमिछं.* कुमारावस्थामां, [युव-राजपद पहेलांनी अवस्थामां]

कूंयार *गुर्जरा*. राजकुंवर (सं.कुमार) **कूंयारि** *गुर्जरा*. राजकुंवरी (सं.कूमारिका)

कूंबार गुजरा. राजकुपरा (स.कुमारिका) **कूंबारी** गुजरा. कुंवारी (सं.कुमारिका)

कूंली ऋषिरा. कुमळी, सुंवाळी (सं.कोमल) कूंवळउ वीसरा. कूणुं, नाजुक (सं.कोमल)

कृतमअकृतम *दशस्क (१)*. कर्तुम् अकर्तुम्, करवानुं ने नष्ट करवानुं

कृत श्येन कांद (शा). ऊजळो सत्ययुग (सं.) कृतांत आरारा. प्रेमाका. यमदेव, काळ-देवता (सं.)

कृत्या *गुर्जरा*. मारणकर्म माटे आराधाती देवी (सं.)

कृपणाई *आरारा.* कृपणता, लोभ; लावल. कृपणपणुं, कंजूसाई, [दरिद्रता, लघुता] कृपणक *पाचीफा* कपानिधान (सं कपा-

कृपागरु *प्राचीफा*. कृपानिधान (सं.कृपा-कर)

कृपागुर गुर्जरा. गुरु कृपाचार्य **कृपाण** वसंफा. वसंवि(ब्रा). तरवार (सं.);

कृषाणपाणि *गुर्जरा*. हाथमां तलवार **धारण** करनार (सं.)

कृपाणी लावल. तरवार [सं.कृपाण+ई] कृशतणुं ऋषिरा. दुर्बळ, सूकुं शरीर [जेनुं छे एवी स्त्री] (सं.कृशतन्)

कृशि-कटी *कादं(शा)*. पातळी केडवाळी (सं.कृश-कटी)

कृष्ण-भगं अभिऊ: कृष्णयी भागेलां [के पराजित] [सं.कृष्ण+भग्न]

कृष्णागर, कृष्णागुरु आरारा(व). ऋषिरा. नरका. नरप(द). नेमिछं. प्रेमाका. कार्त्तुं अगरु

के उषाह. नरप(द). नलरा. विमप्र. षडाबा. कोई, केटलाक, कया (सं.कः, के)

के (जदुपतिके) चतुचा. (जदुपति) पासे; जुओ तमके, माहावके, राधाजीके

केइ, केई आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. "देवरा. केटलाय (सं.के अपि)

केई जुओ केइ

केई केई प्रेमाका. कईकई, केटली

केडर गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). केयूर, बाजुबंध, कडां

केकणो (कींकणो) मदमो. छंदविशेष

केकाण, केकांण गुर्जरा. नेलरा. प्राचीसं. प्रेमाका. मदमो. रूस्तस. ललिरा. विक्ररा. वीसरा. कयकान प्रदेशना घोडा

केकि, केकिय ऋषिरा. गुर्जरा. केका करे ते, मोर (सं.केकिन्)

केटिलि नलाख्या. केटलेक (सं.कियत्+ तुल्यकम्)

केड जिनरा. नरका. प्रेमाका. केडो, पीछो, [केडे, पाछळ] [सं.कटि]

जुओ किशलकपाण

केडइ गुर्जरा. जिनरा. रूपच. षडावा. पाछळ (सं.कटि); गुर्जरा. पछीथी केडड करइ प्राचीसं. पीछो करे केडाइतपणउं षष्टिप्र. अनुयायीपणुं केडावेड वेताप. वाराफरती, [*केडाकेड, *पाछळपाछळ]

केंडि नलाख्या. केड, पूंठ, [पछी] (सं. किट); अंबरा. नेमिछं. प्रबोप्र. केडो, [पीछो]; लिलरा. केडे, पाछळ केंडिलु षष्टिप्र. पाछळनो

केण कामा(त्रि). कहेवापणुं, [लोकापवाद] [सं.कथन, प्रा.कहण]

केण *आरारा*. शा माटे, [कया कारणथी] [सं.केन]

केणइ आरारा. कया; ऐतिरा. कोईए; तावल. कोणे; कोईए

केणइ गान आरारा. कई विसातमां; जुओ किण गानइ

केणी आरारा. कई

केत उक्तिर. हरिवि. केतु, एक ग्रह; कादं(शा). भूतप्रेत (सं.केतु)

केतइ ऋषिरा. केटलेक [सं.कैयत्तिक]

केतन गुर्जरा. चिह्न (सं.); वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). ध्वज, चिह्न (सं.)

केतलउं आनंस्त. उक्तिर. उपदा. जिनरा. नलरा. षडाबा. केटलुं [सं.कियत्+ तुल्यम्]

केतलाएक आनंस्त. उपबा. केटलाक केती वार षडाबा. केटलीये वार, वारंवार (सं.कैयत्तिक वार)

केत् *वसंफा. वसंवि(ल). वसंवि(ब्रा).

धूमकेतु (सं.)

केतुिक वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). केतकीनो छोड

केतुं अभिक. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. मदमो. लावल. केटलुं, केटलुंक [सं.कैयत्तिक]

केथर्ज गुर्जरा. *क्यांय [अप.केल्यु], [*निरर्थक, *मिथ्या] [सं.कदर्थ, प्रा. कयत्य]

केवि आरारा. *क्यां, [क्यांय] [अप.केल्यु] केवार उक्तिर. क्यारी (सं.)

केनी *नरका*. कोईनी

कर दशस्क(१). ग्रेमाका. केरडां, केरडांनुं अथाणुं [सं.करीर]

केरडुं अखाका. ऋषिरा. लावल. केरुं, तणुं केल, केलि अखाका. नरका. प्रेमक्रीडा, कामक्रीडा [सं.केलि]

केलबइ *अंबरा. आरारा. ऋषिरा. *नलरा. प्राचीफा. *विक्ररा. करे, बनावे, [उत्पन्न करे, तैयार करे, घडे, सज्ज करे, रचे, सर्जन करे] [दे.केलाय]

केलबण * नलरा. [रचना, उत्पत्ति] केलि नरका-२. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि(ब्रा). रतिक्रीडा (सं.); जुओ केल

केरिल, केंकि आरारा. उक्तिर. नलरा. केंक (सं.कदली); वीसरा. केंक, केंकुं

केलिडरां विक्ररा. कदलीगृह, [केळनो रचेलो मंडप]; जुओ केलीहर

केली नरका. प्रेमक्रीडा [सं.]

केलीशुक ऋषिरा. रमतनो [मनोविनोद माटे पाळेलो] पोपट (सं.)

केलीहर *गुर्जरा.* केळनो रचेंलो मंडप (सं. कदलीगृह); जुओ केलिहरां केले आखाका. केलिमां, [क्रीडामां] **केव *** नलाख्या. किमेय] (अप.केम्व] **केवओ** *चारफा*. केमेय (अप.केवं) केवड आरारा(व). केवडो (सं.केतकी) केवडियालंड प्राचीसं. केतकीयुक्त, [केवडा-ना फूलनो बनेलो] **केवडी** *आरारा(व)*. *गूर्जरा*. केवडो (सं. केतकी) केवडी "चारफा. किटली, केवी] **केवडीआलउ** *गुर्जरा.* केवडाना फूलनुं बनेलुं **केवल** नलरा. प्राचीफा. सर्वश्रेष्ठ ज्ञान. सर्वज्ञता. केवलज्ञान केवलउं उपवा. मात्रः [कशा विशेष अर्थ] विना]; वृथा केवलकमला लावल. केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी [सं.] केवलन्यान, केवलज्ञान ऋषिरा. गुर्जरा. प्राचीका. सर्व पदार्थीनुं ज्ञान, सर्वज्ञता **केवलनाणी** *गूर्जरा*. केवळज्ञानी, [सर्वज्ञ] **केवलनाणुं** *गुर्जरा. प्राचीफा.* केवळज्ञान, [सर्वज्ञता] केवललच्छी नेमिछं. केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी केवलि, केवली गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. केवळज्ञानी. सर्वज केवि, केवी उषाह. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. कोई, केटलाक (सं.के अपि) केशी "प्रेमाका. किशवाळीवाळा, घोडा]

केशु दशस्कं(१). प्रेमाका. केसुडां (सं. किंशुक) [सं.कैंशुक] **केशुं** *प्रेमाका*. केवुं [सं.कीदृशं] **के-श्रं** *नरका.* कोनी साथे केसर आरारा. केसरी, सिंह वसंफाः. वसंफा(ल). *वसंवि(ब्रा)*. पुष्परज, फूलनां तंतु केसर गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). *वसंवि(ब्रा)*. बकुलवृक्ष (सं.) **केसरमुकुल** वसंवि. वसंवि(ब्रा). बकुलनी कळीओ (सं.) **केसरयालां** *गुर्जरा*. केसररंगी, [केसर छाटेलां – युद्धनी तैयारी रूपे] केसर-लंक, केसर-लंकी हम्मीप्र. सिंह जेवी पातळी कमरवाळी [सं.केसरि+दे.लंक] केसर-सटा लावल. केसरीना केशवाळी जेनी छे ते केसरी-कटे प्रेमाका. केसरी - सिंह जेवी ्पातळी कटिए – कमर उपर केसरी-लंकी नरका. सिंहना जेवी पातळी कमरवाळी; जुओ करी-लंकनी केसु, केसुअ, केसुय, केसू, केसूअ, केसूय आरारा(व). उक्तिर. केस्डो, केस्डानां फूल (सं.किंशुक) [सं.कैंशुक] केसु-वरणा देवरा. केसूडाना रंगना केंड गूर्जरा. केटलाक, कोई (सं.के खलु); *अभिक, आरारा,* कोण **केहइ ***ऋषिरा. [कया]; गुर्जरा. कोईक केहर आरारा. विमप्र. केवो केहर, केहरि जिनरा. प्राचीफा. सिंह (सं. केसरी)

(सं.) ,

केहबी ऋषिरा. केवी ("सं.कीदृशी) केहि नलाख्या. कहे (सं.कथय) **केहिडं** *आरारा*. कया केही चित्तसं. कई केही चित्तसं. कहे केहं अखाका. अभिक्र. आनंस्त. आरारा. कादं(शा), जिनरा, नरका, नलाख्या, पबोप प्राचीसं प्रेमाका. विमप्र. शीलक. कयुं, केवुं ("सं.कीदृश/किम्) केहे चित्तसं. मदमो. के, [अथवा] केहेने चित्तसं. शेने: कोईने केहेने चित्तसं. कने, पासे, साक्षात् केहेनो अखाका. प्रेमाका. किनो , कोनो **केद्या** वाग्भवा. कया **केंगार** *प्राचीफा*, मोरनो केकारव कैट *प्रबोप्र. [कीटस्थान, गंदुं - अपवित्र स्थान] (सं.) कैतद प्रेमाका. कपटी, जुगारी (सं.) **केही** मदमो. क्यहीं, क्यांय केहीड नलाख्या. क्यांय पण **केंद्रव्य** जुओ द्रव्य कोइयउ वीसरा. (आंखनो) खुणो, [डोळो] कोडल, कोडला, कोइलि, कोइली आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. कौयल (नर/मादा) (सं.कोकिल) **को**ड *दशस्कं(१)*. कोई [सं.कः] कोउ *शंगामं.* (अडायानो) अग्नि (दे. कोउआ)

कोक *आरारा*. देडकी (सं.); *हरिवि*. चक्रवाक (सं.); मदमो. कोकशास्त्र कोक- वीसरा. बोलाववुं (सं. "कुकति; प्रा. कोक्क-); जुओ कूकइ कोककला नरका. प्रेमशास्त्र, [कामकळा] [सं.] कोक-गत नरका. प्रेमनी रीत, किामभोगनी रीत] कोकील मदमो. एक लुटारु जातिनो पुरुष कोकोला (कोकोला "बिणि) किकोला-**विणि** *प्राचीफा. [अडायानो अग्नि] [सं.कुकुलाग्नि] **कोट ***नरका. [*मुश्केलीए, *मांडमांड] [दे.कोडी=स्खलना, भूल] कोट अभिकः कादं(शा). गुर्जराः डोकः, गरदन (सं.) कोट, कोट्य अखाका. कामा(त्रि). कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका. कोटि, करोड, [असंख्य]; जुओ कांमकोट कोटडउं उक्तिर. कोट, किल्लो (सं.कोट) कोटडी ० नरका. डोकमां पहेरवानुं एक आभूषण कोटबाल उक्तिर. पंचवा. कोटनो -- शहेर के गामनो बंदोबस्त राखनार अमलदार, नगररक्षक (सं.कोट्ट+पाल) कोटानकोट, कोटनकोटी नरका. ग्रेमाका. करोडो, [असंख्य] कोटान्तर कामा(शा). [कोटकोटान्तर],

करोडो. जिसंख्यी

कोटि *प्रेमाका*. प्रकार (सं.)

कोटिइं आरारा. कोटे, गळे (दे.कोट्टा) कोटिक कामा(त्रि). उत्तम, अपूर्व (सं.); दशस्कं(१). नरका. करोड जेटला, [असंख्य]

कोटिध्यज, कोटीधज, कोटीध्यज अंबरा. नरका. प्रेमाका. विक्ररा. करोडपति, (करोडाधिपतिनी निशानी तरीके मकान उपर धजा फरकती); "अंबरा. [करोडा-धिपतिनी निशानीरूप धजावाळो (महेल)] [सं.]

कोटिया नरका. करोडो, [असंख्य] कोटिं *ऐतिरा.* कोटे, गळे कोटी *अखाका. [विकल्प, जोड, समान]

[सं.]

कोटी नेमिछं. करोड, [विपुल]

कोटीक मदमो. कोटि, करोड

कोटीघज, कोटीध्वज जुओ कोटिध्वज

कोटीर *आनंस्त. ऐतिका.* मुगट समान, अग्रणी, श्रेष्ठ (सं.)

. कोटील उक्तिर. हथोडो, मोगरी (सं.कुट्ट परथी) [दे.कोटिछ]

कोइ थडाबा. कोट, गढ [दे.]

कोट्य जुओ कोट

कोट्य कोटा अखाका. अनेक प्रकारना, [असंख्य]

कोठउ *उक्तिर.* [*कोठो – धान्य भरवानुं मोटुं पात्र, *ओरडो, *अटारी, *पेट] (सं.कोष्ठकः)

कोठी प्रेमाका. पेढी [सं.कोष्टिका] कोठीमडच उक्तिर. कोठींबडुं [सं.कपित्य परथी] कोठीवाल *प्रेमाका*. पेढीनो मालिक [सं. कोष्ठिका+पाल]

कोड देवरा. हरिख्या. करोड, [असंख्य] (सं.कोटि)

कोड *अखाका. [*कूड, *मिथ्या, *अभिलाषा]

कोडणु प्रबोधः धनुष, कामठुं (सं.कोदंड) कोडाकोडि अंबराः उपवाः गुर्जराः तेरकाः करोड गुण्या करोड, [असंख्य] (सं. कोटाकोटि)

कोडि अभिऊ. आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. उपबा. उषाह. कार्द(ध्रु). कार्द(शा). गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. विकरा. विराप. वीसरा. शृंगामं. षडाबा. षष्टिप्र. कोटि, करोड, [असंख्य]

कोडि *ऐतिका. [कोड, होंश, अभिलाष]; गुर्जरा. कोडपूर्वक, होंशपूर्वक (*सं. कौतुक, दे.कुड्ड)

कोडि(कोडि सिला) * नेमिछं. [कोटिशिला, कोटि लोकोथी उपाडाय तेवी – भारे – शिला]; जुओ कोडिसिला

कोडिगुणड उपवा. करोड गणी

कोडिमउ उक्तिर. करोडमो (सं.कोटितमः) कोडिसिला लावल. जैन श्रुति अनुसार सिद्धोए जेना उपर बेसीने तप करी

मुक्ति मेळवी हती एवी शिला, [(अहीं) कोटि लोकोथी उपाडाय तेवी – भारे

- शिला]; जुओ कोडि

कोडी *प्रेमाका*. वीसनी संख्या कोडी *चतुचा*. कोटि, अनेक कोडी (कोडी त्रणुं) चंतुचा. [कोडी जेटलुं], जरा जेटलुं

कोडीधज, कोडीध्वज *ऐतिका*. रूपच. करोड-पति, [कोटि धननी निशानी तरीके जेना निवास पर धजा फरके छे ते] [सं.कोटि-ध्वज]

कोडो लावल. कोड, [अभिलाष], होंश [दे.कुडु]

कोड्य अखाका. करोड, [असंख्य] कोढ *आरारा*. कपट

कोणे (कोणे करी) यडावा. खूणो काढीने कोतर नलाख्या. दर (सं.*कोटर)

कोतल प्राचीका. प्रेमप. सवारी माटेनो खास घोडो [उ.; तु.कुतल]; जुओ कुंतल

कोतिल *ऐतिका*. कोतल, [खास सवारीनो घोडो]

कोदंड गुर्जरा. प्रेमाका. धनुष (सं.)

कोदिरा क्रिक्श. कोदरा, [एक हलकुं अनाज] (सं.कोद्रव)

कोपति *प्रबोप्र. [कोपते, कोप्या त्यारे] कोपातर देवरा. क्रोधायमान (सं.कोपातुर) कोपीन प्रेमाका. कौपीन, लंगोटी; जुओ कौपीन

कोमास यडाबा. अडद (सं.कुल्माष) कोयलडा प्रेमाका. कोलसा (दे.कोइला) कोरक गुर्जरा. कूंपळ (सं.) कोरडी*अभिऊ. [वीसनीकेकरोडनीसंख्या] कोरडइ लावल. कोरा (मन) वडे कोरडुं चित्तसं. प्रेमाका. कोरुं, भींजाया

कोरद्ध विमप्र. न चड्या होय तेवा दाणा

कोरण आरारा. कोरवुं ते, कोतरणी, शिल्प कोरण अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्राचीफा. प्रेमाका. धूळनी आंधी, वंटोळियो

कोरण बाई जुओ रणवाई

कोरंग कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेगाका. कुरंग, हरण

कोरिड वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कोर्यो, छेद्यो, भेद्यो (सं.कोरित)

कोरियड *उक्तिर*. कंडारेलुं, चीतरेलुं (सं. कोरितम्)

कोरिवड *उक्तिर*. कोरवुं ते, कोतरवुं ते, कापवुं ते

कोलंबो, कोळंबो नरका. यृक्षनी डाळीनो नमेलो अग्र भाग, [डाळी]

कोलिक सम्यचो. करोळियो

कोलिका-जालक षडावा. करोळियानुं जाळुं '(सं.कौलिक+जाल)

कोली, कोळी दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. कवली, कपिला, [बदामी रंगनी], वाछडुं बताव्या विना दोहवा देती गाय

कोविलडी *प्राचीसं*. कोकिला, [कोयल] कोश *प्रेमाका*. न्यान (सं.)

कोशीशां *दशस्कं(२).* कांगरा [सं.कपि-शीर्षक]

कोस उक्तिर. प्रेमाका. एक गाउ(त्रण किलोमिटर)नुं अंतर (सं.क्रोश)

कोसंब *प्रेमाका*. कसुंबानो लाल रंग [सं. कौसंभ]

विनानु

कोसीरीआ *मदमो*, करकसरिया कोसीस. कोसीसां ऐतिरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. *प्रेमाका. विक्ररा*. कोट उपरना कांगरा (सं.कपिशीर्षक); जुओ कउसीसउ कोसींटड उक्तिर. रेशमनो कीडो, एन् कोकडुं [*सं.कोशस्यः] कोसेर कस्तुवा. करकसर कोसेरीआ मदमो, करकसरिया कोह प्रद्युष्ट, क्रोध कोहाग्ग गुर्जरा. क्रोधाग्निथी कोहलउ उक्तिर. कोळुं (सं.कूष्माण्ड) कोहतुं वेताप. सिंहा(शा). ढाल कोहली उक्तिर, कोळी, कोळानी वेल कोहाइय जिनरा, क्रोधादिक कोडी चित्तसं सडीने **कोहो** *चित्तस* कोण कौअचि ऋषिरा, कौवच नामनी वनस्पति कौतग मदमो. कौतुक, [कुतूहल]; जुओ **क**उतिग कौतिक, कौतीक दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. कौतुक, आश्चर्यकारक वर्तन; मजाक, विनोद **कौतुक** *प्रेमाका.* आश्चर्य, मजाक, विनोद कौपीन (कोपीन) * कादं(ध्र). [लंगोट] [सं.] कौमोदी मदमो. सिद्धांतकौमुदी [ए नामनो व्याकरणग्रंथ रे

क्यहीं *प्रेमाका*. क्यां; जुओ कही क्यंनर-मिधुनकादं(शा). किंनर पति-पत्नीनुं जोड्डं (सं.किंनर-मिथुन) **क्याहर्ड्** गुर्जरा. क्यांय क्याहारि कादं(शा). क्यारेक क्याहार्ये कस्तमः क्यारे क्यांची प्रेमाका क्यांथी **क्युं** *आरारा*. कंई: केम **क्रडा** सिंहा(म). क्रीडा **कृत** *मदमो.* कृत्य क्रतव्य प्रेमाका, कर्तव्य, कार्य कर्य चित्तसं. क्रियाकारिता, प्रवृत्ति कपी मदभो. कृपण; जुओ करपी **कम** चित्तसं कर्म क्रमइ उक्तिर: चाले (सं.क्रामति) [सं.क्रमते] **क्रमि** **ऐतिका.* [पदवीए] क्रमु *गुर्जरा*. कर्म[बंधन], [भाग्य] क्रयाणउं *उक्तिर. षडाबा.* करियाणुं, ले-वेचनी वस्तू क्रध्न देवरा. श्रीकृष्ण क्रसाण अखेगी. अग्नि (सं.कृशानु) **क्रंम** अंबरा. चरण (सं.क्रम) **क्रियाण** *ग्रेमाका*. किरपाण, नानी तलवार जेवं हथियार [सं.कृपाण] **क्रिया-उधार** *ऐतिका.* **शुद्ध मार्गनुं प्रवर्तन** क्रियाणां हम्मीप्र. करियाणां, वेचवानो माल (सं.क्रयानक) क्रीडइ उक्तिर. रमे, खेले (सं.क्रीडति) **कोड** *प्रेमाका*, करोड **क्रोडि** *षडाबा.* करोड (सं.कोटि)

क्यर्ण चित्तसं, किरण

क्यउं जुओ किउ

क्यरपी मदमो. कृपण; जुओ करपी

क्यवराज ऐतिसः कविराज, कवि

क्रोड्य नरका. करोड, [असंख्य वार] क्रोध्या दशस्कं(२). कोप्या क्रोश कादं(शा). वे माइल[त्रण किलो-मिटर]नुं अंतर (सं.) क्लीब अखाका. नपुंसक (सं.). क्लीब विराप. [नपुंसक, पावैयो] (सं.क्लीब)

साउ पडाबा. क्षय, नाश साप नलरा. पर्वदिवसनी कथा के व्याख्यान (सं.) क्षणदा कादं(शा). रात्रि (सं.) साणु. क्षणुं. मदमो. क्षण पण, जरा पण

(सं.क्षण+खलु) **क्षणुक्षणुए** दशस्कं(१). क्षणेक्षणे, थोडीथोडी गरे

क्षत्रीनंदन प्रेमाका. क्षत्रियनो पुत्र क्षप षष्टिप्र. श्रम, [प्रयत्न] (सं.क्षप् परथी) क्षपइ षष्टिप्र. खपावे, दूर करे, [नाश करे] [सं.क्षप्]; जुओ क्षिपइ

सपकश्रेणि आनंस्त. मोहनीय कर्मनो क्षय करनारी गुणस्थाननी [आत्मावस्थानी] श्रेणी [जै.] [सं.]

सपणक कादं(शा). बौद्ध के जैन साधु (सं.) सिमंज उक्तिर. क्षमा आपी [सं.क्षम्] सयकारणाहरू वाग्भवा. नाश करनार सरइ उक्तिर. वाग्भवा. झरे (सं.क्षरति) सात चतुचा. ख्याति सामोदिर ऋषिरा. कृशोदरी, [पेटनो भाग कृश होय तेवी स्त्री] [सं.] सालण प्रवोप्र. धोनार (सं.क्षालन)

क्षालन *प्रेमाका*. प्रक्षालन, घोवुं ते [सं.] **क्षि कादं(शा). क्षय, नाश क्षिइ प**डाबा. क्षय पामे, नाश पामे (सं. क्षयति) *क्षित्तित्र (कित्तिग?) तेरका. प्राचीसं. कृतिका नक्षत्र **क्षिपड** "*उपवा.* [-नो हास करे, नाश करे] [सं.क्षप्]: जुओ क्षपइ **क्षिमि** *षडाबा.* क्षमा आपो (सं.क्षम्) क्षीणमरेह आनंस्त. ए नामनुं गुणस्थानक, जेमां मोहनीय कर्मनो क्षय थई गयो होय एवी आत्मावस्था जि.] सिं.] **क्षीरहरो** गुर्जरा. क्षीर सरोवर (सं.क्षीरहृद) **क्षद्र** *नलरा***. छिद्र,** दोष **क्षुभाय** *आरारा.* क्षुब्ध बने **क्षभि** कादं(ध्र). आकळविकळ थाय सिं. क्षभ **धर** अभिक. खरी (सं.धुरा) **श्वरी** कादं(शा). खरी, डाबलो (सं.) **क्षेत्र, क्षेत्र, खेत्र** उपबा. प्रदेश, स्थान (सं.); *उक्तिर.* खेतर(सं.); नलरा. वापरवानुं स्थान (जै.) **क्षेव** नलरा. खेद, क्लेश; जुओ खेद **के-हे** अखाका. क्षय अने लय क्षोणि तलि (क्षोणि तलि कीध) *लावल. [पृथ्वी तळे करी, कबजे करी]

क्षोभन वसंफा. वसंवि(ब्रा). क्षुड्य -

व्याकुल करनार (सं.)

चोक्कस संख्यानां रथ, हाथी, अश्व अने लडवैयानो समावेश करतुं सेनादळ

खइ *गुर्जरा. क्षय*[रोग]

खइडां ऐतिका. खड्ग, तलवार; जुओ खेडुं खइर प्राचीसं. शृंगामं. षष्टिप्र. खेर, एक झाड (सं.खदिर)

खईइ उक्तिर. क्षय पामे, नाश पामे (सं. क्षीयते)

खउर**ः "**उपबा. [खोरुं, कलुषित] (दे. खउर)

खडळे वीसरा. चांझो, तिलक, त्रिपुंड्र (हिं.खौर)

खज्ली अंवरा. खोळी, [तपासी] **खग-जन** *दशस्कं(१)* पक्षी (सं.)

खगपती कामा(त्रि). पक्षीराज गरुड खग-मंडल वेताप. गगनमंडळ; जुओ खगां खगाकार *अखाका. [आकाशना जेवुं, श्रन्यवत्]

खगां * प्रेमाका. [आकाश] [दे.खग]; जुओ खगमंडल

खग्ग *ऐतिका. कर्पूमं. तेरका. प्राचीफा.* ं तलवार (सं.खड्ग)

खचकउ लायत. खचको, क्षति, [अटकाव, अंतराय]; नरका. अंतराय, अटकायत; [संकोच]

खचकी प्रेमाका. रोकाई, अटकी खचखची प्रेमाका. खीचोखीच खचर षडाबा. आकाशमां ऊडता (सं.) खजड आरारा(व). वृक्षविशेष, [*खीजडो] (सं.खर्ज, प्रा.खज्ज ?)

खजमति, खजिमति, खिजमति, खिजमती ऐतिका. हम्मीप्र. खिदमत, सेवाचाकरी खजिनो, खजीनो देवरा. हम्मीप्र. खजानो (फा.खजिन)

खजिमति जुओ खजमति **खजीनो** जुओ खजिनो

खजुअउ, खजूअउ *उक्तिर. वाग्भवा.* खद्योत, आगियो

खजूरज उक्तिर. [*खजूरनो कोई प्रकार, *खलेलुं, *खारेक] (सं.खर्जुरकः)

खज्ज- तेरका. खवावुं (सं.खाद्य-)

खट अखाका. आरारा. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नलाख्या. छ (सं. षट्)

खटकइ लावल. खट खट एवी अवाज करे

खटकर्म आरारा. प्रेमाका. ब्राह्मणे करवानां छ कर्म; प्रेमाका. सवारे करवानां छ नित्यकर्म

खटकाय आरारा. देवरा. छ प्रकारना जीव, छकायना जीव (सं.षट्काय) [जै.]

खटकुइ शृंगामं. खटके

खटचक प्रेमाका. योगदर्शन प्रमाणे मनुष्यनां शरीरनां छ चक्रो

खटण ऐतिका. प्राप्त करनार

खट तस्कर प्रेमाका. छ चीर : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद अने मत्सर

खट दरिशण, खट दर्शन अखेगी. विक्रस. छ दर्शन[शास्त्रो] खटदश रूप नरका. सोळ शणगार खटपट प्रेमाका. चिंता, [उचाट]; अखाका. वादविवाद, [झघडो] खटपद् दशस्कं(१). प्रेमाका. षट्पद, भमरा 'खटमल जिंतर. मांकड (सं.खट्वामल्ल) खटमुखवाहन दशस्कं(१). प्रेमाका. षण्मुख

- कार्तिकेयनुं वाहन एटलेके मोर खटमे प्रेमाका. छहे

खटतुं अखाछ. खाटवुं, फाववुं खटी * दशस्कं(१). *प्रेमाका. [*खटखटती,

ाटा *"दशस्क(१). "प्रमाका*. ["खटखटता, *खखडती]

खटूके नरका. [खटकखटक] अवाज करे खडड़ आरारा. खडो रहेजे, ऊभो रहेजे

खडकी नेमिछं. प्राचीफा. घर आगळनी बांधेली बारणावाळी छूटी जगा, डेली, [डेलीनो] दरवाजो (दे.खडक्की)

खडके लावल. ढगले

खडग उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका. खांडुं, तलवार (सं.खड्ग); कादं(शा). गेंडो; तलवार (सं.खड्ग)

खडग्ग तेरका. प्राचीफा. तलवार (सं.खड्ग)

खडताले मदमो. [खरीना प्रहारपूर्वक], चट दईने, [वेगपूर्वक]

खडधान प्रेमाका. हलकी जातनुं अनाज -राजगरो, मोरैयो वगेरे

खडभड्य *नरप(द)*. *गडभांज, [खटखट, धांधल, पीडा]

खडरडइ उक्तिर. "नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. [कडकडाट करे, खळभळे, लडथडे], खखडी पडे, तूटी पडे खडहडी * नेमिछं. [कोपरुं, सूका नाळियेरनी काचली]

खडहली चारफा. कडकडीने, [तीव्र] (दे.) खडियो, खडींड जिनरा. प्रेमाका. *विमप्र. थेलो, झोळी, खलतो

खडी नेमिछं. लावल. ऊभी

खडी उक्तिर. नेमिछं. षडाबा. धोळी माटी (सं.खटिका)

खडीउ जुओ खडियो

खडी घसी प्रवोप्र. स्पष्ट स्वरूपमां जणावी

खडु *आरारा.* चाखडी (हि.खडाउ) खडु खाबडां *प्रेमाका.* खाडा-खाबोचियां

खडोकळी *दशस्कं(१).* कुंड, होज

खडोखडी *उषाह*़नानो कुंड

खडोखली, खड्ढोखिलय, खंडोखिल अंबरा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. चारफा. जिनरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. क्रीडा माटेनी नानी वाव, कुंड, होज [दे.खडु+ओखली]; जुओ खलोखली

खढहढ विमप्र. खळखळ करतां

खण *उक्तिर.* मजला, माळ [रा.]; खंड, ओरडो (सं.क्षण)

खण उक्तिर. [?] (सं.क्षणः)

खण, खणु कामा(त्रि). गुर्जरा. प्रबोप्र. क्षण, पळ

खणइ अखाका. उक्तिर. गुर्जरा. प्रबोप. प्रेमाका. सिंहा(म). खोदे (सं.खनति)

खणण *षडावा*. खनन, खोदवुं ते **खणश** *प्रेमाका*. शंका, अंटस, वेरझेर **खणावइ** *आरारा*. खोदावे खणीतउ यडाबा. खोदातो (सं.खन्) खणु जुओ खण खणेत्रउ उक्तिर. कोदाळी, खुरपी (सं. खनित्रम्)

खत उक्तिर. घा (सं.क्षत)

खती अभिक्त. क्षत्रिय

खत्र *गूर्जरा*. सारुं, [उचित] [सं.क्षात्र]; जुओ अखत्र

खद प्रवोप्र. खाधेलुं, [करडेलुं] (सं.खादित) खपोत अखाका, अखेगी, प्रेमाका, आगियो (सं.)

खनक *षडाबा*. खोदनार (सं.)

खप अखाका. अखेगी. "उपबा. प्रेमाका. षष्टिप्र. श्रम, प्रयत्न, [उद्यम] (सं.क्षप्); *आरारा. नरका. नलरा*. उपयोग (सं. क्षप्); अंबरा. इच्छा; जुओ हेत-खप

खपइ अखाका. गुर्जरा. वपराय, उपयोगी थाय (सं.क्षप्यते); *अखाका. गुर्जरा.* पूरां याय, नाश पामे; अखाछ, जोईए

खप करी दशस्कं(२). खंतथी. प्रियत्न करीी

खपरियो * चंद्रवा. [*हळधारी, *खेड्त] खपाया ऐतिका. पूरां कर्यां, नाश कर्यो

खपावइ *षडाबा.* पूरां करे, नाश करे

खपुआं, खपुवा *दशस्कं(२). प्रेमाका*. शस्त्र-विशेष

खबेर *प्रेमाका***. समाचार, (प्रास मेळववा** माटे 'खबर'नुं रूप)

खभेडड *विमप्र. [धांधलधमालपूर्वक] **खमइ ***उपबा. गुर्जरा. षडाबा. क्षमा करे

(सं.क्षम्); *उपबा. स*हन करे **खमण** *गुर्जरा*. उपवास (सं.क्षपण) **खमण** *अखाका. [अभिवादन] [रा.] **खमणउ** *विक्रच. श्र*मण, साधु [सं.क्षपण] **खमणा** *प्रबोप्र*. जैन [साधु] [सं.क्षपणक] **खमयो** ऋषिरा, क्षमा करजी खम्बुं *अखाका. [*धारण करवुं, *उपाडवुं] खमाया ऐतिका. खमाव्या, क्षमा मागी **खमाबीउ** शीलक. शुंगामं. क्षमा मागी

खमासण, खमासणु *उक्तिर. षडाबा.* एक जैन वंदनक्रिया (सं.क्षमाश्रमण)

खिम *गुर्जरा.* क्षमामां (सं.क्षम्)

खय *तेरका*. क्षय, क्षिण थवं ते

खयडउ उक्तिर. खेडुं, गाम (सं.खेटक)

खयन आरारा. क्षय

खयर *आरारा(व).* खेर, खेरियो बावळ (सं.खदिर)

खयरवडी उक्तिर. खदिरनी गोळी (सं. खदिरवटिका)

खया ऋषिरा. क्षय. नाश

खर अ*खाका.* क्षर, नाशवंत

बर जुओ कखर

खर जुओ खंतिक्खर

खरखशो * *चतुचा.* [झझट, उपाधि, *चिंता]

खरच-खूटण प्रेमाका. *खर्चमां पडती तूट, [परचुरण खर्च, हाथखर्ची]

खर-छूच प्राचीसं. ?, [*ट्रंका बरछट वाळ, "वाळना खूपरा]

खरने प्रेमाका. खरजवाथी, खुजलीथी [सं. खर्जू

खरड षष्टिप्र. हलकी मनुष्यजाति (प्रा.) खरदूखर अंगवि. खरदूषण, [ए नामना बे राक्षसयोद्धा] खरमां*लावल. [एकफळमेचो, खजूर] [फा. खुर्मा]; जुओ खुरमा खरबलतं षडाबा. खणतो, खोतरतो खरसणीं आरारा(व). एक वनस्पति, खरसण, खरसाणी — खरसांडी, के

खरिसत प्राचीसं. खरिशला, आधारिशला खरहडी उक्तिर. कोपरुं, सूका नाळियेरनी काचली (*सं.खरकाष्टिका)

खरसाणी – एक थोर ?

खरहर "गुर्जरा. लावल. करकरा खरंदितु वडाबा. खरडायेलुं, अशुद्ध थयेलुं (प्रा.खरंट)

खराप *अखाका.* *खराब, [विनाश, बरवादी] (अ.खराब)

खरारे, खरार्थ अखाछ. चित्तसं. खरेखर खरीअ लावल. खरी, सुंदर, मोटी [सं.खर-] खरीदार सिंहा(शा). खरीददार, [खरीदनार] (फा.)

खरेरो *प्रेमाका*. घोडाना शरीर उपरनी धूळ साफ करवानुं साधन [हिं.खरहरा] खल *उक्तिर. षडाबा*. तल वगेरेनो खोळ;

ाल उक्तिर. षडाबा. तल वगरना खाळ खळुं (सं.)

खळ प्रेमाका. खल, कपटी, लुच्चुं खलइ आरारा. स्खलित थाय, चूके; कादं(शा). पडे (सं.स्खलति)

खलइ *षडाबा.* खळामां

खलच जित्तर. खळूं (सं.खलम्)

खलका उपवा. खणखणाट, रणकार खलके, खळके ऋषिरा. गुर्जरा. प्रेमाका. लायल. *खळखळ अवाज करे, खखडे, रणके

खलखल *कादं(ध्र)*. खणखण, [सांकळनो अवाज]

खलबत मदमो. खानगी बेठक, [मुग्ध एकांत गोष्ठि] [फा.खलाबत]

खलहत, खळहळ तेरका. प्राचीसं. वीसरा. खळखळ

खळहाण *उक्तिर*. खळुं (सं.खलधान्यम्) [हिं.खलिहान]

खलिंड *गुर्जरा. [दुष्टताभर्युं आचरण कर्युं] खलाया शृंगामं.स्खलितथया, [ठोकरखाधी] खली उक्तिर. तैली धान्यनो खोळ (सं.खलिः) खलीता *ग्रेमाका. [थेला] [फा.खरीतो]

खलूकि अभिऊ. खळके, अवाज करे खलेलं *हरिख्या.* खजूरीनं फळ

खलोखली *प्रेमाका.* खडोखली, क्रीडावाव; जुओ खडोखली

खल्या *लावल.* खाळ्या, [रोक्या], पाछा वाळ्या

खड़ी उक्तिर. वायुप्रकोपने कारणे चडती खाली (सं.)

खब- *प्राचीफा. [झबकवुं, चमकवुं] [सं. क्षिप्]; जुओ खिवइ

खवा विमप्र. खभा (दे.खवय); जुओ खवे खवा (खवा काढी) *विमप्र. [*खभे उचाळा लइ]

खवाखाजि *गुर्जरा. विराप. [खभानी]

खंजवाळ, चळ (दे.खवय+सं.खर्जू)
खवास प्रेमाका. सेवक, [हजूरियो] (फा.)
खवासी नरका. सेवा
खबु खोटी कृष्णच. खभो ठोकीने
खवे गुर्जरा. खभे [दे.खवय]; जुओ खवा
खशबोई, खसबोई मदमो. वेताप. खुशबो
खसइ उक्तिर. [*ईजा करे, *खसेडे, *खसे]
(सं.खषित) [दे.]
खसर *विमप्र. [घसारो, उझरडो]
खं अखाका. आकाश, [आकाश समुं ब्रह्म]
[सं.ख]

खंखर शृंगामं. ठूंठुं, [हाडपिंजर] खंखोळी प्रेमाका. खोळीखोळी, शोधीशोधी खंच विमप्र. खचको, खचकाट [प्रा.]

खंचइ नरका. प्राचीसं. खेंचे, [ताणे]; नंदब. प्राचीफा. खेंचे, [पकडे, ग्रहण करे], राखे; ऋषिरा. [पाछुं खेंचे], रोके; वीसरा. खेंचे, घसडे (प्रा.)

खंचइ(दृष्टि न खंचइ धार) विक्ररा. रोके, [नजरनो प्रवाह रोकाय नहीं, नजर एकटश बने]

खंचि करि *प्राचीसं*. खेंचीने, [ताणीने, लंबावीने]

खंजन ऋषिरा. प्रेमाका. ए नामनुं पक्षी (सं.); [गालना] खाडा; नरका. चपळता-(वाळां), चंचळता(वाळां)

खंड *आरारा.* प्रदेश (सं.); *षडाबा.* खांड (सं.)

खंड *तेरका.* खांडु, [तरवार] (सं.खड्ग) **खंड**इ *आरास. उक्तिर. षष्टिप्र.* खंडन करे, खांडे, तोडे (सं.खंडयति) **खंडउ, खंडू** *उषाह. वीसरा.* खांडुं, तरवार (सं.खड्ग)

खंडण तेरका. खंडन करनार (सं.खंडन) खंडणा, खंडना अखाछ. प्रेमाका. टुकडा करवा ते

खंडिक्खंड जुओ विखंड **खंडािवतु** *उक्तिर*. तलवारधारी

खंडी उक्तिर. खंडित, खांडी, तूटेली

खंडू जुओ खंडउ

खंडोखिल जुओ खडोखिल

खंडोखंड ऋषिरा. टुकडेटुकडा

खंति *आरारा. गुर्ज़रा. नेमिछं. शीलक. शृंगामं*. खांत, होंश, उमंग (सं.क्षान्ति)

खंति *ऐतिका. [क्षमा, शमभाव]

खंतिक्खर (खंति खर खग्गु) "ऐतिका. [क्षांतिरूपी — उपशमरूपी कठोर खड्ग]

खंघ *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं*. खांध, खभी (सं.स्कंध)

खंघवालि गुर्जरा. केशवाळी (सं.स्कंध+ वाल); जुओ खंधावलि

खंधागिल गुर्जरा. खभा पर चडवानी क्रीडा (सं.स्कंघकेली)

खंधार उक्तिर. प्रद्युचु. *विमप्र. हम्मीप्र. सैन्यनो पडाव, छावणी, शिबिर (सं. स्कन्धावार)

खंधावित *विमप्र. [केशवाळी]; जुओ खंधयालि

खंध्ये *चित्तसं*. खंधे, खभे

खंपण *आरारा. ऋषिरा. प्राचीसं. *रूपच. विमप्र.* खांपण, क्षति, दोष, कलंक, एब

खंभ, खंभा गुर्जरा. प्रेमाका. स्तंभ, यांभला खंभायत प्राचीसं. खंभात [सं.स्कंभादित्य] खाखत्य *नरप. [खेधे, केडे, पाछळ]; जुओ खांखते

खाखर *नरका.* खाखरो, केसूझनुं वृक्ष **खाखरि ***गुर्जरा. [*सफाचट]

खाग्य *ऐतिरा.* खड्ग, खडग वापरवामां, [शूरवीरतामां]

खाज उक्तिर. खंजवाळ, खूजली (सं.खर्जूः) खाजइ उक्तिर. खंजवाळे

खाजइ *उक्तिर. विराप.* खवाय (सं.खाद्यते)

खाजलु, खाजहलज उक्तिर. खाद्यपदार्थ (सं. खाद्यफलम्)

खाट उक्तिर. नेमिछं. लावल. खाटलो, [पलंग] [सं.खट्वा]

खाटड् *ऐतिका. जिनरा.* **प्राप्त करे खाटकडी** *नरका.* **सूवा माटेनी खाट**

खारि *उक्तिर.* खाट, खाटलो, पलंग (सं. खट्वा)

खाण, खाण्य अखाका. अखाछ. चित्तसं. नरका-२. उत्पत्तिस्थान, जीवयोनि; चित्तसं. नलाख्या. खाडो (सं.खनि)

खाण *विमप्र.* घोडाओने खावानुं जोगाण [सं.खादन]

खाणहार षष्टिप्र. खानार (सं.खादन+कार) खाणि, खाणी, खांणि आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा. खाण,

भंडार (सं.<mark>खनि)</mark>

खाणी (**वाणी-खाणी)** *अखाछ.* [बोलवा-ना] ढंग, [बोलचाल] [हिं.खानि; रा.खाणि]

खाणीकणउं *उक्तिर.* खाउधरुं, मोजनप्रिय (सं.खादन परयी) [रा.खांणखंडौ]

खाण्य जुओ खाण

खात आरारा. खातां

खात प्राचीका. कीर्ति (सं.ख्याति)

खात्र *उक्तिर.* (खेतरमां नाखवानुं) खातर [दे.खत्त]

खात्र उक्तिर. लावल. विक्ररा. खातर, चोरी करवा माटे, घरमां प्रवेशवा मीतमां पाडवामां आवतुं काणुं (दे.खत्त)

खाप *प्रेमाका.* दर्पण, अरीसा; आमलां, [काच, अबरख वगेरेनी पतरी, चीप]

खाप *कस्तुवा. [खांपण, कलंक] खापड्यो चोर *पंचवा*. खापरो चोर

खापण, **खांपण** *गुर्जरा. चंद्रवा. प्रेमाका.* *खोट, खामी, क्षति

खापर, खापर**उ, खापरउं** उपबा. "विक्रच. भीखनुं शकोहं (सं.कर्पर); *उक्तिर*. शकोहं, ठीबडुं (सं.खर्परः)

खामणउं *उक्तिर. षडाबा. ध***मा मागवानी** एक जैन क्रिया

खामणुं अखाका. वासण मूकवानी बेसणी — बेठक; प्रेमाका. *कद, [बांघो, काठुं] खामे अखेगी. खामणामां, [खाडामां] खामो ऐतिका. कमी, त्रुटि, [खामी, चूक] खाय हाडा अखाका. फोगट फांफां मारे.

[दोडादोडी करे]

खायिक *आनंस्त*. क्षायिक, कर्मनी क्षय थवाथी उत्पन्न थतुं [जै.]

खार *उक्तिर.* क्षार, मीठुं

खारा प्रेमाका. खार — ईर्पाथी भरेला, विरझेर-वाळा, अकारा]; प्रेमप. अकारा, दुःखी खारिक. खारिक आरास(व). उक्तिर.

लावल. खारेक (दे.खारिक)

खारेख *आरारा(व)*. खारेक (दे.खारिक) **खाल, खाळ** *गुर्जरा. प्राचीसं. शीलक.* खाळ,

[नीक, मोरी]; *वीसरा*. जळप्रवाह (दे.)

खाल *चंद्रवा.* छाल, [चामडी] (दे.खल्ला) **खालि** *आरारा.* [खाळ], नालिका. नीक (दे.)

खालि *उपबा. [*खाडामां] (अप.खयाल)

खाळी (खाळी लीघ) *नरका.* पडावी [लीघा]

खाले पड्यो *प्रेमाका.* पाछळ पड्यो

खास *आरारा. उक्तिर.* खांसी (सं.कास)

खासइ उक्तिर. खांसी खाय (सं.कासते)

खासर, खासरुं अंबरा. गुर्जरा. खासडुं

खासा उषाह. प्रेमाका. खास प्रकारना, सारा, [उत्तम, सुंदर]; प्राचीफा. एक कीमती वस्त्र, ["उत्तम, "सुंदर] फा.

खास]

खासी प्रेमाका. ('खवासी'नुं प्रास मेळववा माटेनुं रूप), सेविका, दासी

खांखते *नरका.* केडे, पाछळ, [खेधे]; जुओ खाखत्य

खांखत वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). खखडी गयेला, हाडपिंजर समा खांखलपांखल जुओ छांछलपांछल खांगुं अभिक. त्रांसुं, [आडुं]

खांचइ *आरारा. प्रेमाका*. खेंचे (रा.) [प्रा. खंच]

खाँचियइं *षडावा.* खेंचवामां आवे, नाखवा-मां आवे (प्रा.खंच)

खांडच उक्तिर. तूटेला शींगडावाळो (आखलो) (सं.खंडित)

खांडणां कृष्णवा. खांडतां गवातां गीत, खायणां

खांडमी *प्रेमाका.* भोजननी एक [फरसी] वानी, [खांडवडी]

खांडासरमु गुर्जराः तलवार चलाववी ते (सं.खड्गश्रम)

खांडी दशस्कं(१). दशस्कं(२). *प्रेमाका. खांडां [– तूटेलां] शींगडांवाळी [गाय]; जिनरा. खांडित, भांगेली

खांडुं अखाका. उक्तिर. प्रेमाका. लावल. शृंगामं. खड्ग, तलवार

खांडो *प्रेमाका.* खंड़ित

खांणि जुओ खाणि

खांत, खांति अखाका. लावल. काळजी; गुर्जरा. *धैर्य, [काळजी, उद्यम, उत्साह]; आरारा. होंश; चतुचा. नरका. नलाख्या. विक्रच. होंश, इच्छा; नरका. लालसा, [रूणा] (सं.क्षान्ति)

खांध उक्तिर. खांध, खभो (सं.स्कंध) खांध्य (खांध्य भागवी) अखाका. खांध – गरदन [मारवी], [नाश करवी]

खांपण जुओ खापण

खांपी नाख्यो *प्रेमाका.* तोडी नाख्यो, [सोरी

नाख्यो, उझेडी नाख्यो]

खांमइ ऋषिरा. खमावे, क्षमा मागे (सं.क्षम् परथी)

खांवंन नंदब. खाविंद, [मालिक]

खांसकरणु *पड़ाबा*. खांसी खावी ते (सं. कास)

खिजमति, खिजमती जुओ खजमति

खिज- *प्राचीसं*. खेद पामवो, क्लेश थवो (सं.खिद्यते)

खिडियुं *आरारा*. रचायेलुं, पर ऊभेलुं (रा.)

खिण आरारा. ०कामा(त्रि). ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. क्षण, पळ, अत्यंत अल्प समय; विक्ररा. [पर्वदिवसनुं] व्याख्यान; जुओ क्षण

खिजमात *देवरा.* क्षणमात्र

खिणि *आरारा.* क्षणे, समये

खिणिखिणि लावल. क्षणेक्षणे

खिणु *नरका.* क्षण, पळ

खिति प्रबोप्र. पृथ्वी (सं.क्षिति)

खित्तवाल *ऐतिका*. क्षेत्रपाल, [क्षेत्ररक्षक देव]

खित्री आरारा. क्षत्रिय

खिपई *गुर्जरा.* खपे, नाश पामे; जुओ खपइ

खिपकश्रेणि "देवरा. [मोहनीय कर्मनो जेमां क्षय थाय छे एवी गुणस्थानकनी श्रेणी] [सं.क्षपकश्रेणि] [जै.]

खिप्र आरारा. उतावळ; तरत (सं.क्षिप्र)

खिमा, खीमा आरारा. देवरा. प्राचीफा. सिंहा(शा). क्षमा

खिर *नलाख्या.* खेरनुं झाड (सं.खदिर)

खिरइ उक्तिर. नेमिछं. खरे (सं.क्षरति) खिल. तेरका. खेलवुं, क्रीडा करवी (सं.खेल्) खिल- प्राचीसं. खेले, [जुगारमां होडमां

मूके]

खिवइ, खिवाइ प्राचीसं. वीसरा. चमके, झबकारा करे (सं.क्षिपति); जुओ खव-, खींबें

खिसइ जिक्तर. लावल. खसे, [सरके, बाजु पर जाय]; आरारा. षडाबा. खसे, जतुं रहे; ऐतिका. हटे, [आधा जाय, अटके]; जिनरा. सरके, [जाय, आगळ जाय] (प्रा.)

खिसरहंडी उक्तिर. [?] (सं.क्षिप्रसरहिंडिका)

खिहाला ऐतिका. खाद्य वस्तुविशेष, [*कंद-विशेष], [*दे.खिछहल]

खिंगाल *अभिक्र. [प्रलयाग्नि] [सं. क्षयांगार]

स्रीच, स्रीचु उक्तिर. खीचडी; *गुर्जरा. विराप. लोचो (दे.खिच)

बीज अखाका. क्रोध, [खिन्नता]

खीजइ उक्तिर. गुर्जरा. खिन्न थाय; लावल. *खिजाय – गुस्से थाय; खिन्न थाय, (सं. खिद्यते); प्रेमाका. गुस्से थाय

खीजविय *प्राचीसं*. खीजवी, दुःखी करी, पजवी

खीजवे *नरका.* चीडवे, [परेशान करे]

खीटलां अभिकः [काने] पहेरवानुं घरेणुं खीटलिया, खीटलियाळा, खींटळियाळा

दशस्कं(१). प्रेमप. प्रेमाका. वांकडिया, गूंचळावाळा खीटली, खींटली नरका. नलरा. *नेमिछं. प्राचीफा. लावल. विमप्र. स्त्रीओनुं काननुं घरेणुं

खीण *आरारा. उपबा. गुर्जरा. चित्तसं.* जिनरा. क्षीण, दुर्बल; *मदमो.* खोट

खीणइ *गुर्जरा*. क्षीण थाय

खीणपण कृष्णवा. क्षीणता

खीणा जिनरा. क्षीण[मोह], [मोहनीय कर्म ज्यां क्षीण — नष्ट थयां होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

खीन, खीना *तेरका. प्राचीसं.* खिन्न **खीमा** जुओ खिमा

खीर कादं(ध्र). "गुर्जरा. नलरा. मदमो. विराप. दूध (सं.क्षीर)

खीरणा, खीरणी आरारा(व). उक्तिर. खीरण, खीरवेल, एक वनस्पति

खीरवास अभिक. बारीक सफेद रेशमी वस्त्र (सं.क्षीर+वासस्)

खीरह *ऐतिका.* क्षीर, दूघ

खीरि उक्तिर. षडाबा. खीर (सं.क्षैरेयी)

खीरोदक अभिऊ. ऐतिरा. "गुर्जरा. नरका. पंचवा. प्रेमाका. विमप्र. एक जातनुं धोतुं रेशमी वस्त्र (सं.क्षीरोदक); "विमप्र. [क्षीरसागर]

बीलइ उक्तिर. चारफा. हरिख्या. रोके, [स्तंभित करे, बांधे] (सं.कीलयति)

खीलउ उक्तिर. खूंटो, स्तंभ (सं.कीलकः)

खीसंख *उक्तिर*. थेली, पाकिट, गजवुं [अ. कीसः]

स्रींस अंबरा. हरकत, [हानि] [रा.खीखां];

उक्तिर. विनाश (सं.क्षिति); जुओ खींव **खींचाताणि** आरारा. खेंचताण, आनाकानी **खींचे** नस्का. खेंचे

र्खीटिक्यका जुओ खीटलियाका **र्खीटली** जुओ खीटली

खींबें *०जिनरा.* चमके, कड़ाका करे; जुओ खिवड

खींव [॰खींख] कर्पूमं. नुकसान [रा. खीखां]; जुओ खींख

बुटकइ गुर्जरा. खटके (दे.खुडुक)

खुडत *गुर्जरा.* आखडता [दे.खुडिय]

खुत्तउ, खुतउ *गुर्जरा. प्राचीसं.* खूत्यो, [खूंप्यो, गरकाव थयेलो] [दे.]

खुदालिम, खुंदालिम हम्मीप्र. शहेनशाह (फा.)

खुभइ *उक्तिर. गुर्जरा.* क्षुख्य थाय (सं.क्षोभते)

खुर, खुरउ *उक्तिर. उषाह. गुर्जरा. प्रेमाका.* पगनी खरी (सं.**शु**र)

खुरमा * नेमिछं. [एक फळमेवो, खजूर] [फा.खुमी]; जुओ खरमां

***सुरुणा [*परुणा**] *नंदब.* ?, [परोणो, महेमान]

खुतु अभिक्त. नलाख्या. खोळो (दे.खोल= वस्त्रनो एक भाग, ते परथी)

खुसइं "गुर्जरा. [खोसे, अंदर धकेले, घाले] [रा.; दे.खुसिय] ("सं.कुष्यति)

खुहे नंदब. खूए

खुंट पष्टिप्र. निरंकुश माणस

खुंटियइ *गुर्जरा*. खेंची कढाय, तोडाय

(दे.खुट्टइ)

खुंबकार *हम्मीप्र*. खूनी, [खूंखार, जालिम, क्रूर] (फा.खूंख्वार)

खुंदालिम जुओ खुदालिम

खुंप, खूप, खूंप उथाह. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. स्थूलिफाः माथा उपरनो पुष्पनो एक शणगार, शहेरो (दे.खुंपा)

खूटबइ *गुर्जरा*. खुटाडे, दूर करे (दे.खुट्ट) **खूण** *हरिवि*. *कलंक, *लांछन, [अपराध, पाप] (दे.)

षूणालउ *लावल.* खूणावाळो [सं.कोण-] **खूतउ** जुओ खुत्तउ

खूप जुओ खुंप

खूषइ उक्तिर. षडाबा. खूंपे, ऊंडुं पेसे खूह जिनरा. "खभो, [कूवो] [रा.] खूंखारी प्रेमाका. खोंखारो करी खूंट अखाका. माप, हद, सीमा; खूंटी,

अवरोध [दे.खुंट] खूंटइ गुर्जरा. खेंची काढे, तोडे (दे.खुट्टइ) खूंटीइ विराप. *खोतरीए, [खेंची काढीए]

खूंघा *प्रेमाका*. खूंघवाळा

खूंप जुओ खुंप

खूंपु जुओ कूंपु

खेअ मदमो. क्षय

खेउ *गुर्जरा*. खेद

"सेकट [खेटक] *विक्रच.* ढाल [सं.खेटक] **खेकारि** *देवरा.* क्षयकारी, विनाशकारी]

खेचर *चित्तसं*. आकाशमां ऊडनारा [सं.] **खेचरी** *ग्रेमाका.* पक्षिणी

खेचरु गुर्जरा. आकाशमां ऊडनार (देव के देवकल्प योनि)

खेचित *देवरा. [(रत्नो वगेरे) जडेली] [सं.खचित]

खेजडी *गुर्जरा. विराप.* खीजडो, शमीवृक्ष खेटक *प्रेमाका.* खेडनार, हांकनार खेटक जुओ खेकट

खंडक जुजा खकट खंड *उक्तिर*. गाम (सं.खेट)

खेडड लावल. ढाल वडे (सं.खेटक)

खेडइ उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीफा. प्रेमाका. विक्ररा. विराप. हांके, चलावे, आगळ लई जय, (प्रा.खेड); *लिलरा. [धसे]

खेडउं उक्तिर. उपवा. लावल. *विमप्र. ढाल (सं.खेटक)

खेड खेड करंता मदमो. दडमजल करतां खेडावि नलाख्या. हंकावे, चिलावडावे]

खेडु *अखाका.* ढाल (सं.खेटक)

खेडु *दशस्कं(९)*. कापवानुं एक ओजार **खेडं** *अखाछ. मदमो*. गाम**डं** [सं.खेट];

प्रेमाका. रूस्तस. लावल. *विमप्र. ढाल [सं.खेटक]

खेडुं *दशस्कं(२).* खड्ग, तलवार; जुओ खड्डां

खेडू, खेडूं कादं(ध्र). कादं(शा). षड्ज स्वर, [खरज, संगीतनो स्वरविशेष]

***खेण** *नरप(द)*. क्षण

खेत अखाका. क्षेत्र, रणक्षेत्र

खेतरपाल *ऐतिका.* क्षेत्रपाल, क्षित्ररक्षक **खेलण**ड *उक्तिर.* खेलवुं ते, क्रीडा, रमकडुं देवी

ं **खेतल** *उषाह. प्राचीसं.* क्षेत्रपाल, [खेतरनो रक्षक देवी

खेतलवीर *विमप्र***. क्षेत्रपाळ, [एक प्रकारना** नीचली कोटिना देवी

खेत्र *आरारा. गुर्जरा. लावल.* क्षेत्र, स्थान, 🕟 प्रदेश: जुओ क्षेत्र

खेत्रपाल *पंचवा.* क्षेत्रदेवता, खेतरनो रक्षक देव [सं.क्षेत्रपाल]

खेद हरिख्या. *क्रोध, [रंज, अप्रसन्नता]; जुओ क्षेद

खेद्दं "अखाका. नंदब. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा). छेदवुं, [कापी नाखवुं]; *कृष्णच*. थकववुं, [पीडवुं]

खेप आरारा. नाखवुं ते (सं.क्षेप)

खेप अखेगी. "सफर, "मुसाफरी, ["खांत, "उद्यम

खेपड़ं *श्रंगामं. षष्टिप्र.* फेंके, नाखे (सं.क्षेपू) **खेपन** *अखाछ. गा*ळवुं ते, [व्यय करवो ते] (सं.क्षेपन)

खेपावुं *ऐतिरा.* नखावुं [सं.क्षिप्]

खेम आरारा. कादं(शा). गुर्जरा. प्रेमप. कुशळपण्, सुख (सं.क्षेम)

खेमा कामा(त्रि). क्षमा

खेय सत्तरा. धूळ (दे.खेह)

खेरी *अखेगी*, घेटो

खेल *नलरा. विकच. लीला, रंगराग, [क्रीडा, आनंदप्रमोद] [सं.]

खेलउ *प्राचीसं*. रमनारा. निर्तको

(सं.खेलनकम्) [हिं.खिलौना]

खेलणा *०जिनस* क्रीडा

खेलन वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). क्रीडा माटे (सं.)

खेला *अंबरा. तेरका. *प्राचीफा. रमनारा, खेलाडी, [नट, नर्तक] (सं.खेलकाः)

खेलाखेली *प्राचीसं. [रमनारा-रमनारी]

खेली *अंबरा: [नर्तकी, नटी]

खेलो मदमो. ["खेळ, "आर, "कांजी]

खेली *नरका*. संघरो, संग्रह

खेब "प्रबोप. [फेंकवुं ते, दूर करवुं ते, नाश] [सं.क्षेप]

खेब *आरारा. ऋषिरा. कृष्णच*. वार, विलंब (सं.क्षेप)

खेव उषाह. ऋषिरा. कांद(ध्रु). कादं(शा). चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या. जलदी. तरत (सं.क्षिप्र): ज ***कामा(शा)**. [तरत तो, हमणां]

खेब सिंहा(शा). जलदी (के खेवनाथी ? काळजीथी ?)

खेवड *आरारा.* नाखे, प्रसारे (सं.क्षेप्): ऋषिरा, नाखे, फेंकें

खेवउ प्राचीसं. [अगरनो] उछाळ (सं.क्षेप)

खेवि (इणि खेवि) कृष्णच. आ क्षणे, अत्यारे

खेस ऋषिरा. नलरा. "विमप्र. खार, द्वेष: ** ऐतिरा. प्राचीफा.* क्षति, ऊणप (*दे.खस

=खसव् उपरथी) [रा.खेसौ]

खेड प्राचीफा. ?, [*पक्षी] [रा.खे]

खेह, खेहा अंगवि. आरारा. गुर्जरा.

दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रद्युत्तुः प्राचीसं. प्रेमाका. रूस्तस. वीसरा. श्रंगामं. सिंहा(शा). हम्मीप्र. धूळ, रज [दे.] खेहाडंबर वीसरा. धूळनी डमरी **खेंम** *चंद्रवा.* क्षेम, [कुशळपणुं, सुख] बोई प्रेमाका. [बाळकने सुवाडवा माटेनी] झोळी **खोटारा** *प्रेमाका.* **खोटा, जूठा, [खोटाबो**ला] **खोटि** गुर्जरा. सीमा, मर्यादा (दे.खोड); *आनंस्त. नलाख्या.* खोट, खामी, ऊणप **खोटियड** *षडाबा.* खोडीए. साथे जोडीए खोड नलरा. प्रेमाका. थडियुं, लाकडुं (दे.; **"**सं.क्ष्योट) **खोड** *प्रेमाका.* आफत, [दुःख, पीडा] खोड- प्राचीसं, खंडित करे, फोडे **खोडउ** उक्तिर. लंगडो [दे.; खारेक, खोटक] खोडायड उक्तिर. लंगडाय [रा.] खोडि. खोडी अभिक. उपवा. जिनरा. नलाख्याः नेमिछं. प्राचीसं. लावलः विमप्र. क्षति. खामी. खोड. दोषी (दे.) **खोडी** उक्तिर. फोल्ली (*सं.स्फोटिका) [*दे. खोडी **खोडी** *नरका-२*. खोडवाळी; प्रेमप. खोडवाळी स्त्री, कुब्जा खोणि ऐतिका. क्षोणी, पृथ्वी खोभइ उक्तिर. शुब्ध करे (सं.क्षोभयति) **खोल** उक्तिर. माथे बांधवानुं वस्त्र (दे. खोल्ला) **खोलड** *आरारा*. बंधन छोडे

कच्छप **खोवलउ** *नलरा.* खोबो. खोबलो **खोसइ** *आरारा*. लई ले, लूंटी ले (रा.); **गुर्जरा. *विराप.* [नष्ट करे] खोह ऋषिरा, "नरप(द), नलरा, प्रेमाका, शंगामं. खो. खीण, कोतर खोही *चितसं. प्रेमाका.* खोई, गुम करी, दूर करी खो**ही बांहे** *प्रेमाका*. बांह्यमां – बाहुमां खोसीने - घालीने **ख्यात** प्रेमाका. ख्याति **ख्याल *अखाका**. किल्पना, तरंग, तरंग लीला]: **नरका*. [गम्पत, क्रीडा] **ख्याली ***अखाका. [कल्पनाक्रीडा करनार] गइ अभिक. हाथी (सं.गज, प्रा.गय) गड जिनरा. तेरका. गति. जन्मयोनि

गइ अभिक. हाथी (सं.ग्ज, प्रा.गय)
गइ जिनरा. तेरका. गति, जन्मयोनि
गइल *वीसरा. [गमन, जवुं ते, प्रवास];
जुओ गजगेली, गेली, गैला
गइला नरका-२. गयो (म.)
गइवर, गइंवर गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.
उत्तम गज, उत्तम हाथी (सं.गजवर)
गइंवर प्राचीफा. वीसरा. हाथी (सं.गजेन्द्र)
गइंवर जुओ गइवर
गईमर उषाह. हाथी [सं.गजवर]
गड अभिक. गुर्जरा. नेमिछं. वाग्भवा.
वीसरा. गयो (सं.गत)
गउख, गउखु उतिहर. उपवा. ऋषिरा. गुर्जरा.
प्राचीफा. वसंवि. वीसरा. शीलक. गोख,

खोळबी *प्रेमाका*. खोळवाळुं, काचबो -

झरूखो (सं.गवाष्ठ)

चर्चंडचर्च *उक्तिर*. पात्र वगेरे साफ करवानुं कपडुं [दे.गोच्छज]

परड ऐतिका. गौडी रागणी

यचडीय आरारा. गोडी – एक तीर्थ [जै.]

बच्च जिनरा. यमन, [चाल्या जवुं ते]; आरारा. जतां रहेवुं ते (सं.गमन; हिं. गवन, गौना); जुओ गवन

"क्यस्ड [क्स्परह] *ऐतिका.* गडगडे, [स्की पडे]; जुओ गडमडत

बबर उक्तिर. गौर, ऊजळो

च्छर प्राचीफा. वरनुं सन्मान करवा कन्या-पक्ष तरफथी अपातुं जमण (सं.गौरव); जुओ गोरवु

च्छरी ऐतिकाः गौरी [सम्]

च्छरी वीसरा. पार्वती (सं.गौरी); गुर्जरा. गाय (स.गौरी); जुओ गावरी

क्छ ऐतिकाः समुदाय [जै.]

वस विकरा. जा [सं.]

मडी सिंहा(शा). चूनागच्छी, धाबो,

क्व *नेमिछं.* हाथी

कव नेमिछं. वे फूट [साठ सेन्टिमिटर] अंतर

चवकोठा *चित्तसं.* गजकपित्यन्याय, हाथीए गळेला कोठानो न्याय

चनपाह "ऐतिका. [वीर पुरुष] [रा.; "सं.गज+ग्राह]

क्वमेली आरारा. गजगामिनी स्त्री (प्रा. गजगइली)

क्व-ज़ुक्ती *नरका.* हाथणी

ज्जबर उक्तिर. मंदिरमां हाथीओना शिल्पनी

हारमाळा (सं.गजस्तरः)

गजधाट ऐतिका. हाथीओनो समूह, [हाथी जेवा गौरववंत पुरुषोनो समूह]; जुओ थाट

गजधर लावल. सुथार; [कडियो, स्थपति; दरजी]

ग्जमुक्ता *प्रेमाका*. हाथीना मस्तकमांथी नीकळतां मनातां मोती [सं.]

गजयज (गजवज) ["गजवय] विमप्र. हाथी ["सं.गजपति]

गजवड, गजवडि गुर्जरा. प्राचीसं. एक जातनुं *रेशमी कांपड — गजचित्रयुक्त (सं.गजपटी)

गजवय जुओ गजयज

गजवाड *प्रेमाका*. हाथीखानुं

गजा *विमप्र. [हाथीओ]

गजार *प्रेमाका***. रसोडा के भंडार तरीके** वपराय एवो नानो खंड

गजियाणी *प्रेमाका*. एक प्रकारनुं रेशमी कापड – [गजना मापनुं]

गजियां प्रेमाका. गज पनानां कापड

गड़ तेरका. गाज, (मेघ)गर्जना (सं.गर्ज-) गड़ाइ गुर्जर. तेरका. लावल. गर्जना करे, गाजे (सं.गर्जति)

गञ्ज विज्ञ *प्राचीसं*. गाजवीज (सं.गर्जितम् विद्युत्)

गड *उक्तिर.* ढीमडुं, फोल्लो (सं.गडुः)

गड कामा(त्रि). *हाथी

गडगडती *प्रेमाका*. [गाजती, जगजाहेर], जाणीती

गडव्ड अंबरा. गडदो, [मूठीनो] प्रहार **गडमडत**्रार्जरा. "गडगडतुं, "गडगडाट करतुं ["गबडी पडतुं]; जुओ गडयडइ गडवडइ जुओ गउयडइ गडार, गडारउ " उषाह. "प्राचीसं. [मकानना पायानी ऊभणी, प्लिन्थी **पंडिया** शंगामं. बख्तर वगेरेथी सञ्ज थयेल (दे.गृडिअ) **गर्ज "**पडाबा. [चोखा वगेरेनुं धोवण] **गहरि प्रवाह** *आनंस्त*. गाडरियो प्रवाह गढरोहु *उपबाः गिढने घेरो घालवामां आवे ते] (दे.गढ+सं.रोधक) **गडिउ** जुओ अन्नलि गढिउ गण कर्पुमं. ब्राचीफा. गुण; अभिक. [धनुष्य-नी दोरी, [पणछ] [सं.गुण] गणक कांद(शा). जोशी (सं.) गणघर कादं(ध्र). कादं(शा). गंधर्व, गानारा **गणधर** *ऋषिरा*. तीर्थंकरना प्रधान शिष्य गणधार गुर्जरा. चारफा. लावल. जिनदेवना प्रधान शिष्य, अनुपम ज्ञानादि गुणयुक्त जैन साधु के आचार्य (सं.गणधर) गणहर ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. षष्ट्रियः, गणधरः; जुओ गणधार **गणि** उपबा. गुर्जरा. साधुओना एक समूहना अधिपति (सं.गणिन्) [सं.] **गणित** नरका. गणी शकाय एवं, हिसाब थई शके एवं, पार पामी शकाय एवं] गणीअल प्राचीका. गुणियल, [गुणवान] **गणीउ** *नलरा*. ज्योतिषी (सं.गणक) गणीस उक्तिर. गणीवर. गणाधिपति

(सं.गणिमिश्रः) **गणीस** विमप्र. ओगणीस सिं.एकोन-विंशति] **गणेश** *आरारा-श्रु.* तेतर **गत** *आरारा.* गति, [झडप]; *अखाछ. *कामा(शा). नरका. प्रेमाका.* गति. दशा. स्थिति: अखाका. प्रेमाका. मदमो. गति. चाल, रीत; नरका. गति, [समज, बुद्धि, भानी: *चित्तसं* गति, शक्ति **गतभंग** *कामा(शा)***. बे**भान **गति** *आराराः* जवुं ते, गमनः जीवयोनिः उपबा. स्थिति, जिवस्थिति, जीवनी अवस्था]; *वीसरा*. बाबत, [अवस्था, हालत] (सं.) **गतिमर्गु "**गुर्जरा. [पंचम गति एटले मोक्षनो मार्गी **गत्य** *चित्तसं*. गति, स्थिति, दशा गत्यमत्य *नरका*. गति अने मति, सान-भान∛ **गत्य थाए** चित्तसं. गत थाय, दूर थाय **गद** *प्रेमाका.* [गद्य], कहेलां **गदकलां** *नरका*. गतकडां, टोळ, मश्करी **गदहिला** *उक्तिर*. बळद वगेरेने चलाववा माटे वपराती आर (दे.गद्दहिला) **गहरुउ** *उक्तिर*. गधेडो (सं.गर्दभ) **गद्य** *प्रेमाका*. सीधांसादां वचन, शिब्दोमां कही शकाय एवं। **यनीम** *रुत्तस*. मराठा **गन्हउ** विक्ररा. गुनो

गफा *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* गुफा

गटम *तेरका.* गर्भ गभरु *अखाका.* [बच्चुं], वाछरडुं गभार, गभारा, गंभारउ उक्तिर. ऋषिरा. *षडाबा*. गभारो, गर्भगृह, दिवालयनो अंदरनो भाग] (सं.गर्भागार)

गभु *गुर्जरा*. गर्भ **गभेलउ** **गुर्जरा*. [नौकानो चाकर] (दे.

गब्भेल्लग) **गम** अखाका. "अखाछ. गुर्जरा. प्रेमाका.

सुझ, दृष्टि, समज; अखाका. स्वरने कंपावीने गावुं ते, [एक प्रकारनो स्वरबंध]

यम *उषाह. [गम्य, मनमां लाववुं ते]; दिशा, [युक्ति, मार्ग]; वीसरा. गमन **गमइ** *आरारा. गुर्जरा. लावल.* निर्गमन करे, पसार करे, वितावे [सं.गमयति]: *गुर्जरा.* सुझे

गमइ, गमइं * प्रद्युच्नू. [तरफ, माटे]; *उक्तिर*. *विमप्र. सावल. षडाबा. बाजूए, [दिशामां, तरफ] (सं.गम्य)

गमण *गूर्जरा. तेरका. लावल.* गमन

यमणायमणु *षडाबा.* गमनागमन, आव-जा

गमती *आरारा*. पसार करती

गमा *उक्तिर*. बाजु

गमाणि उक्तिर, गमाण (सं.गवादनी)

गमाया नेमिछं. लावल. वीसरा. गुमाव्या, नाश कर्यो

गमारि वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). गमार स्त्री (दे.गामार)

गमां *कामा(शा). चंद्रवा. नरका.* बाजु,

दिशा. तरफ **गमांतरुं** *सिंहा(शा).* गामतरुं [सं.ग्रामान्तर]

गमीआं ऋषिरा. गुमाव्यां

गमीजइ विराप. (दिवसो) पसार करीए. वितावीए (सं.गम्यते)

गमे *नेमिछं. विमप्र*. बाजुए, दिशाए, [तरफ] गमेइ आरारा. गुर्जरा. विराप. (समय) पसार करे, वितावे (सं.गमयति)

गर्मे आनंस्त, प्रकारे

गम्य चित्तसं. प्रेमाका. गम, सूझ

गय *जिनरा*. गति, [जीवयोनि] **गय** अंबरा. आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. दैवरा.

नेमिछं. विराप. हाथी (सं.गज)

गयगत *प्रद्युचु. [नष्ट] [सं.गतगात्र]

गयगमणी आरारा. कृष्णच. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). हाथी-ना जेवी चालवाळी (सं.गजगमनी)

गयण ऐतिका. ऐतिसः ऋषिसः गुर्जसः तेरका. नेमिछं, लावल, हरिवि, गगन, आकाश

गयणगंग *तेरका.* गगनगंगा, [आकाशगंगा] गयजंगज गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. शंगामं. गगनन् आंगण् (सं.गगनांगन)

गयदूषण नेमिछं. जेमनां दूषण गयेलां छे तेवा, दोष विनाना, खािमी विनाना]

गयमर उषाह. गुर्जरा. नलरा. हाथी (सं. गजवर)

गयय *तेरका*. गयुं (सं.गत+क) **गयराय** तैरका. गजराज

गयवर आरारा. गुर्जरा. विक्ररा. शुंगामं.

हाथी (सं.गजवर)

गयंद अभिक्ठ. अंगवि. नरका. नंदब. प्राचीफा. मदमो. शृंगामं. हम्मीप्र. हरिवि. हाथी (सं.गजेन्द्र)

गयंदर जुओ गयंधर

गयंदवय *प्राचीसं*. गजेन्द्रपद, [गिरनारनुं एक जलतीर्थ]

*गयंघर [गयंबर] विराप. सुंदर हाथी, [उत्तम हाथी] [सं.गजेन्द्र]

गरइ प्रबोप्र. गळी जाय, [क्षीण थई जाय] (सं.गिरति); जुओ गरी पडे

गरकतुं (गरफतुं) *सिंहा(शा)*. गळचटुं ?, [*फरसुं]

गरका *प्रेमाका*. टुकडा

गरकाष्य अखाका. गरकाय, [संकोडाईने चालवुं ते]

गरजण चंद्रवा. [गरजाण], गीधण, [गीध]

गरिट्ठ *ऐतिका.* गरिष्ठ, मोटो

गरहड आरारा. उक्तिर. ऐतिका. कर्पूमं. नलरा. प्रद्युचु. प्रेमाका. वाग्भबा. विक्ररा. घरडो, वृद्ध (सं.जरठ)

गरढपणि *प्रबोप्र*. घडपणमां

गरणां-गोर वेताप. गणागौर, गणगौरी, [पार्वतीनुं प्रतीक-रूप, जेनुं आ व्रतमां पूजन करवामां आवे छे]

गरत (घरत) देवरा. घी (सं.घृत)

गरथ कामा(शा). नरका. प्रेमाका. "वीसरा. नाणुं, धन

गरधव मदमो. गर्दभ, गधेडो

गरफलुं जुओ गरकलुं

गरब, गरबु वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. गर्व, अभिमान गरभ वीसरा. [गर, अंदरनो मावो] (सं.गर्भ)

गरभु *प्राचीफा.* गर्व, अभिमान

गरवी लावल. गर्ववाळी

गरसली नलरा. स्त्रीनुं एक घरेणुं, [गलसिरी, गळानुं घरेणुं]

गरहइ उक्तिर. निंदा करे (सं.गर्हति)

गरहणइ विकरा. शृंगामं. हम्मीप्र. घराणे, गीरो तरीके [सं.ग्रहणक; दे.गहण]

गराण *विमप्र. [भारे, वजनरूप, अप्रिय] [फा.गिरां; हिं.गरां]

गरिट्ठ, गरिठ *आरारा*. गरिष्ठ, महान, महिमावंत

गरिहर्जं **षडाबा.* [निंदुं] [सं.गर्ह] गरी पडे *प्रेमाका.* खरी पडे. गबडी पडे:

जुओ गरइ, गिरी पडवुं

गरीठो *ऐतिका. लावल.* गरिष्ठ, महान, श्रेष्ठ

गरीघर प्राचीका. कृष्ण (सं.गिरिधर)

गरुअओ *वसंफा.* मोटो (सं.गुरुक)

गरुई आरारा. षडाबा. मोटी (सं.गुरु+ई)

गरुड, गरूड उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भबा. षष्टिप्र. गरवो, मोटो, महान (सं.गुरुक)

गरुज *हम्मीप्र*. गुरज, [गदा जेवुं] एक हथियार (फा.गुजी)

गरुयं उक्तिर. चंद्रवा. तेरका. षडाबा. मोटुं, गरवुं (सं.गुरुक)

गरुयड *ऐतिका. [मोटाई, महत्ता]

गरुवडि, गरूवडि शंगामं. षष्टिप्र. मोटाई; आरारा. गौरवपूर्वक **गरुवो** *नरका*. गौरवशाळी **गरुअडी** नलरा. मोटाई, माहात्स्य **गर्रुड** *षडाबा.* **मोटी (सं.गुरु परथी)** गरूड जुओ गरुउ गरुवडि जुओ गरुवडि गरेणे कामा(त्रि). गीरवे [सं.ग्रहणक, दे.गहण]: जुओ ग्रहण गर्ध प्रेमाका. पैसा, धन **गर्धव** *दशस्कं(१)*. गर्दभासूर गर्भकमल *चित्तसं*. अंदर रहेल कमलरूपी अवयव [सं.] गळ वीसरा. गळुं (सं.गल-) गलअलइ उक्तिर. गळगळे, आई थाय **गलउ** *आरारा*. गळ्युं, मीठुं गळड वीसरा. गळूं (सं.गल-) गलकंवल *षडाबा*. गाय वगेरेनी गळा नीचे-नी लटकती चामडी (सं.गलकंबल) **गलकी** *वेताप***ागंडकी** नदी **गल गरजत ऐतिरा.** गाल गजावता, [गाल-थी गर्जना करता **गलगलीया** *गुर्जरा.* गर्जना करी ऊठ्या (प्रा.गुलगुलइ) गलगांठी *उक्तिर*. गळानी ग्रंथिओ (सं. गलग्रन्थयः) गलवामीकर *सम्पची*. किंठनी शोभारूप] गळानो सोनानो हार [सं.] गलणंड उक्तिर. विक्ररा. गळणं, गरणं (सं. गलनकम्) गलतडी *उषाह, [गळती, पाणी गळतुं रहे

तेवी गोठवणी गलशियिल जुओ शिथिल **गलसरण** *षडाबा*. हीबकां (सं.गलस्वर) **गळस्थळ** *नरका. प्रेमाका*. गाल **गलहथउ** उक्तिर. बोची पकडवी ते. पराजित करवुं ते (सं.गलहस्तः) गलहरियं उक्तिर, जेनी बोची पकडायेली छे ते, पराजय पामेल (सं.गलहस्तितः) **गलान्य** *चित्तसं*, ग्लानि **गळा मांह्य पग घालुं** जुओ पग घालुं गळा मांह्य **गलाल** *प्राचीफा***. गुलाल गलित** अखाछ. अखेगी. प्रेमप. गळेलुं, नम्न, आर्द्र [सं.] **गलितपणे** *आवेगी*. नमताथी गिलयार *उक्तिर*. गिळयो बळद, हृष्टपुष्ट पण सुस्त बळद (सं.गलिः) [सं.गलित-] **गळियो** *प्रेमाका*. चालवाने अशक्त, [चालवा न मागतो, सुस्त] [सं.गलित] गिल साहै जिनरा, गळामांथी पकडीने गली *नेमिछं*. ढीला यईने **गलीउ** *नेमिछं*. गळ्यो, [मीठो] [सं.गुल्य] **गलीया** *आरारा*. बेठूं ऊठे नहीं तेवूं, [सुस्त, आळस्] [सं.गलित] गळुबंध दशस्कं(१). प्रेमाका. गळामा पहेरवानुं आभूषण **गलेलवुं** *सिंहा (शा)*. ढीला थवुं, [गळिया थवुं] **गलोढुं** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गलोटियुं दि. गलत्थिओ गलोढां *प्रेमाका*. गलोफां

गलोलां **नरप(द)*. [टींडोरां]

गत्न कादं(शा). प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). गाल (सं.)

ग**दन** दशस्कं(१). गमन; जुओ गउण

गवन-धवन अखाका. जवुं ते, [दोडधाम] (सं.गमनधावन)

गवरी विराप. गायो; जुओ गउरी, गौरी

गवाणि उक्तिर. गमाण, ढोरने ज्यां घास नाखवामां आवे छे ते स्थान (सं. गवादनी)

गवानिक प्रेमाकाः [दररोज काढवामां आवतो] गोग्रासः; जुओ गवांनक

गवातु अंबराः गवाळो, सरसामाननो जथ्यो

गवाळो *प्रेमाका.* वस्त्र के सरसामाननो जथ्यो

गवाही *प्रेमाका.* साक्षी [फा.]

गवांनक, गवांनीक सिंहा (शा). गोग्रास, [रोज अपातो चारो] (सं.गवाह्निक); जुओ गवानिक

गविल *आरारा. गुर्जरा. दूधनुं बनेलुं (सं. गव्य+इल्ल)

गबिल लावल. *जंगली पाडो [प्रा.गवल], [दूर कर्या] [हिं.गैल=जवुं]

गवेषीई *आनंस्त*. गवेषणा करीए, शोध करीए

गव्यृति कादं(शा). गाउ, [त्रण किलोमिटर] (सं.)

गशान्यो *मदमो*. ग्रस्त थयो, वश थयो गह आरारा. ऋषिरा. तेरका. ग्रह गहइगिहिती, गहगहती आरारा. आनंद पामती, हर्षभरी (दे.)

गहइली, गहेली लावल. घेली [सं.ग्रह+इल]
गहगहवुं, गहगहिवुं आरारा. ऋषिरा.
ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं.
प्राचीफा. लावल. विकरा. विराप.
आनंद पामवुं, हर्षथी भराई जवुं; नलरा.
सुगंधथी महेकवुं; वसंफा. वसंफा(ल).
वसंवि. वसंवि(ब्रा). वृद्धि पामवुं,
विस्तरवुं (दे.)

गहगाट, गहिगाट आरारा. ऐतिका. आनंद, आनंदनी अभिव्यक्ति, [आनंदिकक्कोल] गहण तेरका. वगडो (सं.गहन); ऊंडाण (सं.गहन)

गहबरइ *प्रद्युचु. प्राचीफा*. गभराय

गहलो विकरा. घेलो [सं.ग्रह+इल्ल]

गहवरिउ प्राचीसं. व्याकुळ थयुं गहिगाट जुओ गहगाट

गहिबर शृंगामं. गभरु, [व्याकुळ]

पिकविरेज आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. शृंगामं. गभरायुं, [व्याकुळ थयुं]

गहिर प्राचीफा. ऊंडुं (सं.गभीर); ऐतिका. घेरुं

गहिलंड, गहिलंड आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपमा. गुर्जरा. तैरका. प्राचीफा. प्राचीसं. रूपच. वीसरा. शीलक. सिंहा(म). घेलो, गांडो, मूर्ख, [उन्मत्त] (सं.ग्रह+इल्ल)

गहीय *गुर्जरा*. ग्रही

गहूं उक्तिर. घउं (सं.गोधूम)

गहूंली *ऐतिका.* घउंनी ढगली, [गुरुना स्वागतार्थे करवामां आवती घउं आदिनी

आकृतिओ] गहेली वसंफा. वीसरा. गांडी, घेली [सं. ग्रह+इल्ली; जुओ गहइली **यंगजमन** अभिक्त. गंगाजमनी प्रकारनुं वस्त्र, पछेडी, बिरंगी वस्त्र, आगळ-पाछळ जुदा रंगनुं वस्त्र] गंगरे उषाह. गांगरे, [ऊंट अवाज करे] दि.गग्गरी गंगति *नेमिछं*. आनन्द **गंगवणे** *गुर्जरा*. गंगातटना वनमां गंगाज**ल** *प्राचीफा. हम्मीप्र*. घोडानी एक जात गंगाधार *कामा(त्रि)*. शिव **े गंगानंदणु** *गुर्जरा*. गंगानो दीकरो **मंगेटी** उक्तिर, एक वनस्पति, जीतेली (सं. गंगेष्टिका) गंगेर आरारा(व). एक औषधीय वनस्पति, गंगेडु (रा.गंगेरण; सं.गांगेरुकी); गंगेटी, बाजोलियुं, नागबला ? गं**डी, गांडी** *पंचवा.* वांसफोडानी पत्नी; जुओ वंशफोड **गंजण** *तेरका.* कलंक (सं.गंजन); *ऐतिका.* मर्दन करनार, हरावनार; जुओ गंजन **गंजणहार** *गुर्जरा.* पराभव करनार **गंजन ***ऋषिरा. मिर्दन करनार, करनार] (सं.); जुओ गंजण **गंजिउ** *प्रद्युचु*. गर्ज्यो गंजिउ आनंस्त. जीत्यो [सं.गंजित] **गंजिए** जुओ गंय्यिउ गंठ, गंठि अखाका. तेरका. प्रेमाका.

वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. गांठ (सं.ग्रन्थि) **गंठाला** *आरारा(व)*. गंठोडा, पीपरीमूळ ? **गंठि** जुओ गंठ गंठोडा *जिनरा*. काननुं आभरण गंडस्थल *प्रेमाका*. लमणुं (सं.) गंडुआ जुओ सेजगंडुआ **गंडोल** *पडाबा.* एक प्रकारनुं जंतु [जे पेटमां उत्पन्न थाय छे] (सं.गंडुल) **गंत्री** *आरारा*. पेटी (सं.) गंधकारी जुओ गंधारी **गंधमायण** *गुर्जरा.* गंधमादन पर्वत गंधरव जुओ गंध्रव गंधर्व (गंधर्व गोरी) *सिंहा(म). [गंधर्व स्त्री, गानारी **गंधलेण** विक्रच. गंध लेवी ते, [थोडोक स्वाद लेवो ते, चाखवुं ते] गंधव (गंधव गोरी) *प्राचीफा. [गंधर्व स्त्री, गानारी गं**धाअइ, गंधाइ** *उक्तिर. षडाबा.* गंधाय, -नी गंध आवे. वास आवे **गंधारि** गुर्जरा. राणी गांधारी गं**घारी, गंधकारी** गुर्जरा. विराप. स्वामीनी पाछळ सुगंधी द्रव्यो लईने चालनारी दासी (सं.गंधहारिका, गंधकारी) गंध्रव (गंध्रवविवा), गंधरव (गंधरविवा) *चंद्रवा*. गंधर्वविवाह, [स्त्रीपुरुषनी] इच्छाथी थतो. उत्सवरहित विवाह **गग्रप** जिनसः गंधर्व, गवैया

गंग्रव लावल. गंधर्व, दिवगायक]

गंभारड जुओ गभार

गंभीर *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ज्ञा). ऊंडुं; वीसरा. गाढ, भारे; हरिख्या. प्रौढ, मोटुं [सं.]

गंभीरिम ऋषिरा. नलरा. गंभीरता, ऊंडाण (सं.गंभीरिमा)

गंब्यिउ [गंजिउ], गांब्यिउ [गांजिउ] प्रबोप्र. गांज्यो, हराव्यो [सं.गंजित]

गाइ *वीसरा*. गाय (सं.गावी)

गाइण *विक्ररा*. गायन

गाउ *चतुचा*. गाणुं

गागरी उक्तिर. गागर (सं.गर्गरी)

गाजंज मदमो. गाजतो

गाठडी वीसरा. गांठडी (सं.ग्रन्थि)

गाठउ जुओ गाढउ

गाठा * नरका. *नरप. प्रेमाका. छेतराया, जिताया

गा**टुओ** अखाछ. प्रेमाका. गठियो, [छेतर-नार]

गाडर, गाडरि आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा. घेंटी (दे.गडुरी)

गाडलउं *उपबा*. गाडुं (दे.गडु)

गाडवा *प्रेमाका.* घडा जेवा वासण [दे. गडुक, गडुअय]

गाडवुं प्रेमाका. वीसरा. वेताप. दाटवुं (दे.गृहु परथी); अखाका. रोपवुं, [खोडवुं]

गाडीत चंद्रवा. गाडाव्राको

गाडूडा उथाह. गागर, गाडवा [दे.गडुक] *गाढउ [*गाठउ] लावल. *बळवान, *मोटो, [*छेतरायो; *वंचित थयो]

गाढउं आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. वीसरा. षडावा. खूब मोटुं, भारे, सबळ, दृढ; आरारा. आग्रहपूर्वक, भारपूर्वक (रा.)

गांदिम *विमप्र. [गौरव, गौरवपूर्वक] **गांत** कामा(त्रि). गांत्र, [जांत], मन; *नरका*. गांत्र, अंग, [शरीर]

गातडी *प्रेमाका*. छाती अने बरडो ढंकाय एम गांठ वाळी वस्त्र ओढवुं ते [सं. गात्रिका]

गात्री उक्तिर. गातडी, गांठ मारी लपेटेलुं वस्त्र (सं.गात्रिका)

गादह धडाबा. गधेडा (सं.गर्दभ)

*गादी (गादी हाट) कामा(त्रि). गांधीनी दुकान

गाने *जिनसः [गणनामां, संख्यामां] [प्रा. गण्ण]; जुओ किणगानइ

गाबडी *उक्तिर*. ग्रीवा, गरदन

षाभरू *उक्तिर.* [*बद्युं, *गभरु] (सं.गर्भ-रूप)

गाभरो *प्रेमाका*, गभरायेलो, त्रस्त

गामट, गामटि लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). गामडानी, गामडियण (सं.ग्रामटिका परथी ?)

गामंतरज वीसरा. परगाम जवुं ते (सं.ग्राम+ अन्तर)

गामां कामा(त्रि). कामा(शा). गाम, गामडां [सं.ग्राम]

गामांतर दशस्कं(१). प्रेमाका. बीजे गाम

जवानी क्रिया, गामतरुं गामी लावल. [विषय] दूर करी गामी *लावल. [(सिद्धिए) पहोंचनार] गामीत्रा लपच. परगाम [जवुं ते] गामेचउ उक्तिर. गामडानुं, गामडियुं (सं. ग्रामेयः)

गायण * गुर्जरा. प्राचीसं. गायक [सं. गायन]; गुर्जरा. गायन, गान

गायतउ *षडाबा*. गातो

गायत्री, गायत्रीय गुर्जरा. विराप. गायो (म.; सं.गायत्री साथे भेळसेळ)

गार अखाछ. गारी, गेरी, वहेर; *प्रेमाका.* लींपण, [माटीनो केल]

गारज *प्राचीसं*. अभिमान (सं.गौरव); जुओ गारव, गारो

गार काढे अखाछ. नाश करे ?

गारडी अखेगी. अंबरा. आरारा. प्राचीफा. गारुडी, मदारी, साप उतारवानी मंत्र जाणनार (सं.गारुडिक)

गारव, गारवज, गारवो उक्तिर. उपबा. वेताप. अभिमान, अहंकार [सं.गौरव]; जुओ गारउ

गारुडविद्या *आरारा*. सर्पवशीकरणनी मंत्र-विद्या [सं.]

गारुडिक, गारुडी नरका. प्रेमाका. वीसरा. षडाबा. मदारी, सर्पने रमाडनार [सं.]

गारो चतुचा. गौरव, अभिमान; जुओ गारउ गाल, गाळ, अखाछ. महेणुं, [कलंक, दूषण]; *oकामा (त्रि)*. दोष [सं.गालि]

गालडा विमप्र. गाल [सं.गल्ल]

गाल मारे अखाछ. बडाश हांके गाला अभिक्त. नेमिछं. गाळा, (गळानुं) बंधन गालि उपबा. गाळ [सं.] गालिमसूरा तेरका. प्राचीसं. गालमसूरिया,

गालिमसूरा तेरका. प्राचीसं. गालमसूरिया, [गाल तळे राखवानां मशरूनां के अन्य ओशीकां] (सं.गझ+मसूरक)

गारु *जिक्तर. नलरा. ०षडाबा. षष्टिप्र.* स्थूलिफा. गाथा, गीत

गाह *गुर्जरा. [विध्वंस, नाश] [रा.] गाह- उक्तिर. गुर्जरा. प्रद्युचु. अवगाहन करवुं, प्रवेशवुं (सं.)

गाह वीसरा. पकडमां लेवुं (सं.ग्राह) गाहांडुं ग्रेमाका. गाढुं, ऊंडुं गाहां थडावा. गाथाए, गाथा वडे गाहिंड उपवा. गाथामां

गाहो *मदमो*. छंदविशेष (सं.गाथः); *वेताप*. गाथा, छंद

गांग प्राचीसं. गंगा गांगड प्रेमाका. चड्या वगरनो, करडू

गांगेड विरापः गांगेय, भीष्प

गांगेव दशस्कं(२). गांगेय, भीष्म

गांछउ नलरा. वांसफोडो; जुओ वंशफोड गांछी जुओ गंछी

गांज्खं *प्रेमाका*. हराववुं, [पराजय पामवुं] (सं.गंज्)

गांजे नरका-२. [जीतीने, हरावीने] गांजिड जुओ गांय्यिउ

गांठइ उक्तिर. कादं(शा). गंठे, गूंथे (सं.ग्रंथयति)

गांठि *उक्तिर*. ग्रंथि, गांठ

गांठीड नलरा. स्त्रीनुं एक घरेणुं (सं.ग्रंथिक) गांध्रव कामा(त्रि). गंधर्व, ए नामना देव; मोसाच. गायक

गांध्रवी *प्रेमाका***. गंधर्व**नी

गांय्यिज जुओ गंय्यिज गिज जुओ गउ

गिडगिडी ऐतिका. याद्यविशेष

गिणइ उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि. वीसरा. नलाख्या. गणे (सं.गणयति)

गिण्ड- तेरका. ग्रहण करवुं (सं.गृण्ह्)

गिर उक्तिर. गर, अंदरनो मावो (दे.)

गिर *तेरका*. गिरि

गिरइ उक्तिर. कादं(शा). पडे, झरे, टपके (सं.गिरति)

गिरट्ठ प्राचीफा. महान (सं.गरिष्ठ)

गिरिंड उक्तिर. एक वार वियायेली गाय (सं.गृष्टिः)

गिरिमालुं आरारा(व). गरमाळो (सं.कृत-मालक)

गिरिसंघि गुर्जरा. गिरनार पासे

गिरी पडवुं दशस्कं(१). प्रद्युचु. दडी पडवुं, पडी जवुं; जुओ गरी पडे

गिरुड अभिक. उषाह. ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. हम्मीप्र. गरवुं, गौरववंतुं, महान, मोटुं (सं.गुरुक)

निरुयु, निरूयु आराराः प्रद्युचुः शृंगामं. गरवो, गौरववंतो, मोटो, [महान] (सं.गुरु)

गिरे तैरका. गिरि

गिलइ, गिळइ *उक्तिर. वीसरा.* गळे, टपके;

नलाख्या. वाग्भवा. षडाबा. गळे, गळे उतारे, ग्रास करे (सं.गलति, गिलति) विलगिली उक्तिर. गलगलियां, गलीपची गिलानि षडाबा. ग्लानि

गिलो *उक्तिर*. गळो, एक वनस्पति (सं. गुडूची)

मिलोई उक्तिर. षडाबा. गरोळी, धिलोडी (दे.गिरोलिया, गिलोइ)

गिल्यां *आरारा.* गळयां, मीठां [सं.गुल्य] गिवरी कर्पमं. पार्वती (सं.गौरी)

गिहिन कादं(शा). ऊंडा, [गाढ] (सं.गहन) गिहिलुं आरारा. नलाख्या. घेलुं (सं.ग्रथ्+ इल्ल के ग्रह+इल्ल)

पीणी दशस्कं(२). प्रेमाका. ठींगणी गीतारथ, गीतार्थ आरारा. विद्वान, ज्ञानी, धर्मतत्त्व जाणनार

गीय *शृंगामं***. गीत**

गीस्त *वेताप. सिंहा(शा)*. निष्फळ, फोगट (फा.जिस्त)

गुख, गूख आरारा. उषाह. कादं(शा). नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). विकरा. विमप्र. गोख, झरूखो (सं.गवाक्ष)

गुज, गुज्य, गूज, गूज्य कामा(त्रि). कामा(शा). नरप(द). प्राचीका. प्राचीफा. सिंहा(शा). छानी वात (सं. गुह्य); दशस्कं(१). गुह्य, [मार्मिक, ऊंडुं]; शीलक. गुप्त, [एकांतमां]

गुजर, गूजर नलाख्या. गुजरोने लगतुं, गुजराती; उक्तिर. गूर्जर, एक जाति गुजरी, गूजरी नरप(द). "नरका. गोवालणी; उकिर. गूर्जर जातिनी स्त्री कुर्बरी *ऐतिका.* रागनुं नाम कुर (देश) तेरका. गुर्जर (देश), [गुजरात] कुर्बाचा *षडाबा.* यक्ष, एक अर्धदेवजाति (सं.गुह्मक)

कुन्छाम जुओ गुंज्यग्राम **कुन्दर भारत** *मदमो*. गुर्जर भाषाए

कुन्यराति *रूस्तसः* गुजराती

ज्ञा, जुन्न, पूज अखाका. ऐतिरा. नरका. प्राचीफा. मदमो. विक्रच. विक्ररा. सिंहा(शा). छूपुं, छानी वात, मर्म, रहस्य (सं.गुह्य)

कुबबी *प्राचीफा*.ं [गजब करनार], जुलमगार, [त्रासदायक] [अ.गदबी]

🐝 चंद्रवा. गोठडी [सं.गोष्ठि]

रुड *गुर्जरा. विराप*. हाथीनो बख्तर वगेरे साज (सं.)

बुद्ध अक्तिर. गोळ (सं.)

बुडड़ "नत्तरा. [भांगी नाखे]

बुद्ध आरारा. *हम्मीप्र. झूमे, झूमता चाले (रा.)

कुद्ध प्रद्युनु. (हाथीने) कवच वगेरेथी सज़ करे [सं.गुड़ू]

नुडर *नलरा.* **गु**डो, पग [दे.गोडु]; जुओ गृ**डा**

बुडही *पड़ाबा***. घडो, गाडवो** [दे.गडुक]

दुडा ऊंधा पात अखाका. ऊंधा पग घालीने जलदी ऊभा थवानी तैयारी राखीने, [उभडक, निरांत विना, कष्टपूर्वक]

नुडि गुर्जरा. हाथीनो साज (सं.गुड़ा)

गुडि *उषाह*. धजा

गुडिंड, गुडियंड, गुडीय उक्तिर. गुर्जरा. स्थूलिफा. कवच वगेरेथी संज करेला (सं.गुडितः)

गुडी, गूडी आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. कादं(ध्र). *जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. नलरा. ललिरा. विकरा. विमप्र. वीसरा. हम्मीप्र. हरिख्या. नानी धजा, पताका

गुडीय जुओ गुडिउ

गुडु *षडाबा.* **गोळ** (सं.गुड)

गुरु शृंगामं. रहस्य [रा.गुढौ; सं.गूढ]

गुइउ, गोडउ प्राचीसं. गूडो, पग [दे.गोडु]

गुड़िया *प्राचीसं*. गूडी, धजा

गुड्या *विराप. [कवच वगेरेथी सञ्ज कया] [सं.गुडिताः]

गुढउं उक्तिर. [?] (सं.गुदगूढम्)

गुज गुर्जरा. नरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). (धनुष्यनी) दोरी, पणछ (सं.)

गुण *सिंहा(शा)*. गण (शंकरनो); *मदमो. हरिवि*. समूह (सं.गण)

गुण वसंफा. छिद्र (सं.)

गुण (गुणवनाएक) *प्राचीका* गणनायक, गणपति

गुणअन प्राचीका. गुणवान व्यक्ति (सं.गुणि-जन)

गुणइ उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. *नलरा. षडाबा. षष्टिप्र. पुनरावर्तन करे, अभ्यास करे (सं.गुणयति)

गुष्पच (कोडि गुणउ) उपवा. (करोड) गणो

गुणउसंकल *ऐतिरा*. गुणनी भरपाई, [गुण — उपकारनो बदलो]

गुणका, गुंणका मदमो. गणिका

गुणगेह ऋषिराः गुणोनुं घर, [गुणोनुं निवास-स्थान] (सं.गुणगृह)

गुणठाण आनंस्त. जिनरा. षडाबा. गुण-स्थानक, आत्मानी आध्यात्मिक उन्नति-नी उत्तरोत्तर अवस्थाओ [जै.]

गुणणी उक्तिर. पुनरावर्तन, अध्ययन (*सं. गुणनिका)

गुणतम आरारा. गुणोत्तम, उत्तम गुणवाळा गुणनाएक मदमो. गणनायक, गिणपति]

गुणनिलंड आरारा. ऐतिका. नलरा. गुणोनुं स्थान, [गुणोना आवास समान], गुणवान (सं.गुणनिलय)

गुणनिहाण *ऐतिका*. गुणनिधान, [गुणोनो भंडार]

गुणपंचासि *प्राचीफा*. ओगणपचास (सं. एकोनपंचाशत्)

गुणभूरि आरारा. घणा गुणवाळा (सं.)

गुणवेध *शृंगामं. [गुणचतुर, गुणरसिक] [सं.गुणविदग्ध]; वसंफा. वसंवि(द्वा). गुणचतुर, गुणरसिक (सं.गुणविदग्ध)

गुणवेघ वसंफा. काणुं पाडनार [सं.गुण+ वेधक]

गुणिसल *आरारा*. गुणशिलक नामनुं जिनमंदिर

गुणह वसंवि. वसंवि(ब्रा). पणछ (सं.गुण) गुणाकरो ऋषिरा. गुणनो आकर – खाण [– भंडार] **गुणागर** *वसंफा. वसंवि.* गुणोनो भंडार (सं. गुणाकर)

गुणिअन कादं(ध्र). कादं(शा). गुणिजनो, [प्रशस्तिगायको], भाट, चारण वगेरे गुणिज जिक्तर. पुनरावर्तन कर्युं, अभ्यास कर्यों (सं.गुणितम्)

गुद प्रेमाका. गुदा [सं.]

गुवराणी "ऐतिका. [निवेदित करी, निवेदित थई, जाणी] [फा.गुजर]

गुदरावर्षुं *सिंहा(शा).* मोकलाववुं (हिं. गुदराना) [फा.गुजार परथी]

गुवरे *मदमो.* दरगुजर थाय, [माफ थाय] गुवारे जुओ हसीय गुदारे

गुपति आरारा. ऐतिका. चारफा. मन, वचन, कायानी अशुभ वृत्ति-प्रवृत्ति टाळवी ते [जै.]; वीसरा. खानगी (सं.गुप्त)

गुप्ती *प्रेमाका*. लाकडीना पोलाणमां छुपावी शकाय तेवुं एक प्रकारनुं शस्त्र

गुप्ते *उपबा. [मन, वचन, कायानी अशुभ वृत्ति टाळवारूप गुप्ति वडे] [जै.]

गु**बडुं** सिंहा(शा). गुमडुं [सं.गुल्मः] **"गुभाजणी [उभाजणी**] **गुर्जरा*. [उद्वेग, उत्साहभंग]; जुओ उभगइ

गुमार, गुंमार मदमो. गमार [दे.गवार] गुर आरारा. कर्पूमं. काद(शा). प्राचीफा. षडावा. गुरु

गुरज, गुरुज, गुर्ज प्रेमाका. हम्मीप्र. [गदा जेवुं] एक शस्त्र (फा.गुझी); जुओ गरुज गुरजर-घर तेरका. गुर्जरधरा, गुर्जरभूमि, [गुजरात]

गुरव प्रद्युच्च. प्राचीफा. गौरव, [वरना सत्कार रूपे अपातुं भोजन] गुरां *षष्टिप्र.* गुरुओने **गूरि** कृष्णवाः गोरं, गणगोरं, गौरी गुरी * उषाह. [पार्वती, पार्वतीनां अन्य देवी-रूपो] (सं.गौरी) **गुरुअंडि ****विमप्र. शुंगामं*. मोटाई, [महत्ता] (सं.गुरु परथी) **गुरुज** जुओ गुरज गुरुड अंबरा. गुर्जरा. गरुड **गुरुडासण** *गुर्जरा*. गरुडासन **गुरुनंदणु** *गुर्जरा.* गुरुनो पुत्र गुरुपसाये ऐतिका. गुरुनी कृपाथी; जुओ पसाय गुरुभाग "अखाका. [गुरु पासेथी मळतो हिस्सो, गुरुनुं ऐश्वर्य के एनी शक्ति] **गुरुया** *गुर्जरा. मोसाच*. महान, गरवा, सुंदर (सं.गुरुक) ***मुरुलहुपणउ [अगुरुलहुपणउ] ***जिनरा.

"मुरुलहुपणउ [अगुरुलहुपणउ] "जिनरा.
[अगुरु लघुपर्याय, शरीरनी अगुरु
(स्थूळ के भारे नहीं) तथा अलघु (कृश के हळवी नहीं) स्थिति, समप्रमाणता]
[जै.]; जुओ अगुरुलहु
गुरुब प्राचीसं. गोरव, विवाहभोजन [सं.

गुरुव प्राचास. गारव, विवाहभाजन [स. गौरव] , गुरू *वाग्भवा. [मोटुं, लांबुं, प्रशस्त] गुरूआपणइ उपवा. अभिमानथी, [मोटाई-ना भावथी] गुर्ज जुओ गुरज

गुल अभिऊ. आरारा. उक्तिर. नलरा. नैमिछं.

विक्रच. षडाबा. गोळ (सं.गुड, गुल)
गुलगुल- *प्राचीसं. [हर्षनो अवाज करें];
जुओ गूगलीउ

गुलगुलायइ उक्तिर. (हाथी) गर्जना करे [दे.]

गुलणी उक्तिर. लतागृह [दे.गुलिणी] गुलधाणी उक्तिर. गोळ-धाणी (सं.गुडधानाः) गुलपापडी उक्तिर. गोळपापडी (सं.गुड-पर्पिटिका)

गुलमंडा उक्तिर. गोळमांडा, मीठा मांडा (सं.गुडमण्डकाः); जुओ मांडा गुलर दशस्कं(२). ऊमरो (वृक्ष) [हिं.गूलर] गुलाल आरार(व). *कृष्णवा. गुलाला — गुलाछा, लाल फूलनो छोड (रा.) [फा.

गुलांठ *दशस्कं(२).* गुलांट **गुलिय**च *उक्तिर. प्राचीसं*. गळ्युं, मधुर (सं. गुल्यः)

गुली *नेमिछं*. गळी, [मीठी]

मुले लाल]?

गुली (गुली कांठिलउ) ऐतिका. नजर न लागे एटला माटे बांधवामां आवे छे [ते गळानो कांठलो]

गुल्म प्रेमाका. [वृक्ष]घटा, [झाडी] (सं.) गुवालरी मदमो. रागिणीविशेष गुसाइउ प्राचीका. स्वामी, पति (सं. गोस्वामिन्)

नुसाही *पंचवा.* [गोसांई] धर्मगुरु, साधु (सं.गोस्वामिन्)

गुह तेरका. ?, [*हदय] [सं.] गुहबर सिंहा(म). गुफा (सं.गह्वर) गुहरी *हम्मीप्र.* घेरी [सं.गभीर] गुहिर, गुहिरउ आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. प्राचीफा. लिलरा. लावल. वीसरा. हम्मीप्र. गंभीर, ऊंड़, घेरुं, गाढ, गूढ **गुहिर सादि** स्थूलिफा. गंभीर अवाजे **गुढाक** * शुंगामं. [यक्ष] **गुंजा** *नरका. प्रेमप. प्रेमाका.* चणोठी [सं.] **गुंजारतु** *लावल*. गर्जना करतो **गुंजे घाली** *०प्रेमाका*. गुप्त रीते गुंज्यग्राम [गुज्यग्राम] * चंद्रवा. [गुह्येन्द्रियो] **गुंज** जुओ गउण **गुंगका** जुओ गुणका **गुंषधार** *देवरा.* [साधुना छत्रीस] गुणोने धारण करनार **गुंमार** जुओ गुमार **गुंहं** *विमप्र*. घउं [सं.गोधूम] **गूख** जुओ गुख **गूगलि** *आरारा(व)*. गूगळ (सं.गुग्गुलु) गुगकी *प्रेमाका*: ब्राह्मणनी एक जात (खास करीने द्वारकाना तीर्थगोर) **गूगलीउ "**नलरा. [हर्षयी अवाज करता] [सं.गुलगुल्]; जुओ गुलगुल-**गुगूलिया** प्राचीसं. गूगळी, ब्राह्मण-जाति-विशेष **गूज** जुओ गुज **गूजर** उक्तिर. गूर्जर, एक जाति; जुओ गुजर **गूजरडी** *प्राचीफा***. गुजरातनी स्त्री, गुजरा**तण **गूजर-देस** *प्राचीसं*. गुर्जरदेश **गूजर-बाइ** शृंगामं. गतिमान वायराधी ? **गूजरी** उक्तिर. गूर्जर जातिनी स्त्री; जुओ गुजरी **गूज्ज्ञ नलरा.** छानी वात (सं.गुह्य) **गूज्य** जुओ गुज गूझ, गूझ्य अखाका. अभिक. अंबरा. उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नरप. प्रेमाका. सिंहा(म). हम्मीप्र. छानुं, छानी वात, रहस्य (सं.युह्य); जुओ गुझ **गूडा** उक्तिर. गोठण; जुओ गुडउ **गूडिय** *ऐतिका*. पताका, [धजा] **गूडिय** *गुर्जरा.* सञ्ज कर्या, पाखर्या, पलाण्या (सं.गुडित) **गूडी** जुओ गुडी **गूढ** गुर्जरा. घेरुं, ऊंडुं (सं.) **गूढी** *नरका.* गाढी, घेरी, घेरा रंगनी **गूणी** *उक्तिर.* गूण, कोथळो (सं.गोणी) **गूतउ** *अखाका. *नलाख्या. *प्राचीसं. [फसायो, गूंचायो] (सं.गुप्त) **गूध** **प्रेमाका.* [लोभी, लालचु] [सं.गृध] **गूयाडलनगर** सिंहा(म). गोंडलनगर **गूरज** *दशस्कं(२)*. शस्त्रविशेष [फा.गुर्झ] **गृह**ं *उक्तिर. गृ*, विष्टा (सं.गृथम्) **गृहड** विमप्र. घूवड **गूंडां ***अ*खाका.* [धरोनां धूमडां, नकामा घासनां मूळ] **गूंफइ** *उक्तिर.* गूंथे (सं.गुम्फति) **गूंहली** *उक्तिर*. [*गरोळी] (सं.गोमुखा) गृयल, प्रथल अखाछ. आरारा. चित्तसं.

(सं.गुर्जर)

वळगाड लाग्यो होय तेवुं, गांडुं, घेलुं [सं.ग्रथ+इल्ल, ग्रह+इल्ल] गृहदीर्घिका कादं(शा). घर पासेनी पगथियां-वाळी दाव, कुंड के होज (सं.) **गेरो** प्रेमाका. खेरो, भूको, रज **गेलि** कादं(ध्रू). चारफा. नलरा. आनंद, आनंदभरी क्रीडा (सं.केलि); *गुर्जरा. *"विमप्र.* [आनंदथी]; जुओ गेल्हि **गेलि** *लावल.* आनंद कर, क्रीडा कर] **गेली** जुओ गजगेली गेलो *लावल.* आनंद, आनंदभरी क्रीडा [सं.गेलि] [प्रासमां 'गेलि'नुं 'गेलो'] **गेल्हि** *ऐतिरा*. गेल. गम्पत, [आनंद] सिं. केलि]; जुओ गेलि **गेसु (घेसु)** *प्रेमाका*. धूळ **गेह** आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. शीलक. घर (सं.) **गेहणे** *पंचवा.* घरेणे, [गीरवे] (दे.गहण) [सं.ग्रहणी]; जुओ ग्रहण **गेहली** *चतुचा*. घेली [सं.ग्रथ के ग्रह+इल्ल] **गेहिणि** *षडावा.* गृहिणी **गेहिरु** कुष्णवा. घेरुं [सं.गभीर] **गेहेन** अखाका. अखेगी. धेन **गेहेर बेसो** *चित्तसं.* घेर बेसो, शांतिथी बेसो गेहेल नरका. धेलुं [सं.ग्रह+इल्ल] **गेहेलडी** *प्रेमाका*. घेलडी. घेली **गैला** *नरका.* गयो (म.) **गोअम** गूर्जरा. गौतम, [महावीरना गणधर] गोअंगे प्रेमाका. [गगनांगणे], आकाशना चोकमां [सं.गो]

गोआडइ *उक्तिर.* गायोना वाडामां (सं. गोवाटक) गोइ पंचवा. सुंदर स्त्री (सं.गोपी ?) गोइक ऐतिका. गाय अने आकडो गोई गोसली उक्तिर. [?] (सं.गोप्य-शिलाका) **गोउल** उक्तिर: गोकुल, [गायोनो समूह] **गोकल प्राचीफा**. गोकूल, ए प्रदेश गोकित हरिव-अनु, गोकुळे गोकुल लावल. गायोनां कुळ, घण (सं.) **गोकुलिस्थान कादं(शा).** गायोनुं गोठडुं [- वाडो] (सं.गोकुलस्यान) **गोख** रूपच. प्रेमाका. गवाक्ष. गोखलो. झस्खो गोखर अखाछ. गोरखर, जंगली गधेडानी एक जात [फा.गोरखर] **गोगवेश** विक्रसः गोग नामनी वेश्या गोगिडउ. गोगीडउ उक्तिर. गींगोडो, गाय वगेरेने वळगतुं जन्तु (*सं.गोकीटः) **गोव्रास** हरिख्या. रांघेली रसोईमांथी गायने माटे काढेलो भाग (सं.) गोघर अभिक. गोग्रहण, विराटपर्वमांनो गायने पकडवानो प्रसंग सिं.गोग्रहो गोचर होय *चित्तसं*. अनुभवगम्य बनशे, समजाशे सिं.गोचरी गोचरि देवरा. साधुनी भिक्षा (सं.गौचरी) गोष्ठड उक्तिर, पात्र वगेरे साफ करवानी वस्त्रनो टुकडो (सं.गोच्छकम्) गोटको, गोटिको अखाका, अखेगी, चंद्रया,

पंचवा. *गुटको, गोटी, गोळी (सं. गुटिका) गोटी अखाछ गोटीलां जेवां स्तन?, [*गोठी, "पूजारी, *भक्त]; जुओ गोठिय गोटमका चित्तसं. गोटी, गोळी गोठ *प्रेमाका. [पहेरामणी करवा माटे ज्ञाति-समुदायने एकठो करवो ते, मिजलस, मिजबानी]

गोठ, गोठि नरका. नलरा. विक्रच. विक्रस. *वीसरा. शृंगाम. गोष्ठि, गोठडी, वात-चीत

गोठिय *प्राचीसं*. गोठी, [पूजारी] **(**सं. गोष्ठिक)

गोठिसे *जिनरा. [भाव धरशे]

गोडउ जुओ गुड़ुउ

गोडा *षडाबा.* गुडा, घूंटण, [पग] (दे.गोडु)

गोडिहिलियां षडाबा. घूंटण जमीनने अडके एवी रीते वंदन करवुं

गोडी * नरप. [*मूकी]

गोति *हरिवि*. कारागार (सं.गुप्ति)

गोतिहर, गोतिहिरउ *उपवा. *विमप्र. [केदखानुं] [सं.गृप्तिगृह]

गोती *प्राचीसं*. कुटुंबी, स्वजन (सं.गोत्री) गोतीहर *आरारा*. केदखानुं (सं.गुप्तिगृह)

गोत्र *आनंस्त*. गोत्रकर्म, जीवनुं उच्च के नीच गोत्र नक्षी करनार कर्मबंधन जि.]

गोत्रज *प्रेमाका*. कुळदेवी

गोत्रिय यडाबा. सगां, कुटुंबीओ (सं.गोत्रिक)

गोदी *नरका. नरप*. गोदा **भा**री

गोदोहण आरारा. गाय दोहवी ते

गोधज उक्तिर. आखलो [सं.गोधवः] गोधलु नलाख्या. आखलो गोधीका मदमो. घो (सं.गोधिका) गोर्नु अखाका. पृथ्वीनुं, [जगतनुं] [सं.गो] गोपाविवा (पग गोपाविवा) षडावा. [पगेरुं] छुपाववा

गोपिषिउ *उक्तिर*: गोपव्यो, गुप्त राख्यो गोप्य *नरका*: मदमो: गुप्त, छूपुं (सं.)

गोफण अखाका. पथ्यर भरावीने एनो घा करवानुं एक साधन [दे.गोफणा]

गोफण, गोफणउ, गोफणियो अभिक.

उथाह. ऋषिरा. दशस्कं(५), नरका.

नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विक्ररा.
विमप्र. वेणी साथे गूंथवामां आवतुं के
अंबोडे लटकाववामां आवतुं एक
धूधरियाळुं आभूषण (सं.गुंफन)

गोफिण उक्तिर. पथ्यर फेंकवानुं साधन (दे.गोफणा)

गोफणियो जुओ गोफण

गोबरे विमप्र. गंदा (दे.)

गोमट कर्पूमं. घूमट; *अभिक. [धूमटवाळी देवडीओ, चोकीओ]

गोमती नलरा. स्त्रीओनुं एक घरेणुं ["सं. गोम्त्रिका]

गोमय प्रेमाका. गायनुं छाण (सं.)

गोमुख प्रेमाका. फूंकीने वगाडवानुं एक वाद्य [सं.]

गोमूत्री उक्तिर. एक प्रकारनुं घास (सं. गोमूत्रिका)

गोयम आरारा. प्राचीसं. गौतम, महावीरना

गणधर

गोयरउ उक्तिर. गोचरनी जमीन गोयस प्राचीसं. ?, [*सिपाईडा] [दे.गोह+ इल्ल]

नोयुत *आरास.* गाय साथे (सं.) **गोर** *आरास.* गौर, उज्ज्वल

गोर *अखाछ.* गुरु

गोर**दं** दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. गोरुं [सं.गौर+ट]

गोरड *आरारा(व)*. गोरडियो बावळ, खेर गोरड *प्राचीसं*. गौरी, [पार्वती]

मोरडी ऋषिरा. गुर्जरा. लावल. वीसरा. सुंदर स्त्री, स्त्री (सं.गौर-)

गोखु *प्राचीफा.* वरनुं संमान करवा कन्या तरफयी अपातुं भोजन; जुओ गउरउ

गोरस गोली लावल. [दूध]दहीं भरवानी गोळी

बोरंभड *गुर्जरा.* गूंचवण, [मुश्केली, आपत्ति]

गोर्स्चंदन *प्रेमाका. [गोरोचन, गायना पित्तमांथी मळतो सुगंधी पदार्थ]; जुओ गोसीर्ष

मोह आरारा. गुर्जरा. नलरा. वेताप. ढोर, गायो (सं.गोरूप)

गोरे "*प्रेमाका.* **[**पासे] [म.गोडे]

मोलउ पडावा. आंखनो डोळो (सं.गोलक)

गोलंड उक्तिर. गोलो, विधवानो जारज पुत्र (सं.गोलकः)

गोतओ जुओ पर गोलओ

मोलणी कृष्णवा. प्राचीका. ललिरा.

गोवालणी, गोपी (सं.गोपाल परथी)

गोलांटां प्रेमाका. गलोटियां, गुलांट दि. गलत्थिअ]

गोलि नरप(द). (महीनी) गोळी; जुओ गोरस गोली

***गोली, गोहली** *पंचवा.* गूहली, एक प्रकारनी तान्त्रिक आकृति

गोलीडां, गोळीडां *दशस्कं(२). प्रेमाका.* रवैया, वलोणां

गोल्ड आरारा. टिंडोरुं (दे.)

गोल्ही *आरारा(व).* गिलोडां, टिंडोळानो वेलो (दे.गोल्हा)

गोव- "प्राचीफा. [व्याकुल करे, कृश करे] [दे.गुव्व: रा.गोवणौ]

गोवळ वीसरा. गोकुळ गाम

गोवांवरे दशस्कं(१). प्रेमाका. गोंदरे, पादर-मां, भागोळे [सं.गोवृंद]

गोव्यंद प्राचीका. गोविंद

गोशपेच *प्रेमाका*. कानने ढांकी दे तेवुं (पाघडी के फेंटो) (फा.)

गोष्ट *प्रेमप.* गोष्ठि, वार्तालाप

गोष्ठ दशस्कं(१). प्रेमाका. वात्त (सं.गोष्ठि) गोष्ठा थडावा. गायोनो वाडो (सं.गोष्ठ)

गोसामी वीसरा. स्वामी, प्रियत्तम (सं.

गोस्वामिन्)

गोसीर्ष आरारा(व). गोरुचंदन, चंदननो एक प्रकार (सं.गोशीर्ष); जुओ गोरुचंदन

गोह, घोह आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. मदमो. घो (सं.गोघा)

गोहडिय प्राचीसं. घो (सं.गोधा) गोहर्य रुस्तसः धोर, कबर (फा.गुर के गोर) गोहली जुओ गोली गोहीरउ उक्तिर. घो (सं.गोधेरः) **गोहं, गोह् आरारा**. उक्तिर. घउं (सं.गोधूम) गौधेन दशस्कं(१). गोधन, गायोनुं धण **गौपद "**अखाका. गियना पगला जेवडुं, नानकड्ं] सि.गोष्पदी **गौरी, गवरी अखाका. सिंहा(शा)**. गाय **गौव** *आरारा*. गाय (सं.गीः) **म्यउ** षष्टिप्र. गयेलो (सं.गतः) **ग्यस्तआपंण** मदमो. गरवापण् **म्यस्त्रो** कस्तुवा. गरवो [सं.गुरुक] **ग्रत** नंदव. मदमो. घृत, [घी] प्रव मोसाच. गर्थ, संपत्ति, धन प्रथल जुओ गृथल ग्रधनी मदमो. गर्दभी, [गधेडी] ग्रभ *चंद्रवा*. गर्भ प्रभवेदना चतुचा. गर्भवेदना. गिर्भमां आववानी, जन्म लेवानी वेदना ***प्रव. ग्रभ** *प्राचीका*. गर्भ **प्रशामांहि** नलाख्या. ग्रस्थो [– गळी गयो] तेटलामां **प्रहण** विकरा. षष्टिप्र. घराणुं, गीरो (सं.); जुओ गरेणे, गेहण **ब्रहणा** *आरारा*. आभूषण (दे.गहणय; हिं. गहना) [सं.ग्रहण] [रा.]; जुओ ग्रहिणु **प्रहिणु** *सिंहा(म)*. घरेणुं, दागीनो (दे. गहणय); जुओ ग्रहणा

ग्रहेश *प्रेमाका*. सूर्य **प्रंथ** *आरारा*. बांधेलं, बांधीने [सं.] **ग्राम** *आरारा.* समूह (सं.) **ग्रास** *गुर्जरा. विमप्र.* गरास, जमीन वगेरेनो भोगवटो, भाग, हिस्सो (सं.); *नरका*. कोळियो **प्रास्त्रं** *दशस्कं(१). दशस्कं(२)*. प्रसत्रं, [गळवुं]; *०प्रेमाका*. खावुं **ग्रासीआ** *विमप्र*. गराशिया, जागीरदार **प्राह** *प्रेमाका.* मगर [सं.] ग्रिहिवानि *नलाख्या*. ग्रहवाने, पकडवाने ग्रेह दशस्कं(१). प्रेमाका. गृह, घर; अखाका. घर, (घरबार) **प्रैवेक** *प्राचीफा*. ए नामनुं देवविमान (सं. ग्रैवेयक) **म्बाल** *गुर्जरा. विराप*. गोवाळ (हिं.; सं. गोपाल) **खालणी** प्रेमप, गोवालणी **ग्वालेर** उक्तिर. वीसरा. ग्वालियर (सं. गोपालगिरि) **षइरि** विक्ररा. घरे [सं.गृह] **धइसइं** अंबरा. घेंसथी **घउंला प्रेमाका.** एक जातनो सुगंधी पदार्थ

घउला प्रेमाका. एक जातनी सुगधी पदार्थ घग्धरि प्राचीफा. घूघरी (सं.घर्घरी) घघरणुं प्रेमाका. नातरुं, [अन्यत्रथी छूटी थयेली स्त्री साथेनुं लग्न] घट अखाका. चित्तसं. दशस्कं(१). दशस्कं(२). वीसरा. शरीर; चित्तसं. पात्र; प्रेमप. घडो (सं.)

प्रहिस्त *प्रेमाका*. गृहस्य

घटइ उक्तिर. वीसरा. बने (सं.घटयति); गुर्जरा. शक्य – संभवित होय **घट-जुअल** शंगामं. घटयुगल, [बे घडा] **घटपट** *गुर्जरा.* खडखडाट, (रवानुकारी शब्द) **घट पडी** चित्तसं. बंधार्ड ? **घट-पुत्र** शंगामं. अगत्स्य **घणेरडउ** नलरा. वधारे (सं.घनतर) घटमट, घटमटच कादं(शा). गडमथल; चित्तमं, चित्तमां चालता विचारो, विकल्पो घटमठ, घटमढ " अखाका. [घडो अने ओरडो वगेरे, (लक्षणाधी) भौतिक जगती **घटमान** *आनंस्त*. घटित. योग्य **घटमां विचारतुं** *दशस्कं(१).* पंडे विचारतुं, पोते विचारवुं **घटिका. घडी प्रेमाका**. चोवीस मिनिटनो समय [सं.] **घटोरा** *आरारा(व)*. गट-बोरडी, घटबोरडी (सं.घुट्टा, घोट्टा) ? ***घट्टि (थट्टि)** *ऐतिका*. ठाठ, [सम्ह्र] षड कस्तुवा. नलरा. नंदब. सिंहा(शा). गढ. किल्लो षड *गुर्जरा. [टोळी, समुदाय] [सं.घटा] **घडणुं** *षडाबा.* घडवुं ते (सं.घटनम्) **घडनाल** शुंगामं. गरनाळा **घडला** *आरारा*. घडा सिं.घटो **घडवी** सिंहा(शा). गढवी **घडांमंची, घडामांची** उक्तिर, पाणीनो घडो राखवानी घोडी (सं.घटमंचिका) षडियड षडाबा. घडी -- सभयनुं माप --

ते दरम्यान (सं.घटिका) घडिया (घडिया जोयणी) यडावा. एक घडीमां एक जोजन [- तेर किलोमिटर] कापती घडियालउ, घडियालुं अखाका. उक्तिर. चंद्रवा. प्रेमाका. समय सूचववा अमुक अंतरे वागती झालर, सपाट घंट **मडी** *आरारा*: घडी वार, [धोडी वार]; जुओ घटिका **घडीआल** *लावल.* घंडियाळूं, [समय दर्शाववा वगाडवामां आवती झालर; जुओ आल] घडीयाल सिंहा(शा). कांसानी गोळ सपाट घंट. झालर **घडुउ** *गुर्जरा.* भीमपुत्र घडोत्कच **घण** * नलरा. षडाबा. मोटो हथोडो; गुर्जरा. *तेरका.* वादळ (सं.धन); *आनंस्त*. आरारा. उक्तिर, तेरका. नेमिछं. लावल. घणुं, गाढुं (स.घन) **धण** *अखेगी.* काष्ठनो कीडो (सं.ध्ण) **धणतर** *ऐतिका*. घणां *वाजां. घिणी शरणाईओ, गाढी वागती शरणाईी **घणदीहं** *उक्तिर*. घणा दिवसन्, पुराणूं **घणनामी** *अखाका*. घणां नामवाळो **घण-मुली** कस्तुवा. घणो मूल्यवान **घणवास** विक्ररा. घणां सुगंधीदार धणहठी विमप्र. घणे हठे, हठपूर्वक **घणाला** *नेमिछं*. घणा, पुष्कळ **घणी (पंनर घणी)** मदमो. [पंदर] गणी **घणी परि** गुर्जरा. घणी रीते **घद्धा** *उपबा*. गधेडा, [मूखी (सं.गर्दभ)

धन आरारा. वादक; कादं(ध्र). कादं(शा).

घणुं (सं.)

घनसार अखेगी. आरारा(व). शृंगामं. कपूर, कपूरनुं झाड (सं.)

*धनंतर [*अनंतर] अभिक्र. *वधारे घन, *धणुं भयंकर, [*तरत ज]

घवक- *प्राचीसं.* गंध फेलाववी ? [*दे. घवधव]

घय *आरारा. प्राचीसं.* घी (सं.घृत) **घरक-** नलरा. घूरकवुं (दे.घुरुक्क)

घरकज *आरारा*. घरनां कामकाज

घर-घरणी अभिक. प्राचीसं. विमप्र. घर-धणियाणी (सं.गृह+गृहिणी)

घर घात्युं *प्रेमाका.* घर पायमाल कर्युं, नाश कर्यों; जुओ घातइ

घर घाल्युं दशस्कं(१). प्रेमाका. घर पायमाल कर्युं, नुकसान कर्युं

घरट उक्तिर. घंटलो (सं.घरट्टः)

घरटी उक्तिर. षडाबा. घंटी (सं.घरट्ट)

घरट्ट, घरट्ट अंबरा. उक्तिर. प्राचीसं. घंटी (सं.)

घरडे *अखाका. [घसे, वलूरे]

षर्राण, घरणी आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. लावल. गृहिणी, पत्नी

घरत जुओ गरत

घरबारि, घरबारी *गुर्जरा. लावल.* घरना ंद्वारे [सं.गृहद्वारि]

घर बेसबुं *प्रेमाका*. [घर] पायमाल थवुं **घरमइ** *आरारा*. गरभी, घाम [सं.घर्म] **घरमाटी** विमप्र. [घरनो मर्द – पुरुष], पति **धर-रातुं** *नरका.* घरमां रक्त – डूबेलुं, [घर-ना अनुरागवातुं]

घर वसइ *आरारा*. घर वसाय, नुकसान थाय

घर-सारू आरारा. घरने अनुसार, अनुरूप, शोभतुं; जुओ सारू

घरसुत्र, घरसूत, घरसूत्र चंद्रवा. दशस्कं(१). प्राचीफा. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा). घरनो वहेवार, घरसंसार (सं.गृहसूत्र)

भरंण मदमो. ग्रहण, [एक ग्रह बीजायी गळाय ते]

घरांणुं वेताप. धरेणुं [सं.ग्रहणक]

घरि आनंस्त. घर

घरिसूत्तु (घरि सूत्तु) *गुर्जरा. [(राजाने) घेर सारिथ]

घरिसूत्र गुर्जरा. घरनी व्यवस्था (सं.गृहसूत्र) **घरुणी, घरूणी** *दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका.* मदमो. गृहिणी, पत्नी

घरेणे कामा(शा). गीरवे [सं.ग्रहणक; दे. गहण]

वर्मबाधा आरारा. गरमीथी पडती मुश्केली [सं.]

धरःत *प्राचीसं*. प्रभूत, पुष्कळ

घलःवइ *उक्तिर*. फेंकावे, नखावे

घल्लइ *गुर्जरा.* घाले, नाखे [दे.घल्ल]

घली लावल. [घलायेली], डूबेली

घस- *वीसरा.* घसावुं, नष्ट थवुं (सं.घृष्) **घस्त** *प्राचीफा.* गृहस्थ

परसः प्राथाकाः गृहस्य • ३० -----

षंघोतियां *अखेगी.* नानां घर [दे.घंघ+उल्ल]

घंटवल्य *नरप. [घांटरवाल, जंतर]; जुओ घांटलवाल

घंटोरणि *आरारा(व).* घूघरो (सं.घंटारवा) ? **घाइ** *गुर्जरा. प्राचीफा. हरिख्या.* उतावळ [दे.घति]; जुओ घायिंसउं

षाइ जिनरा. विराप. घा (सं.घात)

घाइ (*पणघाड) पराघाड । *जिनरा. पिराघात. नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदयथी सामा पर विजय मळे] [जै.]

षाइत *विमप्र. [मोको, लाग] [रा.घात]; जुओ घात घाले

षाउ वीसरा. घा; गुर्जरा. हत्या (सं.घात) **षाघर नवी** उक्तिर. घर्घरिका, गोग्रा नदी षाघरि, षाघरिय, षाघरी *उक्तिर. तेरका. प्राचीसं*. घूघरी (सं.पर्धरिका)

षाधली नरपः विह्नळ दि.धंधलियाः जुओ घांघली

घाट *जिनरा*. न्यून, [ओछी] [हिं.]

धाट प्रेमाका. हालत, स्थिति; योजना, युक्ति

षाट उषाह. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं, प्रेमाका, विक्ररा, घाटडी, स्त्री-ओनुं रेशमी वस्त्र; रातुं वस्त्र; *चारफा*. *घाटडी, *लाल रंगनी बांधणीनी भातनी चूंदडी, [*चिंगयों] (दे.घट्ट)

षाट अखाछ. [घडेली वस्तु], घरेणूं **घाट** नलरा. नलाख्या. वीसरा. पहाडी मार्ग. खीणनो मार्ग (सं.घट्ट); चतुचा. स्थळ, *नेमिछं.* *रस्ता, *सीमाडा, स्थान: [*प्रदेश]

घाट (घाट घाली) *नरका-२. [लागमां घाडी नरप(द). गाढ, घनिष्ठ

लई]; जुओ घाली

घाट चाले *चित्तमं*, नीवडे

घाटडी गुर्जरा. लावल. लाल बांघणीनी ओढणी दि.घट्टी

घाट बेसे अखाका. चित्तसं. मनमां घड बेसे, समजाय, मेळ बेसे

षाटरवाल्य *नरप. [जंतर]; जुओ घांटल-

"षाटा [घाठा] "*गुर्जरा*. [छेतराया, जिताया, हायी; *अखाछ. [धूर्त, शठ]; जुओ घाठउ, गाठा

बाटी *मोसाच*. गाढी, वधारे

घादु जुओ घाह

घाटे घात्य चित्तसं. समजणमां नाख, समजाव **घाटे घाले, घाटचे घाले** अखाका. बराबर

समजी शके, स्वीकारे; चित्तसं. समजमां नाख, समजाव: समजमां नाख, समज

घाटउ प्राचीसं. *विराप. छेतरायो. जितायो. हार्यो]; नेमिछं, *नुकसान पान्यो, [छेतरायो]; नरका. घसाई गयो (सं.घृष्ट)

घाटऊउ *नलरा.* गठियो, छितरनार]

घाटा जुओ घाटा

षादुओं *प्रेमाका*. गठियो, छेतरनारो

षादुं *नरका.* गादुं, गाढ संबंध; *प्रेमाका*. [गाद्वी, मुश्केल, कठण

धाड अभिक. गाढ, [दुर्गम]

घांडि सईनी [घांडि सईनी] *ऋषिरा. दिरजीओनी धाड, आक्रमण (जे निष्फळ होय छे)

घाणु *पडाबा*. घाणो, तळवा माटे एक साथे नाखवामां आवतो जथ्यो; *नेमिछं*. *पडाबा*. घाणी

घात *प्रेमाका.* घा; अखाका. वेताप. शीलक. मोत, हत्या (सं.घाति)

धात प्रेमाका. *श्रंगामं. रीत

षातइ उक्तिर. उपबा. कादं(ध्रु). जिनरा. दशस्कं(२). नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा. षष्टिप्र. घाले, नाखे (दे.घत्त); जुओ घर घार्सुं

घातकू उक्तिर. घातकी, हत्यारी (सं.घातुकः) **घात घाले "**अखाका. [कार्यसिद्धिनो मोको मेळवे, लाग ले] [रा.; हिं.]; जुओ घाइत **घातण** *ऐतिका*. नाखवुं ते

षाति-करम देवरा. आत्माना स्वाभाविक गुणोनो घात करनारां कर्मो [जै.]

घाती *प्रेमाका*. घातक, हिंसक, कपटी [सं. घातिन]

धाती *आरारा. नेमिछं*. घाली, नाखी (दे.घत्त) **धातीकर्म** *आनंस्त. ऋषिरा.* आत्माना गुणोनो नाश करनार कर्म[बंधन] [जै.]

धात्य चित्तसं. धाल, नाख [दे.धत्त]

धाय *उपवा. गुर्जरा. तेरका. घा, प्रहार (सं.घात)

षायक अ<u>खाछ. चित्तसं.</u> घातक, [नुकसान करनार]

मायड, घाहड वेताप. सिंहा(शा). बलिष्ठ, शूरवीर; [प्रबळ, भारे, विकट]; शूरत्व; जोस

घायिंसउं *उक्तिर*. उतावळे; जुओ घाइ, घांइसिंऊं **घायो** अखाका. घायल थयेलो, [-थी टेवायेलो, रसियो]

धार सिंहा(शा). घारण, [धोरवुं ते]

घारडां *षडाबा.* एक मीठाई, घारी (दे.घारंट, घारिया)

घारण "प्रेमाका. [धेन]

षारिज, धार्यज अंबरा. आनंस्त. ऋषिरा. नलरा. प्राचीसं. -नुं घारण – घेन चडेलुं होय एवो, -थी घेरायेलो, मस्त; गुर्जरा. मदमस्त, मदीलो (सं.घारित) दि. घारिख]; जुओ विषधारिय

षार्यां जुओ धार्यां **धाल** *प्रेमाका***. जमवा बेठेलाओनी** पंगत

घालइ (विसारी धालइ) जिनरा. [विसारी] नाखे

षालि अभिक्तः घालीने, [परोवीने] (दे.घ्रष्ट्र) षालिष उक्तिरः फेंक्युं, नाख्युं, राख्युं (दे.घ्रष्ट्र) षाली (घाट षाली) "नरका-२. [लागमां लई]; जुओ घाट

धासइ *जिनरा.* घसाय; *नेमिछं.* घसाय, [धसारो – नुकसान वेठे] (सं.धृष्)

घाहड *सिंहा (शा)*. जुओ घायड **घाहाढे** चतुचा. गाढे, [अत्यंत]

"घाढु [घादु] गुर्जरा. [दळ], सैन्य [रा.]

घाहो कस्तुवा. चतुचा. गाथा

घांइसिकं विक्ररा. उतावके; जुओ घायिसउं घांघ चित्तसं. गभरामणः अखाका. गभराटः

[(आकाशनुं) घनघोरपणुं] दि.घंघ**ल**]

चांचली नरका. गभरायेली, विह्नळ [दे. धंघलिअ]; जुओ घाचली

धांचण *गुर्जरा. [घसडवुं, कचडवुं ते] [दे. घञ्चणी **बांट** *उक्तिर. उपबा*. घंट (सं.घंटा) **घांटलवाल ***नरका. [जंतर]; जुओ घंट-वल्य, घाटरवाल्य **घांटली** उपना घंटडी षांटी अखाका. पर्वत वद्येनो सांकडो रस्तो **घांटी** उक्तिर. पडजीभ (सं.घंटिका) **घिर** कादं(शा). नलाख्या. घर (सं.गृह) **थिरई** जिनरा. पाछा फरे [रा.] विर्य प्राचीका. घरमां (सं.गृहे) **घिति** उक्तिर. [*घीस, *खांचो] (सं.घृष्टि) **घिंदिणि** *प्राचीसं*. रास-नृत्य-विशेष **धीई** *उषाह.* घी (सं.घृत) **धीउ** उक्तिर, घी (सं.घृत) **धीरत** कामा(शा). धी [सं.घृत] **धीवेलि** उक्तिर. घिमेल, कीडीमंकोडाना प्रकारनुं लाल जंतू **धीसरुं** प्रेमाका. वजन खेंचवा माटेनुं बळदथी चालतुं पैडां वगरनुं एक साधन **घीहटी** विमप्र. घीनी दुकानो, घीनां हाट, [धीबजार] **धुग्धर, धूग्धर** नेमिछं. घूधरी, [नानी घंटडीओ] (सं.घुर्घुरी) **ष्टुग्धुर** गुर्जरा. घूघरा (सं.धर्घर) **घुघरातुं** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* गुस्साथी मोढ़ं फुलाववु **युटण** दशस्कं(२). घोडानी एक जात

आंधी **युरइ** *आरारा. ऐतिका.* धमधमे, वागे **ष्ट्रराया** *ऐतिका.* वगाड्या, घिमघमाव्या] **धुलर** वेताप. गूलर, ऊमरो **मुलरउं** *ऐतिरा*. हारडो, [बाळकोनुं एक कंठ-आभूषण] **मुसण, मुसिण** प्राचीसं. केसर, कुंकुम ए सुगंधित द्रव्य (सं.घुसुण) **ष्टुंगा** गुर्जरा. खसूचक शब्द **बुंटीइ** * गुर्जरा. विराप. घूंटीए, [घसीए, चोपडीए] (सं.धृष्ट) **धूक** ऋषिरा. घुवड (सं.) **मृग्धर** जुओ घुग्धर **मूघटिउ** *उक्तिर*. घूंघटो, घूमटो **षूघरी** अखाछ. बाफेली जारबाजरी नी वानगी ष्युरुष उक्तिर. घूघरो (सं.युर्घरकः) **मृध्री** उक्तिर. घृघरी (सं.घूर्ध्रिका) **षूषू** *उक्तिर.* घुवड (सं.घूकः) **मूचूड़** ऋषिरा. घूघवे, [घोर अवाज करे] **मूट, मूंट** प्रेमाका. *घूंटायेला, *कसायेला, [घोडानो एक प्रकार] **मृतकार नलरा**. घुवडनो अवाज **यूनकार** दशस्कं(२). घमकार **यूमंइ** *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* *घोरे, [झोकां खाय] दि.घुम्म] **यूमण घाले** नरका. हींचोळे भूमणी प्रेमाका. घुमरडी, फुदरडी [दे.घुम्म] **मूलर** *प्रेमाका***. ऊमरानुं वृक्ष, [गूलर] पूंट** जुओ घूट

घुडुकड़ प्राचीसं. गर्जे (दे.)

"धुमारण [धुमरण] "ग्रेमाका. [धूळनी

पूंट *आरारा(व)*. वृक्षविशेष (हिं.; सं.घोंटा); गटबोरडी ? षूंटच उक्तिर. रगडो (*सं.घट्टक) **घृतपूर** *आरारा.* घेबर [सं.] **घेउर** *प्राचीसं*. घेबर (दे.) [सं.घृतपूर] **घेघाट** *मदमो*. आनंद (अप.गहगह+आट) घेयंवर सिंहा(शा). हाथी; जुओ घेंमर **घेर** कामा(त्रि). प्रेमाका. धेरुं (सं.गभीर) **घेर** सिंहा(शा). घेरीने घेरण *अखाका. [धारण, ऊंघ, घेन] **घेर्य रहे** चित्तसं समजणनी स्थितिमां रहे **घेहली** चतुचा. घेली [सं.ग्रह+इल] **धेंमर** *सिंहा(शा),* हाथी (सं.गजवर) घोडाहाँडे उक्तिर. घोडार, अश्वशाळा घोडिलंड वीसरा, अश्विनी नक्षत्र (सं.घोट+ डल्ल) **घोरोपसर्ग** ऋषिरा, देव, दानव के मानवकृत कठोर विघन, आपदा [सं.] **घोल** ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. देवरा.

षोल ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. देवरा. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. दहींनुं घोळवुं, [वलोवेलुं दहीं]; वसंफा. वसंवि(ब्रा). विमप्र. षडाबा. [कोई पण प्रकारनुं] घोळवुं, [रगडो, घट्ट प्रवाहीं] (सं.) घोलण गुर्जरा. घूमडवुं ते, [मर्दन करवुं,

षोलिर शृंगामं. चकळवकळ [दे.] षोळी *नरका. [ओळघोळ करी, ओवारी] [सं.घोल]

षोळी जाउं नरका. वारी जाउं **षोलीडां** *नरका*. वलोणां, रवैया; जुओ गोलीडां

घोळीश नरका. घुमावीश

घोश, घोष दशस्क (१). प्रेमाका. (घोडानो)
वाडो, घोडार (सं.घोष्)

घोष कादं (शा). अवाज; नेसडो, [गायोनो
वाडो] (सं.)
घोषविउ उपवा. जाहेर कर्युं (सं.घोष्)
घोसइ उक्तिर. जाहेर करे (सं.घोषति)
घोह जुओ गोह
घाइच उक्तिर. सूंघ्युं (सं.घा-)

-च,-चइ,-चज,-ची,-चु प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). -नुं, संबंध विभक्तिनो प्रत्यय (सं.त्यक, प्रा.चअ); जुओ हदय-चइ

चड जिनरा. तेरका. चार (सं.चतुर्)

चउक गुर्जरा. प्राचीफा. साथियो (सं. चतुष्क); जुओ चुक

चउकडी *लावल*. लोक, [भुवन] [तुच्छ-कारमां] (सं.चतुष्कां)

चउकीषदु उक्तिर. बाजोठ, बेसवानी पाट (सं.चतुष्कपट्टः)

चउखंडी नेमिछं. लावल. चोखंडी, [चार बाजुवाळी) (सं.चतुष्खंड); [*चार बाजुवाळी देवडी प्रकारनी रचना]; वीसरा. एक स्थापत्यरचना, [देवडी प्रकारनी]

चउगष्टि उक्तिर. चोकठुं, {बारीबारणानो के बीजो कोई, लाकडां सालवी करेलो चोखंडो घाट] (सं.चतुष्ककाष्टिका)

रगडवं ते]

चउगित *आनंस्त*. नरक, तिर्यंच, मनुष्य अने देव ए चार गति, [जीवयोनि] [सं.चतु:+गति]

चउगुणउ उक्तिर. चोगणुं (सं.चतुर्गुणम्)

चउग्गइ *षष्टिप्र*. देव, मानव, नरक अने तिर्यंच ए प्रमाणे चार प्रकारनी गति, [जीवयोनि] (सं.चतुर्गति)

चउघडिउ उक्तिर. चोघडियुं (सं.चतु-र्घटिकम्)

चउडचपट प्रद्युचु. सफाचट [दे.चपडय]

चउडोत्तरसउ *उक्तिर*. एकसो चार (सं. चतुरुत्तरं शतम्)

चउतरइ जिनरा. चोतरे

चउतालिस *षडाबा.* चुमालीस (सं.चतुः +चत्वारिंशत्)

चउत्थ, चउष उपबा. नलरा. (चोथे टंके जमाय तेवो, त्रण टंकनो एटले) एक दिवसनो उपवास (सं.चतुर्थ)

चउत्रीस *उक्तिर. षडावा.* चोत्रीस (सं. चतुस्त्रिंशत्)

चउष जुओ चउत्थ

चउथउ, चूथउ उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नलरा. षडाबा. चोथुं (सं.चतुर्थकः)

चर्जाव जित्तर. वीसरा. चोथ (सं.चतुर्थी)

चउद उक्तिर. चौद (सं.चतुर्दश)

चउदइ गुर्जरा. चौदेय

चउदिस *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा.* चौदश (सं.चतुर्दशी)

चउनाणी *आरारा. जिनरा.* चार प्रकारना ज्ञानवाळा (सं.चतुर्ज्ञानी) चउपड उक्तिर. चोपगुं (सं.चतुष्पदम्) चउपखेर विक्ररा. चारे बाजु [सं.चतुः+ पक्ष]; जुओ चुपखेर

चजपट प्रद्युचु. चोगान [जेवुं साफ], [खेदानमेदान, विनष्ट]; चारफा. *चारे बाजुथी, [संपूर्ण नाश पामे एवी रीते]; लावल. मोटुं; [संपूर्ण; संपूर्णपणे]; [रव-सूचक शब्द]; जुओ चुपट

चउपत उपना. चोपगुं (सं.चतुष्पद) चउपन उक्तिर. चोपन (सं.चतुष्पंचाशत्) चउपनमइ ऐतिरा. चोपनमे

चउपञ्चह नेमिछं. चोपन

चउपर्वी *ऐतिका.* चार पर्वतिथी

चउबारउ * वीसरा. [अगाशी परनी चारे बाजु खुछी स्थापत्यरचना, *ग्रीष्मभवन] (सं. चतुर्द्धार-); ऋषिरा. चार बाजु बारणां-वाळो; जुओ चौवार

चउमालीस उक्तिर. चुमालीस (सं.चतुश्चत्वा-रिशत्)

चउमासउ उक्तिर. उपबा. तेरका. नेमिछं. प्राचीका. प्राचीसं. लावल. षडाबा. चोमासुं, [जैन मुनिओने एक स्थळे रहेवानो समय] (सं.चतुर्मासकम्)

चउमुख *प्राचीफा.* चारे बाजु मुखवाळुं, चारे बाजु दरवाजावाळुं (सं.चतुर्मुख)

चउमुखतारुषु यडाबा. चार मुखवाळुं स्वप चउ-मुढि नेमिछं. चार मुखे

चउरउ *वीसरा. [चोरो, खुझो चोतरो, सभास्थान] (सं.चतुर-) दि.चउरय]

चउरसङ उक्तिर. [*पथ्थरनो चोरस दुकडो]

(सं.चतुरसः)

चउराणू उक्तिर. चोराणुं (सं.चतुर्नवति) चउरासी उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. रूपच. षडाबा. चोर्यासी (सं.चतुरशीति)

चउरासी चउनीसी लावल. [तीर्थंकरोनी] चोरासी चोवीसी [थाय एटलो समय], [अत्यंत दीर्घ काळ]

चउरासीयड वीसरा. *प्रादेशिक [चीरासी गामना] अधिपति; [*चोरासी नातनो ब्राह्मणसमुदाय]

चर्जारेय तेरका. [लग्नमंडपनी] चोरी (सं. *चतुरिका) [सं.चत्वरिका]

चर्डारेंदि, चर्डारेंदी आनंस्त. जिनसा. स्पर्श, रसना, घ्राण अने चक्षु ए चार इंद्रियवाळा जीवो [सं.चतुरिन्द्रिय]

चउरी, चउंरी आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. वीसरा. चोरी, लग्न-मंडपमां चार खूणे थती वासणोनी उतरेडनी गोठवणीवाळुं लग्नस्थान (दे.)

चउलइ आरारा. चोळाथी

चउवट्ट विकरा. चौटुं, [चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळ] [सं.चर्तुहट्टक]

***चउवडी (चडवडी)** **विमप्र.* [झडपथी]

चउषाह प्राचीसं. चोपास, [प्रचुरपणे, अत्यंत] (*सं. चतुःपार्श्वम्)

चउविह, चउविहि आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. चतुर्विध, चार प्रकारनो

च्छविहार *उपबा. [चोविहार, चार प्रकारना आहारनो त्याग] [सं.चतुर्व्याहार]

चजिरिह जुओ चउविह

चउवीस उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा. चोवीस

(सं.चतुर्विंशति)

चउवीसीइं *उपवा. [चोवीस तीर्थंकरना काळ दरम्यान] [सं.चतुर्विंशतिका]

चउसिंद्रि, चउसिंठ आरारा. उक्तिर. ऐतिका. लावल. षडावा. चोसठ (सं. चतुःषष्टि)

चउसाल आरारा. "ऐतिका. "जिनरा. नैमिछं. "विमप्र. विशाळ, विस्तृत, मोटुं, [खूब] (सं.चतुःशाला); जुओ चओसाल, चुसाल चउसालउ उक्तिर. चारे बाजु खुल्ली परसाळ-

वाळुं मकान (सं.चतुःशालम्)

चउहर्दुं रूपच. लावल. विमप्र. चौटुं, बजार (सं.चतुर्हट्क); जुओ चुहटुं

चउहत्तरि उक्तिर. चुंमोतेर (सं.चतुःसप्ततिः) चउहं दिसि षडाबा. चारे दिशामां (सं.चतुः+ दिशा)

चउंप *जिनरा. [चोंप, खंत, चीवट] चउंरी जुओ चउरी

चऊकी ऋषिरा. चार खूणावाळी चोकी, [नानो चोक - सभा-स्थाननो] (सं. चतुष्की)

चऊद *गुर्जरा*. चौद

चऊद-दहोत्तर गुर्जरा. चौदसो दश

वओसाल प्राचीफा. विशाळ (सं.चतुः-शाला); जुओ चउसांल

चक *प्रेमाका.* पड़दो

चकचूर *आरारा. प्रेमाका.* चूरेचूरा

क्कचूंब अखाछ. जंजावुं ते, [-मां आंधळा थई जवुं ते, अंधता, जडता]

चकचोता नरका. मस्ती, आनंद, [क्रीडा]

[π.]

चकडोल प्राचीफा. संकल्प-विकल्प, [मननी अस्थिरता, व्याकुळता] (सं.चक्रदोला) चकिति अभिक्त. लडशे, [सामसामे आवशे] चिकिष्ठिक कादं(शा). वैद्य (सं.चिकित्सक) चिकित आरारा. भयकंपित, गभरायेली (सं.) चकित वेताप. चिकित्सा चक्रघरो ऐतिका. चक्रघर, चक्रवर्ती राजा चक्रवई अंबरा.चक्रवर्ती, [सम्राट] [सं.चक्र-पति]

चक्कपट्टि गुर्जरा. चक्रवर्ती
चक्कपृति गुर्जरा. चक्रवर्ती
चक्कु जुओ वक्कु
चक्क्षु आनंस्त. चक्षु
चक्कप्र उक्तिर. चिक्रत

बधेी

चक्रचाल उषाह. चिन्ता, [व्याकुळता] चक्ष अखाका. चित्तसं. प्रेमाका. चक्षु चक्षु भरनां प्रेमाका. आंसुथी आंख भरवी, रुदन करवं

चखार *प्रेमाका. विमप्र.* घुतारा; जुओ चोर-चिखार

चगचगतां कादं(घ्र). कादं(शा). चकचक करतां, चीं चीं करतां

च्चपट, चचपट्ट गुर्जरा. *लावल. तालध्वनि माटेनो रवानुकारी शब्द च्यूकडइ आरारा. चांच बोळवा जतां

च्हार विकरा. चाचर, चोगान [सं.चत्वर] चट ग्रेमाका. श्राद्धमां देवने स्थाने मुकाती गांठ वाळेली दर्भनी सळी चट प्रेमाका. हठ, जीद, [आदत] चटक षडाबा. चकली (सं.)

चटक *प्रेमाका*. उश्केराटनी लागणी, [चानक]; अखाका. लालसा, झंखना

चटकनी भटक *प्रेमाका.* चटकानी [डंख लागवानी] भडक, बीक

चटको नरका. *आंखमां वसी जाय एवी शोमा, [तगनी, मोह]

चटडा जिनरा. प्राचीफा. विद्यार्थीओ [दे. चट्ट]

चटपट अखाका. प्रेमाका. झटपट, जलदी, [एकाएक]

चर्रु गुर्जरा. विद्यार्थी (दे.)

चडकली *दशस्कं(२).* चरकली, चकली [सं.चटक]

चडकी कर्पूमं. [चडवुं ते], सवारी [हिं. चड्ढी]

चडचड*" नेमिछं*. [चडचड एवो अवाज करतुं, करकरुं]

चडबडाबउ *षडाबा.* ठपको आपो (सं. चटपटति) [दे.चडफ्फड]

चडवड, चडवडी लावल. [चटपटीथी], उत्साहथी, [आतुरताथी], झडपथी (दे. चडपट); जुओ चउवडी

चडवाईजिनी षष्टिप्र. चढवानी

चडावक्कि *प्राचीसं.* चन्द्रावती चडि-उत्तरिय *तेरका. प्राचीसं.* वडचड, उक्ति-

प्रत्युक्ति (दे.चड+सं.उत्तर) **चडी** *आरारा*. चिडी. प**क्षी**

चणउ उक्तिर. चणो (सं.चणक) **चणक** *षडाबा*. चणा (सं.) चल काजि *ऐतिरा.* [चणवा], वीणी खावा चणहडी उक्तिर. [*कोई प्राणीनाम] (सं. चणकवर्तकः) चिणयारां प्रेमाका. जे खाडामां टेकावाथी बारणूं फरे छे ते **चणारो "**प्रेमाका. [चण] **चिंगसूत** *प्राचीका.* चिंगकनो पुत्र, चांणक्य चतुरवंति नलरा. चतुर [सं.चातुर्यवंती] **चतुरसुजांण** कामा(शा). चतुर अने समजु – ज्ञानी **चतरंग** ऋषिरा, चार अंगवाळी (सेना) **चतुरंगिणी** *प्रेमाका*. चार अंगवाळी (सेना) चतुरंगी *वीसरा. [संदर अंगोवाळी] प्रा. चउर/चत्र+अंग्रो चतुरातः प्राचीकाः प्रेमपः चतुराई **चतुरिम, चतुरिमा** प्राचीफा. शंगामं. चतुराई (सं.) चतुष्ट (दुष्ट चतुष्ट) ग्रेमाका. चारनो समूह, चिंडाळ चोकडी **क्तारिसई** *षडाबा*. चारसो (सं.चत्वारि शतानि) **चित** गुर्जरा. चित्तमां चतुचपाट *दशस्कं(१).* चतुपाट चत्रक कामा(शा). चातक चत्रुभुज दशस्कं(१). चतुर्भुज चत्रुवाक नंदव. चक्रवाक चन्द्रोदय जिनराः चंदरवी [सं.] **चपलक** *षडाबा*. चोळा

चपला *गदमो*. वीजळी (सं.) **चपेट** गुर्जरा. तमाचो (सं.) **चवक** प्रेमाका. [चप करीने], झडपथी चबका *उषाह. [काप, घा]; जुओ चमक्कउ चबोला कामा(त्रि). ठपकानां वचन, [महेणां, चाबखा]; जुओ चोबोला **चमक** *चित्तसं.* प्रकाश; "प्रेमाका. चिंक, धासको सिं.चमक- परथी चमकउ लावल. [चमकवुं ते, चोंकवुं ते], आश्चर्य [सं.चमत्क-] चमकीअलि विमप्र. चमक्या, भिय पान्या] [सं.चमत्कृत] चमकाउ प्राचीसं. डंख, [चबको]; जुओ चबका चमन अखाका. बगीची (फा.) चमर आनंस्त. तेरका. नलरा. लावल. चामर **चमरात** *नलरा*. चामरो चय- प्राचीसं. छोडवं, त्याग करवो (दे.) चर *आराराः [दूत, सेवक]; गुर्जराः विरापः (सं.); *मोसाच. हरिख्या.* [अनुचर], सेवक चरड उक्तिर. चरवुं ते (सं.चर्) चरकतुं नरका. प्रेमाका. चकलुं (पक्षी) चरचे उक्तिर. नरका. प्रेमाका. वीसरा. शंगामं. लेप करे, लगाडे, चोपडे (सं.चर्च) चरड गुर्जरा. जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. शीलक. श्रंगामं. चोर, लूंटारो (सं.चर+ ट) (दे.चरड); जुओ चोरचरड चरडाहंति *उषाह.* चिढाती. [अकळाती,

दुःखी थती]

चरण *हरिख्या*. डगलूं (सं.) चरण आराराः संयम, चारित्र (सं.) **चरणकज** *आनंस्त*. चरणपंकज, चरणकमळ (सं.)

चरण-करण आरारा. ऋषिरा. आचार अने क्रियाकांडनो परामर्श, संयमधर्मनी पृष्टि माटेनां नियमो, संयमना मूल अने उत्तरगुणो [जै.]

चरज-त्राण *नलाख्या. शंगामं*. मोजडी, पगरखुं (सं.)

चरणो चंद्रवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो. लावल. चणियो. घाघरो

नेमिछं. चरबोटउ एक प्राकृत छंद (प्रा.चरपट)

चरंट मदमो. छंदविशेष

चरंणा मदमो. चणिया

चरि आरारा. कथनी (सं.चरित)

चरिज नेमिछं. चरित्र [सं.चरित]

चरिय गुर्जरा. चरित्र, जीवनकथा (सं. चरित्र)

चरी अंबरा. आरारा. गुर्जरा. चरित, जीवन-कथनी

चरी *अखाका*. परहेजी [सं.चर्या]

चरीअइ "वसंफा. वसंवि. "वसंवि(ब्रा). चराय छे, भोगवाय छे (सं.चर्यते)

चरीइ *गुर्जरा*. चरित, जीवनकथा

चरीउ आरारा. गुर्जरा. चरित्र, जीवनकथनी (सं.चरित)

चरीत्र भदमो. पंचवा. कूट युक्ति; ठगारी वातोः कपट[भर्यं वर्तन] (सं.चरित्र)

च**रु** *गुर्जरा*, धननां पात्र (सं.) चरु हरिख्या, अग्निमां बलिदान आपवा रांधेलो भात (सं.)

चरे चित्तसं भक्षण करे

चर्म *अखाछ. चित्तसं.* [चामडानुं] शरीर; प्रेमाका. चामडानी बनावेली ढाल **चर्वडी** *प्रेमाका*. चडभडी, [गुस्से थईने]

चलचींत *गुर्जरा*. चंचळ चित्तवाळी

चलण कर्पूमं. गुर्जरा. तैरका. लावल. वसंफा. वसंवि. पग (सं.चरण)

चलणडे *लावल.* चरणमां, पगमां चलणवलण *अखाछ. अखेगी.* चालवंबळवं ते. हलनचलन. प्रवर्तनो

चलणी उक्तिर. कटिवस्त्र (सं.चलनी)

चलवर्डं *लावल*. चालवूं [सं.चालवूं]

चळवळे अखाछ. अखेगी. हालेचाले, [प्रवर्ते] चलाणड आरारा. चालवुं ते, प्रयाण (रा.)

चलाणां, चलाणी अभिक्र. वाटकी, वाटका

चलाविसु *आरारा.* रवाना करीशुं, मोकलीशुं

चली नेमिछं. चलित थई. हिलमली

चल् *उक्तिर. षष्टिप्र.* चळु, हथेळीभर पाणी; आरारा. नरप. लावल. विमप्र. चळू, जम्या पछी हथेळीमा पाणी लई मों चोख्खुं करवुं ते (सं.चुलुक)

चले चित्तसं, चळे, चलित थाय: वीसरा. चाले [सं.चल्]

चलेवळे *अखाछ*. चालेहाले, हिलचाल करे, [प्रवर्ते] [सं.चल्+वल्]

चल्लइ गुर्जरा. चाले; लावल. चाले, चलित थाय (सं.चल्यते)

चवरइ उक्तिर. चौद (सं.चतुर्दश)
चवला आरारा. उक्तिर. चोळा
चवतुं, च्यववुं *अखाका. प्राचीका. च्युत
थवुं, भ्रष्ट थवुं, आरारा. देवरा. प्राचीफा.
षडाबा. देवमांथी मनुष्य के तिर्यक्
अवतारमां जवुं, स्वर्गमांथी एडवुं (सं.
च्यवते)

चवबुं अखाका. अखाछ. प्राचीसं. कहेवुं, वर्णववुं (दे.चव-)

चवीयता *गुर्जरा.* स्वर्गमांथी पडेला (सं.च्यु परथी)

चवेड प्राचीसं. थपड, तमाचो (सं.चपेटा)

चहड् नलरा. इच्छे (दे.चाह्)

चहट "उषाह. [चोंटेला] (दे.चहुट्ट)

चिंह कर्पूमं. जिनरा. चेह, चिता, अग्नि चहुटउं, चुवटउं आरारा. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. विक्ररा. चौटुं, बजार (सं.चतुर्+ हट्ट)

चहुटइ नेमिचं. चौटामां, बजारमां चहुटा *शीलक. [चोंट्या] [दे.चहुट्ट] चहुडी, (चुहुडी) उषाह. चोडी, पहोळी, [विस्तृत]

चहुढीउ *लावल.* चोड्यो

चहु पाखलि जुओ पाखलि

चहुंटी उक्तिर. चूंटी, चीमटी [दे.चहुंतिया]

चहेन अखेगी. चिह्न

चहेरो *चतुचा*. बदनामी

षहोडी *आरारा*. चडावी; *वीसरा*. [पूजा] चडावी, अर्पी (रा.)

चंग दशस्कं(१) दशस्कं(२). प्रेमाका.

मोसाच. एक प्रकारनुं वाद्य [फा.] चंग अखाका. आरारा. ऐतिका. तेरका. नरका. नलरा. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. सुंदर, सरस (दे.)

चंगा गुर्जरा. नेमिछं. लावल. सुन्दर, सरस चंगिम, चंगिमा प्राचीसं. शृंगामं. सुन्दरता चंगी तावल. सुंदर

पंचल लावल. अश्व [सं.]

चंचंतु *वाग्भबा.* देदीप्यमान, प्रकाशमान [सं.चंच्]

चंड आरारा. खूब (सं.)

चंत अखेगी. चतुचा. चंद्रवा. प्रेमाका. चित्त

वंत मदमो. आश्रक, [स्वामी]

चंतनी चतुचा. चंद्रवा. दशस्कं(२). मदमो. चित्रिणी, सुंदरी, नारी; जुओ चिंतनी

चंतवे देवरा. चिंतवे, [विचारे]

चंता *देवरा*. चिंता

चंतामण *चंद्रवा.* चिंतामणि, [चिंतवेलुं आपे तेवो मणि]

चंद गुर्जरा. तेरका. नरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. चन्द्र

चंदण, चंदणु *गुर्जरा. तेरका*. चंदन चंदन गोड शीलक. *पाटला घो, [चंदन घो]

चंदन वाळवुं दशस्कं(१). जडमूळथी उखेडवुं, [घाण वाळवो, रगडो करी नाखवो] चंदनसीपा लावल. चंदनथी भरेली छीपो चंदनि (चंदनि देंहु) गुर्जरा. चांदनी (जेवो

शुभ्र देह) **चंदलड**ड *लावल*. चांझो चंदलावयणी *लावल*. चंद्रना जेवा वदनवाळी **चंदस्र** *नेमिछं. लावल.* चन्द्र अने सूर्य चंदाडम प्राचीसं, चन्द्रादित्य चंदाननी चारफा. चंद्रमुखी (सं.चंद्रानना) **चंदिम** *प्राचीसं*, चन्द्रिका चंदु शुंगामं. चंद्र चंदुआ *ऋषिरा.* चंदरवो [सं.चन्द्रोदय] चंदौड उक्तिर. चंदरवो (सं.चंद्रोदय) **चंद्रवा** *प्रेमाका***.** चंदरवा चंद्राअण मदमो. चांद्रायण [व्रत] **चंद्राउली *** *नेमिछं. लावल.* चंद्रावली. कृष्णनी एक राणी **चंद्रवा** *लावल*. चंदरवा चंद्रुउ कादं(शा). नरका. नलरा. विमप्र. चंदरवो [सं.चन्द्रोदय] चंद्रयं उक्तिर. चंदरवो (सं.चन्द्रोदय) चंद्रोदय जुओ चंद्रोदय चंद्रोय तेरका. चंदरवो (सं.चन्द्रातप, जै.सं. चन्द्रोपक) [सं.चन्द्रोदय] चंपड लावल. वीसरा. चांपे, दबावे दि.] चंपडविक्कि तेरका. चमेली (सं.चंपक+वल्ली) **चंपकवत्री** *गूर्जरा***. चंपकवर्णी चंपय** *प्राचीसं*. चंपक. चंपो चंपल प्राचीफा. चंपानी छोड (सं.चंपक) **चंपावजी**, *तेरका.* चंपावरणी (सं.चंपक-विप्रिका) **चंब** विमप्र. चामडी [सं.चमी चंबक ऋषिरा. लोहचुंबक (सं.चुम्बक)

चंबुकगिरि *चित्तसं*. लोहचुंबक धरावतो पर्वत **चंमकपांहांण** *मदमो*. लोहचूंबक **चाउ** प्रद्युचु. चाप, धनुष्य चाउआ *चतुचा. चिोवा, विविध गंध-द्रव्योधी बनावेलुं सुगंधित द्रव्य] **चाउचियाविउ** विमप्र: *उश्केरायेलो. [*आवेशमां आव्यो] [*रा.चूंचावणो] चाउरि, चाउरी अंगवि. आरारा. *गुर्जरा. **नंदब. *नेमिछं. *विमप्र.* गादी (दे.) चाउल विमप्र. चोखा (दे.) **चाउंडा** *उक्तिर*. चामुंडा चाक अभिऊ. उक्तिर. ग्रेमाका. [चाकडो], चकावो, गोळ भ्रमण (सं.चक्र) चाक नलरा. अंबोडामां खोसवानुं स्त्रीनुं एक चक्राकार घरेणुं (सं.चक्र) चाकल लावल. चाकळा, निानी गादी] दि.चक्कल] चाकवो *पंचवा. [जोवो] [सं.चक्षु-] चाकुलंड अंबरा. गुर्जरा. नेमिछं. चाकळो, [गोळ नानी गादी] (सं.चक्र+उल्ल) दि. चक्कली **चाख** *आरारा. जिनरा.* नजर, दृष्टिदोष (सं. चक्ष) **चासिवड** *जिनरा*. चाखदोक चाखी * गुर्जरा. विराप. चाखी, भोगवी (दे. चक्खिआ) चाचर उक्तिरः नलराः नेमिछंः चोगान, चोक (सं.च,वर) उक्तिर. प्राचीसं. चर्चरी. चाचरि

[गीतविशेष] चाट *नेमिछं*. खुशामत करनार (सं.चाटु) चाटको *नरका.* चटको, आघात **चाटबो** *प्रेमाका*. लाकडानो कडछो दि. चट्टअ] चाटिकु विमप्र. चटाको, चिटको, झीणो घा चाटू अंवरा. चाटवो, [लाकडानो कडछो] दि.चट्टअ] चादुकारिया वचन अक्तिर. मीठां वचन (सं.चाटुकारिकानि वचनानि) चाड षष्टिप्र. दुर्जन, कपटी (दे.चाड) चाड,चाडि आरारा. प्रयोजन, जरूर (रा.): उषाह. प्राचीसं. *शीलक. सेवा. *भक्ति. [सहायता, मदद] चाइउ नलरा. एकनी वात बीजाने कही देनार चाडियो [दे.चाडय] **चाढीनइ** *आरारा.* चडावीने **चाणउरि** *प्राचीसं*. चाण्र, [एक मञ्ज] **चातरइ** *लावल*. चलित थाय, [खसे] चातारिणी आरारा. मीठाई वगेरेनी भेट (tl.) **चातुक** *नरका.* चातक पक्षी **चातुर** मदमो. चतुर चातुरिम नलरा. चतुराई (सं.चतुरिमा) चात्र सिंहा(शा). चातरीने, गुप्त, संयत चात्रुक दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका, चातक पक्षी **चाथरि** उक्तिर. हास्य दि.चत्थरि

*चापइ चिंपइ वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). चंपाना फुलमां (सं.चम्पक) चापिक कादं(शा). चाबुकथी **चाबख** *प्रेमाका*. चाबुक चापकि *प्रेमाका*. चाबुक चाबण उक्तिर, चावीने खावानो शेकेलो खाद्य पदार्थ, चवाणुं (सं.चर्बण) [रा.] चाम अखाछ. [चामडानुं] शरीर; जिनरा. चामडी चामडुं अखाछ. [चामडान्] शरीर; जुओ चांमड **चामर ***विमप्र. चिमार जेवा हलका लोक] चामरहारी *प्राचीफा*. चामरधारिणी स्त्री **चामाचेड** *उक्तिर.* चामाचीडियुं दि.चम्म-चिड्अो चामीकर नलाख्या. सुंदर (सं.) **चाय** *देवरा*. चाह. डच्छा चारण *"गुर्जरा.* आिकाशगमन करी शकता साधुनो प्रकार] **चारण** *आरारा*. (गाय) चारवी ते चारणी आरारा. हालतीचालती (रा.चारिणी) चारवी *आरारा*. चरावीने **चारं**णी *मदमो*. चाळणी **चारि** *गूर्जरा*. घास, [चारो] चारि **प्रबोप्र*. [उपाय, लाग] दि.] चारि उक्तिर. चार (सं.चत्वारि) चारित *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा.* व्रतमय जीवन, संयम, दीक्षा (सं.चारित्र) चारित वडाबा. संयमधर्म (सं.चारित्र) चरित्र आनंस्त. देवरा. नलरा. लावल.

चाप प्रेमाका. लावल. धनुष (सं.)

संयमधर्म, त्यागधर्म, दीक्षा सिं.] **चारित्री** *आनंस्त*. संयमी, सियमधर्मी चारित्रीआ उपवा, चारित्र – जैन दीक्षावत पाळनारा **चारिहिं** *गुर्जरा. विराप*. चालवाथी, चालथी (सं.चार) चारीय हरिवि. नृत्यना गतिविशेषमां (सं. चारी) चारुवाक अखेगी. चार्वाक[दर्शन] चारो *अखाका. चतुचा. प्रेमप. उपाय चाल, चालो *चित्तसं.* प्रवर्तन **चाळ** ग्रेमाका, चादर चालड *लावल. चाले, काम थाय] **चालइ** वसंवि. चळे, [चलित थाय] (सं. चल्यते) चाळ ओढवी प्रेमाका. देवाळुं काढवुं **धातणी** *उक्तिर.* चाळणी (सं.चालनी) **चालवि** *कादं(शा).* चालवाथी **चातवे** चित्तसं. चलित करे: नरका. चळावे, चिलत करे: चलावे, हलावे [सं.चाल्] **चाला** *आरारा.* चेष्टा: *नेमिछं*: *गति, चिष्टा, प्रवृत्ति] चालि *प्राचीफा*. चाल. रूढि चा**ले** *नरका.* चलावे. चलित करे **चालेव्या** *चंद्रवा*. चालवा[मां] चालो जुओ चाल **चाळो** *आवाका*. चेष्टा **चाल्युं जाइ** *चित्तसं*. प्रवर्त्युं जाय चावड *जिनरा. [स्वेच्छाए] चावडी प्रेमाका. चिकि], पोलीसथाणुं

चावळ *वीसरा*. चोखा **चावी ****नरका*. [बदनाम] [हिं.] चावे अखाछ. कहे (दे.चव) **चास** *उक्तिर. प्रेमाका. मदमो. कूं*जडूं, एक पक्षी (सं.चाषः) **चासणी ***विमप्र. [घोडाने आपवामां आवतुं जोगाण, चंदी **चासंघ** अखाछ. जाहेर, उघाडे छोगे चाहड उषाह, नरका, नेमिछं, "प्राचीफा, *प्राचीसं. विक्ररा. *विमप्र.* जूए, नीरखे, प्रिमभरी दृष्टियी जुए] (अप. चाह) [दे.चाह]; *अंबरा. (राह जूए, प्रतीक्षा करे]; उषाह. प्रबोप्र. इच्छे, [याचे] चाहन *वेताप*. उघाडुं, जाहेर चाहीजइ जुओ कही चाहीजइ चाहेक चंदवा मनगमतां चांचुड षडाबा. चांचड दि.चंचट] चांदरणी दशस्कं(२). प्राचीफा. चंद्रनो प्रकाश, चांदनी **चांदलु** गुर्जरा. चंद्र **चांदुलउ** गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. चंद्र **चांदुलंडउ** *गुर्जरा*. चंद्र चांदुला वसंफा. वसंवि(ब्रा). चंद्र **चांत्र** *प्राचीफा*, चन्द्र चांद्रणउ प्राचीसं. चन्द्रिका, चिंद्रप्रकाशी चांद्रणी कादं(शा). विमप्र. चांदरणी, तारा-मंडळ; दशस्कं(२). चांदनी, चिंद्र-प्रकाश]: नरका. घांदनी, [*तारामंडळ] चांद्रिणी *प्राचीफा*, चांदनी, चंद्रप्रकाश-[युक्त]; लावल. चांदनी, [चंद्रप्रकाश]

चांद्रिणु *उक्तिर*. चंद्रप्रकाश **चांप** उक्तिर, चंपानगरी चांपड वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). चंपामां (सं.चंपक); जुओ चापइ चांपइ अखाछ. उक्तिर. जिनरा. वसंफा. वसंफा(ल). विराप. वीसरा. षडाबा. चांपे, दबावे दि.चंपी **चांपउ** *उक्तिर*. चंपक. चिंपोे} चांपला-सरुअर वसंवि(ब्रा). चंपक वृक्ष चांपी * नरका. चांपीने, दबावीने, कडकाई-थी। वसंवि. चांपुला वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). चंपो (सं.चंपक) **चांपेल** लावल. विमप्र. चंपानुं तेल [सं.चंपक-तैल्यो चांपे-श्रं प्रेमाका. [काळजीथी, खंतथी] चांबडउ उक्तिर. चामड्रं (सं.चर्म-) चांबलि हम्मीप्र. चंबल नदी चांबिल वीसरा, चंबल नदी चांमड चंद्रवा. ?, [*चामडानुं शरीर]; जुओ चामड् चांहीन अखेगी. चिह्न चिऊआलीस नलरा. चूंवाळीस (सं.चतु-श्चत्वारिंशत्) चिगचिगत**उ** उपना. चकचकतुं **चिचि ***प्रद्युयु. [त्याज्य] दि.चिच्च] **चिटक** *प्रेमाका*. वळगाड, मिली विद्या चिडउ उक्तिर. नलरा. चकलो (सं.चटकः) चिडी अंबरा. उक्तिर. चकली (सं.चटका);

विणड *उक्तिर*. वीणे, एकत्रित करे (सं. चिनोति) चिणय तेरका. चणो (सं.चणक), (*चीणो, एक धान्य) [दे.चीण]; जुओ चीणउ चिणिड उक्तिर. वीणेलुं, एकत्रित करेलुं चिणी षष्टिप्र. चणेली, [चणतर थयेली] (सं. चिनोति परथी) चिणोठी उक्तिर. चणोठी (दे.चिणोट्ठी) चितवी देवरा. चिंतवी. विचारी चित लार्ड आरारा. चित्त लगाडीने, ध्यान-थी; जुओ लाइ चित्त चोरी *नरका-२*. कसर राखी, झांखो पड़ी, [संकोच पामी] चित्तप्रसत्ति आनंस्त. चित्तने जोडवं ते [सं.चित्तप्रसक्ति] **चित्तमास** *प्राचीसं*, चैत्र मास चित्रड षडाबा. चित्तो (सं.चित्रक) वित्रकारीकं वारमवा, आश्चर्यकारक चित्र-लिखा प्रेमाका. चित्रमां चीतर्या होर तेवा, स्थिर, भूढ [सं.चित्रलिखित] चित्र-लंक प्रेमाका, चित्ताना जेवो केडनो वळांक; जुओ लंक चित्रशाली, चित्रशाळी, चित्रसाली "गुर्जरा. *"प्रेमाका. "विराप.* [सुंदरी] चित्रसाति. चित्रसाती *उषाह. तेरका. लावल, पंचवा, प्राचीफा, ज्यां चित्रो गोठव्यां होय एवं दीवानखानुं, रंगभवन (सं.चित्रशाला) वित्रसाली जुओ चित्रशाली

चित्राम कादं(ध्र). कादं(शा). गुर्जरा. नलरा.

वीसरा. पक्षी. चिकली (सं.*चिटक)

"विमप्र. चितरामण, चित्रो वित्रालंकी नरका. चित्ताना जेवी पातळी केडवाळी; जुओ लंक विश्रावेति. चीत्रावेत ऐतिरा. उक्तिर. इच्छित फळ आपनारी वेली, अिक्षय-निधिनी सिद्धिवाळी वेली सि.चित्रक-वल्ली]; जुओ चित्रावेल **चित्रांम** *प्राचीफा.* चितरामण चिपुट ऋषिरा. चपटुं, बेसी गयेलुं (सं. चिपिट) चि**बुक** अखाकाः प्रेमाकाः हडपची (सं.) **चिमिचिमि** ऋषिरा, चमचम अवाज **चिय** *प्राचीसं*. चिता **चिय** *गुर्जरा*. भारवाचक अव्यय (सं.चैव) **चियवास** *ऐतिका.* चैत्यवास **चियारि** *षडावा.* चार (सं.चत्वारि) **चियालीस** *षडाबा.* चालीस (सं.चत्वारिंशत्) चिरास "शुंगामं. [चिरकालीन, चिरंजीव] [सं.चिरस्य, प्रा.चिरस्स] चिवियां शंगामं. कह्यां दि.चव चिह्न गुर्जरा. विराप. सिंहा(म). चिता, चेह **चिहउं** *विराप.* चार [सं.चतुर्+खल्] विहार**इं** शुंगामं. चारेय **चिहिन** प्रेमाका. चिह्न, लक्षण विद्वं लावल. चार (सं.चतुर्+खल्) **चिहुपखी** विमप्र. चारे बाजू चिह्नर *श्रंगामं*. केश, वाळ (सं.चिकुर) चिद्धं आरारा. गुर्जरा. नरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. चार, चारेय (सं.चतुर्+खलु) **चिहुंघडियउ** वीसरा. चोघडियुं, सुमुहूर्त

(चिहुं+सं.घटि) **चिह्नं दिसि** ऋषिरा. चारे दिशामां चिह्नं परि *उक्तिर*. चार प्रकारे विचूड षडाबा. चांचड [दे.चंचट] विंत, चींत उषाह. नलरा. लावल. चित्त; *गुर्जरा. वीसरा.* चिंता, विचार विंत**इ** नेमिछं. लावल. विचारे चिंतनी, चींतनी *अखाका. *सिंहा(शा)*. चित्रिणी, सुंदरी; जुओ चंतनी **चिंतवइ** *देवरा. जिनरा***. चिंतवे,** विचारे **चिति** नेमिष्ठं, चित **चिंतु** गुर्जरा. चित्त **चिंत्य कादं(शा)**. चित्तमां **चिंघ** *गुर्जरा. प्राचीफा*. निशानी, धजा (सं. चिह्न) **-ची** *नलरा. प्राचीफा.* षष्ठीनो प्रत्यय, [-नी] (सं.-त्य); जुओ -च **चीकण** *वेताप.* एक जातनी काकडी चीखल उक्तिर. ऐतिरा. नलरा. प्राचीफा. कादव (दे.चिक्खन्न) चीखलालुं जित्तरः कादवियुं चीखली शुंगामं. चीकणी, कादवयुक्त (दे. चिक्खल्ल) **चीगट** नंदब. चीकाश **चीगराई** *आरारा(व)*. चिकाखाई ? चीचुअइ उक्तिर. चींचीं अवाज करे, चीस पाडे **चीणड** उक्तिर. चीणो. एक धान्य दि.चीण]: जुओ चिणय

चीणीकबावा आरारा(व). चण-कबाब, एक वनस्पति (फा.चिनिकबाला)

चीत *प्राचीसं*. चैत्र

चीतनी *मदमो*. सुंदरी (सं.चित्रिणी); जुओ चींतनी

चीतरा ग्रेमाका. चित्ता

चीतराव्यउ जिनरा. याद कराव्या

चीतवड, चींतवड अखेगी. उपवा. नलाख्या. "प्रेमप. षडावा. चिंतन करे, विचारे (सं.चिन्तयति)

चीती विमप्र. विंतव्या मुजब, इच्छा मुजब चीतु वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). चित्त

चीत्रइ उक्तिर. चीतरे (सं.चित्रयति)

चीत्रउ उक्तिर. चित्तो (सं.चित्रकः)

चीत्राम कामा(त्रि). कामा(शा). चितरामण

चीत्रावेत जुओ चित्रावेति

चीनउं गुर्जरा-टि. "विराप. चीरेलुं, विदारेलुं (सं.चीर्णम्)

चीनी नरका. ओळखी [सं.चिह्न परथी]

चीन्यो नरका. ओळख्यो, जाण्यो [सं. चिह्नितम्]

चीपडी * विमप्र. [धीबी, बूची, चपटा नाक-वाळी]

चीपडीउ, चीपिडउ *उक्तिर.* एक झेरी जीवडुं (सं.चिपिटक)

चीफाड उक्तिर. [?] (सं.चित्तस्फोटक)

चीर कादं(ध्रु). जथ्यो, जूडो

चीर गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. पंचवा. प्रेमाका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. वस्त्र, उत्तम के रेशमी वस्त्र (सं.)

चीरी प्रयुचु. वीसरा. चिष्ठी

चील्ड उक्तिर. समडी (सं.चिल्लः)

चील्डडां शृंगामं. समडी (दे.चिल्ल)

चील्डसाग उक्तिर. चील, एक पांदडावाळी
वनस्पति जेनुं शाक बने छे (दे.चिल्ली+

चीवर आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वस्त्र (सं.)

चींचूए प्रेमाका. चूं चूं एवो अवाज करे चींत आरारा. गुर्जरा. चित्त; जुओ चिंत चींत- गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विचार करवी (सं.चिन्तय्)

चींतनी जुओ चिंतनी, चीतनी

चींतवइ जुओ चीतवइ

सं.शाक)

चींतारड *नलरा.* चित्रकार, चीतारो

चींनविउ कृष्णच. ओळखाव्यो

चुआ * नरका. [विविध गंधद्रव्योना मिश्रण-वाळुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुवा चंदन, चूआ, चूया, चोआ, चोवउ

चुक विक्ररा. चोक [सं.चतुष्क]

चुकडई विमप्र. चारचार; जुओ चौकडे

चुकडउ नलरा. काननुं एक घरेणुं, चोकडा चुकडुं कादं(शा). विमप्र. चोकडुं (घोडानुं)

चुकिस लपच. चूकीश, [खोईश]

चुक अभिक. चोक, [साथियानी आकृति] (सं.चतुष्क); जुओ चउक

चुक- तेरका. चूकवुं (सं.च्यु+क्क)

चुकावि *गुर्जरा*. चूकी जईने

चुटां कर्पूमं. चौटां [सं.चतुर+हट्ट]

चुणिण *गुर्जरा*. चणवा माटे (सं.चिनोति) **चुणिवानइ** *सिंहा(म)*. चणवा वखते **चुषउ** आरारा. नलरा. नलाख्या. चोथुं (सं. चतुर्थक)

तुपखेर *हम्मीप्र.* चारे बाजु; जुओ चउपखेर, चुपाखर

चुपट *नलरा. [चारे बाजु खुझा]; उषाह. चारे तरफथी, [*विनाशक] (सं.चतुः +पट्ट) [हिं.चौपटा]; जुओ चउपट

चुपद्द *विमप्र. [खुझी रीते, मुक्तपणे] चुपाखर नलरा. चारे बाजु (सं.चतु:+पक्ष);

जुओ चुपखेर

चुफला *उषाह*. कदावर, [पुष्ट]

चुमासुं नलरा. विमप्र. चोमासुं, [जैन साधुनुं चातुर्मास]

.चुयो *वेताप.* कोई वस्तु बाळी उकाळीने काढेलो सत्त्वरूप रस

चुरइ *विक्ररा***. चोरा**मां

चुरंग अभिक. चारे अंगनी, [गाढ]

चुरी लावल. नलख्या. चोरी, लग्नमंडपना चार खूणे करवामां आवती माटलीनी रचना

चुलसी प्राचीफा. प्राचीसं. चोराशी (सं. चतुरशीति)

चुले *आरारा.* चोळाथी [दे.चवलय] चुवटजं जुओ चहुटउं

चुविट, चूविट कार्द(ध्रु). कार्द(शा). चोवाटमां, चकलामां, चार रस्ता भेगा थाय त्यां] (सं. चतुर्वत्मी); जुओ चहुटउं चुवण अखाका. चूवेलुं द्रव्य चुवा चंदन * मदमो. [चुवा — एक मिश्रण-युक्त गंधद्रव्य अने चंदन]; जुओ चुजा, चोवा

चुविह आरारा. चार प्रकारना (सं.चतुर्विध) चुसिं नलरा. लावल. चोसठ (सं.चतुःषष्टि) चुसाल नलरा. "प्रद्युचु. "पहोळी, [विशाळ] (सं.चतुःशाला); जुओ चउसाल

चुहर्दुं प्राचीफा. विक्ररा. चौटुं, बजार (सं. चतुर्+हट्ट); जुओ चउहटुं

चुहडियां *लावल*. चोड्यां [दे.चुहुटु] चुहि नलख्या. चारे, चारेय (सं. चतुर्+खलु)

चुडु कादं(शा). चार (सं.चतुर्+खलु)

चुहुटइ विक्ररा. चौटे, [बजारमां] [सं. चतुर्+हट]

चुहुडी जुओ चहुडी

चुहुवटां अभिक. चौटां, बजार (सं.चतुर्+ हट्ट) [सं.चतुर्वत्स]

चुं *प्रद्युचुः* चार [सं.चतुर्.]

चुंकलइ उक्तिर. धारदार वस्तु घोंचवी [*दे. चंछ]

चुंकार *प्राचीका*. आश्चर्य[कारक] (सं. चमत्कार)

चुंचुता "नरप(द). [चमचमता, फळफळता, गरम, ताजा]

चुंदिबुं उक्तिर. चूंटवुं, वीणवुं [सं.चंट्] चुंबइ उक्तिर. गुर्जरा. विराप. चुंबन करे (सं.चुम्बति)

चूआ *अभिक. *प्रेमाका. [विविध गंध-द्रव्योना ंमिश्रणवाकुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुआ चूक *उक्तिर*. आमली (सं.चुक्रम्) चूटिवा बांछइ *उक्तिर*. चूंटवा इच्छे चूड ग्रेमाका. [वींटळाईने करवामां आवती] एकड, भींस [दे.]

चूडकरण कादं(शा). बाळमोवाळा उतराववा-नो विधि (सं.चूडाकरण)

चूडाती कादं(शा). चूडावाळी, सौभाग्यवती स्त्री

चूडावयंसु ऐतिका. चूडावतंस, [शिरमोर] चूढीयिइ कादं(शा). चोढवामां आवे (दे. चउट्ट)

चूणि उक्तिर. चूरो (सं.चूणि) **चूतांकर** जुओ नूतांकुर

चूति उक्तिर. स्त्रीयोनिः; गुदा (सं.च्युति)

चूथउ जुओ चउथउ

चून उक्तिर. लोट (सं.चूर्णम्) [हिं.]

चूनउ *गुर्जरा.* चूरो (सं.चूर्ण+क); *उक्तिर.* चूरो, भूसुं

चूनडि, चूनडी *ऐतिका. वीसरा. स्यूतिफा.* वस्त्रविशेष, चूंदडी

चूनडीअ स्थूलिफा. चूंदडी, स्त्रीनुं एक जातनुं भातीगर रेशमी वस्त्र

चूनलडी *नरका*. चूंदडी

चूनी *नरका. प्रेमाका*. हीरानो के रलनो नानो टुकडो, स्त्रीओने नाकमां पहेरवानी टीपकी

चूब "गुर्जरा. [भोंकवुं ते] [हिं.चुभना] चूया "लावल. [विविध गंधद्रव्यना मिश्रण-वाळुं एक गंधद्रव्य]; जुओ चुआ चूर नेमिछं. चूरो चूरइ गुर्जरा. प्रेमाका. चूरो करे (सं. चूरयति) चूरी नेमिछं. चूरो, भूको चूरीइ, चूरीयइ उपवा. नेमिछं. चूरो कराय चूरी पूरी "नरका. [चूरमुं अने पूरी]

चूरीयइ जुओ चूरीइ

चूर्यु आरारा. ऋषिरा. दळी नाख्युं, चूरेचूरा करी नाख्युं

चूल्हर आरारा. प्रद्युचु. चूलो (सं.चुिल्लः) चूल्हि, चूल्ही उक्तिर. षडाबा. चूल (सं. चुिल्लः)

चूविट जुओ चुविट चूंथा नरका. प्रेमाका. चींथरा चूंबणी वीसरा. चुंबन करवां ते चेजं *विमप्र. [चणतर] [दे.चेघ] चेजुं *विमप्र. *लावल. [चणतर] [दे.चेघ] चेट ऋषिरा. दास (सं.)

चेटक *कस्तुवा. चित्तसं. प्रेमाका*. जादु, मेली विद्या

चेटक (चेटक लाग्युं) नरका. घेलुं [लाग्युं] चेटी अखाका. आरारा. दासी (सं.) चेडी नेमिछं. षडाबा. दासी (सं.चेटिका) चेत आरारा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). चित्त (सं.चेतस्); आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. भान [सं.चेतस्] चंद्रवा. सावचेती राखीने, काळजीपूर्वक, [विचारीने]

चेत उक्तिर. चैत्र मास चेतिष अखाका. उपबा. चेत्यो, जागृत थयो, सभान बन्यो (सं.चेतयित) चेत्र वीसरा. चैत्र मास

चेत्रड मदमो. गांडी, दाधारंगी स्त्री चेन जुओ अंगचेन **चेरी** दशस्कं(२). प्रेमाका. दासी (सं.चेटी) चेतुकां प्राचीसं. बाळको [दे.चेल्लय] चेतुखेप प्राचीफा. आकाशमांथी वस्त्रोनी वृष्टि थवी ते (सं.चेलोत्सेप) चेहेन अखाका, अखेगी, चंद्रवा, चित्तसं. मदमो. चिह्न. तक्षण **चेहेबचो** *प्रेमाका*. शेवाळ अने वनस्पतिवालो होज [फा.चहबद्यह] चेंन सिंहा(शा). चिह्न **चैतन्यमे** *चित्तसं*, चैतन्यमय **चैत्य** *आरारा*. जिनमंदिर (सं.) **चैत्यपरवाडि प्राचीफा. क्रमपूर्वक मन्दिरोनी** यात्रा (सं.चैत्यपरिपाटी) **चैत्यमाला** *ऋषिरा*. जैन देरासरीनी हार **चैद** दशस्कं(२). चेदि देश; नलाख्या. चेदि देशने लगतुं **-चो** *ऐतिका.* -नो; जुओ -च चोआ विमप्र. हम्मीप्र. विविध गंधद्रव्यो-वाळों] एक सुगंधीदार पदार्थ; जुओ चुआ **चोक** *नरका. नरप.* स्त्रीओनुं मस्तकनुं एक घरेणुं (सं.चतुष्क) **चोकड "**नरका. [चार सेरनी]; जुओ चुकडइ चोकडी प्रेमाका. चारनी संख्या: [*चोकडी-नी भातवाळा चोकी नरका. स्त्रीओनुं माथानुं एक घरेणुं

उपर थतुं लींपण, अबोट चोखभंडि *विभग्न. [साव हलकी, असती, कुलटा][दे.चोक्ख+भंडी] चोखरो मदमो छंदविशेष चोखालिप नेमिछं. चोखबुं करवा माटे दि. चोक्खी **चोखाला** *लावल.* चोख्खा, स्वच्छ दि. चोक्ख र **चोखी** *आरारा*. सरस, सरस रीते (रा.); नेमिछं, चोछबी, स्वच्छ, निर्मळी **धोखूट, चोखूंट** चंद्रवा. मदमो. चारे दिशा, चारे सीमा, सर्वत्र [सं.चतुर्+दे.खुंट] **चोगमा** चंद्रवा. चारे बाजू चोज अखाका. अखाछ. "अखेगी. उक्तिर. आश्चर्य. चमत्कार, चिमत्कारपूर्ण अनुभव]; *अखेगी. *श्ंगामं.* व्यंग्य[भरी उक्ति], [चमत्कारपूर्ण उक्ति] (सं.चोद्य) चोट प्रेमाका. चीवट, काळजी: झडपी चोड (चोड वाळ्यं) प्रेमाका. नाश [कर्यो] चोडो प्रेमाका. पहोळो चोनाणी *शुंगामं*. चार प्रकारना ज्ञानवाळा [सं.चतुर्ज्ञानी] **चोप. चोंप** प्रेमाका. झडप. उतावळ, उत्साह, चपळता, [चानक] चोपडणु षडाबा. चोपडवानी क्रिया (दे. चोपड) **चोपडा बरांसे एठुं** *नरका*. चोपडेलाने भरोसे एठूं (उच्छिष्ट), [कंईक लाभ माटे हलकी वस्तुनो स्वीकार करवो ते]

थोगां वेताप. सिंहा(शा). ढोर (सं.चतुष्पद)

चोकु *आनस्त*. चारगण्

चोको *प्रेमाका*, रसोई वगेरे माटे जमीन

चोफेर *प्रेमाका*. चारे बाजु चोबदार *प्रेमाका*. छडीदार [फा.] चोबोला कामा(शा). टोणा, [चाबखा]; जुओ चबोला चोमाल कस्तुवा. चोथे माळे

चोरचरड लिलरा. चोरलूंटारा [सं.चौर+ चरट]; जुओ चरड

चोरिचखार *दशस्कं(२).* चोर-धुतारा; जुओ चखार

चोरडं उक्तिर. चोरटो [सं.चौर परथी] चोरारि लावल. चोर अने अरि – शत्रु चोरासी अखाका. नरका. जीवना चोरासी लाख अवतार

चोरासी खाण *प्रेमाका*. चोरासी लाख जन्म-योनि

चोरी अखाछ. ?, [कोईक धार्मिक आचार] चोल ऐतिका. नरका. नलरा. नलाख्या. शीलक. मजीठ, घेरा लाल रंगनी वनस्पति; घेरो रातो रंग; *शृंगामं. [वस्त्र-विशेष, लाल रंगनुं वस्त्र]

चोलक ऐतिरा. चौलुक्य वंश चोलणा जिनरा. वेश, [झभ्मा] [हिं.चोलना] चोलपदृउ षडावा. कटिवस्त्र (सं.चोलपट्ट) चोलपजीठा प्राचीफा. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मजीठ जेवा लाल; जुओ चोल

चोलवटज उक्तिर. कटिवस्त्र (सं.चोलपट्टः) चोलीय वसंवि. चोळी (सं.चोलिका) चोळो प्रेमाका. मूंझवण, [गभराट, मय, चिंता] चोवज आरारा. वीसरा. विविध गंधद्रव्योना मिश्रणवाळुं एक गंधद्रव्य; जुओ चुआ, चुवा, चोवा

चोवट वाक्युं दशस्कं(२). ध्वस्त कर्या, [नष्ट कर्या]

चोविट अखाछ. कादं(शा). चौटामां, चकलामां

चोबा आरारा. ऐतिका. विविध गंधद्रव्योथी बनावेलुं एक सुगंधी द्रव्य; जुओ चोवउ चोबिहार आनंस्त. खान-पान आदि चार प्रकारना आहारनो त्याग [सं.चतुर्+ व्याहार]

चोसर देवरा. प्रेमाका. चार सेरनी (माळा) चोहटे पंचवा. बजारमां, चौटे (सं.चतुर्हट्ट) चोहो चंद्रवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो. चार (सं.चतुर्+खलु)

चोहोवटे मदमो. चौटे, चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळे] (सं.चतुर्वर्त्सन्)

चोंप जुओ चोप

चौदुं अखाका. अखाछ. चौदवहुं, सोळ भागमांथी चौद भाग सोनाना होय एवुं, चोख्खुं सोनुं

चौनाणी जिनरा. चार प्रकारना ज्ञानवाळा [सं.चतुर्ज्ञानी]

चौरज्य चित्तसं. चौर्य

चौवट नरप(द). चौटुं, [चार रस्ता भेगा थाय ते स्थळ, जाहेर स्थान] [सं.चतु-र्वर्लन्]

चौवार *जिनरा. [अगाशी परनी चार बाजु खुक्षी स्थापत्यरचना]; जुओ चउबारउ च्यतुरंगी करतसः. चतुरंगी [चार अंगवाळी] (सेना)

च्यवडं *उपबा*. नीचला अवतारमां पडे [सं.च्यु]; जुओ चववुं

च्यह परि अक्तिर. चार प्रकारे च्यंत अखाका. अखेगी. चित्त च्यंता उषाड. चिंता

च्यार कादं(शा): दूत, [सेवक] (सं.चार) च्यारसयां ऐतिरा. चार सो [सं.चत्वारि शतानि]

च्यारि आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वीसरा. चार (सं.चत्वारि)

च्याति (च्यारि) *नेमिछं.* चालीस, [सं.चत्वा-रिंशत्]

च्युद्ध उक्तिर. चार [सं.चतुर्+खलु] चेहेन मदमो. लक्षण, चेन (सं.चिह्न)

छ नलरा. छे

छइ उक्तिर. गुर्जरा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. ष्ठे (सं.आक्षेति)

छइ षडाबा. देखाव, आकृति (सं.छवि) **छइतालीस** षडाबा. छेतालीस (सं.षट्चत्वा-रिंशत्)

छइल, छइल्ल नलरा. नेमिछं. लावल. वसंवि. छेल, रसिक, [चतुर] (सं.छवि+इल्ल; दे.छइल्ल); जुओ छयल

छउगाला जिनरा. छोगावाळा, [छेलछबीला] **छउगत्य** नेमिछं. छद्मस्य, केवलज्ञान प्राप्त कर्या पहेलांनी अवस्था, [असर्वज्ञ अवस्था]; जुओ छद्मस्य
छए ऐतिरा छे
छकाइ नरप(द). बहेकी गई, [उन्मत्त थई]
छग जिनरा छ
छगणक षडाबा छाणुं [दे.छगण]
छगल्यानो आनंस्त चगळ्यानो
छगबीस जिनरा छवीस
छछउंदिरी ऋषिरा छछूंदर [दे.छच्छुंदर]
*छछेरा [छछोरा] प्रेमाका छीछरा,

छ्छोरी *प्रेमाका.* छीछरी, [छोकरमतवाळी] **छछोंडा** जिनरा. [स्फूर्तिवाळुं, उत्साहयुक्त; जलदीथी]

छटकी ऋषिरा. छांटी [गु.छडकवुं; हिं. छिडकना]

छडइ *गुर्जरा*. छड्डे [वरसे]

[आछकला]

छडउ *गुर्जरा.* छंटकावतो [हिं.छडना]

छडउ पयाणउ प्राचीसं. एकाकी प्रयाण; जुओ छडे पीआणे

छडपडु जुओ छुडिपुडि

छडा *ऐतिका. नरका.* छंटा, छंटकाव, थापा **छडा (छडा छाबडा)** *लावल.* छंटकाव (अने थापा)

छडी पंचवा. राजचिह्न तरीके राजा आगळ रखातो दंड (सं.छत्रिका)

छडी(छडी ता) *जिनरा. [छडतां]

छडीवार *प्रेमाका. [राजादि आगळ एमनां स्त्रुतिवचन बोली मार्ग करनार]

छडे पीआणे विमम्र. चडी सवारीए, [रसाला वगरनी ने तेथी झडपी सवारीए]; जुओ छडउपयाणउ छडोत्तरइ [सोल छडोत्तरइ] ऐतिरा. [सोळसो] उपर छ छतराल मदमी. छतरायुं, जाणीतुं ∙ छति, छते कर्पूमं. विराप. होतां, होवा छतां (सं.सति)

ष्ट्र, (रहितु) उक्तिर. रहेतो, होतो ष्ट्रं अखाका. सत्, सत्यसनातन, [पारमार्थिक अस्तित्व धरावतुं]; वित्तसं. उपस्थित; अस्तित्व धरावतुं, कामा(शा). जीवतुं

छते जुओ छति

छत्ती कर्पूमं. छत, [होवुं ते, हयाती] (सं. स्थिति)

छत्तु *षडाबा***.** छत्र

छत्य मदमो. [होवुं ते], अस्तित्व; चंद्रवा. छत, *पूर्ण, [होशियारी, कौशल]

छत्ये षर्ड मदमो. पारंगत [आवडतवाळी] थर्ड

छत्रसित *तेरका*. छत्रशिला, [गिरनारनी एक टुंक]

छदम *आरारा*. कपट (सं.छद्म)

छदास्थ आनंस्त. षष्टिप्र. अ-सर्वज्ञ, सावरण ज्ञानवार्त्तुः, जुओ छउमत्थ

छ नोकषाय *आनंस्त*. छ मंद कषाय — हास्य, रित वगेरे

छन्नवड् प्राचीसं. षडाबा. छन्नं (सं.षण्णवित)

छपदा *ऐतिका*. षट्पद, छप्पा

छप्तुं अंबरा. दशस्कं(१). छुपातुं

छपती *नरका*. छूपी

छपाइ *आरारा*. छुपाव

छप्पई उक्तिर. चोपाई छंद (सं.षट्पदी)

ष्ठप्पन उपर भेर [वागरी] प्रेमाका. खूब श्रीमंत होवुं (जूना समयमां छप्पन लाख के करोड़नी मिलकतवाळाने आंगणे भेर वागती)

ष्ठप्ययः शृंगामं. भमरो (सं.षट्पद)

छब *नरका*. सुंदरता (सं.छवि)

छब प्रेमाका. [पृथ्वीस्पर्शनी] अवाज

छबकड् *प्राचीफा.* "धारण करे, [शोभे] [रा.]

ष्ठब्तुं अखाछ. अटकवुं, पहोंचवुं; "अंबरा. [पहोंचवुं]; अभिक. गुर्जरा. नलाख्या. ललिरा. विकरा. सिंहा(शा). स्पर्श करवो (दे.छिव)

छमकलडो नरका. अटकचाळो

छमकलां *नरका*. अडपलां

छमकलो *नरका.* अटकचाळो, अडपलां करनारो

छमछर अभिक्र. वर्ष (सं.संवत्सर)

छम्मास *गुर्जरा. षडावा.* छ महिना (सं. षण्यास)

छय अंबरा. छे

*छयकारु [बयकारु] उक्तिर. गानार (*सं. गेयकारु) [सं.वाग्+गेयकार, प्रा. वइकार]; जुओ वेकार

ष्ठयल "*विमप्र.* ["वरणागी, "चतुर], ["छल, "बहानुं]

छयल, छयल ऐतिका. ऐतिरा. प्राचीप्त. शीलक. शृंगामं. वरणागी, दस्र, रसिक; जुओ छइल्ल

छयलपणइ *गुर्जरा. वसंफा.* कुशळताथी, चतुराईथी, [रसिकताथी]

छवन्न जुओ छयल **छ्यातीस** *उक्तिर*. छेतालीस (सं.षट्चत्वा-रिंशत) **छर** *प्रेमाका***. अस्त्रा (सं.**शुर) **छरात्तर** *प्राचीपन्न*. मस्त, [मदीलो] **छठ "विमप्र. "इंहाथ. "पंजी सिं.**त्सरी **एको "पंचवा.** तुट्यां, भंगायां] हिं.; सं. ष्ट्रा **एत्स्वती**च *नलरा.* वाष्ठकलो, [सहेलाईयी छलकाई जतो] **छलभेड रूपच. छळक**पट (सं.छलभेद) **छन्ते प्रेमाका. छळी ऊठशे, भयथी** चमकी कठशे **छति "लावल.** [बहाने, रूपे] **छित *विराप**. [नो द्रोह करीने], [*रक्षा-प्रसंगे] [रा.] **छतिन्छ ऐतिका. छळी श्रकाय, [**परास्त ं **छंद** चतुचा. चाळा, [स्वच्छंद वर्तन] करी शकायाँ **छनी** प्रेमाका, कारकी **छत्ती** *आरारा. गुर्जरा.* **छेतरी, क**पट करी (सं.छल्) **छलीवा, छलीवा "लावल**. छितराया, परापव पाऱ्या]; शंगामं. छेतराया **छतीरु** *आरारा(व)***. एक क**रियाणुं, छडीलो, शिलापुष्प ? **छतं** अभिकः छेत्तरं **इन्ते** *मदमो.* **"घूघरीवाळी वींटी, सिोनानी** चीपवाळो चुडो **छदनडं (छानुं छदनडं) विमप्र. [छानुं**]छपनुं

छवरंगी *प्रेमाका.* *वस्त्रविशेष. [*वेपार-वणजनुं कोई साधन] **छविह** *ऐतिका*. छ प्रकार **छवी** *प्रेमाका*, छाईने, ढांकीने **छ सि** नलाख्या. छ सो (सं.षट्श्तानि); जुओ सइ **ष्ठह** *आरारा. तेरका. प्राचीसं*. छ (सं.षष्) **छहत्तर, छहतरि** उक्तिर, षडाबा, छोंतेर (सं.षट्सप्ततिः) **छह विगद्ध स्थुलिफा.** छ प्रकारनी विकृति विकारकारक आहार **છં** वाग्भवा, छे **छंछेरो** मदमो. छंछेड्यो **छंडइ** अखाका. आरारा. गुर्जरा. जिनरा. *तेरका. लावल. वीसरा.* छांडे, छोडे (सं. ਲਵ੍ਹੀ) ष्ठंदा *विमप्र. [खुशामत]; जुओ छांदो **छंदिहिं** *चारफा.* इच्छा के अभिलाषाथी, मिननी रुचिथी **छाड** *आरारा*. छांयामां **छाइउ, छाईउ** गुर्जरा. विराप. छाई दीधो (सं.छादित) **छाइयइ** *षडाबा*. छायेलामां, ढांकेलामां **छाक "**नरका. नरप(द). गंध, वास; जिनरा. नशो, किफी **छाका [छाकाछोल]** **जिनरा.* [छाकमछोळ] **छाकिउ** *षडाबा*. जेणे नशो करेल छे ते. मदीलो

छाज, छाजउ उक्तिर. प्रेमाका. विमप्र.

एक्क्ट्र चतुचा. निर्दोषतामां, बालमावथी

[छापरामां] घास, पाटियां के वांसनुं आच्छादन; छापरुं [सं.छाद्यकम्) **छाजावित धडाबा.** छजांनी हार (सं.छाद्य+ आवलि) **छाणावलि** उक्तिर. छाणांनी हार दि.छगण+ सं.आवलि । **छातिया** *ऐतिका***.** छाती, वक्षस्थल **छात्र** *प्राचीसं* छत्र **छाना छल ***विमप्र. [छानांछपनां स्थानो] **छानुंधवनउं** जुओ छवनउं **छान्यनुं** *मोसाच.* छाणनुं **छाबडा** जुओ छडा छाबडा **छामखेडं** अखाछ. चित्तसं. चामखेडं. चामडानी आकृतिओ, [एनाथी थतो] पुतळीखेल **छायइ** उक्तिर. गुर्जरा. छाय, ढांके (सं. छादयति) धार आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. प्रद्युचु. प्रेमाका. रूपच. वीसरा. श्रंगामं. राख, धूळ (सं.क्षार) **छारड** प्राचीसं. भस्म,[राख] (सं.क्षार+ड) **छार्व** मदमो. राख **छालउ** *उक्तिर.* छाल (*सं.छल्ली) [दे.छल्ली] **छाली** अंबरा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. षडावा. बकरी (सं.छागल)

छातुं अखाका. [छात्त]; [छात्तवाळुं] वृक्ष

धावडउ *उक्तिर. कृष्णवा*. बद्यं, बाळक,

छावउ प्राचीफा. युवान (सं.शावक)

छावति उक्तिर. घरनी छत के छापरुं (सं. छदिः) **छावपणुं** *प्राचीका. प्रेमप*. बालपण (सं. शावत्वन) **छाबी** प्राचीफा. युवती (सं.शाव+ई) **छावीस** उक्तिर. छवीस (सं.षड्विंशतिः) **छासठि** *उक्तिर*. छासठ (सं.षट्षष्टिः) **छासि. छासी** अभिक्त. षडाबा. छास दि.] **छाह** *आरारा*. छाया. शोभा: ऋषिरा. छाया रिंग]: रूपच. छाया. [छांयडो] **छाहडी** *गुर्जरा*. छांयडो; *वीसरा*. छांयो, पड़छायो (सं.छाया) **छाहा** सिंहा(शा). पडछायो (सं.छाया) **छाहार** ऋषिरा. छार, राख [सं.क्षार] **छाडि** *आरारा*. छांयो [सं.छाया] छाहिउ, छाहिय आरारा. तेरका. प्रद्युचु. छवायेलो, छायेलो, ढांकेलो (सं.छाहित-) **छाही** नरका. छाई. ढांकी **छह्य** *विमप्र*. छायो, ढांक्यो, [ढंकायो] **छां** *प्राचीका. प्रेमाका.* (तुं) छे ***छांछलपां**छल **[*खांखलपांखल**] *अखाका.* *जेवोतेवो. *काचोपोचो. [*तुच्छ, *सारहीन]; जुओ खांखल **छांडिजे** कादं(शा). छांडी देजे (दे.छड्ड) **छांदुआं** प्राचीका. प्रेमप. अळवीतरां, अडपलां **छांतु राखइ** शृंगामं. खुशामतथी राजी राखे **छांदो** पंचवा. खुशामत; जुओ छंदा **छांह** *आरारा. उक्तिर.* छांयो, पडछायो (सं. छाया)

छोकरड्डं (सं.शावक)

दि छल्ली

छांहडी आनंस्त. आरारा. मदमो. वीसरा. छाया, छांयो, पडछायो **छांहा** *आरारा.* छांयो, पडछायो [सं.छाया] **छांहिया** *आरारा*. छांयो, पडछायो [सं.छाया] **छि, छिइ** *कादं(शा). नलाख्या.* छे (पा. अच्छति) सिं.आक्षेति **छिकारडां** *प्रेमाका.* [नानी जातन्] हरण **छिछड्, छिपड्** *उक्तिर.* स्पर्शे [सं.स्प्रशति] **छिड्ड** *नलाख्या*. छेडो, [वस्त्रनो भाग] (सं. छेद) **छिदमर (छि दमर सुकी)** प्राचीफा. ?, [दोरडी जेवी सुकायेली] **छिदूं** नलाख्या. छेद्यं (सं.छिद्) **छिद्द** *तेरका*. छिद्र, लाग **छिन्नु** उक्तिर. छन्नु (सं.षण्णवति) **छिपइ** जुओ छिछइ, छीपइ **छिपायउ** *वीसरा.* छुपाव्यो **छिरिका** *प्राचीसं.* ?, [कोई शस्त्रविशेष] **छिलरुं** गुर्जरा. [नानुं] सरोवर, [छीछरा पाणीनं तळाव] दि.छिल्लर] **छिवइ** *उक्तिर. षडाबा.* स्पर्शे (सं.स्प्रशति) **छिंडीपंथ** * *सम्पची*. [केडीमार्ग, सांकडो मार्गी **छी** चतुचा. छे **छीकउं** *उक्तिर. षडाबा.* शीकुं (सं.शिक्यम्) **छीकणी** उक्तिर. छींक, छींक खावी ते (सं.छिक्किका) **छीडि** वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). निर्भर्त्सना करे, तिरस्कार करे (दे.छिछि धिकधिक परथी ?) **छीडणि, छींडणि** *उक्तिर,* छींडी, वाडन्ं छींडं

(*सं.छिद्राटिनी) **छीतर** *उक्तिर.* सूपड्डं [दे.छित्तरय] **छीति** *आरारा*. क्षति. कलंक **छीपइ** गुर्जरा. जिनरा. स्पर्शाय, स्पर्श करे; जुओ छिपइ **छीपउ** उक्तिर. कपडां रंगनारो, छीपो दि. **छिंपय]**; जुओ छींपउ **छीपनुं** सिंहा (शा). लांगरवुं **छीपां** मदमो. लांगर्या **छीपुं (छीपुं हुं)** कृष्णच. "मने स्पर्श थाय, [मारे संतावुं पडे छे] [हिं.छीपना] **छीलर** नरका. प्राचीफा. शुंगामं. स्थूलिफा. खाबोचियं, [छीछरा पाणीनुं तलाव] (दे.छिल्लर) **छीलोजी ***नंदब. [पलाश, खाखरो] **छींडणि** जुओ छीडणि **छींडी** *नरका.* सांकडी गली, [छींडुं, वाड-मांथी करेलो रस्तो**े**: *उक्तिर, प्राचीसं*, छींड **र्छीपउ** नलरा. कपडां छापनार, छीपो (दे. छिंपय); जुओ छीपउ **छुड** *आरारा(व).* छड – एक करियाणुं, छुर, गोखरु ? **छुडि** *विक्रच*. छोडियां छुडिपुडि, छुडुपुडु, छडपुडु तेरका. प्राचीसं. झटपट [दे.छुडु परथी] **छुरउ** उक्तिर. छरो [सं.क्षुरकः] **ष्ट्ररी** *गुर्जरा. षडाबा.* छरी (सं.क्षुरिका) ष्ट्रहिय तेरका. प्राचीसं. भूख्यो (सं.क्षुधित) **छूटे दोरखं** *प्रेमाका.* छूटे दोर, पुष्कळ

छेए *मदमो.* छये

छेक अभिक्त. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. छेडो, अंत; अखाका. चित्तसं. अंत, छेडो; साव, [जराय] [सं.छेद+क]

छेकडि उक्तिर. [*छेकवानुं साधन के *छिद्र पाडवानुं साधन] (*सं.छिद्रकरी)

छेकि *आरारा.* छेक सुधी, पुष्कळ, पूरेपूरुं

छेड *नरका*. छेडती

छेदि ०*षडाबा.* छेडो, हद

छेबकै जिनरा. [छिद्र वाटे], छुपाईने

ष्ठेय प्राचीसं. अंत, छेडो [सं.छेद]

छेल अखाका. चतुचा. पंचवा. रसिक, चतुर **छेवट्टि** जिनरा. छेवट्टा संस्थान, [पाटा,

खीली वगेरे विना हाडकां अरसपरस एम ज वळगेलां होय तेवो शरीरबंध]

[जै.] [सं.छेद+पट्ट]

छेबेट (लीधा छे बेट) *प्रेमाका. [वींटी लीधा छे]

छेह आराम. छेद, भंग; अंबरा. षष्टिप्र. खोट, [हानि]; अभिक्त. आरारा. ऋषिरा. उपबा. कार्द(शा). कामा(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). प्राचीसं. विमप्र. वीसरा. सिंहा(शा). षडाबा. छेडो; अंत; उषाह. कपडानो छेडो, आरारा. उषाह. तेरका. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या. विश्वासभंग, दगो, छोडी देवुं ते, त्याग; हरिख्या. घा, दुःख (सं.छेद) छेह *शंगामं. [धूळ] [रा.]

छेहडइ आनंस्त. उपवा. छेडे, अंते

छेहडउ *प्रद्युचु.* वस्त्रनो छेडो; *आरारा.*

विक्ररा. छेडो, अंत (सं.छेद+ड)

छेहल्यो *आनंस्त.* छेल्लो **छेहा** विमप्र. दगो. ित्यागी

छेहि उक्तिर. छेडे, अंते

छेहिलुं उक्तिर. उपबा. छेलुं

छेहु नेमिछं. छेह, दगो

छेहे मदमो. छ

छोई *चतुचा*. स्पर्शी

छोकलडां *प्रेमाका*. छोगां, वस्त्रना टुकडा, [अंगूछा]

छोछ *प्रेमाका.* अशुद्धि, अपवित्रता

छोद्धं सिंहा(शा). ओछुं; चंद्रवा. हलकुं; प्रेमाका. *नमालुं, असहाय, एकलुं (सं.

तुच्छ, प्रा.ष्टुच्छ)

छोड-भलाई दशस्कं(१). प्रेमाका. छोडाववानीं भलाई, एनो जश

छोति *उक्तिर.* छोत, अस्पृश्यनो स्पर्श, स्पर्शदोष, मलिनता [दे.छुत्ति]

छोबन *प्राचीका***. छोबंध, छोवाळां (सं.** सुधा+बद्ध)

छोयो *नरका. स्पर्श्यो

छोवरावियां *प्रेमाका*. चूनाथी घोळाव्यां

छोवाय प्रेमाका. अभडाय, अपवित्र थाय **छोड** प्राचीसं. क्षोभ, [रोष]; अभिक. क्षोभ,

[आघात, दुःख]; *हम्मीप्र*. प्रक्षोभ, शूरातन

छोड उक्तिर. षडाबा. षष्टिप. चूनानी छो (सं.सुधा)

छोडरी उषाह. छोकरी, छोरी [दे.] **छोडलउ** [? सोडलउ] प्राचीसं. उत्सव **छ्याया** कादं(शा). छांयडो (सं.छाया)

ज तेरका. षडाबा. जे (सं.यद्) जड् आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा, षडाबा. जो

(सं.यदि)

अइ (कांड्जड़) *उषाह*. लगाम[नी दोरीमां] [अ.कायजा]

जड़ किमड़ उक्तिर. "उपवा. जो केमे, कोई रीते (सं.यदि किमपि)

जइणा *ऐतिका.* यतना, [जीवहिंसा न थाय तेनी काळजी]

जइतवाद नलरा. विजय

जइतवादी नलरा. जय मेळवनार

ज**इ पुण** उपवा. *पण जो, [जो वळी] (सं.यदि पुनः)

जड़लच्छि, जड़-लच्छी गुर्जरा. *नेमिछं: जय-लक्ष्मी, [विजयरूपी लक्ष्मी]

जईतरं, जईतुं उक्तिरः जवातुं

जईसर ऐतिका. यतीश्वर

जईसु ऐतिका. यतीश, [मोटा यति]

जउ गुर्जरा. जे (सं.यः)

जड उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा. जो (यतः); उपबा. तेरका. षडाबा. ज्यारे (सं.यतः); वीसरा. एम के, ए रीते के, केमके (सं.यतः)

जउस ऐतिका. आनंद, विश्राम; जुओ जोख

जउणा *उक्तिर.* यमुना

जउराणउ *उक्तिर*. यमराज

जक्रया षडाबा. [त्रण इन्द्रियवालुं] एक

जीवडुं, [*आगियो] [*दे.जोईय] जकर *कस्तुवा. [नर, पुरुष] [अ.]

जकता कामा(त्रि). जकीला, "हठीला [बुद्धिमान, कुशळ] [उ.जकी]

ज के विमप्र. जे कोई, जि कंई]

जक्ख *तेरका.* यक्ष

जक्त चित्तसं. मदमो. वेताप. जगत

जभ चित्तसं. यक्ष

जक्षणि चंद्रवा. फसावनारी, लोभावनारी, अर्धदेव जातिनी स्त्री, [मूतडी]

जगडइ *गुर्जरा.* पीडे (दे.जगड-)

जगत्र आनंस्त. ऐतिका. नेमिछं. लावल. [त्रण] जगत [सं.]

जगत्र-वदीतु *हरिवि*. त्रण जगतमां प्रख्यात; जुओ वदीतउ

जगदीसरू आरारा. जगदीश्वर, भगवान जगनाह गुर्जरा. जगन्नाथ (सं.जगत्+नाथ) जगनि चंद्रवा. ? [बाज पक्षी], [उ.जगन] जगवंच गुर्जरा. जगतने छेतरनार, [भ्रामक,

खोटी]

जगाति *हम्मीप्र.* जकात, दाण

जगाती *पंचवा*. जकात लेनार

जगीश, जगीस * अभिक्त. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. ऋषिरा. कृष्णच. जिनरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. वीसरा. शृंगाम. हम्मीप्र. इच्छा, अभिलाषा, होंश (सं.जिगीषा); विमप्र. *प्रसन्नता, [अभिलाषा(पूर्ति)];

जुओ सुजगीश

जग्न दशस्कं(१). प्रेमाका. मदमो. यज्ञ जघन, जघन, आरारा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). थापानो भाग ज**ज्ञ-पुरुष** नरका. भगवान विष्णु [सं. यज्ञपुरुष]

जट प्रेमाका. जड, [मंदबुद्धि], जुओ जह जटा प्रेमाका. वेदना मंत्रोना पाठनो एक प्रकार

जटाजूटा ऋषिरा. जटा रूपे बांधेला (सं. जटाजूट)

जट्ट अक्तिर. जर्तदेशनो वासी, [जाट, अनाडी माणस]; जुओ जट, जाट

जट्टपणइ *उपवा*. जडपणे, [हठपूर्वक, अनाडीपणाथी]

जड * नेमिछं. [नाकनुं घरेणुं, चूनी]

जड *अखाका. उक्तिर. मूळ, मूळियुं [सं. जटा]

जडइ गुर्जरा. विराप. जोडाई जाय, [साथै थाय] (दे.जड-)

जडाया *लावल*. जडेला

जडाब *चतुचा. प्रेमाका*. पट्टीथी – चीपथी जडेलो [चूडलो]

जडिति शृंगामं. झट, झडपथी [सं.झटिति] जडी उक्तिर. एक वृक्ष, [पींपळो, गूलर के पाकड] (सं.जटी)

जडी *आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. रूपच.* जडीबुट्टी, औषधिना गुणवाळुं मूळियुं

जडी लावल. जडाईने

जडीज नलरा. दागीनामां हीरामाणेक जडवा-नुं काम करनार, जडियो (सं.जडितः) [*सं.जटिकः]

जडीत्र मदमो. सिंहा(शा). जडित, [जडेतुं]

जडीमूळी *प्रेमाका*. [औषधिना मुणवाळुं चमत्कारिक] वनस्पतिनुं मूळियुं जडीया *पंचवा*. हीरामाणेक वगेरे जडवानुं काम करनार जडुं *लावल*. जड्युं

-जण तेरका. बहुत्ववाचक प्रत्यय (सं.जन) जणि, जणणी आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप. षडाबा. जननी

जणमेलुं गुर्जरा. विराप. जनसमुदाय (सं. जन+मेल)

जणवइ गुर्जरा. राजा (सं.जनपति) जणसाल विकरा. [उत्तम प्रकारनुं] एक प्रकारनुं बख्तर (फा.जीन); जुओ जीण जणाविवइं उपना. जणाववायी

जणु *नलाख्या*. जण्यो (सं.जनितः) जणु *तेरका*. जाणे के

जतन, जतंन, जत्न अखाका अखाछ. आरारा. प्रेमाका. *वीसरा. रखण, काळजी, [संभाळ] (सं.यल); अखाका. अखाछ. आरारा. नरका. प्रवोप्र. प्रेमाका. प्रयल, महेनत, आचरण, [पुरुषार्य]; जुओ यतन

जतना जुओ यतना जतां-आजतां सम्यचोः जतां-आवतां जतियांरउ *उक्तिरः* यतिओनुं जत्म जुओ जतन जत्थ *ऐतिकाः तेरकाः* ज्यां (सं.यत्र) जथाबध *अखेगी*ः अकबंध, [एकठा]; जुओ जथे

जयारथ अखेगी. दशस्कं(२). नरका. ग्रेमाका. मदमो. यथार्य, जेवुं हम्य तेवुं,

साचुं: दशस्कं(१). जेवी रीते **चथे** *अखेगी***. ***अकबंध. [*एकरूप, "एकठाँ], "यथा, "यथास्थाने, "यथा-रूपे]; जुओ जथाबध **अविष वडावा.** जो के (सं.यद अपि) व्यक्तित वडावा. ज्यारे (सं.यदाकाल) **ब्रदीय** चतुचा. जो (सं.यद्यपि) **बन अखाछ.** हरिजन, संत **बन वीसरा. जान** (सं.जन्या) **बनिता, बनीता** *उषाह, प्रेमाका,* जनेता, माता (सं.जनयित्री) **बनुनी दशस्कं(२). ग्रेमाका. मदमो.** जननी **चनुका** *अखेगी.* **जन,** मनुष्य **वक्त** *प्राचीसं***. जान** (सं.जन्या-यात्रा) जन्मंतरि *श्रंगामं*. जन्मांतरमां, बीजा जन्ममां बन्ध प्राचीसं, यङ्ग **ज्यमत्सी** *उक्तिर. वीसरा.* जप करवानी माळा (सं.जपमालिका) **जन्म-** *वीसरा.* **ज**पर्वे **जनाप** *अखाका***.** जवाब **जनाय, जनाये वेताप. हरिवि.** एक सुगंधी द्रव्य **अम चतुचा:** ज्यम, जेम; जुओ यम **चमव समय** सम्यची. एकसाथे, [सामटां] वय-वाचना ग्रेमाका. यमनी याचना, जमन् जमझड वीसरा. कटार (सं.यमदंष्ट्रा) [रा.] **जमण** *गुर्जरा***. यमुना नदी** जनपतरंग वसंवि. वसंवि(ब्रा). यमुनानो

तरंग **जमर** *दशस्कं(२)***. वाद्यविशेष; जुओ झमरु** जमल, जमलंड अखाका, अखाछ, अभिक्रं, अंबरा. आसरा. कामा(शा). कृष्णवा. नरका. प्रबोप्र. प्राचीफा, प्रेभाका, विमप्र, लावल, षष्टिप्र, सिंहा(म). जोडमां, संगाथे, साथे; समान; पासे (सं.यमल); जुओ जवल जमला-अर्जुन *दशस्कं(१)*. यमलार्जुन **जमलासी** *आरारा(व)*. एक वनस्पति, जटामासी ? जमल्य, ज्यमलो प्राचीका. पासे, साथे (सं. यमल) **जमवारउ** *उक्तिर.* जन्मारो, जीवनकाल (सं. जन्मवारकः) जमहर *हम्मीप्र.* यमगृह, जौहर, [युद्धमां पराजय निश्चित थतां रजपूत स्त्रीओनो चिताप्रवेश जमालुं अखाछ. जामवुं जमाणो *अखाका*. जमावेलो, घन, [स्थूल ख्प जमार, जमारउ उपबा. जिनरां. षष्टिप्र. जन्मारो, भव (सं.जन्म+कार) **जमावुं** *अखाछ*. जामवुं जिमवर्ज जुओ यमिवउं जमीतर्उं जुओ यमीतउं जमुण *प्राचीफा*. यमुना नदी **जम्पइ** *ऐतिका***. कहे** छे जम्बुय ऐतिका. शियाळ [सं.जंबुक] **जम्म** *आरारा*. जन्म, अवतार

जम्मक्खण ऐतिका. जन्मक्षण जम्मण तेरका. जन्म (सं.जन्मन्) जम्मेती आरारा. जन्मती जम्मे आरारा. जमे जम्मु ऐतिका. जन्म जय- तेरका. जय थवो जयकरियां प्रेमाका. जय सूचवतां [जयकार थतां]

जय-ढक नलरा. विजयसूचक पडघम (सं. जयढका)

जयणा उक्तिर. *उपबा. देवरा. विमप्र. रक्षण, [जीवरक्षा], जीवहिंसा न थाय तेनी काळजी (सं.यतना)

जक्णारिहत *षष्टिप्र*. हिंसा टाळवाना प्रयल-थी रहित (सं.यतनारहित)

जयतवाद *नलरा*. विजय

जयतसिरी *ऐतिका.* [जयतिश्री], रागनुं नाम जयपत्तु *ऐतिका.* जयपत्र, [विजयलेख]

जयसछी विक्ररा. जयलक्ष्मी, [विजयरूपी लक्ष्मी]

जयवरतो, जवरतो, जवतो सिंहा(शा). जवल्लो, विरतो, विरत्न (सं.जगति विरत्नकः, प्रा.जए विरत्नओ); जुओ जेवरतो, ज्यवरतो

जरकशी, जरकसी नरका. प्रेमाका. सोना-रूपाना — जरीना तार भरेली, कसबी [फा.]

जरगो *आरारा(व)*. एक प्रकारनुं घास (हिं. जरगा)

जरगोजी आरारा(व). जरगोजां - एक

मेवो ?

जरजरी प्रेमाका. जर्जरित जरजडण सिंहा(शा). द्रव्यप्राप्ति ? जरठ कादं(शा). घरडो (सं.) जरण जुओ अजरण-जरण जरती ऋषिरा. डोशी, वृद्धा, [वडील स्त्री] (सं.)

जरद *गुर्जरा. विकरा*. एक प्रकारनां बख्तर उ.जर्दी

जरवबंघ विमप्र. जेरबंद, घोडाने [पेटे] बांधवानो सामान — [पटो] [फा.झेरबंद] जरवोजी सिंहा(शा). कसबी परतकामवाळुं

(फा.); जुओ जरदोरनी

"जरदोरनी [जरदोजी] "*नरका.* [भरतकाम — कसबीकामवाळी]

जरबाफ जिनरा. वस्त्रविशेष, [जरी अने रेशमना वणाटवाळुं वस्त्र] (फा.)

जरह लिलरा. विकरा. हम्मीप्र. एक जातनुं बख्तर(फा.)

जरह जिण *अंगवि. [बख्तरना प्रकारो] जरहि *विकरा. [एक प्रकारनुं बखतर]

जराजूरण कादं(ध्रु). खळीखळी गयेलो, [खखडी गयेलो] (सं.जरा+जूर्ण)

जरायुज अखेगी. ओरमांथी जन्मेलुं, [प्राणी-ओनो एक प्रकार] [सं.]

जरासिंघ, जरासिंघु *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं.* जरासंघ, [एक⁻राजा]

जरि वसंवि. जो (सं.यदि+रि के यहिं) जरिं उत्तिर. जीर्ण थयुं [सं.जरित] जरे अखाका. नलाख्या. पचे (सं.ज)

जल- *तेरका*. बाळवुं (सं.ज्वल्) **जळजळां** *प्रेमाका***. पाणी झमतां** जलजलियउं प्राचीसं. भीनुं थयुं जलजंत *प्रेमाका*. जळनां जंतु जलण आरारा. तेरका. देवरा. लावल. अग्नि (सं.ज्वलन) जलतरी विमप्र. तरवानी विद्या **जलबळ *** वीसरा. [जलस्थान, जळाशय] (सं. जल+स्थल) जलव अखाका. तेरका. वादळूं [सं.] जलवहि देवरा. जलसमुद्र (सं.जल+उदधि) जलिंद्ध विमप्र. पाणीनी ऋद्धि [- प्रचुरता] जलप- नलाख्या. हरिवि. बोलवुं, रटवुं (सं. जल्प) जलपूरी *आरारा*. आंसुभरी जळ मथी प्रेमाका. पाणी वलोवी. मिथ्या प्रयास करी **जळशायी** *प्रेमाका*, जळमां शयन करवानी क्रिया, जिळमां इबी जवं ते] जलशिनी *प्रेमाका. [एक जातनी माछली. मादा मगरमच्छ] [सं.जल+श्रंगी] जलसडं, जलसयउ *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). कमळ (सं.जलशय के जलेशय) **जलसप** *अंबरा*, जलसर्प जलसयउ जुओ जलसई जलहर अभिकः. "लावल. हरिवि. वादळ (सं.जलधर)

जल्पना अखेगी. बडबडाट [सं.] जब आरारा. ऐतिरा. कामा(त्रि). नेमिछं. *लावल, ज्यारे* जवखार उक्तिर. जवनो खार (सं.यवक्षार) **जनिंग** *प्राचीफा*. यमुना नदी **जवन** अखेगी, यवन, खाटकी **जवमात्र** *चतुचा*. जराक जबरलो *अखाका.नरका.* विरलो, कोईक ज; जुओ जयवरलो **जबराड** अंबरा. जवाय जबल, जबलि प्राचीफा. प्राचीसं. सदुस [जेवुं] (सं.यमल); जुओ जमल जवलो सिंहा(शा). पासे [सं.यमल] **जबहरी** *नलरा. विमप्र.* झवेरातनी वेपार करनार, झवेरी [फा.जौहरी] जवारें जुओ यवारें **जवासा** अखाका. अखेगी. उनाळामां थतो कांटाळो छोड [सं.यवास] **जशुं** *प्रेमाका. मदमो*. जेवुं [सं.यादृश]; जुओ यशूं जस आरारा. नरप. नंदब. नेमिछं. लावल. जेवुं [सं.यस्य] जसउ जुओ यसउ जस-जीत भदमो, जशने जीतनारो, यशस्वी जसनि "लावल. [उत्सव, सुख] [फा.जश्न] जसवाच गुर्जरा. विमप्र. यशोवाद, कीर्ति-गाथा जसवाय लावल. कीर्तिगाथा (सं.यशोवाद) जसवास आरारा. यशोवाद, यश बोलावो ते

जळ आंखोवाळी र

जढाखउ (जाळजळांखी) *वीसरा. [*जळ-

जिसहं *आरारा*. ज्यां, ज्यारे ज**सु** *आरारा. ऐतिका. तेरका.* जेनी (सं. यस्य)

जसु *गुर्जरा*. यश

जसु, जसुं कामा(शा). गुर्जर. नरका. नेमिछं. मदमो. लावल. जेवुं (सं.यादृशक)

जस्यउं *आरारा. प्रेमाका. लावल.* जेवुं (सं. यादृशकम्).

जस्यउं ऋषिरा. जईशुं जहर *आरारा*. झेर [फा.]

जहिइ *उषाह.* ज्यारे

जहियड *उक्तिर*. ज्यारे

जिं ०*षडावा.* ज्यां (सं.यस्मिन्)

जही तेरका. ज्यां (सं.यस्मिन्)

जहीं**इ,जहींय** उक्तिर. ज्यारे

जहे उषाह, ज्यारे

जं उक्तिर. *उपबा. तेरका. नेमिछं. लावल. वाग्भवा. जे (सं.यद्)

जं उपद्याः जो (सं.यतः)

जंखजाल, जंखजाळ कामा(त्रि). कामा(शा). प्रेमाका. झांखरांनी जाळ, झाडी [दे. झंखर+सं.जाल]

जंखर शृंगामं. झांखरा जेवुं, [सुकायेलुं] [दे.झंखर]

जंखंणी *मदमो*. जक्षणी, [खराब स्त्री] (सं. यक्षिणी)

जंग *नेमिछं. प्राचीफा. विमप्र*. समारंभ, आनंदोत्सव (फा.)

जंगाली *कामा(त्रि). [काटना जेवा राता रंगनुं] [फा.]

जंगोटो *दशस्कं(१). प्रेमाका*. जांघ ढांकतो लंगोट

जंघ आरारा. *वीसरा. साथळ (सं.जंघा) जंघा-जुंअली, जंघाजूअली लावल. जांघ [साथळ]नी जोड

जंत अखाका. अभिक. आरारा. चित्तसं. प्रेमाका. जंतु, जीव, प्राणी

जंति *आरारा. ऋषिरा.* जाय छे जंति(?) [*संति] *तेरका-अन्.* शांति

***जंत्ये** *चंद्रवा*. जाते

जंत्र अखाछ. यंत्र; चतुचा. ?, [ओजार]; कामा(शा). प्रेमाका. एक तंतुवाद्य, [जंतर]; चित्तसं. प्रेमाका. यंत्र, तांत्रिक आकृति, अक्षर ने आंकडावाळी आकृति जेमां देवताओनो वास मानवामां आवे छे; चित्तसं. व्यवस्था, युक्ति, पद्धति

जंत्रभेद चित्तसं. रचनानो भेद एटलेके रचायेला पदार्थनी क्रिया

जंत्र-मध्याह दशस्कं(१). प्रेमाका. भर-बपोर, छायायंत्र प्रमाणेनो भरमध्याह जंत्री अखाका. जंत्र (वाजित्र) वगाडनार जंथ अखाछ. जंत्र, तूत्(?), [प्रपंच, तरखड]

जंन अखाछ. हरिजन, [भक्तजन]

जंप नेमिछं. शांति

जंपइ अभिऊ. आरारा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल. विक्ररा. हरिवि. बोले, कहे (सं. जल्पति)

जंपउ *गुर्जरा*. अशांति, अजंपो, [क्षुब्धता,

आघात (प्रा.दे.झंप) **जंपाववुं** *दशस्कं(१)*. जंपापात करवो, कूदी पड्यू जंब आरारा(व). तेरका. जांबु (सं.जंबु) जंबीर, जंबीरि आरारा(व). नरका. "नरप. जंबीरी, लींबुडी; लीबुं जेवुं एक फळ (सं.) **जंबु, जंबू** *आरारा(व). ऋषिरा.* जंबुनं दक्ष (सं.) **जंबुक** अखाका. शियाळ [सं.] जंबू जुओ जंबू जंबूक नरका. प्रेमाका. शियाळ [सं.जंबुक] **जंभा** कादं(ध्रु). कादं(शा). श्रंगामं. बगासुं (सं.जृम्भा) **जंभाआइ** *उक्तिर*. बगासुं खाय (सं.जन्मते) **जंम** *गुर्जरा.* जन्म **जंम** नरप(द). यम **जंभण** *गुर्जरा*. जन्म (सं.जन्मन्) जंवार**ड** शंगामं. जन्म, अवतार [सं.जन्म+ कार के वारी जंबारि अभिक. ज्यारे [सं.यत्+वारे] **जा** *वीसरा***. जे; जुओ** या जा तेरका. ज्यां सुधी (सं.यावत्) जाइ *प्रबोप.* *जेवी, जि जाइय,जाइया ऐतिका. ऐतिरा. जगा, स्थान **जाइव** *तेरका*. यादव **जाइवर्ज** अभिक. उक्तिर. कर्पूमं. जवुं (सं. यातव्यम्) जाइवा-गति हरिवि. जादवानी गति, कृष्ण-नी गति

जाइसर, जाईसर *प्राचीसं. शृंगामं*. पूर्वभव-स्मरण (सं.जातिस्मर) **जाई** उक्तिर. जईने **जाई** *आरारा*. जन्मी **जाई** *गुर्जरा. विराप.* पत्नी (सं.जाया) जाईसर जुओ जाइसर **जाउ** *गुर्जरा*. जन्मेलो (सं.जात) **जाउ** **गुर्जरा.* [ज्यारे] **जाउति** कृष्णच. जव कि अन्य हलका अनाज]नी राब, [कांजी] [सं.यवागु+ ली **जाओ** "षडाबा. [उत्पन्न थयुं, थयुं] (सं.जातः) **जाकी(?) ***नलाख्या. [जोवुं ते] झांकी **जाख** प्राचीसं. यक्ष **जाखल** *आरारा. षष्टिप्र.* यक्ष **जाग** अखाछ. पंचवा. जग्या, स्थळ, ठेकाणूं (फा.जायगाह) जाग *गुर्जरा. प्रेमाका.* यज्ञ (सं.याग) **जागर** *ऐतिका*. जामरण **जागरता** *आनंस्त*. जाग्रति **जागवइ** *नेमिछं*. जगाडाय, उत्पन्न कराय जागणी अखाका. जागृति, जािगता होतुं ती **जागीइ** *उक्तिर*: जगाय **जाग्य** *अखाका. चंद्रवा. चित्तसं.* जग्या *जाघडी जांघडी वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). जांघ (सं.जंघा) **जाचना** *प्रेमाका*. याचना, मागणी

जाचंध प्राचीसं. लंलिरा. जन्मांध (सं. जात्यन्ध) जाचा *नेमिछं*. जातवाळा, ऊंची जातना, [साचा] (सं.जात्य, प्रा.जञ्च) जावियं जुओ जावियं **जाची** अभिक्त याचेली जाचीक मदमो. सिंहा(शा). याचक **जाजर** *दशस्कं(२)***. वाद्यविशेष** जाजरडं अखाछ. अंबरा. आनंस्त. उक्तिर. *उपवा. कादं(शा). गुर्जरा. वाग्भवा. जर्जरित, जीर्ण, क्षीण, [दुर्बक] **जाजि** *आरारा*. झाझूं, घणूं जाजीवा *उपदा*. जीवनभर, आजीवन (सं. यावज्ञीवम्) **जाजुल** *प्रेमाका.* जाञ्चल्यमान, प्रतापी, [उग्र] **जाजुलता** *दशस्कं(२)*. जाञ्चल्यमानता, ਫੀਸ਼ਿ **जाज़ुल्यमान** अखेगी. प्रेमाका. जाज्वल्य-मान, प्रकाशथी झळहळतो **जाट** *चतुचा. *नेमिछं*. अजड, [अनाडी]; जुओ जट्ट **जाडेरो** *अखेगी.* वधु जाडो, हष्टपुष्ट **जाडो देह** चित्तसं. पुष्ट शरीर, पुष्टता **जाड्य** *अखाका. चित्तसं.* जडता, अज्ञान [सं.] जाण अखाका. अखाछ. उपबा. गुर्जरा. चतुचा. चंद्रवा. प्राचीसं. ललिरा. षष्टिप्र. ज्ञानी, जाणकार (सं.जानन्)

लावल. ज्ञान, जाणकारी, खबर जाण *वाग्भवा*. यावत्, सुधी; जुओ याण **जाणजं गू**र्जरा. जवुं ते [रा.] **जाणणा** *आनंस्त*. जाणवुं ते जाणपहार, जाणनहारो उक्तिर, अखेगी. *वाग्भवा. षडाबा*. जाणनारो **जाणहारु** *उक्तिर*, जनारो **जाणं** *षष्टिप्र***. (तुं)** जाणे छे जाणां छां *चतुचा*. समजे छे, माने छे जाणि *वसंवि.* जाणे, [जाणे के] (सं.जाने) **जाणि कि** वीसरा, जाणे के **जाणिवउ** *षष्टिप्र*. जाणदो **जाणी** *आरारा.* ज्ञानी, जाणकार जाणीइ कादं(शा). वाग्भबा. जाणे के **जाणीतउं** *उक्तिर*. जणातुं (सं.ज्ञायमानम्) **जाणो-दाणो** *नरका. प्रेमाका.* फजेतो. फजेती **जाण्य** *चित्तसं*. ज्ञान, इन्द्रियज्ञान **जात** *प्राचीसं*. यात्रा **जात** *कामा(त्रि).* [जन्मेलुं, संतान,] दीकरो, दीकरी [सं.] जातइ हुतइं (क्षय जातइ हुतई) *आनंस्त. [क्षय पामे छे] **जातक** *आरारा.* जन्मेलो (पुत्र) [सं.]; *गुर्जरा*. जन्मफळविषयक ज्योतिष (सं.) जात नीवडी *प्रेमाका*. हलकी जात नकी **जातमात्र** *आरारा. गुर्जरा*. जन्मतां ज (सं.) *अखेगी*. अवरजवर जातायात यातायात ।

जाज अखाका. अखाछ. अखेगी. नलाख्या.

जाति *आनंस्तः [वर्ग, प्रकार, श्रेणी, रूप] जातिसर विक्रराः जातिस्मरण, [पूर्वजन्मनुं स्मरण] [सं.जातिस्मर] जातिस्मरण आरासः पूर्वजन्मनुं स्मरण

जातिस्मरण *आरारा.* पूर्वजन्मनुं स्मरण [सं.]

जाती वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). जाईनो फूलछोड (सं.जाति)

जातीइं उपबा. जन्मथी, [कुलथी]

जातीफल आरारा(व). जायफळ (सं.)

जातीसमरण विक्ररा. जातिस्मरण, पूर्व-जन्मनुं स्मरण

जातीस्मर *गुर्जरा.* पूर्वजन्मनुं स्मरण (सं. जातिस्मर)

जातु " नेमिछं. [निंदावाचक उद्गार], [*खरेखर, "नक्की] [सं.]

जात्य *आनंस्त. [उत्पन्न थाय छे, थाय छे, नीवडे छे] [सं.जायते]

जात्र प्रेमाका. विकरा. तीर्थयात्रा; *गुर्जरा. प्राचीफा. देवपूजानो उत्सव (सं.यात्रा)

जात्र *हरिख्या.* *उत्सव (सं.यात्रा), [*जात — प्राप्त अर्थे जात्र]

जात्र विमप्र. धांधल, धमाल, [तमासो]; जुओ जोयणजात्र

जात्रणि प्राचीफा. यात्रिक स्त्री (सं.यात्रिणी) जात्रि विक्ररा. *सभामां, [उत्सवार्थे, भेगा यईने]

जात्रिगु *प्राचीफा*. यात्रिक

जादर * ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. प्राचीसं. एक प्रकारनुं सफेद रेशमी कापड [दे.जदृर] जाद्रणी *विमप्र*. जानरणी, जानडी; जुओ जांद्रणी

जान अखाका. अखेगी. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. नुकसान (फा.झियान)

जान षष्टिप्र. वाहन (सं.यान)

जानखत्र *ऐतिका. प्राचीसं.* जान (सं. जन्यायात्रा) [दे.जन्नता]

जानणीइ प्रद्युचुः जांदरणी, जानरणी

जानत्र *चारफा. प्राचीफा. जान [सं. जन्यायात्रा] दि.जन्नता]

जानाबासंख *उक्तिर.* जानीवासो [दे. जन्नावास]

जानी उक्तिर. जान (सं.जन्या) [दे.जन्ना] जानीवासउ उक्तिर. जाननो उतारो (सं. जन्यावासकः)

जानु आरारा. कामा(शा). प्रेमाका. गोठण, घूंटण, ढींचण [सं.]

जानुत्र *उक्तिर*. जान **[रे**.जन्नत्ता] [रा.] **जाबतज** *जिनैरा.* *यत्न, [जाहो, रक्षा, संभाळ]

जाम आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. नलरा. नेमिछं. विक्ररा. ज्यारे, ज्यां सुधी, जेटलामां (सं.यावत्)

जाम चतुचा. नरका. प्रेमाका. प्रहर, त्रण कलाकनो समय, रात्रिनो प्रहर (सं.याम) जामइ *षडाबा. [ज्यारे] [सं.यावत्, प्रा. जाव]

जामइ उक्तिर. जन्मे [सं.जन्मते]
*जामइ (धरणउ) [जावइ धरणउ] *तेरका.
*प्राचीसं. [पकडी शकाय]

जामण अखाछ. मेळवण; जुओ ज्यामण जामण जिनरा. प्रबोप्र. जन्म (सं.जन्मन्) जामण ऐतिका. यामिनी, रात्रि जामण-जाया जिनरा. [एक मातानुं संतान], भाई

जामणि जिनरा. माता; जुओ जांमण जामणु जुओ कजामणु

जामनी चतुचा. प्रेमाका. रात्रि (सं.यामिनी) जामिल गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं. ललिरा. लावल. विमप्र. जोडमां; जेवुं, समान, पासे; साथे, एकठा (सं.यमल)

जामा *प्रेमाका*. घेरवाळा मोटा अंगरखा, [झभ्मा] [फा.जामः]

जामिनी चित्तसं. नरका. प्रेमाका. रात्रि (सं.यामिनी)

जामिनी-जीवन अखाका. यामिनी(रात्रि)नी पति, चंद्र

जामी *आरारा*. जन्मी

जामु चतुचा. जामेलुं

जामुक वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). बेलडी, जोडी (सं.यामक), जुओ यामुक

जाय आरारा. आरारा(व). प्रेमाका. जाईनो फूलछोड (सं.जाति)

जाय अभिक. जायो, पुत्र [सं.जातः]; तेरका. जाया, दीकरी (सं.जाता)

जाय**उ** *उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा.* जन्यो, जन्म आप्यो

जायगाइं *आनंस्त*. जग्याए

जायणहार *षडाबा.* जनार

जायव *तेरका.* यादव

जायवर ऋषिरा. देवरा. जावुं, जवानुं जायो अखाका. अभिक्त. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका. जन्म्यो, जन्म आप्यो (सं. जातः); नरका. जन्म्यो, [पुत्र]; प्रेमाका. पुत्र

जायो (जस जायो) लावल. [(यश) उत्पन्न थयो, (यश) थयो] [सं.जातः]

जार *प्रेमाका***. यार, परस्त्री साथे प्रीति** करनार [सं.]

जारी-वजारी **प्रेमाका*. [जारकौशल्य, व्यभिचार करी संताडवो ते]

जारे *शृंगामं. [जार – उपपति – परपुरुष प्रेमीओ

जाल वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). जाळी, माथा पर पहेरवानुं घरेणुं (सं.जालक); प्रेमाका. *झाल, *स्त्रीओनुं काननुं एक घरेणुं, [माथा पर पहेरवानुं घरेणुं]; जुओ सिरि जाल जाल *विमप्र. [झाडी] [सं.]

जालउर *उक्तिर. प्राचीसं.* जाबालिपुर, जालोर

जालरज *प्राचीसं***. जालोरनो वासी**

जालक शृंगामं. जातुं, झूंड [सं.]; तथा जुओ कोलिका जालक

जालगवक्ख चारफा. जाळीवाळो गोख, झरूखो (सं.जालक-गवाक्ष)

जाळजळांखी जुओ जळाखउ

जाल ने माल अखेगी. जाळुं [जाळियुं, गोख] अने घरनो माळ (?)

जालमजीर *प्रेमाका*. जोरदार जालीम, भारे

जुल्म करनार जालबद्द *ऐतिका*. जलावे, बाळे (रा.); *आरारा.* जलावे, दुःखमां काढें जालां *षडाबा.* छिद्र, [भींतमांनी जाळी] (सं.जालक)

जालि अभिकः भेदप्रपंच, [दगो] (सं.जाल) *जालिजा, [आलिजा] **गुर्जरा*. [मोटा दरञ्जावाळा, महामान्य] [अ. आलीजाह], [अलबेलो, रसिक] [रा. आलिजौ]

जालिय गुर्जरा. *गळामां पहेरवानुं घरेणुं (सं.जालिकः), [*जालक – माथा पर पहेरवानुं घरेणुं]

जािलवी विमप्र. जाळवीने, [संभाळी लईने, बचावीने]

जाली *लावल*. सळगावी (सं.ज्वल्)

जालीय-गुख वसंवि(ब्रा). जाळीवाळो गोख — बारी (सं.जालिकगवाक्ष)

जाव *तेरका*, त्यां सुधी (सं.यावत्)

जावक मदमो. अळतो (सं.याचक)

जावजिव, जावजीव *देवरा*. आजीवन, जीव छे त्यां सुधी (सं.यावजीव)

*जावियं [*जावियं] *तेरका.* ?, [*श्रेष्ठ] [सं.जात्यम्]

जावुं लहइ आरारा. जवानुं छे जावेल उक्तिर. जाईनुं तेल (सं.जात्यतैलम्)

जास आरारा. कृष्णच. प्राचीका. लावल. जेनुं (सं. यस्य)

जासक गुर्जरा. "नेमिछ. प्रेमाका. लावल. पुष्कळ, सारी पेठे, खूब; जुओ झासक जासु तेरका. वसंफा. वसंवि. जेनुं (सं. यस्य); आरारा. लावल. जेने (सं.यस्य) जासूल आरारा(व). नेमिछं. जासूद, जासूद-नां फूल

जासो लावल. जेनो [सं.यस्य]

जाह *ऐतिका.* जेनुं

जाहउ *उक्तिर*. शाहूडी (सं.जाहकः)

जाहरे मदमो. जाहेर

जाहारी चंद्रवा. जाहेर, प्रगट

जाहो *पंचवा. [जाओ]

जाद्धि जुओ याद्वि

जां उक्तिर. उपबा. उषाह. गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र. षडाबा. ज्यां, ज्यां सुधी, ज्यारे (सं.यावत्)

जांगडीओं मदमों. जांगिया ढोल, [मोटा लश्करी ढोल]

जांगि *विमप्र*. ढोलनो एक प्रकार [मोटा, लश्करी ढोल]

जांगी ढोल *हम्मीप्र*. युद्धनां पडघम जांगी वाय *नरका*. जांगियो ढोल वगाडे, जोरथी चेतवणी आपे

जांधडी वसंवि. जंघा, [जांघ]; जुओ जाघडी जांज देवरा. जाणनार [सं.जानन्]

जांणह *ऋषिरा. [ज्ञान]

जांणिकि वीसरा. जाणे के

जांणीतल वेताप. जाणीती

जांदरणी *प्रेमाका*. जानरडी, वरनी जानमां आवेली स्त्री

जांद्रणी दशस्कं(२). प्रेमाका. लावल. जानमां आवेली स्त्रीओ, जानरडी; जुओ जाद्रणी जांबुआ नरका. जांबु — एक फळ [सं.जंबू] जांबुक कामा(त्रि). जंबूक, शियाळ जांमण देवरा. जणनार, जन्म आपनार, [माता] (सं.जन्म); जुओ जामणि जांमित आरारा. जोडमां, समान; जोडमां, बन्ने; कर्पूमं. साथे, पासे (सं.यमल) जांमीइ शृंगामं. (डूमो) जामे जां लगई उपवा. ज्यां सुधी जांह जुओ यांह जांहरि अभिऊ. ज्यारे जांहां मदमो. ज्यां (सं.यस्मात्) जांहे *चंद्रवा. [बरबाद, नष्ट] [फा.झांहे] जि उपवा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वाग्भवा. षडावा. ज (सं. चैव)

जि उसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. षडाबा. जे (सं.ये); जुओ यि

जिङ्कार कादं(शा). जयजयकार (सं.जय-कार)

जिंड प्राचीसं. जीव जिंड, जिंड आरारा. वीसरा. जेम जिंके आरारा. प्राचीसं. जे (रा.; सं.ये के) जिंको गुर्जरा. विमप्र. विराप. जे कोई (सं. य:+कोऽपि)

जिगिमिगए स्थूलिफा. झगमगे जिट्ठ तेरका. जेठ मास (सं.ज्येष्ठ) जिण जुओ जरह जिण, जीण जिण आरारा. देवरा. वीसरा. जे जिण तेरका. जिन भगवान; जुओ जिणु जिण तेरका. जाणे के; जुओ जिणु जिणइ *उक्तिर*. जय पामे, हरावे [सं.जि-, प्रा.जिज]

जिणइं करी *आनंस्त*. जेने कारणे, जेना वडे

जिण कारणि आरारा. कारणके

जिणवय *ऐतिका*. जिनपति

जिणसाली(?) *विमप्र*. चामडानुं बख्तर [सजेला]

जिणहर आरारा. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. जिनमंदिर (सं.जिनगृह)

जिणंद आरारा. तेरका. देवरा. लावल. जिनेन्द्र, रागद्वेष आदिने जीतेला तीर्थंकर

जिणि *तेरका. नेमिछं. षडाबा.* जेणे (सं. येन)

जिणिड *गुर्जरा. षडाबा. षष्टिप्र.* जीत्यो (सं. जि-, प्रा.जिण)

जिणिंदु *ऐतिका*. जिनेश्वर देव

जिणु गुर्जरा. जिन भगवान; जुओ जिण

जिणु तेरका. जाणे के; जुओ जिण

जिणेसर आनंस्त. तेरका. लावल. जिनेश्वर, तीर्थंकर

जिण्यज *उक्तिर*. जीत्यो, हराव्यो (सं.जि-, प्रा.जिण)

जित्त *नेमिछं*. जितायेला, [जीत्या]

जिन देवरा, जे

जिनउं *षडाबा.* जेन्ं

जिनकल्पी नलरा. जैन मुनिओ माटेना आचारोवाळो (सं.)

जिनता उथाह. जनेता (सं.जनयित्री)

जिपही आरारा. जीत, [जय मेळव] जिन्भेय शंगामं. [बगासां खाय], *आळस खाय (सं.जम्भते) जिभ्या दशस्कं(१). जिह्वा, जीभ **जिम** *गुर्जरा. लावल.* यम जिम उक्तिर. उपद्या. गुर्जरा. तैरका. नलाख्याः नेमिछंः लावलः । वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. जेम, जेवुं (अप.जेवं); जुओ यिम जिमइ आरारा. उपवा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. षष्टिप्र. जमे (दे.जिम्म-) **जिमइ ***ऋषिरा. जिवा, जे वखते] **जिमघर ऋषिरा**. यमनुं घर (सं.यमगृह) **जिमण** *उषाह*. जमण [सं.जेमन] जिमणु आरारा. उक्तिर. उपबा. वीसरा. जमणो **जिमणवार** नलरा. जमणवार जिम ते *उपवा*. दाखला तरीके, जेमके जिमवार देवरा. ज्यारे **जिमाडइ** उक्तिर. वीसरा. जमाङे जिम्बूं उक्तिरः जमवं दिःजिम्म-जिमी *आरारा*, जमीन जिमी *उक्तिर, नेमिछं, वाग्भवा,* जमीने **जिमीतूं** उक्तिर. जमातूं **जिमु** *गुर्जरा.* जेम **जिवारडं** अभिऊ. आनंस्त. उपबा. ज्यारे [सं.यद्वारे] जिशाउं, जिश्यउं जुओ यिशउं, यिश्यउं **जिसइ** *आरारा*. जे वखते, ज्यां जिसच उक्तिर. वसंफा(ल). वीसरा. षडावा. जेवुं (सं.यादशकम्)

जिसिइ *नेमिछं***. जेवा, [ज्यां,**ज्यारे]; *गुर्जरा*. विरापः जेथी जिसिउं आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल. जेवुं (सं.याद्रशकम्) **जिसे ***देवरा: ज्यां, ज्यारे] जिस्यउ ऋषिराः नेमिछंः लावलः वसंफाः वसंवि. जेवो (सं.याद्रशक) **जिहवारि** अंबरा. जे वारे. ज्यारे **जिहाज** *देवरा*. जहाज जिहां आनंस्त. आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. लावल. वसंवि. वीसरा. षडाबा. ज्यां (सं.यस्मिन्); जुओ यिहां जिहां किण जुओ यिहां किण जि**हां किणि** *ऐतिरा*. ज्यां. जे ठेकाणे **जिह्नारइ** आनंस्त. ज्यारे **जी** वसंफा. वसंवि. जे (सं.ये); तेरका. जे स्त्री (सं.या) जी- (जीयइ) वीसरा. जीवे (सं.जीवति) **जीउ** *गुर्जरा*. जीवन **जीजंब** *आरारा(व).* जींजवो – एक घास-छोड़ ? **जीण** उक्तिर, जे जीण, जीण, जींण "गुर्जरा. "विकरा. **विराप.* [चामडानं बख्तर] [फा.जीन]; आरारा. घोडानो साज, पलाण; जुओ जरह जिण, जिण **जीण** *आरारा.* घोडानो साज, पताण फा. झीण) **जीणइं** *उपवा. नेमिछं*. जेणे (सं.येन)

जीणं *उक्तिर*. जे

जीजंग शृंगामं. जीर्ण अंगवाळुं, कृशांग जीज्यउ *उक्तिर*. जीत्यो, हराव्यो (सं.जि-, प्रा.जिण)

जीतूं-फलूं *अभिक. [जीतेलुं अने फळेलुं — सिद्ध थयेलुं]

जीन *प्रेमाका*. पलाण [फा.झीण] जीनस पंचवा. [जणस], वस्तु, चीज, माल (अ.जिन्स)

जीपइ अंबरा. आरारा. उक्तिर. उपवा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका, गुर्जरा. चारफा. नंदब. प्राचीका. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. शृंगामं. षडाबा. जीते (सं.जि-, प्रा.जित्त, जिप्प); जुओ यीपइ

जीपक आनंस्त. जीतनार जीपण अंबरा. जीत जीपणहार अंबरा. उपवा. जीतनार जीपिबुं ऐतिरा. ऋषिरा. जीतवुं जीभ जुओ जीम जीभाहा प्रेमप. जीभ वडे जीम वीसरा. जैम

*जीम, [जीभ] *अभिक. [मंगल समाचार लावनारने अपाती सोनानी जीभ]

जीमइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* जमे [दे.जिम].

जीमणउ जिनरा. षडाबा. जमणो जीमणवार प्राचीसं. जमणवार जीमाबङ्क आरारा. जमाडे जीमात ऋषिरा. मेघ [सं.]

जीयइ जुओ जी-जीयूं देवरा. जेम, जे रीते (हिं.ज्यूं) जीलतां शृंगामं. जळकीडा करतां (दे.झिल्ल) जीव सिंहा(शा). जीभ जीव खूतवो प्रेमाका. चित्त चोंटवुं जीवत मदमो. जीवित, [जीवन] जीवरखी प्रेमाका. विक्ररा. एक प्रकारनुं बखार

जीवापोता *उक्तिर*. एरंडाना वर्गनुं एक वृक्ष [जेनां फळनी माळा पहेराववाथी पुत्र जीवे छे एवी मान्यता छे] [सं.पुत्र-जीवकः]

जीवारे *देवरा***.** ज्यारे

जीवांतक प्रेमाका. जीवोनो अंत लावनार, पारधी [सं.]

जीवित्व *दशस्कं(१)*. जीवित्वय, जीवित, [जीवन]

जीविय गुर्जरा. तेरका. जीवित, जिंदगी जीवी अभिक. आरारा. उषाह. नलरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. जीवन (सं. जीवित); जुओ यीवी

जीवी विमप्र. जिवाई, भरणपोषण [सं. जीविका]

जीबीदान *प्रद्युचु*. जीवितदान, [जीवनदान] जीवू *आरारा.* जीवन

जीसे देवरा. जेने (हिं.जिसे)

जीह *गुर्जरा.* ज्यां

जीह ऐतिका. जिनरा. नेमिछं. प्राचीसं. जीम (सं.जिह्ना)

जीहडी लावल. जीभ (सं.जिह्ना) जीहा लावल. जीभ (सं.जिह्ना)

जीहां *उपबा*. ज्यां

जु उक्तिर. कादं(ध्र). कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. "प्रद्युचु. षडाबा. जे (सं.यः) **जु** *गुर्जरा. तेरका. षडाबा.* ज; जुओ जि **जु** आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. वाग्भवा. षडाबा. जो (सं.यतः) **जु** *नलाख्या*. जुओ (सं.द्योतयत) **ज़ुअलइं** *गूर्जरा*. जोडीमां, [साथे] (सं. युगल); जुओ जूंली जुआ उक्तिर. दशस्कं(१). प्रबोप्र. प्रेमाका. जुदा **जुआरि** उक्तिर. बळद (सं.युगन्धरी) जुइ कादं(शा). तेरका. जुए (सं.द्योतते) **जुइ** *प्रद्युचु*. जुगार (सं.द्युत) **जुक्त** *अखाका. प्रेमाका.* युक्त, योग्य; चित्तसं. विचारपूर्वक **जुक्ति** चित्तसं. विचारणा, तर्क, दलील, विचारप्रक्रिया, युक्ति, योजना **जुक्तु** *षडाबा***. युक्त,** जोडायेलुं जुक्त्य चित्तसं. मर्म, विचारणा, विचार-सरणी [सं.युक्ति] जुग आरारा. जोड, बे (सं.युग) **जुग** *चंद्रवा*. जगत, जग; जुओ युग जुगत, जुगुतु *षडाबा.* योग्य [संबद्ध, संगत, वंधबेसतुं] (सं.युक्त) जुगत, जुगति *नरका.* रचना, [गोठवण] (सं.युक्ति) जुगतं अखाका. आरारा. गुर्जरा. नरका. लितरा. योग्य (सं.युक्त); नरका. योग्य, सरखुं, [बंधबेसतुं] **जुगता** *नरका*. युक्ति, करामत, रीत

जुगताइ *मदमो***. मेळ जुगताजुगति** *आरारा*. योग्यता अनुसार जुगता ते जुगति प्रेमाका. योग्य करामत [– युक्ति, चातुर्य] जुगति लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). योजना, युक्ति, बुद्धिचातुर्य; जुओ जुगत **जुगती** नरका. योग्य, सरखी **जुगतुं** *नरका.* युक्त – योग्य [स्थिति], [लाग, मोको]; जुओ युगतुं **जुगते** अखेगी. नरका. प्रेमाका. युक्तिपूर्वक, औचित्यथी, [सुंदर रीते] **जुगत्य** अखाका. युक्ति, [योजना, मर्म] **जुगदाधार** *दशस्कं(१)*. जगदाधार जुगदीश *दशस्कं(१). मदमो*. जगदीश जुगदीश्वरी जुओ युगदीश्वरी **जुगपवरु** *ऐतिका*. युगप्रवर **जुगपहाणु** *ऐतिका*. युगप्रधान जुगम अखेगी. कामा(शा). दशस्कं(१). मदमो. जोडकुं, जोड (सं.युग्म) **जुगल** *वीसरा.* जोड (सं.युगल) **जुगलाधरम** **गुर्जरा.* [युगल रूपे जन्मेलां स्त्रीपुरुष पतिपली बने ते जातनो आचार]; जुओ जुगलाधर्म्म **जुगवर** *ऐतिका.* युगमां श्रेष्ठ, उत्तम **जुगिजुगता** जुओ युगियुगता **जुगांण, जूंगाण** *सस्तस*. ?, [धुमाडो] [उ. दुखान] **जुगुतु** जुओ जुगत जुग्गविओ षडाबा. (व्यायामना) अभ्यास-

वाळो (सं.योग्य परथी प्रा.) **जुग्म** *अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका*. जोड, बे (सं.युग्म) **जुग्म तुरि** *प्रेमाका.* **अश्वनी जोडी, अश्विनी**-कुमार; जुओ तुरी **जुजवा** *देवरा*. जुदा जुजाल्य *मदमो. –*, [योद्धा] [हिं.जुझार; रा. झुज्झमल] जुजुआ, जुजुया, जुजुबा *चंद्रवा. चित्तसं. नरप(द). सिंहा(शा)*. जुदाजुदा **जुठ** *चंद्रवा*. एठुं [सं.जुष्ट] **जुडइ** *वीसरा*. जोडाय [दे.] **जुडता** *उपदा.* यथायोग्य, बंधबेसता **जुडियां** *गुर्जरा.* [लडवा माटे] सामसामे आव्यां [दे.जुडिअ] **जुत्त** *आरारा.* युक्त, -वाळुं **जुध** कामा(शा). युद्ध **जुन्ह** *प्राचीसं.* ज्योत्स्ना, [चांदनी] जुमना *मदमो.* यमुना **जुय** *तेरका.* युगल (सं.युग-) **जुयउं** जिनरा. नंदब. षडाबा. जुदुं (सं.युतः) **जुयल** *तेरका*. युगल जुयारी *षडाबा.* जुगारी (सं.द्युतकारी) **जुलहो** अखाका. वणकर (हिं.) **"ज़ुलि दुलि "**अंबरा. [काचबो] दि.] जुवटुं *मदमो. रूपच.* जुगार (सं.द्युत परथी) **जुवट्ट** *विक्ररा*. जुगार, जुगटुं **जुवा** अखाछ. जुदा जुवारी *वीसरा*. जुगारी (सं.द्युतकारिन्) **जुवां** *पंचवा*. जुगार, द्युत

जुब्बण *गुर्जरा. तेरका.* यौवन जुहर हम्मीप्र. जौहर, [पराजय निश्चित धतां रजपूत स्त्रीओनो अग्निप्रवेश] यमगृह) जुहार आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. "प्रबोप्र. प्राचीसं. जिनरा. नरका. प्रेमाका. विक्ररा. *विमप्र. वीसरा. नमस्कार, प्रणाम [दे.जोहार] **जुहारइ** *अंगवि. लावल. वीसरा.* प्रणाम करे **जुहारडु** शृंगामं. जुहार, नमस्कार (दे.जोहार) **जुहारि** *उषाह*. नमस्कार **जुहिय** गुर्जरा. जूई (सं.यूथिका) **जुं** *आरारा.* जेम, जेवां (हिं.ज्युं) **जुंजनकरण** *आनंस्त*. युंजनकरण, संयोगी-करण, जेने लईने कर्मनो आत्मा साथे संबंध थाय ते युंजनकरण [सं.] **जू** नलरा. ललिरा. लावल. जुगार (सं.द्युत) **जूअ** *नलरा*. जुगार (सं.द्युत) **जूअली** विमप्र. बे [सं.युगल] **जूआ** *विमप्र*. जुदा [सं.युत] **जूआ** *प्रेमाका.* ढोरना शरीर पर चोंटतुं एक जीवड्रं **जुआरउ** *उक्तिर.* जुगारी (सं.द्युतकारकः) **जुआरी** नलराः जुगारी (सं.द्युतकारिन्) **जूइ** कादं(शा). जुए; नलाख्या. जोई; जुओ **जूई** *आरारा. वाग्भवा.* जुदी **जूड** *उक्तिर. कार्द(शा)*. द्युत, जुगार जूड, जूडं उक्तिर. कर्पूमं. प्रबोप्र. सिंहा(म).

जुदुं (सं.युत) **जूऊउ** *उपबा*. जुदुं (सं.युतः) **जूका** *षडाबा.* जू (सं.यूका) **जूक्त्य** अखेगी. जुक्ति, [मर्म] (सं.युक्ति) **जूगांण** जुओ जुगांण **जूजबुं** दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. जुद्जुद्रं, जातजातन् जुजुर्ड अखेगी. आरारा. उपबा. उषाह. गुर्जरा. जिनरा. नलाख्या. प्रधुचु. प्रबोप्र. विमप्र. वाग्भबा. जुदुंजुदुं, जातजातनुं (सं.युतयुत) **जूठिलु** *गुर्जरा*. युधिष्ठिर **जूडी** *नरका*. नानो झूडो, [लट] [सं.जूट-] **जूतउ** अखाका. अखाछ. प्राचीसं. जोडायो, जोडेलो (सं.युक्त) **जूतीय** *आरारा.* युक्त, -वाळी जूपइ उक्तिर. जोडे [सं.युक्त, प्रा.जूत, जुष] जूरी नलरा. *सतामणी, "जोराई (फा.जोर), [खिन्न, दुःखी] दि.जुरिय] **जूवउ** *आरारा.* जुदो **जूबटउ** गुर्जरा. लिलरा. जुगार (सं.धुत) **जूबणु** *गुर्जरा.* यौवन **जूवनु** *षडावा*. यौवन **जूवां** *प्रेमाका.* जुदां **जूसर** *षडाबा.* झूंसर्ह, धूंसर्ह (सं.युगशर) **जूह** विमप्र. द्युत, जुगार **जूही** *आरारा(व). प्राचीफा.* जूईनो छोड (सं.यूथिका)

जुअलइ **जूंसरुं** *उक्तिर. प्रेमाका.* झूंसरुं, धूंसरुं **जे** *वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा.* जो (सं. यदि) **जे करि**। ऋषिरा. जे कोई **जेठ, जेठउ** *आरास. प्राचीसं.* मोटुं (सं. जयेष्ठ) जेठी *कृष्णच. प्राचीफा.* मोटा मल्ल, जेठीमल्ल (सं.ज्येष्ठिन्) **जेठीमल** *चंद्रवा*. ज्येष्ठमल्ल, जोद्धो जेड *सिंहा(शा.) [जेवुं, समान] [रा.; कच्छी जेड, जेडि, जेड्य नेमिछं. प्राचीका. लावल. *विक्ररा. वेताप*. विलंब: आसस. विलंबपूर्वक, छेवटे **जेडवुं, जेडिवुं** *अंबरा. प्राचीफा.* विलंब करवी जेण तेरका. जाणे के जेण-तेण *कृष्णबा. --*, जिनाथी-तेनाथी, जेणे- तेणे **जेणं** *वाग्भवा*. जेमां **जेणि** *कादं(ध्र).* *केमके, [जेथी, जे कारणे] **जेणी** *दशस्कं(२).* जे स्त्री **जेतइ** *आरारा.* ज्यारे **जेतउ** आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. जेटलुं (सं.यावत्, प्रा.जेत्त) **जेतल** *आरारा.* जेटलूं **जेतलइ** *अभिऊ. गुर्जरा.* जेटले, ज्यारे (प्रा. जेतुल) **जेतलउं** आनंस्त. उक्तिर. उपद्या. जिनरा. षडाबा. जेटलुं (प्रा.जेतुल)

जूंली ऋषिराः जोडी (सं.युगल); जुओ

जेती **वार** *षडाबा*. जेटली दार, [ज्यारे] **जेतुं-तेतुं** कृष्णबा. जेटलूं-तेटलूं जेत्र ऐतिका. जयसूचक [सं.जैत्र] **जेथि** *आरारा*. ज्यां **े जेमणवार** *घडाबा***. जम**णवार जेव तेरका. जेम (अप.) जेवड तेरका. जेवडूं (अप.) जेवडड जिनरा. रस्सीयी. दोरडाथी जेवरलो *मदमो.* दिरलो (सं.जगति+ विरलकः, प्रा.जए विरलओ परथी ?); जुओ जयवरलो जे**रिका** कामा(त्रि). प्रेमाका. लाकडी, दंड [सं.यष्टिका] जे**ष्टिकादार** *प्रेमाका*. छडीदार **जेह** उक्तिर. ऋषिरा. *विभप्र. वीसरा. जे. जेने; जुओ येह **जेहउं** गुर्जरा. जेव् जेह कही उपवा. जे कई: जुओ कही **जेह भणी** *आरारा. उपद्या*. कारणके जेहरफल पंचवा. झेरी फळ (फा.झहर+ सं.फल) **जेहवड** *आरारा*. ज्यारे जेहारि जुओ येहारि **जो** *उक्तिर. तेरका. वीसरा.* जे (सं.यः, यों) जोअण ऐतिरा. उक्तिर. कृष्णवा. गुर्जरा. नलरा. लावल. चार गाउ, आठ माइल [तेर किलोमिटर] जेटलुं अंतर (सं. योजन)

जोइउ *उक्तिर*. जोयूं **जोडणि** *ऐतिका.* योगिनी जोडलि वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. कोयल- नो अवाज, कलरव **जोड्दं** *उक्तिर. रूपच. वाग्भवा*. जोवुं **जोडस** *आरारा.* ज्योतिष, **जो**श जोडसिडं *नेमिछ*. जोशे. अन्भव आस्वाद लेशे **जोड़सी** *वीसरा. पडाबा.* जोशी, जोश जोनार (सं.ज्यौतिषिक); *षडाबा.* [सूर्य, चन्द्र वगेरे] ज्योतिष्क देव (सं. ज्यौतिषिक) जोडजड आरारा. जोईये **जो**उ *नेमिछं. लावल.* जुओ **जोओ** *आनंस्त.* जूओ जोक्षम प्रबोप्र. जोखम [सं.योगक्षेम] **जोख** *मदमो. सिंहा(शा).* सुख, आनंद (सं.जोष); जुओ जउख **जोखमां *** चंद्रवा. [जोखवानी क्रियामां] जोखिम षडाबा. जोखम (सं.योगक्षेम) **जोग** *चित्तसं*. योग, संयोग; योग, स्थिति; वीसरा ग्रहयोग; षडाबा योग [मन, वचन, कायानो], जैन पारिभाषिक संज्ञा **जोग, जोगउ** *उपद्या* योग्य, लायक **जोगड** *आनस्त, आरारा,* योगथी, संपर्कथी, संबंधथी, साधनथी **जोगउ** जुओ जोग **जोगखेम** चित्तसं. योगक्षेम, पालनपोषण, कल्याण

जोइ **अभिक्त.* [जो, मान]

जोगवइ *आरारा. चंद्रवा*. व्यवस्था करे, [संभाळे], साचवे; *अखेगी.* [योग करे], मेळवे, चलावे, [-मां नाखे]

जोगबटउ उक्तिर. भावसमाधि वखते संन्यासीओ द्वारा पहेरातो लांबो झभ्भो (सं.योगपट्टः)

जोगा लावल. योग, [संबंध]; योग, [वैराग्य]

जोगिण वीसरा. योगिनी, संन्यासिनी जोगिणी * षडाबा. [जोगणी, एक चीकणो पदार्थ, लाख] [*सं.योगिनी]

जोगिनी *वीसरा. [ज्योतिषनो कोई योग] जोगिनड वीसरा. योगी

जोगियज नरका. वीसरा. योगी

जोगी जंगम * *प्रेमाका.* [हरताफरता संन्यासी, रखडता साधुबावा]

जोगीसरा *लावल*. योगीश्वर, श्रेष्ठ योगी जोग्य *आरारा*. योग्य, लायक जोग्ये *चित्तसं*. योगे, अनुसार

जोजन प्रेमाका. चार गाउ [तेर किलो-मिटर]नुं अंतर [सं.योजन]

जोजि *विमप्र. [पत्तीए, स्त्रीए] (रा.जोजे; अ.जोज)

जोड अखाछ. संबंध; जोटो, जोडी; जोडवुं ते, यमक(पद्य)नी रचना करवी ते; मदमो. *विमप्र. जेवुं, [समान]

जोडड उक्तिर. जोटो, बे समान वस्तु (सं. यौटकम्) [दे.जोड]

जोडाबाड**इ** *नेमिछं*. सरखेसरखी, जोडी, [बराबरीमां]

जोडि लावल. "जोड, "बेनो समूह, [समूह] [रा.]; जोड, समानता

जोडिवर्जं *षडाबा.* जोडवुं (सं.जुटति परथी) जोडुआं *मदमो*. जोडकां, एक जोडनां

जोडो चंद्रया. जोडीनो, जोडनो, [बरो-बरियो]: मोसाच. जोटो, बे

जोत देवरा. जोतरुं, बळदने धूंसरीए जोडवानो पटो [सं.योक्त्र]

जोतर अखाका. बळदने धूंसरी साथे जोडवानो पटो [सं.योक्त्र]

जोतरइ अखाका. प्रेमाका. शृंगामं. जोडे; नलाख्या. (घोडा) जोतरे, बांधे, जोडे (सं.योक्तृ परथी)

जोतरुं *प्रेमाका*. धूंसरीनी साथे बळदन जोडवानी बे छेडे दोरीवाळो पटो [सं. योकत्र]

जोति आरारा. प्रकाश (सं.ज्योति) जोतिक, जोतीक दशस्कं(२). मदमो. ज्योतिष (सं.ज्यौतिष-)

जोतिकजाण जुओ योतिकजाण जोतीय वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. जोतां, दृष्टिपात वडे, [दृष्टिथी, आंखथी]

जोत्य *चित्तसं*. ज्योति

जोत्र, जोत्रु उक्तिर. जोतरुं (सं.योत्र, योक्त्र)

जोत्र्या *गुर्जरा.* जोतर्या, जोड्या (सं.योत्र, योक्**त्र**)

जोनि प्राचीसं. "षडाबा. अवतार, [जीव-योनि]

जोबनमंद *प्रेमाका*. जोबनवाळी

जोयइ उक्तिर. षडाबा. जुए (सं.द्योतते) जोयण अभिक. आरारा. गुर्जरा. शंगामं. षडाबा. जोजन, आठ माइल तिर किलो-मिटर ने अंतर (सं.योजन) जोयणजात्र सिंहा(शा). जोवा जेवी बाबत [जोवा जेवो तमासो]; जुओ जात्र जोरावर मदमो. जोरावरी, बळजोरी **जोरी** ऋषिरा. जोरजुलम जोरो प्राचीफा. दोर, जुलम (फा.जोर) **जोवण** *तेरका*. यौवन जोवणभरि गुर्जरा. यौवननो भार [यौवननो जथ्यो। **जोवतां** देवरा. जोतां (सं.द्योत्) जोवन उक्तिर. गुर्जरा. लावल. वीसरा. यौवन **जोव्यण** *तेरका*. यौवन **जोशीता** *चतुचा*. नारी (सं.योषिता) जोसी आरारा. ब्राह्मण (स.) **जोसीयड** *वीसरा.* जोशी (सं.ज्यौतिषिकः) **जोहरी** *पंचवा.* झवेरी, झवेरातनो वेपारी (फा.जौहरी) **जोहार** *उक्तिर. प्राचीसं.* नमस्कार [दे.] **ज्ञाइ** *षष्टिप्र***. न्याय वडे (सं.**न्यायेन) **ज्ञात** *प्रेमप*. ज्ञान **ज्ञानखल** *चित्तसं*. खलज्ञानी **ज्ञान** विकरा. [ज्ञानयुक्त] पुस्तक **ज्ञानहेत** *प्रेमाका*. *ज्ञान अने हेत, [ज्ञान माटे हेत - उमळको **ज्ञापित** विक्रराः नापितः, [हजाम] **ज्ञायक** *आनंस्त.* जाणनार [सं.]

ड्य (एड्य) *तेरका*. ?, [पूजा] [सं.इज्य] **ज्य** रुस्तस. ज **ज्याउं** वीसरा. जेम ज्यवारव चित्तसं, यथार्थ **ज्यदा** चित्तसं. यदा, ज्यारे **ज्यविप** *नरप*. जोके (सं.यद्यपि) **ज्यदी** *प्रेमप*. जो [सं.यदि] ज्यम छे त्यम *चित्तसं*. वस्तुतः, वस्तुस्थितिमां **ज्यमणी** स्वतास. जमणी **ज्यमलो** प्रेमप. नजीक; जुओ जमल्य **ज्यवरलो** वेताप. सिंहा(शां). जवल्लो, विरलो, कोईक ज; जुओ जयवरलो **ज्यंत्र** *मदमो.* वाजित्र (सं.यंत्र) **ज्याच्यु** *नलाख्या*. जाच्यो, माग्यो, [-नी पासे याचना करी] **ज्यान** *चित्तसं. दशस्कं(१). विमप्र.* नुकसान [फा.जान] **ज्याम** कादं(शा). पहोर (सं.याम) **ज्यामण** *प्राचीका. प्रेमप*. दूध जमाववा माटेनुं मेळवणः जुओ जामण **ज्यारताइ पंचवा.** ज्यां सुधी (सं.यद्+वार) ज्**यांहोकण** *प्रेमप*, ज्यां **ज्याः** नलाख्याः जुए **ज्युध्य** रूस्तसः युद्ध **ज्यं** वीसरा. जेम **ज्येष्टिका** *कामा(शा). दशस्कं(१).* लाकडी [सं.यष्टिका] **ज्योग** *चित्तसं*. जोग, योग **ज्योग्य** मदमो. योग्य **ज्योधना** *कादं(शा).* ज्योत्स्ना, चांदनी

ज्योतिक *प्रेमाका*. ज्योतिष ज्योवन-साडा नरप. जुवानीना चाळा — खेल (सं.यौवन-नाटक) ज्वलइ उक्तिर. विराप. षडावा. सळगे, प्रकाशे ज्वाजुलमान दशस्कं(१). जाज्वल्यमान

झकझोळ दशस्कं(१). रेलंछेल; *नरका.* रेलं-छेल, [रंगरेल]

इकर कामा(शा). वातचीत, [चर्चा] (फा. जिकर)

अनोल, अकोळ *कस्तुवा. प्रेमाका. आनंद, [आनंदनो ऊभरो, मोज]

झकोलवुं, झकोळवुं प्राचीसं. झबोळवुं, नाहवुं, डूबवुं, जुओ झंकोल-

अखड़ * कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. *विराप. प्रलाप करे, बबडाट करे, [बोलबोल करे]; उक्तिर. संताप पामे (दे.झंख); जुओ झंख, झंखड़

, अखत ["अखत] नरप(द). *मंत्रतंत्रनो जाणकार, [*मंत्रेला दाणा]

झखोलिय *प्राचीसं*. [पाणीथी] छलकाया, भराया

झगर कामा(शा). चंद्रवा. वेताप. उजड, खेदानमेदान

झगारै जाय *०नरका*. प्रकाशित देखाय

झझणण *गुर्जरा*. झणझण अवाज

झसणणी आरारा(य). झिंझिणी — एक प्रकारनी लता के वृक्ष ? (दे.झिंझिणी) **झटकइ** *उक्तिर*. झडपथी (सं.झटिति) **झटे** अखाछ. झूंटवे

झड *आरारा*. झोड, पिशाच

झड *नरका.* लगनी, [झडी, लगातार थवुं ते]; *प्राचीसं*. झडी, जोरदार वृष्टि [दे. झडी]

झडहडड्र *ऐतिका*. पडे, नासे

द्भाग नरका. झणकार, [झणझण ध्वनि] द्भाति नलरा. झट, जलदी (सं.झटिति)

झबके *नरका*. चमकी जवाय ए रीते, ओचिंता, [झब दईने, झडपथी]; जुओ झाबक

इमर * ग्रेमाका. [कोलाहल, विक्षोभ]; जुओ इंमर

इमरु प्रेमाका. एक वाद्य; जुओ जमर **इमाल** गुर्जरा. विराप. डंख मारनारुं जीवडुं, धिमेल, [राती कीडी]

अमाला गुर्जरा. लावल. आकञ्जमाळ, प्रकाश **अरमर** नरका. *डोकनुं — गळानुं एक आभूषण, [झीणी]

झरलाणी अखाछ. [झळळाणी], झळकी, ज्वलित थई (?)

झरवाळियुं *नरका*. लूछवानुं कपडुं, [जीर्ण वस्त्र]

इरहठी हम्मीप्र. चढाण [*झाडी, *जंगल] **इरेळी** प्रेमाका. [ताबनी] धुजारी, कंपारी, असर

झल प्राचीसं. ज्वाला, [बळवुं ते]

इतकण चित्तसं. ज्योति, झबकार, प्रकाश; अखाका. "चळकाट, "प्रकाश, [*आभास, "झांखी]

झलझल- *देवरा. [क्षुड्य थवुं]; *प्राचीसं*. <u> अछळवं, [खळभळवं, छलकवं]</u> **झलझिल ***देवरा. [झळझिळयां आव्यां] **इतझांखस**उ *उक्तिर.* भळभांखळूं, मळसकूं (*सं.चलदुध्यांक्षम्) **ब्रलम-टोप** सिंहा(शा). एक प्रकारनुं शिर-स्त्राण **झळमळइ** *वीसरा*. प्रकाशे **झलमलानंद** सिंहा(शा). खूब आनंद **झलनलीय** *गुर्जरा*. *प्रकाशथी चमकती, [*परिपूर्ण, "छवायेली] दि.झझमझ] **झलहालिय** तेरका. झळहळत्ं करेल्ं **झलड़** नेमिछं. झीले, सहन करी शके **ब्रह्मरि, ब्रह्मरी** ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. एक वाद्य, झालर (सं.) **झवार** कामा(शा). जुहार, नमस्कार **झंक** नलरा. संताप (दे.झंख); जुओ झखड़ **इंकोल-** प्राचीसं. झबोळावूं, इबवुं; जुओ झकोलव् **झंखड़** **वीसरा. हम्मीप्र.* बोले, बिोलबोल करे, बकवाद करे] दि.]; जुओ झखइ **झंखजाळ** *प्रेमाका*. झाडी **झंखर** *शंगामं.* झांखरा जेवूं [दे.] **इंखिउ** गुर्जरा. झांखुं थयुं **झंघडीओं** *मदमो*. जंघडिया, चोघडियांवाळा. ढोली **ब्रंजीर** *प्राचीफा*. वेडी (फा.जंजीर) **ब्रं**झ *तेरका. *प्राचीसं.* व्याकुळ ? (दे.झंझा= व्याकुळता) **झंझ** *उपबा*. कजियो (दे.)

बंबेडी प्रेमाका, खंखेरी **इंटी, झांटि, झूंटा** प्रद्युचु. [झटिया], नाना ऊभा वाळ (दे.झंटी) **झंप, झांप** अभिक्त. कृदको (सं.झम्पा) **झंप- ***कादं(ध्र). कादं(शा). कूदवुं, [ठेक मारवी] **इंपापात** *प्रेमाका. कू*दको, [कूदी पडवुं ते] **झंपावइ** उक्तिर गुर्जरा. दशस्कं(१). नलाख्या. कूदी पडे **झंफ-** *वीसरा*. कूदी पडवुं [सं.झन्पा] **झंभा** कादं(शा). चतुचा. बगासुं (सं.जृम्भ) **झंम** रुस्तस. ज्यम. जेम **झंमर** *चंद्रवा.* ?, [*डोळ, * आडंबर]; जुओ झमर **झाउ** *दशस्कं(२)*. झांखप **झाक** *हरिवि*. खिन्न, [करमावुं - सुकावुं ते [रा.झाकणौ] **झाकइ** *उक्तिर.* झगमगे, प्रकाश करे **झाकझमाली** *चारफा***, देदीप्यमान झाकमझोळ** प्रेमाका. रेलंछेल: अखाछ. *नरका. प्रेमाका*. लहेर, आनंद **झाकळ उतारीश** *प्रेमाका*. सीधा करीश. *अभिमान उतारीश, [खोखरा करीश, खबर लई नाखीश] **झाङ्खो** *ऐतिका*. झांखी. आभास. [प्रकाशित थवुं ते]; जुओ झांख **झागड** *गुर्जरा*. ध्वनिसूचक शब्द

झाटक *गुर्जरा*. प्रहार, झाटको

ब्राडाया (झाडायाला) *ऐतिका*. छोडाव्या

झाडी *नरका.* झपटाणी, झपटमां आवी,

[झपटमां लीधी]

झाण *ऐतिका. जिनरा. तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं*. ध्यान (प्रा.)

झातकार अखेगी. कादं(शा). वित्तसं. दशस्कं(१). प्रेमाका. झबकार, प्रकाश; प्रकाशमान, झळांहळां

झाबज *जिनरा*. पहेरण, झब्बो [फा.जामः] **झाबक** *विमप्र*. जलदी, [एकाएक] [रा.]; जुओ झबके

श्नाबल *विमप्र.* खाबडुं, खाबोचियुं श्नामरझोळे अखाछ. आडंबरथी ?, [डोळ अने चंचळता, अस्थिरता, डामाडोळ वृत्तिथी]

झाम्बर माटि *चारफा.* *झामरी अने माठी — आभूषण-विशेषो, [*माथे झामर ए आभूषण]

झामल *प्राचीसं*. निस्तेज [दे.]

झामलउ *उक्तिर*. निस्तेज दृष्टिवाळुं (सं. ध्यामलम्)

क्षायइ *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीसं*. विचार करे, ध्यान करे (सं.ध्यायति)

झार *मदमो***. जार, [व्य**भिचारी]

झारिउ वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). रेड्युं, छांट्युं

झारी मदमो. जारी, [व्यभिचार]

झाल अभिऊ. नरका. प्राचीफा. कानमां पहेरवानुं एक आभूषण; जुओ झालि

झाल ऋषिरा. अंतरनी बळतरा; गुर्जरा. झाळ; (सं.ज्वाला) क्रोध; *देवरा.* प्राचीसं. लावल. झाळ (सं.ज्वाला) **झालइ** *नेमिछं*. (विरहनी) ज्वाळा जेवी, [ज्वाळा तरीके]

झालइ *आरारा.* हाथमां ले, उपाडी ले (दे. झिल-)

झालर, झालरि उक्तिर. *ऐतिका. एक वाद्य, गोळ सपाट घंट (सं.झल्लरिका) झालरी वडाबा. एक वाद्य, [गोळ सपाट

धरतरा *पडाबा.* एक वाद्य, [गाळ सपाट घंट] (सं.झल्लरी)

झाला, झाल्य अभिक्ट. [क्रोघनी] ज्वाळा; जुओ अगनि-झाला

इसिंत चारफा. नेमिछं. लावल. विमप्र. हरिवि. काननुं आभूषणः; जुओ झाल इसिंतिह ऐतिका. संभाळो, [ग्रहण करो, स्वीकारो]

झाल्य अभिऊ. जुओ झाला

झाळ्युं *प्रेमाका*. झार्युं, सांध्युं

झासक *दशस्कं(१)*. पुष्कळ; जुओ जासक

झारा। *प्रेमाका*. काकलूदी, आजीजी, झावां, व्यर्थ प्रयत्नो

झांउ *प्रेमाका*. झांखप

झांउआ *प्रेमप*. झांखरां

क्षांख अखाछ. *झांखी, [दृष्टि, नजर]; जुओ झाङ्खो

झांब्र *नरका. प्रेमाका.* एक प्रकारनुं वाद्य, कांसीजोड

झांझ *अ*खाका.* [क्लेश, व्याकुळता] दि. इंझा]

झांझवां *प्रेमाका*. आंखमां पाणी आववाधी पडती झांखप

झांटा अविरा. डाभनी अणीओ, [बारीक

सळीओ] [दे.झंटी]

झांटि उषाह. झटियां, वाळ (दे.झंटी); जुओ झंटी

झांप *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* कूदको (सं. झम्पा); जुओ झंप

झांपइ * गुर्जरा. * विराप. [आच्छादित करे, आवृत्त करे] [दे.झंप]

स्रांपडो हरिख्या. चंडाळ, भंगियो स्रांपे "ग्रेमाका. [ढांके, आवरी ले, ग्रसे]

क्रिगमिग *वीसरा.* झगमगवुं क्रिज-, क्रिज्झ- *तेरका. प्राचीसं.* क्षीण थवुं

क्रिक्रिउ तेरका. क्षीण [दे.झिज्झ]

द्विद्भिम गुर्जरा. ध्वनिसूचक शब्द

क्षिरइ प्रबोप्र. झरे [सं.क्षरित, झरित]

द्विरिमिरि तेरका. प्राचीसं. झरमर

द्रीणउ उक्तिर. दुर्बल, कृश (सं.क्षीणम्)

झीलण *नेमिछं. षडाबा.* स्नान, नहावण दि.झिछो

झीलवुं अखाका. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). नरका. नेमिछं. प्रेमाका. मदमो. ०वसंवि(ब्रा). हरिवि. नहावुं (दे.झिझ)

इींझ *आरारा(व).* एक वनस्पति, झींझी, आसोंदरो

झींटी *नरका. प्रेमाका*. वळगी, वींटळाई, भराई

झींटाय प्रेमाका. भराय, [वळगे]

च्चुझ, सूझ अभिकः. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. विक्रच. विराप. षडाबा. युद्ध (सं.युध्य- परथी)

द्युझकारतुं *दशस्कं(१). प्रेमाका.* युद्ध माटे

पडकारवुं

द्युणा, द्युना, यूना * मोसाच. हरिख्या. एक प्रकारनी साडी, [एक वस्त्रप्रकार];

वीसरा. मलमल, [बारीक कापड]

द्धुणि *ऐतिका*. ध्वनि

श्रुणि *प्राचीफा*. अवाज करे, [बोले] (सं. ध्वनि परथी)

द्धणित *नरका*. झणझण एवो अवाज करतां [सं.ध्वनित]

घुंझारा विक्ररा. योद्धा; जुओ झूझार

द्धुंबख ऋषिरा. झूमखो (सं.युग्मक, प्रा. जुम्मय) [दे.झुंबक]

द्धुंबवुं *नरका.* झूमवुं, झूकवुं (दे.)

झूकड **प्रेमाका.* [मेदनी, समुदाय] [फा. झुक]

झूज्झ नलरा. युद्ध (सं.युध्य- परथी)

बूझ जुओ झुझ

झूझणि *विमप्र*. युद्ध करवा माटे

झूझार गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. रूरतस. विमप्र. विराप. झूझनार, युद्ध करनार योद्धो (सं.युद्धकार); जुओ झुंझार

झुझारि *प्रबोप्र*. योद्धो

झूझाला *विमप्र. [शूरवीर, बहादुर]

झूझि कादं(शा.) कंपे (सं.युध्यते)

झूना जुओ झुणा

झूबकडे *आरारा.* झूमखे [दे.झुंबक]

मूबकु नलरा. लूमखुं, झूमखुं, [दे.झुंबक] **द्यमणुं** दशस्त्रं(१). नरका. प्राचीफा. प्रेमाका.

लावल. काननुं एक झूलतुं घरेणुं

झूरइ *उपदा. ऋषिरा*. पस्तावो करे, खेद करे (दे.) ***झूलरइ झ़्लरउ** *जिनरा.* झूंड, समूह **झूंटइ** *गुर्जरा.* एकाएक आक्रमण करे [आंचको मारी पकडे]; नरका. पडावे, आंचके इंटा जुओ झंटी इंगा जुओ झुणा **झूंबड़ं** *गुर्जरा*. लटके, लबडे, संघर्ष करे, सकंजामां ले. [माथे पडे, लपटमां ले] **श्रृंबखां** *लावल.* झूमखां, समूह [दे.झुंबक] **द्यंसर, द्यंसरा** *उपवा. प्रेमाका.* झूंसरी, धूंसरी **ब्रेज** *प्रेमाका*. झीणी धार, [झरमर] **झेर** *करतुवा. वेताप*. झेवर, घरेणुं **झेली** *दशस्कं(२).* हेली ?, [तरंग, धारा] दि.झिल्ली **झोट** *वेताप.* चोट, झपट **झोटडी** *विमप्र.* *[जूवान] भेंश **झोटावियु** अभिक. झूंटाव्यो **ज्ञोटी (मोटी**झोटी) **विमप्र.* मामूली. तुच्छ] [हिं.] **झोडवायो** *प्रेमाका.* भूतप्रेतनी अडफेटमां आवेलो, वळगाड पामेलो **द्योल** *विकरा***. खी**ण **झोलउ** *ऐतिका.* झोळी, [येलो] झोटे अखाका. नरका. प्रेमाका. झूंटवे,

टकोल *चारफा. विमप्र.* मर्मीक्ति, मर्मप्रहार, टोळ, विनोद (सर.टक्नेर) अं*बरा.* [टोळ,

मश्करीनो प्रसंगी, तमासो टन टन जोती प्रेमाका. आश्चर्यथी मुढ बनीने जोई रहेती, [टगरटगर जोती] टचकर लावल. टचको, टिचाको, टपाको दि.टचको टचांगुली कृष्णवा. विमप्र. टचली आंगळी टबक विमप्र, नगारांनो अवाज टबकडं लावल. टपके टबामात्र *विक्ररा. [टिप्पण - नोंध रूपे मात्री **टमक** *उषाह*. टमको, टिम एवो अवाजी टमटमी प्रेमाका. आतुर थई टमटमी रह्यं जुओ रह्यं टमटमी टमंक उषाह. टमको, टिम एवी अवाज] टक अखाछ. टळे (नाश पामे) एवी [नश्वर] वस्तु, संसार टलके, टळके कादं(ध्रू). नरका. प्रेमाका. चलित थाय, [मोहित थाय]; कादं(शा). *आनंद पामे **टलकड़ ***गुर्जरा. [कंपे, डगमगे] टलटलड् गुर्जरा. प्राचीसं. *विराप. धूजे, [डगेमगे] टलती विमप्र. विनानी, [सिवाय]; जुओ टाली टलक्लीका नेमिछं. "टळवळ्या, [क्षुभित थया. वेरविखेर थया टलिया- नलरा. टळवळवूं (दे.टलवल) टलइटी उषाह. तळेटी दि.तलहङ्गिया टिलेअ लावल. टाळी, दूर करी

टलीउ नेमिछं. टळयो, [आघो रह्यो]

पडावी ले

टसर उक्तिर. वणकरनो कांठलो (सं.तसर) टहक्य तेरका. टहुको (दे.*टहक्क) टंक प्रेमाका. वीसरा. एक सिक्को (सं.) प्रेमाका. टांक, कलमनी अणी टंकउ अखाका. उक्तिर. कामा(त्रि). कामा(शा). नलरा. पंचवा. टंको, एक सिक्को – रूपियाना प्रकारनो (सं.टंक)

ासका — रूपयाना प्रकारना (स.टक) **टंकाउलि** प्राचीफा. एक प्रकारनो हार (सं.
टंका+आवलि)

टॅकिय *तेरका*. टांकेलुं, चिह्नित करेलुं (सं. टंकित)

टंपावइ *गुर्जरा. विराप.* कुदावे, [दोडावे] (प्रा.टप्पइ)

टंबक प्राचीसं. वाद्यविशेष (दे.तंबुक्क) टाक नलरा. टक्क देश, सिन्धु अने बियास नदीओ वद्येनो प्रदेश (सं.टक्क) टाकर *अखाछ. [टेकरो] [रा.टाकरी]

टाकर विक्रच. शीलक. टपली, [प्रहार] (दे.टकर)

टाट *प्रेमाका.* शणनुं जाडुं कपडुं टाटर *दशरकं(१). प्रद्युचु. प्रेमाका.* गरदननुं रक्षण करतो धातुनो टोप

टादुयां *प्रेमाका*. टायडां, [नाना हलकी जात-ना घोडा]

दार अक्तिर. इलकी जातनो घोडो, टायडो घोडो (सं.) [दे.]

टालंड नलरा. टाळो, [जुदाई राखवी ते]

टालक आनंस्त. टाळनारो

टालणहार उपवा. टाळनार

टाला चित्तसं. भेद, जुदाई, वाडा

टाली, टाळी उक्तिर. छोडीने, विना; नरका. प्रेमाका. सिवाय, विना; लावल. पसंद करीने, [चूंटीने]; जुओ टलती टाहाडुं प्रेमाका. टाढुं, ठंडुं

टांक अखाका. अखाछ. उक्तिर. चतुचा. नरका. नरप(द). नवटांकर्नु वजनियुं, (ए उपरथी) थोडुंक, तलमात्र, सहेज पण (सं.टंकः)

टांकुल उक्तिर. छीणी, टांकणुं (सं.टंकः) टांडी नलरा. शोभायुक्त, सौभाग्ययुक्त (सं. तुण्डकम् परथी ?)

दांडो *प्रेमाका*. वणझारानी पोठ, [पोठनो मुकाम] (हिं.टांडा)

टिचांगली *प्राचीफा*. टचली आंगळी, सौथी नानी आंगळी

दिदुडी *प्रेमाका.* टिटोडी [सं.टिट्टिभ] **टिंट** प्राचीसं. द्युतस्थान [दे.]

टिंटड प्राचीसं. टेंटुं, निःसत्त्व, [निर्माल्य] टीके चतुचा. बिन्दी, चांदलो ? [*(साज) सज]

टींको काढी प्रेमाका. तिलक करी **टीप ***षडावा. [चूनानी पूरणी, थाबडी, टीपणी]; वीसरा. दबाववुं ते, [भींस, आलिंगन]

टीपारे *पंचवा*. जीवता साप पूरी राखवा वपरातो वांसनो करंडियो

टीबी जिनरा. टीकी, [टबकुं]

टीम दशस्कं(१). टींबो

टीलां *षडाबा. [कपाळे टीलां]

टीसी जिनराः नाकनी दांडी

टींटोइडी उक्तिर. टिटोडी (सं.टिट्टिम:) **टींडूरी** *आरारा(व).* टींडोरानो वेलो (सं. तुण्डीकेरी) **दुक** मदमो. टुकडा दूटी प्रेमप. तुटेलां, वांकां अंगवाळी कृब्जा **ट्रंकडुं** *दशस्कं(१)*. ट्रंकुं **ट्रंटि** कृष्णच. टांटियेथी दूंदु प्राचीसं. ठूंठो दि.टुंटो **टूंपावी** *प्रेमाका***. चूंटावी, खें**चावी **टेक-** **वीसरा*. [टेकववुं, टेको लेवो] देक अखाछ. कोई वस्तुने पकड़ी बेसवुं ते. जीद, अभिनिवेश, नियमी टेक मेळीने *प्रेमाका. प्रितिज्ञा – निश्चय करीने **टेढा** *प्रेमाका*, वांका **टेरो** *चतुचा*. अंतरपट **देव** *आरारा.* अभिलाषा; *गुर्जरा.* *आदत, [*अभिलाषा] टेहेलियो प्रेमाका. टहेलियो, सुभाषित बोली भिक्षा मागनार. [वारंवार बोली फरनार] **टोटम** *आरारा(व).* महुडो (दे.टोलंब) ? टोडर अभिक, उषाह, "प्रेमाका, लावल, *शृंगामं.* [डमरो], (डमरानी) [के अन्य] मंजरी, कलगी, छोगूं (दे.तोडर) **टोडे** *लावल*. बारणाना टोडला पासे दोडो नरप(द). [तोडो], पगनुं घरेणुं दोप नलरा. विकरा. युद्धमां पहेरवानुं शिर-

टोल गुर्जरा. नलरा. मकान, घर
टोल चित्तसं. टोळुं, समुदाय
टोलइ थाय आरारा. टोळे वळे छे
टोलां प्रेमप. मकान, घर
टोहवुं सिंहा(म). टोवुं, वूम पाडीने खेतरमांथी पक्षी उडाडवां
टोहण तेरका. प्राचीसं. टोयो करवो, हाकलो
करी पक्षी उडाडवा (दे.टोह+अण)
टोहिआ ऐतिरा. चोकीदार, रक्षक
टोहो दशस्कं(१). टोयो, खेतरनां पंखी
उडाडनारो
दिठय जुओ भवणि ट्ठिय
ट्रियउ ऐतिका. स्थित, रह्यो

ठउडवा *षष्ट्रिप***, अपमान करवा माटे**

ठकरालो मदमो. ठाकोर, [गामधणी]
ठकुराई उपबा. ठाकोरपणुं, [सत्ता ने
वैभवनी मोटाई]
ठकुराला जिनरा. मोटाईना रोफवाळा
ठग अग्वाका. अखाछ. ठगाई, छेतरपिंडी
ठणक नरका. रणको, अवाज
ठणहारी विमप्र. पुस्तक के बीजो पदार्थ,
जेमां गुरुनो संकेत करवामां आव्यो
होय [सं.स्थापनाचार्य]; जुओ ठवणारी
ठयकावे नरका. ठपको आपे
ठबकु उषाह. ठपको, [दोष, कलंक];
*विमप्र. [दोष] [रा.]
ठमकाळी नरका. ठमको – लटको करती
ठमठमती नरका. भपकावाळी
ठरावीक चंद्रवा. ठरावेल, [निश्चित, चोंक्कस]

पंखी उडाडनारो

स्त्राण (फा.)

टोयो *प्रेमाका*. पाकनुं रक्षण करवा खेतरमां

ठबइ अखाछ. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. देवरा. नलरा. प्राचीसं. *लावल. विमप्र. वीसरा. शीलक. शृंगामं. षडाबा. स्थूलिफा. स्थापे, मूके, राखे, रहे (सं.स्थापयित, *स्थपयिति) ठवणादिक ऐतिका. स्थापनादि चार निक्षेप [प्रतिमा आदिमां देवनुं आरोपण] ठवणारी उक्तिर. स्थापनाचार्य, जेमां आचार्य-नो संकेत करवामां आव्यो होय एवी वस्तु [सं.स्थापनाचार्य]; जुओ ठणहारी

(सं.स्थापनिका) ठवणुछव (पय ठवणुछव) *ऐतिका*. पद-स्थापनोत्सव

ठक्णी उक्तिर. पुस्तक मूकवानी नानी घोडी

ठबल प्राचीसं. जुगारमां होडमां मूकवुं ते ठविउ *ऐतिका*. स्थापित कर्युं

ठसकउ *वीसरा*. ठमको, लटको, नखहं

ठठेर जुओ ठेर

ठहेराणे अखाका. स्थिर थये

ठंठार वीसरा. ठंडी

ठंठोळी *प्रेमाका*. मश्करी

ठंभीजइ *उक्तिर*. रोकाय, स्थिर थाय (सं. स्तभ्यते)

ठाइ, ठाई आरारा. उक्तिर. तेरका. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा.) विमप्र. शृंगामं. ठाम, स्थान, ठेकाणुं; स्थाने, ठेकाणे (सं.स्थाम)

ठाइ देवरा. स्थापी, [रची], न्मां स्थिर धई ठाउ कृष्णच. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. रूपच. विक्रच. स्थान, ठाम, जग्या (सं.स्थाम) ठस्कुर *उपवा. गुर्जरा. नलरा.* मालिक, अधिपति, राजा; *वीसरा.* मालिक, नाय; *उषाह.* "मझराजा, [गामधणी] (सं. ठक्कुर)

ठागो कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. कपट, ठगाई

ठाठ *नरका.* शोभा, भपको; ^{*}अखाका. अखाछ.साज, [रचना, प्रपंच]; *चित्तसं*. वैभव, विस्तार, साज

<mark>ब्रह्मी *वेताप.* ठाठमय, ठाठवाळी</mark>

ठाण *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं.* स्थान, ठेकाणुं

ठाणउ उक्तिर. स्थानक

ठाणः *आरारा*. ठाणांग [स्वानांग] नामे जैन ग्रंथ

ठा**जांच** उक्तिर. स्थानाङ्ग नामे जैन शास्त्रग्रंथ ठाम **टालूं** जुओ ढालूं

ठाम फेडबो *प्रेमाका*. समूळगो नाश करवो; जुओ ठाय फेडी

अय अभिक्त. ऋषिरा. नेमिछं. वसंवि(ग्रा). विक्रच. विमप्र. स्थान, ठेकाणुं, जम्या

ठा**थ फेडी** *विमप्र.* मारी नाखी; जुओ ठाम फेडवो

ठार *चतुचा. देवरा. नलाख्या. प्रेमाका.* ठेकाणुं, जम्या (*सं.स्तार); *चित्तसं.* स्थान, स्थिति, अवकाश

ठारण *प्रेमाका.* श्रांति, दिलासी ठारणबाट *प्रेमप*. विसामी

ठारणहार ऋषिरा. ठारनार, शिंति पमाड-नार] ठारवण शृंगामं. [ठारवुं ते; ठारनार], आश्वासनस्थान **ठार्य बेसशे** चित्तसं. ठेकाणे आवशे, समाधान थशे **ठाव** *प्राचीसं*. स्थान, ठाम ठाव- नलरा. मुकाम करवो (सं.स्थापयति) ठावर *जिनरा. [मुख्य, अग्रणी] [रा.] **ठाइ** *आरारा. नलरा. नेमिछं*. स्थान, ठाम (सं.स्थामन्) ठाहउ षडाबा. नीचे बेठेलो कचरो. रगडो ठाहारि *ऋषिरा. [स्थळे] **ठाहि** अभिक्त. उषाह. विमप्र. ठेकाणुं, स्थान (दे.याह) **ठां, ठांइ** अभिऊ. वीसरा. स्थान, स्थाने, त्यां (सं.स्थामन्) **ठांणर्ड** ऋषिरा. स्थाने, ठेकाणे डांमेली (उडां मेली) *नेमिछं. द्रिष्टांती जोडीने **ठांह** वीसरा. स्थान (सं.स्थामन्) **ढिय** तेरका. थयुं (सं.स्थित) **ठींठोळी प्रेमाका**. मश्करी **टूंबर** *नरका*. जारनुं भरडकुं **ठेऊड** विमप्र. ठेबेथी **ठेकतुं** *प्रद्यूच्.* **लाठीनो आधार लेवो,** [लाकडीनो टेको लेवो] [हिं.ठेकना] **ढेठ** *अखाछ.* अंत, मुकाम, [अंतिम मंजिल] **देद्ध** *सिंहा(शा).* चोरनो मळतियो, वाटपा<u>ड</u>् **ठेबरुं** *उषाह*. चीधुं **"ठेर ["ठठेर]** *मदमो*: (=ठार ?) सुतार, [धातुना वासण बनावनार कारीगर,

वसवायों [हिं.ठठेरा]

ठेराव अखाछ. निश्चय

ठेरावुं अखाछ. निश्चय करवो, नक्की करवुं
ठेरावुं अखाछ. निश्चय करवो, नक्की करवुं
ठेरावुं अखाछ. निश्चय करवो, नक्की करवुं
ठेरावुं अखाछ. निश्चय करो, [हीणा पाडे]
ठेराय दश्स्कं(२). प्रेमाका. पगनी ठेरा —
ठोकर मारी, ठेल्या
ठेडेराव्या अखाका. चित्तसं. ठराव्या, नक्की
कर्या
ठोठ प्रेमाका. थप्पड, लपडाक
ठोठि हरिवि. ?, [आग्रह]
ठोर अखाका. नरका. मदमो. सिंहा(शा).
स्थान, जग्या, ठेकाणुं
*ठोवुं [ढोवुं] *विमप्र. [मांगलिक प्रसंगे
धरवामां आवती वस्तु, भेट] [हिं.]

डजंब विराप. चांडाल (दे.डुंब)
डकावइ वीसरा. कुदावे [रा.]
डगर *नरका. [मार्ग, रस्तो]
डगां प्रेमाका. डगलां
डिटयो प्रेमाका. दाट्यो
डकोल- प्राचीसं. झबकोळवुं
डमकीअल विमप्र. डमक्या, डमडम अवाज
थयो; जुओ ढमकीअल
डमडोलइ ऐतिका. चंचल बने
डमर ऐतिका. उपद्रव [सं.]; जुओ डंबर
डरपांणी ऋषिरा. डरी गई
डली षष्टिप्र. लचको (दे.)
डसकां अखाका. डूसकां
डसण उषाह. प्राचीफा. दांत (सं.दशन)

इसण-डंक नरका. दांतना इंख (सं.दशन-दंश) दि.डंको **डिसवा** *उपबा.* डसवा (सं.दश्) **डहइकईं** *हरिवि.* डहेके, डचकां खाय डहर उक्तिर. पाणी भराई रहेतुं होय एवी भूमि, खाबोचियुं (सं.दहरः) डहरउ उक्तिर. बच्चं (सं.दहरः) **डहेकाय** अखाका. छेतराय, भ्रममां पडे; जुओ डेहेकाणा **डहोळाई** *प्रेमाका.* खुब चोळाई डंक नरका. मदमो. वीसरा. षडावा. इंख **[**दे.] **डंक** *प्रेमाका*. इंका इंकणु अभिऊ. इंख (सं.दश् परथी) दि.डंको **डंके** अखाका. अभिक्त. डंखे. दंश दे **डंगुर**ड *प्राचीसं.* डंगोरो, [ढंढेरो] **डंड** *उषाह*. मेरुदंड (सं.दंड) **डंडड** *शंगामं*. दंड, शिक्षा **डंडवृत्त** *सिंहा(शा).* दंडवत् (प्रणाम) **डंडव्रत** *मदमो. वेताप*. दंडवत् (प्रणाम) **इंडेरो** चंदवा वेताप हंहेरो **डंडो** *आरारा*. दंड (भरवानो – करियावर रूपे) **डंभ** ०*उषाह.* बाळक (सं.डिम्भ) **डंबर, इंमर** अभिक. धूळनी आंधी (सं.); *चंद्रघा.* आडंबर, [फटाटोप, विस्तार]; शंगामं आडंबर, बाह्य भपको, दिखाव]: जुओ डमर, डामर इंश दशस्कं(१). मननो इंख [सं.दंश]

डंस *आरारा. ऋषिरा.* दंश डाक प्रेमाका. एक प्रकारनुं चर्मवाद्य, डाकलुं डाकडमाल *आरारा. ऐतिका. विमप्र. धमाल, आडंबर, [ठाठमाठ, तमासा] डाकर उक्तिर. गर्जना, जोशीलो अवाज (सं.डाकार) **डाढि** कादं(शा). डाढमां, [दाढमां] (सं.दंष्ट्रा) डाभ आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. दर्भ, एक प्रकारनं घास **डाभडो** *मदमी*, दाबडो **डाभा** *मदमो. रुस्तस*. डाबा **डामर** *गुर्जरा*. शोभा, ठाठमाठ (सं.**ड**म्बर); जुओ डंबर **डारइ** गुर्जरा. डरावे, [पाछा पाडे]; विमप्र. डरावे डारइ *गुर्जरा. [चीरे] [हिं.दारना] **डोलों** *नरका*, पहोळा मोढाना टोपला डालि शुंगामं. सुंडली, [टोपली] डाव देवरा. दाभ, डाभ (सं.दर्भ) डावउ उक्तिर. जिनरा. लावल. विक्ररा. विमप्र. वीसरा. डाबो दि.] **डावडी** *आरारा. वीसरा.* दीकरी, कन्या (रा.) **डाविय** *गुर्जरा-टि.* डाबे डाहउ उपवा. गुर्जरा. वाग्भवा. विमप्र. षष्टिप्र. डाह्यो (सं.दक्ष/दक्षिण) डाहरो मदमो. सिंहा(शा). वधारे डाह्यो **डाहा** गुर्जरा. डाह्या **डाहाकण** *नंदब*, डाकण डाहापण, डाहापणपणुं नलरा. डहापण (सं. दक्षत्वन)

डाहिम *आरारा. लावल. विमप्र*. डहापण डाही ऋषिरा, डाबी तरफ डाहीयार विकरा. षष्टिप्र. डाह्या (सं.दक्ष+ कार) **डाहु** *नलरा.* डाह्यो, समजु (सं.दक्ष) डांग आरारा(व). डाग (दे.डाग) - एक भाजी ? डांगरुं रूपच. ढंढेरो, [दांडी] डांण ऐतिका. तेज, [गर्व, मान] [रा.] **डांभड़** *उक्तिर. ऋषिरा*. डाम दे, दझाडे (सं.दभ्नाति) डांलवड (दादरडां लवड) प्राचीफा. देडकां आवाज करे **डांश. डांस** उक्तिर. षडाबा. मच्छर (सं.दंशः) **डांहगरडां** *आरारा(व)*. डांगर **डिगड** *आरारा. जिनरा*. डगे. विचलित थाय **डिंब** *प्राचीसं*. विप्लव, [तोफान] **डीबु** *शृंगामं.* डूमो; जुओ डींबउ **डीलरखी** *आरारा*. शरीरने साचवनारी डीलि पश्चिम. जात वडे (दे.डिल्ल) **डींगल** वेताप, गपाटो, डिंग **डींबर** *उपवा*. इ.मो; जुओ डीब्रू **डुडी** *कामा(त्रि). ०कामा(शा).* दांडी, ढंढेरो; जुओ इंडी फेरवी, डोडी **द्भढ** *विमप्र.* **दोढ (सं.**द्ध्यर्ध) **डुढ** *प्राचीका.* **मजबूत (सं.दृढ) द्वलुए** *लावल.* डोले **इहलपणउं ***उप*वा*. लालसायुक्त होवुं ते, रागवशता] [सं.दोहद, प्रा.डोहल] **डुहर्लु** *नलरा.* कचरावाळुं, डहोळुं (प्रा.डोह)

डुहुलउं **उपवा*. [डोळुं, मेलुं] **डुंडी फेरवी** मदमो. दांडी पिटावी; जुओ हुडी **डुंब** *प्रद्युचु. प्राचीसं.* चांडाल (दे.) **डुंबाल ***लावल. [चांडाल, तुच्छ व्यक्ति] **डूंब** अंबरा. गुर्जरा. अंत्यज हेरो नरका. तोफानी ढोरने गळे बांघवामां आवत् लाकडुं; पडाव, [पडाव माटेनी बिस्तर वगेरे सामग्री **डेहरे** *मदमो.* दहेरे [सं.देवगृह] **डेहली** उक्तिर. डेली (सं.देहली) **डेडेकाणा** *अखारा*. ठगायेला **डोइलउ** *उक्तिर*. डोयो, लाकडानी कडछी दि.डोओ डोकर, डोकरउ उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. वृद्ध, घरडो माणस [दे.डोक्कर] **डोकरपणि** *ऐतिका*. वृद्धावस्थामां डोकरि, डोकरी गूर्जरा. पंचवा. प्राचीसं. विकरा. षडाबा. वृद्धा, घरडी स्त्री (दे.डोक्करी) **डोझां** *प्रेमाका*. बखोल **डोट** प्रेमाका. दोट. दोड **डोटी** *आरारा.* एक प्रकारनुं जाडुं वस्त्र; जुओ दोटी **डोड** *नरका*. गुमान डोडी नलरा. एक अलंकार, हाथे पहेरवानुं मादिळियु डोडी उक्तिर. नानुं इंडुं; एक वनस्पति (सं.दोडी)

होडी कामा(त्रि). दांडी, ढंढेरो; जुओ इडी

डोलायउ *जिनरा*. डोलाव्यो **डोलिय ***गुर्जरा. [डोळी, पालखी] (सं. दोलिका)

डोळिया अखाका. बळद

डोली नलरा. झूलती झोळी, मांदा के अशक्तने उपाडीने लई जवानी मांची (सं.दोला)

डोहड़ अभिऊ. उषाह. मिश्रण करे, डहोळे, [हलावे]; *प्राचीसं*. डहोळे, [क्षुड्य करे]; *ऐतिका.* "ढोळे, [डहोळे]

डोहत्तउ उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. दोहद, गर्भवतीनी इच्छा; उषाह. इच्छा

टक गुर्जरा. ढोल (सं.ढका); जुओ ढाक
टकवुक ऐतिका. वाद्यविशेषो; जुओ
ढाकव्रक

टकारिकण *ऐतिका*. ढोलना अवाजथी **डणकउ** अं*बरा*. ऊंघनुं झोकुं

डणहण *ऐतिका. प्राचीसं.* झरझर, ध्वनि-सूचक शब्द, [धसाराबंध]

ढमकीअल विमप्र. [ढमक्या], ढम ढम अवाज थयो; जुओ डमकीअल

ढल *उक्तिर.* लाकडुं (सं.दलिः)

ढळकणो *नरका.* ढळतो, नमतो, [नमन-शील]

ढळकतुं नरका. [ढळतुं], नम्र, [रीझतुं] **ढलावइ** *लावल*. ढळावे, ढोळे

डिक्यो नरका. प्रेमाका. रीझ्यो डसकडुं प्रेमाका. ढसडवानी — घसडवानी क्रिया, [लंबाववुं ते] ढंढार "शृंगामं. [हाडपिंजर] [रा.ढंढेर]
ढंढोलइ उक्तिर. खोळे, शोधे
ढंढोळी नरका-२. शोधी, [तपासी]
ढाउ गुर्जरा. तीव्र इच्छा, आग्रह (दे.ढाव)
ढाक गुर्जरा. विराप. ढोलक (सं.ढका);
जुओ ढक

बाकबूक चारफा. डंकानिशान (सं.दका+ दे.बुक्क); जुओ दक्कबुक्क

बाहर (पंचढाडर) * गुर्जरा. [पोढाडे, सुवाडे] बाहसी * विकरा. [आक्रंद करशे, रडशे] [हिं.ढाडना; रा.डाडणौ]

ढापला *प्रेमप*. वहालनी चेष्टाओ **ढाळ** अखाछ. ढोळाव, रीत, [मार्ग]

ढाळ- वीसरा. नाखवुं

बालूं (ठाम बालूं) *प्रबोप्र. [ठेकाणे पाडुं, नाश करुं]; जुओ ठाम फेडवो

ढांढिण आरारा(व). एक घास; कौंचानो वेलो (दे.ढंढणी)

बंबी जिनरा. भमती, घूमती, [घ्रमित थती] [दे.ढंढक्लिअ]

विग उपवा. षष्टिप्र. ढग, ढगलो (दे.)

ढिगा "कृष्णच. ["पासे, "रस्ताना किनारा] [रा.; हिं.]

ढिंक, ढींक ऋषिरा. शृंगामं. षडाबा. ढेंक बगलो, एक पक्षी (दे.ढंक) [सं.ढेंक]

विक विमप्र. हथेळीथी वागतुं वाद्य, [थापो, मुष्टिप्रहार – एक वाद्यरीति]

दीक (रांकदीक) ऐतिका. गरीब[गुरबां] दीकडी थडाबा. ?, [मोढेथी अवाज करी कोईने बोलाववं ते] **ढीकली** *हम्पीप्र*. पथ्थर फेंकवानं यंत्र **ढीठ** कादं(शा). धीट, निर्लंख (सं.धृष्ट) **ढीम "**नरका. चि।सलांी **द्येमां** *प्रेमाका.* लोहीनुं जामी जब् अने एथी आवता सोजा, [ढीमचां] **ठीलउ सनाह** विमप्र. ढीलुं बख्तर **दीलिण** प्राचीफा, दिल्हीनी रहेवासी स्त्री **ढीली** विमप्र, दिल्ही दींक जुओ ढिंक **ढींकुओ** *विक्ररा*. ढींकवो, खेतीने पाणी पावानी विशेष व्यवस्थानं साधन, [क्वा-मांथी पाणी काढवानी व्यवस्था। **ढींबर्ड** *आरारा(व)*. ढींबडो – एक भाजी **दुकडी** *प्राचीस.* ढुंकवुं ते, नजीक आववुं **ढुलइ, ढुकइ** *आरारा. वीसरा*. ढळे, ढोळाय दृकड जिनरा. नलरा. प्राचीसं. षडाबा. नजीक जाय, पहोंचे **द्वया** *प्रेमाका***. न**जीक **ढूंकडाचा** *शुंगामं.* ढूंकडां – नजीक होवा छतां (सं.ढौक्) द्वंढणवडइ "यडावा. [खोळीने, बीजेथी मागी लावीने **ढेड** *आरारा(व)*. हिंग (रा.ढे) ? ढेकी,

ढोकइ उक्तिर. घरे, पासे मूके (सं.ढौकयति) ढोय- प्राचीसं. अर्पण करे [सं.ढौक्] ढोल लावल. "ढोळाव, [ओप] ढोली आरारा. नीचे नाखी, फेंकी ढोळे नरका. प्रेमाका. गबडावे ढोखं जुओ ठोवुं ढोस उषाह. [धोंस], हुमलो ढोढि उषाह. धूए

ण गुर्जरा. न, नहीं
 णटोल आरारा. निटोल, उद्दंड, घमंडी, बेशरम (रा.); जुओ निटोल
 णत्थदंड प्राचीसं. अनर्थदण्ड, [निष्कारण हिंसा]
 णाह गुर्जरा. नाथ, मालिक

त आरारा. तेरका. तो (सं.ततः); आरारा. तेथी (सं.ततः)

त *पंचवा*. त्यां

त- तेरका. ते (सं.तद्)

तड्, तड्ं आरारा. तारे; तुं; उक्तिर. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. तें, ताराथी (सं.त्वया)

तिंड, तिं पश्चिप्र. -थी, -मांथी; उपबा. तोपण; उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. वीसरा. षडाबा. तो, तेथी (सं.ततः)

ता केरका. तुं (अप.तुहुं) ता तारुं (सं.तव) ता उक्तिर. तें (सं.तत्)

होइली *षडाबा*. लोटी

वरखली, कृष्णतमाल ?

ढेढि *विमप्र. दिंड जेवी, हलकी स्त्री]

बोइ आरारा. प्राचीफा. शृंगामं. लई जाय, धरे, भेट धरे, अर्पण करे (सं.ढौक्)

ढेग *प्रेमाका*. ढग. ढगला

तउणी गुर्जरा. कडाई, लोढी (सं.तपनी) दि.तवणी तउहड् उपबा. तोपण [सं.ततः+हि] **तउं** उपवा. गुर्जरा. तेरका. षडावा. तुं (सं. त्वम्, अप.तुह्रं) तऊ जुओ तउ तक, (तको) *उक्तिर* ते [रा.] **तक** *प्रेमाका.* *अभिलाषा, [टक, ताकी रहेवूं ते, एकीटश] तकर नरप(द). छास (सं.तक्र) तका उक्तिर. ते (स्त्रीलिंगमां) [रा.] तकारि आरारा(व). अरणीनी एक जात (सं.तकरि) **तकीआ** *अखेगी*. आश्रयस्थान, विसामो [फा.तकिया] तको जुओ तक **तक** *ऐतिका*. तर्क[विद्या] तक्खण, तक्खणि तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. तत्काळ, ते ज समये, त्यारे (सं.तत्क्षणे) **तका** *अखाछ*. तक, छाश तक्षण गूर्जरा. ते वखते ज (सं.तत्सणम्) तखिण प्राचीसं. त्यारे (सं.तत्क्षणे) तखर *विमप्र. [*विनाश, *बरबादी] [*अ. तखीब] तगतागु *चारफा. प्राचीफा.* शोभा, सुन्दरता, [कांति, तेज] **तगन** अखाछ. तज्ज्ञ. निष्णात तगर आरारा(व). ऋषिरा. प्रेमाका. वृक्ष-विशेष (सं.) तच्छाविय *प्राचीसं*. छोलवामां आवेलो (सं.

तक्ष) तज्जय प्रबोप्र. छोडी दे (सं.तर्जय) तज्ञ अखाछ, तज्ज्ञ, निष्णात **तिटनी** *आनंस्त*. नदी [सं.] तरु वीसरा. त्यां (सं.त-+स्थामन्) तड *तेरका*. ढोळाव ? (सं.तट), चिडाण, चडाव] दि.तठ परथी] तडई *हम्मीप्र.* झुझे, लडे [सं.तड्] तडकस *प्राचीफा*. तंग, [कसीने बांधेल] तरक- *प्राचीफा*. चमकवुं (प्रा.) **तडतदुं** *आरारा*. तडतङ अवाज **तडतडबुं** *लावल.* तडतड अवाज करवो; **प्रेमाका.* [फाटफाट थवुं] **तडा** *गूर्जरा*. तट, कांठा **तडाग** *आरारा*. तळाव (सं.) ति**डे** *गूर्जरा. तेरका. प्राचीसं*. पासे, बाजुमां (सं.तटे) **तडिच्छड** प्राचीसं. वीजळीनो चमकारो सिं. तडित्+छटा] तिडेत *अखाका.* वीजळी (सं.तिडेत्) **त्तर्डिंग** *ऋषिरा*. पखाली; जुओ तणंग **तडूकुं** *प्राचीफा.* स्त्रीना काननुं आभूषण (सं.ताटंक ?) **तडोतड** *प्रेमाका*. उपराउपरी **तणइ, तिण, तिणी** *आरारा.* ते, तेणे **तणय-** *तेरका.* तणुं, -नुं (सं.तनय-) तणंग अखाछ. पखाली; जुओ तडिंग **तणायता** *आरारा*. तणातः तिण, तणी जुओ तणइ तणी **षडाबा.* [दोरीनुं बंधन] [हिं.तनी]

वन् *जारारा. तेरका. प्राचीसं***. तन्,** शरीर **वतकात** *आरारा*. त्यारे. ते वखते तत्त्वच, ततिथच, ततिथिच, ततस्यण आरारा. गर्जरा. देवरा. नलरा. *नलाख्या. प्रेमाका. वीसरा.* ते ज समये. तरत ज, बोडा वखतमां ज (सं.तत्सण) **रुख्येव अ**खाका. ऋषिरा. कामा(त्रि). दशस्कं(१). नरका. नलाख्या. हरिख्या. त्रकाल, तरत ज (सं.तस्त्रिप्र) ततस्यम जुओ ततसम **क्तबर चंद्रवा. मदमो. सिंहा(शा)**. तस्पर, तैयार **ततसर** *तेरका. प्राचीसं***. तेटलुं (**सं.तद्+ तुल्य) **ततार हमीप्र. तातार देशना (घोडा),** उत्तम घोडानी एक जात ताति जुओ हंस-तति **तत्स्रोव** *प्रेमाका*. तुरत ज [सं.तत्सिप्र] क्तबंतु *ऐतिका.* क्तवज्ञान, क्तिवना जाण-कारी **राद्धस्य** *प्रेमाका***. तेना जे**वो **सत्वाबोध** *जखारः* तत्त्वबोध **त्रत्य आरारा. ऐतिका. तेरका.** त्यां (सं.तत्र) सवन्य देवरा. बराबर, सरखुं (सं.तहत्) **तवंत** *अखाका*, त्यार पत्ती, त्यारे तनक सिंहा(शा). साव नानुं वनि आरारा, शरीरमांची **तन् रान्वि शंगामं. शरीरनी हानि, नु**कसान **तनेवा** *मदमो*. तनया, [पूत्री] **सन्त्रथर** *उक्तिर.* तन्त्र, तांतणो

तपण *आरारा*. सूर्य, ताप (सं.तपन) **तपनतेज** *प्रेमाका***. सू**र्यनुं तेज **तपला ऐतिका.** तपागच्छीय जि.] **तपसंजम** *उपबा*. तप अने संयम **तपसा** *देवरा*. तपस्या तपासी प्रेमाका. तपस्वी. दीन, दयनीयो तपी वीसरा. तपस्वी (सं.तपिन) **तप्पइ** *वीसरा*. तपे, [प्रकाशे] **तक्क** *कामा(त्रि). कामा(शा)*. तासक [अ. तबाक्] **त्तवक** ऋषिरा. गुच्छ (सं.स्तबक) **तम** चतुचा. त्यम, तेम **तमक** जितर. आवेश. क्रोध (सं.) तमके चतुचा. तमारी पासे; जुओ के **तमचर** *अखाका.* अंधारामां (अज्ञानमां) फरनारा **तमरा** *पंचवा*. तमारा **तमाल** *आरारा(व). नरका.* एक वृक्ष (सं.) तमाहि *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). दुःख पामशे (सं.ताम्यसि) तमी गुर्जरा. विराप. रात्रि (सं.) **तय** तेरका. त्रय **तयणंतरु** *ऐतिका. तेरका*. ते पछी (सं. तदनन्तरम्) **तयणु** *ऐतिका***. ते पछी [सं.तदन्**] तर तेरका. तरु **तर नंदब.** तरवा पडेलो, [तरनारो] तरु आरारा. तरु, वृक्ष तरकस प्रेमाका. मदमो. "वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. वीसरा. (तीर

भरवानुं) भाशुं (फा.तर्कस) तरजात नरका. हलकी (बदतर) जात तरण प्राचीका. "तरुण, [तारनार] **तरण-तारण** *देवरा*. होडीस्वप बनीने तारनारुं **तरणागार** *अखाका*. धासनो ढगलो. [*उकरडो] [सं.तृणागार] त्तरिष अखाका. ऐतिका. गुर्जरा. नरका. सूर्य (सं.) त्तरिण-तनया *नरका. प्रेमाका.* सूर्यनी पुत्री, यमुना नदी तरणी अखेगी. सूर्य [सं.तरणि] तस्तर गुर्जरा. तडतड अवाज साथे तरतीब चंद्रया. मदमी. वेताप. सिंहा(शा). रीत: रीतभात; व्यवस्था; संभाळ: गोठवणीनी खुबी (अ.) तरतीबतर मदमो. पूरेपूरी रीतभातवाळुं, [युक्तिपूर्ण]; पूरेपूरी व्यवस्था तरतीववंत चंद्रवा. मदमो. रीतवाळुं, पूरती रीतभातवाळुं, [कौशलपूर्ण] **तरफोडां** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* तरफडियां तरभाणी प्रेमाका, संध्या वगेरे धर्मविधिमां वपराती तांबानी तासक – थाळी तरलय तेरका. आछुं तरवर अभिक. आरारा. वृक्ष (सं.तरुवर) तरवर्षु प्रेमाका. सिंहा(शा). टोळे मळवुं, ऊभरावुं **तरवर्षुं** *दशस्कं(१)*. तरवरियुं **तरवारि** *आनंस्त*. तरवार तरवं अखाछ. धोळा रंगनी हळवी धातु, [टीन, कलाई]; जुओ तस्जां

तरसर्वुं *आनंस्त. प्रेमाका*. तलसर्वुं [सं.तृष्] **तरसालुओं** *शृंगामं*. तरस्यां, तृषालु तरंगिणी *अखाका*. नदी [सं.] **तरंड** *ऐतिका.* नौका [सं.] **तरांश** *प्रेमाका*. त्राजवां **तरि** *षडाबा***. तर (सं.तरी) त्तरियां तोरण** *नरका. प्रेमाका.* पांदडां, जरीना तार के वरख अने कापड़ना टुकडा वपरायां होय तेवुं तोरण तरियो ग्रेमाका. त्रण दिवसे आवतो **तरिवा** नेमिछं, तरवा तरी उक्तिर. तर (सं.तरिका) **तरी** हम्मीप्र. स्त्री तरुअर वसंफा. वृक्ष [सं.तरुवर] तरुआर, तरुआरि चंद्रवा. नलरा. प्रबोप्र. तरवार तरुण, तरुणावंत, तृणावंत दशस्कं(१). दशस्कं(२). तृणावर्त, [एक राक्षस] **तरुपर** गुर्जरा. तरुवर, वृक्ष तरुअर आरारा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). तरुवर तरूओं उपदा. *सीसं, किलाई, टीन] (सं. त्रपुक); जुओ तरवुं तरूण मदमो. सूर्य (सं.तरणि, 'अरुण'ना सादृश्ये) तरेरो प्रेमाका. आवेशभर्यो, क्रोधाविष्ट, [ध्रुजारीवाळो] (अ.तर्रार) तरेवो अखाका. लावल. तरवो तरोवड अखाछ. सरखाई तर्णंड उक्तिर. "षडाबा. धमकावे, बिवडावे, तिरस्कार करे (सं.तर्जिते)

तर्प *दशस्कं(२)*. तर्पनि, तृप्त करीने तर्पत *प्रेमाका*. तृप्त तल *प्रेमप*. लेशमात्र

तलखर्षुं अखाका. दशस्कं(१). "ग्रेमाका. व्याकुळ थवुं; ग्रेमाका. तलसवुं, झंखवुं तलपे ग्रेमाका. तराप के छलांग मारे, [हल्लो करे]

तलमल *दशस्कं(१). प्रेमाका*. टळवळता, व्याकुळ, तालावेलीमर्या [दे.तल्लोविल्लि]; जुओ तालावेली

तलबट प्राचीसं. तळेटी [दे.तलहट्टिया] तलबाबुं वेताप. घसाराथी तळियांनुं आळुं थवुं

तळवां प्रेमाकाः. पगनां तळियां तलहटी उषाहः. तळेटी [दे.तलहट्टिया] तलाउ उक्तिरः. तळाव (सं.तटाकः) तलाउलिय प्राचीसं. तळावडी (सं.तडाग-) तलागु उक्तिरः. तळाव (सं.तडाग)

तलार अंबरा. उक्तिर. उषाह. ऋषिरा. चारफा. नलरा. विक्ररा. विमप्र. षडाबा. नगररक्षक, कोटवाल (दे.तलवर)

तलार**जं** *लावल. प्राचीसं*. नगररक्षण, कोट-वाळपणुं

ततावली *प्राचीफा*. नानुं तळाव, तळावडी (सं.तडाग)

तळावा *प्रेमाका*. गाडानी धरीने मजबूत टेकवी राखनार अने बेठकनी किनारीमां लगाडेल लाकडाना ककडा

तळासवुं, तलांसबुं, तळांसवुं कादं(शा). कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका. वीसरा. (पग) दबाववा, चोळवा (सं. तलघर्ष)

तिल (तिल कीघ) जुओ क्षोणि तिल तिलआं, तिलीआ (तिलआं/तिलीआ तोरण) ऋषिरा. "गुर्जरा. तोरणनो एक प्रकार; जुओ तिलया तोरण

त्तलिण *प्राचीसं*. बारीक [सं.तलिन]

तिवया तोरण, तत्तीआ तोरण, तत्तीया तोरण आरारा. नलरा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा (ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विमप्र. बारणे लटकाववानां खास प्रकारनां तोरण, पांदडां के फूल साथे कसबी तार, जिरयान कापडना टुकडा के वरख वपराया होय तेवुं तोरण; जुओ तालीआ तोरण

तलीआ (तलीआ तोरण) जुओ तलिआं तलीआ तोरण जुओ तलिया तोरण, तालीआ तोरण

तत्तीआं *उपवा. [जोडा] [दे.तिलया] तत्तीया (ततीया तोरण) *ऐतिका. [एक प्रकारनां तोरण]; जुओ तिलया तोरण तळुए दशस्कं(१). प्रेमाका. तिळये [सं. तल-]

त्तक्रुवां दशस्कं(१). प्रेमाका. पगनां तक्रियां [सं.तल-]

तलेंटी कस्तुवा. तळे, नीचे

तिक्षच्छय प्राचीसं. इच्छुक (सं.तिल्लिप्त) तलो *अखाका. [मुखी, अग्रणी] [दे.तल];

अखाछ. तळियुं ?, [*मोटाई, ***गु**रुता]

तब आरारा. कादं(शा). गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. वीसरा. त्यारे (सं.ततः) **तव** *ऐतिका*. तप तव- उषाह. सिंहा(म). स्तुति करवी, स्तवन करवं (सं.स्तव्) त्तव- वीसरा. तपवुं तवगच्छ चारफा. तपागच्छ नामनी जैन मुनिओनी एक शाखा के गण (सं.तपस् **+गच्छ)** तवगणवर (तवगणवरकाननि) *चारफा.* तपागच्छ[सपी उत्तम वनमां] (सं. तपस्+गण) तवण, तवणु तेरका. प्राचीफा. सूर्य (सं. तपन) तवन अंबरा, आनंस्त, स्तवन तवत्र उषाह. स्तुति (सं.स्तवन) तपश्चर्या तवसज्झार्ड चारफा. शास्त्राध्ययन वडे (सं.तपस्+स्वाध्याय) तविल अभिक, एक प्रकारन् मुखवाद्य **तस** वसंवि. तेना (सं.तस्य); देवरा. तेने (सं.तस्य) **तस पटे** *ऐतिका.* तेनी पाटे **तसिइं** *आरारा*. त्यां, त्यारे तसु आरारा. तेरका. लावल. तेनुं (सं. तस्य); लावल. तेने (सं.तस्य); आरारा. ते. तेथी तसीआ, तसीया, तसैहा

[(धोडेसवारनी) हाजरी] [अ.तसहीहा] तस्करइ उक्तिर. चोरी करे (सं.तस्करयति) तहति, तहत्ति आरारा. ऐतिका. जिनरा.

तेम ज, बराबर (सं.तथा+इति) तहवि *तेरका*. तोय (सं.तथापि) तहाविह जिनरा. तथाविध, [ते प्रमाणे] ति गुर्जरा. तेरका. त्यां (सं.तस्मिन्) **तहियड** *उक्तिर*. त्यारे तिहं वसंवि. "वसंवि(ब्रा). तेनां (सं.तस्याः) तर्हि तेरका. त्यां (सं.तस्मिन्) **तहींनो** *प्रेमाका*, त्यारनो तहींय उक्तिर. त्यारे [सं.उस्मिन्] **तह** *ऐतिका*. तेना तहुणा साह *चारफा.* त्रिभुवन शाह, [एक श्रेष्ठीनं नामी **तं** *उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. वाग्भबा.* ते (सं. तद्) **तंगोटी** उक्तिर, नानो तंबू [रा.] तंट सिंहा(शा). ?, [*मोटो अवाज] दि. तंडी तंत अखाछ. तंत्र; [शास्त्र; मूळ]; तांतणो; [खरेखर, खरी वात]; *अखाका. अखेगी.* दशस्कं(१). नरका. तंतु, तांतणोः *आरारा. चित्तसं*. खरी वात **तंत (मंततंत)** *जिनरा*. तंत्र, मित्रतंत्र, जादुटोणा 🕽 **तंतवेणा** *अखाका*. तंतुवीणा – एक वाजिंत्र तंतु-ते ग्रेमप. तंतु वडे तंन कामा(त्रि). संतान, दीकरी, दीकरो (सं.तन) तंन कामा(त्रि). मदमो. शरीर (सं.तन्) **तंनक** मदमो. तनीक, जराक **तंबाळू** **वीसरा.* [जलपात्र] [दे.तंबालुय]

तह *ऐतिका. तेरका.* तथा

तस्य आराराः तेवो (सं.तादशकम्)

तंबोल ऋषिरा. नेमिछं. लावल. षडाबा. खावानुं नागरवेलनुं पान (सं.तांबूल) तंबोलरी थई उक्तिर. पानदानी (सं. ताम्बूलस्य स्थगी)

तंबीतिया *षडाबा.* नागरवेलना पानमां थतो एक कीडो

ता चंद्रवा. ते

ता अखाछ. ताप

ताइ आरारा. तात, पिता

ताइ प्रबोप्र. ते [ज]

ताई नलरा. वणकर

ताएलां *नरका-२.* तारां

ताक अखाछ. [ताकवुं ते, ध्यान राखवुं ते], लाग

ताकइ *आरारा. नेमिछं*. ताके, [लक्षित करे], विचारे (सं.तर्क्)

ताखणि गुर्जरा. प्राचीसं. त्यारे (सं.तत्क्षणे)

ताखिणि *प्राचीसं*. त्यारे (सं.तत्क्षणे)

ताग अखाका. पार; अखाछ. छेडो, [पार] ताग काढवो चित्तसं. रस्तो काढवो, उपाय करवो

ताग (ताग लीजिये) *प्रेमाका.* छेडो, [पार लो, परीक्षा करो]

तागीर *रुस्तस*. बरतरफ, [सजा, दंड करवो] [अ.ताजीर]

ताग्य *ऐतिरा*. त्याग, दान

ताच सिंहा(शा). साथ आपनारी मंडळी [उ.ताश]

ताच *मदमो.* ताछ, शोभा, [ठाठ]; शोभतुं, [ठाठभर्यु] ताचा *नरका. *नरप. [तारा (उपर)] ताछड् उपबा. प्राचीसं. कापे, छोले (सं. तक्षति)

ताजइ *आरारा*. ताजा, नवा

ताजइ गुर्जरा. *विराप. अवगणना करे, [उपहास करे, धमकी आपे] (सं. तर्जयति); जुओ ताजिउ

ताजण, ताजणड *उपवा. *नंदव. पंचवा. वीसरा. वेताप. चाबुक (फा.ताजियान)

ताजा चारफा. प्राचीफा. तुरत, [हमणां] (फा.ताजह)

ताजिउ *गुर्जरा. *नेमिछं. [धमकाव्यो, ठपको आप्यो] [सं.तर्ज्]; जुओ ताजइ ताजिम प्राचीफा. मान आपवानी क्रिया, अदब, [कुर्निश] (अ.तअजीम)

ताजी कर्पूमं. हम्मीप्र. अरबी घोडो, उत्तम प्रकारनो घोडो (फा.)

ताज्य मदमो. त्याज्य

ताज्य करवाने मदमो. तजवा

ताठउ *उक्तिर.* त्रस्त, [त्रासेलो]

ताड**इ** *प्राचीफा. प्राचीसं.* प्रसारे, पहेरे [दे. तडु]

ताड**इ** आरारा. उक्तिर. उपबा. षडाबा. मारे, पीटे (सं.ताडयति)

ता**डंक** प्राचीफा. शृंगामं. काननुं आभूषण, कुंडळ (सं.ताटंक)

ताडीइ * नेमिछं. [नाखवामां आवे **छे**] [दे. तडु]; जुओ ताडइ

ताडु, ताडो *प्रेमाका.* हठ, [आग्रह]; [*ताडूको]; *शृंगामं.* ताण, आग्रह

ताडो *चंद्रवा*. ततडाट, [खेंचाण] ताढि आरारा. उपवा. टाढ (*सं.स्तब्धिः) तार्दुं आरारा. लावल. टाढुं **ताण** *उक्तिर*. त्यारे **ताणउ** *आरारा*. खेंची लावो **ताणती** *नरका*. तरफेण करती. अनराग बतावती र ताणही आरारा. ताणे, आग्रह करे तात आरारा. चित्तसं. बाळक, संतानने 'बापा' जेवूं संबोधन तात जिनराः निन्दा दि.तत्ति]; जुओ तातडी, ताति, परताति तातउं उपवा. गुर्जरा. प्रेमाका. गरम; मदमो. लालचोळ; तीक्ष्ण, धारदार; आकर्र, उग्र; चंद्रवाः तेजीलं, तीखं (सं.तप्त) तातडी प्राचीसं. *चिन्ता, [निंदा]; जुओ तात **तातपरज**्रोमणः तात्पर्य **ताति ***विमप्र. [निंदा]; जुओ तात तावे सिंहा(शा). साचे (सं.तथ्य?) **तान** *चंद्रवा.* रटण, रढ तानें तान (तानें तान मिलइ) आनंस्त. तानथी तान [मळे], [संपूर्ण मेळ थाय] **तानो** प्रेमाका. तान, लगनी, आतुरता **तापजो** *प्रेमाका*. तप करजो **तपिरयड** *आरारा*. तपावशे. बाळशे **तापुं** *प्रेमाका*. तप करूं तापेस प्राचीका. प्रेमप. तपस्वी (सं.तापस) ताम आरारा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका, देवरा, नलरा, नेमिछं, लावल,

विक्ररा. त्यारे. तो. एटले. पछी (सं. तावत्) **तामइ** *आरारा*. त्यां ताम-रस शंगामं. कमल (सं.) तामस *प्रेमाका*. तामसी, रोषवाळ् **ताय** *आरारा. गुर्जरा. शंगामं.* पिता, तात **ताय** *आरारा*. ताप. संताप **तायक** नलरा. एक देश, ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो **तार** *आरारा. "वसंफा(ल). वसंवि.* देदीप्य-मान, उत्तम, मनोहर **तार** *गूर्जरा. चित्तसं*. आकाशनो तारो (सं. तारकः) **तार आव्यां** अखाका. योग्य के तैयार थयां. [उत्कर्ष पाऱ्यां, फळ्यां] **तारणउं** *आनंस्त. षडाबा.* तारनार **तारण-तरण** *देवरा*. तारनारी होडीखप तारतखानुं सिंहा(शा). पायखानुं, शौच-कृप] [अ.तहारतखाना] तारा प्रेमाका. आंखनी कीकी [सं.] **तारायण** स्थूलिफा. तारागण **तारु** अखाका. तरनारा तारुण वसंफा, वसंवि, वसंवि(ब्रा), तारुण्य **तारुणी** *नरका. मदमो. प्रेमाका.* तरुणी. युवान स्त्री तारे देवरा. त्यारे. ते वखते तारोतार प्रेमाका. छिन्नभिन्न, अस्तव्यस्त ताल उक्तिरः खाबोचियुं (सं.तहः) ताल हरिख्या. काननं घरेणं (सं.) प्रा. तालक; हिं.तारो

ताल शीलक. ताळूं (सं.तालक) ताल आरारा. समय, वेळा (रा.); जुओ इण ताल, तिणि ताल **ताल** *आरारा(व).* ताडनुं वृक्ष (सं.) ताल, ताळ आरारा. नरका. प्राचीसं. *प्रेमाका. लावल.* एक प्रकारने वाह्य, करताल, कांसीजोड **ताल-** *प्राचीसं.* ताळाथी बंध करवुं (सं. तालक परथी) तालंड उक्तिर. ताळूं (सं.सालंकम्) तालक श्रंगामं. ताडनुं झाड (सं.) **ताल-कांसी** *प्रेमाका*. कांसानी धातून्ं बनावेल वाद्य, आंझ तालपट, तालपट्ट, तालपुट आरारा. एक तीव विष तालमेल नेमिछं, प्रेमाका, संगीतना ताल अने मेळ ताला लावल. एक प्रकारनुं वाद्य, [ताळ] तालाचर नलरा. *नृत्यनो व्यवसाय करनार एक जाति, [ताल वगाडनार] (सं. तालचर) **तालावेली प्रबोप्र.** धालावेली, आतुरता, [व्याकुळताः] दि.तल्लोविल्ल]; जुओ तलमल, तालोवीली **तालिमखानुं** *हम्मीप्र*. नृत्यशाला **तालिय** *तेरका*. ताडित, [प्रहार पामेल] *तालीआ तोरण (तलीआ तोरण) विमप्र. बारणे लटकाववानां खास प्रकारनां तोरणः जुओ तलिया तोरण ताळी पडशे प्रेमाका. मश्करी थशे, फिजेती

यशे] तालीय *वसंवि*. ताळी दईने, ताल साथे (सं.तालिका) **ताली लागवी नरका. प्रेमाका**. लगनी लागवी **तालु** *गुर्जरा.* ताळ, कांसीजोड **तालुयज** *उक्तिर*. ताळवुं (सं.तालुकम्) तालोबीली प्राचीफा. व्याक्ळता, (दे.तल्लो-विल्ल); जुओ तालावेली ताब तेरका. त्यां सुधी (सं.तावत्) **ताव** *गूर्जरा*. ताप ताब(?) वीसरा. *चादर, [*कोई वस्त्र-प्रकारी तावड, तावडउ अंबरा. आरारा. जिनरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलरा. प्रेमाका. वीसरा. वेताप. सिंहा(शा). ताप, तडको (सं.ताप+क) तावडी प्रेमाका. नानो तावडो, कढाई, पेणी [सं.तापक] तावी षडाबा. कढाई, पेणी (सं.तापक) **तावीने ***नरका. [कसीने, पारखीने] ताबोगल अभिक. *वैद्य तास आरारा. कृष्णच. चंद्रवा. तेरका. नेमिछं. तेनुं (सं.तस्य); आरारा. देवरा. तेने (सं.तस्य); आराराः ते **तास** *प्रेमाका.* रिशमी कसबी कापड [फा.] तास (तेणे तास) कामा(शा). *कलाक, [*ते स्थळे, *त्यां]

तासत् प्राचीफा. एक प्रकारन् चकचिकत

रेशमी कापड (फा.ताफ्तह) तासी *नरपः [तेनाथी, तेणे] तासु नेमिछं. लावल. स्थ्रलिफा. तेनुं (सं. तस्य) **ताहारा** अखाका. त्यारे **ताहारि** *नलाख्या*. त्यारे **ताहारे** *चंद्रवा*. त्यारे **ताहि** *आरारा. तेरका.* त्यां (सं.तस्मिन्); वीसरा, ते **तां** अखाछ, अभिउ, उक्तिर, उपबा, कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. त्यां, त्यां सुधी, तो, एटलामां (सं.तावत्) **तांड़** *उक्तिर. *कृष्णच.* [तो], तोपण तांगणी उक्तिर. मळविसर्जन करवुं ते (*सं. तनुगमनिका) **तांडक** *गुर्जरा.* माथुं (सं.तुण्डकम्) तांणोतांणि लावल. ताणाताणी, खेंचाखेंची, वादविवाद तांत अखाछ. तार, तांतणो [सं.तंत् **तांतण** *प्राचीसं*. तांतणो (सं.तंतु) तांदुल अखाका. नरका. [छडेला] चोखा, फ़ोतरां काढी नाखतां रहेता अनाजना दाणा

ति नलाख्या. लायल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. विमप्र. षडाबा. ते (सं.ते) ति अभिक. नलाख्या. तें, तारा वडे (सं. त्वया) **तिइ, तिइं** *कादं(शा). लावल.* तें [सं.त्वया] तिउणउ उक्तिर. तमणुं (सं.त्रिगुणम्) तिउली प्राचीसं. वाद्यविशेष: जुओ तिवलि **तिऊं** *वीसरा*: तेम, तेवं [प्रा.तेम्व] **तिके** आरारा, तेने तिग जिनरा. त्रण [सं.त्रिक] तिज प्राचीका. तेज तिजइ, तिजइं उक्तिर. नलरा. वीसरा. तजे, छोडी दे (सं.त्यजित) तिजक प्राचीका. पशुपक्षी, तिर्यंच (सं. तिर्यक) तिजिह वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). छोडी दे (सं.त्यजति) तिजीइ गुर्जरा. तजाय, छोडी देवाय (सं. त्यज्यते) **तिडक**च *उक्तिर*. तडको तिडावे *ऐतिका*, बोलावे, आमंत्रित करे, [तेडावे] तिडोत्तर सउ *उक्तिर.* एकसो त्रण (सं.च्युत्तरं शतम्) तिण देवरा. वीसरा. ते (सं.तेन) **तिणइं** *आनंस्त.* तेणे **तिणड** *तेरका*. तेनुं ति**णं** प्रबोप्र, तेणे तिषा आरारा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा. ते, तेणे, तेनाथी (सं.

तांहि प्रबोप्र. त्यां

तांम आरारा. त्यारे

तां लगइ उपबा. त्यां सुधी; जुओ लग

तांह नलाख्या. त्यां (सं.तस्मात्)

तांहाकण चतुचा. त्यां, तो

तेन); आरारा. तेमां; तेथी
तिणि तालइ आरारा. ते वेळा, त्यारे; जुओ
ताल
तित्य ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. तीर्थ
तित्यथर प्राचीफा. तीर्थंकर
तित्थंबर प्राचीफा. तीर्थंकर
तित्थंबर तेरका. तीर्थंश्वर
तिथ प्राचीसं. त्यां ज (सं.तत्र)
तिथ वीसरा. तिथि
तिनि गुर्जरा. विराप. त्रणे (सं.त्रीणि)
तिन्नि आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. त्रणे (सं.

तिबल प्रबोप्र. वाद्यविशेष; जुओ तिविल तिम आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. षडाबा. तेम (अप.तेम्व)

तिमइ उक्तिर. तरत ज
तिम जि उपवा. तेम ज
तिमर गुर्जरा. अंधकार (सं.तिमिर)
तिमि उपवा. तेम ज, ते ज रीते
तिय ऐतिका. त्रिया, स्त्री
तियस ऐतिका. त्रिया, देव
तियाग जुओ प्राण-तियाग
तिरषा अखाका. तृषा, तरस
तिरसीयउ आरारा. तरस्यो [स.तृषित]
तिरिज प्राचीका. प्राचीफा. पशुपक्षी वगेरे
प्राणीओ (सं.तिर्यक्); जुओ तिरिय
तिरिष्ठ उक्तिर. षडावा. तीरछुं (सं.तिरश्च)
तिरिय आरारा. मर्त्यलोक (सं.तिर्यक्);
जुओ तिरिअ

तिरी वीसरा. स्त्री तिरेह प्राचीफा. त्रण रेखावाळो (सं.त्रिरेख) तिर्यलोक गुर्जरा. तिर्यक्लोक, मृत्युलोक तिल अखाका. उक्तिर. प्रेमाका. षडाबा. तल (सं.); नलाख्या. तलमात्र

तिलंड, तिलो उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा. तिलक, टीलुं; जुओ सिरतिलौ तिळड *वीसरा. [आंखनी कीकी] (सं. तिलक)

तिलकुशम ऋषिरा. तलना छोडनुं फूल (सं. तिलकुसुम)

तिलकुसुमोपम वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). तलना छोडना फूल जेवुं तिलग आरारा(व). तिलकवृक्ष, रतावला तिलतार प्राचीसं. स्नेह

तिल-तुस जुओ तुस

तिल-तुस-मित्त शृंगामं. तलना फोतरा जेटलुं, स्वल्प [सं.तिलतुषमित]

तिलय तेरका. तिलक

तिलवटि *षडाबा*. तलवट

तिलिमा प्राचीसं. वाद्यविशेष [दे.]

तिली उक्तिर, तिलक

तिलो जुओ तिलउ

तिवरारि चारफा. प्राचीफा. त्रिपुरारि, शंकर तिवल प्राचीफा. पेट उपर पडती त्रण रेखा;

जुओ त्रिवलि

तिवल प्रद्युचु. प्राचीफा. लावल. वाद्यविशेष, संभवतः ढोलक (अ.तब्ल के तब्लह्); जुओं तिविल, त्रिवली

तिवार, तिवारइ *आनंस्त. आरारा. ऐतिरा*.

तिरिस *आरारा.* तृषा, तरस

देवरा. नरका. नलाख्या. लावल. त्यारे तिवाहरडं *वाग्भवा*. त्यारे तिविर *अभिऊ*. तीव्र, [कठोर] तिविल *नेमिछं. विक्ररा.* एक वाद्य, संभवतः तबलू, ढोल; जुओ तिवल **तिसड** *आरारा*. त्यारे, त्यां तिसंड आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा. तेवुं (सं.तादृशकम्) तिसर *देवरा.* त्रिसेरो. त्रण सेरवाळो (हार) तिसंझ ऐतिका. त्रिसंध्या, त्रिण संध्या-काळी **तिसिख** *नेमिछं*, तेवो तिसेर *हम्पीप्र*. उत्तम घोडानी एक जात तिस्युं आरारा. तेवुं (सं.तादृशकम्) **तिह** *आरारा*. त्यां **तिह** वसंवि. "वसंवि(ब्रा). तेनो (तस्य) तिहा किणइ आरारा. त्यां [सं.तस्मिन्+ कर्ण]; जुओ कणि तिहारइ, तिहारि अभिक. त्यारे तिहां अभिऊ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा.) नलाख्या. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा. त्यां (सं. तस्मात्/तस्मिन्) तिहि वीसरा. ते(मां) **तिहुअण** *ऐतिका. गुर्जरा. शृंगामं.* त्रिभुवन तिहुयण ऐतिका. जिनरा. तेरका. प्राचीसं. त्रिभुवन, त्रण लोक तिहुण *तेरका*. त्रिभुवन तिह्यण आरारा. त्रिभुवन

त्यार पछी तिं ऐतिसः तें **ती** *आरारा*. तेना ती वसंफा. वसंवि. ते (सं.ते) तीखालि, तीखाली नेमिछं. लावल. तीक्ष्ण, अणीदार तीडू आरारा(व). तिमिर वृक्ष (दे.तिरिड) ? तीणडं वसंवि. ते(थी) (सं.तेन) तीतर प्रेमाका. तेतर, एक जातनुं पक्षी तीतिर उक्तिर. तेतर (सं.तित्तिरि) तीय गुर्जरा. प्राचीसं. तीर्थ **तीथंकर** गुर्जरा. तीर्थंकर **तीने** ऋषिरा. तेणीए तीन्हउं उक्तिर तीक्ष्ण तीमड उक्तिर. खाद्य पदार्थने उकाळीने प्रवाही रूप आपवुं, कढी करवी दि. तिम्मी **तीमण** *उक्तिर*. ओसामण, कढी तिम्मणी तीमन शंगामं. एक प्रवाही भोजन वानगी, ओसामण (दे.तिम्मण) तीमर चित्तसं. तिमिर, अंधका्र **तीयं** *षडाबा.* **ते तीयारी** *देवरा*, तैयारी तीर, तीरइं, तीरि अभिक गुर्जरा नजीक, पासे: [*ते समये ज. *त्यां ज] तीरइ शंगामं. शके, [शक्तिमान थाय] (दे. तीरइ) तीरइं, तीरि जुओ तीर **तीसि** *नेमिछं*. ए, [एवा] तिहार, तिहारइ आनंस्त. कादं(शा). त्यारे,

तीहचु *वसंवि*. तेमनो **तीहं** *वसंवि*. तेनां **तीहां** *उपचा*. तेओ **तींछे** *गूर्जरा.* त्यां, त्यारे (सं.*तत्था) तींहं *षडाबा*. तेओ (सं.तेषाम्) तु अभिकः उक्तिरः गुर्जराः नेमिछंः लावलः वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वाग्भबा. तो. वळी (सं.ततः) **तु** *तेरका*. तुं ? (अप.तुहुं) **त्र** उक्तिर. ते **न्तु** *आरारा. गुर्जरा. नलरा. वाग्भवा.* -थी, -मांथी, करतां (सं.तः) **तुख** प्राचीका. फोतरां (सं.तुष) तुखार कादंम(शा). प्रेमाका. वीसरा. हम्मीप्र. तोखारिस्तानना घोडा, तोखार, घोडा तुखारा ऋषिरा. तुखार देशनो वेगीलो घोडो, [घोड़ो] **तुट्ट, तुट्ट**उ *तेरका.* तुष्ट तुडो ऐतिरा. संतुष्ट थयो [सं.तुष्ट] **तु**डि ऐतिरा. नलरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. विक्ररा. स्पर्धा, बराबरी, जोटो; जुओ तोडि **तुडि-वस्तिण** *प्राचीसं*. अकस्मात् ्र **तुडीय** *देवरा.* (पगनो) तोडो, [एक आभूषण] **तुणि** *नेमिछं*. झडपथी (सं.तूर्णम्) तुत जुओ तुंत तुबल विराप. तबलां (अ.तब्ल/तब्लह्) **हुमन** *पंचवा*. तमने कुम्ह लावल. तमारा; तने; वीसरा. तमे

तुम्हारज आनंस्त. लावल. वीसरा. तमारो **द्धम्हासित** *उक्तिर*. तमारा जेवी **त्रम्हे** *आनंस्त. उपबा. लावल. वीसरा.* तमे **तुम्हो** *आनंस्त*. तमे **तुर** *शुंगामं*. ?, [जलदी, उतावळ करीने] **तुर** *कादं(शा).* घोडो (सं.तुरग) **तुरक** *गुर्जरा.* घोडो (सं.तुरग) **तुरजता** *अखाका.* ऊंचाई (सं.तुर्यता) ं **तुरणी** *प्राचीफा*. तरुणी तुरवरी विराप. तूरी, एक वाद्य (सं.तूरी) **तुररी** गूर्जरा. रणशिंगानो एक प्रकार (सं. तूर्य) **तुरंग** *प्राचीफा. हरिवि*. तरंग, लहेर **तुरंगम** *नेमिछं*. घोडो [सं.] **तुरिज** नलरा. घोडो (सं.तुरग) तुरिय, तुरिया ऐतिरा. कृष्णच. गुर्जरा. *जिनरा. विराप*. घोडाओ (सं.तुरग) **तुरिया** *शुंगामं.* त्वरित तुरी कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. लावल. वीसरा. घोडो (सं.तुरग) **त्ररी** रूपच. *वाजुं, *एक संगीतमय ध्वनि-वाळुं वाजित्र, [शरणाईना जेवुं वाद्य] [सं.तूरी] **तुरीय** प्रद्युच्न. ललिरा. विमप्न. घोडो **तुरीया** *अखाका. नरका.* [जागृति, स्वप्न, सुष्रितिथी उपरनी चोथी अवस्था], बधा भेद दूर थतां आत्मा अने परमात्नानी एकतानी व्यवस्था, [अखाजीनी द्रष्टिए ब्रह्म तुरीयातीत]

तुम्हञ्च *जिनरा. नेमिछं*. तमारो

तुरुणी ऋषिरा. तरुणी, युवती **तुर्यलोक***विराप. [पृथ्वीलोक] (सं.तिर्यक्+ लोक)

तुलइ *गुर्जरा. विराप*. तोळी शकाय, समान थाय (सं.तुलयति)

तुळची वीसरा. तुलसीनो छोड

तुलडी *प्रघुचु*. [तोलडी], दोणी, [नानी हांडली]

तुलाई उक्तिर. तळाई, गादलुं (सं.तूलिका) तुल आरारा. तेरका. तुल्य, -ने योग्य तुल्ड नेमिछं. *तुलनामां, [तोले, समान] (सं.तौल्यके)

तुष अखाछ. नरका. फोतरां [सं.] **तुस (तिलतुस)** जिनरा. [तलना फोतरा जेटलुं], लेशमात्र, (जराय) [रा.]

तुसार तेरका. झाकळ (सं.तुषार)

तुह नलाख्या. तो (सं.ततः खलु)

तुह तेरका. तारुं (सं.तव)

तुहद् उक्तिर. नेमिछं. लावल. विमप्र. शृंगामं. तोपण (सं.ततः परथी)

तुहारइ *जिनरा*. तमारा

तुहि कादं(शा). तोपण, तोय (सं.ततः परथी)

तुहि गुर्जरा. तुं पण

तुहितज *गुर्जरा. [तो तो, तो पछी]

तुहीन शृंगामं. झाकळ (सं.)

तहने *प्रेमाका*. तने

तुहुंजि *गुर्जरा.* त्यारे ज, तो ज

तुहाची शृंगामं. तमारी

तुह्मासित *विमप्र. [तमारा जैवो]; जुओ

तुम्हासित - ------

तुंग *ऐतिरा*. मोटी [सं.]

तुंगत्तिण ऐतिका. ऊंचाई [सं.तुंगत्वन]

तुंगा लावल. उच्च, उत्तम प्रकारना, [मोटा]

तुंगी *ऐतिका.* रात्रि (सं.)

तुंठे देवरा. प्रसन्न थाय (सं.तुष्ट)

तुंत (तुत ?) *आरारा(व).* फळझाड शेतूर (फा.तूत; सं.तूद) ?

तुंब भड थाट हम्मीप्र. योद्धाओनी एवी ठठ के तुंबडुं मूक्युं होय तो भींय पडे नहीं; जुओ थाट भड़ तुंब

तुंबर लावल. ए नामनो गंधर्व

तुंबर, तुंबरु प्रेमाका. तंबूर, एक तंतुवाद्य

तुंबरु *प्रेमाका.* ए नामनो एक गंधर्व तुंबलि *देवरा.* माथुं (सं.तुम्ब)

तुंबीफल कामा(त्रि). कामा(शा). तुंबडुं [सं.]

तूट्ड आरारा. तूट्यो, ओछो थयो तूट्ड अभिऊ. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. शुंगामं. षडाबा. तुष्ट थाय,

प्रसन्न थाय

तूण जुओ पाडल-तूण

तुणि विमप्र. तारुं

त्र्णियउ उक्तिर. तूणेलुं – रफू करेलुं (सं. तुणितम्)

तूप अखेगी. प्रेमाका. घी [सं.]

तूर अभीऊ. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(धु). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रेमाका. एक वाद्य, शरणाई, रणशिंगु (सं.तूर्य)

तूर अखाका. रू [सं.तूल] **तूरि** *ऐतिरा.* [बुद्धिना] चारे प्रकारे **तूरि** उक्तिर. *षडाबा. एक प्रकारनी माटी: गोपीचंदन [दे.; हिं.तुवरिका] **तूली** उक्तिर. पींछी (सं.तूलिः) तूसइ आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. विक्ररा. षडाबा. तुष्ट थाय, संतोष पामे, प्रसन्न थाय (सं.तुष्यति) **तूंअरि** *उक्तिर*. एक धान्य, [*त़्र्वरी – सरसवनी एक जात, *तुवेर] (सं.तुंबरी) **तूंछीइ** *गुर्जरा.* तरस्यो थाय (सं.तृष्यति) **तंतु** *गुर्जरा.* तुंबडुं, एक वनस्पति (सं.तुम्ब, तुम्बक) **तूंहरइं वाग्भवा**. तारे, तारी पासे तृणकर्म ऋषिरा. तरणा समान हळवां कर्म **तृणवारि** *षडाबा*. सावरणी (सं.) **तृणावंत** जुओ तरुण तृपति आनंस्त. तृप्ति **तृशुल** *गुर्जरा*. त्रिशूल **तृस** *षडाबा***. तरस (स.**तृषा) **त्रसिउ** *षडाचा*. तरस्यो (सं.तृषित) **तृहु परि** जित्तर. त्रणे रीते ते जुओ ततू-ते **तेउ** लावल. तेओ **तेउ** *उपबा. गुर्जरा.* तेज, प्रकाश **तेऊकाय** *आनंस्त.* तेजस्काय, अग्निकाय, अग्निरूप जीव **तेख** *नरका. प्रेमाका. श्रंगामं.* रोष, क्रोध; विमप्र. तीखाश, [उग्रता] तेखत् *हरिवि*. खोटो गर्व करतो

तेग मदमो, कटार **तेगदार** *ऐतिका.* तलवारवाळो तेजग्गलि *विमप्र. [तेजीला – तेजगतिए चालनारा अश्व उपरो **तेजपणुं,** *चित्तसं.* ताप **तेजिउं** उक्तिर, उत्तेजित तेजी अभिक: नरका. प्रेमाका. वीसरा. पाणीदार घोडो, घोडो फा.तेझी/ताजी तेजे चित्तसं. तापने कारणे **तेण** *चंद्रवा*. तेना वडे **तेतड** *आरारा*. त्यारे. तेटलामां. त्यां **तेतउ** *आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं*. तेटलूं (अप.तेत्तीउ) **तेतलउं** आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपवा. *गुर्जरा. नलरा. षडाबा.* तेटलूं (अप. तेत्त्ल) [सं.तद्+तूल्य] **तेतीवार** *षडावा***.** तेटलामां. त्यारे **तेषि** *आरारा*. त्यां ते भणी *आनंस्त.* ते माटे; जुओ भणी **तेय** ऐतिका. जिनरा. प्राचीफा. तेज तेय *जिनरा. तिजस शरीर - जे गरमी अने पाचनशक्तिनुं कारण होय छे, आवुं शरीर प्राप्त करावनार नामकर्मभेदो [जै.] **तेरइ** उक्तिर. तेर (सं.त्रयोदश) **तेरित** *उक्तिर*. तेरस (सं.त्रयोदशी) **तेरिम्ं** गुर्जरा. तेरम् तेलंगिया *प्रेमाका*. तैलंग देशना **तेवडवुं, त्रेवडवुं** *दशस्कं(२).* त्रेवड करवी, गणवूं, [लेखवूं]

तेवडेतेवडी आरारा. सरखेसरखी **तेवली** *विमप्र.* धनस्पतिविशेष, [कंदविशेष] **तेसट्टि** *प्राचीसं*. तेसठ (सं.त्रिषष्टि) तेह भणी उपवा. *ऋषिरा. ति कारणे], तेथी; जुओ भणी तेहव, तेहवइ, तेहवि आरारा. नलाख्या. त्यारे. ते समये तेहविइ आरारा. तेथी, तेनाथी **तेहे** आरारा, तेणे **तेहें** आनंस्त ते **तेंदी** *आनंस्त.* त्रीन्द्रिय – स्पर्श, रसना अने भ्राण ए त्रण इंद्रियवाळा जीव **तेंद्रिय** उपबा. त्रण इंद्रियवाळा जीव (सं. त्रय+ इंद्रिय) तैब पंचवा. त्यारे (हिं.तब) **तो** *आरारा. देवरा. पंचवा*. तारी (सं.तव) **तो** *आरारा. देवरा. वीसरा.* तं तोड चित्तसं. तोय. पाणी तोखार अभिक. दशस्कं(१). प्रद्युच्. प्रेमाका. तोखारिस्तानना पाणीदार घोडा. घोडा **तोडा** *प्रेमाका* टोडला तोडि विकरा. सर्घा; जुओ तुडि **तोडे** लावल. बारणाना टोडला नजीक तोतर *प्राचीसं*. एक देवी, तोतला देवी तोतल प्राचीसं. तोतळो तोबर विमप्र. तोबरो, घोडाने चंदी खवडाववानी चामडानी कोथळी फा. तोबरो **तोमर** *नरका. प्रेमाका*. भाला जेवुं एक

तोय *प्रेमप***. पा**णी **तोय** *देवरा*. तने तोयज प्रेमाका. कमळ [सं.] **तोर** *आरारा*. वाद्यध्वनि (सं.तौर्य) **तोरडइ** *शुंगामं.* तारे **तोरंग** *दशस्कं(१)*. तरंग तोरां *कृष्णच*. तारां तोरिय वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). तारी **तोरी** *चंद्रवा*. घोडी [सं.तुरग] तोरीय वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). तारी तोरो "नरका. नरप(द). प्रेमाका. कलगी. छोगुं, [फेंटो] [अ.तुरी तोलओ "चारफा. [तोळेलो, तुलनामां मुकाय एटलो, समानी (सं.तोलित) **तोलीआ** *मदमो*. तोळनारा तोळी नरका. तोली, सरखावी, [मूल्य आंकी । **तोले** *चित्तसं*. तोळे. उडाडे **तोडि** *आरारा*. तोपण **तोहि** *आरारा*. तारा **तोहि ज** *आनंस्त*. तो ज तोहे, तोहें आनंस्त. तो; अखाका. चित्तसं. *प्रेमाका*. तोपण ति तेरका. एम (सं.इति) त्यक्तभूरि आरारा. घणो त्याग कर्यो होय एवा साधु (सं.) **त्यजन** *आनंस्त*. त्याग त्याग कादं(ध्र). स्वाहा आदि बलिदान आपवाना बोल

शस्त्र सि.]

त्याग माड्यो पंचवा. दान कर्युं, धर्मादा अन्नवस्त्र आप्यां, सदाव्रत मांड्युं त्याज *नरका. प्रेमाका*. त्याज्य, तजेलू त्यारताइ *पंचवा*. त्यां सूधी त्यांहांधुं *नरका*. त्यांथी त्येम चंद्रवा. तेम. तेवी रीते तइसठइ विमप्र. त्रेसठेय [सं.त्रिषष्टि] **त्रउज्ज** उक्तिर. सीसुं (सं.त्रपुक) त्रि*विक्ररा*. ज्यां त्रण रस्ता भेगा थता होय एवे स्थळे (सं.त्रिक) **त्रट** कृष्ण*बा. कामा(त्रि). दशस्कं(९)*. दशस्कं(२). प्राचीका. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा). तट, कांठो त्रटकड्, त्रटकी ऐतिका. देवरा. विमप्र. 😘 तटाक दईने; जुओ त्राटक **त्रदके** गुर्जरा. नखरांथी, [चमकधमक,

तडक- भडकथी] **त्रठ** कामा(त्रि). चंद्रवा. नरप(द). तट,
किनारो

त्रदुके स्तरास. तड्के त्र**िक** अंबरा. त्रणेय [सं.त्रीणि] त्रतासीस *उक्तिर*. तेंताळीस (सं.त्रिचत्वा-रिंशत्)

त्रपत कस्तुवा. नरका. प्रेमाका. तृप्त; कामा(शा). चतुचा. नरका. प्रेमाका. तृप्ति, संतोष

त्रपति नरका. तृप्ति त्रभोइइ कृष्णबा. *तरभोये, *छजे, [त्रीजे माळे]; जुओ त्रिभोयुं त्रम्बा प्रबोप्र. तांबुं (सं.ताम्र) त्रय-यामा कादं(शा). रात्रि (सं.त्रियामा) त्रवली कादं(शा). नाभि नजीकनी त्रण रेखा (सं.त्रियली)

त्रवेली विमग्न. त्रण वार [सं.त्रि+वेला] त्रस अंबरा. तरस [सं.तृषा]

त्रस (त्रस जीव) आनंस्त. आरारा. प्राचीफा. हलनचलनवाळां, एकेन्द्रिय सिवायनां जीवो ते त्रस जीवो [जै.]

त्रसई विमप्र. त्रिशती गणितपाटी (ग्रंथ) त्रसको त्रोडियो *प्रेमाका*. निसासो नाख्यो त्रसरी प्राचीफा. त्रण सेर — रेखावाळी त्रसाडिया वडावा. त्रास आप्यो (सं.त्रास-यति)

त्रहकंति चारफा. लचकावती त्रहत्रही अखाका. संपूर्ण, गाढ, [फाटुंफाटुं थई, गाढ थई]

त्रहेकता प्रेमाका. धसमसता, धनगनता त्रंण चित्तसं. मदमो. तृण, सूकुं घास त्रंबक, त्रंबक अभिक्र. गुर्जरा. प्राचीसं. एक वाद्य (दे.तंबक्क)

त्रंबाह्य *प्रेमाका.* एक जातनुं [त्रांबानुं] नगारा जेवुं वाद्य

त्रंबासुत शृंगामं. गायनो पुत्र, वृषभ [दे. तंबा+सं.सुत]

त्रंबालु सिंहा(शा). त्रांबानी ढोल त्राकडी कादं(शा). तकली [सं.तर्कु:]

श्राकडीवेलउ *उक्तिर*. त्राजवुं (*सं.तुला-वेलक)

त्राकलं *उक्तिर*. ताक, तकली (सं.तर्कुः) त्रागंज, त्रागलं *आरारा*. त्रागुं, मागणी माटे आत्मघातनी तैयारी **त्रागु** विकचः तांतणो, [त्रागडो, दोरो] दि. तग्ग]

त्राज्**तुं, त्राजुडुं** *नरका.* छूंदणुं

त्राजूई विमप्र. त्राजवुं

त्राट गुर्जरा. त्रांस, थाळी

त्राट * नेमिछं. [पडदो -- वांसनी पट्टीओनो] [दे.तट्टी]; जुओ त्राटी

त्राटक * नेमिछं. [तडाक दईने, एकदम]; जुओ त्रटकइ

त्राटी नलरा. शृंगामं. कामडा (वांसनी चीप)नी भींत के पडदो (दे.तट्टी=वाड, आवस्ण); जुओ त्राट

त्राटीहर नलरा. कामडानुं घर दि.तट्टी+ सं.गृह]

त्राठं आरारा. उक्तिर. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. षडाबा. त्रास पान्यो, हेरान थयो, भयभीत थयो (सं.त्रस्त)

त्राडणी अभिक्त. त्राड पाडवी ते, भयथी अवाज करवो ते

त्राडवुं *दशस्कं(१). प्रेमाका*. ताडवुं, मारवुं; नेमिछं. त्राड पाडवी, मोटो अवाज करवो

त्राडूकइ *ऐतिका*. ताडूके, मोटे अवाजे बोले त्राढूके *रूस्तस*. ताडूके

त्रापउ *उक्तिर*. तरापो [दे.तप्पक]

त्रापड *अखाछ*. तापडुं, [गूणपाट]

त्रापड्या *आरारा*. ढसडाया ? गभराया (सं.त्रप्) ? त्रास**इ** *उक्तिर. गुर्जरा.* त्रास पामे (सं. त्रस्थित)

त्रासकडो * नरका. [त्रास, परेशानी - प्रेम-भरेली]

श्रासवइ *उक्तिर. उपबा.* त्रास आपे, बिवडावे (सं.त्रासयति)

त्राहि नलाख्या. रक्षण कर (सं.)

त्राहु वाग्भवाः त्रस्त, दुःखी

त्राहे त्राहे प्रेमाका. बचावो बचावो, तोबा तोबा (सं.त्राहि त्राहि)

त्रिक *षडाबा.* त्रणनो समूह (सं.त्रिक)

त्रिकरण * ऐतिका. [मन, वचन, काया ए त्रण करण]

त्रिकरणशुद्धि, त्रिकरणसुद्धि ऋषिरा. नलरा. मन, वचन अने काया ए त्रणे करणनी शुद्धि

त्रिकशां तोरण विमप्र. त्रण फळवाळां [त्रण प्रकारनां पान वगेरे गूंथेलां] तोरण

त्रिख *कृष्णवा*. तृषा

त्रिखलां तोरण विमप्र. *त्रण धारवाळां तोरण, [त्रण प्रकारनां पान वगेरे गूंथेलां तोरण]

त्रिखा *जिनरा.* तरस (सं.तृषा)

त्रिगडू *उक्तिर*: त्रिकटु, [एक औषध, सूंठ, मरी अने पीपरनुं मिश्रण]

त्रिगवि गुर्जरा. त्रण फळांवाळुं (बाण) [*सं. त्रि+गो]

त्रिगुणु *उक्तिर*. तमणुं (सं.त्रिगुणम्) त्रिजंच गुर्जरा. नानां जीवडां (सं.तिर्यच्) त्रिणंड *आरारा. उक्तिर*. तृण, तरणुं त्रिणि *अभिक्ज. उक्तिर*. त्रण, त्रण वडे [सं. त्रीणि]

न्निष्णि *उपबा. गुर्जरा.* त्रण (सं.त्रीणि) न्निष्य *आनंस्त.* त्रण

त्रिण्ह उक्तिर. त्रण (सं.त्रीणि)

त्रि**दिसि** *आनंस्त.* त्रण दिशाए

त्रि**त्रि आरारा.** त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिन्हि *षडाबा.* त्रण (सं.त्रीणि)

त्रिन्हिस**इं य**डाबा. त्रण सो

त्रिपउं *षडाबा.* कलाई, सीसुं (सं.त्रप्)

त्रिपणड उक्तिर. जैन मुनिनुं पात्रविशेष, तरपणी (सं.तर्पणकम्) [दे.तप्पणग]; जुओ त्रेपणउं

त्रिपत नरका. तृप्त

त्रिपन उक्तिर. त्रेपन (सं.त्रिपंचाशत्)

त्रिप्त ऋषिरा. धरायेल (सं.तृप्त)

त्रिभंगी ऋषिरा. देहना त्रण मरोड (सं.)

त्रिभुवनचीतु वसंवि(ब्रा). त्रणे भुवननुं हृदय [– वित्त]

त्रिभुवनातिसायियां षडाबा. त्रणे जगतमां असाधारण (सं.त्रिभुवन+अतिशयिन्)

त्रिभोयुं *प्रेमाका.* त्रीजो माळ, मजलो; जुओ त्रभोइइ

त्रिमणइ *उक्तिर. उपबा*. तमणुं, त्रण गणुं (सं.त्रिगुण)

त्रिय *प्राचीफा*. स्त्री

त्रिया *अखाका. प्रेमाका.* स्त्री

त्रियाकांड अखाका. स्त्रीनुं प्रकरण, वृत्तांत, [प्रसंग] त्रियामा कादं(शा). रात्रि (सं.)

त्रियोग *आनंस्त. [(मननो) श्रण प्रकारनो योग – स्थिति]

त्रिवलि, त्रिवली ऋषिरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). शरीर-नी सुन्दरतासूचक पेट पर पडती त्रण वळी (सं.)

त्रिवली *ऐतिका.* वाद्यविशेष; जुओ तिवल त्रिवाय**छ** *जित्तर.* [*चित्रक, *सिन्दूर, *हिंगळो] [सं.त्रिपाद]

त्रिवेलीयां *लावल.* त्रणे वेळाए

त्रिस आरारा. वीसरा. तरस (सं.तृषा)

त्रिसट्ठ, त्रिसिंट लावल. यडाबा. त्रेसठ (सं.त्रिषष्टिः)

विसिख *गुर्जरा*. तरस्यो (सं.तृषित)

त्रिसियउ आरारा. उक्तिर. तरस्यो (सं.तृषित)

त्रिसेंथियां *प्रेमाका*. त्रण लटना सेंथानी गूंयणीमां पहेरवानुं एक घरेणुं – दामणी

त्रिह जिनरा, त्रण

त्रिहउं *गुर्जरा*. त्रण

विहत्तरि *उक्तिर*. तोंतेर (सं.त्रिसप्ततिः)

त्रिहु, त्रिहुं उपबा. तेरका. शृंगामं. त्रणे (सं.त्रि+खलु)

त्रिहुं परि *उक्तिर*. त्रण रीते

त्री वीसरा. स्त्री

त्रीखउ प्राचीसं. तीक्ष्ण, [धारदार]

त्रीष्ठि अभिक्त. तीरछे (सं.तिरश्चकम्)

त्रीठ *नरका.* पीडा, दुःख

त्रीय आरारा. स्त्री

त्रीया *वीसरा.* स्त्री

त्रीहो सिंहा(शा). त्रणे
त्रुटिव नेमिछं. तूटी जईने
त्रुटी उक्तिर. [*कोई तहेवार] (सं.त्रिपुटी)
त्रुटो कामा(त्रि). प्रसन्न थयो [सं.तुष्ट]
त्रुह कादं(ध्रु). त्रण
त्रुहे कादं(शा). त्रण
त्रुहे कादं(शा). त्रण
त्रूहे अखाछ. तोटो
त्रूहो उपवा. देवरा. तूटी [सं.त्रुटित]
त्रूहो चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. तुष्ट थयो,
प्रसन्न थयो
त्रेपित (त्रेपिड) उक्तिर. हाथीने पगे
वांधवानी लाकडानी वेडी (सं.

त्रिकाष्टिका)

त्रेडरं नेमिछं. [आडुं]तेडुं, वांकुं (सं.तिर्यक्)

त्रेडववुं (त्रेडवी दृष्टि) *कृष्णवा. [*नजर
चुकावी, *नजर त्रेवडी — गोठवी]
त्रेषणउं *षडावा. [जैन मुनिनुं पात्रविशेष]

(दे.तप्पणग); जुओ त्रिपणउ

त्रेपनमो *अखाछ*. शब्दातीत परमात्मा

त्रेलियुं प्रेमाका. तरीलुं, [खेंचनार वधारे पशु होय त्यारे] वाहनने वधारानुं नखातुं धूंसरुं

श्रेवड आरारा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. तेवड, शक्ति, पहोंच; आरारा. प्रेमाका. तजवीज, गोठवण

श्रेवडइ आरारा. संभाक राखे; जिनरा. प्रेमाका. गणनामां — लेखामां ले, माने; जुओ तेवडवुं

भेवडी "विमप्र. [शक्तिमान थई, जोगवाई करी]; गुर्जरा. "योग्य गोठवणीथी,

[*गोठवे छे, *जोगवे छे] **त्रेसिट** उक्तिर, त्रेसठ (सं.त्रिषष्टिः) त्रेष्ठ *अखाका. *जिनरा. नलरा. शंगामं. भेज, भीनाश **त्रेहेके** *प्रेमाका*. थनगने, [धसमसे] **ब्रोट**ड *जिनरा, देवरा*, तोटो **बोटड** *आरारा.* खुट्युं, गयुं [सं.त्रुटित] **बोटडी** *लावल. स्*त्रीओना कानमां पहेरवानुं एक आभूषण [सं.त्रपुप्टिका] **त्रोटि ***गुर्जरा. [संख्याविशेष] दि.तुडिय] [जै.] त्रोटी कृष्ण*वा. "नलरा*. काननुं एक घरेणुं रित.ी त्रोडइ गुर्जरा. देवरा. नलरा. नेमिछं. तोडे (सं.त्रोटयति) **त्रोडियइं** *षडाबा.* **तोड्ये (सं.त्रुटति परथी) त्रोडी** *"गुर्जरा.* [तोडीने] त्रोहवीध मदमो. त्रिविध **ब्रोहो** *चंदवा*. त्रणे **व्याणू** *उक्तिर.* त्राणु (सं.त्रिनवतिः) **त्हुमचउ** अंबरा. तमारो

थई जुओ तंबोलरी थई **थईधर** नलरा. राजानो तांबूलवाहक (सं. स्थगीधर)

धईयर अंबरा. राजाने तांबूल आपनारो (सं.स्थगीधर)

वर्ड्यातु हम्मीप्र. एक राज्यसेवक, [ताम्बूल-वाहक] (सं.स्थगीवत्) वड गूर्जरा. थयो (सं.स्थित) थक- वीसरा. होवुं (सं.*स्थक्) दि.थक] थकउ आनंस्त. आरारा. उपबा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. वसंफा(ल). वीसरा. थईने, होईने, होतां, होवाथी; -थी, -मांथी (सं.*स्थक्) (दे.थक्) यके चित्तसं. थाके [सं.*स्थक्क] **थक-** *प्राचीसं. *शुंगामं*. होवुं, धवुं (प्रा. थक-, सं.स्थग्) **यटी** उषाह. रहेठाण (सं.स्थिति) दि.थत्ति] थड्ड *जिनरा. प्राचीफा. प्राचीसं. *विमप्र. ठठ, समुदाय [दे.]; जुओ थाट थट्टि जुओ घट्टि **यडइ** *षष्टिप्र*. थडा उपर, दुकानना अग्रभाग उपर (दे.थुड) थडइ उक्तिर. झाडनुं थड [*दे.थुड] थडि, थडी जिनरा. "देवरा. ऊभा रहेवुं ते **थडं** *कर्पूमं*. स्थान दि.थुड] थण उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. स्तन थणहर कर्पूमं. प्राचीसं. स्तन (सं.स्तनभर) **थपोली** *ग्रेमाका*, थेपली **विषय गु**र्जरा. तेरका. स्थाप्यं, मूक्युं यमणी दशस्कं(१). थापण [सं.स्थापनिका]; जुओ थवणी **यम्भ** प्रबोप्र, थांभलो (सं.स्तम्भ) **यरके** नरका-२. थरथरे **थरमा** *नरका. प्रेमाका*. एक जातनुं कापड **थरहर** *तेरका. प्राचीसं.* थरथर दि.] **यरिहरि** *विमप्र. [थरथर] [दे.थरहर] **चल** नरका-२. स्थळ **यलकमल** तेरका. स्थलकमल, जिमीनमां

ऊगतुं कमळ] **यलचर** गूर्जरा. स्थलचर, जमीन परनां प्राणी बलवट ऐतिरा. [निर्जल भूमि], रणप्रदेश **चलाश्रय** *आरारा.* स्थलाश्रय, [गामनुं नाम] **यति** *आरारा. ऋषिरा.* स्थळमां, जमीनमां **चली** उक्तिर, मरुस्थल, निर्जल प्रदेश [रा.] (सं.स्थली) ववड उक्तिर. होय, छे (सं.स्थगयति) थवक तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. झूमख़ं, जथ्यो (सं.स्तबक) ववणी प्रेमाका. थापण, विजाने त्यां मुकवामां आवेली वस्तु]; *गुर्जरा.* [धापण], स्मृति रूपे मूकेली वस्तुः जुओ थमणी, थाणूं **थवना** *ऐतिरा*. स्तवना, स्तुति **थविर** *आरारा.* स्थविर, साधु **चित्रा** *षडाबा.* स्तवीश **थंडिल ठाम** जिनरा. शुद्ध भूमि-(सं.स्थंडिल) **बंदिल *** उषाह. [यज्ञनी वेदी] (सं.स्यंडिल) **यंभ** आरारा. गुर्जरा. तेरका. विक्ररा. षडाबा. स्तंभ, थांभलो; आरारा. स्तंभ जेवी मजबूत वंभण वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). धंभवं ते, [टकी रहेवुं ते] (सं.स्तम्भन) **यंभाणा** जिनरा. स्तब्ध - चकित थया; स्थिर थई गया [सं.स्तम्भ्] **थाडवा** उक्तिर, थवा, स्थितिमां रहेवा वाइ सिउं उपवा. कोई रीते, [गमे ते थाय] **थाकइ** उक्तिर. स्थित थाय, स्थान करे.

रहे [सं.*स्थव्हः दे.थक]

थाकइ अंबरा. बाकी [दे.थक्कय] **थाकउं** उत्तिर. स्थित, रहेलुं

षाकतउ उपवा. जिनरा. वान्भवा. षडाबा. षष्टिप्र. बाकीनुं, बचेलुं, [बाकी रहेलुं] (सं.*स्थक्कित) [दे.षक्कय]

थाकणे *ऐतिका*. अटकवुं ते, रोकाण **थाकि** "*गुर्जरा*. [थकी, वती] (सं.*स्थक्कित) [दे.थक्कय]

थाकिया उक्तिर. स्थित थवा, रहेवा थाको थिएप्र. रही, [बाकी रही, अटकी, नष्ट थई] (सं.*स्थिकिता) [दे.थकय] थाकीरीणी आरारा. थाकीपाकी (रा.); जुओ रीणउ

थाग ऋषिरा. वीसरा. ताग, तळियुं, ऊंडाण (सं.स्ताघ)

थाट आरारा. *गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. विक्ररा. समुदाय, ठठ (दे.थट्ट); जुओ गजधाट, धट्ट

थाट भड तुंब हम्मीप्र. योद्धाओनी एवी ठठ के तुंबडुं मूक्युं होय तो भोंय पडे नहीं; जुओ तुं भड थाट

थाण *उपबा*. धावण (सं.स्तन्य)

थाण *आनंस्त. लावल.* स्थान

थाणुं *नरका. [बहाना रूपे वस्तु] [सं. सत्यापन, प्रा.थावण]; जुओ थवणी

धायरि विमप्र. थथरे, [बीए]

थान *प्रेमाका*. ताका

थान अभिक, स्तन

वान *आरारा. नलाख्या. षडाबा.* स्थान, ठेकाणुं **थान** उपबा. दूध, धावण (सं.स्तन्य) **थानक** आरारा. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. रूपच. लावल. षडाबा. स्थानक, स्थान, ठेकाणुं

थाप *आरारा.* स्थपावुं ते, रोकाईने रहेवुं ते; अखाका. अखाछ. चतुचा. चित्तसं. "ग्रेमाका. स्थापना, ठराव, निर्णय

थाप अखाछ. भूलथाप

थाप *प्रेमाका.* थपाट, पंजानो प्रहार

थाप-जथाप अखाका. स्थापना जैने खंडन **थापणि, थापिणि** प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. थापण, अनामत (सं.स्थापनिका)

थापिणमोसु शृंगामं. थापण ओळवी ते (सं. स्थापनिका+मोष)

थापन अध्यात्म *आनंस्त.* स्थापन अध्यात्म, [मूर्त पदार्थ – प्रतीकनो आश्रय करनार अध्यात्म]

थापना *ऐतिका.* स्थापना

थापिणि *नलाख्या*. थापण, न्यास; लावल. थापणमां, मालमिलकतमां; जुओ थापणि

थारउ *वीसरा.* तारुं [रा.]

थारणहार चतुचा. ठारणहार, ठारनार

थाळ प्रेमाका. देवने नैवेद्य धरावती वखते गवातुं गीत के पद

थाली *कामा(त्रि). [*विषयो, *विषय विभागो] [सं.स्यल], [*समूह] [दे.]

थावर आनंस्त. उपवा. शृंगामं. स्थावर, जेने हलनचलन नथी तेवा एकेन्द्रिय जीवो **थाह** अखाका. प्रेमाका. ताग, पार, छेडो [सं.स्ताघ]

थाहर 'अंबरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. *विक्ररा. षडाबा. स्थान (सं.स्थावर) (दे.थाह); लावल. स्थिर, स्थावर, हलन-चलन वगरनुं

वाहरइ *उक्तिर*. होय, थाय, रहे, स्थान करे **बाहरावी** *षडावा.* रोकी (सं.स्थावर परथी) **बाहरी** *गुर्जरा. षडावा*. तारी [रा.]

-थां प्राचीका. पंचमीनो प्रत्यय, -थी, -मांथी; जुओ अे-यां

थांण वीसरा. मंदिर, देवस्थान [सं.स्थान] थांन वेताप. स्तन्य, दूध

यांपणि *जिक्तर. उपवा. षडाबा.* थापण (सं.स्थापनिका)

वांभ आराराः विक्रराः थांभलो [सं.स्तम्भ] वांभइ उक्तिरः स्थिर करे, स्तब्ध करे (सं. स्तभ्नाति)

थांभउ *उक्तिर. उपबा. नलरा.* थांभलो (सं. स्तम्भः)

थिउ अभिक. गुर्जरा. लावल. विराप. थयुं (सं.स्थित); नेमिछं. -थी (सं.स्थित)

विक्ष गुर्जरा. "वसंफा(ल). "वसंवि. षडावा.थतां, रहेतां, थईने, रहीने (सं.स्था परथी) [दे.थक्क]

विकउ अभिऊ. उपबा. नेमिछं. लावल. शृंगामं. षष्टिप्र. -थी, -थकी, वडे, -मांथी (दे.थकअ) (सं.*स्थिकत)

विति आनंस्त. आरारा. स्थिति, नियम, रूढि

विनिगिनी *लावल*. थनगनी विपि *देवरा*. स्थापी, थापी विय वसंवि. रहेनार (सं.स्थित); तेरका. थयुं (सं.स्थित)

थिर आनंस्त. आरारा. तेरका. लावल. षडाबा. स्थिर

विरत आनंस्त. स्थिरता

थिरता लावल. स्थिरता

थिवर *ऐतिका. जिनरा.* स्थविर, वृद्ध साधु **थी** *आरारा.* हती

बीअह जुओ धीअह

बीआं नलाख्या. *-थी, [-मां रहेलां] (सं. स्थित)

थीणधी जिनरा. [एक प्रकारनी] निद्रा जिमां दिवसे चिंतवेलुं काम रात्रे धई जाय] [सं.स्त्यानगृद्धि] [जै.]

यीर अखाका. स्थिर

थीरयावर *चंद्रवा.* स्थिरस्थावर, [दृढ, अचल, नित्य]

थीवलि *प्राचीफा.* पेट उपर पड़ती त्रण रेखा (सं.त्रिवलि)

युइ *ऐतिका. षष्टिप्र.* स्तुति

बुड उक्तिर. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरिवि. थड (दे.)

थुण- आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा. प्राचीसं. स्तुति करवी, स्तवन करवुं (सं.स्तुनोति)

बुणिव *ऐतिका.* स्तुति करी **बुणस्सामि** *ऐतिका.* स्तुति करीश **बुणिह** *ऐतिका.* स्तुति करे छे **बुति** आनंस्त. स्तुति **बुहर** वैताप. युवेर, [थोर] दि.थोहर] -शुं गुर्जरा. -थीं शुंभ ऐतिका. स्तूप, [स्मृति-स्तंभ] शूणी उक्तिर. थांभली – ज्यां वलोववा माटेनी राश बांधवामां आवे छे (सं. स्थूणी)

थूथड उक्तिर. [*कचरो, *रूंखुं] (सं.तुच्छम्) थूप विकरा. स्तूप, [स्मृति-स्तम्भ] थूभ उक्तिर. ऐतिका. स्तूप, [स्मृति-स्तम्भ] थूंकविडं उपबा. थूंकवुं (सं.थुक्कृ)

वे *चतुचा*. थये **वे** *वीसरा*. तमे [रा.]

थेग आरारा(व). थेगी, एक भाजी के कंद (दे.)

थेट आरारा. छेक (रा.)

-थो प्राचीका. पंचमीनो प्रत्यय, [-थी,
 -मांथी]; जुओ अम-थो

यो *पंचवा*. हतो

योक आरारा. *ऐतिका. वैभव [रा.]; ऋषिरा. नरका. प्रेमाका. थोकडो, समूह; विमप्र. थोकेथोक, खूब [सं.स्तबक] [दे.थवक्क]

योडिलउ *प्राचीसं*. थोडुं (सं.स्तोकम्)

थोषुं आनंस्त. पोलुं, बोखुं; नरका. [फोफुं], फोतरुं, पोलो सडेलो दाणो] सिं.तुस्त]

योभ आरारा. प्रशंसा (सं.स्तोभ); नलाख्या. लावल. थोभवुं ए, स्थिति (सं.स्तोभ); विमप्र. अटकायत, [रुकावट]

योभण *प्रेमाका*, टेको

योभवांदणां *थडाबा*. वंदननो एक प्रकार,

होय तेवो वंदननो लघु प्रकार] [जै.] थोर उषाह. गोळ, [सुडोळ]; तेरका. स्थूल (सं.स्थौर) (दे.) थोरो नरप(द). ढंग, रीत

बारा *नरप(द).* ढग, रात **बोल** *जबाह.* थोडुं (सं.स्तोक) **बोहर** *आरारा(व)*. थोर (दे.)

थोहरी *लिलरा.* ए नामनी पछात कोमनो पुरुष

दइडा *उपबा*. दडा (*सं.दृतिः) **दर्ड** वीसरा. दैव (*सं.दैचिय-)

दउड सउ यडाबा. दोढसो (सं.द्व्यर्ध+शत)

दउढ उक्तिर. दोढ (सं.द्व्यर्धः)

दक्ख *प्राचीफा*. दुःख

दक्खिण उक्तिर. दक्षिण दिशा

दक्षण नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). दक्षिण दिशा(नुं); *गुर्जरा. नलरा. नेमिछ. लावल. जमणुं (सं.दक्षिण); गुर्जरा. होशियार, चतुर; जुओ आदक्षण

दक्षणा लावल. दक्षिणा, दान

वसणावंत मदमो. दक्षिणावर्त, [जमणी बाजु वळतुं]

दक्षणावंत अखाछ. दक्षिण (जमणी) बाजु वळेल, [शंखनो एक विशिष्ट प्रकार]

विक्षण लावल. जमणुं

विक्षणावरतिइं *ऐतिरा.* दक्षिणावर्त, जमणा वळवाळा

दक्षीणावंत मदमो. दक्षिणावर्त (शंख)

दख *नेमिछं.* दुःख

रखणावंत नंदब. दक्षिणावर्त

दखणी ० नदब. दुखणी **क्खी** *गुर्जरा.* देखी (सं.दक्ष) दख्यण लावल. जमणो [सं.दक्षिण]; चित्तसं. जमणोः साचो. योग्य दग-रथ प्राचीसं. जल-कण (सं.उदक-रजस्) **बट्टूज** *ऐतिका*. जोईने वडकरमणु वडावा. दडा साथे रमवुं ते **वडवडी** गुर्जरा. एक प्रकारनुं ढोलक; जुओ दडवडी, दुड्दुडी **वडबडाइउ** *उक्तिर*, दडवड्यो, दोड्यो दि. दडवड] ***दडवडी [*दडदडी]** * चारफा. [*एक वाद्य] दडवड्ड प्राचीसं. शीघ्रताथी दि.]; जुओ दुडवडी **दड्डीय, दढी** गुर्जरा. बळीने, दाझीने (सं.*दग्धित) दणयह ऐतिरा. दिनकर, सूर्य वदामा, ददांमा अभिक्त. ऐतिरा. कामा(शा). *नरका. नंदब. ललिरा.* नगारुं फा. दमामः] **वदामी** *प्रेमाका*. युद्धमां ददामुं – मोटुं नगारुं वगाडनार **वद्ध** प्रबोप्र. दाझेलुं (सं.दग्ध) वधा अखाछ. चित्तसं. दुग्धा, पीडा दिध-ओदन कादं(शा). दहींभात (सं.) **दिव ओलिउ** *षडावा*, दहीं साथे मेळवेल (सं.दधि+अव+ली) **दिधसुत** *नरका.* सागरनो पुत्र चंद्र [सं.उदिध-सुत]

दन प्रते चतुचा. प्रतिदिन **दनंतर** अभिक्र. [बीजा दिवसो], वधु दिवस (सं.दिन+अंतर) **वनी** *प्राचीफा*. दुनिया [फा.दुन्या] **दन्य** *प्रेमाका***.** दिन. दिवस **दप्पण** *प्राचीफा. शंगामं.* दर्पण, अरीसो **दभ्र** *प्रेमाका.* **दर्भ, दाभडो, एक घास** दमणु ऐतिका. चारफा. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). एक वनस्पति, डमरो (सं.दमनक) **दमणो** *नरका.* दमन करनारो, दुःख देनारो **दमनक** *गूर्जरा*. डमरो (सं.) वमर जुओ छिदमर, दवर दमामो प्रद्युच्. प्राचीफा. विक्ररा. एक रणवाद्य, नोबत (फा.दमामह्) **दमे** अखाका. चित्तसं. दुःख दे, हेरान करे; *उपबा.* दमन करे, नियंत्रे **दय** *तेरका*. दया दयदयकार जिनरा. (दान) दीधा करवुं ते **वयी** *गूर्जरा***. दया करीने दरख वे**ताप. झाड (फा.दिरख्त) **दरगील** कामा(त्रि). दिलगीर **दरब** *वीसरा***. द्रव्य, सं**पत्ति ***दरवडे** *कामा(त्रि)*. दोड [दे.दडवड] **बरनेश** ऋषिरा. इस्लामी फकीर [फा.] वरश्खुं अखाछ. जोवुं; देखावुं [सं.दृश] **दरशंन** *मदमो*, स्वरूप **दरसणियां** *ऐतिका*. दर्शनी, दर्शनशास्त्री **दरसिन** विमप्र, दर्शन **वरित्र** *आरारा. गुर्जरा.* दारिद्रच; गरीबी

दिधसुता *नरका.* सागरनी पुत्री लक्ष्मी

दरियाई जिनरा. प्रेमाका. एक प्रकारन् कीमती कापड **दरिसण** *आरारा*. दर्शन **डरीडरीज वेताप**, दारिक्र्य दरीव्र मदमो. दारिक्र्य, दळदर दर्शनी ऋषिरा. तत्त्वज्ञानी, दार्शनिक दल जुओ कुरुदल **दल** चित्तसं, दिल वलगिर *देवरा*, दिलगीर, उदास वलघीर जुओ दलधीर दलिंग नेमिछं. दळवामां, नाश करवामां (सं. दलन) ***दलधीर दिलधीर** *ऐतिरा*. दिलगीर दलवड् गुर्जरा. सेनापति (सं.दलपति) दलवादल कामा(त्रि). *शत्रु पर चढी जवाने सञ्ज, [घणी मोटी] (सेना) दलावल (कमलदलावल) ऐतिका. (कमल)-दलनी पंक्ति -- हार **दलिक** आनंस्त. दळ, समूह **दलीद्र** *आरारा*. दारिद्रय दबदबाए उपबा. उतावळथी (सं. *द्रवद्रवक) वबर षडाबा. दोरी; जुओ दमर दवाजो *प्राचीफा. [शोभा]; जुओ दिवाजउ दवाडे प्रेमाका, दवाग्निमां **दवालीबंध** सिंहा(शा). तलवार लटकाववा-नो आड़ो पड़ो जेणे पहेर्यो छे तेवो सिपाई [फा.द्रवालबंद] दिवण श्रंगाम. पैसा, धन (सं.द्रविण) [प्रा.] दब्ब *आरारा. ऐतिका.* द्रव्य [प्रा.] **दव्यञ्चण** *आरारा*. द्रव्यार्चन, द्रव्यपूजा; जुओ

देवद्यण [प्रा.] **दशधा** *नरका*, दशमो प्रकार **दशन** *नरका. प्रेमाका*. दांत [सं.] दशमुं द्वार प्रेमाका. शिरीरनां नव द्वार उपरातनुं] ताळवानुं द्वार **दशारण** *नलाख्या***. द**शार्ण देश **दशैयां** प्रेमाका. लग्न पछी नवदंपतीने पितु-पक्ष तरफथी अपातां दश जमण; जुओ दसाइआ वशो अखाका. दिशावाळो. दिशामां वशो विशे अखाका. दशे दिशामां ***दशोरो** चंद्रवा. दशेरो, दश शेरनुं मापियुं ***ढश्व** वेताप, दिशा वसग जिनरा. दश[नो समुदाय] [सं.दशक] दस गुणउ उपवा. दश गणो वसन ऋषिरा. दांत (सं.दशन) दसाइआ नलरा, लग्न पछी वरवहूने श्वसूर पक्ष तरफथी अपातां दस जमण, दसैयां (सं.दश+अहानि);जुओदशैयां,दसाहीइं दसार गुर्जरा. चारफा. तेरका. देवरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. एक कुळ, यादवकुळ (सं.दशाह)

दसाहीइं अंबराः दसैयामां, लग्न पछी जमाईने सासरे जमवा तेडे तेमां; जुओ दसाइआ दिसे आराराः दिशाए, मळत्याग माटे

दसी अतिरात विज्ञाल, मळलाग नाट दसी उक्तिर दीवानी वाट (सं.दशा) दसुंदी, दसूंदी कस्तुवा. वेताप. दसमी भाग उघरावनार भाट के बारोट [सं.दशबंध] दसूट्टण, दसूटण ऐतिका. जिनरा.

दसोटण, जन्मथी दसमा दिवसनो उत्सव वसूंदी जुओ दसुंदी **वसो** *पंचवा*, देशवटो वस्त चंद्रवा. सारुं, [चमत्कारक, अद्भुत] [सं.दस्त्र]; जुओ दस्त्र **दस्तुर *** *प्राचीफा.* विहाणमां सढ माटेना लाकडानो एक भागी वस्त्र वेताप. "सिंहा(शा). सुंदर, अद्भुत, भारे] [सं.]; जुओ दस्त वह गर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. दश दहदिसि वसंवि(ब्रा). दशे दिशाओ दहाडला लीने प्रेमाका. दिवस लईए. दिवस वितावीए, पसार करीए **दहि, दही** वीसरा. षडाबा. दहीं (सं.दिध) दहिवा उक्तिर. बाळवा (सं.दह) दही जुओ दहि बहुर उषाह. दहेरुं, [मंदिर, भवन] (सं.देव-गृह) **दहैवट ज्वं** *वेताप. सिंहा(शा).* फनाफातिया थवं, जडमूळथी नाश थवो; जुओ देहेवट वालो **दंगडउ** *प्राचीसं.* गाम (सं.द्रङ्गः) **दंगणु** *ऐतिका.* बाळवुं दंडवर्त जुओ डंडवृत्त वंडाउंछणच उक्तिर. यडावा. जैन मुनिओनुं रजोहरण (सं.दंडक+प्रोंछन) **दंडासणउं** *उपवा*. दंड अने आसनियुं **वंडाहिव** *तेरका*. दंडनायक (सं.दंडाधिप) वंत देखाडे जुओ देखाडे दंत

दंतधावन प्रेमाका. दांत साफ करवानी क्रिया **दंतवण्र** *षडाबा*. दातण (सं.दंतपवन) **दंतसुकट** *उक्तिर.* [?] (सं.दन्तशकट) **दंति** *नेमिछं*. प्रकाशे छे, [प्रकाशमां] **दंती** *गूर्जरा*. हाथी (सं.) दंतुसल उक्तिर. हाथीनो दांत (सं.दंतमुसल) **वंव** ऋषिरा. उपाधि, क्लेश (सं.द्वन्द्व); *आनंस्त.* इंड, [समुदाय] **दंदडियउ** प्राचीसं. *पलायन करी गया, [दोड्या, घुमी वळ्या] **दंदोल** ऋषिरा. तोफान, धांधल, उिपद्रवी: हम्मीप्र. कोलाहल, [उत्पात]; विमप्र. संशय, [मूंझवण, द्विधा] **दंभइ** *उक्तिर*. पाखंड, आडंबर, ढोंग करे ं (सं.दभ्नोति) दंसण आरारा. ऐतिका. दर्शन; तेरका. दर्शन करनार दंसण आरारा. दंश, डंख (सं.दशन) **ढंसण आवरणी** जिनरा, दर्शनावरणीय कर्म विस्तुना सामान्यबोधने कुंठित करनार कर्म] [जै.] **वाइ, वाय** *आरारा*. लाग, उपाय; मरजी, मन, ध्यान **वाइजउ** प्राचीफा. लग्न वखते वरकन्याने अपातुं द्रव्य (प्रा.दइञ्जय) [सं.दायाद्य] बाउ स्थ्रतिफा. लाग, [मोको]; जुओ दाव वाउ (वाउ देवो) "गूर्जरा. [लाग जोवो, मोको मेळववो]; जुओ दाव वाओ मदमी लाग नि । पात्री

दाक्षायणी *प्रेमाका*. दक्षनी पुत्री, चंद्रनी पली [सं.]

दाक्षिणि कादं(शा). चतुराई (सं.दाक्षिण्य) दाक्षिनि लावल. विचार करवामां, स्त्री प्रत्येनी सहानुभूतिमां [-दाक्षिण्यमां] (सं.

प्रत्येनी सहानुभूतिमां [-दाक्षिण्यमां] (दाक्षिण्य)

दाखड़ आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. कार्द(शा). गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका. विमप्र. बतावे, कहे (सं. इक्षयित); नरका. जुए

दाखव्युं *प्रेमाका*. दर्शावायुं, [प्रगट थयुं] दाखिजे *नेमिछं*. दाखवजे, [बतावजे]

दाखियउ *नेमिछं*. बताव्यो

दाखीणी सिंहा (शा). दक्षिण्य ?, [चतुराई]

दाख्य * चंद्रया. मदमो. देखाय; चंद्रया. चित्तसं. जाण, बताव

दार्ख्यु *प्रेमाका.* जोयुं

दाध अंबरा. गुर्जरा. नलरा. दाह, बळतरा; हम्मीप्र. अग्निदाह

दाझ *चतुचा.* झंखना, इच्छा; *प्रेमप*. दुःख, गुस्सो

वाझणो अखाका. दझाडे एवी **वाट** आरारा. दाटो, अंकुश

दांडिम वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). दाडम (सं.)

दाडिमकुली लावल. दाडमनी कळी

वाडिमहूला प्राचीफा. स्थूलिफा. एक प्रकारनुं कीमती वस्त्र

बाडु विमप्र. दादा, आदीश्वर, ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर)

दाहुर श्रंगामं. देडको [सं.दर्दुर]

बाढ वडावा. पर्वतिशिखर (सं.दंष्ट्रा) बाढी सिंहा(शा). दहाडी, दररोज बाढो मदमो. रूस्तस. वेताप. दहाडो बाण उपवा. शृंगामं. वडावा. कर, वेरो, जकात (सं.दान); तेरका. दान बाणउ उक्तिर. दाणो [फा.दानह] बाणमंडही उक्तिर. अनाजनी मंडी, बजार [फा.दानह्+सं.मंडिपका] बाणी (घंणी) (बाणीगिण) ऋषिरा. देवादार,

[करजदार] **वाति** षडावा. अर्पण [करातो भाग], [एक

वारनो जथ्थो]; आरारा. दहेज,

करियावर [सं.दत्ति]

दातुर्य दशस्कं(२). प्रेमाका. दातार [सं.दातृ]

दात्रड उक्तिर. दातरडुं (सं.दात्रम्)

यदइ *ऐतिका.* दादा[पार्श्वनाथ]ए

दादर *उक्तिर*. [*घणुं; *प्रहार] [दे.दद्दर] दादर (दादरडां) *प्राचीफा*. देडकां (सं.

दादुर); जुओ डांलवइ

बादुर अखाका. प्रेमाका. मदमो. सिंहा(शा). देडको (सं.दर्द्र)

दादुरडी लावल. देडकी

दादूरा हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात दाधउ उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. दशस्कं(१). नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. विकच. वीसरा. शृंगामं. दाझ्युं, बळ्युं (सं.दग्ध)

दानरस *नरका*. (दहींनां) दाण मागवानो रस

दापु प्राचीसं. दापुं, [दक्षिणा] [सं.दाप्य]

दाबड़र्सं अक्तिर. दावडुं, पाणी खेंचवानो दालिह तेरका. प्राचीसं. दारिद्रय रेंट दालिबं, दाळिब दशस्कं(९).

साम ग्रेमाका. दर्म, जणीदार धारवाळुं एक बास

सम्ब उक्तिर. पंचवा. पैसा, नापुं (सं.द्रम्म) सम्बन, सम्बन्धं अभिक. उक्तिर. उपवा. दश्चरकं(१). प्रेमाका. दोरहुं [ढोरने बांधवानुं] (सं.दामन्)

समनी *नरका*. स्त्रीओना कपाळनुं एक धरेषुं

चमनो दश्नस्कं(२). प्रेमाका. मदमो. दयामणो

दापी *तावल.* दमन करीने, दबावीने दाव ऋषिरा. दाव, [लाग] (सं.); जुओ दाइ

दायो नंदब. सिंह्म(शा). दाव, लाग (सं. दाय)

बारि विकरा. बारणे [सं.द्वारे] **बारिका** कादं(शा). छोकरी (सं.)

बरिद *आरारा.* दारिद्रव

व्यक्ति गुर्जरा. गरीबी (सं.दारिक्रव)

व्यरित्रिय *पञ्जबा*. दरिद्र

यरीबाहर *उक्तिर.* वेश्याओनुं निवासस्थान (सं.दारिकावाटकः)

बारु, बारुक *अखाका*. लाकडुं [सं.] **बारुकर्म** *कादं(शा)*. लाकड-काम, सुतार-काम (सं.)

बारित *गुर्जरा. लावल.* दाळ (*सं.दलति परथी) [*सं.दाल]

कतिब *ऐतिसः शृंगामं***. दारिद्रय, निर्ध**नता

वालिह तेरका. प्राचीसं. दारिद्रय **वालिद्रं, वाळिद्र** दशस्कं(१). नलरा. सिंहा(म). दरिद्रता, गरीबाई (सं. दारिद्रय)

दालिद्रीया शीलक. दरिद्र, गरीब दालिंद अंवरा. दारिद्रय दाळीदर प्रेमाका. दारिद्रय, दळदर दाव- तेरका. देखाडवं (प्रा.)

वाव *आनंस्त. नरका.* अवसर, तक, मोको, लाग; *नरका.* उपाय; जुओ दाउ

वाव (दाव देवो) *गुर्जरा. [अवसर मेळववो, मोको मेळववो]; जुओ दाउ

दावडीए मदमो. लाग [वारो] आवतां (?) **दावादल** मदमो. वेताप. सिंहा(शा). दावानल

वावो अखाका. ममत, आग्रह, [वाद, मताग्रह]; *नरका*. हक्क, [आग्रहपूर्वकनी मागणी, विनंती] [फा.दावा]

वावो करे मदमो. लाग साधे वाशेर कादं(शा). ऊंट (सं.)

वाहा नलरा. रमतमां पडता दाणा, दा (फा. दाव)

दाहाढी चतुचा. दररोज

वाहिण, दाहिणउं तेरका. दक्षिण (दिशा); उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. जमणुं (सं. दक्षिणकम्)

वाही चंद्रवा. दाई, दायण वांडइ वडाबा. रस्ते, [पगदंडीए] (सं.दंड) वांतिलउ उक्तिर. मोटा दांतवाळुं, आगळ

नीकळता दांतवाळुं (सं.दन्तुरः) दांते दश आगळी लेबी लावल. शरणागत स्वीकारवी

बांमि *कस्तुवा. [दमन करे, संयत करे, ढांकेी

दि *उक्तिर*. दे, आपे: नलाख्या. दे, आप (सं.देहि)

दिइ आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). दे, आपे (सं.ददति, प्रा.दे-)

दिक्ख, दिक्खा *ऐतिका, तेरका.* दीक्षा **दिक्खाड-** *तेरका.* देखाडवुं (सं.दृक्ष्+प्रेक्ष्) दिक्खिया षडाबा. दीक्षित थया

दिक्षणडी *प्राचीफा*, दक्षिणनी स्त्री

दिख *देवरा*. दीक्षा

दिखसा *देवरा*. दीक्षा

दिखाडइ गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). बतावे (सं.*दक्षति)

दिखाल- *प्राचीसं.* देखाडवूं (हिं.दिखलाना) **दिगिदिगि** *गूर्जरा*. ढोलकनो धिगधिग

अवाज

दिजराज *आरारा.* द्विजराज, ब्राह्मण **दिट्ठउं** गुर्जरा. दीठुं (सं.दृष्ट) **दिट्ठंत, दिठंत** *आरारा. गुर्जरा.* दृष्टांत **दिढ** *तेरका*. दृढ **दिण** *आरारा. ऐतिका.* दिन, दिवस

दिणनाह शुंगामं. सूर्य (सं.दिननाथ)

दिणयर अभिक्त. उषाह. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. नेमिछं. लावल. शुंगामं. सूर्य (सं.

दिनकर)

विणंद आरारा. नलऱा. लावल. श्रंगामं. दिनेन्द्र, सूर्य दिणाहिव शंगामं. सूर्य (सं.दिनाधिप) **दिणियर** *प्राचीसं*. दिनकर, सूर्य **दिणिहारि** ऋषिरा, देनारी विण गर्जरा. दिवस (सं.दिन) विदार प्राचीफा. चहेरो, स्वरूप (फा.)

विन विन प्रत्ये चंद्रवा, विनप्रतिदिन विननाइ ऐतिरा. सूर्य [सं.दिननाथ] **दिनरेणी** *चतुचा*. दिवसरात; जुओ रेणी

ढिनिदिनि उपबा. दररोज

दिमसु प्राचीफा. दिवस

दियड *उक्तिर. वसंफा(ब). षडाबा.* दे, आपे

वियउ वीसरा. दीधुं (सं.*दित-)

दिव प्राचीफा. चमत्कार, चिमत्कारभरी दिव्य घटना] (सं.दिव्य); जुओ दिव्य, दिव्य

दिव वीसरा. दिव्य, दीवो (सं.दीप)

विवरावड उक्तिर. देवडावे

दिवस नाखवा प्रेमाका. दिवस विताववा

दिवसंतरि *आरारा*. अन्य दिवसे सिं. **दिवसान्तर**ी

दिवा *प्रेमाका***. दिवसे सिं.**ो

दिवाजउ *ऐतिका. नेमिछं***. शो**भा; जुओ दवाजो

दिवाड- वीसरा. देवडाववुं

दिवानडी *आरारा*. दीवानी, गांडी

दिवायर ऐतिका. नेमिछं. सूर्य (सं.दिवाकर)

दिवारइ आरारा. गुर्जरा. देवडावे; *विकरा*. बंध करावे

दिवांन *ऐतिका*. दरबार

दिवि गुर्जरा. तेरका. "वीसरा. देवी विविय *गुर्जरा*. दीवी (सं.दीपिका) विविस(?) तेरका. दिवस ? **विवेश** *अखाका.* सुर्य **दिवोसही** *तेरका*. दिव्य वनस्पति (सं. दिव्यौषधि)

विष्य जुओ पंच दिव्य

दिच्य ऋषिरा. अग्निमां पडवुं वगेरे एक प्रकारनी कसोटी (सं.दिव्य); जुओ दिव, टीव्य

दिशपति नलाख्या. दिक्पति, देव विशा नलाख्या. दशा, हालत, स्थिति

विशाचर-काम प्रेमाका. दिवसे फरनारा -सञ्जन लोकोनुं काम

दिशाकर्ण *दशस्कं(१)*, दिशानो दर्शक

दिशि वसंवि. दिशा

दिसउ वीसरा, दिशा

विसा *गुर्जरा.* दीक्षा

दिसि उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वीसरा. दिशा

दिसि-अंत वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). दिशाओना छेडा. दिगन्त

दिसोदिसि *आरारा*. बधी दिशाओमां

विह *प्राचीसं* दिशा

दिह नलाख्या. देह. शरीर

विष्ठ सिंहा(शा). दिवस

दिहाइउ उक्तिर, देवरा, नलरा, नेमिछं, वीसरा. दिवस

दीओं *लावल* दीधां

दीड लावल. दे. आपे दीकिरज यडाबा. दीकरो [दे.दिक्करअ]

दीकिरी कादं(शा). षडाबा. दीकरी दि. दिक्करअ

दीकोडी *प्राचीफा*, दासी

दीकोला *विमप्र. चाकर

वीक्षिज उपबा. दीक्षा लीधेल (सं.दीक्षित)

दीख *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* दीक्षा

वीखइ उक्तिर. दीक्षा ले (सं.दीक्षते)

दीख्या **नेमिछं.* [दीक्षा]

दीजइ उक्तिर. देवाय (सं.दीयते)

दीज *उक्तिर*. देवायुं

दीजतजं, दीजतूं उक्तिर. देवातुं (सं.दीयते परथी)

दीजिसिइ उक्तिर. देवाशे

दीठ अखाका. *देखाव, [*कथन, *द्रष्टांत]; [*दीठा]

दीठी *वीसरा.* दृष्टि

दीण आरारा. गुर्जरा. लावल. दीन, गरीबड्डं **दीदार** *ऐतिका. [रूप]: आनंस्त. दर्शन [फा.]

दिधति *गुर्जरा. विराप*. किरणो (सं.दीधिति)

दीधलू कृष्णच. दीधो

दीन *आरारा*. धर्म (फा.)

वीनार उपवा. पंचवा. प्राचीफा. सिंहा(म). एक प्राचीन चलणी सिक्को (सं.)

दीनीश मदमो. दिनेश, सूर्य

दीन्हउ प्राचीसं. वीसरा. दीध् (रा.)

वीपति *वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). प्रताप (सं.दीप्ति)

दीपधाम चित्तसं. दीवानो प्रकाश [सं.] दीपविसाम ऐतिरा. दीवादांडी (सं.दीप-विश्राम)

बीयडी ०षडाबा. [कपडा के चामडानी] पाणी भरवानी थेली (सं.दृति)

वीर्धनउं उक्तिर. लांबुं

दीर्घिका नलाख्या. पगथियावाळी वाव (सं.); जुओ गृहदीर्घिका

दीव गुर्जरा. द्वीप

दीवटीउ *उक्तिर. नलरा.* मशालची (सं. दीपवर्त्तिक)

वीवटी (वीवटीआ) *विमप्र. [मशालचीओ] वीवमंदिर उक्तिर. दीपमंदिर, [*दीवादांडी] वीवलोटी *षडाबा. *नाह्या पछीनुं अंगमेलनुं पाणी

दीवंमि *ऐतिका*. दीपक [सातमी विभक्ति] [प्रा.दीवम्यि=दीपे]

दीवसिखा *आरारा.* दीपशिखा

दीवाण *वीसरा.* दरबार, राजसभा (फा. दीवान)

दीवाकाणज उक्तिर. काणो, एक आंखवाळो∻ [दे.]

दीवीदार *प्रेमाका*. मशालची

दीव्य चतुचा. माणस अपराधी छे के नहीं ते नक्की करवा माटे योजाती पाणी, अग्नि वगेरेनी कसोटी [सं.दिव्य]; जुओ दिव्य, धीज्य

दीनो वाशे *प्रेमाका*. देवाळुं काढवुं पडशे **दीश** *प्रेमाका*. दिवस

वीस आरारा. ऐतिका. उपवा. तेरका.

दशस्कं(१). नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. विमप्र. दिवस

दीस *गुर्जरा*. दिशा

दीस ऐतिरा. देश

देश्ह अभिकः आराराः उक्तिरः ऋषिराः जिनराः नलराः प्रबोप्रः प्राचीसः वसंफाः वसंविः वसंवि(ब्रा)ः विभप्रः षडाबाः दिवस

दीह *प्राचीसं*. दीर्घ

दीहडड कृष्णच. नेमिछं. प्राचीसं. दिवस दीहर गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. दीर्घ

दीहर-मंडप-माल *वसंवि(ब्रा)*. दीर्घ मंडप-माला

दीहराति वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). दिवस-रात

दीहा आनंस्त. लावल. शृंगामं. दिवसो दीहाडा उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. दिवसो दीहु गुर्जरा. दिवस

दुअंगम, दूअंगम विमप्र. शृंगामं. दुर्गम, मुश्केल

दुआर, दूआर *उषाह. वीसरा*. द्वार **दुआरी** *गुर्जरा.* द्वार

दुकर, दूकर *देवरा.* कपरुं, अघरुं (सं. दुष्कर)

दुकुर *स्थूलिफा.* दुष्कर, मुश्केल **दुकृत** *अखाका.* दुष्कृत्य

दुकर आरारा. ऐतिका. तेरका. जिनरा. लावल. षष्टिप. दुष्कर, कठिन

दुकरकार ऐतिका. दुष्कर, करित (सं.

दुणउ, दूणउ पंचवा. वीसरा. सिंहा(शा).

दुष्करकारक) **दुक्ख** आनंस्त. गुर्जरा. तेरका. दुःख **दुकित, दुकीत** अखाका. नरका. दुष्कृत्य, **दुखाउ** *नरका.* दुःख पामु **दुखायु** *नलाख्या.* दुःखित (सं.दुःख परथी) **दुग** *आनंस्त. जिनरा.* बे **दुगणुं** *प्रेमाका*. वे गणुं, बमणुं **दुगदुगी** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* स्त्रीओना काननुं के गळानुं एक घरेणुं **दुगंछा** *जिनरा*. घृणा, जुगुप्सा [दे.दुगुंछा] **दुगुंछइ** उक्तिर. घृणा करे (सं.जुगुप्सते) **दुग्ग** *तेरका.* दुर्ग **दुःगय** *ऐतिका*. दुर्गति **दुग्धा** *नरका.* आपदा, जंजाळ **दुचती** पंचवा. बे चित्तवाळी, गभरायेली, [खिन्न, उदास, चिंतित] (सं.द्वि+चित्ता) **दुन्छिय** *आरारा.* जुगुप्सित (अप.दुउन्छिअ) **दुञ्जण** *तेरका.* दुर्जन **दुओहण** *गुर्जरा*. दुर्योधन **दुट्ठ** *गुर्जरा*. दुष्ट **दुदुदुत्तण** *गुर्जरा.* दुष्टत्व (सं.दुष्टत्वन) **दुट्ठदल** *ऐतिका.* दुष्ट दल, [दुर्जनोनो समूह] **दुट्ठमणु** *गुर्जरा*. दुष्ट मनवाळुं **बुडवडी** *ऐतिका.* जलदी; जुओ दडवडु **दुडवडी** *वीसरा*. वाद्यविशेष; जुओ दुडुदुडी **दुडी** *आरारा*. बीजी **दुडी** *वेताप*. डूंडी

बे गणुं, बेवडुं (सं.द्विगुण) **दुणी** *नरप(द)*. [दोणी], दूध दोहवानुं पात्र [सं.दोहिनी] **दुतर, दूतर** *प्रद्युचु. शृंगामं.* तरवाने मुश्केल (सं.दुस्तर) **दुत्य** *प्राचीसं.* दुःख [सं.दौःस्थ्य]; *नलरा*. दुःखी (सं.दुःस्य) **दुत्तरि** *ऐतिका.* दुस्तार, [तरवो मुश्केल] **दुत्तारो** *ऐतिका*. दुस्तार, [तरवो मुश्केल] **दुवर** शृंगामं. देडको (सं.दर्दुर) **दुद्ध** *आरारा. दू*ध [सं.दुन्ध] **दुधर** *लावल.* जेमनो सामनो करवो मुश्केल होय एवा (सं.दुर्घर) **दुनी** आरारा, चित्तसं, जिनरा, हम्पीप्र. दुनिया, लोक, संसार (हिं.) **दुनी** चतुचा. ? **दुनीठउ** वसंफा(ल) वसंवि. वसंवि(ब्रा). केमेय नीठे नहीं - अंत आवे नहीं तेवुं (सं. दुर्निष्ठितकम्) **दुन्नि** *गुर्जरा*. बे (सं.*द्वीनि) **दुष्पसंउ** विमप्र. दुःप्रसंह नामे आचार्य **दुप्रापु** *षडाबा*. दुष्प्राप्य **दुभग** *जिनरा*. दुर्भाग्य, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीव काम करे तोपण हडहड थाय, अवगुण न कर्यो होय तोपण अपमान पामे] [जै.] **दुभण** *मदमो*. दुभववुं, दुखाववुं ?, [दुःख] **बुदुदुडी** विराप. एक प्रकारनुं वाद्य; जुओ **दुभर** अभिऊ. दुर्भर, [मुश्केलीथी पोषण थाय एवुं, गरीब]

दडदडी, दुडदुडी, दुडवडी, दुंडवडी

दुमणो *आरारा(व)*. दमणो, एक वृक्ष (सं. दमनक) **दुमनी ***शीलक. [उदास] [सं.दुर्मनस्] दुमाम, दुमांम *इम्मीप्र.* दमाम, दबदबो, भपको दुमास अखाछ. दमास्कसनुं कापड **दुमेलो** *मदमो*. छंदविशेष (सं.दुर्मिला) **दुवार** *तेरका.* द्वार **दुरग** *वीसरा*. दुर्ग, गढ **दुरगा** *आरारा.* दुर्गा, देवी, देवचकली **दुरनीवारी** *चतुचा*. दुर्निवार्य, निवारी न शकाय तेवी **दुरन्त "**प्र*बोप्र.* [भारे, दुष्परिमाणी] [सं.] ***दुरबुद्धि** *आरारा.* दुर्बुद्धि, दुष्ट **दुरभव** *आनंस्त*. खराब भव – अवतार-वाळो, [भारे संसारभाववाळो] (सं. दुर्भव्य) **दुरमतियां** *नरका.* दुर्मति धरावनारां दुरंग *ऐतिका. [दुर्गम, कठिन]; गुर्जरा. खराब, [कठण, अप्रिय, कडवुं]; **लावल.* [कठिन, भारे] **दुरिजन** *नरका. प्रेमाका*. दुर्जन **दुरियण** *आरारा.* दुर्जन **दुरिया ***ऋषिरा. [पापमय] (सं.दुरिता) **दुरी** *हम्मीप्र*. दुरित, पाप **दुरी**ड *गुर्जरा.* पाप (सं.दुरित) **दुरीय** *गुर्जरा*. पापी (सं.दुरित) दुरोदर कादं(शा). नलाख्या. जुगार (सं.) **दुर्भगत्वं** *आरारा*. दुर्भाग्य [सं.] **दुर्भर** *प्रेमाका*. महामुसीबते भरी के पोषी

शकाय एवं [सं.] **दुर्वा** *प्रेमाका*. एक घास, घरो दुर्वाइक अभिकः दुर्वाक्य दुर्वासना *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दुर्गंघ दुलंभ आरारा. दुर्लभ <u>दुलारा *नरप*. मनगमतो, वहालो</u> दुति जुओ जुलि दुल्लभ *गुर्जरा*. दुर्लभ बुल्लह *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीका.* दुर्लभ दुवार वीसरा. द्वार दुवारांमति जुओ वारांमति दुवि तेरका. बेय (सं.द्यै+अपि) दुविस्सह *"ऐतिका*. [कठिन, अञ्चक्य] दुषमाअरच उक्तिर. दुषम आरो, जिन कालगणनामां एक दुःखमय युग] (सं. दुषम+आरकः) दुषमा समइ *ऐतिरा*. माठा वखतमां **दुष्ट चतुष्ट** जुओ चतुष्ट दुसम ऐतिका. कठिन, खराब दुसर जिनरा. दु:स्वर, [नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदययी जीवने खराब अवाज मळे] [जै.] दुसार वीसरा. बेघारी तलवार दुह आरारा. बे दुह तेरका. –, [दुःख] **दुहरासि** *ऐतिरा*. दुःखराशि दुहवण, **दूहवण** उपना उपाह पडाबा. दूभववुं ते, दुभवणी, पीडा (सं.दु:ख परथी) दुहवाषुं *चतुचा. नरका.* दुमार्चु, दुःखी धनुं

दुहवियड आरारा. कामा(शा). दशस्कं(१). षडाबा. दूभव्यो (सं.दुःख परथी) **बुहाइ, बुहाई** नरका. *पंचवा. प्रेमाका. आण, सत्ता, मनाई **दुरुातुं** *कामा(त्रि).* दूभवतुं **दुहिति** कादं(शा). मुश्केलीथी [सं.दु:ख परथी] दुहु अभिक. बे (सं.द्वि+खलु) **दुहुन्** नलाख्या. दुःखी अवस्था (सं.दुःख+ इल्ल) **दुहं** वीसरा. बन्ने दुहुवो कामा(त्रि). दुभवो [सं.दुःखापय्] **दुहुवार्तुं** *नरका. प्रेमाका.* दुभायुं, दुःख पाम्युं **दुहे रे पाडा** *अखाका*. पाडाने दोहे, मिथ्या प्रयास करे **दुहेलउं** आरारा. ऐतिका. नेमिछं. प्राचीसं. लावल. षडाबा. दुष्कर, दोह्यलुं; आपत्ति (सं.दुःख परथी) **दुंडदुडी** *गुर्जरा.* एक प्रकारनी ढोलकी; जुओ दुडुदुडी दुंडी मदमो. दांडी, ढंढेरो **दुंदुभि** अखाका. नरका. प्रेमाका. मोटुं नगारुं **दुंदुहि** *गुर्जरा. नेमिछं.* मोटुं नगारुं (सं. दुंद्रभि) **दूअ** *गुर्जरा*. दूत दूअंड आरारा. बीजा – पछीना **दूअडी** लावल. दूती, नोकरडी, दासी **दूअंगम** जुओ दुअंगम दूआ *विमप्र. [दूत, संदेशो लई जनार] **दूआइति** *उषाह.* आण, दुहाई

दूआंड उषाह. ?, [*तोफानी, *वकर्यी] [*प्रा. दुआलि] दूआर जुओ दुआर **डाइ, डाई** *तेरका. प्राचीसं. वीसरा*. बे (सं.द्ध-); द्वैत **दूउ** *गुर्जराः* संदेशो, [तेड्रं] (सं.दौत्य) **दूउ** *आरारा.* बन्ने **दूउ** *विमप्र. [*दूत] **दूकर** जुओ दुकर **दूखिण** *देवरा*. दुःखी स्त्री (सं.दुःखिनी) **दूखल पास** हरिवि. खांडणिया साथेनां बंधन (सं.उदूखलपाश) दूघडड उक्तिर. मुश्केल (सं.दुर्घटम्) क्ज़इं विराप. दूझे छे (सं.दुह्यति) **दूज**ड दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. वीसरा. शृंगामं. बीजो [सं.द्वितीय; हिं.] **दूजण** *गुर्जरा. जिनरा.* दुर्जन ***दुजी** *कादं(शा)*. दूती दूणंड जुओ दुणंड **दूत** अखाछ. द्यूत, जूगटुं दूतपातक नलरा. एक राज्याधिकारी **दूतर** जुओ दुतर **दुदु** *नलरा.* दडियो, पडियो दूदर विमप्र. दुर्धर, [दुर्जेय] **दूध ने दहीं** प्रेमाका. जे गणो ते, [सर्व कंई, सर्वस्वी **दूधे वरस्या मेह** *प्रेमाका.* खूब आनंद फेलायो **दूभता** *प्रेमप्र*. नाराज करता **दूमइ** *उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं.* दुभवे (सं.

द्रयते)

दूमण नरका. उदासीनता (सं.दुर्मनस्) दूमणी *प्राचीसं*. दुःखी, सचित (सं.दुर्मनस्) दूरभावि गुर्जरा. दूत तरीके (सं.दूतभाव) **दूयारिका** अभिक. द्वारिका **दूरी** *अखाछ.* आघो **दूलहा** देवरा. दुर्लभ **दूव्यय** *प्राचीफा.* द्रौपदी, पांडवोनी पत्नी . दूषइ उक्तिर. दोष लगाडे, खराब करे (सं. दूषयति) **दूसम** उपवा. खराब समय; गुर्जरा. तेरका. [जैन कालगणनामां] पांचमो आरो, [कठिन आरो] (सं.दु:षम) **दूहउ** कर्पमं. आज्ञा, दुहाई दूहती ऋषिरा. दूभती [सं.दुःख परथी] टक्तिर. कादं(शा). जिनरा. दूहवइ दशस्कं(९). नलरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. लावल. दुःख आपे (सं.दुःखापयति) **दूहविइ** *गुर्जरा.* दुभवे (सं.दुःखापयति) दूहवण जुओ दुहवण दूहवाइ ललिरा. दुभाय, दुःखी थाय **दूहवाणउ** विमप्र. दुभायो दूहविउ, दूहव्यु आरारा. उपबा. [दुभायेलो], दुःख पामेलो **दूहाइ** आरारा. दोहे **दुहिलु** *उषाह*. दोह्यलुं, [मुश्केल] [सं.दुःख परथी] **दूहवर्तुं** अखाछ. दूभवर्तुं **दृढाव** *प्रेमाका.* दृढता, स्थिरता **दृष्ट** *नरका. प्रेमप. प्रेमाका*. दृष्टि, नजर

दृष्टि न खंचइ. धार जुओ खंचइ **दृष्टि पदारथ** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* दृष्ट पदार्थ, नजरे पड़ता पदार्थ **द्रष्टि-रक्षण** *प्रेमाका*. नजरनी चोकी **दृष्टि-रक्षाः** *दशस्कं(१)***. नजरके**द **दृष्टिवेध** *श्रंगामं*. दृष्टिथी वींघायेलुं **-दे** *गुर्जरा*. देव, [आदरवाचक] **देअंत** *शृंगामं.* [देतां], आपतां वेई (आधे देई) *चित्तसं. [वगेरे] वेई उक्तिर. नलाख्या. दई, आपी **वेउ** गुर्जरा. देव **वेड** *गुर्जरा.* देवानी वस्तु (सं.देयम्) **देउर** *गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा.* दियर (सं.देवर) देउल आरारा. उषाह. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रबोप्र. विभप्र. सिंहा(शा). शीलक. देवळ (सं.देवकुल) देउली उक्तिर. नानुं देवळ (सं.देवकुलिका) **देखईतुं** *दशस्कं(१)*. देखीतुं **देखणहार** *उपवा. षडाबा*. देखनार **देखणुं** *चित्तसं*. दृश्य, [तमाशो, खेल] **देखाडे दंत** *अखाका*. दांतिया करे, मश्करी करे, [गुस्सो करे, चिडाय] देखाविखि उक्तिर. देखादेखी दि.प्रा.देक्ख +पेक्ख **देखि-न** आरारा. देख ने **देखिवउं** *उक्तिर*. देखवुं **देखी** *आरारा*. देषी **देखैतुं** *दशस्कं(१)***. देखी**तुं **देठि** *आरारा. शीलक.* दृष्टि **देठे** *चतुचा*. दीठे

दृष्टि त्रेडवी जुओ त्रेडववुं

देडी *वेताप.* देवडी, [चोकीदारनुं चोकीनुं स्थळी

वेज *आरारा*. देवाने ं

वेणहार *आनंस्त. षडाबा.* देनार, देवा इच्छुक

देणाहरु *उक्तिर.* देवा इच्छनार

देमइ कृष्णच. देवकी

देख्र नंदब. दउं

देरीय विकराः विलंब (फा.देरी)

देव आरारा. देवलोक: दैव, भाग्य

देवकपट्टण *अंबरा*. प्रभासपाटण

देवकडं नाम पतन *अंबरा.* देवनुं पाटण, प्रभासपाटण

देवकापट्टण *अंबरा*. प्रभासपाटण

देवकां *षडाबा.* देवो ज्यां क्रीडा करे ते पिर्वती सिं.देवकी

***देवच्चण [*दव्बच्चण]** *आरारा.* द्रव्य-अर्चन, द्रव्यपूजा

देवत *चंद्रवा*, देवता

वेवति विमप्र. देवता. देवी

देवप्रकार *आरारा.* दैवी, अद्भुत घटना

देवर *गुर्जरा*. दियर (सं.)

वेक्लवाडउ प्राचीसं. देलवाडा (सं.देवकुल-पाटक)

वेवसिउ वडावा. दिवसने लगतुं (सं. दैवसिक)

देवसी *उषाह. [*देवेशे -- रामे]; जुओ सी

वेवहर प्राचीफा. देवमन्दिर (सं.देवगृह) **देवंगह** *आरारा*. देवोनां अंगने

देवाणुप्रिय *ऐतिका.* देवोने प्रिय (सं.देवानां

प्रिय)

देवादेवी *गुर्जरा*. देवदेवीओ

देवानुप्रिओ आनंस्त. देवोने प्रिय

देवारी *अंबरा*. देवरावी

देवालड *उपना*. देवालयमां

वेवालि उक्तिर: एक वेल, देवताडी, देव-दाली, कुकडवेल (सं.देवताडक, देव-तालक)

देवि विमप्र. चीबरी, भेरव पक्षी

देविइं *आरारा*. देवे

वेषुलोइ जुओ लोइ

देव्या *प्रेमाका. मदमो. वेताप.* देवी, देवता

देश चतुचा. दिशा

देशघाती *आनंस्त*. आंशिक घात करनार (कर्म) जि.] सं.]

वेशन, देशना ऐतिका. प्राचीफा. उपदेश, [उपदेशात्मक] व्याख्यान [सं.]

देशांतरी उक्तिर. विदेशी (सं.देशान्तरिक): जुओ देसंतरी

देशोटो वेताप. देशवटो

वेशोत *वेताप.* देशपति, [राजा]; **नरप(द).* [गरासियो, जागीरदार] [*सं.देशपुत्र]

वेस जिनरा. देशविरति, [सम्यकृत्वना स्वीकारपूर्वक मर्यादित त्याग, जैन परंपरानी एक आत्मावस्था]

वैसईबंध *जिनरा. दिशविरति नामना गुण-स्थानकमां थता कर्मबंधी जि.]

देसदु *शंगामं*. देश

देसण नेमिछं. षष्टिप्र. उपदेश, उपदेशात्मक व्याख्यान (सं.देशना)

देसणभारी *चारफा*. उपदेशादिथी गौरवयुक्त

(सं.देशना+भारित) **वेसन** *ऐतिरा*. देशना. उपदेश वेसना *देवरा. षडाबा.* उपदेश [सं.देशना] देसपट आरारा. देशवटो वेसववीत् *चारफा.* देशभरमां प्रख्यात सिं. देशविदिती **देसवरति** *प्राचीफा*. श्रावकनां व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदिनो आंशिक त्याग (सं.देश-विरति) **देसंतर** *आरारा. तेरका*. देशांतर, अिन्य देशी. देशवटो **बेसंतरी** *चारफा.* विदेशी (सं.देशान्तरिक); जुओ देशांतरी देसाउर नेमिछं. सिंहा(शा). देशावर, अन्य देश. परदेश **देसाउरी** *आरारा. शुंगामं.* अन्य देशमां फरनार, परदेशी (सं.देशावरी) देसानी उक्तिर. छायाकर, [*छांयो करनार साधन, *छत्र लईने चालनार] **देसोद्रं** *नलरा.* देशवटो, देशनिकाल देह वसंफा. *शरीर: वसंवि. *दर्शन (सं. दृश्यते, प्रा.देहइ?); *वसंवि(ब्रा).* तक? देहिचेंता प्राचीफा. कुदरती हाजत (सं.) **देहरउं** *उक्तिर. नलरा.* दहेरुं (सं.देवगृह) **वेहरासरु** उक्तिर: देरासर (सं.देवतावसरः) **देहली** *आरारा. तेरका.* उंबर (सं.) **वेह-सुचिंत आरारा**. देहचिंता, मळत्याग वेहारामी चित्तसं. देहनुं सुख माणे छे ते, देहमां विश्रांत छे ते वेहांतर कामा(शा). मृत्यू [सं.]

देही *चित्तसं. नरका-२.* देह जेने छे ते. आत्मा [सं.] **देही** *प्रेमाका*, देह, शरीर **देहीना चोर** *प्रेमाका*. देहना चोर, अदृश्य देहवाळा **वेद्ध** *आरारा*. दो, आपो **वेहं** *पंचवा.* आपीश [सं.दा, प्रा.देय] **वेहेन** *प्रेमाका.* **बाळवानी क्रिया, अग्नि**-संस्कार [सं.दहन] **वेहेक्ट** *चंद्रवा*. जडमूळथी नाश **देहेवट वालो** स्र*स्तस*, खेदानमेदान करी नाख्युं; जुओ दहेंवट जवुं **दैवजोग** *षडावा.* दैवयोग, भाग्ययोग **दैवडा** *प्रेमाका.* **दैव, भा**ग्य, नसीब **देवत** *गुर्जरा*. देवताओ **दो** गुर्जरा, लावल, बे (सं.द्यौ) वोअंगमो उषाह. दुर्गम दोइ ऋषिरा. प्रबोप्र. लावल. वीसरा. बे, बन्ने [सं.द्वौ+अपि] दोख दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका. दोष **दोखी** *आरारा.. मदमो. वेताप*. अपराधी, पापी (सं.दोषी); आरारा. दोष - दूषण उत्पन्न करनारो; जुओ दोषी **दोखीसोखी** *आरारा.* दुःखी अने *शोक-वाळो, [*सुखीदु:खी] **दोखे** *अखाका.* दुःख आपे दोगंदक ऐतिका. एक देवजाति [सं. दोगुंदक] [जै.] **दोगंधिक** *देवरा.* एक विशिष्ट देवलोकनुं नाम [सं.दोगुंदक] [जै.]

दोगुण *देवरा.* बेवड (सं.द्विगुण) **बो(गं) छड** *उक्तिर*. घुणा करे **दोटावे** *अखाका*. दोडावे. गबडावे **बोटी** उक्तिर. ऐतिरा. पहेरवानुं वस्त्र, [एक कापड] (सं.द्विपटी); जुओ डोटी वोठ आरारा. प्रहार, चोट (रा.दोट) वोत प्रेमाका. शाहीनो खडियो (अ.दवात) बोतिंड उक्तिर. नदी, दुर्गम किनारावाळी नदी (सं.दुस्तटी) वोभागपणउं नलरा. दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य-त्वनं) **दोभागिणि** जिनसः दुर्भागिनी **दोभागीया** आरारा. दुर्भागी वोरक अखाका. दोरो (सं.) **दोरियां** प्रेमाका. दोरानी भात ऊपसती देखाय तेवुं] एक जातनुं कापड दोरियो नरका. गळामां पहेरवानुं घरेणुं दोल वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). हिंडोळा (सं.दोला) दोवट "नरप. [रफेदफे, विनाश]; जुओ दोहोवट दोवड वीसरा. दमणुं, बेवडुं, [खूब] (सं. *दुप्टक/दुवृत्त) **दोवारिक** विक्ररा. दरवान [सं.दौवारिक] **दोषी** दशस्कं(१). अपराधी; जुओ दोखी, दोसी बोशी प्रेमाका. कापडियो [सं.दौष्यिक] **बोसी** *उक्तिर, नलरा, विमप्र,* कापडनो वेपारी (सं.दौष्यिक) दोसी आनंस्त. दोषवाळो [सं.दोषी]; जुओ

दोषी दोहग आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षष्टिप्र. दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य) **दोहगपणु** *श्रंगामं***. दुर्भा**ग्य **दोहग्तु** ऐतिका. दुर्भाग्य (सं.दौर्भाग्य) बोहडड उक्तिर. [*कोई जीवड्रं] (सं.ब्रोहाटः) बोहणी उक्तिर. दोणी (सं.दोहिनी) **दोहलउं** *आनंस्त. चतुचा.* मुश्केल **दोहला** ऐतिरा. प्राचीसं. षडाबा. दोहद, गर्भिणीना मनोरथ दोहबट प्रेमाका. दश दाटे. दशे दिशामां दोहिलउं आरारा. उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. ऐतिका. कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(न्ना). विमप्र. शीलक. दोह्यलुं, दुःख आपनारुं, कपरुं, मुश्केलीभर्युं, मुश्केली, संकट (सं.दु:ख+इल्ल) *आरारा*. प्रेमाका. दुर्लभ, मेळववं मुश्केल **दोहिलम** *आरारा.* दोह्यलापणुं, मुश्केली **दोहिल्लय** *तेरका.* दोह्यलुं, कठिन दोहिल्या विमप्र. मुश्केलीथी **दोहिया** उक्तिर, दोहवा **दोही** पंचवा. बन्नेय (सं.द्वौ) बोहीत्रज उक्तिर. दौहित्र, [दीकरीनो दीकरो] **बोहेलुं** नरका. दु:खदायक; [मुसीबत]; देवरा. दोह्यलूं, कपरुं **बोहो** *प्रेमाका*. दश दोहो दस कामा(त्रि). दशे दिशामां वोहोल अखाछ. दोह्यलुं होवुं ते, मुश्केली **दोहोली** अखाका. दुर्लभ

दोहोवट * अखाका. [खेदानमेदान, विनाश]; जुओ दोवट दोंकार ऐतिका. तबलानो अवाज **बी** *सिंहा(शा)*. वे [सं.द्वौ] **दौगंधक** *शुंगामं*. जैन शास्त्र प्रमाणेनी एक देवजाति (सं.दोगुंदक) **यल** *मदमो***. दिले, हृदयमां थाढि** कादं(शा). नलाख्या. दहाडे (सं. दिवस-) **द्यामणुं** *नलाख्या. प्रेमाका*. दयामणुं **पाहाडी** लस्तस. दहाडी, दररोज **बाहाडो** *रूस्तस*. दहाडो **द्योती** *प्रेमाका*, प्रकाशी **यो** *अखाका.* आकाश [सं.] **व्रउडइ** *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* दोडे (सं. द्रवंति, द्राति) द्रम गुर्जरा. वृक्ष (सं.द्रुम) द्रमक उपवा. चलणनुं नाम (सं.) व्रमकी गुर्जरा. विराप. [धमधम] अवाज करी **द्रमद्रमइ** उक्तिर. गुर्जरा. धमधमे द्रम्मामु उक्तिर. दमाम; जुओ द्रुमाम द्रव अभिक, द्रव्य द्रवडिउ थडाबा. दोड्यो (सं.द्रवते) द्रव्य(?) (केंद्रव्य) मदमो. -, [*निर्धन] **द्रव्य अध्यातम ***आनंस्त. द्रिव्याश्रयी – द्रव्य एटले पदार्थ, मूर्त के अमूर्त, तेनो आश्रय करनार अध्यात्म] [जै.] **द्रव्य** *आरारा*, द्रव्य **१ष्ट** *नरप(द).* [दृष्टि], आंख

त्रस्यमुख्य *चित्तसं*. दृष्टिथी अने मुष्टिथी ग्रही शकाय एवा अनुभववाळुं, प्रत्यक्ष अनुभववाळ् **द्रश्ट्ये पड्यं** *चित्तसं*. समजमां आव्यं, ख्यालमां आव्यूं **ब्रसुका** *विमप्र.* *धासका, युद्धना मोटा अवाज **द्रह** वाग्भवा. धरो [सं.हद]; लावल. तळाव, सरोवर **ब्रह्बहवार** उक्तिर, संध्यासमय ब्रहब्रहीय गूर्जरा. [धमधमी], अवाज करी व्रहो अखाछ. धरो सि.हदो **द्रंग** *ऐतिका.* दुर्ग, [नगर] [सं.] द्राख आरारा(व). उक्तिर. गुर्जरा. लावल. वीसरा. षडाबा. द्राक्ष (सं.द्राक्षा) द्राम अंबरा. उक्तिर. प्राचीका. प्रेमाका. *मोसाच*. दाम, पैसा (सं.द्रम्म) **द्राहि** नरप. दृष्टि, नजर **द्ध** **लावल*. [ध्रुवनो तारो] **द्वउ** *प्राचीका.* ध्रुवनो तारो **द्वडि** कादं(शा). दोडे **द्धमचोला (विद्धमचोला)** **लावल*. [परवाळा जेवा राता] **द्धमंडल** *प्राचीका*. ध्रुवमंडल, [ध्रुवप्रदेश] **हुमाम** *हम्मीप्र.* दमाम, दबदबी; जुओ द्रम्पाम् **ब्रु** *कृष्णवा. हरिवि*. ध्रुव [हिरण्यकशिपुनो पुत्र]; *हरिवि*. ध्रुव, [अचल, स्थिर] **द्रपद** नलरा. प्राचीफा. ध्रुवपद, पद्यमां दरेक कडीने अंते पुनरुक्त थती पंक्ति, टेक **द्रमंडल** कृष्णच. ध्रुवमंडल, [ध्रुवनो तारो]

द्भूष *नेमिछं. *लावल. [ध्रुवनो तारो]
दूषमणि *ऐतिका. [ध्रुवनो तारो]
द्रेिट आरारा. उषाह. गुर्जरा. नलरा.
प्राचींफा. प्राचीसं. विराप. वीसरा.
हम्मीप्र. दृष्टि, नजर
देष्टी विकच. दृष्टि, नजर
देष्टी विकच. दृष्टि, नजर
देष्टी विकच. दृष्टि, नजर
देष्टी विकच. दर्रो, जलाशय (सं.हद)
त्रो वेताप. दरो, दुर्वा
त्रोई दशस्कं(१). दरो, दुर्वा
त्रोडइ आनंस्त. कादं(शा). दशस्कं(१). दोडे
(सं.हु परथी)
त्रोण प्रेमाका. एक माप; हरिख्या. हांडो
(सं.)
त्रोह आरारा. अपराध

बादश वाटे. प्रेमाका. बारे वाटे, बधी रीते बारा चित्तसं. साधन, मार्ग बि.गुण प्रेमाका. बमणुं, बे गणुं [सं.] बिज प्रेमाका. बे वखत जन्मनारा, दांत सिं.]

द्वीपायन *अखेगी.* द्वैपायन, व्यास **द्वीव** *आरारा.* द्वीप

घउल- वीसरा. घोळवुं (सं.घवल-)
घउलउ आरारा. उपवा. गुर्जरा. वीसरा.
घोळुं (सं.धवल)
घखी आरारा. गुस्से थई [सं.घिश्च]
घगड हम्मीप्र. मुस्लिम योद्धो
धगडमल नरका. जोरावर के खडतल पुरुष
घज वीसरा. घजा (सं.ध्वज)
घजवंध मदमो. खुझेखुझुं

घडहड *गुर्जरा*. घडघड

घडहडइ *उक्तिर. गुर्जरा.* धडधडे (प्रा. धडधडिय)

घडु (घडु प्रीरुउ) *विमप्र. [अंदाज जाण्यो, केटलामां छे ते जाण्युं, परीक्षा करी लीधी]

षडू धरि *अंगवि.* *स्थिर टकी रहे, [तोले आवे]

घढु *विराप*. धड, शरीर

धढूक्या लिलरा. [धड्क्या], धडधडाट करता आव्या

धण *अभिक. आरारा. गुर्जरा. देवरा.* धन, पैसो

घण *आरारा*. धन्य

धण चतुचा. जिनरा. प्राचीसं. वीसरा. स्त्री, प्रिया (सं.धनिका) [सं.धन्या]

धणउ विक्रच. धनुष्य, कामठुं

घणकणकंचणिइं *ऐतिरा.* धनधान्यसुवर्ण वडे

धणचर नेमिछं. पशु, धणमां फरनार

धणवइ *प्रद्युचु*. कुबेर (सं.धनपति)

धणि *प्राचीफा*. पति (सं.धनिन्); *प्राचीसं*. प्रिया; जुओ धण

धणहर *कृष्णच. [बाणावळी] [सं.धनुर्धर]

धणिउ उक्तिर, धणधण्युं

घणिउ गूर्जरा. धन्य, भाग्यशाळी

धणिया उक्तिर. [*धाणाभाजी, *कोथमरी] (सं.धनिका)

चणीप षष्टिप्र. स्वामित्व, स्वामीपणुं (सं. धनित्व) धणीवड उक्तिर. [?] (सं.धन्यवयाः) धणु तेरका. नेमिछं. धनुष धणुह अंगवि. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्रच. षडावा. धनुष्य (सं.धनुष्)

धणुहर, धणुहरु ऐतिका. "विक्रच. धनुर्धर धणुहीय वसंफा. वसंवि. धनुष्य (सं.धनुष्) धणुं प्राचीका. धनुष्य (सं.धनुष्) धत्रियउ उक्तिर. जेणे धत्रुरानो नशो कर्यो छे एवो (सं.धनुरित)

षत्तुर, धत्तुरउ *आनंस्त. उक्तिर*. धतूरो (सं. धत्तुरक)

धन गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछ. लावल. वीसरा. धन्य

धनद आरारा. गुर्जरा. चंद्रवा. कुबेर [सं.] धनदाण ऐतिका. धनसंपत्ति आपनार धन धन वसंवि. धन्य धन्य धनागरज उक्तिर. [?] (सं.धान्यनागरम्) धनि वीसरा. धन्य धनुहडी प्राचीफा. धनुष्य (सं.धनुष्)

धन्न आरारा. तेरका. लावल. धन्य धफोई प्रेमाका. खूब मारी, धोई नाखी धबक गुर्जरा. प्रहार, [थाप]

धबल प्रेमाका. *बेवकूफ, [*मंदिर]; जुओ धमल- घर, धवल

धभधभ विमप्र. धबधब

धमइ उक्तिर. तपावे (सं.धमति)

धमल-धर हमीप्र. धवलगृह, महालय **धमील** प्रेमाका. धम्मिल, चोटलो

धम्म गुर्जरा. तेरका. धर्म

धम्ममइ ऐतिका. धर्ममिति, [धर्मबुद्धिवाळो] धम्मलाभु तेरका. धर्मलाभ

धिन्मिय तेरका. धर्मिष्ठ जन, समान धर्म पाळनार (सं.धार्मिक)

घन्युं प्रेमाका. धमणथी तपावेलुं

धम्युंधूप्युं अखाका. धमणथी धमावेलुं अने तपावेलुं

धम्युंधूयुं वाए खूए चित्तसं. श्रमथी मेळवेलुं सहेजमां गुमावे

धन्युंधूप्युं बाये जाय, धन्युंधूप्युं बाये वटे अखाका. धन्युंधूप्युं फोगट जाय, [तपावेलुं वायुयी ठरी जाय, श्रम एळे जाय]; जुओ वाये जाय, वाये वटे

धय ऐतिका. तेरका. ध्वज

धयरढू *गुर्जरा.* धृतराष्ट्र

घयराठ *गुर्जरा.* धृतराष्ट्र

ध्यवड *ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीफा.* धजा, पताका (सं.ध्यजपट)

घर गुर्जरा. विराप. वीसरा. पृथ्वी, धरती (सं.धरा); तेरका. भूमि, जमीन-जायदाद

धर *प्रेमाका*. पर्वत [सं.]

धर अखाका. लितरा. *हरिख्या. मूळ, आदि [तत्त्व], आरंभ [सं.धुर्]

धरइ आरारा. स्थापित करे; आरारा. तेरका. वीसरा. राखे, मूके; उपबा. उषाह. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. धारण करे, राखे (सं.धरति)

घर-चरमनी *नरका*. [पहेलेथी छेल्ले सुधीनी, संपूर्ण], उत्तम कोटिनी

धरणइ *उक्तिर.* गीरवी (सं.धरणके) [रा. धरणुं]

घरणं जावड् जुओ जामङ्

धरणहार *आनंस्त. उपबा.* धरनार, धारण करनार

धरणीधर *नेमिछं*. पृथ्वीने धारण करनारा, पर्वतो [सं.]

घर यकी कादं(शा). मूळथी, प्रथमथी (सं.धुरा परथी)

भरषी धुर लगे अखाका. *आदियी धुरा — अंत सुधी, [मूळथी आगळना भाग सुधी, संपूर्णपणे]

घरधीश *मदमो.* पृथ्वीपति (सं.धरा+ अधीश)

घरम-पडो *दशस्कं(२)*. धरमनो ढोल (सं. धर्मपटह)

घरमंडलि *गुर्जरा.* पृथ्वीमंडल (सं.धरा+ मंडल)

घरहडी *गुर्जरा*. [धणधणी], ध्रूजी

धराघर दशस्कं(१). प्रेमाका. पृथ्वीने धारण करनार शेषनाग [सं.]

ष्वरि प्राचीफा. प्रारंभमां (सं.धुर्)

धरि विक्ररा. पकडी, [स्वीकारी]; नलाख्या. धरे, धारण करे, विचारे (सं.धरति)

धरिवुं उक्तिर. धरवुं, पकडवुं, धारण करवुं धरी कामा(शा). (बदलामां) आपी, [गीरवे मूकी]

धरेवि *आरारा.* धीरज बंधावे छे, हिंमत आपे छे

धरेवि ऐतिरा. धरीने

धर्म-खंडे प्रेम्।का. धर्मना खंडनथी धर्मधोरिंघर प्रेमाका. धर्मधुरंघर, धर्मनी धुरा धारण करनार

धर्य *उषाह. [मूळथी, मांडीने]

घलहर *उषाह. सिंहा(म). हम्मीप्न.* हवेली, महालय (सं.धवलगृह)

धव *आरारा(व). नलाख्या.* धावडो, एक झाड (सं.)

धवन जुओ गवन-धवन

धवल अंगवि. महेल [सं.]

धवल अभिक्र. आरारा. गुर्जरा. नलरा. विमप्र. धोळ, एक प्रकारनुं मंगलगीत (सं.)

धवलइ उक्तिर. तेरका. घोळे (सं.धवल-यति)

धवलक *तेरका*. धोळकुं [गाम] (सं.)

धवलग्रह पंचवा. महेल (सं.धवलगृह) **धवलमंगल** *ऐतिका. चारफा. विकरा.* मंगलगीत, धोळ

धवलहर गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. सिंहा(म्). हवेली, महेल (सं.धवलगृह)

धवाल आरारा(व). ?, [कोई वनस्पति]

धसकड़ गुर्जरा. धूजी ऊठे; विमप्र. धासको – भय अनुभवे [दे.]

घंखना *प्रेमाका.* झंखना, तालावेली

धंग(?) मदमो. दिंग करे तेवा, छक करे तेवा, [अद्भुत] [*हिं.दंगह]

धंध *अखाका. अखाछ. चित्तसं.* धांधल, जंजाळ, उपाधि, आपत्ति; *प्रेमाका.* धांधल, घमसाण; मदमो. धांधल, धमसाण; [गरबड, उपाधि]; *सिंहा(शा). जिंजाळ, गूंचवण]: चंद्रवा. सम्यचो. मिथ्या प्रवृत्ति [-मान्यता, विचार]; **गुर्जरा.* [जंजाळ]; आरारा. कामकाज

घंघ (अंध-धंध) *अखेगी. [अंघाधूंघी, अंधेरी

धंघउ, धंघु "प्राचीसं. जिंजाळ, मिथ्या प्रवृत्ति]

घंघ-ध्रवारी (अंघ ने घंघ-ध्रुवारी) अखाका. "धांधल अने धुमाडी, [अंधाधूंधी -अंधेर अने धुमाडामरी स्थिति]

घंघह नरप(द). *हंद्वनी उपाधि, द्विन्द्वनी स्थिति], [मिथ्या स्थिति]

घंषु जुओ धंधउ

घंघोड *नरका*. ढंढोळ, हलाव

षंषोडी अभिक्त. रमवानुं कोई साधन, [*दंड्को]

<mark>घंघोळतुं, घंघोलतुं</mark> कादं(शा). गुर्जरा. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. लावल. वसंवि. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). सिंहा(शा). ढंढोळवुं, हलबलाववुं, धुजाववुं, व्यग्र करवुं, हानि करवी (दे.धंधोलिय)

धंधोलियय तेरका. जंजाळमां सपडायेलुं [क्षुभित, व्यग्र] (अप.धंध+ओल्ल+य)

घंनु *गुर्जरा*. धन्य

धा अखाका. अखाछ. दोडादोड, धांधल, प्रवृत्ति, [हायवोय, तालावेली, लालसा] **थाइ** *आरारा*. धाव, आया [सं.धात्री] षाई नरप(द). दोडी [सं.धावति]

धाईक *मदमो. [धारण करनार] **घाओडी** *नलाख्या.* धव नामनुं झाड, एनी नानी जात

धाड- जिनरा. प्राचीसं. आक्रमण करवुं, विनाश करवी दि.]

धांडि उक्तिर. ऐतिका. प्राचीफा. षडाबा. आक्रमण, घाड (सं.धाटी) [दे.]

धाडि सईनी जुओ घाडि सईनी

धाणक "विराप. धनुष्य चलावनार, धनु-र्घारी (सं.धानुष्क)

धाणि अभिक्र, घावण

घाणुक *गुर्जरा*. बाणावळी (सं.धानुष्क)

धात *आरारा.* प्रकृति, अवस्था, दशा (सं. धात): नलरा. प्रेमप. प्रकृति, स्वभाव; आरारा. चित्तसं. नलरा. हरिख्या. धातू, पदार्थ: *अखाका. *अखाछ.* मुळ, आत्मस्वरूपः; अखाकाः, अखाछः, नलराः, हरिख्या. प्रकार, [भेद], रीत [सं.धातु]

धातइ उक्तिरः रागथी (सं.धातुना)

धात मेलइ आरारा. प्रकृतिनो मेळ करे, संबंध जोडे

धात्वुं अखाछ. फाववुं, अनुकूळ आववुं **धातस्वायु** *उक्तिर.* [?] [सं.धातुस्वादकः]

धाता *चतुचा*. विधाता, ब्रह्मा [सं.]

घातु अखाका. वीर्य [सं.]

धातुकर * ग्रेमाका. [*पर्वत] [सं.]

षातुवादी चंद्रवा. सुवर्णसिद्धिनो प्रयोग करनार सिं.]

धात्री *आरारा***. धावमाता, आया [सं.] धात्रीफल** कादं(शा). आंबळूं (सं.)

धाधूप **प्रेमाका.* [(शोधवा माटेनी) दोडादोड, दोडधाम]

धाम चित्तसं. वैभव, प्रताप; स्थिति, स्वरूप [सं.धामन्]

धामण *आरारा(व). उक्तिर.* घ्रामण, एक वनस्पति (दे.धम्मण्ण)

धा-मार्युं "अखाका. [दोट, हायचोय, लालसायी]

धामिय गुर्जरा. धर्मी (सं.धार्मिक)

धामी लावल. *धार्मिक, *धर्मिष्ठ; [*स्वर्ग-मां रहेनार, *देव]; [*पराक्रमी]

धाय *आरारा.* धावमाता [सं.धात्री] **धायइ** ऋषिरा. धराइ जाय (सं.ध्रै)

धायउ *उक्तिर.* धरायो (सं.धातः); जुओ आपणी धायउ

घायेधूपे जुओ धूपे, धावुंधूपवुं

धार नलरा. मध्य भारतमां आवेल धारप्रदेश **धार अणी अटके नहीं** अखाका. तलवार के भालानी धार अडे नहीं, किशी हानि

न थई शके]

धारइं आनंस्त. धारण करे, [राखे]

धार खंचइ जुओ खंचइ

धारण *प्रेमाका*. धरी राखनार, टेको, [थांभलो]

धारण अखाका. प्रेमाका. धीरज, [*हिंमत]; हरिख्या. *मननी दृढता, [हिंमत]; [*धारण करवुं – राखवुं तें] (सं.धारण)

धारण * गुर्जरा. [ग्रहण, स्वीकार]

धारणा *आनंस्त.* ग्रहणपटुता

पार्लु कादं(ध्र). चतुचा. पकडवुं, ग्रहण

करबुं

घारह नेमिछं. धारण करनार(नुं)

धारावउं (पाउ धारावउं) *षडाबा*. [पग] धरावुं, रखावडावुं, [पधरामणी करावुं] (सं.धारयति)

"धार्या [धार्या] "नरका. [धारण – घेनवाळां] धाव प्रेमाका. धवडावनारी दाया [सं.धात्री] धावइ उक्तिर. दशस्कं (१). दोडे (सं.धावति) धावुं-धूपवुं अखाछ. दोडवुं, [दोडादोड करवी, दोडधाम करवी, (तीर्थोमां) भटकवुं]

धास्यइ *आरास.* चडी आवशे ? उत्पन्न थशे ?

धाह आरारा. कृष्णच. वीसरा. (मदद माटेनी) धा, पोकार, रुदन, क्रंदन [दे. धाहा]

धाहडी आरारा(व). उक्तिरः धावडी, एक वनस्पति (सं.धातकी)

धाहुडी *षडाबा.* **कोईक प्रकारनो पथ्थर [के** माटी]

घांख अखाका. उक्तिर. कादं(शा). नलाख्या. धखना, झंखना, आतुरता

घांमधुमाडे धाय *चंद्रवा. [धामधूमथी, धमधमतुं, धसमसतुं दोडे]

घिकावुं नरका. घिखावुं, खूब गरम करुं **घिग** गुर्जरा. धिक्

घिगु धिगु तेरका. धिक् धिक्

धिधिकट, धिधिकटि गुर्जरा. लावल. मृदंगना अवाजसूचक शब्दो, – बोल धिन, धित्र नलरा. प्राचीफा. शाबाश, धन्य **विष्ट** आराराः धृष्ट, निर्लंख **धिंगडमाल** जिनरा. जबरदस्त, [समर्थ वीर] धी जुओ आघी, सारधी **धीअ** कृष्णच. विक्ररा. पुत्री [सं.दुहिता] ***घोअह थि।अह**े *विक्ररा.* [स्त्री] **धीइं** शंगामं. बुद्धिथी, स्विच्छाथी, मरजी मृजब **धीकड्रं** *प्रेमाक्त्र. शुंगामं*. धगधगे, सळगे **धीकां**इ *पंचवा.* चिता, धीकणी (सं.धिक्ष्) **घीज** जिनरा, नरका, प्रेमाका, लावल, विमप्र, पाप माटेनी दिव्य चिमत्कार-भरेली] परीक्षा, कसोटी [अग्निमां हाथ नाखवो वगेरे] (सं.दिव्य); जुओ धीज्य **धीज** *आरारा.* द्विज. ब्राह्मण धीजी आरारा. ब्राह्मणी (सं.द्विज+ई); जुओ दीव्य, धेजी **धीज्य** नरप(द). [दिव्य] आकरी कसोटी; जुओ दीव्य, धीज **धीट** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. हिंमतवाळुं, दृढ **धीठ** अखाका. आरारा. पक्कं, नफ्फट, लुद्धं (सं.धृष्ट) **घीठाइ** *आनंस्त.* धीठताथी, द्रिद्धताथी, हठ-पूर्वक] **घीठी** प्राचीफा. कपटी (सं.धृष्टा); ऋषिरा. निर्लञ्ज, बेशरम **धीमर** *प्रेमाका*. माछीमार सिं.धीवरो **घीय** गूर्जरा. तेरका. प्राचीसं. पुत्री (सं. दुहिता) षीयडी नरका. नरप. दीकरी (सं.दुहिता)

धीर *प्रेमाका*. धीरज. धैर्य धीरदृठ नलरा, धैर्य; धैर्यवान (सं.धृष्ट); षष्ट्रिप, धीट, निर्लञ्ज **धीरठपणउ** *सिंहा(म)*. धैर्य (स.धृष्टत्वन) **धीरणा** ऋषिरा. धीरज [आपवी ते], [सांत्वना] **धीरय न**लाख्या. धीरज (सं.धैर्य) **धीरवइ** *उक्तिर.* आश्वासन आपवुं, हिंमत आपवी (सं.धीरयति) **धीखं** चतुचा. "दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. विश्वास मुकवो धीरिम आरारा. तेरका. प्राचीफा. धैर्य, धीरज (सं.) **घीर्ज** *दशस्कं(२)*. धीरज, धैर्य **धीवर** *ऐतिरा. गुर्जरा.* माछीमार (सं.) धीश दशस्कं(१). दशस्कं(२). मदमो. वेताप. हरिख्या. अधीश, राजा **धीस** कामा(शा). राजा, अधिपति सिं. अधीशी **धींग** *आनंस्त.* धींगो, समर्थ **धींगड** *ऐतिका.* मोटो, जबरदस्त, मजबूत, पृष्ट **धींगडमल** *नंदब***. धींगा म**छ जेवो **धींगा** *ऐतिका.* मोटो, जबरदस्त, मजबूत, पुष्ट **धुणह**्युर्जरा. धनुष धुतारे नरका. धूती ले, [छेतरीने लई ले] **घुत** मदमो. धूर्त **घुनड** *आरारा*. ध्वनिथी ध्रुनि हरिख्या. घोष, अवाज (सं.ध्वनि) **धुमाय** *प्रेमाका.* **धुमाडो करे [सं.धूम-]**

घीया *उक्तिर.* पुत्री [सं.दहिता]

ध्रुय *प्राचीसं*. ध्रुवनो तारो **युवरव** *ऐतिका*. निष्पाप, दोषरहित, कर्मदोषहीन (सं.धूतरजस्) धुर आरारा. ऋषिरा. ऐतिरा. विमप्रः वीसरा. "षडाबा. आरंभ, पहेलुं, मूळ (सं.धूर्); *ऋषिरा. तेरका*. अग्र स्थान, मुख्यता (सं.धुरा); **अखाका.* [आगक-नो भाग]; जुओ धरथी धुर लगे **बुरिंह** *ऐतिका*. आरंभमां, प्रथम स्थाने **धुरि** आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. "नेमिछं. प्राचीसं. *लावल. *विराप. शृंगामं. भूक, पहेलुं, पहेलां, आरंभमां, पहेलेथी, मूळमांथी (सं.धुर्); *कर्पूमं. गुर्जरा*. प्रबोप्र. लावल. आगळ, अग्रमागमां, मोखरे; *लावल.* धुरामां, धूंसरीमां **धुरिधर** *प्रबोप्र***. मोवडी, अग्र**णी **धुरी** *आरारा*. बळद (सं.धुरिन्) **धुरीन** जिनरा. धुरंधर **धुलहडी** *उक्तिर. प्राचीफा*. फागण मासनी शुक्ल प्रतिपदा, धुळेटी [सं.धूलि परथी] **धुलही** विमप्र. धोळ गानारी **ध्रली** *वाग्भवा*. धोळी [सं.धवल] **धुव** *प्राचीफा.* स्थिर, निश्चल (सं.ध्रुव) **धुवारी** जुओ धंध-धुवारी **धुवुल** जुओ धवल ध्रुवेष देवरा. द्वेष **धुसइ** *गुर्जरा.* धसे **धुंसट, धुंसट** विमप्र. साडलानो छेडो ओढाडवानी [प्रसारवानी] क्रिया; नेमिछं.

धुसळ प्रेमाका. (लग्न वखते वरने पोंखवा माटे वपराती सांठीकडानी) धूंसरी **धुंबड, धूंबड** *प्रद्युचु.* मोटा महः; गुर्जरा. विरापः जंगली, उग्र, [जुलमी, अनाडी पुरुष]; जुओ धूबडि, धूमड धुंसट जुओ धुसट, धुंसर ***धुंसर (धुंसट) ****लावल*. [पाथरणुं] **धू** *उषाह. प्राचीसं*. पुत्री (सं.दुहित्) **पूज** *गूर्जरा. प्राचीफा. प्राचीसं.* पुत्री (सं. दुहिता) **धूजा** उक्तिर. धुमाडो (सं.धूम) **घुअडइ** *शृंगामं*. घुमाडाथी **धूअरि** *उक्तिर*. झाकळ (दे.धूमरी); जुओ ध्यरि **धूजा** *अंबरा. उषाह*. पुत्री (सं.दुहिता) **धूआ** *उक्तिर.* ध्रुवा, [*पद्यनी टेकनी पंक्ति, *यझनुं घृतपात्र] **धूआडु** *वाग्भवा.* **धु**माडो घूजइ ऋषिरा. गुर्जरा. नलाख्या. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा. धूजे (सं. ध्यते) **धूटस धात** *आरारा.* धूसट धात ? नश्वर – तुच्छ पदार्थ ? **धूता** *अखाछ.* *धूर्त, *धुतारा, [*धूत्या, ***छे**तर्या] **धूतारिवउं** उपबा. धूतवुं, छेतरवुं (सं.धूर्त-कार-) **षूपूर** *प्रद्युचु.* (धुमाङाथी) धूंधवाय [सं. धूमान्ध]

**विमप्र.* [पाथरणुं]; जुओ धुंसर

धून *नरका.* **ध्व**नि, अवाज

धूनि, धूनी अंबरा. ध्वनि; जुओ शंखधूनी षूप आरारा. तडको [हिं.] [*सं.] **घूपइ** *उक्तिर*. धूप करे (सं.धूपयति) **थूपघटी** नलरा. धूपदानी (सं.) **यूपधाणउं** *उक्तिर. विमप्र*. धूपदानी **घूपायण** *विक्ररा*. धूपदानी षू पे [धाये धू पे] (ध्याये अक्कोर्काः *तप करे, [दोडादोड करे, (तीर्थोमां) भटके] धूबडि (धूंबडि) *विमप्र*. [अनाडी, जंगली स्त्री] **षूम** *वसंफा. वसंफा(ल)*. धुमाडो **पूमविराल** वसंवि. वसंवि(ब्रा). धूमवराळ (काढतां अस्त्रो) **थूमड** **नरप*: [अनाडी, जंगली पुरुष]; जुओ धुंबड **धूप्रपान** अखाका. नरका. प्रेमाका. हठयोग-नी क्रिया, हाथ ऊंचा राखी, चारे दिशामां अग्नि अने उपर सूर्य एम पंचाग्नि सेववानी एक उग्र तपश्चर्या, [धूणी पर ऊंघे माथे रही करातुं तप] **घूम्रमारग** अखाका. यज्ञनो, क्रियाकांडनो

मार्ग

पूर्य, धूर्या आरारा. तेरका. प्राचीसं. पुत्री

(सं.दुहिता); जुओ मद्रधूर्य

पूर्यरे षडावा. अष्कायनो एक प्रकार,

झाकळ [दे.धुमरी]; जुओ धूआरि

पूरइं गुर्जरा. उद्धिन्न थाय, [*पहोंचे],

[*पहेलां ज]

पूळकट प्रेमाका. धूळनो कोट, वंटोळियो

पूळकोट प्रेमाका. धूळनो कोट, वंटोळियो

धूलहडी *नलरा*. धूळेटी (सं.धूलि परथी) **यूले यलहरे** विमप्र. धोळां धवलगृहे-**धूव** *प्राचीसं*. दुहिता, कन्या **भूसर** ऋषिरा. भूखरा रंगनुं (सं.) **धूहलइ** शृंगामं. धूंधळों, अंधकारभर्यो, घनधोर] षूंखल, धूंखलुं अक्षेगी. चित्तसं. वाग्भना. धुंवाडियुं, धूसर, धूंधळुं **धूंधूंकार** चित्तसं. अंधकार **यूंधूतो** *अखेगी.* धूंधवातो [सं.धूमान्ध-] **धूंबड** जुओ धुंबड **घूंबडि** जुओ घूबडि **धूंसइ** उक्तिर. नाश पामे (सं.ध्वंसते) **घूड, घृढ** *सिंहा (शा).* दृढ **थे** जुओ मानेश धे, शधे **थेडी** *नरप*. धेनु, गाय **घेण** *प्रेमाका.* धेनु, गाय **धेणू** *उक्तिर*. धेनु, गाय **घेण्य** *प्राचीका*. सीमंतवाळी स्त्री (सं.धन्या) **घेजी** *आरारा.* ब्राह्मणी (सं.द्विज+इ); जुओ धीजी **धेन** *आरारा. प्रेमाका.* धेनु, गाय **घेय** *सिंहा(शा)*. दीकरी **घेर** अखाका. अखाछ. घरमूळ, मूळ **धेर्य** *चित्तसं.* धरमूळ, मूळ, मूळथी, मूळ-मांथी, संपूर्णपणे **घेंण** *सिंहा(शा)*. नायिका, प्रियतमा [सं. धन्या) **धैनड** *जिनरा*. पुत्र [रा.] **घोअइ** उक्तिर. धूए (सं.धावति) [सं.धौवति]

धोक *ऐतिका*. साष्टांग प्रणाम **धोख** *जिनरा.* *नमस्कार. [*वंदनीय. *प्रशस्तो

धोखो *प्रेमाका. दुः*ख, शोक; **अखाका*. [आपदा, क्लेश]

घोटा *जिनरा*. पुत्र [रा.]

धोती चित्तसं, शरीरनां आंतरडां वगेरे स्वच्छ करवा माटेनी हठयोगनी षट्कर्मविधि पैकीनी एक [सं.धौल]

घोप, घोपा *रूस्तस.* एक जातनी बंदुक **घोयण** उक्तिर. धोवुं ते, धोण (सं.धावनम्) [सं.धौत परथी]

धोयती *षडावा*. धोती, धोतियुं

घोरणि, घोरणी गुर्जरा. *विमप्र. विराप. श्रेणी (सं.)

घोरंघर चंद्रवा. मदमो. धुरंघर, अग्रणी, आगळ पडतो

धोरिउ *गूर्जरा*. बळद (सं.धौरेय)

धोरी अभिकः विमप्रः धुरा धारण करनार, मुख्य, मोटो, मोखरे रहेनार; आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. लावल. धुराने धारण करनार, बळद (सं.धीरेय)

घोलो *प्रेमाका*. थप्पड, लपडाक

धोवणी *उक्तिर.* एक वनस्पति, [*भोंरींगणी] (सं.धावनिका)

थोवति *प्राचीसं*. धोती, [धोतियुं] **घोंकार** विक्रता. [धों एवो] अवाज **थोंसा** रू*स्तस*. नगारा [रा.; हिं.]

ध्यांडि विमप्र. धाड, [आक्रमण, हल्लो]

ध्यात *अंबरा.* प्रकृति, [स्वभाव, जात] (सं.

धातु)

ध्याता *नरका*. ध्यान करनार

ध्यातु *अंबरा.* धातु, [खनिज पदार्थ]

ध्यायइ उपवा. देखाय, जणाय; [(ध्यान) धराय]; कादं(ध्र). [एकाग्रताथी] निहाळे, जुए

ध्यातुं आनंस्त. नरका. प्रेमाका. लावल. ध्यान धरवुं

ध्ये चित्तसं, ध्येय

घड रूस्तम. धड

घडता मदमो. दृढता

घढ मदमो. दृढ

घ्रम *प्राचीफा*, धर्म

प्रसकड *जिनरा, प्राचीसं*, भयथी छळे. धासको खाय

प्रसकाड *जिनरा.* भयथी छळावे, धासको पडावे

प्रसक्तइ, प्रस्कइ गुर्जरा. भयथी छळे, धासको खाय (प्रा.धसिक्कय)

प्रसुड- नलरा. हांकी काढवुं, [खसेडवुं, दूर करव्

धस्कइ जुओ धसकइ

प्रा- उक्तिर. कादं(शा). तेरका. नलाख्या. *प्रद्युच्. प्राचीसं.* धरावुं, तुप्त थवुं (सं.ध्रायते)

घ्राय *अखाछ***. अधरके, जमावे**

घावड *मदमो*. द्राविड

घास अभिक, धासको

ध्रुव *उक्तिर*. स्तंभ, खूंटो (सं.ध्रुवकः)

ष्ट्र *उक्तिर.* ध्रुव, [*स्थाणु, *स्तंभ, *खूंटो]

प्रेटड उत्तिर. धृष्ट प्रोई प्रेमाका. धरो, दूर्वा, एक घास प्रोब उत्तिर. दूर्वा प्रोव्य आनंस्त. वस्तुनी स्थिरता, जैन दर्शन-नी त्रिभंगीमांनो एक भंग [सं.] घजवड हम्मीप्र. ध्वजपट, धजानुं वस्त्र चिज नताख्या. ध्वज, वावटो

न अभिक. उषाह. गुर्जरा. तेरका. नलरा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(म). षडाबा. षष्टिप्र. ने (भारवाचक) (सं.ननु के नु) (प्रा.णाइ) **नअंजे** *मदमो*, नयणे **-नइ** *आरारा. गुर्जरा. नलरा.* माटे नइ वीसरा. ने (भारवाचक) नइ उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. *हम्पीप्र.* नदी नइडउ वीसरा. नजीक (सं.निकट) **नइण** *वोसरा*. नयन, आंख नइतरु *शृंगामं. [नदी तथा वृक्ष] **नइहर** प्राचीसं. पियर (सं.ज्ञातिगृह; हिं.नैहर) ·**नडं** *नलरा*. नदी **नजकार** *आरारा*. नवकार, नमस्कारमंत्र **नउतन** *चतुचा.* [नूतन], सुंदर नउद उक्तिर पींज्या विनाना ऊनथी बनावेलुं एक प्रकारन् पाथरणुं [दे.जवतय] **नउल** *आरारा. उक्तिर.* नोळियो (सं.नकुल) **नक-वेसर** *नरका*. नाकनी वाळी **नकाळजो** *नरका. प्रेमाका*. काळजी [दरकार] वगरनो, चीवट वगरनो

नक कादं(शा). मगर (सं.) नक्षत्रपति प्रेमाका, चंद्र सिं.ो **न-क्षात** *प्रेमाका.* क्षत्रियहीन, [योद्धा वगरनुं] **नखपात** *प्रेमाका*. नखना घा [सं.] **नख्यैत्र** *ऐतिरा*. नक्षत्र **नग** *चित्तसं. नरका-२.* पर्वत [सं.] **नगयुग** हरिवि. वृक्षयुगल [सं.] **नगरमोयर** *पंचवा.* **नगरनो दरवाजो (सं.नगर** +गोपुर) **नगरनायिका** कादं(ध्रु). गणिका नगरां आरारा. रहेठाण, दर (दे.णगर); जुओं कीडी-नगरां **नगशंग** हरिवि. पर्वतशंग [सं.] **नगीनो** *ऐतिका. प्रेमाका*. रल, झवेरात नगुरो अखाका. गुरु वगरनो, [गुरुभावथी पर थयेलो, केवल आत्मनिष्ठ] **नगोदर** *नरका. प्राचीफा.* कंठनुं एक आभूषण; जुओ हार नगोदर **नघट नफेरी** कृष्णबा. वाजित्रना प्रकार नघरो मदमो. नघरोळ, बेफिकरो **नघात** अखाछ. घात न थाय ए रीतनी **नधूष** अंबरा. नहषराजा **नचित** नरप(द). निश्चित, चोक्कस, नकी **नचड्** *गुर्जरा. तेरका***. नाचे (स.न**त्यति) **नजिम** *शुंगामं*. ?, [*जोशी] [*फा.नजुमी] **नजिरिं** *आनंस्त*. नजरे नटन आनंस्त. नृत्य(पूजा) **नट माद्रि अंबरा**, नटोनी वचमां नटवो नरप(द). उत्तम नट, [नाचनार] (सं. नट+वर)

256

नटावउ अंबरा. उपवा. नटवो, नृत्य करनार **नटावी** अंबरा, नर्तिका

नटीए (नाटक नटीए) *नरका.* वेश भजवीए, दिखाव करीए

नदर्ड सम्यचोः नटडी, नर्तकी **नदुओ** *प्रेमाका*. नट, नर्तक

नटे नलरा. दुःख पामे (दे.णड); "प्रेमाका. [पीडे]; जुओ नडइ

नट्टरिस स्थूलिफा. नृत्यना रसमां

नदृरंभ गुर्जरा. नृत्य करवुं ते (सं.नाट्य+ आरंभ)

नट्ट(नट्ट सह) श्रंगामं. शरीरमां धूसी गयेलो नि भांगीने एमां रही गयेलो कांटो] (सं.नष्टशल्य)

नट्टा *नेमिछं.* [नाठा], नासी गया [सं.नष्ट] **नड** *गुर्जरा.* नट, [नर्तक]

नडइ उपवा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. *प्राचीसं. मदमो. लावल.* व्याकुळ थाय, हेरान थाय, कष्ट पामे; व्याकुळ करे, दुःखी करे (प्रा.णडिअ) [सं.नटित]; जुओ नटे

नड-पिक्खणउं *प्राचीसं*. नटखेल (सं. नटप्रेक्षणकम्)

नडाया लावल. *झांखा पाड्या, (नडतर कराया, व्याकुळ कराया]

नडिया जुओ सहु नडिया

न्यवर विमग्र. नणंद [सं.ननान्द्र]

नणंदर *नलरा*. नणंद [सं.ननान्द्र]

मति अंबरा, नित्य

नत्थी *तेरका. लिसा.* नथी (सं.नास्ति)

नय *नरप(द). प्रेमाका*. नाकमां पहेरवानी कडी, वाळी सिं.नस्ता

न-डोसी *अभिक* दोष विनानी

नह *गुर्जरा. लावल.* नाद (सं.नदी)

नुषि आरारा. नलरा. निधि, भंडार, समृद्धि **नन् नलाख्या.** नन्नो, नकार (सं.न-न)

नन्दड प्रबोप्र. निन्दा करे

नन्दी प्रबोप्र. नाटकना आरंभनुं मंगल, नान्दी

नपुंस अंबरा. नपुंसक

न्पुंसक *चित्तसं*. पुरुषत्व विनानं, सामर्थ्यहीन

नफर *आरारा. "जिनरा. पंचवा*. चाकर. गुलाम (फा.)

नफेट प्रेमाका. नफ्फट, निर्लञ्ज

नफेरी आरारा. कामा(शा). रूस्तसः शीलकः *शुंगामं*.. नानो ढोल; *नरका. नेमिछं*. *प्रेमाका.* शरणाईना प्रकारनुं मुखवाद्य (फा.नफीरी)

नबाप *श्रस्तस*. नवाब

नभव- *नलरा.* **निभाववुं (सं.निर्व**ह)

नमण अखाकाः नमनः वंदन

नमणीय वसंफा. वसंवि. नमणड. **वसंवि(ब्रा).* नमतुं, नमणुं, सुंदर (सं. नमन-क)

नमणि वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). नमन, नमवुं ते, [झुकवुं ते]

नमणीय जुओ नमणइ

नमस्करड *उक्तिर. षडाबा.* नमस्कार करे (सं.नमस्करोति)

नमंस- तेरका. नमस्कार करवा (सं.नमस्य)

नमाया *लावल*. नमाव्या निम तेरका. नेमिनाथ **नमीचा** *चतुचा.* **नम्र** नमेरो मदमो. निर्दय नमेवी *ऐतिका*. नमीने, नमस्कार करीने **नमेरी** *सिंहा (शा)*. निर्दय **नम्य** कादं(शा). नमीने **नम्रीभृत** अखाका. नम्र थयेलो **नय** *जिनरा. नलरा. प्राचीफा*. नदी; जुओ नड **नयड**ड *उक्तिर*. नजीक, पासे (सं.निकटम्) नयण गूर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. नयन नयणकडक्खे चारफा. [नयन]कटाक्ष **नयणकरंग** नरका. हरण जेवी आंखो **नयणलां** *विराप*. नयनो. आंखो **नयणां चोरवां** *नरकां*. नजर चुकाववी, न देखे तेम करवुं **नवजुले** वारफा. नयन नयणसुरंगु वसंवि(ब्रा). नयनने आनंद-जनक **नयनिमल** *ऐतिका*. नीतिमां [- न्यायमां तर्कमां} निर्मल [सं.]

नयर आरारा. कृष्णबा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विरापः नगर **नयरलीय** विक्रच, नगरलीक **नवरि, नवरी ऐतिका. गुर्जरा. नैमिछं.** नगरी

नरउत्त *सिंहा(शा)*. नरपूत्र

नरकातीत *प्रेमाका*. नरकने वटी गयेला,

नरकनी शिक्षा जेने भोगववानी नथी एवा सिं.]

नरखड़ *आरारा. प्राचीफा*. जुए, नीरखे (सं. निरीक्षते)

नरखक चंद्रवा, निरीक्षक **नरखाय** चित्तसं नीरखाय **नरग** *गुर्जरा. जिनरा. विक्ररा*. नरक **नरत** अखाका. प्रेमाका. नृत्य **नरत प्रेमाका**. निवृत्ति, अंत, [छेडो] **भरत *** पंचवा. [खबर]; *अखाछ. [तपास; स्पष्टता]; जुओ नर्त्य, निरत, निरति, नीरति, नृत **मरत पडें** वेताप. खबर पडे

नरति *आरारा. ऐतिरा. नलाख्या*. तपास, भाळ, खबर (रा.) (सं.निरुक्ति); जुओ निरति

नरतुं अखाका. चंद्रवा. प्रेमाका. सिंहा(शा). नरसं. खराब

नरते चंद्रवाः नक्की, निश्चित करीने, स्पिष्ट करीने]

नरनरइ *उक्तिर. गुर्जरा. नरका*. गर्जना करे, गिजे

नरनाह *आरारा. गुर्जरा.* नरनाथ, राजा **नरपवरु** *गूर्जरा*. नरोमां उत्तम (सं.नरप्रवर) नरबद चित्तसं. ?, [*गर्भनी प्राथमिक स्थिति] [*सं.नर्दबुद]

नरम नरका. नर्म. विनोदलीला नरव आरारा. गुर्जरा. प्राचीका. लावल. नरक

नरवइ *आरारा. गुर्जरा*. नरपति, राजा

नरवय ऐतिका. नरपति
नरवर-विंदा नेमिछं. राजाओ [सं.नरवरेन्द्र]
नरवाणि आरारा. चोक्कस (सं.निर्वाण)
नरविंदो प्राचीफा. राजा (सं.नर+इन्द्रः)
नरिंदिण शृंगामं. नेरणी, नख कापवानुं
ओजार (दे.णहरणी); जुओ नहरणी
नरंद आरारा. नरेन्द्र

नरालां कादं(शा). निराळां, जुदा ज प्रकार-नां (सं.निरालय परथी)

नराहितु *गुर्जरा*. राजा (सं.नराधिप)

निरयां सिंहा(शा). नारीओ निरंद गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. नरेन्द्र. राजा

नरेडाट *प्रेमाका*. खेदानमेदान

नरेणी *अखाका. [?]

नरेसर *गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. लावल.* नरेश्वर, राजा

नर्तकी *सम्यचो*. नाटिकणी, [नटी]

नर्ति, नर्त प्राचीका. नृत्य

नर्त्य *अखाछ. [भाळ, पत्तो]; जुओ नरत नर्प *दशस्कं(२)*. नृप

नलवट उषाह. कादं(शा). प्राचीफा. कपाळ [सं.निटलपट्ट]

नलाट उषाह. कपाळ

नलाड अखाका. अखाछ. अभिक्त. कपाळ

निलआर, नलीआर हम्मीप्र. निलकाकार, तोपची

नव- *तेरका.* नमवुं (सं.नम्) [जै.]

नवकारवाली अक्तिर. नवकार जपवानी माळा (सं.नमस्कारमालिका) नवकारसही उक्तिर. सूर्योदय थया पछी बे घडीए एटले ४८ मिनिटे नवकार गणी पारणुं करवानुं जैन व्रत (सं.नमस्कार-सहित)

नवगर, नवघर अभिक. नव ग्रहनां रत्नो-वाळुं आभूषण (सं.नवग्रह)

नवगीय ऐतिका. नव ग्रैवेयक [नामनुं विमान -- स्वर्ग]

नवधड नरका-२. *नवा अने गडीबद्ध, *नवां-नक्षोर, [*नवीन प्रकारनां]

नवण वीसरा. नमन, [नमवुं ते]

नवतेरी (नगरी) सिंहा(शा). नवतर [नगरी]

नव नइ दो (गणदुं) हम्मीप्र. नव ने बे एटले अगियारा गणवा, नासी जवुं

नवनवर्षं *गुर्जरा*. साव नवुं; *उपबा*. हमेश नवुं

नवनिध *प्रेमाका*. नवनिधि, धनना देव कुबेरना नव भंडार

नव-नीमालीय वसंवि(ब्रा). नवी - ताजी - कूंणी नवमालिका

नव-नेह *वसंवि(ब्रा)*. नवा – ताजा स्नेह-वाळी

नवपद आरारा. अरिहंत आदि ध्याननां नव स्थान [जै.]

नवभंगिहि वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). नवी-नवी रीते, वैचित्र्यपूर्वक

नवमइ *गुर्जरा*. नवमो, [नवमो रस – शम, निर्वेद]

नवमइं (न वमइं) **गुर्जरा*. [न छोडे, न तजे]

नवयनिहाण *आरारा*. नव प्रकारना निधि,

भंडार [सं.नव+निधान] **नवरंग *** वसंवि(ब्रा). [नूतन छटाथीं] (सं.) **नवलखर** *लावल. वीसरा. हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात. अति कीमती घोडा (सं.नव+लक्ष) नविद्धय प्राचीफा. नवी, नवली, नवेली (सं. नव+छी) नवविष्ठित्ति आरारा. नूतन शोभायुक्त (सं. नवविच्छित्ति) नवसडं षडाबा. नव सो (सं.नवशत) नव-सत्त नरका. प्रेमाका. नव अने सात. सोळ **नवसर** गुर्जरा. नलरा. प्रेमाका. लावल. नव सेरनो (हार) **नवाण** *चित्तसं, प्रैमाका*, बहोका पाणीवाकां स्थान, जळाशय [सं.निपान] **नवाणवइ** *षडाबा*. नवाणुं (सं.नवनवति) नवारसंड उक्तिर. लोहना नव भाग धरावतुं एक औषध (सं.नवायसम्) न-वि अभिऊ. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). वीसरा. लावल. नहीं (सं.न+अपि) **नविलि** लावल. नवल. ताजा **नवी** *प्राचीका*. स्त्रीना अधोवस्त्रनी गांठ. [नाडी] (सं.नीवि) नवीनउ षडावा. निर्वेदप्राप्त, खिन्न (सं. निर्दिण्ण)

नवेण *प्रेमाका*. नाह्याधोया विना ज्यां जई न शकाय तेवी जगा, जेमके रसोड़ **नवेण चोको** अखाका. रसोईनी जग्याने लींपीने शुद्ध करवी **नवेरउं** *नेमिछं.* नवुं, नवुं आवेलुं [माणस] (सं.नवतर); नेमिछं. प्राचीफा. नवतर. [नवीन जातनं, अद्भुत] **नव्याणु** *ऐतिका*. नवाणु **नशावे** *अखाका*. नसाडे निश विमप्र. [निशाए], रात्रे नशिहर उषाह. राक्षस (सं.निशाचर) नष्टचर्या *प्रेमाका. निशाचर्या, गप्तचर्या, छ्पी रीते रहेवुं ते]; जुओ नाटचर्या **नष्टपणे** *मोसाच*, नठारापणे **नसले** *विमप्र. [?] **नसंक** *अखाछ*, निःशंकपणे, चोक्कस नसा-जाळ *प्रेमाका.* नसोनी जाळ [सं.स्नसाजाल] नसावइ उक्तिर. नसाडे (सं.नश् परथी) **नसावणहार** *उपवा*. नसाडनार **नितः** प्राचीफा. रात्रि (सं.निशा) नसें, नशे प्राचीकाः निश्चय, [नक्षी] नस्तर- नलरा. खुटवं, [पसार थवं] (सं. ितरति) नह तेरका. प्राचीफा. वीसरा. नख **नह** षष्टिप्र. नहीं **महपलव** जुओ नीहपलव **नहरणी** *उक्तिर*. नेरणी, नख कापवानु ओजार (सं.नखहरणी); जुओ नरहिणि नहीं उक्तिर. [?] (सं.नखिका)

न्तुंसक अंबरा. न्पुंसक

नवीसदः ।

नवीसंदो सिंहा(शा). कारकुन, लहियो [फा.

नहींत *उक्तिर*. नहीं तो, नहींतर **नहु** *आरारा. गुर्जरा. विराप. वीसरा*. नहीं ज (सं.न+खलु) नहृत्तखं, नहंतखं उक्तिर. प्रद्युच्, विराप. शुंगामं. नोतरवुं, निमंत्रण आपवुं **न्हरा** कृष्णवा. कालावाला **नह** *ऐतिरा.* नहीं **नहेरी** *प्रेमाका.* माथामां नाखवानुं तेल नंग **विमप्र.* [चीज, बाबत] **भंदण** *गुर्जरा. तेरका.* पुत्र (सं.नन्दन) **नंदणी** *गुर्जरा.* पुत्री (सं.नन्दिनी) **नंदन** वीसरा. पुत्र (सं.) **नंदर्व** *तेरका.* आनंद पामव् **नंदर्वु** अखाका. निंदवुं, निंदा करवी **नंदिक** नरका. आनंद[मंगल] **नंबीसर** *तेरका*. नंदीश्वर द्वीप जि.] **नंदेवी** *नेमिछं*. निंदा करीने **नंगण्य** *मदमो*. नम्रता **ना** *नंदब, वेताप*, न्याय **न्यअता ***विमप्र. [नायता - सामुद्रिक वेपारी जाति दि णाईत्ती **नाइ सक्या**ऐतिका. न आवी शक्या नाई कामा(त्रि). वीसरा. हजाम (सं.नापित) **नाउं** *तेरका*. नाम (अप.) **नाकनमणि** जिनराः शिर नमाववुं ते, विंदन करवा ते] **भाकसोरां** *अंगवि*. नसकोरां **नाकोटडे** मोसाच, चडावेला नाके नाग आरारा(व). नागकेसर, नागचंपो (सं.) नाग नरका. लावल. स्त्रीओनुं काननुं घरेणुं

मागडर *ऐतिरा.* **नागपुर, [राजस्थाननुं नागोर** गामी नागड *सिंहा(शा)*. चारण, भाटविशेष (दे. नग्गुडि) **नागड** *गुर्जरा*. एक वाद्य नागदमनि "आरारा. सिर्पने वश करनार एक वनस्पति] [सं.नागदमनी] नागफूली नलरा. स्त्रीनो एक अलंकार, [नाकफूली, नाकफळी] **नागलडो** नरका. स्त्रीओनुं काननुं एक घरेणुं नागतु विमप्र. हरिवि. स्त्रीओनुं काननुं एक आभूषण नागवेति आरारा(व). नागरवेल (सं.नाग-वल्ली) नागहथ नलरा. स्त्रीनो एक अलंकार **नागिंद** *विक्रस*, नागेन्द्र, शेषनाग **नागेंद** *नेमिछं*: नागेन्द्र, [शेषनाग] **नागोदर** स्थूलिफा. कंठनुं एक आभूषण **नाच** *सम्यची*, नाटक **नाचिण** *प्राचीफा*. नर्तिका (सं.नृत्य परथी) नाट अखाका, *अखाछ, चित्तसं, प्रेमाका, विमप्र. नेट. नकी, चोक्रस, खरेखर नाट प्रेमाका. एक प्रकारनी सुतराउ साडी कि वस्त्री **नाटईउं** नलरा. रेशमनाः वाणानुं वस्त्र **नाटक** अंबरा. नलरा. विक्ररा. नृत्य, नृत्य-समारंभ, नाटक, [नटखेल]; चंद्रवा. आख्यान, [साहित्यरचना, काव्य] **नाटकरस** अंबरा. नृत्यरस **नाटकि** अंबराः नाटक करनार, नट, [नर्तक]

नातरउं जिनरा. [सगा तरीकेनो] संबंध:

नाटकिणी अंबरा. नटी. [नर्तकी] नाटचर्या पंचवा. [गुप्तवेशे फरवुं], *छूपी रीते युक्तिथी नगरलोकनी चर्चा जोवी; जुओ नष्टवर्या, नेष्टवरज्या नाटारंग चंद्रवा. नृत्यनो रंगराग के उत्सव नाठी (हिआनी नाठी) नेमिछं. नष्ट थयेली, हियाफुटी] **नाठीइं** *उपदा*. नष्ट थतां, गुमावतां (सं.नष्टः) **नातु** कादं(ध्र). "संतायो, [दोडी गयो, नासी गयो] नाडा जुओ ज्योवन-नाडा **नाड्य** *ऐतिका.* नाट्य, नाटक नाप आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं. शुंगामं. ज्ञान नाणड आनंस्त. कादं(शा). जिनरा. नरका. न आणे. न लावे नाणंड उक्तिर, नाणुं (सं.नाणकम्) नाण दंसण *शुंगामं*. ज्ञान अने दर्शन **नाणधारा** *लावल*. ज्ञाननी धारा **नाणवंत** *ऐतिका*. जानी नाणिव्रउ उक्तिर. नणंदनो दीकरो [सं. नानान्द्रः रा.नांणदौ नाणिहिं (नाणिहिं जिल) ऐतिका. ज्ञानरूपी (जळथी) **नाणी** *आरारा*. जानी **नाणी ***आनंस्त. नेमिछं. न आणी. न लावी **नाणु<u>ङ</u>** *विक्ररा.* **नाणावटी नाणुं** *आनंस्त.* न आणुं, लावुं नहीं

नेमिछं. लग्नसंबंध; जुओ नात्र **नाति** विक्रराः ज्ञाति **नातुं** *अखाका*. सगपण, [संबंध] नात्र प्रबोप्र. अत्र नहीं, अहीं नहीं (सं.) नात्र गुर्जराः लग्नसंबंध (सं.*ज्ञात्रक); जुओ नातरउं **नात्रा** *षष्टिप***ः संबंध, [ज्ञातिसंबंध]** (सं. ज्ञात्र); *उक्तिर*. ज्ञातिओ **नात्रा-संबंधि** आरारा. सगपण बांधवा माटे **नाथ** *अखाका, नरका*, नाकमां परीवेली दोरी [सं.नस्ता] **नायणा** *ऐतिका.* नाथवुं, वश करवुं **नावजंत्रि** *गुर्जरा*. नांदोद (गाम) नाव-बिंदु *प्रेमाका. [योगानुभवनां बे तत्त्वो - कुंडलिनी जाग्रत यतां संभळातो अनाहत नाद अने ए नादनुं प्रकाशमय व्यक्त रूपो **नादभेद** *लावल*. संगीतना प्रकार **नादर-** * *नलरा*. [न आदरवुं, न करवुं] **नावु** *"गुर्जरा.* **[**गर्व] [*सं.नाद] ***नादेय [अनादेय]** *जिनरा.* [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं हितकारक वचन पण] अनादरणीय [बने छे] [जै.] **नाना** अखाका. चतुचा. चित्तसं. नरका. - प्रेमाका. हरिख्या. अनेक, विविध, तरेह-तरेहनुं (सं.)

भानावासी नेमिछं. विविध प्रकारनी सुगन्ध-

नकृतकः) [दे.;रा.]

नातम्बं *जिक्तर.* रूमाल, गमछो (*सं.

थी भरेली

नानाविध *चित्तसं. प्रेमप. प्रेमाका.* जुदाजुदा प्रकारना, अनेक प्रकारना [सं.]

नानाविधि *नलाख्या*. नानाविध, अनेक प्रकारनुं

नानाविष्ठ *गुर्जरा.* विविध प्रकारनुं (सं. नानाविध)

नापड् अभिऊ. आरारा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. मोसाच. षष्टिप्र. न आपे

नापजे चंद्रवाः मापजे

नापिक अखाका. प्रेमाका. हजाम, वाळंद (सं.नापित)

नापी विक्ररा. वाळंद

नापीक *मदमो. सिंहा(शा)*. नावी, हजाम, वाळंद (सं.नापित)

नापीणी सिंहा(शा). हजामडी

नाम अध्यात्म *आनंस्त. [नामाश्रयी अध्यात्म] [जै.]

नामइ उक्तिर. ऐतिरा. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. लावल. नमावे (सं.नामयति); *आरारा. कादं(शा). रेडे

नाम सारे *चतुचा*. ?, (ना सारे = ना कहे ?)

नामउ *ऐतिका.* नाम

नामकम्म जिनरा. नामकर्म, [कर्मनो एक प्रकार, जे जीवनी गति, जाति, देखाव वगेरेने निर्णीत करे छे] [जै.]

नामणड (नामणड) जिनराः नन्धुं जाय, [नमन थाय]

नामी *आनंस्त*. नमावनारा **नामीनइ** जुओ शिर नामीनइ नायल प्राचीसं. ?, [*गर्विष्ठ] [दे.णाय] नायल तेरका. नागेन्द्र (जैन साधुओनो एक गच्छ) (सं.नाग+इल्ल)

नायो *चंद्रवा*. न्याय

नारिक इं उपबा. नरकमां

नारकी उपवा. षडाबा, नरकवासी (सं.)

नारगी *गुर्जरा.* नरकवासी (सं.नारकिन्) **नारंग** *गुर्जरा.* नारंगीनुं वृक्ष

नारंगडुं *नरका. [स्तन]

नारंगफळ नरका. [नारंगीना जेवां] स्तन

नाराधइ *षष्टिप्र*. न आराधे

नारिग *ऐतिका.* नारिंग, नारंगी

नारिय-कुंजरु, नारीकुंजर प्राचीसं. नारीमय कुंजर, [नारीमां विहरतो कुंजर, नारीविलासी], कामदेव-बिरुदविशेष

नारिंग *आरास(व). उक्तिर*. नारंगीनुं वृक्ष (सं.नारंग)

नारीकुंजर नरका. प्रेमाका. हाथीनी आकृति-मां सर्वत्र स्त्रीओनी आकृति होय तेवी भात

नारीकुंजर जुओ नारियकुंजरु

नारु विक्ररा. विमग्र. कंदोई, काछिया वगेरे नव कारीगर वर्ण

नाल देवरा. गर्भनाळ; अखाका. कमळनी दांडी; देवरा. हम्मीप्र. तोप

नालकेर आरारा (व). नाळियेर (सं. नालिकेर) नालगोला, नाळगोळा कस्तुवा. "प्रेमाका.

तोपगोळा

नाला *लावल*. नाळ, दांडली **नालि** *हम्मीप्र*. तोप **नालिय** प्राचीसं. मूढ [दे.] **नाली** हम्मीप्र. तोप **नालीअर** *आरारा(व)*. नाळियेर (सं. नालिकेर)

नालेर, नाळेर *उक्तिर. वीसरा.* नाळियेर (सं.नारिकेल)

नालेरी आरारा(व). नाळियेरी (सं.नालिकेर) नावइ आरारा. उपवा. कादं(शा). जिनरा. नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप. लावल. षष्टिप्र. न आवे (सं.न+आयाति)

नावट चंद्रवा. न्यायवट, न्यायवृत्ति; जुओ न्यावट

नावडियो चंद्रवा. नाविक

नादा *चतुचा.* न आव्या

नावी *उक्तिर. ललिस. विक्रस. षडावा.* हजाम (सं.नापित)

नाशा विमप्र. लावल. नाक [सं.नासा] नाशादंड आरारा. नाकनी दांडी (सं. नासादंड)

नाशिका, नाशीका सिंहा(शा). यडावा. नाक (सं.नासिका)

नास तेरका. नाक (सं.नासा)

नासरडुं दशस्क(२). प्रेमाका. नासी जवुं ते; नासीने लीधेलो आश्रय के गुप्तवास नासिक वसंवि(ब्रा). नासिका, नाक नासिवउं उक्तिर. उपवा. नासवुं ते (सं. नश्यति)

नास्त, नास्त्य अखाछ. अखेगी. नास्ति (नथी) एवो भाव, न होवुं ते; जुओ आस्त्य-नास्त्य नाह आरारा. उषाह. कृष्णवा. गुर्जरा. चारफा. जिनरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विक्ररा. विराप. वीसरा. नाथ, स्वामी, पति नाहर उक्तिर. वीसरा. वाघ (*सं.नाखर) नाहर *विमप्र. [पथ्थर खेंचवाना दोरडा] [रा.]

नाहलं आरारा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि(ज्ञा). पति (सं.नाथ+ल) नाहलीयौ जिनरा. नाथ नाहवी विक्ररा. हजाम; जुओ नावी नाहाठां कस्तसः नाठां नाहाठं आरारा. न आहाठं, न खाउं

नाहासे रुस्तसः नासे नाहि प्राचीफाः षडाबाः दूंटी (सं.नाभि) नाहि लावलः नाथे, [नाथ – स्वामी – मालिक होदाथीः बनवाथीं]

नाहालवा नंदब. न्याळवा, निहाळवा

नाहिय तेरका. सुंदर नाभि (सं.नाभिका) नाहिषुं उक्तिर. नाहवुं (सं.स्नातव्यम्) नाहुलउ वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). नाथ

नाहोलीओ नरप(द). पति नाहोलो अखाका. मदमी. नावलियो, प्रेमी, नाथ (सं.नाथ+प्रा.उञ्जय)

नांखवा (दहाडा नांखवा) हरिख्या. [दिवस] गाळवा

नांगर उक्तिर. बहाणनुं लंगर [दे.णंगर] नांखणहार उपना. नाखनार नांणेश चंद्रवा. न आणीश नांदिया *षडाबा*. आनंदित थया, रांजी थया (सं.नन्दिताः)

नांदी-कर्म *प्रेमाका.* कुटुंबना कल्याण माटे देवना आशीर्वाद मेळववानो एक धार्मिक विधि [सं.]

नांदीवृक्ष *आरारा(व)*. नांदरूखी वड (सं. नन्दिवृक्ष)

नांधडियो, नांधडीओ नरका. नरप(द). प्राचीका. प्रेमप. नानडियो, नानो (सं. श्लक्ष्ण)

नांभ कामा(शा). नाभि नांहांनंहीओ मदमो. नानैयो, नानडियो नि अभिक. (भारवाचक) ने (सं.नु) नि अभिक. अने (सं.अन्यदिप) नि वीसरा. नहीं

निअ *गुर्जरा.* निज, पोतानुं

निअडउ *नेमिछं*. नजीकनो, [नजीक रहीने] (सं.निकट)

निइ लावल. विमप्र. अने [सं.जन्यदिप] निऊ उक्तिर. नेवुं (संख्या) [सं.नवित] निउंजइ उक्तिर. नियोजे, जोडे, काममां ले (सं.नियोजयित)

निजंत्रीड गुर्जरा. निमंत्रण आप्युं निकट्टि विक्ररा. नकटी, नाक वगरनी निकर, निकरड उक्तिर. "नरका.

नेकर, निकरउ *उक्तिर. "नरका. <i>वसंवि(ब्रा)*. राशि, जथ्यो [सं.]

निकठ नलरा. कर विनानो, [करमुक्त] (सं. निष्कर)

निकर्मण विक्रच. काम वगरनो, [नवरो] निकंद करबुं दशस्कं(१). निकंदन करवुं निकाचित कर्म षिष्ट्य. अत्यंत निविड कर्म, चिंटीने वज़रूप बनी गयेलां, छूटी न शके तेवां कर्म] [जै.] [सं.]

निकाचिय *ऐतिका*. निविड – गाढपणे बंधायेल [सं.निकाचित]

निकाम कादं(शा). खूब

निकाय *ऋषिरा. [समूह] [सं.]

निकालिजा *गुर्जरा. *विराप. [*लागणी वगरनो, *निर्दय, *साहसिक]

निकांमु *गुर्जरा.* खूब (सं.निकामम्)

निकोलिया उक्तिर. फोलवा [सं.निष्कुल; दे.णिकोर]: जुओ नीकोलइ

निकारण विमप्र. निष्कारण

निक्षिपाबिसु षडावा. फेंकावीश, नखावी दईश (सं.निक्षिप)

निखरा *आरारा*. खराब (रा.); जुओ राछ-निखर

निखूंती * नलरा. निमग्न [धईने], [*कुशळता]

निखेषा आनंस्तः निक्षेप, नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा चार भेदथी वस्तुने ओळखवानो व्यवहार (जै.)

निखेवा अभिऊ. निक्षिप्त, नाखेला, [स्थापना, न्यास] (सं.निक्षेप)

निगड *हरिख्या*. बेडी (सं.)

निगड-कटक "कादं(शा). [बेडी]

निगडबंधन *कादं(शा). [बेडीनुं बंधन]

निगध नलरा. निषध राजा

निगम *अखाका. विदना परवर्ती शास्त्र-ग्रंथो] नरका. ग्रेमाका. वेदग्रंथो, [शास्त्रो]; जुओ नीगम
निगमवुं अखाछ. काढवुं; जिनरा. गुमाववुं;
देवरा. प्रेमाका. पसार करवुं, विताववुं
निगढ- *वीसरा. [गळी जवुं]
निगहिय गुर्जरा. संयमित करी (सं.निगृहीत)
निगुडी आरारा(व). नगोड, एक वनस्पति
(सं.निगुंडी)

निगुण आरारा. वीसरा. नमुणा (सं.निर्गुण) निगोद ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. अनंत जीवोनुं एक साधारण शरीर-विशेष, साधारण वनस्पति (सं.) [जै.]

निगोवर *"गुर्जरा. प्राचीफा.* कंठनुं एक आभूषण

निग्रहाविच *षडाबा.* पकडाव्यो (सं.निग्रह्) निग्रंथ *ऐतिका.* परिग्रहरहित, [साधु] [सं. निग्रंथ]

निष्यु गुर्जरा. दयाहीन (सं.निर्धृण) निष्युख नलाख्या. नहुष राजा निचंतज शीलक. निश्चित, चिंता वगर निचंतु लायल. नक्षी (सं.निश्चित)

निचु *प्राचीसं*. नित्य

निचोई नलाख्या. निचोवी (दे.णिद्युड; सं. *निश्चावयति) [सं.*निश्चोतयति]

निखल तेरका. निश्चल

निश्चलु *तेरका.* निश्चे, [चोक्कस] (सं निश्चलम्)

निद्यं *आरारा.* नित्य

निश्च *ऐतिका.* नित्य

निक्षणु तेरका. ?

निष्ठमाली *गुर्जरा*. पांपणना पलकारावाळी (सं.निमिष+आली) निर्धीष्ठि वसंफा. वसंवि. वंसवि(ब्रा). निर्भर्त्सना करे, तुच्छकारे (सं. निरतुच्छयति; दे.छिछि ?)

निजज्ञान *प्रेमाका*. आत्मज्ञान

निजधन अखाका. ब्रह्म[आत्मा]रूपी घन [वादळ]

निजर, निजरि *आनंस्त. प्राचीफा.* नजर, दृष्टि

निजंत्रइ उक्तिर. नियंत्रण करे (सं. नियन्त्रयति)

निज्ञणिब *ऐतिका*. जीतीने, [नष्ट करीने] निज्ञिणिख *ऐतिका*. जीत्या, [नष्ट कर्या] [सं. निर्जित, प्रा.निज्जण]; जुओ निर्जिणइ

निज्झर तेरका. निर्झर, [झरणुं]

निटोल * अभिक्त. [नठोर]; आरारा. सम्यची. उद्दंड, घमंडी, निर्लज, नठोर (रा.); जुओ हाटोल

निटोल अंबरा. आरारा. उपना. "ऐतिका. "ऐतिरा. नेमिछं. लावल. विक्ररा. विमप्र. षडाबा. नकी, अवश्यपणे, संपूर्णपणे, साव (सं.निस्तुल्य) [दे.णित्तुलिय]

निद्दुरपणय *तेरका*. निष्ठुरपणुं

निदुरं अखाका. आरारा. उपबा. नेमिछं. लावल. निष्ठुर, निर्दय

निठोर *नरका.* निष्ठुर, दयाहीन

नित प्रत्ये *नरका.* रोजेरोज, हंमेशां नितर अभिक्त. नेत्र, आंख

नितंबन * नरका. [नितंब, कूलो, धापो]

नितंबिनी आरारा. स्त्री

निति *उषाह*. नित्य

नितु गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. नित्य, हंमेशां

नितुल- प्राचीसं. उठाववुं, [मूकवुं, छोइवुं] [सं.निस+तुल्]

नित्य नलाख्या. नित्यकर्म

नित्य प्रत्ये *दशस्कं(९)*. नित्य क्रमे, [रोजेरोज]

निद देवरा. निद्रा, ऊंघ

निवान चितसं. कारण, मूळ कारणरूप तस्व; परिणाम; अंतिम लक्ष्य; चिकित्सा, परीक्षा; छेवटे, चोक्कस, ज; अखाका. आदि कारण, मूळ तत्त्व; अखाछ. चिकित्सा, [परीक्षा, निर्णय]; छेवट, अवश्य; नलरा. अंत, परिणाम, [छेवट]; अखाका. कादं(शा). नलाख्या. प्रेमाका. नक्षी; जुओ इंदु निदान

निदानी शुंगामं. चोकस

निदेश नलाख्या. आज्ञा, सूचन, [*सामीप्य, *पासे होवुं ते] (सं.)

निद्दलचं *गुर्जरा.* दळुं, चूरो करुं (सं. निर्दलयति)

निहा जिनरा. [सुखे सहेलाईथी जागी शके तेवी] निद्रा, [दर्शनावरणीय कर्मनो एक प्रभेद] [जै.]

निद्धडइ ऐतिका. परास्त करे; जुओ निर्धाटइ निद्धंषस अक्तिर. अकृत्य करनार, निर्दय, निर्लञ्ज [दे.]

निवालखंड *उक्तिर*. निव्राळु (सं.निव्रालक्षः) निथ अखाछ. निधि, भंडार(रूप परमात्मा); नरका. निधि, भंडार निधत्त कर्म *षष्टिप्र.* एक प्रकारनुं बंधायेलुं कर्म, [कालांतरे गाढ प्रयत्नथी फीटे तेवां कर्म] [सं.] [जै.]

निधपा आरारा. निर्धन स्थितिमां

निधाड- तेरका. प्राचीफा. ध्वंस करवो, परास्त करवुं (सं.निर्+धाट्)

निधान अखाका. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. निधि, भंडार; अखाछ. निधिरूप परमात्मा; *प्रेमाका. [भंडाररूप, आश्रय-रूप व्यक्ति]; अखाका. मूळ, [आश्रय-रूप] (सं.)

निधि दशस्कं(२). समुद्र [सं.]

निष्टि संख्या *दशस्कं(२). प्रेमाका.* समुद्र जेटली संख्यामां एटलेके सात

निधुवन वसंफा. सुरतक्रीडा, संभोग (सं.)

निधुवनकेलिकलामीय वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुरतकेलिथी क्लान्त बनेलां (सं.निधुवन +केलि+क्लामित)

निध्य अखाका. निधि, भंडार

निपट नरका.ं प्रेमाका. तद्दन, घणो (दै. णिपट)

निपाई नरका. वीसरा. निपजावी, उसन्न करी, तैयार करी (सं.निष्पादित)

निपात *दशस्कं(१). प्रेमाका*. पाडवुं ते, नाश [सं.]

निपातन चतुं दशस्कं(१). नष्ट धतुं

निपातु प्रबोप्र. पाड्यो, [जीत्यो, नाश कर्यो] (सं.निपातित)

निपायुं *उपबा. प्रेमाका.* निपजाव्युं (सं. निष्पादित) **निफल** तेरका. निष्फल

निबल**उं** *आरारा*. नबळुं, ऊतरतुं, काचुं, खामीवाळुं, नठारुं [सं.निर्बल]

निबंध *वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). नियम, [धारो] (सं.); गुर्जरा. स्थिति, [संयोग] (सं.)

निबीजइ उक्तिर. निर्वेद पामे, विरक्त थाय [सं.निर्विद्यते]

निब्मर तेरका. निर्भर, [भरेलुं]

निब्भंत *ऐतिका*. निर्भान्त

निभ ऋषिराः सरखा, [ना जेवा] (सं.)

निमालइ ऋषिरा. निहाळे छे (सं. निभालयति)

निभ्रं**छइ** अंबरा. कादं(शा). प्रेमाका. निंदा करे, तिरस्कारे (सं.निर्भर्त्स्)

निभंत *आरारा.* निभ्रान्ति, निःशंकता

निमख नरप. पळ, क्षण, आंखनुं मटकुं मारवा जेटलो समय (सं.निमिष)

निमजां आरारा(व). एक मेवो; चिलगोजा (फा.); सनोबर के चीड

निमाजइ जुओ निमोजइ

निमालीय वसंवि. नवमालिका

निमि तेरका. नेमिनाथ

निमित्ती उक्तिर. ज्योतिषी (सं.नैमित्तिकः)

निमिष नरका. आंखनो पलकारो [सं.]

निमील अखाका. पळवारमां (सं.निमीलनम्)

निमूल *वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). अमूल्य (सं.निर्मूल्य)

निमेख, निमेष दशस्कं(२). पांपण (सं. निमेष); दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. निमेष, [पांपणनी] पलक, [मटकुं]; मटकुं मारवां जेटलो समय, पळ, क्षण *निमोजइ [निमाजइ] हम्मीप्र. नमाज माटे

निम्मल गुर्जरा. तेरका. निर्मल

निम्मविय *तेरका.* निर्मित कराव्युं; रचेलुं (सं.निर्मापित)

निम्माण जिनरा निर्माण, निमकर्मनी एक प्रकार, जेना उदयथी सर्व अवयवी यथायोग्य स्थाने अने सारा आकारे थाय छे] जि.]

निम्मिय तेरका. निर्मित कर्युं

निय ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. वसंफा(ल). वसंवि. निज, पोतानुं

नियगुण वसंवि(ब्रा). पोताना गुण

नियट जिनरा. निवृत्ति, [जीवो वद्ये विशुद्धिनुं तारतम्य होय एवी आत्मावस्था] [जै.]

नियडा आरारा. उषाह. निकट, नजीक

निय मणि *ऐतिका*. पोताना मनमां

निय मन *ऐतिका.* निज मन

नियय *गुर्जरा.* पोतानुं (सं.निजक)

नियर नलरा. नगर

नियरु *ऐतिका.* निकर, समूह

नियाणडं गुर्जरा. षडाबा. मृत्यु पहेलां तपनुं इच्छित फळ मागवुं ते (सं.निदान)

नियुंज्या गुर्जरा. विराप. गोठव्या (सं. नियुनक्ति)

नियोजिवुं *उक्तिर.* नियोजवुं (सं.नियोजित-व्यम्)

निरक्षिय गुर्जरा. निरीक्षण करीने, जोईने

(सं.निरीक्षते)

निरमोष नरका. मोटा अवाज [सं.निर्घोष] निरजणी *ऐतिरा. [जीती, परास्त करी]; जुओ निर्जणइ, रजणी

निरजल, निरजळ आरारा. वीसरा. निर्जळ, पाणी वगर

निरत "विमप्र. [निश्चित, साव]; जुओ नरत

निरतः *अखाका. [निवृत्ति - बाह्य प्रवृत्ति-मांथी]

निरतइ **विमप्र*. [*लगावे, *लटकावे] **निरतइं ****सिंहा(म)*. [मग्न थईने]; जुओ निरतु

निरति, निरती, निरतीय *विमप्र. निश्चित-पणे]; *अखाका. नेमिछं. प्राचीफा. *वसंवि(ब्रा). विक्रच. स्पष्ट, निश्चित, नक्की, चिख्खुं, साव, पूर्छ] (सं.निरुक्ति); जुओनरत, निरतु, निरत्त, निरुत्तउ, नीरती निरति ऋषिरा. पत्तो, [माळ]; जुओ नरित निरतिचार, निरतीचार *उपबा. चारफा. जिनरा. देखां अतिचार विना, दूषण के दोष किंगा (जै.) [सं.]

निरती जुओ निरति निरतीचार जुओ निरतिचार निरतीय जुओ निरति निरतु नतरा. आसक्त, [मग्न] (सं.निरत); जुओ निरतइं

निरतु "नलरा. [चोछखुं, निश्चित]; जुओ निरति

निस्त कृष्णच. निश्चित, [चोख्खुं]; जुओ

निरति

निरवतुं अभिक. गुर्जरा. दळी नाख्युं, नष्ट कर्यु (सं.निर्दलित)

निरवाबो, निर्दाबो अखाछ. अखेगी. दावानो अभाव, [मताग्रहनो अभाव]

निरदूषण *आनंस्त.* दूषण विनानुं

निरदे प्रेमाका. निर्दय, हृदय वगरनो

निरधार *आरारा. तेरका*. निराधार, असहाय

निरधार चित्तसं. निश्चय, निश्चित करेल मत; नक्षी कर; निश्चित; खरी; गुर्जरा. चित्तसं. नरका. प्रेमाका. नक्षी, ज (सं.निर्धार)

निरधारा *अखाका*. नक्की

निरवारी लावल. आधार विनानी, [असहाय]

निरघारुं *आरारा*. आधार विना, अध्धर

निरपुंम *ऐतिरा*. धुमाडा वगरनो

निरनामा *आरारा.* नाम वगरनी **निरनुवंध** *आनंस्त.* अनुबंध विनानुं, राग

नरनुबंध *आनस्त*. अनुबंध विनानु, रा विनानुं, [आकांक्षा विनानुं]

निरपाय *आरारा*. निर्विघ्न, मुश्केली वगरनुं (सं.)

निरबह- वीसरा. सेवा करवी (सं.निर्वह) निरभरछइ उक्तिर. निंदा करे, तिरस्कार करे (सं.निर्भर्त्सयति)

निरभी *प्रेमाका. [नभावडावी, सहेवडावी, भोगवावी]

निरमे अखाका. नरका. प्रेमाका. निर्भय निरममं वीसरा. क्रूर, हृदयहीन (सं.निर्मम) निरमल कित्तसं. नीरोगी

निर-माय *देवरा.* मायारहित; जुओ निर्मायी

निरमुख, नीरमुख *सिंहा(शा)*. विमुख, [पाछा फरेला]; जुओ निर्मुख

निरय *प्राचीका*. नरक

निरवह्वुं नेमिछं. लावल. निभाववुं; अखाका. करवानी जवाबदारी लेवी; आरारा. निभाव थवो; चित्तसं. निर्वाह करवो, उकेल आणवो; समजाववुं

निरवाट *प्रेमाका*. निर्वाट, मार्गनी निशानी विनानुं

निरवाण, निरवाण्य, निर्वाण कादं(शा). चित्तसं. नक्षी, खरेखर (सं.); *अखाका. गुर्जरा. निर्वाणपद, मोक्ष

. **निरवाणि** अभिऊ. *ऋषिरा. नलाख्या. ललिरा. विमप्र. नकी (सं.निर्वाण)

निरवाणी *अखाका. [निर्वाणदशाने – मुक्तिने पामेला]

निरवाण्य जुओ निरवाण

निरवाहर् *आनंस्त. गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा.* नभावे, [पालन करे] (सं.निर्वाहय्)

निरवाह कर्यो चित्तसं. चलाव्युं, समजाव्युं

निरवाहिवउं *उपबा*. नभाववुं, राखवुं, प्रवर्ताववुं

निरवाहु *गुर्जरा*. निभाव, पालन

निरवू *गुर्जरा*. प्रसन्न, नरवो [सं.नीरुज]

निरव्यंजन ऋषिरा. निर्जन [सं.निर्+विजन]

निरंजन अखेगी. निर्लेप, दोषरहित, निर्गुण ब्रह्म [सं.]

निरंतर तेरका. गीचोगीच; [सदंतर, साव] निरंघ नरका. वधु आंधळा, [साव आंधळा] [सं.निः+अंध] निसकरइ आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. वाग्भवा. षडावा. निराकरण करे, निवारण करे, दूर करे, निषेध करे (सं. निराकरोति)

निराट अखाका. केवळ, मात्र, [एकमात्र, शुद्ध]; चित्तसं. एकलो ? स्वतंत्रपणे ? सीधेसीधो ? निश्चितपणे ?

निराल, निराळ *अखाका*. निरालुं, न्यारुं, अलग, अलिप्त [सं.निरालय]

निराळो *चित्तसं*. नवो, मौलिक

निराशंस *आनंस्त*. निष्काम, [कामना – अपेक्षा विनानुं] [सं.]

निराशि, निराशी अखाका. अखाछ. आनंस्त. आशा के इच्छा वगर

निरांस चित्तसं. निरसन, दूर करवुं ते [सं.] निरीक्षण (निरीक्षण) *गुर्जरा. [जोवा माटे] निरीक्षो ऐतिका. अनासक्त, [इच्छारहित] [सं.नरीह]

निरुख्य * कादं(ध्रु). [उत्सव – आनंद-प्रमोद वगरनुं]

निरुत्त**ः, निस्तर** *ऐतिका. गुर्जरा. विराप.* चोक्रस, निश्चित (सं.निरुक्त); जुओ निरति

निरुपनी, निरूपनी गुर्जरा. विराप. उपमा आपी न शकाय तेवुं (सं.निरुपम परथी)

निसंप कृष्णवा. आदेश; जुओ निरोप निसंपड षडावा. रोके (सं.निरुणिद्ध)

निरेहणा *गुर्जरा. विराप.* इच्छातृप्ति विना, [इच्छा विना ज] (सं.निरेषण)

निरोप *अंगवि. कृष्णबा. प्राचीसं*. आदेश;

जुओ निरूप

निरोपई वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). फरमावे, आज्ञा करे (सं.निरूपयति, निरोपयति); वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). ठरावे, -ना जेवुं गणे, माने (सं.निरोपयति)

निरोपम *गुर्जरा.* निरुपम

निरोत "गूर्जरा. "नेमिछं. "विमप्र. ["तैयारी]

निर्गमे अखाका. दूर करे; प्रेमाका. वितावे, पसार करे

निर्गुष्पगारु नरका. नलरा. अधगुण करनार, नगुणो (सं.निर्गुण+कारक)

निर्घोख *नताख्या.* निर्घोष, अवाज

निर्घोष *नरका*. अतिशय घोषवाळा, मोटा (सं.)

निर्जणइ गुर्जरा. "प्रबोप्र. जीते, परास्त करे, विनाश करे [सं.निर्जित, प्रा. निक्रिण]; जुओं निरजणी, निर्जिणइ

निर्जर *प्रेमाका*. वृद्धत्व विनाना, देव [सं.] **निर्जरा** *आनंस्त. प्राचीका*. तप वगेरेथी

कर्मनो क्षय करवो ते [जै.]

निर्जिण**इ** विराप. षडाबा. जीते, परास्त करे [सं.निर्जित, प्रा.निजण]; जुओ निज्जिणिउ, निर्जणइ

निर्वाची जुओ निरदावी

निर्दूषण शृंगामं. दूषण वगरनुं [सं.]

निर्वे प्रेमाका, निर्दय

निर्घाटइ *उक्तिर. षडाबा.* हांकी काढे (सं. निर्घाटयति) [दे.णिद्धाड]; जुओ निद्धाडइ, निधाड- निर्घार *प्रेमाका*. नक्की, अवश्य [सं.] निर्घ्यार *आनंस्त*. निर्धार, [नक्की]

निर्व्वंध आरारा. संबंधविच्छेद

निर्मिष्टिंबर्ड *उपवा*. तिरस्कार करवो, ठपको आपवो (सं.निर्भर्सयति)

निर्मष्ठर कादं(शा). अदेखाई विनानुं (सं. निर्मत्सरं)

निर्मदा नलरा. नर्मदा नदी

निर्माण *दशस्कं(२). प्रेमाका.* माप, प्रमाण **निर्मायी** *आनंस्त.* माया विनानं, रिगग

·विनानुं]; जुओ निरमाय

निर्मुख *दशस्कं(१). प्रेमाका.* विमुख, मों फेरवीने, खाली हाथे पाछा; जुओ निरमुख, नीरमुख

निर्मोक कादं(शा). सर्पनी कांचळी (सं.)

निर्यास आनंस्त. निश्चय

निर्लोभपणउं *उपबा*. निर्लोभीपणुं

निर्वत्य *प्रेमाका*. निर्वृति, आनंद, संतोष

निर्बहड़ * लावल. हरिख्या. पार पाडे, [उपाय करे]; उपवा. परिपालन करे, -ने प्रमाणे चाले (सं.निर्वहति)

निर्वाण अखाछ. दशस्कं. नरका. प्रेमाका. अवश्य, नक्की; जुओ निरवाण

निर्वाप *उक्तिर*. पितृने अनुलक्षीने करेलुं दान (सं.)

निर्वृत्ति कादं(शा). आनंद, [निरांत] (सं.) निर्वेव अखेगी. वैराग्य [सं.]

निर्वेवी अखाछ. निरवयवी, अवयव विनानुं निलंड *आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. जिनरा. स्थान, वासस्थान, घर (सं.निलय)

निलखणं *उक्तिर.* लक्षणहीन, गुणहीन (सं.निर्लक्षणः)

नित्तग अखाछ. अलग, [असंगपणे, मुक्त-पणे]

निलवट ऐतिका. नरका. प्राचीफा. लावल. हरिख्या. ललाट, कपाळ [सं.निटलपट्ट]

निलाटपट्टि कृष्णच. ललाटपट्टे

निलाड आरारा. उक्तिर. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नरका. वीसरा. कपाळ [सं.निटलपट्ट]

निलुक *प्राचीसं*. गुप्त, तिरोहित [दे.]

निव *गुर्जरा.* राजा (सं.नृप)

निवड *ऐतिका. नलरा.* सज्जड, [मजबूत], घनिष्ठ; *षडावा.* दृढ, [भरपूर] (सं.निबिड)

निवडिय**उ** जितर. नीवड्युं, पार पड्युं [सं. निवर्तितम्]

निवत्तइ *षडाबा.* पाछो फरे (सं.नि+वृत्)

निवर्ह अंवरा. [उपयोग वगरनुं], खाली (घर); कामकाज वगरनुं, नवरुं

निवर्ते *ग्रेमाका*. निवृत्त थाय, दूर थाय निवर्त्तन *आनंस्त*. निषेध, [-मांथी हठवुं ते] [सं.]

निवल *प्राचीसं.* बेडी (सं.निगड) [दे.णिअल]

निवसइ ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. निवास करे, रहे (सं.निवसति)

निबही *आरारा*. निर्वहण करी, उपाडी निबाज *आरारा*. नवाज, जळाशय (सं. निपान) **निवात** *आरारा. वीसरा.* खांड, साकर (रा.) (अ.न**बा**त)

निवायं उक्तिर. वायु वगरनो (सं.निर्वातः) निवायं आरारा. आघो कर्यो [सं.निवारित]

निवालिय *प्राचीसं.* नवमालिका

निवासी *नेमिछं.* वसावी; -मां राखी

निवांण ऋषिरा. नवाण, [जळाशय]

निविरइ गुर्जरा. प्रसन्नताथी, [विश्रान्ति-पूर्वक, सहजताथी] (सं.निर्वृत)

निबी उक्तिर. गोळ, धी वगेरे विकार उत्पन्न करनार पदार्थोना त्यागपूर्वकनुं एक जैन वृत (सं.निर्विकृतिक); जुओ नीवी

निवेडो अखाका. निकाल, अंत

निवेदन (नित्य निवेदन) अखाछ. रोज निवेदित (रजू) धतुं आत्मतत्त्व

निवेदिवुं उक्तिरः जणाववुं (सं.निवेदयित्वम्)

निबेधु कादं(शा). निवेदन कर्युं, जाण करी (सं.निवेदितः)

निवेस *आरारा.* आवास; *ऐतिका. गुर्जरा.* स्थान (सं.निवेश)

निवेसई गुर्जरा. मूके छे (सं.निवेशयति) निव्यइ प्राचीसं. निर्वृति, [परम आनंदनी शांत दशा

निव्याण हम्मीप्र. नवाण, तळाव, [जळाशय] [सं.निपान]

निव्याप तेरका. निर्वाण, [मोक्षदशा]

निशाचरी *प्रेमाका.* रात्रे फरनारा, चोरडाकु निशाष *मोसांच. प्रेमाका.* नोबत, सैन्य के सवारीनी आगळ फरकती धजानी साथे वागतुं मोटुं नगारुं [सं.निःस्वान] निशाण (निशाण दीघाँ) *प्रेमाका. [नोबत वगडावी, जवानी तैयारी करी]
निशाणी चित्तसं. निशानी, लक्षण
निशान नरका. धजा, [झंडो, वावटो] [फा.]
निशाने चडीए अखाका. [युद्धनो] वावटो फरकावीए, *विजय मेळवीए
निशानो दशस्कं(२). निशान, लक्ष्य
निशाने नलाख्या. हरिख्या. निश्चयपूर्वक, नकी

निशि प्रबोप. हरिख्या. निशामां, रात्रिमां निशे चित्तसं. निश्चे, निश्चितपणे, चोकसः, निश्चयपूर्वकनो, खरो

निश्चद आनंस्त. उपबा. षडाबा. चोकस, निश्चित रीते, नकी

निश्चय भिष *आरारा.* निश्चयपूर्वक **निश्चे** *अखाका. नरका.* निश्चय

निषधिपणड्, निषिधिपणड् वसंफा (ल). वसंवि. "वसंवि (ब्रा). [सर्व उपमानोना] निषेधपूर्वक

निषेधइ *उक्तिर. उपवा. षडाबा.* निषेध करे (सं.निषेधयति)

निष्टे, नीष्टे *दशस्कं(९)*. निश्चे, [चोक्कस] **निस** *आरारा*. निशा. रात्रि

निसदइ *आरारा.* निश्चय, खातरी

निसणेइ *नलरा*. सांभळे (सं.नि+श्रुणोति)

निसन *नरका.* खिन्न (सं.निषण्ण), [अचेतन, सानभान विनानुं] [सं. निःसंज्ञ]

निसमेह आराराः निःस्नेह, स्नेह वगरनुं निसमेह अधिकः निष्पत्ति, [उत्पत्ति, पेदाश]

निसमेह जुओ प्रेहनिसप्रेह

निसम्ये *ऐतिका.* सांभळ [सं.नि+समय्] निसरावउ *उक्तिर.* ओसामण (सं.निश्राव) निसर्ग *सभ्यचो.* स्वभाव [सं.]

निसही विभप्र. अन्य व्यापारनो निषेध सूचवतो, जैन मंदिरमां प्रवेशतां त्रण वार उच्चारातो शब्द; जुओ निसीही

निःसंपन्नता *आनंस्त. [निसबत, संबंध जोडवो ते]

निसंबला *गुर्जरा*. खोराक (भाता) विनाना (सं.निस्+शंबल)

निसाण *नरका. पंचवा. वीसरा.* नोबत, डंको (सं.निःस्वान)

निसाण *प्रेमाका.* सवारीनी आगळ फरकतो वावटो [फा.निशान]

निसालगरणां नंदव. निशाळे बेसाडवुं ते [सं.लेखशाला+*करण]

निसांण *देवरा.* डंको (सं.निःस्वान)

निसांणी *आरारा (व)*. निसाणी, मसाडी, एक वनस्पति

निति अभिक. वीसरा. रात्रि (सं.निशा) नितिवीस ऐतिरा. गुर्जरा. विमप्र. रातदिवस *निति परित [निति परिन] *कादं(शा). चिक्कस बीजाने]

निसिथरी गुर्जरा. आखी रात (सं.*निशाभरे) निसिथर ऐतिका. निशाचर, राक्षस निसिहरि उषाह. [भर निशाए], मध्यरात्रे निसिंद ऐतिरा. झरो [सं.निस्यंद] निसीही आनंस्त. '[अन्य व्यापारोनो] निषेध

श्वसाह्य *आनस्त.* ्याजन्य व्यापासना । । नषध थाब' तेम कहेवुं ते (सं.नैषेधिका); जुओ निसही

निसुणइ आरारा, ऋषिरा. ऐतिरा. कृष्णच. लावल. विराप. सांभळे (सं.निश्रुणोति) निसुणवि ऐतिका. सांभळीने निसुणेवि *ऐतिका*. सांभळीने निस्ग उक्तिर. निर्दय (सं.निःश्क) निसे चतुचा. निश्चे, चोकस **निसेज निसेजा** *उक्तिर. षडाबा.* [कपडानुं] आसन (सं. निषद्या). [कपडानुं] आसन (सं. निषद्या) निसोत उक्तिर. एक वनस्पति, नसोतर [सं.निसता] निस्तर्यं उक्तिर. तर्थे (सं.निस्+त्) **निस्तारो** *अखाका. अखाछ*. पार ऊतरवुं ते, उद्धार, मुक्ति [सं.निस्तार] **निस्प्रेह** अखाछ. निःस्पृह निस्प्रेही अखाका. निस्पृही, स्पृहा वगरनो निस्यि, निस्ये अंगवि. दशस्कं(२). निश्चे, नक्की निस्संगा ऋषिरा. संग - राग वगरनी (सं.) निहणीय *गूर्जरा.* हणीने (सं.निहन्) निहतरड *ऐतिका*. नोतरे, आमंत्रित करे [सं.निमंत्र] निहाइं *गुर्जरा.* प्रहार (सं.निधात) निहाण *आरारा*. खजानो (सं.निधान) निहार चंद्रवा. बहार काढवूं ते, [मलोत्सर्ग] (सं.); जुओ नीहार **निर्ि** *प्राचीका*. समुद्र (सं.निधि) निहुंतरीज आरारा. नोतर्यो [सं.निमंत्रित] **निहंत्रीता ***उपबा. [निमंत्रित] **निंदुव** *प्राचीसं*. जेनां बाळक जीवी शकतां

न होय एवी स्त्री (सं.निन्दु) **निंब** *लावल.* लीमडो सिं.] **निंबू** *आरारा(व)*. कागदी लींबु (सं.) **नीअंता** चित्तसं. नियंता, स्रष्टा नीआवि *जिनराः नियमन करे. नियम करे **नीक** उक्तिर. पाणी जवानो मार्ग (सं.) नीक उक्तिर. हाथपग दुखवानो के खंजवाळ आववानो रोग (सं.नीरक्ता) **नीकउ ऐ**तिका. प्राचीफा. वीसरा. सुंदर, मजानो, सरस (सं.निक्त) (दे.णिक्क) **नीकउ** *उक्तिर.* [*एक सिक्को, *सुवर्ण, *स्वर्णपात्र] (सं.निष्कः) **नीका** *नेमिछं*. नीक, प्रवाह **नीका** *नेमिछं*. चोख्खी. [सरस] नीकोलइ, नींकोलइ *उक्तिर* फोले [सं. निष्कुल; दे.णिक्कोर]; जुओ निकोलिवा **नीखणियामउ** उक्तिर. *लणणी करनार] सिं.निःक्षणकमी नीखणी *प्रेमप*, गरीबडी (प्रा.णिक्रण) **नीगम** *चतुचा*. वेदशास्त्र, [शास्त्रो]; जुओ निगम नीगमइ आरारा. कांद(ध्र). कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. नरका. प्रबोप्र. प्रेमप. *प्रेमाका. शंगामं. षडाबा.* पसार करे, गाळे, वितावे (सं.निर्गमयति); उपबा. *ऐतिका.* गुमावे, वेडफे; *चित्तसं. नरका.* निर्गमे, [दूर करे], न राखे **नीयमणहार** *उपबा.* गुमावनार (सं.निर्गमन)

नीगवूं नलाख्याः निर्गमुं, पसार करुं

नीगुण वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). गुणहीन (सं.निर्गुण)

नीचोयु कादं(शा). निचोव्यो (सं.निश्चय-वितकः)

नीछोडिउ **विमप्र*. [बहार काढ्यो] [दे. णिच्छोड]

नीजर *देवरा*. नजर, दृष्टिपात

नीजांमा शृंगामं. सुकानी, [मुख्य खलासी] (सं.निर्यामक)

नीझणी गुर्जरा. अवाज वगरनुं (सं.निध्वीन)

नीझर गुर्जरा. झरणुं (सं.निर्झर)

नीक्षरण तेरका. वसंवि(ब्रा). निर्झरण, झरणुं नीक्समता *ऐतिका. [चिंतन करता] [सं.नि +ध्यायत]

नीठ उक्तिर. जिनरा. मुश्केलीए (सं. निष्ठ्या); प्रद्यूच् नक्षी

नीठइ आरारा. उक्तिर. कामा(त्रि). चारफा. नेमिछं. प्रेमाका. हरिवि. समाप्त थाय, नष्ट थाय, खूटी जाय (सं.निष्ठा-)

नीठर ऐतिरा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विक्ररा. स्थूलिफा. निष्ठुर, दयाहीन, [नठोर]

नीठि उक्तिर. निष्ठा, [*मुश्केली] नीठियउ उक्तिर. पूरुं करेलुं (सं.निष्ठितम्) नीठुर उक्तिर. उपबा. तेरका. निष्ठुर, नठोर नीत, नीत्व अखाका. अखेगी. नीति, [रीति, स्विढ]

लाष्ट्र] **नीति** *कादं(शा)*. नित्य, दररोज **नीत्य** जूओ नीत

नीव वीसरा. निद्रा

नीवाणकरण *षडावा.* खेतरमांथी नकामुं घास काढी नाखदुं [सं.निर्+दायति] नीव्र *गुर्जरा.* निद्रा

निक्रमरि *गुर्जरा*. ऊंघना भारथी, [भर-ऊंघमां]

नीव्रलडी गुर्जरा. विराप. नींदलडी

नीव्रालूखं *उक्तिर*. निद्रा वगरनो (सं.निद्रा-रुक्षक)

नीध मदमो. निधि, (रूप)निधि नीधांन कामा(शा). भंडार [सं.निधान]

नीध्य मदमो. समृद्ध, [भर्योभर्यो] नीपट दशस्कं(२). प्रेमाका. घणां, अत्यंत (दे.निप्पट)

नीपनउं, नीपन्यउं कामा(त्रि). कामा(शा). पेदा थयुं, जन्म्युं; गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(१). प्रेमाका. षडावा. नीपज्युं, उत्पन्न थयुं (सं.निष्पन्न)

नीपात कामा(त्रि). कामा(शा). निपात, विनाश

नीपायउं अभिऊ. उपबा. ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). नरका. नलाख्या. नेमिछं. मोसाच. लावल. शृंगामं. षडाबा. निपजावेलुं, निपजाव्युं, तैयार कर्युं, उत्पन्न कर्युं (सं.निष्पादित)

नीषावर्जं *आरारा. नेमिछं*. नीपजावुं, उत्पन्न करुं, बनावुं (सं.निष्मादय्)

नीमर *प्राचीफा*. गाढ (सं.निर्भर)

*नीमेडी [*नीमेडी] ऋषिरा. ?, [*निवेडी, *उकेली] [हिं.निबेडना]; जुओ निमेडि नीम जिनरा. नियम, त्याग[नुं व्रत]; चतुचा.

नरका. नलाख्या. प्रेमाका. नियम, प्रतिज्ञा, द्वित]; नेमिछं. नक्षी नीमडइ अखाका. अखाछ. अखेगी. अंबरा. चित्तसं. प्रेमाका. नीवडे. पाकी बने: **अखेगी.* [समाप्त थाय, नष्ट थाय] [रा.नीमडणौ]; जुओ नीमेडि, नीवडइ **नीमाला** *विमप्र*. मोवाळा. वाळ नीमालिय, नीमालीय *वसंफा*. वसंवि(ब्रा). नंवमालिका **नीमी** *आरारा. उक्तिर.* मूलधन, मूडी (सं.नीवी); उक्तिर. नाडुं, अधोवस्त्रनी गांठ (सं.नीवी) **नीमेखमां** मदमो. निमेषमां, पलकमां **नीमेडि "**विमप्र. [नष्ट करी]; शृंगामं. ?, [*छ्टा करी] [रा.] [हिं.निबेडना]; जुओ निवेडो, नीभेडी, नीमडइ **नीय** *आरारा. गुर्जरा.* निज, पोतानुं **नीय गोय** जिनरा, नीच गोत्र, नामकर्मनो एक प्रकार जेना उदयथी प्राणी हलका कूळमां जन्मे] [जै.] **नीयांण** *आरारा*. निदान, चोकस **नीर** *आरारा*. कांति. दीप्ति (रा.) नीरघोख मदमो. निर्घोष. [अवाज] **नीरज** *गूर्जरा. प्रेमाका*. नीरमां जन्मेलुं, कमळ (सं.) **नीरज** गुर्जरा. रजोगुण – आवेग विनानुं, [राग विनानुं] (सं.निस्+रजस्) **नीरती ***जिनरा. [चोख्खी, स्पष्ट] [सं. निरुक्ति]; जुओ निरति **नीरत्य "**अखाका. [चोख्ख्ं]

नीरद गूर्जरा. नरका. विराप. वादळ (सं.) **नीरदोषण** चंद्रवा. निर्दोष ?, [दूषण विनानुं] नीरधार कामा(त्रि). निर्धार, नक्की **नीरफळ** *दशस्कं(२)*. निष्फळ **नीरमाल** कामा(शा). निर्माल्य, [त्याज्य] **नीरमुख** *चंद्रवा. मदमो*. विमुख, पाछी (सं.निर्मुख); जुओ निर्मुख **नीरलालची** *वेताप***. लालचु नहीं तेवो** नीरवाण, नीरवांण कामा(त्रि). कामा(शा). नकी, जरूर [सं.निर्वाण] **नीरंगु** गुर्जरा. रंग के आसक्ति वगरन् (सं.नीरंग) **नीलउ** *आरारा.* लीलुं [सं.नील] ·**नीलक** *जिनरा, वस्त्रविशे*ष नीलचास आरारा. चास पंखी जेवुं लीलुंछम नीलज आरारा. कादं(शा). कामा(शा). गुर्जरा. जिनरा. दशस्कं(१). **नलाख्या**. निर्लञ नीलंडच *प्राचीफा. हम्मीप्र*. उत्तम घोडानी एक जात नीलवट कामा(शा). प्रेमाका. मदमो. कपाळ. ललाट (प्रा.निडल-+-वट्ट-) **नीलवण, नीलवणि** *ऐतिका. प्राचीफा.* **लीलूं** शाक, लीलोतरी **नीलं** *उपबा.* लीलुं, आर्द्र, [आळुं (चामडुं)] (सं.नील); *गुर्जरा*. लीलुं, ताजुं नीलाट अभिक. कपाळ [सं.निटलपट्ट] **नीलाड** *आरारा.* ललाट [सं.निटलपट्ट] **नीलेरी** विक्रम, बादकी रंगनी नीवडड *उक्तिर.* स्पष्ट थाय [सं.निवर्तयति];

जुओ निमडइ **नीवाणो** *"ऐतिका***. [**नवाण, जळाशय] [सं.निपान] *नीबारि *लावल. [नवडावे] नीवी तेरका. तपविशेष; जुओ निवी नीवेल(?) तेरका. ? **नीशाण** *नलाख्या*. निशान, सवारीने मोखरे वागतुं वाद्य, [नोबत] (सं.निःस्वानम्) नीशां. नीसां मदमो. निश्चय नीशांण मदमो. वावटा [फा.निशान] **नीशांण कामा(शा)**. नोबत नीशे कामा(त्रि). चंद्रवा. दशस्कं(९). मदमो. निश्चे. नक्की **नीप्टर** विक्ररा. निष्ठुर, नीच नीप्टे जुओ निष्टे नीस कामा(त्रि). निशा, रात्रि नीसतः ः ऋषिराः. गुर्जराः. नलराः. नेमिछं. लावल. विमप्र. शुंगामं. निःसत्त्व, निर्बळ, कायर **नीसतपणउं** *उपबा*. निर्बळपणु नीससइ उक्तिर. निश्वास नाखे (सं.नि:श्व-सिति) **नीसंक** गुर्जराः निःशंक, [निर्भय] **नीसा** *उक्तिर.* वाटवानो पथ्यर [दे.णीसा]; जुओ नीहा **नीसाण** आरारा. उक्तिरं. कादं(ध्र). कादं(शा). गुर्जरा. नेमिछं. विमप्र. विराप. नोबत. नगारुं (सं.निःस्वान) **नीसास** *उपबा, षडाबा,* निःश्वास **नीसां** जुओ नीशां

नीस्वत कामा(त्रि). निश्चित **नीस्यां** *सिंहा(शा).* खातरी ? (सं. निश्चितम्?) ***नीहपलव [*नहपलव] *** चंद्रवा. [नव-पह्नव, पश्चविती नीहा *चंद्रवा*. वाटवानी निशा, वाटवानो पथ्यर] [दे.णीसा]; जुओ नीसा **नीहार शीलक.** मलत्याग [सं.]; जुओ निहार **र्नीक** लावल. धार, प्रवाह, पाणी जवानो रस्तो सं.नीको **नींकोलइ** जुओ नीकोलइ **र्नीख-** नलरा. नाखी देवूं (स.निक्षिप्) [रा.] **र्नीगमइ** उपबा. ऋषिरा. दूर करे, ख़ुए (सं. निर्गमयति); उक्तिर. ऋषिरा. वितावे **नींगिल** कादं(शा). टपके (सं.निर्गलित) **नींगुण** वसंफा. वसंवि(ब्रा). निर्गुण नींठर जुओ नीठर **नींद्र** *षडाबा*. ऊंघ (सं.निद्रा) **नींब** *आरारा(व)*. लीमडो (सं.निम्ब) **नींबू** *आरारा. उक्तिर*. कागदी लींबु (सं. निंब्) **नींमीउ** गुर्जरा. निर्मित थयुं **र्नीशाण** *नलरा.* निशानडंका (सं.निःस्वान) **नींसाण** ऋषिरा. निशान, [नोबत] **नुखसान** *आनंस्त*. नुकसान, [दोष, एब, कलंकी **नुसरुं** *पंचवा. नोतरुं* (सं.निमंत्रणम्)

नुमाह जुओ सीतनुमाह

जुम् नलरा. नवमो (सं.नवम)

नुल उषाह. सिंहा(म). नोकियो (सं.नकुल)

नुहड्ड ऐतिरा. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. विमप्र. न होय (सं.न+भवति) **जुहत्रणइ** *अंबरा*. नोतरामां, नोतरुं देवा माटे **नुहरा** *आरारा. हम्पीप्र.* आजीजी, काला-वाला **नुगि** अभिक. न कगे **"नूतांकुर** [चू**तांकुर**] *कादं(शा)*. आंबाना अंकुर [सं.] **नून** *नलाख्या*. ओछुं, ऊणुं (सं.न<u>्य</u>ून) **नून्य** अखाका. न्युन, खामी, ऊणप **नुंजडी** *हरिवि.* नोंजणूं, नोंझणुं, दोहती वखते गायभेंसने पगे बांधवानं दोरड्री [सं.निबध्यते परथी] **नूंपर** *गुर्जरा.* नूपुर, झांझर **नृत** *अखाका.* खबर, जाण; जूओ नरत **नृत** मदमो. नाच (सं.नृत्य) **नृति** कादं(शा). नृत्य करे (सं.नृत्यति) **नृत** *अखाका.* नृत्य, [खेल] **नृत्ति** कादं(शा). नाचे (सं.नृत्त परथी) [सं. नृत्यति । **नृत्यकारी** *विराप*. नर्तिका **नृपतइं** *गुर्जरा*. राजाए (सं.नृपति) **नूम** *चंद्रवा*. नरम ने- तेरका. दोरवुं, लई जवुं (सं.नय्) **नेअर** *प्राचीफा*. नूपुर, झांझर उषाह. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंहा(शा). नूपुर, झांझर नेउरी ऋषिरा. लावल. विक्ररा. विमप्र. *शंगामं.* नृपूर, झांझर

नेक, नेकी *चंद्रवा*. सारुं, उत्तम, श्रेष्ठ, [पवित्र] [फा.] नेके * चंद्रया. [नक्षी] **नेग** *प्रेमाका*. नेह, स्नेहसंबंध नेजं अखाका. ऐतिका. प्रेमाका. वीसरा. वावटो. वावटावाळी लाठी के भालो. ं भालो (फा.नेझ) नेट अखाका. अखाछ. अखेगी. कामा(त्रि). कामा(शा). चंद्रवा. *जिनरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. नंदब. प्रेमाका. मदमो. हरिख्या. नक्की, जरूर **नेट्य** *चित्तसं*. नकी. निश्चितपणे. ज **नेठ** मदमो, नक्की **नेठाउ** *गूर्जरा-टि*. निर्णय [सं.निष्ठा] **नेठो** *अखाका. चित्तसं*. छेडो. अंत **नेडउ** *जिनरा. वीसरा.* नजीक (सं.निकटम्) **नेडे** *अखाका. चित्तसं. जिनरा*. नजीक. निकट: *अखाका*. अंते, छेडे **नेडो ***अखाका. [?] **नेडो आणजे** *चित्तसं*, परीक्षा करजे ? विवेक करजे ? **नेतनेत** *चतुचा*. नेतिनेति, [अवर्णनीय] **नेती** *मदमो*. अवर्णनीय (सं.न इति) **नेत्र** *प्रेमाका.* बरु, [नेतर] **नेत्र** *हरिवि.* झीणुं रेशमी वस्त्र [सं.] नेत्रड उक्तिर. [*नेतरुं] (सं.नेत्रम्) **नेत्रवेली** *आरारा(व)*. नेतर (सं.वेत्रलता) **नेफेरी** जुओ नफेरी **नेम** अ*खाका. कामा(त्रि). प्रेमाका.* नियम, प्रतिज्ञा. द्वित**े**: अखाका.

वित्तसं. नियम, नियमपूर्वक नेमाल अखाका. *लक्ष्य, *निशान (*सं. नियम>नेम), [*जाळ] **नेमि** गुर्जरा. विराप. नेम, लक्ष्य (सं.नियम) **नेमिसर** विक्ररा, नेमीश्वर **नेरयज** *सिंहा(म)*. निर्णय **नेरांति** *आरारा*. निरांत **नेव** *जिनरा. प्रेमाका*. नेवां, छापरा उपरनां नीचेनी किनारी उपरनां नक्कियां; जिनरा. नळियां [सं.नीव्र] **नेक्ज** *जिनरा, विमप्र,* नैवेद्य नेवत्य प्राचीसं. नेपथ्य, [वेशभूषा] **नेविज्ञ** शंगामं. नैवेद्य नेवेला जुओ वेला **नेशाल** *विकरा*. निशाळ [सं.लेखशाला] **नेष्ट** *नरका. प्रेमाका.* नठारा, खराब, हलका (सं.न+इष्ट) **नेप्टचरूया "**प्रेमाका. [गुप्तचर्या, छूपा वेशे रहेवूं ते] [सं. निशाचया]; जुओ नष्टचर्या **नेष्टा** चित्तसं. निष्ठा **नेष्टिक** *चित्तसं.* नैष्ठिक, निष्ठावंत, साचा नेसङ्क नलराः भरवाडोनुं जंगलमां आवेलुं निवासस्थान, नेसडो (सं.निवेश+इ) **नेसाल** अंबरा. गुर्जरा. नलरा. निशाळ, पाठशाळा (सं.लेखशाला) **नेसाली** कादं(शा). निशाळ (सं.लेख-शालिका) नेसालीआ, नेसालीया *उपबाः गुर्जराः* निशाक्तिया

नेसेक सिंहा(शा). निःशंक, नक्की **नेस्ती** *प्रेमाका. ललिरा*. मोदी, [खोराकनी वस्तु वेचनार] (दे.णेसस्थि) **नेह** आरारा. गूर्जरा. तेरका. नलाख्या. मदमो. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्नेह नेहगहेला वसंवि. वसंवि (ब्रा). प्रेमधेलुं (सं. स्नेह+दे.गहिल्ल) [सं.स्नेह+ग्रह+इल्ल] नेड चुको *पंचवा.* *निशान चूक्यो (दे.णेम परथी), [*रस्तो चुक्यो, *आखड्यो] **नेहझड** *नरका*. स्नेहनी झडी **नेहडड** *आरारा.* स्नेहथी **नेहलू** *नलरा.* स्नेह, नेह नेहपराणउ, नेहपरायण वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्नेहपरायण **नेहा** *नेमिछ*ं स्नेह **नेहाला** *नेमिछं***. स्नेहयुक्त नेहिय** *गूर्जरा.* स्नेह करीने **नेहुर** सिंहा(शा). न्पूर ने**डेमेरो** मदमो. नमेरो. निर्दय **नैअर "** कृष्ण*वा.* [नगर, गाम]; ज़ुओ नैयर **नैअरतोक ***कु*ष्णबा*. [नगरनां -- गामनां लोको **नैअर-पुर "**कृष्ण*वा.* [नगर, गाम] **नेअंजे** मदमो. नयणे **नैयर** *प्राचीका.* नगर: जुओ नैअर **नैयायक** *चित्तसं*. नैयायिक दर्शन, न्याय-दर्शन **नैरत** *विमप्र*. नैर्ऋत्य खूणो **नैरस** *चतुचाः* नीरस

नेसालीयउ जुओ वडो नेसालीयउ

नैराशी अखाका, चित्तसं, आशा – आसक्ति-थी रहित **नैव** *गुर्जरा. चंद्रवा.* नहीं ज **नैवेत** *चित्तसं*, निवेदन, समर्पण **नैवेदन** *अखाछ.* निवेदन, प्रिार्थना, समर्पण-भावी **नेंजे** मटमो, नयणे नोइंद्रिय आनंस्त. [इन्द्रिय जेवुं] मन [जै.] नोउत्तम, नौउत्तम *चंद्रवा*. नवुं, नवतम, [सुंदर] **नोकषाय** जुओ छ नोकषाय नोष्ठाबरी अखाका. न्योच्छावरी, आत्म-समर्पण नोडि अभिक न ओडे. न लंबावे **नोमाली** अक्तिर. नवमालिका **नोलखीइं** गूर्जरा ओळखाय नहीं नोलमुंही अभिक्त. नोळिया जेवा मुखवाळी (सं.नकुलमुखी) नोली चित्तसं. नौली, पेट हलाववानी विधि, हठयोगनी षट्कर्मविधि पैकीनी एक **नोळीकर्म** *प्रेमाका*, पेटनां नळ - आंतरडां हलाववानी योगनी एक क्रिया **मोहरा** *नरका.* नहोरा, कालावाला, आजीजी नोहली उक्तिर. ताजी फळी (सं.नव-फलिका) **नोहोरानुं** *मदमो.* ?, [उपकारनुं] [हिं. निहोरा नोहे अखाका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. न होय

इन्द्रधनुष्य बन्ने न होय, [ए बन्नेथी पर एवी. केवल आकाशरूप स्थिति **नोहोतरां** *नंदब*. नोतरां [सं.निमंत्रण] **न्यरवहां** *चित्तसं*. निरवहां, चलाव्युं **न्यर्त्य** *चित्तसं*. निवृत्ति, परिणाम **न्यवहुं** *नरप.* छुं, [थाउं, करुं] (सं.नि-वह) **न्यहाति** *नलाख्या*. निहाळे, नीरखे (सं. निभाल) **न्याइ** *प्रबोप्र*. न्याययुक्त, [विवेकयुक्त, ज्ञान-युक्त] (सं.न्याय्य) **न्याइ** *प्राचीसं*. न्यायमां, खिराखोटानी परीक्षामां रे **न्यान** *आरारा, प्राचीफा*, ज्ञान **न्यानी** *आरारा*. जानी **न्यास** *आनंस्त.* स्थापना [सं.] **न्यापित** ऋषिरा. हजाम (सं.नापित) **न्यावट** मदमो. न्यायवट, न्यायवृत्ति; जुओ नावट **न्यावांण** मदमो. नवाण, [जळाशय] [सं. निपानी **न्युंडणउं** *उक्तिर*. लूछणुं, ओवारणुं (सं. न्युञ्छनकम्) **न्युंजणउं** *उक्तिर*. दोहती वखते गायभेंसने पाछले पगे बांधवामां आवतुं दोरडुं, नोंजणं [सं.निबध्यते परथी] **न्युन** *नरका.* अधूरपं, खामी [सं.] **न्युन्य** *प्रेमाका*. खामी, खोट न्येट कादं(शा). नक्की (सं.निवृत्ति परथी शक्यता); जुओ नेट **चतकी** *मदमो*, नर्तकी न्ह्रषण आनंस्त. तेरका. प्राचीफा. नवडाववूं

नोहे छन ने चाप *आखाका.* वरसाद अने

ते, स्नान (सं.स्नपन) **न्हवारइ** उक्तिर. नवडावे (सं.स्नपयति) **न्हाउ** उक्तिर. नाहेलुं (सं.स्नात) **न्हाज** आरारा. वीसरा. स्नान

पज मदमो. दूध (सं.पयस्) **पइ ***उषाह. प्राचीफा. वसंफा(ल). पग (सं. पद) **पइआल** अभिक्र. नेमिछं. प्राचीका. पाताळ पइंड जुओ पयंड्र पइठउ उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. पेठो, प्रवेश कर्यो (सं.प्रविष्ट) **पइदिणि** *गुर्जरा*. रोज (सं.प्रतिदिने) पडर नलरा. विक्ररा. पेर, स्थिति, दशा: वात] (सं.प्रकार) **पडलउ** *उक्तिर.* पेली षइसइ उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. षडाबा. पेसे, प्रवेशे (सं.प्रविशति) **पइसिंड** *ऐतिरा*. पांसठ [सं.पंचषष्टिः] **थइसण** जिनरा. प्रवेश करवी ते **पइसणहार** *षडाबा.* पेसनार, प्रवेशनार पइसरइ ऐतिका. प्रवेशना समये **पइसार** *अंबरा. उषाह. प्राचीसं.* प्रवेश **पइसारउ ***गुर्जरा. [प्रवेश थवो ते] **पडिसवा** *उक्तिर*. पेसवा. प्रवेशवा **पहं** *षडाबा*. पैडां (सं.प्रधिः) **पडं ***उषाह. पिद – शब्द वडे] **पहं** *षष्टिप्र.* -ना करतां (सं.प्रति)

पइंत्रीस उक्तिर. पांत्रीस (सं.पंचत्रिंशत्) पइंपइ प्रद्युच्यः बोले [सं.प्रजल्पति] **पडंसिंठ** उक्तिर. पांसठ (सं.पंचषष्टिः) पई अखाछ. महेमान [सं.पथिक] पईट्ठ, पईठ वसंफा. वसंवि. पेठो (सं. प्रविष्टः) **पर्इडा** *अंबरा*. पङ्या **पर्डमर्डं** अंबरा. प्रेमथी **पर्डब** *तेरका.* प्रदीप **पउढउ** लावल. पोढो, सूओ पण्डाडइ जुओ ढाडइ पउढी नेमिछं. मोटी (सं.प्रौढ) पडण वडाबा. पोणुं (सं.पादोन) परतीयां गुर्जरा. पोतियां, धोतियां (सं.प्रोत) दि.पोत-**पउम** *ऐतिका.* पद्म **पउमएवि** *ऐतिका*. पद्मादेवी पडमपाइ *ऐतिका.* पद्मप्रभ जिन ्**पडळि** *वीसरा***. दरवाजो (सं.प्रतोलि) पउहरचावीयर** *आरारा*. पहोंचाड्यो पउंजणी उक्तिर. पोंजणी, सुतर के भींडीनी नानी सावरणी (सं.प्रमार्जनिका) **पउंजी व**डाबा. साफ करीने, लुछीने सिं. प्रमाजी पर्जतार षडाबा. नियमन करनार. [महावत] (सं.प्रयोक्त)

पक्खर गुर्जरा. पाखर, घोडानो साज (दे.

पक्खाउज *गुर्जरा.* पखवाज (सं.पक्षातोद्य)

्पक्खाल- *तेरका.* **पखाळवुं, धोवुं (सं.**प्र+

पक्खरा)

क्षाल)

पक्खि *गुर्जरा*. पक्षे, पक्षमां पक्खिया *गुर्जरा*. पंखी (सं.*पक्षिका)

पक्वाबु पडाबा. तेल-घीमां तळेली विशिष्ट वानगी (सं.)

पक्ष *दशस्कं(१). *प्रेमाका.* पांख, छत्रछाया पक्षीया *गुर्जरा.* पंखी (सं.पक्षिन्+क)

पख *गुर्जरा*. पक्ष, बाजु; *नरका*. पक्ष, पखवाडियुं

पखड़ उपवा. "गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीसं. विराप. सिंहा(म). विना (सं.पक्षस्मिन्)

पखइ लावल. पक्षे, बाजुए

पखरिय *ऐतिका.* पाखरेल, साज चडावेल (सं.प्रक्षरितः)

पखवाडुं *उपबा. नरका. नेमिछं*. पखवाडियुं (सं.पक्ष+पाट)

पखाज जुओ पखाल

***पखाल [पखाज]** *आरारा.* पखवाज

पखाल, पखाळ चंद्रवा. प्रेमाका. यडावा. प्रक्षालन, घोवानी क्रिया (सं.प्रक्षाल)

पखालण आरारा. धोनार (सं.प्रक्षाल्)

पखालण करवुं दशस्कं(१). पखाळवुं, प्रक्षालन करवुं, [धोवुं]

पखां जुए *चित्तसं*. पडखां जुए, जातने तपासे

पिख उषाह. सिवाय (सं.पक्षके); नेमिछं. प्राचीसं. लावल. पक्षे, बाजुए, [तरफ]; अभिऊ. पक्षे, [कुले]

पखी *आनंस्त.* बाजुनी, [तरफनी]

पखीइ नलरा. विना (सं.*पक्षस्मिन्)

पखुं *उषाह.* कुल (सं.पक्ष); अखाछ. पडखुं, [बाजु]; पक्ष, [वाडो]

पखे अखाका. चंद्रवा. चित्तसं. मदमो. लावल. विना

पखे अखाछ. पक्षमां, बाबतमां

पखें सिंहा(शा). विना

पखै जिनरा. विना

पखोडिंग *षडावा.* खोडवुं, चोंटाडवुं, लगाववुं ते (दे .पक्खो ड)

पखोडी *कादं(ध्र). कादं(शा).* खंखेरीने [दे. पक्खोड]

पख्य चित्तसं. पखे, विना

पग गोपाविवा जुओ गोपाविवा

पय धालुं गळा मांह्य *प्रेमाका*. मुश्केल स्थितिमां मूकुं

पगठ विमप्र. पग नीचे राखवानो बाजोठियो पगपान प्रेमाका. स्त्रीओनुं पगना पोंचानुं

एक आभूषण [हिं.]

पगपडण नलरा. पहेली वार सासरे आव्या पछी वहु वडीलोने पगे लागे ए क्रिया

पगर *आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. वीसरा.* समूह, गुच्छ (सं.प्रकर); जुओ फूलपगर

पगरण नरका. (शुभ) प्रसंग, [तेनुं मंडाण] (सं.प्रकरण); जुओ वीवाहपगरण

पगबट *उषाह*. पगवाट (सं.पदवर्त्म) [सं. पदाग्र+वर्त्स]

पगार अंवरा. आरारा. *उषाह. गुर्जरा. प्राचीफा. रूपच. *लावल. विक्ररा. कोट, किल्लो (सं.प्राकार) पिषपाइ आरारा. पगलेपगले, पाछळ-पाछळ; प्राचीसं. पदेपदे, [इगले ने पगले, बधे ज समये]; गुर्जरा. पगलं-पगले, दरेक पगले

पधवाह प्रद्युचु. पांगोठुं, पेंगडुं

पचड़ *उक्तिर. षडाबा.* रंधाय (सं.पच्यते); अखाका. अखाछ. मग्न थाय, रच्या-पच्या रहे

पचखाण आरारा. उक्तिर. ऐतिका. नलरा. कोई वस्तुनो त्याग करवानी प्रतिज्ञा (सं. प्रत्याख्यान)

पचर्सुं *आरारा. ऐतिका.* त्यागनो नियम करुं

पचतालीस उक्तिर. पिस्ताळीस (सं.पञ्च-चत्वारिंशत्)

पचनी *चतुचा.* दळेली ?, [*परिपक्व]

पचर्य् *नलाख्या*. पकवेलुं, रांधेलुं (सं.पच्)

पचारइ *उक्तिर. नेमिछं. प्रद्युचु*. महेणुं मारे, [उपालंभ आपे, टोणा रूपे कही बतावे] (अप.पचार); *अंगवि*. महेणां देतां आह्वान आपे

पचिवउं उपवा. ऊकळवुं, [शेकावुं] (सं. पच्यते); उक्तिर. रांधवुं

पद्मक्खाण जिनसः. त्याग(नुं द्रतः) (सं. प्रत्याख्यान)

पद्मबस्य ऐतिका. प्रत्यक्ष

पद्मल प्राचीसं. समर्थ [दे.]

पच्छतु *तेरका.* पाछळ [सं.पश्च+ल]

पिकेम उक्तिर. पाछळ; तेरका. पश्चिम दिशा पिकेमहरए *प्राचीसं*. घरना पाछळना भागे [सं.पश्चिमगृहे]

पच्छेवडी *षडावा*. पछेडी [सं.प्रच्छदपट] पच्छेवाणु *गुर्जरा*. पाछलो भाग, [पाछळ

रहेवुं ते] (*सं. पश्चादनीक)

पच्छोकडु *उक्तिर.* पाछळनो भाग (सं.पश्च परथी); जुओ पछोकडउ

पछताविय *प्राचीसं*. पस्ताईने, [पस्तावो पामीने] (सं.पश्चात्तापिता)

पिछता- वीसरा. पस्तावो करवो (सं. पश्चात्ताप)

पिछम आरारा. पश्चिम, पाछलो पछेवडड अंबरा. उक्तिर. ऐतिरा. पछेडो (सं. प्रच्छदपट)

पछोकडउ उक्तिर. पाछळनो भाग (सं.पश्च परथी); जुओ पच्छोकडु

पजावो *प्रेमाका*. भट्ठी, [निंभाडो]

पजुन्न *तेरका. प्राचीसं.* प्रद्युम्न

पजून *प्रद्युचु*. प्रद्युम्न

पजूसण उक्तिर. उपबा. ऐतिका. पर्युषण पर्व [जै.] [सं.पर्युपवसन]

पजोडी (पंजेटी) मदमो. पंजेटी, खंपाळी पर्वांग ऐतिका. पांच अंगनुं

पट कामा(त्रि). चित्तसं. चित्रनो कागळ के पडदो; अखाका. नरका-२. प्रेमप. वस्त्र

पटड *उक्तिर*. राजगादी (सं.पट्टः)

पटउलउं गुर्जरा. नलरा. विराप. उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळुं (सं.पट्टदुकूल)

पटउलडी *प्राचीफा*. उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळी, पटोळुं **यटउलां** *विराप*, पटोळां पटउली गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. पटोळी, रेशमी साडी **पटकू**ल *नंदब. विक्ररा.* पटोळूं, रेशमी वस्त्र पटको प्रेमाका. किमरे बांधवानो कपडानो

टुकडो पट पाथरी प्रेमप. खोळो पाथरी पटभूषण कामा(शा). वस्त्र अने आभूषण **पटरांगीणी** *वेताप*. पटराणी [सं.पटराज्ञी] **पटल** *मोसाच*. पटेल

घटल * गूर्जरा. *विराप. [(तेजनो) समूह, वर्तुळ] (सं.)

पटह कादं(शा). मोटो ढोल (सं.)

पटंतर नरका. विक्ररा. सिंहा(शा). पडदी; ख्पूं रहस्य, भेद

पटंतरे अखाका. पडदा पाछळ; मदमो. गुप्त रीते, [संकेतथी, समस्याथी]

पटंतरो *चतुचा.* अंतराय, पडदो; सिंहा(शा). अंतर, भिदी

पटंबर वीसरा. रेशमी वस्त्र (सं.पट्ट+अंबर)

पटा हम्मीप्र. एक प्रकारनी तलवार पटाट विमप्र. पटो, [घोडानो तंग]

पटायुध *विकरा*. तलवारथी खेलातुं युद्ध

पटांतरं *उक्तिर.* पडदो, अंतराय, भेद

पदुलडी विमप्र. पट्टकुळ, पटोळूं, रिशमी वस्त्र] [सं.पट्टदुकूळ]

पटूलर्ज विमप्र. पटोळूं, [रेशमी वस्त्र] पटेरो जुओ परेरो

पटोधर प्रेमाका. पाटवी, युवराज; विमप्र. गादीनशीन; *ऐतिका.* पाट – गुरुगादीना वारस

पटोकी नरका, भातीगळ कीमती साडी के ओढणी, रिशमी वस्त्र]

पट्ट आरारा. मुख्य; पाट, गादी (सं.) **पटुकुल** अंबरा. उत्तम [रेशमी] वस्त्र **पट्टण** *षष्टिप्र.* नगर [सं.पत्तन] **पड़ी** *प्रेमाका***. एक शस्त्र, [*धनुर्यि**ष्टे]

पट्टंतरु * ऐतिका. भेद

पठणहार, पठणहारु *उक्तिर*. वांचनार **पठतु** *उक्तिर.* वांचतो

पडवी *नलाख्या*. पाठवी, मोकली (सं. प्रस्थापिता)

पठाणी विमय्न, पीठ पर बांधवामां आवता (पटा); [*प्रतिष्ठानपुरना (पटा)]; हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात

पठायख *आरारा. ऋषिरा. वीसरा.* मोकल्यूं (सं.प्रस्थापित)

पठावियउ उक्तिर. ऋषिरा. ऐतिरा. मोकल्यो (सं.प्रस्थापित)

पड चित्तसं. शरीर

पड (पड पितराई) *प्रेमाका. [पितराईना पितराई, वधु एक पेढी दूरना पितराई]; जुओ पड-पितराई

पडउतर *ऐतिरा. नरका.* प्रतिउत्तर, सामो जवाब

पडखइ ऊक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. नलरा. नलाख्या. प्रेमाका. विराप. शुंगामं. राह जुए, थोभे (सं.प्रतीक्षते); *अखाका. [बोभे, विचारे]; जुओ पडिखइ

पडखीजइ *ऐतिका.* प्रतीक्षा करवामां आवे, राह जोवामां आवे

पडगिम *कादं(ध्रु). कादं(शा). -ना तरफ जाय, [-ने पहोंचे] (सं.प्रतिगम्)

पडघउ उक्तिर. दान लेवा माटेनुं के थूंकवानुं पात्र (सं.पतद्ग्रहम्) [सं.प्रतिग्रह]

पडघी प्रेमाका. प्रतिधोष, [जमीन पर वाहन कगेरे चालवानो अवाज]

पडघाइ **कादं (शा)*. [आघातथी, -ना लागवाथी] (सं.प्रतिघात)

पडघात कादं(ध्र). कादं(शा). आघात, [अथडायुं ते] (सं.प्रतिघात)

पडच *प्राचीसं*. धनुष्यनी पणछ (सं.प्रत्यंचा)

पडजीभी *उक्तिर*. पडजीभ, गळानो काकडो (सं.प्रतिजिह्ना)

पडछंदा अखाका. कामा(त्रि). चित्तसं. प्रेमाका. पडघा [सं.प्रतिच्छन्दस्]

पडताळ्या *प्रेमाका.* पछाड्या, [पीट्या]

पडतुं अखाछ. घडी न शकाय एवं, [बरड, हलकूं] (सोनुं), जुओ पड्युं

पडपंच अखाका. संसार, संसारनी जंजाळ [सं.प्रपंच]

पड-पितराई **नरका.* [दूरना पितराई] ; जुओ पड

पडपूछ *प्रेमाका*. वधारे पडती पूछपरछ [सं.प्रतिपृच्छा]

पडमा देवरा. प्रतिमा

पडल उक्तिर. टोपली, पोटली (सं.पटल)

पडलं *उक्तिर.* जैन साधु वहोरवा जाय त्यारे पात्रने ढांकवा वपरातुं वस्त्र (सं.पटलकम्)

पडली जुओ पुप्फपडली

पडलो अभिक्त. पछुं, लग्न वखते कन्याने वरपक्ष तरफथी आपवामां आवती पहेरामणी [सं.पट+ल]

पडवजिउं अंबराः स्वीकारेलुं, [कबूल करेलुं] [सं.प्रतिपद्]; जुओ पडिवजिउं

पडवडइ *गुर्जरा. *षडाबा*. जाणे, समजे, (सं. प्रतिपद्य-)

पडवरु अंबरा. लावल. सञ्ज, [उद्यत]; नलरा. *विमप्र. स्पष्ट, उचित; ऐतिरा. प्रसिद्ध, जाहेर [सं.प्रतिपद्]

पडवंड प्राचीफा. सञ्ज, [उद्यत] (सं.प्रतिपद्) पडवाडे *दशस्कं(२)*. पलवाडे, वाडमां,

[पाछली वाडे]; जुओ पडाळे

पडवास *उक्तिर.* कंकु वगेरेनुं सुगंधी चूर्ण (सं.पटवासक)

पडसदे कृष्णच. प्रतिशब्दथी, पडघायी

पडह आरारा. उपबा. ऐतिका. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. विक्रच. विक्ररा. सिंहा(शा). पडो, ढोल (सं.पटह)

पडहउ उक्तिर. उषाह. पडो, ढोल (सं.पटह)

पडहू *जिक्तर.* जामीन, जामीनदार (सं. प्रतिभू:); जुओ पद्

पडाई *उक्तिर. चंद्रवा.* नानी पतंग (सं. पताकिका)

पडाग *ऐतिका.* पताका, धजा

पडाया *लावल*. पाडी देवामां आव्या

पडाळे नरका. परसाळे, ओसरीमां; जुओ पडवाडे, परालें [सं.पटलालि] पडिइ कादं(शा). पडियामां (सं.पुटक)

पडिक्रमइ *उपवाः* प्रतिक्रमण [जैन धर्म-क्रिया] करे (सं.प्रतिक्रमति)

पडिकमणउं, पडिकमणउं उक्तिर. ऐतिका. षडाबा. दोषोना प्रायश्चित्त अर्थे धती जैन धार्मिक क्रिया, प्रार्थना (सं.प्रति-क्रमणम्)

पडिकार ऐतिका. प्रतिकार

पडिक्रमइ षडावा -नुं प्रायश्चित्त करे, -थी निवृत्त थाय (सं.प्रतिक्रमति)

पडिक्रमणउं जुओ पडिकमणउं

पडिखइ *तेरका. प्राचीसं. स्थूलिफा.* प्रतीक्षा करे, वाट जुए; जुओ पडखइ

पडिगारिङ उक्तिर. इलाज करायेल, सचैत करायेल [सं.प्रतिकारित]

पडिगाहि * स्थूलिफा. [अनुग्रह अर्थे] (सं. प्रति+ग्रह)

पंडिछंदा प्राचीसं. पडघा (सं.प्रतिच्छन्दस्)

पडिपुत्र ऐतिका. पूरा थया [सं.प्रतिपूर्ण]

पडिबिम्ब ऐतिका. प्रतिबिम्ब

पडिबोह- तेरका. प्रतिबोध करवो, [उपदेश आपवो]

पडिबोह ऐतिका. प्रतिबोध, [उपदेश]

पडिबोहग जिनरा. प्रतिबोधक, [उपदेश आपनार]

पडिबोहणओ ऐतिस. प्रतिबोधक

पंडियार *सम्यचो*. म्यान [सं.प्रत्याकार]; जुओ पडीआर

पडिरबण *ऐतिका.* प्रतिरव, प्रतिध्वनि, पड्यो पडिलाभी *आरारा. जिनरा.* वहोरावी. दान आपी (सं.प्रतिलाभ्)

पडिलेहड् उपबा. जिनरा. सूक्ष्म निरीक्षण करे, तपासे (जै.) (सं.प्रतिलेखयति)

पडिलेडण उक्तिर. सूक्ष्म निरीक्षण, तपास (सं.प्रतिलेखना)

पडिवजिउं गुर्जरा. *नेमिछं. शृंगामं. स्वीकार्युं [सं.प्रतिपद्]; जुओ पडवजिउं

पडिवन्नउं आरारा. तेरका. प्राचीसं. स्वीकृत, अंगीकृत, स्वीकृत वचन (सं.प्रतिपन्नम्)

पंडिवा *उक्तिर.* पडवो (सं.प्रतिपदा)

पडिबूं उक्तिर. पडवुं (सं.पतितव्यम्)

पंडिसूधा *आरारा*. मेंदो (*सं.परिशुद्ध) [*सं.प्रतिशुद्ध]

पडिहाइ गुर्जरा. शोभे (सं.प्रतिभाति)

पंडिहार गुर्जरा. प्रद्युचु. षडाबा. दरवान, द्वारपाल (सं.प्रतिहार)

पडिहारि *अंबरा.* प्रतिहारी, [द्वारपाळ स्त्री]

पडीआर उक्तिर.म्यान (सं.प्रत्याकारः); जुओ पडियार

*पडीगइ [पडीगरइ] उक्तिर. सारवार करे (सं.प्रतीकरोति)

पडीगणउं ["पडीगरणउं] *उपबा*. सारवार (सं.प्रतीकरण)

पडीगरइ जिक्तर. सारवार करे [सं.प्रती-करोति]; जुओ पडीगइ

पडीगरणउं जुओ पडीगणउं

पडीध *प्रेमाका.* पडो वगाडनार, ढोल वगाडीने जाहेरात करनार [सं.प्रतिघा-]

पडीमा *ऐतिका*. प्रतिमा

पडीसारउ *उक्तिर*. [*सजावट] (सं.

प्रतीसारक) [प्रा.पडिसार] **पडूछइ** उक्तिर. सामुं पूछे, वारंवार पूछे, पृष्ठीने चाले (सं.प्रतिप्रच्छति) पद्भर आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. जिनरा. प्रचुर, खूब (रा.) **पडूंचउ** उक्तिर. जामीनगीरीमां मुकेली वस्तुः जुओ पद्चउं पडोचा "उषाह. ["पूछपूछ]; जुओ पड्छइ पड्यं अखाछ. हताश थयेलुं, भांगी गयेलुं (मन)]; जुओ पडतुं पड़्ये पिंड्ये चित्तसं. शरीरनो नाश थतां पढइ पडाबा. भणे (सं.पठति) **पढणहारु** उक्तिर, भणनार **पढम** *गुर्जरा. जिनरा. तेरका.* प्रथम **पढमाली** *उक्तिर*. सवारनो नास्तो दि. पढमालिआ पदिवं उक्तिर. भणवं (सं.पठितव्यम्) पढीतरं *उक्तिर*. ५३ातुं, भणातुं (सं.पठ्य-) **पढ़** उक्तिर. जामीनगीरी आपनार (सं. प्रतिभू:); जुओ पडहू पद्भवं, पद्भुं उक्तिर. जाभीनगीरीमां मूकेली वस्तुः जुओ पड्चउ पण जिनरा. प्राचीसं. पांच (सं.पश्च) पण उपवा. नलाख्या. होड, दाव (सं.) **पणच** प्राचीफा. धनुषनी दोरी, [पणछ] [सं. प्रत्यंचा पणनाणी जिनरा. किवळज्ञान सुधीनां पांचे ज्ञान धरावनार], केवळी [सं.पंचज्ञानी] पणमइ गुर्जरा. तेरका. नलरा. विकरा. प्रणाम करे (सं.प्रणमति)

पणवीस *जिनरा. प्राचीसं*. पचीस (सं. पश्चविंशति) **पणास** शीलक. नाश [सं.प्र+नाश] पणासइ आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. शंगामं. नाश पामे, नाश करे (सं.प्रनश्यते) [सं. प्रनाशयति **पणासणु** *ऐतिका.* नाश करनार [सं. प्रनाशनी **पणांगना** *षडावा***. वारांगना (सं.)** पणि आनंस्त. उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. षष्टिप्र. पण, वळी, तो, ये (सं.पुनः अपि) पणि कादं(शा). दुकानमां (सं.पण्य) **पणिदिय** जिनरा. पंचेन्द्रिय, जिने पांच इन्द्रिय छे तेवी] पजीहार, पजीहारि *उक्तिर*, पनिहारी, पाणी भरनारी (सं.पानीय+हारी) **पण्ण ***कादं(ध्र). [दुकान] [सं.पण्य] **पत** *नरका. प्रेमाका*. टेक, आबरू **पतगरइ** *उषाह. सिंहा(म)*. स्वीकार करे [सं.प्रतिकरोति] **पतड**ल *जिनरा. वीसरा.* पंचांग, टीपणुं, ितिथिपत्र (सं.पत्र) **पतत्य** *चंद्रवा.* **पडतां पतन्य** *चित्तसं*, पतन पतलइ नेमिछं. ढीला पडे, [स्खलित थाय] पतंग उक्तिर. कामा(त्रि). चित्तसं. षडाबा. पतंगियुं (सं.) पतंग आरारा(व). पतंगनुं झाड; चंदननी एक जात (सं.)

पति(?) तेरका. प्रति पतियातुं अखाका. अखाछ. प्रतीति करवी, विश्वास करवो, मानवुं [सं.प्रत्ययति]

पतियाववुं अखाछ. प्रतीति कराववी [सं. प्रत्याययति]

पतिसाह *आरारा.* पातशाह, बादशाह, अग्रणी

पतीज नरका. नलरा. विश्वास (सं.प्रत्यय) पतीजइ उक्तिर. तेरका. नरका. प्राचीसं. लावल. वीसरा. शृंगामं. विश्वास राखे (सं.प्रत्याययते)

पतीजड *प्राचीसं*. प्रतीति, [खातरी] [सं. प्रत्यय]

पतीठिय *प्राचीसं*. मूर्तिस्थापना करी (सं. प्रतिष्ठित)

पतीठी ऐतिका. प्रतिष्ठित करी, [स्थापित करी]

पतीनउं *ऐतिका***.** प्रतीति थई

फ्त *आरारा*. पहींच्यो, पाछो गयो; *ऐतिका*. पहोंच्यो [सं.प्राप्त]

फ्तन नलरा. नगर (सं.)

पत्ति अभिऊ. पत्ती, वनस्पतिनी पातरी, [पांदडी] [सं.पत्र+ल]

पत्ति *ऐतिका.* पांदडे [सं.पत्र]

पति *षडाबा*. पगपाळो सैनिक, [सेनाना सौथी नाना विभागनो अधिकारी] (सं.)

पतु *ऐतिका.* पहोंच्या [सं.प्राप्त] **पत्यरुं** *नेमिछं.* पाथरुं (सं.प्रस्तर्)

पत्तु *गुर्जरा.* पार्थ, अर्जुन

पत्रहेद, पत्रहेघ कादं(धु). कादं(शा).

स्त्रीओना कपाळमां चोडवाने माटेनुं भोजपत्र वगेरेनुं कोतरामण (सं. पत्रच्छेद्य)

पत्रष्ठेय जुओ पत्रष्ठेद पत्री अखाछ. वृक्ष; पंखी [सं.पत्रिन्] पत्री प्रेमाका. पत्र, चिट्ठी [सं.पत्रिका] पथक ऐतिरा. तालुको, [पंथक, विस्तार] पथरणउं उक्तिर. पाथरणुं (सं.प्रस्तरणम्) पथिकपराण वसंवि. वसंवि(ब्रा). पथिकनां प्राण

पदगर कर्पूमं. स्वीकारेलुं, वचन; जुओ पतगरइ

पदठवण *जिनरा.* पदस्थापना

पदम ऐतिका. वीसरा. कमळ [सं.पद्म]; *कामा(त्रि). [पद्मनुं सामुद्रिक चिह्न]

पदमख *आरारा(व).* कमळकाकडी (सं. पद्माक्ष)

प**दमी** *कामा(त्रि)*. *चंद्रवा. प्रेमाका. मदमो.* पदवी

पदिमनी नलाख्या. पद्मिनी, चार प्रकारनी स्त्रीओमां प्रथम प्रकारनी सुलक्षण स्त्री

पदुं वित्तसं. आचरुं

पद्म *प्रेमाका.* सो करोडनी संख्या [सं.]

पद्मनी *गुर्जरा*. पद्मिनी, एक उत्तम स्त्रीजाति

पद्य *चित्तसं.* पद, स्थान, स्थिति

पधरावीज *आरारा.* लाव्यो, प्रवेश कराव्यो [सं.पादौ+धार्]

पधोर "अखाका. [पाधरुं, सीधुं, अनुकूळ] पनई नरका. "नरपः मोजडी (सं.उपानह) पनउता लावल. [पनोता], पवित्र, भाग्य- शाळी [सं.पुण्यवंत]

पनर उक्तिर. उपवा. प्राचीसं. षडावा. पंदर (सं.पंचदश) [अप.पन्नरह]

पनरमा *आनंस्त.* पंदरमा

पनरस षडाबा. पंदर (प्रा.पण्णरस) [सं. पंचदश]

पनरह थडाबा. पंदर (अप.पन्नरह)

पनरागति कर्पूमं. *गोटाळो [*पुनरागति, *पुनरा- वर्तन]

पनहीं हरिख्या. मोजडी (सं.उपानह्)

पनुतुं *प्रेमाका. विमप्र*. शुकन देनारं, भाग्यशाळी, पुण्यवंतु, [शुम, मंगल, पवित्र]

पनुहुतु *नलाख्या*. पनोतो, [पुण्यवंत] **पन्न** *तेरका*. पांदड्डं (सं.पणी)

पन्नग अखाका. आरारा. प्रेमाका. लावल. नाग, साप (सं.)

पञ्चाग *आरारा(व).* ऊंडी, रक्तकेसर (सं.पुं-नाग)

पत्राला *विमप्र. [पर्णकुटि]

पपील अखाका. पीपिलिका, कीडी

पपोटा *उपबा*. परपोटा (सं.प्रस्कोटक); जुओ पंपोटा

पभणइ आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा. जिनरा. तेरका. नलरा. स्थूलिफा. बोले, कहे (सं.प्रभणति)

पमज्रणा जिनरा. प्रमार्जन, [झाडु काढवुं ते]

पमार *उक्तिर.* परमार **पमारी** *वीसरा.* परमार स्त्री पमावइ उक्तिर. जिनरा.[पोमाय़], गर्व करे, [फुलाय] (सं.प्रमापयति)

पमासन सिंहा(म). पद्मासन

पमुह *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* प्रमुख, आदि, वगेरे

पमुहाणं *ऐतिका.* वगेरेनां (सं.प्रमुखानां) **पमो**ड *ऐतिका.* प्रमोद

पमोडी उक्तिर. पद्मबीज, कमळकाकडी (सं. पद्मकर्कटी)

पय आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. वीसरा. पग (सं.पद); नेमिछं. स्थान; वसंवि(ब्रा). पद, [काव्यनुं चरण], [शब्द]

पयज्हर वीसरा. स्तन (सं.पयोधर)

पयकमल *ऐतिरा*. पदकमल, पग

पयठड *गुर्जरा. विराप*. पेठो (सं.प्रविष्ट)

पयठाण *प्रद्युचु.* नगरविशेष (सं.प्रतिष्ठान)

पयइ, पड्ठ *प्राचीसं.* प्रतिष्ठा, [मूर्ति-स्थापना]

पयड शृंगामं. प्रकट, [खुहुं, अनावृत्त]; ऐतिका. गुर्जरा. प्रकट, प्रगट; प्राचीफा. प्रसिद्ध

पयड वसंफा(ल). वसंवि. प्राकृत

पयड-पय-बंध वसंवि(ब्रा). *स्पष्ट पदबंध (सं.प्रकट+पदबंध), [प्राकृत पदबंध]

पयडि *उषाह*. प्रकटे

पयंडि *जिनरा*. प्रकृति, [स्वभाव, स्वरूप, प्रकार]

पयडिय *ऐतिका. [प्रगट थयेल] [सं. प्रकटित] पयतित *रेतिका.* पग तळे, पगमां पयत्रा दस ऐतिका. प्रकरण [नामना] दश [शास्त्रग्रंथ]

पयबंधिहं वसंफा(ल). वसंवि. पदबंधमां पयमाल प्राचीफा. खुवार (फा.पाय्माल) पयला जिनरा. प्रचला, निद्रानो प्रकार

जेमां बेठांबेठां ऊंघ आवे, दर्शनावरणीय कर्मनो एक प्रभेद] [जै.]

पयलु उक्तिर. पेलुं

पयसारः जिनरा. प्रवेशोत्सवः जुओ पेसारो, पैसारे

पयसारु विमप्र. प्रवेश

पर्यंडिहि *ऐतिका. [प्रखरताथी] [सं.प्रचंड]

पयंडु *ऐतिका. गुर्जरा*. प्रचंड

पयंतरज *िक्तर.* पटंतर, पडदो (सं. प्रत्यन्तरम्)

पर्यपइ *आरारा. प्राचीफा.* कड़े, बोले (सं. प्रजल्पति)

पयाणउ *आरारा.* प्रयाण; *वीसरा*. प्रवास

पयार *ऐतिका*. प्रकार

पयाल *आरारा. गुर्जरा.* पाताल

पयावि *ऐतिका. [प्रतापथी]

पयासड ऐतिका. प्रकाशित करे छे

पयासणु ऐतिका. प्रकाशित करनार

पयासिउ गुर्जरा. तेरका. प्रकाशित कर्युं

पयोदु गुर्जरा. विराप. वादळ (सं.पयोद)

पयोधरी प्रेमाका. नदी [सं.]

प्योहकी नलाख्या. पयोष्णी नामनी नदी प्योहर गूर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा.

वसंवि. वसंवि(द्वा). वीसरा. शीलक.

स्तन (सं.पयोधर)

पर तेरका. परम

पर प्रबोप्र. विक्ररा. पेर, प्रकार, [रीत]; जुओ पेर

पर अखाछ. पींछुं, (पांख) [फा.]; दशस्कं(१). प्रेमाका. पींछुं

परइ नेमिछं. उपर

परइ आनंस्त. आरारा. ऋषिरा. प्रबोप्र. पेरे, रीते, पेठे, जेम (सं.प्रकार)

पर-उपगार *दशस्कं(१)*. परोपकार

परकत *नलाख्या*. ?, [*परायत्त, *पराधीन, *परवश]

परकर *कादं(ध्रु). [ढगला] [सं.प्रकर]

परकल चतुचा. कंदोरो [सं.परिकर]

परखक *चंद्रवा*. परीक्षक

परगडउ आरारा. *ऐतिका. ऐतिरा. प्राचीफा. प्रकट. प्रसिद्ध

परगति कादं(शा). स्वभाव (सं.प्रकृति)

परगास- वीसरा. जाहेर करवुं, प्रगट करवुं (प्रा.) [सं.प्रकाश]

पर गोलओ *चारफा.* उपर घोळी दीधो, ओवारी नाख्यो (सं.परि+घूर्णित)

परघ *सिंहा(म)*. घेरावो (सं.परिघ); जुओ परिघउ

परघउ *आरारा. [राज्याधिकारी] (सं. परिग्रह); जुओ परघु, परिघउ, परिघा परघल अभिक. ऐतिका. कृष्णच. नेमिछं.

विमप्र. पुष्कळ, अतिशय, भरपूर; जुओ अरघल

परघलतउ *जिनरा*. पीगळतो, [नीतरतो] [सं.प्र+गल्] परघित मिन आरारा. मोकळे मने, पूरा मनथी (रा.)

परघालि *आरारा.* सवारे (रा.परगाळ; सं. प्रहकाल)

पर्षु प्राचीका. राजकर्मचारी, (सं.(राज)-परिग्रह); जुओ परघउ

परचक आरारा. पारकानुं शासन (सं.) परचरी नरप. प्रचरी, प्रसरी, फेलाई परचावइ *जिनरा. [परिचय – प्रतीति

परचालुं *जिनरा. [उपयोगमां लावुं] **परचि, परचो** कादं(शा). परिचय, ओळखाण; अखाका. परिचय, [ओळखाण], [प्रताप]

परचूरणि उक्तिर. परचूरण (सं.प्रचूणि) परची जुओ परचि

परछंडा कामा(शा). पडघा [सं.प्रतिच्छन्दस्] परछांये मदमो. पडछायामां (सं.प्रतिच्छाया) परजलइ, परजळइ आरारा. जिनरा. वीसरा.

प्रजळे, बळे प्राच्चा सेप्रकर

करावे

परजंग प्रेमाका. पर्यंक, पलंग परजंत चित्तसं. मदमो. पर्यंत, सुधी परजंन प्रेमाका. पर्जन्य, वरसाद

परजन *प्रमाका.* पजन्य, वरसाद **परजाति** *जिनरा.* प्रजाळीने, बाळीने

परिजयो *नरका.* *परिजयो सोनी, [*कोई अलंकार]

परजीओ मदमो. सगविशेष

पर**ट, परिट** *दशस्कं(१). नलाख्या. प्रेमाका.* शरत; *जिनरा. [ठराव, निश्चय, नक्की करेलुं] [सं.पिर+स्थाप्] परठबुं अखाका. अखाछ. अखेगी. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. नलाख्या. प्रेमाका. सिंहा(शा). स्थापित करवुं, ठराववुं, नक्षी करवुं, निश्चित करवुं (सं.पिरस्थाप्); अभिक्त. चंद्रवा. रूपच. लावल. स्थापवुं, मूकवुं; *लावल. [स्थिति करवी]; चंद्रवा. मदमो. मूकवुं, मोकलवुं; चंद्रवा. राखवुं, [धारण करवुं]; स्थापवुं, [बनावीने मूकवुं] परिठ जुओ परठ

पराठ जुआ परठ **परठबंड** *उपबा.* नाखे, फेंके (सं.प्रति-

स्थापयति) परठणहार अखेगी. नकी करनार

परड *मदमो*. सापोलियुं

परणण, परणन आरारा. परणवुं ते (सं. परिणयन)

परणाल प्राचीफा. नेवानुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ (सं.प्रणाल)

परणालियां *ऐतिका.* परनाळ, [नेवांनुं पाणी झीलवा माटेनी नीक]

परणेवइ नेमिछं. परणवामां (सं.परि+नय्) परत (रक्खी) ऐतिका. पडती [राखी]

परत *प्राचीसं*. परत्र, परलोक

परत जुओ अरतपरत

परत *हरिख्या.* प्रत्ये, तरफ (सं.प्रति)

परतइ उक्तिर. परिवर्तन पामे, बदलाय (सं.परिवर्तयित)

परतइ * वसंफा (ल). *वसंवि. *वसंवि (ब्रा). [समान] [सं.प्रति]

परतउ जिनरा. नेमिछं. परची, परिचय;

जुओ परता, परतो **परतक्ष** कादं(शा). नलाख्या. नजरोनजर, साक्षात् (सं.प्रत्यक्ष) परतख, परतखि ऐतिरा. ऋषिरा. नेमिछं. प्रबोप्र. लावल. प्रत्यक्ष, आंख सामे ***परतग (परतप)** *प्रद्युचु***. *परचो, [**प्रताप] परता *नेमिछं.* *सामे (सं.प्रति), चारे बाज़्] [सं.परितः] परता प्राचीसं. ?, [*परचा]; जुओ परतउ **परताजि** विमप्र, परित्यागीने, छोडीने परताति उक्तिर. जिनरा. परनिंदा; जुओ ताति परतापीक मदमो. सिंहा(शा). प्रतापी **परता**लु *चंद्रवा*. पत्राळुं **परति** अभिक्र. कादं(शा). तरफ (सं.प्रति) **परतिखि** *उषाह. जिनरा*. प्रत्यक्ष **परतिख्य** *वीसरा*. प्रत्यक्ष परतीठ जिनरा. प्रतिष्ठा, [मूर्तिस्थापना] **परतीत** अखाका. अखाछ. नरका. प्रतीति. खातरी **परतीय** हरिवि. लसोटीने लगाडी (सर. म.परतणे) परतो नंदब. परचो; जुओ परता **परत्थी** *ऐतिका.* परस्त्री **परत्र** *ऐतिका.* परलोकमां [सं.] **परथवी** विक्ररा. पृथ्वी **परदक्षणा** *देवरा*. प्रदक्षिणा परदळ वीसरा. समूह परिध आरारा. परिधि. विस्तार **परनाल** *आरारा. नलरा*. नेवांनुं पाणी

झीलवा माटेनी नीक, परनाळ (सं. प्रणाले) **परनालि, परनाली** *उक्तिर. ऋषिरा.* परनाळ, पाणी जवानो मार्ग (सं.प्रणाली) **परनालीउ** *विमप्र*. परनाळ, [पाणीनी नीक] परपंच अखाका. संसार, संसारनी जंजाळ: कादं(ध्र). वाणीनो विस्तार, [माथाकूट] पर-पाग अखाका. पींछा अने पग (फा.पर) सिं.पदाग्री परपूठ *जिनरा.* पीठ पाछळ, [पछवाडे, गेरहाजरीमां] **परबत** *वीसरा*. पर्वत **परबंध** *आरारा*, प्रबंध, काव्यरचना परभव गूर्जरा. अपमान, परेशानी (सं. परिभव); जुओ परिभव, परीभव परभवड अखाका. अखाछ. नरका. प्रेमाका. कष्टदे, हेरान करे, दुःखी करे (सं.परिभू); *गूर्जरा. विराप.* अपमानित करे, [पजवे]; प्रेमाका. पराभव करे, [पजवे]; जुओ परिभवे **परभव्या** चंद्रवा. संबंध राख्यो. सिंग कर्यो [सं.परि+भू] **परभा** *अखाका*. प्रकाश, [आभा, आभास] [सं.प्रभा] **परभाय अखाछ**. प्रवाह; जुओ प्रभा **परभार्युं** *प्रेमाका*. बारोबार **परभावइ** *आरारा. गुर्जरा.* प्रभावथी परभुडं वीसरा. पारकी भूमि (सं.परभूमि)

परम *दशस्कं(१)*. पर्व

परम उक्तिर, परम दिवस, त्रीजो दिवस

(सं.परद्यवि)

परमप्पय *प्राचीसं*. परमात्मा

परमल *प्राचीफा*. सुगंध (सं.परिमल)

परमत्य विक्रच. परम अर्थ[वाळुं], [साचुं]

परमाण अखाका. प्रमाण, *माप, [निश्चय, खातरी]; *देवरा. चिरितार्थ, सिद्ध]; नरका. समान; चित्तरां. प्रमाण, हेतु-साधक. सार्थक, उपयोगी

परमाण राखे *चित्तसं*. प्रमाणभूत गणे, खरुं माने. स्वीकारे

परमाणुं *प्रेमाका*. प्रमाण, माप

परमाणे चित्तसं मापे, [-ना मापमां]

परमाण्य चित्तसं. स्वीकार

परमाण्यो *नरका.* प्रमाण्यो, [प्रतीत कर्यों, मान्यो]

परमाधामी गुर्जरा. नेमिछं. जैन धर्म अनुसार, नरकवासीओने शिक्षा करनार देवयोनि (सं.परम+अधार्मिक)

परमारष आरारा. परमार्थपणे, खरेखर, साचेसाच; अखाका. परम अर्थ, परम ध्येय, [सारतत्त्व]

परमावधि *प्रेमाका*. जेनी अवधि – हद नथी तेटलुं बधुं, [खूब]

परमुहा *देवरा.* पराङ्मुख

परमूण *उक्तिर*. परम दिवसनुं (सं.परम-दिवसीयम्)

परमेठि *गुर्जरा.* परमेष्ठी

परमेसरु गुर्जरा. परमेश्वर

परमोघे अखेगी. प्रबोधे, उपदेश आपे

परभाग *कादं(शा)*. शेषभाग (सं.); जुओ

परिभाग

परयचि सिंहा(म). पडदो [*सं.परिकक्षी, प्रा. परियच्छी; *सं.परिच्छद]; जुओ परिअच

परयाणइ *आरारा*. प्रयाणे

परलउ उक्तिर. पेलुं

परलोइ *आरारा.* परलोके

परव उक्तिर. तेरका. हरिख्या. परब (सं.प्रपा)

परवडतुं नरका-२. अनुकूळ, फावतुं [सं. परिपत्]

परविरिष्ठ आरारा. ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). वींटळायेलो, घेरायेलो (सं. परिवृत); लावल. पारंगत धयो, [आवृत थयो, -थी युक्त थयो] आरारा. दशस्कं(९). नलाख्या. गयो

परवरी ऐतिरा. प्रवर, महान्

परवरे चित्तसं. जाय, आवे, फरे, रहे, परिणमे

परवाडे प्रेमाका. वाडना पाछला भागमां

परवार ऋषिरा. चंद्रवा. नलरा. परिवार, कुटुंब, रसालो

परवार कृष्णच. नरका. फुरसद, नवराश परवारइ उक्तिर. पार पाडे, आटोपे, आटोपी नवरो थाय (सं.प्रपारयति); जुओ

परिवारइ

परवाल, परवालउं, परवाली उक्तिर. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि(ब्रा). षडाबा. परवाळुं (सं.प्रवाल)

परवाह *आरारा*. दरकार, गरज (फा.)

परवाहिक *चित्तसं*. प्रवाहिक, प्रवाह रूपे वहेनार, अवशपणे तणानारा परवी *हरिख्या*. परिवयो, [परबवाळो] परवृति *प्रेमाका. [बीजानी आजीविका] [सं.]

परवे नरका. नरप. परवश, पराधीन, विवश परवेस आरारा. प्रवेश; मदमो. प्रवास, [संक्रमण, जवुं ते]; जुओ प्रवेश परशीनि उषाह. स्पर्श करीने परशेवी कादं(शा). परसेवो पामी (सं.प्रस्वेद परथी)

परषद *ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं.* परिषद, सभा

पर समय जिनरा. पारकुं शास्त्र, [अन्य धर्मीना सिद्धांत] [सं.]

परसरइ *जिनरा. [नजीकमां, तरफ] [सं. परिसर]

परसंशे नरका. स्पर्शशे

परसवतां *चित्तसं*. प्रसवतां, जन्मतां

परसंग *चित्तसं.* प्रसंग, संदर्भ

परसाखि *षडाबा*. बीजानी साक्षीए (सं.पर+ साक्ष्य)

परसादि आरारा. कृपाथी (सं.प्रसाद)

परिसार आराराः परिसरमां, पासे

परसी चित्तसं, स्पर्शी, स्वीकारी

परसीधो आरारा. प्रसिद्ध

परसु उक्तिर. परम दिवसे (सं.परश्चः)

परसे अखाका. चित्तसं. स्पर्शे

परसेवी कादं(ध्रु)-िट. परसेवो छूटेलो होय एवी

परस्पेरे दशस्कं(२). परस्पर

परहउ *उक्तिर. षडाबा. षष्टिप्र.* दूर (सं.

परस्मिन्)

परहंसिउ *वडावा. [दु:खना आवेगमां आवी गयो]; जुओ परहुसीउ, परहुंस

परहां [उरहांपरहां] *उपवाः [आमतेम]

परही कृष्णच. पाछी

परहु आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. विमप्र. विराप. दूर (सं.परस्मिन्); आरारा. पछी (रा.)

परहु आरारा. चोक्कस (रा.परौ)

परहुसीउ *विमप्र. [दुःखनी लागणीना आवेगवाळो थयो]; जुओ परहंसिउ, परहुंस

परहुंस *विमप्र. [दुःखनी लागणीना आवेग-वाळा]; जुओ परहंसिउ, परहुसीउ, प्रहुसु

परहूणि प्रबोप्र. स्त्री-महेमान (सं.प्राघूर्णिका)

परहूणंड अभिक्त. लिलरा. विक्ररा. विमप्र. परोणो, महेमान (सं.प्राघूर्णक)

परहो *मोसाच*. आघो, वेगळो [सं.परस्मिन्]

परहोडि *विमप्र*. परोढमां

परा आरारा. पंचवा. दूर (सं.) [सं.पर]

पराए गुर्जरा. दूर (सं.*परकस्मिन्)

पराइय तेरका. पहोंच्युं (सं.प्राप्+इत)

पराकाष्टा चित्तसं. छेक सुधीनी

पराघउ * गुर्जरा. *विराप. [मोंघुं] [सं.परार्घ]

पराघाइ जुओ घाइ

पराण *गुर्जरा. प्रबोप्र. वसंफा. वसंवि(ब्रा).* प्राण, जीव; *विक्ररा. *विमप्र.* बळ, बळ-जबरी

पराणउ वसंफा. वसंवि(ब्रा). -मां डूबेलो, परायण पराणी *उक्तिर*. बळदने हांकवा माटेनी लाकडी (सं.प्राजनिका)

पराणो *प्रेमाका*. परोणो, जाडी लाकडी [सं. प्राजनकः]

परात्पर ग्रेमाका. सर्वश्रेष्ठ [सं.]

पराभव गुर्जरा. अपमान, [तिरस्कार] (सं.); लावल. *पराजय, [तिरस्कार, अनादर]; चित्तसं. नाश

पराभवइ आरारा. उपवा. जिनरा. षडावा. पराभव, तिरस्कार, अनादर पामे, हारे पराभव्या आनंस्त. पराभव पामेला, हारेला परायण प्रेमाका. परम गतिरूप, [परम लक्ष्य]

परातु *उक्तिर.* पराळ, डांगर वगेरेना खरसलां, धास (सं.पलालम्)

***परालें [पडाळे]** *नरप*. *राते, [परसाळे]; जुओ पडाळे

परां *प्रेमाका*. दूर, अलग

परांण वीसरा. जीव; बळ (सं.प्राण)

परांमुख प्रेमाका. विमुख

परांहां *विमप्र*. परां, दूर

परि *आरारा*. परंतु (सं.परम्); *तेरका-अनु*. पण, [-ये]

परि अभिऊ. आरारा. उक्तिर. उषाह. ऐतिका. कर्पूमं. कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. वीसरा. षडाबा. प्रकार, रीत; प्रकारे, रीते, पेठे; जुओ पर

परि आरारा. गुर्जरा. मोसाच. उपर (सं. उपरि)

परिअच अभिकः पडदो (सं.परिच्छद); जुओ परीअच

परिइं उप*बा. नेमिछं. वारभवा.* प्रकारे, रीते, जेम

परिकर *आनंस्त. ऐतिका.* परिवार, [परिजन, साथीगण] [सं.]

परिकर कादं(शा). ढगलो (सं.प्रकर)

परिकसी आरारा. परीक्षा, कसोटी

परिक्रम "प्राचीफा. [परिक्रमण, प्रसरण] (सं.परिक्रम); "प्राचीसं. परिक्रमण, प्रदक्षिणा

परिक्खइ गुर्जरा. तपासे (सं.परीक्षते) परिक्खिव *ऐतिका. [परीक्षा करीने, पारखीने]

परिखइ *आनस्त. नलरा.* परीक्षा करे, पारखे (सं.परीक्षते)

परिगर प्राचीफा. मूर्तिनी आसपासनो कोतरणीवाळो परिवेश (सं.परिकर)

परिष *प्रेमाका*. भोगळ जेवुं एक शस्त्र [सं.]

परिघड अंबरा. हम्मीप्र. राजसेवक, राज्या-धिकारी [सं.परिग्रह]; जुओ परघउ

परिघल *ऐतिका. ऐतिरा. नेमिछं. विमप्र.* पुष्कळ. अतिशय

परिषा *अभिकः [राजसेवक, राज्या-धिकारी] [सं.परिग्रह]; जुओ परिषठ

परिचउ अक्तिर. परिचय

परिचतः *प्राचीफा.* त्यजायेल (सं.परित्यक्त) *परिचय (परियच) अखाछ. पडदो; जुओ परिअच

परिचय- तेरका. प्राचीसं. तजवुं (सं.

परित्यज्) परिषड् षडावा. तपासे, परखे (सं.परीक्षते) **परिजलइ** गुर्जरा. प्रजळे (सं.परिज्वलति) परिष्टु विकरा. धोबी दि.परिअट्टी परिठवड * षडावा. पिदार्थीनो परित्याग करे. मुके, नाखी दे] (सं.परिस्थापयति) **परिठिउं** *ऐतिरा.* **धर्युं, [मूक्युं] [सं.परि+स्था]** परिणइ उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. तेरका. षडाबा. परणे (सं.परिणयति) **परिणमाबीइं** *आनंस्त*. परिणाम पमाडीए. [निष्पन्न करीए] परिणय जुओ परियण **परिणयण** *तेरका. प्राचीफा*. परणवुं ते, लग्न (सं.परिणयन) परिणावइ उक्तिर. लावस. वीसरा. परणावे (स.परिणापयति) **परिणिउ** *षडाबा*. परण्यो (सं.परिणीत) परिणिति * ऐतिका. [परिणमन, परिणाम, फळो [सं.परिणति] **परितिषि** विक्ररा. प्रत्यक्ष, हाजराहजूर **परियल** विमप्र. पूष्कळ [सं.पृथुल; रा.] **परिवलि** गुर्जरा. शत्रुसैन्यमां (सं.परदले) परिदेवन ऋषिरा. दुःख, शोक (सं.) परिदेस वीसरा, परदेश परि परि अभिक. उषाह. ऋषिरा. प्रकारे-प्रकारे, जुदीजुदी रीते, फरीफरी परिपलव- तेरका. फरी पल्लववुं, पिल्लवित करवं (सं.प्रतिपञ्चव्) परिपंचीय वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मार्गरोधक, शत्रु (सं.परिपंथिन्)

परिबंध आरारा. प्रबंध, काव्यरचना] **परिब्रह्म** दशस्कं(१). परब्रह्म परिभव गुर्जरा. हरिख्या. सतावणी, अपमान (सं.); जुओ परभव, परीभव परिभवे *गुर्जरा. [संताप पामे] (सं.परि+ भ्); *नरका. [सतावे]; जुओ परभवइ परिभाग कादं(शा). शेषभाग; जुओ परभाग **परिमांण** देवरा, प्रमाणे परिभ्रमी वडाबा. परिभ्रमण करीने, फरीने परियच जुओ परिचय परियट उषाह. प्रेमाका. विक्ररा. धोबी दि. परिअट्ट]; जुओ परीअट ***परियण [*परिणय] ***गुर्जरा. [विवाह, लग्नी परियंक नरका. पलंग, (सं.पर्यंक) परिया कस्तुवा. वंशज [सं.पर्याय] **परियागति** *जिनरा*. परंपरागत. [वंशगत] [सं.पर्यायागत]; जुओ परीआगत परियां चंद्रवा. वंशजो, पेढी [सं.पर्याय] परिरंभण नरका. आलिंगन [सं.] **परिवरइ** उपवा. ऋषिरा. ऐतिका. वींटळाय (सं.परिवु-, प्रा.परिवरइ) **परिवर्जिक य**डाबा. त्याग करनार (सं.परि-वर्जक) **परिवाडी** *गुर्जरा.* परिपाटी, रीत, शैली परिवारइ आरारा. उक्तिर. परवारे, पूरां करे (सं.प्रपारयति); जुओ परवारइ परिवारइ गुर्जरा. वींटळाय (सं.परिवारयति) **परिवारि स्यं** *चारफा*. परिवार साथे **परिवेषण** *गुर्जरा*. पीरसण (सं.)

परिशोध *दशरकं(१).* वावड, समाचार, [पत्तो]; *प्रेमाका*. चारे बाजु तपास, [खूब शोध]

परिसरि *ऐतिरा. *नेमिछं*. पादरे, [नजीक-मां] [सं.परिसर]

परिसर्चण आनंस्त. खसवुं ते, जवुं ते, [दूर थवुं ते] [सं.परिसर्पण]

परिसह आनंस्त. "देवरा. परीषह, कर्मनी निर्जरा अर्थे स्वेच्छाथी भोगववानां कष्टो [जै.]; जुओ परीसह

परिसाट आनंस्त. क्षय करवो ते, [अलग करवुं ते] [सं.परिशाट]

परिसाडि *षडाबा. [नीचे पडवुं ते] [सं. परिशाट]

परिसीजइ जिक्तरः परसेवो थाय (स. परिस्विद्यति)

परिसीनउ *उक्तिर.* परसेवो थयेल (सं. परिस्वित्रः)

परिस्तरण, परिस्तर्ण दशस्कं(१). प्रेमाका. पाथरवुं ते [सं.]

परिहरइ लावल. षडावा. परहरे, तजे परिहरवि ऐतिका. छोडीने, तजीने

परिहरड *गुर्जरा*. लो, धारण करो, राखो, [पकडो, स्वीकारों] [सं.परि+हृ]

परिहारी लावल. तजीने

परिं आनंस्त. ऐतिरा. पेठे, जेम [सं.प्रकारे]

परी *आरारा. ऋषिरा. नरका. प्रेमाका.* दूर; जुओ पहरी

परीजच, परीजचि, चतुचा. नलरा. ललिरा. पडदो (सं.परिच्छद); जुओ परिजच, परियच, परीअंचि, परीयचि, प्रीअछि
परीअट कृष्णवा. दशस्कं(२). धोबी [दे.
परिअट्ट]; जुओ परियट, परीयटु, परीहट
परीअंचि ऋषिरा. पडदो; जुओ परीअच
परीआगत प्राचीका. वंश, [वंशपरंपरा] [सं.
पर्यायागत]; जुओ परियागति

परीकरी प्रेमप वींटाळी ?

परीखड़ उक्तिर. ऋषिरा. षडाबा. षष्टिप्र. पारखे, परीक्षा करे (सं.परीक्षते)

परीखा *अखाका. [परीक्षा, समज]

परीष्टइ उक्तिर. विक्ररा. षडाबा. षष्टिप्र. प्रीछे, जाणे, समजे [सं.परिप्सते]

परीठ जिनरा. वृत्तांत; जुओ परेठ

परीठवीउ *गुर्जरा*. आश्वासन आप्युं [सं.परि+ स्थापित]

परीभव कामा(त्रि). हार, अपमान ? [कष्ट, पीडा]; जुओ परभव

परीयचि अंबरा. पडदो [सं.परिच्छद]; जुओ परिअच

परीयच्छि उक्तिर. पडदो [सं.परिच्छद]

परीयदु उक्तिर. धोबी [दे.परिअट्ट]; जुओ परीअट

परीयण, परीयणि आरारा. गुर्जरा. परिवार, सेवकगण (सं.परिजन)

परीसङ्क आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. जिनरा. षडाबा. पीरसे (सं.परिवेषति)

परीसह ऋषिरा. "देवरा. नलरा. [कर्मक्षय माटे] श्रमणोए सहवाना टाढ, तडको वगेरे कष्टो [जै.]; जुओ परिसह

परीसिव्युं *उक्तिर.* पीरसवुं (सं.परिवेष-

यितव्यम्) परीस्वेद मदमो, प्रस्वेद परीहट दशस्कं(२). धोबी [दे.परिअट्ट]; जुओ परीअट **परीं** *प्रबोप्र*. प्रकारे, पिठे, जेम] **परु** नंदव. दूर; जुओ पहुउ परु षडाबा. अन्य, बीजी व्यक्ति (सं.परः) परुणा जुओ खुरुणा परुष्पर, परुष्पर *ऐतिका. शुंगामं*. परस्पर **परं** *प्रेमाका.* आइं, [बीजी बाजू]; *अखाछ.* प्रद्युचु. दूर, अळगुं पर्हस- नलरा. "क्रोध करवो (सं.प्र+रुष्), [*दु:खनी लागणी अनुभववी]; जुओ प्रहस् परुवड उक्तिर. प्रतिपादन करे (सं.प्ररूप-यति) परुहणुं उषाह. परोणो (सं.प्राघूर्णक) परे ऐतिका. देवरा. नेमिछ. प्रकारे, पेरे, रीते परेड प्रेमाका. रीत, [व्यवहार, रूढि]; जुओ परीठ परेरी अखाकाः प्रेरी, प्रेरेली; विधु दूर, वधु आगळ]; जुओ पहरेरी परेरे अखाछ. प्रेरे **परेरो** *अखाछ.* दूर परेरो (पारेबो/पटेरो) *मदमो.* अश्वनुं विशेषण, [एक अश्वजाति]; जुओ पाटर **परो** अखाका. प्रेमाका. मदमो. दूर, अलग **परोणाचार** *प्रेमाका*. महेमानगत, आतिथ्य [स.प्राघूर्णक+आचार]

परोणो *अखाका, प्रेमाका*, बळदने हांकवा माटेनी लाकडी [सं.प्रतोदन] **परोजो-रास** *प्रेमाका***. लाकडी अने लगा**म परोहित विक्ररा. सिंहा(म). पुरोहित, गोर **पर्जन्य** प्रेमाका. वरसाद, मेघ [सं.] **पर्यट** *विराप*. पापड (सं.) **पर्यंक** अखाका. पलंग (सं.) पर्याण कादं(शा). घोडानुं पलाण, जीन (सं.) पर्व *ऐतिरा. [(आंगळीनां) वेढां] **पर्व** *प्रेमाका.* परब [पाणीनी] पर्वणी प्रेमाका. पिर्वनो दिवस, पवित्र दिवसी: आठम, चौदश, पूनम अने अमास - एमांनी कोई एक तिथि पर्षद आरारा. सभा (सं.) **पल** प्रवोप्र. मास (र्स.) **पळ** *प्रेमाका.* पलक, पांपण फा.पल्की **पलइ** *आरारा. षडाबा.* पळाय, पालन थाय [सं.पाल् परथी] पलक श्रं पलक प्रेमाका. आंखनी पांपण साथे पांपण, [नजरेनजर] **पळका** *प्रेमाका*. झंखना[वाळा], [लालसु] **पळको** *नरका.* छटकी जाओ, [चाल्या जाओ] **पलक्ये** चित्तसं. पलकमां, पलकारामां फा.पल्को **पलखंड** विक्ररा. मांस [सं.] पलणावो अभिक. -ना उपर पलाण मूको, [सञ्ज करो] (सं.पर्याण परथी) पळता *नरका.* (पगमां) पडता, [जता] [सं.पलायते] पलवट कामा(शा). "चतुचा. नरका.

नरप(द). भेट, दुपट्टाथी केड बांधवी ते पत्तबटि उक्तिर. कादं(शा). पलवट, खेस, केड उपर खेस बांधवी ते (सं.पछवा-वृत्ति)

पलवट बाळवी *दशस्कं(१). रूस्तस.* भेट बांधवी

पलवाड *सिंहा(शा)*. वाड

पलंतु अभिऊ. पळतो, दोडतो (सं.पलायत्)

पलाय, पळाय कामा(त्रि). कामा(शा). देवरा. प्रेमाका. हरिख्या. जाय, भागे (सं. पलाय्)

पलाति गुर्जरा. पलायन (सं.*पलायिति)_. पलाव प्राचीफा. आक्रंद (सं.प्रलाप); जुओ करुणपलाव

पलाश, पलास, पळास प्रेमाका. वसंवि. शृंगामं. खाखरो, केसूडानुं वृक्ष

पलासि गुर्जरा. मांसभसी, राक्षस (सं.पल+ अशिन्)

पति नलाख्या. पळे, जाय (सं.पलायते)

पितत कादं(शा). नरका. पिळयां आव्यां छे तेवो माणस, वृद्ध [सं.]

पलित्त' *प्राचीसं*. प्रदीस

पत्थि *नेमिछं.* पळ्या, गया [सं.पलाय्]

पिंग वीसरा. पलंग (सं.पुल्यंक) [<सं. पर्यंक]

पली लावल. विमप्र. पळी (माप)

पली, पळी *उक्तिर. प्रेमाका.* पळियां, धोळा वाळ [सं.पलित]

षतीवणउं *उक्तिर. प्राचीसं.* पत्नेवणुं, [अग्नि-नुं बळवुं ते] (सं.प्रदीपनकम्) पलेवणूं *अभिकः. [अग्नि, बळतरा] [सं. प्रदीपनकम्]

पतेवलाउं उक्तिर. अग्निनुं बळवुं ते (सं. प्रदीपनकम्)

पलोइ गुर्जरा. तेरका. जुए (सं.प्रलोकयति) पल्यंग आरारा. पलंग (सं.पर्यंक)

पत्यु नलरा. सफेद वाळ, पळियुं (सं.पलित)

पळ्युं दशस्कं(१). प्रेमाका. पळियां – धोळा वाळवाळुं थयुं

पल्योपम *ऐतिका. गुर्जरा.* एक काळगणना [जै.]

पल्डणाय विमप्र. पलाणाय, [सञ्ज करवामां आवे] [सं.पर्याण परथी]

पल्हाणो अभिक. -ना उपर पलाण मूको, [सञ्ज करो]

पल्हालइ उक्तिर. *उपवा. पलाळे, आर्द्र करे (*सं.पर्यार्द्रयति) [सं.प्रह्लाध्यति]

पव तेरका. परब (सं.प्रपा)

पक्ज़िंति *ऐतिका*. प्रवृत्त थाय छे, [गति – गमन करे छे] [सं.प्रव्रजति]

पबट्ठरित * *ऐतिका*. [वर्षाऋतुमां] [सं. प्रावृषऋतु]

पवण *गुर्जरा. तेरका. विराप.* पवन

पवतिण *ऐतिका*. प्रवर्तिनी (जैन साध्वीओनुं पद)

पबन *अखाका.* श्वास, प्राण; *प्रेमाका.* *मिजाज, [*शरीरनो वायु, *श्वास]

पवन बांधी जुओ बांधी पवन

पवनाश कादं(शा). सर्प (सं.)

पबर ऐतिका. तेरका. नेमिछं. प्रवर, उत्तम,

श्रेष्ठ, प्रधान] पवरपूरि ऐतिका. प्रवर [उत्तम] नगरीमां **पवरिख** *प्रयुच्*, पौरुष पवाई अखाका. पावैयो, नपुंसक **पवाडह** जिनरा. *पमाडे, *अपावे, [*प्रताप – दैवी चमत्कार वडेी पवाडउ अभिऊ. "उषाह. प्रद्युच्च. हम्मीप्र. पराक्रमः; हम्मीप्र. पराक्रमवर्णननुं काव्य [सं.प्रवोद] **पवालउ** प्राचीफा. परवाळुं, एक रल (सं. प्रवाल) पवित्तिण ऐतिका. पवित्र (नामग्रहण) वडे स्थुलिफा. वींटी पवित्तीय दर्भनी [सं.पवित्रिका] (प्रा.पवित्तय) पवित्तु षडाबा. पवित्र पवित्रिइ, पवीत्रइ उक्तिर. पवित्र करे (सं. पवित्रयति) **पवित्री** उक्तिर, प्रेमाका, दर्भनी वींटी (सं. पवित्रकम्) पवेडो दशस्कं(१). प्रेमाका. लाकडी, डंगोरो, एनो छुटो घा **पव्या** *ऐतिका. तेरका.* पर्वत पशाअ, पसाय मदमो. बक्षिस (सं.प्रसाद) पशु-अरि प्रेमाका. सिंह [सं.] **पशुवां** *दशस्कं(२)*. ढोरां पश्चिमीड उक्तिर. पश्चिम दिशानुं पश्यम कादं(शा). पश्चिम दिशानुं: जुओ पस्यमु पस लावल. खोबो (सं.प्रसृति) **पसइ** *प्राचीफा*. खोबो, पोश, पसली (सं.

प्रसृति) **पसर** *गुर्जरा*. प्रसर, फेलावो पसरइ उपबा. गुर्जरा. चित्तसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. षडाबा. प्रसरे, फेलाय पसवइ उक्तिर. जन्म आपे (सं.प्रसवति) **पसंस-** *तेरका*. प्रशंसा करवी (सं.प्रशंस्) पसंसिजइ ऐतिका. प्रशंसा थाय छे पसाइ आरारा. -ने लीधे (सं.प्रसाद): आरारा. उषाह. कृष्णच. जिनरा. प्रबोप्र. ्र*सप्त्त. विक्ररा. विराप.* कृपा, कृपाथी; अभिकः, आराराः, बक्षिस पसाउ ऐतिका. चारफा. शीलक. *षडाबा. *स्थुलिफा*. प्रसाद, कृपा पसाउलइ कर्पूमं. गुर्जरा. विकरा. शंगामं. कृपाथी (सं.प्रसाद) पसाय आरारा. ऐतिका. नलरा. "शुंगामं. कृपादान, बक्षिस; *अखेगी. ऐतिरा.* दशस्कं(१). तेरका. नरका. प्रेमाका. विक्ररा. प्रसाद, कृपा; अखाछ. प्रसाद-रूप, प्रसन्न, [कृपावंत]; जुओ पशाज **पसायल्ल** *ऐतिका.* प्रसाद, [कृपा] पसायो चंद्रवा. भेटसोगाद पसार कादं(शा). फेलावो (सं.प्रसार) **पसारिय** *गुर्जरा*. प्रसारीने, फेलावीने **पसाव** *आरारा*. कृषा, प्रसाद **पसिद्ध** *ऐतिका*. प्रसिद्ध **पसी** *ऐतिरा*. पछी पसीअइ उक्तिर. प्रसन्न थाय (सं.प्रसीदति) **पसीजह** *उक्तिर*. परसेवो थाय

प्रस्विद्यते)

पसु कामा(त्रि). बद्यां, बाळक पस्आडे अखेगी. पडखे, पासा पर पस्य शृंगामं. पशु पस्ता शीलक. पिस्ता — एक मैवो पस्यमु विमप्र. पश्चिमनो देश; जुओ पश्यमः पह उक्तिर. मार्ग (सं.पथः) पहड्डिड "लावल. [दूर हट्यो, धोखो दीधो,

पहड़लड लावल. पहेलो, प्रथम [सं.प्रथिल्ल] पहडं कृष्णच. करतां

विश्वासभंग कर्यो] [रा.पहिडणौ]

पहचइ गुर्जरा. पहोंचे, जाय; जुओ पहुतइ पहडइ *जिनरा. [दूर हटे, घोखोदे, विश्वास-भंग करे] [रा.पहिडणौ]

पहती गुर्जरा. पहोंची; जुओ पहुतइ पहर उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. षडाबा. प्रहर पहरणि गुर्जरा. पहेरवेशमां; जुओ पहिरण पहराजत प्राचीफा. पहेरो भरनार, चोकीदार (सं.प्राहरिक)

पहरी *ऋषिरा. [दूर, अळगी]; जुओ परी पहरेरी चित्तसं. दूरनी, पारनी स्थिति; जुओ परेरी

पहरो अखाका. दूर, अलग; *दशस्कं(२).* आघो

पहल आरास. पहेलो [सं.प्रथिल्ल]
पहलाण ऋषिरा. कादं(शा). पलाण, घोडा-नी पीठ परनुं जीन (सं.पर्याण)
पहवइ आरास. थाय, करी शके (सं.प्रभव्)

पहचड़ *आरारा*. थाय, करी शर्क (सं.प्रभवे पहाण *अखाछ*. पथ्थर [सं.पाषाण]

पहाण, पहाणु ऐतिका. जिनरा. तैरका.

प्राचीफा. प्रधान, मुख्य

पहाणको दशस्कं(१). पहाणो

पहारिं *गुर्जरा*. प्रहारथी

पिं विमप्र. पथिक, मुसाफर

पिंड प्रद्युचु. पासे; शृंगामं. -ना करतां; "हम्मीप्र. [पण] [रा.]

पहिचाणि प्राचीफा. ओळखाण, परिचय (सं. प्रत्यभिज्ञान)

पहिट- नलरा. पलटवुं, [बदलावुं] [रा.] पहिति लावल. रांधेली दाळ [हिं.]; जुओ पिहिति

पहिय *प्राचीफा.* प्रवासी (सं.पथिक)

पहिरइ उक्तिर. उपबा. तेरका. लावल. षडाबा. पहेरे (सं.परिधा-)

पहिरण, पहिरणउं उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. लावल. थसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. पहेरवुं ते, पहेरवेश (सं.परिधा+ अन)

पहिरावइ *उक्तिर. लावल.* पहेरावे (सं. परिधापयति)

पहिरावजं *ऐतिरा.* पहेरामणी आपुं पहिरावणी *वीसरा.* पहेरामणी (सं. परिधापन)

पहिलउं आनंस्त. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. पहेलुं, पहेलां (सं.प्रथ+इल्ल)

पहिलेरउं यडावा. -नी पहेलां; गुर्जरा. पहेला, आगला (सं.प्रथिक्ष+तर) पिकक्षी तेरका. प्राचीफा. पहेली (सं.प्रथ+ इल्ल+इका)

पही उक्तिर. पथिक

पही परहणु विमप्र. पइ-परोणो, पथिक अने परोणो

पहु ऐतिका. प्रभु

पहुजा *प्रेमाका*. पींआ [सं.पृथुकाः]

पहुचाइ *गुर्जरा*. पहोंचे, जाय (सं.प्रमूत, प्रा.पहुत्त)

पहुडित उषाह. पोढशे [सं.प्रवर्ध्]

पहुतइ आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. पहोंचे, आवी पहोंचे, जाय (सं.प्रभूतः)

पहुतजी *ऐतिका*. प्रवर्तिनी, जैन साध्वीओनुं एक पद

पहुत्त, पहुत्तउ उपबा. ऐतिका. पहोंच्युं, जई पहोंच्युं (सं.प्रभूत-)

पहुत्तणी आरारा. प्रवर्तिनी, जैन साध्वीओने अपातुं पद

पहुनुहता *नेमिछं*. पनोता, पुण्यशाळी [सं. पुण्यवंताः]

पहुरइ *उक्तिर.* प्रहरे

पहुरु (पहुरु पाडता) *शृंगामं. [पहेरो – चोकी राखता] [सं.प्रहर]

पहुल "वसंवि(ब्रा). [पहोत्तुं] [सं.पृयुल]

पहुली " वसंवि(ब्रा). [पहोळी] **पहुबइ "** ऐतिका. [पृथ्वीमां]

पहुर्वीनाह नलरा. पृथ्वीनो अधिपति (सं. पृथ्वीनाथ)

पहुआ *उक्तिर.* पौंआ (सं.पृथुकाः)

पहूतउ *ऐतिका. ऐतिरा. प्रबोप्र. वीसरा.* पहोंच्यो (सं.प्रभूत)

पहेंधी मदमो. पेधी

पहेरण प्रेमाका. पोशाक [सं.परिधान]

पहेली *उक्तिर.* समस्या, कोयडो (सं. प्रहेलिका)

पहोत्तवुं दशस्कं(१). प्रेमाका. पहोंचवुं [सं. प्रमूत]

षड्ड अंवरा. गुर्जरा. दूर (सं.परस्मिन्); जुओ परु

पद्गाण कादं(शा). पत्नाण, घोडानी पीठ परनुं जीन (सं.पर्याण)

पंकय *ऐतिका. तेरका.* पंकज, [कमळ]

पंख *गुर्जरा*. पंखी (सं.पक्षी)

पंख *गुर्जरा.* पांख (सं.पक्ष)

पंखा *वेताप*. रजकण, केसर

पंखना *प्रेमाका*. पांखवाळां, [पंखी]

पंखुडिय *प्राचीसं*. पांखडी [सं.पक्ष] **पंखी**उ *उपवा*. पंखी (सं.पक्षी)

पंखुडीय स्थूलिफा. पांखडी

पंग *प्राचीफा*. ढोलक जेवुं एक वाजित्र (सं.उपांग)

पंगरषुं कृष्णवा. पहेरवुं, [ओढवुं] [सं.प्र+ अंकुर-, प्रा.पंगुर-]; जुओ पांगुरइ

पंगुर- *तेरका. प्राचीसं.* पांगरवुं (सं.प्र+ अंकुर-)

पंच ईटाली चंद्रवा. विमप्र. शिक्षा करवा माटे पंच भेगुं थई ईंट मारे ते, ईंट मारीने मारी नाखवानी सजा

पंचगव्य *प्रेमाका*. गायनां दूध, दहीं, घी,

मूत्र अने छाण [सं.]

पंचरगलउं गुर्जराः पांचने आगळ करीने,

(सं.पंच+अग्रिलकम्)

पंच दिव्य सिंहा(म). जैन परंपरा मुजब तीर्थंकरादिना महत्त्वपूर्ण प्रसंगोए थता पांच चमत्कार; जुओ दिव

पंचडीपणु *शृंगामं.* पांच इंद्रियो धराववानो गुण

पंच पद नलरा. पंच नमस्कार[नां पद], नवकारमंत्र [जै.]

पंचपरवा अखेगी. पांच पर्व (पेर)वाळी, पांच सांधावाळी, [पांच भाग – अविद्या, अहंकार, राग, द्वेष अने मरणभय – वाळी (माया)]

पंचवाण *प्रेमाका*. [कामदेवनां पांच बाण], अरविंद, अशोक, नवमालिका, आम्र-मंजरी अने नीलोत्पल; गुर्जरा. पांच बाणवाळो देव, कामदेव (सं.)

पंचभद्र हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात पंचम नरका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). पंचम सूर

पंचमगति गुर्जरा. पांचमी गति, मोक्ष पंचमासी प्रेमाका. मोसाच. सगर्भावस्थाना पांचमा महिने थती राखडी बांधवानी विधि

पंचमु वसंफा. वसंवि. पंचम सूर पंच मेर स्थूलिफा. पांच मेरु, पांच मर्यादा-वित्रह्मिपी मेरु

पंचवीस उक्तिर. पचीस (सं.पंचविंशति) पंचशबद, पंचशब्द, पंचसबद आरारा. "कामा(शा). नरका. नलरा. प्राचीफा. प्रेमाका. पांच वाद्यनो मंगलसूचक ध्वनि; जुओ सबद

पंचसयां आरारा. पांचसो (सं.पंचशत) पंचहत्तरि उक्तिर. पंचोतेर (सं.पंचसप्तति) पंचहतर, पंचहतरी ऐतिरा. लावल. षडाबा.

पंचोतेर (सं.पंचसप्ततिः)

पंचाइण *लावल.* सिंह (सं.पंचानन)

पंचाक्षरियां *प्रेमाका*. *मेली विद्या द्वारा भूत-प्रेतने काढनार, [मंत्रविद्]

पंचाणणु *ऐतिका*. पंचानन, सिंह

पंचातीत अखाका. पंचभूतथी पर एवं

पंचानन नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सिंह (सं.)

पंचामिगम *आरारा.* चैत्यादिकमां प्रवेश करवाना पांच नियम [जै.]

पंचायण *दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका.* सिंह (सं.पंचानन)

पंचाली *जिनरा. प्राचीसं.* पूतळी (सं. पांचालिका)

पंचाश्रव *आरारा*. कर्मनां पांच प्रवेशद्वार [जै.]

पंचास नलाख्या. वीसरा. षडावा. पचास (सं.पंचाशत्)

पंचासम *ऐतिका.* पचासम्

पंचां अंग प्रसाद विक्ररा. पांचे अंगे पहेरवाना पोषाकनी बक्षिस

पंचुत्तर *ऐतिका.* पांच अनुत्तर विमान [देवलोक] [जै.]

पंचुंबरि *षडाबा.* उंबरी वगेरे पांच अखाद्य फल (सं.पंच+उदुम्बर)

पंचेटौ *जिनरा*. [पांच लखोटीओथी रमाती] बाळकोनी एक रमत [रा.पचेटी] **पंचेतालीस** *षडाबा.* पिस्ताळीस (सं.पंच-चत्वारिशत्) **पंचेंत्री** *गुर्जरा.* पंचेन्द्रिय, पांच इन्द्रिय **पंजर** *आरारा. वीसरा. शंगामं.* हाडपिंजर (सं.); *गुर्जरा*. पांजरुं (सं.) **पंजेठी** जुओ पजोडी **पंड** *अखेगी.* पिंड, देह-पूद्गल **पंडत** *चतुचा*. पंडित, डाह्या **पंडिय** *ऐतिका*. पंडित **पंडियर** जिनरा. वीसरा. पंडित पंडु षडाबा. फिक्ट्रं, [लोहीनी ओछपवाळुं] (सं.पांडु) **पंडरउ** वीसरा. धोळो, फिक्को (सं.पांड्रर) **पंड्रच** *चित्तसं.* पिंड, शरीर, पदार्थ **पंड्या** वीसरा, पंडित **पंड्यांस** उक्तिर. पंडितवर (सं.पण्डित-मिश्रः) पंति ऋषिरा. जिनरा. प्राचीफा. लावल. श्रेणी; पंगत (सं.पंक्ति) **पंथकशाला** क्रिया, मार्गमांनी धर्मशाळा. [पथिकशाळा] (सं.) **पंनरिप** प्राचीफा. फरी वार (सं.पुनरिप) पंपाल आरारा. खोटुं, व्यर्थ, मिथ्या (रा.); प्रपंच, कपट (रा.) **पंपोटा ***उपवा. [बहुबीजवाळी एक वनस्पति] **पंपोटा** *उषाह. सम्यची.* परपोटा; जुओ

पा नरका. तरफ **पा** *उषाह*. पग (सं.पाद) **पाअती** अखाका. पाती, पिवडावती **पाइ** *प्रबोप्र. वसंफा. वसंवि. वीसरा.* पग (सं.पाद) **पाड** *आरारा. वीसरा*. पामे **पाइउ** *लावल.* पायेलो, पिवडावेलो 👚 पाइक आरारा. उक्तिर. नलरा. षडाबा. पगे चालनार सैनिक (सं.पादातिक) **पाइकी** अंगवि. सुभटता, वीरता पाइणि उक्तिर. पोयणी (सं.पद्मिनी) पाडवलां प्रबोप्र. प्यादां, पायदळ, पदाति सैनिको] (सं.पाददल) **पाइली** उक्तिर: पाली, अनाज मापवा माटेनुं वासण (सं.पल्ली) **पाइसि** *आरारा*. पामशे **पाइं** कादं(शा). -ना करतां (सं.पक्षे) **पाइंड** लावल. पायामां **पा**उ *चंद्रवा*. पाम्यो **पाउ** *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* पग (सं.पादु) **पाउधारउ** गूर्जरा. प्राचीका. षडाबा. पधारो (सं.पाद+ध्) **पाउध्यारु** *अंबरा*, पधारो **पाउल** *उक्तिर.* पाटल पुष्पछोड (सं.पाटला) **पाउल** नरका. पग; प्रद्युचु. *सिंहा(म). नर्तक **पाउंछणउं** *उक्तिर, प्राचीसं, षडाबा*, पाय-लूछणुं, जैन मुनिओ भोंय साफ करवा वापरे छे ते पोंछणूं (सं.पादप्रोंछनक)

पपोटा

पाक अत्र कादं(ध्र). पकवान, [धी-तेलमां तळेली स्वादिष्ठ वानगी] [सं.पक्व] पाकउ षडांबा. पकवेलुं, चूले चडावी मीठाई-रूप बनावेलुं (सं.पाक)

पाखड़ आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. लावल. वाग्भबा. षष्टिप्र. विना (सं.पक्षे, पक्षस्मिन्); उक्तिर. लावल. पासे, आजुबाजु; लावल. पखवाडियामां

पाखखमण उक्तिर. पंदर दिवसना उपवास (सं.पक्षक्षपणम्)

पाखतियां *षडावा.* पाछळ रहेला, [आजुबाजु रहेला] (सं.एक्ष परथी)

पास्तती *ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. *विराप. हम्मीप्र. आजुबाजु, बाजुमां, पासे (सं. पक्षती)

पाखर आरारा. उक्तिर. ऐतिका. कस्तुवा. कृष्णवा. नरका. प्रेमाका. लावल. वीसरा. हाथीघोडानो साज, जीन, बख्तर, पलाण (*सं.पक्षर) [सं. उपस्कर]; प्रद्युचु. घोडानी एक जात

पाखरिया अगवि. ऐतिका. गुर्जरा. चारफा. नरका. प्रद्युचु. प्रेमाका. *विराप. वीसरा. जीन, बख्तर, आदिथी सञ्ज कर्या (*सं. प्रक्षर; दे.पक्खर) [सं.उपस्कर]; प्रेमप. धोडा

पाखरीआ ऋषिरा. *विमप्र. पाखर - बख्तर वगेरेथी सञ्ज थयेला (दे.पक्खरिअ)

पाखन वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). पडखुं (सं.पक्ष)

पाखलइ, पाखलि अंबरा. आरारा. उक्तिर.

उषाह. कादं(ध्र). कादं(शा). *जिनरा. नरका. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. ललिरा. शृंगामं. हारिवि. आसपास, चारे तरफ, फरता (सं.पक्ष-) पाखित (चहु पाछीत) कृष्णवा. चोपास पाखनीआ कृष्णच. फरता, आसपास पाखाण उपवा. दशस्कं(१). षडावा. पाषाण

पांखाज उपवा. दशस्क(५). प्रज्ञाना. पाजाज पांखा अंगवि. कादं(शा). प्राचीका. प्रेमप. रुस्तस. विना (सं.पक्षे)

पाखियउ *प्राचीसं*. पक्षी

पाखी अखाका. चंद्रवा. नंदब. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा). विना (सं.पक्ष)

पाखी उपबा. षडाबा. पखवाडिक दिवस, [चौदश] (सं.पाक्षिक)

पाखे अखाका. कामा(शा). चतुचा. चित्तसं. दशस्कं(९). दशस्कं(२). देवरा. नरका. प्रवोप्र. ैप्राचीसं. मदमो. मोसाच. षडावा. हरिख्या. विना (सं.पक्ष)

पाग तेरका. पाज, सोपानपंक्ति

पाग अखाछ. कर्पूमं. कादं(शा). गुर्जरा. चंद्रवा. दशस्कं(१). नलरा. नलाख्या. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमप. प्रेमाका. मदमो. लावल. पग (सं.पादाप्र)

पाग जिनसः पाघडी

पाग छबे अखाका. पग स्पर्शे, [पग मूके], सुधी पहोंचे

पागि: अभिक. पेंगडामां (सं.पादाग्र> पाग+ड); जुओ पाघडे

पागरण अभिक्त. चंद्रवा. हरिख्या. ओढणुं [दे.पंगुरण]; जुओ पागरण **पागरुण** *कस्तुवा.* *पाघडुं, [ओढणुं]; जुओ पागरण

पागोहरी उषाह. पगी, [पगपाळो सिपाई, चोकीदार]

पाग्य मदमो. पग [सं.पादाग्र]

पाघडलां *लावल. स्त्री*ओना पगना कांडा उपर पहेरवानां घरेणां [दे.पागडा]

पाघडे रुस्तसः पेंगडे; जुओ पागडि

पाचइ प्राचीफा.परिपक्यथाय, पाके; उक्तिर. कादं(ध्र). कादं(शा). प्राचीसं. रंघाय, शेकाय (सं.पच्यते)

पाछड़ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा.* पाछळ, पाछुं: *प्राचीसं.* पछी (सं.पश्चात्)

पाछणी सिंहा(शा). सजायों [रा.; दे.] पाछणील गूर्जरा. पाछळथी (सं.पश्चात्त्व)

पाछिलउ *षडाबा.* [पाछ**ुं,** पछीनुं], छेवटनुं, *उक्तिर. उपबा.* पाछलुं, पाछळनुं, अगाउनुं (सं.पश्च परथी)

पाछित उक्तिर. उपवा. कादं(शा). गुर्जरा. पाछळ

पाष्टितुं उक्तिर. उपबा. षडाबा. पाछतुं (सं. पश्च परथी)

पाष्टुं कर्युं चित्तसं. छोड्युं

पाहुं रह्युं *चित्तसं*. बाकी रह्युं

पाष्ट्रं नलाख्या. [-थी, पाछळ, पूर्वे], सुधी (सं.पश्चात्)

पाष्ट्रं कहाव्यानी शंका कादं(ध्रु). तिरस्कार-नी बीक

पाछेर**ं** *षडाबा.* पाछोत्तरुं, पछीथी थतुं पाछेबाणु, पाछेबाणुं, *उक्तिर.* पाछळ तरफनुं (सं.पश्चादनीकम्)

पाछोपउ प्राचीसं.?, [(वंशना) पाछला क्रमे] पाज अंगवि. आनंस्त. "नरका. "प्रेमाका. "लावल. पगदंडी, सेतु (सं.पद्या); "अखाका. जिनरा. तेरका. सोपानपंक्ति, सीडी

पाजणी *उक्तिर.* पीणुं, पेयपदार्थ, कांजी (*सं.पर्यायणिका)

पाट उषाह. दशस्कं(१). प्रेमाका. वीसरा. कीमती यस्त्र, रेशमी वस्त्र (सं.पट्ट)

पाट वीसरा. मदमो. [राज]गादी, सिंहासन; बाजोठ (सं.पट्ट); *वीसरा.- [पाटवी, मुख्य]

पाटउ उक्तिर. पाटो (सं.पट्ट); *वीसरा*. पाटियुं (सं.पट्ट)

पाटघायो *सिंहा(शा).* राजवी उपर घा [सं. पट्ट+घात]

पाटण नलरा. पंचवा. प्राचीफा. षष्टिप्र. नगर (सं.पत्तन); वीसरा. पाटण नामनुं नगर पाटणपोळ अखाका. मुख्य पोळ, [नगरनो दरवाजी]

पाटर प्रद्युद्ध. ?, [*घोडानी कोई जात]; जुओ पटेरो

पाटल नलरा. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यों हतो

पाटलंड *उक्तिर.* [*पाटले बेसाडी करातो सत्कार] (सं.पाटाचारः)

पाटलीउतार *हम्मीप्र.* पाटियाउतार, उत्तम घोडानुं एक विशेषण

पाटवट मदमो. गादीनो अधिकार

पाटा *गुर्जरा.* पाटला; राजगादी (सं.पृष्ट) **पाटा चहे "अखाका.** [घा करवा मागे] **पाटि** *उपबा*. पाट (सं.पट्ट) **पाटियाळो** *प्रेमाका. [घणी सेरनी गूंथणी-वाळो षादू ऐतिका. पट्ट, सुन्दर वस्त्र, [रेशमी वस्त्र] **पादुआली** उक्तिर. पादप्रहारिणी, पादु मारती **पाटोतरी** *चंद्रवा*. पाटवी **पाटोधर** प्रेमाका. पाटवी; ऐतिका. पदधारक, [पाट – गुरुगादीना अधिकारी] **पाठग** *प्राचीका.* ब्राह्मणनी अटक (सं.पाठक) पाठविड आरारा. षडावा. गुर्जरा. वीसरा. मोकल्यो (सं.प्रस्थाप्) **पाठी** *प्रेमाका*. पाठ करनारा पाठी अभिक. [निशाळियानी] पाटी, स्लेट **पाठीन** ऋषिरा. ते नामनुं जलचर प्राणी, [एक जातनं माछलुं] **पाठे आवडे** *प्रेमाका*, मोढे आवडे **पाड** *प्रेमाका. शुंगामं*. उपकार पाड सिंहा(शा). समीपमां, [पासे]; वीसरा. पड़ोशनी **पाउ** *गुर्जरा*. पडो, नगारुं (सं.पटह) **पाउइ (लेखे पाडइ)** जिनरा. हिसाबमा नाखे, [खाते मांडे, उधारी नाखे] पाडउ उक्तिर. चंद्रवा. कामा(त्रि). जिनरा. देवरा. प्रेमाका. पाडो, महोल्लो (सं. पाटकः); जुओ पाडि पाडल आरारा(व). ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). शुंगामं.

(सं.पाटल) **पाडल** लावल. पाटलिपुत्र नगर पाडल-तूण हरिवि. पाटलपुष्परूपी भाधो **पाडलपुर** आरारा. पाटलिपुर नगर पाडलिय**. पाडलीय** आरारा. तेरका. प्राचीफा. पाटलिपुत्र, मगधनुं प्राचीन पाटनगर पाडा दुहे जुओ दुहे रे पाडा **पाडि प**डावा, विस्तार, अधिकारक्षेत्र (सं. -पाट, पाटक); जुओ पाडउ पाडिहारू उक्तिर. साधुथी अमुक समय राखी गृहस्थने पाछी आपी शकाय तेवी वस्तु (सं.प्रातिहारिकम्) [जै.] पाइउं, पाइउं दशस्कं(१). "ग्रेमाका. खराब, कडवे: *उपबा. "उषाह. कादं(शा). नलरा. श्रंगामं*. खराब, हलकुं, नठारुं; *"ऋषिरा. कर्पूमं. षष्टिप्र. खराब,* अशुभ, अनिष्ट (सं.*पातुक) **पाढ** **प्रेमाका. वेताप*. पहाड **पाढ** उक्तिर, मांचडो पाप अखाका. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. हरिख्या. हाथ (सं.पाणि); जुओ पान **पाण** *आरारा*. पाणी [सं.पानीयम्] **पाण** *उक्तिर*, पीणुं (सं.पानम्) **पा'ण** *अखाछ*. शिला, पथ्थर [सं.पाषाण] **पाणिह, पाणही वीसरा**. जोडा (सं.उपानह) **पाणिवेत्र कादं(शा)**. वेत्रपाणि, हाथमां वांस-नी छडीवाळुं [सं.] **पाणिहारि** विमप्र. पनिहारी [सं.पानीयहारी]

पाणीरसउ उपवा. एक प्रकारनो रोग (सं.

राता रंगनुं एक फूल के फूलझाड

पानीय+रस)

पाणीवल *जिनरा. [क्षणेक, टूंको समय] पाण्य, पांण चतुचा. चंद्रवा. चित्तस्ं, प्रेमपः पाणि, हाथ

पात *आरारा.* निष्फळता (सं.); *हरिख्या*. नाश; पडवुं ते

पातगी *प्राचीसं*. पातकी, [पापी]

पातरां, पांतरां देवरा. [जैन साधु वापरे छे ते] लाकडानां वासण (सं.पात्र)

पातरिति *आरारा*. छेतरीश (सं.प्रतार्)

पातरी *नरका. हरिख्या.* पांदडामां वाळेलो फूलनो बीडो (सं.पत्री)

पातिल *प्राचीसं*. पातळ

पातिकया *प्रेमाका*. सुंदर, देखावडा

पातंजली *दशस्कं(१). प्रेमाका.* पातंजल योगसूत्र

पातांजली *चित्तसं.* पतंजलिनुं, पतंजलिए रचेलुं शास्त्र

ापातिक, पातीक दशस्कं(१). देवरा. नरका. मदमो. सिंहा(शा). पातक, पाप

षात्र अभिकः. अंबराः. *आराराः. *ऋषिराः. नलराः. प्राचीकाः. प्राचीसंः. विक्रराः. सिंहा(म). हम्मीप्रः. नर्तकी

पात्रउ उक्तिर, पात्र

पात्रां *उपवा*. पात्र, वासण

भात्रांख काम *उक्तिर.* पात्र — वासणनुं प्रक्षालन (सं.पात्राणां कल्पः)

पायज उक्तिर. एक माप, परिमाण (सं.प्रस्थः)

पाचर उक्तिर. ऋषिरा. प्राचीफा. लावल. पथ्थर (सं.प्रस्तर)

षायरी वीसरा. "(कीमती) पथ्यर (सं.प्रस्तर),

[*(हीरानी) कोथळी] **पाव्***ऐतिका.* पथिक

पादरियंउ *उक्तिर*. गामडियो (सं.पाद्रिकः)

पादु अखाका. चित्तसं. पग [सं.]

पादुपाणि अखेगी. पग अने हाथ [सं.]

पाच *प्रेमाका. हरिख्या*. सत्कार रूपे पग धोवा ए [सं.]

पात्र उक्तिर. गामडुं (सं.पद्र)

पाधर चतुचा. सीधो, [सरल]; *गुर्जरा. [*खुळखुळा, *पादर] (दे.पद्धर) [सं. प्राध्वर]

पाधर *नरकां*. [पादर], भागोळ, गामनी नजीकनी सीमा [सं.पद्र]

पाधर (पाधरसीह) गुर्जरा. सीधोसट, भली-भोळो; जुओ पाधरसी

पाथरपट *प्रेमाका*. उज्जड मेदान

पाधरसी *जिनरा. [सीधोसट, सरल, भलो-भोळो]

पाधरसीह जुओ पाधर

पाधरि उषाह. खुल्ला मेदानमां; [सीधेसीधुं] (दे.पद्धर) [सं.प्राध्वर]

पाघरं अखाका. उक्तिर. उपबा. कादं(शा). नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा. सीधुं, सरल (दे.पद्धर) [सं. प्राध्वर]; षष्टिप्र. सामान्य कोटिनुं; सीधुं, (अवकुं नहीं ते); सीधुं, [शुद्ध]

षाधारख गुर्जरा. पधारो; जुओ पाउधारो *पान (पाण) *हिरख्या. [हाथमां] (सं.पाणि) पानडां उपबा. पांदडां [सं.पर्ण] पानडी अभिक. पांदडी, वनस्पतिनी पातरी

(सं.पर्णिका); *नरका*. पाननी भातवाळी पाननो बीडलो गळवो अखाका. चाव्या विना पान खावुं, [सार विनानी क्रिया करवी]; जुओ बीड्यां पान ज गळवां **पान-बीड** *प्राचीसं*.पानबीडुं [सं.पर्ण+वीटिः] **पानही** *आरारा.* पगरखां (सं.उपानह) पानेत्र, पानेत्रो *लावल, विमप्र*, पानेतर, लग्नविधि वखते पहेरवामां आवती ओढणी [सं.पारिणेत्र] **पानोठ** *अखाछ*. जारबाजरीनां लांबां पांदडां. पानठ **पान्हज** *आरारा. उक्तिर. विमप्र.* पानो, छातीमां धावण भरावुं ते (सं.प्रस्नव) **पान्ही** *उक्तिर. षडाबा.* पगनी पानी (सं. पाष्णि) **पापइजिनइ** षष्टिप्र. पापने ज (विशे) **पापण** चतुचा. पापिणी, तिरस्कारवाचक शब्द **पापपणास** विकरा. पापनो नाश (सं.पाप+ प्रणाश) **पापांतिक** नलरा. एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो **पामणहार** *आनंस्त*. पामनारा पालणहारो *अखेगी*. पामनारो **पामरी** *नरका. प्रेमप*. *प्रेमाका*. बारीक रंगबेरंगी वस्त्र, दुपट्टा के खेस तरीके वपरातुं वस्त्र, ऊननुं वस्त्र **पामिलुं** उक्तिर, पामवुं (सं.प्राप्तव्यम्) **याम्बिड** *प्राचीसं*. पाम्यो (सं.प्राप्)

विक्रराः वीसराः पग (सं.पाद) **पायउ** ऋषिरा. देवरा. प्राप्त कर्युं **पायक** आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. लावल. विमप्र. विराप. पगपाळा सैनिक (सं.पादातिक) **पायकी** *गुर्जरा.* पातकी, पापी **पायकेसरी** उक्तिर. वासण लूछवानो कपडा-नो दुकडो (सं.पात्रकेशरिका) [जै.] पायटवणं उक्तिर. पात्र मुकवानुं ऊननुं वस्त्र (सं.पात्रस्थापनकम्) जि.] **पायडीउ** गुर्जरा. *प्रकट कर्युं (सं.प्रकटित), [*कोई वाद्य] **पायसान** *दशस्कं(१)*. पायसात्र, खीर **पायसात्र** *प्रेमाका*. दूधमां रांधेलुं अन्न, खीर [ਜਂ.] **पाया** *आरारा. वाग्भबा.* पाय, पग [सं.पाद] **पायाल** अंबरा. आरारा. गुर्जरा. पाताळ **पाये** चंद्रवा. पामतां [सं.प्राप्] **पायो** लावल. पान्यो, मेळव्यो **पार** *आरारा.* उपर, आगळ, चडियात् [सं.] पार काट्य चित्तसं. अंत आण, छेडो आण **पारत्वि** *नेमिछं. विक्ररा.* पारखनार, पारेख (सं.परीक्षक) पारखो मदमो. परखनारो (सं.पारीक्षक; प्रा. पारिक्खय) **पारख्या** *अखाछ***. परख, परीक्षा**ः **पारजातीक नंदब**. पारिजातक **पारणेत्र** *उषाह.* *परणेतर, [लग्न] **पारता** *षडाबा*. पूर्ण करता (सं.पारवति) **पारती** *चारफा*. अ नामना फूलो (दे.पारत्ति) **पारविया** *जिनरा*. प्रार्थना करवावाळा,

पाय्रगुर्जरा. तेरका. देवरा. नलाख्या.

[मागवावाळा]

पारद चित्तसं. पारो [सं.]

पारिध वसंफा. "वसंफा(ब्रा). एक फूलनुं नाम

पारिय नलरा. शिकार, मृगया (सं.पापिद्धि) **पारिय-रंगु** *वसंवि(ब्रा). पारिय नामना

फूल साथे आनंदकीडा]

पारधिवसणु *गुर्जरा*. शिकारनुं व्यसन (सं. पापर्खिव्यसन)

पारियसंगु *वसंवि. *वसंवि(ब्रा)*. पारिधपुष्प-नो संग

पारधी *गुर्जरा*. शिकार (सं.पापद्धि)

पारघीउ *गुर्जरा.* शिकारी (सं.पापर्खीक)

पारशी चंद्रवा. गुप्त बोली

पारशीकर कादं(शा). ईरान(देश), पारसी-ओनो प्रदेश (सं.पारसीक+र)

पारशी-भेद कादं(शा). पारसी, चोक्कसकरेला खानगी अर्थवाळा शब्दोना प्रयोगवाळी बोली

पारश्ववर्ती कादं(शा). नजीक रहेलुं (सं. पार्श्ववर्ती)

पारस *प्रेमाका*. पारसमणि; स्पर्शथी लोढाने सुवर्ण बनावनार मणि

पारस पाखाण *आनंस्त.* पारसमणि

पारस पाहाण *उक्तिर.* पारसमणि (सं. स्पर्श-पाषाण)

पारसी ग्रेमाका. न समजाय तेवी, सांकेतिक

पारासुर *मदमो*. पराशर [ऋषि] **पारांगत** अखाका. संसारनी पार [ज<u>व</u>ं ते] **पारि** *उक्तिर. षडावा*. पार, पेली बाजु, पछी (सं.पारे)

पारिखड आनंस्त. पारखे [सं.परीक्षते] पारिखउ आरारा. ऋषिरा. पारखुं (सं.परीक्ष्) पारिखा विमप्र. परीक्षक

पारेख नरका. पारखुं – प्ररीक्षा करी जाणनार **पारेबो** जुओ परेरो

पार्यंउ *आरारा*. पूरी कर्यो, समाप्त कर्यो [सं.पारितः]

पालइ प्रवोप्र. पाळा [सैनिक] साथे पालउ, पाळउ उक्तिर. नलरा. प्राचीसं. लिलरा. वीसरा. पगे चालतो, पाळो [*सं.पाद+चल]

पालउ अखाका. अखाछ. अखेगी. उक्तिर. बरफ, करो (सं.प्रालेयम्)

पालक नलरा. एक देवविमान, [देवलोक] (सं.)

पालकी *प्राचीसं*. पालखी (सं.पर्यंकिका)

पालटइ उक्तिर. प्रबोप्र. प्रेमाका. वीसरा. शृंगामं. बदलाय, पलटाय, [-मां परिवर्तन पामे]; पलटावे, बदलावे दि. पल्लट्ट; सं.पर्यस्त]

पालटड *अखेगी. उक्तिर. वाग्भबा.* पलटो, परिवर्तन

पालटणां प्रबोप्र. बदलाववानां

पालटिआ *उपवा*. वारंवार बदलावनार (दे. पल्लह) [सं.पर्यस्त]

पालठी *विमप्र. [पलांठी] [सं.पर्यस्तिका]

पालटीकरणु *षडाबा.* ऊभडक पगे के साथळ पर पग चडावी बेसव्

(सं.पर्यस्तिका, प्रा.पल्हत्थिय) पालधी उक्तिर. पाथरणूं (सं.पर्यस्तिका) पालवड आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. पह्नवित थाय. पछवित करे **पालवियां** *प्रेमाका*. साडीना पालव, छेडा सिं.पल्लवी पाला, पाळा *कादं(शा). "गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. विमप्र.* पगे चालनार, पगपाळा सैनिको ["सं.पाद+चल] **पालाट-** *तेरका.* प्रसरवुं (सं.पर्यस्, प्रा.पञ्चट्ट) पालि आरारा. पंक्ति, हार (सं.;रा.) **पालि** उक्तिरः नानुं गामः झूंपडुं (सं.पहिः) **पालि** *लावल. षडाबा.* पाळ [सं.] पालिडी शंगामं. पाळी, [पाळ] (सं.पालि) पालित-सूरि प्राचीसं. पादलिप्त-सूरि **पालिवुं** *उक्तिर.* पाळवुं (सं.पालियतव्यम्) **पालिस्यड** *आरारा.* पळाशे पाली, पाळी *आरारा. *ऋषिरा. प्रेमाका.* छरी (*दे.पालिआ) **पाली** *मदमो.* *पांदडां, [*गरोळी] [सं.पह्लि] **पालुइ** उक्तिर. वाग्भवा. पल्लवित थाय (सं. पल्लवयति) **पालूं** *नलाख्या.* पगपाळुं, [पगपाळा सैनिक] [*सं.पाद+चल] **पाल्यक** *मदमो*. पालक **पाल्यां लाड प्रे**मप. लाड कर्यां, [लाड पूरां कर्या]; जुओ लाड पालवा **पाल्डम्युं** *आरारा*. पल्लवित थयुं . **पाव** *लावल. वीसरा.* पग (सं.पाद्)

पापकर्म, अशुभ कर्म पावइ अखाका. आरारा. उक्तिर. ऐतिरा. *गुर्जरा. देवरा. नरका.* पामे (सं.प्राप्) **पावड़** अभिऊ. पावैयो, हीजड़ो पावटड उक्तिर. जलाशयनो घाट. आरो (सं.पादावर्त) [सं.पादवर्त्मा] **पावडिए** जिनरा. पगथिये [सं.पाद परथी] पावठ *ग्रेमाका. [पगथियां(वाळुं)] **पावडी** *प्रबोप्र*. चाखडी (सं.पादुका) **पावडीआरां** उपवा. ऋषिरा. पगथियां (सं. पाद+पटिक+कार) **पावति** ऋषिरा पामे **पाव रोर** *ऐतिका.* **भयानक पाप, [भारे** पाप] [सं.रौरव पाप] **यावति** *गुर्जरा.* *पगथियामां, [*पगमां] पावलियो दशस्कं(१). • दशस्कं(२). *नरका-२. प्रेमाका*. पग [सं.पाद्र] **पावले** *नरका. रूस्तस***. पगे. पगमां** पावस अखाका. अंबरा. तेरका. दशस्कं(१). प्राचीफा. प्रेमाका. लावल. वरसाद, वर्षाऋतु (सं.प्रावृष्) **पावसकाल** *प्राचीसं*. वर्षाऋत् **पावसि-कालि** शुंगामं. चोमासाना समयमां ***पाव-सिरसि (पावसि रिति) ***लावल. [वर्षाऋतुमां] [सं.प्रावृष् ऋतु] **पाविसु** विक्ररा. पीवडावीशूं [सं.पायय] **पाश** नलाख्या. पासे (सं.पार्श्वे) **पाश** अखाका, प्रेमाका, हरिख्या, फांसो,

पाव ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. चारफा.

बंधन (सं.)

पाषाणभेद *कादं(शा)*. पथ्थरफोड़ी नामनी

वनस्पति, शंखावलीनी भाजी (सं.) **पास** चित्तसं. स्पर्श **पास** *गुर्जरा. नेमिछ. *विमप्र.* पाश, बन्धन, फांसो **पासा(?)** तेरका. [पासे, समक्ष, -नी तुलना-मां, करतां (सं.पार्श्व): जुओ पासे **पासइ** *लावल.* बाजुए (सं.पार्श्व); [पडखे, बाजुमां]; पासे, नजीक पासइ विष्यः. बंधनमां (सं.पाश) **पासउ** *उक्तिर. गुर्जरा.* बंधन, फांसो (सं. पाशकः) **पासउ** *उक्तिर. प्रेमाका.* पडखुं (सं.पार्श्वम्) पासउ अभिक. पासो [सं.पाशक] पासछउ उक्तिर. शिथिलाचारी साधू (जै.) [सं.पार्श्वस्थ, प्रा. पासत्थ] **पासनाह** विक्ररा. पार्श्वनाथ **पासहरा** गुर्जरा. पाशवाळा, बांधवाना दोरडा-वाळा (सं.पाशधर) **पासंग** वेताप. प्रपंच, कपट **पासाइय** *तेरका*. प्रासाद, दहेरुं (सं.प्रासाद **+क**) **पासाकेवली** उक्तिर, पासा फेंकी ज्योतिष जोवानुं शास्त्र (सं.पाशककेवली) पासाथी *पंचवा.* पासेथी, [तरफथी, बाजुए-थी] (सं.पार्श्व) **पासि** देवरा, पामशे

पासि *तेरका*. -नी करतां (सं.पाश्वें); जुओ

पासिक *तेरका*. पासे रहेलो, सिाथी,

पासिष्ठ *अंबरा.* पासेथी पासी उक्तिर. बांधवानी रस्सी (सं.पांशिका) **पासी** मदमो. पासे **पासु *** ऐतिका. [पाश, बंधन] पासुं नरका. पक्ष, [तरफेण]; नलाख्या. प्रेमाका. पडखुं, सहाय, हूंफ (सं. पार्श्वकम्) **पासेस** *ऐतिका*. पार्श्वनाथ [सं.पार्श्वेश] पासो अभिकः पासं, पडखुं, मदद (सं. . पार्श्वक) **पास्तुं** *अखाका.* पस्तुं, उपराणुं, पक्ष (फा.) [फा.पुश्त] ***पास्यां (वास्यां) ***लावल. [वासित कर्यां] **पाष्ठ** *तेरका*. पाश, [बंधन, फांसो] **पाहड्** *षडाबा.* **पासे, द्वारा;** *षष्टिप्र.* **-ना करतां**; **उपबा.* [-ना करतां; द्वारा, वडे] (सं.पार्श्वेन); जुओ पासे **पाहण** *गुर्जरा. षडाबा.* पाषाण, पथ्धर; उक्तिर, घंटीनो पथ्थर पाहणिया उषाह. पथ्थरियां (सं.पाषाण उपरथी) **पाहरी** *उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* रक्षक; [चोकीदार, पहेरेगीर] (सं.प्राहरिकः) **पाहरीं** *उक्तिर.* पहोरे [सं.प्रहर] **पाहरू** *उक्तिर*. चोकीदार, पहेरेगीर (सं. प्राहरिकः) पार्हति षष्टिप्र. [-थी, वडे]; पासे; द्वारा; [-ना करतां] (सं.पक्षतः) **पाहाण** *उक्तिर. उपबा.* पाषाण, पथ्थर **पाहि, पार्हि** *गुर्जरा.* द्वारा, पासेथी; *०उषाह*.

पक्षपाती] (सं.पार्श्विक)

पास, पाहड

नेमिछं. विक्ररा. पें, -थी, -ना करतीं (सं.पार्श्वे); जुओ लोक पाहिं, शिष्य पाहिं

पाहिड नलरा. -ना करतां; पासे [सं.पार्श्व] पाहिं जुओ पाहि

पाहुणा *शृंगामं. हम्मीप्र.* परोणा (सं. प्राघूर्णक)

पाहुणी ऋषिरा. महेमान (स्त्री) (सं. प्राघूर्णिकी)

पाहे पंचवा. पासे (सं.पार्श्वस्मिन्) **पां** प्रेमाका. -पें. -ना करतां

पांइ प्रबोप्र. [पास, द्वारा]; -ना करतां (सं. पार्श्वे)

पांउ *प्रेमाका.* पग [सं.पादु]

पांके अखाका. *अखाछ. पंकाय, वखणाय; अखाका. *पहोंचे, [प्रसिद्ध थाय, प्रगट थाय]

पांखिया *षडाबा.* पक्षी

पांसु *दशस्कं(१). प्रेमाका*. पासेनुं, पडखेनुं **पांसुडी** *वसंवि*. पांख (सं.पक्ष)

पांखोदुं दशस्कं(१). प्रेमाका. पांगोठुं, बावडुं **पांगरज** *ऐतिका*. विहार करवो, [जवुं]

पांगरण *प्राचीसं*. [पागरण, ओढणुं, पछेडी] [दे.पंगुरण]; जुओ पागरण

पांगरो "प्रेमाका. [चोटलानी सेर, लट] पांगुरइ उक्तिर. ओढणुं ओढे [दे.पंगुर] पांगुरणच उक्तिर. ओढणुं, पछेडी [दे.पंगुरण]. पांगुरावइ उक्तिर. ओढाडे

पांचयज्ञ *प्राचीफा*. श्रीकृष्णना शंखनुं नाम (सं.पाञ्चजन्य) पांचली प्राचीफा. पूतळी (सं.पांचाली)
पांच शब्द सिंहा(म). पांच वाद्योनो मंगलसूचक ध्वनि (सं.पंचशब्द)
पांचाली कादं(शा). ढींगली, [पूतळी] (सं.)
पांजरी *प्राचीफा. [पींजरिया, वहाणना खूवा

उपर बेसी तपास करनार] (सं.पञर परथी)

पांडर *प्राचीसं.* ?, [*फिक्कुं] **पांडरउ** *उक्तिर. कादं(ध्र).* धोतुं, फिक्कुं (सं. पांडुर)

पांडव उषाह. अश्वपाल पांडुरा नरका. धोळा, फिक्का पांडुरोग नरका. कमळो [सं.] पांण मदमो. हाथ (सं.पाणि); जुओ पाण्य पांणही वेताप. पाणवी, पथरी, (अही) पेटमां बंधातो गट्ठो [सं.पाषाण]

पांतरइ जिनरा. ठगाय, छेतराय; ठगे, छेतरे; [छेतरामणीथी, भूलथी] [सं.प्रतार्] **पांतर**ज जिनरा. प्रमाद, भूल, [छेतरामणी]

पांतरा जुओ पातरा

पांति उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. पंक्ति, हार, पंगत; लावल. पंक्ति, लीटी

पांति, पांती *नरका. नरप(द)*. प्रकार, बाजु (सं.पंक्ति)

पांते श्रेमाका. बाजुए, [समुदायमां] पांनिहयां जिनरा. पगरखां [सं.उपानह] पांभडी उक्तिर. पामरी, उपरणो पांभरी ऐतिका. वस्त्रविशेष, [पामरी, उपरणो]

पांलंणे चंद्रवा. पालणामां, [झूलामां] [सं.

पालनी **पांशु** कादं(शा). घूळ (सं.) पांसड वीसरा. पासो (सं.पाश-) **पांसुली** उक्तिर. पांसळी दि.पंसुलिया; पार्श्वी **पांहण** ऋषिरा. पाषाण, पथ्थर **पांहनी** ऋषिरा. पगनी पानी (सं.पार्ष्णि) पांहि, पांहिइ आरारा. ऋषिरा. प्रद्युत्तु. ना करतां, -थी [सं.पार्श्व]; *अखाका*. *ऐतिरा*. पासे **पिअबंध** *उषाह*. पद्यबंध **पिअ-हर** *प्राचीसं*. पियर (सं.पितृगृह) **पिआल** अभिक, प्राचीका, पाताळ **पिउ** *प्राचीसं*. पिता पिकवयणी कादं(शा). कोयलनां जेवां मीठा वचनवाळी, (सं.पिकवचना) **पिका** वसंफा. वसंवि. कोयल (सं.पिक) **पिकारव** वसंवि(ब्रा). कोयलनो अवाज पिक प्राचीसं. धूंकवुं ते, पिचकारी; जुओ पीक **पिक्खड** *तेरका. नेमिछं. प्राचीफा.* पेखे, जूए (सं.प्रेक्ष्) पिक्खह ऐतिका. [पेखो], जुओ, देखो पिक्खिन, पिक्खेनि ऐतिका. कृष्णवा. जोईने पिखणय ऐतिका. दृश्य, [तमाशो] [सं. प्रेक्षणकी **पिखेवि** *ऐतिका.* जोईने पिछोडी प्रेमाका. पछेडी, ओढवानुं वस्त्र

थयो (सं.प्रविष्टकः) **पिडार** वीसरा. गोवाळ (सं.पिंडार) **पिडाविसिइ** *पडावा.* पीडा आपशे पिण, पिणि आरारा. ऐतिका. प्राचीफा. वीसरा. पण (सं.पुनः, पुनः अपि) पिण्डखजूर उक्तिर. एक जातनी मीठी खजूर (सं.पिण्डीखर्ज्रम्) **पिण्डत** *प्रबोप्र*. विद्वान (सं.पंडित) **पितर** *उक्तिर*. माबाप (सं.पितरः) **पित्राण** *दशस्कं(१)*. पितराई **पित्री** प्रेमाका. पित् **पित्रेण** प्रेमाका. पितराई **पिपील** अखाका. कीडी (सं.पिपीलिका) **पिपीलिका** *प्रेमाका*. कीडी [सं.] **पिम्म** *ऐतिका. शुंगामं*. प्रेम **पिय** *गुर्जरा*. प्रिय; पिता **पियर** *प्राचीसं*. पिता [सं.पितृ] **पियरपनोती** *प्रेमाका*, भाग्यशाळी पियर-वाळी **प्रिया** *आरारा.* पिता (प्रा.) **पियाण** *कर्पूमं. *चारफा. प्राचीसं*. प्रयाण, क्च **पियामह** *गुर्जरा.* पितामह **पियारउ** *वीसरा*. प्यारुं [सं.प्रियतर] **पियारी** अखाछ. नरका. प्रेमाका. पराई **पियुता** *नरका.* **पीधा (म.) पिर** *प्राचीका*. पेर, पिठे (सं.प्रकार) **पिराण**ज *उक्तिर, षडाबा,* होरने हांकवा माटेनो परोणो (सं.प्राजन) **पिराद्ध** *उपवा. प्राचीसं*. परायो, पारको

पिठउ *कादं(शा). नलाख्या.* पेठो, दाखल

पिरि *आरारा. नलाख्या. प्राचीका*. प्रकारे, पेरे, रीते **पिरिथिम** *प्राचीसं.* पृथ्वी **पिरु** *षडाबा.* परु **पिरोजा** *प्रेमप*. एक प्रकारनुं तेजस्वी रल [फा.पीरोजः] **पिल्ल-** *प्राचीसं*. नाखी देवुं (सं.प्रेर्) [दे.पल्ल] **पिशी** *प्रबोप्र.* प्रवेश करी (सं.प्र+विश) **पिशु** *प्राचीफा*. पश्, प्राणी **पिशुनता "**प्रेमाका. [निंदा, चुगली, द्रोह, दुष्टता] (सं.) **पिष्ट** हरिख्या. लोट (सं.) पिसी अभिकः पेसी (सं.प्रविश्य) **पिसुन** *ऐतिका.* दृष्ट [सं.पिशून] **पिहाण** *प्राचीसं*. आच्छादन, ढांकण (सं. पिधान) पिहिति आरारा. ?, रांधेली दाळ, लचको]; जुओ पहिति **पिहिरइ** नलाख्या. पहेरे (सं.परिधा-) पिहिरण कादं(ध्रू). *कादं(शा). *नलाख्या. पोशाक, पहेरवेश (सं.परिधान) **पिहिरामणी** *नलाख्या*. पहेरामणी, भिटो (सं.परिधापन) **पिहिराबीया** *आरारा*. पहेरामणी – भेट आपी **पिहिलूं** *नलाख्या*. पहेलूं, प्रथम (सं. प्रथ+ इस्र)

पिंगल *प्रेमाका.* पीळा रंगनी, भूखरी [सं.] **पिंगाणी** उक्तिर, प्रेमाका, कंकावटी (सं. पिंगाणिका) **पिंजरिय** *तेरका*. रातुं बनावेलुं (सं.पिञ्जरित) **पिंडखजूर** जुओ पिण्डखजूर **पिंडत** जुओ पिण्डत **पिंडल** *कादं(शा)*. पिंडाकार, फींडलुं, वींटो **पिंडार** *प्रेमाका.* गोवाळ [सं.] **पिंडारणी** *प्रेमाका*, गोवाळण **पिंडार्ह** *नरका.* गोवाळियो, भरवाड **पिंडित** *आरारा.* पंडित **पिंड्य** *चित्तसं*. पिंड, शरीर, रूप **पिंड्यांणी** *आरारा*, पंड्याणी, ब्राह्मणी **पीअली** लावल. पीयळ, कपाळमां लगाडवा-मां आवती अर्चा [सं.पीत परथी] **पीआणउं** *नलरा. विमप्र.* प्रयाण, कूच **पीआरडी** *नलरा***. बीजानी. परार्ड (सं.** पराक ?) पीआरुं कादं(शा). चतुचा. नरका. मदमो. विमप्र. पारकूं, परायुं **पीआंण** ऋषिरा. प्रयाण **पीउ** *मदमो.* प्रियतम (सं.प्रिय) **पीउला** *नरका.* **पीधूं (म.) पीक** *नरका-२.* कोयल [सं.पिक] पीक वीसरा. पान - तांबूलनो रस, [पिचकारी]; जुओ पिक **"पीखल (पीलख)** *उपवा*. वृक्षविशेषनुं नाम पीछोकडि आरारा. पछवाडे. पाछळने भागे पीजहलं उक्तिर. पेय, पीणुं (सं.पेयफलम्) **पीटणउ** *उक्तिर.* पीटबुं ते (सं.पिट्टनम्)

पिहिल्युं *आरारा.* पहेलां (सं.प्रथिल्ल)

पिहुलपणि *षडाबा.* पहोळाईमां

पिहुलउं *उक्तिर. षडाबा.* पहोळुं (सं.पृथुल)

पिहेर, पीहर *प्रेमाका*. पियर (सं.पित्तगृह)

पीय *गुर्जरा. प्रद्युच्*. पिता

पीठ *प्राचीसं.* बजार [सं.] **पीठमर्वक ***नलरा. [राजाने प्रसन्न राखनार सहायक मित्री (सं.) **पी**ड कामा(त्रि). पिंड, शरीर पीडि *उपवा. चतुचा*. कचडे, दबावे, दुःख आपे. [रिबावे, सतावे] (सं.पीडयति) **पीढी** *उक्तिर* पीढियं, मेडाना टेकानुं आडुं लाकडुं (सं.पीठिका) **पीण** *गुर्जरा.* पुष्ट (सं.पीन) **पीतकार विक्र**राः सोनी [सं.] पीतपटोली ऋषिरा. पीळा रंगनुं नानुं पटोळुं (सं.पीतपटदुकुली) **पीतरांण** *वेताप*. पितरार्ड पीतरियल, पीतरील *लिकर. लावल.* पितराई (सं.पितृच्य) पीत्राणी *उक्तिर.* पितराईनी पत्नी (सं.पित्-व्यपत्नी) **पीत्री** मदमो. पितु पीत्रीयउ *उक्तिर. गुर्जरा.* पितराई (सं.पित-व्यक) **पीन** *आरारा. नरका.* पुष्ट, भरावदार (सं.) **पीपलरी पीपी** उक्तिर, पीपळाना पाननी भूंगळी, पिपूडी **पीपलि** *उक्तिर*, पीपर, औषधि तरीके वपराती वनस्पति (सं.पिप्पली) **पीपलीमूल** उक्तिर. पीपरीमूळ (सं. पिप्पली-

पीयगण हम्मीप्र. प्रियना गुण पीयल प्राचीसं. पीळुं; नरका. स्थूलिफा. कपाळमां करवामां आवती अर्चा (सं. पीत) पीयाण, पीयाणउं अंबरा. कृष्णच. गुर्जरा. ललिश, विक्ररा, विराप, षडाबा, प्रयाण, कूच **पीयाम्ह** गूर्जरा. पितामह **पीयारुं** अखाका. लावल. पारकुं **पीयावो** नंदब, पाणी पादानो कर **पीराआ** *मदमी*, परायां **पीरीयख**्य*गूर्जरा*. परीक्षित **पीरोजी** हम्मीप्र. पिरोजशाहे पडावेली (महोर) पीळक दशस्कं(१). प्रेमाका. पीळाश, फिकाश, पांडुता पीलख जुओ पीखल **पीलुक** षडाबा. पीलुन् झाड **पीळ्यां** प्रेमाका. पियलनी - कंकुनी अर्ची-वाळां कर्यां **पीव** *अखाका*. प्रिय. स्वामी पीवर ऐतिरा, वसंफा, वसंफा(ल), वसंवि. वसंवि(ब्रा). पृष्ट (सं.) **पीष्ट** मदमो. [जोटन्] पीठुं [सं.पिष्ट] पीहर आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नलरा. नलाख्याः नेमिछः पंचवाः प्राचीफाः *प्राचीसं, विक्ररा, भीसरा, षडाबा,* पियर

(सं.पितुगृह); *सिंहा(शा)*.पियर, आश्रयः

पीपी जुओ पीपलरी पीपी

पीमळ प्रेमाका. परिमल, सुगंध

मूल)

पीमळे नरका. सुगंध फेलावे (सं.परिमल्) पीहल मोसाच. कंकु - चंदननी अर्चा;

स्थान

जुओ पीयल **पीहो** वेताप. पीयो, जळोदर **पींगाणड** उक्तिर. हरताल, गोरोचन के कंकु (सं.पिंगाणम्) **पींछ** *उक्तिर.* पींछुं (सं.पिच्छम्) **पींजणड** उक्तिर. पींजवानुं यंत्र (सं. पिञ्जनम्) **पींजणी** *प्रेमाका*. गाडाना पैडा उपरनुं ढांकण **पींडार** उक्तिर. दशस्कं(१). नरका. गोवाळ, भरवाड (सं.पिंडार) **पींडारडा** *गुर्जरा. विराप.* गोवाळिया [सं. पिंडार] **प्रकार** *विक्ररा.* ढंढेरो, जाहेरात] पुख कस्तुवा. पोक [सं.पुथुक] पुख वीसरा. पुष्य नक्षत्र **पुखणां** *विक्ररा*. पोंखवुं ते [सं.प्रोक्षन] **पुखराग** *सिंहा(शा).* पुष्करराज, पोखराज, एक किंमती पथ्थर, रत्न **पुखाधन ****सिंहा(शा)*. [मळ ज्यां भेगो थाय ते खाडो] [त्.पुख=मल] **पुरा।** *आरारा.* पहोंच्या, पूरा थया पुम्पल जिनरा. पुद्गल, [रूपादिविशिष्ट द्रव्य, भौतिक पदार्थ] जि.] **पुष्या** *अंबरा*. पहोंच्या [सं.पूर्यते] **पुछदंड** *गुर्जरा.* दंड जेवा पूंछडा साथे, [ऊभी पृष्ठडीए] (सं.पुच्छदंड) **पुजनीक** *दशस्कं(२)*. पूजनीय पुट्टलिका वडाबा. पोटली (सं.पुट परथी) पठ बोले *मदमो*. पीठ पाछळ निंदा करे पुडइनि *प्राचीसं*. कमलिनी (सं.पुटकिनी)

पुडउ *उक्तिर.* पडो (सं.पुटकः) **पुढ** *कादं(ध्र)*. मोटुं [सं.प्रौढ] **पुढइ** नलरा. नलाख्या. पोढे, सूए (सं.प्रवर्धते; दे.पवड्रढ) **पुण** *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* पुण्य पुण आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वाग्मबा. विमप्र. षष्टिप्र. पण, परंतु, वळी, [तो] (सं.पुनः) **पुणइ, पूणइ** **गुर्जरा. *विराप.* [फूलेफाले; अनिष्ट करे] [रा.पूणणौ; सं.पृणाति] **प्रणति** *ऐतिका***. पवित्र करे छे [सं.प्**नाति] **पुण पुण** *उक्तिर.* वारंवार [सं.पुनः पुनः] **पुणा** *उपबा*. पण (सं.पूनः) **पुणि** *आरारा*. पण; वळी (सं.पुनः); *षडाबा.* वळी **पुणु,** *तेरका*. वळी, (सं.पुनः) **पुण्य पर्वणी** *ग्रेमाका.* **प**वित्र, पर्वनो *–* तहेवारनो दिवस पुण्यसिलोक सिंहा(म). उत्तम कीर्तिवाळो (सं.पुण्यश्लोक) **पुतिनका** अखाका. पूतळी [सं.पुत्र] **पुतार** नलरा. सिंहा(म). हाथीनो महावत; जुओ पुहुतार **पुत्त** गुर्जरा. देवरा. तैरका. षडाबा. पुत्र पुत्तपुत्तेहिं लावल. पुत्र अने पौत्रो वडे **पुत्तलिअ** तेरका. पूतळी (सं.पुत्र+ल+इका) **पुद** *मदमो*. कूला [सं.पुत, पूत]; जुओ पूंद **पुदगल *** गुर्जरा. देवरा. शरीर (सं.पुद्गल) पुद्रगल *ऐतिका. [शरीर] पुनरपि अखाका. अखाछ. फरीफरी,

जन्ममरणना फेरा **पुनरपे** प्रेमाका. पुनरपि, फरी वार **पुनिम** *षडाबा*. पूनम (सं.पूर्णिमा) **पुत्र** *आरारा. गुर्जरा*. पुण्य **पुत्र** *गुर्जरा*. पूर्ण, परिपूर्ण **पुत्रवंत** *तेरका.* पुण्यवंत **पुत्राग** *आरारा. (व)*. ऊंडी, रक्तकेसर (सं.पुं-नाग) पुनिम, पुनिमा तेरका. लावल. पूनम (सं. पूर्णिमा) **पुन्य-पसाय** दशस्कं(२). पुण्यनी कृपाथी, पुण्यने प्रतापे [सं.पुण्यप्रसाद] **पुष्फ** *आरारा. कर्पूमं. विक्ररा.* पुष्प पुष्फपडली उक्तिर. पुष्पसमूह, फूलनो नानो करंडियो (सं.पुष्पपटली) **पुष्फरास** *आनंस्त*. पुष्पराशि **पुफ** *प्राचीफा*. फूल (सं.पुष्प) **पुमान** अखाका. पुरुष, नर [सं.पुमान्] **पुर** मदमो. पूरो पुरअहे उक्तिर. पर्वने दिवसे पुरख कामा(त्रि). दशस्कं(२). देवरा. वीसरा. पुरुष **पुरजन्म** *चंद्रवा*. पूर्वजन्म **पुरण** मदमो. पूर्णिमा..? **पुरमांण** रूस्तस. फरमान पुरराउ *गुर्जरा*. नगरना अधिपति, राजा (सं.पुरराज) पुरवष्ठाओ मदमो. [पूर्वछाया], छंदविशेष

पुरस अभिकः, कामा(त्रि). पुरुष **पुरसरि** *आरारा*. परिसरमां, पासे, [पादरे] **पुरहूत** ऋषिरा. इन्द्र (सं.पुरुहूत) **पुरंजन** अखाका. अखेगी. जीव [सं.] **पुरंद्री** *विराप*. परणेली स्त्री, [पत्नी] (सं. पुरन्ध्री) पुरंधिय ऐतिका. स्त्रीओ (सं.पुरन्ध्री) पुराय (शंख पुराय) *प्रेमाका.* [शंख फूंकाय], वागे; जुओ पूर्यो शंख **पुरिस** *तेरका*. पुरुष **पुरिसादानी** जिनरा. "पुरुषोमां प्रधान, [आदरणीय पुरुष] **पुरीसादाणी** *ऐतिका.* "पुरुषोमां प्रधान, प्रसिद्ध, [उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष] [सं.पुरुषादानी] **पुरिसु हेम** सिंहा(म). हेमपुरुष, सुवर्णपुरुष **पुरु** *उक्तिर*. पोर, आगलुं के पछीनुं वर्ष (सं.परुत्) **पुरुषपण** *आनंस्त.* पुरुषपणुं, पुरुषातन **पुरुषरयण** *ऐतिरा*. पुरुषरल पुरुषाक्रम *प्रद्युचु*. पुरुषार्थ अने पराक्रम **पुरुसलउ** *प्राचीसं*. पुरुष पुरुहुणा अभिक. महेमान, अतिथि (सं. प्राघूर्णक) **पुरेंत्री** *गुर्जरा.* वडील परिणीत स्त्री (सं.पुरन्ध्री) **पुरोकउं** उक्तिर. पुराणुं, पहेलांना समयनुं **पुर्ख** *अखाछ. दशस्कं(१)*. पुरुष **पुल-** प्रद्युचु. प्राचीफा. जवुं, पळवुं [सं.पलाय्] **पुलकी** *नेमिछं.* **आनन्द पामी [सं.पुलक्] पुलाइ** *आरारा. गुर्जरा. प्राचीसं.* पळे, जाय,

पुरस उक्तिर. एक पुरुष जेटलुं [ऊंडाई के

ऊंचाईनुं] माप (सं.पौरुषम्)

दूर थाय, नासी जाय (सं.पलायते)
पुलाण हम्मीप्र. पलाण [सं.पर्याण]
पुळाणउ वीसरा. पलायन थयेलो (सं.
पलायते)
पुलाय आनंस्त. पलायन करे, [नासी जाय]
पुलिन नरका. हरिख्या. किनारो, भीनो रेताळ कांठो (सं.)
पुलिया ऐतिका. पळ्या, चाल्या
पुत्रभवि गुर्जरा. पूर्वभवमां
पुत्रकिड ऐतिका. पूर्वकृत
पुश्रम चतुचा. पुष्प
पुष्टं विमप्र. पुष्ट
पुष्ट्य चित्तसं. पुष्टि, पोषण,जामवुं ते, पुष्ट
थवुं ते

पुष्पित अखाछ. शणगारेली, उपरथी मीठी. मलावी-मलावीने रजू थती [सं.]

पुसागो *मदमो*. पोशाक

पुस्तग चंद्रवा. पुस्तक

पुस्तककर्म कादं(शा). पुस्तक लखवानी कळा के पूतळा बनाववानी कळा (सं.)

पुरुष्द ऋषिरा. विराप. पहोंचे [सं.प्रभूत] (प्रा.पहुत्त); आरारा. परिपूर्ण थाय

पुरुचतु नलरा. मोटो, शक्तिशाळी, पहोंचतो

पुहचि *उषाह*. पोंचा उपर

पुरुतं उपबा. गुर्जरा. नेमिछं. पहोंच्यो; ऋषिरा. परिपूर्ण थयो [सं.प्रभूत, प्रा. पहुत्त]

पुरुर, पुरुरा *उषाह. वीसरा*. पहेरा (सं.प्रहर उपरथी)

पुहवि, पुहवी आरारा. ऐतिका. गुर्जरा.

तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युचु. हम्मीप्र. पृथ्वी

पुरवीसर *तेरका.* पृथ्वीश्वर

पुरुचाडी *नेमिछं*. पहोंचाडी, पूरी करी पुरुतु *आरारा. कृष्णवा. नलरा. प्रवीप्र.*

शीलक. पहोंच्यो [सं.प्रभूत]

पुद्धतार, पुतार *प्रबोप्र. [हाथीनो महावत] पुद्धर अभिकः उक्तिरः पहोर (सं.प्रहर)

पुहुलडं उक्तिर. लावल. पहोळुं [सं.पृथुल] पुहुबि, पुहुबी अभिक. नेमिछं. प्रबोप्र. पृथ्वी

पुरुंक उक्तिर. षडाबा. पोंक (सं.पृथुक)

पुंआङ उक्तिर. चक्रमर्द, कुवाडियानो छोड (सं.प्रपुन्नाटः)

पुंछ सिंहा(शा). झडपी ?, [*पहोंच, *गति] पुंजी षडाबा. साफ करी, लूछी [सं.प्रोंछ्] पुंतार अंबरा. कृष्णबा. विमप्र. हम्मीप्र. हाथीनो महावत [सं.प्रयोक्त]

पुंयरा *षडाबा*. पोरा, पाणीमां थता बारीक जीव [सं.पूतर]

पुंश्चली, पुंश्चळी चंद्रवा. प्रेमाका. छिनाळ, वंठेल स्त्री [सं.]

पुंहक अंबरा. पोंक [सं.पृथुक]

पूअरज उक्तिरः पोरो, पाणीनुं जंतु (सं.पूतरकः)

पूग कादं(शा). सोपारी (सं.)

पूगइ अखाका. गुर्जरा. सुधी पहोंचे, [प्राप्ति थाय], [पार ऊतरे]; गुर्जरा. प्रेमाका. आवी पहोंचे, जई पहोंचे; अंबरा. आरारा. कर्पूमं. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. *षडावा. सिंहा(म). पहोंचे, पूर्ठ

थाय, परिपूर्ण थाय, संतोषाय (सं.पूर्यते) पूरीफल कादं(शा). सोपारी (सं.) **्रप्रीफाड** *उक्तिर.* सोपारीनो कटको (सं. पूगी+फालित) **पूर्गे** *आनंस्त*. सोपारीथी पूछ *नरका*. [ज्योतिषविषयक] प्रश्न, [जोश] [सं.पृच्छा]; जुओ प्रश्न **पूछिवउं** उक्तिर. पूछवुं पूछीतउं उक्तिर. पूछातुं (सं.पृच्छ्) **पूज** *अखाछ.* पूज्य; *आरारा. वीसरा.* पूजा पूजइ प्रद्युच्य. [सुधी] पहोंचे, [-नी तोले आवे]; *षष्टिप्र.* पहोंचे, शक्तिमान थाय; आरारा. गुर्जरा. जिनरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि (ब्रा). पूरुं धाय, परिपूर्ण धाय (सं.पूर्यते) **पूजनिक** *प्रेमाका*. पूजनीय **पूजनी** *कादं(ध्रु).* पूज्य **पूजनीक** *दशस्कं(१).* पूजनीय **पूजारउ** *षडावा*. पूजारी (सं.पूजाकर) **पूजावइं** *आरारा*. पूजा करे छे **पूजिवा** उक्तिर, पूजवा **पूट्ठि** *लावल*. पीठ उपर [सं.पृष्ठि] पूठउ *उक्तिर*. पीठ, पूंठ, शरीरनो पाछळनो भाग (सं.पृष्ठम्) **पूठि, पूठी** *आरारा. लावल. वीसरा.* पीठ; *उक्तिर. उपबा. *नलाख्या.* पाछळ; *उपवा. प्रेमप*. पछी (सं.पृष्टि)

पूण्या *नरका-***२. फ**ळ्या [सं.पूर्ण] **पूतना** *हरिवि-अनु*. गात्रवाळी **पूतरी** *प्रेमाका.* पुत्री **पूतली, पूतळी** *पंचवा.* बत्रीश पूतळीनी वार्ता; प्रेमाका. आंखनी कीकी [सं.पुत्र] **पू**त्त *गुर्जरा*. पुत्र **पूत्रेलउ** *उक्तिर.* पूतळुं (सं.पुत्रकः) **पूनिम** *उक्तिर. वीसरा*. पूर्णिमा, पूनम **पूर्य** *ऐतिका. प्राचीसं.* पूजा **पूर्यडा** *षडाबा.* पूडा (सं.पूप) **पूर** *आरारा. वीसरा.* पूर्ण, पूरुं, पूरेपूरुं (सं. पूर); *आरारा.* पूर्ति, पुरावुं ते, भरावुं पूरइ अह्म पूंठि लावल. अमारुं समर्थन करे छे, [अमारी मददमां रहे छे] **पूरणी *** ऋषिरा. [दीवालना रक्षण के आधार माटेनुं बांधकाम] [रा.] **पूरब** *वीसरा.* पूर्व दिशानुं **पूरव** *लावल*. जैन मान्यता अनुसार एक काळपरिमाण [सं.पूर्व] **पूरवइ** *आरारा. लावल.* पूरुं करे, परिपूर्ण

करे, [संतोषे]; *अखाका.* परवडे, [पूरुं

पड़े, परिपूर्ण थाय, यथेष्ठ थाय]

पूरवलं आरारा. लावल. पहेलांनो, पाछलो

पूरविलउं *गुर्जरा. नेमिछं.* पहेलांनुं, आगलुं

पूणइ (?पूगइ) *प्राचीसं*. जीते, पहोंचे, [नष्ट

करे] [रा.पूणणौ]; जुओ पुण**इ** पुरुष *चित्तसं*. पेठे, जेम; पूठ, पाछळ (सं.पूर्व)

(सं.पूर्व+इल्ल)

(सं.पूरयति) पूरी**उ (अल पूरिउ)** **वाग्भवा.* [हवे बस एवो भाव पूर्यो पूरो पाड्यो चित्तसं. पहोंचाड्यो, लई गयो पूर्वी शंख प्रेमाका. शंख वगाड्यो, शिख फूंक्यो]; जुओ पुराय **पूर्व** *नलरा. षष्टिप्र.* जैन शास्त्रोनो एक विभाग [सं.] **पूर्वभवंतरिइं** शंगामं. पूर्वभवमां पूर्विलउ * षडावा. [पूर्वेनो, आगलो] (सं.पूर्व) पूर्वीयु उक्तिर. पूर्व दिशानुं **पूलउ** उक्तिर. पूळो (सं.पूलकः) पूंख प्रेमाका. तीरनो आगलो पींछावाळो भाग [सं.पुंख: **पूंख** *नलरा.* वरकन्याने वधाववां ते, पोंखवूं ते (सं.प्रोक्ष्) पूंछ- वीसरा. पूछवूं (स.पृच्छ्) **पूंछली** अखाछ. पूछियल, थाकीने बेसी पडेली **पूंछे** *आरारा.* पूंठे, [पूंछडे, पाछळ] **पूंजइ** *उक्तिर. षडाबा.* कचरो वाळे, साफ करे [सं.प्रोंख] पुंडि * नलाख्या. विमप्र. पाछळ (सं.पृष्टिः) पूंठि पूरइ जुओ पूरइ अहा पूंठि **पूंब** *उक्तिर.* कूला (सं.पुतौ); जुओ पुद **पे. पें** *नेमिछं.* उपर: *हरिख्या.* पासे, पासेथी: नरका, प्रेमाका, हरिख्या, -नी सरखा-मणीमां, -ना करतां सि.प्रति **पेअ कामा(त्रि)**. दूध [सं.पेय] **पेर्ड** अभिक, पेटी

पेखइ तेरका. नरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). जुए (सं.प्रेक्षते) **पेखणउं** *अंबरा. चित्तसं*. पेखणुं, तमासी, जिलसो, उत्सवी सि.प्रेक्षनकी **पेच** *अखाका.* युक्ति, जोडाण, [प्रपंच] · **पेचेतालीस** *षडाबा***. पिस्ताळीस (सं.**पंच-चत्वारिशत) **पेचे पेचे** *प्रेमाका*. कपटथी, दावपेचथी **पेड** **अखाका.* [*पीड: *परड: *लप] **षेड** *अखाका*. वृक्ष, [छोड, वेल] [हिं.] **पेणामां** *प्रेमाका.* **कडायामां, मोटी कडाईमां पेदड * पं**चवा. [पग, मूळियां] (सं.पद+दल) **पेध्यारु** *अंबरा.* पधारो [सं.पाद+धार्] **पेम** *तेरका*, प्रेम **पेमासव** *शुंगामं*. प्रेमनो अर्क [सं.प्रेमासव] **पेर** अखाका. अखाछ. प्रेमाका. प्रकार. रीतः; कामा(त्रि), कामा(शा), प्रकार, रीत गोठवण: मोसाच. रीत, रिवाज: *नरका.* रीत, प्रकार, युक्ति, उपाय, [*आवडत] **पेरपे**र *प्रेमप*. जुदीजुदी रीते **पेराईड** कामा(शा). सांठानी गांठ वज्ञेनो भाग **पेरेपेरना** *चतुचा*. भिन्नभिन्न प्रकारना **पेर्य** *चित्तसं*. प्रकार, रीत, मार्ग, गोठवण, जोगवाई **पेर्वे** *चित्तसं*. प्रकारे, रीते, पेठे **पेलड्ड** *गूर्जरा. दशस्कं(२).* प्रेरे, धक्केले **पेलाडि** *प्राचीफा. *शंगामं.* पीडा, वेदना **पेलावेलि. पेलावेली** *उक्तिर*. खेंचाखेंची.

धकामुकी; गुर्जरा. तालावेली (सं. *प्रेराप्रेरि) पेशकसी मदमो. खंडणी [फा.पीश-कशी] **पेशल** *कादं(ध्र)*. सुंदर (सं.); **वसंफा(ब्रा)*. [कोमळ] **पेस** *आरारा.* उद्योग, श्रम (फा.) पेसकशी चंद्रवाः खंडणी [फा.पीश-कशी] **पेसरां** *हम्मीप्र.* युवान सैनिको, युवको (फा. पिसर=पुत्र) पेसारो ऐतिका. प्रवेश[नो उत्सव]; जुओ पडसारउ **पेहे** *नंदब*. पहो, सवार [सं.प्रभात] **पेहेली** *मदमो*. प्रहेलिका, [समस्या] **पें** जुओ पे **पेंड** *सिंहा(शा)*. पिंड, पंड, शरीर **पेंडार** *मोसाच*. भरवाड [सं.पिंडार] **पैआल, पैआळ, पैयाल** *अंगवि. उषाह*. कृष्णबा. दशस्कं(१). प्रबोप्र. प्रेमाका. पाताळ **पेब्रह्म** *प्राचीका.* परिब्रह्म (सं.परब्रह्म) **पैयाल** जुओ पैआल **पैयुं** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. रमतमां नकी करेलुं अमुक अंतर [सं.पदिक] **पेशुन** **ऐतिका*. [चाडी, चुगली] [सं.] **पैसण** *जिनरा*, प्रवेश करवो ते **पैसारे** *ऐतिका.* प्रवेश[ना उत्सवपूर्वक]; जुओ पइसारउ **पो-** वीसरा. परोववुं (सं. प्रवयति) [सं. प्रोत-] **पोर्डस** उक्तिर. [*वाटमांथी खसो एम जणावतो उदुगार] [सं.पूतिकेशः]

पोखइ *दशस्कं(२). प्रेमाका. *नेमिछं.* पोषे, सिंतोषे. संवर्धे. जतन करेी **पोखी ***नेमिछं. [पोषेली, -धी भरेली] **पोगर** अखाछ. पुद्गल, [परमाणुपिंड, भौतिक पिंड]; चित्तसं. परमाणु पोटलिया उक्तिर, पोटली (दे.पोट्टलिय) **पोठी** नलाख्या. प्रेमाका. पोठियो, बळद (सं. पुष्ठिः परथी) **पोठीउ, पोठियउ** *उक्तिर*. पोठियो (सं.पृष्ठि परथी) पोढउं अभिक्त. *ऋषिरा. चतुचा. चंद्रवा. नलरा. रूपच. लावल. वीसरा. प्रौढ. मोटुं, महान; विशाळ; बळवान **षोढेरो** *चित्तसं.* प्रौढ, मोटो, विस्तृत पोण कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). *नरका. प्रेमाका*. पण, प्रतिज्ञा; *प्रेमाका*. शरत, दाव; जुओ वर्णनपोण **पोत** *कादं(शा)*. बच्चं (सं.) **पोत** अखाका. मूळ रूप, [पोतापणुं] **पोतइ** *आरारा. *उपबा.* भंडारमां, सिलकमां **पोतउ** *आरारा.* भंडार [*सं.पोत] **पोतन** *उषाह*ं. पूतना राक्षसी **पोतापणुं** *चित्तसं*. आत्मस्वरूप **पोतावट** *हरिख्या*. पोतापण्ं, अत्यंत घरवट **पोति** *आरारा*. पोतुं करे, लीपे पोति कामा(त्रि). देवरा. नरप(द). नलाख्या. पहोंचे, आवी मळे (सं.प्रभूत) **पोती ***नरका. [पोतियां, वस्त्र] **पोत्** *लावल.* भंबार **पोते** अखेगी. पोतथी, [आत्मस्वरूपथी];

चित्तसं. पोतापणुं, अहंभाव; पोतापणुं, आत्मस्वरूप
पोत्रं उतिहर. उषाह. पौत्र, पोतरो
पोवं प्राचीसं. पुस्तक, पोथुं
पोर कामा(शा). नरप(द). प्रहर
पोरिंस, पोरिंस, पोरिंस उतिहर. जिनरा. धडाबा. एक प्रकारनुं जैन तप, [एक पहोर दिवस चंडे त्यां सुधी भोजन वगेरेनो त्याग] (सं.पौरुषी)
पोरुषां तेरका. पोरवाड वंश (सं.पौर+ वाट ?)

पोलइआ *प्राचीसं* पोळिया, [दरवान] (सं. प्रतोलि परथी)

पोळ, पोल देवरा. प्रेमाका. शीलक. हरिख्या. दरवाजो, द्वार (सं.प्रतोति)

पोलि आरारा. उषाह. *ऋषिरा. कादं(ध्रु). कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. प्राचीसं. रूपच. लावल. विक्ररा. विमप्र. दरवाजो (सं.प्रतोलि)

पोलिका *षडाबा.* 'पोळी (सं.)

पोलिदुयार आरारा. तोरणद्वार (रा.)

पोलियज, पोळियज आरारा. उषाह. चंद्रवा. जिनरा. नरका-२. प्रेणाका. दरवान, द्वारपाळ

पोली उक्तिर. पोळ, दरवाजी (सं.प्रतोली)
पोली नरप(द). [पोळी], रोटली
पोलीई विकरा. पोळियाए, [दरवाने]
पोलीया विकरा. दरवान
पोवइ षडावा.परोवे (सं.प्रवयति) [सं.प्रांत-]
पोशाअ *मदमो. [पलंगनी चादर, बिछानुं]

[फा.पोश]
पोशो प्रेमाका. खोबो [सं.प्रसृति]
पोष आनंस्त. ऐतिरा. पुष्टि, पोषण
पोषक चित्तसं. पोषनार, पुष्ट करनार,
अस्तित्वना आधाररूप [सं.]
पोषण चित्तसं. अस्तित्वनो आधार [सं.]
पोषणो आनंस्त. पोषण [करनार], [पुष्ट
करनार]

पोषधसाल देवरा. सामायिक, पौषध आदि करवानुं स्थळ [सं.उपवसथ+शाला; जै.; सं.पौषधशाला]

पोषाइ चित्तसं. पोषण आपे छे
पोस उक्तिर. पोष महिनो (सं.पौष)
पोस प्रेमाका. खोबो [सं.प्रसृति]
पोसउ ऐतिका. पौषध, [श्रावकोए उपाश्रयमां साधुनी जेम रहेवानुं एक जैन व्रत]

पोसहथउ उक्तिर. पौषधमां बेठेलो (सं. पौषधस्थः)

पोसहसाल लावल. पौषधशाळा पोसहर ऐतिका. पौषध, [श्रावकोए उपाश्रय-मां रही साधुनी जेम रहेवानुं जैन ब्रत] पोसह षडावा. एक जैन तपप्रकार, [पौषध, चोवीस कलाक माटे उपाश्रयमां रही उपवासपूर्वक धार्मिक क्रियाओ करवी ते] (सं.उपोसथ) [सं.उपवसथ]

पोसाल *उक्तिर. जिनरा. विमप्र. शीलक.* पौषधशाला

पोसीजइ *आरारा.* पोषाय, कईकई आपवा-मां आवे

पोस्त आरारा(व). अफीण-खसखसनो

डोडो. पोसनो डोडो (फा.) **पोहचावड** *आनंस्त*. पहोंचाडे [सं.प्रभूत-] पोहाल पंचवा. परसाळ (सं.पृथु+शाला) पोहोतं अखाछ. ऐतिका. कामा(त्रि). देवरा. नरका प्रेमप प्रेमाका भदमो मोसाच. पहोंच्यं (सं.प्रभूत); *दशस्कं(१)*. सिंहा(शा). पहोंच्युं, पूरुं थयुं, पिरिपूर्ण थयुं] [सं.प्रभूत-] **पोहोर** कामा(शा). प्रहर पोहोलु कामा(त्रि). विशाळ, मोटुं [सं. प्रथलो •**पोंकी** *प्रेमाका***. पोंखी, वधावी [सं**.प्रोक्ष] **पौर्णमासी** *प्रेमाका*. पूर्णिमा, पूनम [सं.] **प्पह** *ऐतिका.* प्रभू **प्यादा *** प्रेमाका. शितरंजनां पैदल सिपाहीनां महोरां [फा.पियाद] प्रकार *मोसाच*. गढ़ (सं.प्राकार) प्रखोडी उषाह. पखोडीने, फिलावीने, लंबावीने] [प्रा.पक्खोड] प्रग प्राचीका. प्रभात (सं.) प्रगत्य चतुचा. ? प्रगन्यावंत *चित्तसं*. प्रज्ञावंत, ज्ञानी प्रगल (प्रगलचित्त) *नरका. [मोकळे मने] प्रधल ऐतिका. नरका. नरप(द). पुष्कळ, अत्यंत प्रछन आरारा. प्रछन्न, छानी प्र**छा** *कादं(शा).* पृच्छा, पडपूछ **प्रज**ा*र्गुर्जरा*. प्रजा

प्रजुंजइ आरारा. उक्तिर. प्रयुक्त करे, योजे **प्रजुंजन** जिनरा. योजवूं ते [सं.प्रयुंजन] **प्रठबुं** अ*खेगी.* परठवुं, नक्की करवुं [सं.प्रस्था-] **प्रणिपत** नरका. हरिख्या. प्रणाम, नमनः प्रेमाका. विनंती, आजीजी (सं.प्रणिपत्ति) प्रणीता कादं(ध्र)-टि. यज्ञमां वपरातुं एक पात्र प्रत कामा(त्रि). लखाण, टोपणुं [सं.प्रति] प्रत**इ, प्रतइं** ऋषिरा. ऐतिका. प्रत्ये, तरफ (सं.प्रति) **प्रतख** जुओ परतख **प्रतप्**र *गुर्जरा*. प्रकाशो (सं.प्रतप्) प्रति अखाछ. जोड, सरखुं, समोवडियुं [सं.]; जुओ प्रत्ये प्रतिकार *अखाछ. [उपाय] सिं.] प्रतिकृति आराराः अवलुं प्रतिक्ष आरारा. प्रत्यक्ष प्रतिख प्रबोप्र. रूबरू (सं.प्रत्यक्ष) **प्रतिस्वि** *अंबरा*. प्रतीक्षा प्रतिग्रह प्रेमाका. दाननो स्वीकार [सं.] प्रतिघाउ षडाबा. रुकावट, अंतराय (सं. प्रतिघात) प्रतिचारिका आरारा. दासी, सेविका (सं.) प्रतिः उउं प्रतिज्ञा करेलं. नेमिछं. [स्वीकःरेलुं]; जुओ पडिवन्नयउं **प्रतीपाल** मदमो. संभाळ, रक्षण, पालन, आचरण प्रतिपाल, प्रतिपाळ ऋषिरा. नरका-२. [पालनपोषण करनार], पाळनार, रक्षक [सं.]

[सुधी]

प्रजंत *दशस्कं(२). मदमो. सिंहा(शा)***. पर्यं**त,

प्रतिपालइ यडावा. पालन करे, आचरे (सं. प्रतिपाल)
प्रतिपालना प्रेमाका. हरिख्या. पालनपोषण, रक्षण (सं.)
प्रतिषु *विमप्र. [प्रकाशो] [सं.प्र+तप्]
प्रतिबाध दशस्कं(१). प्रेमाका. वांघो, हरकत प्रतिबुद्धइ षडावा. परमज्ञान — आत्मज्ञान प्राप्त करे (सं.प्रति+वुध्यते)
प्रतिबोध चित्तसं. प्रत्युत्तर, समजूती [सं.]
प्रतिबोधीयो ऐतिका. ज्ञान आप्युं, [उपदेश आप्यो] [सं.प्रतिबोधित]
प्रतिमक्क गुर्जरा. विराप. प्रतिस्पर्धी, योद्धो (सं.)

प्रतिमा नलरा. ध्यान माटे शरीरने निश्चल राखवुं ते, कायोत्तर्ग (सं.)

प्रतिलाभइ आरारा. देवरा. प्राचीफा. साधु आदिने दान आपे, भिक्षा वहोरावे (सं.प्रतिलाभयति)

प्रतिवाय प्रेमाका. प्रत्यवाय, [अंतराय, दोष] प्रतिवास आरारा. सुगंधी (सं.) प्रतीकार चित्तसं. उपाय [सं.]

मतीठ उक्तिर. प्रतिष्ठा, [मूर्तिस्थापना] मतीठिउ गुर्जरा. स्थाप्युं (सं.प्रतिष्ठित)

प्रतीत अखाका. नरका. प्रेमाका. खातरी, विश्वास (सं.प्रतीति)

प्रतुसकाल कामा(त्रि). प्रातःकाळ प्रते चतुचा. प्रति, तरफ प्रतेकिइ *नेमिछं*. प्रत्येकने, दरेकने

प्रत्यन्या *उषाह*. प्रतिज्ञा, पण

प्रत्यमा अखाका. प्रतिमा, मूर्ति प्रत्यय आरास. शृंगामं. विश्वास, खातरी (सं.)

प्रत्ये *नरका.* *सामे, [मुकाबलामां, जोडमां, साथे]; जुओ प्रति

प्रत्येकबुद्ध प्राचीका. अनित्यादि भावनानी कारणभूत कोई वस्तुथी जेने परमार्थनुं ज्ञान प्राप्त थयुं छे एवो पुरुष (सं.) [जै.]

प्रदक्षण नलरा. वसंफा(ब्रा). प्रदक्षिणा प्रदेश प्राचीफा. परदेश, बीजो देश प्रधान आरारा. मुख्य, महत्त्वनो माणस;

उत्तम, प्रसिद्ध (स.)

प्रध्यान अंबरा, प्रधान

प्रपंच "अखाका. चित्तसं. विस्तार; कादं(शा). *नरका. प्रेमप. मायाप्रपंच, जगतप्रपंच; कादं(ध्रु). तजवीज, [खटपट, युक्ति, उपाय]

प्रपंचभेव वित्तसं. संसारनो विविध प्रकारनो विस्तार [सं.]

प्रबळ दशस्कं(१). प्रकृष्ट बळ, प्राबल्य प्रवाल वसंवि(ब्रा). परवाळां [सं.प्रवाल] प्रभ गुर्जरा. षष्टिप्र. प्रभु, स्वामी प्रभववुं दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. हेरान करवुं, दूभववुं; (सं.पराभव के परिभव)

प्रभवतुं प्रेमाका. उत्पन्न थतुं (सं.प्रभव्); *षडाबा. [प्रभावकर्ता थवुं, -नी असर थवी] (सं.प्रभव्)

प्रभा *वेताप*. परवा

प्रभा अखाका. अखाछ. मदमो. प्रवाह;

प्रतें *देवरा***.** प्रत्ये

जुओ परभाय

प्रभा-जढ *प्रेमाका*. प्रवाहजळ, जळनो प्रवाह

प्रभावना *आरारा. ऐतिका.* माहात्म्य, गौरव; एने अर्थे करवामां आवती लहाणी वगेरे क्रिया जि.]

प्रमा अखाका. *माप, [प्रमाण, यथार्थ ज्ञान] [सं.]

प्रमाण *आरारा. गुर्जरा.* प्रतीति, खातरी, पुरावो (सं.); *आरारा. हरिख्या.* सिद्ध, खरुं, मान्य, नकी; *आरारा. *ऋषिरा.* ने लीधे

प्रमाणि [प्रमाणि चडिउं] लावल. प्रमाणे, सत्ये [चड्युं], [सिद्ध थयुं, साचुं पड्युं]

प्रमार प्राचीसं. परमार

प्रमीला लावल. मोहनिद्रा [सं.]

प्रमुख *आरारा. षडाबा.* आदि, वगेरे (सं.)

प्रयंड *विक्रच*. प्रचंड

प्रयुंजइ *उक्तिर. गुर्जरा.* प्रयोजे, प्रयोग करे (सं.प्र+युज्)

प्ररूपणा *ऐतिका.* कथन, वक्तव्य, [निरूपण, प्रतिपादन] [सं.]

प्ररूपीयो *ऐतिका.* कह्यो, [प्रतिपादित कर्यो, निरूप्यो] [सं.प्ररूपित]

प्रलउ *गुर्जरा*. प्रलय

प्रत्**णुं** सिंहा(शा). खंडणी ?, [*ऊपजनी हिस्सो [सं.प्रलवण]

प्रले *अखाका. प्रेमाका*. प्रलय

प्रवित्तनी आरारा. प्रवर्तिनी, जैन साध्वी-ओनुं एक पद

प्रवरु ऐतिका. प्रवर, [श्रेष्ठ]

प्रवर्द्धइ *पड़ाबा*. वधे (सं.प्रवर्ध्)

प्रवहण *ऐतिरा. गुर्जरा.* वहाण (सं.)

प्रवाद *कादं(ध्र)*. वजावणी, [वगाडवुं ते]

प्रवादी *आनंस्त*. जैनथी अन्य वाद[— मत]वाळा

प्रवाल ऋषिरा. कामा(शा). वसंवि. परवाळुं (सं.)

प्रवाली, प्रवाळी *उक्तिर. वीसरा.* परवाळां (सं.प्रवाल)

प्रवासाविउ * यडावा. [देशनिकाल कर्यो] [सं.प्रवास् परथी]

प्रवाहिउ *गुर्जरा*. वहेवडाव्युं (सं.प्रवाहित)

प्रवेश मदमो. प्रवास, [संक्रमण, जवुं ते]; जुओ परवेश

प्रशंस मदमो. जाहेरात ? (सं.प्रशंसा)

प्रश्ण *चित्तसं.* प्रश्न, कोयडो

प्रश्न प्रेमाका. "भेद, "रहस्य, ज्योतिष — भाविविषयक पृच्छा]; हरिख्या. प्रस्ताव, बाबत, [जिज्ञासानो मुद्दो]; जुओ पूछ

प्रश्न करतुं प्रेमाका. भविष्य – ज्योतिष जोवुं

प्रसच्चो ऐतिका. जन्म आप्यो

प्रसंग आनंस्त. भेट, मिलन [सं.]

प्रसंगी *आनंस्त*. प्रसंग पाडनारो, [प्रगाढ मिलन करनारो] [सं.]

प्रसाउ *गुर्जरा*. प्रसाद, कृपा

प्रसाद आरारा. कादं(ध्र). प्रासाद, मंदिर

प्रसिद्ध चित्तसं. अगुप्त, बाह्य

प्रसुत आरारा. बाळक, दीकरो (सं.)

प्रस्तानुं *मदमो.* प्रयाणे नीकळवुं ते (सं. प्रस्थानकम्)

प्रस्ताव *आरारा. गूर्जरा. *नेमिछं*. प्रसंग, कथाप्रसंग (सं.)

प्रस्थानुं विक्ररा. मंगलप्रयाण

प्रस्थाव *पंचवा.* प्रसंग, तक, लाग, [बाबत] (सं.प्रस्ताव)

प्रस्नव कादं(शा). स्तनोमांथी दूधनुं झरवुं (सं.)

प्रह अभिक. आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. विमप्र. वैताप. *स्थुलिफा. हम्पीप्र. प्हो*, सवार, प्रभात

प्रह फाटी *ऐतिका.* 'हो फाटी, प्रिभात थयुं]

प्रहवइ *प्राचीसं. [आधिपत्य मेळवे] (सं. प्रभवति)

प्रहसमि ऐतिका. प्रभात समये

महुणु सिंहा(शा). परोणो (सं.प्राघूर्णक)

महस * नलरा. [दु:खनी लागणीनो आवेग] (सं.प्रहर्ष); जुओ परहुंस

प्रहोणा दशस्कं(२). प्रेमाका. परोणा, महेमान [सं.प्राधूर्णक]

प्रहोणाचार दशस्कं(२). परोणागत

प्राइ जुओ प्राये

प्राइहिं षडावा. सामान्य रीते (सं.प्रायेण) प्राए जुओ प्राये

प्राकार *हरिख्या. शुंगामं.* गढ, कोट (सं.)

प्राक्रम चित्तसं. पराक्रम

प्राग कामा(शा). प्रेमाका. मदमो. प्रवाग **प्रागुण, प्राघुण** मदमो. परोणो (सं.प्राघूर्णक)

प्राप्नुर्णुक्, षडाबा. महेमान (सं.प्राप्नुर्णक)

प्राष्टीत मदमो, जेने कारणे प्रायश्चित्त कर्यू

पड़े ते. पाप

प्राजि कादं(शा). प्रेमाका. पराजय

प्राजे करी मदमो. पराजय करी, पराजित करी, विसर्जित करी, नष्ट करी

प्राप अंगवि, उषाह. ऐतिस. कामा(त्रि). नलरा. लावल. बळ, जबराई (सं.)

प्राणंड *नेमिछं.* पराणे, मांडमांड, आग्रह करीने

प्राण-तियाग *प्राचीसं*. प्राणत्याग

प्राणयी *नरका*. पराणे, बळपूर्वक, आग्रह करीने

प्राणपीड *प्रेमप* अंतरनी व्यथा

प्राणि उषाह. कादं(शा). गुर्जरा. नरका. नेमिछं, प्राचीसं, विराप, पराणे, जोरथी, बळजबरीथी

प्राणिइं उपदा. पराणे, बळपूर्वक

प्राणिपत *दशस्कं(१)*. आसनावासना, [आजीजी] (सं.प्रणिपत्ति)

प्राणी अखाका. चतुचा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. प्रेमप. प्रेमाका. *हरिख्या*. प्राण, जीव, आत्मा

प्राणीपत *दशस्कं(२).* प्रणिपात, प्रणाम, [आजीजी, कालावाला] सिं.प्रणिपत्ति]

प्राणीयत्त *अंबरा.* प्राणिकुल, प्राणीओनो

प्रापे-प्राणे *नरका*, पराणे-पराणे, आग्रह करी-करीने

प्रातुकाळ *प्रेमाका.* प्रातःकाळ, परोढ प्रातिक, प्रातीक *दशस्कं(१). दशस्कं(२).* पातक, पाप

प्रातुस्काल मदमो. प्रातःकाल **प्रादोषिक** *आरारा.* सांजनुं (सं.) **प्रापक** *आनंस्त*. प्राप्त करावनारा [सं.] **प्रापति "**कृष्णवा. [भाग्य] [सं.प्राप्ति] **प्रापत्ति** *चित्तसं* प्राप्ति प्रापत्य, प्राप्तय अखाका. चित्तसं. प्राप्ति **प्रापिवा** *षडाबा*. प्राप्त करवा (सं.प्राप्) **प्राप्तय** जुओ प्रापत्य **प्राभव** अखाका. अखेगी. पराभव, [हानि, **प्रामइ** गुर्जरा. षडावा. पामे (सं.प्राप्नोति) प्रायकत आरारा, प्रायश्चित **प्राथिहिं** *षडाबा*. सामान्य रीते (सं.प्रायेण) **प्राये** अखाका. चित्तसं. प्रायः, खरेखर, साचे ज, निश्चितपणे, चोकस: प्रेमाका. प्रायः, घणुं करीने, [*खरेखर] प्रारिषे आरारा. इच्छेलुं (सं.प्रार्थित) **प्राकृट** कादं(शा). वर्षाऋतू (सं.प्राकृट्) प्राशन प्रेमाका. खावुं ए [सं.] **प्राशुक** जिनरा. पुत्र [*सं.प्राशक=खानार] प्राभे अखाका. नरका. खाय. आरोगे प्राथ्यां नरका आरोग्यां, खाधां [सं.प्राशित] प्रासंति लायल. भक्षी जाय प्रासुकेषणिउ *षडाबा*. अचित्त – जीवरहित होवाथी जैन मुनिओए लेवा लायक (खाद्य) (सं.प्रासुक+एषणीय) **प्राहड़ं** षष्टिप्र. घणुं करीने, मोटे भागे (सं. प्रायः)ः **प्राहणकु** *षडावा.* महेमान (सं.प्राघूर्णक) **प्राहार** दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रहार

प्राहिं *ऐतिका.* प्रायः, [सामान्य रीते, बहुधा] प्राहृणउ उक्तिर. दशस्कं(२). प्राहुण, *प्रेमाका. रूपच. विक्रच. षडाबा.* परोणो, महेमान (सं.प्राघुर्णक) **मांजळ** प्रेमाका. ऋजु, सरळ [सं.प्रांजल] प्रांण कामा(शा). मरजी विरुद्ध, पराणे **प्रिउ** घडावा, प्रिय प्रियमेलड *गुर्जरा*. प्रियमिलन (सं.प्रिय-मेलक) **प्रिया** *हम्मीप्र.* परियां, वंशज [सं.पर्याय] प्रियागत विष्टप्र. वंशपरंपरागत [सं.पर्याया-गती **प्रियाण** *प्रेमाका*, प्रयाण **प्रियाल** ऋषिरा. रायणनुं वृक्ष [सं.] **प्री** उषाह. वीसरा. प्रिय: प्रेमी **प्रीअष्ठि** विमप्र. पडदो [सं.परिच्छद]; जुओ परीअच **प्रीअंगु** ऋषिरा. घउंलानुं झाड, कांगनो छोड (सं.प्रियंग्) **प्रीउ** नलाख्या, वीसरा, प्रिय, पति, प्रेमी **प्रींड स्थर्ज** ऋषिरा, प्रियतम साथे **प्रीक्षा** *प्राचीका*, परीक्षा **प्रीष्ठ** *अखेगी. प्रेमाका*. ओळख, जाण, ज्ञान **प्रीष्ठड** उप*बा. चित्तसं. नरका. "नलाख्या. प्रेमाका. हरिख्या.* जाणे, ओळखे, समजे सं.परीप्सति) प्रीछवड आनंस्त. अखाका. कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. नेमिछं. *प्रेमाका. हरिख्या*. ओळखावे. समजावे. जणावे

प्रीष्ठवण अखाका. ओळख, ज्ञान, समज **प्रीणइ** उक्तिर. तुष्ट करे, (सं.प्रीणयति) **प्रीणी** *नेमिछं.* प्रसन्न, [तुष्ट] (सं.प्रीणित) **प्रीतदान** *आरारा.* राजी थईने आपेलूं दान **प्रीभुत** नंदब. प्रभूत, पुष्कळ **प्रीमळ** दशस्कं(१). प्रेमाका. परिमल, सुगंध प्रीमि गुर्जरा. प्रेमथी (सं.प्रेमन्) **प्रीयमेलक** ऋषिरा, प्रियने मेळवी आपनार **प्रीयाण** *दशस्कं(१)*. प्रयाण **प्रीयंग** *आरारा(व)*. घउंलो (सं.प्रियंगु) **प्रीयाणूं** अभिक्र. प्रयाण **प्रीयां** *आरारा.* परियां, पेढी, वंश [सं.पर्याय] प्रीसड जिनरा. नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. *लावल.* पीरसे (सं.परिविष्) **मुढ** *कादं(ध्रू). चित्तसं. नलाख्या.* प्रौढ, मोटुं, भव्य, विशाळ **प्रेत** *हरिख्या*. मडदू (सं.) प्रेतम प्राचीफा. प्रीतम (सं.प्रेयतम) प्रेतस्वामी आरारा. यमदेव (सं.) **प्रेमभाग** कादं(ध्र). स्नेहकृत्य, [स्नेहनो हिस्सो, प्रदेश, पक्ष] [सं.] प्रेमल, प्रेमक *दशस्कं(९). नरका. नरप*. नंदब. प्राचीका. मदमो. सिंहा (शा). परिमल, सुगंध प्रेम-सुंहातिउ, प्रेम-सुहांतीय वसंवि. वसंवि(ब्रा). प्रेमे शोभती (सं.प्रेम+ शोभमाना) **प्रेरियड** *आरारा*. मोकल्यो [सं.प्रेरित] प्रेलेकाल मदमो. प्रलयकाळ

प्रोअड उक्तिर. परोवे (सं.प्रवयति) [सं.प्रोत-] **प्रोखित** शंगामं. प्रोषितभर्तका, जेनो पति प्रवासे गयेलो हे तेवी स्त्री **प्रोजना "अखाका.** [प्रयोजन, हेतू, उपयोग, प्रसंगी **प्रोजी** प्रेमप. परोवी [सं.प्रोत-] **प्रोढाशन** *प्रेमाका.* प्रौढ अशन. सारी रीते खावुं ते **प्रोयुं** प्रेमाका. वीसरा. परोव्युं (सं.प्रवयति) **मोल** *ऐतिका*. दरवाजो (सं.प्रतोली) प्रोति. प्रोढि अभिक. वीसरा. दरवाजी (सं.प्रतोलि) **प्रोहण** *पंचवा.* वहाण (सं.प्रवहणम्) **प्रोहोणो** *नरका. प्रेमाका*. परो णो . महे मान [सं.प्राघूर्णक] **प्रौगड-अवस्था** *दशस्कं(१)*. बाळवय (सं. पौगंडावस्था) **प्रौगंड** प्रेमाका, बाळकनी किशोर अवस्था **प्रौढ** *दशस्कं(१)*. जबर **प्लीह** उक्तिर. बरोळ (सं.प्लीहा) प्रकरी

प्हो *नरका***. प्रभात फगर** *नरका. "नरप(द).* पगर, ढगलो [सं. **फग्दं** अखाका. आडाअवळा यद्, सिधा न जवूं, आडूं फंटावूं]; *प्रेमाका.* आडा थवं, वांका थवं, नियंत्रणमां न रहेवं], छकवूं **फटक** *प्राचीका. प्रेमप*. काच (सं.स्फटिक) **फटके** *प्रेमाका*, उश्केराय: फटक एवो अवाज करीने [*सं.स्फट्]

प्रेह निसप्रेह अखेगी. स्पृहावाळो अने निस्पृह

फटार्युं दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. फाट्युं, पहोळुं थयेलुं, साव उघाडुं फटाळ्यां प्रेमाका. फाटेलां, तद्दन उघाडां **फटिक** ऋषिरा. स्फटिक रल: काची **फडसुआं** *अखेगी.* फाड़ियां [सं.स्फट्ट] **फडीया** लितरा. कणिया, [अनाजना वेपारी] **फण** *गुर्जरा*. फेण (सं.फणा) फजगट (फजगट दीइ) *विमप्र. [फूदरडी फरे, आमतेम घूमे, वांकुं चाले]; जुओ फरंगट **फणगर** नलरा. लावल. साप, फणिधर (सं. फणाकर) फणपति ऋथिरा. नाग [सं.] **फणमंडप** गुर्जरा. विराप. फेणनो मंडप (सं.फणामंडप) **फण-शरि** हरिवि. फणाने माथे, फणा उपर फणि वसंफा. वसंफा(ल). सर्प (सं.फणिन्) फिणमिण वसंवि. वसंवि(ब्रा). नागमणि (सं.) **फणी** *आरारा*. स्तरफेणी (रा.) **फणी** ऋषिरा. साप [सं.] फणीतु विरापः फेणवाळो साप (सं.फणीन्द्र) **फर** *प्राचीसं*. ढाल (सं.फल, फलक) [दे.] **फर मदमो**. फरी **फरक** *प्रेमाका.* फडक, बीक [सं.स्फुर्] **फरजा** कामा(त्रि). सुख, [शांति] [अ.फरज] फरव अंगवि. कोईक खाद्यपदार्थ ?, [उत्तम] [अ.फरीद] **फरलउ** उक्तिर. काणो (दे.फरल) **फरशुराम** *उपबा*. परशुराम

फरस *षडाबा. सिंहा(म)*. स्पर्श फरसड आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. देवरा. *नलरा. षडाबा.* स्पर्शे फरसण प्राचीफा. स्पर्श, [स्पर्शवुं ते] (सं. स्पर्शन) आरारा(व). फालसां (सं. फरसणा ्परुषक) फरसन वडाबा. स्पर्शेन्द्रिय (सं.स्पर्शन) फरतनरूप *पडाबा. [स्पर्शेन्द्रियवाळुं] (सं. स्पर्शन+रूप) **फरसुरामु** विराप. परशुराम **फरतो** वेताप. [पुरुष], पुरुषाकार ढाळो **फरहर** **ऐतिका*. फिरफर, फरकवानो अवाज रे **फरहर-** वीसरा. फरकरदुं [सं.स्फूर् परथी] फरंगट (फरंगट दिइ) लावल. फुदरडी [फरे], [आमतेम धूमे, वांकुं चाले]; जुओ फणगट फरिसड उक्तिर. उपवा. स्पर्शे फरुकड् ऋषिरा. प्राचीसं. फरके (सं.स्फुरति) फढ प्रेमाका. फलुं, अणीवालो के धारवालो भाग, पानु [सं.फल] **फलदायन** *षष्टिप्र.* फलदायक [सं.] **फलहज** *उक्तिर*. फलक, पाटि<u>य</u>ुं फलिहकः) [दे.फलिह] फलहलि, फलहूलि आरारा. "गुर्जरा. प्रद्युचु. [लीलांसुकां] फळमेवादि

"फल्ह्रिर *प्रेमाका.* भोजनमां पीरसातां फळ

फलहुलि, फलहुलि आरारा. नेमिछं. लावल.

[मेवा]; जुओ फलहुलि

भोजनमां पीरसातां [लीलांसूकां] फळ-मेवा; जुओ फलहलि फलावइं छइं उपवा. "दलील विस्तारे छे, [तात्पर्य प्रगट करे छे] ["सं.फलाय्]

फिलत वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). फल्वाती, विकसित, विकास पामेली (सं.)

फली उक्तिर. लावल. शिंग (*सं.फल्यः) फलीआ विकरा. फडिया, [कणिया, अनाज-ना वेपारी]

फहरेरे *चित्तसं*. फरफरे

फंव अखाका. ग्रेमाका. जाळ, बंधन; प्रेमाका. ढोंग, [कपट, छळ] (फा.)

फंदइ *उक्तिर.* फंदामां पडे, फसाय **फंदी** ०*नरका-२.* फसायेली

फंदीउ *आनंस्त*. फसायेलो, [बंधनग्रस्त]

फंबो आरारा. जाळ; जुओ फांडो

"फाक नरप(द). [फोक], व्यर्थ

फाग चारफा. नलरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). फागु, वसंतमां गाथानुं गीत, काव्यरचनानो एक प्रकार (सं.फल्गु)

फानु *तेरका. प्राचीसं.* ए नामनो काव्यप्रकार

फागुण *उक्तिर. तेरका. वीसरा.* फागणमास (सं.फाल्गुन)

फाटड उक्तिर. फाडो, चीरो (सं.स्फाटितम्) फाटी प्रेमाका. चोंकी ऊठी, हेबताई गई फाटे जिनमं छक्तेलं उद्धत असभ्य

फादुं *चित्तसं*. छकेलुं, उद्धत, असभ्य [सं.स्फाटित]

फाड *गुर्जरा*. फाळियुं; जुओ फाली फाड- (संथड फाड-) तेरका. प्राचीफा. सेंथाना बे भाग करवा, सेंथी पाडवी (सं.स्फाट्)

फाडिवा *उक्तिर*. फाडवा

फाडी उक्तिर. विस्तरेला शिंगडावाळी

फाडो *कामा(त्रि). [फाडियां, भाग]

फार अंबरा. आरारा. ऋषिरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. विमप्र. घणुं, खूब, पुष्कळ, विशाळ, [मोटुं] (सं.स्फार); जुओ फाल

फारक अखाका. फारेग, मुक्त

फारक *गुर्जरा.* स्फारक शस्त्र धरावनार सैनिक (*सं.स्फारक) [दे.फारक्क]

फारकी *उषाह*. *पथ्यर फेंकवानुं यंत्र [स्फारक अस्त्र फेंकवा माटेनी जग्या]

फारक *प्राचीसं*. फलकधारी, ढालधारी, [शस्त्रधारी सैनिक] [दे.]

फाल, फाळ *आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. लावल.* छलांग, फलंग, कूदको (सं. स्फाल)

फाल *अखाका. [*शुभ]

फाल [फार] **गुर्जरा*. [पुष्कळ]

फालडी *गुर्जरा.* साडी, [ओढणी] दि. फालिय]

फालरउ परिधान *उक्तिर*. ओढणुं ओढवुं ते फाला *नेनिछं*. फाळ. छिलांग

फालि *शृंगामं*. साडी (*सं.फालिक) [दे. फालिअ]

फाली, फाळी, फालीय गुर्जरा. *चतुचा. चारफा. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. मोसाच. वसंफा. वसंवि. स्यूलिफा. हरिवि. उपरनुं वस्त्र, ओढणी, साडी (दे.फालिय); *नलरा. [सादुं वस्त्र, सामान्य ओढणुं]

फांतु *प्रेमाका*. लोंकडी, एक वनपशु, [एक जातनुं शियाळ]

फावड़ *चारफा. नलरा*. लाभ मेळवे, [प्राप्त करे, सिद्ध करें] [दे.फट्व]

फासू प्राचीफा. *विमप्र. षडाबा. निर्जीव, अचित्त पदार्थ (सं.प्रासुक) [जै.]

फासूय *ऐतिका*. अचित्त, जीवरहित (सं. प्रासुक)

फांकडा * अखाछ. [फांकडी रीते, सरस रीते] फांडउ गुर्जरा. प्राचीसं. विमप्र. पाश, बंधन, फांदो, सकंजो [फा.फंद]; जुओ फंदो फांदि नेमिछं. फांद

फांसी **नरका.* [फांस, खटको]

फांसु अखाका. नरका. प्रेमाका. फोगट, व्यर्थ, मिथ्या [प्रा.फंस-]

फिटि *आरारा.* फिटकार

फिटिकडी *षडाबा*. फटकडी

फिरइ आनंस्त. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. प्राचीसं. लावल. षडाबा. फरे (सं.*स्फिर्) [*स्फुर्, स्फर्]; वीसरा. फरे, घूमे, [भटके, चाले]

फिरक उक्तिर.फिरकी (*सं.स्फुरित चक्रिका)

फिरकडी *जिनरा*. लाकडानी चकरी, एक रमकडुं

फिरणु षडाबा. फरवुं ते, भ्रमण फिरति गुर्जरा. फेरो, चक्कर फिरती उषाह. फरती, [आजुबाजू] **फिराद** *हम्मीप्र*. फरियाद **फिरिओ** कादं(शा). फरतो आवेलो **फिरिका** प्राचीसं. ?. शिस्त्रविशेष] **फिरिवा** *उक्तिर*. फरवा फिरी, फिरीनडं आनंस्त. आरारा. कादं(शा). ुफरी, फरीने; फरी वार **फिरीफिरी** ऋषिरा. फरीफरी. वारंवार **फीटणकाळ** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. विनाश काळ [सं.स्फिट्-+काल] फीणली, फीणी, फीनी *आरारा.* सूतरफेणी दि.फेणक] (रा.); जुओ फीण्यां फीणोटा कादं(शा). फीणनां गूंचळां -गोटा, [फीणनो समूह] (सं.फेनावर्त) फीण्यां *प्रेमाका. [एक मीठाई] दि. फीणिया]; जुओ फीणली फीतड *प्राचीफा. सिमुद्ध, भरपूर, प्राचुर्य-युक्त] (सं.स्फीत) फीनी जुओ फीणली फुईहाई उक्तिर. फोईयाई, फोईयात दि.पुप्फी

फुट- तेरका. फूटवुं, फाटवुं (सं.स्फुट्)
फुड गुर्जरा. स्फुट, स्पष्ट, [विस्तृत]
फुडि ऐतिका. स्पष्ट, व्यक्त, विशद [रीते]
फुणंग अखेगी. फेणवाळो साप
फुणिंदु गुर्जरा. मोटो सर्प (सं.फणीन्द्र)
फुरकड जिकर. तेरका. स्फुरे
फुरकड गुर्जरा. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा).
फरके (सं.स्फुर्र)
फुरसराम, फुरिसराम गुर्जरा. परशुराम

फ़ुलिंग *उक्तिर.* स्फूझिंग, तणखो

परथी

फुल *तेरका*. फूल **फुली** *तेरका. लावल.* फूलेली, खीलेली (सं. फुल्लित) **फटड** *उक्तिर.* परिडसित, परिडास पारेल

फूटड उक्तिर. परिइसित, परिहास पामेल (सं.स्फुटित); लावल. [स्पष्ट, चोख्खी] (सं.स्फुट-)

फूटरं उक्तिर. फूटडो, सुंदर (सं.स्फुटतरः) फूटरं उषाह. ?, ["चोख्खेचोख्खुं] फूढ "प्रद्युचु. ["फूवड, "गंदो, "अभद्र] फूरिकेय गुर्जरा. फरकी; जुओ फुरकीय

फूल अखाछ. फुलाश, पतराजी फूल *चित्तसं*. तणखा (अग्निना) [सं.फुल्ल]

फूलभगर ऋषिरा. फूलोनो जथ्यो, ढगलो; जुओ पगर

फूलबहू अंबरा. फूल चूंटनार बटुक; जुओ बूडउ

फूलविसेखि *आरारा*. फूलविशेषवाळी, फूल-भरी

फूली नरका. सेंथानुं घरेणुं; नरप. नरप(द). नाकनुं घरेणुं, फूलना आकारनी चूनी

फूलेलुं (फूलेल) *नरका-२. [सुगंधीदार तेल] [सं.फुल्लतैल्य]

फूसण *षडाबा.* स्पर्श यवो ते (सं.सृश् परयी)

फूंकी जाय जुओ फूंफी फूंडच वीसरा. गुच्छो, छोगुं [हिं.फूंद] फूंफवे प्रेमाका. फूंफाडा मारे *फूंफी (जाय) [फूंकी जाय] *प्रेमाका.

"फूफो (जाय) [फूंकी जाय] "ग्रेमाव [शाता पामे] [सं.फूकरोति]

फेकार जुओ फेफार

फेकारइ ऋषिरा. (शियाळ) खवाज करे [सं.फेत्कार]

फेकारी विक्रसः शियाळ

फेट **गुर्जित*. [*मेळाप (माटे)] [रा.]

फेटि (फेटि पाडिड) प्रद्युचु. ?, ["मेळाप थयो, "मळ्यो, "लागमां आव्यो]

फेडइ उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. जिनरा. मोसाच. विराप. वीसरा. दूर करे, नष्ट करे, छोडे (सं.स्फेटयति)

फेडइ (फेडि) *विमप्र. [हानि, नाश] फेज दशस्कं(१). फीण (सं.फेन)

फेणा आरारा. सूतरफेणी (रा.) [दे.फेणक] फेणाघर-राय दशस्कं(१). फणाधरोनो

राजा, नागराज

फेतुरि *षडाबा.* छाशमिश्रित दूध *फेफार (फेकार) प्रद्युचु. शियाळ

फेर अखाका. चक्कर, भ्रान्ति, [*फेरा]; विमप्र. भिन्नभाव, [फरक, भेदभाव]; गुर्जरा. चक्कर, फेरा

फेरइ नरका. नरका-२. वीसरा. षडाबा. हरिख्या. फेरवे [दे.]

फेरिउं गुर्जरा. विराप. फर्युं

फेरी **गुर्जरा. *विराप.* फेरवी; *आनंस्त.* फेरवी, [चलावी]

फेरु ऋषिरा. शृंगामं. शियाळ (सं.फेरव) फेरे चित्तसं. फेरफारथी, [जुदी रीते]

फेल *अखाका.* *खोटो देखाव, [खटपट, खोटी महेनत]; *नरका. नरप(द)*. *ढोंग,

चेनचाळा, [तोफानमस्ती]

फेली नरका. फेलाई

फेसंडिय *प्राचीसं*. फेनपिंड, [फीणनो फिसोटो]

फेसांणु चतुचा. छिन्नभिन्न थयुं, [रोळायुं]

फोक अखाछ. कामा(त्रि). विमप्र. फोगट [दे.फूक्का]; जुओ फाक

फोकई सम्यची. फोगट

फोड**उ** उक्तिर. उपबा. फोल्लो (सं.स्फोटकः) "

फोडणु *षडाबा.* फोडवुं ते, तोडवुं ते (सं. स्फोटन)

फोडी उक्तिर. फोल्ली (सं.स्फोटिका)

फोफल, फोफळ आरारा(व). उक्तिर. *ऐतिका. कामा(शा). नरका. प्रेमाका. मदमो. लावल. विमप्र. सोपारी (सं. पूगफल)

फोफलपान जिनरा. लावल. पानसोपारी फोफलीआ विक्ररा. सोपारीना वेपारी फोम अखाकां. समज, सान [अ.फहम] फोरण प्राचीसं. ?, [निरंतर प्रवर्तन] [प्रा.; सं.स्फोरण]

फोरवता हुंता *आनंसा*. स्फुरावतां, प्रिगट करतां]

फोसरी *पंचवा*. ढीली, नबळी

बड़ विक्ररा. वे [सं.िंड]

बइट्ड, बइटड उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंवि(ब्रा). वीसरा. बेठो (सं.उपविष्ट)

बइतालीस उपवा. गुर्जरा. षडाबा. बेताळीस (सं.द्वि-चत्वारिशत्)

बहरी उक्तिर. वैरी

बइसइ उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. विराप. वीसरा. षडाबा. बेसे (सं.उपविशति)

बइसण लिसा. बेसवा माटे, [बेठक, आसन]

बइसण्डं विमप्र. आसन; लावल. वीसरा. बेसणुं, राजगादी

बइसणडां आरारा. बेसणां, बेसवुं ते; आसन बइसार- वीसरा. बेसाडवुं

बउल तेरका. वसंफा. वसंवि. बकुलवृक्ष, जुओ वउल

बजलिसरी वसंवि. बोरसली (सं.बकुलश्री); जुओ वउलिसिरि

बकवा मदमो. बकवाद

बकरि, बकरु आरारा. माफ करी (फा. बक्ष)

बकाण नलरा. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

बकारु * अंबरा. [बकवाद, बकवाद करनार] [दे.बुक्कार, बक्कर]

वकांणि *आरारा(व)*. बकानलीमडो, एक वृक्ष (सं.चृका)

बकी *दशस्कं(१).* पूतना

बके कादं(धु). चित्तसं. कहे, बोले; लावल. स्पर्धा करे. शिरत – होड करे]

बकोर उक्तिर. [*शोर, *हांसी] (सं. बर्करिका) [दे.बक्कर]

बगतर, बगतरी *हम्मीप्र*. बख्तर, [बख्तरिया]

बगस्यउ आरारा. बक्ष्यो, आप्यो (फा.बक्ष) **बगाई** उक्तिर. कादं(ध्र). कादं(शा).

दशस्कं(१). प्रेमाका. बगास्ं बगाईकरणु यडाबा. बगासुं खावुं ते बचको कामा(त्रि), कामा(शा), पोटलूं **बजडाव्या** *ऐतिका*. वगडाव्या बजरइ उक्तिर. कहे दि.वज्जर-ो बजाज प्रेमाका. कापडियो [अ.बञ्जाज] **बटींग** *षष्टिप्र.* मूर्ख बड आरु ऐतिका. *वडनुं फळ बडडल षष्टिप्र. गाडानी धरीनी अंदरनो खीलो; जुओ बडहिल **बडवखती** *ऐतिरा*. भाग्यशाळी हिं.बडा +फा.बख्त]; जुओ वडवखती बडाला जिनरा. महान, [मोटा] बहु जुओ फूलबहु **बहुया** *गुर्जरा*. बहुवा, ब्राह्मण छोकरा (सं.बट्क) बद्धं जिनरा. विमप्र. वहुं (खाद्य पदार्थ) [सं.वटक] बहुउ नलरा. बडवो, ब्राह्मण (सं.बटुक) वणाबंध *अभिक. [सुगंधी चूर्ण, एनी अंगराग] [दे.बण्णय+बंध] **बणाया** *आरारा*. बनाव्या [सं.वनित] बणावि देवरा. बनावीने, [सजीने] **बत्रीशी ***प्रेमाका. बित्रीस जातनी स्वादिष्ठ वानगीनो समूह] [सं.द्वांत्रिंशिका] वयोडां अखाका. बाध, आलिंगन, विथ्यं-बथ्या, धिंगाणां] [सं.*द्वाहस्त-] **बदगो** *मदमो*, बदबो बदरा, बदिरा *हम्पीप्र. [एक प्रकारन् सोनानाणुं]; जुओ बदिरा

बदरी नरका. प्रेमाका. बोर, बोरडी [सं.] **बंदिरा** विमप्र. एक प्रकारनुं नाणुं; जुओ बदरा बदें वेताप, गांठे **बद्ध** प्रेमाका. बधी, [आखी] बनयः *प्रेमाका. [सञ्जित] [हिं.] [सं.]; जुओ वनियां बनी नरका. सञ्ज थई, [शोभित, शंगारयक्त] वन्नउला ऐतिका. शुभ प्रसंगे कराववामां आवतुं भोजन; जुओ वरनोला **बन्यो** *प्राचीका*, बन्ने **वपूकार** विकरा. बापोकार, [उत्साहपूर्ण अवाज े **बम्प** *प्राचीसं*. बाप [दे.] **बप्पीह**उ *गुर्जरा.* चातक पक्षी, बपैयो (दे. बपीह); हम्मीप्र. घोडानी एक जात **बप्पीहडा** शुंगामं. बपैया **बणुडउ, बापुडउ** *प्राचीसं.* बापडो दि.बप्प-} बब्बर आरारा. बाबर, [मोगल शहेनशाह] वयकार जुओ छयकार **बयठउ** *गुर्जरा.* बेठो; जुओ बइट्ठउ वयसियइ, वयसीयइ गुर्जरा. विराप. बेसाय **बयालीस** उक्तिर. बेतालीस (सं.द्विचत्वा रिंशत्) **बरक-** नलरा. गर्जना करवी (दे.बुक्कर; म. बरकणे) **बरकां** *प्रेमाका*. बूमो **बरगुं** *आरारा. हम्मीप्र.* बणमुं, रणशिंगुं; जुओ वरगां **बरधू** *वीसरा*. बणगुं, रणशिंगुं

बरज हम्मीप्र. बुरज, [िकल्ला उपर तोप वगेरे राखवा माटेनुं चणतर] [अ.बुर्ज] बरटी नलरा. एक हलकुं धान्य, बंटी (दे. बरट)

बरड *मदमो. [*डांड माणस]

बरद चतुचा. टेक; मदमो. बिरुद, टिक; नाम, ख्याति] [सं.विरुद]

बरवार मदमो. [भार] ऊंचकनार?, [समर्थ] (फा.)

बरले अखाछ. बबडे

बरवइ, बरवी *विमप्र. लावल. अभिमानथी [गु.बरो]

बरास अखाका. ऐतिका. कपूर[नी एक जात]

बरासकपूर चित्तसं. एक प्रकारनुं कपूर बरीस ऐतिका. वर्षः जुओ वरीस बरेलीया वेताप. फीण, [पाणीना परपोटा] [हिं.बल्लाः दे.बुलंबुला]

बल मदमो. बलिराजा

बलगाइ जिनरा. वळगाडीने [सं.विलग्]

*बलचंड (बलबंड) विराप. बळवान, पराक्रमी]: जुओ बलबंड

बल जाय नरका. वारी जाय

बल छोड्य आरारा. ? , [*कमजोर बनेलो]

बलह *प्राचीसं.* बळद (सं.बलिवर्द)

बलबलीउ उक्तिर. वडबडियो, वधु पडतुं बोलनार [दे.बडबड]; जुओ वलवलइ

बलबंड, बलवंड कृष्णच. गुर्जरा. "प्राचीसं. हम्मीप्र. बळवान, [पराक्रमी, प्रतापी] [रा.]; जुओ बलचंड बलबंधु *गुर्जरा. [कृष्ण] [सं.बितवंधन] बल-बाकल, बल-बाकुल वेताप. बित ने बाकळां, [बितिकपे बाकळां, बाकळांनो बिती]

बलबांकी प्रेमाका. बळवंका, बहादुर अने साहसिक [कृष्ण] [सं.बल+वक्र]

बलवंड जुओ बलवंड

बलराउ कस्तुवा. *बळवान राजा, [बलि राजा]

बलहार रहा। अखाका. वारी गया, [न्योछावर करी गया]

बलिंह उक्तिर. बळी, वियाया पछीना तरतना दूधनी बनावट (*सं.बालदिध, बालिहता)

बलाणा विमप्र. मंडपनो एक प्रकार; जुओ वलाणय

बला लेउं प्रेमप. दुःखडां लउं बलाहक *शृंगामं. [एक प्रकारनो बगलो] बिल हम्मीप्र. बिलमां, दरमां बिल किज्ञ-, बिल कीज- प्राचीसं. वारी जवुं

बिल छिड नेमिछं. बळवान स्त्रीए छडेला बिल जाय नरका. वारी जाय बिलयां जिनरा. देवरा. बलैया, चूडी (सं. वलय)

बलिवा उक्तिर. बळवा (सं.ज्वल्)

बसवसइं उक्तिर. [जमीन] खूब पाणी स्रवे, पाणीथी लथपथ होय

बहकइ प्राचीसं. वसंवि. बहेके, प्रसरी रहे बहत्तरि गुर्जरा. बोंतेर (सं.द्विसप्तति) बहन प्रवोप्र. बहेन (सं.भगिनी) बहरखा *ऐतिका.* बाहुनुं घरेणुं, [बेरखां] [सं.बाहुरक्षकाः]

बहारवटे * नरका. [बहार चाल्या जवुं, प्रदेश छोडवो]

बहिकड् नेमिछं. वसंफा. वसंवि(ब्रा). बहेके, विस्तरे (अप.बहिकड्)

बहिडां *आरारा(व).* बहेडां (सं.बिभीतक)

बहिणि, बहिणी *उक्तिर. प्राचीफा.* भगिनी, बहेन

बहिन उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि(ब्रा). वीसरा. यडाबा. बहेन (सं.भगिनी) '

बहिनडी, बहिनडीय गुर्जरा. लावल. वीसरा. बहेन (सं.भगिनी)

बंडिनर अंबरा. नलरा. प्राचीफा. लावल. विमप्र. बहेन (सं.भिगनी)

बहिनी वीसरा. बहेन (सं.भगिनी)

बहिरउ उक्तिर. बहेरो (सं.बधिर:)

बहिरखादिक उपंदा. बहेरखां वगेरे (सं. बाहु+रक्षक+आदिक)

बहिरसु नलरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. कांडानुं एक घरेणुं, [बाजुबंध] (सं. बाहुरक्ष)

बहुअर जिनरा. वहुवर [सं.वधूवर]

***बहुकइ** विमप्र. बहेके

बहु ढंग *प्रेमाका*. घणा प्रकारे

बहुत्तरि आरारा. नेमिछं. षडावा. बोंतेर (सं. द्वासप्ततिः)

बहुमानता *आनंस्त.* बहुमान होवापणुं [आदर होवापणुं]

ब्हुमंग, बहुमंगि वसंफा(ल). वसंवि.

"वसंवि(ब्रा). विधविध प्रकारे **बहुयर** *वसंफा*. धणीवधी (सं.बहुतर)

बहुयर-भंग, बहुयर-भंगि वसंवि. "वसंवि(ब्रा). विधविध पेरे (सं.बहुतर+ भंगि)

बहुरखउ उक्तिर. बहेरखो, बाजुबंध (सं.बाहु-रक्षकः)

बहुरा षडाबा. मोटुं झाडु, मोटी सावरणी ("सं.व्यवहारिन्); जुओ बुहारइ

बहुलपणि *नेमिछं*. अधिकताथी, घणी **बहुतु** *आरारा. नेमिछं*. बहोळूं, घणुं

बहुबक्कभ वतुचा. बहु स्त्रीने जे प्रिय छे ते [पुरुष] [सं.]

बहूत विमप्र. बहु [हिं.]

बहुंतेर देवरा. बोंतेर [सं.द्विसप्ततिः]

बहेनड, बहेनर दशस्कं(२). प्रेमाका. बहेनडी [सं.भगिनी]

बंग उक्तिर. बंगाळ देश (सं.बंगाः)

बंग हम्मीप्र. बांग, नमाजनो समय सूचववा मुल्लाए करेली पोकार

बंगला कामा(त्रि). [सौथी उपरना माळनी हवादार] नानी ओरडीओ

बंद आनंस्त. *बंधन, [*मद - रागवशता]

वंद प्राचीका. टीपुं (सं.बिन्दु)

बंद हम्मीप्र. बंदी, केदी

***बंदई (बंदी)** *ऋषिरा.* भाटचारण [सं. बन्दिन्]

बंदणी *प्रेमाका.* प्रशस्ति गानारी स्त्रीओ [सं.बंदिन् परथी]

बंदिखाणो प्राचीका. केदखानुं (सं.बंदि

+फा.खाना)

बंदिण वसंफा. वसंवि. वसंवि(क्रा). विक्रच. वंटीजन, भाटचारण (सं.बंदिन्)

बंदी जुओ बंदई

बंदीजन *आरारा. कामा(त्रि).* स्तुतिगान करनारा (सं.बंदिजन)

बंदीजन *आरारा.* केदीओ (सं./फा.बंदी +सं.जन)

बंदीयण *गुर्जरा.* प्रशस्ति गानार भाटचारण (सं.बन्दिजन)

बंदोर षष्टिप्र. बंदीवान, केदी (सं.बन्दी+ कार ?)

बंध आरारा. संबंधनी गांठ, [मेळ]; कादं(शा). तेरका. बांधणी, रचना-प्रकार; *कामा(त्रि). *कामा(शा). [बांध, अंतराय]

बंध तेरका. बंधु, [भाई]

बंध- वीसरा. बांधवुं (सं.वंध्)

बंधकर कादं(शा). गर्भने बांधनारो (उपाय)

बंघण जुओ बाधण

बंधव गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल. बांधव, भाई, गुर्जरा. स्वजन

बंध साधे चित्तसं. नियमन करे

बंघाण ऋषिरा. चित्तसं. वंघन, वंधावुं ते, रचना, ग्रथन, [जोडाण, संबंध]

बंधानइं *आनंस्त. [बंध, बंधावुं ते, जोडाण, संबंध — तेमें]

बंघालग प्राचीफा. एक कीमती वस्त्र बंधी प्रेमाका. स्त्रीओनुं कपाळ पर पहेरवानुं एक आभूषण **बंधुर** ऋषिरा. गुर्जरा. सुंदर (सं.)

वंधूक शृंगामं. बपोरियानो छोड (सं.)

बंधेगीरी *प्रेमाका.* बंधननी स्थिति, [बंदी-वाननी स्थिति]

बंन्यो प्रेमाका. बंने

वंबारव अभिऊ. बूमना अवाज, बूमबराडा, [कोलाहल] [दे.बुंबा+सं.रव]

बंबाल **गुर्जरा. हम्मीप्र*. प्रचंड, विशाळ [रा.] (दे.वमाल)

बंबालिय, बंबाली *तेरका. षडाबा,* व्याप्त (दे.क्माल परथी)

बंभ नलरा. प्राचीका. प्रेमांका. विक्रच. विक्ररा. ब्राह्मण (सं.ब्रह्म)

बंभ ऐतिका. शंगामं. ब्रह्मा

बंभण *आरारा. गुर्जरा. लावल. विराप.* वीसरा. ब्राह्मण

बंभणी *गुर्जरा*. ब्राह्मणी

बंभसूया शृंगामं. ब्रह्मानी पुत्री सरस्वती (सं.ब्रह्मसूता)

बंभंड *गुर्जरा*. ब्रह्मांड

बंभी लावल. ब्राह्मी, ऋषभदेवनी ए नामनी पुत्री

बाउची उक्तिर. बावची, तकमरियांनी छोड (सं.बाकुची)

बाउल प्राचीफा. प्राचीसं. रमणी [दे. बाउल्लिय]; जुओ वाउलि

बाउल, बाउँलि आरारा. उक्तिर. ऋषिरा. कादं(शा). नलरा. बावळनुं झाड (दे. बब्बूल)

बाउतउ (वाउतउ) उक्तिर. वातोडियो

(सं.वार्त्तालयः); [*वातरोगी, *पागल] [सं.वातूल]

बाउतीआ नलरा. बावळ, बावळी (दे. बब्बुल)

बाओलियु *नलाख्या*. बावळनुं झाड [दे. बब्बूल]

बाकरउ *उक्तिर*. बकरो (सं.बर्कर) [दे. बक्करय]

बाकरि, बाकरी चंद्रवा. मदमो. ममत पर चडी सामे थवुं, ममतभर्युं वेर

बाकरी (बाकरी बाई) अंगवि. कृष्णवा. होड [होडे चड्या], [चडसे चड्या]

बाकरी बांधवी प्रेमाका. चडसे भरावुं, [वेर बांधवुं]

बाकरी बाई जुओ बाकरी, वाई बाकरी

बाकळा *प्रेमाका.* बाफेलां कठोळ, आसुरी अथवा मेलां देव-देवीओने अपातां हुत-द्रव्य

बाकुत *षडाबा.* बाफेलां कठोळ

बाकुला ऐतिका. बाकळा, [आखां बाफेलां कठोळ]

बाखडी दशस्कं(२). प्रेमाका. पारेठ, वाछरडुं भोटुं थई ओछुं धावतुं होवाथी घट दूध आपती गाय (सं.बष्कयिणी)

बाग रूस्तस. वाग, लगाम [सं.वल्गा]

"बागड विमप्र. तोछडुं, [असभ्य]; जुओ बांगड

बाचका अखाका. पोटला

बाचडां कादं(शा). नानां बच्चां (सं.अपत्य-कानि) बाछरडुं देवरा. वाछरडुं (सं.वत्सकक) बाज अखाछ. बाह्य करणी; दशस्कं(२). प्रेमाका. बाह्य, बहार, मर्यादानी बहार, खुक्लेखुक्ली (सं.बाह्य)

बाज प्रेमाका. (जमवानां) पतराळां बाजकट उपवा. बाजोठ; जुओ बाजुट बाजी प्राचीफा. रमत, खेल [फा.] बाजीगर महोर जुओ महोर

बाजागर महार जुजा महार बाजुट कादं(शा). बाजोठ (सं.*पाद्यपुष्ठ)

बाजुबंघ, बाजूबंघ अभिक्त. नरका. प्रेमाका. बावडामां पहेरवानुं आभूषण [फा. बाझुबंद]

बाजूबंधन *ऐतिका.* अलंकारविशेष, [बाजु-बंध, बावडानुं आभूषण]

बाझ *प्रेमप*. संबंध, मेळ

बाझइ कादं(ध्रु). नरका. मन फावे, [मेळ जामे]; नरका. वळगे

बाझ्य प्रेमाका. मर्यादा बहारनुं, अणघटतुं (सं.बाध्य)

बाटडी *ऐतिका.* वाट, राह, प्रतीक्षा [सं. ः वत्सी]

°बाठ [बांठ] *नंदब*. ?, [ठगाईभर्युं, जूठुं] [दे.वंठ]

***बाडिमा [बाढिमा]** चारफा. वृद्धि, [समृद्धि] [सं.वृद्धिमन्]

बाडुआं, बाडुवां, बाडूआ कृष्णवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. भलांभोळां (बाळक)

बाढवा, बाढुआं *दशस्कं(१). प्राचीका. प्रेमप.* [भलांभोळां, निर्दोष] बाळक (*सं. बटुक) बाढिमा जुओ बाडिमा बाढुआं जुओ बाढवा बाण अखाका. वाजिंत्र वगाडवानो गज बाण भेदनुं दशस्कं(१). बाण वागवुं, बाण वडे भेदावुं, [दु:ख थवुं]

बाणवइ जुओ वाणवइ

बाती *प्रेमाका.* बत्ती, दीप, [वाटवाळो दीवो] (सं.वर्तिका)

बादर गुर्जरा. शृंगामं. स्थूल, [आंखे देखाय तेवा जीव]

बादरिनगोद आनंस्त. साधारण वनस्पति-काय नामनी जीवराशि [जै.]; जुओ निगोद

बाध प्रेमाका. दोष; दशस्क(१). प्रेमाका. बाधित, दोषित

बाधरं गुर्जरा. षडाबा. बांध्युं, बंधायेलुं (सं. बद्ध)

बाधि कादं(शा). बाधा करे, अडचण करे, [उपद्रव करे] (सं.बाध्यते)

बाधी वित्तसं. नरका. आखी, अखंड, *बधी बाधुर चंद्रवा. हस्तस. सिंहा(शा). बहादुर बाधुं अखाका. अखाछ. चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. मदमो. बधुं, [आखुं, समप्र] बाधे नरका. बधे, बधामां, [आखामां]

बाध्यो अखाका. बाझ्यो, वळग्यो (सं.बद्ध)

बानु अखाछ. वचन, बांयधरी

बापीअडउ, बापीडु, बापीयडु *ऐतिकाः नेमिछं. शृंगामं*: बपैयो, [चातक] दि. बपीह] बापीया ऐतिरा. बपैया (पक्षी) बापीडउ नलरा. बपँयो (दे.बप्पीह) बापुडउ जुओ बप्पुडउ बापूकारया जिनरा. पडकार थतां बापैयो नरका. बपैयो पक्षी बाफ (श्रीबाफ) *विमप्र. [ऊंची जातनुं मलमल]

बाबत, बाबत्य मदमो. प्रस्तुत, [जात-जातनुं, वीगते] [फा.]

बाबत-बाबतना चंद्रवा. जुदा-जुदा विषयना बाबर गुर्जरा. वाग्भवा. बर्बर, जंगली जाति बाबरु वाग्भवा. बाबरो, बर्बरक नामे राक्षस बाबहियउ वीसरा. बपैयो, चातक पक्षी बाबीहउ उक्तिर. ऐतिका. बपैयो, (दे.बप्पीह) बार आरारा. उक्तिर. कामा(त्रि). गुर्जरा. जिनरा. वीसरा. षडाबा. बारणुं (सं. द्वार)

बार देवरा. नरप(द). बहार (सं.बहिर) बार जिनरा. वार, [वखत, आवृत्ति] बारकस कस्तुवा. मालवाहक जहाज [फा. बार-कश]

बारे बाट प्रेमाका. बधी दिशामां, छिन्न-भिन्न, ियस्तव्यस्त धईने] [सं.द्वादश+वर्त्त] बारग्ः, स्ट्रास्टइं, बारगहै हम्मीप्र. एक प्रकारनो तंबु, [जाहेर मुलाकात माटेनी जगा, कचेरी, दरबार] [फा.बारगाह]

बारगरी हम्मीप्र. [पगार पर काम करता अने मालिक पासेथी घोडा वगेरे मेळवता] घोडेसवार सैनिक [फा.बारगीर] बारबई प्राचीसं. द्वारका (सं.द्वारावती) (सं.द्वारपट्टः)

बारिस उक्तिर. बारश (सं.द्वादशी)

बारइ *गुर्जरा. तेरका. वीसरा. षडाबा.* बार (सं.द्वादश)

बारह मास *प्राचीसं***. बारमासा** किाव्यप्रकार] **बारां** *वीसरा.* बार (सं.द्वादश)

ৰাক্ত *अखाछ*. ৰাকৰুব্ৰি, **अ**ৰুৱা

बाल *तेरका. विक्ररा. उषाह*. बाला

बाल *उषाह*. वाळ [हिं.]

बालंड उक्तिर. सुगंधी वाळो, खस (सं.बालक /वालक)

वातचन्त्र चतुचा. नखनां अर्घचन्द्रकार चिह्न बाढ परुं *नरका. [(तिरस्कारपूर्वक) दूर कर, फेंकी दें]; जुओ प्रुं

बालरींडे सिंहा(म). बालविधवा

बालडी आरारा. बालकी

बाला * नेमिछं. [पशुबद्यां]

बालाणए *ऐतिका*. बालपणमां

बालापण *प्राचीसं*. यौवन, [युवान स्त्रीपणुं] (सं.बालात्वन)

वालिय, बालीय गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). बाळा (सं.बालिका)

बाली आरारा. गुर्जरा. चतुचा. नरका. *नलाख्या. प्रेमाका. लावल.* बाला, मुग्धा, तरुणी

वालीवेस आरारा. बाळवयवाळी (सं.बाल-वयस्); जुओ वेस

बाळे वेशे चंद्रवा. तरुण अवस्थाए, [नानी उंगरमां]

बारवट उक्तिर. बारणानुं कमाङ के पडदो बाल्डेसर ऐतिका. वालेसर, प्यारा [सं. वल्लभ+ईश्वर]; जुओ वाल्हेसर

> बावन अखाछ. बावन मूळाक्षरनी शब्दलीला [सं.रापंचाशत्]

बाबनचंदन, बाबनउ चंदन उक्तिर. प्राचीफा. लावल. विमप्र. एक प्रकारनुं चंदन (क. बावन+सं.चंदन)

वायन बाहेरो अखाका. बावन अक्षरोनी बनेली वाणीथी पर

बावनवीर प्राचीफा. पराक्रमी; *चतुर; सिमधी

बादना चंदन, बादनां चंदन प्रेमाका. सुखड; अखेगी. मदमो. ऊंची जातनुं चंदन

बावनां *आरारा*. एक जातनुं सुखड, [चंदन] बावन्नचंदन लावल. बावनाचंदन, एक प्रकारनुं चंदन कि.बावन+सं.चंदन

बावना सिरखंड स्थूलिफा. उत्तम प्रकारनुं चंदन [क.बावना+सं.श्रीखंड]

बावला आरारा. व्याकुळ, बहावरा

बासिट उक्तिर. बासठ (सं.द्विषष्टि)

बासत्था विमप्र. बास्ता नामनुं [मुलायम वणाटनुं सफेद] कापड [फा.बाफ्तह]

बासथे प्रेमप वासथी

बाह अभिकः बांय; (लक्ष्यार्थे) चूडी; आरारा. गुर्जरा. देवरा. लावल. बाहु, हाथ, बाक्ड्

बाह *प्राचीसं*. बाष्प, [आंसु]

***बाह (बाहु) [बांहु]** * गुर्जरा. [घोडो] [सं. वाही

बाहर जिनरा. सहाय, [वहार]; जुओ बूंब

न बाहिर, वाहर **बाहरि** गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. बहार (सं. बहिर्) बाहरी प्रेमाका. बहार **बाहाज्य** *चित्तसं*. बाह्य बाहिर, बाहिरि आनंस्त. तेरका. षडाबा. बहार (सं.बहिः) बाहिरत्युं उक्तिर. बहारनुं [सं.बहिर् परथी] बाहिरि उक्तिर. उपवा. बहार (सं.बहिर्) **बाहिरंग** *आनंस्त*. बहिरंग **बाही वाग्भवा**. बाधित, [रोकायेल, ग्रस्त, नियंत्रण पामेली बाहु जुओ बाह बाहुड- वीसरा. पाछा फरवं (सं. व्याघुटति) [रा.; सं.व्यावृत्त; दे.वाहुड] **बाह्रंडली** *लावल.* बांह्य, [हाथ] **बाहेर** अखाका. प्रेमाका. बहार **बाहोडी** *नरका.* बाहु, हाथ बाह्यरं अखाका. *बहारनुं, बाह्यपणुं, परायापणुं, अळगापणुं] **बांई** *नरप(द)*. [बांय], हाथ *बांकर (फाडइ) बांकर फाटइ] * नेमिछं. [वांको फाटे, आडो फाटे, ना पाडे] बांगड *नेमिछं. विमप्र. तोछड्डं; लावल. वक, कटाक्षयुक्त, [तोछडुं]; जुओ बागड, वांगड वांझडी जिनरा. वांझणी [सं.वंध्या] **बांझणि** *जिनरा*. वांझणी

जूठी]; जुओ बाठ **बांदि** षष्टिप. केदमां [फा.बंद] बांदी वीसरा. दासी बांधइ वाग्भबा. रचना करे, [योजे, वर्णवे] **बांधण [बंधण**] *उपवा*. बंधन **बांधणी** *उप्रवा*. गूंथणी, [रचना]; [बंधन, नियमी **बांधी** *प्रेमाका.* बद्ध थई. सिद्ध थई **बांधीतं** वारभवा. बंधातं, रोकातं **बांधी प**वन *प्रेमाका*. प्राणायाम करी, [श्वास संधी **बांधीव**च *उक्तिर* बांधवी **बांध्योरूंध्यो** *अखाछ*. आखो, समग्र, [हस्त-गत अने आत्मवशी **बांनणउं वडावा**. वंदवुं ते, वांदणुं (सं.वंदन) **बांभण** *आरारा, उक्तिर, वीसरा*, ब्राह्मण बांभणायतुं उक्तिर. ब्राह्मणने आपी दीधेलुं सिं.ब्राह्मणायत्ती **बांभणी** *उक्तिर*. ब्राह्मणी बांह अभिकः. आराराः. उपवाः. भदमोः. *लावल. वीसरा*. बाहु, बांह्य, हाथ **बॉहड** *लावल.* सहाय बांहडियाइं, बांहडीआइं वसंफा. वसंफा(ल). *वसंवि*. बाहुओ उपर **बांहबलि** *ऐतिरा.* बाहुना बळथी बांह सहाबी नरका. बांय पकडवी, मदद करवी बांहि सिंहा(शा). बावडूं (प्रा.बाहा) **बांहे** नरका. सहाये. मददथी **बांहेधर प्रेमाका.** जामीन, बांहेधरी आपनार **बांहोडी** *प्रेमप. प्रेमाका*. बांय, बावडुं, हाथ

बांठ चंद्रवा. चतुर?, [चतुराईनी, कपटनी] [दे.वंठ]; मदमो. वरवी?, [ठगाईभरी, बि आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. गुर्जरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वसंवि. वाग्भवा. विक्ररा. षडाबा. बे (सं.द्वे)

बिइसइ कादं(ध्रु). लावल. बेसे (सं.उप-विशति)

विज्ञानं उक्तिर. बमणुं (सं.द्विगुणम्)

विगुणउं *षडावा.* बमणुं (सं.द्वे+गुण)

बिचार, बिच्चार, बिच्चारि आरारा. लावल. वंसंफा. वसंवि(ब्रा). बेचार (सं.द्वि-चत्वारि)

बिजोरड वीसरा. विजोर्ह (सं.बीजपुर)

बिजोरडी *वीसरा.* बिजोरानां फळ

बिठी मूंढि लावल. *बेठी मूठीए, *मूठी वाळीवाळीने, *उश्केराईने

बिंदु कादं(शा). नलाख्या. बेठो (सं.उप-विष्टकः)

बिडोत्तर संउ *उक्तिर. "षडावा.* एकसो बे (सं.द्वि+उत्तर+शत)

बिहूं नलाख्या. बहेडानुं झाड (सं.बिभीतकम्) बिणी (बिमणी) कादं(शा.) बमणी [सं. द्विगुणी]

बि-ति *जिनरा*, बेत्रण

बिनास *हम्मीप्र*. बनास नदी

बिन्हड् रूपच. शीलक. बन्ने

बिन्हें जुओ विन्हें

विपतुर शृंगामं. वे पहोर [सं.द्विप्रहर]

विपुहुर *आरारा. रूपच*. बपोर

विमण्डं उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. वाग्भवा. बमणुं (सं.द्विगुण)

बिमणी जुओ बिणी

बियासी *षडाबा*. ब्यासी (सं.द्वयशीतिः) बिरखि अभिऊ. बेरखामां [सं.बाहुरक्ष]

बिरद अखाका. "अखाछ. "अखेगी. नरका.

"प्रेमाका. हरिख्या. बिरुद, प्रतिष्ठा, ख्याति, [नाम, आवरू, महत्ता]

बिर्द अखाका. बिरुद, पद [सं.विरुद]

बिल *आरारा. प्रेमाका*. दर (सं.)

बिल्लं बिल्ला प्राचीसं. ?

बिनहर सिंहा(म). बपोर [सं.द्विप्रहर]

बिवुहर ललिरा. बे पहोर

विशइ कादं(शा). नलाख्या. बेसे (सं. उपविशति)

बिश-माल कादं(शा). कमळनां तंतुओनी माला (सं.बिस-माला)

बिशलय शृंगामं. कमळनो छोड (सं. बिसलता)

बिसइ नलाख्या. लावल. बेसे [सं.उपविशति] बिसरा त्रसरा विमप्र. बे हार[सेर]ना त्रण

हार[सेर]ना

बिहइ उपवा. बेय

विहत्तरि उक्तिर. बोंतेर (सं.द्विसप्ततिः)

बिहनेवी रूपच बनेवी [सं.भगिनीपति]

बिहं गमा जुओ बिहु गमा

बिहाव्या प्रेमाका. डराव्या [सं.विभी-]

बिहि, बिहु, बिहुं वाग्भबा. बेय [सं.द्विखलु]

विहिडु नलाख्या. बहेडानुं झाड (सं. बिभीतकम्)

बिहितु नलाख्या. बीतो (सं.बिभीते)

बिहिन नलाख्या. बहेन (सं.भगिनी)

बिहिनी प्रवोप्र. बहेन (सं.भगिनी)

बिहिरखा *अभिक्त*. बिरखां], कांडा उपर पहेरवानां आभूषण [सं.बाहुरक्षकाः] बिहु, बिहुं अभिक्र. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वीसरा. बे, बेउ (सं.द्वे+खलु); जुओ बिहि बिहु गमां, बिहं गमां उक्तिर. कादं(शा). बेउ बाजु बिद्ध परि, बिद्धं परि उक्तिर. बन्ने रीते बिहुं *नेमिछ*ं बीज़ं (सं.हे:+खलु); जुओ बिहि, बिह् बिह्, बिहूं लावल. बंने **विंद** अखाका. नलरा. बिंदु, टीपुं बिंदुने नाद बिंदु ने नाद अखाका. *नादबिंदू (≕नादब्रह्मनुं अनुसंधान करवानुं बिंदु) वडे, [नाद अने बिंदु वडे, योगसाधना वडे]; जुओ नादबिंदु बिंब आरारा(व). टींडोरानो वेलो (सं.बिंबी); तेरका. प्रेमाका. पाकुं टींडोरुं (सं.) विंव *तेरका.* प्रतिमा (सं.) **बीउ** *आरारा(व).* बीयो, असन विजयसार वृक्ष (सं.बीजक); जुओ बीजू बीकाण ऐतिका, बीकानेर बीछाई *देवरा.* बिछावी, (सं.वि+छादय्) बीज अखाका. बीजनी तिथि; [श्लेषथी] जुदापणुं, [द्वैतभावना] [सं.द्वितीया] **बीज** *जिनरा*. वीजळी [सं.विद्युत्] **बीजउरा** *षडाबा*. बिजोरां (सं.बीजपूरक-) **बीजपूरादि** *आनंस्त*. बिजोर्ह वगेरे बीजल प्राचीफा. वीजकी (सं.विद्युत् परथी)

बीजाबोल उक्तिर. [*बीजबल के बलबीज, एक करियाणुं] ("सं.बीजक बोल) **बीजू** *आरारा(व)*. बीयो, असन विजयसार वृक्ष (सं.बीजक); जुओ बीउ बीजेरां कृष्णच. अन्यतर, बीजां सिं. द्वितीयतर बीजोर, बीजोरउ, बीजोरी आरारा(व). उक्तिर. बिजोरुं (सं.बीजपूरक) **बीझउं** *गुर्जरा.* **बीउं, भय पामुं (सं.*बिभ्यामि)** बीइया ऐतिकाः वींझ्या, हवा नाखी **बीट** *पंचवा*. बेट. द्वीप बीडली शीलक. बीडुं, पाननुं बीडुं **बीडी** *चतुचा. नरप(द).* पाननुं बीडुं **बीह्रं** *विमप्र*. पानबी<u>ड</u>्रं [सं.वीटिः] बीडो (बीडो लियो) जिनरा. बिीइं स्वीकार्यू], 'जवाबदारी लीधी **बीड्यां पान ज मळवां** *अखाका.* चाव्या विना पान खावं, आखो बीडो गळी जवो]; जुओ पाननो बीडलो गळवो बीडुलाई पंचवा. बिलाडी (सं.बिडालिका) **बीधा** *प्रेमाका*, डर्या, भय पाम्या **बीन्या** *प्रेमाका***. डर्या** बीबां चित्तसं. आकृति ढाळवानां चोकठां [*सं.बिम्ब] **बीय** *आरारा*. बीजी (सं.द्वितीय) **बीय-चंद** शुंगामं. बीजनो चंद्र बील उक्तिर. बीलीनुं झाड (सं.बिल्वः) बीह उक्तिर. तेरका. बीक (सं.भिष् परथी) बीहड् आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. प्रबोप्र. विराप. शंगामं. षडावा. बीए (सं. विभेति)

बीहकण *उपदा*. बीकण बीहाने अखाछ. बीधेलाने **बीहावइ** *उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या.* बिवडावे (सं.बिभीते परथी) बीडिवा उक्तिर. बीवा **बीहीजीसइ** शुंगामं. बीशे बीहीबी प्रेमाका. बिवडावेली, डरावेली **बींट** ऋषिरा. फूलनां दींट, [डांखळां] [सं. वृन्त]; जुओ वींट बींटानी ऐतिका. वींटळाई गयुं [सं.वेष्ट्] **बुक, बुक** *ऐतिका. प्राचीसं.* वाद्यविशेष; जुओ दक्कबुक, बूक, वुक बुगचड़ जिनरा. कपडानुं पोटलुं [रा.] बुज्झ क्ष्डाबा. जाण, जागृत था (सं.बुध्य-) बुझइ उक्तिर. चतुचा. देवरा. शीलक. समजे, बोध पामे (सं.बुध्यते) **बुदबुदा** *चित्तसं*. परपोटा [सं.बूदबुद] **बुद्धिमान** *नलाख्या.* बुद्धिनुं माप (सं.) **बुद्धियाल** *आरारा*. बुद्धिवान **बुद्धे** *प्रेमाका*. बुद्धिए **बुध** *प्रेमाका*. बुद्धि **बुधने मान** *प्रेमाका.* बुद्धिने मापे, बुद्धि प्रमाणे **बुधि** *आरारा. नलाख्या. नेमिछं.* बुद्धि, विचार बुधिडी लावल. बुद्धि **बुध्य** अखाका. अखेगी. बुद्धि बुध्यवणठो जुओ वणठो बुलिसरी आरारा(व). बोरसली (सं. बक्लश्री); जुओ वुलसरी

बुला- वीसरा. बोलाववुं [सं.ब्रू परथी] **बुल्लइ** गुर्जरा. नेमिछं. लावल. बोले (सं.बू, प्रा.बोल्ल) दि.बोल्ली **बुलंति** *ऐतिका*. बोले छे **बुक्षावइ** *गुर्जरा*. बोलावे ब्रसटियो प्रेमाका. सीमंतनी विधि वखते सीमंतिनीना गाले कंकुवाळा हाथ मारनार बहारइ आरारा. उक्तिर. उषाह. पंचवा. *प्राचीसं. प्रेमाका. वीसरा*. वाळे, साफ करे [दे.बोहारी परधी]; जुओ बहुरा, *वुहारी **बुहि, बुहे** *नलाख्या*. बेउथी (सं.द्वे+खलू) **बुंगण** *उषाह*. अनाज बांधवा माटेनो मोटो

चोफाळ

बुंब *उषाह. गुर्जरा. नलाख्या. प्रेमाका*. *मदमो.* बूम, पोकार, बुंबारव, शोरबकोर (दे.बुंबा)

बुंब सिंहा(शा). बंब, पोली चीज ?, [मोटुं, भारे

बुंबाण *दशस्कं(२). प्रेमाका.* बुमराण बुंबारव कादं(शा). कृष्णच. प्राचीसं. बुमराण, पोकार (दे.बुंबा+सं.रव) **बुंहतेस** *विमप्र*. बहु, घणुं [सं.बहुतर]

बुअ आरारा(व). मोगरानी एक जात (सं. बुक) ?

बूक *गुर्जरा*. एक वाद्य (दे.बुक्रा); जुओ बुक

बुकी *नरका*. नानो फाकडो – बूकडो **बूचा** *प्रेमाकी*. बेठेला के कपाई गयेला

नाकवाळा; टूंका कानवाळा **बूजर** नलरा. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो बुझ अखाका. अखेगी. ओळख, समज बुझइ आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. *प्राचीसं. विराप.* जाणे, समजे, ज्ञान पामे (सं.बुध्यति) बुझवइ अभिक. ऋषिरा. चारफा. षडाबा. *स्यूलिफा. समजावे, ज्ञान करावे जागृत करे (सं.बुध्य परथी) बुठा ऐतिका. जिनरा. वरस्या; जुओ वूठइ **बूडण** *प्रद्युचु*. बूडवुं ते [दे.बुड्ड-] बूढ अंबरा. *मूर्ख, [*वही जाय छे, *लई जाय छे]; जुओ वृद् **बूधं** *प्रेमाका*. दंडो बूसट उपाह. विक्रच. तमाचो बूही जिनरा. चाली [रा.] **बूंब** *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नलाख्या.* बूम (दे.बुंबा) बूंब न बाहिर *जिनरा*. न पोकार, न सहायता; जुओ बाहर **बूंबारव** *विक्ररा.* बूमराण [दे.बुंबा+सं.रव] बृहजडा गुर्जरा. विराटने त्यां गुप्त वेशे रहेला अर्जुननुं नाम (सं.बृहन्नला) पावैयो. बृहञ्चला *प्रेमाका*. व्यंडळ. विराटराजाने त्यां अर्जुने लीधेलो देश **बेड्सणां** शीलक. आसनो बेउल वसंवि. विचकिल, एक पुष्पवृक्ष; जुओ वेउल

बेकाम *आरारा*, निरर्थक **बेखास (वेखास)** *जिनरा.* विचार; [प्रयत्न]; जुओ वेखास **बेट** कादं(ध्रु). "कादं(शा). नानुं **बेडली** जिनस. नौका बेडी, बेडुलडी उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. *प्राचीसं*. नौका (सं.बेडा) बेडी आरारा(व). ? **बेडीवाहा गूर्जरा.** नाविक (दे.बेडा+सं.वाहक) वेडुलडी जुओ बेडी **बेडो** *कामा(त्रि). कामा(शा).* होडी, वहाण **बेबाकुळी** *प्रेमाका*. बेबाकळी सिं.भय व्याकुल] बेमना अखाछ. *द्विधा, *संकल्पविकल्प, [*उदासी] **बेर** **चंद्रवा.* [नाव] [हिं.बेरी] बेरडो दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. *रूस्तसः. अनाड़ी, उद्धत, हठीलो **बेरखा** *नरका. प्रेमाका.* बावडानुं आभूषण [सं.बाह्यसकाः] **बेल** *उषाह. दशस्कं(१). प्रेमाका.* जोडी, बेलडी [सं.द्वे परथी] **बेल** उक्तिर. [*मोगरो] [हिं.बेला]; [*बीली] · [सं.बिल्व]: [*वावडिंग] [सं.वेलक] **बेलड** *आरारा*. जोड, समान **बेल बेल *** नरका. विळाएवेळाए, वारेवारे] हिं.बेरबेर **बेला** *देवरा.* बे उपवासनुं व्रत **बेलाउल** *आरारा*. बिलावल (राग) **बेलाड** *ऐतिका.* बिलाडा गाम

बेक *दशस्कं(१).* जराक, थोडुंक

बेलि *आरारा*. मददगार **बेलि** *कादं(शा)*. बेलडी, बेनो समूह (सं.द्वै) बेबि आरारा. ऐतिका. बन्ने (सं.द्वे+अपि) बेबे जिनसः बन्ने वेश कादं(शा). उत्तम, सुंदर [फा.] **बेसज** *प्रेमाका*. बेसवाने माटे **बेह** नलाख्या. प्रेमाका. बेउ (सं.द्वे+खल्) **बेहडउं** *आरारा*. बेड्रं **बेहनर** *दशस्कं(१)***. बहेन**डी सिं.भगिनी बेहि नलाख्या. बेउ (सं.द्रे+खलू) **बेह, बेह, बेहू** आनंस्त. गुर्जरा. नरप(द). नलाख्या. नेमिछं. बन्ने (सं.द्वे+खलू) **बेहेक** मदमो. बहेकतुं, सुगंधी **बेंदी** *आनंस्त*. स्पर्श अने रसना ए बे इंद्रियवाळा बेंद्रिय उपवा. बे इंद्रियवाळा जीव वैताल जुओ वैताल वैसाणी जिनरा. बेसाडी बोक अखाछ. [बोख], पाणी काढवानी चामडा के शणियानी] डोल, [कोस] **बोकड** गूर्जरा. बोकडो (दे.बोक्कड) बोडलां प्रेमाका. बोडां, वाळ वगरनां **बोध** *आरारा*. ज्ञान [सं.] बोध कादं(शा). बौद्ध धर्मना संस्थापक बुद्ध, [बौद्ध संप्रदाय] (सं.बुद्ध) धर्मप्रकाशनी बोधि आरारा. शुद्ध आध्यात्मिक स्थिति, आत्मज्ञान, सम्यग्दर्शन] (सं.) बोधि बीज आरारा. शुद्ध धर्मप्रकाशनुं बीजरूप तत्त्व, सम्यक्त्व [जै.]

बोधिलाभ गुर्जरा. ज्ञानप्राप्ति (सं.) बोधीउ गुर्जराः उपदेश आप्यो, [समजाव्यो] (सं.बोधित) **बोमांनी** कस्तुवा. बहुमानी, [आदरणीयता] बोर हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात **बोरफुल** दशस्कं(१). एक घरेणूं **बोरि** उक्तिर. बोरडी (सं.बदरी) बोरियावडि तेरका. प्राचीफा. बोरनी भातनुं [ब्टीनी भातनुं] एक कीमती वस्त्र (सं.बदरिका+पटी?) **बोल** उपबा. बाबतो (दे.बोल्ल) बोलइ गुर्जरा. विराप. बोळे, डुबाडे, [कलंक लगाडे: नाश करे दि.] **बोलणहार** उक्तिर, बोलनार बोलण लावल. बोल, वचन, बोलवुं ते, वाणी] [सं.ब्रू, प्रा.बोल्ल] बोलबंध आरारा. प्रेमाका. वचनथी बंधावू ते. कोलकरार, प्रितिज्ञा **बोलिवउं** उक्तिर. बोलवुं **बोलीतउं** *उक्तिर*. बोलातं **बोवो** अखाका. पेटाववो बोहड् ऐतिका. प्राचीफा. स्थूलिफा. बोध करे **बोहयंतो** *ऐतिका.* बोध देता [सं.बहुल] बोह्रो मदमो. बहु **बोहोर** अखाका. फरीथी, पाछ् हिं. बहोरो बोहरेला चित्तसं. [बहोळा], अनेक जातना बोहोलांशी प्राचीका. *बडाश

बोंकार नलरा. गर्जना (रवानुकारी)

ब्य प्राचीका. वे (सं.द्वि) ब्यह परि जुओ व्यहु परि ब्यासणउ उक्तिर. बेसणुं (सं.द्व्यासनकम्); जुओ व्यासणउ

ब्रखारते मदमो. वर्षाऋतुए; जुओ व्रखारत बच्छ चित्तसं. वृक्ष

ब्रह्मपुरी *हरिख्या.* ब्राह्मणोने वासमां आपेलो भर्या घरनो समूह [सं.]

ब्रह्मस्व *प्रेमाका*. ब्राह्मणोनी मालमिलकत [सं.]

ब्रह्माज्य स्थूलिफा. ब्रह्मचर्यरूपी आयुध ब्रह्माणी मोसाच. ब्रह्मानी पुत्री, सरस्वती ब्रह्मांड दशस्कं(१). ब्रह्मरंध, ताळवानुं मर्मस्थान

ब्हो *ऐतिका*. बहु, खूब

भइ गुर्जरा. लावल. भय, डर भइरव ग्रांचीफा. वीसरा. एक कीमती वस्त्र (सं.भैरव)

भइरव उक्तिर. शंकर (सं.भैरवः)

भइरव *उक्तिर*. चीबरी (सं.भैरवी); जुओ भैरव

भइरवी *ऐतिका.* भैरवी, [*देवी, *पार्वती] भइरवी *आरारा.* भैरवी, चीबरी

भइसाइत नलरा. भेंसो राखनार (सं.महिष परथी)

भइति *उक्तिर.* भेंस (सं.महिषी)

भइसु ऋषिरा. पाडो [सं.महिषः]

भइं प्रबोप्र. भयथी

भइंस, भइंसि गुर्जरा. नेमिछं. विराप.

वीसरा. षडाबा. भेंस (सं.महिषी)
भई ऋषिरा. नंदब. थई [सं.भू-]
भउजाइ, भउजाई उक्तिर. लावल. भोजाई,
भाभी (सं.भ्रातृजाया)

भउंभू- वीसरा. *व्याकुळ थवुं, [रुदन करवुं] [दे.भंडमभूय परथी]

भए ऋषिरा. थया [सं.भू-]

भक्त आरारा. सज्ज, धरावनार (सं.)

भक्ष *आरारा. गुर्जरा.* मक्ष्य, खाद्य; *दशस्क(१).* मक्षण

भक्षि *नलाख्या*. भक्ष्य, खोराकरूप

भखइ आनंस्त. आरारा. उक्तिर. चंद्रवा. चित्तसं. वीसरा. षडावा. खाय (सं.

भक्षयति); चित्तसं. भोग करे, पामे

भखर(?) विमप्र. *सूको पहाड, [*पहाड] [रा.भक्खर]

भखळ *प्रेमाका*. भ्रष्ट, [अपवित्र]

भखली *उषाह.* "भयंकर, "सख्त, [*अपवित्र, "छूटा मोंनी]

भस्य चित्तसं. भक्ष

भग *हरिख्या.* छिद्र (सं.); *चित्तसं.* स्त्रीयोनि

भगतइ ऋषिरा. भक्तिथी

भगतडी *शुंगामं*. भक्ति, सेवा

भगतवछल दशस्कं(१). भक्तवत्सल

भगताविजं *आरारा. गुर्जरा.* खवडाव्युं (सं. *भूक्तापयति)

भगति *आरारा. गुर्जरा.* भक्ति, सेवा; *नैमिछं. लावल.* भक्ति

भगति-युगति आरारा. भक्ति/आदरपूर्वक भगत्य मदमो. भक्ति भगनी *आरारा*. भगिनी, बहेन भगळ *अखाछ.* "भोपाळां, [दंभ, कपट] भगळविद्या *अखाका*. दंभ, ठगाइ, [कपट-विद्या]

वद्या।

भगवी पंचवा. भगवती, देवी, [विधात्री]

भगंन प्रेमाका. भग्न, भांगेला

भगां जुओ कृष्ण-भगां

भगा विमप्र. [स्त्री]योनि, [सं.भग]

भग्गा तेरका. भाग्युं, [नासी गयुं] (सं.

भग्न+क)

भग्गड़ प्राचीतं. नासी गयेलो (सं.भग्नः) भचरडायां प्रेमाका. कचडायां, दबायां भजड़ *नलाख्या. आश्रय करे; चित्ततं. आश्रय ले, स्वीकारे, पामे, घरे; आनंस्त. पामे; प्रेमाका. हरिख्या. घारण करे; प्रेमाका. *इंखे, [मिक्ति करे, आदर बतावे] सं.भजते]

भजइ ऋषिरा. प्रेमाका. शोभे (सं.भ्राज्) भजना *आनंस्त*. अंश, [विभाग], विकल्प [सं.]

भजा ऐतिका. भार्या, पली भजीइ शृंगामं. भांगी जाय [सं.भज् परथी] भज्य चित्तसं. [भज], स्वीकार, आश्रय ले भट अखाछ. कथा कहेनार भटके प्रेमाका. भटकाय, अथडाय भटित नेमिछं. उत्साहप्रेरक [वचनो], [मट-वाद, प्रशस्ति] (सं.)

भट्ट ऐतिरा. गुर्जरा. प्राचीफा. विक्ररा. षष्टिप्र. भाट, स्तुतिपाठक (सं.) भठ मदमो. धिक् भठ्ये (भठ्ये पांडे) *अखाछ. [तिरस्कारे] भड कामा(त्रि). गुर्जरा. चंद्रवा. तेरका. हरिख्या. सुभट, योद्धो, समर्थ पुरुष (सं.भट)

भडइ अखाका. गुर्जरा. लावल. विराप. झूझे, लडे, मुकाबलो करे; आरारा. "प्रेमाका. सामे आवे, [लागु धाय, जोडाय]

भडिय गुर्जरा. उखेडी (सं.*भ्रष्टिता) भडत्व गुर्जरा. भड्युं (*सं.भृष्ट) [सं.भटित्र] भडवाउ, भडवाय कर्पूमं. प्राचीफा. हम्मीप्र. भटवाद, पराक्रमनी ख्याति

भडनाउ, भडनाय ऐतिरा. "प्रद्युचु. *विक्रच. विमप्र. *हम्मीप्र. [सुकीर्तित पराफ्रमी, वीर], बहादुर योद्धा (सं.भटवाद परथी); जुओ भडिवाउ

भडरुडइ उक्तिर. भडभडे
भडावली विराप. भडपणुं, शूरातन
भडांबली "गुर्जरा. [शूरातन]
भडियं उक्तिर. भडथुं (सं.भटित्रम्)
भडिवाउ "गुर्जरा. [सुकीर्तित वीर पुरुष]
(सं.भट+वाद); जुओ भडवाउ
भणइ अखाका. आरारा. ऐतिरा. उक्तिर.

णइ अखाका. आरारा. एतरा. अक्तर. उपबा. कादं(शा). गुर्जरा. चंद्रवा. तेरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रबोप्र. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. षष्टिप्र. कहे, बोले, वर्णवे (सं.भणति)

भणणहार *आनंस्त.* भणनार भणतला *विमप्र.* बोलता भणि, भणी आरारा. उक्तिर. कादं(ध्रु).

*कादं(शा). चारफा. जिनरा. देवरा.
नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. षष्टिप्र.
सिंहा(म). हरिख्या. प्रति, -ने; -ने
अनुलक्षीने, माटे; तरफ; लीधे, -थी;
[गणीने, जाणीने], -ने बदले, -ने स्थाने,
तरीके; जुओ ते भणी, तेह भणी, सापु
भणी

भणिषुं *उक्तिर*. भणवुं; कहेवुं (सं.भणते) भणीनि कृष्णवा. गणीने, मानीने भण्डारज *ऐतिका*. भंडार

भतार, भतारो, भत्तार गुर्जरा. तेरका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि (क्रा). विराप. भरथार, पति (सं.भती)

भति *आरारा. कर्पूमं. नेमिछं. प्राचीफा.* भक्ति, आदर

भत्तिवंतु *ऐतिका*. भक्तिवन्त

भत्य प्राचीका. भक्ति

भवावितु उक्तिर. भाथाधारी (सं.भस्त्रा परथी)

भद्र दशस्कं(१). ग्रेमाका. भद्र जातिनो हाथी

भद्रक आराराः भलो, भोळो [सं.]

भद्रा वीसरा. अशुभ काळयोग (सं.)

भद्र * गुर्जरा. [?] (सं.भद्र)

भद्रे आरारा. भली बाई (संबोधन)

भधर लस्तसः भदर, [भद्र, मोटा कोटनी अंदरनो नानो कोट]

भगड- *प्राचीसं*. भमवुं, आथडवुं [सं.भ्रम्] भगण *तेरका*. भ्रमण

भमण *प्राचीफा*. भवन, मन्दिर

भमती *उक्तिर. उषाह.* मंदिरमां चक्राकारे फरवानो मार्ग (सं.भ्रम् परथी)

भमर प्रेमाका. [भमरी], स्त्रीओनुं सेंथामां, [माथामां, अंबोडामां] खोसवानुं एक घरेणुं; गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. भमरो (सं.भ्रमर)

भमरडे गुर्जरा. प्राचीसं. विराप. भमरो (सं.भ्रमर); उक्तिर. जलावर्त, पाणीनो खाडो (सं.भ्रमरकः)

भमरला वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). भमरो (सं.भ्रमर+ला)

भमरी *प्रेमाका. [गाडानो एक भाग]; नरका. फुदरडी; नलरा. स्त्रीओनुं एक घरेणुं (सं.भ्रमरी)

भमित उक्तिर. चक्कर आववाना रोगवाळो, बेहोशीना रोगवाळो (सं.भृमलः)

भमह ऐतिरा. भ्रमर, [भवुं] [सं.भ्रूमुख] भमहडी, भुमहिय, भुंयडियह, भूमहीय प्राचीफा. हरिवि. भ्रू, भन्मर, [भवां] (सं.भ्रूमुख)

भमिष्ठ, भमिष्ठी अभिक्र. अंबरा. नलरा. नेमिष्ठं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाग्भबा भम्मर, भवुं

भमहि-भंगईं लावल. भ्रूभंग वडे, भम्मरना वळांक वडे

भगही जुओ भगहि

भगंडल पंचवा. आखी पृथ्वी (सं.भूमण्डल)

भमाडइ ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विराप. भमावे, फेरवे, घुमावे, रखडावे (सं.भ्रम् परथी)

[अज्ञान-बुद्धिवाळी]

भमाया *लावल.* भमाव्या, [घुमाव्या] भिम कादं(शा). भवां (सं.भ्रू) [सं.भ्रूमुख] भिक्रण ऐतिका. भमीने. फरीने **भमुह** *प्राचीफा*. भन्भर, [भवुं]; [सं.ध्रुमुख] भमुहि, भमुहिं अभिक. ऋषिरा. वसंफा(ल). *वसंवि(ब्रा)*. भवां [सं.भ्रुमुख] भयडि प्राचीफा. भमर, भवुं (सं.भृकुटि) **भयणा** जिनरा. भजना, विकल्प, होवूं या न होवुं ते] [जै.] **मयणि** गुर्जरा. श्राचीसं. भगिनी, बहेन भवं नेमिछं. वीत्युं, थयुं (सं.भूत) भयु अभिक. थयो (सं.भूत) भर आरारा. गुर्जरा. तेरका. वसंवि(ब्रा). भार, जथ्थो, पूर्णता, प्रचुरता, अतिशय (सं.); अखाका. पूर्णता; उपबा. तेरका. भरेलुं, [पूरेपूरुं] भरड, भरडक, भरडू, भरडो अभिक्र. "उषाह. प्रद्युचु. मदमो. विमप्र. शिवनो पुजारी, हलको ब्राह्मण; ब्राह्मण **भरणी** ऋषिरा. भरणी नक्षत्र (सं.) भरणी उक्तिर. बरणी, भरवानुं पात्र (सं. भरणिका)

भरवेश्वर *प्राचीफा.* भरत चक्रवर्ती, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथना पुत्र (सं.भरते-श्वर) भरवेसर प्राचीसं. भरतेश्वर भरपर वित्तसं. बधे भरेलो, व्याप्त

भरम-धी *अखाका.* भ्रमित बुद्धिवाळो,

भरष *आरारा*. भरतक्षेत्र: *प्राचीसं*. भरत

भरमे चित्तसं. भरमाय [सं.भ्रम्] **भरह** *गुर्जरा. प्राचीफा*. नाट्य-नृत्य-संगीत आदि (सं.भरत) **भरहखंड** *गुर्जरा.* भरतखंड **भरहभावि** *प्रद्युचु*. भरतनाट्यना भाव अनुसार **भरह-भुंगल** *लावल*. एक जातनी भूंगळ भरहभेद विमप्र. भरतना नाट्यशास्त्रमां आपेला [नाट्य-]नृत्यना प्रकार **भरहरी** *उषाह. गुर्जरा. विराप.* भरभर अवाज कर्यो **भरहेसर** *प्राचीसं*. भरतेश्वर भराई आरारा. भरावुं ते [सं.भृ-] भरि (नीर भरि) नलाख्या. [नीर]भेर, नीर मात्रथी भरियउ (भरियउ मास) आरारा. (महिना) रह्या, [गर्भ रह्यो] [सं.भरित] **भरिवं** उक्तिर. भरवं **भरुअच्छ** उक्तिर. भरूच (सं.भुगुकच्छ) भरुआंडि अभिकः [भाराडी], माथाभारे भरुवछ प्राचीसं. भरूच (सं.भृगुकच्छ) **मरूअच** वेताप. भरूच **भरुआडी** *प्राचीफा*. भरवाडी, भरवाडनी स्त्री. गोपी **मरुंसे** चित्तसं. विश्वासपूर्वक **भर्तु** *प्रेमाका*. भर्तु, भर्ता, पति भर्म आरारा. कादं(शा). नरका. नलाख्या. *प्रेमाका.* भ्रम, भ्रांति, अज्ञान

भर्म-मेगळ अखाका. भ्रम[अज्ञान]रूपी

हाथी; जुओ मेगल

चक्रवर्ती

भल, भलु अखाका. अखाछ. *उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). भलुं, सारुं, [श्रेष्ठ] (सं.भद्र)

भलंड ऋषिरा. चित्तसं. लावल. सम्यची. भलो, सारो, उत्तम (सं.भद्र); आरारा. सारो, सुखी

भलके ऐतिका. चमके, [झळके]

भतको अखाका. प्रेमाका. मदमो. भालो

भलको वान्यो भालडे प्रेमाका. "एकाएक गुस्सो आव्यो, [आघात लाग्यो]

भलखंड *गुर्जरा*. भालानो दुकडो (सं. भल्ल+खंड)

भलती भेलि ललिरा. परस्पर आखडती

भलपण अखाछ. नरका. भलाई, मोटाई [सारापणुं, श्रेष्ठता] [सं.भद्रत्वन्]

भल-भूली अखाका. *भली अने भान-भूलेली, *भली-भोळी, [पूरेपूरी भूलथाप खाधी]

भलहतीयो *ऐतिका.* चमक्यो, [झळक्यो] भलाई *आरारा.* भळावी

भित प्राचीसं. हठ, दुराग्रह [दे.]

भलु जुओ भल

भले जिनरा. [विद्यार्थीने आरंभमां शिखवाडातो शुभ] अक्षर, स्वरव्यंजन

भलेरउं प्राचीसं. सुन्दरतर, भलेरुं (सं. भद्रतर)

भक्ष चित्तसं. दशस्कं(२). प्रेमाका. भलुं, सारुं; प्रेमाका. सारी रीते [सं.भद्र] भक्षी गुर्जरा. भालो, [बरछी] [सं.] भक्षी लावल. उत्तम, श्रेष्ठ (सं.भद्रिका) भव गुर्जरा. तेरका. नरका-२. प्रेमाका. "लावल. वीसरा.जन्मारो, अवतार (सं.); चित्तसं. लावल. संसार (सं.); नरका. "प्रेमाका. शंकर, महादेव (सं.)

भवण तेरका. भवन, दहेरासर

भविण ट्रिट्य (जिण भविण ट्रिट्य) ऐतिका. जिनभवनमां [जिनमंदिरमां] रहीने

भवदोहग आनंस्त. भवनां [संसारनां, जन्मारानां] दुर्भाग्य

भवविपाकी *आनंस्त*. जे कर्मनो विपाक [परिणाम] आ भवमां मळे ते

भवसंड गुर्जरा. जन्मशत, सेंकडो जन्मारा (सं.भव+शत)

भवंतर तेरका. शृंगामं. जन्मांतर, अन्य भव (सं.भवान्तर)

भवाड्युं *नरका. नरप. षष्टिप्र. ब*नाववुं, बताववुं, (शोभा) देखाडवी

भवि *तेरका. प्राचीका.* भव्य, मुक्तियोग्य जीव [जै.]

भवि कादं(शा). भवां (*सं.भ्रू) [सं.भ्रूमुख] भविक गुर्जरा. देवरा. नलरा. प्राचीका. लावल. षडाबा. मोक्षने योग्य जीव (सं.) [जै.]

भविय गुर्जरा. तेरका. नलरा. भव्य, मोक्षने योग्य जीव (सं.भविक, भव्य)

भवियण आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. मोक्षने योग्य जीव (सं.भव्यजन, भविकजन)

भवी *आनंस्त. आरारा.* भव्य, मुक्तिनी योग्यतावाळा जीव

भवीय नलरा. मोक्षने योग्य जीव (सं.

भविक)

भवीयण शृंगामं. भव्यजन, [मुक्तिनी योग्यतावाळा जीव]

भव्य *उपवा. देवरा. नलरा. मोक्षने योग्य जीव (सं.)

भशंष *मदमो***. भसतो**

भषइ उक्तिर. भसे (सं.भषति)

भस *विमप्र. [*मोटुं, *विशाळ]

भसम *आरारा. उक्तिर. वीसरा.* भस्म, राख भसत्, *वसंफा. वसंवि.* भ्रमर, [भमरो] [दे.]

भस्मसूत उक्तिर. पारानी मस्म (सं. भस्मसूतकम्)

भंग आरारा. भेद, प्रकार, वर्ग (सं.); वसंफा. वसंवि. "वसंवि(ब्रा). प्रकार, रीत

भंगि *गुर्जरा. तेरका. लावल.* प्रकार, रीत, ढंग

भंगि ऋषिरा. भांग [सं.भंगा]

भंग्यांतर (भंग्यंतर) *आनंस्त*. बीजो प्रकार (सं.भंगी-अंतर)

भंजइ गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र. भागे (सं.भंज्)

भंजणहार *शृंगामं*. भांगनार

भंजवाड *उक्तिर.* नुकसान, विनाश (सं. भंज्+पात)

भंजिड जुओ भंय्यिउ

भंड सिंहा(शा). ?, [*भांड, *निर्लज्ज, *विदूषक]; *षडाबा*. [भांडभवायानी] कुचेष्टा (सं.)

भंडरुआं *उषाह.* भांडरां, [भाईभांडु] [सं.भांडरूप]

भंडसाल *प्राचीसं*. कोठार, भंडार (सं.भाण्ड-

शाला)

भंडारउ जुओ भण्डारउ **भंडाती** *प्राचीसं*: पात्रसमूह (सं.भाण्डावित) **भंति** *ऐतिरा*. भाते, [प्रकारे] [सं.भक्ति]

मंभर-भोलिया जुओ भुंभर-भोली

भभर-भालया जुआ भुभर-भाला भंभरभोली, भंभलभोलिय, भामरमोली,

भांभरभोलवी *प्राचीफा*. साव भोळी,

मुग्ध (सं.विह्वल+*भ्रमुल्लक) दि.भुंभुर-

भोलिया]; जुओ भंमरभोलिय

भंभल *विमप्र. [विह्नळ, मत्त]

मंभलभोलिय जुओ मंभरभोली

भंभली विकरा. विह्नल, हांफळीफांफळी

भंभी *ऐतिका***. वाद्यविशेष**

मंभोला *प्रेमाका*. फोला

भंमरभोतिय गुर्जरा. साव भोळी (सं.विह्नल+ "भ्रमुझक); जुओ भंभरभोली

भंखिउ [भंजिउ] प्रवोप्र. भांगी गयो [सं.भंजित]

भाअग, भाग कामा(त्रि). भाग्य

भाइ *आरारा*. भावीने, विचारीने; भावे, गमे [सं.भावयति]

भाइनु *गुर्जरा.* भाग्य

भाउ गुर्जरा. भाई (सं.भ्रात्)

भाउ-बीज *उक्तिर.* भाईबीज (सं.भ्रातृ-द्वितीया)

भाउतइ *आरारा*. भावथी

भाऊ *तेरका. प्राचीसं*. भाई (सं.भ्रातृ)

भाऊ *गुर्जरा.* **भाव, लागणी**

भाकसी अखाका. केदखानुं: जुओ भाखसी

भाक्ष मदमो. भाख, कहे

भाख *आरारा. ऐतिरा. उषाह. गुर्जरा*. भाषा, वाणी, वचन

भाखइ आरारा. उपबा. जिनरा. देवरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. भाखे, बोले, कहे (सं.भाषति)

भाखडी नलरा. वाणी (सं.भाषा)

भाखणा *आनंस्त.* कहेवुं ते, [कथन]

भाखाबंघ कादं(ध्रु). पोतानी भाषानां उतारो

भाखसी *ऐतिका***. के**दखानुं; जुओ भाकसी

भाख्या *मदमो.* **भाषा**

भाग *आरारा. ऋषिरा.* भाग्य; जुओ भाअग

भाग चित्तसं. अंश, भेद, प्रकार; जुओ भांगउ

भागइ आनंस्त. भांगे, विकल्पे, [प्रकारभेदे]

भागइ नलाख्या. भाग पडे, दुकडा थाय (सं.भग्न); भागे, दूर थाय

भागडउ *षडाबा. *लावल.* [निराश], विक्षुब्ध, भोळियो

भागळ प्रेमाका. भागोळ, पादर

भागलं वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). भांग्यो, नाश पाम्यो, चाल्यो गयो (सं.भग्न+ल)

भागायी वित्तसं. भाग्याथी

भागि *नलाख्या*. भाग्य, नसीब

भागी *आरारा*. भांगी (सं.भग्न); *चित्तसं*. भांगी, नष्ट थई

भाजइ अखाछ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. चंद्रवा. लावल. विराप. शृंगामं. षडाबा. भागे, तूटी जाय, नष्ट थाय, दूर थाय; तोडे, नष्ट करे, दूर करे (सं.भज्); *प्रेमाका*. नासे भाजन उपवा. प्रेमाका. पात्र, वासग (सं.) भाजनहार देवरा. भांगनार (सं.भंजनकार) भाटी षडाबा. रोजी [— खास करीने वेश्यानी] (सं.)

भाठ *उक्तिर*. शेकवा-उकाळवा-तळवा माटे-नुं पात्र, कडाई (सं.भ्राष्ट्रा)

भाठी "प्रद्युचु. [कडाई] (सं.भ्राष्ट्रा)

भादु वडाबा. कडाई (सं.भ्राष्ट्र)

भाड**उं** उक्तिर. षडाबा. भाडुं, विस्तु वापरवा माटे अपातुं नाणुं, माणस पासे काम कराववा माटे अपातुं नाणुं – पारिश्रमिक] (सं.भाटकम्)

भाडूल आरारा. ?

भाष अखाका. अखेगी. आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. चित्तसं. प्रेमाका. विमप्र. वीसरा. भानु, सूर्य

भाणिजी वीसरा. भाणेज (सं.भागिनेय)

भाणु तेरका. भानु, [सूर्य]

भात आरारा. थाय छे (सं.भाति)

भात उक्तिर. उपबा. नलाख्या. प्रेमाका. भातुं, खोराक, अन्न (सं.भक्तम्)

भाति *आरारा. ऋषिरा.* रीत, भांति, प्रकार; *आरारा.* भात, आकृति [सं.भक्ति]

भाति भाति *प्रेमाका*. भातभातनां, जुदा-जुदा प्रकारनां

भाश्रीजा उक्तिरः भत्रीजो (सं.भ्रात्रीयः) भाषडी उक्तिरः धमण (सं.भस्त्रा)

भाषी अखाछ. चंद्रवा. प्रेमाका. भाधावाळो, योद्धो, बहादुर लडवैयो [सं.भस्त्रा

भाग्य

परथी]; जुओ काळमाथी **भावव** *प्राचीफा*. भादरवो महिनो (सं. भाद्रपद) **भाववउ** *प्राचीसं*. भाद्रपद, [भादरवो] भाइव तेरका. भादरवी (सं.भाद्रपद) भाववड उक्तिर. वीसरा. भादरवो महिनो (सं.भाद्रपद) **पानुसुता** *दशस्कं(१). प्रेपाका.* सूर्यपुत्री यमुना भामणड जिनरा. ओवारणांथी भामणुं अखाका, अभिक, अंबरा, नलरा, विमप्र. ओवारणां (सं.भ्रामण) **भामणंडइ** *आरारा.* भामणां करीने, भमाडीने **भामणडां, भामणा नरका**. ओवारणां भामणि जिनरा. भामिनी भामणे ज्वं *दशस्कं(१). प्रेमाका*. ओवारी जवूं, न्योच्छावर करवुं भामरभोली चतुचा. घेली, साव भोळी; जुओ भंभरभोली भामंडल आरारा. तेजवर्तुळ (सं.) **भागा** अखाका. प्रेमाका. भामिनी, सुंदर युवती **भामा** *प्रेमाका.* ***फांफा, **पाखंड: *देखा**डा: खेल: तोफानी चेष्टाओं **भामिणि** *गुर्जरा*. भामिनी, स्त्री **मामे** अखाका. अखेगी. प्रेमाका. भ्रममां, भ्रमणामां भाभो अखाका. भ्रम, भ्रिमणा

भार *प्रेमाका.* [सोनानो एक मोटो तोल], वीस तोला के बार मणनुं वजन **भार** *दशरकं(१).* उपकारनो के ऋणनो भार; *प्रेमाका*. प्रभाव, सत्ता; आबरू; मान, [गौरव]: *चित्तसं*, महत्त्व [सं.] **भार अढार** *अखाका. प्रेमाका*. बधा ज प्रकारनी, [अढार वर्गनी]; जुओ अढार भार **भारहं** *चारफा. लावल.* भार भरावे, भार लादे], बोजाथी भरे (सं.भारयति) **भारज्द** *उक्तिर*. मोम, पाटडो, आडसर (सं.भारपट्टः); जुओ भारोट भारट सिंहा(म). मोभ, पाटडो, [आडसर] **भारणि** *आरारा*, भारणरूप, भाररूप **भारथ** *चंद्रवा.* भारत – महाभारत भारथी दशस्कं(२). प्राचीफा. "मदमो. भारती. सरस्वती भार भागवो, भार भांगवो ०*नरका.* *संशय दूर थवो; प्रेमाका. "अभिमान दूर थवुं [प्रतिष्ठा जवी, लाजशरम जवी] **भारभाती** *गुर्जरा.* भार उपाडनार (सं.भार+ मालिन्) **भार राखवो** *नरका.* मान राखवुं, शरम राखवी, [शाख राखवी, मोभो जाळववो] भारवट्ट जुओ भारोट भारिउ विमप्र. *भारमां राख्यो, [भार कर्यो छे, वजन वधार्युं छे] **भारिज्या** *आरारा*. भार्या, पत्नी **भारिंग** *आरारा(व).* भारंगी, एक वनस्पति

भाय गुर्जरा. तेरका. भाई (सं.भ्रात)

भाषेग दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.

(सं.भागी) भारेवत (भारेवन) *चंद्रवा*. महत्तावाळी, मोटो **भारो** *अखाछ*. भारवाळो. भारेखम भारोट, भारवट्ट विक्ररा. पाटडो, मोभ सिं. भारपट्ट]; जुओ भारउट **भार्या** *नरका.* [भारथी] भरेलां, [लादेलां] **भाल ऋषिरा. चित्तसं**. भाळ. शोध, समाचार, पत्तो [सं.भाल्] **भालडी ****गूर्जरा. "विराप***. बाण, तीर (सं**. भल्ली+ड) **भालडे** *प्रेमाका*. भालमां, कपाळमां **भारुव्यं** ऋषिरा. नरका. प्रेमाका. भळाववुं, सोंपवं, ने माथे नाखवं [सं.भालय] **भाति** *उक्तिर*. बरछी, बाण, तीर (सं. महिः) भाळी नरका. [भळावीने], बतावीने **भालोडे** *विभप्र. लावल*. बाणथी. तीरथी [सं. *भल्लकूट भावड जिसी आरारा. गमे तेवी भावड तिम करी कृष्णच. गमे तेम करी **भावद्यण** *आरारा.* भावार्चन, भावपूजा भाक्ज वीसरा. भाभी (सं.भ्रातुर्जाया) **भावट** *नरका. प्रेमाका*. उपाधि, जंजाळ, दुःख भावठ चंद्रवा. नरप(द). प्रेमाका. मदमो. उपाधि, पीडा, भीड, मुश्केली भावि अंबरा. ऋषिरा. ऐतिका. नलरा. नेमिछं. *विमप्र. मानसिक दु:ख,

अर्थिन्) **भावठी** *आरारा*. दरिद्र **भावन** *प्रेमाका***. स्तुति, [गूपगान]**; भावे गमे तेवो, सुंदर [सं.] **भावांतर** *अखाका.* बीजो भाव [सं.] भाविक प्रेमाका. भविष्यमां थनारी [सं.] भाषइ उक्तिर. बोले, कहे (सं.भाषति) **भास** *आरारा*. भाषा; *गुर्जरा. "नलरा*. वसंफा(ल). वसंवि. प्राचीफा. *"वसंवि(ब्रा)*. पद्यखंड, काव्यनो एक भाग, [काव्यप्रकार] (सं.भाषा) भासइ आरारा. गुर्जरा. जिनरा. बोले, कहे (सं.भाषते) **भासकशक्ति** *चित्तसं*. प्रकाशित करवानी शक्ति. प्रतिबिंब पाडवानी शक्ति **भासडी** *देवरा*. वाणी, शब्दो (सं.भाषा) **भासरु** *प्राचीफा.* प्रकाशमान, तेजस्वी (सं.भास्वर) **भासुर** वसंवि. वसंवि(ब्रा). तेजस्वी (सं.) भासुरह ऐतिका. चमकतुं, प्रकाशमान **मांकार** *नलरा.* भेरनो अवाज, (रवानु-करी), भां-भां एवो अवाजी **भांखडी** उक्तिर, भांकडी, गोखरुने मळती एक वनस्पति, (सं.भक्षटः) **भांगउ** *उपबा. षडाबा*. भेद. विभाग, प्रकार (सं.भंग); जुओ भाग भांगर अभिक. *एक जातना घोडा, [एक जातनी सांढणी **भांगरज** *उक्तिर. आरारा (व).* भांगरो (सं.

उपाधि, मुसीबत, जंजाळ (*सं.भाव+

भुंगराज)

भांजड आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. चित्तसं. हॅरिख्या. भांगे, भांगी नाखे: भांगी जाय (सं.भंज्) **भांजिलं** उक्तिर. भागवं **भांड** *अखाका*. पात्र, वासण सिं.ी भांड *उक्तिर, आनंस्त*, भवैया जेवी एक जाति (सं.भंड) भांड**इ** *उक्तिर.* [*गाळ दे; *संग्रह करे] (सं.भण्डयति) **भांडशाला** *षडाबा*. कोठार, भंडार (सं.) भांडी यडाबा. हजामनी अस्तरा-पेटी (सं. भाण्डि) [दे.भंड परथी] भांज आरारा. भानु, सूर्यः; मदमो. (सूर्य=) राजा भांत,भांत्य चित्तसं. भातं, प्रकार **भांति** *आरारा*. प्रकारे; *ऋषिरा*. साडला वगेरेनी भात (सं.मक्ति) भांत्य जुओ मांत भांपणि *षडाबा*. पांपण भांभरभोतवी जुओ भंभरभोली **भांभरभोळी** नरका. प्रेमाका. घणी भोळी, मुग्ध [सं.विह्वल+*प्रमिलक] भांमल (भांभलभोली) ऐतिका. [घणी] भोळी **भांमणां** *चंद्रवा.* ओवारणां, दुखणां [सं. भ्रामण **मि** कादं(शा). भय, बीक **मिइसि** *आरारा*. भेंस (सं.महिषी) भिउड *गूर्जरा*. भ्रमर, भवां (सं.भृकुटि)

भिख्खया *प्रबोप्र.* बौद्ध साध्य (सं.भिक्षु+क) भिख्या प्रबोप्र. भीख (सं.भिक्षा) **भिग्गह** *प्राचीफा*. प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम (सं.अभिग्रह) **मिछ** *ऐतिका*. भिक्षा **मिज्ज-** *तेरका. प्राचीसं*. भींजादुं (सं.भिद्य-) भिड**इ** गुर्जरा. निकट आवे, लडे, [भीडे, मुकाबलो करे] (सं.*भिटति) [दे.] **मिडइ** *विराप.* उखेडे (सं.भ्रष्ट परथी) **भित्ति** कादं(शा). भींत, दीवाल (सं.) **भिवि** नलाख्या. भेदथी. [रहस्यप्रकटन-पूर्वक] **मिया** *दशस्कं(१).* भाई – अजाण्या पुरुष-नो निर्देश करवा वपराती संज्ञा **भिराडी** गूर्जरा. विराप. भाराडी, हिंमतवान भिलइ अंबरा. जिनरा. भळे, मळे, हळेमळे: *अंबरा. आरारा. गुर्जरा.* भळे, मिश्रित थाय. जिोडायो (दे.) भिलु, भीलु प्रेमाका. भेरु, साथी; जुओ भिंइसु लावल. भेंसो, पाडो [सं.महिषः] **मिंगार** उक्तिर. तेरका. झारी (सं.भंगार) भिंडिमाळ, भिंडीमाळ दशस्क(१). प्रेमाका. गोफण के तेना जेवुं पथ्थर फेंकवानुं यंत्र **भिंतर** प्रबोप्र. प्राचीफा. अंदर (सं. अभ्यंतर) भिभल, भिभलउ कृष्णबा. प्राचीसं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा.) शुंगामं. विह्नक, मदमत्त; जुओ भीमर, भीभल भीकर प्रबोप. भयंकर (सं.भयंकर) **भीखता** *देवरा.* भिक्षा **भीख्न** *देवरा*. भिक्ष

मिउडी *उक्तिर. विराप.* भुकृटि, भवां

भीजइ गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. लावल. वीसरा. भींजाय, [आर्द्र थाय] [सं. अभ्यज्यते]

भीडइ *गुर्जरा*. भीडे, [सकंजामां ले] [सं. अभ्यटित]

•भीडी [भींडी] ग्रेमाका. •बीडेली, •चोंटेली, [शणिया रेसा] [सं.भिंडा]

भीति अथिक. उक्तिर. उपबा. षडाबा. भींत (सं.भित्ति)

भीमर अभिक. [मदथी] विह्नल; जुओ भिंभल

भीर वेताप. ?, [भयंकर, भारे मोटो]

भीर *दशस्कं(१)*. भेरु, भीलु, [साथी]; जुओ भिलु

भीलिम आरारा(व). भिलामो (सं.भल्लातक)

भीलु जुओ भिलु

भींडी जुओ भीडी

भींतर *प्राचीका.* भीतर (सं.अभ्यंतर)

भींभत वसंवि(ब्रा). प्रेमधेलुं (सं.विह्नल); जुओ भिंभल

भींभली *प्राचीफा*. मुग्धा, [प्रेमधेली] (सं. विह्नला)

भींमती *गुर्जरा. विराप.* [मदथी] विह्नळ, [प्रेमघेली] [सं.विह्नल-]

भुअण, भुयण उषाह. भुवन, [लोक] भुअंग रूपच. वसंफा(ल). विकरा. भुजंग,

साप

भुअंगम लावल. नाग (सं.भुजंगम)

भुद्र, भुद्रं आरारा. उपबा. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा. पृथ्वी, जमीन; जमीन पर (सं.भूमि); षडाबा. जमीन परनुं अंतर

भुइफोड उक्तिर. भोंयफोडा, एक वनस्पति (सं.भूमिस्फोट)

भुइं जुओ भुइ

भुए, भुवे प्रबोप्र. भयथी

भुगत देवरा. भोगववा निर्णीत भोग

भुगतारि सिंहा(शा). भोक्ता [सं.भोक्तार]

भुजन *प्राचीका.* भोजन

भुजंग विक्ररा. विलासी पुरुष [सं.]; नरका. [नाग], शेषनाग [सं.]

भुजाइ *उक्तिर. वाग्भबा.* भोजाई (सं.भातु-र्जाया)

भुदर दशस्कं(१). भूधर, कृष्ण

भुधणी शृंगामं. राजा

भुमहिया जुओ भमहडी

भुव गुर्जरा. भुज, हाथ

भुवण गुर्जरा. भुवन, [लोक]; तैरका. [भुवन, लोक]; दहेरासर; जुओ भुअण

भुयंग, भुयंगु आरारा. वसंफा(ल). वसंवि(ज्ञा). शंगामं. भुजंग, नाग

भुयंगम ऋषिरा. नरका. प्रेमाका. हरिवि. साप (सं.भूजंगम)

भुये जुओ भुए

भुर वेताप. गभार

भुरभी, भुरसी दशस्कं(१). प्रेमाका. विवाह-प्रसंगनी बांधेली दक्षिणा [सं.भूयसी]

भुलंड गुर्जरा. भूलभरेलो (प्रा.भुल्लइ)

भुळइ *उक्तिर.* भ्रष्ट थाय, च्युत थाय, मूले [दे.]

भुवण *तेरका. वीसरा*. भुवन, लोक, जगत **भुवि** *शुंगामं***. पृथ्वीमां** भुहरा पंचवा. जमीनमां करेलुं घर (सं.भूमि +गृह) भुहि गुर्जरा. भूमि भुंइ जिनरा. भूमि **भुंखर विमप्र. "**गांडानी माफक उश्केरायेलो, ["करडो]["दे.भुक्ख] भुंगलभेर जुओ म्यलभेर **मुंज-** तेरका. भोगववुं (सं.) **भुंड-निलांडि** *प्राचीसं*. अशुभ ललाटवाळी, [निर्भागी] **मुंद** वेतापः ? भुंभर-भोली, भंभर-भोलिया प्राचीसं. अतिशय मुग्धा **भुंहडियह** जुओ भुमहडी **भुंहरा** *आरारा.* भोंबरा (सं.भूमिगृह) **भूअबलिहि** कृष्णच. भुजाबळे **भूअंग** कृष्णच. भुजंग, [सपी भूअंगम कृष्ण*वा.* भूजंगम, नाग **भूअंगु** वसंफा. भुजंग, सर्प भूइ उक्तिर. जमीन, पृथ्वी (सं.भू:) भूआढ वीसरा. राजा (सं.भूपाल) **भूइं** *विराप*. भूमि **भूखालू** *पडाबा.* भूखाळवो (सं.बुभु**क्षा** परथी) भूवर चित्तसं. पृथ्वी पर चालनारा; गुर्जरा. पृथ्वी पर रहेनार, माणस (सं.) **मूजपत्र** कादं(ध्र). भूर्जवृक्षनी छाल, जेना पर लखवामां आवतुं हतुं (सं.भूर्जपत्र) भूजाल जिनरा. मोटी भुजाओवाळो वीर

भूजि *आरारा(व).* भोजपत्रनुं झाड (सं.भूजी) **भूत** *चित्तसं.* पंचमहाभूत, भौतिक तत्त्व **भूतिक** चित्तसं. भौतिक **भूतो** *अखाका*. थया भूतोलिड षडाबा. एक प्रकारनो वंटोळ भूदर, भूदरो दशस्कं(१). भूधर, कृष्ण **भूप थवा डींडो** *चित्तसं*. ऊंचुं स्थान मेळववानी इच्छा राखो भूभंग अखाका. पृथ्वीनो नाश **भूभाग आरारा.** जमीन पर चालवा मांड ? **भू-भूतो "**अखाका. [पर्वत] [सं.भूमृत] **भूमहड्** प्राचीसं. भवां भूमहीय जुओ भमहडी **भूमंड** अखाछ. *भूमंडल, *पृथ्वी, [*ब्रह्मांड] भूमिहर ऋषिरा. षडाबा. भोंयरुं (सं. भूमिगृह) **भूयण** अंबरा. गुर्जरा. भुवन, जगत; गुर्जरा. तेरका. महालय, दहेरुं (सं.भुवन) **भूयपाल** *आरारा*. भूपाल, राजा **भूयबल** *गुर्जरा.* भुजबळ **भूयाल** *ऋषिरा.* पृथ्वीपालक, राजा (सं. भूपाल) भूर अखाका. अखाछ. अखेगी. कृष्णच. कृष्णवा. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. गमार, गांडो, मूरख, अबुध **भूर** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. अतिशय, धणुं (सं.भूरि) **भूरइ ***गुर्जरा. [खूब मोटी संख्यामां] [सं. **भूरचां** *नरका*. *मूर्ख, *अणसमजु, [*पृथ्वी-

लोकनां] [सं.भुर्] भूरसी जुओ भुरशी **भूरि** *आरारा. कादं(शा). लावल.* खूब, घणा (सं.) भूलंड लावल. भूली गयेली, [गुमावेलुं होय एवो], भूलो पडेलो; विराप-अनु. भूलभरेलो **भूलवण** *अखेगी.* भूल **भूलवाई** चंद्रवा. भोळवाई **भूवलए** *ऐतिका*. पृथ्वीमंडळमां **भूशेणां** *चंद्रवा*. शोभीतां **भूसा(?)** *शुंगामं*. इच्छा भूहडी आरारा. भमर, भवां (सं.भृकुटि) भृहिरउ उक्तिर. भोंयरुं (सं.भूमिगृहम्) **भूंड** *अंबरा. विराप. शुंगामं.* पृथ्वी, जमीन; भूमिमां, भूमि उपर भूंछ विमप्र. "मूर्ख, "भोट, "गांडो, ["रण-प्रदेशी रा.ो भूंथल *उषाह*. जगा, [भूमिपट] (सं. भूमि-स्थल) भूंच जिनरा. *भूमि, [*माळ, *मजलो] भूंयरइ आरारा. भोंघरामां (सं.भूमिगृह) **भूंहडी** *शुंगामं.* भूमि, जमीन **भूंहिरइ** अंबरा. भोंयरामां **"भुख्य** *सिंहा(शा)***. वृष, बळद भृष्ट** *आरारा.* भ्रष्ट, बगडी गयेलुं; भ्रष्ट, छूटुं पडेलुं **भुंगली** *ऐतिका.* वाद्यविशेष

वाळवाळी (सं.) भे, भेए अखाका. अखाछ. कामा(त्रि). नरका. प्रेमाका. भय भेइणी जुओ भेउणी भेउ गुर्जरा प्रद्युचु प्राचीफा विक्ररा *हम्पीप्र.* भेद, रहस्य; *वसंफा. वसंवि*. वसंवि(ब्रा). भेद, भिन्नता भेउणी (=भेइणी ?) *तेरका.* भेदायेली, मिश्रित. भींजायेली, तरबतर थयेली] [रा.भेवणौ] भेए जुओ भे **भेक** *ऐतिका*. देडको **भेख** *अखाका. प्रेमाका*. वेश **भेट** *गुर्जरा*. भेटो, मेळाप **भेटण** *आरारा. विमप्र.* भेट, [बक्षिस] **भेटमलणुं** *प्रेमाका.* मळती वखते आपवानी ਮੈਟ **भेटि** *गुर्जरा. विमप्र.* भेट, बक्षिस; **आनंस्त.* वीसरा. भेटवुं ते, भेट, मिलन (सं"भेट्ट) भेडउ गुर्जरा. भेटो, मेळाप, [मुकाबलो] **भेड्य**ड *आरारा.* भळ्यो; गुर्जरा. भेट्यो, [मुकाबलो थयो] **भेडवइ** *अखेगी. गुर्जरा*. भीडवे, जोडे, टकरादे **भेडि *** गुर्जरा. [मुकाबलो] भेदाणी *जिनरा. [भेदाई, वींधाई; आर्द्र क्नी मेदाभेद चित्तसं. भेद अने भेद, विविध प्रकारना भेद चारफा. भेदायो, [भींजायो]

भूंगार *अभिऊ. कादं(शा)*. कळश (सं.)

भृंगालिनी आरारा. भमराओनी हार जेवा

भेदियउ

(सं.भेदित)

भेष आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. भेद, रहस्य, मर्म; चित्तसं. जिनरा. भेद, [प्रकार], [तफावत]

भेर *प्रेमाका. लावल.* भेरी, शरणाईना जेवुं मुखवाद्य

भेरवद्भंप कामा(शा). मनवांछितनी प्राप्ति अर्थे जप करतांकरतां पर्वतनी कोई ऊंची टूक उपरथी पडतुं मूकवुं ते [सं. भैरवझम्पा]

भेरि, भेरी "गुर्जरा. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. विराप. *वीसरा. शरणाईना प्रकारनुं एक मुखवाद्य (सं.)

मेल *सिंहा (शा)*. भेद, शंका

भेळ *नरका.* भंगाण

भेलइ, भेळइ आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नरका. नेमिछं. *लावल. भेगुं करे, भेळवे [दे.]; गुर्जरा. प्रेमाका. विराप. भांगे, भंगाण पाडे, छिन्नभिन्न करे

मेळाभेळ हरिख्या. अत्यंत विनाश, वणसाड मेली आनंस्त. नलाख्या. भेळी, भेगी, साथे मळेली

भेली *आरारा*. (गोळनो) रवो (रा.)

भेव अखाका. अखाछ. अखेगी. जिनरा. नलाख्या. मदमो. भेद, रहस्य, [मर्म]; अखाछ. भेद, [भिन्नता]

भेष प्राचीफा. वेश, पहेरवेश

मैरव *प्रेमाका*. चीबरी; जुओ भइरव

भो *प्रेमाका.* भय

भोअण विक्रच, भोजन

भोअणनंदन गुर्जरा. पृथ्वीपुत्र मंगळ (सं.भुवननंदन)

भोअला *उषाह. [भोळा]

भोअंगम *उषाह. प्राचीका*. सर्प (सं.भुजंगम)

भोगतारीक वेताप. भोगवनार [सं.भोक्तार] भोगल, भोगळ उक्तिर. गुर्जरा. नरका-२.

प्रेमाका. आगळो; अखाका. [आगळो; आड, अंतराय], बंधन (सं.भुजार्गला)

भोगवज *आरारा***. भोगवटो**

भोगवजी *चित्तसं*. अनुभव

भोगिक *शंगामं. [सप] [सं.]

भोगिनि ऋषिरा. सर्पिणी [सं.भोगिनी]

मोगीसरा *लावल*. भोगीश्वर, श्रेष्ठ भोगी

भोजक् *षडाबा*. उपभोग करनार [सं.]

भोजपतर, भोजपत्र कामा(त्रि). कामा(शा).

भूर्ज वृक्षनुं पत्र

भोजिंग *ऐतिका. विमप्र.* भोजक (त्रागाळा), [प्रशस्ति गानार]

भोपागाला वेताप. बोपागाळा, दुख पड्यानो ढोंग ने रोदणां

भोषातु *उषाह*. महान, [अधिपति] (सं. भूपाल)

भोम अखाका. प्रेमाका. भूमि, [पृथ्वी, जमीन]; प्रेमाका. माळ, मजला

भोमी अखाका. भूमि, [जग्या]

भोव *तेरका.* भोग

भोयण *ऐतिका. शीलक.* भोजन

भोयंग अखाका. दशस्कं(१). नरका. भुजंग, नाग

भोवंगम दशस्कं(१). भूजंगम, शेषनाग

भोर ऋषिरा. नरका. प्रेमाका. प्रभात. परोढियं **भोल** *ऐतिरा*. भूल भोलउ प्राचीसं. भोळो [दे.] भोळउ वीसरा. भूल, भ्रम, [भोळपण] भोलविज, भोलिज प्राचीसं, भोळव्यो **मोलाटी** गुर्जरा. *छेतराई, *भोळवाई, [भूली पड़ी] **भोलावा** लावल. भोळववा भोतिउ जुओ भोलविउ **भोतिम** *ऐतिका.* भोळपण, अज्ञान **भोलुव-** *नलरा.* भोळववुं (सं.*भ्रमुल्लक) दि.] **भोलुयारी** *प्राचीसं*. साव भोळी **भोवन** *दशस्कं(१)*. भवन, [आवास] **भ्रमरोग** *चित्तसं.* गांडपण, चित्तभ्रमनो रोग

ब्रह्मार्पण करेलुं द्रव्य अमहड् प्राचीसं. भ्रू, भवां [सं.भ्रूमुख] अमि-आकार प्रेमाका. गोळ, चकरडाना आकारनां, [*आवर्त-वमळ जेवां, *चंचल]

भ्रमस्त *सिंहा(शा).* **ब्रह्मस्व, ब्राह्मणनुं धन,**

भ्रष्ट यडावा. रांधेला (सं.भृष्ट) भ्रंग नलाख्या. भमरो (सं.भृंग) भ्रंति गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीसं. भ्रान्ति, भ्रमणा; आरारा. भ्रान्ति, मूंझवण; शंका, शंकाभर्यो विचार भ्रंम मदमो. ब्राह्मण (सं.ब्रह्मन्) भ्रमचरज कामा(त्रि). ब्रह्मचर्य भ्रमचरज वरत कामा(शा). ब्रह्मचर्यन् व्रत भाजि कादं(शा). शोभे (सं.भ्राज्) भांत, भांत्य प्रेमाका. भ्रांति, भ्रमणा; मोसाच. अंदेशो; मदमो. भ्रान्ति, मोह, [मूंझवण, शंका] भिखभान दशस्कं(१). वृषभानु, [राधाना पिता] भूज नलाख्या. भवां (सं.भू)

म उपबा. उषाह. तेरका. नरप(द). नलरा. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. हरिख्या. ना. नहीं (सं.मा)

मइ गुर्जरा. तेरका. जिनरा. वीसरा. में (अप.मइं, प्रा.मया); गुर्जरा. तेरका. मने मइगल वीसरा. षष्टिप्र. हाथी (सं.मदकल); जुओ महिगल

मइडी "ऐतिका. [मेडी]

भूसो अभिक भरोसो

मइण गुर्जरा. मदन, कामदेव; वीसरा. मीण (सं.मदन); जुओ मयण

मइता (करमइता) *विमप्र. [कार्यकुशळ]; जुओ करमइता

मइदु *आरारा*. मेंदो

मइमत वीसरा. मदमत्त

मइलड आरारा. मेलुं, दुष्टः, उक्तिर. उपबा. वीसरा. मेलुं, गंदुं (सं.मलिल-)

मइलप *उषाह.* मेलप, [मेलापणुं] [सं.मलिझ +त्व]

मइतु *वसंफा. वसंवि(ब्रा). रोष; जुओ मयतु मइलापणं उपवा. मेलापणुं
मइबट्ट जुओ महिवटु
मइं वीसरा. -मां
मइं आनंस्त. उक्तिर. उपबा. में (सं.मया);
उक्तिर. मने (सं.माम्)
मइंगल आरारा. हाथी (सं.मदकल)
मईं उक्तिर. पटेलो, खेडेला खेतरने सपाट
करवानुं साधन (सं.मत्य/मदि) दि.
मतिय, मइय]
मउठ उक्तिर. मठ (सं.मकुष्ठ)
भउड उक्तिर. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा.
चारफा. जिनरा. प्राचीफा. वीसरा.

षडाबा. मुकुट, मीड

मउडउ जिनरा. वीसरा. मीडुं [सं.मृदु];

आरारा. उक्तिर. धीमुं; जुओ मीडे मीडे

मउडउघा गुर्जरा. मुकुटधारी, [सामंतो]

(सं.मुकुटबद्धा); जुओ मुडुधा

मउडबंद्ध, मउडबंधा *प्राचीसं.* सामंत (सं.मुकुटबंद्ध)

मउडेरउं *षडाबा.* वधारे मोडुं [सं.मृदु-] *मउणि [*मणिउ] *उक्तिर*. घडो, माटलुं (सं.मणिकः)

मजर उक्तिर. अरीसो (सं.मुकुरम्) मजरा उक्तिर. (आंबानो) मोर [सं.मुकुल] मजरियज, मुरियज प्राचीसं. महोर्यो (सं. मुकुलित)

मउरी गुर्जरा. महोरी (सं.मुकुलिता) मउलउं प्रांचीसं. धीमुं [सं.मृदु परथी] मउसाल जिनरा. मोसाळ [सं.मातुःशाल] मऊ. मौ उक्तिर. रखडती, गरीबडी (गाय) (सं.मार्गोका; मुक्तौका)

मओलीआं *गुर्जरा*. मोळियां, मुकुट (सं. मौलिकानि)

मकनज उक्तिर. प्रेमाका. दंतूशळ वगरनो, ठींगणो, भरावदार, तोफानी (हाथी) (सं.मत्कुण)

मकर अखाका. अखेगी. माछलुं; मगरमच्छ (सं.)

मकर अखेगी. मुकुर, दर्पण मकरनिकेतन वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मकरध्वज, कामदेव (सं.मकरकेतन परधी)

मकर-मीट *नरका*. माछलीनी आंखना जेवा आकारनी

मकराकृत *प्रेमाका*. माछलाना आकारनां मकरंद * नरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). पुष्पमधु (सं.)

मकताय अखाछ. नतकाय, हरखाय मकायंत *विमप्र. [इजारे] [अ.मकातिअ] मखवट्ड विमप्र. मुखपट, मोद्धं, [चहेरो]; जुओ मुखवटउ

मखांतर *अखाका*. बहानुं, निमित्तः; *दशस्कं(२). प्रेमाका*. बहानुं [सं. मिषांतर]

मखि *प्राचीका*. मुखमां

मिखयारडो प्रेमाका. [माखीओथी रक्षण करवा] घोडाना मुख उपर बांधवामां आवती पट्टी [सं.*मक्षिका+आवरण]

मग *जिनरा. [मार्ग]

***मग [*नग**] *चंद्रवा.* *मार्ग, [पर्वत]

मगति-निधांन हरिवि: मुक्तिनिधान मगडी विक्ररा: रणक्षेत्रमां वगाडवानो राग-विशेष

मयमद आरारा. कस्तुरी (सं.मृगमद)
"मगरप(चारी) [मगरपचीसे] "नंदब.
[भरपूर जुवानीमां] [रा.]

मगरी मोसाच. भगमांथी बनावेली मीठाई ? मगरो नरप. डुंगर (भी.)

मगता *षडाबा. [माखी] (फा.मगत्त) मगतिर तेरका. मागशर (सं.मार्गशिरस्)

मगिसरनखत्र उक्तिरः मृगशीर्ष नक्षत्र मगिसरियउ वीसराः मागशर (सं.मार्ग-

शिरस्) **फार**्यसम्

मगह *आरारा.* मग [सं.मुद्ग] मगियां *प्रेमाका.* मगना जेवी छांटवाळां

वस्त्रो, [रंगीन दोरियानां वस्त्र]

मग्ग गुर्जरा. तेरका. मार्ग

मग्गइ गुर्जरा. मागे (सं.मार्गयति)

मघ** [मेघ**] **वसंवि(ब्रा)*. [वादळ]

मचकउ तावत. मचको, आंखनो मिचकारो, [चाळो]; नरका. लटको, लहेको, [चाळो]; गर्व

मचकंद आरारा. चारफा. मुचुकुन्द नामनां पुष्पवृक्ष

मचका- वीसरा. मारवुं, प्रहार करवी (*प्रा. मद्य)

मचकुंद आरारा. मुचुकुंद नामनुं पुष्पवृक्ष मचरडी प्रेमाका. आमळी, मरडी मचरालि नरप(द). मत्सरवाळी, गुमानी मचईं गुर्जरा. मत्त थाय (सं.माद्यति) मञ्जू ऐतिका. मृत्यु

मच्छइ गुर्जरा. माछली प्रत्ये (सं.मत्स्य) मच्छर षडाबा. *ईर्षा, [अभिमान]; * ऋषिरा. [डंख, गुमान]; नरका. प्रेमाका. गर्व,

अभिमान (सं.मत्सर)

मर्छेदराय ऋषिरा. मत्स्यदेशनी राजेश्वर महण नरप(द). चळु, जम्या पछी मीं साफ करवुं; जुओ माछन लेवुं, मुहछण

मछर नरका. नरप(द). *विमप्र. मत्सर, गर्व; चित्तसं. ईर्ष्या

मछरा सिंहा(शा). मदभरी (सं.मत्सर)

मछराल, मछराळ कस्तुवा. नरका.

मत्सरवाळा, गुमानी; जिनरा. विकरा.

मत्सरवाळा, गुमानी, जोरावर, [बहादुर,
रोषीला]; कृष्णवा. "द्वेषीला, [गुमानी,
जोरावर]; प्रेमाका. ईर्ष्यावाळा,
[रोषीला, गुमानी]

मछाकार *मदमी*. मत्स्याकार

मष्ट्रर नेमिछं. मत्सर, [ईर्ष्या, रोष]

मज *प्रेमप*. मुज

मज मदमो. -, [*नक्की] [*अ.मज़ुन]

मजिल वीसरा. मजल, मुसाफरीनो [एक साथे के एक दिवसमां] कपातो हिस्सो (फा.मंजिल)

मजीठ उक्तिर. वसंफा. वसंवि(ब्रा). जेमांथी लाल रंग नीकळे छे ते वनस्पति (सं. मंजिष्ठा)

मजीठियां प्रेमाका. मजीठना राता रंगनां मजीठुं अभिक. जिनरा. मजीठ जेवुं रातुं (सं.मंजिष्ठा) **मजीज** *प्राचीसं*. ?. [कोई वस्त्रप्रकार] मज्झ *गुर्जरा*. मने; *तेरका*. मारुं, मुज (सं. मह्मम्) **मन्द्रा** *आरारा.* मध्ये. -मां **मज्यान** प्राचीसं. मध्याह्न **मज्ज्ञारि** गूर्जरा. मध्ये, -मां (सं.*मध्यकार्ये) मन्द्रि गुर्जरा. मध्ये, -मां मझ आरारा. गुर्जरा. कर्पूमं. मुज, मारुं; गुर्जरा. नलरा. प्रबोप्र. मने (सं.महाम्) **मझड** *आरारा*. मध्ये. -मां मझार, मझारि आरारा. देवरा. नलरा. नेमिछं, प्राचीसं, रूपच, विक्ररा, मध्ये, -मां. अंदर (सं.*मध्यकार्ये, मध्य+ कार); उषाह. मध्यमां, विचे] मझार, माध, मुझार, मोझार कामा(त्रि). मध्ये, मां मटकड *ऋषिरा. प्रेमाका. हावभाव, चेष्टा, चाळो. नखरुं मदि नलाख्या. माटे. काजे **मट्टी** *प्राचीसं*. माटी (सं.मृत्तिका) मठ प्रेमप. ओरडो सिं.] **मठ-** *प्राचीफा.* दबाव**तुं,** [भागवुं, मारवुं] (सं.मध्), ["चूर्ण करवं, "कचडवं] [*सं.मृष्ट] मठवासणि विक्ररा. मठवासिनी. साध्वी **मडफर** *तेरका. "प्राचीफा. प्राचीसं.* दर्प (दे.) मंडि उक्तिर. [*आधात पामेली - धवायेली स्त्री (सं.मड्डिका) दि.मड्डिआ] **मडिज** *प्रद्युच्.* मडदं [सं.मृतक]

नलरा. नेमिछं. विक्ररा. मठ, मकान, निवासस्थान; वेताप. मठ, [संन्यासीनुं निवासस्थान मढ दशस्कं(२). सती थवा माटे खडकेली चिता, [चितासपी घर] **मढपति** ऐतिका. मठाघीश **मण** *आरारा. तेरका*. मन; जुओ मणि **मणची** सिंहा(शा). एक खडधान **भणछि**उ *ऐतिका*. मनवांछित मणमणंड उक्तिरः अस्फुट उद्गारं, गूसपूस ध्वनि (सं.मन्मनः) मणभणा *ऐतिका*. बालकनी भाषा, [कालाघेला अस्फूट (उद्गार)] मणमय प्राचीफा. मणिनां (सं.मणिमय) **मणयतु** *ऐतिका.* मनुष्यत्व मणशिलशिला कादं(शा). मनसील नामक धातुनां चोसलां [पथ्थर] (सं. मनः-शिला-शिला)) मणसमाधि *गुर्जरा*. मनसमाधि, मननुं सांत्वन, मननी शांति मणसिल उक्तिर. ए नामनो खनिज पदार्थ (सं.मनःशिला) **मणहर** *तेरका*. भनहर मणि गुर्जरा. मनमां (सं.मनस्); जुओ मण मिष्ठ जुओ मउणि मिषिबिंब तेरका. मिणमय प्रतिमा **मणिमइ** *गुर्जरा.* मणिमय मिणमय ऐतिका. शिरोमणि **मणियउ** *उक्तिर*. मणको (सं.मणिकः) **मणीडां** *प्रेमाका***. माळाना मणका**

मढ उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तैरका. देवरा.

मणु *ऐतिका.* **मन मणुय** *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा*. मनुष्य (सं.मनुज) **मजूअ** *गुर्जरा.* मनुष्य (सं.मनुज) मणूय विरापः माणस (सं.मनुज) **मण्य-भवि** शंगामं. माणसना भवमां **मणूं** *गुर्जरा.* मनुष्य मणोर वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मनोरथ **मणोरथ** गुर्जरा. मनोरथ मणोरह*ुगुर्जरा*. मनोरथ मणीहर गुर्जरा. तेरका. वसंफा. मनोहर मत अखाका. "मति, [भान्यता, धार्मिक सिद्धान्त, पंथ]: *मोसाच*, मति मतवारणउ उक्तिर. "विक्ररा. झरुखो. अटारी (सं.मत्तवारण) मतवरळउ वीसरा. नशाखोर (सं.*मत्तपाल) मतिजीवी उक्तिर. बुद्धिजीवी (प्राणी), मनुष्य (सं.मतिजीविनः) मतु प्राचीफा. मत (निषेधार्य), [मा, नहीं] **मत्ं** *विमप्र*. अभिप्राय, मत **मतो** अखेगी. मत, विचार, समजणी: अखाछ. मतमतांतर, सिद्धान्त, मिताग्रह, मतप्रभाव, विचारनी पकड]; प्रेमाका. ***कब्**लात, ***करार, अिरसपरस** समजण, ठराव] **मत्कुण ऋषि**रा. मांकड [सं.] मत्यइ भागी कुहाडि जुओ कुहाडि

रोसीला **मत्स्य *ग्रेमाका**. [माछलानी आकृति] मध- अखाका. घसवुं; अखाका. नरका-२. *प्रेमाका.* वलोववुं, मंधन करवुं; *वसंफा.* वसंवि. वलोववं, व्याकुळ करवं मय जुओ मणिमय मथ (मोटउ मय) *अंबरा. [बहु मोटो] **मथाला** नेमिछं. मार्या मयिला नलरा. मिथिला नगरी **मधोमव** *नरका*. माथा सुधी, पूरेपूरी मध्यामति आरारा. मिथ्यामति, अन्य मिथ्या दर्शनमां माननार, जैन धर्ममां अश्रद्धा-वान **मद** उक्तिर. मद्य, शराब [रा.] मदगळ प्रेमाका. (मद गळता) हाथी मद-नमाया लावल. मद मातो नथी एवा **मदनभेर** *प्रेमाका. हम्मीप्र.* एक प्रकारन् मुखवाद्य, रणशिंगुं **मदनमेषला** *प्राचीफा***. एक प्रकारनी हीरा-**जडित मेखला (सं.) **मदनशाल** ऋषिराः मेना दि.मयणसालः सं.ो **मदफ्** *विमप्र.* किंमती कापड, [*छापेल कापड] [*अ.मत्बुअ] **मदर्भिमल** नलरा. मदविद्धल. [मदमस्त] मदर्भीभल वसंवि. वसंवि(ब्रा). आसक्तिथी व्याकृल बनेलो (सं.मदविह्नल)

मदमिगल अभिक्र. मदथी मत्त हाथी (सं.मद

मदल *आरारा*. ढोलना प्रकारनुं वाद्य,

मत्य *नलाख्या*. मति, बुद्धि

मत्यर्ड, मत्यिङ नेमिछं. माथे (सं.मस्तक)

मत्सराल विक्ररा. मत्सरवाळा, [शूरवीर,

+मदकल)

[मृदंग] (सं.मर्दल)

मदार *आरारा(व)*. मंदार, आकडो (सं.)

मदासास वसंफा. वसंवि. "वसंवि(ब्रा). यौवनमदथी आळसभरेलां (सं.)

मदि मातउ वसंफा. वसंवि. मदमत्त बनेलो (सं.मदेन+मत्तक)

मकु आरारा. मदीली, नशामां छे ते

महल ऐतिका. तेरका. लावल. मृदंग (सं. मर्दल), वाद्यविशेष

मिद्ध कादं(शा). नलाख्या. लावल. मध्यमां, वद्ये, [-मां, अंदर]

मद्रध्य गुर्जरा. मद्रदेशना राजानी कुंवरी (सं.मद्र+दुहिता)

मध प्राकासं. चैत्र मास (सं.मध्)

मध (मधमाधव) *नरप(द). चित्र-वैशाख, वसंत ऋतु] [सं.मधुमाधव]; जुओ मधु-माधवड

मधर *प्राचीफा*. मीठुं, कर्णप्रिय (सं.मधुर) मध्रु *वसंफा(ल)*. वसंत (सं.)

मधुकर वेद *प्रेमाका*. चार भैमरा [वेद=चार] **मधुप** *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा*). भमरो (सं.)

मधुमाधवड **ऐतिका*. चित्र-वैशाखमां, वसंतऋतुमां]; जुओ मध मधुरां *हरिवि*. मीठुं दहीं

मधुषनरंगु *वसंवि. *वसंवि(ब्रा)*. वसंतना

वननी शोभा (सं.)

मध्यत्रीया चतुचाः मध्यस्थी स्त्री, दूती **मध्यनायका** चतुचा. मुग्धा, मध्या अने प्रगल्मा - आ त्रण प्रकारनी नायिका-

ओमां मध्यनायिका **मध्यमान** *प्रेमाका.* मध्यनुं [वद्येनुं] माप [सं.]

मध्यानि आरारा. मध्याह्रे

म-न कृष्णवा. गुर्जरा. तेरका. नंदव. प्राचीफा. प्राचीसं. मा, नहीं (सं.मा+न)

मनइ धडाबा. माने (सं.मन्यते)

मन करवा भेद कादं(ध्र). [मननो] पार जाणवा

मनखो अखाका. मनुष्यनो अवतार; जन्मारो मनष्ठा अभिज. मननी वात, इच्छा [सं. मनीषा]

मन-था "प्रेमाका. [मनमांथी]

मन बहोतुं करवुं प्रेमाका. मन मोटुं करवुं, उदार थवुं

मनिमंतरि ऐतिका. मननी अंदर

मनमथ-धणुहिय वसंवि(ब्रा). कामदेवनुं धनुष्य

मनरखती अखाछ. मन साचवती, [मनने फोसलावती, भ्रामक]

मनरली *आरारा. ऐतिका*. मनना आनंद साथे. मनना उमंगथी

मन रहेवुं प्रेमाका. मन स्थिर रहेवुं, धीरज रहेवी

मनरंगि गुर्जरा. लावल. मनना आनंदथी, मनना उमंगथी

मन लेवा प्रेमाका. *मनने जीती लेवा. [मनने जाणी लेवा]

मनशा कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). मनीषा, इच्छा; मननी कल्पना

मनशा सुध कामा(शा). मननी शिुद्ध,

खरी] इच्छाए

मनसा *उपबा. कामा(शा). दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. मनीषा, इच्छा

मनसिधि कृष्णवा. मनगमतुं, [मनने परिपूर्ण करनारुं]

मनसुषि आरारा. मननी शुद्धिथी

मनाया *लावल.* मनाव्या, तैयार कर्या, [स्वीकार कराव्यो]

मनावइ उक्तिर. मनावे, राजी करे; * लावल. [माने – स्वीकारे एवुं करें]

मनाविदुं *उक्तिर*. मनाववुं, राजी करवुं मनां *चंद्रवा*. मनमां

म-नि *प्राचीफा. न*हीं (सं.मा+न)

मनिख *प्रेमाका*. मनुष्य

मनिशाउ गुर्जरा. मनीषा, मननो विचार, तर्क

मनिसी *विराप.* मनीषा, इच्छा, [मननो विचार]

मनीश चित्तसं. मनुष्य

मनीष *अखाछ.* मनुष्य

मनीषित ऋषिरा. मनमां इच्छेलुं (सं.)

मनुक्ष गुर्जरा. मनुष्य

मनुहार *प्राचीफा.* *मननुं हरण करवुं ते, [मनोहर]; जुओ मनोहार

मनुहार, मनुहार्य दशस्कं(१). नरका. प्रेमप. प्रेमाका. परोणागत, [खातर बरदास्त, आदरसत्कार, आग्रह]; *प्राचीका. [प्रार्थना; आदरसत्कार]

मनुहारि, मनुहारी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* आजीजी, प्रार्थना; *प्राचीका*. प्रिमभर्यो आग्रह [आर्जव, प्रार्थना]

मनुहार्य प्राचीका. आग्रह, [मनामणी, आजीजी, कालावाला]; जुओ मनुहार

मनुंबार नरप(द). विनंती; प्रेमाग्रह

मने *आरारा*. माने

मनोन्य वाग्भवा. मनोज्ञ, मनोहर

मनोहार *ऐतिरा. प्रेमाका.* परोणायत; खातरबरदास्त; जुओ मनुहार

मनोहार वसंफा. वसंवि(ब्रा). मनोहर (सं. मनोहारिन्); जुओ मनुहार

मन्नइ (विमन्नइ) गुर्जरा. माने, गणे, लेखे [सं.विमन्यते]

मन्मथ-चरिचन कादं(शा). [कामोद्दीपक लेप] (सं.मन्मथ-चर्चन)

मपधुनि गुर्जरा. ढोलना अवाजसूचक शब्दो मम विराप. नहीं (सं.म+म)

ममकार *आनंस्त*. ममता, अहंकार

ममांणी कर्रूमं. आरसनी जात, [राजस्थान-ना मकरान-प्रदेशनी खाणना]

*मयगयल [मयगल] सिंहा(म). हाथी (सं.मदकल)

मयगल, मयगलु उक्तिर, ऋषिरा, ऐतिका, ऐतिरा, कृष्णच, गुर्जरा, नैमिछं, प्रद्युचु, प्राचीका, प्राचीसं, लावल, विक्ररा, जेना माथामांथी मद झरतो होय ते, हाथी (सं.मदकल)

मयगल-जित्त नेमिछं. हाथीने जीती लेती मयच्छिय प्राचीसं. मृगाक्षी, [मृगनयनी] मयण उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरिवि. मियमत्त

मदन, कामदेव; प्राचीसं. मीण [सं. मदन]; जुजो मङ्ग मक्ष्मसम्पर लावल. मदन[कामभाव]नो सागर

मयणहतः *उक्तिर.* मींढळ (सं.मदनफल) मयणह्युर *गुर्जरा*. कामातुर (सं.मदनातुर) मयमता *नेमिछं. विभग्न.* मदमत्त मयमत्त कृष्यच. हाथी [सं.मदमत्त]; जुओ

मबरहर *ऐतिका. प्राचीसं.* सागर (सं.मकर-गृह)

मयरंव तेरका. मकरंद, [पुष्पमघु]

मबत्तव तैरका. विमग्रः मेलुं, मेलुं बनेलुं (सं.मल+इह्न)

मयतु वसंवि. क्रोध, [रोष]; जुओ मइतु मयबट जुओ महिवदु

सर्वक, मर्थका, मर्थकु उषाह. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). चंद्र (सं.मृगांक)

मबंद *दश्चरकं(१). प्रेमाका*. मृगेंद्र, सिंह

मबा आरारा. माया, कपट; अखाछ. अभिक्त. आरारा. *ऋषिरा.. कामा(त्रि). चंद्रवा. दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. विमप्र. दया, कृपा

मयाला *लावल.* कृपाळु; *नेमिछं*. मायाळु. प्रेमाळ

मयूरीसखा *आरारा(व)*. मयूरशिखा, एक वनस्पति

भर वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मरे, हेरान थाय (सं.मृ-) **मरकलडुं** ऋषिरा. प्रेमाका. शृंगामं. मरकाट, स्मित, मलकाट, आछुं हास्य

मरकलडे मुख नरका-२. हसता मोंए मरकलडो चतुचा. नरप(द). मरकवुं ते, मंद हास्य

मरकतुं *अखाका. नरका. शृंगामं.* स्मित, आछुं हास्य

मरकतायुं दशस्कं(१). मरकवुं मरकते अखाका. आछुं हसे मरकतो सिंहा(शा). मरकतुं, [आछुं हास्य] मरकी आरारा. एक मिष्टान्न. धोळी जलेबी

मरगय तेरका. मरकत, [एक रल, नीलम] मरगयजादर प्राचीफा. मरकत जेवा लीला रंगनुं जादर वस्त्र (सं.मरकत+दे.जद्दर) मरगी उषाह. मरकी

[दे.मुरुक्कि]

मरजन, मरजंन चतुचा. दशस्कं(१). "प्रेमाका. मर्जन, स्नान

मरजाद *प्राचीसं*. मर्यादा, [सीमा] मरद्व प्राचीसं. गर्व, [मरड] दि.]

मरड **अखाछ*. [गर्व]; *नरका-२*. रीस, [गर्व]

मरण लिंग आरारा. प्राणान्तक प्रयत्नथी मरणीक दशस्कं(२). प्रेमाका. मरणियो मरत, प्रत प्रेमाका. मदमो. कामा(त्रि).

ति, भ्रत *प्रेमाका. मदमां. कॉमी(त्रि).* मृत्यु

मरतक अखाछ. अखेगी. देवरा. मृत्यु पामेल, मरेलुं (सं.मृत+क)

मरतकवत *चित्तसं*. मृतकवत, मृत्यु पामेला जेवो मरत-वछा देवरा. जेने मरेलां छोकरां अवतरे छे तेवी (सं.मृत-वत्सा) मस्त्ये अखाछ. मृत्यूए मरमरसबद उक्तिर. मर्मरशब्द मरषा आरारा. मृषा, खोटुं **मरहठ** उक्तिर. लावल. महाराष्ट्र **मरहठी** *प्राचीफा*. महाराष्ट्रनी स्त्री **मरहंडीया ***विकरा. [तल वगेरेना लाडु वेचनार] [दे.मोरंडक] **मराली** *शंगामं.* हंसी [सं.] **मरिच** *षडाबा***. म**री (सं.) भरिवा वांछड *उक्तिर*. मरवा इच्छे मरीड उक्तिर. मरी जवाय **मरुअउ, मरुउ** *आरारा(व). प्राचीसं.* मरवो (सं.मरुबक) **मरू** चंद्रवा, मरवो महञ्जउ उक्तिर. मरवो (सं.मरुबक) **मह्य ***गूर्जरा. आरारा(व). नलरा. नेमिछं. मरवो. डमरो (सं.मरुवक) मरूउओ वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मरवो (सं.मरुबक) मसबक शुंगामं. डमरो, मरवो (सं.मरुबक) मरेहेठा रूस्तस. मरेठा. [मराठा] मरोडी **नरका*. [फेरवी, बदली] **मरोत** *चंद्रवा*. मरत, [मृत्यु पामत] मर्जन अखाका. कृष्णबा. दशस्कं(१). *प्रेमाका.* मञ्जन, स्नान [सं.] **मर्वड** *उक्तिर. प्रेमाका.* चोळी नाखे, [भसळी नाखे [सं.मद्] महीं षड़ाबा. घसी माखी, चोळी नाखी

मर्म कादं(ध्र). गुह्य विधि, उपाय [सं.] **मल** लावल. महः, योद्धोः, [वीर] मलइ उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्रद्युच्. वीसरा. मर्दन करे, [मसळी नाखे] (दे.मल-) मल-जेठी नरका. जेठीमल. मोटो मछ सिं. ज्येष्ठ+मञ्जी मलण तेरका. मर्दन करवं ते (दे.) **मलण** *नरका*. मिलन मलतयं "प्रेमाका. [महाले छे]; जुओ मल्ह-मळतो दशस्कं(२). मळतियो; जुओ असूर-मळलो मलिया ऐतिका. [उमंगमां, गौरवपूर्वक, धीमेधीमे चाल्या मलयगिरी आरारा(व). मलयागिरुं; पीछुं चंदन - तेनुं वृक्ष मलयागर *हरिख्या*. मलय पर्वत उपर थतुं चंदनवृक्ष **मळरनान** प्रेमाका. शरीर खूब चोळीने करवा-मां आवतुं स्नान **मलहपतंउ "***ऐतिका***. [**उमंग, ठाठ, गर्विष्ठ छटावाळो 🕽 **मलाखी** *नलरा.* *अज्ञान, [*रमवाना, *रमकडाना [*अ.मलाही] **मलाणा** *हम्मीप्र*. मौलाना, मोलवी मलार *प्राचीफा*. आनंद करावनार (दे. मल्ह-); जुओ मल्लार, मल्हार मलियागर प्रेमाका. चंदन, सुखड **मलीअल** *चतुचा*. मसळेलुं, लगाडेलुं चोळेल्] मलीआगिरी विक्रराः चंदन[वृक्ष]

मलीदा हम्मीप्र. मलीदो, खाद्यविशेष,
[चूरमुं]
मले चित्तसं. मळतुं आवे, बेसतुं आवे,
बेसी जाय, निवेडो आवे
मळो अखाछ. मेल, [कचरो] [सं.मल]
मळाणा हम्मीप्र. मौलाना, मौलवी
मळार प्राचीसं. आनन्दजनक [दे.मल्ह-];
जुओ मलार, मल्हार
मिळ आरारा(व). मोगरो (सं.मिळका)
मळी आनंस्त. *मळ्युद्ध करनार, [मर्दन
करनार]
मल्ह- प्राचीफा. महालवुं, [आनंद करवो]
[दे.]
मल्हार, मल्हार *ऐतिका. प्राचीफा. आनंद
करावनार (दे.मल्ह-); जुओ मलार

मत्हावइ जिनरा. लाड लडावे; चारफा. शोभावे, [दीपावे] मवइ अखाछ. उक्तिर. मापे (सं.मा-, मि-) मवावि ऋषिरा. मपावे, गणे मशक प्रेमाका. मच्छर [सं.]

मशकलो अखाछ. पालीस करवानुं साधन, [ओपणी] [अ.मिसकल]

मशारां रुस्तस. सुलेह [अ.मश्वुर] मशे *दशस्कं(२). नरका. प्रेमप.* मिषे, बहाने, [निमित्ते]

मश्रू विमप्र. एक प्रकारनुं कापड, मशरू [अ.मश्र्लअ]

मधी ऋषिरा. मेश (सं.)

मस अखाछ. कादं(शा). नरका. प्रेमाका. बहानुं; आरारा. कारण (सं.मिष) मसं उक्तिर. मच्छर (सं.मशकः, मषः)
मसंकीन आरारा. गरीब (फा.मिस्कीन)
मसंग (मसंगति) *प्राचीफा. [महेनत, श्रम]
[अ.मशक्कत]; जुओ मसांकति
मसंजर जिनरा. वस्त्रविशेष
मसंतग देवरा. मस्तक, माथुं
मसंमसंता *नरका. [होंशपूर्वक लचकाती
चाले चालता]

मसलाई आरारा. मसळे [सं.मष्]
मसवाडउ आरारा. उक्तिर. कस्तुवा. नेमिछं.
मदमो. रूस्तस. वाग्भवा. मास, महिनो;
गुर्जरा. मासिक वेतन (*सं.मासवृत्तक)
[सं.मास+पाटक/वाटक]

मसवासी अंबरा. *कृष्णचः *प्रबोप्रः एक प्रकारनी तापसी [*एक स्थळे एक महिनो रहेनारी]

मसवासिणी अंबरा. एक प्रकारनी तापसी, [*एकस्थळेएकमहिनो रहेनारी तापसी]

मसा *गुर्जरा. विराप*. मच्छर (सं.मशक)

मसाकति जिनरा. परिश्रम, [कष्ट, तपस्या] [अ.मशक्कत]; जुओ मसगति

मसाहणी उक्तिर. प्रेमाका. सेनापति (सं.महा-साधनिक)

मिस *उक्तिर. गुर्जरा*. मेश, [काजळ] (सं. मषी)

मिस आरारा. विक्ररा. मिषे, बहाने, रूपे मसी प्रेमाका. मेश

मसीजणड (मसीभाजणड) उक्तिर. शाहीनी खडियो (सं.मधीभाजनम्)

मसीत *हम्मीप्र.* मस्जिद

मतीभाजणंड जुओ मतीजणंड मतीबारो कस्तुवा. वेताप. मुसारो, मासिक पंगार

मसु नलरा. मच्छर (सं.मशक)

मते मते प्रेमाका. जुदीजुदी रीते, वारंवार, [*लालित्यपूर्वक, *धीमेधीमे]

मह गुर्जरा. तेरका. मारुं (अप.; सं.मम) महडला लावंल. महिला

महद्यी लावलः भेंस (प्रा.महिषी)

महज लायल. महा

महऋषि *षडावा*. महा ऋषि

महत्तउ *उक्तिर. "प्राचीसं. "षडाबा.* महा-मात्य, मंत्री, महेतो (सं.महांत)

महत्तउ, महितु, महुतउ गुर्जरा. मंत्री (सं.महत् परथी)

महतार *प्राचीसं*. पिता (म.महतारा)

महती *गुर्जरा*. मंत्रीनी पली

महभयण *प्रद्युचु.* कृष्ण (सं.मधुमधन)

महमहड् आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मघमघे, महेके (दे.)

महराब हम्मीप्र. महेराब, (मस्जिदमां) कमान-ना आकारनुं चणतर

महलावइए * ऐतिका. [आनंद पमाडे, रंजन करे]; जुओ मल्हावइ

महलां *आरारा.* महेल ⁻

महत्तुज, मुहतु प्रद्युचु. मोवडी, [मोटेरा] दि.महल्लय]

महत्वय *ऐतिका.* महाव्रत

महंत आरारा. हरिख्या. उत्तम, श्रेष्ठ, मोटुं;

तेरका. शोभतुं (प्रा., सं.महान्त) महंतपणुं अखाका. मोटाई, [महत्ता]

महाकारण अखाछ. ब्रह्म [सं.]

महाणित, महाणसी *ऐतिका. षडाबा.* रसोडुं, [रांधवानां वासणो], तेने लगती (सं.महानस)

महातम अखेगी. माहात्त्य, महिमा **महाविक** अखाका. मादक [द्रव्य]; जुओ मादक

महाविशा *दशस्कं(१)*. महादशा

महादे वीसरा. राणी (सं.महादेवी)

महानिधि, महानिध्य अखाका. अखाछ. चित्तसं. महाभंडाररूप परब्रह्म [सं.]

महाभाग प्रेमाका. महाभाग्यशाळी [सं.] महामुंडा प्राचीसं. ?, [देवालयना स्थापत्यनुं कोई अंग]

महारंभ *प्रेमाका.* *महान आरंभ, [*मोटुं युद्ध]

महारिखि *विराप*. महाऋषि

महारिसि *गुर्जरा*. महाऋषि

महारुंख *आरारा(व)*. थोर (सं.महावृक्ष)

महालणा (महालणादे) *मोसाच. [एक स्त्रीनाम]

महाव अखेगी. माधव

महासईय *गुर्जरा*. महासती

महासित वीसरा. [जेनुं शकुन लेवामां आवे छे तेवुं] एक पक्षी, [भैरवी के रूपारेल]

महासत्तु *षडाबा.* महात्मा (सं.महासत्त्व)

महाहव गुर्जरा. मोटुं युद्ध (सं.)

महांत नरका. वाग्भबा. महान, उत्कृष्ट [सं.]

महिलि नलाख्या. मूके (प्रा.मिझ-, मेझ-)

महिकार आरारा. महेकवुं ते **महिखी** शीलक. भेंस [सं.महिषी] महिगल हाथी (सं.मदकल); जुओ मइगल **महिण** *उषाह.* समुद्र [सं.महार्णव; हिं.]; जुओ महिणारंभ महिष्व जिनरा. महेणुं, [कलंक] महिणारंभ उषाह. समुद्रमंथन; जुओ महिण महित्रु आरारा. उषाह. विक्ररा. विमप्र. सिंहा(म). महेतो, मंत्री, प्रधान (सं.महत् परथी), जुओ महतउ **महिम** *गुर्जरा*. महिमा महिमहि आरारा, मघमघे महिमानिलंड ऐतिरा. महिमावंत सिं. महिमानिलय महिमूर ऐतिरा. अतिशय [*दे.महपुर] महियल ऐतिका. तेरका. प्राचीफा. वीसरा. पृथ्वीतल, पृथ्वी, भूमि (सं.महीतल) **महियारां** *दशस्कं(१)*. गोवाळां **महियां** *गुर्जरा*. मही, दहीं (सं.मधित) महिर आनंस्त. आरारा. ऐतिका. प्राचीफा. *शंगामं*. महेर, दया, कृपा **महिराण** *ऐतिका.* समुद्र; जुओ महिरांण, महेरांण कादं(शा). महासागर महिरामण (सं. महार्णव) महिरां अभिक. माह्यरामां (सं.मातृगृह) महिरांण प्राचीफा. महासागर; जुओ महिराण

महिली *गुर्जरा*. महिला महिन्दू, महिन्दू, मयनट, महनदू प्राचीफा. *प्राचीसं. *स्यूलिफा. सुगंधी पदार्थ वडे कपाळ उपर कराती आड: जुओ मावटी **महिषी** अखाका. नरका. प्रेमाका. भेंस [सं.] **महिषीना कुंवरनुं** *नरका*. पाडानुं महिषु उक्तिर. पाडो (सं.महिषः) महिसि वडावा. भेंस (सं.महिषी) **मही** अभिकः, अखाकाः, पृथ्वी [सं.] मही अखाका. *वसंफा(ल). वसंवि. दहीं (सं.मथित) महीअल, महीयल ऐतिरा. गुर्जरा. विकरा. पृथ्वीपट, पृथ्वी [सं.महीतल] **महीचा** नरका. दहींनुं **महीडारो** *नरका*. महीनुं, दहींनुं महीमंथन मदमो. भाखण (सं.मथित+ मथन) महीय वसंफा. दहीं (सं.मथित) महीयल आरारा. ऐतिका. नेमिछं. लावल. सिंहा(म). स्थूलिफा. महीतल, पृथ्वी, धरती; जुओ महीअल **महीयां ***विमप्र. [मूर्ख, अज्ञानी] [रा.] **महुअर** दशस्कं(१). वसंवि. मधुकर, भगरो महुअर, महुअरि, महुवर, महुअरि अखेगी. दशस्कं(१). कृष्णच. कुष्णबा. दशस्कं(२). नरका. नलरा. प्रेमाका. वांसळी. मोरली. मौदर

महुआल *उक्तिर्*. मधपूडो (सं.मधुजाल);

महिला विमप्र. मांह्यला, अंदरना महिला उषाह. [महिला], दासी

जुओ महुआल महुकम नलरा. समर्थ (अ.मुहकम) महुत नलरा. विमप्र. मोटाई (सं.महत्त्व) **महत्तउ** जुओ महतउ **मह्य वडाबा.** महुडो [सं.मधुक] महुथर तेरका. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). मध्कर, भमरो **महर** *ऐतिका. गुर्जरा. तेरका.* मधुर .**महुरउ** *आरारा.* झेर (सं.मधुर); *उक्तिर*. मधुरुं **महुरप्पणु** *शृंगामं*. मधुरपणुं महुलु जुओ महलुउ **महलेठी** उक्तिर, जेठीमध (सं.मध्यष्टिः) महुवर जुओ महुअर **महुअ, महूयडा** *आरारा(व).* महूडो (सं. मध्क) महुअउ उक्तिर. महुडो (सं.मधूकः) **महअर** ऐतिका. वसंवि. वसंवि (ब्रा). मधुकर, भमरो महुअरि जुओ महुअर **महुआल** अंबरा. मधपूडो [सं.मधुजाल]; जुओ महुआल महुछव, महोछव आरारा. महोत्सव **महूय** *ऐतिका.* मधूक, महूडो मह्यडा जुओ महुअ महूयर, महूयरि प्रद्युचुः प्राचीफाः हरिविः वांसळी, महुवर **महरत** विमप्र. शृंगामं. मुहूर्त **महेरांण, मेहेरांण** मदमो. महेरामण, सागर; जुओ महिराण

महंता षष्टिप्र. मंत्री, महेता महेला प्रेमाका. महिला; जुओ महेली **महेलि** *प्राचीफा.* स्त्री (सं.महिला) **महेली, मेहेला** *प्राचीका.* स्त्री (सं.महिला) **महेलीय** *गुर्जरा*. महिला **महेलीयां** ऋषिरा. महिलाओ, स्त्रीओ **महेंद्र** *वेताप.* [महेन्द्र पर्वत जेटलो] अतिशय, प्रचंड; जुओ मेंद्र *आरारा. गूर्जरा.* महोत्सव: महोच्छव *कादं(ध्र)*. [महोत्सव], नाट्य महोष्ठव जुओ महुछव **महोट्रम** *दशस्कं(१)*. मोटम, मोटाई महोर (बाजीगर महोर) *अखाछ. शितरंज-ना पासा चलावनार (खेलाडी)], [कपटी, घूती **मह्य** *पंचवा.* मने (सं.मह्मम्) **मं** *उषाह.* मने (सं.माम्) मंख *ऐतिका*. [राजदरबारी भाट], एक भिक्षक जाति [सं.] **मंग-** तेरका. मागवुं (सं.मार्ग) **मंगल** लावल, वीसरा, मंगल गीतो मंगलचार, मंगलच्यारि प्राचीसं. विमप्र. मंगलाचार, मांगलिक क्रिया **मंगलाच्यार** *वीसरा*. [मांगलिक क्रिया], मांगलिक गीत (सं.मंगलाचार) **मंगलेवड** उक्तिर, मांगलिक दीवो - ७ वाटनी आरती पछी १ वाटना दीवानी आरती (सं.मंगलदीपक) [जै.] **मंच** *गुर्जरा.* मांचडो, ऊंचे ऊभुं करेलुं आसन (सं.): विकराः खाटलो

मंचक *प्रेमाका. विक्ररा*. खाटलो. पलंग **मंजन** *प्रेमाका*. स्नान [सं.मञ्जन] **मंजार** उक्तिर. बिलाडो (सं.मार्जार) मंजारि. मंजारी *आरारा*. कामा(त्रि). बिलाडी (सं.मार्जार) मंजीठ *नलरा.* मजीठ, लाल रंग आपती वनस्पति]; लाल रंग (सं.मंजिष्ठा) **मंजीर** *प्राचीफा.* झांझर (सं.) मंजुस उक्तिर, गुर्जरा, वडाबा, (सं.मंजुषा) मंजूसडी शंगामं. पटारो (सं.मंजूषा) मंद्रार. मंद्रारि अखाका. आरारा. वीसरा. मध्ये, न्मां, अंदर [*सं.मध्य+कार] **मंड** अखाका, अखाछ, अखेगी, मांडणी, रधना मंडइ अभिक. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका. ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वीसरा. मांडे, आरंभे, करे, मुके; उक्तिर. *गुर्जरा*. शणगारे, शोभावे (सं.मंडयति) **मंडक** *लावल. *षडाबा.* एक प्रकारनी

रोटली, [मांडा, पूडा] (सं.)

मंडण आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप.

मंडन, शणगार सजवा ते. शोभारे

मंडणड तेरका. प्राचीफा. अलंकार, शोभा [करनार], विभूषक (सं.मंडनक)

मंडणि, मंडणी *ऐतिरा, नेमिछं*, शोभा

मंडली. मंडलीक *उषाह, विक्रस*, मांडलिक,

खंडियो राजा, प्रादेशिक अधिपति]

मंडल *तेरका*. मंडळ, समूह; [प्रदेश]

मंडव गूर्जरा. प्रेमाका. मंडप मंडा जुओ गुलमंडा **मंडाण** *आरारा*. साजसरंजाम: *आरारा*. नेमिछं. तैयारी. योजना. चारफा. व्यवस्थाः *नेमिछं*. रचना, [घटना], *ऋषिरा.* *आरंभ, मिंडवुं ते, करवुं ते]; *प्रेमाका.* आरंभ; *गुर्जरा. देवरा.* विमप्र. मांडणी, रचना, फ़िलावो]: *हरिख्या.* पायो, [रचनानो मूळ आधार] **मंडाबइ** *गुर्जरा. नेमिछं.* करावे: *प्रैमप*. लखावे **मंडावी** *आरारा(व)*. मांडवी, मगफळी ? मंडि तेरका. मांड, पराणे (अप.: सं.*मर्देन) **मंडी** कादं(शा). *शोभित, थिई] (सं. मंडित) मंड्य अखाका. चित्तसं. मांडणी, रचना, सृष्टि **मंणीपुर** *मदमो.* मणिबंध, कांडुं **मंत** जिनसः मंत्र **मंति** *तेरका*, मंत्री **मंत्र** *हरिख्या.* खानगी मसलत (सं.) **मंत्रइ** *उक्तिर*. मंत्रणा करे, परामर्श करे (सं.मन्त्रयते) **मंत्रवी** *आरारा.* प्रधानमंत्री (सं.मंत्रिपति) मंत्रासरु उक्तिर. मंत्रणाखंड (सं.मंत्रावसरः) **मंत्रीदु** *षडाबा***. मुख्य** मंत्री (सं.मंत्रीन्द्र) **मंत्रीसर** गुर्जरा. लावल. मंत्रीश्वर **मंत्रीस्वर** आरारा, मंत्रीश्वर मंत्रेड आरारा. ओरमान (माता) (रा.);

(सं.मंडन-)

जुओ मात्रेई

मंदरसा हम्पीप्र. मदरेसा, निशाळ

मंथाणं उक्तिर. रवैयो (सं.मन्थानक) मंदधी अखाका. मंद बुद्धिवाळा मंदर कामा(त्रि). चतुचा. देवरा. घर, मकान (सं.मंदिर)

मंदिर प्रेमप. घर मंदोवरी मदमो. मंदोदरी मंन-धारण प्रेमाका. दिलासो, आश्चासन मंमाणी प्राचीफा. एक [राजस्थानना मकरान प्रदेशनी] खाण, ज्यांथी उत्तम आरसना पथ्यर नीकळता हता

माइ *चित्तसं*. माया

माइ, माई उक्तिर. गुर्जरा. चित्तसं. तेरका. लायल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. माता

माइचरिहि आरारा. माह्यरामां (सं.मातृगृह) माइणी आरारा(व). इंद्रामणी (सं. मृगादनी) ?, आंबळानुं वृक्ष (दे. माइंदा) ?

माई *उपबा, विमप्र. 'अ'कारादि वर्णमाळा (सं.मात्रका)

माई जुओ माइ

माईय (माईयहायी) उक्तिर. मासियाई (सं.मातृष्वसीय); जुओ मासिहाई

माउणो *पंचवा.* मनुष्य (सं.मानुष)

"माउल उषाह. माळा (सं.माला)

माउलउ उक्तिर. गुर्जरा. विमप्र. षडाबा. मामो (सं.मातुल)

माउलाणि जुओ मुलाणि

माउसाल प्राचीसं. मोसाळ, मातुलगृह [सं.

मातृशाला]

माउलांगि जुओ मुलांगि

मा(उ)लाही उक्तिर. मोळाई, मामानुं (सं.मातुल परथी)

माकडी *दशस्कं(२).* मांकडाना वाननी, [भूरा रंगनी]

माकण *उक्तिर*. मांकड, एक जेतु (सं. मत्कुणः)

माकंद **ऐतिका*. [आम्रवृक्ष] [सं.]

माग आरारा. मार्ग, रीति, प्रणालिका; लावल. *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मार्ग माग, माघ प्राचीफा. हरिवि. सेंथी (सं.मार्ग) माग तुं मान प्रेमाका. विनंती कर; जुओ मान मागवं

मागध ऋषिरा. स्तुतिपाठक, भाटचारणो [सं.]

मागी लावि *आरास*. मागी ले माघ *मदमो*. माघकाव्य, शिशुपालवध माघ जुओ माग

माचइ आनंस्त. उक्तिर. नरका. नलरा. नेमिछं. *राचे, *आनंदित थाय, [गर्व धरे, फुलाय, मत्त बने]; गुर्जरा. तेरका. *देवरा. माते, गर्व धरे, [फुलाय] (सं.माद्यति)

माछ, माछा *उक्तिर. उपथा. वीसरा.* माछली (सं.मत्स्य)

माछन लेवुं दशस्कं(१). मछन लेवुं, आचमन लेवुं; जुओ मछण

माछा जुओ माछ

माछिली *गुर्जरा. नलरा*. माछली (सं.मत्स्य

परथी)

माछी *आरारा. लावल*. माछली माजणंड *जक्तिर.* स्नान (सं.मञ्जन) माजन कृष्णवा. अंदाज, अटकळ; जुओ माझ

माजम सिंहा(शा). भांगना सत्त्वमां बीजां वसाणां नाखी बनावेलो केफी पदार्थ (अ.मअजून; म.माजूम)

माजा *मदमो*. प्रमाण, [माप] (सं.मर्यादा) माजिको *गुर्जरा*. मध्ये, -मां (सं.मध्यमे) माझ *उक्तिर. चतुचा.* मध्य माझ (माझन) *नलरा*. अंदाज, माप.

नाझ (माझन) नलरा. अदाज, [माप, सीमा] [अ.मवाजीन]; जुओ माजन

माझारी गुर्जरा. नां (सं.मध्य परथी) माझि अंबरा. तेरका. प्राचीसं. मध्ये, नां, मांहि, अंदर, वद्ये

माझिला गुर्जरा. अंदरना (सं.मध्य+इल्ल) माझीम रात्य सिंहा(शा). मधरात

माट नरप(द). प्रेमाका. लावल. माटलुं

माटडी लावल. माटली (सं.मृत्तिका)

माटी अखाका. चतुचा. नरका. *विमप्र. मरद, पुरुष, बहादुर

माटीडा *प्रेमाका.* बहादुर, मरद **माटीपणउं** *विकरा.* मर्दार्ड

माटो लावल. माटलां [प्राप्त माटे 'माट'नुं माटो

माठउं *प्रधुचु. विमप्र. षडाबा.* ढीलुं [सुस्त], ओछुं

माठी सिंहा(शा). माठेलुं, घडेलुं (सं.मृष्ट), [*घडेलो पथ्थर के ईट] **माढुं हींडबुं** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. खोटुं_. आचरण करवुं

माड विकरा. माळ; उषाह. मेडी[वाळुं घर] (दे.माडिअ)

माडइ गुर्जरा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि-(ब्रा). आरंभे, मांडे, [करे] (सं.मंडयति) माडली पंचवा. पोची, [शिथिल, सडी गयेली] सं.मर्दित]

माडिय *प्राचीसं.* माता, माडी

माडी *अखाछ. [मांडीने, स्थापीने]; जुओ माडइ

• **"माडो** *पंचवा*. मोटो, [जबरदस्त, भयंकर] [रा.माठौ]

भाण कादं(धु). कादं(शा). थोडुं, जराक (सं.मनाक्)

माण अभिक्त. गुर्जरा. चारफा. तेरका. वसंफा(त). वसंवि(ब्रा). मान, गर्व, अभिमान; आरारा. मान, [आदर]

माणइ नलरा. नलाख्या. म आणे, न लावे (सं.मा+आनयति)

माणइ *वीसरा*. माने, स्वीकारे (सं.मानयति) **माणि** *तेरका*. मानिनी

माणस वहोणो *प्रेमप*. मानवसहज विवेक विनानो -

माणसामख उक्तिर. [?] (सं.मनुष्यात्मकः) माणिक गुर्जरा. पंचवा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. माणेक (सं. माणिक्य)

माणिण *ऐतिका.* गर्वथी माणिणि वसंफा(ल). मानिनी माणिणी-माण वसंवि(ब्रा). मानिनीनो दर्प (सं.मानिनीमान)

भाषिस नलाख्या. माणस (सं.मानुष) भाषी उक्तिर. पंचवा. बार मणनुं तोल, [एटलुं समावे एवुं पात्र] (सं.माणिका); जुओ मांणीक

माणुस गुर्जरा. षडाबा. माणस (सं.मानुष) माणुसहाणि गुर्जरा. माणसनी गंघ (सं. मानुषद्राणिका)

माण्य अखाका. माण, गागर

मातपण उपद्याः मदीलापणुं [सं.मत्तत्वन]

मातम अखाछ. माहात्त्य, मोटाई

मातर सात लावल. सात मातृका [शक्तिदेवी] — ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही, आज्ञेयी अने इन्द्राणी

मातरा चंद्रवा. सामग्री, [मालमत्ता, धन] [सं.मात्रा]

मातखं आनंस्त. प्रेमाका. हृष्टपुष्ट; प्रेमाका. उदार, मोटुं; अखाका. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नरका. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप.मत्त, [धेलुं बनेलुं], [सघन बनेलुं] मातंग अखाका. नरका. प्रेमाका. हाथी [सं.]

मातुल *प्रेमाका*. मामा [सं.]

मात्रा विना उक्तिर. पात्र – वासण विना (सं.मात्रकं विना)

मात्रेई *आरारा.* ओरमान (माता) (रा.) [सं.मातृका]; जुओ मंत्रेइ

माथासरुं *चित्तसं*. मथाळुं, माथेनो आघार

माथे थवं *प्रेमाका. [चडी आववं] मावक, माविक अखाछ. चित्तसं. मद — केफ चडावनार; मद — केफ चडाये होय एवी व्यक्ति; चित्तसं. मदीलापणुं; जुओ महादिक

भारकवान चित्तसं. मदीली [नशीली] व्यक्ति

मादल उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. सिंहा(शा). एक वाद्य, मृदंग (सं.मर्दल)

मादिकयुं, मादलीउं नलरा. प्रेमाका. लावल. [डोकनुं] एक घरेणुं (सं.मर्दल)

मादिक जुओ मादक

माघ जुओ मझार

माधुगरी प्राचीका. भिक्षा (सं.माधुकरी)

मान अखाका. ऐतिरा. *गुर्जरा. लावल. प्रमाण, माप [सं.]; चित्तसं. माप, धोरण, मोभो, स्थान, परिमाण, जथ्थो; जुओ मोहन मांन

मान प्रेमाका. ताल[नो एक विराम] [सं.] मान अखाका. गुर्जरा. प्रेमाका. लावल. अभिमान; नरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). अभिमान, रीस, प्रणयप्रकोप (सं.)

मानअं षष्टिप्र. (तुं) माने छे

मानइ *आरारा. उक्तिर. लावल. वीसरा.* मान आपे (सं.मन्यते)

मान माग्**बुं** दशस्कं(१). नरका. प्रेमप. प्रेमाका. विनंती, आजीजी के कालावाला करवा; जुओ माग तुं मान

मानमुहुत जुओ मुहुत

मध्य.२५

भानरस *नरका.* *मानिनी – गोपीओनां अभिमान तजाववानो रस, [गोपीओनी प्रणयरीसना प्रसंगनो रस] **मानवी** *गुर्जरा*. [मानव]स्त्री **मान-शुकन** दशस्कं(१). प्रेमाका. अपशुकनः जुओ मुहत **मानसी** *प्रेमाका*. मनना, [हृदयना] **मानी** *प्रेमाका*. मानीती, [मान आपेली] **मानीनता** *अखाका. अखाछ*. मानीपुणुं, अहंभाव **मानुख** दशस्कं(१). मनुष्य **मानुस** कामा(त्रि). मनुष्य मानेश घे जुओ शधे **माप** नंदब. खरतस. माफ माम अखाका. आरारा. उषाह. चतुचा. प्रद्युच्, प्रेमप, प्रेमाकां, मोसाच, ललिरा, लावल, विमप्र, वीसरा, मोटाई, गौरव, स्वमान, प्रतिष्ठा, मोमो, "टेक, "ममत (सं.माहात्त्य) (सं.ममत्व) **मामणा क्वन** जिनरा, बाळकोनी काली-घेली. तोतडी वाणी दि.मम्मण] मामहिरु विभग्न, मामेरुं [गू.मामा+सं.गृह] **माय** *अखाका*. माया **माय** *गुर्जरा. षडाबा.* मा (सं.माता); विकरा, स्त्रीने संबोधन, मा मायताय ऐतिराः ऋषिरा. लावल. मातापिता [सं.माततात] मायंडि देवरा. माडी (सं.माता+डी) **मायंड, मायंडू** *ऐतिका. प्राचीसं*. मार्तंड, सूर्य

मायंद *प्राचीसं*. आम्रवृक्ष (सं.माकन्द) **माया** *नेमिछं. लावल. शुंगामं.* माता माया आरारा, कपट; चमत्कार; जुओ माया मांडे **मायामर पडाबा.** मायावी, बनावटी (सं. मायामय) **माया मांडे** ०*प्रेमाका*. कावतरां करे, [कपट करे]: जुओ माया **मायावी ****हरिख्या*. किपटवेश धारण करनारी **मायाबीआ** *उपबा*. कपटी (सं.मायावी) **मायी** *आनंस्त.* मायावाळुं, [रागवाळुं] **मार्युगोर्युं** *उपबा*. वाकृंचुक्, आङ्अवळ्, **छळकपटभर्यु** (सं.मायित+गोपित) मार उषाह. सख्त मारनी घांटी, [अडचण] **मार** तेरका. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा)*. कामदेव (सं.) **मारा प्रेमाका. वेताप.** वटेमार्गु, मुसाफर **मारणहार** *उक्तिर. प्राचीसं*. मारनार **मारणी** *आरारा*, हत्या मारमारगउदीपक वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामना मार्गने प्रकाशित करती (सं. मार+मार्ग+उद्दीपक) मारिकार लावल. मार(काम)ना विकार, विषयवासना **मारिवड** उक्तिर, मारवुं **मारीतर्ज उक्तिर.** मरातु, हणातुं **मारुआड** *अखाछ*, मारवाड मारुआडि नलाख्या. मारवाड, मरुभूमि; सुको प्रदेश

ः **षि** *ऐतिका*. मारवाडनी ंश्व *चित्तसं*. मरुत, पवन ्रहे**ची** ऋषिरा, मारवाड देशनी स्त्री म्ब्ह *उक्तिर, वीसरा,* मारवाड नारो *गूर्जरा*. कामदेव (सं.मार) **मारोमारि** *प्राचीसं*, मारामारी **मार्गण** *गुर्जरा. विराप*. तीर (सं.मार्गण) मार्जन प्रेमाका. साफ करवानी क्रिया [सं.] माल अखाका. *विसात, [आनंद]; जुओ मालणो. म्हाल माल तेरका. माळियं, मांचडो (दे.) **माल गू**र्जरा. नलरा. प्राचीफा. पहेलवान (सं.मञ्ज) **मारु** वीसरा, वनप्रदेश माळ वीसरा. एक पक्षी **मालणो नरका**. महालनार; जुओ माल मालवराउ गुर्जरा. मालवदेशनो राजा मालविषी ऋषिरा, मालवदेशनी स्त्री **मालविद्या** *उषाह*. मक्कविद्या **मालाखाड** उषाह. दशस्कं(२). नलरा. **नेमिछं**. प्राचीफा. मलोनो लावल. अखाडो. व्यायामशाळा (सं.मछ+ अक्षवार) मालिया ऐतिका. [माळवाळा] महेल

मालीउं अभिक. नलाख्या. माळ, मजलो; *लावल. [माळवाळां मकान] दि. माल] मालुकार मदमो. वणकर, ढेड मालोबम ऐतिका. मालोपम मालड गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. प्राचीफा.

महाले, आनंद करे, आनंदमस्तीथी घूमे मावटी प्राचीफा. *स्त्रीनी सेंथी उपरनो एक अलंकार, किपाळ पर कराती सुगंधी पदार्थनी आड़]; जुओ महिवटु **माबीत** *जिनरा*. मातापिता, मावतर माबीत्र *षडावा.* मातापिता (सं.मातपित) माबीश्रह गुर्जराः मावतर (सं.मात्+पित्) मासच उक्तिर. आठ रतीनुं वजन (सं. माषकः) मासकल्प *उपवा. एक स्थाने एक मास रहेवानो जैन साधुनो आचार (सं.) मासमङ उक्तिर. महिनानो गाळो पूरो करतो (दिवस) मासिक कर्म प्रेमाका. जन्म पछी एक महिने करवानो संस्कार – धार्मिक विधि मासिहाई *उक्तिर* मासियाई (तं.मात-ष्वस्रीयः); जुओ माईय **मासीय जुओ अष्ट** मासीध **मास्याही** उक्तिरः मासियाई ष्वस्रीय) माह (सीत-नुमाह) * लावल. [*सीताने जोवा आवनार, "सीतानी भाळ लेवा आवनार] [सं.सीता+फा.नुमा] **माहडं** *आनंस्त.* -मां महत्त्व आरारा. जिनरा. ब्राह्मण (सं.माहन) **बाहणी** *आरारा*, बाह्यणी **महारे विमप्र.** माह्यरामां **बाइव कृष्णवा. दशस्कं(२). नेमिछं.** माधव, कृष्ण

फरेी

माहंत अखाछ. अखेगी. कादं(शा). महंत, महापुरुष, महात्मा [सं.] माहा नलाख्या. रुस्तस. महा, मोटुं माहाअग्नि चित्तसं. विश्वाग्नि, विश्वगां व्याप्त अग्नि माहाजंम मदमो. माझम, [मध्य] माहानिध्य चित्तसं. महानिधि, [महाभंडार-रूप] ब्रह्म माहाले नलाख्या. महाले, माणे, [आनंदथी

माहाव अभिक. दशस्कं(२). माधव, कृष्ण भाहावके चतुचा. माधव पासेथी माहावर "नरप. [लाखनो रंग, जेनाथी स्त्रीओ पानी रंगे छे] [हिं.महावर]

माहि, माहिं उपबा. गुर्जरा. तेरका. नलाख्या. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. अंदर, -मां (सं.मध्य)

माहि **यिकी** उपवा. -मांथी

माहिलं उपवा. नलरा. वीसरा. षडाबा. अंदरनुं (सं.मध्य+लं)

माहिल्युं *उक्तिर*. माहिलुं, अंदरनुं माहिं जुओ माहि

माहे, माहें वीसरा. -मां (सं.मध्य)

माहि नलाख्या. मारे

मांकड *नलरा. रूपच.* मांकडुं, वानर [सं.मर्कट]

मांकडी एडाबा. घंटीनुं लोढा के लाकडानुं चोकठुं [जेमां घंटीनो खीलो रहे छे] (सं.मर्कटी)

मांकुण उक्तिर. षडाबा. मांकड (सं.मत्कुणः) मांग नरका. मदमो. सिंहा(शा). सेंघो (सं. मार्ग)

मांचड उक्तिर. खाटलो (सं.मंचकः); नलाख्या.मांचडो,ऊंची बेठकोनी मांडणी मांची आरारा. उक्तिर. नरका. प्रेमाका. खाटली (सं.मंचिका)

मांजर *आरारा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि.* मंजरी

मांजिर उक्तिर. मंजरी
मांजार दशस्कं(२). मांजर, मंजरी
मांजार, मांझार प्रेमाका.बिलाडो [सं.मार्जार]
मांझ प्रेमाका. मांहे, मध्ये
मांझार जुओ मांजार
मांदिय प्राचीसं. सुभट, [मर्द]

मांटी आरारा. मर्द, पति; तितरा. मरद, पुरुष; उषाह. मरद, [बहादुर पुरुष] मांड उक्तिर. वीसरा. चोखानुं ओसामण (सं.मंड)

मांड अखाका. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं. मदमो. विराप. बळपूर्वक, पराणे (दे. महा); प्राचीफा. *मुश्केलीए, *मांडमांड, [पराणे]

मांडइ गुर्जरा. आरंभे, शणगारे, [रचे, करे]; तेरका. मांडे, [शरू करे]; हरिवि. मंडित करे; अभिऊ. मांडे, मूके; आरारा. गोठवे; उपबा. लखे, [मूके] (सं.मंइ)

मांडइ *गुर्जरा.* बळपूर्वक, [पराणे] **मांडण** *चतुचा. नलरा.* शणगार (सं.मंडन) मांडणड *उक्तिर*. शृंगार, सजावट; *जिनरा.* [मांगलिक प्रसंगे घर-आंगणे करवामां आवतां] चित्रांकन

मांडलउं *पडावा. [चोक्कस परिस्थितिमां करवामां आवती हाथ हलावीने थती जैन क्रिया]; उपवा. हरिवि. मंडळ, समूह

मांडवीआ विमप्र. जकातना नाकेदारी
मांडहड वीसरा. मांडवो (सं.मंडप)
मांडहिय उक्तिर. बळपूर्वक, पराणे
मांडा अभिऊ. उक्तिर. पूरणपोळी जेवी
एक प्रकारनी रोटली, [पूडा] [दे.मंडक]
मांडी आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं.
लावल. पूरणपोळी जेवी रोटली, [पूडा]
मांडो मोसाच. एक गायक जाति, [चारण जाति]

मांडो नरका. ?

मांणउ ऋषिरा. न लावशो (सं.मा+आनय) मांणीक चंद्रवा. बार मणनी माणी; जुओ माणी

मांणे चंद्रवा. माने

मांतरा *सिंहा(शा)*. महामात्र, महेताजी मांन *लावल*. अभिमान

मांनुनी *मदमो*. मानिनी

मांम आनंस्त. ऋषिरा. कामा(शा). गुर्जरा. विराप. वीसरा. [महत्त्व], गौरव, टेक (सं.माहात्त्य) *वीसरा. [गौरवपूर्वक, आदरपूर्वक]

मांहलु नलाख्या. मांह्यलो, अंदरनो (सं.मध्य परथी) मांहां नलाख्याः -मां, अंदर मांहारू मदमोः माह्यरुं, [लग्नमंडप] मि अभिकः कादं(शा)ः नलाख्याः में (सं. मया)

मिइं लावल. में

मिगल जुओ मदमिगल

मिच्छत्त जिनरा. मिथ्यात्व (गुणस्थान) [ज्यां सत्य तत्त्व पर मुख्यत्वे अश्रद्धा छे एवी आत्मावस्था] [जै.]

मिच्छात जिनरा. मिथ्यात्व, [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा] जि.]

भिच्छादुक्कडं ऋषिरा. मारुं दुष्कृत्य मिथ्या थाओ [जै.]

मिछत *ऐतिका*. मिथ्यात्व, [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा] [जै.]

मिछी *विमप्र. [*मिथ्यात्वी, * अन्यमती; *म्लेच्छ] [जै,]

मिटाई आरारा. मीठाई

मिणा *देवरा.* मीण [जेवा कोमळ] (सं. मदन)

मिणाय *दशस्कं(९). प्रेमाका.* वटके, पानो चोरे, दुध चोरे

मित अखाका. माप[वाळुं], [सीमित]

मितासरा *ग्रेमाका. [याज्ञवल्क्य-स्मृति उपरनी विज्ञानेश्वरनी टीका, जे एक मान्य धर्मशास्त्र छे]

मिताचार प्राचीसं. मित्राचार, मैत्री मित्त *अभिकः. [मैत्री, स्नेहसंबंध]; गुर्जरा. तेरका. षडाबा. मित्र मित्तडी श्रंगामं. मित्रता मित्तुवि *ऐतिका.* मित्र षण (सं.मित्र+अपि) मित्राई *उक्तिर.* मैत्री

मित्रेइ आरारा. ओस्मान (माता) (रा.) [सं.मातृका]

मियः *न्लाख्या*. मिथ्या, फोगट

मिष्यातः *अनंस्त*. मिथ्यात्व नामनुं प्रथम गुण-स्थान, आत्मानी निकृष्ट **अवस्था** [जै.]

मिध्यात्वशस्य ऐतिका. मिथ्यात्व [सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा]रूपी शस्य [जै.]

मिवाणव अभिक्त. मयदानव, एक असूर, दानवोनो स्थपति

मिमासण *अंबरा*. विमासण

मिय-कुंड प्राचीसं. अमृतकुंड

मियमत्त [मयमत्त] प्रद्युचुः मदमत्त

मियमय "शृंगामं. [मृगयुक्त]

मिरगानेंजी आरारा. मृगनयनी

मिरांत *प्रेमाका*. दोल्त [अ.मिरास, अमीरात]

मिरिय तेरका. प्राचीसं. मरी (सं.मिरिच) मिरी जिनरा. नेमिछं. मरी, तीखां (सं.मिरिच)

मिल नलाख्या. मेल, शरीर पर जामती आछो गंदी धर

मिल्ड आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. देवरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. मळे, एकठा थाय, संग करे (सं.मिल्)

मिलडी, मिहिलडी अभिक. मेलडी माता मिलयाचल सिंहा(शा). मलय पर्वेत (सं. मलयाचल)

मिका- वीसरा. मेळवावुं, मेळाप करावुं

भित्तस्तु *आनंस्तः [मळातुं, भेगा थवातुं] भित्तायद्वः उक्तिरः म्लान थाय, निस्तेज थाय (सं.म्लायंति)

मिलियांगिरि प्राचीफा. मलयगिरि, दक्षिणमां आवेलो एक पर्वत

मिली *आरारा.* भेगुं, साथे

मिलीआनील प्राचीफा. मलयगिरि उपरथी आवतो पवन, दक्षिणानिल (सं.मलया-निल)

मिल्डइ गुर्जरा. तैरका. प्राचीसं. मेले, मूके, छोडे (दे.मेळ-)

मिशड़ *कादं(शा)*. बहाने (सं.मिष); *प्रबोप्र*. बहाने, [रूपे]

मिश्र कादं(ध्र). द्विअर्थी

मिष्टाण *देवरा***.** मिष्टान्न

मिस ऐतिका. मिश्र, युक्त

मिस उपबा. ऋषिरा. कादं(शा). गुर्जरा. विराप. बहानुं (सं.मिष)

मिसरी आनंस्त. साकर [अ.मिस्री]

मिसरु *ऐतिका.* [मशरू], वस्त्रविशेष [अ. मक्त्अ]

मिति विरापः मेश, राखः; शृंगामः शाही (सं.मधी)

मिसि वसंफा(त). बहाने, [रूपे] (सं.मिष) मिसिबान अंबरा. मधीयर्ण, मेशना रंगनुं काळं

भिसेज "शृंगामं. [-ना बहाने] [सं.मिषेन] भिक्रर गुर्जरा. सूर्य (सं.मिहिर)

मिहरि *आरारा.* महेर, कृपा

मिडिणुं *प्रैमाका*. महेणुं

मिहितो जुओ मुहितो
मिहिती, जुओ मिलडी
मिहिती, मेहिती, मेहेती- नलाख्या. मेली,
मूकी, छोडी दीघी (प्रा.मिझ-, मेझ-)
मीच पंचवा. मृत्यु
मीजी जिनरा. मज़ा, [मर्मभाग]
मीटमेळावो नरका-२. दृष्टिनुं मिलन
मीटि नलाख्या. मीट, मांडेली नजर
मीठडो नरका. नरप(द) ओवारणां
मीडाक, मेंडक चंववा. देडको
जीढतां जिल्हा नेजर मेंढा, [घेटां]
मीढी उत्कर. वांकां शिंगडांवाळी; जुओ मींढी

मीढीआउलि *आरारा(व).* मींढियावळ मीत जिनरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मित्र; वीसरा. मित्र, प्रेमी; नरका. प्रेमाका. मैत्री, प्रीति

मीतर, मीत्र, मीत्री, मीत्री कामा(त्रि). मंत्री, वजीर, प्रधान

भीनति अंबरा जिनरा प्राचीफा विमप्र. शृंगामं विनंति (सं.विज्ञप्ति; हिं.मिन्नत)

मीयांइ शृंगामं. मृगने

मीलाण पंचवा. मेलाण, मुकाम, पडाव मीलीओं *कादं(शा). [बंध करी, बीडी]

[सं.मिल्]

मीस मोहनि जिनरा. मिश्र मोहनीय [शुद्ध दर्शन तरफ रुचि पण न थाय अने अरुचि पण न थाय एवी कर्मदशा] [जै.] मीसरी नरप(द). खांड मीसा जिनरा. मिश्र, [सन्यक्त्व अने मिथ्यात्वना मिश्रणवाळी आत्मावस्था] [जै.]

मीहनति ऋषिरा. महेनत वडे
मींजी उक्तिर. मझा, हाडमांसनो मावो
मींडां प्रेमाका. वांकडी शींगडीओवाळां
मींडी दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका.
वांकडियां शींगडांवाळी; जुओ मींढी
मींडुहुल विक्ररा. मींढळ [सं.मदनफल]
मींढड अखेगी. उक्तिर. मेंढो, घेटो (सं. मेंढक)

मींढइ उक्तिर. मींडे, मींडुं होवानी स्थितिमां मींढल आरारा(व). मींढळनुं झाड (सं. मदनफल)

मींढी *जि*क्तर. वांकां शींगडांवाळी; जुओ मीढी, मींडी

मींत्री कामा(शा). मंत्री; जुओ मीतर मु चतुचा. मारुं, मारे मु कादं(शा). प्रबोप. मोदुं, [मों] (सं.मुख)

मुआला *रूत्तस*. मोवाळो, [वाळ]

मुकतुं *अखाछ.* **मो**कळुं, छूटुं, निरंकुश [सं.मुक्त]

मुकरी कस्तुवा. नामुक्कर जवुं, कहीने फरी जवुं

मुकलावइ, मोकलावइ "गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. रजा मांगे, विदाय ले (सं.मुक्त परथी)

मु**बः**- *तेरका.* मूक्युं (सं.मुक्त) मुक्खहलि *ऐतिका.* मोक्षस्थले

मुक्ता *अखाका*. मुक्त [जीवो] **मुक्ताफळ** अखाका. मोती **मुक्तावित** गुर्जरा. [चोक्कस प्रकारनी चडती उपवास-श्रेणीवाळो] एक तपप्रकार (सं.) [जै.] **मुक्ताशिला कादं(ध्र)**. धोळो आरस मुक्त्य अखेगी. मुक्ति मुक्त चित्तसं. मुख; जुओ मुज मुक्त **मुख** *चंद्रवा.* मुख्य **मुख ऊडी ज्दुं** *प्रेमाका.* फिक्का पडी जवुं, ढीला थई जवुं **मुखक** *विक्ररा.* मूषक, [उंदर] **मुखकोसु** *षडाबा*. कपडाथी मोंने ढांकवुं ते (सं.मुखकोश) **मुखटाको** *प्रेमाका***. मुख जोवानुं** टाळवुं ते, [-थी दूर रहेवुं ते] **मुखमल** जिनरा. मखमल [अ.] **मुखरेखा** *आरारा*. मोंफाड, होठ ? मुखबट्ड विमप्र. मोनो विस्तार, [मुखप्रदेश] [सं.मुखपट]; जुओ मखवट्टउ मुहवटा मुखामुखि उक्तिर. [*मुखोमुख होवुं ते] (सं.मुखामुख्यता) **मुखास** *उक्तिर*. जडवां (सं.मुखास्याः) **मुखी** मदमो. मुख्य मुखे दश आंगळी *प्रेमाका. [शरणागतिना भावथी] मुख्य आरारा. आदि, वगेरे **मुख्य** चित्तसं. मुख **भुग** उक्तिर. मग (सं.मुद्गाः) **मुगटा** *प्रेमाका***. अबोटियां, जमती के पू**जा

करती वखते पहेरवानां [रेशमी] वस्त्र **मुगतइं** *आरारा*. मुक्तिमां, मोक्षमां **मुगताफल** *लावल*. मोती (सं.मुक्ताफल) **मुगतां *अभि**ऊ. *ऐतिरा*. उघाडां, (मरजीमां आवे ते लई लेवा माटे खुझां) **भुगतांवलि** *देवरा.* मोतीनो हार मुक्तावति) **मुगतिशिला** *प्राचीफा*. सर्वार्थसिद्ध स्वर्गनी उपर बार जोजने आवेलुं मुक्त जीवोनुं स्थान (सं.मुक्तिशिला) (जै.) **मुगधा** *आरारा*. भोळी; *ऋषिरा. मुग्धा, भोळी, सरल स्त्री **मुगनी (मुगनी फली)** लावल. मगनी [सींग]; जुओ म्गफली **मुगरनी यंत्र, मुगरनी यंत्र** *हम्मीप्र.* मगरबी यंत्र, गोळा फेंकवानुं यंत्र ***मुगलभेर [भुंगलभेर]** *चंद्रवा.* एक प्रकारनुं वाद्य, [भूंगळ अने भेरी] मुग्ध आरारा. भोळो **मुचकोडी** गुर्जरा. मचकोडी (सं.*मुचकृतति) **मुळांइ** *श्रृंगामं*. *मूर्छाथी, [मूर्छा पामे] **मुज** *चित्तसं*. मने [सं.मह्मम्] मुज मुक्त *चित्तसं*. मारे मोढे, मने **मुजरो** *प्रेमाका*. प्रणाम मुजल उक्तिर. [?] (सं.मुखजलम्) **मुज्ज्ञ** *षडाबा.* मूंझा, भ्रमित था (सं.मुह्य-) **मुझ** *नेमिछं*. भारुं, मने; लावल. मने [सं. मह्यम्] **मुझार, मोझार** *कामा(शा). देवरा.* मध्ये, [-मां]; जुओ मझार

मुझारि कादं(शा). नलाख्या. प्राचीका. -मां, अंदर (सं.मध्य परथी) **मुझ्न तेरका. मारुं (**सं.मह्मम्) मुडइ उक्तिर. धीमेधीमे; जुओ मोडे-मोडे **मुडाधा** *हम्मीप्र*. मुकुटबद्ध (राजा), सामंत (राजाओ); जुओ मुडुघा **मुडामां** *कस्तुवा*. मोढामां **मुदुधा, मुदुध्या** नलरा. विक्ररा. सामंत राजा (सं.मुकुटबद्ध); जुओ मउडउध, मुडाधा **मुणइ** *आरारा. ऐतिका. गुर्जरा.* जाणे (प्रा.) **मुणंद** *देवरा*. महान मुनि (सं.मुनींद्र) **मुणि** *तेरका*. मुनि **मुणिवइ** *तेरका.* मुनिराज (सं.मुनिपति) **मुणिवर** *गुर्जरा. लावल.* मुनिवर **मुणिंद** *ऐतिका. गुर्जरा. लावल.* मुनीन्द्र, श्रेष्ठ मुनि **मुणिवि ***ऐतिका. [जाणीने] **मुणीस** तेरका. मुनिराज (सं.मुनीश) **मुणीसर** *तेरका. लावल.* मुनीश्वर; श्रेष्ठ मुनि **मुतार ***सिंहा(शा). [दंडूको] मुताहल आरारा. मोती (सं.मुक्ताफल) मुत्ताहलमाल, मुत्ताहलमाल वसंवि(ब्रा).मोतीनीमाळा (सं.मुक्ताफल-माला) मुताहलहार वसंफा. मोतीनो हार (सं.मुक्ता-फलहार) **मुदगुर** ललिरा. गदाना प्रकारनुं हथियार (सं.मुद्गर) **मुवा** *अखाका. प्रेमाका.* आनंद [सं.]

मुद्ग *षडाबा*. मग (सं.) **मुद्गळ** *प्रेमाका*. एक प्रकारनुं [गदाना जेवुं] शस्त्र [सं.मुद्गर] **भुहा** *तेरका.* मुद्रा, छाप **मुद्धि** *तेरका.* हे मुग्धा **मुद्रडउ** *वीसरा.* वींटी (सं.मुद्रा) मुद्रडी चारफा. दशस्कं(१). प्रेमाका. विक्रच. मुद्रिका, वींटी **मुद्रा** *आरारा*. सील, बंधन (सं.); *गुर्जरा*. महोर[वाळी वींटी]; लावल. वींटी; [योगमुद्रा, योगविहित *अखाका. अंगविन्यास]; प्रेमाका. [शंखचक्रादिनी वैष्णवी] छाप **मुद्राष्यापार** विक्ररा. शराफी **मुद्रिश्वर** *प्राचीका*. मद्र देशनो राजा, शल्य (सं.मद्रेश्वर) **मुघर** *प्राचीफा*. मधुर **मुध्या** *अंबरा*. फोकट (सं.मुघा) **मुन** *देवरा*. मूगा (सं.मौन) **मुनियपय** *ऐतिका.* मुनिनुं पद **मुनिसर** *देवरा*. मुनीश्वर **मुनुस** *सिंहा(शा).* मनुष्य **मुन्य "**अखाका. प्रेमाका. मौन **मुन्य करतुं, मुन्य धरतुं** *दशस्कं(१).* मौन धरवुं, मूगा रहेवुं **मुमत** *मदमो*. ममत **मुयालो** *वेताप*. मोवाळो, [वाळ] [सं.मुख+ वाल **मुर** *कादं(शा)*. (आंबानो) मोर (सं.मुकुर) **मुरकतःउ** *जिनरा*. मरकतो

मुक्तल्डं वसका नरके ् **मुरकतडड़** *लावल.* मंद हास्य वडे, मलकाट-थी **मुरकिउं** *हरिवि*. मरक्युं, मरकलुं कर्युं **मुरकी, भुरकीय** गुर्जरा. नेमिछं. लावल. जलेबी घाटनी मीठाई (दे.मुरुक्ति) **मुरकुलइं** *वसंवि.* मंद स्मितमां **मुरखणि** *देवरा.* मूर्खी **मुरजाद** *नंदव.* मर्यादा, [अदब]; मदमो. मर्यादा, [सीमा] **मुरजादा** *चंद्रवा.* मर्यादा, [सीमा] **मुरडइ** *जिनरा. वीसरा*. मरडे ***मुरति (मुरडि)** विमग्न. मरडीने **मुरमंडल** *ऐतिका.* मरुमंडल, [मारवाड] "**मुरंगी ["सुरंगी**] "*ऐतिका*. [रंगमां -आनंदमां आवेल] **मुरिक्ड** जुओ मउरियउ **मुरीजां** *लावल*. महोर्यां, खील्यां **मुरुकुलइ** *यसंफा (ल)***. मरके** मुर्मुह षडावा. "बळतो कोलसो, [भूसीनो अग्नि] (सं.मुर्मुर) **मुलक**- वीसरा. मलकवुं **मुलताणी** *हम्मीप्र.* उत्तम घोडानी एक जात **मुलाजइं** *सम्यचो*. वशमां, मर्यादामां, [अंकुशमां] **मुलाणा** *हम्मीप्र*. मौलाना, मौलवी मुलाणि माउलाणि ?] उक्तिरः मामी (सं.मातुल परथी) **मुली** *विक्ररा*. मूळ, जडीबुट्टी **मुवाल** *पंचवा***. [मोवाळा], वाळ (सं.**मुख+

वात) **मुशल,** भुश*ः ेमाकाः षडाबाः* सबित् (tt.) **मुष्ट** *अखाका. प्रेमाका*. मूठी [सं.मुष्टि] **मुन्दि** *आरारा.* चूप, खामोश (रा.मुस्ट; सं. मुष्ट) **मुसइ** *उक्तिर. विकच. षडाबा.* चौरी ले (सं.मूष्) **मुसकर** वीसरा. स्मित **मुसमूरण** *प्राचीफा*. नाशं करनार (दे. मुसुमूरप) **मुसल-स्नान** प्रेमाका. जेवुंतेवुं स्नान, [विधिरहित, निरर्थक स्नान] **मुसाल** *चंद्रवा.* मोसाळ [सं.मातृशाला] मुसिया आरारा. छेतरायेल, लूंटायेल (सं. मुषित) **मु सुं** पंचवा. मने, मारी साथे **मुस्तक** *चंद्रवा. मदमो.* मस्तक, माथुं **मुस्तग** *चंद्रवा. वेताप.* मस्तक **मुस्यउ** *उक्तिर.* लूंटायेल; *पंचवा.* लूंट्यो (सं.मुषित) मुह उपबा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वीसरा. मुख; *आरारा*. घडानुं मोढुं; सोईनां नाकां (सं.मुख) **मुह**्र*गुर्जरा*. मारी (सं.*मह्य) **मुहकाणि** "*गुर्जरा*. [शरम, लञ्जा, दुःख, वसवसो]; जुओ काणि **मुहछप** *उक्तिर*. आचमन ("सं.मुखक्षण) [रा.मूछण]; जुओ मछण मुहडउं उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. नलरा.

वीसरा. मोद्धं (सं.मुख+ड) मुहत *प्राचीफा*. मंत्री; महेतो (सं.महत्) **मुहत** *विमप्र.* महत्त्व, [गौरद] **मुडतउ** *गुर्जरा. प्राचीफा.* मंत्री, महेतो (सं. महत् परथी) **मुहतानंदन**्यूर्जराः मंत्रीपुत्र **मुहपती** *उक्तिर.* जैनोमां मुखे बांधवामां आवतो लूगडानो ककडो (सं.मुखपत्री) मुहबारि षडाबा. मोढे (सं.मुखद्वारे) **नुहरहं** *गुर्जरा.* मोर, आगळना भागे (सं.मुख परथी) **मुहरां** गुर्जराः महोरां, [आकृति, रूप] [फा. मुहरिका वसंफा. वसंवि. वसंवि(क्रा). गुंजारव करे (सं.मुखरिताः) **मुहरी** 'प्राचीसं. मधुरी **मुहतु** जुओ महलउ **भुहबटा "**विमप्र. [एक प्रकारनुं वस्त्र]; जुओ मुखवटउ **मुहबडि** प्राचीफा. लावल. विमप्र. मोवडे, आगळ, मोखरे (सं.मुखपट); जुओ मुंह्विडि **मुहबि** अभिक. *महुडानां वृक्ष (सं.मधूक) **मुहंडाइं (मुहंडाइं)** *उपबा*. मुख वडे **मुहंत**ख *उपबा*. मंत्री (सं.महान्, प्रा.महंत) **मुहा** *गुर्जरा***. खोटेखोटे, मिथ्याभावे (सं.** मुघा); *देवरा*. व्यर्थ, फोकट **मुहाडि** *तेरका. प्राचीसं*. साम्पुख्य, मुखोमुख, रूबरू होवुं ते **मुहियां** *उक्तिर. नेमिछं. षष्टिप.* निरर्थक, व्यर्थ (सं.मुधा)

मुहितो, भिहितो, भेहितो प्राचीका महेतो (सं.महत् परथी) मुहिया, मुहीयां उक्तिर. व्यर्थ, निरर्थक (सं.मुघा) मुद्ध विमप्र. खोटी रीते, [मिथ्याभावे] (सं. मुधा) **मुहुखाई, मुहुखायी** *उक्तिर.* परोक्षवादी, ["पाछळथी बोलनार, "निंदक] मुहुडइ श्रृंगामं. मोढे [सं.मुख परथी] मुहुत (बानमुहुत) शृंगामं. मुहूर्त, [शुकन], [अपशुकन]; जुओ मान-शुकन भुष्टत नलरा. विमप्र. मंत्री. महेतो मुहुमरियां कादं(शा). मों-भेर (सं.मुख+ भरित) मुहुर प्राचीफा. शृंगामं. मीठी (सं.मधुर) मुहुसरि *कादं(शा). [मूछ] (सं मुखश्री) **मुहंडइ** *प्रद्युचु*, मुखे **मुहंडाइं** जुओ मुहंडाइं **मुहुंती** *षडाबा.* मुहपत्ती, जैनोमां मों पर राखवामां आवतो कपडानो दुकडो (सं. मुखपत्री) **मुंआल** *आरारा.* मोवाळा, वाळ [सं.मुख+ **मुंक**्रं *आनंस्त.* मूके, छोडे, तजे [सं.मुक्त-] मुंच- तेरका. मुकावुं, [छूटवुं] (सं.मुच्च-) **मुंजवयण** *वसंपा. वसंवि(ब्रा.)* मीठां वचन (सं.मंजुवचन); *वसंवि*. मंजु (के मुंज-नां) वचनो (सं.मंजु के मुंज+वचन) मुंद्रि जिनरा. मुग्ध थईने, मोह पामीने [सं. मुह्य-]

मुंठि *वसंवि(ब्रा)*. मूठी (सं.मुष्टि) **मुंड** *नलरा.* धान्यनुं एक मोटुं माप, मूडो [दे.मूड]; जुओ मूडा **मुंढी** *प्राचीसं*. मुखे, मोढे **मुंबडी** *उक्तिर*. वींटी (सं.मुद्रिका) **"मुंद्र [सुंद्र**] *गुर्जरा*. समुद्र; जुओ सुद्रह **मुंद्रडी** *लावल.* वींटी [सं.मुद्रिका] **मुंद्रडीयज** *स्थूलिफा*. मुद्रिका, वींटी **मुंध** *आरारा*. मुग्धा, स्त्री (अप.); *वीसरा*. मूर्ख (सं.मुग्ध) **मुंधि** *ऋषिरा. प्राचीफा.* भोळी स्त्री, मुग्धा, मुग्ध कन्याः वीसरा. पूर्ख स्त्री (सं.मुग्ध) **मुंमत** *सिंहा(शा).* ममत **मुं सी** *नरका-२***. मारा** जेवी **मुंहतउ** *आरारा*. महेती, मंत्री **मुंहपत्ति** *०ऐतिका.* मुखवस्त्रिका, मिं आगळ राखवामां आवती वस्त्रपट्टी] **मुंहुंना मांग्या** *आरारा.* मोंमाग्या, इच्छा मुजब **मुंहुंवडि** *प्रधुच्न*. मोखरे; जुओ मुहवडि मू, मूं आरारा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा. मारुं, मने मुकड् आरारा. जिनरा. मोकले [सं.मुक्त-] भूकिबुं उक्तिर. मूकवुं, छोडवुं (सं.मोक्त-व्यम्) **मूक्युं वाग्मबा**. मुक्त, [विनानुं, रहित] **मूछ** *तेरका. प्राचीसं*. मूर्छा मूछकूछ प्रेमाका. मूछ अने दाढी [सं.श्मश्रु+ क्ची; जुओ कुंच **मूछी** *तेरका. प्राचीसं*. मूर्छित, मूर्छा पामेली

मूझइ अभिक. उक्तिर. "गुर्जरा. देवरा. *प्राचीसं. विराप*. मूंझाय (सं.मुह्यति) **मूटक** *षडाबा.* टोपली, [पोटलुं] (सं.मुटक) **मूठ** अखाका. *पकड, [*एक तांत्रिक प्रयोग] मूठड उक्तिर. नाश पान्युं (सं.मुष्टः) हिं. मूठना] **मूट्य** अखाका. मूठी [जेटलुं], थोडुंक मूडच लावल. मूडो, नेतर के बरुनी बेठक, [ओठींगण माटेनुं कोई साधन] मूडा, मूहडा अधिक. अत्रनं एक परिमाण], *सोळ के वीस मणनुं वजन [सं.मूटक; दे.मूड] **मूधि** *शृंगामं*. मुग्धा **मून** *प्राचीसं.* मौन **मूने-मूने** *प्रेमाका.* मौने-मौने, [मूंगामूंगा] **मूरखचट्ट** *गूर्जरा.* मूर्ख शिष्य **मूरछाइ** *चित्तसं*. मूर्छित थाय, निष्क्रिय याय **मूरत, मूरत्य** *अखाका. नरका*. मूर्ति **मूर्छाणी** ऋथिरा. मूर्छित थई गई, बेभान थई गई **मूल** *चित्तसं.* तकियुं **मूळको** *प्रेमाका*. मूळनो, पहेलांनो मूळगुं अखाछ. अखेगी. उपबा. चित्तसं. *प्रेमाका*. मूळनुं, मूळ, [मूळ हतुं ते, असल]; *उपद्या. गुर्जरा. प्राचीफा. षष्टिप्र.* मुख्य (सं.मूलगत) **मूलि** *आरारा*. मूळमांथी, जरा पण **मूलि** *षडावा.* [मूल्यथी], वेचातुं मूलिगड यडाबा. मुख्य (सं.मूलगत) मूली उक्तिर. मूळो (सं.मूलिका)

मूली "गुर्जरा. [मूळ साथे, मूळमांथी] **मूल्ये** *चित्तसं*. मूळे, मूळमां मूषकगामी *दशस्कं(१).* मूषकवाहन, [गणेश] **मूस** उक्तिर. कुलडी (सं.मूषा) मूसउ आरारा. उक्तिर. उंदर (सं.मूषक) **मूसल** *उक्तिर*. सांबेलुं (सं.मुशल) मूह *अभिऊ. [मुख] मूहडा जुओ मूडा मूहनि, मूहूने, मूंहनि अभिक. नलाख्या. मने (अप.महु) मूं प्रबोप्र. "लावल. हुं; ऐतिका. तेरका. मने; जुओ मू **मूंकइ** आरारा. मोकले; उपबा. गुर्जरा. मूके, छोडे, राखे (सं.मुंचित) [सं.मुक्त-] मूंकावणहार उपवा. छोडावनार (सं.मुंच् परथी) [सं.मुक्त परथी] **मूंग** *उक्तिर. षडाबा.* मग (सं.मुद्गः) **मूंगफली** **वीसरा.* [मगनी सींग] (सं.मुद्ग +फली); जुओ मुगनी **मूंघी** *नरका.* मोंघी, कीमती [सं.महार्घ] **मूंडीयइं** गुर्जरा. मूर्छा पामे (सं.मूर्च्छति) **मूंजडी** *हरिवि*. मोढे काळी अने शरीरे धोळी गाय **मूंजी** *विमप्र*. कृपण **मूंझइ** *आरारा*. मूंझाय, भूली पडे, मूढ थाय; **गुर्जरा.* [मूंझाय, मूढ थाय] (सं.मुह्यति) **मूंढि** *वसंवि.* मूठीमां (सं.मुष्टि); *षडाबा*. मूठी (सं.मुष्टिः)

मूंद *वीसरा*. सील, महोरबंध (सं.मुद्रा) **मूंदडउ** *वीसरा*. वींटी (सं.मुद्रा) मूंबडी उक्तिर. वींटी (सं.मुद्रिका) **मुंद्रप्रभावि** *गुर्जरा*. मुद्रा(वींटी)ना प्रभावथी मूंहनइ लावल. मने; जुओ मुहनि **मूं हरइ** *गुर्जरा.* मारे, माटे **मूं हुइ** *उक्तिर.* मने **मृगडउ** *प्राचीसं*. मृग मृगनाभि गुर्जरा. नेमिछं. कस्तूरी (सं.) मृगनाभिज *चारफा*. कस्तूरी मृगमद अखाका. कामा(त्रि). चतुचा. दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. वसंफा. हरिवि. कस्तूरी (सं.) मृगमदपूर वसंवि. वसंवि(ब्रा). कस्तूरीनुं पूर (सं.) **मृगलोअणि** *गुर्जरा*. मृगलोचनी **मृगलोयणी** *आरारा. वीसरा*. मृगलोचनी मृग वसावुं प्रेमाका. हरण वसे के चरे एवं जंगल बनावुं, खेदानमेदान करुं मृणाल *यसंफा. वसंवि(ब्रा). कमळदंड (सं.) **मृत** *अखाछ. चंद्रवा. सिंहा(शा).* मृत्यु **मृतक** *अखाका. प्रेमाका.* शब, मडदुं **मृतग** *कादं(शा).* मृतक, शब, मडदुं **मृत्य** नलाख्या. मृत्यू मृत्यक पंचवा. मडदुं, मृतदेह (सं.मृतक) मृत्यका कादं(शा). माटी (सं.मृत्तिका) **मृत्यु-तुल्य** *दशरकं(२)*. मृत समो **मृत्यु-समतुल्य** *दशस्कं(२)*. मृतवत्, मरण-तोल

मूंढ *गुर्जरा.* मूढ, मूर्ख

मृद अखाका. माटी [सं.मृद]
मृदुर प्रेमप. मृदुल, [कोमळ]
मृषा "अखाका. [असत्य, मिथ्या] (सं.)
मेडणी (=मेइणी) तेरका. मूमि (सं.मेदनी)
मेकडा (रमेकडा) विमप्र. ?, [रमकडां,
क्रीडानां साधनों]

मेख मदमो. मेष राशि

मेखल, मेखला, मेखली ऋषिरा. कामा(शा). लावल. (धूधरीवाळो) कंदोरो [सं.मेखला]

मेखां (मेखां कीघां) सिंहा(शा). मेख जेवा, खीला जेवा सजड [कर्या] ?, [*जडी दीधा, *मेखला — सांकळ रची]

मेखांतर अखाका. दशस्कं(१). दशस्कं(२). बहानुं (सं.मिषांतर)

मेखे *प्राचीका*. बहाने (सं.मिष)

मेखोन्मेख शृंगामं. आंख उघाड-बंध करवी (सं.मेषोन्मेष)

मेगल अखाका. उषाह. कृष्णवा. गुर्जरा. दशस्कं(२). नरका. प्रबोप्र. प्रेमाका. हाथी (सं.मदकल)

मेचनाद विमप्र. मंडपनो एक प्रकार मेचनिक्का चित्तसं. वादळ घेरायेलां होय एवी घनघोर रात्रि

मेघवनी *प्राचीफा*. मेघवर्णा नामे कीमती वस्त्रनी बनावेली

मेधवाल मदमो. ढेड

मेघाडंबर "गुर्जरा. तेरका. "प्राचीकः वीसरा. एक प्रकारनुं [उत्तम] छत्र [४८]

मेचक कादं(शा). घेरा वादकी रंगनुं (सं.)

"मेलु ["मेलु] "*गुर्जरा.* ["वादळ]. [सं. मेचक], ["बळ], [सं.मेद]

मेट (भेटजे) "अखेगी. [िमटावजे, दूर करजे]

मेटइ अखाका. अखाछ. आरारा. देवरा. मिटावे, फिटाडे, नाबूद करे (दे.मिट) मेटजे जुओ मेट

मेट-मेलावो *नरका.* मीटनो मेळाप, दृष्टिनुं मिलन

मेडक *प्रेमाका*. देडका

मेठी उक्तिर. खळामां अनाजने झूडवा माटे बळदने जेनी साथे बांधी गोळ फेरववामां आवे छे ते स्तंम (सं.मेथि)

मेण *नरका.* मीण [जेवुं नरम] [सं.मदन] मेणा**लुं** *नरका.* महेणुं

मेर मदमो. मजबूत, नक्कर ?, [*चरबीयुक्त, *मांसमञ्जायुक्त, *जीव्रतीजागतो]

मेवनी, मेदिनी अखाका. वीसरा. पृथ्वी

मेदपाट *ऐतिरा*. मेवाड मेदिनी जुओ मेदनी

मेबु जुओ मेचु

मेर अखाका. आरापः, कृष्णयः प्राचीफा. प्रेमाका. विमप्रः, मेरः पर्वः, मदमो. "लावल. श्रेष्ठः, [च्यंडेट्यतं।]

मेर अलकी मोसाच. आधी मर, आधी जा भेरव *ऐंगावा.* म रो

मेरडा लावल. भारा

मेराईंड *उक्तिर*. हाथमां झालवाना डोया-वाळो दीवो

मेरायीयुं उक्तिर. हाथमां झालवाना डोया-

वाळो दीवो **मे'राण** *चंद्रवा*. महेरामण, [समुद्र] **मेरु** मदमो, श्रेष्ठ मेरु सनंदणो *चारफा*. नंदनवनयुक्त मेरु पर्वत (सं.मेरुः सनंदनः) मेल मदमो. नकी. निश्चे **मेळ** *वीसरा.* *जान जवा पूर्वे वरपक्ष*तरफ-थी अपातुं जमण, [स्वजनसमुदायनुं भेगा थवं ते] (सं.मेल-) **मेलड** *आनंस्त.* मेळे. जाते मेलइ आरारा. मोकले [प्रा.मेल्ल] मेलड. मेळड *उपवा*. जोडे: आरारा. "लावल. मेळवे, नक्की करे, योजे]; दशस्कं(१). जोडे, बंध करे; प्रेमाका. मेळवे, [योजे], अखाका. मेळवे, [मळतुं करे]; अखाछ. आरारा. मेळाप करे; आरारा. ऐतिरा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. चारफा. तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. *लावल. विराप. हरिख्या. मेळवे, भेगुं करे [सं.मिल्] **मेलड** *आनंस्त. जिनरा.* मेळो. मेळाप **मेलड** *आरारा.* मळ्यो. मेळाप थयो मेलाण, मेहलाण अखाका. अभिक. उषाह. पडाव, मुकाम (प्रा.मेल परथी) **मेळापक** *नरका. प्रेमाका*. मेळाप. मिलन **मेलापी "**नरका. जिनी साथे मेळ होय ते**त्** माणस, मित्रो मेलावर *ाराका. उपवा. उषाह. गुर्जरा.* . प्राचीस 💛 🗀 गप्र. षडावा. मेळाप,

मेलावडो *जिनरा*. मेळाप **मेळावे** *नरका*. मिलावे **मेलि** *नेमिछं*. मेळ (सं.मिल् परथी) मेलिइ नेमिछं. मेळपूर्वक, मेळ जोईने मेलिय ऐतिका. मळीने, [भेगा यईने] मेली, मेळीने जुओ उठां मेली, टेक मेळीने **मेळो** *अखाका*. मेळाप मेल्हाण नलरा. विमप्र. वीसरा. मुकाम, छावणी (प्रा.मेल्ल-) **मेल्हाक्णइ** *गुर्जरा.* मेळाप प्रसंगे मेलाइ चारफा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विरापः, वीसराः, षडाबाः, मूके, छोडे, तजे (प्रा.मेल) मेल्हणी (मेल्हणी जाय) *जिनरा.* छोडी शिकायी **मेल्हिक्य** *तेरका*. मेलावी, मुकावी **मेल्हाबिड** *गुर्जरा.* मुकाव्यो, छोडाव्यो **मेलि** *हरिवि-अन्. -*ना विना, [छोडीने] **मेल्डिवा** *उक्तिर.* मेलवा, मूकवा, छोडवा **मेवडा** *ऐतिका*. दूत [रा.] मेवार नरका. नरप(द). मेवास – महीवास प्रदेशनो रहेवासी, चोर-लूंटारु, शिरजोरी करनार **मेवास** *अखाछ*. [महीकाठानो प्रदेश], धाडपाडुवाळो जंगली प्रदेश, [भयग्रस्त अंतरायरूप प्रदेश]

मेघोनमेथ *ऐतिरा*. [आंखनो] पलकारो

मिलन् सन्हः जन (सं.भेलापक)

808

[सं.मेषोन्मेष] **मेस का**मा(त्रि). मसी, शाही [सं.मषी] मेह आरारा. उक्तिरः ऋषिराः गुर्जराः तेरका. देवरा. नेमिछं. वीसरा. षडाबा. मेघ, वादक, वरसाद मेहरू उक्तिर. मुखी, नायक; भंगी (सं. महत्तरः) [दे.; फा.मिहतर] मेहल *गूर्जरा*. मेखला, कंदोरो मेहलइ आरारा. ऋषिरा. नेमिछं. लावल. मुके, छोडे (प्रा.मेल्ह); विकरा. मोकले मेहलाण जुओ मेलाण मेहलीब सिंहा(शा). ? **मेहलू** नलरा. मेघ मेहिली जुओ मिहिली मेहेर कामा(त्रि). "कामा(शा). सद्भाव, कृपा, दयामाया, प्रिम] [फा.महेर] **मेहेर** *चंद्रवा.* स्त्री [दे.मेहरिया] मेहेरांण जुओ महेरांण **मेहेरांण** *मदमो*. महाराणो **मेहेरि. मेहेरियो** चंद्रवा. स्त्री: दि.मेहरिया मे**हेरी** *मदमो.* स्त्री दि.मेहरिया] **मेहेलइ** *आनंस्त. नलाख्या. प्रेमाका.* मूके, छोडे (प्रा.मेल्ल) मेहेला, मेहेलां मदमो. महिला; जुओ महेली **मेहेली** *प्रेमाका*, महिला **मेंडक** जुओ मीडाक मेंद्र सिंहा(शा). महेंद्र ?, ["मोटा]; जुओ महेन्द्र **मेंशे मेंशे** *वेताप*. [जुदाजुदा बहाने], कळेकळे, वातवातमां, वात करवाने

मिषे [सं.मिषेन मिषेन] मेंहितो जुओ मुहीतो **मेंहेंबास** *वेताप.* ***मेवास; जुओ मेवास मैचल** *दशस्कं(२)*. मिथिला **मैल्य वेस** *आरारा.* मेंलो साधुवेश **मैहीमाये** *चंद्रवा*. महिमाए. महिमा वडे **मो** *आरारा.* मने; *देवरा.* मारुं; *वीसरा.* हुं; मने: मारुं मो प्राचीका. निषेधार्थ अव्यय (सं.मा) **मोकलइ** गुर्जरा. मोकले; नलरा. विदाय आपे. रजा आपे मोकलडं जित्तर. लावल. मोकळाशवाळुं, खुल्लं, विस्तृत; नलरा. शिथिल, ढीलं; उपवा. जिनरा. अभिक. षडाबा. मोकळुं, छूटुं (सं.मुक्त) [दे.मोकल] **मोकलकरणु** *षडाबा.* मोकळूं, छूट्ं करवुं मोकलावड *अंबरा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. *"शृंगामं*. विदाय ले (सं.मुक्त परथी); जुओ मुकलावइ मोक्त्लमोकलु नलरा. तद्दन मोकळुं, खुलुं मोख अखाका. "मुक्ति ("सं.मोक्ष), [मोको, अवसर, प्रसंगी: *नरका. नलाख्या*. अनुकूळता, मोको, [अवसर] [अ. मौका मोगर अभिक. "मोटुं, "बळदान (सं.मुद्गर परथी); [*मुद्गर नामना शस्त्रथी सज्ज] **मोगर. मोगर**ख *उक्तिर. नलरा*. हथोडाना जेवुं नानुं ओजार, मोगरी (सं.मुद्रगर) मोगरी अभिकः वृक्षविशेष (सं.मुद्गर)

मोगा लावल. व्यंतरविशेष (दे.मोग्गड) **मोचना नरका-२.** मुक्ति [अपावनार] मो**छव** *देवरा. प्राचीफा.* **महोत्सव मोजां** *प्रेमाका*. मोजडी, पगरखां मोजां सिंहा(शा). "इच्छित वस्तु, आनंद, सुख] [अ.मौज] मोझार दशस्कं(१). देवरा. प्रेमाका. मध्ये, मांहे (सं.मध्य+कार); जुओ मझार, मुझार **मोट** *मदमो. वेताप*. गांसडी [सं.] मोट (मोट बांघवा) * नंदब. [पोटलुं बांधवा, दोलत भेगी करवा मोटउ मध जुओ मथ मोटकउं आरारा. मोटुं मोटण *उषाह. [दबाववुं, घसवुं ते] [सं. मोटन] मोटम, मोटम्य अखेगी. चंद्रवा. चित्तसं. *प्रेमाका*. मोटप, मोटाई मोटं *मोसाच*. मोटप, महत्ता मोर्टम मदमो. मोटं मोटिम, मोटिम्म ऐतिका. सिंहा(शा). मोटाई, गौरव मोटी-झोटी जुओ झोटी मोटुं मुख चतुचा. चढावेलुं, रीसभरेलुं मुख **मोटेम** *नरप(द)*. मोटप मोट्य अखाका. *मोटाई, [मोटा होवापणुं] **मोठ**उ *नलरा.* मोटो (सं.महत् परथी) मोठी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* ज्याफत, उजाणी **मोड** *अखाका. [मरडावुं, तूटवुं ते, नाश];

मरड, मरडाट, गर्व; *प्रेमाका*. मचकोड, वळांक **मोड** *नरका. प्रेमाका*. मोडियो, [मोळियो] (सं.मुकुट) मोडइ उक्तिर.. कादं(शा). कृष्णवा. गुर्जरा. चत्रचा. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. मचकोडे, मरडे, वाळे, लचकावे, तोडे, चूरे (सं.मोटयति) **मोडबंध** *नरका.* मुकुटबद्ध, [छोगाळाओ] मोडामोड *प्रेमाका*. मरडाट, अंग लचकाववां ते मोडमोडि ऋषिरा. कादं(शा). आम मरडवुं तेम मरडवुं ते, लटका करवा ते, जिंग लचकाववां ते] मोडे *ग्रेमाका. मिरइ, लचक के छटा उपर मोडे-मोडे दशस्कं(१). प्रेमाका. धीमेधीमे [सं.मृद्र]; जुओ मउडउ, मुडइ मोणे-मोणे प्रेमाका. धीमेधीमे मोतीन ऋषिरा. मोती (सं.मौक्तिक) [हिं.] मोतीलग षडाबा. मोतीभरेलूं (आभरण) (सं.मौक्तिक+लग्यति) मोतीसरी, मोतीसिरी *नरका.* नलरा. लावल. मोतीनी सेर, [मोतीनी माळा]

मोथ उक्तिरः नागरमोथ, एक प्रकारन् धास,

मोद सिंहा(शा). ?, [*पेशाब, *मूत्र] [*दे.

मोवकचूरकादिकु *षडाबा*. मोदक, चूरमुं

एनो कंद (सं.मुस्ता)

मोअ: सं.]

वगेरे

Jain Education International 2010 03

अखाछ, अखेगी, मदमो,

मोदिक, मोदीक *गुर्जरा. मदमो.* मोदक, लाडु मोदिक-थाल देवरा. लाडुनो थाळ (सं. मोदक-स्थाल) मोदीक जुओ मोदक **मोनड** *आरारा.* मने **मोभी "**गुर्जरा. [ज्येष्ठ, अग्रणी] (दे.मुब्म परथी) मोमज जिनरा, मोटी, ज्येष्ठ **मीय** *देवरा*. मने मोर हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात **भोर** *अखाका*. आगळ, संमुख भोरउ ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. नलरा. भदमो. मारो (अप.महु+रउ) मोर-वंद्रनो *प्रेमाका*, मोरनां पींठांनी टीलडी-ओनो -- चांदलियानो **मोरहो** *प्रेमाका***. पशुने मोढे बांधवानुं** गांठो पाडेलूं दोरड् **मोरथी अखाछ. चित्तसं.** तरफथी, द्वारा, ने कारणे **मोरनां** *अखाका*. तरफनां **मोरल प्रेमप**, मारली **मोरबी** *प्रेमाका***. मोरनी छा**पवाळी मोरसिखा उक्तिर. मयूरशिखा, एक वनस्पति **मोरंगी** *उपवा*. मोरपींछनो बनावेलो पट्टो (सं.मयुरांगिका) **मोरा** *नेमिछं*. मोर (सं.मयूर) **मोरियो** *नरका*. महोर्यो. खील्यो

आभूषण] मोरे अखेगी. पूर्वे, आगळ **मोर्वे** चित्तसं. तरफ, बाजू **मोल** अखाका. आरारा. पंचवा. मूल्य **मोल, मोळ** नरका. "प्रेमाका. मोळियुं, माथे बांधवानुं कपडुं, [फेंटो] [सं.मौति] मोलड उक्तिर. मोळे, कातरे, समारे मोलि आरारा. ? मोलि, मोलीयडउं नलरा. फेंटो (सं. मौलिक) मोलियां गूर्जरा. प्रेमाका. साफा, फेंटा (सं. मौलिक) **मोलीडं** *उक्तिर*. साफो. फेंटो मोलीकं नरका. मोळियं, फिंटो] मोलीयडउं जुओ मोलि मोलीयां विराप. फेंटाओ (सं.मौलिकानि) मोवड नरका. आगळ, संमुख; जुओ मोहोवटे मोसंधीयं उक्तिरः फेंटो, साफो मोस ऐतिका. मृषा, [मिथ्या]; विमप्र. खोटूं, [असत्य] **मोसउ** *शुंगामं.* असत्य; [सं.मृषा, प्रा.मुसा] मोसउ लावल. सिंहा(म). चोरी, ओळववुं ते (सं.मोषः) **मो-स** *देवरा*. माराथी मोह, मोहु वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मुढता, भ्रांति (सं.) मोडइ उपवा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. "वसंवि(ब्रा). मोहित करे, मोह पामे

मोरी *प्रेमाका. [हायनुं कडली जेवुं

मोहकम सिंहा(शा). खूब, सखत (अ. मुहकम; म.मोहोकम); जुओ मोहोकम मोहण लावल. मोहवश करवूं ते, विशी-करण] मोहणवेलि ऋषिरा. ऐतिका. मोह पमाडे एवी वेल. मनोहर वेल मोहनमंत्र चतुचा. मोहित करवा माटेनो मंत्र, [वशीकरणमंत्र] **मोहनसारा** ऋषिरा. मोह पमाइनारी. প্লিডৌ मोहनी *गर्जरा*. मोहनीय, कर्मनो प्रकार जेमां योग्यायोग्यतानो विवेक रहेती नथी (सं.मोहनीय) जि.] **मोह-माग्या** देवरा. मों-माग्या मोहंन मांन मदमो. अत्यंत मोहक; जुओ मान **मोहि** *आरारा*. मने: मारुं मो हुंती *आरारा*. माराथी मोहो चित्तसं. नलाख्या. मोह मोहोकम. मोहोकंम *अखाछ*. चंद्रवा. मदमो. दृढ, सखत, [भारे]; जुओ मोहकम मोहोटंम मदमो, मोटाई

[छेतरामणी, फोसलामणी]; जुओ मोंहो-रखती **मोहोल** *कामा(त्रि)*. महेल मोहोबटे मदमो. मोवडे, अग्र भागे, आगळ-ना भागमां]; जुओ मोवड मोद्धा रैयाजी ऐतिका. मोही रह्या छे, [मोह पमाडी रह्या छे **मोंधुं-दव** प्रेमाका. मनमां आग (दव) उत्पन्न थाय एटलुं मोंघुं, मोघुंदाट मों-बोली प्रेमाका, मोद्वेशी कहेवाती मोंमां घाले हाथ अखाका. आजीजी करे. दीनता दर्शावी **मीरखा** अखाछ. मी साचववा [जुठा]; जुओ मोंहो-रखती मोहो-टाळो प्रेमाका. मों बताववानं टाळवं ए. मळवानो इनकार मों**होरखती** अखाका. मात्र कहेवा पूरती, [फोसलामणी]; जुओ मोहो-राखती; मोरखा **मौ** *उक्तिर*. जुओ मऊ **मौन करु** *आरारा.* शांत थाओ **मौहर्य** *नरप. [मोकियो, फेंटो] म्यलि नलाख्या. मळे, [भेगुं थाय] म्यतिष कादं(ध्र). घेरायेलो, [-नी साथे रहेलो **प्रगमद** कामा(त्रि). कस्तूरी (सं.मृगमद) **प्रधडो** *मदमो.* मुगलो **म्रत** *सिंहा (शा).* मृत्यु; जुओ मरत म्हा, म्हां वीसरा. हुं, मारुं म्हाकउ, म्हांकउ वीसरा. मारुं

पडत्

मोहोटा रूस्तम, मोटा

मोहोथी चतुचा. मोंथी, मोढे

मोहोतां *अखाका*. मोहतां. मोह पामतां

मोहोर पंचवा. सोनानो सिक्को. सोनामहोर

मोहोरवी सिंहा(शा). मोखरानुं, आगळ

मोहो-राखती प्रेमाका. भ्रममां नाखे तेवी,

म्हाल *अखाका. [आनंद]; जुओ माल म्हां जुओ म्हा म्हांकउ जुओ म्हाकउ म्हे वीसरा. में

य तेरका. वळी (सं.च) यउ जुओ इउ यका प्रबोप. जू (सं.यूका) यक्षकर्दम प्रेमाका. केसर, कस्त्र्री, चंदन, कपूर अने अगरुनो सुगंधी लेप [सं.] ***यचं** चतुचा. ? यज लावल. रेशमी वस्त्र यजन अखाका. सेवा, [पूजा] [सं.] यणियु जिणियु कादं(शा). नलाख्या. जण्यो. जन्म आप्यो (सं.जनितकः) यतन आरारा. जतन, काळजी [सं.]; जुओ जतन यतना जितना आनंस्तः अप्रमाद [सं.] **यतन्रो** *आरारा*. प्रबंध, व्यवस्था (रा.) **यतंन** *अखाछ*. यत्न ***यतिसय (अतिसय)** *देवरा*. प्रभाव. [महिमा] [सं.अतिशय] **यतिपती** ऋषिरा. यतिओना पति, स्वामी, आचार्य (सं.यतिपति) **यत्न** कादं(शा). साचवण, जतन (सं.यतन) यथाबद्ध अखाछ. जेवो बंधनमां छे तेवो, जि-ते अवस्थामां बंधायेली यम जिम कादं(शा). "गुर्जरा. नलाख्या.

यमड जिमड *उक्तिर. नलाख्या.* जमे

दि.जिमो **यमणुं जिमणुं** *उक्तिर*. जमणुं यमिवउ जिमिवउ उक्तिर. जमवू यमीतउं जिमीतउं उक्तिरः जमातुं यव जिव कादं(शा). ज्यारे (सं.यतः) यवारें जिवारें *प्राचीका*. जे समये (सं. यद्वारे) यशनामिक ऐतिका. यशस्वी यशवा प्राचीसं. यशनी वायका, यिश बोलावो ते यशूं जिशूं नलाख्या. जेवुं (सं.यादृशकम्) यसउ जिसडो उक्तिर, जेवुं **यसिडं** ऐतिरा. यश वडे यसु जिसु तेरका. जिन् यस्ं उषाह. एवं (सं.इदश; हि.ऐसा) **यहां जिहां** *उक्तिर* ज्या **यह** प्राचीसं. ए (सं.एष:: हिं.यह) **यं** *प्राचीसं*. तृतीयानो प्रत्यय [-थी, वडे, ए] यंत्र **मुगरबी** हम्मीप्र. मगरबी यंत्र, गोळा फेंकवानुं यंत्र; जुओ मुगरबी यंत्र यंत्री कादं(शा). तंतुवाद्य, वीणा **या [*जा**] *आरारा*. जेने ? आने ? **या** पंचवा. ए (सं.एषा); जुओ यउ **याग** *प्रेमाका*. यज्ञ **याण जाण**] *उक्तिर.* ज्यां सुधी (सं. यावत्) **यातायात** अखाका. आवागमन, जन्ममरण **यात्र** अंबरा. प्राचीका. नाटारंभ, नृत्य; जुओ जात्र

जेम

यात्राहारु *विक्ररा*. यात्राळ् यामिनीकर ऋषिरा. चंद्र (सं.) यामुक वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). जोडीमां, बेलडीए (सं.यमक परथी); जुओ जामुक **यारी** *प्राचीफा*. मैत्री (फा.) याद्वि जिद्दि कादं(शा). ज्यारे **यां** *आरारा*. अहीं यांह जांह नलाख्या. ज्यां (सं.यस्मात्) **वि जि]** नलाख्या. जे **थिम** जिम् । *उक्तिर. नलाख्या.* जेम विशर्ज, विश्वज [जिशर्ज, जिश्वज] *प्रबोप्र.* जेवं (सं.यादश) **यिहां जिहां**] *नलाख्या. ज्*यां **विहांकणि** जिहांकणि कादं(शा). ज्यां **यीत् जित्** प्रबोप्र. जीत्यो (सं.जित+कः) यीपइ जीपइ प्रवोप्र. जीते (सं.जि-) **यीव जिथ** प्रबोप्र, जीवात्मा **यीवतां जीवतां** *प्रबोप्र*. जीवतां **यीवन [जीवन]** प्रबोप्र. जीवतर **यीवित जिवित** *प्रबोप्र.* जीवतर **यीवी जिवी** *प्रबोप्र*. जीवी (सं.जीविता) **युग ज़िग**े *नलाख्या*. जग (सं.जगत्) युगतुं कादं(शा). नलाख्या. विभप्र. युक्त, बंधबेसत्, योग्य; जुओ जुगतुं **युगति** नेमिछं. युक्ति युगदीश्वरी जिगदीश्वरी प्रबोप्र. जगदम्बा (सं.जगदीश्वरी) **युगला धर्म्म** *लावल.* जोडियां भाईबहेन

[जै.]; जुओ जुगला धरम युगलिया, युगलीआ नलरा. जोडियां भाईबहेन, जे प्राचीन काळमां पतिपत्नी बनतां (जै.); जुओ जुगलिया **युगवर** *ऐतिका***. युगमां प्रधान, मुख्य**, श्रेष्ठी **युगियुगता [जुगिजुगता]** *नेमिछं***. झगमगता युद्धशत्र, युद्धसत्र** *गुर्जरा. विराप.* युद्धरूपी यज्ञ (सं.युद्धसत्र) युवई आराराः युवती (प्रा.) युवति-मनोर वसंवि(ब्रा). युवतीना मनोरथ **ये जि** *उक्तिर. उषाह. नलाख्या.* जे (सं.) येक चंद्रवा. एक येटलि जिटलि *नलाख्या*. जेटले (सं. यतुल्य) **येन. येंन एन**] *चंद्रवा.* [खरेखरुं], खरेखर [अ.ऐन] **येम जिम** कादं(शा). जेम **येलफेल [एलफेल]** *नरप(द)*. अविचारी, गांड्घेल् वेह जिह प्रवोप्र. जे (सं.यः) **येहारि जिहारि**] *कादं(शा)*. ज्यारे **यो** उक्तिर, जे (सं.यः) **यो** *पंचवा*. ए (सं.एषः) योगपादुका सिंहा(म). एवी पादुका जे पहेरी-ने योगी आकाशमां ऊडी शके (सं.) **योगपावडी** *सिंहा(म).* एवी पादुका जे पहेरीने योगी आकाशमां ऊडी शके (सं.योग+पाद) **योगि** *आरारा*. योग्य. लायक

युगल (पति अने पत्नी) तरीके जीवन वितायता एवो धर्म [— जूनी रुढि] योजित आरारा. जोडेला [सं.]
योतिक-जाण जितिकजाण] प्रवोप्र.
ज्योतिषी (सं.ज्योतिष्+गु.जाण)
योध लावल. वसंफा. वसंफा(ल).
वसंवि(ब्रा). योद्धा (सं.)
योधर वसंवि. योद्धाओ (सं.योद्धारः)
योवन-मिर्दे लावल. यौवनना मदे
यौवनिम *कादं(शा). [जुवानीथी भरेलुं]
(सं.यौवनमय)
य्या पंचवा. अहीं (सं.अत्र)

रइ गुर्जरा. रित, कामदेवनी पत्नी; उपवा. तेरका. रित, प्रीति, प्रेम रइ वाग्भवा. चतुर्थी अने षष्ठीनो प्रत्यय, [माटे]; जुओ रइं, रहइ, हरइं, हुइं, हुइं रइय तेरका. रच्युं; गुर्जरा. रिचत रइवक्षह तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. कामदेव

(सं.रतिवल्लभ) **रइहीणु** *गुर्जरा*. रति वगरनो, रतिवियोगी (सं.रतिहीन)

(स.रातहान)
रहं वाग्भवा. षष्टिप्र. चतुर्थी अने षष्ठीनो
प्रत्यय, [-ने, माटे]; जुओ रह
-रड वीसरा. -नो [रा.]
रक्ख- तेरका. रक्षण करवुं (सं.रक्ष्)
रक्खिस तेरका. राक्षसी
रक्तहेम प्रेमाका. राता रंगनुं सोनुं [सं.]
रक्षानृह कादं(ध्रु). पांजरुं, केदखानुं [सं.]
रखत *विमप्र. [मालमिलकत] [रा.]

रखवाल, रखवाळ गूर्जरा. नलाख्या. प्राचीसं.

रखेवाळ, चोकीदार (सं.रक्षापाल); प्रेमाका. *रखेवाळी, *रक्षा, [*रखेवाळ] रखवालउ उक्तिर. प्रेमाका. लावल. रखेवाळ (सं.रक्षापालः) रखवालुं गुर्जरा. रक्षण करवुं ते

रखि *आरारा.* नक्षत्र (सं.ऋक्ष) रखि *गुर्जरा. [राखे] [सं.रक्ष] रखि, रखी कादं(शा). नलाख्या. ऋषि, मुनि

रख्या *आरारा.* रक्षा, रक्षण

रख्यो प्रेमप्र. रक्ष्यो
रगइ अखाका. नेमिछं. करगरे, आजीजी
करे; जुओ रगे
रगझग सिंहा(शा). रकझक
रगत वीसरा. लाल (सं.रक्त)
रगतनेत्र चतुरा. लाल आंखो[वाळो]
रगत-लोचन नलाख्या. रातां लोचन [करीने]
रगरो नरका. कालावाला करे

रगाउलि, रंगाउलि, रंगावलि नलरा. हम्मीप्र. बख्तरनो एक प्रकार (सं.रंग+ आवलि ?)

रिगया प्रेमाका. जझी, हठीला रगे अखाछ. [रग्ये], रगवा(कालावाला करवा)थी; रग(हठ)ने लीधे; जुओ रगइ रघवघो अखाका. रघवायो, उतावळो, गभरायेलो

रचाणुं "अखाछ. [रचायुं, रचना रूपे परिणम्युं, विस्तर्युं] रघाँति *ऐतिका*. अनुराग करे छे [दे.]; जुओ रंच्यति

रज चित्तसं. (स्त्रीनुं) आर्तव [सं.रजस्] रजक प्रेमाका. धोबी [सं.] रजणी (निरजणी) *नेमिछं. [क्षीण करीने] रजमति(?) तेरका. राजिमती **रजिनी** *आरारा*. रजनी **रख** *उषाह. ऐतिका.* राज्य रडयंड गुर्जरा. रडवंड अवाज करती **रडवडइ** ऋषिरा. गुर्जरा. विराप. रवडे, अथडाय. रखडे रडविडियर प्राचीसं. रडवड्यो, [अथडायो-कुटायो] रढ उषाह. *हठ. लिगनी : चंद्रवा. प्रेमाका. रटण, लगनी; नरका. हठ, जिद्द; जुओ रंढ मांडि **रढइं *** गूर्जरा. [ढळे, डोले] दि.रड्ड] रिंड अभिक. रह, लिगनी रण प्रेमप, ऋण रण, रांन सिंहा(शा). अरण्य रणड ऐतिका. वागे छे, [रणके छे] रणकाहल अंगवि. रणदुंद्भि कि रणभेरी] रणञ्जूणे ऐतिरा. [झणझणाट थाय], सचेत यई जाय, उश्केराय [सं.रणत्+ध्वनि] रणत्र लावल. युद्धना मेदानमां वगाडातां मुखवाद्य, [रणशिगुं] [सं.] रणदेव्या *प्रेमाका*. रणदेवीओ, युद्धनी देवीओ रणभाष हम्मीप्र. रणभाषा. *तोपनो अवाज रणमाल अभिकः रणमाळा, युद्धमां जनारने पहेराववामां आवती विजयमाळा रणरण- *तेरका. प्राचीसं.* रणझणतुं, रणकतुं

रणरंग आनंस्त. युद्धनो रंग, युद्धनो उत्साह रणवट *अभिकः (क्षात्रधर्म, युद्धनी टेक]; प्रेमाका. रणक्षेत्र[नो मार्ग] रणवणीयां गुर्जरा. रणवण अवाज कर्यो रणवाई (कोरण वाई) "गुर्जरा. आिंधी फेलायो रणवावला *जिनरा.* युद्धातुर सिं.रण-व्याकुला] रणसंड हम्भीप्र. रणमां सांढ जेवो, महा-पराक्रमी [सं.रणषंढ] रणस्थंभ रोप्यो *प्रेमाका.* युद्ध शरू कर्युं, [युद्धना मंडाण रूपे स्तंम रोप्यो] रिणझडि *विमप्र. रिणु - धूळनी झडीथी] रणियु अखाका. नलाख्या. ऋणी, देवादार (सं.ऋणिककः) रणीउ ऋषिरा. ऋणवाळो, देवादार (सं. ऋणिन) रणे प्रेमाका. ऋणमां रतः नरकाः नरप(द)ः नलराः प्रेमाकाः ऋतुः रतनखंभ *प्रेमाका*. रलयी जडेलो यांभलो रतनदोषी आरारा. रलमां दोष मूकनार; जुओ रलदोषी **रतनाळी ***वीसरा. [रतनय] रत-माबद्धं नरका. "कसमये वरसतो वरसाद, [मावठानी ऋतु, मावठानो समय] रतांजणी आरारा(व). उक्तिर. रक्तचंदन, एक वृक्ष रति. रिति आरारा. प्राचीफा. लावल.

वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). ऋतु

रणरण तेरका. रणझण एवो ध्वनि

रति, रत्य अखाका, प्रेमाका. लावल. अनुराग, आसक्ति; *प्रेमाका. वसंवि(ब्रा).* प्रेम, प्रेमक्रीडा, कामक्रीडा; *आरारा*. *नेमिक*ं आनंद रतिपति-सूर वसंवि(ब्रा). शूरवीर कामदेव रतिवर चारफा. कामदेव रितवाउ *गुर्जराः [रात्रे करेलो हुमलो] **रती** *उक्तिर*. चणोठी (सं.रक्तिका); अखाका. आरारा. प्रेमाका. नरका. रतीभार, तद्दन थोड्रं खु मदमोः रत, ऋतुः ऋतुस्राव रतुदान प्राचीका. ऋतुदान, ऋतुकाळे संभोग] **रत्तउं** *आरारा. तेरका.* अनुरक्त, अनुरक्त थयूं [सं.रक्त] **रत्नकंबल** अखाका. ऊननी रत्नजडित कीमती कामळी सिं.] **रत्नजटित** *नलरा.* रत्नजडित [सं.] रत्नत्रय प्रद्युच्. सम्यग् दर्शन, सन्यग् ज्ञान, सम्यग् चारित्र [जै.] [सं.] **रत्नदोषी** *आरारा.* रत्नोमां दोष – दूषण मुकनार; जुओ रतनदोषी **रत्नपारक्ष** नलरा. रत्ननी परख करनार **रत्य** अखाका. ऋतू रत्य जुओ रति रत्येबो लस्तसः ?, [*पद, *होद्दो; *इजल, *कदरो [अ.रुत्ब] रथ-अंग, रथंग वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). चक्र, रथनुं पैड्रं (सं.)

रधी ति *विराप. [रथीओ -- रथारूढ योद्धाओ ते] रथ्या जुओ रथा **रदि** नलाख्या. हृदये रदं चित्तसं. हृदय, हृदयनी वृत्ति, वलण रवे चित्तसं. मदमो. हृदय; हृदये, हृदयमां रिं आरारा. रिद्धि **रब्न** *प्राचीसं*. अरण्य. रान **रबाब** *नरका*. एक तंत्र्वाद्य [फा.] रभस नेमिछं. वेग, उत्साह (सं.रभस्) रमझोल *ऐतिका. [रमझट] रमण तेरका. -, [प्रियतम] [सं.]; नरका. प्रेमक्रीडा [सं.] **रमणशाळा** *अखाका*. कामक्रीडानुं स्थळ रमणिक ग्रेमाका. रमणीय, सुंदर रमति, रमत्य अखाका. ऐतिका. रमत रमिल आरारा. ०कुष्णच. गुर्जरा. चारफा. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विभप्र. स्थूलिफा. रमत, क्रीडा (सं.रम् परथी) रमाउल, रमालउ प्राचीसं. सुन्दर, रमणीय, [समृद्ध, व्याप्त] (सं.रमा+आकूल); जुओ रम्माउल **रमिज़इ** *ऐतिका.* रमण [-क्रीडा] करीए रमिझिमि ऋषिरा. रूमझूम अवाज्रथी **रमिबुं** *उक्तिर*. रमवुं रमेकडा जुओ मेकडा, रामेकडउ **रम्म** *ऐतिका*. रम्य रम्माउल तेरका. सुंदर, रमणीय, समृद्ध, व्याप्त; जुओ रमाउल

रथा (? रथ्या) शंगामं. शेरी

रयण आरारा. गुर्जरा. तेरका. "देवरा. *नेमिछं, लावल,* रल रयण, रयणी चतुचा. प्रेमाका. सिंहा(शा). रजनी, रात्रि रयणंडर गुर्जरा. रलपुर, गामनुं नाम रवणप्यह आरारा. रत्नप्रभ (ए नाम) **रथणमए** गुर्जरा. रत्नमय रयणमणि नेमिछं, रत्नमणि **रयणागरा ०***ऐतिका***. रलाकर** स्यणायर अंबरा. ऐतिका. कृष्णच. गुर्जरा. नेमिछं. स्थूलिफा. रत्नाकर, सागर रवणावली गुर्जरा. चोकस प्रकारनी उपवासनी चडती श्रेणीवाळुं] एक प्रकारने तप (सं.रत्नावली) [जै.] **रयजाह** *ऐतिका.* रत्नोमां रयणां आरारा. रलो रयणि उषाह. कर्पमं. जिनरा. तेरका. रूपच. वीसरा. हरिवि. रात्रि (सं.रजनी) रवणी अखेगी. कृष्णबा. दशस्कं(२). नरका. विक्ररा. हरिख्या. रजनी, रात; जुओ रयण रवणीय गुर्जरा: रात्रि (सं.रजनी) रयणीदंन अखेगी. रजनीदिन, रितिदेवसी रयणीयर प्राचीसं. चंद्र (सं.रजनीकर) रयहरण देवरा. [रजोहरण], धूळ खसेडवा-नी ऊननी मोटी पींछी, ओघो जि.] रयताणउ उक्तिर. रजोहरण, जैन मुनिनुं एक साधन (सं.रजस्त्राणम्) रयवाडिय जुओ वाडिय रल गुर्जरा. *तुच्छ वस्तु, [*सघळु लूंटाई

गयुं होय एवं, "दरिद्र] रलइ, रळइ अखाका. आनंस्त. ऋषिरा. *कादं(शा). गुर्जरा. देवरा. नेमिछं. शुंगामं. रडवडे, भमे, भटके, आजुबाजु फरे, अटवाय, [घसडाय] (दे.रुल); जुओ रुलइ **रिल नलाख्या. लावल.** ख़ुशी, आनंद [*दे.रिह्ह] [*सं.रित+ल]; जुओ रुलि **रतिआतो** *ऐतिका*. आनन्द[युक्त], [रिळियात, प्रसन्न] रलिआयत, रलिआयति, रलियाति कादं(शा). विमप्र. रक्तियात, प्रसन्न, खुश **रिलय** *ऐतिका. प्राचीफा.* आनंद, उमंग (सं.रति+ल) रिलयिंड चारफा. आनंदथी रिलयाति जुओ रिलआयत **रिलयायतु** *षडाबा*. रिळयात, प्रसन्न रिलयावणड ऐतिका. रिळयामणुं; चारफा. प्राचीफा. रिक्रयामणुं, आनंददायकः; जुओ रुलियामणउ रली, रळी आरारा. ऐतिका. कामा(त्रि). *कामा(शा). गुर्जरा. तेरका. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. विक्रच. विराप. प्रेमप. प्रेमाका. सिंहा(शा). आनंद, प्रसन्नता, होंश (दे.; सं.रति परथी/लल् परथी); जुओ रुली रलीआइति प्रबोप्र. आनंदयूक्त रलीआत कामा(शा). राजी, ख़ुश **रलीआति** शुंगामं. आनंदित **रलीआयत** ऋषिरा. आनंदित

रलीयात्य *चंद्रवा*. रक्रियात, [ख़ुश] रलीयायत नलरा. प्रद्युचु. आनंदित रलीयाली प्राचीसं. सुन्दर रकी रसे प्रेमाका. आनंदथी अने रसयी **रद** अखाका. तान, उमंग, [उत्साह] रवाडी, रव्वाडी, रिवाडी अंबरा. *ऋषिरा. *नलरा. प्राचीफा. *विमप्र.* राजसवारी (सं.राजपाटिका); जुओ राइवाडी रविनंदन *गूर्जरा.* सूर्यपुत्र बुध, [डाह्यो] (सं.) रविसुत नरका. यमराज, मृत्युनो देव; प्रेमाका. अश्विनी-कुमारो [सं.] रवीरजी प्राचीका, रवैयो **खेउ** *प्रेमाका*, रविवार रवैयो नरका. ग्रेमाका. दहीं वलोववानं लाकडानुं साधन, वलोणुं रव्य मदमो. रवि रव्याडी जुओ रवाडी रशी प्रेमप. रसिक रशे चित्तसं. "दूर करशे ("सं.रह परथी) [*सं.रिश् परथी]; जुओ रिहिश **रश्म** कादं(शा). किरण (सं.रश्मि) **रस** *चित्तसं*. आथो लाववा माटे मेळवण तरीके नखातुं द्रव्य रस चित्तसं. पारानुं सौथी असरकारक स्वरूप; एकरस, एकरूप **रसक (रसकसवेध) *** *प्राचीफा.* [रस, कस ्(परीक्षा) अने वेघ (चातुर्य)]; जुओ वेध रसडा पंचवा. रस्सो, दोरड्डं (सं.रश्मि) रसणीया विक्ररा. रस - प्रवाही चीजोनो वेपार करनार

ऋषिरा. कामा(त्रि). रसना अखाका. गुर्जरा. चित्तसं. विराप. जीभ (सं.) रसना डंसी प्रेमाका. जीभ कचरी. वचन आप्यू रसनिंदिउ *षडाबा.* रसनेंद्रिय, जिह्नेन्द्रिय **रसपात** *नरका***. रसना घोध. [रसना प्रवाह**] [सं.] **रसरंग** वसंवि(ब्रा). भोगानंद, [रसानंद, आस्वादानंद] [सं.] रसबती ऐतिरा. गुर्जरा. विराप. रसोई (सं.) रसबेद नेमिछं. रस छ, वेद चार एटले ४६-नी संख्या **रसंत** *गुर्जरा*. अवाज करतुं, चीस पाडतुं (सं.रसति); जुओ रसिर रसाइण *वीसरा. रिसभरी के रसायण जेवी नवजीवन बक्षती रचना रसाउन्नु गुर्जराः रसपूर्ण, रसाळ (सं.रसाकुल) **रसाल** *आरारा*. रसाळपणे, रसपूर्वक, आनंदपूर्वक; *श्रंगामं*. आंबो (सं.) रसिर तेरका. किकियारी करतुं (सं.रस्); जुओ रसंत **रसो ***कर्पूमं. नलरा. रसोई (सं.रसवती) रसोई दशस्कं(२). रसोडुं रसोयि उक्तिर. रसोड्डं (सं.रसवती) रह ऐतिका. गुर्जरा. रथ रहड गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). अटके (सं.रहति) [दे.]; चित्तसं. अटके, मटे रहइ, रहइं अंबरा. उपबा. गुर्जरा. नलरा. वाग्भबा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(द्रा).

वडाबा. वष्टिप्र. चतुर्थी अने षष्ठीनो अनुग, -ने, -ने माटे, -नुं (सं.अप-रस्मिन्); जुओ रइ, रहि, हुइ रहण *गुर्जरा.* रहेवुं ते; *प्रबोप्र. [रहेणी, रीत. व्यवहारी **रहणहार** *उपवा*. रहेनार **रहतच** उक्तिर रहेती **रहवड़** गूर्जरा. रथपति, [रथी, रथारूढ योडो] रहाबड़ *उक्तिर. गुर्जरा.* राखे, स्थापे (सं. "रक्षापयति) सि./दे.रही रहि,रहिं वसंफा. वसंवि(ब्रा). चतुर्थी अने षष्ठी विभक्तिनो अनुग, -ने, माटे, -नुं; जुओ रहइ रहितउ उक्तिर. रहेतुं रहितु जुओ छत् रहिवउं उक्तिर, रहेवं रहीइ उक्तिर. रहेवाय रहीतं उक्तिर. रहेवातुं, रखातुं रहीवा उक्तिर. रहेवा **रहेण प्रेमाका.** [रेण], धातुने सांधवानुं झारण रहेण चित्तसं. रहेवुं ते **रह्मं टमटमी** *प्रेमाका.* घणुं उत्सुक थयुं रंकण प्रेमाका. रणकतो. रणकार करती **रंग** चित्तसं. अनुभवः स्नेह, प्रीति, आसक्तिः; आरारा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. आनंद. उल्लास: लावल. [लगाव], प्रेम; *वसंवि(ब्रा)*. विलास,

रंगराड *नरप(द). [आनंदभरी तकरार, प्रेमकलह सं.रंग+राटि रंगभूमि, रंगभूमी अंबरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). रंगमंच, क्रीडाभूमि (सं.) रंगंगणि गुर्जरा. रंगभूमिमां (सं.रंग+अंगन) रंगाउलड. रंगाउलि. रंगावलि *विमप्र.* हम्मीप्र. बख्तरनो एक प्रकार; जुओ रगाउलि रंच अखाका. "अखेगी. चित्तसं. नरका. मोसाच. सहेज, थोडुं, लगार **रंच्यति (?रद्यंति)** *शंगामं.* राचे छे; जुओ रचंति **रंजण** *गुर्जरा. तेरका*. रंजन करनार **रंजबड** *उपबा. वसंवि. वसंवि(ब्रा)*. रंजन करे (सं.रंजयति) **रंजवणहार** *उपबा*. राजी करनार **रंजि** *गूर्जरा.* आनंद आपे *आरारा. षडाद्या*. राजी धयो रंजिउ (सं.रंजित) **रंजवियउ** *ऐतिका*. प्रसन्न कर्या **रंज्या** *ऐतिका.* **प्रसन्न** कर्या **रंड, रंडा** *वेताप*. स्त्री [सं.रंडा] **रंडमाल ****विक्रच*. [रुंडमाळा, खोपरीओनी माळा **रंडा** *शृंगामं*. विधवा स्त्री (सं.रण्डा); जुओ **रंडओ** *मदमो*. रांडवो, रांडेलो, विधुर **रंढ मांडि** *जिनरा*. जीद पकडीने; जुओ रढ **रंढाला** *जिनरा.* रणवीर, टिकीला वीर]

रंभ, रंभा गुर्जरा. नेमिछं. लावल. ए नामनी

विभ्रम, सौन्दर्यछटा

अप्तरा [सं.रंभा] रंभ-खंभ मदमो. कदलीस्तंभ, किळनो थांभलो] (सं.रंभा+स्कंभ) **रंभण** *प्रेमाका.* **आलिंगन, भेटवुं** ए [सं.] **रंभा** *आरारा.* स्त्री; स्वर्गनी अप्सरानुं नाम [सं.]; जुओ रंभ **रंभा** ऋषिरा. प्रेमाका. केळ [सं.] **रंमण** मदमो, रमणी **रंह वाग्भवा.** वेग [सं.रभस्] रा अभिऊ. कांद(ध्र). नलरा. पंचवा. *लावल.* राजा राइ, राय, रायि नलाख्या. लावल. वीसरा. राजा (सं.राजन्) **राइ** *षड़ाबा*. रात्रि **राइउ ध**डाबा. रात्रिने लगतुं **राइको** *वेताप.* रबारी; जुओ रायको **राइण, राइणि** *आरास(व). उक्तिर.* सयणनुं झाड (सं.राजादनी) राइतं *उक्तिर.* रायतुं (सं.राजिका परथी) राइमड तेरका. राजिमती **राइवाडी** *श्रंगामं*. राजसवारी (सं.राज पाटिक); जुओ रयवाडिय, रवाडी राई (राई पडी) *जिनरा. [रीसे - रोषे भरायुं]

राउ आरारा. उक्तिर. उषाह. कस्तुवा. गुर्जरा. वसंवि. वसंफा. लावल. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. राजा राउत अक्तिरः उषाहः गुर्जराः प्रद्युचुः प्रबोप्रः *प्राचीफाः विरापः* राजा [राजकुमार], रजपूत, योद्धो (सं.राजपूत्र)

राउताई उक्तिर. राजपूतपणुं, वीरत्व (सं. राजपुत्र परथी)

राउल अंबरा. आरारा. नेमिछं. प्रद्युतु. लावल. वीसरा. स्थूलिफा. [राजगृह], राजमंदिर, राजदरबार (सं.राजकुल) **राउलंड** उक्तिर. राजगृह (सं.राजकुलम्)

[रा.]

राउनु प्रद्युचु. राजानुं, [रजवाडी] (सं.राज-

राउली *नेमिछं.* **राजकूटुंबनी;** *हरिवि.* **राज-**कुळने लगती, राजानी सका आरारा. पूर्णिमा (सं.)

राक्षिसि गुर्जरा. राक्षसे

राखंड आरारा. उक्तिर. उपवा. तेरका. नरका. प्रेमाका. लावल. वाग्भबा, वीसरा. रक्षण करे, संभाळे (सं.रक्षति); गुर्जरा. राखे, मूके, [स्वीकारे, अटकावे, बचावे**ै: आरारा. उषा**ह. नेमिछं. प्रेमाका. राखे, अटके, बंध राखे, अरकावे

राख *प्राचीसं*. रक्षा, [रक्षण]

राखडी, राखलडी अभिक. उक्तिर. "गुर्जरा. *नेमिछं. प्रेमाका. ललिरा. नरका. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). **वीसरा. स्त्री*ओना माथा उपर पहेरवानुं एक घरेणुं

राखडी उपबा. राख

राखण *उषाह.* रखेवाळ (सं.रक्ष् परथी)

राखणहारु उपवा. रक्षण करनारः राखनार. साधवनार रे: वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).

रक्षणहार **राखसपुरी गु**र्जरा. राक्षसोनी नगरी **राखिस** *गूर्जरा*. राक्षसी **राखसु** *गुर्जरा*. राक्षस राखिबुं उक्तिर. राखवुं, रक्षण करवुं **राखिस** *लावल*. राक्षस राखे प्राचीसं. रखे सि.रक्षती **राख्यस** *चित्तसं*. राक्षस **राग** *तेरका.* "आनंद, [भक्ति] [सं.] रागविसइं ऐतिराः रागवशे, प्रेमधी रागिनी आरारा. राज्ञी, [राणी] राचवें वेताप. रीझवे [सं.रज्यते] **सछ** विमप्र. राचरचीलुं, [गृहसामग्री] राष्ट्रनिखर (राष्ट्र निखर निरखीड) *विमप्र. [साधनसामग्री हलकी – खराब देखाय छे]; जुओ निखरा **राष्ठपींछ** *विमप्र.* **राचरचीलुं, [गृहसा**मग्री] राज सिंहा (शा). आप [मानार्थे]; जुओ राज्य **राज** *आरारा. वीसरा.* राजा **राजइ** जुओ रिजइ राजकुली दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या. राजकुळ, राजवंश **राजकुंअरि** गुर्जरा. राजकुंवरी **राजगुरिइं** विक्रराः राजगुरुए राजगुल उक्तिर. [?] (सं.राजत्कुलम्) राजगुद्ध "अखाका. [श्रेष्ठ ज्ञान, ब्रह्मविद्या, अध्यासज्ञानो [सं.] राजदुआर वीसरा. राजमहेलनुं द्वार राजधान, राजध्यान दशस्कं(१). दशस्कं(२).

राजबीज *अखाका*. राजानुं संतान [सं.] **राजविया** *आनंस्त*. राजवीओ राजवेठि आनंस्त. राजवेठ, [राज्यनी वेठ, दरबारी वेठी राजस अखाका. रजोगुणी [सं.]; * चंद्रवा. [रजवाडी, वैभवी, दमामयुक्त]; *मदमो.* रजवाडी राजस-रूप मदमो. राजाना जेवा रूपवाळो राजिसरी आरारा. राज्यश्री, राज्यलक्ष्मी राजसीओं मदमो. रजवाडी माणसो राजान उक्तिर. वनस्पतिविशेष (*सं. राजानक) राजि कादं(शा). नलाख्या. राज्य **राजियो** देवरा, राजा **राजीइं** *आनंस्त*. राजी थईए [सं.रज्यते] **राजीउ** *आरारा*. राजा राजीव ग्रेमाका. भूरा – वादकी रंगनुं कमळ [सं.] राजीवलोचन *अखाका*. कमळ जेवी आंखो-वाळी [सं.] राज्य मदमो. आप [मानार्थ]; जुओ राज **राटी** नलरा. हलकी स्त्री, [कजियाळी स्त्री] सं.राटि परथी राहण्ड उक्तिर, राठोड, एक क्षत्रिय जाति (सं.राष्ट्रकूट) **राठी** प्राचीसं. ब्राह्मण-जाति-विशेष सिं. राष्ट्रिको *अखाका. *चंद्रवा. दशस्कं(२). प्रेमाका. लडाई, तकरार, संघर्ष [सं.राटि; दे.राडि]; जुओ रंगराड, राढ

प्रेमाका. *राजधानी, राज्य, राज्यशासन

राडि नेमिछं. फरियाद; उक्तिर. *गुर्जरा. जिनरा. *विराप. लडाई, झघडो, तकरार (दे.) [सं.राटि]; जुओ राढ, राढि राडो चंद्रवा. ?

राढ कस्तुवा. प्रेमाका. मदमो. वेताप. सिंहा(शा). कजियो, तकरार [सं.राटि; दे.राडि]; नग्का. *रढ, *जिद्द; [*तोफानमस्ती]; आसक्ति, [रढ, लगनी]; जुओ राड

राढि विमग्न. राड, तकरार; नलाख्या. राड, झगडो, [*खोटी वात] (दे.राडि) [सं. राटि]; जुओ राडि, राहाडि

राणिम *आरारा. गुर्जरा. "विमप्र.* राजत्व, राजपद

राणोराण आरारा. समस्त (रा.)

राणोराणि अभिऊ. राजाओनो [मोटा योद्धाओनो] समूह (सं.राजन्नो विकास) [प्रा.राण, सं.राजानक]

रातं ऐतिरा. *राजी, [आसक्त]; गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. नरका. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. धसंवि(ब्रा). आसक्त, अन्रक्त (सं.रक्त)

रातिंड उपबा. कादं(ध्रु). कादं(शा). रताश, लालाश (सं.रक्त)

रातवासे *नरका-२. [रातवासा माटे, रात रहेवा माटे]

रातांबर अखेगी. सूर्य [सं.रक्तांबर]

राति उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. रात (सं.रात्रि)

रातीजगा *ऐतिरा.* [उत्सव प्रसंगे मांगलिक गीतो साथेनुं सामूहिक] रात्रे जागरण

रातु नलरा. आसक्त (सं.रक्त)
रातुं विराप. रागी, [आसक्त] (सं.रक्त)
रातुंबर प्रवोप्र. लाल वस्त्र, लाल वस्त्रवाळी
स्त्री (सं.रक्तांबर)

स्त्रा (स.रकाबर)
राष प्रेमाका. रथ (प्रास खातर 'राथ')
राधा थडाबा. रांध्यां (सं.रध्यति)
राधाजीके चतुचा. राधाजी पासे
राधावेध *अभिक. गुर्जरा. [ऊंचे घूमती]
पूतळी[नी आंख]ने वींधवी ते [सं.]

रान अखाका. उक्तिर. कामा(त्रि). नरका. प्रेमाका. रूपच. लावल. वीसरा. अरण्य, जंगल; जुओ रांन

राबड अखाछ. राबडी जेवुं, रगडी
रामघरणि लावल. रामनी गृहिणी, सीता
रामित, रामत्य अभिऊ. अखेगी. आरारा.
उपवा. उषाह. कृष्णवा. गुर्जरा. जिनरा.
नरका. नलरा. प्राचीफा. प्राचीसं.
वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र.
षडावा. षष्टिप्र. सिंहा(शा). रमत, क्रीडा
(सं.रम् परथी)

राम थया *नरका.* पूर्ण थया रामदासियां *प्रेमाका.* गरीब, कंगाल, दीनदु:खी

रामिल गुर्जरा. रमत, क्रीडा (सं.*रम्य+िल) रामिणी अंबरा. रमणी

रामेकडउ जिनराः रमकडुं, [आनंदनुं साधन]; जुओ रमेकडा

राय *उपवा. गुर्जरा. तेरका. वीसरा.* राजा; जुओ राइ

रायउ "वीसरा. [रात्रि] [सं.रात्र, प्रा.राय]

रायकूंयर गुर्जरा. राजकुंवर (सं.राजकुमार)
रायको चंद्रवा. प्रेमाका. गोवाळ, रबारी;
जुओ राईको, राया
रायणि गुर्जरा. रायणनुं झाड (सं.राजादनी)
रायपुत्ति नेमिछं. राजकुंवरी (सं.राजपुत्री)
रायपिहार विक्ररा. राजविहार, मोटां मंदिर
राया "अभिऊ. [रायका, रबारी]; जुओ
रायका
रायि जुओ राइ

सल *आरास(व)*. राळ, सालवृक्षनो रस (सं.)

रालइ **लावत. वीसरा.* फेंके, नाखी दे, दूर करे (सं.*रछ्ल ?) [रा.]

राळे होठ अखाका. होठ भीडे, गुस्से थाय, झघडो के वादविवाद करे, [*बकवाद करे]

राव वीसरा. राजा (सं.राजन्)

राव, रावडली अभिउ. उषाह. "गुर्जरा. नरका. प्राचीसं. प्रेमाका. ललिरा. विमप्र. विराप. शृंगामं. फरियाद (सं.)

रावटड उक्तिर. कोई करियाणुं (*सं. राजावर्तः)

रावटी कामा(शा). प्रेमाका. गोळ छर्जु, अगाशी

रावडली जुओ राव

रावडी नलरा. फरियाद (सं.राव+डी)

रावत प्रेमाका. मदमो. राजपुत्र, रजपूत, [वीर पुरुष]

रावल, रावळ, रावल्य अभिक. नरका. *नरप. मदमो. वीसरा. [राजगृह], राजमंदिर, राजदरबार (सं.राजकुल)
रावली मदमो रजवाडी (सं.राजकुल)
रावल्य चंद्रवा राजदरबार; जुओ रावल
राश प्राचीसं रास, गोळाकारे नृत्य करतां
गींत गावुं ते

राश चतुचा. हरिख्या. राशि, ढगलो राश प्रेमाका. लगाम, दोरडुं [सं.रिभे] राशि कादं(शा). नलाख्या. [राश], घोडा-बळदनुं दोरडुं, [लगाम] (सं.रिभे) राष्ट [*रुष्ट, *रिष्ट] प्रेमाका. *कष्टरूप,

[*उग्र], [*अरिष्ट, *अनिष्ट, *उत्पात करनार]; जुओ रिष्ट

रास अखाछ. मेळ

रास *अखाछ*. राशि, भंडार

रास गुर्जरा. तेरका. नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. गोळाकारे नृत्य करतां गीत गावुं ते (सं.); ए हेतुथी थयेली साहित्यरचना

रासह *तेरका.* गधेडो (सं.रासभ)

रासि *आरारा. तेरका.* राशि, मोटुं प्रमाण, समूह

रा**सिया** *प्रेमाका*. रास – लगाम पकडनारा, [रथारोही योद्धा के सारथि]

रासुलउ, रासुलडउ *प्राचीसं*. रास, [नृत्य-प्रकार, साहित्यप्रकार]

राह *उक्तिर. नलरा. वीसरा*. राहु **राहबउ** *प्राचीसं*. राघव. [राम]

राहवड *गुर्जरा*. रक्षण करो, [साचवो, संभाळो] (सं.*रक्षापयति) [*सं.रह] राहाडि कृष्णवा. रढ, हठ; जुओ राढ, राढि **राहावी** *उषाह*. अटकावी **राहावेह** *गुर्जरा.* राधावेध, गोळ घूमती पुतळीनी डाबी आंख वींधवी ते राहि अभिक, मार्गमां राहि अभिक. राहु – नव ग्रहमांनो एक ग्रह, राहुथी **राही *ग्रेमाका.** [राधाए मोकलेली एक गोपीनं नाम] राही, राहीय कर्पूमं. नेमिछं. लावल. हरिवि. राधिका राहीवरा नरका. राधिकावर, कृष्ण राहु अभिक्त राहदारी, वटेमार्ग् राहे चित्तसं. राहुए रांकढीक जुओ ढीक रांषलुं सिंहा(शा). रांगुं, नबळुं (सं.रंग-) [सं.रंघ-] **रांटा** *प्रेमाका*. त्रांसा, [वांका, वळेला] **रांडी** *गुर्जरा*. विधवा (सं.रंडा) **संदू** *षडाबा.* संढवूं, दोरडुं रांण नंदव. अरण्य रांघणउ उक्तिर. रसोई. राधवं ते (सं.रंधनम्) रांधिवर्ड उक्तिर. रांधवू रांन ऋषिरा. अरण्य; जुओ रण, रान रांपी उक्तिर. चामडुं छोलवानुं मोचीनुं ओजार दि.रंध परथी] रांमा कामा(त्रि). स्त्री रि गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). रे (अप.)

रिखसा देवरा. [रक्षा], रक्षण रिच कादं(शा). ऋग्वेद (सं.ऋच्) ***रिजइ राजइ** *उक्तिर.* शोभे (सं.राजते) रिजड (रोवड रिजड़) प्राचीफा. *काकल्दी करे. [*रुए-विलपे] *रिडि रिधि उषाह. समृद्धि, विभूति रिण गूर्जरा. तेरका. प्राचीसं. रण, युद्ध रिण वीसरा. ऋण. देवं रिणड जितरः ऋण, देवं रिणतुर प्राचीसं. रणतुर, [रणशिगुं] रिणवास वीसरा. रणवास, राणीवास (सं. राज्ञीवास) रिति जुओ रति **रिति** *उषाह*. ऋतुमां खि आरारा. तेरका. नलरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. षडाबा. ऋत् रितुपति गुर्जरा. वसंफा(ल). ऋतुपति, वसंत रितुपति-राउ वसंवि(ब्रा). ऋतुपतिराज रिदय आरारा. हृदयमां रिवि कादं(शा). हैयुं; नलाख्या. हृदये रिधि जुओ रिडि रिध्य अखाका. रिद्धि, समृद्धि **रिमिझिमि** *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. रू*मझूम रिवाडी जुओं रवाडी रिषि गुर्जरा. लावल. ऋषि रिष्ट प्रेमाका. [अनिष्ट योग], अमंगळ संकट [सं.]; जुओ राष्ट रिसह गुर्जरा. प्राचीसं. ऋषभदेव रिसहेसर, रिसहेसरो गुर्जरा. तैरका. ऋषभ-देव (सं.ऋषभेश्वर)

रिका *ऐतिका*. रक्षा

रिख *गुर्जरा. तेरका.* रिपु, दुश्मन

रिसावइ प्रेमाका. रिसाय, रिसाई [सं.रिष्] रिसि उपवा तेरका. ऋषि रिहिशि कादं(शा). रहेंसे, क्ररताथी खूब पीडा करे [सं.रिश्]; जुओ रशे रीखतु कादं(ध्र). भांखडिये चालतो (सं. रिख) रीष्ठ उक्तिर. रींछ (सं.ऋक्ष) रीझ चंद्रवा. प्रेमाका. राजीपो, प्रसन्नता, आनंद [सं.ऋध्यति] **रीझवट** *चंद्रवा*. राजीपो, प्रसन्नता **रीडिया काढवा दशस्कं(१).** हडी काढवी, दोडादोड करवी रीणउ आरारा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). थाकेलो, पीडित (दे.रीण); जुओ थाकी-रीणी **रीत** *नरका. प्रेमाका*. रिवाज मुजबनो कर **रीतभात** *प्रेमाका.* रिवाज प्रमाणे पहेरामणी. [करकरियावर] रीति आरारा. स्थिति, अवस्था (रा.) रीतुसंग कामा(त्रि). [ऋतुकाळे] संभोग **रीते** चित्तसं मार्गे **रीद** *चित्तसं*. रिद्धि **रीदि** *कादं(शा)*. हैयूं रीध, रीध्य कामा(त्रि). कामा(शा). प्रेमाका. मदमो. सिद्धि, समृद्धि, ठाठ (सं.ऋद्धि) **रीध्यवीध्य** *सिंहा(शा)***. ऋद्धिवृद्धि, [समृद्धि** अने वृद्धि] **रीयए** **उपबा.* [जाय] प्रा.रीयडी **रीर** अभिक. दशस्कं(२). प्रेमाका. चीस **रीरी** *गुर्जरा.* पित्तळ (सं.रिरी)

रीव जिनरा, *नलरा, नेमिछं, विमप्र. विक्रच. चीस. पोकार रीस उपबा. गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीसं. षडावा. रोष, गुस्सो (सं.रुष्) [सं.रिष्] **रीसइं** *गुर्जरा.* गुस्से थाय (सं.रुष्) **रीसाल** *उपवा*. रोषीलो; *उक्तिर*. ईर्ष्याळ **रीसालाभुं** *आनंस्त.* रसालानी भुमि. घोडासार **रीसावइ** *आनंस्त. उपबा.* रीस करे, गुस्से थाय [सं.रुषु परथी] रींखइ आरारा. रुए, विलाप करे (रा.रींकणौ) **रीझ** *आरारा*. रीझ, ख़ुशी **रुअडो** *मदमो*. रूडो (सं.रूप परथी) **रुक्खडउ** जुओ रुख **रुख** अभिऊ. आरारा. वृक्ष; जुओ रुंख, खरव रुखी कामा(त्रि). ऋषि, ब्राह्मण; दशस्कं(१). ऋषि **रुचित** *दशस्कं(१)*. रुचिकर -रुचे प्रेमाका. रुचिए, मरजीथी **रुघ-** तेरका. रुचवुं (सं.रुच्) रुख अखेगी, रुचि **रुडेइ** गुर्जरा. दडदडे [दे.रड्ड] **रुढ** *प्राचीका*, रढ, हठ रुणऊणड रिषञ्चणड * ऐतिका. रिणझणे. गुंजारव करे] रुणझणिरि [रुणझुणिर] तेरका. झणती, रूमझूमती रुणञ्चणइ गुर्जरा. तेरका. स्थूलिफा.

रणझणे; गणगणे, गुंजे; जुओ रुणऊणइ

रुणञ्चणकार वीसरा. रणझणकार रुणञ्जूणिर जुओ रुणझणिरि **रुवया** *दशस्कं(१)*. हृदय **रुदे** अखाका. हृदय: प्रेमाका. हृदयमां ***हदुद् हिद्ध**े *गुर्जरा.* रूध्यो, [*मसळी नाख्यो **रुद्धि** *ऐतिका.* **ऋद्धि, धन, सिंपत्ति**] **रुयदु** *आरारा. श्रंगामं.* खड्डं, सुंदर (सं.रूप) रुयरि प्राचीफा. वहाणनो कोई भाग रुलंड "आरारा. उपबा. "ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. प्राचीसं. षष्टिप्र. भटके, आथडे, रगदोळाय दि.]; जुओ रलइ **रुति** सिंहा(म). आनंद (सं.रति+ली) दि. रली], जुओ रलि **ठतिआउति** गुर्जरा. रिकयात, आनंदित **रुतिआयत** हम्मीप्र, रिळयात, आनंदित **रुतियउ** *उक्तिर*. आनंदित थयो (*सं. रुलितः) दि.रली परथी] रुतियामणउ. रलियावणउ प्राचीसं. रिळयामणुं, सुन्दर, आनन्दोत्साहजनक **रुतियायित्** *षडाबा*. आनंदित रुली, रली नलरा. प्राचीसं. लावल. विक्ररा. विमप्र. आनंद, आनंदपूर्वक (सं.रति+ ली) दि.रली] **रुलीआयुत** विमप्र. रिक्रयात **रुलीयाइति** अंबराः हर्षित **रुलीयात** सिंहा(म). आनंदित **रुलीयामणउं** *उक्तिर*. आनंदजनक (सं.रति परथी) दि.रली परथी **ठलीयायित** *उक्तिर* प्रसन्न करायेल

रुववंत *तेरका.* रूपवंत **रुए** जुओ राष्ट **रुसल्य** *चित्तसं*. भ्रांतिभर्युः जुओ रूसल **रुसी** *नरका. षडाबा.* रिसाइ, गुस्से थई (सं.रुष्) रुहाडि आरारा. प्राचीफा. लावल. *शुंगार्भं. इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना [रा.] (दे.रुहरुहय); जुओ सहाडि **रुहिरिइ** *विक्ररा*. रुधिर वडे ***रुंआंड्यू [*रुंसाड्यू]** *उषाह.* कुद्ध थयो; जुओ रुंसाडइ रुंख, रुक्खडउ प्राचीसं. लावल. विक्रच. वृक्ष; जुओ रुख, रूख **रुंखडउ** आरारा. नलरा. वृक्ष **रुंढमाळ** *प्रेमाका*, खोपरीनी माळा **रुंबता** अभिक्र. कुस्ती करता **हंसाडइ** *गूर्जरा***. गूस्से करे** रुंसाड्यु जुओ रुंआंछ्यु **रूज** *ऐतिका. रू*प **रूअडउ** नलरा. लावल. सिंहा(शा). रूडो, सुंदर (सं.रूप) **क्षआ** *उपबा*. रूपिया (सं.रूपक) **रूउ** नलरा. चांदीनो एक सिक्को (सं.रूपक) **रूउ** *गुर्जरा*. गायनुं धण (सं.रूप) **रुड** *नलाख्या.* [रुए], रडे (सं.रोदिति) **रुख** *आरारा. जिनरा. वीसरा.* वृक्ष; जुओ रुख **रूखउ** *उक्तिर.* लुखुं (सं.रुक्षम्) [रा.] सगयजुसाम चतुचा, ऋग्वेद, यजुर्वेद अने सामदेद

रुढे अखाका, अखाछ, रूढिए, रढिने वश थईने सणद्वणि गुर्जरा. रणझण अवाज (सं.रणत् +ध्वनि) स्तउ उक्तिर. क्षुभित, पीडित (सं.रुप्तः) सदआ मदमो. हदय सदराणी कामा(त्रि). रुद्राणी, पार्वती **रूदीआ** कामा(त्रि). हृदये, छाती पर **रूदे** *कामा(त्रि).* हृदयमां ***सिंघ**[**संघि**] *कादं(शा)*. रोकवामां आवी (सं.रुद्ध-) **ह्नन्छ** वीसरा. रड्यूं **रूपक चढे** अखाका. देखादेखी करे. [दाखलो ले, अनुकरण करे] सपके अखाका. *खेलमां. (*कामक्रीडामां) स्पणि प्रद्युत्. रुक्मिणी (प्रा.रुप्पिणी) रूपम *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). रूपानी (सं.रौप्यमय) रूपरेह गुर्जरा रूपरेखा, [आकृतिसौंदर्य] **रूपारेल** अखाका. रूपानी रेल जेवूं, रेलंछेल,

रुप्पिणी)
स्व गुर्जरा. प्राचीसं. रूप
स्वा प्राचीसं. रूपियो (सं.रूपक)
स्वांत गुर्जरा. रूपवंत
स्तिआमणां लावल. रिक्रयामणां, सुंदर
स्व ऐतिका. रूप
स्वांत प्राचीसं. रूडुं
स्वय ऐतिका. रूपक

रूपिण प्राचीफा. हरिवि. रुक्तिमणी (प्रा.

रुविण *ऐतिका.* रूपथी **रुसइ** *उक्तिर. गुर्जरा*. गुस्से थाय (सं. रुष्यति) **रूसण** *ऐतिका.* [रिसावुं ते, रूठवुं ते], गुस्से थवुं ते **हर्सणियुं** *नरका.* रिसावानी क्रिया, [ह्नसणुं] **रूसल** *अखाछ.* रोष, रिसायेलापणुं ?, िअज्ञानयुक्त – रागयुक्त मनोदशा]; अखाका. "रोष, "अभिमान [*अज्ञान, *अज्ञानपूर्वक]; रुसल्य. र्खस रुहाडि जिनरा. अभिलाषा; जुओ रुहाडि **रूं** *उक्तिर*. रुवूं, रोम **रूंख** *उक्तिर. गुर्जरा.* वृक्ष (सं.*रुक्ष); जुओ खव **रूंखडुं** *नलरा*. प्रेमाका. वृक्ष **रूंग्रं** अभिकः "नलाख्याः रुदन, [रोवं ते] **र्संघ** अखाका. अखाछ. रूंघामण, बंघन **रूंस** *चित्तसं.* रागयुक्त भ्रमित मनोदशा; जुओ रूसल रे**ख, रेखा** अखाका. गुर्जरा. चतुचा. रेखामात्र, लेशमात्र, थोडुं; चतुचा. नलरा. परिसीमा, हद (सं.रेखा) **रेखीय** *हरिवि.* रेखांकित करीने, [लिसोटो करीने रेटइ *प्राचीफा. "वसंवि(ब्रा*). पहेरे [रा.] रेड लावल. घिनीपवाह, [*घन - मूर्त स्थिति. *अतिश्वतानी स्थिति। **रेण** *गुर्जरा. नरका*, धूळ, रज (सं.रेणु) रे**ण** अखाका, सांधवानो पढार्थ के ते माटेनी

अति समृद्ध

आश्लेष] **रेज** *अखाका. नरका.* रात्री (सं.रजनी) रेणी अखाका, कामा(त्रि). दशस्कं(र). *नरका. प्रेमप*. *प्रेमाका*. रजनी, रात: जुओ रेंघणी **रेत** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* वीर्य [सं.रेतस्] **रेल. रेलि** विमप्र. प्रवाह, [छोळ]; *लावल.

रेवइयागिरि *चारफा*. गिरनार पर्वत [सं. रैवतगिरि

प्रवाह] (रा.रेली]

विमप्र. "बहेक, "सौरभ, [शीतल वायु-

रेबणी ऋषिरा. प्रद्युचु. विमप्र. रेवडी दाणादाण, खेदानमेदान, अस्तव्यस्त, हेरान करवुं ते, [खंडखंड करवुं ते, फजेती, दुर्दशा]

रेवति *गुर्जरा*. गिरनार (सं.रैवतक) **रेवय** *आरारा.* रेवती, एक प्रसिद्ध श्राविका **रेवय** *प्राचीसं*. रैवतक, [गिरनार] रैवंत कृष्णबा. नरका. प्रेमाका. हरिख्या. अश्व. घोडो

रेवंत *तेरका*. गिरनार (सं.रैवत)

रेश अखाछ. रहीश, रहेशे

रेशि *उषाह. प्रबोप्र.* चतुर्थीनो प्रत्यय, माटे (अप. रेसि)

रेसि अंबरा. आरारा. उषाह. कृष्णच. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं, प्राचीफा, वसंफा, वसंवि. वसंवि(ब्रा). विमप्र. चतुर्थीनो प्रत्यय, -ने, -ने माटे, प्रत्ये (अप.)

रेसि *उषाह*. शोभे (*प्रा.रेह)

क्रिया, सांधेलां, एक थयेलां, जिंडाण, 🔭 आरारा, ऐतिरा, वीसरा, रेखा, लीटी; *नलरा.* परिसीमा (सं.रेखा); *गुर्जरा. *प्राचीसं*. कीतिरेखा, प्रितिष्ठा **रेहइ** *उषाह. तेरका. प्राचीफा*. शोभे (दे.) **रेहा** ऋषिरा. रेखा, लीटी, [हद, सीमा] **रेहिणी ****ऐतिका*. [शोभती] [दे.] **रेहेकले** *रूस्तस*. रेंकडामां [*सं.रथकल] **रेहेणी** *प्रेमप*. वर्तन, व्यवहार रें**यणी, रेणी** *प्राचीका*, रात्रि (सं.रजनी) **रेणी-रमण** *अखाका*. रजनीपति. चंद्र **रैक्त**्र*गुर्जरा*. गिरनार (सं.रैवतक) **रो** चतुचा. रह्यो; नंदब. रहो; रह्यो **रोअती** *गुर्जरा. विराप.* रोती (सं.रोदिति) रोइवर्ज उपबा. रोवुं ते (सं.रोदिति) रोक आरारा. "चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. रोकड्, नगद [दे.रोक्क] **रोकंत** प्रेमाका. रोक, [रोकड] **रोकारोक** *अखाका.* रोकडेरोकडं: [हाजरा-हजूर]; *अखाछ*. रोकडुं,[नगद] रोक प्राचीसं. रोकडुं [दे.] **रोख** *चंद्रवा. शीलक.* दमाम, रोफ, [गौरव], [स्थान-माननो ख्याल] **रोख** * चंद्रवा. [रोकड्, साचेसाच, प्रत्यक्ष] **रोखमां** *मदमो*. वटमां, गौरवभेर, वास्तव-मां. प्रत्यक्षी **रोचना ***अखाछ: [राजी करवापणुं] [सं.] **रोज** *आरारा.* एक दिवस (फा.) रोझ, रोझडी उक्तिरः गुर्जराः प्रेमाकाः वीसरा. ए नामनुं प्राणी, नील गाय [दे.]

रोडउं *गुर्जरा.* गबडावुं, [अवरुद्ध करुं, हेरान करूं] दि:;रा.] **रोडी** *प्रेमाका*. हडी, दोट; जुओ रोढा **रोडुं** *चतुचा*. ईंटनो टुकडो, तुच्छ वस्तु रोढा दशस्कं(१). प्रेमाका. दोट; जुओ रोडी **रोदना** *आनंस्त*. रुदन [सं.] रोघ चित्तसं. अवरोध, अंतराय [सं.] रोध्यं चित्तसं. रूधायेलुं [सं.रोधित] रोपणा आनंस्त. [रोपणुं ते], स्थापना [सं.] रोमकूप प्रेमाका. स्वाडांनां छिद्र [सं.] रोमराइ हरिवि. रोमराजी, [रूंवाडां] रोमंच्यउ ऋषिरा. गुर्जरा. रोमांचित थयो रोमाउली वसंवि(ब्रा). रोमावलि, [रूंवाडां] रोयइ उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. षडाबा. रुए (सं.रोदिति) रोयिवा उक्तिर, रोवा **रोर** *वाग्भवा.* दरिद्रताः ऋषिरा. शंगामं. रांक, गरीब (दे.) रोर जुओ पाव रोर रोल, प्राचीसं. कोलाहल [दे.]; जुओ रोलि रोळ प्रेमाका. विनाश दि.रुल परथी **रोल, रोळ** नेमिछं, प्रेमाका, वीसरा, प्रवाही मिश्रण, लेप; *नरका. [आनंदमस्ती; मस्ती, छोळ]; जुओ रोला **रोल** स्थ्रुलिफा. कंकु (हिं.रोरी, रोली); विमप्र. [कंक् जेवं] रातुं रोलड, रोळड अभिक. विमप्र. रगदोळे, निष्ट करे**ौ** (दे.रुल परथी); गुर्जरा. गबडावे, रिगदोळे, नष्ट करे; आच्छादित करे]; नरका-२. रोळवानी क्रिया करे,

[लपेडे] **रोलवइ** *आरारा. लावल.* रोळे, भांगी नाखे, नष्ट करे **रोलंब** शंगामं. भमरो (सं.) **रोला, रोळा ***लावल. [लेप, घट्ट प्रवाही]; *नरका.* रेलंछेल; जुओ रोल **रोलि ***गुर्जरा. [कोलाहल, विवाद] (दे. रोल); जुओ रोल **रोवइ** ऋषिरा. गुर्जरा. देवरा. रुए [सं.रोदिति] रोवइ रिअइ जुओ रिजइ **रोश** *मदमो* **खो**ड **रोशि** प्रबोप्र. रोषे, क्रिध्यी **रोशि ***विमप्र. [आवेशमां आवे, मारेकापे] [रा.रोसणौ] **रोस**्यूर्जरा. तेरका. वीसरा. रोष, गुस्सो **रोसारुणु** *गूर्जरा***. क्रोधथी रातुं (सं.रोषारुण) रोह** *अखाका.* *रोष, *अभिमान, [*रोध, *बंधन]; *गुर्जरा. विराप.* घेरो (सं.रोध) **रोहिणी गाज** *अखाका*, रोहिणी नक्षत्रमां वरसादनी गाजवीज (ते थाय तो वरस मोळुं आवे – पाक बराबर न थाय) **रोहीडउ** उक्तिर. रोहीडो, एक वनस्पति (सं.रोहीतकः) **रोहीस** *उक्तिर.* एक प्रकारनुं सुगंधी घास, रोयडो, रोस, रोहीडो (सं.रोहिषः) रोंसा रूस्तरः, ? **रौरव** मदमो. भयंकर [सं.] लइय तेरका. लीधुं (सं. 'नय्' तथा 'ला')

लज्डज उक्तिर. षष्टिप्र. लाकडी (सं.लकुट) लउंकडी उक्तिर. लोंकडी [दे.लुंकडी] **लउंग** उक्तिर. लविंग (सं.लवंग) **सक्ख** *तेरका. नेमिछं*. लाखनी संख्या (सं.लक्ष) **लक्खणिण** ऐतिका. लक्षणोना ज्ञाता [सं. लक्षणिन्] लक्ष चित्तसं. लक्ष्य, दृष्टिबिंदु **लक्षण** *आरारा*. शुभ चिह्नो (सं.); *चित्तसं.* गुणधर्म लक्षे चित्तसं. लक्ष्ये, छेवटे, अंते **लक्षेलक्ष** *प्रेमाका*. लाखो, [लाखंलाख] लक्ष्मी वाग्भवा. शोभा [सं.] **लख** *वसंफा*. लक्ष्य लख नेमिछं. मोसाच. लावल. वीसरा. शुंगामं. लाखनी संख्या (सं.लक्ष) सखइ अखाका. अखाछ. आरारा. उक्तिर. जूए, पामे, ओळखे, पारखे, समजे (सं. लक्ष) लखड कामा(शा). प्रेमाका. आलेखे, चीतरे सिं.लिखति **लखण** *ऐतिका*. लक्षण लखणवन्तो ऐतिका. लक्षणवंत **तख प्रकारे** *मोसाच*. लाख रीते **लखलख करती** प्रेमप्, बोलबोल करती लखलखती प्रेमाका. बबडाट करती लखलाघबी वसंवि. वसंवि(ब्रा). लक्ष्यवेधनं कौशल (सं.लक्ष+लाघव); जुओ लघु-लाघवी **लख बार** श्रृंगामं. लक्ष वार, लाख वखत

लखा विमप्र. लाख (संख्या) (सं.लक्ष) **लखाणी, लखी** *चित्तसं*. आलेखी, वर्णवाई सिं.लिखी **त्रिख (त्रिख परि)** विमप्र. लाख [प्रकारे] लखी जुओ लखाणी **लखु** *गुर्जरा*. लक्ष्य **लखे** *चंद्रया*. ?, [जणाय, ओळखाय]; *चित्तसं*. लक्षे, ध्यानमां ले, जूए **त्रक्षेप** कामा(त्रि). लक्षण **त्तख्य प्रबोप्र. मदमो**. लाख (संख्या) (सं. लक्ष) **लख्य** मदमो. लक्ष्मी **लख्यणहीण** लावल. लक्षणहीन, गुण विनानो लग, लगइ, लगि, लगिइ, लगी, लये, लर्गे अखाका. उपवा. उषाइ. गुर्जरा. नरका. नरप. लावल. लगी, सुधी: आरारा. उक्तिरः गुर्जराः प्राचीकाः *"लावल. "षडाबा. -*थी, -थी मांडीने; *उषाह. गर्जरा. अखाछ. उपबा. चित्तसं. नलरा. प्राचीफा. षडाबा. -थी. -ने कारणे, तेथी, [पूर्वक] लगडं गुर्जरा. भेगुं थयुं, जोडायुं (सं.लग्न) **लगण प्रेमाका**. सुधी **लगतो** *प्रेमाका*. नजीक लगन लावल. ज्योतिषविद्या प्रमाणे मुहूर्तनी कुंडळी, [मृहूर्त] (सं.लग्न); जुओ लग्न **लगंडु** षडाबा. चांक् लाकडुं [दे.] **तयाडणि** *षडाबा***.** लगाङवामां **लगाडी देवुं** *दशरकं(१). प्रेमाका.* आग लगाडी बाळी देवुं; जुओ लागी

लगामी वीसराः लगाम लिग, लिगइ, लगी, लगे, लगें जुओ लग लग्गइ गुर्जराः तेरकाः नेमिछंः लागे (सं. लग्यति)

लग्न प्रेमाका. पृथ्वी एक राशिमां रहे तेटलो समय [सं.]; मुहूर्त; जुओ लगन

लघवइ अभिऊ. लघुवय[वाळो]

त्त्रधु आरारा. धीमा

त्तपुकरमी ऋषिरा. जेनां कर्मो हळवां छे ते, [थोडां कर्म रह्यां छे तेवां, तरत मुक्ति पामनारों] [जै.]

लघुनीत *दशस्कं(५). प्रेमाका*. लघुशंका, मूत्रनो परित्याग

लघुलाघनी अखाकाः चतुराई, [लक्ष्यवेध करवानी कुशळता]; जुओ लखलाघवी, लाधव

लघुलायदी विद्या *ग्रेमाका. [लक्ष्यवेय करवानी कुशळता]

लघु-वि कृष्णवा. लघु वय

लघु-दे *दशस्कं(१)*. लघु वय

लिख, लखी, लिख, लखी, लंखी, लाखि आरारा. ऐतिरा. प्राचीका. प्राचीसं. सिंहा(म). लक्ष्मी, [धन]; गुर्जरा. प्राचीसं. लक्ष्मी [देवी]

लष्ठ प्राचीका. वेताप. सिंहा(शा). लक्ष्मी, [धनवैभव]

लष्टमछ * नेमिछं. [*सुंदर, *लटकाळी] लिख ऐतिका. लक्ष्मी, [धनसंपत्ति]; [वैभव, महिमा]; विराप. लक्ष्मी[देशी]; जुओ लिख लाड़ी जुओ लच्छि लाड़डी लावल. लक्ष्मी, [समृद्धि] लंडी जुओ लच्छि लाडा दशस्कं(१). मदमो. लज्जा, लाज लटका करे चित्तसं. व्यवहार करे, रमण करे

लटके प्रेमाका. सहेलाईथी, [रमतमां] लटपट प्रेमाका. खुशामत, *चालाकी; जुओ लाटेपाटे

लटपटी दशस्कं(१). प्रेमाका. लपेटी, वींटीं, घेरी

लट्टा *षडाबा.* कसुंबो, करडीनो छोड (दे.; सं.लट्वा)

लड्डू *उक्तिर.* कसुंबो, करडी (सं.लट्वा) [दे.लहा]

लडथडइ, नलाख्या. नेमिछं. जिनरा. लथडे लडसडइ नरका. प्राचीफा. लहेरमां के मदमां चाले

लडिह प्राचीफा. सुन्दर (सं.लटभ) [दे. लटह]

लडहियतण *प्राचीफा.* सुन्दरता (सं.*लटभि-कत्वन)

लडा विमप्र. शोभीता [दे.लडह]

लडाक *दशस्कं(१). प्रेमाका.* लडकणो

लडाबड् गुर्जरा. नेमिछं. लाड लडावे, [स्नेह करे] [दे.लड्डिय]

लहाविय प्राचीसं. प्रशंसित

लद्धड *गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं.* लीधुं, प्राप्त कर्युं (सं.लब्ध)

लिद्धवर ऐतिका. "उत्तम लिब्ध, [योगादिथी

प्राप्त शक्तिविशेषनुं वरदान धरावनार] लध आरारा. मळी (सं.लब्ध) **लपनश्री षडावा**. लापसी (सं.लप्सिका) दि. लपसिया लिप नलरा. लिपि. लेखनविद्या **लबिंग** *ऐतिरा.* लब्धि, सिद्धि **लबधिवन्त** *ऐतिका*. लब्धि(शक्तिविशेष)-संपन्न लबधी आरारा. आसक्त रही (सं.लुब्ध) **लबरका** *उथाह. लिपकारा] लबांनीयो कस्तुवा. वणजारो **लबशी पडे** *प्रेमप*. लपसी पडे **तबे** अखाछ. होठे फा.ी **लब्धि** *लावल*. योगथी प्राप्त थती विशिष्ट शक्ति, सिद्धि **लयलीण** *आरारा*. रच्योपच्यो लयउ उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). लीधो (सं.ला-) **लया** *आरारा*. लता लयेत उक्तिर लई लेत, हरी लेत **ललचे प्रेमाका**. ललचाय **त्तलत** *प्राचीफा***.** रम्य (सं.ललित) **त्तलबटे** कामा(त्रि). ललाटे, कपाळमां ललबल "वसंफा. "वसंवि. वसंवि(ब्रा). लचकपूर्वक, लटकमटक (सं.ललत्+ वलत्) **ललवलउ** *प्राचीफा*. [लटकाळुं], सुंदर त्तलवलती यसंफा(ल). यसंवि. वसंवि(ब्रा). लळती. लचकाती **ललाट लोही** अखाका. कपाळ लूछी, आशा

तजी **ललिय** *तेरका*: ललित – सुंदर रीते लिल, लिल देवरा. लळीलळी, नीचा वळी सिं.लली ललीता मदमो. सुंदरी [सं.ललिता] **ललीय** गुर्जरा. ऊडी, ऊछळी, [घूमराईने, चकराईने] (सं.लल-) लव कामा(त्रि). स्टण, [धून] [हिं.लौ]; नरका. प्रेमाका. लवरी, बकवाद [सं.लपू] लवइ आरारा. शुंगामं. बोले [सं.लपित]; जुओ डांलवइ **लवइ** नलाख्या. फरके **लवणि** *आरारा***. ल**खण्य लवणिम, लवणिमा गुर्जरा. जिनरा. तैरका. *प्राचीफा. श्रंगामं*. लावण्य, सौंदर्य (सं. लवण+इमन्) लवधुलउ प्राचीफा. लुब्ध, आसक्त **लवलि** तेरका. लवली, एक पुष्पलता लवंड ऐतिका, दीवालनी पोपडी **त्तवासी ***आनंस्त. [बकवाद करनार] [हिं.] लिव जुओ लिव लिब लागी हरिवि. लववा लागी **लस-** *तेरका*. प्रकाशवुं (सं.) लहइ आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपवा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिरा. गुर्जरा. चित्तसं. तेरका. देवरा. नेमिछं. लावल. वसंफा.

वसंवि. वसंवि(ब्रा). विराप. वीसरा.

षडाबा. मेळवे, पामे, प्राप्त करे (सं.

लभते): *प्रेमाका. लावल.* धारण करे:

आनंस्त.

कामा(त्रि). कामा(शा). चित्तसं. नरका. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमप. प्रेमाका. लावल. ओळखे, समजे, जाणे; जुओ जावुं लहइ

तहकइ ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). लहेके, लळे (सं. लसत्+कृत) (दे.लहक्क); प्रेमप. झूले, शोभे

लहकङ् नेमिछं. [लळीने], लहेकाथी, सहेलाईथी

लहकुडलउ प्राचीफा. लहेको, [लटक], कटाक्ष (सं.लसत्+कृत)

लहरीयउ स्थूलिफा. [स्त्रीओना कंठनुं] एक आभूषण; जुओ लहेरियुं

लहलह- *ीरका. प्राचीसं.* हलवुं, धीमेथी आंदोलित थवुं, लमलसवुं

लहलह तेरका. सळवळाट करतुं लहवहाउ जिनरा. अस्वस्थ थयुं, [लेवाई गयुं] लहिका (लहिका देइ) विमप्र. लटको किरे], [आनंद बतावे]

तिहणु प्रद्युचुः लहेणुं **तिहतुं** उक्तिरः मेळववुं **तिहवास**ङ् शृंगामंः लेवाशे

लही चित्तसं. समजाई, ओळखाई

लह्य*पुर्जरा.* लघु

लहुअ (लहुअ लगइ) लावल. लघु वय[थी], बाळपण[थी]

लहुअपण, लहुपण प्राचीका. लघुता, नानापणुं (सं.लघुकत्वन)

लहुडुउं उत्तिर. उपवा. कृष्णच. रूपच.

वीसरा. शीलक. षडाबा. हम्मीप्र. लगुक, नानुं; जुओ लहूउं

लहुपण जुओ लहुअपण

लहुयडउं आरारा. नानुं, नाजुक (सं.लघु); विक्ररा. नानुं

ल्हु विष ऐतिसः लघु वये

लहूअंडजं *चारफा*. नानुं, मनोहर; नलरा. प्राचीफा. नानुं (सं.लघुक)

लहूउं कृष्णवा. देवरा. नलरा. नानुं (सं. लघुक)

त्तहूयडउ प्रद्युचु. नानो, लघुवयस्क (सं. लघुक)

लहेकावतां (लींबु लहेकावतां) नरकाः [लींवु] उछाळतां, (सहेलाईथी)

लहेर दशस्कं(१). प्रेमाका. मूर्छा

लहेरियुं प्रेमाका. गळानुं एक घरेणुं; जुओ नहरीयउ

तहेरी *नरका.* फुदरडी

लडेबाशे *प्रेमाका.* जणाशे, समजाशे, [खबर पडशे]

त्तहेवुं नरका. प्रेमाका. ग्रहण करवुं, समजवुं, वसंफा. प्राप्त करवुं

लंक विगप्र. (अक्षरोना) वळांक, मरोड लंक सिंहा(शा).?, [अत्यंत, साव]; * मदमो. [अत्यंत]

लंक लावल. लंकानगरी

लंक, लंका अभिक्ठ. कृष्णवा. नरका. मदमो. लावल. वीसरा. शृंगामं. कमर, कमरनो वळांक, मरोड; जुओ कंडिलंक, चित्रलंक, शहीलंकी

लंक-केसरी अखाका. सिंहना जेवा कमरना वळांकवाळी; जुओ हरिलंकी **लंक लूंट्युं** जुओ लुंट्युं लंक लंका जुओ लंक **लंकाल** *दशस्कं(२)*. वळांकवाळा (सपी) **लंकालि, लंकाली** *आरारा. श्रृंगामं.* लांक 🗕 என்கவனி लंकित विमग्र. लांक - वळांकवाळी **लंकीली** ऋषिरा. [लांकवाळी], मरोडवाळी लंख ऐतिका. *मोटा वांस पर खेलनारी नट-जाति [सं.], [*गायक] [दे.लंखक] **लंखइ** कर्प्मं. प्राचीसं. नाखे **लंखण** प्राचीसं. प्रक्षेप, नाखवूं ते **लंखन्** *षडाबा.* नाखदुं ते **तंग** प्राचीका. लिंग, [मृत्यु पष्ठी पण फळनो भोग करवा रहेतुं जीवात्मानुं सूक्ष्म शरीर **लंगर *प्रेमाका** [हाथीना पगनी जंजीर] [फा.] **लंगर कस्तुवा**. सदाव्रत [फा.] **लंधइ** गुर्जरा. तेरका शंगामं. ओळंगे (सं. लंघति) **लंधादिय** प्राचीसं. लांघण करावी **लंबा** कस्तुवा. लांच (सं.) लंबी "लावल. [लांचियुं] **लंछण** *वीसरा. शुंगार्म.* लांछन **लंड** नरका. प्रेमाका. लुद्यो, धूर्त, लांठ, दांड]; जुओ लांठ **लंड** चंद्रवा. मदमो. वेताप. श्रंगामं. लुचो, लांठ, [धूर्त]

लंडीयो चंद्रवा. लुचो, [लांठ, धूर्त] **लंत**क षडाबा. एक देवलोकन् नाम (जै.) [स.लांतक] **लंपटपणुं ***षडाबा. [लोलुपता] (सं.लंपट-) **लंब** चित्तसं. लांबुं, दूर सुधी पहोंचतुं, विशाळ लंबिय तेरका. फेलायेला, व्याप्त (सं.लंबित) नेमिछं. वीसरा. लगाडे लाइ आरारा. (सं.लागयति): *नलाख्या*: लगाडे, जगावे (सं.ला-); **गुर्जरा*. [लगाडे, अपे]; *नरका*, लागी लाइ अभिक्र. लावे (सं.ला-) **लाइ** *चित्तसं.* ल्हाय, अग्नि **लाइक** ऐतिका, लायक लाई जुओ चित्त लाई **लाई** उक्तिर. [*बिवारा, *गरीब] (सं. लम्पकः) [रा.] **लाउ** *आरारा. प्रद्युचु*. लगाडो (प्रा.लाय) [सं.लागय] **लाएइ *** शंगामं. [लागे] **लाख गमें** *आनंसा*. लाख प्रकारे लाखगुण उपबा लाख गणुं (सं. लक्षगुण-) **लाखपसाव** *ऐतिका*. एक दानविशेष, [कीमती भेट, मोटो सरपाव] [सं.लक्ष-प्रसाद् लाखहरु गुर्जरा. लाक्षागृह, लाखनुं बनावेलुं घर **लाखाग्रेह** ग्रेमाका. लाक्षागृह

लाखाराम *गुर्जरा. तेरका.* लाक्षाराम (ए

नामनो उद्यान)

नाखां-करोडी प्रेमाका, नाखो अने करोडो लाखिया उक्तिर. नाखवा [सं.नंक्ष] **लाखी** *प्रेमाका.* **लाख [पदार्थ]** े [सं.लाक्षा] **लाखीणउ** अंबरा, लाख रूपियाना मालिक: चंदवा. जिनरा. लावल. "विमप्र. लाखेणो, कीमती, महामूलो [सं.लक्ष-] ताखेणा दीपक प्रेमाका. लक्षाधिपतिनी निशानी तरीके एने त्यां सळगावाता दीवा **लाखेणी** *नरका-२. प्रेमाका*, कीमती **लाखे लेखां थाय** अखाका. अतिशय समृद्धि मळे **लाग** कादे(शा). (संबंध], कारण, [औवित्ध**े: ***नलाख्या. [अवसर, तक: युक्ति सि.लग्नी लाग, लागु आरारा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). संबंध, स्नेह, अनुराग (सं.लग्न) लाग- वीसरा. शरू धदुं (सं.लग्न) **लागटउ** *प्राचीसं*. ?. सिंबंध होवो ते **लागणा ***प्रद्युच्, [आघात आपे एवं] लागि उषाह. लागो. किरो. खर्च **लागि** *आरारा*. माटे **लागी** *प्रेमाका***. सळ**गी, [नष्ट थई]; जुओ लगाडी देवूं लागु जुओ लाग **लागू** *आरारा*. पाछळ लागेला लाध- वीसरा. ओळंगवुं (सं.लंघ) **लाघव, लाघवि** अखाका. *सार, [सरळता,

(सं.); जुओ लघुलाधवी **लाछल** लावल. लक्ष्मी [नाम] लाछवर नरका. लक्ष्मीनो पति, कृष्ण **लाछा उतारवा** वेताप. चिकित्सा तरीके गरम तवेथा के लोढ़ा पर लींबड़ो ने छाश छांटी दरदीनां तळां शेकवां के डामवा लांछि अंबरा. प्राचीका. लक्ष्मी, धिननी देवी]; नेमिछं. लावल. लक्ष्मी [नाम]; *गुर्जरा. नेमिछं. लावल.* धन; जुओ लच्छि लाश्रम मदमो. लक्ष्मी, धिनसंपत्ति **लाजइडी** *लावत.* लाज, शरम (सं.लजा) लाज काढी प्रेमाका. आवरू गुमावी **लाज लागे** अखाका. [शरमाया जेवूं थाय], लांछन लागे. प्रतिष्ठा जाय लाजबी जिनराः लजाईने सिं.लङ्गति] **लाजा** कादं(शा). शाळ, आखा फोतरावाळा चोखा, [भूंजेली डांगर] [सं.] **लाजिवा** *उक्तिर* शरमावा **लाजी** *नलरा*. एक प्रदेश ज्यौ नलराजाए विजय कर्यो हतो **लाजीड** *उक्तिर*. लजवाय. शरमाय **ला[े] अखाका** झांखुं पडे [सं.लज़ित] **लाटेपाटे** प्रेमपः कोई पण प्रकारना उपाये ?. [लटूडापटूडाथी, खुशामदथी]; जुओ **ਲਟ**ਪਟ लाटी षडाबा. रेवडी (सं.लष्टि) दि. लट्टिय

लाडइ *उक्तिर*. लडावे, प्यार करे दि.लड्डिय

सहेलापणुं]; *वसंफा. वसंवि(ब्रा)*. कौशल

परथी]

परथी]
लाडगहिली ऋषिरा. लाडघेली
लाडण गुर्जरा. [लाडीली] कन्या
लाडण, लाडणु गुर्जरा. नलरा. प्राचीसं.
वर, प्रियतम
लाड पालवा मोसाच. *राजी राखवा, [लाड
पूरा करवा]; जुओ पाल्यां लाड
लाडिक्,ं नलाख्या. लाडीलुं, [लाडकुं]
लाडिय, लाडी गुर्जरा. कन्या, नववधूः
प्राचीफा. सुन्दर नायिका (प्रा.लडिय)
लाडुकलरूहिय तेरका. ए नामनी ओरडी,
[लाडुनो नास्तो जेमां रखाय छे ते
ओरडी]

लाडुआ आरारा. लाडवा लाडो * ऐतिका. [लाडको, प्यारा] लाण (लाणे लेकाको) प्रेमाका. लहाण, लाभ, लहावो, [*भार वेठवानो आवशे, *मुसीबतमां मुकाशे] लाखा विकरा. गांसडीओ, [पोटलां] [रा.] लाख गुर्जरा. लाभ, प्राप्ति (सं.लब्धि) लाख गुर्जरा. लाभ, प्राप्ति (सं.लब्धि) लाखउं अभिक. आरारा. उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. गुर्जरा. चित्तसं. जिनरा. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. विराप. वीसरा. मळयुं, प्राप्त थयुं; मेळव्युं, कर्युं (सं.लब्ध)

लान्डउ प्राचीसं. नानो [सं.श्लक्षणं] लापसिय प्राचीसं लापसी [दे.लप्पसिया] लाफालोल *नरप(द). [पैसा उडाववानी मजा]

लाबर नरका. ढीलुं, नरम, [श्रिथिल]

लाबर विराप. लावरां, वडचकां, तिरस्कार-युक्त कटु वचनो (सं.लवित्); जुओ लावर लाबरडुं नरका. नरप. [शिथिल], अत्यंत ढीली, लोथपोथ लाभइ आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. नरका. षडाबा. मळे, प्राप्त थाय; मेळवे, पाने (सं.लभ्यते) **लाम * चतुचा.** [श्रेष्ठ] (सं.ललाम) लामा ललिसः खराब **रामी** *प्राचीफा. प्राचीसं*. हलकी, नरसी. अभद्रा, प्रतिकुला, विषम **त्ताय** *अखाका***. आग**. अगि **लावड् ऋ**षिरा. लागे; "गूर्जरा. [लगाडे]: *देवरा*. लावे **लायण्ण** *तेरका*. लावण्य **लार** अखाका. आरारा. संबंध, साथ (रा.); आरारा. *(आपणी) साथे, सिंध, संग]: *अखाका. हार, परंपरा]: ***देवरा. [पाछळ];** जुओ लाहार **लाल** *उक्तिरः गुर्जरा.* लाळ (सं.लाला); नलाख्या. लालसा लाक वीसरा. घंटनी अंदरनुं धातुनुं लोलक **लालइ** उक्तिर. लावल. लालन करं, लडावे, स्नेहपूर्वक पाळे (सं.लालयित) लाळच वीसराः लालच **नालडा** विमप्र. लाल, रातां **लालडीआ** विमग्नः नान् वहालुं बाळक **लालरी "गूर्जरा.** [करचली] नानास कादं(शा). लालचु (सं.लालस) लालि जुओ सहलालि

लालि उक्तिर. [*लाळी, *शियाळ आदिनो अवाज (सं.लङ्कि) **लाली** **विक्ररा. विमप्र.* शियाळ लालीय वसंफा. वसंवि. वसंवि(न्ना). लळीने, ललित रीते, लीलापूर्वक (सं. लालियत्वा) लालू नलरा. छंदमां पादपूरक तरीके, [लाल ध्रुवा तरीके] **लावइ** *आरारा. "लावल.* लगाडे; *गुर्जरा.* (ब्म) मारे लावि जुओ मागी लावि **लावणि** *आरारा*. लावण्य **लावणो** *सिंहा(शा)*. सुंदर (सं.लावण्य) **त्रावन** *आरारा. जिनरा.* लावण्यः, *वसंवि-*(व्रा). संदर (सं.लावण्य) लावनि वसंफाः लावण्य[युक्त] लावनिसयरि वसंवि. लावण्ययुक्त शरीरे **लावर** गुर्जरा. वडचकां, तिरस्कारयुक्त कटु शब्दो; जुओ लाबर **त्सवंन** मटमो लावण्य लास, लासि अभिकः प्रेमाकाः *विमप्रः (घोडाओनो) समूह लाह अंबरा. ऐतिरा. चारफा. प्राचीका. *लावल. *विमप्र.* लाभ, लहावो **लाहड** *आरारा. जिनरा.* वहेंचे. लहाणी करे (रा.); *प्रेमाका. मदमो*. मेळवे, पाने (सं.लाभ-) लाहउर उक्तिर. लाहोर (सं.लाभपुरम्)

जुओ लार, ल्हार लाहिण ऐतिका. लहाणी (सं.लंभनिका) लाह आरारा. नलरा. लेलिरा. विक्रच. लहावो, आनंदनो उपभोग (सं.लाभ) लाहर अभिक. कोई लांबा दांतवाळूं पश्र [एक प्रकारनुं शिकारी क्तरुं] [रा. लाहोरी **लाहो** मदमो. वेताप. लगाडो (सं.लागय्) लाहो नरका. मदमो. लहादो (सं.लाभ) लाहोले (लाहो ले) *नरप. [लहावो ले] लांक दशस्कं(१). नेमिछं. प्राचीसं. (कपर-नो) वळांक लांकु वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). कमर लांखइ उपवा. गुर्जरा. कृष्णवा. नेमिछं. *वाग्भवा. षडाबा. षष्टिप्र*. नाखे (सं. नक्षति) **लांगर्या** *प्रेमाका*. (सांकळथी बंधारोला **लांघइ** *आरारा. उक्तिर. षडाबा.* उल्लंघे, ओळंगे. पसार करे (सं.लंघयति) लांघी आरारा. लंघनवाळो, उपवासी, भूख्यो **लांछ** *नेमिछं*, लांछन **लांठ** चंद्रवा. प्रेमाका. लोंठकूं, गांठे नहीं तेवुं, तोफानी; जुओ लंठ **लांठीआ** कामा(त्रि). शठ, धिती लांप उक्तिर. आसक्ति, इच्छा (सं.लिप्सा) **लांपडुं ***अखाका. [लूलुं, दम विनानुं] **लांपा** *हरिवि.* लंपट ?. [*लालसा. *आसक्ति लांबपणि यडाबा. लंबाईमां (सं.लंब-)

लाहणंड उक्तिर, उत्सवादि प्रसंगे थत् लहाणुं

लाहार *मदमो. हारतस.* हार. लांबी हार:

लांभुयां वेताप. लांभवां के लांभां, भाग वहेंचवा नाखवामां आवती चिष्ठीओ लि, लिअइ, लिइ अभिक्त. उक्तिर. उपबा. . गुर्जरा. तेरका. नरका. नलाख्या. लावल. वसंफा. वसंवि. वीसरा. ले, [ग्रहण करे], लई जाय

लिक- *प्राचीसं.* संतावुं [दे.]

लिखइ आनंस्त. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. लावल. विराप. षडाबा. लखे (सं. लिखति)

तिखाइ * वीसरा. [लखाय, लखवामां आवे] तिखे * विमप्र. [लक्ष — ध्यान राखे, काळजी राखे]

तिखादइ उक्तिर. लखाये [सं.लिखापयति] **तिखिवा**ं उक्तिर. लखवा

तिखेइ शृंगामं. आलेखीने

तिख्मी *आरारा.* लक्ष्मी, [लक्ष्मीदेवी; धन-संपत्ति]

तिख्यउ *वीसरा. [लख्यो]

लिगार ऋषिरा. ऐतिका. देवरा. लगार, थोडुं

लिट्ड प्राचीस. ईंट क पथ्थरनो टुकडो, रोडुं (सं.लेष्ट्रक)

लिद्ध *ऐतिका. गुर्जरा.* लीधुं, मेळव्युं

तिपसणउं उक्तिर. [*लपसणुं] (सं. लिप्स्या-यनम्)

लियइ उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. देवरा. वीसरा. षडाबा. ले, स्वीकारे (सं. ला,नी-)

लियाय देवरा. लयावी, [लावी]

लियावइ शृंगामं. लई आवे

तिलवट नरप(द). ललाट; जुओ लीलवट लिक्कर, लिक्किर प्राचीसं. लीरो, चीवर, [साधुवेश] [दे.]

*लिव [*लिव] *नेमिछं. [बोले]

लिबराबइ *उक्तिर*. लेवडावे

तिवंग नेमिछं. प्राचीफा. लविंग (सं.लवङ्ग)

लिविउं गुर्जरा. चीतरेलुं (सं.*लिपित, लिप्त)

लिहानु *नलरा***. कोलसो, लहाळो**

लिहावड् तेरका. विराप. लखावे (सं.लिख् परथी)

लिहीजइ *गुर्जरा*. लखावीए (सं.लिख् परथी) **लिहीती** *षडाबा*. चटातां, चाटवामां आवतां (सं.लिह)

तिंग चतुष्टय अखाका. [वेदांतमत मुजब चैतन्यनी जुदीजुदी अवस्था दर्शावता] चार प्रकारना देह : स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण

तिंगभंग अखाका. अखेगी. चारे प्रकारना लिंगथी पर थवुं ते], देहभावनी नाश, ब्रह्मभावनी प्राप्ति

लिंहगटउं यडावा. एक प्रकारनी मीठाई, [ढीली लापसी, चाटण लापसी, शीरा लापसी]

लीइ, लेइ गुर्जरा. वसंफा(ल). ले (सं.ला-) लीक वेताप. लीटी, मर्यादारेखा, [गणना] लीछ आरारा(व). लीची, पूर्व हिंदनुं फळ-झाड ?

लीजइ *उक्तिर. तेरका. "लावल. वसंफा.* लेवाय (सं.ला-); लावल. लेजो, लो

लीजतउं *उक्तिर.* लेवातुं (सं.लीयमानम्) **लीजीडं** *आनंस्त.* लईए लीट वळी जुओ वळी आडी लीट **लीण.** लीणड *आनंस्त. आरारा. चारफा*. नेमिछं, प्रबोप्र, वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). लीन, मग्न, डूबेलुं **लीणउ** तेरका. लीन थयुं (सं.लीन+क) **लीण्यो** *आनंस्त* लीन ययेलो लीघउं अखाका. *"नरका*. पकडेलं. [झलायेलूं, वशमां लेवायेलूं] **तीव** *पष्टिप्र.* लींब् (सं.निम्ब्) **लीयउ** गुर्जरा. वीसरा. लीधुं **लील** *लावल*. सुंदर, [आनंदभरी, मंगल] **लीलज** *नरप*. निर्लञ्ज. बेशरम लीलवट मदमो. ललाट (सं.*निललवट्ट, प्रा.निडल+वट्ट); जुओ लिलवट **लीलाट, लेलाट** चंद्रवा. ललाट **लीलावती** विमप्र. ए नामनो गणितग्रंथ **लीलावपु** अखेगी. लीला माटे धारण करेलुं शरीर सिं.] **लीलां** कादं(शा), नेमिछं, वाग्भवा, लीला-पूर्वक, रमतमां, शोभापूर्वक, सिंदर रीते]

लीलां लिहिर कादं(शा). लीलालहेरथी, [रमतमां अने लहेरथी] (सं.लीलया+ लहरी)

लीह आरारा. ऊक्तिर. शृंगामं. रेखा, [लीटी, लकीर]; कृष्णबा. रेखा, मर्यादा; प्राचीसं. हरिख्या. मर्यादा, [मलाजो]; * गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. *लावल. विमप्र. **विराप.* आडो आंक, हद, पराकाष्ठा [सं.लेखा]

तीह कढावुं जुओ कढावुं लीह तीहडी ऋषिराः रेखा, लीटी

लीह वळी नरका. हद आवी, अंतिम कक्षाए पहोंच्युं [पराकाष्ठा आवी]; जुओ वळी आडी लीट

तीहा शृंगामं. लीटी (सं.लेखा) तीहाला *उपवा. [संयमधर्मनी मर्यादा] तीही अखाका. नंदव. दशस्कं(१). रेखा, तीटी; हद, मर्यादा

लीही बळवी *दशस्कं(१).* हद थवी, पराकाष्ठा आववी

लींबु लहेकावतां जुओ लहेकावतां लींबूई आरारा(व). लींबुडी (सं.निंबूक)

लुकइ अंबरा. उक्तिर. छुपाय; वीसरा. छुपाय, ढंकाय; *प्राचीफा. [अदृश्य थाय, शमी जाय] (दे.लुक्क) [रा.]; जुओ लूकी

नुकी आरारा. स्तेली (दे.नुंक)

लुखस *अखाका*. खजवाळ आवे एवो चामडीनो एक रोग

खुखं वित्तसं. निस्तेज; सार विनानुं [सं.रूक्ष] खुठइ उक्तिर. आळोटे, झूले, ढळे (सं. सूठति)

जुणइ अंखरा. उक्तिर. कापे (सं.लुनाति); जिनरा. वीसरा. कापे, लणे

तुणाइ उक्तिर. गुर्जरा. विराप. फपाय, लणाय, लणवामां आवे (सं.लुनाति) तुणावइ उक्तिर. कपावे

ऋषिरा. लुब्ध, लुबधउ आरारा. त्तलचायेलो, लोभायेलो **जुललूल** ऐतिका. झुकीझूकीने, [लळीलळी-ने] **लुंकडि** *उक्तिर*. लोंकडी [दे.लुंकडी] लंकडी (लंडी) शंगामं. *लोंकडी **लंचड** उक्तिर. पंचवा. तोडे, चूंटे (सं. लुंचति); जुओ लोच तुंचन *नरका*. तोडवानी के चूंटवानी क्रिया **लंडण *** *लावल*. [ओवारवानी क्रिया] [रा.] **लुंछणडइ** *गुर्जरा*. माथे उतारीने नाखवुं ते, न्योछावर करवं ते (सं.न्युच्छनकं) **त्रुंडिणी** *वाग्भबा*. कूतरी **लुंडी** जुओ लुंकडी **तुंडीमुहा** विमप्र. *दासीना मोढा जेवा मोदावाळा **त्रुंविय** प्राचीसं. लूम, [झूमखुं] [सं.लुम्ब] लुअडी लावल. [लू, गरम हवा], *वराळ, गरमी लुकी प्रद्युचु. छुपाईने (दे.लुक्क); जुओ लुकइ **तुगड** गुर्जरा. विकास तुगडां लुणकयरा उक्तिर, मीठायुक्त केरडां (सं. लवण-करीराणि) लुणिबा उक्तिर, लणवा, कापवा सिं. लुनाति] **लुध** अंबरा. लुब्ध **लुधडी** *प्राचीसं*. लुब्ध, आसक्त लुधी जिनरा. लुब्ध, आसक्त **लुमे ने झूमे ***नरका. [लालित्यपूर्वक झळूंबता रहे, छवायेला रहे]

ल्य *प्राचीसं*. गरम हवा, ल् **जूतता** प्रेमाका. ललुता, लोलुपता लुसइ गुर्जरा. नलरा. विक्ररा. *षडाबा. हम्मीप्र. लूंटे (सं.लूषयति) **लुसड** प्राचीसं. लूंटारु लुहड् कादं(शा). गुर्जरा. जिनरा. लावल. लुछे (दे.) **लहनु ध**डाबा. लूछवुं ते (दे.लुह) **लुंछणडा** **विमप्र*. [ओवारणां] [रा.] [सं. न्युच्छन **लंडणा** *ऐतिका.* न्योछावर थवुं ते, [ओवारणां] **लूंट्युं लंक** अखाका. लंका लूंटी, घणो फायदी मेळव्यो **लूंठ** अभिक. नकामी, मोटी, [अतिशय] [रा.लूंठौ] **लुंठाइ** *प्रेमाका.* जबरदस्ती **लूंसइ** *गुर्जरा*. लूटे (सं.लूषयति) **लुंसाविया** कृष्णवा. लूटाच्या **ले ***अखाका. अखाछ. लय, [विलय] **ले** *नरका. प्रेमाका*. लेह, लगनी लेइ जुओ लीइ लेड आनंस्त. उक्तिर. देवरा. नलाख्या. लईने **लेउं बलिहारडी** नरका. बलिहारी जाउं. वारी जाउं **लेख** *अखाका. अखाछ.* लेखुं, गणतरी **लेखड** *ऐतिका*. हिसाबमां लेखण, लेखणि उक्तिर. जिनरा. लावल. लखवानी कलम (सं.लेखिनी)

लेखवइ *आरारा.* लखे, लखी आपे; *उपबा*. लेखवे, गणे (सं.लेख्य- परथी) **लेखसाला** *प्राचीफा*. निशाळ (सं.लेखशाला) **लेखा मांहे** *चित्तसं*. लक्षमां. लक्ष्य रूपे **लेखा बनुं** *मदमो*. लेखा विनानुं, असंख्य **लेखं** *नरका*. लेखामां लउं, सफळ मानुं **लेखं ये** *चित्तसं*. समजाय लेखे पाडइ जुओ पाडइ तेखे लढा *अखाका.* गणतरीमां लीधा. [गणनायोग्य – मर्यादायुक्त जणाया] **लेख्यउ ***वीसरा. [लखेलुं] लेणहार. लेणहारु उक्तिर. उपबा. नलरा. लेनार लेढ *प्राचीफा. [लगाडेला, पहेरेला] [सं. लीढ लेयइ कादं(शा). गुर्जरा. ले (सं.ला-) लेलाट दशस्कं(२). प्रेमाका. ललाट, कपाळ; जुओ लीलाट **लेलीन** अखाका. अखेगी. लयलीन, एकाग्र **लेव** उक्तिर. लेप; प्राचीफा. स्पर्श, लिप, लागवुं ते; डाघ] लेवडदेवड विमप्र. लेवडदेवडमां लेवमय तेरका, लेप्यमय, माटी आदिथी ढाळेली (मूर्ति)] **लेवि** *आरारा*. लईने [सं.ला-] **लेशाल, लेसाल** अंबरा. उक्तिर, जिनस. *प्राचीसं. षडाबा.* निशाळ (सं.लेखशाला) लेसालीउ, लेसालीयउ *प्राचीफा. प्राचीसं*. निशाळियो लेसूडउ उक्तिर. गूंदानुं झाड (सं.लेख-

शाटक) [रा.] **लेह** अखाका, लगनी लेहड आरारा. देवरा. ले, मेळवे, प्राप्त करे; *आरारा.* लई जाय **लेहउ** उक्तिर. लेखक, [लहियो] **लेहां** *उषाह. गणतरी*, [गर्ज़्] (सं.लिख् परथी) लेहेर कामा(शा). लहेरो (समुद्रनी) **हेंची** *मोसाच*, बेवडा पडवाळी रोटली **लोअणां** ऋषिरा. आंख (सं.लोचन) **लोइ** *आरारा. नलरा. प्रद्युचु.* लोक, [लोको] **लोड** *जिनरा* लोही **लोइ (देवुलोइ) *** ऐतिका. [देवलोकमां] लोई उषाह. ऋषिरा. लोकमां, [भूवनमां, जगतमांी **लोई** *प्रेमाका.* लुओ, पींडो लोक-उजाडो *प्रेमाका*. लोकोनी पायमाली **लोकट** *लावल.* *लोको **लोकडां** *प्रेमाका*. लोको **लोकणरओः** **ऐतिका*. [जोवानो] सिं. लोकन]; जुओ हीयालोकणी **लोक पार्हि** जिंकर, लोको पासे लोकसंज्ञा आनंस्त. विचार्या विना लोकाचार-नुं अध अनुसरण **लोकिक** उपबा. सामान्य (सं.लौकिक) **लोग** वीसरा, लोक **लोच** *उपवा. गुर्जरा.* वाळ खेंची काढवा ते (सं.लुंच); जुओ लुंचइ **लोचउं ****षडाबा.* [प्रकट करुं] [सं.लोच्] **लोट** *आरारा*. लोटवुं ते, आळोटवुं ते;

दशस्कं(१). लावल. आळोटता, लोट-पोट, लोथपोथ

लोटइ उक्तिर. लेटे, सूवे; आळोटे; नेमिछं. लावल. आमतेम फरे; गुर्जरा. आळोटे (सं.लोटति)

लोट कीयो प्रेमाका. [लोटपोट कर्यो], जमीनदोस्त कर्यो, [विनाश कर्यो] लोटण विमप्र. लोडण नामनुं स्थळ लोडइ लावल. "वसंफा. "वसंफा(ल). "वसंवि. वसंवि(ब्रा). आमतेम घूमे, फरे (सं लट). "वराइ विमे नमन

फरे (सं.लुट्); *जषाह. [नमे, नमन करे]; कादं(शा). हलावे (सं.लोटयति); *लावल. प्राप्त करे [रा.]

लोडाभाई *पंचवा*. नानो भाई (सं.लधुक); जुओ लोढीओ

लोडावइ शृंगामं. हम्मीप्र. हलावे **लोड** अखाका. लावल. दरियानी भरती[नां मोजां]

लोब्ड *उक्तिर.* वाटवानो पथ्थर, लोढणियो (सं.लोष्टकः)

लोढतं *षडाबा.* लोढतो, कपासिया अने रू जुदां पाडतो (सं.लोष्टते)

लोडी वेताप. नानी [सं.लघुक+डी]

लोढीओ, लोढीयो मदमों. लोटियो, बोडो ?, [कृश, ठींगुजी]; वेताप. नानो; जुओ लोडाभाई

लोय प्रेमाका. शब

*लोब नरप(द). लोंदो, लचको लोबीइं अंबरा. पारधिए (सं.लुब्धक) लोषड़ चारफा. विनाश करे, [मिटावे]; हरिख्या. ओळंगे [सं.लोपयति] लोबरडी नरका. लोबडी, बारीक ऊननी ओढणी (सं.लोमपट्टी)

लोबरी दशस्कं(9). प्रेमाका. लोवडी, कामळी (सं.लोमपटी); जुओ लोवडी लोभे नरका. लोभ पामे, [लोभाय,

लोभे *नरका*. लोभ पामे, [लोभाय, आकर्षाय]

लोमस पंचवा. एक ऋषि, पुष्कळ मोटा लोम(वाळ)वाळा (सं.लोमश)

लोमंश अखाका. एक ऋषि [सं.लोमश] लोय *अखाका. तेरका. लोक

लोयण *आरारा. तेरका. जिनरा. नरका. प्राचीफा.* लोचन. आंख

लोयेण *चंद्रवा*. लोचन, आंख

लोलक-लोल मदमो. लोलकनी जेम लटकता — [झुलता]

लोला कादं(शा). लोचा; षष्टिप्र. समज विनाना, अज्ञानी (सं.लोल)

लोवडी *उक्तिर. वीसरा.* एक वस्त्र, कामळी (सं.लोमपटी); जुओ लोबरी

लोह *जिनरा*. लोभ

लोह *हम्मीप्र.* तलवार [के अन्य लोढानुं हथियार]

लोह (लोहरका) दशस्कं(१). लोढानुं हथियार; [लोढाना हथियारथी रक्षनार मादळियुं]

लोहकट सिंहा(शा). लोढानो सामान लोहकार विक्ररा. लुहार [सं.] लोहडउं उपवा. जिनरा. लोढुं (सं.लोह-) लोह न ऐतिका. लोभ नहीं
लोहिमू उक्तिर. लोढानुं (सं.लोहमयम्)
लोहरक्षा *प्रेमाका. [लोढाना हथियारथी
रक्षनारुं मादिळयुं]; जुओ लोह
लोहसांगल शृंगामं. लोढानी सांकळ
लोहार उक्तिर. लुहार (सं.लोहकारः)
लोहो *अखाका. चित्तसं. लोढुं
लौहडां उषाह. नानां (सं.लघुक)
ल्यख्याच्यो हस्तस. लखाच्यो
ल्यावइ कादं(शा). नलरा. नलाख्या. नेमिछं.
हस्तस. लावे, लई आवे [सं.लाित]
ल्ये चतुचा. लईने
स्हस्तण उक्तिर. लसण (सं.लशुनः)
स्हार नरका. लार, हार, पंक्ति; जुओ लाहार

व आरारा. अने
वइ जुओ लघु-वइ
वइ (वइ गया) *वीसरा. [चाल्या गया]
वइगरणा अंवरा. नलरा. व्यय उपर देखरेख
राखनार राज्यनो अधिकारी (सं.
व्ययकरण); जुओ वयगरणउ
वइघालि नेमिछं. *वघारीने
वइव विक्ररा. वाळंद, नापित
वइप वीसरा. वचन, वेण
वइर वसंफा. वसंवि. वसंवि(ज्ञा). वेर (सं.
वैर)
वइरागर, वयरागर *प्राचीफा. [हीरानी खाण]

*अंबरा.

वडरि. वडरी उक्तिर. उपबा. वडाबा. वेरी (सं.वैरी); जुओ बइरी वइरीया, वइरीअडा लावल. वेरी, दुश्मन बहसदेउ प्राचीसं वैश्वदेव, विश्वदेवने बलि अर्पवो ते **बडसाख** *उक्तिर*. वैशाख **बडसार** *तेरका.* वैशाख वइसाही तेरका. वैशाखी, [वैशाख मासनी] बहुंगण उक्तिर. उपबा. धडाबा. वेंगण. रींगण (दे.) **बउल** गुर्जरा. यसंवि(ब्रा). बकुल वृक्ष, बोरसली; जुओ बउल वउलइ जिनरा. वीते. पसार थाय वउलिसिर *वसंवि(ब्रा). हरिवि. बोरसली (सं.बकुलश्री); जुओ बउलिसरी वउलाऊ जिनरा. [सुरक्षित रीते] पहोंचाड-नार, विोळावो े वउला- (वउलाव-) वीसरा. विदाय आपवी वडलावड् आरारा. गुर्जरा. नलरा. वळावे, विदाय आपे (दे.वोलाव) **बउलीया** *आरारा.* वळ्या. पसार थया वकार *ग्रेमाका. [विकार, विकृति, व्याधि] वकारे अखाका. प्रेमांका. मदमो. उश्केरे, पडकारे: जुओ वीकारे वकृति नलरा. विकार (सं.विकृति) **वकतण** *षष्टिप्र.* वक्रता, वांकापणुं (सं. वक्रत्वन) **"वह्य चिह्य** *ऐतिका.* **चक्र, मंडल, शासन**-प्रदेश]

(सं.वज्राकर):

*विमप्र. रलविशेष, हीरो

प्राचीफा.

वक्खाण- *प्राचीसं*. वर्णन करवुं, विवरण करवुं

वक्खाण *प्राचीसं.*्व्याख्यान, [धार्मिक प्रवचन]

क्क मदमो. वक्त्र, मुख

क्की *प्रेमाका.* वखत दर्शाववा माटे वागती, [समयसमयनी] [अ.]

बखतबन्त *ऐतिका*. भाग्यवान [फा.बख्त]; जुओ वडवखती

वस्त्राण आरारा. उक्तिर. कामा (त्रि). वीसरा. व्याख्यान, वर्णन, कथन; नलरा. धार्मिक प्रवचन; षडावा. विवरण, समजूती; गुर्जरा. प्रशंसा; [धार्मिक प्रवचन; सविस्तर वर्णन; विवरण]

वखाणड आरारा. चारफा. षडाबा. विवरण करे, समजावे (सं.व्याख्यान परधी); उपबा. गुर्जरा. प्रशंसा करे; [वर्णवे, विस्तारथी कहे, विवरण करे]; अखाका. आरारा. उक्तिर. प्रेमाका. कहे, वर्णवे

क्खारीआ विमप्र. वखार राखनारा वेपारीओ [दे.वक्खार परथी]

बखेरा जुओ वछेरा

वगतो अखाका. जुदो; जुओ वगूतो

वयत्य-वर्गुवण *अखाका. [भिन्नत्वथी उत्पन्न थती गूंच]

विषयो प्रेमाका. [पक्षपाती], हितेच्छु

क्गूचे अखाका. गूंचवाय, [हेरान थाय] [सं.विगृप्त परथी]; जुओ विगृचइ

बगुता *नरप(द). [दुःखी थया]; जुओ वगूतुं, विगुता **बगूए** अखाका. दुःखी करे; * प्रेमाका. [वगोवे, अपमानित करे]; जुओ विगुआणा

बगूतुं * नलाख्या. [दुःखी थयुं]; नरका. दुःखभर्यु [थयुं]; जुओ वगुता

वगूतो (वगतो, व्यगतो) *अखेगी. [जुदो, अळगो]

वगूत्यो * नरका. [*वगोवायो, *गूंचवायो, *लपटायो]; जुओ विगूतो

वगे चित्तसं. ठेकाणे

बगोयुं प्रेमाका. दु:खी कर्युं; वगोव्युं, बदनाम कर्युं; वगोवायुं, बदनाम थयुं

बगोरइ *गुर्जरा. *विराप. बगाडे, हानि पहोंचाडे, नष्ट करे (सं.विकुर्विते)

बध *विमप्र*. वाघ

वधरंडुं सिंहा(शा). वांधो, विघ्न

बघरां *प्रेमाका*. विघ्न, वांधा **बघेला** *प्राचीसं*. वांधेला

वचखण विमप्र, विचक्षण

वचनगस्त (वचन गस्त जाशे नही) *मदमी*.

-, [वचन फरशे नहीं] [फा.गश्त=फरवुं ते, भ्रमण]

वचनगोचरें आनंस्त. वचनप्रत्यक्ष रीते, वचन द्वारा

बचाइ *गुर्जरा.* वंचाय (सं.वाचयति)

वचीक्षण कामा(शा). विचक्षण

क्चीत्र कमा(शा). विचित्र

वद्यड् *गुर्जरा. प्राचीसं.* जाय (सं.व्रजति)

वच्छ जिनरा. तेरका. देवरा. षडाबा. वत्स, पुत्र, बेटो; प्रेमाका. वाछरडुं (सं.वत्स)

चुत्र, बटा; प्रमायाः पाउरचु (रा.मरा) **क्छनाग** *उक्तिर*. ए नामनो एक झेरी छोड (सं.वत्सनाग)

वच्छर आरारा. गुर्जरा. तेरका. वर्ष, संवत्सर (सं.वत्सर)

क्छरूव *प्राचीसं*. वाछरू (सं.वत्सरूप) **क्छल** *आरारा. तेरका. षडावा.* वत्सल, स्तेह राखनार

क्छे, विष्ठ, विष्ठे *आरारा.* वत्से, दीकरी (संबोधन)

वष्ठ ऐतिका. ऐतिरा. प्रद्युचु. विक्ररा. वत्स, दीकरो

वष्ठ, वाष्ठ प्राचीसं. वाछडो (सं.वत्स)

वष्ठडउ वीसरा. वाछडो (सं.वत्स-)

बछर ऐतिका. जिनरा. वत्सर, वर्ष

विष अंबरा. उषाह. गुर्जरा. विक्ररा. वत्से, दीकरी, बेटी (संबोधन); जुओ वच्छे

बडीआत *विमप्र*. बहारगामथी खरीदवा आवनार खातेदार, [आडतियो]

वडीयायित *उक्तिर*. विषयात, आडितयो (*सं.यस्तुवित्तः)

बडे जुओ वच्छे

बष्ठेदि गुर्जरा. *विमप्र. उतावळे, जलदीथी; जुओ विछेदि

बछेरा (बखेरा) * प्रेमाका. [बखेडा, घांधल-धमाल]

बछेडे *कामा(शा). *प्रेमाका. [छोडावे] बछोडइ गुर्जरा. छोडे, छूटां करे [सं.वि+छर्द्] बछोयां प्रेमाका. वछोड्यां, अळगां कर्यां

बछोह *कामा(शा). सिंहा(शा). वियोग [दे. विच्छोह]

बछोबुं गुर्जरा. प्रेमाका. छुटुं पडेलुं, विखूटुं पडेलुं [दे.विच्छोह] बिष्ठ नेमिछं. वहाली, [लाडकी] [सं.वला] बज उक्तिर. ए नामनी एक औषधीय वनस्पति (सं.वचा)

वज वीसरा. वज्र

क्जरमे कामा(शा). वज्रमय, [वज्र जेवी, कठोर]

वजा "अखाछ. [रीति; दशा]; मदमो. व्यवस्था, [गोठवण, रचना] [अ.वजअ]

क्जाडड् जिनरा. लावल. वगाडे, बजावे क्जे अखाछ. मळतर, [लाभ, वळतर] [अ. वजअ]

बज़इ *गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल.* वागे, अवाज करे (सं.वाद्यते)

वज्ञमओ गुर्जराः वज्रमय

वजरइ तेरका. प्राचीसं. कहे, वर्णवे (दे.)

विष्ट्रा (?) तेरका. ?

क्जूमइ विक्ररा. वजूमय

क्जूसरीरु गुर्जरा. वज्र जेवुं शरीर

वझडइ प्रद्युचुः ?

बटड विमप्र. वट्यो, -ना करतां वधी गयो

वटक मा नरका. रीस करीश नहीं, [छेडाईश नहीं]

बटकबुं अखाका. छटकवुं, [दूर थवुं, प्रतिकूळ थवुं]

बटलोय उपबाः एक धातुपात्र, [तांबडी] (*सं.वर्तलोह)

बटवालनुं उक्तिर. [*वोळावियापणुं] (सं. वर्लपालन]; जुओ वाटवालणुं

बट्युं अखाछ. ओळंगवुं, [आगळ जवुं]; [अवुं, जतुं रहेवुं]; *प्रेमाका.* जवुं, चाल्या

जवुं; *अखाका*. ओळंगी जवुं, जिवुं, आगळ जवुं] वटंबे अखाका. विडंबे. संतापे बटाह (एकवटाह) *जिनरा. टिक, व्रत, नियमी वटेवाहू गुर्जरा. वटेमार्गु, प्रवासी (सं. वर्सकवाहकः) **बटेसारु** *प्रेमाका*. वटेमार्ग्, मुसाफर **बर्ड** *ऐतिरा. प्राचीसं. विमप्र*. वाट, मार्ग (सं.चर्त्स) **बहुंतर** जिनरा. वर्ततो. रहेतो **बटघो** चित्तसं. नीकळी गयो. चाल्यो बड आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. मोटुं; हरिख्या. मोटूं, वृद्ध (दे.वड्ड) वडइ वीसरा. -नी बराबर; -थी, वडे [-ना बदलामां **बडउ नेसालीयउ** *प्राचीसं*, वडो निशाळियो **बडभागी** देवरा. मोटा भाग्यवाळो (हिं. बडभागी) **वडवखती** *ऐतिरा.* विख्यात, मिहाभाग्य-शाळी]; जुओ बडवखती, वखतवन्त वड वेगि गुर्जरा. विराप. मोटा वेगे **वडहव** *सिंहा(शा)*. आजानुबाहु, [मोटा हाथवाळो रे **बडा**उ *चंदवा*, टादो **वडाउओ** *वेताप.* वडील, वडवी, [दादो], [मोटो] **यहार्यु** *दशस्कं(१)*. शेखीखोर, झघडाळू

वडीआं लावल. खाद्यविशेष, वडी वडी वार चतुचा. विक्रच. घणी वार वडी वारनी प्रेमाका. क्यारनी, घणा वखतथी बडु लावल. वडो, मोटो [दे.वड्ड] बद्ध वीसरा. वडो, मोटो दि.वड्ड] वड्डिया जुओ वुट्टिया **वढारा** *प्रेमाका*. वढकणा, झघडाळू वढी गुर्जरा. झघडो करी, लडी (*प्रा.विढइ) वण जिनरा. [शरीरनो] वर्ण, [एने नकी करतो नामकर्मनो एक प्रभेदो जि.ो **वण** *आरारा. गुर्जरा. तेरका*. वन **वण** *तेरका*. एक वनस्पति, किपास्री (प्रा.वुण); जुओ वुंण **क्णखंडु** *आरारा*. वनखंड, वनप्रदेश **क्णचर** गूर्जरा. वनवासी (सं.वनचर) **वणज** *नरका. प्रेमाका.* वेपार (सं.वाणिज्य) वणजारडी, वणजारी, वणिजारी प्राचीफा. विणकनी - वेपारीनी स्त्री (सं. वाणिज्यकारक) वणनिर्म्यां चित्तसं. वणनिर्मेलां, [मिथ्या] **वणफल** *षडाबा*. वन्फल **वणमेल्युं** चित्तसं. वणमेळव्यूं, मेळववानो प्रयत्न न करवो पड्यो होय ऐवं **वणराइ** गुर्जरा. तेरका. वनराजि वण**ो (बुध्यवणठो)** अखाका. [बुद्धि] नाश पामी छे एवो [सं.विनष्ट] वणराय आरारा, वनराजि **वणवर्ड** *उक्तिर*. वणवुं ते, वणाटकाम दि. वुण परथी] **वणवासु** *गूर्जरा.* वनवास

बडी आर्ड विमप्र. मानी मा

बडी उक्तिर, दडी (सं.वटिका, वटी)

वणसइ तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. वसंफा(ल). वसंवि. "वसंवि(ब्रा). वनस्पति

बणसमारी अखाका. साफ कर्या वगरनी बणसे अखाका. चित्तसं. नरका. नाश पामे [सं.विनश्]

बणसाङ्गुं *प्रेमाका.* नाश पमाङ्गुं **बणस्सइ** *गुर्जरा.* वनस्पति

वणहडीउ [चणहडीउ] उक्तिर. [*कोई प्राणीनाम] [सं.चणकवर्तकः]

बणारिस उक्तिर. प्रद्युचु. वाचनाचार्य, [जैन साधुनी एक पदवी]

वणांतरि षडाबा. अन्य वनमां (सं.वनांतरे)

वणिउत्त *प्राचीसं***. वणिक-पुत्र**

वणिग *आरारा.* वणिक (सं.वणिज्)

विणज *आरारा. उक्तिर*. वाणिज्य, वेपार **विणज**- *प्राचीसं*. वेपार करवो

बणिजारउ *गुर्जरा. प्राचीसं*. वणजारो (सं. वाणिज्यकारक)

वणिजारी जुओ वणजारडी

विणयर *दशस्कं(१). प्रेमाका.* एक वनचर प्राणी

वणी उक्तिर. नानुं वन, वाटिका (सं.वनी) वणीमग उक्तिर. मागण, भिखारी (सं. वनीपक)

वत आरारा. वात

वतपति विमप्र. व्युसित्त, [कलाकौशल] वतपतीआला *विमप्र. [कलाकौशलयुक्त]; जुओ वितपतिआला

यतंस *प्राचीसं*. अवतंस, [आभूषण]

वतागरो अखाछ. अंगवि. वैतरो, [वतीथी काम करनार, सेवक], मजूरियो वतांगरां प्राचीसं. काम करनारां (*सं.वस्तु) वती आरारा. ने लीधे, न्थी वतीत आरारा. व्यतीत वतुं कर्पूमं. कामा(त्रि). नरका. नरप.

बतुं कर्पूमं. कामा(त्रि). नरका. नरप. प्रेमाका. विक्ररा. हरिख्या. चींघेलां काम, सेवा

क्त *आरारा. उषाह.* वात (सं.वाता) **वत्तंति** *आरारा.* वृत्तांत **वत्ता** *आरारा.* वात (सं.वाता)

वत्यु ऐतिका. वस्तु

वत्सलभगतइ आरारा. स्नेहभक्तिथी

बन्नेक ग्रेमाका. श्रेष्ठ; विरुद्ध [सं. व्यतिरेक]; जुओ विन्नेक

वयूअउ उक्तिर. चील, टांका के वथवानी भाजी (सं.वास्तुकम्)

वदीत ऐतिका. प्रसिद्ध [सं.वदित]

वदीतज गुर्जराः नेमिछंः प्राचीफाः प्राचीसंः लावलः प्रसिद्धः, प्रख्यात (सं.विदितक)

वहाँहं *लावल. [अवाज, ध्वनि – कोई वाद्यना – वडे] [सं.वाद]

बद्धऐ *ऐतिका.* वृद्धि पामे

बद्धावणउ प्राचीफा. वधामणुं, [व<mark>घाई,</mark> अभिनंदन] (सं.वर्द्धापन)

वदावड् गुर्जरा. वधावे, स्वागत करे (सं. वर्धापयति)

बद्धावउ *चारफा.* वधाइ लावनार, बधैयो (सं.वर्धापक)

वधाअइ उक्तिर. वधाववामां आवे, स्वागत

करवामां आवे (सं.वर्ध्यते) **वधामणउं ****गुर्जरा.* [आनंद – खुशीना समाचार] (सं.वर्धापन)

वधारड, वध्यारड आरारा. वधामणी आपे (अप.वद्धार); प्राचीफा. अभ्युदय करे (सं.वर्ध+कार); नलाख्या. कापे (सं.वर्ध उपरथी)

वधावी तेरका. वधावनारी, वधामणी आपनारी (अप.वद्धविय, प्रा.वद्धविया, सं.वर्ध्+आप्+इका)

वधातु नेमिछं. लावल. वधामणी — शुभ समाचार आपनार, वधामणियो विध आरारा. विधि, प्रकारे वधेसिइं नेमिछं. वध करशे वध्यारइ जुओ वधारइ

वनकल कादं(शा). वल्कल (*सं.वनकुल) [सं.वन+दुकूल]

यनकुळ, यनकूळ दशस्कं(१). प्रेमाका. सिंहा(शा). वल्कल, वनमां पहेरवानां वृक्षनी छालनां वस्त्र [सं.वनदुक्तूल] यनखंड आरारा. वीसरा. वनप्रदेश [सं.] वनचर गुर्जरा. वनवासी, [शिकारी] (सं.) यनदेव्या प्रेमाका. वननी देवी यनपाल आरारा. वननी रक्षक [सं.] यनस्वाति, यंदरवाल गुर्जरा. [मंगल प्रसंगे घरना बारणे लटकावातुं] पांदडांनुं तोरण (सं.वन्दनमालिका); जुओ वन्नरमाल

यनराज *आरारा*. वनराजि. वनराई

वनवीची प्रेमप. वननो मार्ग [सं.]

थनसंपद्व *वसंवि. वसंवि(ब्रा)*. वनसमृद्धि

वनंतरि, वनांतरि *गुर्जरा. [वनमां] [सं. वनान्तरे]; जुओ वनांति

वना जुओ दनो

वनास वीसरा. बनास नदी

वनांति (वनांतिर) *विराप. [वनमां] [सं. वनान्ते]; जुओ वनंतरि

वनि *आरारा*. वर्णे, रंगे

विनयां *ऐतिका.* *आभूषणविशेष, [*बन्यां, *शोभ्यां, *सज्यां] [सं.वन्]; जुओबनया

वनी गुर्जरा. नानुं वन (सं.)

वनीता प्रबोप्र. लई जवाई (सं.अपनीता) [सं.विनीता]

वने *चतुचा.* विनय

वनो अखाछ. वर्ण, [रंग]

वनो नंदव. विनय; प्रेमाका. विनंती, [अनुनय, आदरभक्ति]

वज्ञ *उषाह. तेरका*. वान, वर्ण, रंग **वज्ञ** *आरारा*. वन

वज्ररमाल, वज्ररवाल, वज्ररवालि अंवरा. आरारा. शृंगामं. द्वार पर लगाडातां पांदडांनां नंगलसूचक तोरण (सं.वंदन-माला, वंदनमालिका); जुओ वनरवालि

विश्वाह *ऐतिका.* वर्णन कराय छे वजी *आरारा.* वर्णी, वर्णवाळी

वजीयए गुर्जरा. वर्णवाय छे (सं.वर्ण्यते)

वपन *नरका. प्रेमाका*. हजामत, [मुंडन] [सं.]

वप्ररीत चंद्रवा. विपरीत

वमइ अखाछ. उक्तिर. काढी नाखे (सं.

वमति)

वमाल तेरका. कोलाहल, खळभळाट (दे.)

वम्मह प्राचीसं. मन्मथ, [कामदेव]

वय- श्राचीसं. जवुं [सं.व्रज़]

वय तेरका. समूह (सं.द्रज)

वय प्राचीसं. व्रत

वयगरणं अक्तिर. खर्च खातुं संभाळनार राज्याधिकारी (सं.व्ययकरणक); जुओ यइगरणा

वयण अखाका. उषाह. गुर्जारा. जिनरा. तेरका. नरका. प्रबोप्र. प्रेमाका. हरिवि. चचन, वेण; वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वचन, आदेश

वयण आरारा. उषाह. कृष्णवा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रबोप्र. लावल. हरिवि. वदन, मुख

वयणरयणखाणी लावल. वचनरूपी रत्नोनी खाण जेवी

वयणलां नेमिछं. लावल. वचनो

वयणि, वयणी *आरारा*. वचनवाळी

वयणी आरारा. वदनी, वदनवाळी

वयणी चतुचा. चोटलो (सं.वेणी)

बचर उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). विराप. वेर (सं.वैर)

वयरणी आरारा. वैरिणी

वयरागइ आरारा. वैराग्यथी

वयरागर जुओ वइरागर

वयरि, वयरी उक्तिर. उपबा. वेरी (सं.वैरी)

षयरी आरारा. गुर्जरा. लावल. वेरी, दुश्मन (सं.वैरिन्) वयस शृगामं. पंखी (सं.वयस्)

वयसारि जिनरा. बेसाडी [सं.उपविश्]

वयेण *दशस्कं(२.)* वेण, वचन

वर प्रेमाका. वीसरा. हरिख्या. वरदान (सं.)

वर तेरका. नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लायल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा).

षडाबा. उत्तम, सुंदर, श्रेष्ठ

वरअंगि वसंफा. वसंवि(ब्रा). सुंदर शरीरवाळी स्त्री (सं.वरांगी)

बरइ (वरइ पडइ) *आनंस्त. *लावल. [सफळ थाय, पार पडे]

वरइ पडइ जिनरा. सफळ थाय; जुओ वरय न पडस्ये

बरउ * वीसरा. [वरो, जमणवार, खर्चनो प्रसंग]

वरख, द्रख कामा(त्रि). वृक्ष

वरखति प्रदोध. वरसते

वरखा अखाका. प्रेमाका. वर्षा, [वरसाद]

वरग आरारा. वर्ग, समूह

बरगदु उक्तिर. [*सिंह के चित्तो] (सं. चराकर्षक) [रा.बरगडौ]

बरगां विक्ररा. एक प्रकारनुं वाजित्र, बणगां; जुओ बरगुं

वरचीउं *गुर्जरा*. विरच्युं, रचना करी (सं.विरचित)

बरजात्रा *दशस्कं(२)*. बरात, जान

वरटा-पति नलाख्या. हंस [सं.]

बरठ्या दशस्कं(२). वरस्या [सं.वृष्ट]

बरढ (वरढ बणउ) विकरा. वरेडुं, [वरत, दोरडुं], [*वात गूंथो, *योजना करो]

वरण *तेरका*. एक वनस्पति, [वरणो, वायवरणो] [सं.वरुण]

वरणइ नेमिछं. प्रेमाका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(बा). वर्णवे (सं. वर्णयति)

वरणक *आरारा.* वर्णन

बरणी * *नरका. *प्रेमाका.* [स्त्री] [सं.वर्णिनी; रा.]

वरत "मदमो. [व्रत]

वरत *मदमो. [वरते, थाय]

वरत चंद्रवा. [कोस खेंचवानुं] दोरडुं [सं. वरत्रा]

बरतइ *आनंस्त. ऐतिका. गुर्जरा.* प्रवर्ते, होय, रहे (सं.वर्त्)

वरतण अखाका. *अखाछ. चित्तसं. [वरतवुं ते], वर्तन, प्रवृत्ति, [आचरण, व्यवहार]

बरतणां *ऐतिरा*. लेखण, [कलम, वतरणां]

वरतणु, वरतनु वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुंदर शरीरवाळी स्त्री [सं.वरतनु]

वरतर काटिवउ उक्तिर. वरत – दोरडुं कापवुं ते (सं.वरत्राकर्तनम्)

वरता उक्तिर. दोरडुं, रांढवुं (सं.वरत्रा)

बरतारा *विमप्र. [कार्य करवुं ते, प्रयोग-कर्म] [रा.]

बरतांत *आरारा*. वृत्तांत

वरति अखाका. वृत्ति, [उद्यम, आचार, व्यापार]

यरित (निवरित) *देवरा. [निवृत्ति, विरिक्ति] **यरतीओ** मदमो. जैन यति; जुओ वर्त्तियो **वरतीक, वर्तिक** वेताप. वरितयो, जोगी,

साधु] [सं.व्रती]

वरतीयि कादं(शा). वरताय, थाय (सं.वृत्) वरते अखाका. रहे, [होय, अस्तित्व धरावे] वरत्ये अखाका. वृत्तिए [व्यापारे, उद्यमे] वरदिल *गुर्जरा. [वर, पित] (सं.वरदल; रा.)

वरधार आरारा(व). वरधारी, समदरशोष (सं.वृद्धदारु)

वननोला *ऐतिका. जिनरा.* विवाहार्थी के दीक्षार्थीनुं भोजनादि द्वारा थतुं स्वागत [ते माटेनो वरघोडो, फूलेकुं]; जुओ बन्नउला

वरमाल वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). मनोहर माळा (सं.वर+माला)

वरमित्त ऐतिराः उत्तम मित्र

वस्य गुर्जरा. वरद, कल्याणकारी, [अनुकूळ, योग्य] [रा.वरे]

वरय न पडस्ये जिनरा. सफळ नहीं थाय; जुओ वरइ पडइ

वरतु नलरा. विरलो

वरवर्णिनी *आरारा. [सुंदर स्त्री] (सं.)

वरव्येष *चंद्रवा*. सुंदर वेश

बरशात *दशस्कं(१). दशस्कं(२)*. वरसाद [सं.वर्षारात्र]

वरशोध्य *दशस्कं(१).* वार्षिक लागो, [वरसूंद]

वरशोंत प्रेमाका. वार्षिक लागो, [वरसूंद] वरसवियारणि उक्तिर. दर वर्षे वियानारी वरसीत गुर्जरा. वरसने अंते (सं.वर्षान्ते) वरसात उक्तिर. उपवा. नलरा. नलाख्या. विमप्र. सिंहा(शा). वरसाद (सं.*वर्षाद्र) (सं.वर्षारात्र)

वरसाल नलरा. वरसाद (सं.वर्षाकाल) वरसालउ अभिऊ. उक्तिर. ऐतिरा. प्राचीफा. षडावा. वर्षाऋतु (सं.वर्षाकाल)

वरसाळो *नरका. प्रेमाका*. वर्षकाळ, वरस जेटलो समय

वरसिउ प्राचीफा. वर्षपर्यंतनुं (सं.*वर्षिक) वरसोलां उक्तिर. वरसादनी साथे पडतां हिमखंड, करा (सं.वर्षोपल)

वरसोलां *नेमिछं. लावल.* खाद्यविशेष, [साकरनी मीठाई]

वरसोळी *दशस्कं(२)*. रसोळी [खूंध] वरह नलरा. वियोग (सं.विरह)

वरहति कितः. वसूकी गयेली; जुओ वहलि वरह वरो आनंस्तः इच्छित लो, यथेच्छ लो वराक प्रबोप्रः बापडो, बिचारो [सं.] वराकी कादं(शा). बापडी, बिचारी (सं.) वराटिका कादं(शा). कोडी (सं.)

वरासइ, वरांसइ, विरांसइ अखाका. अभिक्र. उक्तिर. *ऋषिरा. प्रेमाका. *हरिख्या. भ्रांतिमां पडे, भूल करे (सं. विपर्यस्यति); नरका. [खोटा] भरोसे रहे, भ्रांतिमां रहे

वरासज, वरांसज, विरांसजं, वीरांसजं आरारा. उक्तिर. कादं(शा). चतुचा. दशस्कं(१). प्रेमाका. वसंवि. वसंवि(ब्रा). *विमप्र. भ्रांति, भूल; नरका. [खोटो] भरोसो, भ्रान्ति; *प्राचीसं. [भ्रान्ति, मिथ्या] [सं. विपर्यास] वरासीयइ उक्तिर. भ्रांतिमां पडे, भूल करे (सं.विपर्यस्यते)

वरां *चंद्रवा. मदमो. सिंहा(शा)*. वार, [आवृत्ति]

वरांसइ जुओ वरासइ

वरांसउ, वीरांसउ कामा(त्रि). कामा(शा). "व्याकुळता, विमासण; जुओ वरासउ

वरांसर्ड *शृंगामं. [भ्रान्ति, भूल]

विरे आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्राचीफा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). उपर (सं.उपरि)

विरे तेरका. भले (सं.वरम्)
विरेट्ट आरारा. वरिष्ठ, उत्तम
विरेयाम *जिनरा. [श्रेष्ठ, *खरेखरं]
विरेस- तेरका. वरसवुं (सं.वर्ष्)
विरेस आरारा. तेरका. वीसरा. वर्ष
विरेसालय तेरका. वर्षाकाल, चोमासुं
विरोज लावल. वरीए, मेळवीए, मेळवो
वरीस पेतिका. अंगीकार — स्वीकार करी
वरीस विकरा. वरस; जुओ वरीस
विकरा. षडाबा. वरदान (सं.वरः)

वरु विमप्र. वरो, भोजननो उत्सव, [एनुं खर्ची

क्रुआयती *उक्तिर.* प्रणयी – विवाहार्थी द्वारा (सं.वरित्रा)

वरुठी विमप्र. लग्न बाद वर तरफथी आपवामां आवतुं जमण, [वरोठी] [*सं.वरजुष्टि]

वरुणाअशी प्रबोप्र.?, [(काशी पासे गंगाने मळती) वरुणा नदीथी] **वरुण** प्रेमाका. *कियाकर्स कराववा माटे

पसंदगी, [क्रियाकर्म कराववा माटे पुरोहितोनुं संमान] [सं.वरणी]; जुओ वरूण

बरुयो *चंद्रवा*. विरूप, वरवो **बरुवो** *प्रेमाका*. वरवो, बेडोळ

वस, वस्तु, वस्तुं गुर्जरा. चतुचा. वडावा. वरवुं, कदरूपुं, वांकुं (सं.विरूप)

वसण मदमो. पाणी [सं.वरुण]

बरूण नलाख्या. वरोणी, [वरुणी, ब्राह्मणीनुं संमान, एमने भेट] (सं.वरणी); जुओ वरुणि

बरेण *चंद्रवा.* वरेण्य, वरवा योग्य

वर्ख *प्राचीका*. वर्ष

वर्ख, वृख, व्रख चंद्रवा. वृक्ष

वर्णन-पोण *प्रेमाका*. वर्णन करवानी प्रतिज्ञा

वर्णव *चंद्रवा*. वर्णन

क्ष्णांवर्ण *आरारा*.जातजातनावर्ण[नालोको]

वर्णिका विमप्र. रंग [सं.]

वर्त चंद्रवा. व्रत

वर्तइ उपबा. चित्तसं. छे, होय छे, अस्तित्व घरावे छे [सं.वर्तते]

वर्तिक जुओ वरतीक

वर्तिवउ उक्तिरः वर्तवुं

क्र्तंड पडाबा. छे, रहे छे (सं.वर्तते)

वर्तिए (पाछड़ वर्तिए) यडाबा. [पाछां] वळतां, [पाछां होतां]

बर्तियो चंद्रवा. जैन यति [सं.व्रती]; जुओ वरतीओ

क्तीं *आनंस्त.* -मां रहेनारो

बर्त्य अखाछ. वृत्ति, [वृत्तिमां रहेवुं ते]

वर्षण *आनंस्त*. वरसाद

वर्षभारुंढ चंद्रवा. वृषभ — आखला उपर आरूढ

वलई लावल. वलय, गोळाकार, [*कांडुं]

वलउ *उक्तिर*. छापराना टेका माटेनो आडो स्तंभ (सं.वलक); जुओ वला

वलखी *आरारा. विमप्र.* गभरायेली (सं. विलक्षित)

वलिंग *ऐतिका.* वळगीने, पकडीने [सं. विलग्न]

बळ्ष *अखाका. अखाछ. रस्तो, [दिशा, बाजु] [सं.वलग्न]

वलण अभिकः. पाछां वळवुं ते

वळण करे नरका. पाछो फरे

बलतउ अखाका. चित्तसं. जिनरा. नलाख्या. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वळतो, सामो, जवाबमां, -ना बदलामां (सं.वलयत्); प्रेमप. "षडाबा. फरीने, [पाछो, पछीधी]

वलतुं फेरी आरारा. बीजी वार, [फरी वार]

वलवलड्ड प्राचीसं. अवाज करे; बकबक करे; आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. प्रेमाका. विराप. वलोपात करे, विलाप करे; जुओ बलबलीउ

वला *उक्तिर*. छापराना टेकारूप आडां लाकडां [सं.वलक]; जुओ वलउ

बला *लावल*. बाजु, तरफ

बलाई नरका. वळगी

बलाणय तेरका. देवालयमांनुं स्थानविशेष, [एक प्रकारनो मंडप] [दे.बलाणय]; जुओ बलाणा

बलाय *विमप्र*. वळाव्यो **वलात्ये** अखाछ. लालन करे. रमाडे वळावा अखाका. वळाविया, मुसाफरीमां साथे जता रक्षको के चौकियात वित उक्तिर, चामडी पर पडतो वळ, तेनी रेखा (सं.) **विल विल** *प्राचीसं*, वारंवार, वळीवळी वित नीसांणे घाय कृष्णवा. नगारा पर दांडीना प्रहारो थाय छे **वलीआ, वलीआं** *नेमिछं. लावल.* एक आभूषण, बंगडी, [बलोयां] वळी आडी लीट *प्रेमाका*, पराकाष्ट्रा आवी गई, [हद वळी गई]; जुओ लीह वळी **वलुधी** *देवरा.* लुब्ध, [मग्न] [सं.विलुब्ध] **बलुरी** *आरारा.* खणी, खोदी काढी; जुओ वलूरे वलुंघड, वळुंघड मदमो. हळे, आसक्त थाय] (सं.विलुब्ध); अखाका. वळगे; अखाछ, वलगे, [मग्न थाय]

बत्ति चंद्रवा. वळती, पछी वत्त्रे प्रेमाका. उतरडे, उझरडे; जुओ वलुरी बळूंषी नरका. वळगी, [चोंटी] (सं. विलुब्ध); नरका-२. घेरायेली, [-मां मग्न, डूबेली]; जुओ विरहवळूंधी

बले *नरका-२. प्रेमाका*. हालत, दशा, स्थिति; उपाय

वलो अखाछ. माखण न बंधावुं ते, [छास-मांथी माखण वीखराई जवुं ते]

वलोटज *उपबा. [केड कपर वींटाळातुं वस्त्र] वलोतां नरका. वलोवतां वल्गुली षडावा. एक रोग (सं.) वछउ प्राचीका. वहालो (सं.वल्लभ) वछकी हरिवि. वीणाविशेष [सं.] वलभ, वलभु गुर्जरा. विराप. [वल्लव], विराट नगरीमां भीमनुं नाम (सं.बल्लव) वल्लभी प्राचीका. गोवालणी, (सं.बल्लवी) वल्लव प्रेमाका. वल्लभ, पति वल्लव हरिवि. गोप (सं.बल्लवी] वल्लव हरिवि. गोपी [सं.बल्लवी] वल्लव गुर्जरा. वल्लभ, स्वामी, [प्रिय]; नरका. वहालो वल्लही गुर्जरा. नरका. वहाली (सं.वल्लभा)

वल्लही गुर्जरा. नरका. वहाली (सं.वल्लभा) ववराणी *कादं(शा). [वपराणी, नष्ट थयेली] (सं.व्यापार परथी)

क्वहर- *प्राचीसं*. वहोरवुं, खरीदवुं (सं. व्यवहर्)

ववहाररासि गुर्जरा. जीवोनो एक प्रकार [जे जगतना व्यवहारमां आवे छे] [जै.]

ववेक आरारा. विवेक, विचार वव्येक, व्यवेक चंद्रवा. विवेक, [विनय; परीक्षा; विवरण, समजूती]

वव्येत्र, बाबेत्र *चंद्रवा*. वावेतर

वशङ्तउ षडाबा. -ने लीधे (सं.वशतः)

वशीहर कृष्णवा. प्राचीका. नाग, विशयर (सं.विषधर)

वशेके अखाका. *विशेषे, *वधुमां; [*मुख्य-पणे, *तत्त्वतः]

वश्य *विराप*. *बची, *बेटी, [*आज्ञाधीन स्त्री, *दासी] (*सं.वत्सा) [*सं.वश्या] वश्य गुर्जात. -ने वश थईने वस विमप्र. वसा, [(ग्रहयोगना) अंश, भाग] वस तेरका. वश

वसणाहर *गुर्जरा. विराप*. वसनार

वसणु गुर्जरा. व्यसन

वसत *प्रेमाका*. वस्तु, चीज

वसन अखाका. आनंस्त. गुर्जरा. नरका. प्रेमाका. विराप. वस्त्र (सं.)

बसह कृष्णच. वृषभ

वसिंह ऐतिका. वसती

वसंतिइं *लावल*. चमेलीथी, [जूईथी] [सं. वासंती]

वसा वडाबा. चरबी, मेद (सं.वसा)

वसा सोइ चित्तसं. सो वसा, सो टका, संपूर्ण; जुओ विश्वा, वीस वसा, व्यसा

वसि आरारा. वशमां

वसिहर विमप्र. विषधर, नाग

वसीआंन कामा(त्रि). वसवाट

वसीट्ठी *ऐतिका.* *दूर, [*अळगा, *भिन्न, *विसर्जित]

बसीठ हम्मीप्र. संदेशवाहक, राजदूत (सं. विशिष्ट)

बसुधा दे वहेर, बसुधा दे देर प्रेमाका. पृथ्वीमां चिराड पडे, [पृथ्वी मार्ग आपे, पृथ्वी फाटी पडे, न बनवा जेवुं बने]; जुओ वहेर

वसुधारा प्राचीफा. आकाशमांथी देवकृत सुवर्णवृष्टि, [जिनदेवना पांच दिव्योनुं एक] (सं.) [जै.]

वसुहा ऐतिरा. विमप्र. तिंहा(म). वसुधा,

पृथिवी

वसुं चित्तसं. वस्युं

वत् (इहिविसूहिवि) *ऋषिरा. [सौभाग्य-वती स्त्री] [सं.अविधवा-सुधवा]; जुओ अहवसुहव

वसेक सिंहा(शा). विशेष

बस्त अखेगी. वस्तु, [वस्तुब्रह्म]; अभिक. पंचवा. प्रेमाका. रूपच. वस्तु, चीज

वस्तरी आरारा. विस्तरी

वस्तु चित्तसं. नरका-२. [मूल तत्त्व], ब्रह्म [सं.]

वस्तुगते अखाका. वस्तुतः, खरेखर तो वस्तुपणई आनंस्त. वस्तुपणे, यथार्थ रीते वस्ते अखाका. वस्तुमां (ब्रह्ममां); वस्तु (चीज) वडे

वह *उपबा. [मार्ग] [दे.विह]

वहइ आरारा. गुर्जरा. वहन करे, लई जाय, उपाडे, उठावे; *कामा(त्रि). नलाख्या. वीसरा. *षडाबा. चाले, गति करे, चाल्युं जाय; चतुचा. जाय, खेंचाय; उपबा. ऐतिरा. गुर्जरा. चतुचा. षडाबा. वहन करे, धारण करे, [धरावे], राखे; षडाबा. वहन करे, चिलावे, करे]; हिरख्या. निर्वाह करे, पार पाडे; वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). वहन करे, [भोगवे, अनुभवे] (सं.वह)

वहडी गई प्रबोप्र. चाली गई, [नष्ट थई] वहन्ति *ऐतिका. [धारण करे छे, उपाडे छे] वहल (?) तेरका. ?, [*बहुल, *खूब] वहिल उक्तिर. वसूकी गयेली; जुओ वरहिल

वहली जुओ वहिली **बहक्री** शीलक. जलदी **बहवावं** *प्रेमाका*. छेतरावुं वहंग हम्मीप्र. विहंग, उत्तम घोडानी एक जात वहाडि जिनरा. वहन करावी, [करावी] **वहाणीअ** *शृंगामं.* मोजडी (सं.उपानह) **यहार्तु** *नरका. प्रेमाका*. वार्तु, वगाडवुं वहावुं अखाका. नरका. *छेतरवं. [फोसलाववुं, मन मनाववुं]; नरका. छेतरवूं, [भ्रमणामां नाखवूं]; *प्रेमाका*. पटाववुं [सं.वाहयति] वहावो "प्रेमाका. विहाव्यो, छेतरायो] वहि आरारा. वहीमां, विधाताना चोपडामां **वहिकती** हरिवि, बहेकती **वहिचड़** * विमप्र. विद्यी वहिच्यी विमप्र. वहेंची, भाग पाडी सिं. विभज्यते रे **बहिडइ** *०शुंगामं*. विघटित थयां, अलग थयां वहिरमाण ऐतिका. महाविदेह क्षेत्रना विहर-मान तीर्थंकर वहिरउ ऐतिका. बहेरुं [सं.बधिर] बहिराव- नलरा. जैन साधुने कोई वस्तु दानमां आपवी, वहोराववुं [सं.व्यवह-] वंडिरोडी उषाह. समाधान ?

वहिली, वहली *उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा.*

वहिबूं उक्तिर. वहेवुं, [उपाडवुं] [सं.वह]

विहसी *ऋषिरा. [(सवार) प्रगट थई] [सं.विकस-]; जुओ विहसइ वहिसीय हरिवि. विकसित (प्रा.विहसिय) वही, विहि अभिक्त विधि, (विधात्री) वही प्रेमाका, लावल, हिसाबनो - नामानो चोपडो: उक्तिर. रोजिंदी नोंधनी चोपडी (सं.वहिका) वहीनी कामा(त्रि), वह्नि, अग्नि **बहु** *आरारा*. वह्यं, [चाल्युं] **बहुआरी** प्राचीसं. वधु, बहुवारु **बहुडि** प्राचीसं. वधू, वहु ब्हराव्यो ऐतिका. वहोराव्या, साधुने प्रदान कर्युं [जै.] [सं.व्यवह-] **बहुरिवा** *ऐतिका.* जैन साधुए दान [रूपे] लेवा **बहुव** *प्राचीसं*. वधू, वहु वहुआर, बहुबर नेमिछं, प्रद्युच्, वहु (सं. वधुक) बहेर प्रेमाका. [पृथ्वीमांनी] चिराड, मार्ग; जुओ वसुधा दे वहेर वहेरो प्रेमाकाः भेदभाव, जिदो भाव]; मदमो. अंतरटाळो; अखाका. भेद, जुदाई: नरका. प्रेमप. तफावत, [फरक] **बहेल** *नरका. प्रेमाका*. उपरथी ढांकेलं. शणगारेलुं गाडुं **बहेंकळो** अखेगी. नानो वहेळो **वहोर्खुं** *नरका*. खरीदवुं [सं.व्यवह:-] वंक आरारा. खोट, कसर (रा.); मदमो. खोड, विांक, दोषी सिं.वक्री वंकनी सिंहा(शा). [गर्विली, छेलछबीली] स्त्री

वहेली, जलदी **बहिन्न** शीलकः जलदी वंका कादं(शा). वांकां, [मर्मभरेलां] (सं. वक्र)

वंकडुं *आरारा.* बांको, अद्भुत; *प्राचीफा.* वांकुं (सं.वक्र)

वंकिम शृंगामं. वक्रता, [मर्मयुक्तता] वंकुड प्राचीसं. वांकुं (सं.वक्र) वंग तेरका. एक वनस्पति [सं.]

वंचइ *आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. विराप.* छेतरे (सं.वंचयति)

वंचिवउं *उपबा*. छेतरवुं

वंचक *प्रेमाका.* धूर्त, शठ, [छेतरनार] [सं.]

वंचाइ *आनंस्त*. ठगाय, छेतराय

वंचित अंबरा. वांछित

वंचित (वंचित जाय) प्रेमाका. विमुख [जाय], [अवलुं पडे, निष्फल जाय]

वंछ *तेरका.* वांछा (प्रा.वंछा)

वंछइ अभिक्र. उक्तिर. ऋषिरा. तेरका. लावल. वांछे, इच्छे

वंष्ठित आनंस्त. तेरका. लावल. वांछित, इच्छित; वांछा

वंजल तेरका. वंजुल, एक वनस्पति वंद्रा, वंद्रि अखाका. गुर्जरा. दशस्कं(१).

प्रेमाका. मदमो. संतान थयां न होय तेवी स्त्री, वांझणी (सं.वंध्या)

वंठ, वंदु शीलक. वंठेली, [भ्रष्ट, पतित]; षडाबा. सेवक, चाकर [दे.]; शृंगामं. वंठेल, बगडेल, [खराब, दुष्ट] [सं. विनष्ट]

वंठी भोमि कृष्णवा. अभागणी [भ्रष्ट थयेली,

खराब दशाने पामेली भोमका] बंदु जुओ वंठ

वंड्यो मदमो. वकर्यो, [हद बहार गयो] (सं.विनष्ट)

वंणारशी मदमो. वाराणसी नगरी वंतर आरारा. नरका. व्यंतर, हलकी कोटिना देव, भूत-प्रेत; जुओ वांतर वंतरां प्रेमप. [व्यंतर], भूतप्रेतादि वंतोल अखेगी. अभिक्त. चित्तसं. वंटोळ वंदणय-मालिया प्राचीसं. वंदनमालिका,

वंदनीक अखेगी. वंदनीय, पूज्य वंदर, वंदुर (वंदरवाल, वंदुरवालि) वसंवि(ब्रा). [द्वार पर लटकाववामां आवती] मानार्थ, सत्कारार्थ, [मंगल-स्चक] [माळा] (सं.वंद् परथी)

[द्वार पर लटकावातां तोरण]; जुओ

वंदरवाल, वंदरवालि, वंदुरवाल कृष्णच. वसंवि. वंदनमाला, [द्वार परनुं] आसोपालव आदिनुं तोरण; जुओ वनरवालि, वंदर, वाल

बंदु चारफा. समूह (सं.वृन्द) वंदुर जुओ वंदर

वनरवालि

वंदुरकल, वंदुरवालि प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). द्वार परनां आसोपालव आदिनां तोरण (सं.वंदनमालिका); जुओ वंदरवाल

वंनरमाला नेमिछं. [द्वार परनां] आसोपालव आदिनां लीलां तोरण [सं.वंदनमाला] वंनरवाल प्रयुच्च. हम्मीप्र. आसोपालव

आदिनां लीलां तोरण (सं.वंदनमाला); जुओ वनरवालि वंबाल तेरका. "व्याप्त, [समूह] (दे.वमाल) **बंश. वंस** कृष्णबा. चतुचा. नरका. लावल. स्थुलिफा. वांसळी; आरारा. वांसळीना

प्रकारनुं वाद्य

वंशफोड पंचवा. वांसमांथी टोपली आदि जुदीजुदी वस्तुओ बनावनार

वंशली अंबरा. वांसळी

वंशी *प्रेमप*. वांसळी [सं.]

वंस प्रेमप. [वांसळी], पावो; जुओ वंश, वंसी

वंस आरारा(व). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वांस (सं.वंश)

वंसमंडण *ऐतिरा.* वंशने शोभावनार [सं.वंशमंडन]

बंसियांलि तेरका. वांस-जाळ, वांसनी झाडी (सं.वंशजाली)

वंसी *आरारा*. बंसी, वांसळी

बाअ *नरप(द)*. [वाय], वगाडे

बाअड अखाका, उक्तिर, वगाडे (सं. वादयति)

वाइ उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. प्रेमाका. लावल. वगाडे (सं.वादयति)

बाइ वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडाबा. वाय छे, वहे छे (सं.वाति)

बाइ लावल. [लई] जाय छे

बाइ ऐतिका. वादी, [वाद करनार प्रतिस्पर्धी]

बाइ नलाख्या. वीसरा. वायु (सं.वात, वायु)

बाइ (बाइ लागी) वीसरा. वायु [भरायो],

[गांडपण आव्यं, घेलछा लागी] वाइक ऐतिका. कथन, प्रशंसात्मक काव्य कि उक्ति [सं.वाक्य]

वाइणि *षडाबा.* पठन, सूत्रपाठ (सं.वाचना) **बाइमल** ऐतिका. वादीओमां मल

वाइलंड उक्तिर. वायडो, वायु करनार (सं. वातलः)

बाइबुं *उक्तिर*. वगाडवुं (सं.वादियतव्यम्) वार्ड बाकरी विमप्र. होड बकी, [वेर बांध्युं]; जुओ बाकरी

बाउ उक्तिर. उपबा. उषाह. कामा(शा). गूर्जरा. चारफा. तेरका. लावल. वायु, पवन

बाउकाई *गुर्जरा*. वायुनी काया धरावनार जीव (सं.वायुकाय)

बाउल *उक्तिर*, वातरोगी, उन्मत्त (सं. वात्तः)

वाउल्ड **उपवा. "गुर्जरा. *विराप.* [उन्मत्त] (सं.वातुलः) [रा.]; वीसरा. मूर्ख; हरिवि. व्याकुळ, बावरुं; जुओ बाउलउ

वाउला *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा)*. वायु, वायुलहरीओ

बाउलि उक्तिर. प्राचीफा. स्थूलिफा. हरिवि. वंटोळ, वायुलहरी

बाउंति *प्राचीफा.* सुन्दर स्त्री; जुओ बाउल **बाए चित्तसं.** वायू

वाएसरि प्राचीसं. वागीश्वरी

वाक प्रेमाका. मदमो. वाक्य

वाकलां उपवा. वल्कल

अखाका. *तेना, । वाचामां. "वाणीमां]

वाक्यरहित चित्तसं. याक – सत्त्व – कस विनानुं

वाग अभिक्त. उक्तिर. प्रद्युचु. प्रेमाका. लगाम (सं.वल्गा)

बाग *गुर्जरा*. वाणी, बोलवुं ते (सं.वाच्) **बागइ** जिनरा. वाधो, मोटो डगलो, पोशाक — तेनी साथे

वागउ जिनसा. दशस्कं(१). नरका. वाघो, डगलो, पोशाक

बागतीता *अखाका.* वाणीथी पर [सं.]

बागदोर *विमप्र. [लगाम] [रा., हिं.बाग-डोर; सं.वल्गा+दोर]

वागरइ आरारा. गारुडिकोथी, [शिकारीथी] (सं.वागुरिक)

बागरी जिनरा. प्रेमाका. शिकारी, वाघरी, [प्राणीओने पकडवानुं काम करनार जंगली जाति]

बागरीआ *िवमप्र.* **जाळ नाखनारा, वाघरी**

वागलां *प्रेमाका***.** फांफां

वागविच्छोह जुओ विच्छोह

बागा *प्रेमप*. वाघा, वस्त्रो

वागि अभिकः वाघाथी, [पोशाकथी]

वागुर उक्तिर. कादं(शा). पक्षी वगेरे पकडवानी जाळ (सं.वागुरा)

वागुरी, वागुरीय *उक्तिर. गुर्जरा.* जाळ नाखीने पशुपंखीने पकडनार जाति (सं. वागुरिक)

वागुलि उक्तिर. वागोळ, एक रात्रिचर पंखी (सं.वल्गुलिका) वाधलउ प्राचीफा. वाघ (सं.व्याघ्र)

वाघा *प्रेमाका*. डगला, अंगरखां

बाधिण *गुर्जरा. विराप.* वाघण (सं. व्याच्रिणी)

बाच लावल. जीभ (सं.वाचा); वाणी, [कहेवुं]

वाच-काछ *नरका*. वाणी अने काछ [कछोटो] – चारित्र्य [सं.वाचा+कच्छ]

बाचणहारु *उक्तिर*, वांचनार

वाच राखी नरका. वचन पाळयुं

वाचा वीसरा. वचन, [वायदो, कोल] (सं. वाच्य)

वाचाट नेमिछं. वाचाळ [सं.]

वाचारंभण *अखाका. [मात्र वाणीमां ज रहेलुं, वाणी ज जेनुं अवलंबन छे ते] [सं.]

वाचाला ऋषिरा. वाचाळ, [वाक्पटु, मीठुं बोलनार] [सं.वाचाल]

वाचिवुं उक्तिर. वांचवुं

वाची आरारा. कह्यं [सं.वच्]

वाच्छल प्रेमाका. वात्सल्य, हेत

बाच्छल्यु षडाबा. [खानपानवस्त्रद्रव्यादिनुं] दान (सं.वात्सल्य); जुओ वाछल्य, साहमीअ-वच्छल

वाष्ठ जुओ वछ

वाछरू *उक्तिर. षडाबा*. वाछरडां (सं. वत्सरूप)

वाछल दशस्कं(२). वात्सल्य

वाष्ठल्य आरारा. वात्सल्य, भक्ति

वाङा आरारा. वाछरडां (सं.वत्स)

वाजड अखाछ. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. प्रेमाका. लावल. विराप. वीसरा. शृंगामं. वागे, [बजे] (सं. वाद्यते)

वाज (वाज करसुं) कामा(शा). त्रास आपीशुं, [थकवीशुं]

वाज आव्यो *नरका. प्रेमाका.* तद्दन त्रासी गयो

वाज उक्तिर. गुर्जरा. वाद्य, वाजुं वाजणां नरका. वागनारां, वागतां वाजित्र उक्तिर. गुर्जरा. वाजित्र (सं.वादित्र) वाजिन प्रेमाका. अश्व, घोडो (सं.वाजिन्) वाजि-विद्या प्रेमाका. अश्वविद्या [सं.] वाजी प्रेमाका. अश्व, घोडो [सं.] वाजे घणा अखाका. वडाई मारे वाट चित्तसं. रस्तो [सं.वर्त्मा] वाट मदमो. व्यर्थ, हलकुं, [हानि, दोष] [हिं.वट्टा; दे.वट्ट]

बाट उठाडी *अखाका*. व्यर्थ बनावी, [वणसाङ्युं]

बाट फठी चित्तसं. निरर्थक गयुं, एके गयुं बाटकढापणचं उपबा. भोमियापणुं

वाट नाखी जवुं *प्रेमाका.* रस्तो छोडी दईने जता रहेवुं

वाट पड़वी *अखाछ*. लूंटावुं वाटपाड जुओ वाटपाल

वाट पाडवी अखाका. आरारा. चित्तसं. नरका. लूंटी लेवुं, खातर पाडवी

वाटपाडा अखाका. लूंटारा वाटपाडी *प्रेमाका*. मार्गमां लूंटी लेनार ***वाटपाल [*वाटपाड**] *नरप(द).* *मोहमां फसावनार, [लूंटारा, डाकु]

वाट मुकाववी प्रेमाका. पराजित करवा, पाछा हठाववा

बाटल, बाटलां नेमिछं. लावल. विमप्र. वाटका दि.वष्टय+ल; सं.वर्त, वर्तु]

वाटली उक्तिर. *नेमिछं. *लावल. वाटकी दि.वट्ट, वट्टय; सं.वर्त, वर्तु] [रा.]

बाट वहे छे घणी *प्रेमाका. [राह जुए छे] **बाटवालणूं** *उक्तिर*: [*बोळावियापणुं] (सं.

वर्सपालन); वटवालनुं

बाटि उक्तिर. (दीवानी) वाट (सं.वर्तिः) **बाटेबाह** उपवा. वटेमार्ग् (सं.वर्स्वाहक)

बादो * लावल. [कोई खाद्य के पेय पदार्थ, *कंसार]

बाड तेरका. नेमिछं. षडाबा. वाडो (सं.वाट, पाट); अखाका. अंतराय, [आडश]; हद, [मर्यादा]

वाडव *अखाका. प्रेमाका. हरिख्या*. ब्राह्मण (सं.)

बांडि उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. षडाबा. वाड (सं.वृत्ति, वाटि)

बाडिय (*रथवाडिय) [स्यवाडिय]* गुर्जरा. [सवारीमां फरवुं ते]; जुओ रवाडी

वाढ्या *मोसाच.* ?, [*कपाता, *पराजित थता, *पाछा पडता] [सं.वर्ध्]

वाण नरका. वाणी

वाण प्रद्युचु. काथी, दोरडुं

वाणउत्र अंबरा. षडाबा. वाणोतर, गुमास्ता (सं.वाणिजपुत्र) **बाणवइ [बाणवइ] "**यडावा. [बाणुं] [सं. द्वानवति]

वाषही अमिक. उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. नलरा. लावल. वाणी, मोजडी (सं. उपानह्); जुओ वांणही

वाषारसी उक्तिर. वाराणसी, [बनारस] वाषारिस, वाषारीस ऐतिका. वाचक, वाचनाचार्य, [जैन साधुओनी एक पदवी]

बाणं "नेमिछं. ["प्याला] [सं.पान] **बाणि** *उक्तिर*. ["वणवानी क्रिया] (सं. वाणिः)

वाणिक नलाख्या. वाणियो (सं.वाणिजक) वाणी आरारा. बांधी, रची ? (रा.बावणौ, वा'णौ)

वाजीखाजी जुओ खाणी

बाजुत्र अंबरा. विमप्र. वाणोतर, [गुमास्ता] [सं.वाणिजपुत्र]

वाणीतर *नरका. प्रेमाका*. गुमास्तो (सं. वाणिजपुत्र)

बाण्यो *पंचवा.* वाणियो, वेपारी (सं. वाणिजक)

वात कामा(त्रि). गुर्जरा. षडाबा. खबर, समाचार (सं.वार्ता)

बातिकर *सिंहा(म)*. प्रसंग, [आपत्तिनो प्रसंग] (सं.व्यतिकर)

वातां अभिकः नरकाः वगाङतां, बजावतां (सं.वादयत् परथी)

बाद प्रेमाका. झघडो, [युद्ध] [सं.] बादलंड *उक्तिर*. वादळ दि.वहलो बाबाई *नरका.* वायदो [आपवो ते], [मुदत पाडवी ते] [अ.वादः]

बादी *ऐतिका. प्रेमाका.* वाद करनार [सं.]; *आरारा.* मंत्रतंत्रना उपाय करनार; *अखाका. [कीमियागर, शास्त्रज्ञ]

वादीसर प्राचीफा. वाद करनाराओमां मुख्य (सं.वादीश्वर)

बाधइ अखाका. आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. नेमिछं. प्रेमाका. षडाबा. वधे, वृद्धि पामे (सं.वर्धते)

बाधरी *प्रेमाका*. चामडानी दोरी के पट्टी [लगाम माटे] [सं.वर्घ्र]

वाप्र उपवा. कादं(शा). चामडानी पट्टी, दोरी (सं.वर्ध)

बान जिनरा. *विमप्र. मान, इञ्जत [रा.]; जुओ वांन

बान *प्रेमाका. [गौरव, आदर, खातर-बरदास्त]; [वर्ण, आकृति, बांधो]

वान (वानड) * ऐतिराः [मान, इज़त] [रा.; सं.वर्ण]; जुओ वानउ

वान, वानो अखाका. वर्ण, रंग, शोभा वानउ *लावल. [मान, प्रतिष्ठा] [रा.]; जुओ वान, वांनउ

वान वाधइ *आरारा.* जश वधे [रा.]

बानां अभिकः वस्तु, [वानगी]; प्रयल, [कार्य] (सं.वर्णक); प्रेमाकाः विवेक, [खातरबरदास्त]

बानु *नेमिछ*. प्रयत्न, [चाल, चेष्टा]; [प्रतिष्ठा]

वानुं *प्रेमाका*. वस्तु, [बाबत]

वानी अखाछ. प्रकार; लावल. वानगी [सं. वर्णिका]

वानो जुओ वान

बापरइ *गुर्जरा.* "उपभोग करे; [फेलाय, प्रचलित रहे]; *षडाबा.* योजे, योजाय (सं.व्यापारयति)

वाम अखाका. उक्तिर. वांभ, पहोळा करेला वे हाथ वच्चेनुं अंतर (सं.व्याम)

बाम *आरारा. चतुचा*. प्रतिकृळ, विरुद्ध, भिन्न, वांकुं, अवलुं (सं.); *नेमिछं. नावल.* डाबुं; *प्रेमाका.* वामा, स्त्री

बाम (बाम अंगे) चित्तसं. [डाबे अंगे], खोटे मार्गे

बामइ अखाका. उपबा. कादं(शा). चतुचा. नरका. नलाख्या. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). दूर करे, टाळे, काढी नाखे, पार करे (सं.वामयति)

वामउ वीसरा. डाबी बाजु (सं.वाम)

वामज्ञानी चित्तसं. जेने डाबे अंगे ज्ञान आवे छे तेवो, ऊलटुं, प्रतिकूळ, अधम ज्ञान धरावनार [सं.]

वामणडी लावल. नीची, ठींगणी (सं.वामन) **वामा** अखाका. कादं(शा). कामा(त्रि). स्त्री, सुंदर स्त्री (सं.)

वामां-टामां प्रेमाका. गल्लांतल्लां, [अनिश्चय के आळसमां काम टाळवुं ते] वाय अखाका. तेरका. वायु, वा (सं.वात) वाय देवरा. वाणी, [वचन] [रा.; सं.वाच] वाय अखाछ. वगाडे, [बजावे] [सं.वाद] वायड उक्तिर. तेरका. (पवन) वाय, वहे (सं.वा-)

बायइ नरका-२. षडाबा. वगाडे, [बजावे] (सं.वादयति); नरका-२. वागे, [स्वर करे] [सं.वादति]

वायक *नरका. प्रेमाका. शीलक*. वाक्य, वचन

"वाय जाय ("धम्युं धूप्युं वाय जाय)
[धम्युंधूप्युं वाये जाय] अखाका. [करेलो श्रम] फोगट जाय; जुओ धम्युंधूप्युं वाये जाय

बायण विमप्र. वायणुं, स्वस्तिवाचन, [आशीर्वादात्मक उद्गारो] [सं.उपायन]

वायम *आरारा(व)*. कोईक फळनेवो

बायस अभिऊ. कामा(त्रि). नरका-२. प्रेमाका. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कागडो (सं.)

वायस *कस्तुवा.* *वायु, [*कागडो]

वायसात्र हरिख्या. रांधेली रसोईमांथी कागडाने माटे जुदो काढेलो भाग (सं.) वायंभ तेरका. ?, [स्थापत्यनुं कोई अंग] वायिवा उक्तिर. वावा, पवन फूंकवा, पवन नाखवा [सं.वा-]

वाये *अखाका. [वियाय, जन्म आपे]; जुओ व्या-

बाये बटे (धम्युंधूप्युं वाये वटे) अखाका. [करेलो श्रम] फोगट जाय; धम्युंधूप्युं वाये वटे

बायो अखाका. वाह्यो, छेतरायो, [जितायो] बार अखाछ. आरारा. कामा(शा). प्रेमाका. वेताप. वारि, पाणी

बार्ड् अंबरा. समयमां, वारामां [सं.वार]

बारकी *प्रेमाका. [प्रतीकार करनार दुश्यन, द्रोही] [सं.]

वारकुं *नरका.* वार, समये, फेरा; *प्रेमाका.* समयनुं, वखतनुं, [वेळाए]

बारगहै *हम्मीप्र.* एक प्रकारनो तंबु; जुओ बारगइ

बारण *गुर्जरा.* हाथी (सं.)

बारणां अखाका. दशस्कं(२). नरका. ओवारणां [सं.अपवारण]

बारणे कीजे (सोनानो मेरु कीजे वारणे) प्रेमाका. *ओवारणां लईए, [ओवारी नाखवा माटे सोनानो मेरु करीए]

बारणे जवुं *दशस्कं(9). प्रेमाका.* ओवारणां लेवां; *नरका*. [वारी जवुं], कुरबान थवुं

वार-योषा कादं(शा). वारांगना, गणिका (सं.)

वारवधू गुर्जरा. वेश्या (सं.)

बारही (बारही नाखे) * नरप. [*वारी जाय, *ओवारी नाखे, *न्यौछावर करी दे]

वाराइति, वाराति, वारायत, वारायति विक्ररा. सिंहा (शा). [गीतनृत्यादिमां कुशळ] दासी, [गणिका]

वारासोरी *नरका*. वाराफरती

बारांमति (दुवारांमति) देवरा. द्वारिका [सं. द्वारामती]

बारि आरारा. वारे, दिवसे

वारिका कादं(ध्रु). आड, [सीमा दर्शावती] **वारिज** अखाका. कमळ [सं.]

वारिजा *प्रेमाका***. वारि – समुद्रमां**थी

नीकळेली, लक्ष्मी [सं.]

वारिलग्ग कृष्णवा. वाराफरती

वारिवूं उक्तिर. वारवुं, रोकवुं

वारिहारि ऋषिरा. समय बतावनारुं सिछद्र

घटिकायंत्र

बारीजिती जिनरा. [वारवामां आवी हती], मनाई करायेली

वारी वरे नरका. अटकावी अटके वारु चतुचा. मोसाच. वार्युं, ना कही वारु, वारू अखाका. नलाख्या. प्रेमाका. लावल. विक्रस. हरिख्या. ठीक, योग्य, सारुं, सुंदर, उत्तम; सारी रीते (सं. वारुक)

बारुणी प्रेमाका. मद्य, दारू [सं.] वारुं शृंगामं. सारुं, उत्तम (सं.वारुक) बारू उपबा. जिनरा. नेमिछं. प्रेमप. मदमो. विमप्र. सारुं, सुंदर, उत्तम; सारी रीते [सं.वारुक]; जुओ वारू

वास्त्रआ *ऐतिरा.* उत्तम वास्त्रमा (वास गास्त्रडीकला) **नलरा.*

[गारुडीनी सुंदर कला] **वास परिं** *ऐतिरा.* सारी पेठे **वार्स** कामा(शा). उत्तम [सं.वारुक]

वारोध चतुचा. अवरोध, विरोध, वांधो

वारोबारि ऋषिरा. नलाख्या. वारंबार **वार्युं करे** अखाका. [ना पाडवामां आवी होय ते माने], रोक्युं रोकाय

वार्योस लिलरा. वारीश, अटकावीश वाल नरप(द). वहाल [सं.वल्लभ परथी

वाल, वालि, (वंदरवाल, वंदरवालि)

वसंवि(ब्रा). [द्वार पर लटकावाती सत्कारार्थ मंगलसूचक] माळा; जुओ वंदरवाल

वालउ आरारा(व). *ऋषिरा. नेमिछं. ०शृंगामं. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुगंधी वाळो, एनां फूल (सं.वालक)

बालउ *पडाबा*. वाळो, तंतु जेवुं एक जंतु (सं.वालक)

वालण *आरारा*. पाछुं वाळवुं ते; *नेमिछं*. वाळवुं ते, [मरडवुं ते] (सं.वालय्)

बाळणी *प्रेमाका*. पाछां वाळवानी क्रिया, [रोकवुं ते, प्रतीकार]

भालर काकडी *उक्तिर*. काकडीनो एक प्रकार (सं.वहरकर्कटी)

वालहड वीसरा. वहालो (सं.वल्लभ-)

बालहली *उक्तिर*. वालनी सींग (सं.वल्ल-फलिका)

वालिह, वालिहा आनंस्त. आरारा. गुर्जरा. विराप. वहाली

वातंभ आरारा. गुर्जरा. जिनरा. प्राचीसं. यसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वहालम. प्रियतम (सं.वङ्गभ)

बाला *लावल*. सुगंधी वाळो [सं.वालक]

*वा**लाकुली (वालाकूची)** विमप्र. वाळा-कूंची, [साफसूफी करवा माटेनी पींछी]

वालामोई * नरका. [जेनां वहालां मरी गयां होय ते, अभागणी]

वाति जुओ वाल

वालिभ नलरा. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यों हतो वालिभ प्राचीफा. प्रियतम, वहालम (सं. वल्लभ)

बालिय गुर्जरा. वाळी, [मस्तके पहेरवानी कडी] (सं.वालिका)

वालिभ नलरा. नेमिछं. प्रियतम (सं.वहम)

वार्लिम *आनंस्त*. प्रीतम

वाळी वाळी अखाका. नरका. प्रेमाका. वळीवळी, फरीफरी

वालुहो *आरारा*. वहालो

बालू *आरारा*. वाळु, सांजनुं भोजन [सं. विकाल-]

वाल्हज उपवा. वहालो (सं.वल्लभ)

वाल्डेसर *आरारा.* खूब वहाला; जुओ बाल्हेसर

बावड़ो *नरका.* वायु, पवन **बावण** जिनसा. वाववुं ते, [उगाडवुं ते] [सं. वापना]

बाबरइ उपवा. प्रेमाका. वापरे, उपयोगमां ले; आरारा. ऐतिका. जिनरा. वापरे, खर्चे, व्यय करे; आरारा. उपबा. प्राचीफा. वापरे, [खावाना उपयोगमां ले], खाय (सं.व्यापारयति)

बावि उक्तिर. गुर्जरा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाव (सं.वापी)

वाविय ऐतिका. वापी, वाव वावुं प्रेमाका. वागवुं ते, [बजवुं ते] वावुं ऐतिका. व्यय करुं, [वापरुं]

यावेत्र जुओ वव्येत्र

वाशी नरका. बोली [सं.वाश]

वाशे *प्रेमप*. वगाडशे

वाशे (वाहाशे) *प्रेमप. [*छेतरशे, *वंचना

वास/वासुय

करशे]

बास जिनरा. नेमिछं. वासक्षेप, जैन साधुओ वंदवा आवनारना मस्तके सुगंधी अर्पे छे ते [सं.]

बास *आरारा***. वस्त्र (रा.**: सं.वासक) वास जुओ जसवास

बासइ उक्तिर. ऐतिश. नरका. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). बोले, अवाज करे (सं. वाश्); लावल. कहे

बासड *आरारा. नरका.* वास करे, वसे: प्रेमाका. वसावे. -मां वास करे: *आनंस्त*. वसावे, राखे, धारण करें]

बासड अभिकः आनंस्तः ऐतिराः गुर्जराः तेरका. नेमिछं. प्रेमाका. गंधयुक्त - सुवासित - सुगंधित करे (सं.वासयति); प्रेमाका. सुवासित थाय

वासङ उपवा. स्थिर थाय, दृढताथी जामे (सं.वस् परथी) [रा.]

वासड *उक्तिर.* वासो, निवासस्थान, पडाव (सं.वासकः); जुओ वासा, वास्

बासक *प्राचीका*. वासुकि, नाग

बासन, बासिक, बासिन आराराः नेमिछंः लावल. वासुकि, सर्प, नाग

बासण *चतुचा*. वस्त्र [रा.] (सं.वासन)

बासचि * गुर्जरा. [*एक प्रकारनुं आसन - बेसवानी रीत] [*दे.वस्सासण]

वासजीया अभिक्र. बोल्या (सं.वाश्) **वासना** *दशरकं(१). प्रेमाका***. वास, सु**गंध

बासनिकेतन वसंप्रा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).

वासगृह, निवासभवन (सं.)

वासपूरण अखाका. वास करी रहेलां], सर्वावास, सर्वव्यापी

वासर गुर्जरा. तेरका. दिवस (सं.)

वासव चित्तसं. इन्द्र [सं.]

वासंय नरका. वासुकि(नाग), [ए नामनो नागी

वासंति चारफा. टहुकता इता त्यारे (सं. वाश्)

बासंती तेरका. एक वनस्पति, जुई, माधवी वगेरे आ नामधी ओळखाय छे। [सं.]

बासा अभिक. "कादं(शा). वद्येवद्ये आवतः विश्रांतिस्थान, [पडाव, मजल]; जुओ वासउ

बासाज *पंचवा.* वार्जित्र (सं.वाद्यसाज)

वसंफा. वसंफा(ल). वसंचि. वसंवि(ब्रा). कागवास, कागडाने अपातो पिंड (सं.वायसिका)

वासिइं. वासीइं सिंहा(शा). वासमां [*वसतीमां, *गाममां]; *लावल.* वासमां, निवासमां

वासिक जुओ वासग, वेण-वासिक

वासिग अंबरा. लावल. वास्कि, सर्प, नाग; जुओ वासग

बासित *हारेख्या.* वासवाळुं, खुशबोदार (सं.)

बासीइं जुओ वासिइं

बासीघउ *आरारा.* वासीदुं

बासु विमप्र. वास, वासो, मुकाम, रहेवुं ते]: जुओ वासउ

वासुग *आरारा*. वासुकि, नाग

नारी *ानरका*ः २. दिवसमां (सं.यासर) भारतभा पडावा. रहेवाशी (सं.) वास्तुविधा कार्द(शा). स्थापत्यविद्या (सं.) बास्यां जुओ पास्यां नाह नलरा. सवारी (सं.) वाह नलरा. प्रवाह (सं.)

बाहद उषाह. प्रबोप्र. वहन घरे, वहे, चाले; नुजंरा. वहेवडावे; नेमिछं. लावल. वहे, धारण करे; अभिक. ऋषित. विमप्र. लावल. उपाडे, चलावे, ताणे, खेंचे; गुजंरा. नेमिछं. "विराप. लई जाय, चिलावें], दोडावे (सं.वाहयति)

बाहड् अरशका. उथाह. *ऋषिरा. कादं(शा). *गुर्जरा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलास्या. मदमो. विक्ररा. वेताप. रिह्म(शा). छेतरे; नरका. प्रेमाका. लावल.छेतरे, [फोसलावे] (सं.वाहयति)

बाहड़ कामा(शा). नरका. प्रेमाका. भदमी. वगाडे, [बजावे]

बाहण गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वाहन

वाहर आरारा. बोलाववुं ते (सं.व्याह)

बाहर अंबरा. उक्तिर. आरारा. जिनरा. वहार, मदद, सहाय; पडाबा. सहायक दळ; जुओ वाहार, बाहर

वाहरइ लावल. वाळे छे, साफ करे छे (हिं. बुहारन)

बाहरू उक्तिर. सहायक, रक्षक (सं. व्याहारक)

बाहलड *तेरका. षडाबा.* वहेळो (दे.; सं. वाह+ल?)

वाहलं नलरा. वहालुं, प्रिय (सं.वल्लभ) वाहब्द षडावा. बूम पाडे, बोलावे बाहाडी उथाह. घीनी वाढी, [नाळचावाळुं पात्र]

बाहाणकुमार, बाहाणपुत्र कामा(त्रि). वाणियो

बाहार, वाहर नलाख्या. पंचवा. वहार, मदद, सहाय (सं.व्याह-)

बाहाला नलाख्या. वहाला, प्रिय (सं. वल्लभकः)

बाहावी चतुचा. वगाडवी बाहाशे अखाका. *छेतरशे, [*वळगी रहेशे]; जुओ वाशे

वाहांग चंद्रवा. ?

"वाहि ["चाहि] अभिक. जुए

बाहिउ अखाका. नरका. प्रेमाका. छेतरायो; *उपबा. ऋषिरा. तणायो, खेंचायो [सं. वाहित]

बाहिणि *विमप्र. षडाबा*. वाहिनी, रथ, वेलडुं

बाहिय गिउ हिरीवे. छेतरी गयो बाहु गुर्जरा. घोडो (सं.वाह); जुओ बाह बाह्म बीना चतुचा. [धर्या विना], मूक्या वगर

बाझो जाशे चतुचा. छेतराई जशे बांक आरारा. खोट, कसर (रा.) बांकडड लावल. वांको, [बंकडो, वीर, गवींलो] (सं.वक्र); चित्तसं. वांकुं, वांघो, मुश्केली

वधावी

वांकडी *लावल. [वांकी, आडाई करती] शंकुं कामा(त्रि). अटपटुं, [दुर्गम]; चित्तसं. मुश्केली, मुश्केलीभर्युं वांकुडी वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). वांकी (सं.वक्र) वांके लाकडे वेह अखाका. वांका लाकडा-मां वींघ], मुश्केलीथी भरेलुं [काम] **बांगड ***ऐतिरा. [वीर, बहादुर] [रा.]; जुओ बांगड **बांचवं** *दशस्कं (१)*. बचवं [सं.वंच्यते] **वांचवं** *नरका*. वांछवं, इच्छवं **वांछणहार** *उपबा*. वांछनार, इच्छनार **वांछा** उपबा. इच्छा (सं.) बांछिनुं उक्तिर, वांछवं, इच्छवं **बांझ** *उक्तिर. प्रेमप. वीसरा.* वंध्या, वांझणी **बांटड** उक्तिर. भाग पाडे, वहेंचे (सं. वण्टयति) [रा.; हिं.बांटना] वांण देवरा. वाणी वांणही कृष्णवा. प्राचीफा. मोजडी (सं. उपानह); जुओ वाणही वांणोतर मदमो. चाकर (सं.वाणिज+पुत्र) **बांतर, बांतरु** गुर्जरा. विराप. व्यन्तर, भिूत, भूत जेवो]; जुओ वंतर वांदड आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. देवरा. प्रेमाका. वाग्भवा. षडाबा. वंदे. वंदन करे **बांदणउं** उक्तिर. उपबा. षडाबा. वंदन करवुं ते, पूज्यभाव दर्शाववो ते (सं.वंदनक) वांदिवं उक्तिर. वंदवं वांदी (महुरत वांदी) प्रेमाका. वंदी, [मुहूर्त]

वांन *देवरा. [उत्साह, उमंग] [रा.]; जुओ वान **वांनउ ***ऐतिरा. [मान, प्रतिष्ठा] [रा.]; जुओ वानउ **यांनी** *वेताप*. राख वांम, वांमा कामा(शा). गुर्जरा. लावल. डाबुं (सं.वाम) वांस नरप(द). वांसळी [सं.वंश] वांसलउ उपवा. प्रेमाका. लाकडा छोलवानुं एक आडा पानानुं ओजार [सं वारत] वांसळी नरका. रूपिया भरवानी लांबी सांकडी कोथळी **वांसोली** उक्तिर, वांसलो (सं.दासी) **वि** *गुर्जरा. तेरका.* य, पण (प्रा.; सं.अपि) वि कादं(शा). वय, उंभर; जुओ लघु-वि **विअक्खण** गुर्जरा. विचक्षण, चतुर विआरइ उक्तिर. छेतरे (सं.विप्रतारयति) विड कादं(शा). वय, उंमर विजड गुर्जरा. विराप. विकट, भयंकर **विउल** तेरका. शंगामं. विपुल विउत्तसिरी चारफा. प्रद्युचु. वसंफा(ल). **वसंवि(ब्रा).* बकूल वृक्ष, बोरसली (सं. बकुलश्री) **विओग** *तेरका*, वियोग विकथा उपवा. [स्त्री आदिनी] गंदी वातो, [शास्त्रविरुद्ध वातो] (सं.) विकरवं *अखाछ. [विकार पामवो] [सं. विक-] विकराल आरारा. विश्वुब्ध, व्याकुल (रा.);

विक्षुब्ध, क्रोधित (रा.); गुर्जरा. भयंकर

[सं.]

विकर्म, विकर्म लावल. हरिख्या. खोटुं काम, खराब कर्म (सं.)

विकल, विकळ *आनंस्त.* रहित: *गुर्जरा.* व्याकुळ, दुःखी; वीसरा. अस्वस्थ (सं.)

विकलेंद्रिय आनंस्त. [ओछी इन्द्रियवाळा], एकेन्द्रियथी चतुरिन्द्रिय सुधीना जीवो सिं.ी

विकासि**इं** *उपवा*. उघाडे (सं.विकासित)

विकुर्वड, विकुब्बइ उक्तिर. षडाबा. दिव्य सामर्थ्यथी उत्पन्न करे (सं.विकूर्वति) [जै.]; जुओ वेउव्विय, वेखर्युं

विक्ख शंगामं. ?

विक्खंभ तेरका. आइसर, [मोभ] (सं. विष्कंभ)

विक्ति (विक्ति करी) प्रेमाका. [जगा करी], खास गोठवण [करी]

विक्रम अखाछ, विकर्म, हिलकू कामी

विख *आरारा. दशस्कं(१)*. विष

विख. वेख प्राचीका. पहेरवेश (सं.वेश)

कादं(शा). विखंड अखाछ. आरारा. दशस्कं(१). प्रेमाका. विशे, अंदर, [-मां] (सं.विषये)

विखम रूपच. दारुण (सं.विषम)

विखवाद आरारा. दुःख, अफसोस (रा.); जुओ विषवाद

विखंड (खंडविखंड) गुर्जरा. खंडित, टुकडे-टुकडा (सं.)

विखंडिउ *गुर्जरा.* खंडित कर्युं, तोड्युं (सं.विखंडित)

विखाण**इ** *दशस्कं(१). दशस्कं(२). नलाख्या. प्रेमाका. हस्तस.* वखाणे (सं. व्याख्यान परथी)

विखास "गूर्जरा. "विराप. शुंगामं. ?, [*विरूप - अवळी दशा, "मूझवण, "विचार] ["दे.विक्खास]: जुओ वेखास

विखांण *रूरतस*. वखाण [सं.व्याख्यान] विखिइ नलाख्या. विशे (सं.विषये)

विखे अखाछ. विषय

विखोडइ *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा)*. वखोडे, निंदा करे, हलकूं पाडे (प्रा.विक्खोड)

विख्यात *आरारा. "कादं(ध्र)*. प्रगट, प्रसिद्ध रूपे; जाहेर, जाणीतुं; विख्याति, प्रसिद्धि

विगड *उपबा. *जिनरा. विकारजनक घी वगेरे खाद्य पदार्थ] (सं.विकृति); जुओ वेगै

विगत अखाका. व्यक्त. [प्रकाशित]: **गुर्जरा*. [भिन्नता]

विगत, विगति आरारा, वीगत, स्पष्टता विगति कादं(शा). वीगते, जुदंजुदं, [सपष्ट] (सं.व्यक्ति): **नरका*. विस्तार, विवरण, समजण**े**: *नेमिछं*: वीगत, विस्तारो

विगती * वीसरा. [स्पष्ट]

विगतुं अखेगी. व्यक्त, [स्पष्ट, विस्तृत] विगत्व अखाका. भेद, जिंदाजुदापणुं

विगन्यान आरारा. विज्ञान, आवडत

विगर *आनंस्त. देवरा.* वगर. विना

विगुआणा *ऐतिका*. वगोवाया; जुओ वगूए

विगुता * शीलक. [दःखी कया] [सं.विगुप्त];

जुओ वगुता, वीगुता

विगुत्तउ *प्राचीसं*. व्याकुळ थयो विगुवाये *प्रेमाका*. दुःखी थाय

विगूचइ प्रद्युचु. व्याकुळ थाय, [दु:खी थाय] (प्रा.विगुत्त) [सं.विगुप्त]; जुओ वगुचे, विगूंचु

विगूतं *अखाछ. *गुर्जरा. नलाख्या. प्राचीफा. *विराप. व्याकुल थयो, संकट-मां आव्यो, [दुःखी थयो] (सं.विगुप्त)

विगूतु प्रबोप्र. "व्यभिचार कर्यो, ["लपटायो, "वगोवायो]; जुओ वगूत्यो

विगूयइ उक्तिर. वगोवाय, दुःखी याय (सं. विगुप्यति)

विगूंचु नलाख्या. दुःख भोगवो (सं.विगुप्त) विगोइ अंगवि. अंबरा. *उपबा. *गुर्जरा. नरका. प्रद्युचु. विराप. शृंगामं. पीडा करे, व्याकुळ करे, दुःखी करे (सं.

विगोपयति) विगोई *प्राचीसं.* वगोवी विगोणडं **अंवरा.* [वीतक, पीडा] विगोणहार *उपवा.* वगोवनार (सं.विगोपन)

विगोयां *प्रेमाका*. वगोवायां

विगोवइ अक्तिर. व्याकुल करे, तिरस्कृत करे (सं.विगोपयति); चित्तसं. लावल. दुःखी करे, व्याकुल करे (दे.विग्गोव)

विष्यत्त (विष्यं तु) ऐतिका. विघ्नोने तो

विप्रे प्रेमाका. हरिख्या. व्यप्न, व्याकुळ विषट**ड** *आरारा*. संबंध तोडे: ऋषिरा. नाश

करे; *ऐतिरा*. नष्ट थाय; *जिनरा. षडाबा.* विघटित थाय, खोटुं पडे (सं.विघटते)

विचइ आनंस्त. ऋषिरा. नरका. वद्ये

दे.विद्य]

विचमां *आनंस्त*. वचमां

विचरेवं *ऐतिका.* [विचरवुं], विहार करवो, चालवुं

विचारिवुं उक्तिर. विचारवुं

विचालउं *उक्तिर. उपवा*. यद्येनुं (दे.विद्य-परथी)

विचालि, विचाली गुर्जरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). वद्ये, वचाळे (सं.वर्लः; दे.विद्यः); विक्ररा. वचगाळे, वद्ये थईने

विचालिलख वीसरा. वचलो (प्रा.विद्य)

विचाली जुओ विचालि

विचि, विचिड्, विचिड् उक्तिर. उपवा. उषाह. कादं(शा). षडावा. वच्चे (सं.वर्त्स; दे. विच्च)

विचित्र चित्तसं. जातजातना, जुदाजुदा [सं.]

विचित्तरं उपना. उषाह. विमप्र. वचतुं विचित्तं ऐतिरा. वचे

विध- प्राचीसं. वेचवुं [सं.व्यय्]

विच्छह्र प्राचीसं. आडम्बर, [ठाठमाठ] दि.]

विच्छाय आरारा. निस्तेज, झांखुं (सं.)

विच्छेदे *उषाह. [जलदी]; जुओ विछेदि विच्छोह (वागविच्छोह) गूर्जरा. [वाणीनो]

अभाव, भंग, [अबोला]; जुओ विच्छोह

विञ्रं अखेगी. विमुक्त थयुं, [अळगुं थयुं] (हिं.बिछ्डा, बिछ्रा)

विछाइउ *विराप*. तेज्ञहीन, [फीक्कुं] (सं. ं विच्छाय)

विछाइयो *आरारा.* विस्तरीने, छवाईने रह्यो

विषाई जुओ हांच विष्ठाई

विष्ठाहरू नेमिछं. छाय, ढांके; विमप्र. बिछावे, [पाथरे]

विष्ठाहिष *गुर्जरा*. तेजहीन, झांखुं (सं. विच्छाय)

विष्ठिति जिनरा. शोभा

विद्वा दशस्तं(१). पगनुं एक घरेणुं

बिछेदि, विछेदिं नेमिछं. *विक्ररा. सत्वर, जलदी: जुओ वछेदि, विच्छेदे

विष्ठोयडं आरारा. दशस्कं(२). देवरा. अलग कर्युं, वियोग कराव्यो (दे.विच्छोय)

विछोह आरारा. कर्पूमं. प्राचीसं. वियोग, विरह (दे.विच्छोह)

विष्ठोहर आरारा. वियुक्त, वियोगी, छोडनार (दे.विच्छोह); नरका. नलाख्या. वियोगी, विनानी; विमप्र. विनानुं, छूटुं करेलुं, [वियोग कराच्यो]

विछोहि शृंगामं. वियोग, जुदाई, [भंग] विछोहिउं *अभिक. प्रद्युचु. लावल. वछोड्युं, विख्टुं कर्युं, विरहित कर्युं (सं.विक्षोमित) दि.विच्छोह]

विष्ठोहीउ *गुर्जरा*. छूटुं पडेलुं, वियोगी विजयखंभ *तेरका.* विजयस्तंभ, विजयसूचक

. खांभो, कीर्तिस्तंभ (सं.विजय+स्कंभ)

विजाणइ *आरारा*. न जाणे, भूली जाय; जुओ विनाण

विजावलीय *ऐतिका.* विद्याओनो समूह [सं. विद्यावलि]

विजे अखाका. अखाछा. चित्तसं. विजय विज्ञा *ऐतिका*. विद्या

विज्ञाहर गुर्नग्र. तेरका. विद्याधर, एक

अधदेव जाति

विश्राहरी उक्तिर. गढ पर योद्धाओने रक्षण आपती कोटडी (*सं.विजयगृही)

विश्व तेरका. विद्युत्, वीज

विज्ञान आरारा. आवडत [सं.]

बिट ऐतिका. कादं(शा). भांड, व्यभिचारी पुरुष, [लंपट] (सं.)

बिटल वेताप. वटलेलुं [सं.विट+ल]

विटलता अखाछ. भ्रष्टता

विटंड जुओ वेदविटंड

विटंब आरारा. विटंबणा, दुःख [सं.विडंब]

विटंबन *आरारा.* विडंबन, छेतरामणी, तिरस्कार

विटंबी *प्रद्युचु*. हेरान करी, [दुःख दीधुं] (सं.विडंब्)

विद्यालड्ड उक्तिर. वटाळे, वटलावे, श्रष्ट करे [दे.]

विद्ठि प्राचीसं. वेठ, [सेवा] (सं.विष्टि)

विडलूण उक्तिर. एक प्रकारनुं मीठुं, काळुं मीठुं (सं.विडलवण)

विडंग आरारा(व). तेरका. एक वनस्पति, वावडिंग (सं.)

विडंबइ कादं(शा). शरमावे, उपहास करे; [-नी समान होय]; गुर्जरा. *छुपावे, [(वेश) बदलावे] (सं.विडम्बयति)

विडारइ अखाका. गुर्जरा. दशस्कं(१). प्रेमाका. लावल. विराप. विदारे, कापे, नाश करे [सं.विदारयति]

विडारी नरका. ईजा पामेली, [(नख वगेरेना) क्षत पामेली] [सं.विदारित] विडारण **प्रेमाका*. [हणनार, विनाशक] [सं.विदारण]

बिडु अंबरा. वडुं, मोटुं

विडूला उषाह. ?

विद्ध उक्तिर. गुर्जरा. वढे, लडे; षडाबा. वढे, ठपको आपे, [लडे, झघडो करे] [दे.वड्ठ]

विढंत्तउ प्राचीसं प्राप्त कर्यं दि.]

विडवइ उक्तिर. उपार्जन करे, पेदा करे [दे.]

विण गुर्जरा. लावल. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. विना, सिवाय

विणओ आनंस्त. विनय, [भक्ति]

विण-कह्यो देवरा. वणकह्यं, कह्या वगर

विणग विमप्र. वणिक

विणज *आरारा. नलाख्या. शृंगामं*. वाणिज्य, वेपार

विणज- वीसरा. वेपार करे

विणजार, विणजारा जिनरा. नलाख्या. वणजारो, [पोठ लईने फरतो] वेपारी (सं.वाणिज्यकारः)

विणठइ उपबा. उषाह. जिनरा. तेरका. प्रद्युचु. प्राचीसं. नष्ट थाय, बगडे [सं. विनष्ट]

विणठउ *षडावा.* नाश पाम्यो, [मृत्यु पाम्यो] (सं.विनष्ट)

विणय *गुर्जरा*. विनय

विणसइ अभिऊ. उक्तिर. उपना. जिनरा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि (ब्रा). शीलक. शृंगामं. नष्ट थाय, वणसे (सं. विनश्यति) विणसइ वसंफा. वसंवि. वनस्पति विणसाडइ आरारा. जिनरा. वणसाडे, बगाडे, नष्ट करे (सं.विनश्)

विणा *उक्तिर*. विना

विणास उपवा. आरारा. गुर्जरा. वीसरा. विनाश

विणासइ गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि. षडावा. नाश करे (सं.विनाशयति)

विणासगर कृष्णच. विनाशकारी [सं. विनाशकर]

विणासणहार *उपवा*. नाश करनार (सं. विनाशन+हार)

विणि नलाख्याः विना

विणी-तु आरारा. वेणीमांथी, चोटलामांथी

विणु *तेरका. वसंफा*. विना

विणोद *गुर्जरा*. विनोद, आनंद

वित चित्तसं. वित्त, संपत्ति

वितनु चंद्रवा. अंग वगरनो एवो अनंग, [कामदेव] [सं.]

वितपतिआलां *लावल. [कलाकौशल-युक्त]; जुओ वतपतिआला, वितिपति वितपत्र प्राचीफा. संपूर्ण ज्ञाता (सं.व्युत्पन्न) वितस्प आरारा. वित – सत्त्व अने रूप

वितंड, वितंडा अखाछ. खोटो बकवाद करनार, पोताने पक्ष न होय ने मात्र सामा पक्षनुं खंडन कर्या करनार, ज्ञानीनो एक प्रकार] [सं.]

वितिकर ऋषिरा. वृत्तांत, हकीकत (सं. व्यतिकर)

वितिपति विमप्र. व्युत्पत्ति, खिलावट,

[कलाकौशल, कलासौन्दर्य]; जुओ वितपतिआलां वितीत, वितीता आरारा. व्यतीत वितुं *उषाह*. कार्य, सेवा, [काम]; जुओ वतुं

वित्त *कादं(ध्र).* खुल्लं, [प्रसिद्ध] [सं.] वित्ति तेरका. वृत्ति, [मनोवृत्ति, विचार-वलण]

वित्तिकरु *ऐतिका.* वृत्तिकर्ता, विवरण करनार, भाष्य रचनार]

वित्त प्राचीफा. गोळ, वर्तुलाकार (सं.वृत्त) **वित्यर** ऐतिका. गुर्जरा. विस्तार

वित्रेक अखेगी. व्यतिरेक, [भिन्नता]; *प्रेमाका*. श्रेष्ठ; जुओ वत्रेक

वित्रोडीयां शुंगामं. तोड्यां, [भंग थयेलां] [सं.वित्रोटित]

विषक दशस्कं(२). प्रेमाका. विखरायेली, अस्तव्यस्त

विषारं ऐतिराः विस्तारो विद, विदि *प्राचीका*. वेदशास्त्र **विदा** *आरारा*. विदाय

विदाध शुंगामं. बळतरा (सं.)

विदाणउ उक्तिर. चंदरवो (सं.वितानक)

विदान आरारा, विद्वान

विदारिज उक्तिर. विदार्यं, नष्ट कर्यं विदाह गुर्जरा. विराप. ऊंडी बळतरा, वेदना

(ti.) विदि जुओ विद विदिस उक्तिर. उपदिशा, बे दिशा वद्येनो खुणो (सं.विदिश्)

विदेह आरारा. महाविदेह क्षेत्रमां

विदेही अखाका, देह विनानी **विदोधी** *प्रेमाका*, दोष वगरनी **विद्य** *गुर्जरा*. विद्या विद्यपह आरारा. विद्युत्रभा, [एक नाम] विद्योत प्रेमाका. विद्युत्, वीजळी

विद्राद *कादं(शा)*. दोडधाम, नासानास (सं.)

विद्रम *ऐतिरा. नरका. रूपच.* परवाळुं, एक जातनुं [लाल रंगनुं] रल [सं.]

विद्रमचोला जुओ द्रमचोला

विष हरिख्या. रीत (सं.विधा)

विधओ, विधु, वीधु वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). विद्ध थयेलो, बनेलो, [विदग्ध, रसियो]

विधविध्ये अखाका, विविध रीते

विधात ग्रेमाका. विधाता, विधात्री, भाग्यनी देवी

विधि दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). ब्रह्मा, स्रष्टा (सं.)

विधि *नलाख्याः* विधाः, प्रकार

विधिना आंक प्रेमाका. [विधिए लखेलुं], भाग्यनुं निर्माण

विधि-सउं षडाबा. विधिपूर्वक

विधि सजी आरारा. गोठवण करी, तैयारी करी

विद्यु जुओ विधओ

विधुर वसंफा. वसंवि. *वसंवि(ब्रा). पीडित, [व्याकळ] (सं.)

विषुरी ऋषिरा. आकुळव्याकुळ, [संतप्त] विधे अखाछ, नरका, प्रकारे, रीते, रीतथी विधागत, विधागति, विधागते अभिक. दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. विधि प्रमाणे (सं.विधि+गति); जुओ वीधोगत विध्य नलाख्या. विधि, ब्रह्मा विध्याता अंबरा. नलाख्या. विधाता, ब्रह्मा विध्ये अखाका. रीते

विनडइ ऐतिकाः जिनराः विडंबना करे, नमावे, पराभव करे, [व्याकुळ करे]; अंगविः गुर्जराः प्राचीसंः "सिंहा(म)ः षडाबाः दुःख आपे, अकळावे, हेरान-परेशान करे (सं.विनट्यति)

विनइ थडाबा. विनयमां

विनता अखाका. नरका. प्रेमप. प्रेमाका. वनिता, स्त्री

विनर्ड- * प्राचीफा. [कष्ट आपवुं] (सं.विनर्त्) विनाण, विनांण आरारा. कादं(ध्र). गूर्जरा.

विक्रच. ज्ञान, आवडत, कौशल, विद्या (सं.विज्ञान); आरारा. *कर्पूमं. *नेमिछं. *विक्ररा. *ज्ञान, *विज्ञान, चातुर्य, [पटुता]; *आरारा. रहस्य, भेद, [*कार्यकारिता]; अभिक्र. ज्ञान, समज, [पिछाण]; ऐतिका. विज्ञान, [ज्ञान, सद्बोध]; ऐतिरा. विज्ञान, [कला-कौशल्य]; आरारा. शृंगामं. युक्ति; *नलाख्या. [सरतचूक, भूल, विस्मरण] (सं.वि+ज्ञान); जुओ विजाणइ, वीद्यांण

विनाषड् प्राचीफा. छेतरे, धूते (सं.विज्ञान); शृंगामं. *जाणे [युक्ति करे, पटावे]; षडावा. जाणे, [आवडत बतावे]; जुओ वीनाणीने विनाणगार प्राचीफा. युक्तिबाज, धूर्त (सं. विज्ञान+कार)

विनाणुं *प्राचीसं*. जाणकारी (सं.विज्ञानम्) विनाण जुओ विनाण

विनु *प्राचीफा*. विनय

विनेउ षडावा. शिष्य (सं.विनेय)

विनेजुक्त दशस्कं(१). विनययुक्त, सविनय विश्वाण नेमिछं. समज, [युक्ति]; गुर्जरा. ज्ञान, [कौशल्य] [सं.विज्ञान] विश्वाणी ऐतिका. विज्ञानी, [विशेष ज्ञानी] विश्वाणी ऋषिरा. विशेष जाणकार (सं. विज्ञानी)

वित्रिफल तेरका. एक वनस्पति विन्यांनी उक्तिर. ज्ञानी (सं.विज्ञानी) विन्हें [बिन्हें] ऐतिका. बन्ने [सं.द्वि-] विपर अभिक. ब्राह्मण (सं.विप्र)

विपराविषुं उक्तिर. वपराववुं, उपयोगमां लेवडाववुं (सं.व्यापारयितव्यम्)

विपरीत आरारा. दूर चाली गई; हरिख्या. बदलायेलुं, कारमुं, [बनावटी, जूठुं]; वसमुं, [प्रतिकूळ] (सं.)

विपरीत भावना चित्तसं. आत्मा देहादिरूप छे अथवा जगत सत्य छे एम मानवुं ते, मिथ्या ज्ञान

विषाक आरारा. परिणाम, फळ (सं.) विषा आरारा. विप्र, ब्राह्मण विष्पअ शृंगामं. विप्रिय, [अप्रिय, अणगमतुं] विष्फुरइ ऐतिका. स्फुरे, प्रगट थाय; जुओ विस्फुरइ

विग्रणी *आरारा*. ब्राह्मणी

विमतारइ *आरारा. बडाबा*. छेतरे (सं. विप्रतारयति)

विप्रीत्य चित्तसं. विपरीत भावना; जुओ विपरीत भावना

ंविब्भमि *शृंगामं*. विभ्रमथी, [विलासथी]

विभवार कादं(शा). व्यभिचार

विभाग "कादं(शा). [प्रकरण, प्रसंग] [सं.]

विभाडवुं *अंगवि. कृष्णवा.* फाडवुं, नाश करवो

विभाडिजं * विक्रच. [तोड्युं]; हरिवि. विनष्ट कर्युं (सं.वि+स्फाट्) [दे.]

विभांति *हम्मीप्र. [विविध रीते] [रा.; हिं.] [सं.वि+भक्ति]

विभिचारणी दशस्कं(१). व्यभिचारिणी

विभूति आरारा. साधनसंपत्ति (सं.); नरका. वीसरा. भभूती, राखोडी, राख

विभूसीय ऐतिका. विभूषित, [शोभीतुं]

विमन प्राचीफा. ऊलटी (सं.वमन)

विमन्नइ जुओ मन्नइ

विमर कृष्णच. विवर, खाडो

विमरसङ् षडाबा. विचारे (सं.विमर्शति)

विमाण आरारा. गुर्जरा. विमान, [आकाश-यान]; गुर्जरा. उद्यलोक, [देवलोक];

महालय (सं.विमान)

विमासइ आरारा. उक्तिर. उपबा. उषाह. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. जिनरा. रूपच. विक्रच. विराप. शीलक. षडाबा. विचारे (सं.विमृशति)

विमास**ः** *उक्तिर*. विचारेलुं (सं.विमृष्टम्) विमासण *गूर्जरा. शीलक.* विचारणा, विचारवुं ते [सं.विमर्शन]

विमासणीइं * उपबा. [विचारणाथी, विचारी-ने] (सं.विमर्शन)

विमासरण *प्राचीका*. विमासण, [विचारणा] (सं.विमर्शन)

विमासिवुं उक्तिर. विचारवुं (सं.विमश्)

विमांण *वीसरा*. विमान

विमांशी, विमांसी नलाख्या. विचारी (सं. विमर्श्)

विम्मास- तेरका. विचारवुं (सं.विमश्)

विम्हिउ गुर्जरा. आश्चर्य पाच्यो (सं.विस्मित)

विय कादं(शा). वय, उंमर

वियरी *कर्पूमं*. वैरी

वियारणि जुओ वरसवियारणि

वियारियं उक्तिर. ठगायो (सं.विप्रतारितः)

वियाल प्राचीसं. सायंकाल (सं.विकाल)

विरंड *षष्टिप्र.* हलको, वरबो, [अनिष्ट] (सं. विरूप)

विरचइ जिनरा. विरत याय, [अटके] [रा.]; गुर्जरा. आयोजे [सं.विरचयति]

विराज *प्रेमाका*. रज विनानां

विस्तब *उक्तिर. गुर्जरा*. विस्क्त

विस्तंत, विस्तांत *आरारा. गुर्जरा. देवरा.* प्राचीफा. वृत्तांत, हकीकत

विरति *वाग्भवा.* यति, छंदमां आवतो विराम

विस्ती तेरका. विस्क थई; *लावल. [विस्मी]

विस्ती *लावल*. वृत्ति

विस्ते अखाका. वृत्तिथी, [वरत्ये, होवाथी]

विस्तर *प्राचीफा.* विस्तः, पराङ्गुख

विस्ती *आरारा*. विस्तंत थई, एना वगरनी थई

बिरप *प्राचीसं*. वृद्ध

विरमइ अखाका. उपबा. तजी दे, -थी मुक्त रहे [सं.विरमित]

विरह तेरका. एक वनस्पति [दे.विरिह]
विरहकरालीय वसंवि. वसंवि(ब्रा). विरहथी
त्रस्त (सं.विरह+करालित)

बिरहणि *गुर्जरा*. विरहिणी

विरह-वर्तूची नरका. विरहमग्न; जुओ विर्तूधी विरहिणीसाषु वसंवि. विरहिणीओनो साय,

[समुदाय] [सं.विरहिणी+सार्य] **वित्व, वित्यू** *गुर्जरा. शृंगामं.* दुःखी, अप्रसत्र

[ti.]

विरंचि अखेगी. नरका. ब्रह्मा [सं.]

विराडिच *"गुर्जरा. विराप.* उश्केरायो, [आवेशमां आव्यो]

बिराधइ उपबा. भंग करे; गुर्जरा. अटकावे, अवरुद्ध करे; आरारा. "उपबा. षडाबा. -नो अपराध करे, कष्ट आपे (सं. विराध्यति)

बिराधि *हम्मीप्र*. व्याधि

बिराम *आरारा*. कष्ट, उपद्रव, पीडा (रा.)

बिरात वसंफा. वसंवि(ब्रा). वराळ

विराव अखाका. कलबलाट [सं.]

विरांसइ जुओ वरासइ

विरांसच जुओ वरासउ

बिरी अभिक्त. कादं(शा). नलाख्या. प्रबोप्र. शत्रु, दुश्मन (सं.वैरी)

बिरुउं *अभिऊ. *विराप.* विरूप, [खराब,

खोटुं]

बिरुदेत ऐतिका. बिरुद धरावनार

विरुद्ध आरारा. विरोधी भाव

विरुवां *नरका*: वरवां, नठारां, नरसां (सं. विरूप)

विक हम्मीप्र. वरवुं, अनिष्ट, [प्रतिकूळ] (सं.विरूप)

विक्ताड, विकार, विकार उक्तिर, उपवा. उषाह, "कर्पूमं, गुर्जरा, जिनरा, नेमिछं, प्रद्युचु, लावल, वरवुं, मूंडुं, खराब, [अनिष्ट]

विरोध्यो *प्रेमाका*. विरोधी - प्रतिकूळ -दु:खरूप बनाव्यो

विरोलइ उक्तिर. नरप. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वलोवे (दे.विरोल); गुर्जरा. विराप. वलोवे, ढंढोळे, [हल-मलावे, पजवे]

बिलइ *घडाबा***.** विलय

विलंड गुर्जरा. नाश (सं.विलय)

विसकतर जिनरा. विलक्ष [व्याकुळ] थतो, [रइतो] [रा.]

वित्तविश्वय गुर्जरा. व्याकुळ धई, दुःखी धई (सं.विलक्षिता)

बित्तखंड उक्तिर. ऋषिरा. प्राचीफा. [उदास, करमाई गयेलुं, फिक्कुं] (सं.यिलक्ष)

वित्तखाण्डं *आरारा*. गभरायुं; [खिन्न थयुं]; *प्रशुचु. *विक्रच. [करमाई गयुं; झांखुं पडी गयुं] (सं.विलक्ष)

विलिखत आराराः गभरायेलुं (सं.विलिक्षित) विलगह् गुर्जराः रूपचः वळगे (सं.विलगति) विलगाय देवरा. वळगाडी (सं.विलग्) विनगडी आरारा. लावल. वळगाडी विसपी विसपी *ऋषिराः -मां मम्न फसायेली, आकृष्ट] [सं.विलुब्ध] विसय प्राचीसं. वनिता दि.ो विसलाइ आरारा. उदास यईने (रा.) **निललानइ** *आरारा*. विलाप करे (रा.) विसवद् आरारा. उक्तिर. कर्पूमं. गुर्जरा. तेरका. विलाप करे (सं.विलपति) **वितयततां** *देवरा***, विलाप करतां विलक्ति** *देवरा***, विला**प विनविलद्भ नरका. प्रद्युचु. प्राचीफा. रूपच. विलाप करे. वलवले बिलंबड उक्तिर. विलंब करे (सं.विलम्बते) **बिलंबा- (बिलंबाव-)** वीसरा. मोडुं कराववुं **क्लिई** *नरका-२*. वळगी विसानी कार्द(धू). कार्द(भा). नरका. वळगी (सं.विलम्न) **विलाति "**शंगामं. दिश, वतन] फा. विलायत रे **विलाया** *लावल.* वींटळाया, विळग्या े. (सं. वि+लग्न) विनिविति आरारा. वलवल, वलवलाट, रिदन, क्रंदनी विलिसियां षडाबा. विलास कर्यो, आनंद माण्यो (सं.विलस्) **वित्रुधंज, वित्रुधंज अंबरा. जिनरा**. वित्रुद्ध थयेल, [-मां मग्न]; जुओ विलधी विलुधडा शृंगामं. विलुब्ध, आसक्त विलुधला यसंफा. यसंवि. वसंवि(ब्रा).

विलुब्ध, आसक्त, लोभायेला, वळुंधेला **वितुद्ध** जिनरा. प्रद्युचु. प्राचीफा. उत्तरडी नाखे, [खणे] (प्रा.) **विसंघर** अभिक्त. दळगेलुं, -िमां मग्नो (सं.विलुब्ध) **विले** अखाका. अखाछ. विलय **वितेष्ट्र** *गुर्जरा. विराप.* म्लेच्छ, [अनार्य] **विलेक्न** *आनंस्त. तेरका.* **विले**पन विलोडच उक्तिर. वलोव्यं, हलमलाव्यं (सं. विलोडित) **विलोकीतउं** *षडाबा*. विलोकातुं, जोवातुं (सं.विलोक्) **विलोजरं** *विमप्र*. वलोणं **बिलोम प्रेमाका.** ऊलटो, क्रिमविरुद्धो (सं.) विलोल *ऋथिरा. गुर्जरा. अति चंचळ, [क्षुड्य] (सं.) **विलोललां** *नरका.* *वलोवतां, [*हालतां-झुलतां, "चंचळ] [सं.विलोड्] **विलोक्तां "**गुर्जरा. [हलावतां] (प्रा. विलोडड) [सं.विलोड्] विवचार्यां नरपः व्यभिचार करनारां (सं. व्यभिचरित) विवध देवरा, विविध विवनउ गुर्जरा. मर्यो (सं.विपन्न) **विवर** श्रंगामं. खाडो, छिद्र [सं.]; *आनंस्त.* वसंफा(ल). **"वसंवि(ब्रा). छिद्र, प्रवेशद्वार** विवरीय तेरका. विपरीत, [प्रतिकृळ] विकर्जंड षडाबा. त्याग करे (सं.विवर्जयति) विवर्षं जिनराः विवेचन कर्युं, विवरण

कर्युं [सं.वि+वृ]

विवसाइउ नलरा. वेपारी, व्यवसाय करनार, [धंधादारी] (सं.व्यवसायिक)

विवसाय जुओ विवाय

विवह (विहय) तेरका. वैभव

विवहपरइ, विवहप्परि ऐतिका. गुर्जरा. प्रद्युच्. विविध प्रकारे

विवहार ऋषिरा. वीसरा. व्यवहार, [आदान-प्रदान, संबंध]; गुर्जरा. व्यवहार, रूढि, रिवाज

विवहारियड, विवहारी, विवहारीयड आरारा. नलरा. प्राचीफा. विकरा. वेपारी (सं.व्यवहारिन्)

विदागइ ऋषिरा. (कर्मना) विपाकथी, [परिणामथी]

"विवाय ["विवसाय] चंद्रवा.?, [व्यवसाय]

विवाहलु ऐतिका. ऐतिरा. विवाहनुं काव्य, [विवाहलो, प्रशस्तिमूलक चरित्रकाव्य, दीक्षादि उत्सवप्रसंगनुं काव्य]; जुओ वीवाहलउ

विविष्ठ ऐतिका. नेमिछं. विविध, जुदाजुदा विवीशाल उषाह. वेशवाळ, [वेविशाळ] विवीहज प्राचीसं. पपीहा, बपैयो विवेक आरारा. विचार, निश्चय (सं.); लावल. सारानरसानो भेद, [विचार, भेदज्ञान]

विदेकी उपवा. सारासारनो भेद करनार, [ज्ञानी] (सं.विवेकी)

विरामे *चित्तसं.* शमे, विरमे विशा *षडाबा. [वसा, अंश, भाग] विशासी कादं(शा). लोखंडनी आंकडीवाळी नानी लाकडी – बावा साधु राखे छे तेवी (सं.विशाखिका)

विशेक चंद्रवा. विशेष

विशेख *हरिवि*. विशेष

विश्रमे "प्रेमाका. [विश्राम पामे छे, -मां विरमे छे, ठरे छे] [सं.विश्रमति]

विश्राम पाम्यो चित्तसं. शांति पाम्यो, संतोष पाम्यो

विश्वाल नलरा. [नष्ट], शांत; शृंगामं. नष्ट, विष्ठिञ्ज, [खंडित]; जुओ विसराल

विश्वा आरारा. संभवतः विश्वदेवने संबोधन विश्वा ऐतिरा. वसा, [गुणांक, दोकडा]; जुओ वसा सोइ, विसा विसाही

विश्वाध्यार अंबरा. विश्वाधार

विश्वानर ऐतिका. वैश्वानर, अग्नि

विश्वानत *दशस्कं(१).* वैश्वानर, अग्नि विश्वा वीसइ *ऐतिरा.* वीश वसा, [संपूर्ण-

पणे]; जुओ वीस वसा विष *पंचवा*. विशे, -मां (सं.विषये)

विषइया, विषईआ उपवा. षडावा. विषयक

विषकन्या पचवा. जेना देहमां विष व्यापेलुं छे तेवी कन्या, [अमुक प्रकारनां सामुद्रिक लक्षणो धरावनार कन्या, जेने कारणे एनी साथे संभोग करनार मृत्यु पामे

विषम्र ऋषिरा. खित्र (सं.विषण्ण)

विषमायुध *वसंवि. वसंवि(ब्रा).* कामदेव (सं.)

विषवाद *ऐतिका. [अफसोस, दुःख];

जुओं विखवाद

विषयारिस लावल. विषयना रसमां — शृंगाररसमां

विषे चित्तसं. विषय

विषेभोग चित्तसं. विषयोनो उपभोग

विसघारिय प्राचीफा. *विषथी बेचेन, [विष-नुं घेन चड्युं होय एवी, मदभरी] (सं. विष+घारिय); जुओ घारिउ

विस-दमिष शृंगामं. विषनुं दमन करनार, [विषने दूर करनार]

विसन कादं(शा). दुःख (सं.व्यसन)

विसनरु, विसनिरु *उक्तिर. गुर्जरा.* अग्नि (सं.वैश्वानर)

विसनी ऋषिरा. विक्रच. व्यसनी, [लते चडेलो]

विसम, विसमु गुर्जरा. नलाख्या. विराप. आकरुं, [कठोर], वसमुं, भयंकर (सं. विषम)

विसमित *षष्टिप्र. [होड, स्पर्धा, वाद]; जुओ विसिमिसि

विसमायुध वसंफा. कामदेव (सं.विषमा-युध)

विसमि**उं ***गुर्जरा. [विस्मय पान्युं]

विसभु जुओ विसम

विसमे *मोसाच.* विषम, [विपरीत], विचित्र, [अद्भुत, अनोखुं]

विसरामीनइ *आनंस्त*. विश्राम आपीने, [स्थापीने, राखीने]

विसराल * ऐतिरा. ऋषिरा. *लावल. *विमप्र. विसर्जित, [नष्ट]; जुओ विश्राल **"विसराल ["विसाल**] *देवरा.* विशाळ

विसराह- वीसरा. उत्तारी पाडवुं, निंदा करवी (सं.*विश्लाघते)

विसंहर अंबरा. उक्तिर. उषाह. ऐतिका. प्राचीसं. लावल. वीसरा. स्थूलिफा. विषधर, साप

विसंदुल उक्तिर. अस्थिर, विह्नल (सं. विसंस्थुलः)

विसंदुत्तिय *प्राचीसं*, व्याकुळ, (आवेशभर्यु) विसा *विमप्र.* वसा, [अंश, गुणांक]

विसा (वीस विसानुं मांणस) कृष्णच. वीस वसा[पूरा अंश]नुं माणस, सोनानुं माणस, [मूल्यवान माणस]

विसात *प्रेमाका.* पूंजी, भिल्कत [फा.विसात] विसारी घालइ जुओ घालइ

विसाय शुंगामं. विषाद, खेद

विसा विसाही विमप्र. वीस वसाऐ, [निश्चितपणे]; जुओ विश्वा वीसइ, वीसवा वीसई

विसाहइ उक्तिर. उपबा. विनिमय करे, वेचे (सं.विसाधयति)

विसाहणउं यडावा. वसाणुं, [गांधीने त्यांथी मळती] वस्तुओ (सं.विसाधन)

विसाहिबुं *उक्तिर.* विनिमय करवो, वेचवुं (सं.विसाध्)

विसिम (विसमिस) *हिरिवि. [होड, स्पर्धा, वाद]

विसिमिसि *उक्तिर*. होड, स्पर्धा, वाद विसीठु *प्राचीसं*. विशिष्ट, [मुख्य] विसु *विमप्र.* *विषम, [*विष] विसूचिका उपवा. कोलेरा (सं.विषूचिका) विसूद उक्तिर. खेद करे [दे.] विसेकी अखाका. विशेष[ता धरावनार], [अन्यथी जुदो पडनार, विशिष्ट] विसोका उक्तिर. कोडीनो वीसमी भाग (सं. विशोपका) विसोषि आरारा. विशुद्धि

विसोधिकरणु वडावा. विशुद्धीकरण विस्तरि वडावा. विस्तारथी

विस्फुरइ वडाबा. [आवी चडे], "आक्रमण करे, (सं.विस्फुरति); जुओ विष्फुरइ विस्मय वडाबा. विस्मय

विस्मयउं विरापः विस्मयः, आश्चर्य '[पार्स्युं] विस्मि, विस्मियं नलाख्याः विस्मयः, आश्चर्य विस्मे अखाकाः विस्मयः, विस्मितः; ग्रेमाकाः विस्मय

विस्र प्राचीफा. शब्दायमान, [कोलाहलभर्यु] (सं.विस्वर)

विष्ठ तेरका. प्रकार (सं.विध)

विष्ठइ लावल. वहे छे, धरावे छे [सं.वह]

विहचण प्राचीसं. विभाजन, वहेंचणी

विहची आरारा. रूपच. वहेंची (सं.विभक्त)

विष्ठडइ ऋषिरा. विनाश पामे (सं.वि+घट्); अंबरा. *उपबा. शृंगामं. विख्टुं पडे, छूटं पडे; लितरा. छोडे

विहडाइ प्रदुचुः वियुक्त थाय

विष्ठिय उक्तिर. वेंत, बार आंगळ जैटलुं माप (सं.वितस्ति)

बिहरइ उपवा. वहोरे, अन्न स्वीकारे (*सं. विहरति) [सं.व्याहरति] श्विहरत उक्तिर. "गुर्जरा. प्राचीपन. बहेरो., आंतरो, तफाक्त ("सं.व्यंतिकर) [सं. व्यवहार]

श्कितं *आनंस्त. ऐतिका.* वहेलो, जलदी [दे.वहिछ]

विहलंबल प्राचीफा. विहळ [दे.]

विक्रिक्य *प्राचीसं*. दुर्गति पामेला [सं. विकलित]

विक्य जुओ विवह

विश्वह उक्तिर. चारफा. तेरका. वसंका. वसंका(त). वसंवि. "वसंवि(द्वा). "षडाबा. विकसे, खीले (सं.विकसति); गुर्जरा. प्रगटे, उनो

विष्ठसाव- *तेरका.* विकसाववुं (सं.वि+हस् परथी)

विहंगमी *दशस्कं(२). प्रेमाका.* पंखिणी, कोयल [सं.]

विद्वंचल तेरका. प्राचीसं. विद्वळ (दे. विहलंघल)

विहंच- प्राचीसं. वहेंचवुं [सं.विभज्यते]

विहंडण तेरका. विनाशक (सं.विखंडन)

बिहंसक *गुर्जरा*. विध्वंसक

विहाइ *आरारा. "तेरका.* अंत पामे, पूरी थाय (सं.विद्यात)

विडाइ उक्तिर. शोले (सं.विभाति)

विहाड तेरका. वियोग (सं.वि+घट्य)

विहाण जिनरा. विधान, [रचना, निर्माण, घटना, धवुं ते]

विहाज आरारा. उपवा. उषाह. गुर्जरा. वीसरा. वहाणुं, सवार (सं.विभान) विहाज उक्तिर. सवार (सं.विभानक) विहाणी, विहांणी, वीहांणी आरारा. *कृष्णच. नरका. प्रेमाका. *वेताप. सिंहा(शा). नष्ट थई, वीती (सं.विधात); जुओ वेहांणी

विहाणु (सुविहाणु) * ऐतिका. [योग्य विधिपूर्वक]

विहाती *आरारा*. वीती (सं.विघात) विहार *देवरा*. साधुनो प्रवास; नलरा. देवमन्दिर (सं.)

विहांणी जुओ विहाणी

विष्ठि *ऐतिका. प्राचीसं. वीसरा*. विधि, विधाता, [स्रष्टा, भाग्यदेवता]; जुओ वही

विहिचिणि विमप्र. वहेंचणीमां

विहिची कादं(शा). नलाख्या. वहेंची (*प्रा. विहिचिअ) [सं.विभज्यते]

विहिममा *ऐतिका*. विधिमार्ग, [आचार-मार्ग]

विहिरु नलाख्या. वहेरो, तफावत (*सं. व्यभिचारः) [सं.व्यवहार]

विहितु नलाख्या. वहेलो (दे.वहिल्ल)

विहिचक प्रेमाका. विह्नक

विहिवा नरका. नलाख्या. प्रेमाका. विवाह, लग्न

विहिवार कादं(शा). प्रवोप्र. नलाख्या. व्यवहार, [आचरण, चालचलन, काम-काज, वहीवट]

विहिसियां कृष्णच. विकस्यां विहिहत्यडा नेमिछं. विधि[विधाता]ना हाथ विहुण जुओ हुण

विहुणंड उक्तिर. ऐतिका. वीसरा. रहित,

विनानुं, विहोणुं (सं.*विधून) विंग आनंस्त. व्यंग्य, [सूचित] विंजनउ प्राचीसं. व्यंजन, [रसयुक्त खाद्य पदार्थी]

विद्व शृंगामं. विंध्याचळ पर्वत विंठी नलाख्या. नष्ट यई (सं.विनष्ट) विंतर आरारा. नलरा. व्यंतर, हलकी कोटि-ना देव, एक प्रकारनी भूतयोनि विंद वीसरा. वर [रा.]; जुओ वींद विंद, विंदु गुर्जरा. प्राचीफा. वृन्द, समुदाय विंहचड़ उक्तिर. वहेंचे (सं.विभक्त परथी) वीआलि अभिक. विकाले, कसमये, [मोडेथी]

बीकड्ड उक्तिर. नलरा. षडाबा. हरिवि. वेचे (सं.चि+क्री)

बीकण- प्राचीसं. वेचवुं (सं.विक्रीणीते) **बीकाड** विमग्न. वेचाय

बीकारे *दशस्कं(२).* पडकारीने उश्केरे; जुओ वकारे

वीकिणिवउं षडावाः वेचवुं (सं.विक्रीणीते) वीकोदर चंद्रवाः वृकोदर, भीम

बीक्षणा आनंस्त. जोवं ते [सं.]

वीक्षात मदमो. विख्यात

वीख वीसरा. कदम, डगलुं (सं.वीखा)

बीखरइ जिक्तर. चेरे, विखेरे (सं.विकिरति) [सं.विष्किरति]

वीखात कामा(शा). विख्यात

दीखांण मदमो. रूस्तसं. वखाण; वर्णन (सं.व्याख्यान)

बीखांणे *मदमो.* वखाणे **बीखे** *मदमो.* विषे

बीट बीटाइ विमप्र. वींटी वळ्या, [धेरो

बीगताला जिनराः व्यक्तित्व धरावता, [प्रभावशाळी पुरुष] [रा.] **बीगुता** *नरका.* दुःखी; जुओ विगुता वीव्र कामा(शा). व्यग्र, [अस्वस्थ] **बीधरा बीना** *मदमो*. ओगळ्या विना बीधरे अखाछ. ओगळे [*सं.विग्रह] **बीघल का**पा(त्रि). विकल, [अस्वस्थ] **बीच** *उक्तिर*. मध्यभाग, गाळो (सं.वर्ल परथी) [हिं.बीच] **वीचमां** *वेताप* वचमां **वीचे** *चंद्रवा*. वचमां **बीचेबीचपणुं** चित्तसं. वद्येवच्चपणुं ? ओत-प्रोतपण् ? वीछडचो आरारा. पंचवा. प्रद्युचु. विछडेलो, जुदो पडेलो, वियोग पामेलो सिं. विच्छर्दिती बीछवो . कामा(त्रि). *****निस्तेज[रूप]. [*जोगीरूप] वीष्ट्र उक्तिर. वींछी (सं.वृश्चिकः) बीछोअ कामा(त्रि). विछोह, वियोग **वीजनउ ***वसंफा. *वसंवि(ब्रा). विजिणो, पंखो] (सं.व्यजनवन) **बीजावजु** *षडाबा.* वींझवुं ते, ढोळवुं ते (सं. वीज़्) **बीजुलिय** *तेरका.* वीजळी (सं.विद्युत् परथी) वीझाई उक्तिर. बुझाई (सं.विध्यातः) बीझायइ उक्तिर. बुझाय (*सं.विध्यायति) [सं.विध्मायति] बीझावड् उक्तिर. बुझावे (*सं.विध्यापयति) [सं.विध्मापयति]

नाख्यो वीटंबि प्राचीका. विटंबणा करे (सं.विडंब्) **बीटू** *प्राचीका.* हलका, [लंपटताभया] [सं. विटो बीठ उक्तिर. विष्टा, मेलूं **बीडारू** चतुचा. विदार्यं, काप्युं [सं.विदार्] **बीण** *आरारा*. वेणी, चोटलो; जुओ सीरवीण **बीण** *गुर्जरा. वसंवि(ब्रा). वीसरा.* वीणा वीणठां मोसाच. वंठेला, दृष्ट [सं.विनष्ट] **वीणि** वसंफा. वसंवि. धीणा **बीणि** उक्तिर. उषाह. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वेणी, चोटलो **बीणिवा** उक्तिर. वीणवा [सं.विचिनोति] बीणो दशस्कं(१). प्रेमाका. वेणु, वांसळी **बीत** चित्तसं. वित्त. सत्त्व **बीतग** *आरारा. मदमो*. वीतक **बीतरागइजिनुं** *ष***ष्टिप्र**. वीतरागनुं ज **वीतो** *गुर्जरा.* बन्युं (सं.वृत्त) बीन्नेक दशस्कं(२). सौधी विशेष के चडियातुं [सं.व्यतिरेक]: चित्तसं. व्यतिरेक, भेद **वीथि, वीथी** *कादं(शा). [सामसामी बे हार, कतार]; नरका. [सामसामी हार, कतार], ति वद्येनो] मार्ग; *हरिख्या*. शेरी (सं.) **बीद्यांण** सिंहा(शा). पाखंड, कपट, [चातुर्य, पट्ता] [सं.विज्ञान]; जुओ विनाण

बीटली विमप्र. वींटी, अंगूठी [सं.वेष्टिका]

वीष्ठ जुओ विधओ

बीघोगत "कामा(त्रि), कामा(शा), दिधि

प्रमाणे: जुओ विधोगत **बीनता** *चतुचा. मदमो*. वनिता **बीनविदं** उक्तिर. वीनववुं (सं.विज्ञप-यितव्यम्) वीनाणीने नरका. नरप. धंतर-मंतर करीने, जादु करीने, [युक्ति करीने] (सं. विज्ञान); जुओ विनाणइ **बीने** *चतुचा*. विनय वीभल नंदब. सिंहा(शा). विह्नक वीभलपणुं कादं(ध्र). बावरापणुं, [विह्नळ-पण् बीभीचार महमो, व्यभिचार **बीमाण** *चतुचा*. अपमान (सं.विमान) बीमासीउ ललिरा. विचार्युं [सं.विमर्शित] **बीयस्त्रणा** *आरारा*. विचक्षण वीरमदल हम्मीप्र. वीरमर्दल, युद्ध प्रसंगे वगाडवानुं मर्दल, भादल, एक प्रकारनुं होल **बीरबट्ट** *प्राचीसं*. कपाळे पहेरवानुं एक सैनिक वस्त्र (सं.वीरपट्ट) **वीरवलय** प्राचीफा. पुरुषना हायनुं एक घरेणुं, [कडुं] (सं.) **वीराचार ***गुर्जरा. विीरने योग्य आचरण, वीरत्व, पराक्रम] (सं.) **बीरासे** *चतुचा***. भू**लमां वीरांसउ जुओ वरासउ **बीरिणि** *तेरका*. एक वनस्पति, [खस,

बीलो प्रेमाका. छूटो, [बेदरकारीथी रहेवा दीधेलो बीलोम कस्तुवा. विपरीत, ऊलटी, [वक्रता-भरी **वीवधचार वृत्**चा. विविध उपाय ? वीवाहड् उक्तिर. परणे, परणावे (सं.विवाह-यति) **बीवाहपगरण** *उक्तिर*. विवाहप्रसंग, तेनुं मंडाण (सं.विवाहप्रकरण); जुओ पगरण वीवाहला ऐतिकाः विवाहलो. चिरित्रात्मक प्रशस्तिकाव्य]; जुओ विवाहलु वीवीशाळ दशस्कं(२). वेविशाळ वीशंभर दशरकं(१). विश्वंभर, विश्वन् पोषण करनार परमात्मा **वीषअर** *मदमो*, विषधर **वीसउ** *ऐतिरा*. वीसो. [ए नामनी ज्ञाति] **वीसमी ***गूर्जरा. [विश्राम करीने] [सं. विश्रम्] वीस वसा अखाका. प्रेमप. मदमो. संपूर्ण-पणे, सो टका, निश्चे; जुओ वसा, विश्वा वीसइ **वीसवा वीसर्ड ***ऋथिरा. विीस वसा. निश्चितपणे, खरेखर]; जुओ विसा विसाही **दीस विसानुं माणस** जुओ विसा वीससइ उक्तिर. नलरा. विश्वास करे (सं. विश्वसिति)

बीर्ज्य चित्तसं. (पुरुषनुं) वीर्य, शुक्र

वीले दशस्कं(१). वले, [दशा]

[हलको] (सं.विरूप)

वाळो] [सं.वीरण, वीरिण]

वीरुवो कस्तुवा. सिंहा(शा). वरवो, खराब,

वीसहर अभिकः साप (सं.विषधर)

बीसास उपबा. विकच. विकरा. विश्वास **बीसासिणि *शंगामं**. [विश्वासपात्र (स्त्री)] **बीतातीक शंगामं.** विश्वास् **बैसा<u>त</u> विमप्र. *वीस; [*वीस जेटलुं**] **बीतिसउं** गुर्जरा. विश्वास राख्नुं (सं. विश्वस) **बीहांजी** *चंद्रवा*. विहोजी, विनानी बीडांनी जुओ विहाणी **बीडीचा** मदमो, विवाह र्वीष्ठीआ, वींबुआ अभिकः नरकाः प्रेमाकाः लावल. स्त्रीओन्ं पगनी आंगळीओए पहेरवानुं आभूषण (सं.वृश्चिक परथी) **बींट** उक्तिर. दींदु (सं.वृन्त) [प्रा.विंट]; जुओ बींट **बींट** उक्तिर. वींटो; जुओ ओही वींट वींटली लावल. स्त्रीओन् हाथ उपर पहेरवान् घरेणुं, [वींटीना प्रकारनुं] **बींटलो** *दशस्कं(१)*. स्त्रीओनुं एक घरेणुं वींव आरारा. वर (रा.); जुओ विंद

वृद्ध ऐतिका. वाद्य-विशेषः, जुओ बुक्क बुक्कोय (आउबुक्कोय) जिनरा. [आतप, नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीव पोते ठंडो होवा छतां सामाने प्रकाश अने गरमी आपे तथा] उद्योत, [नामकर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी जीवनुं शरीर शीतल प्रकाश आपे] [जै.]; जुओ उद्यय

. **बींधणां** *प्रेमाका*. वींध – काणुं पाडवानुं

बुद्धिया (? बुद्धिया) शंगामं. वृद्धि पाप्या

बुद्धि तेरका. वृष्टि **बुद्धीय** गुर्जरा. वरसीने (सं.वृष्ट) **बुद्धा** देवरा. नंदब. मदमो. वेताप. वरस्या (सं.वृष्ट) **बुद्धि प्राचीफा.** वरसाद (सं.वृष्टि)

बुडबुडा खु पडाबा. बुडबुड अवाज **बुड्डिया** जुओ वुट्टिया

बुब्पे आरास. वधे छे (सं.वृध्); जुओ वूढुं **बुल वसंवि(ब्रा)**. बकुल, बोरसली

बुलसरी, बुलसिरी आरारा(व). नलरा. शृंगामं. बोरसली (सं.बकुलश्री)

बुलइ ं विमप्र. [वटावे]; "अभिऊ. प्रद्युचु. पसार थाय [दे.वोल्]; जुओ वोलइ बुलावइ आरारा. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. वळावे, विदाय आपे

बुहरइ नलरा. शीलक. वहीरे, खरीदे [सं. व्यवहरयति]

बुहरति शृंगामं. वहोरत, लई जवुं ते, [खरीदी]

वुहरज *उक्तिर*. धीरधार करनार, वहोरो (सं.व्यवहर्ता) [रा.]

बुहारी वडाबा. झाडु, सावरणी (*सं. व्यवहारिन्) [दे.वोहार-]; जुओ बुहारइ **इह(?)** तेरका. बहु ?, [*वहेता] [रा.वुह] **बुंवा** *नरप(द). [वच्या, वह्या, चाल्या]; जुओ वृदुं

बुंण सिंहा(शा). वण, [कपास] [दे.बउणी]; जुओ वण, व्यूणा

बूठ जुओ अमिय वूठ बूठइ *अंगवि. आरास. उक्तिर. उषाह.*

एक ओजार

ऋषिरा. चारफा. नरका. नेमिछं. प्रधुचू. *प्राचीसं. श्रंगामं. षडाबा. वर*से (सं.दृष्ट परथी); जुओ बूठा **बुढ़ें** *नरका. विषप्र*. वच्युं, वह्यं, चाल्युं (सं. वृध्); जुओ वुढऐ, बूढ बूसट उक्तिर. बूसट, तमाची **बूहरीइ अभि**ऊ. व्यवहार करीए (सं.व्यवह) **बुहा** *जिनरा.* वह्या, जिपाड्या, कयी **वृक "**श्रेमाका. [वरु] [सं.] **इस** ज़ुओ वर्ख **ष्ट्रध्य** आरारा. वृक्ष **ष्टृतंतू** *गुर्जरा. वृ*तांत ष्ट्रत *चंद्रवा*: व्रत; [वरत, कोयडो] **वृत्तिइं** *उपजा*. -नी जेम वृत्तिसंखेप आरारा. वृत्तिसंक्षेप, बाह्य तपनो एक प्रकार, खावुं-पीवुं वगेरे भोग ओछा करता जवा ते जि.] **दृत्व, दृत्य** अखाका. अखेगी. चित्तसं. सिंहा(शा). वृत्ति, [मनोवृत्ति, वित्त-वृत्ति]; अखेगी. वृत्ति, [व्यवहार]; प्रेमाका. वृत्ति, आजीविका **वृथा (ब्रका)** सिंहा(शा). व्यथा **बृद्धतर का**र्द(शा). घडपणनो (सं.वृद्धत्व) **ष्ट्रीद्ध शांतिक** *नरका*. कुळनी वृद्धि अने शांति माटे करवामां आवतो धार्मिक विधि

वृद्धि-श्राद्ध *प्रेमाका.* [पुत्रजन्म जेवा मंगळ प्रसंगे] कुळनी वृद्धि माटे करवामां

कृष "आनंस्त. [धर्म] [सं.] **वृन्दारक** *ऐतिका***.** देवता [सं.] द्रयमान तनका, दृष्यानुतनका अखाका. नरका. वृषभानु राजानी पुत्री, सधा **ब्रह** नंदब. सिंहा(शा). विरह **वृहत्रड** *गुर्जरा. विराप.* बृहन्नला, विराटने त्यां रहेल अर्जुननुं नाम [सं.] **ब्रहेद** *अंबरा.* बृहञ्जला, नपुंसक **बुंदल** *प्रेमाका*. नपुंसक, व्यंढळ **ष्टुंबा** *नरका-२***. तुलसी (वनस्पति) [सं.]** वृंदारकटिका ग्रेमप. तुलसीनी वाडी [सं.] **वे** *अखाका*. ते. तेओ वे *चतुचा. प्राचीका. प्रेमप.* वय, उंमर; जुओ लघु-वे **बे** *आरारा*. वचन, वाणी (सं.वचस्) वे**अन्य** *नेमिछं*. वेदना वेइ वडाबा. अनुभवे, भोगवे; ऋषिरा. श्रंगामं. जाणे (सं.वेद्) **बेडल** उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. वसंप्रज्ञ. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). हरिवि. विचिकल लता; जुओ बेउल **बेउब्बिय** *ऐतिका.* विकुर्वना करी, दिव्य सामर्घ्यांथी उत्पन्न करी]; जुओ विकुर्वइ वेकार प्रद्युच्यः संगीतकार, [गायक]; जुओ <u> अयकार</u>ु बैख दशस्कं(१). वेष: अखाछ. मदमो. वेष, भेख; हरिवि. वेष, [रूप]; जुओ विख **बेखर्युं** *प्रेमाका.* [*चमत्कारिक शक्तियी रूपरिवर्तन कर्युं], विस्तृत कर्युं; जुओ विकुर्वइ

वृध *चंद्रवा*. वृद्धि

आवत् श्राद्ध [सं.]

वेखास जुओ बेखास, विखास वेगउ उक्तिर. वीसरा. जलदी (सं.वेग) वेगड ऐतिका. एक बिरुद अने [जैन साधुसमुदायनुं] नाम वेगड उक्तिर. सीधा, खुझा, मोटा शिंगडा-वाळो बळद, उत्तम प्रकारनो बळद (सं. विकट परथी) वेगडि, वेगडी उक्तिर. सीधा, खुझा, मोटा

(सं.विकट परथी) वेगडो *ऐतिरा*. बेगडो वेगलउ *उक्तिर.* जलदी; *जिनरा. [दूर] वेगलांथा शृंगामं. दूरथी, [वेगळां – दूर होईने, दूर छतां]

शिंगडावाळी गाय. उत्तम प्रकारनी गाय

वेगा मदमो. वहेलां, [जलदी]

वेगि थइ आरारा. जलदीथी

वेगी हुइ आरारा. जलदी करो

वेगुलइ आरास. वेगळे, दूर; चारफा. वेगपूर्वक, [जलदीथी]

वेगै प्राचीफा. घृत आदि विकारजनक वस्तु (सं.विकृति) (जै.); जुओ विगइ

वेच**इ** नलरा. प्राचीसं. *षडावा. षष्टिप्र. व्यय करे, [वापरे, खर्चे] (प्रा.वेच)

वेचा**षुं** मदमो. वेताप. सिंहा(शा). वेचातुं, विचाणयी, खरीदीने]

*क्चालिक [बेतालिक] सिंहा(म). बंदिजन, [कीर्तिगान करनार] (सं.वैतालिक)

वेचिबुं उक्तिर. वेचवुं [दे.वेच-]

देज अखाका. *तेरका. *प्राचीसं. (बाणनुं) निशान (सं.वेध्य) वैद्र *उक्तिर. "तेरका. "प्राचीसं*. [बाणनुं] निशान, (सं.वेध्य)

वेझा अखेगी. वेद्य, ज्ञेय

वेश्वं अखाछ. विमप्र. बाणनुं निशान [सं. वेध्य]

बेठि उक्तिर. वेठ, फरजियात सेवा (सं. विष्टि); *जिनरा. [निरर्थक श्रम]; शीलक. वैतरुं, [सेवा]

वेडस *आरारा(व). तेरका.* वेतस, पाणीमां थतो नेतरना प्रकारनो छोड (प्रा.)

वेडांग, वेडांगण कस्तुवा. मदमो. वेताप. घोडो; वेताप. [घोडा जेवो] प्रचंड

वेडि *आरारा*. "वीडी, "बीड, "घासवाळी जमीन, [वगडो]; "उपबा. गुर्जरा. "नेमिछं. "विराप. वन, रान [रा.]

वेडि वीसरा. बेडी

बेडू धान *विमप्र.* पोतानी मेळे ऊगेलां अनाज, [वगडाउ अनाज]

वेडे अखाका. प्रेमाका. तोडे, नीचे पाडे

वेढ अभिक. *ऐतिका. जिनरा. आंगळीए पहेरवानी एक प्रकारनी मोटी वींटी (सं.वेष्टित परथीं)

वेढ *षडाबा***. पाश, बंधन (सं.वेष्ट)**

वेदला विमप्र. काननुं घरेणुं

वेदतुं कृष्णवा. घेरतुं [सं.वेष्ट-]

वेढालगु विमप्र. लडवा सञ्ज थयेल, [युद्ध-प्रिय]

वेढाली ऋषिरा. कजियाखोर

वेढि अंब्रा. "उषाह. जिनरा. "ललिरा. विमप्र. युद्ध, लडाई; लडवाड, [झघडो] वेढिउ एडाबा. वींटी वळ्यो, घेरो घाल्यो (सं.वेष्टितः)

वेडिमी उक्तिर. वेढमी, पूरणपोळी (सं. वेष्टिमा)

वेण *अखाका. नरका-२. वचन, [वाणी] वेण नरका. प्रेमाका. वेणु, वांसळी के ऐने मळतुं वाद्य

वेण नरका. नरप. नेमिछं. वेणी, [चोटलो] वेण-वासिक ग्रेमाका. वासुकि नागना जेवी वेणी, [चोटलो]

वेजा कामा(शा). चंद्रवा. दशस्कं(१). दशस्कं(२). *नरप(द). लावल. वीणा वेजि ऋषिरा. *वचन वडे, [*वेजी — चोटलाथीं

वेणि, वेणी आरारा. तेरका. लावल. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). चोटलो (सं.)

बेणि, वेणी *उषाह. लावल.* वीणा **बेणी** *नरका-२.* वचनवाळी

क्णीदंड आरारा. विक्रच. चोटलो (सं.)

बेणु *दशस्कं(२). प्रेमाका*. पायो, वांसळी [सं.]

वेत जिनरा. [बेत], विधान, [योजना] वेव जुओ मधुकर वेद, रसवेद

देव, ब्येद अखाछ. कार्द(शा). चतुचा. चंद्रवा, चंत्रसं. मदमो. सिंहा(शा). हिंडिसं. निश्चित, नक्की, खरेखर, [निश्चित बात, खरी वात] (सं.); *अखाका. विदशास्त्री

बेवझुषि चारफा. वेदमंत्रनो ध्वनि (सं.वेद-ध्वनि)

वेदन गुर्जरा. नलाख्या. लावल. वीसरा.

वेदना, पीडा

वेदनी आनंस्त. वेदनीय (कर्म), जे कर्म आत्माने सुख-दुःख आपे ते [जै.]; कादं(शा). वेदनायुक्त, दुःखी

बेदवाणी नरका. प्रेमाका. नक्की, चोक्कस **वेद-वायक** नरका. प्रेमाका. वेदवाक्य, नक्की, चोक्कस हकीकत

वेदविटंड अखेगी. वेदनी वितंडा करनारो, विदनी ब्रह्मविद्यानुं अणसमजभर्युं खंडन करनार]

वेधज्ञान आनंस्त. विषयनुं ज्ञान [सं.] वेध अंवरा. "गुर्जरा. नलरा. शृंगामं. आकर्षण, [आसक्ति], मर्म, रस; जुओ सवेध, सुवेध

वेध गुर्जरा. छिद्र, [जखम] (सं.वेध) वेध (वेधउ) वसंफा. वसंवि(ब्रा). चतुर, विदम्धः वीधायेलो

वेधक "ऐतिरा. [विदग्ध, चतुर]

वेधवुं कृष्णवा. [वींधवुं, घायल करवुं], व्याकुळ करवुं [सं.वेधित]

वेषा *कादं(शा)*. ब्रह्मा, प्रजापति (सं.)

वेधां *प्रेमप*. वींधायेलां, [अनुरागवश थयेलां] [सं.वेधित]

वेधीय प्राचीफा. [विदग्ध]; रसिक, संस्कारी वेधीलां नरका. वींधायेलां [सं.वेधित]

वेष्यउं अखेगी. ऋषिरा. वींधायेलुं; प्राचीफा. प्रेमासक्त [सं.वेधित]

वेच्या *नलाख्या.* ब्रह्मा (सं.वेघा)

वेषथ *हरिवि*. वेपथु, ध्रुजारी

वेपार *प्रेमाका***.** व्यापार, प्रवृत्ति

वेमान दशस्कं(१). विमान वेव (इच्छेनेव) [इत्विवेव] जिनरा. वेद, स्त्रीवेद, मोहनीय कर्मनो एक प्रकार, जेना उदयथी स्त्रीने पुरुष साथे मैथूननी इच्छा याय छे] [जै.]; जुओ इच्छेवेय **क्येड** *उक्तिर.* जाणे (सं.वेदय्) **बेयज** जिनरा. वेदन, वेदनीय कर्म: गुर्जरा. वेदना **केवल** *तेरका.* एक वनस्पति, विचकिल (प्रा.वेड्स) **वेयावञ्च** *आरारा.* सेवा, शुश्रुषा (सं.वैया-वृत्य) वेयावद्यसार *ऐतिका*. [उत्तम] सेवा **बेखुं** *अखाका*. जाण्युं (सं.विदु) बेर जुओ वसुधा दे वेहेर **बेरा** *उक्तिर.* वीरडो, नानो कूवो (सं. विदारका) दि.वियरय; रा.] **बेरागर "**अखाका. नरका. प्राचीका. एक प्रकारनुं रल, [हीरो] (सं.वज्र+आकर) **वेरीनड** *आरारा*. वलोवीने **बेरो** *अखाका.* [वहेरो], भेद, [द्वैत] **देल, देळ** अखाका, वेळा, समय: *नरका.* भरती [सं.वेला]; "प्रेमाका. लिहेर] (वायुनी) **वेला "**नलरा. सिंकट. आपत्ति] (सं.); जुओ वेळा पडी **बेला ("नेबेला)** अखाछ. कोई मादक पदार्थ ?, [*कोई रोग, *आपित्र] वे**लाकुल (वेला कूलेरा) ***नलरा. [काकडीना वेला] [सं.वेली+कुलीस]

वेला काले *चतुचा*. वेळा गाळे, समय पसार करे **बेळा पडी** *प्रेमाका.* **मुश्केली आवी; जुओ** वेला **बेलि** *आरारा(व)*. विचकिल (प्रा.वेड्झ)?; निद्राप्रेरक लता (दे.वेली)? **बेलियां** *नरका, प्रेमाका,* हायनी आंगळीए पहेरवानां एक जातनां आभूषण **केन्द्र, बेल्** उक्तिर, ऋषिरा, प्रेमाका, रेती 🕆 (सं.वालुका) **बेल्यो** *लावल*. वेल. वेलीओ वेवलां "अखाकाः विव नामनी वेलनां डाळखां, पांदडां] **वेवलां वीजवां** *ग्रेमाका*, फांफां के वलखां मारवां **वेवा** *प्रेमाका*, विवाह **बेबाडिणि** *आरारा***.** चेवाण वेवाहिय गुर्जरा. वेवाई; [संबंधी] (सं. वैवाहिक) वेबाही जिनरा. सगांसंबंधी (सं.वैवाहिक) **वेविरु** *षडाबा.* **धूजतुं माणस (सं.वेपितृ) वेतुं** *अखाका.* वेदवुं, जाणवुं (सं.विद्) वेश जुओ गोगवेश वेश, वेस मदमो. वेताप. वय (सं.वयस्): जुओ वेष **वेशवाळ** *प्रेमाका*. सगपण **वेशंती** *नरका. नरप.* वेश्या. गणिका **वेशा** *विक्ररा*, वेश्या वेशाखिका (वेशाषिका) ऐतिका. वैशेषिक दर्शन[वाळा]

वेशि जुओ वेसा **"वेशोक (वा शोक) "** चंद्रवा. [अथवा शोक] वेच *आरारा*. उंमर, युवानी (रा.) (सं. वयस्); जुओ वेश **बेस** *तेरका, प्राचीफा, विक्ररा*, वेश्या, गणिकाः जुओ वेसा वेस वीसरा. वेश, रूप (सं.वेष) वेस आरारा. चतुचा. "वीसरा. सिंहा(शा). वय, उंमर (सं.वयस्); जुओ बालीवेस, वेश **बेसर** *दशरकं(९). प्रेमाका*. नाकनी वाळी, वेसर, वेसरु अंगवि. उक्तिर. शंगामं. षडावा. खघर (सं.); जुओ वेसह वेसा, वेस, वेशि *गुर्जरा. तेरका.* वेश्या वेसवार उक्तिरः राई, जीरुं वगेरेनां चूर्ण मेळवीने करवामां आवेलो गरम मसालो (ti.) **"वेसह ["वेसर]** "*उषाह.* [खद्यर] (सं. वृषभ) वेसाथाडउ उक्तिर. वेश्यावाडो (सं.वेश्या-वाटकः) वेसास *आरारा. जिनरा. वीसरा*. विश्वास वेसासी षडाबा. विश्वास आपी. विश्वासमां लई (सं.विश्वसयति) वेह अखाका. प्रेमाका. वींघ, छिद्र (सं.वेघ) **बेहण** *उक्तिर*. वींधवानुं ओजार, सोयो . (सं.वेधनकम्)

वेडी करी *गुर्जरा*. वींधी ("सं.विध्यति) सिं.वेधिती **बेहेजु** *नरका. व*हाणुं, प्रमात [सं.विमानक] बेहेनी कामा(शा). अग्नि [सं.वहि] **वेडेपार** मदमो, वेपार **बेहेर** *चित्तसं*. जुदापणुं; **नंदब*. [चिराड, मार्गी; जुओ वसुधा दे वहेर, वहेर **बेहेरी** *मदमो*. वेरी, [दुश्मन] **वेहेरे** *प्रेमाका***. वेरे, साथे, (साथेना** प्रसंगे] **बेडेरेशे** *चतुचा*. वहेरी नाखशे **बेडेरो** *प्राचीका. प्रेमाका*. भेद. तफावत **बेडेवल** कामा(शा). विद्वळ **बेखरी** अखेगी. प्रेमाका. वाणी; कादं(शा). मानव-वाणी (सं.) **बेनुन्य** *चित्तसं.* गुण वगरनी स्थिति, निर्गुण स्थिति [सं.वैगुण्य] **बैताडि** अंबरा. वैताढ्य पर्वत उपर **बेताल, बैताल** *पंचवा*. [वेताळ], वेताली सिद्धिनो जाणकार, मिडदामां प्रवेश करवानी सिद्धि घरावनार एक भूतयोनि] **बैदुर्भी** *दशस्कं(२)***. वैदर्भी, रुक्**मिणी **बैदुर्य** *नरका-२.* नील रंगनुं एक रत्न [सं.] **वैदेतिक** *आरारा*. परदेशी (सं.वैदेशिक) वैध-वड्डद (वैद्य विद्र) विमप्र. वैद्यविद्यावाळा, वैद्य अने विद्यानी **वैद्रभादेश** *दशस्कं(२)*. विदर्भ देश **वैद्रभी** *दशस्कं(२)***. वैदर्भी, रुक्**मिणी **वैनितेय** *शंगामं***. गरुड (सं.वैन**तेय) **वैरोट** *नलरा*. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो. वैराट

बेहलि *ऐतिका.* [वहेली], शीघ्र

बेहांणी चित्तसं. वीती गई; जुओ विहाणी

वैसंया नलाख्या. वैशंपायन ऋषि, महा-भारतना वक्ता वैंस प्राचीका. वंश, [कुळ] बोरण देवरा. वहोरवुं ते, भिक्षा लेवी ते [सं.च्यवहरू]

[सं.व्यवहर्]
बोरावे देवरा. वहोरावे, [भिक्षा आपे]
बोरी देवरा. वहोरी, [भिक्षा लई] [सं.व्यवह]
बोलइ, बोळइ षडावा. पसार करे, व्यतीत करे [दे.]; लपच. वीते, [व्यतीत थाय];
अखाका. वटावे, ओळंगे; *कस्तुवा.
[(रस्तो) वटावे]; जुओ वुलइ

वोत्ताब्वुं, बोळाब्वुं दशस्कं(१). नरका. प्रेमाका. मदमो. हरिख्या. वळाववुं, विदाय आपवी

बोळावा *अखाका.* मुसाफरीमां साथे रहेता चोकियात

बोळाविया *अखाका*. वोळावा, प्रवासमां साथे जई रक्षण करनार

बोळावी अखाका. वोळावा, मुसाफरीमां साथे रहेता चोकियात

वोळे आवे अखाका. ठेकाणे आवे, बराबर समजाय, [पार पडे]

बोहोणुं *दशस्कं (९)*. विहोणुं, विनानुं

वोहोरतिया अखाछ. वहोरनार, [खरीदनार]

वोहोरती *प्रेमाका*. वहोरतियो, वहोरवानुं (खरीदवानुं) काम करनार [सं.व्यवह]

बोहोरावें *देवरा*. वहोरावे, [भिक्षा आपे]

बौढाउर नलरा. एक नगर ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

थकः चित्तसं. व्यक्ति, प्रगटीकरण

व्यक्तई आनंस्त. व्यक्त थाय व्यक्तजं उपना. स्पष्ट, समजावीने व्यक्तभेद चित्तसं. व्यक्त सृष्टिना भेद व्यक्ति "अखाछ. [भिन्नत्व, जुदाजुदापणुं]; जुओ विगत्य

च्यगतुं अखाका. व्यक्त, स्पष्ट च्यगतो जुओ वगूतो

च्चन *ग्रेमाका. [(वायु) ढोळवो ते] च्चत अखाछ. वित्त, धन, माल, [सार] च्चत चित्तसं. वित्त, सार, साररूप तत्त्व

ष्यध्य *चित्तसं.* विधि, प्रकार

व्यपरीत मदमो. विपरीत

म्यत्यं चित्तसं. वृत्ति, वर्तन, स्थिति, व्यवहार **म्यवसाइया** विमप्र. धंधादारी माणसो, वेपारी [सं.व्यवसायिक]

व्यवहारि सिंहा(म). वेपारी (सं.व्यवहारिन्) व्यवहारीज आरारा. नलरा. लावल. विमप्र. वेपारी (सं.व्यावहारिक)

व्यवेक जुओ वव्येक

व्यवेहारा पंचवा. वेपारी (सं.व्यवहारकः)

व्यसनि लावल. व्यसन[मां], [आपत्तिमां] व्यसा चित्तसं. वसा, [अंश], टका; जुओ

वसा सोइ

च्यह परि [च्यह परि] उक्तिरः बेय रीते [सं.द्वि+खल्+प्रकार]

व्यंजन करे *नरका*. पवन नाखे, [वायु ढोळे]

चंदुं नलाख्या. वंठ्युं, बगड्युं (सं.विनष्ट) **चंज** मदमो. विना **चंत** हम्मीप्र. वंश **व्या- (व्याव-)** *वीसरा.* वियाय, जन्म आपे (सं.विजायते) **व्याइ** *शुंगामं*. प्रसूताने **व्याफ** उक्तिर. वाउ, चामडीमां फाट पडवी ते, वाढिया (सं.विपादिका) **व्याख्यान** चित्तसं. वर्णन, कोई विषयन् विस्तारथी करेलुं प्रतिपादन [सं.] **"व्याध "च्याध** *मदमो*. ढेड; जुओ व्याध, व्याधी **व्याध** अखाका. प्रेमाका. व्याधि. पीडा व्याघ प्रेमाका. शिकारी; जुओ व्याघ ष्याधी प्रेमाका. व्याध, पारधी **व्याध्य** अखाका. व्याधि व्याध्यूं *कादं(शा). वध्युं, [गाढुं थयुं] (सं.वर्धितम्) व्याध्यं *कादं(शा). [भेद्यं] [सं.व्याधित] **व्याप** *ऐतिरा*. फेलावो [सं.] **व्यापित "**गुर्जरा. [व्यापार, व्यवसाय, कर्म, प्रवृत्ति] [सं.व्यापृति] -व्यापार आरारा. लावल. कामकाज, प्रवृत्ति, कामगीरी; विमप्र. वेपार (सं.) व्यापारी कांद(शा). विमप्र. वेपारी (सं.) **व्यापारण** *षडाबा.* वापरवं ते (सं.) **व्याप्तमान** *दशस्कं(१)*. व्याप्त व्यारीज उक्तिर. छेतर्यो (सं.विप्रतारितः) **व्याळ** *दशस्कं(१). प्रेमाका*. सर्प [सं.व्याल] व्यालउ प्राचीफा. प्राचीसं. सांजनुं भोजन, वाळु (सं.विकालिक) व्याव- जुओ व्या-

व्यास *विक्ररा*. कथाकार [सं.] व्यासणउ व्यासणउ उक्तिर. बेसणुं, बे वखत आसने बेसी जमवानुं व्रत (सं. द्वयासनकम्) **व्याह** वीसरा. विवाह, लग्न **व्याहण र्गुर्जरा.** वहाणुं, सवार (सं. विभानकम्) **व्यितर** ललिरा. व्यंतर, भूत युतरे प्राचीका. ऊतरे (सं.व्युत्तरति) **ब्युत्सजउं** षडाबा. छोडुं, विसर्जुं (सं.व्युत्सज्) **व्यणा** *चंद्रवा*. कपास [दे.वउणी]; जुओ वृण **ब्येद** जुओ वेद व्येष जुओ वरव्येष **ब्रख** कामा(शा). वृक्ष; जुओ वरख, वर्ख व्रखा मदमो. वर्षा **ब्रखारत** *प्राचीका.* वर्षाऋतुः जुओ ब्रखारते. **ब्रज** *आरारा*. समुदाय (सं.) **व्रणव-** सिंहा(म). वर्णववुं **ब्रत** मदमो. *नक्की, [*स्थिति, *होवं ते] **ब्रत्यं, ****दशस्कं(२).* [आजीविका] [सं. वृत्ति] **ब्रथ** मदमो. वृथा व्रथा जुओ वृथा **व्रध** अखाछ. मदमो. वृद्धि, वधारो **ब्रध** *प्रेमाका*. वृद्ध, [वडील, भोटेरो] **ब्रधा** चंद्रवा. वृद्ध **ब्रय-** प्राचीसं. वापरवुं, खर्चवुं (सं.व्यय्) ब्रह नंदबं. प्राचीफा. सिंह(शा). विरह, वियोग

व्यावर जिनरा. प्रसृति [रा.]

ब्रहेणी मदमो. विरहिणी ब्रहेनी चतुचा. विरहनी ब्राध अखाका. अखाछ. व्याधि ब्रासिड नलरा. अयोग्य मार्गे गयो, [भूल करी, खोटुं कर्युं] [सं.विपर्यास परथी]; जुओ वरासइ, ब्रांसियउ

ब्रासु, ब्रांसु *अंगवि. कृष्णबा. "नलाख्या.* भ्रम, [भूल]

ब्रांसियउ *प्राचीसं*. विश्वस्त ?, [*भ्रान्ति करी, *गुमाव्युं]; जुओ वरासइ, ब्रासिउ ब्रांसु जुओ व्रासु

ब्रिष्ट्य चित्तसं. वृष्टि

त्रेह अखाका. अखेगी. कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. प्रेमाका. विरह वेहणी अखाका. विरहिणी

ब्रेहे कामा(त्रि). चित्तसं. प्रेमप. मदमो. विरह

ब्रेहेणी मदमो. विरहिणी

शकदार ऐतिरा. *हुकमदार, [*शकादार, *रूआबदार, *प्रभावशाळी] [अ.सिकः] शकट अखाका. आनंस्त. नरका. प्रेमाका. गाडुं, गाल्लुं [सं.]

शकल कादं(शा). टुकडो (सं.)

शकार मदमो. शिकार

शके दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. जाणे के; मदमो. संभव छे के; नलाख्या. जाणे के, [संभव छे के]

शक्त *नरका.* सशक्त, बळवान, [सक्षम, धनाढ्य] [सं.] शक्ति *प्रेमाका*. एक शस्त्र शक्र *नरका*. इन्द्र [सं.]

शग उषाह. दीवानी ज्योत (सं.शिखा); नरका. प्रेमाका. शंकु आकारनो ढगलो शगत्य, सगत सिंहा(शा). शक्ति [देवी रूपे]

शिंग्रि प्राचीकाः उतावळे (सं.शीघ्र)

शज *मदमो*. सञ्ज

शज्या *आरारा*. शय्या, सेज

शणगट नरका. धूमटो

शणगार चतुचा. शृंगार[रस]; नलाख्या. शृंगार, शोभा

शतफणा प्रेमाका. सो फेणवाळी नाग [सं.] शत्र सिंहा(म). दुश्मन (सं.शत्रु); जुओ शत्रो

शत्रुकार, शत्रूकार अखाछ. ऐतिरा. नलरा. प्राचीफा. रूपच. विक्ररा. सदाव्रत, अन्न-दानशाला (प्रा.सत्तुक+सं.अगार); जुओ सत्रुकार

शत्रो, शत्र *गुर्जरा.* शत्रु

शिष्टल नलरा. मदमो. शिथिल, ढीलुं शिष्टे (मानेश धे) *अखाछ. धियेयरूप मानीश]

शनि कादं(शा). धीमे (सं.शनैः)

शनिशनि, शनीशनी वेताप. सिंहा(शा). धीमेधीमे (सं.शनैः शनैः)

शपइ उक्तिर. शाप आपे (सं.शपते)

शपरांणू नरप(द). जबरुं, [जोरावर] [सं. सप्राण]; जुओ सपराणउ

शबरली शृंगामं. शबरी, भीलडी

शबल, शबलुं कामा(शा). अत्यंत शबल स्वभाव सम्यचो. मिश्र स्वभाव शबला नलाख्या. *शंबल, *भातुं, *अन्न (सं.शम्बल), [खूब, प्रचुर] [सं.] शबिका नलाख्या. पालखी (सं.शिबिका) शब्द चित्तसं. संज्ञा, नाम शब्दनी वृत्य चित्तसं. शब्दनी वृत्ति — व्यापार

शब्दप्रकाश चित्तसं. शब्द – ध्वनि प्रकाशित थवो ते, उत्पन्न थवो ते

शब्दे मारे चित्तसं. उपदेशवचन संभळावे

शमशाननी अधिकारिणी हरिख्या. शमशानमां सूळीनी सजाने लायक, [मृत्युदंडने पात्र]

शयर विमप्र. शरीर; जुओ सयर

शर चतुचा. वसंफा. शिर

शरकड उक्तिर. शर नामना घासनी सळी, जे बाणना तीर तरीके वपराती (सं.शर:-काण्डः)

शरखंड प्राचीफा. साडी माटेनुं एक कीमती वस्त्र (सं.श्रीखण्ड)

शरडी नरका. काचिंडा[नी मादा] जेवी -जुदाजुदा रंग बदलती (सं.शरटी)

शरत, शरित प्राचीका. *मदमो. संगीतनी एक संज्ञा, [श्रुति]; जुओ शुरतकार, सरत

शरपाव नरप(द). [सरपाव], माथाथी पग सुधीनो पोषाक (फा.सरोपा)

शरवन कादं(शा). शर नामनी वनस्पति -जेमां फूल आवे, फळ न आवे - तेनुं वन (सं.)
शरशति विमप्र. सरस्वती
शरा *दशस्कं(२). [वाण]; जुओ सरा
शराडुं चित्तसं. अंत, छेडो; जुओ सर्छ
शरासन प्रेमाका. शर — तीरनुं आसन,
धनुष [सं.]

शरिखूं नलाख्या. सरखुं, जेवुं (सं. सदृक्षकम्)

शरीख कादं(शा). शिरीषनुं फूल शरुया नंदब. [सरवा], मोटेथी बोलायेला, [खुछा]

शरे (शरे वाते) *मदमो. [चोख्खी, खरी (वाते)] [फा.सरह]

शर्त अखाका. शरत, करार, [ठराव] [फा.] शर्णागत जवुं चंद्रवा. शरणे जवुं, शरणागत थवुं

शर्म नलाख्या. प्रेमाका. श्रम, प्रयत्न; जुओ सरमु

शर्म *नरका.* शरम, लज्जा [फा.]

शर्म *आरारा.* सुख, आनंद (सं.); जुओ सर्म

शर्म्मी *नेमिछं. [व्यायाम करी, वापरी] [सं.श्रम]; जुओ सरमइ

शर्युं (शर्युं घृत) दशस्कं(१). प्रेमाका. ताजगीनी सुगंधवाळुं [धी]

शर्वरी अखाका. नरका. रात्रि [सं.]

शला अखाछ. शिला

शलादु उक्तिर. सलाट, शिला घडनारो (सं. शिलाघटकः); जुओ सिलावटउ शलाय नरका. "नरप. शिला, पथ्यरनी

पाट. [*अचळ] शली *प्राचीका*. एक प्रकारनो साल्लो (दे. छल्ली) **शल्य नरका**. शल्या, शिला, मोटो पथ्थर शल्या अखाका. दशस्कं(१). प्रेमाका. शिला, मोटो पथ्यर शव विक्ररा. शिवना सिं.शैव] शव उषाह. महादेव (सं.शिव) शवरी *हरिख्या*. कोळण [सं.शबरी] शशक प्रेमाका. ससलूं [सं.] शशि गूर्जरा. ससलुं (सं.शश) शशिवयणी आरारा, चंद्रवदनी शशिहर, शंसिहर नेमिछं, प्रबोप्र, विमप्र, हरिवि. शशियर, चंद्र (सं.शशधर) शशीहर कृष्णवा. शशधर, चंद्र शहियल *नरप. [*शैल, *पर्वत]; जुओ सैयल शहीलंकी कामा(शा). सिंहना जैवा केडना वळांकवाळा; जुओ लंक शंकरी कादं(शा). कल्याण करनारी (सं.) शंक्**वं** *नरका*. शंका करवी, गिभरावं, लिखत थवं: वसंफा. वसंवि. **वसंवि(ब्रा).* संशय करवो, [धारवुं, नो भय राखवो (सं.शंक्यते); जुओ संकइ शंकेष प्राचीका. संक्षेप शंखधूनी प्रेमाका. शंखनो ध्वनि शंघ प्रबोप्र. सिंह; जुओ शिंघ शंपत्य मदमो, संपत्ति

शंभ. शंभु अखाका. अखाछ. चित्तसं. कल्याणकारी [अवस्था], ब्रह्म [सं.शंभु] शंबछर कामा(शा). संवत्सर, विषी **शंवरामंडप** मदमो, स्वयंवरमंडप **शंहीआर** *प्राचीका*. संहार **शाकट** *अखाछ. अज्ञानी, अवळे मार्गे गयेला, दुर्जन] [सं.शाक्त] शाकिनी अखाका. एक प्रकारनुं स्त्रीप्रेत, डाकणी **शाखामृग** *प्रेमाका.* वांदरा [सं.] शात पमाड्या "*प्रेमाका.* [नाश पमाड्या] [सं.शात] शाथ्यंणी मदमो, संगिनी **शान** *उषाह.* सान, समजण (सं.संज्ञा) शापिणी कादं(ध्र). शापित बनावती शा भणी चतुचा. शाने लीधे, शा माटे शाम नलाख्या. काळूं (सं.श्याम) शामी जुओ शांम **शायन** *प्रबोप्र*, पथारी (सं.शयन) **शारद** अखाका. नरका. शारदा, सरस्वती **शार्द्रल** *प्रेमाका*. वाघ [सं.] ***शाल** *गूर्जरा*. शियाळ (सं.शुगाल) **शाळ** *प्रेमाका*. चोखा [सं.शालि] शालक लावल. साळा. पत्नीना भाई सं.श्यालक **शालि** *लावल.* चोखा. डांगरो (सं.) **शावट** चंद्रवा. शहावट, शराफीवृत्ति शाश (शाश काढे) मदमो. श्वास [काढे], बोले

शंबल नलरा. भातुं [सं.]

शासना धरे *चित्तसं*. आश्वासन आपे, प्रोत्साहन आपे, प्रवृत्त थाय ? शाह *अखाका. अखाछ. [शाहुकार], प्रामाणिक माणस; जुओ साह **शाहानि** कादं(शा). नलाख्या. शा माटे **शाहानो** *प्रेमाका*, शानो शाहास्त्र मदमो, शास्त्र शाहि नलाख्या. साहे, पकडे (सं.साहयति) शांझी वेळा नरका. सांज - संध्या वखते शांणा * नेमिछं. अिनाजनी कोठीमांथी अनाज काढवानुं छिद्र] [रा.] शांत प्रेमाका. संपूर्ण शांत, मृत्युने वश शांतिक-पुष्टि प्रेमाका. ग्रहादिकनुं अमंगल दूर करवा [तथा धनदोलतनी वृद्धि अर्थे करवामां आवतो धार्मिक विधि शांत्य चित्तसं. शांति **शांत्यमा** *चित्तसं*. शांतपणुं **शांत्यो** *प्राचीका*. संताड्यो शांम, शामी, सांमी कामा(शा). स्वामी, पिति **शांमद** मदमो. सामंत, वीर, सुभट; जुओ

सांमद **शांमा** ऋ*षिरा.* सुंदर स्त्री (सं.श्यामा) शांशो मदमो. संशय; जुओ सांसी **शिक्षाः चंद्रवा**. शिखामण [सं.] शिक्षापण *दशस्कं(१)*. शिखामण शिक्षारूपपणें *आनंस्त*, उपदेशरूपे शिख *नरका.* शिखामण [सं.शिक्षा] शिख *हरिख्या.* माथानी टोच (सं.शिखा)

शासना धरे/शिशुकुमारचक्र शिखि, शिखी नलाख्या. शृंगामं. मोर (सं.शिखिन्) शिणगार वसंवि(ब्रा). शणगार, आभूषण (सं.शंगार) शित्र प्रबोप्र. दुश्मन (सं.शत्र) शियळ दशस्कं(१). दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. शिथिल, ढीली, विखरायेली शिषिल (गलशिषिल) नरपः [गल]स्थल, गाली **शिय्या** *नलरा*. पथारी (सं.शय्या) **शिर** *गुर्जरा. विराप*. शर, तीर **शिर नामीनइं** *आनंस्त*. मस्तक नमावीने शिराववं *नरका.* सवारमां नास्तो के भोजन ्करव् **शिरिइ** कर्पूमं. सरे, [पार पडे] (सं.स् उपस्थी) शिरीसु *विमप्र*. साथे; जुओ सरिस

शिरुअ *उषाह. [धारा] [सं.शिरा]; जुओ शिहिर. सीर शिलाका ऋषिरा. सक्रियो (सं.शलाका)

शिलावट विमप्र. सलाट. [पथ्यर घडनार]: जुओ सिलावटउ

शिवरति वसंफा. वसंवि(ब्रा). शिवरात्रि शिवरमणी ऋषिरा न्स् क्तिरूपी रमणी (सं.) **शिवा** *विक्रच*. शियाळवी सिं.] शिषर अंबरा. सुचिर, पोलुं – फूंकथी

वगाडवानुं वाजित्र

शिशुकुमारचक *अखाका. [मगरना प्रकार-ना शिशुकुमार नामना प्राणीना आकारनुं नक्षत्रमंडार] [सं.]

शिखंड *प्रेमाका*, मीर

शिष्य पार्हि *उक्तिर.* शिष्य पासे, शिष्य वडे

शिहिजि नलाख्या. सहेजमां (सं.सह्य, प्रा. सहिज्ञ)

शिहिर *अखाका. [सेर, सरवाणी, स्रोत]; जुओ शिरूअ

शिंगी *प्रेमाका*, शिंगडानुं बनावेलुं फूंकीने वगाडवानुं एक वाजित्र [सं.शृंगी] शिंघ प्रबोग्र. सिंह; जुओ शंध, शीघ

शीकारी *प्रेमाका*. स्वीकारी

शीकिरि अंबरा. मोटुं छत्र, धजावाळुं छत्र; जुओ सिकिरि

शीकुं * चतुचा. प्रेमाका. षडाबा. वस्तुओ राखवा माटे अध्धर लटकाववामां आवती छाबडी के झोळी (सं.शिक्य)

शीकोतरी * नलाख्या. [डाकण, पिशाचिनी]

शीख अखाका. चतुचा. प्रेमाका. शिखामण; भेट, [बक्षिस] [सं.शिक्षा]; कादं(शा). चतुचा. नरका. नलाख्या. मदमो. विदाय, रजा, [जवानी आज्ञा] (सं.शिक्षा)

शीखडी शृंगामं. विदाय

शीखा कादं(शा). विदाय (सं.शिक्षा)

शीध मदमो. सिंह; जुओ शिंघ

शीजु(?) *नरप(द). [*सिद्ध थयेलुं]

शीजे *देवरा.* सीझे, [सिद्ध थाय] [सं. सिध्यति]

शीझतूं नलाख्या. सिद्ध थतुं, [फावतुं] (सं. सिध्य-)

शीवाइ कादं(शा). "नलाख्या. प्रबोप्र. दुःख पामे, पीडाय (सं.सीद्यते) शीष्ठु *कादं(शा).* मदिरा (सं.सीधु) शीप्ये *चित्तसं.* छीप

शीम नलाख्या. सीमा, हद

शीमिल कादं(शा). शीमळानुं वृक्ष, मोटो रूखडो (सं.शाल्मिल)

शीमाढा कादं(शा). सीमा परना खंडिया राजाओ (सं.*सीमावृत); जुओ सीमाढा शीला लावल. शीळा, सौम्य [सं.शीतल] शीवालखीत (शीवालखीत लग्न) मदमो.

-, [*घडियां लग्न]

शीश मदमो. शिष्या

शीशफूल दशस्कं(१). प्रेमाका. माथानुं एक घरेणुं

शीशव, सीसव वेताप. सीसम [सं.शिंशपा] शीश लीधुं नरका. [माथे चडाव्युं], स्वीकार्युं शीस मदमो. शिष्या

शिंकुं नरका. वस्तुओ राखवा माटे अध्धर लटकाववामां आवती छाबडी के टोपली (सं.शिक्य)

शुकलाद *प्रेमप*. पीळुं मखमली वस्त्र (फा. सकलात); जुओ सकलात

शुणु *चतुचा*. सोणुं, स्वप्नुं

शुद्ध *प्रेमाका*. शुद्धि, भान

शुद्धि *हम्मीप्र.* समाचार [सं.]; जुओ सुधि शुष *चतुचा.* भान [सं.शुद्धि]

शुभवयणी नलाख्या. शुभ वचनवाळी

शुभाई *चतुचा.* ?

शुभेरी चतुचा. सुंदर, शुभ

शुरतकार नरप. स्वर, सूर [सं.श्रुति]; जुओ शरत

शं *चित्तसं. प्रेमाका.* -मां, प्रत्ये, साथे [सं. सहित]; प्रेमाका. जाणे [सं.कीद्रशकम्] शुंब *वेताप*. सुम, कृपण; जुओ शोम, सुंब **श्कर** गुर्जरा. प्रेमाका. सूवर (सं.) शुक्त अखाका. शुक्ति, छीप शूष नरका. शुद्धि, भान **शुन्य** *चित्तसं.* छिद्र [सं.] शुराशुर नरका. अति शूरवीर शूं *कादं(शा). नलाख्या*. साथे, [-मां] (सं. सहितम्) श्रं *कादं(शा). -*ना जेवुं (सं.सदृशकम्) **शृंगाखुं** अ*खाछ. गुर्जरा*. शणगारवुं शेख अखाछ. कादं(शा). शेष, बाकी, बाकीनो भाग **शेख** *दशस्कं(१). नरका*. शेषनाग शेडि कादं(शा). दूधनी सेड, धार [सं.श्रेढि] **शेन प्रबोप्र.** लश्कर (सं.सैन्य) शेबास मदमो. शाबाश **शेव्या नलाख्या**. शय्या. पथारी **शेरडी** *नरका. प्रेमाका.* शेरी, महोल्लो, मारग शेरडो दशस्कं(१). दशस्कं(२). मार्ग; जुओ सेरडे शेलं प्रेमाका. कसबी वणाटनुं वस्त्र -पुरुषो माटे खेस, स्त्रीओ माटे साडी **शेव** *नलाख्या***.** सेवा **शेवास** *चंद्रवा.* सहवास शेश *प्रेमाका*. वरकन्या अने सीमंतिनी स्त्रीना खोळामां अपातां नाळियेर, पान, सोपारी अने रूपियो

शेखरकः); जुओ सेहरउ **शेहे, सेहे** *हस्तस*. सो [सं.शत] **शोकतुं** *उषाह. दशस्कं(१). प्राचीफा.* चूसी लेवूं, शोषी लेवुं (सं.शोष्) शोगणी प्रेमप, शोकयुक्त **शोच** *चतुचा*. विमासण, [विचार] [सं.] शोच**इ** उपवा. षडावा. शोक करे, दुःखी याय (सं.शोचति) **शोचना** *अखाछ. प्रेमाका.* शोक, दुःख; नरका. विचार सि. शो चार प्रेमप, चार सो, अनेक शोण *गूर्जरा*. रातुं (सं.) शोणुं प्रेमपः स्वप्न शोध्ये अखाका. शुद्ध कर्चे, [शोधन कर्ये], तपास करवाथी, विवेक करवाथी] शोप षडाबा. सोजो (सं.शोफ) **शोभ** *लावल.* शोभा, सुंदरता; विमप्र. मान, [गौरव] **शोभन** वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). मनोहर (सं.) शोम मदमो. शुंब, कंजूस; जुओ शुंब, सुम शोवत प्रेमप. सुतां शोष आनंस्त. सूकवी देवां, नाश करवी ते [स.] **शोषिक** अखाका. शोषी लेनार, [सूकवी नाखनार] [सं.शोषक] शींड प्रेमाका. कुशळ, [आसक्त, लगन-वाळा] [सं.] श्यं *उषाह.* सहित, शूं (सं.समम्); जुओ स्यउं श्यंदन शुंगामं. रथ [सं.] **शेहरु कादं(शा). फू**लनी पाघ (सं.

झिरी

श्यालक प्रेमाका. साळो [सं.] श्यालाहेली प्रेमाका. साळावेली, साळानी पत्नी श्यांइ नरप(द). आलिंगन; जुओ सांई श्रयल कादं(शा). शिथिल, ढीलुं श्रव जिनरा. सर्व श्रवइ उपवा. सांभळे (सं.श्रवति) श्रवइ ऐतिका. कादं(शा). स्रवे, टपके,

श्रन्तणाको बख्य पंचयाः पीपाधे के तिलकनुं वृक्ष (सं.श्रीमत्), [गोरखमुंडीनुं वृक्ष] [सं.श्रवणवृक्ष]

श्रष्ट दशस्कं(१). यदमो. सिंहा(शा). सृष्टि श्रष्टी जुओ शीटी

श्राप *दशस्कं(१).* शाप

श्रापतुं *दशस्कं (१).* शाप आपवो

श्रावलूं श्रंगामं, शकीरी

श्रावक *अंबरा. [*श्रावक समा अहिंसक] श्रावणी *नरका*. बळेव, [श्रावण शूद] पूनम

श्रिय कादं(शा). कल्याण (सं.श्रेयस्)

श्रीअनंदन वसंवि. लक्ष्मीनो पुत्र, कामदेव (सं.श्रीनन्दन)

श्रीकंत प्रेमाका. लक्ष्मीना पति विष्णु, कृष्ण [सं.श्रीकान्त]

श्रीकार ऐतिका. "दशस्कं(१). प्रेमाका. सुंदर, उत्कृष्ट, उत्तम

श्रीकाष्ट नलरा. एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो

श्रीखंड नरका. चंदन [सं.]; जुओ सिरिखंड श्रीगरण अंवरा. उक्तिर. नलरा. खजानानी देखरेख चखनार अधिकारी [तं. श्रीकरण]

श्रीगरणु उक्तिर. धनवृद्धि करवी े. आवकखातुं (सं.श्रीकरणम्)

श्रीजुग चतुचा. श्री - लक्ष्मी साथे

श्रीयल दशस्कं(१). शिथिल

श्रीनंदन *वसंवि (ब्रा)*. श्रीनो पुत्र, कामदेव (सं.)

श्रीपतजी चतुचा. लक्ष्मोपति, विष्णु श्रीपात चंद्रवा: प्रेमाका. सिंहा(शा). त्यापी, संन्यासी

श्रीबाफ जुओ बाफ

श्रीमंडळ दशस्कं(२). ग्रेयाका. सुरमंडल, एक तंतुवाद्य

श्रीमंत मदमो. सीमंत

श्रीमुख *मदभो*. पोते

श्रीमुखई *आरारा*. पोताने मुखे, [पोते]

श्रीयनंदन वसंफा. लक्ष्मीपुत्र प्रद्युन्न, काम-देव [सं.श्रीनंदन]

श्रीवच्छ *उक्तिर*. लक्ष्मीने प्रिय, विष्णु (सं. श्रीवत्सः)

श्रीवंत *चंद्रवा. मदमो*. श्रीमंत, धनिक

श्रीष्टी, श्रष्टी *चंद्रवा.* सृष्टि

श्रुतज्ञान ऐतिका. शास्त्रज्ञान [सं.]

श्रुति चित्तसं. वेद वगेरे पवित्र शास्त्रो [सं.]

श्रृष्ट *वेताप.* सृष्टि **श्रृेण्य** *चित्तसं.* श्रेणि

श्रेयोत्र (छउं श्रेयोत्र) शंगामं. अहीं श्रेय

छे, [अहीं हुं क्षेमकुशळ छुं]

श्रेष्ट, श्रेष्टि आरारा. श्रेष्ठी, शेठ

श्रीणार्वः वश्यकाः प्रेमपः स्वप्ननां श्रीणितः वश्यकं(१)ः वश्यकं(२)ः ग्रेमाकाः श्रीणितः वर्णः दशस्कं(१)ः श्रीणितवर्णः, लोहीना रंगनुं श्रीत्र गुर्जराः प्रवाह (सं.स्रोतम्) स्वप्रद उक्तिरः वखाणः करे (सं.श्लाघते) श्रीवितं उक्तिरः प्रशंसा करवा श्रवप्रद अखाकाः चांडालः [सं.]

षद्काया ऐतिका. छ [प्रकारना] शरीर, [प्रकारना जीव] पडंगई अलंग. छ जंगे पडाव्श्यक ेतिका. सामायकादि छ अवक्रता कार्य [जै.] -वै ंचवा एथे, यडे, [शी, ने] पोडश जा एत. सीळ [सं.] पोडससिंगार पंचवा. स्त्रीए सजवाना सीळ शणगार [सं.षोडशश्ंगार]

स गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. षडाबा. ते (सं.सः)

सइ आरारा. गुर्जरा. तेरका. विराप. वीसरा. षष्टिप्र. सो (सं.शत); जुओ सइं, सइ, सि, सें

सइ *गुर्जरा.* बधा (सं.सर्वे) **सइ. सई** *कर्पुमं. प्राचीफा. विकरा.* स्वयं,

पोते; आपोआप, पोतानी मैळे सङ्गू जिनरा. साथी [रा.] [*सं.स्वक] सङ्जल उषाह. पाणी[थी भरपूर] सङ्ज आरारा. स्वजन; जुओ सयण स**इतउ** *प्राचीसं*. सहित, साथे स**इतातीस** उक्तिरः सुडतालीस (सं.सप्त-चत्वारिंशत्)

सइथ**उ, सइंथउ, सयथ**लउ *प्रद्युचु. प्राचीफा. प्राचीसं. विमप्र. स्थूलिफा*. सेंथो (सं. सीमन्तकः)

सङ्घु नलरा. सेंथा उपर पहेरवानो स्त्रीनो अलंकार (सं.सीमंतकः)

सइफलउं हम्मीप्र. *मरणांतिक युद्ध, [युद्ध] [अ.सैफ=तलवार]; जुओ सयफलि

सइमुख जिनरा. पोताने मुखे, रूबरू (सं. स्वयं+मुख)

सइयणि नलरा. दरजण (सं.सूचिक+णी) सइर गुर्जरा. प्राचीफा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). शरीर

सइ-हिष शृंगामं. पोताना हाथे; जुओ सइंहथ, सय-हाथि

सइं *गुर्जरा. हम्मीप्र*. पोते, पोतानी मेळे (सं.स्वयम्); जुओ सइ

सइं नेमिछं. सो [सं.शत]; जुओ सइ संइत्रीस उक्तिर. साडत्रीस (सं.सप्तत्रिंशत्) संइथड, सिंखु तेरका. प्राचीसं. लावल. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सेंथो (सं.सीमंतक); जुओ सइथउ

सड्ंमरिवाळ वीसरा. सांभरदेशनो सड्ंवर गुर्जरा. स्वयंवर सड्ंविस जिनरा. स्ववश सड्ंक्थ ऐतिका. पोताना हाथे; जुओ सड्-

सई आरारा. सही, खरेखर, जरूर

सई विमप्र. दरजी [सं.सूचिक]
सईन अभिक. सेना (सं.सैन्य)
सईनी धाडि जुओ घाडि सईनी
सईयाणी अंबरा. सुयाणी
सब तेरका. ?
सब तेरका नलरा. बधं. सौ (सं.सब

साउ तेरका. नलरा. बधुं, सौ (सं.सर्व+खलु) साउ आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. नलरा. वीसरा. सो (सं.शत)

सर्जक, सर्जकी ऋषिरा. शोक्य; आरारा. षडाबा. सावकी (सं.सपत्नी)

सउगडउ उक्तिर. गोळ पेटी (सं.समुद्गकः) सउड वीसरा. रजाई, [दे.सउडि]

सउडउ (ताणि) प्राचीफा. मों ढांकीने सूई रहेवुं ते, [सोड ताणीने, रजाई खेंचीने, ओढीने]

सर्जंडि अक्तिर. रजाई (*सं.संवृत्तपटी, संवृत्तिः) [दे.]

सरण उक्तिर. पक्षी, [*गीध] (सं.शकुन); प्राचीसं. पक्षी (सं.शकुन)

सउण *वीसरा.* शकुन, शुकन

सरजी *उक्तिर*. शकुन जोनार (सं.शकुनिक)

सरज्ञर **ऐतिका.* [पुण्यवंत, पुण्यशाली] [सं.सपुण्य]

सउं गुर्जरा. प्राचीसं. वीसरा. षडावा. साथे, [प्रत्ये] (सं.सहितम्)

सउं * वीसरा. [जेवुं] [सं.समम्]

साउंपइ *ऐतिरा. वीसरा*. सोंपे (सं.समर्प-यति)

सकज, सकजउ जिनरा. समर्थ [रा.] सकति गुर्जरा. एक प्रकारनुं शस्त्र (सं. शक्ति)

सकन्त हर शृंगामं. कृष्ण सहित महादेव **सकपण** *चतुचा.* सगपण

सकवत्थो *षष्टिप्र. कृ*तार्थ, [सफळ] (सं. सकृतार्थ)

सकलात नरका. एक जातनुं ऊननुं कापड, बनात, [जाडा तंतुनुं पण मुलायम कापड, मखमल]; जुओ शुकलाद

सकार प्राचीफा. शिकार, मृगया; शृंगामं. ?, [शिकार, भक्ष, भोग]

सकाल गुर्जरा. वेताप. सिंहा(शा). सवार (सं.सुकाल)

सकुट *नरप*. दुष्टजन, [अधर्मी]; जुओ साकट

सकुनवी *पंचवा*. शकुन जोनार (सं.शकुन-वित्)

सकुंअला जुओ कमल-सकुंअला

सकोमल, सकोमळ दशस्कं(१). वेताप. सिंहा(शा). सुकोमल

सक्खि गुर्जरा. मैत्री (सं.सख्य)

सख *प्राचीका.* सुख

सखर, सखरज आरारा. ऐतिका. जिनरा. "प्राचीसं. सरस, सुंदर (रा.)

सन्त्राई, सखाईज, सखाईप अंबरा. आरारा. ऐतिरा. *नेमिछं. प्राचीफा. प्राचीसं. लावल. सहायक, साथीदार, मित्र; ऐतिका. मित्रता, सहायकता

सखावुं * उषाह. [साक्षी अपावुं]

सखी चंद्रवा. सुखी, [आनंदित, प्रसन्न] सखो सिंहा(शा). शालिग्रामनुं नाम (सक्को=

पथ्यरनी लखोटी) **सग** शंगामं. दीवानी ज्योत [सं.शिखा] **सगणी** *प्रद्युच्*. आयुधविशेष ? सगत जुओ शगत्य **सगति** *आरारा. देवरा*. शक्ति सगबग ऋषिरा. [शिथिल, ढीलुं], वेरविखेर [π.] सगर गुर्जरा. खोदकाम करनार जाति **सगर्ह** अखाका. हाथमां अग्नि राखवी वगेरे द्वारा करवामां आवती साचज्रवनी परीक्षा, [कसोटी रूपे करवामां आवतो चमत्कार, दिव्य], [*वचननी खातरी] [*सं.संगर]; **सिंहा(शा)*. [*वचन, *प्रतिज्ञा सगलइ उक्तिर. सघळे, बधे सिं.सकल पंरधी सगलउ, सगळउ आराराः ऐतिकाः वीसराः षडाबा. सघळो, बधो (सं.सकल) सगसणीजु सिंहा(म). सगुंवहालुं (सं.स्वक+ स्निह्यक); जुओ सणीजां सगाल विक्ररा. सुकाळ **सगासणीजा** विक्रच, सगांवहालां सगासिड नेमिछं: पासे (सं.सकाशे) सगांसणीजा शीलक. सगां-स्नेही [सं. स्वक+] (सं.स्निह-, प्रा.सिणिज्झ-) **सगुण, सगुणड** *वीसरा.* गुणवान [सं.] सगुर आरारा. सुगुरु सगुरवां अभिकः गौरव साये सम्म ऐतिका. प्राचीफा. स्वर्ग, देवलोक

सघण गुर्जरा. विराप. वधारे जाडुं, घट्ट (सं.सुघन) **सधन *** ऐतिरा. [घाटा, गाढ, निबिड] [सं.] सघाडै *ंजिनराः* समुदायमां (सं.श्रंगाटक); जुओ संघाडउ **सचांण ****ऐतिका.* [यथार्थ] [रा.] सचित आरारा. सचेत. [सावधान, जाग्रत]: सजीव (वस्तु) सचित्रला (सचित्तला) शृंगामं. चित्रवाळा; [सचेत, सावधान] **सद्य** *गुर्जरा***. साचूं** (सं.सत्य) **सच्छाइ** *आरारा*. छायावाळूं **सछाय** *आरारा*. छायावाळूं **सज** *अभिऊ. देवरा.* सञ्ज सजकारिंउ वसंवि. वसंवि(ब्रा). सञ्ज कर्युं (सं.सज्ज+क) सजडीयु आरारा(व). साजडियो, सादडो, आंजणो, अर्ज्नवृक्ष (सं.सर्ज) सजन आरारा. गुर्जरा. देवरा. स्वजन, सगां **सजंन** *कामा(त्रि)*. स्वजन **सजवाल** *चारफा*. मनोहर, [रूपवंत] (सं. सञ्जित परथी ? सर. हिं.सजीला) [*हिं. सज+वाल] सजाई, सजाही, सजी कांद(शा). गुर्जरा. नंदबः लावलः सजाई, तैयारी (सं. सञ्जता) **सफ़इ** *गुर्जरा*. सजे, तैयार करे (सं.सज़-) **सज्जन** *आरारा*. सजन, स्वजन **सञ्झाय** उक्तिर, स्वाध्याय **सज्य** *मदमो***. सजाई, गोठवण**

सद्धां *विमप्र* घाटां

सञ्यदर *प्राचीसं*. सत्यपुर, साचोर सञ्या शीलक. शय्या, पथारी **सद्य** *सिंहाशा*. सञ्ज. तैयार ? सञ्जाय आरारा. स्वाध्याय, धर्मचितन **सटा** *लावल.* केशवाळी [सं.] **सटी** अखाछ, सटकी **सट्ठी** *नेमिछं*. साठ [सं.षष्टि] सट्टुवि ऐतिका. सुष्टु, श्रेष्ठ, [सुंदर रीते] स**ठ अखाछ. ***सीघो. *सहेलो सट. [*शठ]: *आनंस्त.* शठ, शिक्य, धूर्तता सठामे अखाछ: सारे (साचे) ठेकाणे प्रेमाका. नाकमां वायु खेंचीने करवामां आवता अवाज **सद्यणा** *गुर्जरा*. बख्तरथी सञ्ज (सं.संनद्ध) सणड कर्प्मं. सुणो [सं.श्रुणोति] सणकारा नरका. सणका, शूळ भोंकाती होय एवी पीडा सणग *कस्तुवा. शृंगामं. सुरंग, भोंयरुं **सणगट** *प्रेमाका*. घूंघट सणमणु नलाख्या. सूनमून (*सं.शून्य-मौनकः) [सं.शून्यमनस्] **सणसर** *प्राचीफा*. हीलचाल, जिणसारो, "पगरव]; जुओ सणसार सणसार दशस्कं(२). प्रेमाका. गुप्त सान, इशारो; जुओ सणसर ं **सणीजां** *अंबरा. ऐतिरा. षष्टिप्र.* स्नेहीओ (सं.स्निह्यक); जुओ सगसणीज्, सगासणीजा, सगांसणीजा, सुणीजउ **सत** नेमिछं. सत्त्व, दिवत, कौदत] **सत** *आरारा*. साचुं [सं.सत्य]

सत कहो *नरका.* सत्य कहो, चोक्कस कहो, [बराबर कहरे] सतपीढिया जिनराः परंपरागत, [सात पेढी-थी वसता] [सं.सप्त+पीठ] सतरभेवी ऐतिका. सत्तर प्रकारनी सतर सेंस ऐतिरा. सत्तर हजार [सं. सप्तदश+सहस्र! सतसदि, सतसदि उक्तिर, जिनरा, सडसठ सि.सप्तषष्टिः सतहत्तरि, सतहत्तर, सतहत्तरि उक्तिर. *उपबा. षडाबा.* सत्योतेर (सं.सप्त-सप्ततिः) **सतंतर** *अखेगी*. स्वतंत्र **सताब** *चंद्रवा.* ?, [उतावळ]: *देवरा.* उतावळ (फा.शिताब) **सति** कादं(शा). छते, छतां सतेतालंड जुओ एकु संउ सतेतालंड **सत्त** गुर्जरा. नेमिछं. सात (सं.सप्त) सत्तरि उक्तिर. सत्तर: सित्तेर (सं.सप्तदश: वा सप्ततिः) **सत्तवंति** शुंगामं. सत्यवंती **सत्तसइं ने**मिछं. सात सो [सं.सप्तशत] सत्ता अखेगी. हस्ती; चित्तसं. प्रभाव [सं.] सत्ताणवइ यडावा. सत्ताणुं (सं.सप्तनवतिः) सत्तु ऐतिका. सत्त्व, [*ब्रह्म, *ईश्वर, *देव] **सत्त्कार** *गुर्जरा*. सदाव्रत (प्रा.सत्तुक+ सं.अगार); जुओ सत्रकार, शत्रुकार सत्तोतर सय यडाबा. एक सो सात (सं. सप्तोत्तरशत) **सत्य** **ऐतिका*. [शास्त्र] [प्रा.]

सत्थवाह गुर्जरा. सार्थवाह, वणझारो सित्ये गुर्जरा. साथे (सं.सार्थ) सत्यु गुर्जरा. समुदाय (सं.सार्थ) सत्यारथ प्रेमाका. साचा अर्थवाळ्, साचेसाच् **सत्र** *०नंदब*. अन्नसत्र [सं.] **सत्रिहा** *षडाबा.* ? विक्ररा. अंबरा. सञ्जुकार, सत्रकार *सिंहा(म)*. सदाव्रत (सं.सकृतुक+ अगार); जुओ सत्तकार सथल चतुचा. प्रबोप्र. मदमो. शिथिल, ढीलूं सद वीसराः सदा, हमेशां सदइ अंबरा. स्वादथी खवाय, सदे, [अनुकूळ आवे] सिं.स्वदति] **सदभाय** *आरारा*. साचेसाच. खरेखर **सदभाव** *आरारा*. राग ?, जिगतना पदार्थीने] सत्य मानवा ते ? **सदलुं** *नेमिछं. "विमप्र.* **दळवाळुं, [पूष्ट] सदाफल** *आरारा(व).* ऊंबरो, नाळियेरी वगेरे केटलांक वृक्ष सदाफल कहेवाय छे. परंतु संभवतः वर्णकोमां फळ तरीके उल्लेखातुं नाळियेर [सं.] सदासव प्राचीका. महादेव (सं.सदाशिव) सदि कादं(ध्रू). *हमेश (सं.सदैव) सवि कादं(शा). जलदी (सं.सद्यस्) सदीव आरारा. ऐतिका. सदैव, हमेशां सदुतरां, उषाह. विशिष्ट समजावट, [त्वरित योग्य उत्तर] [सं.सद्योत्तर] सदूतरु नलरा. तुरत उत्तर आपनार, हाजर-जवाबी (सं.सद्योत्तर)

सदोदित *अखेगी*. हमेशां प्रकाशमय [सं.] सद्द् गुर्जरा. प्राचीफा. "लावल. साद, अवाज (सं.शब्द) सहहड आनंस्त. उक्तिर. उपवा. नलरा. श्रद्धा राखे (सं.श्रद्धते) **सदृहण** *ऐतिरा.* श्रद्धा. आस्था सदृहणा आनंस्त. ऐतिका. श्रद्धा सहहे ऐतिका. श्रद्धा राखे [सं.श्रद्धते] सहाविय- तेरका. बोलावायेलुं (सं.शब्द परथी) सिंह ऐतिका. शब्दथी, [संज्ञाथी, नामथी] सद्ध प्राचीसं. श्रद्धावाळो (सं.श्राद्ध) **सद्धार** *प्राचीसं*. सहायरूप [सं.संधार] **सघर** कर्पूमं. सलामत, सध्धर सधरे सिंहा(शा). सुधरे सधव आरारा. पतिवाळी, सौभाग्यवती [सं.] सघारइ लावल. सहाय करे (सं.संधारयति) **सधारड** *आरारा.* नभावे, चलावे, पार पाड़े (रा.सधाणौ); प्रेमप. प्रेमाका. सिघावे, पधारे **सधारण** *प्राचीसं.* सहायरूप, [उद्धाररूप, आश्रयरूप] (सं.संधारण) **संघारी** *लावल*. सहाय करनार **सधावड** *आराराः* सिधावे, जाय: *प्रेमाका*. सिद्ध करावे सिं अभिक. फत्तेह (सं.सिद्धि) सनकारे कृष्णच. नरका. नेमिछं. "लावल. सान करे, इशारो करे, संकेत करे **सनवंध** *आरारा*. संबंध (रा.) **सनमन्या** *प्रेमाका*. शून्य मनवाळा, शून्य-

मनस्क सनमन्यो *प्रेमाका.* शून्य मननो थयो सनसतपणा *प्रद्युचु. [कीर्तिथी दीपता] [रा.]

*सनहो (दूत) [सुन हो दूत] * पंचवा. [हे दूत, सांभळ]

सनाढु *उषाह. [सञ्ज, कटिबद्ध]; नेमिछं. छांटेलुं, [-थी भरपूर] (सं.सन्नद्ध)

सनाह देवरा. तिलरा. कवच, बख्तर [सं. संनाह]

सनाहीयां अभिक. सन्नाह – बख्तर धारण कर्यां, [सञ्ज थया]

सनि सनि कादं(शा). धीरेधीरे (सं.शनैः शनैः)

सनीचर उक्तिरः शनिनो ग्रह (सं.शनैश्चर) सनूर, सनूरज आराराः ऐतिकाः सुंदर, सुरूप (रा.); आराराः जोशभर्युं, उमंग-भर्युं (रा.)

सनेठाहु षडाबा. संनिष्ठ सनेपातक विमप्र. संनिपात, सनेपात सनेवट नरप. स्नेहसंबंध (सं.स्नेहवृत्ति) सनेहल तेरका. स्नेहाळ (सं.स्नेहल) सन्नाणह ऐतिका. सद्ज्ञान सन्नाह प्रबोप. वसंफा. विकरा. बख्तर (सं.)

सिवया *आनंस्त*. संज्ञी जीवो, मनवाळा जीवो

सत्री *षडावा.* मनवाळा जीवो (सं.संज्ञी) सन्या *देवरा.* संज्ञा, [चिह्न]

सन्यान लिलरा. शाणो, चतुर (सं.सज्ञान) सपद उक्तिर. शाप आपे (सं.शपति) सपटावता प्रेमाका. [लगावी देता], जकडी देता, बंध करता
सपत वृतुचा. प्रबोप्र. शपथ, प्रतिज्ञा
सपत अभिक्र. सात (सं.सप्त)
सपत्तप्रभु जुओ संपतप्रभु
सपद चारफा. *स्वपद, [(पोताना) समान
पदी

सप धात मोसाच. सात धातु सपरवार आरारा. सपरिवार सपरस सिंहा(शा). स्पर्श सपराण प्रवोप्र. श्रेष्ठ; [सबळ, जबरुं; धणुं-बधुं] [सं.सप्राण]

सपदि *गुर्जरा*. तरत ज (सं.)

सपराणंड आरारा. संबळ, भारे; उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नलरा. नलाख्या. लावल. *विमप्र. शूरवीर, बळवान, जबरुं (सं.सप्राण); जुओ शपरांणूं, सपरुं

सपरि आरारा. सुपेरे, सारी रीते सपरुं (सपराणुं) हरिख्या. जबरुं, जोरावर सपर्णकुमार आरारा. सुपर्णकुमार, गरुड सपल्हाणु लावल. पलाण साथेनो, सवारी माटे सञ्ज करेलो [सं.स+पर्याण]

सपसत्र तेरकाः सुप्रसन्न
सपाखर मदमोः छंदविशेष
सपाय आराराः हानिकारक (सं.सापाय)
सपारस मदमोः "फरियाद, [माफी, सहाय
वगेरे माटे भलामण] (फा.सिफारश)
सपीआरा ऋषिराः "प्यारवाळा, [अत्यंत
प्यारा] [सं.सुप्रियतर]

सपुरिस *आरारा*. सुपुरुष सप्तक्षेत्र विकरा. धन वापरवा माटेनां सात क्षेत्र, सात बाबतो (जै.) सप्तभुंमीयां ऐतिरा. सात माळना सप्तभूमि विक्ररा. सप्त माळ, [सात माळ-वालूं] **सप्फुर** *प्राचीसं.* स्फूर्ति सहित सफार अखाका. घणो, [खूब ज] [सं.सू+ स्फारी सबद (पंच सबद) वीसरा. ध्वनि, पांच प्रकारनां वाजित्र]; जुओ पंचशबद **सबद** *आरारा.* अवाज (सं.शब्द) **सबधी** *प्रेमाका.* मजबूत बांधानी, सुबद्ध, बळवान सबल, सबळ आरारा. कामा(त्रि). चतुचा. नरका प्रेमाका. अत्यंत, घणं, भारे **सबकउं** अखाछ. पूष्कळ, [मजबूत, दूढ]; **लावल.* [मोटेथी, जोरथी] सबूधी अखाका. सद्बुद्धिवाळो, [मरमी] [सं सबुद्धि के सुबुद्धि] सब्दभेवी पंचवा. अवाजने आधारे धार्युं बाण मारनार (सं.शब्दभेदो) **सभट** *प्रबोप्र*. योद्धो (सं.सुभट) **सभाइ, सभाय** *आरारा*. खरेखर, साचेसाच सभाव आरारा. गुर्जरा. प्रबोप्र. स्वभाव, प्रकृति; *विमप्र*. स्वभाव, [सहजपणुं] सभाशंगार विक्ररा. सभानो शणगार [सं.] **सम** *तेरका*. वडे ?, [*सर्वत्र, *संपूर्ण, *बराबर]

समये समज आरारा. साथे (सं.समम्) समउ जिनरा. नरका. प्रेमाका. समय समकाल *युर्जरा*. साथेसाथे, ए समये ज (सं.) समकति आनंस्त. ऐतिका. गुर्जरा. नलरा. नेमिछं. विमप्र. सम्यक्त्व, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा जि.] कादं(ध्र). सामे बेठेलुं, सामे उपस्थित]; उधाडी रीते. प्रगटपणे] समग्ग, समग्गउ आरारा. ऐतिका. तेरका. समग्र, संपूर्ण **समग्गलय** प्राचीसं. समग्र. सहित समछरी प्रेमाका. संवत्सरी, मृत सगांओनी मृत्यु-तिथिए कराववामां आवत् भोजन कि दानादि क्रिया], विधी **समण** *प्राचीफा.* स्वप्न, शमणुं **समणडउं** *नलरा.* स्वप्न, शमणुं **समण-पाणी** *नरका***. गरम पाणीने मा**फक आवे एवुं करवा माटे उमेरवामां आवत्ं ठंडुं पाणी **समणह** *ऐतिका.* श्रमण, जिन साध् समता *नेमिछं. [समत्व, इष्टानिष्ट परत्वे तटस्थता, रागद्वेषमांथी मुक्ति] समित-गुपति ऋषिरा. उपयोगपूर्वक गमन, भाषण वगेरे पांच प्रकारनी समिति [सम्यक् प्रवृत्ति] अने त्रण प्रकारनी गुप्ति एटले मन, वचन अने कायाने काबूमां राखवा ते [जै.]; जुओ समिति **समतुल्य** *दशस्कं(२)*. समान

सम, समइ *आरारा. लावल. षडाबा.* समे,

समतोल प्रेमाका. समतुल्य, बरोबर, समान समय जुओ सुसमथ समद- *वीसरा. [भेट आपवी, उपहार करवो] [हिं.] समवाए नरप. समूहमां (सं.समुदाय) समवाय गुर्जरा. समुदाय समहष्ट प्रेमाका. समान दृष्टि राखनारा समधात उक्तिर. समान प्रकृतिनुं – प्रकारनुं (सं.समधातुः) समय वाग्भवा. परंपरा, रूढि [सं.] समय आरारा. भेळव्युं, नाख्युं (सं.सम्+ अय्) समर अखाका. *रितक्रीडा, [रितसंग्राम]

[सं.] समरणी *ऐतिका. दशस्कं. प्रेमाका.* स्मरणी, २७ मणकानी जपमाळा

समरित वसंफा-शु. वसंवि. वसंवि(ब्रा). समरात्रि, दिवसरात्रि सरखां होय एवुं समरपंथी ऋषिरा. एक प्रकारना बावाओ [योगीओ]

समरसइ प्रबोप्र. बरोबर रीते, [मेळपूर्वक] समरंगण गुर्जरा. तेरका. समरांगण, युद्धभूमि

समरा-मंडप कृष्णच. स्वयंवरमंडप समरावता "धडाबा. [करावता] (सं.समार-चयति)

समिर समिर थाइ वारफा. याद करीने युद्धमां थवा दे, [याद करीने युद्ध लडवा आय]

समर्त्यमुद्रा विराप. मृत्युना जेवी [निद्रानी]

मुद्रा (सं.समृत्युमुद्रा); जुओ समृत्यमुद्रा समर्थाई उपना समर्थता **समल(?)** *नरप*.*स्थळ, [*युद्ध] [*सं.संमर्द] समल प्राचीसं. ?, [*पापी, *दुर्जन] समलंकिय तेरका. सुशोभित (सं.समलंकृत) समितित अखेगी. शबलित, -ना रंगे रंगायेलुं, [-थी युक्त] समली अभिक्त. समडी समवडि *अंबरा. आरारा. ऐतिका. कृष्णबा. विमप्र. समोवड, सरख़ुं; समोवडमां, [सरखामणीमां]; *उषाह.* साथे **समवसरण** *आरारा. लावलं*. तीर्थंकरनी देशना माटेनुं सभास्थान [जै.] [सं.] समबसर्या आरारा. पधार्या (सं.समवस्-) समवाय ऐतिका. समूह [सं.] समश्या *दशस्कं(१).* सान, इशारो; जुओ समस्या **समसरिस** प्राचीसं. समसदृश, जेवुं समस्या दशस्कं(२). सान, गुप्त संज्ञा [सं.]; जुओ समश्या समहर, समहरि गुर्जरा. प्राचीसं. संग्राम, रणमेदान समहरति आराराः सुमूहर्ते, सारे मुहूर्ते समंघ कादं(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). *प्रबोध, प्रेमाका,* संबंध, संपर्क समंधी दशस्कं(१). देवरा. सिंहा(१). संबंधी समाचरइ षडावा. आचरण करे, करे (सं. समाचरति) समाचरण आनंस्त. सन्यम् आचरण [सं.]

समाण, समाणउ *नरका. प्रेमाका. लावल.* वीसरा. समान, समान (वयनुं), जेवुं समाणइ उक्तिर. समाप्त करे (*सं.समाप-यति) [दे.]; *स्थ्रलिफा. [भोगवे] दि.] **समाणही** *आरारा.* सरखेसरखी समाणी नरका. [समोवणयुक्त], गरम पाणीने माफक आवे एवं करवा थता ठंडा पाणीना उमेरणवाळुं समाधइ आरारा. समाधिपूर्वक समाधि विकरा. विमप्र. शाता, शांति, दुःख-नं निवारण समाध्ये नरकाः समाधिए, समाधिमां, ध्यान करवामां] समापड् आरारा. ऐतिका. जिनरा. आपे, समर्पित करे (सं.समप्) समापत्ति आनंस्त. ध्यान[नो एक प्रकार]. चोक्रस प्रकारनी चित्तस्थिति थवी ते [सं.] समारइ उक्तिर. उपवा. सरखुं करे, साफ करे, [कापीक्पीने व्यवस्थित करे]; *"उपबा.* [समुं करे, आखुं करे]; *नरका-२.* सरखं करे; *अखाका. चतुचा. नरका. प्रेमाका. वीसरा. सजे, शणगारे; *नेमिछं*. सुधारे [सं.समारच्] समारथ *सिंहा(शा). [शिव, महादेव] समारथी *सिंहा(शा). [शिवभक्त] समारिवं उक्तिरः समारवं समावस्था आनंस्त. त्रण गुणोनी तर-तम भाव विनानी साम्यावस्था **समास** *प्रेमप*. समावेश [सं.संवास]

समाहि *ऐतिरा. [समाधि, शांति] **समांणउ** ऋषिरा. सरखो (सं.समान) समाणसां कस्तुवाः सञ्जनो [सं.सु+मानुषः] सिम तेरका. एक वनस्पति, समडी, खीजडी (सं.शमी) सिम किया उत्तिरः सरख्रं कर्युं **समिणडउं** *प्राचीफा*. स्वप्न **समिति** *आरारा. चारफा.* सन्यक् प्रवृत्ति, उपयोगपूर्वक गमन-भाषण वगेरे [जै.]; जुओ समति-गुपति समिद्ध ऐतिका. ऐतिरा. प्रद्युच्. समृद्ध समिध आरारा. समृद्धि **समी** *आरारा.* साथे [सं.समम्] समीस सिंहा(शा). ? **समुक्ष** जुओ समूह **समुजल** *तेरका.* समुख्यल **समुद्द**्य*र्जरा.* समुद्र समुद्रात नलरा. सागरो [सं.समुद्र+अ.आत] समुधो अखाका. संपूर्ण; जुओ समूधी समुहतु *लावल. विमप्र. समीतुं, महत्त्व-वाळुं, [गौरववंत] [सं.समहत्त्व] समुंद वीसरा. समुद्र समुं पडे चित्तसं. सीधुं ऊतरे, समजाय समूधी *अखाछ. [समस्त, आखेआखी]; जुओ समुधी समुलकाष आनंस्त. मूळथी लईने सिीमा, परिधि सुधी], [समग्रपणे] [सं.स+मूल +कक्षी समूह (समुक्ष) ललिरा. समक्ष **समृत्य** *दशस्कं(१)*. स्मृति

समृत्यमुद्रा गुर्जरा. मृत्युना जेवी [निद्रानी]
मुद्रा (सं.समृत्युमुद्रा); जुओ समर्त्यमुद्रा
समे अखाका. नरका. नरका-२. प्रेमाका.
समय, समये; चतुचा. समय, संकेत
समे-मान प्रेमाका. समयनुं माप, आयुष्यनुं
प्रमाण

समेव तेरका. समेत(शिखर) तीर्थ समो नरका. समय समोगुण चित्तसं. शमगुण, सत्त्वगुण

समोतुं *नरका. प्रेमाका.* **महत्तावाळुं, [गौरव-**वंतुं] (सं.स+महत्ता)

समोपम *आरारा*. समान उपमा जेने आपी शकाय तेवुं [सं.]

समोपड्ड *आरारा. गुर्जरा. नेमिछं.* समर्पे, आपे; *शृंगामं.* सोंपे (सं.समर्प्)

समोत्रम *ऐतिका.* *संग्रम, [*पुत्र, *तुल्य] समोक्य *प्रेमाका.* गरम पाणीने माफकसरनुं

समावज प्रमाकाः गरम पाणान माफकसरतु करवा माटे नाखवामां आवतुं ठंडुं पाणी

समोसरण गुर्जरा. नेमिछं. तीर्थंकर के एवी महान विभूतिना आगमन प्रसंगे रचवामां आवती सभा के परिषद [सं.समव-सरण] [जै.]

समोसरे आरारा. ऐतिका. देवरा. षडाबा. आगमन थाय, पधारे (सं.समवस्)

समोह प्रबोप्र. समूह

समोहोते चित्तसं. संमुखे, हजराहजूर

सम्म जिनरा. सम्यक्त्व[मोहनीय], [एक कर्मप्रकार, जेमां मिथ्यात्वनां कर्मदळो दबाई रह्यां होय अने व्यवहारमां सत्यधर्मनो स्वीकार होय] [जै.] सम्मल *तेरका.* शामळुं (सं.श्यामल) सम्माण- *प्राचीसं.* उपभोग करवो [सं.सं+ मानयु]

सम्यक्त *आनंस्त*. सम्यक्व, सम्यग्दर्शन, [सत्यधर्मतत्त्वमां श्रद्धा] [जै.]

सय गुर्जरा. तेरका. जिनरा. षडाबा. शत, सो; जुओ सइ

सयगुण, सयगुणच उपबा. ऋषिरा. सो गणुं (सं.शतगुण)

सयण आरारा. स्वजन; जुओ सइण सयणाचार उक्तिर. स्वजन-व्यवहार (सं.-स्वजनाचार)

सयवलंड जुओ सङ्थउ

सयफिल *हम्मीप्र.* *मरणान्तिक युद्धमां, [युद्धमां]; जुओ सइफलउं

सथर आरारा. उक्तिर. उपबा. *कर्पूमं. गुर्जरा. प्रद्युचु. प्राचीसं. रूपच. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). विराप. षष्टिप्र. शरीर; जुओ शयर

सयल, सयळ अभिऊ. आरारा. ऐतिका. ऐतिरा. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. शीलक. स्थूलिफा. सकल, सर्व

सयबत्ति *तेरका. श*तपत्री, एक वनस्पति, [सेवती, सफेद गुलाब]; जुओ सेवंत

सयवर *प्राचीफा*. स्वयंवर

सय-हाणि शृंगामं. पोतानुं नुकशान

सय-हायि *शृंगामं*. पोताना हाये; जुओ सइ-हथि

सयंतज गुर्जरा-िट. आनंदित (दे.सयत्त) सयंबर गुर्जरा. श्वेत वस्त्रधारी (सं. श्वेताम्बर)

सयंवरु *गुर्जरा.* स्वयंवर

सया (सया धरि) *आरारा*. ?, [*विश्रान्त या] [*सं.शय]

सयाण *अखेगी. [विद्वत्ता, पंडिताई] (सं. सज्ञान उपरथी)

सयाणउं, सियाणउं अखेगी. *प्राचीका. प्राचीसं. शाणुं

सयाणी (सहियाणी) आनंस्त. सखी

सर्यांन अखेगी. संज्ञा, [संकेत] (सं.संज्ञान उपरथी)

सर गुर्जरा. वसंफा. षडाबा. शर, बाण सर आरारा. तेरका. गुर्जरा. जिनरा. नेमिछं. वसंफा. वसंवि. वसंवि(द्वा), स्वर

सर- आरारा. ऐतिरा. उषाह. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. शिर, माधुं

सर- नलरा. चालवुं, [व्यवहार थवो], [सिद्ध थवुं] [सं.सृ]

सरखडी आरारा(व). सरकड, सरखड, मुंज धास (सं.शर)

सरखं *चित्तसं*. मळतुं, अनुरूप, योग्य सरग *प्रेमप*. स्वर्ग

सरघा शृंगामं. मधमाखी (सं.)

सरघू अभिक. सरगवानां वृक्ष (सं.शिग्रु)
*सरडउ [*करडउ] *विमप्र. [*कठोर,
*करडकणो]

सरण *तेरका.* शरण

सरणाइपंजर, सरणाइपंजर हम्मीप्र. शरणागतना रक्षण माटे पिंजर समान सरणाति प्राचीका. शरणे आवेली (सं. शरणागत)

सरिण गुर्जरा. शरण आपनार (सं.शरण्य) सरत, सर्ति प्राचीका. संगीतनी एक संज्ञा, [श्रुति]; जुओ शरत

सरति सार चारफा. चंदन[के कल्पवृक्ष]ना सत्त्व के चूर्ण वडे (सं.सुरोत्तर=चंदन उपरथी?) [*सं.सुरत्तह]

सरतरी *आरारा(व).* सुरतरु, कल्पवृक्ष (रा. सरतर)?

सरतरू ऐतिरा. कल्पवृक्ष

सरदइ [सरदहड़] देवरा. श्रद्धा राखे (सं. श्रद्+धा)

सरवहइ *आरारा*. माने (सं.श्रद्धते); जुओ सरदइ

सरदिहवे आरारा. श्रद्धा राखो सर्रानेकर वसंफा. वसंफा (ल). वसंवि. वसंवि-(ब्रा). बाणनो समूह [सं.शरनिकर]

सरपण *नरका. प्रेमाका.* बळतण, लाकडां **सरपा** *लावल.* सर्प, साप

सरपाल आरारा. सरोवरनी पाळ

सरब *वीसरा*. सर्व, बधुं सरभ *ऋषिरा*. एक जंगली पशु (सं.शरभ)

सरभरि *ऐतिका.* *बराबरी, [*दंड के सजा करवानो भाव] [रा.]

सरिभ प्राचीफा. सुगंधी, [सुगंधयुक्त] (सं. सुरिभ)

सरमइ *विमप्र. [(शस्त्र)व्यायाम] करी, वापरी] [सं.श्रम्]; जुओ शर्म्मी सरमकता कृष्णच. शस्त्रकळानो अभ्यास,

[शस्त्र चलाववानी विद्या]

सरमंडल आरारा. एक वाद्य, स्वरमंडल **सरमां** *आरारा(व)*. एक करियाणुं **सरम्ं** *गुर्जरा. [व्यायाम, प्रयोग] (सं.श्रम); जुओ शर्म सरल आरारा(व). तेरका. चीडनं झाड (दे.) सरलं उक्तिर. दीर्घ, प्रलंब; तेरका. सीधुं (सं.सरल+क) सरिलयां नरका. हाथनां कांडांनां आभूषण सरवड् उक्तिर. गुर्जरा. टपके, चूवे, वहे (सं.सवति) सरवण अभिक. कामा(त्रि). कामा(शा). *तेरका. प्राचीसं*. श्रवण. कान सरववरति प्राचीसं. संपूर्ण संयमधर्म, जैन साध्वत (सं.सर्वविरति) सरवस, सरवसु वसंफा. वसंफा(ल).

सरवरित प्राचीसं. संपूर्ण संयमधर्म, जैन साधुव्रत (सं.सर्वविरित)
सरवस, सरवसु वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). सर्वस्व सरवस्त दशस्कं(१). मदमो. रूस्तस. सर्वस्व सरवी प्रेमाका. सरवानी, सिद्ध धवानी, पार पडवानी [सं.सृ]
सरवी-सरविं अभिक. सौ (सं.सर्व) सरभी *कादं(शा). [वावनो तळावडी जेवो कोठो] [सं.सरसी]; जुओ सरसी सरशी चतुचा. साथे [सं.सदृश] सरस आरारा(व). सरसङो (सं.शिरीष) ? सरसछाल – एक करियाणुं सरसङ्घ तेरका. प्राचीफा. सरस्वती पाटण,

सिद्धपुर पाटण, अणहिलवाड पाटण

सरसउं अखाका. जेवुः चित्तसं. एकरूपः;

वीसरा. षडाबा. साथे (सं.सदृश); प्रेमाका. पासे, नजीक, [साथे जोडायेल, लिप्त]

सरसति, सरसती उक्तिर. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. सरस्वती सरसद प्रेमप. स्वर अने शब्द ? सरस-मणु अखाका. सरस [प्रेमरसयुक्त] मनवाळुं

सरसरी *उषाह*. आकाशगंगा (सं.सुरसरित्); जुओ सरि

सरसवेल *उक्तिर.* सरसवनुं तेल (सं.सर्षप-तैलम्)

सरसा *प्रबोप्र. [शिर वडे, माथुं नमावीने] [सं.शिरसा]

सरिस नेमिछं. सरशे, पार पडशे [सं.सृ]
सर्रासेडं नेमिछं. सरसुं, साथे [सं.सदृश]
सरिसय वसंफा. साथे (स.सदृशक); जुओ
सरसीय

सरसिय वसंफा(ल). सुरसिक, [रसपूर्ण] सरसिव गुर्जरा. सरसव (सं.सर्षप) सरसी गुर्जरा. सरोवर, जळाशय (सं.); जुओ सरशी

सरसी आरारा. गुर्जरा. तेरका. "नेमिछं. प्रेमाका. साथे (सं.सदृशिका); आरारा. जेवी; साथे, तरफ

सरसीय, सरसिय वसंवि. वसंवि(ब्रा). सरसी, साथे (सं.सदृश)

सरसीय *गुर्जरा***. "क**मळ (सं.सरसिज), [*साथे] सरसे (सरसेजं) *गुर्जरा. [शरशय्यामां] सरसेलि जुओ सेलि सरस्युं आरारा. साथे [सं.सदृश] सरहुं आरारा. गुर्जरा. सुगंधी, सुगंधयुक्त (रा.); अभिक. सुगंधी पदार्थ (सं. सुरभि)

सरंगट अखाछ. घूमटो, घूमटो वाळेली; लावल. विमप्र. घूंघट

सरा *ग्रेमाका. [बाण]; जुओ शरा सराइ *पंचवा. [प्रशंसा करी] [सं.श्लाघ्, हिं.सराह-]; चित्तसं. सहराय, खुश थाय, आनंद पामे; जुओ शराय, सराय सराख *नेमिछं. [*चूणी] [*प्रा.सरक्ख]

सराज नामछः [चूण] [प्रा.सरव्या सराजम *अखाछः [प्रबंध, बंदोबस्त, तैयारी] (फा.सरंजाम)

सराडे अखाका. अखाछ. सीधा मार्गे सराध उक्तिर. श्राद्ध, [पितृओने पिंडदान वगेरे]

सरापु *गुर्जरा.* शाप

सराय, सराये *दशस्कं(२). *प्रेमाका. [आनंद पामे]; जुओ सराइ, सहराये

सरालउ [असरालउ] *गुर्जरा.* पुष्कळ, पूरेपूरुं; जुओ असराल

सरा लगी नरका. छेडा सुधी, संपूर्ण

सराविय *प्राचीसं*. श्राविका

सरास *ऋषिरा. [?]

सरासर कर्पूमं. "नरका. पुष्कळ, पूरेपूरुं (फा.)

सरा**ह** *आरारा*. प्रशंसा (सं.श्लाघा, प्रा. सलाहा)

े **सराहे** *अखेगी.* **"प्रशंसा करे, [आनंद पामे]** [सं.श्लाघ्]; जुओ सहराये

सराहो अखेगी. *प्रशंसा, *वधामणी, *आनंदोत्सव, प्रशंसा करो, स्तुति करो] [सं.श्लाघ]

सरां ग्रेमाका. सरोवर [सं.सरस्]

सरि *तेरका.* नदी (सं.सरित्); जुओ सरसरी सरि *मूर्जरा. [शरथी, बाणथी]

सरि प्राचीफा. सेर, माळा (सं.सर); आड, शोभा माटेनी रेखा

सरि *उषाह*. प्रसरे (सं.सृ-)

सरि, सरिइं *ऐतिका. नेमिछं*. स्वरे, स्वरथी सरिकेश उषाह. श्रीकेशव, [लक्ष्मीपित] [सं. श्रीका+इश]

सिरेखा लावल. सरखा, समान (सं.सदृक्षक)
सिरेस, सिरेसड, सिरेसिड आरारा. कर्पूमं.
गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. प्रबोप्र. लावल.
वीसरा. साथे; ऋषिरा. ऐतिरा. जिनरा.
सरखुं, जेवुं; उषाह. वडे (सं.सदृश)
[दे.सिरेस]; जुओ शिरीसु

सरिसव उक्तिर. सरसव (सं.सर्षपः)

सरिसिड जुओ सरिस

सरिसीय वसंफा. साथे [सं.सदृश]

सरीआ, सरीईआ *कामा(त्रि). कामा(शा). सरैया, सुगंधीदार वस्तुओ वेचनार [सं. सुरिम परथी]

सरीखउ *उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. प्राचीसं.* षडाबा. जेवुं, सरखुं (सं.सदृक्ष)

सरीरिचिंता *आरारा*. शरीरचिंता, मळत्याग-नी वृत्ति

सरीसउ प्रबोप्र. साथे (सं.सद्रश) सरु वसंफा(ल). स्वर, अवाज सरुइ कर्पूमं. सरवे (सादे), [खुल्ले (सादे)] (*सं.सरुज); जुओ सरुवे सरुओ, सरुवो *प्रेमाका*. चाटवो, कडछीना जेवुं लाकडानुं एक साधन सरुदे प्रेमाका. सहृदय, हृदयवाळो लागणी-वाळो, दयाळू] **सरुवे** *नरका*. सुरीला, मीठा, [ख़ुल्ला, मोटा]; जुओ सरुइ सरुवी जुओ सरुओ **सरुं** अखाछ. छेडों, अंत, [छेवट]; जुओ शराडुं सह कस्तुवा. चरु ('च'नो 'स' उच्चार) **सरूआ "**चारफा. [सरळ, सीधा, तरत असर करे तेया **सरूप** *आरारा. चित्तसं*. स्वरूप **सरूप** *आरारा*. हकीकत, वृत्तांत (रा.) सरे अखाका. अखेगी. चित्तसं. अंते: *अखाका.* सराडे. मार्गे **सरे** *ऐतिका*. स्वरथी **सरेण** *चंद्रवा.* ? **सरेणीआ** *कामा(त्रि)*. सराणिया ? सरेस उषाह. साथे [सं.सदृश] सरोडां अखाछ. ०दशस्कं(१). प्रेमाका. राडां, [सूकां, रसकस वगरनां मलोखां] सर्खप शृंगामं. सरसव (सं.सर्षप) सर्ति जुओ सरत **सर्पण** *दशस्कं(१)*. सरपण, बळतणनां

सर्म आरारा. आनंद, सुख (सं.शर्म); जुओ शर्म, सुखसर्मा सर्वधाती आनंस्त. आत्माना मूळ गुणनो सर्वांशे घात करनार कर्म (जै.) सर्वथा. सर्वथी प्रेमाका. हरिख्या. हरकोई रीते, [पूर्णतया], जरूर, खचीत (सं.) सर्वस गूर्जरा. दशस्कं(१). नरका. प्रबोप्र. सर्वस्व, बधुं **सर्वस्त** *प्रेमाका. सिंहा(शा*). सर्वस्व सर्वेश चित्तसं. सर्वनो ईश, चैतन्य के ब्रह्मस्वरूप सर्वोसरु उक्तिर. सामान्य सभाखंड, दीवाने-आम (सं.सर्वावसरः) सक प्रेमाका. सोळ, मारनी लीटीओ सलइ *विमप्र. [सळवळे] **सळका** *ग्रेमाका*. प्रबळ इच्छा **सलक्खण** *गूर्जरा*. सुलक्षण, सारां लक्षणो-वाळी **सलग** *चित्तसं*. संलग्न, जोडायेलुं, सळंग, एकरूप **सळग** *कृष्णवा*. सणगो, कोंटो सळ बेसे अखाका. मेळ पडे. सरळ बने. सिमजण पड़ी **सलसलीआ** *लावल*. सळवळ्या, मल्या

सलहड़ *प्राचीसं*. प्रशंसा करे (सं.श्लाघु: हिं.

सलिहेयड *ऐतिका.* प्रशंसा करवामां आवे

सलहीजङ, सलहीजङ, सलहीयङ गूर्जरा.

लाकडां

सराहना)

जिनरा. वखणाय, प्रशंसा थाय (सं. श्लाघ्यते)

सलाख (सलाख करी) *नरका.* *चलाखो, *गांसडी, [*पोटली बांधी]

सलावड शृंगामं. सालवे, [खूंचाडे] [सं. शल्य-]

सलाह उक्तिर. श्लाघा

सति " गुर्जरा. ["बंधनमां, "सकंजामां] [रा.]

सिलं प्रद्युचु. ('सिक्कंउं'ने स्थाने) साल्युं (सं.शल्य परथी); जुओ सल्लइ

सितता, सतीता अखाका. अखाछ. चित्तसं. नंदव. प्रेमाका. सिरता, नदी

सलील वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि वसंवि(ब्रा). लीलायुक्त, सुंदर (सं.)

सलुणो नरप(द). मनोहर, सुंदर [सं.सलवण]

सत्स्रवं अखाछ. समजवुं, [जाणवुं] सत्तूणंड ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. प्राचीसं. प्रेमाका. वीसरा. सलोणुं, सुंदर

(सं.सलवणक)

सलुणडा ऐतिका. सुंदर

सले बख्तर *प्रेमाका. [सले (एक प्रकारनुं बख्तर) तथा बख्तर] [अ.सिलह; रा.]

सह *गुर्जरा. तेरका.* शल्य, साल, पीडारूप

सङ्क्षण आनंस्तः सारा लक्षणवाळी [सं.]

सद्धइ *नेमिछं*. साले, [खूंचे] (सं.शल्य); जुओ सलिउं

सङ्खाठ *षष्टिप्र.* (अधर्मरूपी) शल्य दूर करवुं ते (सं.शल्योद्धार)

सव गुर्जरा. नलाख्या. षडाबा. बधा (सं. सर्वे); जुओ सेव सब *प्राचीका*. शिव, महादेव सबइ *विक्ररा*. सर्वे

सबइ बार *उक्तिर.* सर्वदा, सदा; जुओ सिव वार

सर्विक आरारा. सावकी (सं.सपली)

सक्छी, सक्छी *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सिंहा(शा). सवत्सा, वाछरडावाळी, वाछडा साथे

सबट्ठिसिद्ध (सब्बट्ठिसिद्धे) ऐतिका. सर्वार्यसिद्ध (अनुत्तर विमानो), दिव-लोकनुं नाम] [जै.]

सविड प्राचीसं. सोड, [रजाई, ओढण] दि. सउडि]

सवण *गुर्जरा.* कान (सं.श्रवण)

सक्ती शृंगामं. सपली, शोक्य

सवन्न *आरारा(व)*. शीवण, सवननुं झाड (सं.श्रीपणी)

सवलह- *प्राचीसं*. विलेपन करवुं [दे.] सवा *विमप्र. [सवायो लाभ ए अर्थनो उदगार]

सवाडूड *उक्तिर.* सानुकूल; जुओ सावडू सवाणो *अखाछ.* आरामयी, [साजोसमो]

सवार उक्तिर. सवेळा, शीघ्र

सवारा, सबारां *नरका. प्रेमाका. लावल.* सवेळा. शीघ्र. वहेलां

सवारी *अखाका. प्रेमाका*. सवेळा, जलदी; जुओ संवारी

सवारुं, सहवारुं दशस्कं(१). ग्रेमाका. सवेळा, वहेलुं, जलदी

सवाली **[अवाली] *शृं**गामं. [अवाळु,

दांतनां पेढां] दि.अवालुआ] **सवां** *गूर्जरा.* सोनानुं (सं.सुवर्ण-) सवि आरारा. ऐतिका. कादं(ध्र). कादं(शा). गुर्जरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. प्रद्युतु. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. सौ (सं.सर्वे) सविकिष्ठ ऋषिरा. नलरा. सौ कोई सवियारां श्रंगामं. सविकारा, विकारयुक्त **सविलक्ख** कृष्णच. झंखवाणो [सं.सविलक्ष] सवि वार गूर्जरा. चारफा. तेरका. हमेशां (सं.सर्वे+वारा); जुओ सवइ वार सविसविद्वं लावल. सर्वथी, बधांथी सविद्व नलरा. सर्वे सविहूं गमा उक्तिर. बधी बाजु सवील जिनरा. युक्ति, [उपाय, रस्तो] [अ. सबीली सवे लावल. सर्वे **सर्वकंद्वन्** कृष्णवा. सौनो, [सौ कोईनो] सबेध (रसकसबेध) *प्राचीफा. रिस, कस (परीक्षा) अने विदग्धता] सवेलीय हरिवि. *सवेळा (के सवेली, वेली साथे ?) सवो जुओ सुवो सब्ब ऐतिका. सर्व सव्यरिय ऐतिका. रातमां [सं.शर्वरी] सबद्ठसिद्धि जुओ सवद्ठसिद्धि सञ्जूषा आरारा. शुश्रुषा, सेवाचाकरी, सार-संभाळ **सस** *उषाह.* *ससणी. [*शोष] ससइ उक्तिर. श्वास ले (सं.श्वसिति)

ससउ नलरा. ससलो (सं.शशक) ससमय जिनरा. स्वशास्त्र, [स्वमत] [सं.] ससहरु ऐतिका. शशधर, चंद्र **ससा** गुर्जरा. नेमिछं. ससलां [सं.शशक] सिसया अखाका. श्वसिया. श्वास लीधो सितर ऋषिरा. ठंडुं (सं.शिशिर) सितवयणि, सितवयणी ऐतिरा. शशि-वदनी, चंद्र जेवा मुखवाळी सिसहर प्राचीसं. लावल. शशियर, चंद्र (सं.शशधर) ससीअर कामा(शा). चंद्र [सं.शशधर] ससुधा नेमिछं. सुधा - अमृत सहित ससुर अंगवि. कृष्णबा. प्राचीफा. सुस्वर, मधुर स्वरवाळू **ससुर, ससुरउ** प्राचीसं. षडाबा. ससरो (सं.श्वशुर) सस्य उक्तिर. दयाळु (सं.सश्क); उपबा. सुगवाळो सह गुर्जरा. बधा (सं.सह) सहइकार हरिवि. आंबो (सं.सहकार) सहकार गुर्जरा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). आंबो (सं.) सहगुरु आरारा. प्राचीफा. लावल. शुभगुरु सहिं सलुणओं चारफा. सहजसुंदर, स्वाभाविक रीते ज मनोहर (सं.सहज+ सलवणकः) सहजोगी जिनराः सयोगी किवली], जिमां शरीरादिना व्यापारो होय छे एवी केवल - शुद्ध ज्ञाननी आत्मावस्था] [जै.]

सहड *गुर्जरा*. योद्धो (सं.सुभट)

सहण वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा), सहन करवं ते सहमो चतुचा. समय, समो सहराये अखाका. अखेगी. प्रशंसा करे, आनंद पामे; जुओ सराय, सराहे सहलउ *ऐतिका. [सफळ, सार्थक] **सहवायो** *प्रेमाका*, पकडायो सहवारं जुओ सवार सहस, सहिस उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. *नेमिछं. लावल. वीसरा.* सहस्र, हजार सहसक्ट ऐतिका. हजार शिखरवाळूं मन्दिर सहसक्त ऐतिका. सूर्य, हजार किरणवाळो सहसफूल नलरा. स्त्रीनुं एक घरेणुं सहसरसनि ऐतिरा. हजार जीभ वडे चारका. प्राचीफा. सहसंबवण आंबानां वृक्षोवाळुं (सं.सहस्राम्रवन) **सहसा** चित्तसं. एकाएक **सहसाराम** *तेरका*. सहस्राराम, अिनेक आंबावाळूं उद्यानी **सहस्र-कमळ** प्रेमाका. कमळ जेवी हजार आंखवाळा इन्द्र **सहस्स** *षडाबा*. सहस्र, हजार सहाई ऋषिरा. सहाय, मददगार, [मित्र] **सहाजो** प्रेमाका. *सहाय करजो, [*छाजो, *शोभजोी **सहाय** *आरारा*. साथरेसाथ ? सहाय अखाका. साहे, पकडे, ग्रहण करे [सं.साध्] **सहायी ***आनंस्त. [बंधुजन, मित्र] [सं.]

समुदाय **सहार** *प्राचीसं*. आंबो (सं.सहकार) . **सहावो** *आरारा*. स्वभाववाळो सिंह तेरका. सखी; जुओ सही **सहि** **वसंवि(ब्रा)*. [*साथे, *सखी] **सहि, सहिउ, सहीय** *गुर्जरा*. साथे (सं. सहित); [*खरेखर] सिंह ए ऐतिका. हे सखी सहिकार आरारा. आंबो (सं.सहकार) **सहिकार** विमप्र. जियजयकारो सिं. साधुकार] सिंहगुरु नलरा. नेमिछं. लावल. विमप्र. *हम्मीप्र.* कल्याणकरी गुरु [सं.शुभगुरु] सहिज सिंहा(म). उदारता; जुओ कुसहिज, सेहज सहिजइ ऋषिरा. सहजभावे, स्वाभाविक रीते **सहिथउ. सहिथिउ** उषाह. सेंथो सिं. सीमंत-सहिनाण गूर्जरा. जिनस. वीसरा. लक्षण, चिह्न, ओळख (सं.*साभिज्ञान) सहिय वसफा(ल). *सखी; वसवि(ब्रा). खरेखर **सहिय** *तेरका*. सहित **सहियर** *ऐतिका***.** सखी सहियाणी जुओ सयाणी **सहियारी** *दशस्कं(२)*. शाकणनी सहियर डाकण?, [*कोई अधम देवजाति]; प्रेमाका, सखी, सहियर सहिस विकरा. सहस्र; जुओ सहस सहिसातकार सिंहा(म). एकाएक, विगर-

सहायीयांनउ समूह उक्तिर. बंधुजनोनो

विचार्यापण्] सहितिख विमप्र. सहन करशो [सं.सह] **सहिं** नरप. सिंह सही चित्तसं. खरी, साची, चोक्कसः ज. भारवाचक अव्यय **सही** कृष्णवा. दशस्कं(१). प्रेमाका. सिंह सही अखाका. आरारा. "कादं(शा). कामा(त्रि). गुर्जरा. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. प्रेमाका. लावल. विराप. नकी, खरेखर. साचं सही, संहि गुर्जरा. नरका. वसंफा. वीसरा. सखी **सहीअ** ऋषिरा. विमप्र. सहियर. साहेली. **सहीआरु** *ऋषिरा*. मित्रता सहीड वसंवि. हे सखी सहीइ वसंवि. सहन करी शकाय [सं.सह] **सहीजन** *प्रेमाका*. सखीजन, सहियरो सहीतुं अखाका. साथेनुं, साथे रहेलुं सहीय तेरका. सहित; जुओ सहि सहीय आरारा. सखी. सहियर सहीयारणी सिंहा(शा). संहारणी, सिंहार करनारी सहीलंकी कामा(त्रि). सिंहना जेवी पातळी केडवाळी **सहीस्यं** *आरारा*. जरूर (रा.) सहीं प्रेमाका, मदमो, सिंह सहु-कां अभिऊ. सहु कोई (सं.सर्व+खलू+ कानिचित्) सह नडिया ऐतिका. बधा नष्ट थया

सहं चंद्रवा. सह सहे प्रेमाका. सहा थाय, माफक आवे, [अनुकृळ आवे] सहेदि प्रद्युच्. ? सहेसां चित्तसं. सहसा. एकाएक, आकस्मिक सहो जुओ सीहो **सहौ** *उषाह*. सौ **-मं** *पंचवा*. -ने **सं** *प्राचीका*. शाथी, केम (सं.किंद्रशं) **संक** *विक्रच*. शरम, लाज [सं.शंका] **संकड ***अभिक्त. [गभराय, भयभीत थाय]; उक्तिर. वसंफा(ल). "वसंवि(ब्रा). संशय करे, [धारे, -नो भय राखे]; वीसरा. भयभीत थाय, संशय धरे. [लज्जित थाय] (सं.शंकते); जुओ शंकवुं **वसंफा. *वसंवि(ब्रा*). [-थी संकट भरेला]; जुओ कंटकसंकट संकटाव्या *प्रेमाका. [दबावीने, वचे जग्या राख्या वगर गोठव्या संकरम्यो प्रेमाकाः संक्रम्यो, गयो, पेठो **संकल** *प्राचीफा.* सांकळ (सं.शृंखला) **संकलेस** *आनंस्त.* क्लेशवाळुं, [दुःखरूप] सि.संक्लेशी **संकष्ट** *दशस्कं(१)*. संकट संकंदिण प्राचीसं. इन्द्र (सं.संक्रन्दन) **संकाणउ** *उपबा*. शंका धरावतो, भिति धरावतो **संकातउ** *उपवा*. शंका पामतो. भिय पामतो

संकारिय प्राचीसं. अंत्येष्टि क्रिया करी [सं.संस्कारिता] संकाश ०ऋषिरा. सरखो [सं.] संकीर्ण दशस्कं(१). प्रेमाका. सांकड्रं [सं.] संकुचइ उक्तिर. संकोचाय, लज्जित थाय (सं.संकुचति) **संकुल** *तेरका.* व्याप्त, युक्त (सं.) संकोडी *नरका.* खेंची, [ओछुं करी, हरी] (सं.संकृष्ट); *षडाबा.* संकोची, ओछुं करी. समेटी संक्रमड आनंस्त. संक्रमण करे **संक्रमाविया** *षडावा.* खसेड्या, एक स्थानेथी बीजे स्थाने मुक्या (सं.संक्रम् परथी) **संक्रोश** *प्रेमाका.* **विलाप, [दुःख**नो चित्कार] संक्षा चित्तसं. संख्या, (अहीं) वजनियानां माप संसेपइ उक्तिर. ट्रंकावे (सं.संक्षिपति) **संख** अभिऊ. ऐतिरा. संख्या संख गुर्जरा. तेरका. वसंफा. वसंफा(ल). शंख संखारा (संखारा ऊलटिया) पाणी गाळ्या पछीनो [कपडामांनो] कचरो [गमे त्यां नाख्यो **संखाहोली** *उक्तिर*. शंखावली. एक वनस्पति (सं.शंखपुष्पी) **संखेपइ** शीलक. संक्षेपमां, टूंकमां संखेव आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. गुर्जरा. सिंहा(म). संक्षेप,, ट्रंकाण **संगर** *गुर्जरा.* युद्ध (सं.) संगहणइं आरारा. ग्रहण, लेवुं ते (रा.)

संग्रइ *आरारा*. ग्रहण करे, ले (रा.) संग्रही *आरारा*. ग्रहण करीने, लईने, धरीने (रा.) [सं.संग्रह] **संघ** *उषाह. देवरा*. सिंह **संघकेसरा** *आरारा.* सिंहकेसरा, लाडुनी एक जात: जुओ सिंघकेसरा संघयण जिनरा. शरीरनुं संगठन, [हाडकां-ना सांधाओनो मेळ, ए निर्णीत करतुं नामकर्म] [सं.संहनन] [जै.] संघवड ऐतिका. संघपति. संघनायक **संघवाछल्य** *आरारा*. पोताना धर्मना लोको प्रत्ये अनुराग [सं.संघवात्सल्य] संघाडउ जिनरा. देवरा. "षडाबा. (साधुओ-नो) समुदाय (सं.संघाटक); जुओ साधु-संघाडल **संघात** ऋषिरा. समूह (सं.) संघात, संघाति अखाका. आरारा. ऐतिका. चतुचा. जिनरा. लिलरा. संगाथ, साथ; संगाये. साथे सिं.ी संघाये रूस्तस. सिंहा(शा). संघाते, साथे संघार अखाका. कामा(त्रि). कामा(शा). दशस्कं(१). दशस्कं(२). प्रेमाका. संहार **संधारण** चित्तसं. संहार संघारतुं चंद्रवा. दशस्कं(१). संहारतुं **संघारो** *प्राचीफा*. नाश, हिंसा (सं.संहार) **संघासन** कृष्णवा. सिंहासन **संघाहिव** *तेरका*. संघाधिप, [संघपति] **संच** अखाका. चतुचा. नलाख्या. नंदब. प्रेमाका. मदमो. शीलक. शृंगामं. युक्ति, *अखाछ.* अंदरनी उपाय:

[रचना; युक्ति, उपाय]; कादं(ध्र)-टि. जुक्ति, साचवट, काळजी]; रचना; *चाळो, [युक्ति, उपाय]; *ताल, [युक्ति, करामत]: *चित्तसं*. करामत, युक्ति, रचना, गोठवण, आंटीघूंटी; तंत्र, विधि; चंद्रवा. भेद, रहस्य; [युक्ति; व्यवहार] **संच** *आरारा.* संचय, संग्रह: *प्रेमाका*. मोसाच. सामग्री, सरसामान संचइ उपवा. गुर्जरा. प्राचीसं. वीसरा. भेगुं करे, संघरे; *प्रेमाका*. [मनमां गोठवाय, बेसे, गोठे], रुचे (सं.संचि-) **संचकार** उक्तिर. वस्तुनी लेवडदेवडमां अपातुं बानुं, (सं.सत्यङ्कार); ऋषिरा. [बानारूप वस्तु], [निश्चित] संकेत[रूप वस्तु]; *"गुर्जरा. विराप-अनु.* [बानुं], [आगोतरी] जोगवाई **संचर** विक्रच, हिलचाल, संचार **संचरे** चित्तसं. जाय. गति करे. पहोंचे संचलिते आरारा. हलनचलनथी **संचवण्यु** *आरारा*. मिश्रित थयेल, तैयार थयेल (रा.) **संचा** *देवरा*. संचित करेला संचारि आरारा. नाखे [सं.संचारयति] **संचे *** *नरका.* [संचमां, लागमां] संचेत मदमो. सचेत, [जाग्रत, काळजी-वाळो **संजत** *वीसरा.* तैयारी, सजावट [दे.संजत्ति] संजम आरारा. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. *तेरका. देवरा. षडाबा.* संयम: जैन साधुदीक्षा **संजमिसरीय** जुओ सिरीय

संजलनउ जिनरा. संज्वलनवाळो, कषायनो एक प्रकार, तिद्दन सादा, टूंक समय रहेनारा मनोविकारो ि जै.] **संजा** *कामा(त्रि)*. संध्या, सांज **संजिम** *प्राचीफा.* दीक्षा, संसारत्याग (सं. संयम) संजुड जिनरा. संयुक्त **संजुत्त** *आराराः ऐतिका***ः संयुक्त, मिश्रित**, सहित **संजोडि** *जिनरा*. साथेसाथे, एकसाथे संजोव- प्राचीसं. एकत्र करवुं, संचित करवुं (सं.संयोज्; हिं.संजीना) **संज्ञा** *आरारा*. सभानता, सचेतता (सं.) **संज्यम** चित्तसं. संयम **संद्रा** *तेरका.* सन्ध्या, सांज; *ऐतिका. षष्टिप्र.* संध्या, [संधिकाळ, दिवसना भाग] **संझेरण ***विमप्र. [साफस्फी, व्यवस्थित करवं ते] संड्याकाल देवरा. संध्याकाळ **संठ-** वीसरा. भूकवुं, जोडवुं (सं.संस्था-) संठवइ ऐतिका. शंगामं. स्थापे, मूके **संटाविड** *ऐतिका. तेरका.* स्थाप्यो, नीम्यो (सं.संस्थापित) **संठिउ** *ऐतिका.* स्थापित थया (सं.संस्थित) संठिवउ *ऐतिका. [स्थाप्या] ₹i. संस्थापित । **संड ***उषाह. नलरा. विक्रच. हम्पीप्र. सांढ

(सं.षण्ड)

संडासा * षडाबा. [साथळ, पग वगेरेनां संधि-

स्थानो] [प्रा.संडास, सं.संदंश]

संत आरारा. निर्मल, चोख्खां, सारां (रा.) **संता** *ऋषिरा. [संतप्त, दुःखी] संतान वसंवि(ब्रा). श्रेणी (सं.); जुओ किशलसंतान संतानीअ षष्टिप्र. वंशज (सं.संतानिक) **संतापण वसंफा. वसंवि(ब्रा)**. संताप आपनार [सं.संतापन] **संताषड् गू**र्जरा. तेरका. षडाबा. संतापे, तपावे, पीडे [सं.संतापयित] **संतावण** *गुर्जरा*. संताप आपनार (सं. संतापन) **संतावियड** *आरारा.* संतप्त, थाकेल; *तेरका*. संतापित संति जुओ जंति **संति** *आरारा*. छे **संतिकरज**्युर्जराः शांति आपनार **संतु** *गुर्जरा*. शांत, भलो **संतुद्ध** *ऐतिका***.** संतुष्ट **संतोक** मदमो संतोष **संतोख** *नरका*. संतोष **संत्रुष्ट** *दशस्कं(२)*. संतुष्ट **संथउ** *प्राचीफा.* सेंथो (सं.सीमन्तकः); जुओ फाड

संथव *ऐतिरा*. संस्तव, स्तुति संथारड *उक्तिर. उपबा. देवरा. घडाबा.* साथरो, साधुओनी शय्या; *ऐतिका.* [माया-ममता, खानपान तजी मरण-पथारी करवी] (सं.संस्तारक) संयुज जिनरा. स्तुति करी (सं.संस्तुतः) संयुजइ *ऐतिका. षष्टिप्र.* स्तवे, स्तुति करे (सं.संस्तुनोति)
संव उक्तिर. तणछनुं झाड, [*एनो गुंद]
(सं.स्यन्दन)
संवरी प्राचीफा. सुंदरी
संदिसइ उक्तिर. आज्ञा – रजा आपे (सं.
सन्दिशति)
संदिसावजं बडाबा. अनुज्ञा मागुं
संघ अखाका. संधुं, बधुं
संघाण गुर्जरा. प्रेमाका. बाण पर तीर

(सं.संधान) **संधि** *लितरा.* फाट [सं., प्रा.] **संधि** *नेमिछं.* सांधा; प्राचीसं. –, [काव्यनो रचनाप्रकार] [सं.]

मुकवुं ते, ताकवानी क्रिया, निशान

संधि-बंध *प्राचीसं. -,* [संधि नामनो काव्य-नो रचनाप्रकार] [सं.]

संधियं उक्तिर. धनुष्य पर बाण चडाव्युं (सं.सन्धितः)

संधियमक वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). आंतर्यमक (सं.)

संधिरेहु नलरा. संधिना दस्तावेज लखनार (सं.संधिलेखक)

संधी सोरी *प्रेमाका*. संधी — बधी सोरी — उझरडीने, [संपूर्णपणे]

संयू अभिक. सिंदुवार, नगोडनां वृक्ष संयूखइ उक्तिर. उत्तेजित करे, प्रज्वलित करे (सं.संधुक्षते)

संयूखण, संयूषण उक्तिर. षडाबा. अग्नि पेटाववो ते (सं.संधुक्षण) संधे कामा(त्रि). कामा(शा). मदमो. संदेह

संनाह गुर्जरा. प्रेमाका. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). बख्तर (सं.) संनिवेस षडाबा. घर (सं.संनिवेश) **संनेह** आरारा, स्नेह **संपइ** *आरारा*. संप्रति, हालमां, अत्यारे **संपड** *आरारा.* प्राप्ति थाय (सं.संपद्यते) संपड आरारा. संपत्ति (सं.संपद्): वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). संपत्ति, शोभा; जुओ वनसंपइ **संपचूड** *गुर्जरा.* सर्पचूड नामनु शस्त्र संपजइ उक्तिर. सांपडे, प्राप्त थाय (सं. संपद्यते); *आनंस्त. *जिनरा. षडाबा.* सांपडे, नीपजे, सिद्ध थाय; कृष्णच. छे: थाय संपड- प्राचीसं. सांपडवुं [सं.संपत्] संपडावीए प्रेमाका. प्राप्त करीए 🕐 संगतउ (=संपत्तउ) प्रद्युच्. आवी पहोंच्यो (सं.संप्राप्त) *संपत-प्रभु (सपत्नप्रभु) *प्रेमाका. विरीओ पर प्रभुत्व मेळवनार] [सं.] **संपत्त** *आरारा*. संप्राप्त, पहोंच्यो **संपत्तउ** जुओ संपत्तउ **संपन्न** *ऐतिका.* पहोंच्या **संपन्ज** *आरारा.* मळ्युं, प्राप्त थयुं (सं.संपन्न) **संपन्नउ** *उक्तिर. गूर्जरा*. सञ्ज संपय ऐतिका. संप्रति. [हालमां] संपाडी कादं(ध्र). मेळवी [सं.संपात्] संपाद्वं प्रेमाका. स्वीकारवं [सं.संपाद्] संपुटि आरारा. माटीनां कोडियांनी जोड पग मुकी भांगी नाखवानी विधि

संपुत्त प्राचीफा. उपस्थित, आवी पहोंच्यो (सं.संप्राप्त) संपुत्री तेरका. भरेली (सं.संपूर्ण+इका) संपुष्ट दशस्कं(१). दशस्कं(२). संपुट संपूरिय गुर्जरा. भरेली (सं.संपूरिता) संपेखि ० जिनरा. जोईने [सं.सं.+प्रेक्ष] **संप्रदा** *अखाका*. संप्रदाय संप्रेडिं आरारा. ललिरा. विक्ररा. वळाव्यूं, मोकल्य संफोडतच उपवा. वेडफतो, नष्ट करतो (सं. स्फोट) [सं.सं+स्फोट्] **संबर**्गुर्जरा. साबर (सं.शंबर) संबल, संबलंड आरारा. ऐतिरा. विमप्र. वीसरा. भातुं (रा.) [सं.शंबल] **संबंध** *आरारा. नलरा. हम्मीप्र.* कथाप्रकरण. वृत्तान्त (सं.) **संबंधिड** *षडाबा.* संबंधी, स्नेही; -ने लगतुं **संबंधिवउ** *षडाबा.* जोडवूं संबाहड् आरारा. उक्तिर. निभावे. संभाळे (सं.संवाहयति) **संबि** *विमप्र.* श्यामिका, काळाश **संभम** प्राचीफा. [-थी जन्मेल], संतति (सं. संभव) **संभराणीवत** गुर्जरा. *एक प्रकारनु व्रत **संभरिउ** गूर्जराः सांभर्युं (सं.संस्मरित) **संभलइ** *गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं*. सांभळे (सं.सम्+भल्)

संभव तेरका. जन्म (सं.)

संभवड "प्रेमाका, षडाबा, थर्ड शके, होई

शके. थाय, होय सिं.संभवति

संभाग *नलरा. [भोजनमांथी हिस्सो आपवो ते] (सं.)

संभार *आरारा. षडाबा.* सामग्री, मसालो (सं.); *आरारा. तेरका.* समुदाय, समूह (सं.)

संभारीयइ आरारा. बतावीए (रा.) संभात- प्राचीसं. सांभळवुं [सं.] संभावइ गुर्जरा. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).

-नो भाव धरे, संभावना करे, माने, धारे [सं.संभावयति]; प्रबोप्र. माने, [आदर करे]

संभावना दशस्कं(२). सार-संभाळ; प्रेमाका. खबर-अंतर, [सारसंभाळ] [सं.] संभावियज ऐतिरा. संभावित, [-धी युक्त] संभावीइ उपवा. गणाय, [धाय, होय] संभूषी थडावा. शणगारी (सं.संभूष्) संभच्छर तेरका. संवत्सर, [वर्ष] संमतुल मदमो. समतुल्य, [तेना जेवो] संमदा ऋषिरा. हर्ष [सं.]: कृष्णच. *तैयारी,

[*हर्ष, *सुख]
संमर्ब कादं(शा). भीड, गिरदी (सं.)
संमंध अखाका. कृष्णच. चित्तसं. संबंध
संमार्जनी प्रेमाका. सावरणी [सं.]
संमिणी तेरका. स्वामिनी, [अधिष्ठात्री]
संमेथशिहर तेरका. समेतशिखर
संयमनी प्रेमाका. यमपुरी; *गुर्जरा. [*यम-परी. *कारावास. *बंधननी स्थिति] (सं.)

पुरी, *कारावास, *बंधननी स्थिति] (सं.) संयुगत लग्न. संयुक्त, साथे

संतेहण आरारा. संतेखना, अनशनव्रतनुं अनुष्ठान [जै.] संवच्छर *प्राचीसं*. संवत्सर, [वार्षिक कालगणना]

संबच्छरदाणूं प्राचीफा. [तीर्थंकर दीक्षा ले ते पूर्वे] एक वर्ष पर्यंत अपीतुं दान (सं.संवत्सरदान)

संबच्छरिय *षडाबा.* वार्षिक, [संवत्सरीनुं] (सं.सांवत्सरिक)

संवछर नंदब. संवत्सर, [वर्ष]

संवर्षं अखाका. उक्तिर. दशस्कं(१). प्रेमाका. विक्ररा. संवरण करवुं, संकेली लेवुं, समेटवुं, बरखास्त करवुं, [नाश करवो] [सं.संवृणोति]

संबरवे *आनंस्त. [रोकवा वडे] संवरगुण गुर्जरा. *संयमगुण, [कर्मनिरोधनो गुणो [जै.]

संवाद प्रेमाका. वादविवाद संवाय प्रेमाका. समूह, समुदाय [सं.समदाय] संवारी नरका. सत्वरे, जलदी; जुओ सवारी संवास जिनरा. शृंगामं. सहवास [सं.] संवेग आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. वैराग्य, मोक्षनी अभिलाषा (सं.)

संबेगिणी ऋषिरा. वैरागिणी संबेगी आरारा. ऐतिका. वैरागी, मुमुधु संशे अखाका. वित्तसं. संशय संसइ, संसड आरारा. संशय संसद्धा स्थूलिफा. सह्या; जुओ सांसता संसारीड उपबा. संसारी मनोभाववाळो

संसालणे * गुर्जरा. [पंपाळये, चंचवाळये] संसाळ्ये अखाछ. चचवाळये संसत्य अखेगी. संसति, संसार

संसो जिनरा, संशय **संस्कार** *हरिख्या*. अग्निसंस्कार **संस्तवउं** *पडाबा***. स्तुति करुं, वंदुं, कि**हुं] संम्रत्य चित्तसं. संसार (सं.संसृति) संहट गूर्जरा. मळवुं ते (सं.संघट) संहरी वाग्भवा. (ध्ळ) हेठे बेसाडी, भिगी करी] [सं.संह-]; षडाबा. दूर करी, नष्ट करी संहारि देवरा. करीने, [लावीने] [सं.संहारय] सा आरारा, गुर्जरा, तेरका, नेमिछं, लावल, वीसरा. ते (स्त्री); तेवी (सं.) **साअ** कामा (शा). सहाय साअर, साहेर कामा(त्रि), सागर **साइ** *आराराः* साही, पकडी साइच, सांइ प्राचीफा. आलिंगन (सं.स्वंज् अथवा स्वागत) प्राचीसं. **साइणि** *उक्तिर.* शाकिनी. पिशाचिनी साइरधर कृष्णवाः सागर धरनार, सागरने पीनार **साइं** *देवरा.* सांइ, आलिंगन साउकि आरारा. सावकी (सं.सपत्नी) **साएक** *मदमो*. सहायक **साकउ** **जिनरा.* *सिंहा(शा). रिफ, दमाम, वट, प्रभाव] [अ.सिक्कः]; जुओ साखो साकण आरारा. चूडेल (सं.शाकिनी)

भिन्न नथी)] साकुली उक्तिर. एक प्रकारनी पूरी, एक मीठाई (सं.शष्कुली) **साख** *नरका. नरका-२. "लावल.* "पाकी केरी, [झाड उपर] पाकेलूं फळ **साख** *आरारा.* शाखा, डाळी साख, साख्य अखाका. आनंस्त. उपबा. *प्रेमाका. नरका.* साक्षी, साक्ष्य, साहेदी साखइ आरारा. साक्ष्यमां, हाजरीमां, समक्ष साख गळवी नरका-२. फळ पाकुं थवुं साखात कामा(त्रि). साक्षात्, [रूबरू] **साखि** *आरारा*. साक्ष्य, प्रमाण, पुरावारूप कथनः; *प्राचीका. गुर्जरा. षडाबा.* साक्ष्य, साख, साहेदी; आरारा. षडाबा. साक्य-मां, साक्षीपणामां, जाणपूर्वक, सान्निध्य-मां, समक्ष **साखि** अभिक. झाड पर पाक उपर चडेलुं দ্যক **साखियज** *वीसरा***. साक्षी, साहेद** साखी उक्तिर. कामा(त्रि). कामा(शा). *नरका. ०प्रेमाका.* साक्षी, [साहेद] **साखीउ** *आनंस्त.* *साक्षी, [सहायक] साखीओ मदमो. साक्षी, [साहेद] **साखीया** *लावल*. साक्षी. [साहेद] **साखे *** चतुचा. [*संबंध जोडे] [रा.] **साखो** **मोसाच*. रिोफ, दमाम, वट, प्रभाव]; जुओ साकउ साख्य चित्तसं. साख, साक्षी; जुओ साख साख्य मदमो. साखी, [ए नामनो पद्यबंध] साख्यात चित्तसं. साक्षात्, साक्षात् स्वरूप,

साकत आरारा. बहुमूल्य, सजावटयुक्त (रा.)

साकरनुं नालकेल *अखाका. (साकर वडे

बनावेलुं नाळियेर (जे साकरथी तत्त्वतः

साक्षात्कार, साक्षात्पणुं **साग** *प्राचीसं*. स्वर्ग सागडी, सागडीत *उक्तिर, नलरा,* रथ साटिका श्रंगामं, साडी हांकनार (सं.शाकटिक) **सागमटे** प्रेमाका. सहकुटुंब **सागर, सागरोपम** *गुर्जरा*. एक काळविभाग (सं.) [जै.] *सागरि (सांगरि) *विमप्र. [शमी वृक्षनी सींग, जेनुं शाक बने छे] दि.संगरिया: रा.सांगरी सागरोपम जुओ सागर सागवंन मदमो. सहगमन, पितिनी साथे स्त्रीए बळी मरवुं ते] सागोटियो *हरिख्या*, सागनो वेपारी साचणां उषाह. साचां, खिरेखरां, विधि-पूर्वकनां] (सं.सत्य उपरथी) साज (साह्य) देवरा. मदद (सं.साहाय्य) साज सिंहा(शा). साधन सिं.सज्यो साजइ तेरका. प्राचीसं. प्रेमाका. मोसाच. सञ्ज करे, तैयार करे; वीसराः सजे, धारण करे [सं.सञ्जित] साजण *ऋषिरा. गुर्जरा. स्वजन, प्रिय व्यक्ति साजनउं नेमिछं. साजणुं, स्वजनोनो समूह **साजि ***कादं(शा). [साह्य, सहाय] साज्य चंद्रवा. सञ्ज ?, [*साह्य, *मददगार] **साट *** गूर्जरा. [चामडानो पट्टो, चाबुक]; विमप्र. पट्टो साटइ-पालटइ विमप्र. अदलाबदलीथी,

साटकडे नरका. नरप(द). चाबुक वडे साटका प्रेमाका, सोटीनो मार साटिकु विमप्र. साटको, [घा] साटे नरका. साटामां, बदलामां, गणतरीमां, लेखामां साटौ *जिनरा*. सोदो सादिङ गुर्जरा. साठ (सं.षष्टि) साठि उक्तिर, उपबा, विमप्र, विराप, षडाबा. साठ (सं.षष्टिः) सादिसंड षष्टिप्र. एकसो साठ (सं.षष्टिशत) साठी उक्तिर. साठ वर्षनी उंमरनो (सं. षष्टिकः): नरका. साठनी संख्या[वाळां वर्षो – उंमरनांी साड ग्रेमाका. विनाश, [विखंडन, विदारण] [सं शाट] साइल आरारा. शार्द्ल, सिंह साढा (षांच/नव) आरारा. उक्तिर. नेमिछं. साङा[पांच, नव इत्यादि] (सं.स+अधी) **साण** **जिनरा*. [गाढ] [सं.श्यान] सात अखाछ. *सत्य, [*सारी पेठे, *धणं, *खरेखर] सातइ धारत ऋषिरा. शरीरमां रहेली सातेय धात् सातगारव षडाबा. सुखनुं अभिमान (सं. सात+गौरव) सातपरिया उक्तिर. [?] (सं.सप्तपर्याया) सातभूमि आरारा. सप्तभूमि, सात माळवाळुं

सातमि उक्तिर. सातम (सं.सप्तमी)

साता आरारा. ऐतिका. देवरा. शांति, सुख,

[वस्तुविनिमयथी]

आनंद, कुशळता [सं.] सातां उपवा. कस्तुवा. सातनो समुदाय (सं.ससकानि)

सातिषं "गुर्जरा. विक्रच. विराप. षष्टिप्र. ढांक्युं, संताङ्युं; "षडाबा. [साचव्युं, संभाळयुं] [सं.सत्यापित]

सातू उक्तिर. षडावा. साथवो, शेकेलो लोट (सं.सत्तु)

सात्थरीआ हम्मीप्र. साथरो - गोदडुं बनावनार कारीगर [सं.स्रस्तर परथी];

साथ उक्तिर. प्राचीसं. प्रवास करता वेपारी-ओनो समुदाय; वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). समुदाय (सं.सार्थः)

साथर, साथरउ आरारा. उक्तिर. कादं(शा). गुर्जरा. नलरा. प्रेमाका. लावल. विराप. साथरो, पथारी, घासनी पथारी (सं. सस्तर)

साथरी विमप्र. आसनियुं, [बेसवानी चटाई]
साथित उक्तिर. साथळ (सं.सिक्थ)
साथि आरारा. साथ [सं.साथ]
साथीउ विमप्र. स्विस्तिक, साथियो
साथु जुओ विरिहणीसाथु
साथेयो नरका. साथ थकी, साथे थई
साद चारफा. वसंफा. अवाज (सं.शब्द)
साद करावुं प्रेमप. कहेवरावुं
साद (साद देसइ) प्राचीसं. जवाब आपशे
सादर "प्रेमाका. [सगर्भा स्त्रीनी अभिलाषा,

दोहद] [सं.श्रद्धा]; जुओ साधर पहोती

सादूल उक्तिर. शार्दूल, सिंह साथ अखाका. उक्तिर. देवरा. नरका. प्रेमाका. साधु, संत, सजन

साध प्राचीसं. श्राद्ध

साषइ आनंस्त. आरारा. उपबा. गुर्जरा. जिनरा. सिद्ध करे, पार पाडे, जीते (सं.साधयति)

साधन आरारा. साधना

साधम्मिय *षष्टिप्र.* समान धर्मना अनुयायी (सं.साधर्मिन्)

साधर पहोती श्रेमाका. [गर्भवतीनी] इच्छा पूरी थई [सं.श्रद्धा]; जुओ सादर, साध्र साधवी चंद्रवा. नंदब. [साधुतावाळो], साधु-पुरुष [सं.]

साधारण जिनरा. वनस्पतिकाय, जेमां एक शरीरमां अनंत जीव होय, जिना उदयथी साधारणशरीरी जीवपणुं मळे ते नाम- कर्मनो प्रकार] जि.]

साधारा *नेमिछं*. आधाररूप, [आश्रय देनार] साधां *आरारा*. साधुओ

साधी (अगनि साधी) ऋषिरा. [अग्निमां] प्रवेश करी; जुओ साधइ साधुकार *आनंस्त. [भलो, सदुगुणी]

साधुवस्य *आरारा*. प्रशंसा (सं.)

साधुसंघाडज *उक्तिर*. साधुसमुदाय (सं.साधु-संघाटकः)

साम्र कादं(ध्रु). कादं(शा). गर्भिणीना मननी इच्छा, दोहद [सं.श्राद्ध]; जुओ साधर सान कादं(शा). गुर्जरा. चतुचा. संज्ञा, भान, समज; अखाका. प्राचीफा. निशानी, संकेत, इशारो; *अखाका. [संकेत, तात्पर्य]

सानिध *आरारा. विक्रच. *शृंगामं.* सहाय (सं.सान्निध्य); जुओ सानिध

सानन (सा न-न) *शृंगामं. [ते नहीं नहीं] सानबाफ प्राचीफा. एक कीमती वस्त्र (फा. शाना+बाफ)

सानिष *ऐतिका.* सान्निध्य, [सहाय]; जुओ सानिध

सानिधइ ऋषिरा. पासे, [*सहायथी] (सं. सान्निध्य)

सानिधि, सानिद्ध आरारा. "गुर्जरा. प्राचीसं. सहाय (सं.सान्निध्य)

साप *आरारा*. शाप

सापतज जिनरा. पूरुं, अखंड, [साजुंसमुं, साबूत] [अ.साबित]

सापु भणी उक्तिर. साप तरीके

साबरि वीसरा. हरणना चामडा[मांथी बनावेली] (सं.शबर-)

सावल गुर्जरा. एक प्रकारनो भालो (सं. सर्वला)

साबसीयो चंद्रवा. [साबरियो], दूध वेचनार

साबाण, साबान विमप्र. हम्मीप्र. एक प्रकारनो (छजावाळो) तंबु [फा. सायबान]; जुओ सावाण

साभरमती *उक्तिर.* साबरमती नदी

साभिज्ञांन कृष्णच. एंधाण [सं.]

साम आरारा. श्याम, काळो

साम ऋषिरा. श्यामा, सुंदरी

सामउ *उक्तिर.* सामो, एक खडधान, मोरैयो (सं.श्यामाक)

सामिट वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. *वसंवि(ब्रा). समेटी ले, पाछुं खेंची ले (सं.*समाप्तयति) [सं.संवेष्टयति]

सामठउं जिनरा. एक साथे, [सामटुं, खूब] सामणि आरारा. स्वामिनी, [मालिकण]; नलरा. स्वामिनी, [अधिष्ठात्री]; वीसरा. स्वामिनी, [प्रियतमा]

सामद, सामंद चंद्रवा. मदमो. सिंहा(शा). सामंत, वीर, सुभट

सामरती अखाका. सामर्थ्यवान्, समर्थ सामरा नलाख्या. साबर नामना पशु (सं. शम्बर)

सामर्थ्या कादं(शा). समर्थता, [प्रभाव, परिणाम] (सं.सामर्थ्य)

सामल, सामलउ उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. शामछुं (सं.श्यामल)

सामलवन नेमिछं. लावल. श्याम वर्णना सामलु प्राचीफा. घोडानी एक जात (सं. श्यामल)

सामली *गुर्जरा*. शामकी, [घेरा रंगनी] (सं. श्यामल)

सामसाल सिंहा(म). अधिपति, मालिक (सं.स्वामिन्+सार); जुओ सामिसाल

सामहर्ज *उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा*. सामुं (सं.संमुख)

सामि उथाह. सामे (सं.संमुख)

सामहणी *आरारा. विमप्र. शृंगामं.* तैयारी; जुओ सांमहणी

सामहीयुं *आरारा*. सामैयुं

सामधाउं गुर्जरा. तैयारी करी, सञ्ज थयुं;

सञ्ज कर्युं (सं.*समाधाति=समाध्याति); आरारा. तैयार थयुं, ऊमट्युं (रा.); जुओ सांमहिउं

सामंद नंदब. सामंत; जुओ सामद

सामाइक *ऐतिका.* सामायिक, [जैन ध्यान-क्रिया]

सामाई उक्तिर. सामायिक, जैन धर्मध्यान-क्रिया

सामाचारी *उपवा. [साधुनो आचार, क्रियाकांड] [सं.]

सामानि *विमप्र*. सामान्य, साधारण

सामायक नलरा. समतापूर्वक एकाग्र बेसवानुं जैन धार्मिक नित्यकर्म (सं. सामायिक)

सामि *ऐतिका. तेरका. नेमिछं. लावल.* स्वामी, [अधिष्ठाता]; प्रियतम

सामिणि, सामिनी ऐतिरा. तेरका. नलरा. नेमिछं. लावल. विराप. स्थूलिफा. स्वामिनी, [अधिष्ठात्री, मालिकण]; जुओ सामीणी

सामिसाल प्राचीफा. अधिपति, मालिक (सं.स्वामिन्+सार); जुओ सामसाल

सामिय, सामी, सामीया गुर्जरा. तेरका. लावल. वीसरा. खामी, [अधिष्ठाता]; प्रियतम

सामीणी, सामिणी *गुर्जरा.* स्वामिनी, [मालिकण]

सामुद्रक विमग्न. सामुद्रिक विद्यानो जाणकार; सामुद्रिक विद्या; [शरीरनां चिह्नो परथी शुभाशुभ जाणवानुं शास्त्र, एनो जाणकार] सामुद्रलख्यण पंचवा. देह परनां चिह्न परथी नकी थतां लक्ष्ण (सं.सामुद्र+लक्षण)

सापुद्रिक नरका. लावल. शरीरनां अंगो उपरनां चिह्नो उपरथी भाग्य जोवानुं शास्त्र

सामुह् उक्तिरः सामुं (सं.सन्मुखः)

सामृथ्य चित्तसं. सामर्थ्य

सामैयां नरका. सामे जईने स्वागत करनारां सामोणुं प्रेमाका. सामैयुं, स्वागत के तेनी सामग्री

साम्रथ अखाका. सामर्थ्य, बळ साम्हड उक्तिर. उपबा. जिनरा. रूपच. विमप्र. वीसरा. सामो (सं.संमुख)

साम्हेले *ऐतिका.* सामैयुं करवा **साय** *आरारा(व)*. ?, [*स्वाद] [प्रा.]

सायक कादं(शा). गुर्जरा. विराप. तीर, बाण (सं.)

सायण शीलक. साकण, [पिशाचिनी] (सं. शाकिनी)

सायर *आरारा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं.* लावल. वीसरा. हरिख्या. सागर

सायर-सूत शृंगामं. सागरनो पुत्र, चंद्र **सायर्ठ (साग्रहें)** सिंहा(शा). ?, [*साय आपवो ते]

साया *ऐतिरा.* छाया [फा.सायः]

सार अखाका. अखाछ. अंबरा. आरारा. उषाह. ऋषिरा. गुर्जरा. नरका. नलरा. प्रेमाका. लावल. विक्रच. विराप. हरिख्या. सहाय, सारसंभाळ; गुर्जरा. भाळ सारइ *आरारा. चारफा. लावल.* सिद्ध करे, पार पाडे, करे

सारइ-बारइ *आरारा.* सारसंभाळ राखे सार-जद्वार अखाका. तारवणी, [सारग्रहण, संक्षेप]; जुओ सार, सारोद्धार

सारिख *देवरा*. सरखी, [जेवी] [सं.सदृक्ष] सारह्यूं *उषाह.* सरखुं, [जेवुं]

सारिण अंबरा. शारडी, दुःखधी वींघावुं ते]; जुओ हीइ सारिण

सारय *प्रेमाका.* सार्थ, सार्थक्य

सारद उक्तिर. वीसरा. शारदा, सरस्वती; ऐतिरा. शरदऋतुना

सारधी अखाछ. सार (अंतस्तत्त्व, रहस्य) समजनारी बुद्धिवाळो [सं.]

सारपासु लिलरा. सिंहा(म). चोपाट अने पासा (सं.सारि+पाश)

सारवियइ *षडावा.* पार पाडवामां आवे (सं. सृ परथी)

सार्वुं *चारफा*. तारण काढवुं, तारववुं;

नरका. आंजवुं (सं.सारयति)
सारस *गुर्जरा. [*रसपूर्वक, *साथे]
सारसापारस मोसाच.?, [कोई वस्त्रप्रकार]
सारसी अभिऊ. आरारा. उषाह. गुर्जरा.
प्रबोप्र. लावल. विराप. हम्मीप्र. मत्त
हाथीनी चीस, हाथीनी गर्जना [सं.
संरसिका]

सारसी आरारा. साथे [सं.सदृश]
सारंग कामा(त्रि). दीवो; चंद्रवा. प्रेमाका.
मृग; दशरकं(१). प्रेमाका. कमळ; चंद्रवा.
सारंगी

सारंग, सारिंग गुर्जरा. प्रेमाका. धनुष्य [खास करीने विष्णुनुं] (सं.शाङ्गी)

सारंगणी प्रेमाका. सारंगी — एक तंतुवाद्य सारंगभख चंद्रवा. ?, [*कमळनो चारो करनार हंस]

सारंगी अखाका. *हरिणी, *हरिणी जेवी स्त्री

सारा *प्राचीसं*. सार, सहाय

सारि प्राचीफा. लावल. षडाबा. सोगठां-बाजी, चोपाटनी रमत; सोगठां (सं.)

सारिखंड ऋषिरा. वीसरा. षडाबा. सरखुं, समान [सं.सदृक्ष]

सारिसुं अभिक. गुर्जरा. सिद्ध करीशुं (सं. सारियष्यामः)

सारिंग जुओ सारंग

सारिंगतोचना सिंहा(म). मृगनयना (सं. सारंगलोचना)

सारी कादं(ध्रु). कादं(शा). चोपाटनी रमत (सं.सारि) सारी उक्तिर. मेना (सं.सारिका) सारीखउ उक्तिर. सरखुं, समान (सं. सदृक्षम्)

सारीय वसंवि. वसंवि(ब्रा). सारीने, सज़ करीने, सजीने (सं.सारयि)

सारु विमप्र. सारुं, [श्रेष्ठ]; वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सरस, मजानुं, आनंदजनक (सं.सार)

सरह *चित्तसं.* -ने लीधे, -थी; तरफ साह *आरारा.* अनुसरतुं, जेवुं; अनुसरतुं, छाजतुं, योग्य; जुओ घर-साह

सासं विमप्र. बधुं [सं.सार]

सारोद्धार *हरिख्या*. संक्षेप (सं.); जुओ सार, सार-उद्धार

सारोधार चित्तसं. सारोद्धार, सार रूपे तारववुं ते

साल आरारा. सार, प्रकर्ष, उत्तम (प्रा.)

साल *आरारा.* शाळा, धर्मशाळा; *तेरका.* शाळा, [खंड, गृह]

साल जुओ साहल

साल, साळ *देवरा. प्रेमाका.* चोखा (सं. शालि)

सात अखाका. उक्तिर. नरका-२. लावल. शृंगामं. शत्य, शूळ, पीडारूप, आड-खीली, विघ्न, संकट

सालइ *वाग्भवा.* सल्लकी, [सालेडी], वृक्ष-विशेष

सालणउं अभिक. "गुर्जरा. नेमिछं. प्रद्युचु. प्राचीका. प्रेमप. लावल. अथाणुं, कचुंबर वगेरे सालणं उक्तिर. [?] (सं.शालनकम्) सालर, सालरि *आरारा. आरारा(व). *विमप्र. सछकी, सालेडी, [हाथीने प्रिय वृक्ष]

सालवी उक्तिर. वणकर (सं.शालापतिः) सालिह, सालही अंबरा. ऋषिरा. प्राचीफा. विमप्र. मेना (दे.)

साला आरारा. धर्मशाळा

सांति *आरारा. नेमिछं. लावल.* डांगर (सं. शांलि)

सालि *आरारा*. शल्य, कांटो, नडतर सालूरडंच शृंगामं. देडको (सं.शालूर) सावकर्ण पंचवा. काळा कानवाळा (सं. श्यामकर्ण)

सावकाश *प्रेमाका*. अवकाश, समय सावकेत कर्पूमं. सावचेत सावगी *वेताप*. सावकी [सं.सापल-] सावज मदमो. छंदविशेष सावज मुर्जरा. पशु (सं.श्वापद); कृष्णवा.

सावजडुं *हरिख्या*. शिकारी [जंगली] प्राणी सावजां नरका. *प्रेमाका. पक्षी सावजि विक्ररा. वनपशु [सं.श्वापद्य] सावज नलरा. पापयुक्त [कर्म] (सं.सावद्य)

सा**ब्दु, साब्दुयां, साब्दू** अभिक्र. अंगवि. प्राचीका. प्राचीफा. मदमो. विमप्र. वीसरा. रेशमी जरियान वस्त्र

सावडू *शृंगामं.* सवळुं, [अनुकूळ]; जुओ सवाङ्ख

सावण *उक्तिर*. श्रावण

पंखी

सावत प्रद्युच् स्वागत ? साबद्य आरारा. निंद्य कर्मी, पापकर्मी [सं.] **सावध्यान** अंबरा. सावधान सावय ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. श्रावक सावलियुं दशस्कं(१). प्रेमाका. झीणा पोतन् सावसलखण चारफा. सर्व शुभ लक्षणोथी युक्त (सं.सर्व+सुलक्षण) सावाण विमप्र. [एक प्रकारनो, छजावाळी] तंबु [फा.सायबान]; जुओ साबाण साविज अभिक. कादं(ध्र). कादं(शा). नरप. पक्षी [सं.श्वापद]; *कादं(शा). [पशू] **साविजडां** *अंगवि.* पशु सास आरारा. उक्तिर. तेरका. नरका. प्रेमप. *प्रेमाका. षडाबा.* श्वास सासइसासइ (सासइ ससइ) *ऋथिरा. (प्रियतमना) श्वासे श्वास ले छे सासडियां नरका-२. श्वासोश्वास सासण ऐतिका. तेरका. लावल. धर्मशासन **सासण** *जिनरा.* सास्वादन, जिमां सम्यक्त्वनो थोडो आस्वाद रहेतो होय एवी आत्मावस्था, एक गुणस्थान] [जै.] **सासणदेवि** गूर्जरा. शासनदेवी, धर्म-संप्रदायनी अधिष्ठात्री देवी **सासतज** *आरारा. उक्तिर.* शाश्वत, कायमी **सासननाथक** *आरारा*. जैन शासनना अग्रणी सासन ऋषिरा. "आज्ञा, धिर्मशासनी

सासाण जिनरा. सास्वादन, जिमां सन्यक्त-नो थोडो आस्वाद रहेतो होय एवी आत्मा-वस्था। [जै.] **सासु** गुर्जरा. शंगामं. श्वास **सासुतउ** *प्राचीसं*. शाश्वत सासुर आरारा. श्वसूर सासुरय प्राचीसं. श्वशूरगृह, सासरुं सासुव देवरा. प्राचीसं. सासु (सं.श्वश्र) सासे उसासे अखाका. श्वासे अने उच्छ्वासे सासो देवरा, संशय साह, साहा विकरा. वेपारी, [वणिक]; [प्रतिष्ठित प्रामाणिक व्यक्ति]; *मदमो*. विमप्र. शाह, शेठ, वेपारी, विणक (सं. साधु); जुओ शाह, साह् साहइ अखाका. आरारा. उक्तिर. उपवा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. दशस्कं(१). नरका. नेमिछं. प्राचीसं. प्रेमाका, मोसाच, लावल, विराप, पकडे (सं.साध) साहजी पंचवा. शाह, वाणियो (सं.साध्) साहण आरारा. साधन, सुखसामग्री; ऐतिरा. *गुर्जरा.* लावलश्कर, वाहनो, [*सैन्य]; हम्मीप्र. *सैन्य. [*घोडा] रा.] साहणी वीसरा. अश्वपाल (सं.साधनिक) साहपत्य चंद्रवा. [मोटा] सोदागर साहबाला * विमग्न. सांबेला. वरघोडामां वरनी आगळ घोडा पर बेसाडवामां आवता शणगारायेला छोकरा फा. शहबाला] साहमजं शीलकः सामैयुं; आनंस्तः गुर्जराः

सासरवेड दशस्कं(२). सासरवेल

सामुं

साहमणि *आरारा.* सनान धर्मवाळी (सं. साधर्मिणी)

साहमी *आरारा. ऐतिका. नलरा.* साधर्मिक, एक धर्मना अनुयायी

ताहमीअवच्छल, ताहमीवत्तल, ताहमी-वच्छल, साहमीवाछल्य साधर्मिक वात्सल्य, पोताना धर्मना लोको प्रत्ये अनुराग, सेवाभाव; जुओ वाच्छल्यु

साहम्मिष *ऐतिका.* साधर्मिक, एक धर्मना अनुयायी

साहम्मी षष्टिप्र. समान धर्मना जनुयायी (सं.साधर्मिन्)

साहर्ष विकरः ढांके (सं.संवृणोति) [दे.]; जिनराः सहारोआपे; ["रोके, "अटकावे]

साहत (साल) ऋषिरा. शालवृक्ष

साहताद ऐतिरा. खुश यईने [सं.साह्लाद] साहस आरारा. साहसिक, [हिंमतवाळुं, धृष्ट]

साहसी *आराग.* साहसिक, [हिंगतवाळुं, धृष्ट] [सं.]

साहः जुओ साह

साहाज कामा(त्रि). सहायक, मददगार साहाणा अखाका. शाणा [सं.सजान]

साहामुं जुए *चित्तसं*. तक्षमां राखे साहामो थयो *प्रेमप*. सामे आव्यो

साहार *प्राचीसं*. सहायक

साहार *तेरका*. आंबी (सं.सहकार)

साहास चित्तसं. साहस, हिंमत, धैर्य

साहास्त्र मदमो. शास्त्र

साहिज आरारा. सहाय (सं.साहाय्य) साहिज प्राचीफा. मालिक, परमेश्वर (अ.) साहिय *ऐतिका. [सिद्ध करी, पामी] [सं. साध्]

साहीस विकरा. साहस, [विकट काम हाथमां लेवानी शक्ति]

साहु गुर्जरा. भलुं, सारुं; सञ्जन, [शाह] (सं.साधु); प्राचीफा. वणिक, शाह (सं. साधु); जुओ साह

साहणि *ऐतिका. गुर्जरा.* साध्वी **साह्** *तेरका.* साधु

साहे दशस्कं(१). साहा, मदद; चित्तसं. सहाय, मददगार

साहेर कामा(शा). दशस्कं(१). सागर; जुओ साअर

साब जुओ साज

साम्रारं जुओ सायरुं

सां (सांक) *गुर्जराः [भय, संकोच] [सं.शंका]; जुओ सांक

सां (सांचिलां) *लावल. [साचां, खरां] सांई दशस्कं(२). नलाख्या. प्राचीका. प्रेमप.

प्रेमाका. षडाबा. आलिंगन, भेटवुं ते (सं.स्वंज); जुओ श्यांइ, साइउ

सांईडुं *नरका. हरिख्या.* आलिंगन

सांक जिनरा शंका, [संकोच]; जुओ सां

सांकलंड *उक्तिर. नलरा.* सांकळुं, एक घरेणुं (सं.शृंखला)

सांकलडी आरारा. सांकळी, एक खाद्यपदार्थ सांकली नलरा. एक खाद्यपदार्थ (सं. शष्कुलि) **सांकली** *उक्तिर. प्राचीफा.* हाथनुं एक घरेणुं, सांकळी (सं.शृंखला) सांकल्यउ ऋषिरा. बंधायेलो (सं.शृंखलित) सांकुळी वीसरा. सांकळ (सं.शृंखला) **सांक्ष्य** चित्तसं. सांख्य. सांख्यशास्त्र **सांक्ष्यजोग** *चित्तसं*. सांख्ययोग, ज्ञानयोग, विवेकज्ञान सांख "उपवा. जिनरा. शंख सांखडि उक्तिर. विवाह।दि प्रसंगे यती जमणवार (दे.संखडि) सांख्य मदमो. सांखी. सिंहन करी सांग अखाका. आखुं, संपूर्ण [सं.] सांग प्रेमाका. बरछी जेवूं एक हथियार सांगरि जुओ सागरि **सांगलतुं** *प्राचीका. प्रेमप*. गमतुं सांगि अभिकः बरछी जेवं हथियार सांगि कादं(शा). संगे, संगधी, सोबतथी **सांगी** *प्रेमाका*. गाइं हांकनारनी बेठक, [धरी अने उतारुबेटक वखेनो भाग] सांचड उक्तिर. दशस्कं(१). प्रेमाका. संचित करे, एकडुं करे [सं.सं+ची] **सांचउ** वीसरा, साचो (सं.सत्य) **सांचरड़** *आरारा. गूर्जरा. षडाबा.* संचरे, जाय (सं.संचरति) सांचळी चंद्रवा. "संचरी, ["भरेली] सांचिलां जुओ सां सांजड उक्तिर. संयमी, साधु (सं.संयत) सांञ्रुणउं उक्तिर. सांजना समयनुं [सं.संध्या परथी **सांड** *उक्तिर. वीसरा.* सांढ. आखलो

(सं.षंड) **सांढि** *षडाबा.* सांढणी [दे.संढी] सांढीज शृंगामं. गोधो, आखलो (सं.षण्ड) **सांण** *मदमो*. शान. छटा सांत चित्तसं. अंतवाळुं, विरमी गयेलुं [सं.] सांतइ *अंवरा. नरका. प्रेमाका. विक्ररा. संताडे, छुपावे; विक्रच. [ढांके], (तरवार) संकेले, म्यान करे; जुओ सांधिउ **सांतक प्रेमाका**, ग्रहोने शरंत करवानी एक धार्मिक विधि **सांतरुं** *सिंहा(शा)*. तैयार, सज़ ?; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* तैयार, सञ्ज; *प्रेमाका.* स्वस्थ **सांतीइं** अखाका. हळ सांत्य नरका. साता, सुख, [तृप्ति] (प्रा.सात) सांचारु प्रद्युच्यः संधारो, मरण नजीक आवतां ममता तजी मरणपथारी पर स्वूं ते (जै.) [सं.सस्त्रातरक] सांधिउं अंबरा. साचवी राख्यं; जुओ सांतइ सांघड उक्तिर. सांघे, जोडे; वसंफा. बांधे; *षडाबा.* जोडे. निशान ले सिं.सं+धा सांचि प्राचीफा. समय (सं.सन्धि) सांधो चंद्रवा. [लक्ष्य करी रह्यो], तत्पर धयो सांनधि आरारा, सान्निध्य **सांबर** गुर्जरा. साबर, एक हरणजाति (सं. शंबर) **सांबलउं** उपवा. भातुं (सं.शम्बलम्) **सांबेलडा** *प्रेमाका.* *शणगारेला जानैया,

[वरनी आगळ घोडा पर बेसाडेला शणगारेला छोकरा]

सांबेला नरका. *जानमां घोडा उपर बेठेला जानैया, [वरनी आगळ घोडा पर बेसाडेला शुणगारेला छोकरा]

सांभरो अखाछ. भेगुं करो [सं.सं+भृ] सांभितवा उक्तिर. सांभळवा [सं.सं+भल्] सांभितीय उक्तिर. सांभळाय, सांभळवा योग्य

सांभलेव्युं उक्तिर. सांभळवुं

सांमद *मदमो. रूस्तस.* सामंत, वीर, सुभट; जुओ शांमद, सामद

सांमलमली आरारा(व). शीमको (सं. शाल्मली)?, काळा मरी (सं.श्यामल मरिच के मलिन)?

सांमहणी *प्रद्युचु*. [जवानी] तैयारी; जुओ सामरणी

सांमहिष *प्रद्युचु. [तैयार थयुं]; जुओ सामहाउं

सां मांडि लावल. शा लेखामां ? शी विसात-मां ?

सांमि *देवरा*. स्वामी, [अधिष्ठाता देव] सांमिणि *आरारा*. स्वामिनी, [अधिष्ठात्री देवी]

सांमी देवरा. स्वामी, [पूज्य व्यक्ति]; जुओ शाम

सांमी मदमो. विरोधी ?, [*सामो बोल] सांलणां आरारा. मीठामां आथेली वस्तु, अथाणां; जुओ सालणउं

सांस प्रेमाका. संशयमां; जुओ सांसो

सांस *वीसरा.* श्वास

सांसता अंबरा. नरका. "नलाख्या. प्रेमाका. सहन करवावाळा, सबूरी के धीरज राखता; जुओ संसद्या

सांसहइ उपद्या. *उषाह. ऋषिरा. कृष्णच. गुर्जरा. जिनरा. प्रदोप्र. विक्रच. विराप. शृंगामं. सहन करे, सांखे (सं.सह); ललिरा. सहन करे, धैर्य राखे; आरारा. *गुर्जरा. *प्रद्युचु. स्वीकारी ले

सांसि, सांसे अखाका. अभिक. प्रेमाका. संशयमां

सांसी चंद्रवा. दशस्कं(१). देवरा. नरका. प्रेमप. प्रेमाका. संशय; जुओ शांशो, सांस

सांसोट प्रेमाका. सणसणाटी, [सोंसरो मारो]; सोंसरो, सणसणाट

सि जुओ छ सि

सि कादं(शा). साथे (सं.सहित)

सि यडाबा. ते

तिअ *ऐतिरा.* शीत, ठंडी

सिंड *नेमिछं*. शें, शा कारणथी

सिउ जुओ सिउं

सिउं *अभिक. आरारा. उपबा. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). साथे (सं.समम्); वीसरा. *साथे, *-थी, [*-नी]

सिउं उपना. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. विक्ररा. शुं, केवुं; नेमिछं. लावल. वसंफा. शा माटे, शुं (सं.कीदृशकम्) सिउं हरिवि. ('सिउ'ने बदले) सहु **सिउंएक** उपबा. शुं-शुं सिकट विमप्र. गाइं [सं.शकट] सिकलि [सिकरि] *देवरा. [धजावाळं छत्र] सिकिरि *प्राचीफा.* धजावाळुं छत्र (सं.श्रीकरी) [दे.सिकिरि]; जुओ शीकिरि, सीकरि **सिखराउन** *प्राचीफा*. शिखरवाळो, अणीदार, ऊंचो सिख्या *गुर्जरा*. शिखामण (सं.शिक्षा) सिगडी जिनरा. सगडी [सं.शकटिका] **सियला** *जिनरा.* सघळा [सं.सकल] **सिग्र** *तेरका.* सरगवी (सं.शिग्र) **सिग्ध** षष्टिप्र. जलदी (सं.शीघ्र) सिघ उक्तिर. [तुलसी, वज के जटामासी]. (सं.शिखा) सिघलु प्रद्युच्य. सघळुं, बधुं [सं.सकल] सिजवाला *ऐतिका*. पालखी [खास करीने परदावाळी सिजाहर कृष्णच. शय्यागृह, शयनखंड सिज्झड ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. सिद्ध थाय (सं.सिध्यति) **सिज्झाय** *आरारा*. स्वाध्याय, धर्मचितन सिज्या सिंहा(म). पथारी (सं.शय्या) **तिञ्चंत** *ऐतिका*. सिद्ध थाय छे **तिझाय** *ऐतिका*. स्वाध्याय **सिद्धिल** *उक्तिर*, शिथिल सिषगार उपवा. गुर्जरा. जिनरा. तेरका. *प्राचीसं. वसंफा.* शणगार (सं.शंगार)

सिणदंड तेरका. शणनो छोड (सं.ऋणदंड) सिणमिणड *उक्तिर*, सणसणे, गति करे **सिणिगि-तरख** *आरारा(व)*. काकडासिंगीनुं झाड (सं.शुंगी) [+सं.तरु] सित्र *कर्पूमं*. शत्र सिद्धशिला गुर्जरा. मुक्तात्माओनुं निवास-स्थान (सं.) (जै.) **सिद्धि** *गुर्जरा*. सिद्धि, प्राप्ति; [मोक्ष]; चारफा. तेरका. षडाबा. मोक्ष, निर्वाण (सं.); नलरा. समाचार, शोध (*सं.) सिद्धी तेरका. सिद्ध थई. सिद्धि पामी **सिद्धिपरी** *आरारा*. मुक्तिपुरी सिद्धो समान *जिनरा. विर्णमाळानो अभ्यास] [सं.सिद्धा+सामान्ता] **सिद्ध्य** अखाका. सिद्धि सिधारथ वीसरा. जेना हेतुओ सिद्ध थाय छे एवं, कृतार्थ, सफळ (सं.सिद्धार्थ) सिधि अभिक. खबर, [समाचार] [*सं. शिद्धि सिधि लावल. सिद्धि **तिये** *अखाछ*. सिद्धे, [सिद्ध पुरुषे] **सिध्याइं** *षष्टिप्र***. स्वाध्यायपूर्वक** सिबलि आरारा(व). शाल्मलि, शीमको, (दे.सिंबलि); जुओ सिंबलि, सीबलि **सिमकियउ** *उक्तिर*. एक जीवडुं (सं. सिमीकः) **सिमथउ** *उक्तिर.* सेंथो (सं.सीमंतक) **सिय** प्राचीसं. सफेद (सं.सित); ऐतिका. शुक्ल [पक्ष], [सुद] **सियउं** *देवरा*. शुं, कयुं (सं.कीदृश)

शंगारित)

सिषकारीय *गुर्जरा. वसफा.* **शणगारी** (सं.

सियाणउं जुओ सयाणउं **सिय्या** *आरारा*. शय्या

सिर *गुर्जरा*. मस्तक, टोच; *तेरका*. मस्तक, शिर, माथे, उपर; *वसंवि(ब्रा)*. वीसरा. मस्तक (सं.शिरस्)

सिर (सिरिक) * गुर्जरा. [शिरस्त्राण, माथा-ना टोप]

सिर (सिरस) *तेरका.* सरसडो (सं.शिरीष) सिरखंड *तेरका.* चंदनवृक्ष (सं.श्रीखंड)

सिरखुं गुर्जराः लावलः सरखुं (सं.सदृक्ष)

सिरघू *आरारा(व). उक्तिर.* सरगद्ये (सं. शिग्रु)

सिरज- वीसरा. सरजवुं (सं.सृज्)

सिरजणहार गुर्जरा. वीसरा. सर्जनहार सिरतिलौ ऐतिका. शिरमोर [सं.शिरस्+ तिलक]

सिरदार *प्राचीफा*. नायक, आगेवान (फा. सरदार)

सिरबीण *आरारा.* शिरनी वेणी, चोटलो सिरशव *प्राचीफा.* सरसवनो दाणो (सं. सर्षप)

सिरस जुओ सिर

सिरसिज *०प्राचीफा.* कमळ (सं.सरसिज)

सिरसे (सिरसेजइ) * गुर्जरा. *विराप. शर-शय्यामां

सिरहाणइं आरारा. ओसीके (सं.शिरस्थान)

सिराचा *हम्मीप्र.* एक प्रकारनी तंबु; जुओ सिराचा

सिराडइ (सिराडइ चडइ) आरारा. विमप्र. सराडे चडे, [सफळ थाय] सिरावलड शृंगामं. शकोरामां [सं.शराव] सिरि आरारा. ऋषिरा. लावल. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. शिरे, माथा पर, माथे

सिरि तेरका. लावल. श्री, सुंदर, श्रेष्ठ, [आदरवाचक]; गुर्जरा. श्री, शोभायुक्त, [आदरवाचक]; [लक्ष्मीदेवी]; जुओ सिरे सिरि (सिरिभेरिअ) *गुर्जरा. [श्रीभेरी — एक वाद्य]

सिरिखंड *आरारा.* सरखो, जेवो (सं. सदृक्षक)

सिरिखंड चारफा. चंदन (सं.श्रीखंड)

सिरिजइ गुर्जरा. वीसरा. सर्जे (सं.सृज्)

सिरि-जाल वसंवि(ब्रा). माथा पर पहेरेली जाळी, एक अलंकार (सं.शिरोजाल)

सिरिमेरिअ जुओ सिरि

सिरिमा *प्राचीसं. [श्रीमाता, एक देवी]

सिरिमाल *तेरका*. श्रीमाल[कुल]

सिरिवष्ठ * नेमिछं. [जिनदेव वगेरेमां जोवा मळतुं] छाती परनुं एक शुभ चिह्न [सं. श्रीवत्स]

सिरी तेरका. श्री [आदरसूचक]

सिरीय (संजमसिरीय) *ऐतिका.* [संयमरूपी लक्ष्मी]

सिरीस *उक्तिर*. शिरीष

सिरे (सिरि) तेरका. श्री [आदरसूचक]

सिलवट्ट *तेरका*. शिला (सं.शिलापट्ट)

सिलापट उक्तिर. शिला (सं.शिलापट्टः)

सिलावटं उक्तिर. सलाट (सं.शिला-वर्तकः); जुओ शलाटु, शिलावट

सिलावट्ट *विमप्र.* सलाट, कडियो **सिली** उक्तिर. नेमिछं. लावल. सळी (सं. शलाका) सि.शली सिव तेरका. मुक्ति (सं.शिवा) **सिवपंथि** गूर्जराः कल्याणमार्गे, [मुक्तिमार्गे] सिवपुरी गुर्जरा. कल्याणनी नगरी, मिक्ति-नगरी] सिवरित वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). शिवरात्रि सिवराति प्राचीफा, शिवरात्रि सिवसासणी हम्मीप्र. शिवशासनी, शिवना शासनमां माननार, शैवधर्मी **सिवसुख** *आरारा*. आत्मकल्याणनुं सुख, [मुक्तिनं सुख] सिवि कर्पमं. प्राचीफा. लावल. सर्वे **सिविय** *प्राचीसं.* शिबिका, पालखी **सिविहि** गुर्जरा. बधा ज **सिष** *देवरा*, शिष्य सिसर प्राचीफा. शियाळो (सं.शिशिर) **सिसलउ** उक्तिरः संसली (सं.शशः) **सिसि** *आरारा*. माथे (सं.शीर्षे) **सिसि** *आरारा*. शशी. चंद्र **सिसिहर** प्राचीफा. शशियर, चंद्र (सं. शशधर) **सिसी** *आरारा*. शीर्षे. नायक तरीके सिसो देवरा. *शीर्ष, [*शशी. *चन्द्र] सिह देवरा. शुं, शुंय **सिहण** *प्राचीफा. प्राचीसं*. स्तन (दे.) **सिहर** *तेरका. स्थूलिफा.* शिखर; *गुर्जरा.*

सिहिकार प्राचीफा. आंबो (सं.सहकार) सिहिज कादं(शा). सहेजे, स्वाभाविक रीते ज, [स्वभावथी ज] (सं.सहजेन) सिहियइ प्रबोप्र. सहेजे (सं.सहज) सिं ऐतिरा. छे **सिंख** *हम्मीप्र*. शंख सिंग तेरका. शुंग, [शिखर] सिंगल नलरा. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.सिंहल) सिंगा *गूर्जरा.* पिचकारी (सं.शंगिका); जुओ सिंगासबद, सिंगिय सिंगार उक्तिर, तेरका, नेमिछं, लावल, *वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि.* शणगार (सं.शंगार); वीसरा. शणगार; शोभा सिंगासबद चारफा. बंसीनो शब्द, बिंसीनो अवाज] [सं.शुंगिका+शब्द] सिंगिणि स्थुलिफा. धनुष्य (सं.शंगिणी) सिंगिय. सिंगीय प्राचीफा. चारफा. पिचकारी (सं.शंगिका); जुओ सिंगा सिंघ अखाका, नलरा, वीसरा, सिंह **सिंघकेसरा** *आरारा*. सिंहकेसरा, लाडुनी एक जात; जुओ संघकेसरा **सिंघगत्य** अखाका. सिंहनी गति, रीत **सिंघा** नरका, सिंह सिंघाण उक्तिर. लोढानो काट (सं.सिंहान) सिंघासण, सिंघासन आरारा. नरका. प्रेमाका. लावल. सिंहासन सिंखु जुओ सइंथउ सिंदुवार तेरका. एक वनस्पति, [नगोड] [सं.]

शिखर, मथाळू

सिंघव "अखाका. "प्रेमाका. [मीठुं] [सं. सैंधव]

सिंघा, सिंधु अभिक. सर्व

सिंधुया *ऐतिका.* "सिन्धु राग, ["सिंधु प्रदेश-ना लोको]

सिंधुर गुर्जरा. हाथी (सं.)

सिंधुवारि तेरका. एक वनस्पति, [नगोड] (सं.सिन्धुवार)

सिंधू *हम्मीप्र.* सिन्ध देशना (घोडा), उत्तम घोडानी एक जात; जुओ संधूआ

सिंबल कर्पूमं. भातुं (सं.संबल)

सिंबलि *तेरका*. शीमळो (सं.शाल्मलि); जुओ सिबलि

सिराचा *हम्पीप्र.* एक प्रकारनो तंबु; जुओ सिराचा

सिंहनिकीलिउ गुर्जरा. [उपवासनी चोक्कस प्रकारनी श्रेणीवाळुं] एक तप (सं.सिंह-निक्रीडित)

सिंहार प्राचीसं. संहार

सिंहिकासुत प्रेमाका. सिंहिकानो पुत्र राहु सी (देवसी) *उषाह. [देवेशे, रामे]

सीअल उक्तिर. पाणीमां थनारो कोई छोड, सफेद कमळ, वाळो के पाटल (सं.शीत-लिका)

सीअली लावल. शीतळ

सीअह *"विकरा.* [लक्ष्मी, संपत्ति] [सं.श्री] सीइंदु वसंफा. सेंथो (सं.सीमंत)

सीकरि, सीकरी, सीकिरि *उषाह. गुर्जरा. *विमप्र. एक प्रकारनुं छत्र, धजावाळुं छत्र; जुओ सिकिरि सीकारा *उक्तिर*. सीत्कार, सीसकारो सीकिरि जुओ सीकरि

सीकुं नेमिछं. प्रेमप. वस्तुओ राखवा माटे अध्यर लटकाववामां आवती छाबडी (सं.शिक्य)

सीकोतरी ऋषिरा. ते नामनी [इलकी कोटि-नी] देवी

सीख आरारा. ऋषिरा. विदाय [सं.शिक्षा] सीख करी आरारा. विदाय लई सीखाडि लावल. शिखामण आप [सं.शिक्ष्] सीगिणि, सीगिणी प्रद्युचु. रूपच. धनुष्य (सं.शृंगिणी)

सीघासण कामा(त्रि). सिंहासन सीचाणू अभिऊ. बाज पक्षी (दे.सिंचाण) सीचिवा अकिर. सींचवा

सीजइ नरका. प्रेमाका. शृंगामं. सिद्ध थाय, पार पडे

सीज्य चंद्रवा. *साध्य, *सिद्ध करवा योग्य, [*-ने सिद्ध करनार, *पार पाडनार]

सीझड अखाका. अखाछ. अखेगी. अभिऊ. आरारा. उक्तिर. ऐतिका. *कर्पूमं. चित्तसं. जिनरा. दशस्कं(9). नरका. प्राचीसं. प्रेमाका. विकरा. शीलक. सिद्ध थाय, पार पडे; प्रद्युचु. सीझे, [रंघाय] (सं.सिध्यते)

सीक्षवी वसंफा (ल). वसंवि. वसंवि (ब्रा). *जीती लईने; *जिताडीने; *सिद्ध करीने; [शांत करीने]

सीझवी प्रेमाका. *धीभे तापे बराबर बाफीने – बीजांने दुःख दईने, [*लाग मेळवीने, "युक्ति करीने] सीत आरारा. ठंडी, शरदी; लावल. ठंडी; षडाबा. ठंडुं (सं.शीत) सीत-काल लावल. शियाळो सीतनुमाह जुओ माह सीय "अंबरा. [(अन्नमां) कण, पिंड] [सं. सिक्य]; उक्तिर. मीण (सं.सिक्थ)

सीयल मोसाच. शिथिल सीदाइ उक्तिर. षडाबा. हरिख्या. पीडाय सीदाती आरारा. सुकाती (सं.सद्, सीद्) सीदुल सिंहा(शा). सिंधुल, [भोजराजाना पिता]

सीघ दशस्कं(१). शीद, शाने सीघउं अभिन्नं. आरारा. उक्तिर. गुर्जरा. चतुचा. प्रेमाका. विराप. षडाबा. सिन्द थयुं

सीघवूं अभिऊ. सिद्ध करावुं, [पार पाडुं] (सं.सिद्ध परथी)

सीध्य चंद्रवा. सिद्धि

सीध्यं कादं(शा). सीधां, सीधेसीघां (सं. सिद्धकानि)

सीघ्यां आडे प्रेमाका. सिद्ध थयुं छे तेने माटे, [सिद्ध थयुं छे तेने आधारे, ओथे] सीध्यं अखाका. अखाछ. नरका. प्रेमाका. सिद्ध थयुं

सीप *आरारा. उक्तिर. वीसरा.* छीप (सं. शुक्ति)

सीबिल आरारा(व). शीमळो (सं.शाल्मिल, दे.सिंबिल); जुओ सिबिल सीम आरारा. सीमा. हद. मर्यादा: अभिजः ऋषिरा. गुर्जरा. सीमा, हद, सीमाडा सीमति गुर्जरा. सुंदर (सं.श्रीमती) सीमंत ऋषिरा. माथानी पांथी, सेंथो [सं.] सीमाडड "ऋषिरा. "गुर्जरा. नलरा. विमप्र. सीमाप्रदेश उपरनो राजा, पडोशी राजा सीमाढा कादं(ध्र). खंडिया राजा; जुओ शीमाढा

सीमालु *षडावा***. सीमाडाना राजा सीमाहडा विक्ररा.** सीमा<mark>डाना राजा,</mark> मांडलिको

सीय *तेरका*. ठंडी (सं.शीत) सीय *प्राचीसं*. सीता (सती)

सीयल आरारा. गुर्जरा. तेरका. लावल. स्थूलिफा. शीतल

सीर अक्तिर. चित्तसं. जलस्रोत (सं.सिरा), सेर; जुओ शिरूअ, सीहीर

सीरख, सीरष *उक्तिर.* रजाई, गोदडी (सं.शीतरक्षिका) [रा.]

सीरणी आरारा. [गोळमिश्रित दहींनी] मीठाई (रा.)

सीरवी *उक्तिर.* [*बलराम, *खेडूत] (सं.सीरपति)

सीरष जुओ सीरख

सीरष आरारा. शीर्ष, माथुं

सीरामण *आरारा.* भातुः *उक्तिर.* सवारनो नास्तो

सील आरारा. ऐतिका. गुर्जरा. नेमिछं. लावल. वीसरा. शील, चारित्र्य

सीलउ उक्तिर. वीसरा. शीतल

सीलसनाह ऐतिरा. शीलरूपी बख्तर [सं.

शील+सन्नाह]

सीलाबट पंचवा. सलाट, [कडियो] [सं. शिलावर्तक]; जुओ सिलावट्ट

सीव मदमो. शुभ [सं.शिव]

सीविवज उक्तिर. सीववुं [सं.सिव्]

सीस *आरारा. ऋषिरा. ऐतिका. चारफा.* शिष्य

सीसव जुओ शीशव

सीसवि *आरारा(व). प्राचीफा.* सीसमनुं झाड (सं.शिंशपा)

सीसो प्रेमाका. काच [फा.शीशः]

सीह आरारा. उक्तिर. उपबा. ऐतिका. गुर्जरा. तेरका. सिंह

सीहवार *उक्तिर.* मुख्य द्वार (सं.सिंहद्वार) सीहला *नेमिछं.* सिंह

सीहीअ गुर्जरा. अग्नि (सं.शिखिन्)

सीहीर अखाछ. सेर, [सरवाणी, प्रवाह]; जुओ सीर

सीहीलंकी चंद्रवा. सिंहना जेवा केडना वळांकवाळी

सीहो (सहो) *ऐतिका. [समर्थ, शक्तिमान] सींग उक्तिर. शिंगडुं (सं.शृंगम्)

सींगउ उक्तिर. [*शिंगडाना आकारनो दंडो] (सं.शृंगकम्)

सींगडी उक्तिर. [*वाद्यविशेष, *वनस्पति-विशेष, *पिचकारी] (सं.शृंगिका)

सींगण, सींगणी प्राचीफा. विक्ररा. शृंगामं. धनुष (सं.शृङ्गिणी)

सींगा *प्रद्युचु. [शिंगडामांथी बनावेलुं वाद्य, तूरी] [सं.शृंग परथी] सींगा गुर्जरा. पिचकारी (सं.शृंग परथी) सींगिणि ऋषिरा. गुर्जरा. धनुष (सं. शृंगिणी)

सींगी अखाका. फूंकीने वगाडवानुं शिंगडानुं बनावेलुं एक वाद्य; उपबा. एक प्रकारनुं झेर (सं.शृंगिन्); वीसरा. शिंगडावाळी सींघ पंचवा. सिंह

सींघासण आरारा. सिंहासन

सींचाणुं, सींचाणो *गुर्जरा. प्रेमाका.* बाज (दे.)

सींथा अभिक. सेंथा (सं.सीमन्तक)

सींदूरीउ *आरारा(व)*. सिंदूरी, एक वृक्ष (सं. सिन्दूर)

र्सीधव *उक्तिर. षडाबा.* सिंधालूण (सं. सैन्धव)

सींघु मदमो. निर्णयसिंधु ?

सींधूआ हम्मीप्र. सिंधदेशना घोडा, घोडानी एक उत्तम जात; जुओ सिंधू

र्सीभ उक्तिर. कफ, सळेखम (सं.श्लेष्मा) **सींसमि** तेरका. सीसम (सं.शिंशपा)

सु उक्तिर. गुर्जरा. तेरका. नेमिछं. षडाबा. ते (सं.सो)

सु नरप(द). साथे [सं.समम्]

सु नेमिछं. लावल. सो [सं.शत]

सु लावलः सारी रीते [सं.]

सुअर *गुर्जरा*. सूवर, वराह, एक जंगली प्राणी (सं.शूकर)

सुआसणी उक्तिर. सुवासिनी "सुइ (सुह) "ऐतिका. [सुख] सुई उक्तिर. सोय (सं.सूची); जुओ सूइ सुई नलरा. दरजी, सई (सं.सूचिक) सुईंड उक्तिर. सई, दरजी (सं.सौचिकः); जुओ सूईउ

सुकठ चंद्रवा. सुखड

सुकड, सुकिड ऐतिका. पंचवा. मदमो. सुखड (सं.शुष्क+क)

सुकडि *आरारा. ऐतिका. शृंगामं*. सुखड **सुकतइ** *शृंगामं*. सुकातां [सं.शुष्क-]

सुकमाल, सुकुमाल आरारा. ऋषिरा. देवरा. नेमिछं. प्राचीफा. वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुकुमार, कोमळ; जुओ सुखमाल

सुकवल्य *आरारा. ऐतिका. जिनरा.* सफळ (सं.सुकृतार्थ)

सुकल ध्यांन *देवरा*. शुद्ध, पवित्र ध्याननी एक प्रकार, [ध्यान अने ध्येयना विकल्प-रहितपणे शुद्धआत्मामां एकाग्रता] [जै.]

सुकल लेस्या देवरा. जेना वडे जीव शुभ कर्म बांधे छे ते ऊंची मानसिक अवस्था, [कषायो जेमां मंद होय एवुं आत्म-परिणाम, आत्मवृत्ति] (सं.शुक्ल लेश्या) [जै.]

सुकलाणी *आरारा. ऐतिका.* सुकुलीन [स्त्री]

सकलाणवली लावल. सुंदर कल्याणवेली सुकुंतई [सुकंति] ऋषिरा. उत्तम कांति के शोमावाळुं

मुकि *आरारा*. सावकी (माता) (सं.सपली); कादं(शा). प्रद्युचु. प्रबोप्र. शोक्य (सं. सपत्नी)

पुकिड जुओ सुकड

सुकिय ऐतिका. सुकृत, [सत्कर्म, पुण्यकर्म] सुकिल प्राचीफा. शुक्ल पक्षनुं, [सुद] सुकिबा उक्तिर. सूकववा (सं.शुष् परयी) सुकुमारिका षडावा. सुंवाळी, एक प्रकारनी पूरी

सुक्कुमाल उपवा. गुर्जरा. तेरका. नलरा. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुकुमार, कोमळ; वसंफा(ल). जुओ सुकमाल; जुओ सुखमाल

सुकुलीणी ऋषिरा. नेमिछं. सारा कुळनी, कुळवान (सं.सुकुलीन)

सुकुंअलीय स्थूलिफा. सुकोमळ

सुकेड *हरिख्या.* सुखड

मुक्खासण, मुखासण प्राचीसं. शिबिका, [पालखी] (सं.सुखासन)

सुक्रित प्रेमाका. सुकृत्य

सुखडी *आरारा*. भातुं; *प्रेमप*. मिष्ट वानगी; चतुचा. भेट, पुरस्कार; जुओ सुंखडी, सूखडां

सुखण मोसाच. सुखिनी ? शंखिनी ? शोक्यण ? [शोक्य – गाळ रूपे] [रा.]; जुओ सुंखिणि, सोखण

सुखदेव *चंद्रवा.* शुकदेव

सुखपाल कामा(त्रि). कामा(शा). नरका. प्रेमाका. भदमो. पालखी

सुखम जिनरा. सूक्ष्म, [इंद्रियथी ग्रही न शकाय तेवुं शरीर प्राप्त करावनारुं नामकर्म] [जै.]

सुखमाल [सुकमाल] देवरा. सुकुमार सुखरि स्थूलिफा. उत्तम (रा.सखरा) सुखलापी वाग्भवा. "सुखपूर्वक आलाप करनार, [सुखदायक, मधूरुं बोलनार] सुखवट्टच "विमप्र. [सुखयी रहेतो, सुखी] [सं.सुखवर्तक]

मुखशिजा नलरा. सुखशय्या, [सुखाकारी शय्या]

सुखसम्माण *चारफा*. सुख अने सन्मान – गौरव (सं.सौख्य+संमान)

सुखाननी *चतुचा.* सुख आपे एवा मुखवाळी [सं.]

सुखामो *मोसाच.* शोभायमान (सं.सुषम परथी) ? सुखमय ?

सुखालीय *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुस्वच्छ (सं.सुक्षालित)

सुखासण जुओ सुक्खासण

सुखासन *प्रेमप*. पालखी; *गुर्जरा*. आरामभर्युं आसन (सं.)

सुख-साता "देवरा. [सुख अने सुख, खूब सुख] (सं.सुख+सात)

सुखासुण विमप्र. [आरामदायक आसन], *नानी पालखी

सुख्य *आरारा*. सुख (सं.सौख्य)

सुगत *'कादं(शा)*. [बुद्ध भगवान] (सं.)

सुगति उपबा. सारी गति [-अवस्था, परिणाम]; [मुक्ति] (सं.)

सुर्गियका शृंगामं. सुगंध लई जनारी स्त्री, [एक प्रकारनी राजपरिचारिका]

सुगाल अंबरा. उपबा. जिनरा. लावल. सुकाळ, सारो समय, [वरसाद थयो होय तेवो समय]

सुगाळ "प्रेमाका. [सुगाळवो, जेने सूग

आवती होय एवो] [सं.शूक-] सुगुणी ऋषिरा. सो गणी सुगेह ऋषिरा. सारुं घर [सं.]

सुचंग *अखाछ. गुर्जरा. चित्तसं. नलरा. नलाख्या. नेमिछं. प्रद्युचु. खूब सुंदर (सं.सु+दे.चंग)

सुचंगि *आरारा.* सुंदर

सुचांतणंउ *वीसरा.* झडपथी चालनारो **सुचिंत** *आरारा.* सचिंत, अस्वस्थ

सुजगीश *ऐतिका.* सुन्दर इच्छा; जुओ जगीश सुजवणउ *शृंगामं*. शुद्धि, [प्रक्षालन] [सं.

शुध् परथी]

सुजाण *गुर्जरा. चतुचा. चंद्रवा. वीसरा. षडाबा.* ज्ञानी, समजदार, डाह्यो (सं.सु+ ज्ञान)

सुजीवी (सु जीवी) *विमप्र. [सो जेवी] सुझाळो अखाछ. सूझवाळो, [ज्ञानी] [सं.शुध्यति परथी]

सुद्ठी नेमिछं. "उत्तम, "श्रेष्ठ (सं.सुष्ठु), ["सुस्थित] [प्रा.सुट्ठिअ]

सुद्धुं, सुंद्धुं *मदमो.* ऊपडवुं, चालवुं; जुओ सुंद्धुं

सुण *उक्तिर*. शकुन; *विक्रच*. पशुपक्षीना अवाज ओळखवानी विद्या

सुणउं जुओ सणउं

सुजय *ऐतिका*. नीतिमान, सदाचारी, [सुनीतिवाळी] [सं.सुनय]

सुणवइ *विमंप्र. [पक्षीना अवाज परथी संकेतो जाणनार] [सं.शकुनविद्]

सुणह, सुणहउ प्राचीसं. विक्ररा. कूतरो

(सं.शुनक) **सुणिहर** *प्राचीफा*. शयनगृह **सुणीजउ** *वीसरा*. स्नेहीजन (सं.स्निह्यति परथी); जुओ सणीजां सुतर अखाछ. [सुतरुं], सहेलुं, समुं **सुतली** *सिंहा(शा)*. पातळी, सीधी ? **सुत वेलां** *आरारा*. सुवावडमां **सुतहार** *प्राचीसं*. सूत्रधार, शिल्पी **सुति** *आरारा*. पुत्री **सुतिइ** कादं(शा). पूरुं थतां (सं.समाप्ते); जुओ सूतूं सुत्र भदमो. नियम [सं.सूत्र] सुदेव आरारा. ? **सुद्धि** आरारा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. *हम्मीप्र.* समाचार, खबर (सं.शुद्धि) सुद्र्धु कादं(शा). स्पष्ट, [खरो] **सुद्रह** *गुर्जरा.* समुद्र; जुओ सुंद्र सुध आरारा. शुद्ध, निर्मळ; शुद्ध, बराबर, पूरेपूरी **सुध** प्रेमप. भान; कामा(त्रि). समाचार (सं. शुद्धि); जुओ सुधि **सुघउ** ललिरा. सीधो, [साचो]; *नरप(द). [पूरेपूरो, साव]; नरका. शुद्ध, साचो **सुध बार नंदब**. शुद्ध पाणीवाळुं **सुधाचार** *आरारा*. शुद्ध आचारवाळो **सुचि** *आरारा.* खबर, तपास; *शीलक.* क्षेम-कुशक; *नेमिछं.* शुद्धि; जुओ शुद्धि, सुध **सुधिइं** *नेमिछं*. शुद्धिथी सुषी *चतुचा.* सीधी, सरळ; *दैवरा*. साची (सं.शुद्ध)

सुधे मन *चतुचा.* शुद्ध मनथी सुधो चित्तसं. सुधी **सुध्या** *अंबरा.* सुधा, अमृत **सुन** कामा(त्रि). शून्य, [सूनुं] सुन हो दूत जुओ सनहो **सुनानुं** *प्रेमाका*. सोनानुं, सुवर्णनुं सुनिष्ठउ "ऐतिका. [सुनिश्चयवाळा, शुभ संकल्पवाळा] **सुनु** *विमप्र* शून्य मननो, [भान वगरनो] **सुनुं** *मोसाच*. सोनुं [सं.सुवर्ण] **सुनैये** *मोसाच*. सोनाना सिका वडे सिं. सौवर्णिको सुपइ आरारा. चतुचा. सोंपे (सं.समप्) सुपइ कादं(शा). समाप्त थाय **सुगएस** *तेरका*. सुंदर प्रदेशवाळां (सं.सुप्रदेश) सुपचल प्राचीसं. सुसमर्थ [सं.सु+दे.पचल] **सुपन** *ऐतिका. नेमिछं.* स्वप्न सुपनाध्याय ऐतिका. स्वप्नाध्याय, [स्वप्ननो अभ्यास के विचार रजू करता ग्रंथ] सुपरपरि ऐतिका. सारी रीते, सुंदर रीते **सुपरि** गुर्जरा. लावल. सारी पेरे, सारी रीते [सं.सु+प्रकार] सुपरिकर *नेमिछं. [पोतानो परिजनवर्ग] [सं.स्व+परिकर] सुपरिस विकरा. शीलक. सुपुरुष, सञ्जन **सुपवित्तिण** *ऐतिका***. सुपवित्र** [वडे] सुपसंसिय ऐतिका. सुप्रशंसित, [सारी रीते प्रशंसा पामेल] **सुपसाउ** *ऐतिका. गुर्जरा.* सुप्रसाद, कृपा **सुपसाउन्त नलरा**. कृपा (सं.सु+प्रसाद)

सुपसाय *आरारा*. कृपां (सं.सुप्रसाद) सुप्रमाण आरारा. प्रतीतिपूर्वक, योग्यता-पूर्वक सुप्रसाड (सुप्रसाद) *ऐतिका*. शोभन कृपा-[वाळा] **सुबस** "वीसरा. [सारी रीते वसेलुं] सुभक्ष *नलरा.* सुकाळ (सं.सुभिक्ष) सुभवरी आराराः जेनुं चरित शुभ छे एवो **सुभवती** *आरारा*. कल्याणवती सुभ सर्मा चंद्रवा. कल्याण [अने सुखयी भरेल] [सं.शुभशमा]; जुओ सर्म सुभा आरारा. सभा सुभाव, सुभाव्य ऋषिरा. चित्तसं. स्वभाव **सुम** *कस्तुवा. चंद्रवा.* कृपण; जुओ सुंब **सुमति** *ऐतिका.* ईर्यासमिति आदि, हिलन-चलन वगेरे विषयक विवेक] जि.] सुमर- *तेरका.* स्मरवुं (सं.स्म) **सुमरण** *प्रेमप*. स्मरण **सुमरिअंत** *ऐतिका.* स्मरण करवाथी **सुमरेवि** *ऐतिका*. याद करीने सुमाणस वीसरा. सारो माणस (सं.सु+ मानुष) सुमिण, सुमिणउ उक्तिर. ऐतिका. गुर्जरा. *प्राचीफा.* स्वप्न सुमीठ वीसरा. घणुं मीठुं (सं.सु+मिष्ट) **सुमुद्धर** शृंगामं. सुमधुर सुम्म- तेरका. संभळावुं (प्रा.; सं.श्रूय्) [दे.] **सुवइं** आरारा. सूए सुयण विक्रच. पशुपक्षीना अवाजना संकेतो

सुवण *गुर्जरा*. सुजन, [*स्वजन] **सुयदेवि** *ऐतिका.* श्रुतदेवी, [शास्त्रज्ञानरूप देवी सुयार विरापः रसोयो (सं.सूपकार) **सुर** *वीसरा.* स्वर, अवाज **सुर** अखाछ. सूरदास, आंधळो **सुरग** *वीसरा*. स्वर्ग **सुरगइ** *जिनराः* देवगति, दिव तरीकेनो जन्म] [सं.सुरगति] **सुरगवि** *ऐतिका.* कामधेनु [सं.] **सुरगुर** *गुर्जरा*. देवोना गुरु, [बृहस्पति] (सं.सुरगुरु) **मुरगुरवि *ऐतिका**. [देवगुरु बृहस्पति पण] **सुरगो** *ऐतिरा*. कामधेनु [सं.] **सुरघट** *ऐतिरा*. दैवी घडो, मनवांछित आपे तेवो घडो [सं.] **सुरठ** *तेरका*. सुराष्ट्र [प्रदेश] **सुरटाण** विकरा. सुरस्थान, स्वर्ग सुरत, सुरता अखाका. कामक्रीडा [सं.]; लगनी, [ध्यान, सरत, एकाग्रता]; अखेगी. ध्यान, लगनी; [मनोवृत्ति]; चतुचा. देखाव, रूप; नरका. कामक्रीडा; लगनी, ध्यान; [*रूप]; प्रेमाका. ध्यान, [सरत, **भा**न]; *सिंहा(शा)*. सूध, भान, सतेजपणुं, [एकाग्रता, ध्यानमग्नता]; जुओ सुरति, सूरत सुरत-नूरत "अखाका. [योगसाधनानी बे अवस्थाओ, लक्ष्यमां लीन थवुं ते (अंत-र्मुख वृत्ति)अने बाह्य प्रवृत्तिमांथी निवृत्त थवुं ते (बहिर्मुखी वृत्ति)]

[सं.शकुन]

सुरतर, सुरतरु आरारा. ऋषिरा. कल्पवृक्ष सुरतसंग्राम वसंफा. वसंफा(त). वसंवि. वसंवि(ब्रा). कामक्रीडारूपी संग्राम (सं.) सुरतसुरंग वसंफा. वसंवि(ब्रा). काम-क्रीडानो आनंद (सं.)

सुरता जुओ सुरत

सुरता-खरा अखाका. सुरतामां खरा, पूरेपूरा लीन थयेला, [खरा सुरतावस्थावाळा – लक्ष्यमां लीन थयेला]

सुरतांत कादं(शा). सुरतक्रियाना अंत समयनुं (सं.)

सुरति वित्तसं. वृत्तिः, लगनीः, सुरतक्रीडा, कामक्रीडा

सुरति, सुरत्य अखाका. लगनी, [ध्यान, एकाग्रता]; [लक्ष्यमां एकाग्र थवारूप वृत्ति]; *नरका*. लगनी, [ध्यान, एकाग्रता]; जुओ सुरत

सुरत् प्राचीफा. कल्पवृक्ष (सं.सुरत्रुक्)
सुरत्, सुर्त चित्तसं. वृत्तिः, जुओ सुरति
सुरक्ष ऐतिका. सुरद्धम, कल्पवृक्ष
सुरपति लावल. देवोना पति इन्द्र सुरप आरारा. सुर्भि, सुगंध
सुर्पि दशस्कं(१). प्रेमाका. हरिख्या. गाय
(सं.)

सुरिभ-सुत प्रेमाका. *वाछरडो, [बळदियो] सुरिभ-हिम-लक्षण वसंवि(ब्रा). सुगंधित अने शीतल (सं.) सुरभी आरारा. गाय (सं.सुरिभ) सुरमहिल तेरका. अप्सरा (सं.सुरमहिला) सुरवइ गुर्जरा. देवेन्द्र (सं.सुरपित) सुरवर ऐतिका. उत्तम देव, इन्द्र सुरसरी अखेगी. दशस्कं(१). सुरसिरता, आकाशगंगा सुरसाल गुर्जरा. आंबानुं सरस वृक्ष (सं.सु+

सुरसाल *गुर्जरा.* आंबानुं सरस वृक्ष (सं.सु+ रसाल); *ऐतिका.* *उत्तम, [सुंदर, सरस]

सुरसुत *ऐतिरा.* देवपुत्र

सुरह वीसरा. "गाय, ["मनोहर, "उत्तम, "पवित्र] [रा.; सं.सुरभि]

सुरहां *आरारां. ऐतिरां. गुर्जरां.* सुगंधित (सं.सुरभीणि)

सुरिंड आरारा. गाय (सं.सुरिभ); तेरका. प्राचीफा. सुगंधयुक्त (सं.सुरिभ)

सुरहिय *प्राचीफा*. सुरभित

सुरकी आरारा(व). रास्ना, तुलसी, चंदन, सरु, सालेडु आदि वृक्षोमांथी कोई (सं.सुरभि); एक करियाणुं

सुरंग गुर्जरा मजानुं, सरस रंगवाळुं; वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). आनंदपूर्ण, मनोहर, सुंदर (सं.)

सुरंग *उक्तिर*. भोंयरुं (सं.) सुरंगी *ऐतिका*. सुंदर रंगवाळी, [सुंदर]; जुओ मुरंगी

सुरिइं आरारा. देवे सुरिताण प्राचीसं. सुलतान सुरि-नर देवरा. देव अने मानव सुरिंदो लावल. सुरेन्द्र, इंद्र सुरी प्राचीफा. सिंहा(म). देवांगना, देवी (सं.सुर परथी)

सुरत्तित आरारा. आनंदभरी

सुरीसु उषाह. सरखो, [जेवो] (सं.सदृश) सुरूव ऐतिका. सुरूप, [सुंदर] सुर्त जुओ सुरत्य सुल कस्तुवा. मुश्केली के झघडानो निकाल, [बचाव, रक्षा]; मदमो. भावनी खेंचताण, [किंमत नक्की करवी ते] (अ.सुल्ह); जुओ सूले सुलताण ऐतिका. सुलतान

सुलप प्राचीका. सहेली (सं.सुलभ)
सुलहलादिक घडावा. सुलहल (एक जंतु)
वगेरे, [*शाहूडी वगेरे]:[*सं.शलल]
सुलंभ धिष्ठा. सुलभ
सुल्यु आरारा. नीवड्युं (रा.) [*अ.सुल्ह]
सुवसरेह तेरका. सुवणिरखा (नदी)
सुवर्णा जुओ सुविणी
सुवर्णा जुओ सुविणी
सुवर्णा अरारा. वांसळीना प्रकारनुं वाद्य
सुवान कादं(शा). सारा रंगवाळुं (सं.सुवर्ण)
सुवास कादं(धु). पोतानुं रहेठाण [सं.स्व+
वास]

सुवासणिय *प्राचीफा.* सुवासिनी, सौमाग्य-वती स्त्री

सुवि *लावल.* सर्व

सुविणी (सुबरणी) *ऋषिरा. [विख्यात, यशस्वी]

सुविहाणु जुओ विहाणु

सुविहित "ऋषिरा. [सुंदर आचारोवाळा साधुओ] [सं.]

सुविहिय *ऐतिका.* सुविहित, [सुंदरआचारण-वाळा, सदाचारी] सुविद्वं विमप्र. बधांने [सं.सर्वे+खलु] सुवेष नलरा. रसिक, विदग्ध, [चतुर] [सं. सु+विदग्ध]

सुवो, सवो, सुहो पंचवा. पोपट (सं.शुक) सुशंभु कादं(ध्र). बहु सुख आपनार, [परम मंगळकारी] [सं.]

सुशिर *विराप.* काणां (सं.सुषिर); जुओ सुंसिर

सुषमाअरज उक्तिर. जेमां सुख वधारे एवो एक काळविभाग [जै.]

सुषोपती चित्तसं. सुष्ठित, निद्रावस्था सुसइ उक्तिर. तेरका. षडाबा. सुकाय, सोसाय (सं.शुष्यित)

सुसतं "गुर्जराः "वीसराः [स्वस्थ, शांत] सुसमय आराराः सुसमर्थ सुसर प्राचीफाः मीठा स्वरवाळी

सुसर आरारा. उक्तिर. ससरो (सं.श्वसुर) सुसुर धडाबा. ससरो (सं.श्वसुरः) सुसेर अखाका. सोंसरुं, [सीधुं, अविकृत] सुस्थपणंड उपबा. स्वस्थता, स्थिरता

सुह *गुर्जरा. तेरका. प्राचीफा. षडाबा.* सुख; जुओ सुइ

सुहकर, सुहकरो नेमिछं. सुख आपनार सुहगुरु उत्तिर. चारफा. प्राचीफा. शुभगुरु, कल्याणकारक प्रशस्त गुरुवर्य, सद्गुरु सुहड ऐतिरा. गुर्जरा. तेरका. विकरा. विमप्र. सुभट, योद्धो

सुरुण *आरारा.* शकुन

सुरुपउं उपबा. उषाह. जिनरा. नलरा. शीलक. शृंगामं. सम्यचो. स्वप्न, सोणुं सुहबोलु नलरा. राजानी तहेनातमां रहीने मीठां वचन बोलनार, सुखबोलो सुहम जिनरा. सूक्ष्म [संपराय], [जेमां लोभ- ना सूक्ष्म अंश सिवाय मोहनीय कर्मो उपशान्त के क्षीण थया होय एवी आत्मवास्था] [जै.]

सुहम-स्वामि शृंगामं. सुधर्मास्वामी, महावीर भगवानना गणधर

सुहर नलाख्या. वराह, [जंगली] डुक्कर (सं. शूकरः)

सुहलालि "प्रद्युचु. [सुखनी लालसावाळी] सुहली पंचवा. "घी-गोळमां घउंनो लोट शेकी बनावेली खाद्यवानगी, [सुंवाळी, एक जातनी पूरी]; जुओ सुहाली

सुहव, सुहवि *आरारा. विक्ररा.* सधवा, सौभाग्यवती स्त्री [सं.सुधवा]

सुहंम *ऐतिका.* सुधर्मास्वामी, [भगवान महावीरना गणधर]

सुहाइ उपबा. ऋषिरा. गुर्जरा. वीसरा. सुख आपे, गमे (सं.सुखापयति); "गुर्जरा. तेरका. सुख पामे (सं.सुखा-); वसंवि. वसंवि(ब्रा). सुख पामे, सुख आपे

सुहाग आरारा. शोभा, प्रशंसा, कीर्ति (रा.) (सं.सौभाग्य); गुर्जरा. सद्भाग्य[युक्त]; [प्रशस्त]

सुहागी नरका. *भाग्यशाळी, [सुंदर] सुहाणउं गुर्जरा. सुख थयुं, गम्युं सुहाणी *नेमिछं. [सुख आपनारी थई, गमी]

सुहामणंड गुर्जरा. सुखजनक, आनंदजनक,

[मनोहर]

सुहाय नरका. गमे, सुख आपे (सं. सुखापयति); नरका. लावल. शोभे सुहायइ उक्तिर. सुख आपे (सं.सुखायति) सुहार मदमो. रसोइयो (सं.सुपकार) सुहालडी आरारा. सुंवाळी, [मुलायम] सुहाली तेरका. प्राचीसं. सुंवाळी, पूरी (सं. सुकुमारिका); जुओ सुहली सहावड "गर्जरा. शोभावो. संदर रीते

सुहावड *"गुर्जरा.* [शोभावो, सुंदर रीते धरो] [सं.शोभ्]

सुहासणि ऋषिरा. सौभाग्यवंती (सं. सुवासिनी)

सुहांतउ वसंवि(ब्रा). *उञ्जवल, *प्रकाशित, [शोभतुं]; जुओ प्रेमसुहांतीय सुहिणइ ऐतिका. स्वप्नमां, [सोणामां]

सुहिणो *जिनरा.* स्वप्न

सुदु (सुदु गुरु) *गुर्जरा*. शुम[गुरु], [सद्गुरु]

सुदुड अभिक. सुभट, योद्धी
सुदुणउं अखाका. प्रबोप्र. स्वप्न
सुदुम निगोद आनंस्त. साधारण वनस्पतिकाय नामनी सूक्ष्म जीवराशि [जै.]
सुदुलूं नलाख्या. सुलभ, सोहलुं, [सरळ;

सुखकारक] [सं.सुख परथी] सुहुंणइ *ऐतिरा*. स्वप्ने सुहेज *लावल.* सारुं हेत, घणो स्नेह

*सुहेतलउं [*सुहेलउं] धिष्प्र. सहेलुं [सं.सुख परथी]

सुहेलउं *नेमिछं. ०्षष्टिप*. सहेलुं (सं.सुख परथी)

सुहो जुओ सुवो **सुं** *आरारा.* वडे, -थी; गुर्जरा. हरिख्या. साथे, सहित (सं.समम्) **सुंआल** *प्राचीसं.* सुकुमार, सुंवाळो सुंक उक्तिरः जकात, महेसुल (सं.शुल्कः) सुंखडी ऐतिका. मीठाई; जुओ सुखडी सुंखिषि विमप्र. शंखणी, [कर्कशा, कंकासि-यण स्त्री] [सं.शंखिनी]; जुओ सुखण सुंधिका उक्तिर. सुंघवा **सुंचल** *उक्तिर.* संचळ, खार, काळुं मीठुं (सं.सौवर्चलम्) सुंडिपि विमप्र. "चूंची, "छूंडी **संज़** "*गुर्जराः* ["स्झतं, "देखातं, "थतं] संडल नेमिछं. विमप्र. सुंडलो, टोपलो **षुंडादंड** गुर्जरा. चित्तसं. सूंढ (सं.शूंड+दंड) **सुंब्तुं** *वेताप. सिंहा(शा).* सञ्ज थर्वु, ऊपडवुं, जवुं; जुओ सुढवुं, सूडवुं, सूंढिया, सोडाडो, सोडव् संदर-वंदर-यालि, सुंदर-वंदुर-वाल *वसंवि-*(ब्रा). सुंदर वंदनमाला, [स्वागत माटेनुं एक तोरणी सुंवादंड वाग्भवा. सूंढरूपी दंड [सं.शुंड+ दंडो सुंद्र जुओ मुंद्र **सुंनि** *प्राचीका*. सोनामां (सं.सुवर्ण) संपी अखाका. कादं(शा). लावल. सोंपी, सुप्रत करी (सं.समप्य) **सुंब** *सिंहा(शा)*. कृपण; जुओ शुंब, सूंब **सुंमला** *प्राचीका.* कंजूस, बखील **सुंस** *आरारा.* श्वास, सूंघवुं ते (रा.)

सुंसरियां (सुं सरियां) *गुर्जराः [नी साथे चाल्या, धस्या] **सुंसिर** गुर्जरा. छिद्र (सं.सुषिर); जुओ सुशिर **संसेर** अखाछ. सोंसरो सुंहालजं नरका. नेमिछं. विमप्र. सुंवाळुं, कोमळ (सं.सुकुमार) **सुंहाली** *लावल.* सुंवाळी, [एक जातनी पूरी] (सं.सुकुमारिका) **सू (सूअ)** *गुर्जरा*. दीकरो (सं.सूत) **सूअ, सूया** *प्रद्युचु, प्राचीफा*, पोपट (सं.शुक्) **सूअडउ** गुर्जरा. पोपट (सं.शुक+ड) सूअण विमप्र. "सञ्जन, [रूखजन]; जुओ स्यण **सूअर** उक्तिर. उपबा. गुर्जरा. सूवर, जिंगलो डुक्कर] (सं.शूकर) सूआ आरारा. सूता, सुवावडी स्त्री सुआ उक्तिर. [?] (सं.सूचकाः) सुआडि उक्तिर. प्रस्तिखंड (सं.स्तिका-गृहम्) **सूआर** *उक्तिर. गुर्जरा. नलरा.* रसोयो (सं. सूपकार) **सूआरइ** *लावल.* सुवाडे [सं.स्वप्] **सुआरोग** *आरारा. ऋषिरा*. स्त्रीओने प्रसृति पली थतो रोग [सं.सूता+रोग] **सूआवर्डि** विमप्र. सुवावड; *आरारा*. सुवावड दरम्यान सेवाचाकरी **सूइ, सूई** *आरारा. नेमिछं.* सोई (सं.स्चि); जुओ सुई **सूई**ड *उक्तिर*. सई, दरजी (सं.सौचिकः); जुओ सुईउ

सूक *अखाछ.* शुष्क सूकइ *उक्तिर. "गुर्जरा. षडाबा.* सुकाय (सं.शुष्क परथी)

सूकट (सूकट लिया) *वीसरा. [समेटी लीधा, भीडी लीधा]

सूकड अभिक. वीसरा. सुखड (सं.शुष्क+ डी)

सूकिंड अभिक. उपबा. कृष्णवा. गुर्जरा. नलरा. प्राचीफा. विमप्र. सुखंड (सं. शुष्क परथी)

सूकडी *आरारा(व)*. सुखड, चंदन **सूकर** अखाका. सूचर, [जंगली डुकर] [सं. शूकर]

स्कवणु *घडाबा.* सूकववानी क्रिया सूखडां *विगप्र.* सुखडी, एक प्रकारनी मीठाई; जुओ सुखडी, सूखडी

सूखडी कादं(शा). नेमिछं. पाणी नथी पड्युं तेवी सूकी मीठाई; पछी सर्वसामान्य मीठाई (सं.शुष्कपुटिका)

सूखिम ऐतिरा. सूक्ष्म, [लघु]

सूगडांग उक्तिर. सूत्रकृतांग नामनो जैन शास्त्रग्रंथ

सूगण देवरा. सु-गुणयुक्त

सूगामणंड *उक्तिर. उपबा.* सूग उपजाव-नारुं, घृणास्पद (सं.शूक परथी)

सूचि अखाका. सोय [सं.]

सूचि, सूची *प्रेमाका. [यज्ञमां घी होमवा माटेनी लाकडानी कडछी] [सं.सुच्]

सूचिड धडाबा. सूचव्युं, कह्युं (सं.सूच्यते) सूची जुओ सूचि सूजइ जिक्तर. सूजी जाय (सं.श्वयित)
सूजबइ जिक्तर. सोजो आणे [सं.श्वाययित]
सूझइ जिक्तर. गुर्जरा. प्राचीसं. षडाबा.
शुद्ध थाय (सं.शुध्यते); जपबा. विमग्र.
शुद्ध — साधुओने माटे वापरवा योग्य
– होय

सूम्रवइ *उक्तिर.* शुद्ध करे (सं.शुध्य – परथी)

सूझीइ "कर्पूमं. [शुद्ध थईए, पवित्र थईए] [सं.शुध्य परथी]

सूड जिनरा. नाश (सं.सूदन)

सूड**उ** उक्तिर. उपबा. ऋषिरा. प्रेमाका. लावल. पोपट (सं.शुक)

सूडलो *नरका.* पोपट

सूड्बुं प्रेमाका. कापवुं, नाश करवो [सं.सूद्] सूड्बुं (सूढाबवुं) चंद्रवा. मोकलाववुं,

्रियाना करवुं, चलाववुं]; जुओ सूंढवुं

सूडावबुं विमग्न. साफ कराववुं

सूडो, सूडी *नरका.* पोपट, मेना **सूढाववुं** जुओ सूडावुं

सूणहरउं उक्तिर. शयनगृह

सूणी षडाबा. सूजी गई [सं.शून]

सूतकी * नरका. [अशुद्ध, अपवित्र]

सूतहार उपबा. सुथार (सं.सूत्रधार)

स्तिका *आरारा*. सुवावडी स्त्री [सं.]; सुवावडी स्त्रीनी परिचारिका

स्तिकाभवन कादं(शा). सुवावडीनो ओरडो (सं.)

स्तूं कादं(शा). पूरुं [थयुं] (सं.समाप्तकम्); जुओ सुतिइ, सोंत-

सूतु जुओ घरिसूतु **सूत्र** *हरिख्या.* तंत्र, [व्यवस्था, शासन] [सं.] **सूत्र** *आरारा*. सूत्रग्रंथ, शास्त्र सूत्रधार, सूत्रध्यार, सूत्रहार उक्तिरः नलराः *विक्ररा. षडाबा.* सुधार (सं.) सूत्रहीया शीलक. सूतरिया, सूतरना वेपारी [सं.सूत्र परथी] सूच *नलरा. [सुख] [सं.सुस्थ] सूषल "गुर्जराः [शिथिल, श्रान्त] **सूदनकरण** *षडाबा.* सूडवुं ते, कापवुं (सं.) सूच नरका. संभाळ [सं.शुद्धि] सूघउं अखाका. अखाछ. अखेगी. अभिक. आरारा. उपबा. ऋषिरा. अंबरा. कादं(शा). गुर्जरा. चित्तसं. दशस्कं(९). दशस्कं(२). नरका. नलरा. नलाख्या. प्रबोप्र. प्रेमाका. विमप्र. शुद्ध, निर्मक, चोख्खुं, सारुं, स्पष्ट, सीधुं, पूरुं, साचुं **सूच्य** *प्रेमाका*. खबर, [भाक] (सं.शुद्धि) **सून** अखाका. शून्य, ब्रह्म सुनक चंद्रवा. सनक ऋषि **सुनु** *आरारा*. पुत्र (सं.) **सून्य** *गुर्जरा*. सूनो (सं.शून्य) **सूप** *दशस्कं(१). प्रेमाका.* सूपडुं [सं.शूर्प] **सूब** नंदब. सूम, उदास, [मूजी] [अ.शूम]; जुओ सुम, सुंब **सूमडो** *दशस्कं(२). प्रेमाका*. *कंजूस, जड, [मूजी] **"सूमू [सूसमु**] *तेरका*. सुषम [काळ], [जेमां सुख छे एवो काळविभाग] [जै.] **सूयड**उ *षडावा.* सूडो, पोपट (सं.शुक)

सूयण *गुर्जरा.* स्वजन; जुओ सूअण **सूयर** सिंहा(म). सुवर, [जंगली डुक्कर] (सं.शूकर) **सूया** जुओ सूअ **सूयारइ** *आरारा*. सुवाडे [सं.स्वापयति] **सूयारपणइ** *गुर्जरा.* रसोया तरीके [सं. सूपकारत्वन । **सूयारुख** *आरारा(व).* सुवानुं वृक्ष (सं. शताह्वा) **सूयारोग** आरारा. सुवावडमां थतो रोग **सूयावडि** *आरारा*. सुवावड **सूयां**णी *आरारा.* सुवावडी स्त्रीनी परिचारिकाओ [सं.*स्तिजानि] **सूयिवा** उक्तिर. सूवा [सं.स्वप्] सूर अखाका. आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. नरका. प्रेमाका. लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. सूर्य (सं.) सूर्दं *वसंफा. *वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). शूरवीरे **सूरड ***गुर्जरा. [शूरो] **सूरत** *अखाछ.* *सुरता, *लगनी, [वृत्ति]; जुओ सुरत, सूर्त **सूरता** *षडाबा*. शूरपणुं (सं.शूरता) **सूरयोपम** *ऐतिका.* सूर्य समान **सूरा** *उपबा*. सूयर, डुकर (सं.शूकर) **सूरिज** उक्तिर. गुर्जरा. वीसरा. सूर्य **सूरिम** *प्राचीसं.* शौर्य **सूरिमंतु** *ऐतिका*. सूरिमन्त्र, [सूरि ए पदवी माटेनो मंत्र] सूरियांपान ग्रेमाका. *कसबजरीना तारवाळां

पान, कोई वनस्पतिनां पांदडां] सूरीसरा लावल. सूरीश्वर, श्रेष्ठ सूरि -आचार्य सूर्ज चित्तसं. सूरज **सूर्त** अखाका. अखाछ. *लगनी, [वृत्ति]; जुओ सूरत सूल उपवा. "जिनरा. पीडा (सं.शूल) सुले चंद्रवा. ?, [*किंमत करवामां, *उकेल-मां]; जुओ सुल **सूवः** *आरारा*. पोपट (सं.शुक) सूसणां *विमप्र.* *मीठाशभर्युं वर्तन सूसम गुर्जरा. जेमां सुख छे एवो काल-विभाग (सं.सूषम) [जै.]; ज़ुओ सूमू **सूसमदूसम** गूर्जरा. जेमां पहेलां सूख अने . पछी दुःख छे एवो कालविभाग (सं. सूषमदुःषम) [जै.] **सूसमसूसम** *गुर्जरा*. जेमां सुख ने सुख ज छे एवो कालविभाग [जै.] **सूहणूं** *उषाह.* स्वप्न, सोणुं सूहर कादं(शा). [सुवर], डुक्कर (सं.शूकर) **सूहब** *प्राचीफा*. सुंदर (सं.सुभग) सूहव, सुहवि, सुहवी उक्तिर. ऐतिका. *जिनरा. प्रद्युच्. प्राचीस*. सौभाग्यवती, सधवा स्त्री (सं. सुधवा) सूहाली नलरा. लीसी, सुंवाळी; पूरी जेवो पदार्थ, सुंवाळी (सं. एक खाद्य सुकुमारिका) **सूहांलडी** *शृंगामं*. सुंवाळी, [नाजुक] **सं** गुर्जराः जेवं [सं.समम्]

सूंआलउं उक्तिर. उपवा. सुकुमार, कूमळुं सूंखडी आरारा. उक्तिर. मीठाई; जुओ सूखडां **सूंगो "**विमप्र. [छत्रनो एक प्रकार] दि.सुंग] **सूंचलू** *षडाबा*. संचळ (दे.संचलू) [सं. सौवर्चली सूंठी पडाबा. सूंठ (सं.शुंठिः) सूंड उक्तिर. सूंढ (सं.शुण्डा) सुंढिया प्रेमाका. सञ्ज, तैयार थया; जुओ सुंढवुं सून चित्तसं. शून्य सूंपाडी कादं(शा). संपादित करी, मेळवी (सं.समर्पितक) [सं.संपात् परथी] **सूंप्युं** *प्रेमाका*. सोंप्युं [सं.समर्पित] **सूंब** अंबरा. सूम, कंजूस [अ.शूम]; जुओ शुंब, सुंब, सूब **सूंब** *उक्तिर.* दोरी (सं.शुंब) स्ंहाली उक्तिर. सुंवाळी, एक प्रकारनी पूरी (सं.सुकुमारिका) **सग** **चंद्रवा.* [स्वर्ग] सुज प्राचीफा. माळा (सं.स्रज) सृष्टि विना प्रेमाका. [उत्पत्ति विना], जन्म **सेइंद्री** *नलाख्या.* [अंतःपुरनी] दासी (सं. सैरिन्धी) **सेई** *उक्तिर.* अनाजनुं एक मापियुं (सं. सेतिका); जुओ सेतिका **सेउ** [से**य**] *तेरका. षडादा.* परसेवो (सं. स्वेद)

सेएद्री मदमो. सैरंधी, [अंतःपुरनी दासी,

मूं वीसरा. साथे (सं.सहित)

(अहीं) विराटनगरमां ए रूपे रहेली द्रौपदी]

सेकिया यांछइ उक्तिर. [*शेकवा इच्छे, *सिंचन करवा इच्छे] (सं.सिसिक्षति) सेखल आरारा. षृष्टिप्र. शेषनाग, नागदेवता तेज रूपच. पथारी, शय्या सेजगंडूआ उक्तिर. ओशीकां (सं.शय्या-गण्डकाः)

सेजा चतुचा. नरका. शय्या, पथारी सेजि कादं(शा). *सहेजे, *स्वाभाविक रीते, [पथारीमां]

सेजु मदमो. ढबछब, लक्षण **सेज्या** मदमो. शय्या

सेट पंचवा. शेठ (सं.श्रेष्ठिन्)

सेिंठ अंबरा. उक्तिर. गुर्जरा. षडाबा. सिंहा(म). शेठ (सं.श्रेष्ठि)

सेण नरका. नरप(द). स्नेही, स्वजन

सेत गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. वसंफा. वसंवि. श्वेत, सफेद

सेतिका *पडाबा***. अनाजनुं** एक माप; जुओ सई

सेतुज, सेतुज्जउ, सेतुंजय, सेत्रज गुर्जरा. प्राचीसं. शत्रुंजय

"सेत्र [सेत्त] *गुर्जरा*. श्वेत

सेञ्रज जुओ सेतुज

सेवांण मदमो. —, [लक्षण] [सं.*साभि-ज्ञान]; जुओ सहिनाण, सेंधाण

सेन नरका. सान, आंखनो इशारो [हिं.सैन] सेना मदमो. शाबाश

सेय जुओ सेउ

सेर कामा(त्रि). शहेर सेर मदमो. ?

सेरडे *दशरकं(२). प्रेमाका.* रस्ते, मार्गे; जुओ शेरडो

सेराहडा *कृष्णच. [एक अश्वजाति] [दे. सेराह]

सेर्य चित्तसं. सरवाणी

सेल उक्तिर. प्रद्युचु. प्राचीसं. हम्मीप्र. शल्य, एक प्रकारनो भालो (प्रा.सेल्ल)

सेलडी "विमप्र. [?]

सेलहत, सेलुत, सेलुहत, सेलुहत विक्ररा. एक राज्याधिकारी, शेलत [सं.सेलभृत्, शल्यहस्त]

सेलि (सरसेलि) गुर्जरा. [बाण चलाववानी] शैली, रीत, कळा, कुशळता

सेली चंद्रवा. [सहेली, सखी]

सेली *नरप(द). सहेली, [सरळ]

सेलु *प्राचीफा.* कसबी उपरणो

सेलुत, सेलुहत, सेलुहत जुओ सेलहुत **सेलो** *प्रेमाका*, दोरडाथी ढोरना पाछला

ाला *प्रमाका*: दरिडाथी ढोरना पाछला पगने बांधवा ते

सेतो बाढे *दशस्कं(२)*. दोहवा वखते पगे दोरडी बांधे

सेव(=सव) तेरका. सर्व

सेब अखाका. आरारा. गुर्जरा. चंद्रवा. देवरा. प्रेमाका. लावल. ०षडाबा. सेवा, उपासना, पूजन

सेव चंद्रवा. सेव्य, सेववा योग्य सेवइ आनंस्त: सेवे, [सेवा करे]; [सान्निध्य करे]; [पालन करे]; आरारा. आराधना करे, अभिलाषा राखे; उपवा. आचरे, [सेवा करे, सान्निध्य करें]; ऋषिरा. सेवे, [आश्रय ले]; तेरका. सेवे, [सेवा करें], [आश्रय ले, सान्निध्य करें]; *प्रेमाका. [उपभोग करे, लगाडे]; लावल. सेवे, सेवा करे, [आश्रय ले]; वीसरा. सेवा करे; वसे; षडावा. सेवे, आचरे

सेवडो वेताप. जैन यति (सं.श्वेतपट)
सेवना आनंस्त. सेवा, [उपासना]
सेवंत, सेवंती, सेवंत्री आरारा(व). उक्तिर.
एक फूलझाड, [सफेद गुलाब] (सं.शत-पत्रिका); जुओ सयवति
सेवंत्रा *चंद्रवा. नरका. प्रेमाका. *मदमो.
एक फूलवेलनां फूल, [सफेद गुलाब]
सेवंत्री जुओ सेवंत

सेस उक्तिर. देवने चडाव्या पछीनो प्रसाद (सं.शेषा)

सेस *गुर्जरा.* शेषनाग

सेसफूल चतुचा. शीशफूल, एक आभूषण सेह प्रेमाका. "मदद, "सहाय, [शिक्षा, उपदेश] [प्रा.]

सेहज *चतुचा.* ?, [*श्रेष्ठता, *उत्तमता]; जुओ सहिज

सेहर तेरका. शिखर

सेहर आरारा. मुगट (सं.शेखर); तेरका. शेखर, अवतंस, [मुगट, शिरमोर]; प्राचीफा. माथा उपरनो पुष्पनो अलंकार, शेखर

सेहरउ उक्तिर. जिनरा. मुकुट (सं.शेखर); देवरा. "जरीनो पटको, [फूलनी

कलगी]; जुओ शेहरु **सेहला** **उषाह.* [सलाह, शिखामण] [उ. सिलाह सेहे मदमो. सो; जुओ शेहे सेहेज चित्तसं. सहज, सहजपणे, मूलभूत से**हेस** देवरा. हजार (सं.सहस्र) **सेहेसा** *मदमो*. सहसा. विगरविचार्ये **सें, सेंडे** *दशस्कं(९). प्रेमाका*. एक सो सेंगीया कस्तुवा. गुटिका ? [शिंग] **सेंथो** *प्रेमाका.* स्त्रीओनुं सेंथामां पहेरवानुं एक घरेणुं **सेंघाण** *वेताप.* चिह्न [सं.*साभिज्ञान]; जुओ सहिनाण, सेधांण **सेवास** कस्तुवा. सहवास सेंस जुओ सतरसेंस सेंहे जुओ सें **सैघपणउं** *नलरा*. शीघ्रपणुं, उतावळ **सैयल** अखाका. शैल, पर्वत; जुओ सहीअल **सैरंघ्री** प्रेमाका. [अंतःपूरनी] दासी **सैवसि** जिनसः पोताने वश सो गूर्जरा. तेरका. मदमो. वीसरा. ते (सं. सः, सो) सोइ अभिक. ऋषिरा. गुर्जरा. नेमिछं. *लावल. वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* ते ज (सं. सः अपि) **सोइ** *आरारा*. सुखसगवड **सोइ ***शंगामं. [ते]

सोई उक्तिर. [*सांभळेली वात, *किंवदंती]

(सं.श्रुतिर्वाता)

सोई कामा(त्रि). दशस्कं(२). प्रेमाका. सई, दरजी [सं.सौचिकः] **सोईकार** दशस्कं(२). प्रेमाका. सई **सोड** *गुर्जरा*. ते (सं.सः खलू) सोउं आरारा. सूउं [सं.स्वपू] **सोकलडी** नरप(द). शोक्य सोकं नरप. शोक्यो (सं.सपत्नी) **सोकि** *आरारा.* सावकी, [ओरमान] (सं. सपत्नी) सोखण चतुचा. शोक्यण, सपत्नी (गाळ रूपे); जुओ सुखण सोखी आरारा. *शोकवाळो, [*सुखी] सोखे जुओ हरख-सोखे **सोग** *नेमिछं*. शोक. [पीडा] **सोगत** *ऐतिका.* सुगत, बौद्ध **सोच** *चित्तसं*. विचार [सं.शोच] **सोजां** प्रेमाका. उत्तम [सं.शोध्य] सोझाबीउ आरारा. शोधाव्यो. खबर कढावी (सं.शुध्य-) सोझाल्या विमप्र. *रंग्या, [*चीतर्या] सोटा प्रेमाका. [गाडाना बेठकभागना लाकडाना दांडा सोडनो घा (सोडनो घा थयो सहोदर) *प्रेमाका. एक कुखमां जन्मेलाने – भाईने हणनार भाई ज थयो] **सोडपालखी** *पंचवा.* *क्रीडा माटेनी शय्या ["सोडमां भेटवुं – वळगवुं ते] [गु.सोड+ सं.पर्यख्री सोडाडो (सोढाडो) नंदबः सोंढाडो, [सञ्ज करी लई जाव]; जुओ सुंढवूं

सोडि *ऐतिरा*. छोडी **सोडो** *मदमो*. साडलो ? सोढाडो जुओ सोडाडो **सोढो** *मोसाच*. तैयार थर्डने आवो सोढी *नरप(द). [तैयार थई] सोण गांठ बांधी "नरका-२. [शकुन चाल्युं न जाय ते माटे वस्त्रने छेडे गांठ बांधी सोष कामा(त्रि). शुद्धि, खबर सोधइ विक्रच. शोधे, *खोळे, [जुएतपासे]: *उपवा.* शुद्ध करे; [जुएतपासे] **सोधण** *आरारा*. शोधवं ते सोधर्मी सिंहा(म). सौधर्म देवलोकनी सोधावीउ आराराः शोधाव्यं, जोवडाव्यं सोनइउ नलरा. विमप्र. वीसरा. सोनैयो. सोनामहोर (सं.सौवर्णिक) सोनडी जाई आरारा(व). पीळा फुलवाळी जाई (सं.सौवर्णजाति) सोनमखी अखाछ. सुवर्णमाक्षिक (एक धात), मिटे भागे गंधकमिश्रित लोखंडी सोना-पुरिसु, सोना-पुरुसु सिंहा(म). सुवर्ण-पुरुष; जुओ पुरिसु हेम सोना-पोरिस प्राचीसं. सुवर्ण-पुरुष सोनार अखाका. उक्तिर. सोनी (सं.सूवर्ण-कार) **सोनीया** *देवरा*. सोनैया, [सोनामहोर] सोनैयो प्रेमाका. शीलक. सोनामहोर. सोनानो सिक्को [सं.सौवर्णिक] **सोपा** *देवरा*. सोंप्या (सं.समप्) **तोमाग** *आरारा.* शोभा, कीर्ति (रा.) (सं.सौभाग्य): *लावल*. भाग्यशाळी-

[पणुं]; उपवा. सुंदरता (सं.सीभाग्य) सोभाग्य चित्तसं. सौभाग्य, शोभा सोभागी प्रेमाका. *सौभाग्यवती, [शोभती, सुंदर]

सोम *आरारा*. सौम्य

सोम (सोमसिद्धान्त) *प्रबोप्र. [एक तांत्रिक दर्शन के ग्रंथ]

सोय अखाका. आरारा. कादं(शा). नरका. प्रेमाका. ते [ज] (सं.सोऽपि)

सोयर शृंगामं. सहोदर, भाई

सोर नरका. सोळ, शरीर उपरनो आंको सोर विमप्र. "पडकार, [अवाज] [फा.शोर]; ऋषिरा. कादं(शा). शोर, अवाज

सोर *नरका. [शूर]

सोरंगी मदमो. "सिंहा(शा). ए नामनी वनस्पतिनां मूळ जेवां गूंछळांवाळा [वाळ]

सोरी नेमिछं. सोरीपुर (गाम)

सोवन (सोवन शालि) नेमिछं. "सारा वर्णना - रंगना, "ऊजळा, [चोखानी एक जात] सोळहउ "वीसरा. [सोळवलुं, शुद्ध (सोनुं)] (सं.षोडशक)

सोढां प्रेमाका. एक प्रकारनां अबोटियां सोवण्ण तेरका. सुवर्ण (सं.सीवर्ण)

सोवन, सोविन जिनरा. सोनुं; *उषाह. ,नेमिछं. सोनामहोर; आरारा. गुर्जरा. नेमिछं. रूपच. लावल. वसंफा(ल). वसंवि. वसंवि(ब्रा). वीसरा. सोनानुं; आरारा. नेमिछं. *वसंफा(ल). *वसंवि. वसंवि(ब्रा). सोनेरी (सं.सौवर्ण) सोवनवान वसंवि(ब्रा). सोनेरी रंग (सं. सौवर्णवर्ण)

सोवज्ञ,सोजन तेरका. लावल. वसंफा. सुवर्ण, सुवर्णनुं (सं.सौवर्ण)

सोवज्ञमइ तेरका. सुवर्णमयी (सं.सोवर्ण-मयी)

सोवनीकांबज गुर्जरा. सोनानुं कमळ (सं. सौवर्णिकांबुज)

सोवर्णागर अखाछ. सोनीने खप लागतो एक जाणीतो पथ्यर, [सोनागेरुनो पथ्यर]

सोवा उक्तिर. सुवा (सं.शतपुष्पा)

सोवासण *प्रेमाका.* सौभाग्यवती स्त्री [सं. सुवासिनी]

सोविन ऋषिरा. कर्पूमं. सोनानुं (सं.सौवर्ण); जुओ सोवन

सोव्रण अखाका. प्रेमाका. सोनुं; नरका. सोनानी; कामा(शा). सुंदर रंगनुं, [सोनेरी]; प्रेमाका. सोनेरी

सोबन *वसंवि. [सोनेरी]; वसंवि(ब्रा). सोनुं (सं.सीवर्ण); वसंफा. जुओ सोवन्न

सोबनवान वसंफा. वसंवि(ब्रा). सोनेरी रंग (सं.सौवर्णवर्ण)

सोस *ऐतिका.* अफसोस, खेद; ०*जिनरा.* "चिंता, [अफसोस, खेद]

सोस**इ** *गुर्जरा*. सूकवे, कृश करे (सं. शोषयति)

सोसियकाय षडावा. सोसी — सूकवी नाखेली कायावाळा (सं.शोषित+काय) सोह आरारा. जिनरा. नेमिछं. लावल. शोभा

सोहइ ऋषिरा. गुर्जरा. तेरका. लावल. वसंफा. वसंवि. शोभे [सं.शोभते] सोहकरी ऋषिरा. शोभा करनारी सोहग, सोहम्म आरारा. ऐतिरा. गुर्जरा. *तेरका.* सौभाग्य, भाग्यशाळीपण्]. [मांगलिकता]; जिनराः सौभाग्य[स्तप] सोहगी आरारा. टंकणखार सोहग्ग जुओ सोहग सोहजी अभिक. सोजी, *निरुपद्रवी. [उत्तम]; जुओ सोजां सोहणड प्रबोप्र. स्वप्नमां सोहम्माइव इंद ऐतिका. देवलोक सौधर्मना अधिपति इन्द्र सोहलंड जुओ छोहलंड सोहवातुं प्रेमाका. सुख आपतुं, [गमतुं] सोहंग अखाका. सोहम्, (ते - परमात्मा हुं छूं तेवो भाव) **सोहा** कृष्णच. शोभा सोहाकर ऋषिरा. शोभानी खाण (सं.शोभा-कर) सोहामी गुर्जरा. शोभामयी, सुंदर सोहाय नरका. सुख आपे, गमे; [शोभे]; *प्रेमाका.* सुख आपे; शोभे सोहावइ आरारा. "प्रेमाका. सुख आपे, [गमे] (सं.सुखापय्) सोहावड लायल. शोभावे सोहावु आरारा. सोहामणुं, [मनगमतुं] (सं. शोभा) [सं.सुखापय् परथी] सोहासपः, सोहासणि नरका. विमप्र.

सोहिलउं आनंस्त. आरारा. उक्तिर. उपबा. षष्टिप्र. सहेलुं, सरळ, सुगम [सं.सुख परथी]; गुर्जरा. सुंदर, [सुखभर्यु]; सहेल् सोहेलां प्रेमाका. सुखदायक, [सुखभरी स्थितिओ सोडोणुं अखाका. प्रबोप्र. स्वप्न सोहोतो प्रेमाका. *शोभीतो, *सुंदर, [सोंतो समाप्त थयेलो]; जुओ सोंत-सोंडबुं दशस्कं(१). सज थईने जवुं; जुओ संदवुं सोंढियुं प्रेमाका. सोंढ्युं, तैयार थयुं, [तैयार थई चाल्यूं] **सोंत-** *हरिख्या*. पूरुं थवुं, समाप्त थवुं; जुओ सोहोतो, संत् **सोंतं** *प्रेमाका*. साथे, संहित सोंधो दशस्कं(२). नरका. प्रेमाका. सुगंधी पदार्थ **सौक्ष** *आरारा.* सुख (सं.सौख्य) **सौगत "**प्रबोप्र. बौद्ध] (सं.) **सौध** *ऐतिका. कादं(शा)*. महेल, प्रासाद : सिं,ो सौघरम, सौधर्म आरारा. सौधर्म नामनो देवलोक सौरसेन नलरा. श्रूरसेन प्रदेश ज्यां नलराजा-ए विजय कर्यो हतो, मथुरानी आसपास-नो प्रदेश (सं.) **सौवर्ण** अखेगी. सुवर्ण [सं.] **सौबीर** नलरा. एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.)

[सुवासिनी], सौभाग्यवती

सौवीर अभिऊ. "कलाई, [सुरमो, एक खनिजद्रव्य]

सौहू, सौहु चंद्रवा. सहु

स्कल- नलरा. खसी पडवुं, पडी जवुं (सं. स्खल्)

स्कंद आनंस्त. स्कंध, [समुदाय, वर्ग] स्कंघावार कादं(शा). नलाख्या. छावणी (सं.)

स्खलित थई *ग्रेमाका. [कामावेगजन्य स्खलन थयुं]

स्तकी *प्राचीका.* थकी, [-थी] (प्रा.थिकअ परथी)

स्तिवेवा उक्तिर. स्तववा, स्तुति करवा स्तंभ-पूतळी न्याय अखाका. थांभलो एक होय पण पूतळी अनेक, एवी रीते अनेकतामां एकता

स्तुप ऐतिका. स्तूप, थूभ, [स्मरणस्तंभ] स्त्रीण गुर्जरा. स्त्रीण, बायलो

स्त्रीमि कादं(शा). *स्त्रीओथी भरेतुं, [स्त्री-ओ वडे रचायुं होय एवुं] (सं.स्त्रीमय)

स्त्रीरजि विक्रच. स्त्रीराज्यमां

स्त्रीराज्य नलरा. एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो (सं.)

स्थकी दशस्कं(१). -थी, [वडे]

स्थविर *आरारा*. वृद्ध (सं.)

स्थित्य अखाका. स्थिति

स्थिर चित्तसं. स्थावर, [अगतिशील पदार्थ] स्थूलंपणुं, चित्तसं. मोटापणुं, प्रौढत्व

स्नात *कादं(ध्रु).* स्नान

स्नेह चित्तसं तेल [सं.]

स्फटिक *अखाका. [स्फटिकमणि]; *प्रेमप*. काच [सं.]

स्मर अखाका. कामदेव [सं.]

स्मरणी *मोसाच*. माळा [सं.]

स्मरिवा उक्तिरः स्मरवा, स्मरण करवा

स्मृति प्रबोप्र. संमति, [समर्थन]

स्यउं आनंस्त. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा(ल). शुं (सं.कीदृशकम्); वसंवि(ब्रा). शा माटे

स्यउं आरारा. गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा). साथे (सं.समम्); वीसरा. साथे, वडे, [प्रत्ये]; जुओ श्यं

स्पंघ कृष्णच. सिंह

स्याथो चित्तसं. शामांथी

स्याद्वाद *आनंस्त*. अनेकांतवाद, वस्तुनां अनेकविध पासां – धर्मीना स्वीकारनो वाद

स्यामी नलरा. प्रभु, स्वामी

स्याल उक्तिर. पंचवा. शियाळ (सं.शृगाल) स्युं *ऐतिका. [शुं, केवुं] [सं.कीदृशकम्] स्लोक मदमो. शलोको, गौरवगाथा (सं.

श्लोक)

स्वअंबर मदमो. स्वयंवर

स्वदइ वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्वाद आदे, रुचे (सं.स्वदति)

स्वयंवर कादं(धु). गांधर्वविवाह, [स्वजनो-नी संमति के सहायनी अपेक्षा वगर केवळ वरकन्यानी परस्परनी प्रीतिथी धतां लम्न] [सं.]

स्वरमंडल नेमिछं. एक प्रकारनी वीणा [सं.]

स्वसमय आनंस्त. पोतानो सिद्धांत [सं.] **स्वस्तानि** *उषाह*. पोताना स्थानमां **स्वा** *पंचवा.* सौ (सं.सर्व) स्वादिक मदमो, स्फाटिकमणि स्वाटीकमणि मदमो. स्काटिकमणि स्वातबुंव अखाछ. स्वातिबिंद, स्विति नक्षत्रमां पडतुं वरसादनुं टीपूं। स्वाति-बिंदु प्रेमाका. स्वाति नक्षत्रमां पडता जलबिंदुथी जन्मतुं मोती **खाध्याउ** *षडाबा*. स्वाध्याय, धर्मचितन स्वामि लावल. कार्तिकस्वामी, कार्तिकेय स्वांम, स्वांम्य मदमो, स्वामी स्विइ कादं(शा). पोतानी मेळे (सं.स्वयं) **खे** अखाका. स्वयं. पोते स्वेपव अखाका. स्वयंपद, आत्मपद, ब्रह्मपद **खेद-लव** कादं(शा). परसेवानां टीपां (सं.) **स्हावो** *नरका*. पकडवो [सं.साध] स्होतो नरका. सोतो, साथे [सं.सहित]

कादं(ध्र). नक्षी [ज] [सं.हि]
उषाह. प्रबोप्र. प्राचीका. संबंधार्थ प्रत्यय,
[-नुं] (सं.स्य)
गुर्जरा. नेमिछं. वीसरा. छे (सं.भवति)
नलाख्या. हैयुं, हृदय
इइ., हुईइ आरारा. कादं(शा). गुर्जरा. हृदयमां

हृदयना हृद्दम्यण (हुद्द हृद्द मयण) ऐतिका. मदन [कामदेय] हणाय छे [सं.हतः मदनः] हृद्द्यो नरका. होईश, [हशे] हृद्द्द जुओ हृद्द **हउ** वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). हुं (सं.अहं) **हउओ, हुओ, हूओ** कादं(शा). नलाख्या. थयो (सं.भूतकः)

हउणहार *आरास. उपबा.* होनार हए, हे कामा(त्रि). हय, घोडो हकलावतां नरका. धमकावतां

हकारड उक्तिर. उषाह. नरका. प्राचीफा. षडाबा. बोलावे, निमंत्रे (सं./दे.हक्कार); "ललिरा. [कहे,जणावे]; अखाका. प्रद्युचु. प्रेमाका. हाकल करी उश्केरे, पडकारे, ललकारे

हकीगत्य *चंद्रवा*. हकीकत

हकोम चतुचा. हुकम

हिंक "विमप्र. [हाकथी, पडकारथी] दि.; रा.]

हगइ उक्तिर. मळत्याग करे (सं.हदते)

हचरके जाय जुओ हीचरके

हचेर *आरारा(व).* एक वनस्पति, कई ते अस्पष्ट

हजीरा *हम्मीप्र*. मिनारावाळो रोजो [अ. हझीरः]

डजूर अखाका. आरारा. प्रत्यक्ष, सामे हाजर (फा.)

हटकड्ड *जिनरा. प्रेमाका*. धमकावे, भय उपजावे; जुओ हटकी

हटकण जिनरा. धमकाववुं ते

हटकी *जिनरा. [-ने छोडीने, सिवाय, विना]; *ऋषिरा. [अळगी रही]; जुओ हटकड्

हटी विमप्र. हाट, दुकानो, [बजार, पीठ]

[सं./दें.हट्टी]; जुओ घी हटी हरे प्रेमाका. हठे, हठथी **हर्ट** विक्ररा. हाट दि.] हरू-जीत शंगामं. दुकाननी हार (दे.हर्ट्र+ सं.आवति) **हट्टश्रेणि** विक्ररा. हाटनी हार, बजार हठाई आनंस्त. हठपूर्वक ह**ि**उ *गुर्जरा. विराप.* हठे चड्यो, [अडगपणे तत्पर थयो] (सं.हठ परथी) **हिंद्यो** *प्रेमाका*, हठीलो, जीदवाळो **हठी** *आरारा*. हठपूर्वक, पराणे हरुष चित्तसं. हठे, बळपूर्वक **हडकोलाववं** नरप(द). तिरस्कार करवी, हडबडाववु **हडक्ची** दशस्कं(२). हडपची ऋषिरा. हडबडड अखाका. गभराय. कमकमी ऊठे; जुओ हरबर हडबडावी प्रेमाका. जुओ गभरावी: हरबडाववू **हडबाइ** *उषाह*. पकडाय, हडफाय हडहड उपबा. मोटेथी हसवानो ध्वनि (दे.) हडहडड उक्तिर. जोरथी हसे दि.] **हडि** विक्ररा. षडाबा. हेड, पगे बांधवामां आवती लाकडानी बेडी (सं.) **हडी** *प्रेमाका* टोट **हडी** *चित्तसं*. अडी, मुश्केली हडीयाटी प्रेमाका. हडी [दईने]. दोट [दईने] हडोले मदमो. रूस्तस. हरोळे, सिनाना अग्र भागे] [त्.हरावल]

हणवड् आनंस्तः हणवे, हणवाथी, हिणवा-मां सिंहन् रे हणिषुं उक्तिर. हणवुं, हत्या करवी (सं.हन्) **हत**उ *गुर्जरा. "विराप.* बिचारो (सं.हतकः) **इत-उछाइ** *प्रेमाका***, जेनो उत्साह नाश पा**न्यो छे एवी **-हता** विमप्र. -थी , -िमांथी, द्वारा **-हतू** विमप्र. -थी (अनुग) इत्य आरारा. ऋषिरा. गुर्जरा. जिनरा. *नेमिछं. शंगामं.* हाथ (सं.हस्त) हत्य तेरका. हाथी (सं.हस्ती) **हत्यियार** *प्राचीसं*. हथियार दि.] **हथनालि** *हम्पीप्र*, हस्तनालि, हाथमां राखीने फोडवानी नानकडी तोप हथलेवउ, हथळेवउ ऐतिका. प्रद्युच्. वीसरा. पाणिग्रहण संस्कार. [हथेवाळो] (सं.हस्त परथी) हथवासी प्रेमाका. *हाथमां वसेलूं, आवेलूं, [*हाथमां राखीने], [*हथवासाथी -(ढालना) हाथाथी] **हयसाल** उक्तिर, हस्तिशाला **हवि** *गुर्जरा*. हाथथी (सं.हस्त); जुओ सद-हथि **इविषाउर** उक्तिर. गुर्जरा. इस्तिनापुर हथूंडू थडाबा. हथोडो (सं.हस्त परथी) **हद चूकी** *चित्तसं.* सीमा -- भेदरेखा लुप्त धई **हय** *प्रेमाका.* हद (प्रासार्थे 'हद्य') **हनवटी** *कादं(शा).* दाढीनी हडपची (सं.हन्-

हणणहार *उपबा*. हणनार

पड़िका) .

हरण करनारा एक देव, [इन्द्रना पदाति-

सैन्यना एक अधिपति] (सं.हरिनैग-

मेषि) जि.]

हफ्तह *आरारा*. सप्ताहमां (फा.) हबक प्रेमाका, बीक, फाळ हबकी गुर्जरा. हबक, फाळ (अ.हयबत्?) हबुके नरका. फाळ अनुभवे, [धासको खाय]; जुओ अबूके **हम** *लावल*, अमने **हमची** *नरका. लावल*. क्रीडा के नृत्य साथे गावानो काव्यप्रकार हमची नरका. अमारी (म.) हमाल जिनरा. मजदूर [अ.हम्माल] हमेलो प्रेमाका. पट्टो, गिळामां पहेरवानुं एक आभूषण] [अ.हमाईल] हय आरारा. ऋषिरा. प्रेमाका. देवरा. घोडा (सं.) हयगयरहवर चारफां. अश्व, हाथी अने सुंदर रथो (सं.हयगजरथवर) **हयडं** देवरा. हैड्रं (सं.हृदयकम्) हयवर लावल. श्रेष्ठ अश्व [सं.] हवास शुंगामं. हताशा **हयास्** *ऐतिका.* हताश हवासुं *ऐतिका. [हृदयथी] -हर *वसंवि*. घर (सं.गृह)

हरइ वाग्भवा. चतुर्थी अने षष्ठीनो अनुग,

हरख-सोखे "अखाका. [हर्ष अने सुखथी]

हरडुआं *आरारा(व).* हरडां, मोटी हरडे ?

हरणकमेषि, हरणगमेषि देवरा. गर्भादिनुं

हरण तेरका. नरका. हरनार (सं.)

[ने]; जुओ रइं, रहइं, हृइं

हरणी *नरका***. मृगशीर्घ नक्षत्र हरणी** *दशस्कं(२)*. हरण जेवा वाननी हरदे भदमो. हृदय हरनिश दशस्कं(२). अहर्निश, रातदहाडो **हरबडाववुं** *दशस्क(१)*. गभराववुं; जुओ हडबडावी **हरवर** *सिंहा(शा).* "गभराट, [उतावळ]; जुओ हडबडइ **हरम** *चंद्रवा*. हर्म्य. महेल हरवइ वाग्भवा. हरवानी क्रियामां, हिरवा-थी] [सं.ह] **हरस** तेरका. हर्ष **हरस-बस** *तेरका*. हर्षवश **हरसीय** वसंवि(ब्रा). हर्ष पामीने **हर-हार** श्रंगामं. महादेवनो हार, नाग [सं.] हराण ऐतिरा. कर्पूमं. विक्ररा. विमप्र. आश्चर्यचिकत, [स्तब्ध] [अ.हैरान] हरालउ "गुर्जरा. [प्रबळ आकांक्षावाळी] हरावतं "गुर्जरा. विराप. हरी लावतो **हरि** **कादं(ध्र). कादं(शा).* घोडो [सं.]; लावल. सिंह [सं.]; ऐतिका. सूर्य [सं.]; नेमिछं. वांदरो [सं.] हरि-आननी प्रेमाका. चंद्र जेवा मुखवाळी [सं.] **इरिख** नलाख्या. हर्ष हरिखा हिरिखी लावल. हर्षित थई, आनंदित थर्ड

[सं.हर्ष+सौख्य]

हरखीयला *प्राचीफा*. हरख्या

हलकारो *प्रेमाका*. खेपियो. संदेशवाहक

हरिपर्वणी प्रेमाका. बारसनी तिथि [सं.] **हरियाल** *उक्तिर. षडाबा.* हरताल, एक उपधातु (सं.हरिताल); जुओ हरीयाल **हरिलंकी** ऋषिरा. सिंहना जेवी पातळी कमरवाळी; जुओ लंक-केसरी **हरिलोचनी** चतुचा. कमललोचनी [सं.] हरिवदनी मोसाच. चन्द्रमुखी [सं.] **हरिवासर** कृष्णवा. एकादशी [सं.] **हरिस** ऐतिका. तेरका. हर्ष **हरिसीय** वसंफा. हरखीने (सं.हर्ष्) **हरी** उक्तिर. लीलुं घास, भाजी (सं. हरितकम्) हरीअडा *विमप्र. [एक अश्वजाति -लीलाश पडता रंगनी]; जुओ हरीयडू हरीआली विमप्र, अनेक अर्थवाळो पद्य-प्रकार हरीयड प्राचीफा. घोडानी एक जात -[लीलाश पडता रंगनी]; जुओ हरीअडा हरीयाल वसंवि. वसंवि(ब्रा). हरताल, एक उपधात (सं.हरिताल); जुओ हरियाल हरी राखड़ आरारा. लई जईने राखे **हरीला** नरका. हरी लीधेला [म.] [सं.ह] **हरीवदनी** चतुचा. चन्द्रवदनी हरीसूत चतुचा. कामदेव [सं.हरिस्त] हरीहरी चित्तसं. लीलीछम [सं.हरित्] हर्षइ आनंस्त. उक्तिर. खुश धाय (सं.हर्ष्) **हल** *ार्यफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा).* अली. ाखीने संबोधन (सं.हला) ं**लकार "***नरप(द)***. [*हलक, *हळवापणुं,** *चचळतारे

हलकार्या *प्रेमाका*. हंकार्या, प्रस्थान कराव्यं हलके प्रेमाका. ऊमटे, [आनंदथी डोले] **हलके-हलके** *दशस्कं(१)*. हळवेहळवे, [हलक – लचकपूर्वक] **इलद** आरारा. आरारा(व). उक्तिर. हळदर (सं.हरिद्रा) **हलदुआं वडां** *उक्तिर.* हळदरयुक्त वडां (सं.हरिद्राणि वटकानि) हलफतुं हरिख्या. हांफतुं, हांफळुंफांफळुं **इलभल** *प्रेमाका*. इलचल, [बुमाबूम, ताकीदी **इलयर हिलुयर य**डावा. हळवो (सं. लघुक) हलसे ईष उक्तिर. हळनो दांडो (सं.हलस्य ईषा) **हलबर्ड** *ग्रेमाका*. मीठाई वेचनार, कंदोई **हलवाई** *आरारा*. हलकापणुं, अगौरव, [*कंदोई]; जुओ हल्रेआइ ***हल साइ, हल साहि ***तेरका. प्राचीसं. हले सखि, [अली सखी] **हलहर** *प्राचीसं.* हलधर, [बलराम] हलहल अभिऊ. कर्पूमं. उतावळ दि.] **हला** नरप(द). पुरुषवाचक संबोधन, [अल्या] **इलाहल** *चित्तसं*. हळाहळ विष [सं.] **हलांण** *नरप(द)*. "देदार, [चालचलगत] हलांहल मदमो. उतावळ

हलुअउ *उक्तिर.* हळवुं (सं.लघुक)

हलुआपर्णु *नलाख्या*. हळवापणुं, लघुता

(सं.लघुक+त्वन)

हलुइ नलरा. हळवे, धीरे (सं.लधुकेन)

हतुइ नलरा. हळवी, हलकी, अगौरव पामेली] (सं.लघुका)

हलुए चतुचा. हळवे [सं.लघुकेन]

ह्यूए-ह्यूए प्रेमाका. हळवेहळवे, धीमेधीमे

हतुओ मदमो. हळवो (सं.लघुक+क)

हलुयंड कस्तुवा. हळवो, [धीमो]; जुओ हलयंड

हतुअकर्मं ४ एछिप्र. जेनां अल्प कर्म अविशष्ट रह्यां होय एवो, शीघ्र मुक्ति-गामी (सं.लधु+कर्मी)

हलूआइ उपवा. हलकापणुं, [अगौरव] (सं. तघु परथी); जुओ हतवाई

हलूआपणउं नलरा. हळवापणुं, हलकाई, [लघुता, अगौरव] (सं.लघुक+त्वन)

हत्त्र्इ कादं(शा). प्रबोप्र. शृंगामं. हळवे, [धीमे] (सं.लघुकेन); उपवा. हळवा-पणाथी, ओछा होवापणाथी

हलूउ *सिंहा(म).* हळवुं, हलकुं, [भार विना-नुं] (सं.लघुक)

हलूकर्मा उपवा. हळवा [— ओछा] कर्मी-वाळुं, [शीघ्र मुक्तिगामी]

हलूपण *षष्टिप्र.* हळवापणुं, [अगौरव] (सं. लघुत्वन)

हलूया विमप्र. हळवा

हलूर अभिक. हालरुं, [हार], टोळुं

हलइ गुर्जरा. प्राचीसं. लावल. हले, हाले, [डगे, सळवळे, धूजे] [दे.]

हत्ककलोल *प्राचीसं*. प्रक्षोभ, हालकडोलक

हक्काव- प्राचीसं. हलाववुं **हक्की** लावल. हे सखी

हलुफल *प्राचीसं.* हाफळा, [उतावळा]

इव, इवं, इवि *उषाह. गुर्जरा. प्राचीफा.* वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा). षडावा. हवे (सं.अथ+वा) [अप.अहवइ]

इवइ उक्तिर. ऋषिरा. गुर्जरा. थाय, छे (सं.भवति)

हवडा, हवडां आरारा. उक्तिर. कादं(शा). नलरा. नलाख्या. प्रद्युचु. प्रेमाका. मदमो. षडाबा. हमणां (सं.अधुना, प्रा.हउणा)

हवर्णा *आनंस्त. पंचवा.* हमणां (सं.अधुना)

हवं उक्तिर. हवे (आरंभवाचक) (सं.अथ); जुओ हव

इवाल प्रेमाका. हालत [अ.अहवाल]

हवालइ *ऐतिका.* हवाले, सुपरत

हवासी *जिनरा. [*टिप्पण, *(गुण)चर्चा]

हवां *दशस्कं (१).* हमणां; *प्रेमाका*. हवे

. हवि *दशस्कं(२)*. अग्नि [सं.हविष्]

हवि, हविड अभिक्त. कादं(शा). नलाख्या. हवे (सं.अथवा); जुओ हव, हिव

इतुं अखाका. ऋषिरा. चित्तसं. नरका. प्रेमाका. थर्यु (सं.भू -- भवु परधी)

हशास्य *मदमो.* हसवुं, हांसी, जुओ हसारथ

इसइ गुर्जरा. वसंफा. बसंवि. हसे (सं. हसवि); इसी काढे, मश्करी करे; जुओ हंस-

इसमस प्राचीफा. *हालवुं ते, [धसवुं ते, उत्साहथी आगळ पडवुं ते]; *प्रद्युचु. [जुस्सो, जोश] **हसमसता** *गुर्जरा.* धसमसता हसारच अंगवि. *ऋषिरा. प्रेमाका. नरका. शृंगामं. हास्यास्पद स्थिति, हांसी, मश्करी; जुओ हशारथ, हीसारथ **हसारिय** विमप्र. हास्यजनक स्थिति, उपहास हिंसेड, हसीड लावल. हास्य के मश्करीने पात्र कर्यो [सं.हसित] हसिय तेरका. हसी रहेलुं (सं.हसित) **हसिवा** *उक्तिर*, हसवा हसीउ जुओ हसिउ हसीय गुदारे जिनरा. हसीने टाळी दे, जितुं करे, माफ करे] [सं.हस्+फा.गुजर] **हसु, इसुं** ऋषिरा. नरका. मोसाच. इसवुं, हांसी, मश्करी हसू, हसूं आरारा, मश्करी; कादं(शा). नंदबः हास्यः मलकाट हसे पंचवा. थशे (सं.भविष्यति) हस्तभूत *आनंस्त. [हस्तरूप, हस्त समा] **हस्तमुखी** *० नलरा*. हसता मुखवाळी (सं. हसितमुखा) **हस्तमेलापक** *प्रेमाका*. हस्तमेलाप, लग्न [करावनार] **हस्तामलकर्त्य** चित्तसं. हस्तामलकवत्, स्पष्ट **हंकार** *दशस्कं(१)*. अहंकार **हंकारी** *दशस्कं(१)*. अहंकारी हंबोडा सिंहा(शा). ?, ['हंबो' ए उचार

हरिवि. जीव, प्राण [सं.] हंस- वीसरा. इसवुं, मजाक करवी (सं. हस्); जुओ हसइ हंसक हरिवि. पगनुं आभूषणविशेष 🌁 **हंसगमण** *गुर्जरा*. हंसना जेवी चालवाळी (सं.हंसगमना) **हंसगमणि** *वीसरा.* हंसना जेवी चालवाळी (सं.हंसगानिनी) हंसगामिणि वसंफा(ल). वसंवि. हंस जेवी गतिवाळी (सं.इंसगामिनी) **हंस-तित** कादं(शा). हंसोनी पंक्ति (सं.) **इंसलागमणी** लावल, हंसना जेवी चालवाळी **हंसलो** कामा(त्रि). घोडो हा *तेरका.* -, [अरेरे] (सं.) हाउ प्राचीसं. हा [संमतिसूचक] (सं.आमम्) हाकड उक्तिर. "वसंफा. "वसंफा(ल). "वसंवि. "वसंवि(ब्रा). निवारे, दूर करे; *गूर्जरा. मदमो. विक्ररा.* हाक मारे, पोकारे, आह्वान दे; षडाबा. काढी मूके, [*पडकारे] (दे.); *प्रेमाका.* धमकावे **हाकलणुं** उषाह. हांकीने, उश्केरीने लाववा-मां आवेलूं टोळूं, कटक, [हाकला-पडकारा करतो मोरचो के एवं टोक्री **हाकलशो** *प्रेमाका*, धमकावशो हाकी **ऊठ्यो** *प्रेमाका*. हाक – मोटो अवाज करीने ऊठ्यो, सामनो करवा तैयार थयो, [पडकार कर्यो] हाकेटबुं, हांकेटबुं दशस्कं(१). प्रेमाका.

साथेनो ताली

हंश ज हर्स *कामा(शा).* जीव – प्राण लउं

हंस कामा(त्रि). कृष्णच. प्रेनाका. मदमो.

हाक मारी धमकाववुं

हाकोट्यो *प्रेमाका.* हाक भारीने धमकाव्यो

हाटक गुर्जरा. दुकान [सं.हट्ट] **हाटक** *आनंस्त. गुर्जरा-टि. प्रेमाका*. सुवर्ण [सं.]

हाटक-रूप *प्रेमाका.* *सोनेरी रूप, [सुवर्ण-मय रूप], [सोनानां अंग] [सं.]

हाउ उपवा. हाडकां; नलाख्या. शरीर (दे. हड्ड); *दशस्कं(१). *प्रेमाका*. [घणुं ज]

हाड-छेड नरका. तिरस्कार

हाड जवुं, हाडे जवुं दशस्कं(१). प्रेमाका. छेल्ली हद सुधी जवुं

हाडफूटि उक्तिर. हाडकामां थती पीडा, दर्द (दे.हडु+सं.स्फोटि) [रा.]

हाडा खाय जुओ खाय हाडा

हाडिया *प्रेमाका.* कागडा

हाडु *नरप(द)*. ?, [*हाडो, *शूर]

हाडु षडाबा. हाडकुं (दे.हडु)

हाडे ज्वुं जुओ हाड जवुं

हाण अखेगी. हानि, लय, [नाश]

हाणि *उपबा. नलरा. वीसरा. शीलक. शुंगामं.* हानि, नुकसान

हाय करडे अखाका. उतावळ करे

हाथकसीदो कामा(त्रि). [हाथथी करेलुं] जरीनुं भरतकाम [सं.हस्त+अ.कशीदः]

हाय कंकण तर्त अखाका. हाथना कंकणनी जेम तरत ज प्रत्यक्ष

हा**व घसे** अखाका. प्रेमाका. निरुपाय — निराश थाय, [हारी जाय]; *नरका*. पस्तावो करे

हाव भोंच पडवा *प्रेमाका*. निरुपाय बनवुं . **डाथमेल्डामणि** *ललिया.* इस्तमेळापमां हाथल हरिवि. हाथनुं आभूषणविशेष हाथ साहे अखाका. सहाय करे; जुओ साहइ हाथा दशस्कं(१). प्रेमाका. कंकुवाळा हाथ-नां छापां

हाथा-तोरण जुओ हाथीतोरण

हायाल जिनराः शक्तिशाळी, लांबा हाथ-वाळा, [आजानबाहु]

हाथियो उक्तिर. गुर्जरा. नरका. षडाबा. विराप. हाथी (सं.हस्ति)

हायीउ उपवा. हाथी (सं.हस्ती)

"हाथीतोरण [हाथा-तोरण] *प्रेमाका.* कंकु-वाळा थापा अने तोरण

हायुलि प्राचीफा. हाथे पहेरवानी एक अलंकार

हाथेवाळो प्रेमाका. वरकन्यानो हस्तमेळाप, लग्न

हाम जिनरा. हरिख्या. इच्छा, उमेद हाम घाले चतुचा. हिंमत राखे, [धीरज राखे] हामण उषाह. *चिन्ता, [*हाम, *हिंमत] हार *नंदब. [हारमां, समान]

हारव अखाका. चित्तसं. हार्द, रहस्य, मर्म, तात्पर्य; अखेगी. हार्द, [मर्म, ऊंडो अभिप्राय]; प्रेमाका. हार्द, रहस्य, [मन-नी वात]

हार नगोवर चारफा. एक प्रकारनो हार हारि नलाख्या. हार, पंक्ति (*सं.धारिका) हारी ऋषिरा. पकडीने, ऊंचकीने, [लई जईने] [सं.हारय्]

हार्य चित्तसं. प्राप्तव्य [सं.]

हालकहोल कस्तस. हालकहुलक, [धमाल,

हलचल]

हालकहोलक प्रेमाका. धमाल, [हलचल]

हालर सिंहा(शा). ?, [*हार, *हरोळ]

हालरियउ जिनरा. देवरा. हालरडुं

हालरु *प्रेमाका*. हालरड्डं

हालरुं सिंहा(शा). कण छूटा पाडवा खळामां

बळद फेरववा ते

हालरो जिनरा. देवरा. हालरडुं, बिळकने

सुवडावती वखते गवातुं गीत]

हालिरड *जिनरा. [हालरडुं, बाळकने सुवडावती वखते गवातुं गीत]

हाली *नलरा*. असंस्कारी, जड, गामडियो

(सं.हालिक)

हावउं *गुर्जरा. [होउं, थाउं]

हावज्यो नरपः होजो (सं.भूयास्त)

हा विल उक्तिर. बल्के, तोपण

हावां *नरका-२. प्रेमाका.* हवे

हावे *प्रेमाका*. हवे

हातुं नरका. हवे

हाश, हासूं नलाख्या. हास्य, मश्करी

हास *कामा(शा). [हास्य]

हासना *मोसाच*. मश्करी

हासइ लावल. हास्य वडे, हसतांहसतां,

[सहजमां]

हासउं *गुर्जरा. षडाबा.* हास्य; *गुर्जरा*.

उपहास

हासा, हासां उपवा. लावल. हास्य, मजाक

हासि, हासुं *आरारा*. मश्करी, उपहास

हासी उक्तिरः हांसी, मजाक

हासुं, हासूं अभिक. ऋषिरा. नरका.

उपहास, हांसी; जुओ हाश, हासि

हासे अखाका. हसे, मश्करी करे; हास्यमां

हा हा तेरका. अरेरे (सं.)

हांकेटवुं जुओ हाकेटवुं

हांच त्रिष्ठाई जिनरा. पालव पाथरीने

हांडी यडाबा. हांडली (सं.हंडिका)

हांडुली *पडावा.* हांडली

हांबी कामा(त्रि). अहींथी

हांफल्या प्रेमाका. हांफळा

हांम-कांम, हांम-कांम्य *मदमो. [कामना

आवेग के अभिलाषवाळी] [रा.]

हांस कामा(त्रि). उत्साह, आशा

हांस देवरा. हांसी

हांस नलरा. गळामां पहेरवानुं एक घरेणुं,

हांसडी (सं.अंस)

हांस अभिक्र. हंस

हांसला *लावल.* इंस जेवा, [एक अश्व-

जाति]

हांसली *लावल*. हंसली

हांसलु वसंफा. हंसलो

हांसी प्राचीफा. इंसनी मादा (सं.हंसी)

हांसु नरका. हांसी

हि नलाख्या. हय, घोडो

-हि विमप्र. -मां, त्रीजी अने सातमी

विभक्तिनो प्रत्यय

हिअइ *वसंफा*. हैये (सं.हृदय)

हिअडइ खोटज *ऐतिरा.* खोटा मननो, मेला हदयनो

हिअडुं लावल. हैयुं, हृदय

हिद्द कादं(शा). घोडो (सं.हय); जुओ हिय

हिखार कादं(शा). हणहणाट (सं.हेषारव)
हिट्ठि प्राचीसं. हेठे [दे.] [सं.अधस्तात्]
हिडकी उक्तिर. हेडकी (सं.हिक्का)
हित आरारा. हेत, प्रेम
हितकार *देवरा. [हित करनार]
हित्तु, हित्तुं उपवा. हितस्वी; कल्याण करनार; [अर्थी, इच्छनार; अर्थे, माटे; अर्थेनं, माटेनं] (सं.हित); उक्तिर. अर्थेनं, माटेनं

हित्वाभास आनंस्त. हेत्वाभास, असद् हेतु अर्थात् मिथ्या हेतु, जेथी साध्य सिद्ध थाय नहीं ते

*हिम [हिब] जिनरा. हवे; जुओ हिव हिम तेरका. हिम, झाकळ; *वसंफा. वसंविं(ब्रा). ठंडक (सं.)

हिमलक्षण वसंवि. शीतल (सं.)

हिमवंत, हिमवंति वसंफा. दसंवि. वसंवि(ब्रा). हेमंतऋतु (सं.हिमवत्)

हिमाल्य *अखाछ.* हिमायत, तरफदारी **हिमाल**उ *उक्तिर.* हिमालय

हिय काद(शा). घोडो (सं.हय); जुओ हिइ **हियउ** आरारा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा).

हैयुं (सं.हृदय)

हियडउ आरारा. गुर्जरा. तेरका. देवरा. नेमिछ. वसंफा. वसंवि(ब्रा). वीसरा. हैडुं (सं.हृदय+ड)

हियडला गुर्जरा. हैडुं (सं.हृदय)

हियय तेरका. हृदय, हैयुं

हियवरणि *गुर्जरा.* *गमता वर्णनी (सं.हित-वर्णिका) **हिया** *षडाबा*. हृदय

हियादिउं उत्तिर. लगाववाळुं, हिंमतवाळुं (सं.हृदयार्पितम्) [रा.; हिं.]

हियुं गुर्जरा. हैयुं (सं.हृदय)

हिरणी *वीसरा*. हरिणी

हिरवे अखाका. हृदय

हिलियइ ऐतिका. निन्दा करे छे

हिली *नेमिछं.* (हे) सखी (सं.हला, अप. हेल्लि)

हिन्नि *तेरका. प्राचीसं*. हे सखी, एली (अप. हेल्लि)

हिब आरासः उपबाः ऐतिकाः गुर्जसः जिनसः तेस्काः नेमिष्ठः लावलः वसंफा(ल)ः वसंविः वसंवि(ब्रा)ः वीससः धडावाः हवे (सं.एवं, प्रा.हेवं); जुओ हव, हिम

हिन**इ** *आनंस्त. जिनरा. नेमिछं. हरिवि.* हवे (सं.अथवा)

हिदइणा आरारा. हवे

हिवडां आरारा. उक्तिर. उपवा. गुर्जरा. तेरका. प्राचीसं. षडावा. हमणां (सं. अधुना)

हिक्णा जिनरा, हमणां

हिवि रूपच. हवे

हिविडां उक्तिर. हमणां (सं.अधुना)

हिसारा करे प्रेमाका. भांभरे; जुओ हिंसारो हिं षडावा. भारवाचक अव्यय, [ज] (सं.हि) हिंडोलय तेरका. हींडोळो (सं.हिन्दोल+क)

हिंसा-रव *प्राचीसं*. हेषारव, हणहणाटी **हिंसारो** *दशस्कं(२)*. गायनुं भांभरवुं: जुओ हिसारा करे ही वीसरा. ज (सं.हि) हीअड उक्तिर. वसंवि. हदयम् हीअडइ लावल. हैया उपर, छाती उपर, हियो

रीआदुवलउ उपवाः हैयादूबळो (सं.हृदय-दुर्बल)

हीअर्ताल असारा(व). ताडनी एक जात (सं.हिन्तात) ?

रीइ *आरारा. लावल. ह*दयमां, हैया उपर, [छाती उपर]

हीई-सार्या शृंगमं ेगा-शारडी, हियारे सारश्ये, भेरी नाङनारी]; जुओ सारणि

रीवं उपना हेयुं (सं.हदय)

हीक दशका(५) अभाका, हेडकी, डचकां (संक्रिका)

हीकड़ सकित. हेडकी आवे, डचकां खाय (१६ हिक्की); अखाछ. खोंखारे, दम भीडे

हीकां प्रमाजाः हीवकां, डचकां हीकां आख्वां दशस्कं(१). डचकां आववां *हीयताट पंचवाः हींचको, हींडोळो (सं. हिंदोला+ट)

हीचइ *ंृतिका. [हींचे]

हीचरके (हयरके जाई) शृंगामं. खचरको, [आंचको खाय, आघात पामे] हीचोलाखाट मदमो. हिंडोळाखाट हीजइ तेरका. ?, [*त्याज्य — हीन गणाय] हीजाडी *नेमिछं. [*उपाडी, *लई] प्रा. हिंडा हीडइ, हींडइ आनंस्त. गुर्जरा. हेंडे, चाले, [जाय, ने माटे प्रवृत्त थाय] (दे.हिंड) हीडोलाट प्राचीफा. हींचोळो (सं.हिन्दोला+ट) हीडोलिय गुर्जरा. हींचोळी, झुलावी (सं. हिंदोल्)

हीण गुर्जरा. हीन, हलको हीणपणजं उपवा. अगौरव, अपयश हीणेरइ उपवा. वधारे हलका(जन्म)मां (सं. हीनतर)

हीत, हेत कामा(त्रि). माटे हीम उक्तिर. हिम, झाफळ हीय तेरका. वसंफा. हैयुं (सं.हदय) हीयइ विराप. हैयामां

हीयइं *गुर्जरा*. "हृदयथी, "सहेलाईथी, [*छाती वडे]

हीयड *वसंवि(ब्रा). वीसरा.* हैयुं (सं.हृदयं) श्रीयडउ गुर्जरा. लावल. वसंवि(ब्रा). हैडुं (सं.हृदय)

हीयरइ प्रद्युचु. ?

हीयालि, हीयाली नलरा. कोयडो, उखाणुं (सं.हदय परथी?); *गुर्जरा. विराप. प्रयुक्ति, [प्रयल, कुचेष्टा, हिंमत] [रा.]; जुओ हैयाली

हीयानोकर्गः प्रद्युष्टुः अन्यना मननी वात राजनारी विद्या [सं.हदय+लोकन]

हीयां गुर्जरा हैया

हीयुडउ रूपच. हैयुं (सं.हदयकं)

हीर नेमिछं. रेशन; *विमप्र. (सत्त्व, साररूप अंश, मूल्यवान अंश]

हीरक गुर्जराः हीरो (सं.)

हीरडु प्राचीफा. हैयुं (सं.हृदय; हिं.हिरद) **हीरबुंणि** आरारा(व). हिरवणी नामनी कपासनी जात

हीरागळ ग्रेमाका. रेशमी, [एक वस्त्रप्रकार] हीरालग षडावा. हीराखचित (आभूषण) (सं.हीरक+लग्यति)

हीलइ उक्तिर. अवज्ञा – अनादर करे (सं. हेलय्, प्रा.हील)

हीला *ऐतिका*. अवहेला, [अनादर, तिरस्कार]

हीला *प्रेमाका.* *धक्का, *ठेला, [*डार] [रा.] **हीलिलु** *षडावा.* अनादर करतो (सं.हेला परथी, प्रा.हीलइ)

होवड़ नेमिछं. हवे (सं.अथवा)

हीस प्रद्युचु. घोडानी हणहणाटी (सं.हेषारव) **हीसइ** *आरारा. उक्तिर*. हेसारव करे.

होसइ *आरारा. उक्तिर.* हेसारव करे, हणहणे; *दशस्कं(१). प्रेमाका.* भांभरे

डीसइ अखाका. कादं(ध्रु). चतुचा. चंद्रवा. दशस्कं(१). नरका. नंदब. प्रेमाका. हर्ष पामे, आनंद पामे

हीसला हम्मीप्र. उत्तम घोडानी एक जात हीसार कार्द(ध्रु). हणहणाट [सं.हेषारव] हीसारथ लितरा. हांसी; जुओ हसारथ

हीसारव प्रेमाका. सिंहा(म). घोडानो हणहणाट (सं.हेषारव); कादं(ध्र). दशरकं(१). बांघाटवुं, भांभरवानो अवाज

हीसोरा *प्रेमाका*. भाभरवानी क्रिया **होस्ती** *वाग्भवा*. हस्ती, हाथी **हींगवणि** *उक्तिर*. इंगुदीनुं वृक्ष (सं.हिंगुपणी) **होंगूआणि** *आरास(व)*. इंगुदीनुं वृक्ष (स. हिंगूफ) [सं.हिंगुफर्णी]

हींडइ अखाछ. *इच्छे, [जाय, -ने माटे प्रवृत्त थाय]; अखेगी. उपबा. षडाबा. चाले, प्रवृत्त थाय (दे.हिंडइ); जुओ हीडइ

हींडतो आखडे चित्तसं. चालतां पडी जाय, गति न करी शके

हींडि उक्तिरः परिभ्रमण, पर्यटन (सं.हिण्डि) **हींडिया** उक्तिरः [?] (सं.हिण्डिका)

हींडोलइ *उक्तिर. लावन.* हींडोळे, झुलावे (सं.हिंदोलयति)

र्हीसइ अखाछ. आरारा. हर्ष पामे; *प्रेमाका.* लावल. हणहणे [सं.प्रेषति]

हींसलणा उषाह. हेषारव करता (योडा) **हींसार** दशस्कं(१). हेषारव, भांभरवुं ते **ड** उक्तिर. हुं (सं.अहम्)

हुइ उक्तिरः उपबाः ऋषिराः कादं(शा). गुर्जराः तेरकाः देवराः नरकाः नलाख्याः नेमिछं प्रेमाकाः लावलः वीसराः होय, थाय (सं.भवति)

हुइगउ ऐतिका. थशे [हिं.होगा]

हुइवा *उक्तिर.* होवा

हुईइ उक्तिर. थवाय, थाय (सं.भूयते)

हुओ जुओ हउओ

हुकलइ *जिनसः [वागे, ध्वनि करे]; जुओ हूकळी

हुकळावी *प्रेमाका.* *उश्केरीने कोलाहल करता, प्रिरी, हांकी]

हुज *शृंगामं***.** होत

हुटुहुटाड **गुर्जरा*. [कोलाहल] **हुडकी** **गूर्जरा. *विराप.* विद्यविशेष, एक प्रकारनं ढोल] [दे.हुडुकी] **हुदुक, हुदुक** *उक्तिर. प्राचीसं*. वाद्यविशेष (दे.) ***हुण विहुण**] **जिनरा*. [विना] **हुणहार** *आरारा.* होनार **हुणार** *कादं(शा)*. होनार (सं.भू परथी) **हतइ** *आनंस्त.* यतां, हिोतांी **-हुती** *विमप्र.* -थी, [-मांथी] **इतं** अखाका. आनंस्त. नरका-२. प्रेमाका. थतुं, हतुं; चित्तसं. होतां **इयउ** आनंस्त. प्रेमाका. लावल. वीसरा. थयो **द्वयणहार** *षडाबा.* होनार, थनार **हुरे हुरे** विक्ररा. हूरियो, [फजेती] **द्वलरावे** जिनरा. नरका. हींचोळे, झुलावे; [लाड लडावे] **हुलावे** *नरका. प्रेमाका. विमप्र*. लाड लडावे **हुल्लरमाळा** *प्रेमाका*. गळानुं एक आभूषण हुवइ आरारा. नरका-२. पंचवा. प्रेमाका. वीसरा. होय, थाय (सं.भवति) **हुवह** *प्राचीसं*. अग्नि (सं.हुतवह) **इस** *मदमो. सिंहा(शा).* होंश, [उमळको], रुचि, अभिलाषी: जुओ हुंस **हिसड़** *नेमिछं.* थशे. थवानी **हुसेनी** *ऐतिका*. रागविशेष **न्हुं** कर्पूमं. संबंधार्थ प्रत्यय, [-नुं] **ढुंकारो** *नरका-२.* **अ**हंकार, [हुंपणुं] **हंछउ** *उक्तिर*. खेतरमां पडेला दाणा भेगा

करवा ते (सं.उच्छः) **हुंडा** *जिनरा.* हुंडिक संस्थान, [अंगो लक्षण वगरनां, वांकांचूंकां अने आडांअवळां होय तेवो शरीरबंध] जि.] **हुंडा अवसप्पणि** *ऐतिका.* हुंडावसर्पिणी, वर्तमान हीन समय जि.] **हुंडीपत्री** *मोसाच*. हूंडीनो कागळ **हंणी** *आरारा*. थनार **द्वंतइ** *आनंस्त. ऐतिरा.* थतां, [होतां] **हुंतउ** *आनंस्त. आरारा. उक्तिर. ऐतिका. -थी, -मांथी, [होतां] **हुंति** *ऐतिका.* -नी अपेक्षाए, -ना करतां, [-थी] **हुंती** अभिऊ. हती (सं.भूत); *नेभिछं*. हती, [होय छे] **हुंशनाएक *** *मदमो*. अोजस्वी, प्रभाव-शाळी] [फा.हुस्न परथी] [रा.] हुंस, हूंस चित्तसं. अहंभाव, हूंपणुं **हुंस** *आरारा. गुर्जरा*. होंश, *उत्साह [अ. हवस]; जुओ हुस **ह्** *वसंवि(ब्रा)*. हुं (सं.अहं) **हुआ** *लावल*. थया **हुअवह** *वसंफा. वसंवि. वसंवि(ब्रा)*. अग्नि (सं.हुतवह्) हुइ उक्तिर. गुर्जरा. देवरा. नलाख्या. नेमिछं. लावल. वीसरा. होय, थाय, छे (सं. भवति) **हुओ** जुओ हउओ हुकळी प्रेमाका. होंकारा-पडकारा करी; जुओ हुकलइ

(सं.हद्य)

हुके *प्रेमाका.* बराडा पाडे, [हुकाहूक करे]; जुओ हुंकी **हृतउ** *गुर्जरा*. -मांथी (अप.होंतउ) **इतुं** अखाका. कादं(शा). प्रेमाका. हतुं (सं. भू परथी) हूयउ तेरका. लावल. वीसरा. थयुं (सं.भूत) **-हुल** *प्राचीसं*. पुष्प (सं.फुझ) हुंकी नेमिछं. हाक मारी, गर्जना करी: जुओ हके **हुंडियात** *प्रेमाका*. हुंडी लखी आपनार हुंतर जुओ किहां हुंतउ **हुंता** कृष्णच. -थी, [-मांथी] हुती आरारा. प्रधुनु. -थी, (पासे)थी **हूंफड़ं** *गुर्जरा.* [रोषमां] हांफे (सं.उष्मायते) **हंस** अखाछ. *चडसाचडसी, *स्पर्धा, [ममत, अहंभाव, हूंपणुं]; जुओ हुंस हुंस जुओ परहुसीउ, परहूस **हृदय-कपाट** *प्रेमाका*. हृदयरूपी बारणू **हृदयचड** वसंवि. हृदयना **हदि** नलाख्या. हृदयमां **है** *कामा(शा)***. हय, घोडो; जुओ** हए, हेसाला **हेखि, हेखी "**गुर्जरा. "विराप. [गुस्से थईने]

[सं.हेष्]
हेब अखाका. अखाछ. आरारा. *ऋषिरा.
ऐतिरा. कस्तुवा. कादं(ध्रु). कादं(शा).
कामा(शा). चारफा. जिनरा. दशस्कं(९). नरका. नलरा. प्रेमाका. मदमो. लावल. विमप्र. वेताप. शृंगामं. सिंहा(शा). हेत, प्रीत, राग, आसक्ति

हेज *अखाका. [तेज, बळ] हेजु करड़ जितर. हेत करे **हेडलि** *उक्तिर. नलाख्या.* हेठळ, नीचे (सं.अधस्तातु, प्रा.अहट्ठा) [दे.हेट्ठ] **हेिलुं** *उक्तिर*. हेठळनुं, नीचेनुं **हेड** अखाका. विकरा. गुनेगारना पगने जकडी राखनारुं लाकडानुं एक साधन **हेडवेडी** *नरका*. हेडरूपी बेडी. पगनी बेडी. हिड अने बेडी. पगनी अने हायनी बेडी **हेडाऊ** *उक्तिर. वीसरा.* घोडानो वेपारी, सोदागर (सं.हेडावुक) **हेत** अखाका. अखाछ. कादं(शा). हेत्, कारण, मूळ, [रहस्य]; *देवरा. सिंहा(शा).* हेतुथी, कारणे, -थी; जुओ हीत **हेत** *प्रेमाका*. हित, भलूं **हेत** *नलाख्या.* **[मूळ मुद्दो], सारमात्र हेतइ** *आरारा.* हेतुथी, कारणयी, माटे **हेतक** *सिंहा(शा).* हित्रू, हितस्वी **हेत-खप** *प्रेमाका*. हेत अने श्रम, हित अने खंती **हेतबाद** प्राचीका. हेतुवाद, कुतर्कमूलक वादविवाद **हेतुबाद** *अखाछ.* कुतर्क, [खोटी दलील] **हेम** *अखाका*. हिम. हिमालय पर्वत: दशस्कं(२). हिम, [झाकळ]; मदमो.

हेमर अंगवि. कामा(त्रि). घोडो [सं.हयवर]:

शीतळ

जुओ हेंमर

हेमसुता *प्रेमाका.* हिमालयनी पुत्री, पार्वती हेमाती *मदमो*. पक्षकार, स्वजन [अ. हिमायती]

हेमाळो **नरका-२.* [शियाळो] [सं.हिम-काल]

हेयपणें *आनंस्त.* हेयपणाथी, त्याज्य रूपे **हेर** अखाछ. हरि

हेरइ अखाका. उक्तिर. नेमिछं. प्रेमाका. जुए, नीरखे [दे.]

हेरकांनि अभिक. संदेशवाहकोने (सं.हेरक)

हेरणां (हेरणां हेरे) नरप(द). छूपी रीते जोवुं ते, [छूपी नजरो कर्या करे]

हेरा विमप्र. [चक्कर, फेरा, आंटा]

हेरावे *नरका.* *ललकारीने बोलावे, [*खोळीने भेगुं करे]

हेरु उक्तिर. प्रेमाका. गुप्तचर (सं.हैरिक)

हेरूं *उषाह*. छूपी तपास, [चोरी] [दे.]

हेर्युं *नरका. [लई लीधुं, वश कर्युं]

हेल *नरप-२. *नरप(द)*. [माथे उपाडेली] गागर

हेल *नरका*. हेलारो, धक्को

हेलइ आरारा. जलदी, तरत ज (दे.); जिनरा. सहजपणे, सरळताथी, [तरत ज]

हेलडी *नरका. नरप.* हेल, पाणी लाववाना वासणनी मांडणी

डेलडी रूस्तस. रमतमां, घडीमां [सं.हेला] डेलवे, डेळवे चित्तसं. नरका. मन मळे, मन मेळवे

हेला *दशस्कं(९). हरिख्या.* रमत, लीला;

वेग, झडप; * ऐतिका. गुर्जरा. प्रेमाका. विराप. रूस्तस. रमतमात्रमां, लीला-पूर्वक, सरळताथी, तुरत ज (सं.हेला) हेलामां अखाका. प्रेमाका. सहेज वारमां, सहेलाईथी, तुरत ज

हेलां अंबरा. ऋषिरा. ऐतिरा. नरप(द). प्राचीका. प्राचीफा. प्रेमाका. लावल. वाग्भवा. रमतमात्रमां, अनायास, सहेलाईथी, क्षणवारमां (सं.हेला)

हेलि जिनरा. विक्रच. रमतमात्रमां, सहेलाईथी हेलि लावल. *हेले चडी छे, [*घूमे], [*अली]

हेलि, हेली *नरका. लावल.* हे सखी, (अली) सखी

हेलिइं *ऐतिरा.* सहजमां, [तरत ज] हेली जुओ हेलि

हेलो चित्तसं. सरळताथी [सं.हेला]

हेब आरारा. उषाह. मदमो. शृंगामं. हवे, अत्यारे (सं.अथ+चा) [अप.अहवइ]

हेव *गुर्जरा. *रूपच.* खरेखर, जरूर, [ज] (सं.एव)

हेवज *उक्तिर.* हेवा, प्रबळ इच्छा, आदत (सं.हेवाकः)

हेवातण नरका. सौभाग्यावस्था (सं. अविधवा+त्वन)

हेवि आरारा. हवे

हेवुं मदमो. एवं

हेषारव *नेमिछं.* हणहणाट [सं.]

हेषारा ऋषिरा. हणहणाट (सं.हेषारव)

हेसमी नेमिछं. एक जातनुं पकवान

हेसारव कादं(शा). हणहणाट (सं.हेषारव) हेसाला कामा(त्रि). घोडार [सं.हयशाला]; जुओ है **हेंमर** *ऐतिरा.* उत्तम घोडा [सं.हयवर]; जुओ हेमर 🕏 *उषाह. नलाख्या.* केवलप्रयोगी अव्यय. **हैई** *प्रबोप्र***. हदयमां हैय** *गुर्जरा*. हाय हैयड प्रबोप्र. हैयुं (सं.हदय+क) **टैयाली** *उषाह.* कोयडो, उखाणुं: जुओ हीयाल **े हेयुं (हेयुं काढ) ****अखाछ.* [प्राण अर्पी दे] **होइ** *गुर्जरा. वीसरा. षडाबा.* छे, थाय (सं.भवति) **होइला** नरका. थया (म.) होइसिइं नेमिछं. हशे (सं.भविष्यति) होडहो "पचवा. छि **होर्डए** *प्रेमाका*. थईए. थजो होउ उक्तिर. उदुगारवाचक, हो (सं.अवम्) **होउ** *उक्तिर.* थयुं (सं.भू परथी) होऐ पंचवा. होई, होय (सं.भवति) होठ राळे जुओ राळे होठ होटे पडी नरका-२. लोकोनी चर्चा पामी. बोलाती थई होड नरका. स्पर्धा, बराबरी; *ग्रेमाका. [स्पर्घा, वाद, चडसाचडसी] होड [होड पाडड़] विमप्र. हरीफाई, [शरत लगावे. दाव लगावे]

ते **होडाहोड ***प्रेमाका. चिडसाचडसी, परस्पर . वादी **होडि** अभिक्त. होडमां. शरतमां **होडि** *जिनरा.* तूलना, [समानता, बराबरी] **होती** *ग्रेमाका*, थती **होहो** *नरका*. हाथीनी पीठ उपर मूकेली बेठक, अंबाडी [सं.हवदज] **होमिन्** *उक्तिर*. होमवुं (सं.ह परथी) **होयजे** *आरारा*. होजे. थजे होयो ऋषिराः होजो, थजो (सं.भवतु) होयो प्रेमाका. थयो (सं.भूत) **होला** *पडाबा***. ओळो. चणा आदि धान्य**ना लीला शेकेला दाणा **होलावदुं** दशस्कं(१). 'होलोलो' करीने बाळकने बहेलाववूं होलास कामा(त्रि). उल्लास होशी मदमो. होंशथी तैयार करेला, होंश-भर्या होसिइ, होस्यइ ऋषिरा. लावल. हशे, थशे (सं.भविष्यति) **होंकार** **प्रबोप्र.* [पडकार, बूम] हौर, हौरओ, हौओ उषाह. कादं(शा). नलाख्या. थयो (सं.भूतकः) **इइ, द्विइ** उपबा. गुर्जरा. वाग्भबा. विराप. षष्टिप्र. द्वितीय, चतुर्थी, षष्ठीनो अनुग, -ने, माटे; जुओ रई, रहइ, हरई हद प्रेमाका. धरो: नदीमांनो पाणीनो ऊंडो पहोळो लांबो खाडो [सं.] **होडपातन,** *पड़ाबा*. होड़ करवी, शरत मारवी **हिंइ** जुओ हुइ

थोडी शब्दार्थचर्चा

थोडी शब्दार्थचर्चा

संपादकीय भूमिकामां दर्शाव्युं छे ते मुजब आ संकलित कोशमां शब्दार्थना जे संघारावधारा थया छे ते कयां कारणोधी अने केवी रीते थया छे एनो ख्याल आवे ते हेतुथी अहीं नमूना रूपे थोडी शब्दार्थचर्चा आपी छे. जुदांजुदां सामयिकोमां अलग लेखो रूपे आ शब्दार्थचर्चा प्रसिद्ध थई छे, अने ए ज लेखो थोडा फेरफार ने उमेरण साथे. अहीं मुक्या छे तेथी स्वाभाविक रीते एमां अकारादिक्रम तूटे छे. पण चर्चायेला शब्दो नीचे अकारादि क्रममां गोठव्या छे अने एमनी चर्चा कया स्थाने थई छे ते खंडक-क्रमांक अने पृष्ठांकथी दर्शाव्यूं छे.

अउले खाले वहै. १ -- ५६८ **अ**उल्हाइ. २ – ५६८ अउगनाइ, ३ -- ५६८ अउगउ, ४ – ५६९ अकज. ७ - ५७१ अकाज, ७ - ५७१ अखतर. ८ - ५७२ अखत्र, ८ -- ५७२ अखंत्र, ८ – ५७२ अखाडो. ५ – ५६९ अगम. ९ -- ५७३ अगाज. १० - ५७५ अघाट ऊभो, ११ – ५७७५ अच्छउं, १२ - ५७६ अछ्तउ, ६ – ५७० अज उभां, १३ - ५७६ अजंण, १४ - ५७७ अडसाला, १५ - ५७७ अडसीला, १५ - ५७७ अगाल, १६ - ५७७ अणगाल, १६ - ५७७ अणाथ. १७ - ५७८ अणांथि. १७ - ५७८ अणिज आखड, १९ - ५७९ अणिख, १८ - ५७९

अणीय आखइ, १९ - ५७९ अणरति. २१ - ५८० अणूर्ह, २१ – ५८० अत, २२ - ५८१ अतिधज, २३ - ५८२ अतिसंता, २४ – ५८२ अधरास. २५ - ५८२ अनिआउ, ३३ - ५९० अनिवड, २६ - ५८४ अनु भाव, २७ - ५८६ अनुभाव, २७ - ५८६ अन्नैयो, ३३ – ५९० अन्या, ३३ - ५९० अन्याई, ३३ - ५९० अंत्रा, ३३ - ५९० अप्रमाण, २८ - ५८६ अबाह, २९ - ५८७ अबोखण, ३० - ५८७ अभोखर, ३० - ५८७ अभोखण, ३० – ५८७ अभोखणुं, ३० - ५८७ अमलीमाण, ३९ - ५८९ अमलीमान, ३१ - ५८९ अमाइ. ३२ - ५८९

मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश

अमाण्, ३२ – ५८९ अमान, ३२ - ५८९ अमानी, ३२ – ५८९ अमामो, ३२ - ५८९ अरज, ३४ – ५९३ अलगूं, ३५ - ५९३ अलगेरी, ३५ - ५९३ अंक भरवो, ३६ – ५९५ आघाट ऊभो, ११ – ५७५ आघ, ३७ – ५९६ आंघलंउ, ३७ - ५९६ आपुं, ३७ – ५९६ आधेरुं, ३७ - ५९६ आछुं, १२ – ५७६ आडइ, ३८ - ५९७ आडौ, ३८ - ५९७ आथ, १७ – ५७८ आथि, १७ – ५७८ आध्य, १७ - ५७८ आदर, ३९ - ५९८ आदरवुं, ३९ - ५९८ आभोखर, ३० – ५८७ उगउ, ४ – ५६९ उशंकल, ४४ - ६०३ उसंकल, ४४ - ६०३

उसीकल, ४४ - ६०३ उसींकल, ४४ - ६०३ **ऊलववुं, २५ - ५८२** ओलववुं, २५ - ५८२ ओशिंगळ, ४४ - ६०३ ओशींकळ, ४४ - ६०३ ओशींगल, ४४ - ६०३ ओसंकल, ४४ – ६०३ ओसीकल, ४३ - ६०३ करो, ४० - ६०१ काण, ४५ - ६१३ काणि, ४५ - ६१३ काणी, ४५ - ६१३ कांणि, ४५ - ६९३ किण गानइ, ४३ - ६०२ कुलकाणि, ४५ - ६१३ खगमंडल, ४१ - ६०१ खगाकार, ४१ - ६०१ खगां, ४१ - ६०१

9. अउले खाले वहै

जिनरा.मां शालिभद्रनी रिद्धिना वर्णनमां नीचेनी पंक्ति आवे छे :

जीहो **अउले खाले वहै,** जीहो कस्तूरी घनसार. ४,९९

संपादक 'अउले'ना 'तरल, अवलेह' एवा अर्थो आपे छे, जे अहीं कोई रीते बेसता नथी. 'अउले खाले वहैं' ए रूढिप्रयोग होवानुं समजाय छे. अवळी खाळे वहेवुं एटले ऊभरायुं, छलकायुं. शालिभद्रने घरे कस्तूरी अने कपूर अंगलेपमां एटलां वपराय छे ने धोवाईने खाळमां एटलां वहे छे के खाळ एनाथी ऊभराय छे. ए नोंधपात्र छे के आवो रूढिप्रयोग राजस्थानी शब्दकोश के रूढिप्रयोगकोशमां नोंधायेलो नथी.

२. अउल्हाइ

जिनरा.-अंतर्गत 'मोडी पार्श्वनाथ स्तवन'मां नीचेनी पंक्तिओ आवे छे : देव धणाइ देवले, गउडेचा राय, दीठा ते न सुहाइ रे, गउडेचा राय, इक दीठा मन हुलसइ, गउडेचा राय, इक दीठा **अवल्हाइ.** रे गउडेचा राय,

'ओलावुं' शब्द 'बुझावुं, ठरवुं' एवा अर्थमां जाणीतो छे. पण ए अर्थ अहीं नथी ए स्पष्ट छे. 'हुलसइ' (उल्लास पामे)ना विरोधी अर्थनो ज ए शब्द होई शके. नाहटा 'संकुचित थवुं' एवो अर्थ ले छे. पण 'उल्लास पामे'ना बराबर विरोधी अर्थमां आ शब्द नोंधायेलो मळे छे. 'देशीशब्दसंग्रह' 'ओहुल्लि' एटले 'खिन्न' अने 'ओहुल्लिय' एटले 'न्लान' अर्थ आपे छे. तो अहीं पण ''एक देवने जोतां मन उल्लास पामे, एक देवने जोतां मन खिन्न थाय'' एम अर्थ बराबर बेसे. 5

३. अउगनाइ

उक्तिर.मां 'अउगनाइ' शब्द नोंघायेलो छे ते ध्यान खेंचे छे. एनो संस्कृत पर्याय एमां 'अपकर्णयति' अपायेलो छे.

आ 'अउगनाइ' ते 'अवगणे' ? उक्तिर.मां संस्कृत पर्यायो घडी काढेला मळे छे अने संस्कृत कोशो 'अपकर्णयिति' शब्द नोंघता नथी. पण उक्तिर.ने 'अवगणे' ज अभिप्रेत होय तो संस्कृत 'अवगणयिति' ए न आपी शके एम मानवुं मुश्केल छे. बीजी बाजुथी, 'अवगणे'नुं जूनुं रूप 'अउगणइ' होय अने ए ज 'अवगणयित' परथी आवे, 'अउगनाइ' नहीं. एटले 'अउगनाइ' ए 'अउगणइ'थी जुदो शब्द होवानो संभव रहे छे. एनो 'अपकर्णयिति' ए पर्याय आपवामां आव्यो छे तो तेनो अर्थ 'सांभळे नहीं, घ्यानमां न ले' एवो अभिप्रेत होवानुं संभवित छे.

४. अउगउ, उगउ

उक्तिर.मां 'अउगउ-मुगउ' अने 'उगउमुगउ' ए शब्दो नोंघायेला छे अने एनो पर्याय अवाङ्मुकः आपवामां आव्यो छे. देखीती रीते ज 'ऊगोमूगो' ए द्विरुक्त शब्द छे. एनो अर्थ तो 'मूगो' ज. 'ऊगो' ने 'अवाङ्' परथी व्युत्पन्न करी शकाय ?

'अउगउ' के 'उगउ' शब्द एकलो पण 'मूगो'ना अर्थमां वपरायो छे. जेमके, प्राचीसं.-अंतर्गत 'नेमिनाथ-चतुष्पदिका'मां —

अउगी अच्छि, सिख झिख मन आल,

षडाबा.मां -

गुरे भणिउं - 'म वच्छ ! उगउ रहि को कांइ नहीं कहइं.'

बीजा उदाहरण परत्वे संपादके 'agitated, alarmed' (क्षुब्ध, भयभीत) एवो अर्थ आप्यो छे. पण त्यां बीजा साधुए दडबडावतां चेलो लागणीना आवेशमां आवी धुसकां भरे छे त्यारे गुरु एने 'वत्स, रड नहीं. मूगो रहे' एम कहे छे तेवो अर्थ लेवानो छे. ^२

५. अखाडो

'अखाडो' शब्द कुस्ती, व्यायाम के स्पर्धा माटेनी जग्याना अर्थमां जाणीतो छे. सं.'अक्षपाटक' परथी ए ऊतरी आव्यो छे. *उक्तिर*. 'अक्षपाटक' एवो पर्याय आपी 'अखाडउ' शब्द नोंधे छे. मध्यकालीन गुजरातीना बेत्रण प्रयोगो आ संदर्भमां नोंधपात्र छे.

गुर्जरा. तथा विराप.मां – पार्थु एकु दल कोडि विहाडइ, इणि स्यउं कोइ मिलइ न अखाडइ. २.५३

विरायः ना संपादको 'अखाडइ'नो अर्थ 'मझयुद्धमां' अने गुर्जराः ना संपादको 'a wrestling ground' एम अर्थ आपे छे. आमां कुस्ती के कुस्तीनुं मेदान एवो अर्थ अभिप्रेत होय तो ते योग्य नथीः सर्व प्रकारनी शौर्यस्पर्धामां पार्थनी तोले कोई न आवे एम ज अर्थ होई शके. पार्थ कुस्तीबाज नथी, बाणावळी छे.

गुर्जरा.-अंतर्गत 'पंचपांडवचरित्ररास'मां अन्य त्रणेक स्थाने आ शब्द वपरायेलो छे :

तुम्हि मंडावउ नवउ **अखाडउ,** नवनव भंगि पुत्र रमाडउ. ४:१ राधावेथु करीउ दिखाडइ, तिसउ न कोई तीण **अखाडइ.** ४.८ इम परीक्षा हुई **अखाडइ,** तींछे अरजुनु चडीउ पवाडइ ४.२० अहीं प्रसंग कौरव-पांडवोनी शस्त्रविद्यानी परीक्षानो छे. तेथी 'अखाडउ' एटले 'शौर्यस्पर्धा' एवो अर्थ बधे स्पष्ट छे. 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ पण लई शकाय.

वधारे रसप्रद छे ते तो 'अखाडउ'ना बीजा बे प्रयोगो. षडाबा.मां चैत्यवर्णनना प्रसंगे द्वारेद्वारे अखाडामंडप साथे प्रेक्षामंडप होवानो उल्लेख आवे छे. संपादके 'अखाडामंडप'नो अर्थ 'pavilion' आप्यो छे ते तो देखीती रीते ज भूलभरेलो छे. पण अहीं 'अखाडामंडप' एटले 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ होवा करतां 'रमतनुं स्थान, क्रीडाभूमि' एवो होवा वधारे संभव छे. चैत्यमां शौर्यस्पर्धा होई शके ? नरप.ना एक पदमांनो 'अखाडो' शब्दनो प्रयोग आ संदर्भमां उपयोगी नीवडे तेवो छे :

वृंदावनमां रच्यो अखाडो, नाचे गोपी गोवाल. ५४.९

'अखाडो' शब्द अहीं 'शौर्यस्पर्धा'ना अर्थमां नथी ते स्पष्ट छे. गोपी-गोपाल नृत्य करे छे. एटले 'क्रीडाभूमि' एवो अर्थ ज लेवानो रहे. *षडावा*.मां पण 'नृत्यादि क्रीडाओनुं स्थान' एवो अर्थ बंध बेसे. आ 'अखाडो' शब्दनो जरा जुदो पडतो प्रयोग गणाय.^४

६. अछूतउ

'अछूत' श्रन्य 'अस्पृश्य, हलकी जातिनो माणस' ए अर्थमां खूब जाणीतो छे. उक्तिर.मां 'अछूतउ' शब्द जुदा अर्थमां होय एम समजाय छे. एमां पर्याय 'अच्छुत' अपायेलो छे, जैनो अर्थ 'अस्पृष्ट' थाय. पण 'मइलउ', 'छोति', 'अछूतउ' एम शब्दक्रम छे ने उक्तिर.मां शब्द कया जूथमां मुकायो छे तेमांथी केटलीक वार एना अर्थनी चावी मळे छे. अहीं 'मइलउ'नो विरुद्धार्थी शब्द 'अछूतउ' समजीए तो एनो अर्थ 'स्पर्शदोषना अभाववाळो, निर्मल' एम करवो जोईए. 'छोति'नो अर्थ 'स्पर्शदोष' थाय ज छे. '

पूरक नोंध

- 9. 'मों करमायुं' जेवामां 'करमावुं' जेम, 'ओलावुं'नो लाक्षणिक अर्थ निस्तेज थवुं लईए तो अर्थ कदाच बेसे. 'ओहुझ'ने मूळ तरीके लेतां पण अर्थ घटे छे. 'ओहुझ'ना मूळमां 'अव+फुझ-' (करमावुं) छे. अपग्रंश साहित्यमां ते वपरायो छे. जेमके स्वयंभूकृत 'पउमचरिउ'मां, पुष्पदंतकृत 'महापुराण'मां. त्यां 'मुख'नुं ते विशेषण छे. टीकाकारे 'म्लान', 'सुकायेलुं' अर्थ करेल छे. 'ओहझ-' एवो पाठ लिपिदोष जणाय छे. 'ओहुर-' पण मळे छे. विशेष माटे जुओ रला श्रीयन, Des'ya and Rare Words, प्र.६१, ६२.
- २. नामधातु 'अवकर्णय' 'ध्यानमां न लेवुं' बाणनी 'कादंबरी'मां वपरायानुं मोनिअर-विलिअन्झे नोंध्युं छे.
- ३. में 'अनुशीलनो' (१९६५, पृ.९३--९५)मां 'अउगउ', 'उगा' विशे नोंघ आपेली छे. तेमां प्राकृत, जूनी तथा मध्यकालीन गुजरातीना ११मीथी १७मी शताब्दीमां मळता प्रयोगो, तथा मराठी प्रयोगनी नोंघ लीधी छे. 'अनुसंघान'ना प्रस्तुत अंकमां ज

कनुभाई शेठ संपादित 'सुभद्रासित-चतुष्पदिका' (१३मी सदी)मां पण आ शब्दनो प्रयोग मळे छे :

'अउगी आछु न बोलिसि माए.' (कडी ३४).

४. पुष्टिमार्गीय वैष्णव किव हरिदासना मुख-परंपरामां पण मळता एक धोळमां 'क्रीडाभूमि' (रासक्रीडा माटेनी रंगभूमि) एवा अर्थमां 'अखाडो'नो प्रयोग मळे छे :

एक रच्यो अखाडो रे, सज थया पोते.

(संदर्भ कृष्ण-गोपीओनी रासलीलानो : जुओ 'हरि वेण वाय छे रे हो वंनमां', पृ.७४, कडी २).

५. सं.'छुत-', प्रा.'छुत्त-' = 'स्मृष्ट', पछीथी, 'दूषित स्पर्शवाळुं'. प्राकृतमां पण 'छुत्ति' 'अशौच' एवा अर्थमां वपरायेलो छे, जेना परथी जू. गुज. 'छोति', हिं. 'छूत' थया छे. 'अछूत' शब्द 'जस्पृष्ट' (हिं.अछूता), तेमज 'अस्पृश्य' (हिं.'अछूत') बंने अर्थमां रूढ छे. 'छूताछूत'मां धात्वर्थ जळवायो छे. प्रस्तुत नोंध क्रमांक ७मां पण 'अछूतउ' 'अस्पृश्य' ए अर्थमां होवानी शक्यता छे.

- ह. भायाणी[अनुसंधान-१]

७. अकज, अकाज

'अकज' के 'अकाज' एटले 'अकार्य, न करवा जेवुं कार्य, अघटित के निंद्य कार्य'. मध्यकाळमां आ शब्द 'नकामुं, व्यर्थ, खोटुं' एवा अर्थमां पण व्यापक रीते प्रयोजायो छे.

अखाका.मां एक सोरठो नीचे मुजब मळे छे :

राजस केरी रज आवी पैठी आंखमां,

तेणे थयुं अकज शुद्ध वस्तु अविलोकवा.

संपादके 'अकज'नो 'अकार्य, न करवा जेवुं काम' एवो अर्थ लीधो छे. पण वधारे योग्य रीते 'न थवा जेवुं, अघटित' एवो अर्थ लेवो जाईए : 'शुद्ध वस्तु अवोलकवा माटे अघटित थयुं.'

'अकाज'नो एक प्रयोग एमां आ प्रमाणे छे :

अलवे-शुं आले ज जातां, घसाये गजराज,

तेणे ग्रहस्थनां घर गडगडे, वाहाला ! त्यम अडे थाय अकाज.

संपादके आनो पण 'अकार्य, न करवा जेवुं काम' एवो अर्थ आपेलो छे. अहीं पण 'न करवा जेवुं' नहीं, पण 'न थवा जेवुं काम' एम अर्थ करवो वघारे योग्य छे.

'हानि' के 'नुकसान' एवो अर्थ पण लई शकाय : 'मार्गे चालतां गजराज जराक घसाय तेनायी गृहस्थनां घर खखडी पडे छे, तेम वहाला ! तमारा अडवाथी हानि/नुकसान थाय है.' आगळ कृष्ण नेत्र नाखे त्यां प्राण हरे छे एवी वात छे. तेम एनो हाथ अडवाथी पण हानि ववानुं ज अभिप्रेत होय. हाथीनुं दृष्टांत पण ए ज सूचवे छे.

लपच.मां संपादके 'अकाज'नो अर्थ 'व्यर्थ' आप्यो छे. पण ए अर्थ संदर्भमां बंधबेसती नथी. संदर्भ एवी छे के कुंवरी भोगमग्न होवानी वात राजा पासे आवे छे त्यारे ए गुरसे थड़ने बोले छे के रे रे किसिए अकाज ? देखीती रीते ज अहीं 'अघटित कार्य, निंद्य कार्य' एवो अर्थ छे : 'आ केवं अघटित कार्य ?'

विरापःमां 'अकाजि'नो अर्थ संपादकोए 'अकारण' आप्यो छे. गुर्जराःमां पण आ कृति छपायेली छे अने त्यां पण 'अकाजि'नो अर्थ 'without any purpose' आपेलो है, बन्नेमां लेवायेलो अर्थ शंकारपद लागे हे.

संदर्भ एवो छे के कीचके वर्तावेला त्रास पछी द्रौपदी विराट राजाने फरियाद करतां कहे **छे के** *ईपाइं हउं इम अकाबि पीडी /विगोइ***. कीचके** द्रौपदीने त्रास आप्यो ते अकारण. कोई हेत् विना के अघटित कार्यथी, अघटित रीते, खराब रीते, खोटूं करीने ? ''एणे मने **आम खोटी रीते. खराब रीते पजवी''** एम अर्थ होवानो वधारे संभव छे.

८. अखत्र, अखंत्र, अखतर, खत्र

मध्यकाळमां आ शब्द निंद्य, खराब, अयोग्य, अनिष्ट' एवा अर्थोमां वपरायेलो देखाय छे. प्राकृत कोश्न 'अखत (अक्षात्र)' 'क्षत्रियधर्मथी विरुद्ध, जुलम' एवा अर्थमां नोंघे छे. पण 'क्षत्रियधर्मयी विरुद्ध'मांथी 'निंद्य, खराब' एवो अर्थ विकसी शके. ए नोंधपात्र हे के मध्यकालीन गुजरातीमां 'अखत्र' के 'अखंत्र' क्षात्रधर्मना संदर्भमां ज नहीं, व्यापक, सर्वसामान्य संदर्भमां वपरायो छे.

गुर्जरा-अंतर्गत वस्तिगकृत 'चिहुंगति चोपाई'मां एक पंक्ति आम मळे छे : **बनअबन कीयां सवि वार**, डोकरनी कोड न करड सार.

वृद्धावरथानी स्थितिना वर्णननी आ पंक्ति छे. देखीती रीते, माणसे जिंदगीमां करेलां सारांनरसां कार्योंनो अहीं उद्घेख छे. 'खत्र' एटले 'सारुं, योग्य', 'अखत्र' एटले 'खराब, अयोग्य'. संपादकोए अनुक्रमे 'good' अने 'improper' अर्थी आप्या छे ते बराबर है.

सिंहा(म).मां संपादके 'अखत्र, अखंत्र'नो 'क्षत्रियने न छाजे एवं कार्य' एवो स्थूळ शब्दार्थ कर्यों छे, तेमां ए वात वीसरी जवाई छे के आ शब्द अहीं क्षत्रियने नहीं. ब्राह्मपने संदर्भे वपरायो छे. लोम लगड अर्खन ज किउं तथा परीक्षा जोई. निव करुं अकार बन्नेमां 'निंद्य, खराब कर्म' एवो सामान्य अर्थ स्पष्ट छे : "लोभने लीधे

निंद्य कर्म कर्युं', ''आ तो परीक्षा करी. हुं कदी निंद्य कर्म करुं नहीं.''

हरिख्या.मां संपादके 'अखत्र'नो 'गंदुं' एवो अर्थ आप्यो छे ते पण बराबर नथी. बाग उजाडी नाखवामां आव्यो तेना संदर्भमां एवी पंक्ति आवे छे के जात न रही पुष्प केरी, थयुं परम अखत्र. अहीं 'घणुं खराब — खोटुं कार्य थयुं / अनिष्ट थयुं / नुकसान थयुं' एम अर्थ करवो ज योग्य छे.

आरारा.-अंतर्गत राजिंसहकृत 'आरामशोभाचारित्र'मां दीकरीनी अवदशा थयेली छे तेने अनुलक्षीने माता बोले छे के अणचींत्युं ए अखत्र सूं दीसइ ? संपादके आपेलो 'अनिष्ट' अर्घ अहीं बराबर बंध बेसे छे.

भगवद्गोमंडल 'अखत्र' = 'अखतर'नो 'गंदुं, मेलुं, नठारुं' एवो अर्थ नोंधे छे तेमां 'गंदुं, मेलुं'ना अर्थनो आधार कदाच हरिख्या. होय. बीजा '१. मळ, विद्या, २. घणुं, बहु' एवा अर्थो पण नोंधाया छे, पण एना कोई आधारो अपाया नथी. 'पोतानी जातने डाह्यं मानतुं मनावतुं' एवो अर्थ आपी निष्कुळानंदनी आ पंक्ति टांकी छे – अति अखतर नर नरसा घणा रे. परंतु एमां 'निंध' एवो अर्थ ज होचा संभव छे, पाछळ 'नरसा' (=खराब) शब्द आवतो होवा छतां. आने अर्थनी द्विरुक्ति लेखी शकाय.

९. अगम, निगम

'अगम' ने 'निगम'नुं जोड़कुं घणी वार वपराय छे. एमां ए बे शब्दो खरेखर शुं दर्शावे छे ते विचारवा जेवुं छे. एना केटलाक प्रयोगो जोईए.

अखाका.मां --

निगम अगम कहे, पार को नव लहे.

नरका.मा -

- न लहे जोगिया, मुनिवर कोटिया, निगम ने अगम ते हुंने थापी.
- अगम गुरु थकी निगम शिष्य निपना, ब्रह्मनी वातनो भेद जाणे.

मदमो.मां -

- शाहास्त्र भणावो एहने सार, अगंम-नीगंम जे अपरंपार.
- अगंगनीगम जोतीक-जनीन न्याअ-वात पर नेह.

'निगम' शब्द एकली वपरायेली पण मळे छे. पण एनी बधे एकसमान प्रयोग छे. जेमके,

चतुचा.मां -

नीगम नेतनेत करी भाखे.

नरका.मां --

नेतिनेति करी निगम भाखे

प्रेमाका.मां -

जेने निगम नेतिनेति गाय.

अखाका.मां 'अगम'नो अर्थ 'अगम्य' आपवामां आव्यो छे. नरका.मां पहेली पंक्ति परत्वे 'अगम्य, कळी न शकाय एवुं' ए अर्थ तथा बीजी पंक्ति परत्वे 'गूढ शक्ति धरावनार, भविष्यनो विचार करी शकनार' ए अर्थ आपवामां आव्यो छे. आ बीजी अर्थ 'अगम' शब्द गुरुनुं विशेषण होवाने कारणे अपायो छे पण ए अर्थ लेवा माटे शो आधार छे ते स्पष्ट धतुं नथी. आ पंक्ति परत्वे 'निगम'नो अर्थ तो अपायो ज नथी. एम लागे छे के अन्यत्र बधे 'अगमनिगम' ए शास्त्रग्रंथीने दर्शावतुं जोडकुं होय तो अहीं पण एम ज मानवुं जोईए अने 'गुरु' 'शिष्य' ए शब्दोने जुदी रीते घटावया जोईए. 'अगम' ने 'निगम' एम बन्ने छूटां पाडीने उल्लेखवामां आवे छे ते परथी ए बंने शास्त्रग्रंथीना प्रकारो होवानुं स्पष्ट छे तेथी 'अगम'नो 'अगम्य, न कळी शकाय एवुं' ए अर्थ पण योग्य नथी.

मदमो.मां 'अगंम'नो अर्थ 'आगम, शैव शास्त्रो' आपवामां आव्यो छे. संस्कृत कोश 'आगम'नो एक आवो अर्थ नोंधे छे पण बीजा 'परंपरागत पवित्र शास्त्रग्रंथो' 'ब्राह्मणग्रंथो' 'वेद' एवा अर्थो पण नोंधे छे. अहीं 'शैव शास्त्रो' एवो संकुचित विशिष्ट अर्थ लेवा माटे शुं कारण छे ए समजातुं नथी. 'अगंम'नो ए अर्थ करीए तो एनी साथे आवेला 'नीगम' शब्दनो शो अर्थ करवो ? मदमो.मां 'नीगम'नो अर्थ अपायो ज नथी.

'निगम' शब्दनो सर्वत्र 'वेदग्रंथो' एवो अर्थ करवामां आव्यो छे. एने संस्कृत कोशनो आधार छे, परंतु संस्कृत कोश 'वेदनी समजूती आपतो परवर्ती ग्रंथ' एवो पण अर्थ आपे छे.

'अगम' ने 'निगम' द्वारा मूळ ग्रंथ – वेद अने एना परवर्ती ग्रंथोनो उझेख होय ए ज तर्कगम्य लागे छे. कया शब्दनो कयो अर्थ करवो एनो थोडो कोयडो छे ने कदाच मध्यकाळमां संस्कृतमां छे तेवी अस्पष्ट स्थिति ज होय. छतां वधारे संभवित ए लागे छे के 'अगम' द्वारा मूलग्रंथो – वेदग्रंथो अभिग्रेत होय अने 'निगम' द्वारा एना परवर्ती ग्रंथो. नरसिंहनी कृतिमां 'अगम' गुरु अने 'निगम'ने शिष्य कहेल छे ते आ संदर्भमां सूचक बने. 'नेति नेति' कहेनार मात्र वेदग्रंथो ज शा माटे ? त्यां पण 'शास्त्रग्रंथो' एवो सामान्य ने व्यापक अर्थ लेवो जोईए एम लागे छे.

१०. अगाज

'अगाज' एटले अग्राह्म. मध्यकालीन गुजरातीमां एनी केटलीक भिन्नभिन्न अर्थछायाओ विकसेली देखाय छे.

शृंगामं.मां आ मुजब पैक्ति मळे छे :

साची प्रीति न जां भिलइ, तां मनि हुइ अगाज.

संपादके 'अग्राह्म' अर्थ आप्यो छे, ए अहीं 'अस्वीकार्य'ना अर्थमां छे एम समजाय छे : ''साची प्रीति ज्यां न मळे त्यां ए मनमां अग्राह्म — अस्वीकार्य बने छे — मन एने स्वीकारी शकतुं नथी.''

प्रेमाका.मां आ प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

द्राविडदल सागर अगाज.

संपादके 'अग्राह्म, अगाध' एवो अर्थ आप्यो छे. 'अग्राह्म' एटले 'जेनो पार न पामी शकाय एवो, विशाळ' एवी अर्थछाया एमां जोई शकाय.

आरारा.-अंतर्गत समयप्रमोदकृत 'आरामशोभाधोपाई'मां नीचे मुजबनी पंक्ति मळे छे :

आरामसोभा सुं लीधउ संजम राजीयइ रे

ते गुरु पासि **अगाज.**

'अगाज' अहीं 'संजम'नुं विशेषण छे. एनो संपादके 'दुष्कर' अर्थ आप्यो छे ते एम बेसाडी शकाय के 'जेने सहेलाईथी ग्रहण न करी शकाय ते, जेने सहेलाईथी आचरी न शकाय ते.'

'अगाज'नो कोयडारूप प्रयोग तो विमप्र.मां छे :

वीरपुत्र बोलाविवा, ए तु आविवा,

राउ करइ तु **अगाज** तु.

संपादके 'अगाज'नो 'वगर हरकते' एवो अर्थ आप्यो छे ते केवी रीते आवी शके ते तो प्रश्न छे ज, ते उपरांत संदर्भमां ए बंधबेसतो थतो नथी. संदर्भ तो वीर विणकने त्यां पुत्र विमल जन्यो एनो छे. विमलना जन्मने अनुलक्षीने राजा 'अगाज' करे छे. आ 'अगाज' एटले शुं ? पछी वर्णन तो जन्मोत्सवनुं आवे छे. 'अगाज' एटले 'अग्राह्म, घणुं मोटुं' एवो अर्थ थई शके. आगळ आपणे 'विशाळ' अर्थ कर्यो ज छे. तो अहीं 'अगाज' एटले 'मोटो उत्सव' एवो अर्थ करी शकाय ?

११. अघाट (आघाट) ऊभो

नंदब.मां आ प्रमाणेनी उक्ति आवे छे :

साचुं बोल उमी आधाट, राजा तें मारो शा माट ?

संपादके 'अघाट'नो अर्थे 'पूरेपूरुं' आप्यो छे ते संदर्भमां बेसाडी शकातो नथी. उपरांत 'अघाट' आवो अर्थ केवी रीते आपी शके ते प्रश्न छे.

आपणे त्यां 'आघाट' चतुःसीमा माटे वपरातो शब्द छे. मकान 'आघाट' एटले एनी चार सीमा साथे वेचाण आपानुं लखातुं होय छे. अहीं 'उभो आघाट'नो अर्थ 'चारे आघाट — सीमा वद्ये ऊभो रहीने' एटले 'जाहेरमां, खुझेखुझुं एम होवानुं समजाय छे: ''राजाने तें केम मार्यो ए जाहेरमां, खुझेखुझुं साचुं बोली दे.'' ए नींघपात्र छे के 'अघाट'नुं 'आघाट' एवुं पाठांतर मळे छे.

१२. अच्छउं, आछुं

'आहुं' शब्द अत्यारे गुजरातीमां 'झीणुं, बारीक' एवा अर्थमां प्रयोजाय छे, पण संस्कृत-प्राकृतमां 'अच्छ' एटले 'सुंदर, निर्मल' एवा अर्थो छे. हिंदीमां 'अच्छुं' शब्द 'सुंदर, सरस' एवा अर्थमां छे ए जाणीतुं छे अने राजस्थानी कोश पण 'आछौ'ना 'अच्छा, सुंदर, भला, उत्तम' एवा अर्थो नोंधे छे, 'बारीक, झीणुं' एवो अर्थ नहीं.

मध्यकालीन गुजरातीमां पण आ शब्द 'सरस, सुंदर'ना अर्थमां होय एवुं जणाय छै. नरपतिकृत 'वीसळदेव रास' (संपा. ज्हॉन डी. स्मिथ)मां 'आछउ' शब्दनो 'good, fine' (सरस, सुंदर) एवो अर्थ ज लेवायेलो छे. त्यां आछि गोरी, आछा चावळ एवा प्रयोगो मळे छे ते आ अर्थनुं समर्थन करे छे.

परंतु तेरका. (संपा. हरिवल्लम भायाणी)मां 'अच्छय' शब्दनो 'आछुं' अर्य अपायेलो छे. अति अच्छ**ं** सुकुमाल चीरु एवी उक्तिने संदर्भे अपायो छे एटले 'आछुं'नो अत्यारे प्रचलित 'बारीक, झीणुं' ए अर्थ ज अभिप्रेत होवानुं मानी शकाय.

प्राचीफा.मां पण 'आछउं'नो 'झीणुं' अर्थ अपायेलो छे. एमां पण आ वस्त्रनुं विशेषण ज छे – अति**आछउ** सुकमाल चीरु, आछां अंबर.

एम लागे छे के मध्यकालीन गुजरातीमां वस्त्र संदर्भे पण 'आछुं'नो 'सरस, सुंदर' एम ज अर्थ होवो जोईए. उपरना संदर्भोमां बारीक वस्त्रनी कोई प्रस्तुतता नधी. 'वर्णकसमुच्चय' (संपा. भोगीलाल सांडेसरा)मां सामान्य सूचना रूपे अच्छां कपडां पहरियइ एवी उक्ति मळे छे तेमां 'सुंदर, सरस' अर्थ ज लेवानो रहे छे. 'माल निगद' (कोई खाद्य पदार्थ)ने आछु कहेल छे त्यां पण 'बारीक' अर्थने अवकाश नथी, 'सुंदर' अर्थ ज लेवो जोईए.

[कंकावटी]

१३. अज उमां

सिंहा(शा).मां एक पंक्ति आ प्रमाणे मळे छे : अज जमां लें जे दान, मागण जांणि नवी दो मान.

संपादके शब्दकोशमां 'अज' शब्द आपी एनी सामे प्रश्नार्थ मुक्यो छे. भगवदुगोमंडलमां 'अज केडे' शब्द मळे छे, जेनो अर्थ छे 'हवे पछी'. ते बतावे छे के 'अज' शब्द 'आज' माटे वपराय छे. 'आज'नु मूळ 'अद्य' एटले 'अत्यारे, 'हमणा'. तो 'अज उभां' एटले 'अत्यारे ज' 'ऊभाऊभ' एम अर्थ न होई शके ? पापयादीना वर्णनमां आ पंक्ति आवे छे एटले 'अत्यारे ज' 'ऊभाऊभ'नुं तालर्य 'हठ करीने' एवं घटावी शकाय : "जे ऊमाऊम, हठ करीने दान ले ते पाप अने दान आपनार लेनारने मागुण समजीने मान न आपे ते पण पाप."

१४. अजंण

मदमो.मां एक पंक्ति आ प्रमाणे मळे छे :

अंन, नीर, नीद्रा नहीं, अजण आठु जांम.

संपादके 'अजंण'नो अर्थ 'अजीर्ण, अजंपो' आप्यो छे. जेने रक्तपित्त थयो छे एवा माणसनी मनोवेदनानं आ वर्णन छे, एटले 'अजीर्ण' एवा अर्थने तो अवकाश ज नथी. कदाच 'अजंण' शब्द 'अजीर्ण'मांथी आव्यो होवानी संभावना लेखे ज ए नोंध्यो होय, केमके 'अजंपो' अर्थ तो संदर्भमां बराबर बेसी जाय छे. उर्दू कोश अरबी 'अज्न' शब्द 'गूंदर्वु, खमीर करवुं' एवा अर्थमां नोंधे छे. 'अजंण' शब्द एना परथी आव्यो होवानी संभावना छे. 'अजंण' एटले 'वलोवाट, अखस्थता, अजंपो' : आठे पहोर अजंपो, वलवाट.

१५. अडसाला/अडसीला

नेमिलं मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मले छे :

हिवइ थाउ ढीला, अति **अडसीला** किम न थईड देव.

संपादके 'अडसीला'नो अर्थ 'आडा शीलवाळा' आप्यो छो जे भाग्ये ज संतोषकारक गणाय. 'राजस्थानी सबदकोस' 'अडसाला' शब्द 'हठीला'ना अर्थमां नोंधे छे. अहीं 'अडसीला'नो 'हठीला' ए अर्थ बराबर बंधबेसतो आवे छे. 'अडी बेसवुं' एटले 'हठ करवी, जीद करवी' ए जाणीतो शब्दप्रयोग छे. *नेमिछं*.नी प्रस्तुत पंक्तिमां प्रास 'अडसीला' शब्द ज मागे, 'अडसाला' नहीं, अने 'सील' (शील) एक सार्थक घटक बने छे, तेथी 'अङसीला'ने भ्रष्ट पाठ मानी शकाय तेम नथी. एटले 'अडसाला' (जो ए शब्दमां भूल न थई होय तो) उपरांत 'अडसीला' शब्द 'हठीला'ना अर्थमां आपणे स्वीकारवानी रहे: "देव, बह हठीला न धईए."

१६. अणगाल/अगाल

देहलकृत *अभिक*.मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे : जेहिन घरि माजि अणगाल, तेहना सामि विना सूनो संसार.

संपादके 'अणगाल'नो अर्थ 'पूष्कळ' आप्यो छे अने सं.'अनर्गल'मांथी एनी व्युत्पत्ति बतावी छे. 'अनर्गल'मांथी 'अणगाल' न आवी शके एटले 'अणगाल'ना 'पूष्कळ' एवा अर्थने माटे आधार रहेतो नथी. प्राकृत कोश 'अणगाल' शब्द 'दुर्भिक्ष, अकाल'ना अर्थमां नोंघे छे ते ज अहीं होवानो संभव छे. अलबत्त, अहीं 'अकाल' एटले 'खराब समय, माठी दशा' एवो कंईक अर्थ करवो पडे : ''जेना घरे खराब समये बधुं नष्ट कर्युं छे, तेनो स्वामी विना सूनो संसार छे. "

मध्यकाळमां 'अगाल' शब्द अकाल, अयोग्य समय, कवखत एवा अर्थीमां वपरायेलो मळे ज छे. जेमके प्राचीफा.-अंतर्गत 'विरह देसाउरी फागू'मां

फागृणि घरि प्रीय मेल्हए, यौवन पहलिइ अगालि. (फाराणमां प्रियतमे मने घरमां एकली छोडी दीधी, कवखते, ताजी युवावस्थामां.) 'अगाल'मां 'अ+काल' छे, 'अणगाल'मां 'अन्+काल' छे.

१७. अणाथ, अणाथि, आथ, आथि, आध्य लिता.मां नीचे मुजब पंक्ति आवे छे :

जु हुइ **अणायि** घरि, तु जईइं परदेसि.

संपादकोए 'अणाधि'नो अर्थ 'अनाथ' आप्यो छे, जे खोटो छे. 'अनाथ' परथी तो 'अणाह' आदे, 'थ' पण टके नहीं, मध्यकाळमां 'अणाह' शब्द वपरायेली मळे ज छे. 'अणाधि' शब्द तो 'अन्+अस्ति' परथी आव्यो छे, अर्थ छे 'कंई न होवुं ते, दारिद्र्य, गरीबी'. उपर्युक्त पंक्तिमां ए अर्थ स्पष्ट छे : जो घरमां दारिद्र्य होय तो परदेशे जईए.

'अणाथ', 'अणाधि' ए शब्दो 'दारिक्रय, गरीबी के दरिद्र, गरीब' एवा अर्थमां अने 'आथ', 'आथ', 'आध्य' ए शब्दो 'पूंजी, समृद्धि, धनसंपत्ति' एवा अर्थमां मध्यकाळमां व्यापक रीते प्रयोजायेल मळे छे. जेमके. दशस्क-१.मां -

घरमां **अणाव** व्यापी सर्वत्रः (घरमां बधे दारिक्रय व्यापेलुं हतुं.) नंदबःमा –

अणायने शी आय्य ? (दरिद्रने शी संपत्ति ?)

गुण माटइ आप सह लहइ. (गुणने कारणे सह समृद्धि पामे छे.)

आ छेल्ला ग्रंथमां 'आथ'नो 'अर्थ, समृद्धि' एम अर्थ आप्यो छे तेमां 'आथ' शब्द 'अर्थ' परथी आव्यो होवानुं मनायुं लागे छे, जे साचुं नथी.

१८, अणिख

देहलकृत *अभि*ऊ.मां सांढणीना वर्णनमां नीचे प्रमाणे उक्ति आवे छे : **अणिख** तणखा कानि.

संपादके अणिखनो अर्थ 'दोड़ती वखते आंख बंध करी होय तेवी' एम आपे छे अने एनी व्यूत्पत्ति सं. 'अनीक्ष्'मांथी बतावे छे. अर्थ अने व्यूत्पत्ति बन्ने शंकास्पद लागे है. अहीं आंखन नहीं पण केवळ कानन वर्णन होय एवं लागे है. 'कानमां अणिख तणखा छे' एवो अन्वय जणाय छे. अरबीमां 'अनीक' शब्द छे जेनो अर्थ छे 'सुंदर, अद्भुत'; राजस्थानीमां 'अणिख' शब्द छे जेनो अर्थ छे 'भयानक, तेजस्वी'. अहीं आवो कोईक अर्थ होवानी संभावना छे : काने संदर/तेजखी तणखा छे. 'तणखा' एटले शूं ए पण कोयडो छे. संपादके ए शब्दने अग्निना तणखाना अर्थमां लीधो छे, पण ए भाग्ये ज बंध बेसे. काननी ए कोईक लाक्षणिकता होवानी संभव छे. छेवटे आ वर्णन अस्पष्ट ज रहे छे एम कहेवुं पडे.

१९. अणिअ/अणीय आखड

लावल -अंतर्गत 'स्थूलिभद्र एकवीसो'मां नीचे मुजब पंक्ति आवे छे : मझ **अणीय आंखड** प्रीय पाखड. विरिह दाझड देहडुउ.

संपादके 'अणीय आंखड'नो अर्थ 'अणियाळी आंखे' एवो आप्यो छे, पण ए 'अणीआलि आखड़' एवा पाठांतरथी दोरवाया लागे छे. विरहिणी कोशानी आ उक्ति छे अने विरहभावनी अभिव्यक्तिमां अणियाळी आंखनुं कई प्रयोजन नथी. खरेखर तो 'आंखइ'ने स्थाने 'आखइ' एटलूं ज पाठांतर लेवा जेवूं हतूं. 'अणीय आखइ' एटले आखी अणीए, अखंडपणे, संपूर्णपणे. उपर्युक्त पंक्तिनो अर्थ आवो संईक थाय : "प्रियतम विना भारो देह संपूर्णपणे/अखंडपणे विरहथी दाझे छे."

ए नोंधपात्र छे के आ ज ग्रंथमां एक बीजी कृति 'चोवीस जिन स्तवन'मां 'अणिय आखइ' एवी शब्दप्रयोग मळे छे अने संपादके एनो अर्थ 'आखी अणीए, अंणीशद्ध' एवो आप्यो छे. 'अखंडपणे, पूरेपुरा' एवो अर्थ बराबर बेसे छे :

पुरुष **अणिअ आखड़,** सौख्य ते चंग चाखड़,

(पुरुष ए सुंदर सुखो अखंडपणे चाखे छे.)

२०. अणीसर

विक्ररा.मां युद्धवर्णनमां आ प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

फोडी अणीसर जरह जरद सवि तनु तीर जडंती.

संपादके 'अणीसर'नो अर्थ 'अणीदार' आप्यो छे. ए रीते ए जरह, जरद - जे बख्तरनां नामो छे - तेनुं विशेषण बने. पण बख्तरने अणीदार केवी रीते कही शकाय ? तीरने कही शकाय पण ए शब्द तो पंक्तिमां घणो दूर छे अने एनी साथे 'अणीसर'नो अन्वय करवो मुश्केल छे. वस्तुतः भगवद्गोमंडल 'अणीसर'नो अर्थ 'आरपार' आपे छे ने एना समर्थनमां नीचेनुं उदाहरण 'बुद्धिप्रकाश'मांथी आपे छे :

कंठ किठी चंदण कोर्यां भमार पड्यां अणीसर एह.

(चंदनकाष्ठ कोर्यां अने एनी आरपार काणां पड्यां.)

विक्ररा मांनी एंकिमां आ अर्थ बंधबेसतो थाय छे : जरह जरद ए बखारोने आरपार वींधीने तीर शरीर साथे जडाय छे.

*गूर्जरा:-*अंतर्गत हीराणंदकृत 'विद्याविलास-पवाडउ'मां पण आ शब्द वपरायेलो छे:

फोडड पक्खर जरद **अणीसर** तीरइ तीर पडीते.

(पाखर अने जरदने आरपार वींधे छे अने तीर उपर तीर पडे छे.)

२१. अणूरुं, अणूरति

नेमिछं.मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

हुं सदा **अणूरी,** एक न पूरी तइं पुहुचाडी आस.

संपादके 'अणूरी'नो अर्थ 'दासी, पत्नी' एवी आप्यो छे, अने एना मूळमां सं 'अनुचरी' शब्द मान्यों छे. पण मध्यकाळमां 'अणूरुं' शब्द व्यापक रीते 'अधूरुं, ओछुं, न्युन' एवा अर्थमां वपरायेलो मळे छे अने भगवद्गोमंडले आ अर्थमां आ शब्द नोंध्यो पण छे. त्यां 'कान्हडदेप्रबंध'मांथी पंक्ति पण उद्धत थई छे. अन्यत्र आ शब्द वपरायेलो छे. तेनां उदाहरण जुओ :

आरारा-अंतर्गत पूंजाऋषिकृत 'आरामशोभाधरित्र'मां -पीहरनी वांछा करइ, नही अणूंह तांह. (पियरमांथी कई इच्छे एवं त्यां कई ओछं नथी.) *विमप्र*.मां –

किसिउं अणूंहं ताहरइ स्वामि.

(तारा स्वामीने शुं ओछुं छे ?)

गुर्जरा.-अंतर्गत शालिस्रिकृत 'विराटपर्व'मां –

एतलइं अति पराभव पूरी, एक दासपण चित्त अणूरी.

(एक तो दासपणाने लीधे जेने मनमां ओछुं आव्युं हतुं/जे असंतुष्ट हती एवी ए हती, तेमां अति अपमानधी ए भराई.)

गुर्जरा.ना संपादकोए 'अणूरी'नो अर्थ 'unfulfilled, unsatisfied' (वणपुरायेली इच्छाओवाळी, असंतुष्ट) एवो अर्थ आप्यो छे ए संदर्भमां अत्यंत उचित छे. ए ज अर्थ नेमिछंनी उपर्युक्त पंक्तिमां बंध बेसे छे : "हुं सदा वणपुरायेली इच्छावाळी रही. तें मारी एक पण आशा पूरी न करी." असंतुष्ट, कर्कशा स्त्रीनो ज आ उद्गार छे.

भगवद्गोमंडलमां उद्धृत थयेली पद्मनाभकृत 'कान्हडदेप्रबंध'मांनी पंक्ति आ प्रमाणे छे :

लागुं वली **अणूरुं** मानि, जोतां आवइ मरण निदानि.

वीरमदेवनुं कपायेलुं मस्तक अञ्चाउद्दीननी पुत्री पिरोजा समक्ष आवे के त्यारे एना रूप पर ए वारी जाय के. अने पक्षी आ उद्गार करे के. कान्तिलाल ब. व्यासे पोताना संपादनमां आ पंक्तिनो अर्थ आम कर्यों के : "(एने जोतां) वळी मनमां (कांईक) जुदो ज (अणूरुं; सर. अणु=अन्यत्, प्रा.गु.का.सं.) भास थाय के (लागुं) के (जो) तेने (तां) (वीरमदेने) (सर. पाठान्तर — जे तां) खरेखर (निदानि) मरण आप्युं के (के केम) ! (एटलुं तेज अने ताजगी मुख पर हती !)"

व्यासना अनुवादनी मुश्केलीओ स्पष्ट छे — 'मानि'ने 'मिन' तरीके लेवुं पड्युं छे, 'अणूरुं'ने स्थाने 'अणु'नी कल्पना करवी पड़ी छे वगेरे. संदर्भमां पंक्ति कंईक अस्पष्ट तो रहे ज छे, छतां 'अणूरुं' शब्द तो एना प्रचलित अर्थमां ज अर्ही छे एमां शंका नथी. वीरमदेवे पिरोजानुं मोढुं जोवा इनकार कर्यो हतो ते खाद करी पिरोजा अत्यारे, आ उद्गार पछी टोणो मारे छे के ''वीर पुरुषे जे ववन लीधुं हतुं के कुंवरीनुं मोढुं नहीं जोउं तेनो ते भंग करी रह्या छे. जे सुकुलीन साहसिक पुरुष होय छे ते मरण समये पण पोतानुं मान मूकता नथी.'' ए जोतां आ पंकिनो अर्थ आम होवानो संभव लागे छे : ''पण (ए मस्तक) मान परत्वे ऊणुं लाग्युं. ए जोतां मरण नक्की आव्युं छे.'' आ अर्थ दुराकृष्ट लागे तो ''वळी ओखुं आव्युं छे एम माने छे'' एदो कंईक अर्थ लेवो जोईए.

'अणूरुं'ना मूळमां सं.'अन्+पूर्' छे. आनुं संज्ञारूप 'अणूरति' (सं.'अन्+पूर्ति') पण समयप्रमोदकृत 'आरामशोभा चोपाई'मां वपरायेलुं मळे छे :

किसीय अणूरति तास.

(एने शी न्यूनता / खोट छे ?)

२२. अत

षडाबा.मां नीचे प्रमाणेना एकथी वधु प्रश्नोत्तर मळे छे :

"छम्पास उत्कृषु तपु रे जीव ! करी सकइ ?"

"**अत** न सकुं."

संपादक प्रबोध पंडिते 'अत'ना 'now, here' एवा अर्थो आप्या छे ने आ

शब्द सं. 'अत्र' परथी आवेलो मान्यो छे. 'अहीं' अर्थ लईए तोपण एनुं तात्पर्य 'आ बाबतमां' एम छे एवुं समजवुं जोईए. पण 'अत' सं. 'अत्र' परथी आवेलो मानवो योग्य छे के केम ते प्रश्न छे. संस्कृतमां 'उत' संदेहवाचक, अनिश्चिततावाचक छे तेना परथी पण 'अत' आवी शके अने ए अर्थ आ संदर्भमां बराबर बंधबेसतो आवे छे : "कदाच न करी शकुं," एम लागे छे के 'कदाच' अर्थ ज लेवो जोईए.

२३. अतिधज

विक्ररा.मां नीचे प्रमाणे पंक्ति मळे छे :

अतिथव गांडइ शत्रुकार.

संपादके 'अतिघज'नो 'पैसादार' एवी अर्थ आप्यो छे. ए 'कोटिघ्वज' शब्दथी दोरवाया लागे छे. पण 'शत्रुकार' (=सदाव्रत, अन्नदानशाला) पैसादार केवी रीते होई शके ? 'ध्वज' शब्द उत्तुंगतानुं सूचन करे, कदाच समृद्धिनुं पण. परंतु अहीं 'अतिधज' एटले 'भारे मोटो, भव्य' एवो ज कंईक अर्थ लेवो जोईए.

२४. अतिसंता

ऋषिरा.मां नीचे मुजब पंक्तिओ मळे छे : निज करइ जे तह रोपीया, पीऊ साथि आवंतां, ते तह दीठा नयणले, नव सा थई अतिसंता.

संपादके 'अतिसंता'नो अर्थ 'अत्यंत थाकेल' आप्यो छे ने एनी व्युपित सं. 'अतिश्रान्त'मांथी बतावी छे. व्युपिति तो बराबर छे, पण अर्थ संदर्भमां संगत थतो नथी. जे वृक्षोने पोते रोप्या हता तेने जोतां ऋषिदत्ताने थाक लागे ? के सारुं लागे ? 'अतिसंता' (अतिश्रान्त) एटले 'विश्रांत, अत्यंत आराम पामेल' एवो अर्थ ज लेवो जोईए.

२५. अधरास, ओलववुं, ऊलववुं

नरिसंहना एक पदमां नीचे मुजबनी पंक्ति मळे छे : कालिंदीने कांठडे वाले ओलिबयो अधरास रे.

नरका.ना संपादके 'अधरस'ना बे अर्थी आप्या छे – (१) नीचेनो भाग (सं. अधःअंश) अने (२) अधरनो भाग; अने 'ओलवियो'नो 'पचावी पाड्यो, संताड्यो' एवो अर्थ आप्यो छे. नरप.ना संपादके 'अधरास'नो 'रासलीलामां' एवो अर्थ आप्यो छे अने एमां सं. 'अधिरास' शब्द होवानुं मान्युं छे. तथा 'ओलवियो'नो 'कह्युं' एवो अर्थ आपी एनी व्युत्पत्ति सं. 'उद्लप्'मांथी बतावी छे. देखीती रीते ज 'ओलवियो अधरास' ए वर्णन आ बन्ने अर्थघटनोमां अस्पष्ट ज रहे छे. ''नीचेनो भाग/अधरनो भाग पचावी पाड्यो/संताड्यो' ए अर्थ घणो कढंगो छे अने 'रासलीलामां कह्युं' ए

अर्थने प्रस्तुत वर्णनमां केवी रीते स्थान आपवुं ते कोयडो रहे छे.

वस्तुतः आ कालिंदीने कांठडे कृष्णे गोपीनी करेली छेडछाडनुं, शृंगारक्रीडानुं वर्णन छे. तेथी 'अधरास' ए 'अधरासव'ने स्थाने आवेली शब्द होवानो संभव छे एवुं डॉ. भायाणीए मने सूचन कर्युं ते वाजबी लागे छे. 'ओलववुं' शब्द मध्यकाळमां 'छुपावुं, संताडवुं' एवा अर्थमां जोवा मळे छे ते उपरांत 'ओळववुं' शब्द 'पचावी पाडवुं, लई लेवुं, चोरी लेवुं' एवा अर्थमां अत्यारे पण प्रचलित छे. सं.'अपलप्' एटले 'छुपाववुं', एमांथी 'चोरीछूपीथी लई लेवुं' एवो अर्थ आवी शके. आ रीते 'ओलवियो अधरास'नो अर्थ आम यई शके : अधरासव एटले के अधररस चोरी लीधो / बळात्कारे लीधो / इंटवी लीधो.

'ऊलववुं'/'ओलववुं' शब्द वधारे तो 'छुपाववुं, संताडवुं'ना अर्थमां मध्यकाळमां वपरायो छे. जेमके, *अंबरा*.मां –

- (१) सइयाणी आगलि तूं पेट सिउ जलवइ.
- (२) अलुक परइ **फलवइ** आप.

संपादके 'संताडे, छुपावे' एवो अर्थ आप्यो छे ते बराबर बेसी जाय छे : (१) सुयाणी आगळ तुं पेट शुं छुपावे छे ? (२) धूवडनी पेटे पोतानी जातने संताडे छे.

सिंहा(म).मां -

देवदत्त मिन सुप्रमाण, मनशुधिइ करइ वखाण.

कइ कारिमु परीक्षा भणी, राजकुयर उलबीउ मति घणी.

संपादके 'छुपाववुं, संताडवुं' एवो अर्थ आप्यो छे ते योग्य छे : ''देवदत्ते मनमां विचार्युं के राजा खरा मनथी वखाण करे छे के खोटेखोटा ? एनी परीक्षा करवा एणे घणी बुद्धिथी राजकुंवरने संताडी दीधो.''

*वाग्भबा.*मां -

जिहां सादृश्य शरखाइतु अपह्नव जलविवापूर्वक इसिउं बोलीइ.

संपादक भोगीलाल सांडेसराए 'अपह्नुतिपूर्वक, ढांकवा साथे' एवो अर्थ आप्यो छे ते मूळमां ज छे एम कहेवाय : ''ज्यां सादृश्यने कारणे अपह्मवपूर्वक एटले ढांकीने आम कहेवामां आवे.''

गुर्जरा.-अंतर्गत शालिसूरिकृत 'विराटपर्व'मां -

मरण नइं भइ गिउ मझ भोलवी,

किस्युं किह्यां उरतु हिव औलवी.

संपादकोए 'assuage, cool down' (शांत करवुं, ठारवुं) एवो अर्थ आप्यो हे पण आ भ्रष्ट पाठनुं परिणाम हे. संपादकोने पाठ 'उर' मळयो हे तेनुं तेमणे 'उरतु' कर्युं छे.

विराप.मां पाठ आ प्रमाणे छे :

किसउं क्यांह रिह्मउ अह ओलबी.

संपादकोए 'छुपाची' अर्थ आप्यो छे ते बराबर बेसे छे : ''हवे शुं क्यांक पोतानी जातने छुपाचीने रह्यो छे ?''

मध्यकाळमां आ शब्द 'पचावी पाडवुं, चोरीथी लई लेवुं' एवा अर्थमां पण अन्यत्र वपरायो छे ज. जेमके,

नलरा.मां -

कहिनी वस्तु न जाय उत्तवी.

संपादके 'खोटी रीते पचावी पाडवुं' एवी अर्थ आप्यो छे ते यथायोग्य छे : "(नळना राज्यमां) कोईनी वस्तु ओळवी/पचावी पाडी शकाती नथी."

आ शब्द 'लोप करवो, द्रोह करवो' एवी जरा ज़दी अर्थछायामां पण वपरायो छे ए खास नोंधपात्र छे. जेमके आनंस्त.मां शासनमार्गनइ एलवइ एम उक्ति छे त्यां शासनमार्गनो लोप / द्रोह करवानो अर्थ छे. संपादके 'लोप करे' एवो अर्थ आप्यो ज छे. उपवा.मां साधुमार्गने तथा गुरुने ओळववानी वात छे त्यां पण ए ज अर्थ छे, अने संपादके ए अर्थ लीधो छे. हरिफा.मां गिउ हरि उलवी एवी उक्ति आवे छे तेमां संपादके आपेलो 'संताई' ए अर्थ शंकास्पद लागे छे, केमके मध्यकाळमां 'ऊलववुं' / 'ओलववुं' एटले 'संतावुं' नहीं, पण 'संताडवुं' एवो अर्थ व्यापकपणे छे. अहीं द्रोह करवो एटलेके छेतरवुं एवो अर्थ होवा संमव छे : ''हरि अमारो द्रोह करी / अमने छेतरीने चाल्यो गयो.''

[एतद्, एप्रिल-जून, १९९४]

२६. अनिवड, निवड

आरारा.मां 'अनिवड' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो मळे छे :

मत द्यउ कोई पासे **अनियड** आईवा रे.

संपादके सं. 'अनिवर्त'मांधी व्युत्पत्ति सूचवी 'अनिवड'नो अर्थ 'साव ? एकदम ?' एम नोंध्यो छे. देखीती रीते ज, संदर्भमां कंईक बेसी शके तेवा अर्थनो तर्क करवामां आव्यो छे. मूळ तरीके दर्शावेल सं. 'अनिवर्त' आवो अर्थ भाग्ये ज आपी शके.

जिनरा.मां 'अनिवड' शब्द अनेक वार वपरायो मळे छे. जेमके,

- (9) **अनिवड** थातां वार न लागइ जे सगा.
- (२) न कहइ फोरे वचन जउ किसा, तइं अनिषड जाणी तो दिसा,

दीसउ वड वयरागि जिसा, ए वइराग कहउ किण मिसा.

- (३) पलकमांहि अनिवड हुअउ रे, तिण तुझनइ साबासि रे.
- (४) सीख करै वाटै मिल्या रे, वीछडवानी वार, ते तो अह्म सुं सीख न का करी रे, अनिषड जेम विचार. संपादके 'अनिवड' शब्द शब्दकोशमां नोंध्यो छे, पण एनो अर्थ आप्यो नधी. जिनगामां 'निवड' शब्द पण वपरायो छे :
 - (9) वात कहइ जे पापनी, तिण साथइ हो करुं निवड सनेह.
 - (२) बगिस गुनह ए बापजी, हिव मो सुं हो धरि निवड सनेह.
 - (३) जेह सुं निवड सनेह ते तउ वीसार्या निव वीसरइ.

एम लागे छे के 'निवड'ना प्रयोगो ज चावीरूप बने तेवा छे. बधे 'निवड' 'स्नेह'नुं विशेषण छे. त्रीजुं दृष्टांत 'गाढ, ऊंडो' एवो अर्थ स्पष्ट रीते आपे छे: ''जेना प्रत्ये गाढ/ऊंडो स्नेह होय ते विसार्या वीसरता नधी.'' पहेलां बे दृष्टांतोमां पण ए अर्थ निर्विघ्ने लई शकाय छे. ए बन्ने पंक्तिओ प्रमुप्रार्थनाना पदमांथी छे. पहेली पंक्तिमां पोते पाप साथे ऊंडो स्नेह कर्यो हतो तेनो उल्लेख छे, बीजी पंक्तिमां तीर्थंकरदेवनो ऊंडो स्नेह प्रार्थ्यों छे.

'निवड' शब्द 'निकट'मांथी आव्यो होवानो तर्क थई शके. प्राकृत कोश 'णिअड (निकट)' शब्द 'पासे, पासेनुं' एवा अर्थमां नोंधे छे. जो आ बराबर होय तो 'निवड' एटले 'निकटनो, आत्मीय, गाढ' एवो अर्थ लेवानुं खोटुं न कहेवाय. अने 'अनिवड'नो 'दूर्तुं, अनात्मीय' एवो अर्थ थाय.

ए नोंधपात्र छे के 'निवड'नी पेठे 'अनिवड' स्नेहना विशेषण तरीके क्यांय वपरायेलो नथी. ए एकलो ज वपरायो छे. एथी एमां 'अनात्मीय' उपरांत 'पराया' 'निःस्नेही' एवा अर्थने पण अवकाश जणाय छे. जेमके,

- (9) जे सगा छे तेमने अनात्मीय / पराया थतां वार लागती नथी.
- (३) पलकमां अनात्मीय / परायो / निःस्नेही थई गयो छे ते माटे तने शाबाशी घटे छे. (मातानुं दीक्षा लेवा तैयार थयेल पुत्र प्रत्येनुं आ व्यंगवचन छे.)
- (४) जुदा थवाने प्रसंगे रस्ते मळी गयेला लोको पण विदाय मागे छै / रजा मागे छे तो अमारी केम विदाय / रजा न मागी अने आम पराया / निःस्नेहनी जेम विचार कर्यों ?

बीजा उदाहरणना अन्वयो बराबर स्पष्ट थता नथी, पण एमां 'अनिवड'नो आवो ज अर्थ लेवानो रहे.

[डॉ. भायाणीए, पछी, 'निवड'नी व्युत्पत्ति सं. 'निविड'मांथी दर्शावी. पण

अर्थघटन तो एमनुं एम ज रहे छै.]

२७. अनुभाव, अनु भाव

गुर्जरा.मां 'अनुभाव' शब्द आ प्रमाणे वपरायो छे : वाजइ तूर अनाहत, नाह तणइ अनुभावि, आणड एक अनेकप, एक पलाणइं वाह.

संपादकोए 'अनुभाव'नो 'by the dignity, by the authority' (गौरवयी, अधिकारथी/सत्ताथी) एवो अर्थ आप्यो छे. प्रसंग नेमिनाथना वरघोडानो छे. एमां 'अधिकार के सत्ता'नो अर्थ प्रस्तुत जणाती नथी, केमके नेमिनाथ राजवी नथी, राजकुमार छे. एना करता 'गौरव, महिमा' एवो अर्थ वधु प्रस्तुत बने तेवो छे. त्यां पण 'गौरवथी' नहीं पण 'गौरवमां, गौरव अर्थे' एम अन्वय वध्र उचित लागे छे : "नाथना गौरव के महिमाने अर्थे शरणाइ वागे छे" वगेरे.

. *आनंस्त.*मां पण 'अनुभाव' शब्द मळे छे :

भवोभवथी अभिनव ए द्रव्यथी अनुभावथी ते कहीइ छइ.

संपादके 'अनुभाव'नो 'कर्मनो विपाक' एवो अर्थ आप्यो छे, पण अहीं पाठनुं वाचन ज दोषयुक्त होय एवं लागे छे. स्तवननी जे पंक्तिनी समजूती तरीके आ वाक्य आवे छे ते पंक्ति आ प्रमाणे छे :

भविभवि रे द्रव्य भावथी भाखींड रे.

जोई शकाय है के मूळमां 'अनुभाव' नधी, 'द्रव्य' अने 'भाव' हे, एटले विवरणना 'अनुभाव' शब्दने 'अनु भाव' तरीके वांचवो जोईए. 'अनु' एटले 'अने'. 'अनु' आ अर्थमां मध्यकालीन साहित्यमां वारंवार वपरायो छे. जेमके, *गुर्जरा*.मां --

- पणमीउ सामीउ नेमिनाह अनु अंबिकि माडी
- 🗰 सर्वे सतक्खण रूयवंत अनु कंचणवत्रि
- सीसि चमर बंबाल अनु कांठे कुसुमह माल.

२८. अप्रमाण

गुर्जरा.मां आ शब्द आ रीते वपरायेलो मळे छे :

तिमि खिण मेल्हिउं वणचरि बाणुं, ऊडिउं गयणि हुउं अप्रमाणुः

संपादकोए 'अप्रमाण'नो अर्थ 'unknowable, invisible' (अज्ञेय, अदृश्य) एवो आप्यो छे. बाण आकाशमां गयुं तेथी अदृश्य थई गयुं एम तेमणे घटाव्युं लागे छे, पण 'अप्रमाण'नो आवो अर्थ लेवा माटे कोई आधार जणातो नथी. 'अप्रमाण' एटले 'असिद्ध', अहीं 'निष्फळ, नकामुं' : ''ते क्षणे वनचरे बाण छोड्युं. ते आकाशमां गयुं ने तेथी निष्फळ नीवड्यूं."

आरारा.मां पण आ शब्द वपरायेलो मळे छे :

वहिली नावि तु तुं जाणि, मइ तुझ दीठउ अध्याजः.

संपादके 'अप्रमाण'नो 'असिद्ध' एवो अर्थ आप्यो **छे. अर्ही 'असिद्ध' एटले** 'अशक्य, असंभवित' : "वहेली न आवे तो तने हुं जोई शक्तुं ते तुं अशक्य/असंभवित जाणजे (एटले के हुं-तुं मळी शकीशुं नहीं)."

२९. अबाह

गुर्जरा.मां 'अबाह' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो छे :

तापिइं पीडिउ विलवइ अबाह.

संपादकोए 'अबाह'ना मूळमां 'बाहु' शब्द मानी एनो अर्थ 'without hands' (हाथ विना) एवो आप्यो छे. आ अर्थ अहीं असंगत छे ते सहेलाईथी समजाय एवं छे. रडवानुं वळी बाहु विनानुं केवुं ? ए स्पष्ट छे के 'अबाध' परयी 'अबाह' आ़वेलो छे ने एनो अर्थ थाय 'अंतराय विना, अत्यंत, खूब' : "तापथी पीडवामां आवेलो ते खूब विलपे छे."

ए नवाईनी वात छे के अन्यत्र 'अबाहु' शब्द वपरायेलो छे त्यां संपादकोए एने 'अबाध'मांथी व्युत्पन्न करी एनो 'without obstacle, freely' (अन्तराय विना, विघ्न विना, मुक्तपणे) एवो अर्थ आप्यो छे. निर्दिष्ट प्रयोगो आ प्रमाणे छे:

- (१) पांचि पंचाले लिउ सनाहु, आविउ घडूउ कूंयरु अवाहु.
- (२) धाइं धसइं ते ऊधसइं, विलसइं हसइं अबाहु-

बीजा उदाहरणमां 'मुक्तपणे' अर्थ चाली शके तेम छे पण 'अन्तराय विना' एटले 'खूब' ए अर्थ पण करी शकाय : ''मुक्तपणे/खूब हसे छे." पण पहेला उदाहरणमां ए अर्थ योग्य रीते बंध बेसशे नहीं. त्यां 'अबाहु' कुंवर घटोत्कचनुं विशेषण छे. एटले 'जेने कशो अंतराय नडतो नथी एवो वीरपुरुष, अप्रतिरोध्य' एवो कईक अर्थ लेवो जोईए एम लागे छे : "अप्रतिरोध्य घटोत्कच कुंवर आब्यो."

३०. अभोखर, आभोखर, अभोखण, अमोखणुं, अंबोचण, अबोखण विक्रच.मां 'अभोखु' शब्द आम वपरायेलो छे :

खापरउ जाम पहुतु बारि, दीयउ **अभोतु पाणीघारि**.

संपादके 'अभोखु'नो 'अपोषण' अर्थ आप्यो छे. 'अपोषण' (सं.आपोशान) एटले जमती वखते, आरंभे के अंते आचमन लेवुं ते. अहीं ए अर्थ केवी रीते संगत बने ? भीजन प्रसंग तो अहीं छे ज नहीं. खापरो बारणे आवे छे त्यारे तेना करवामां आवता सत्कारनुं अहीं वर्णन छे, जेमां पाणीनी धाराथी 'अभोखु' आपवामां आव्युं एम कहेवामां आव्युं छे. ए वर्णन आचमन साथे बंध बेसे नहीं.

ए नोंघपात्र छे के उक्तिर. 'अभोखउ' (तेमज 'अभोखणुं') शब्दनो अर्थ 'अच्युक्षणम्' आपे **छे, जेनो अर्थ था**य छे 'सिंचन, छंटकाव'. वणी अन्य कृतिओमां 'अमोखण' शब्द वपरायेलो मळे छे त्यां बधे सत्कारनो प्रसंगसंदर्भ छे. सत्कारमां पाणीथी पण धोवानी प्रणालिका जूना समयमां हती. तेथी अहीं 'अभोखुं' एटले 'सत्कार रूपे पाणीनुं सिंचन' एवी अर्थ ज लेवी जोईए.

अन्य प्रयोगो का प्रमाणे छे :

विमग्रमां –

सोवन करवी दीड अभोखण, साजण हरखि भरिया.

संपादके 'आवकार' अर्थ आप्यो छे, पण ''सुवर्णनी झारीथी पाणी सींचे छे'' एवो अर्थ स्पष्ट छे.

. लावल.मां –

मिन विषा अभोताम दि घणां, वीरमती मेल्हइ बेसणां.

संपादके 'अभोखण'नं मूळ सं.'अम्भोष्ण' मानी 'गरम पाणी' एवो अर्थ कर्यो छे. पण सत्कार रूपे सींचवामां आवता पाणीनो अर्थ स्पष्ट छे. बेसणां आपवानुं पछी आवे छे ते पण सूचक छे.

आरारा:मां --

संपटि मिल्या बारि ए. आभोखड़ आपउ वारि ए.

लग्न वेळाए वरने पोंखवामां आवे छे ते प्रसंगनो अहीं संदर्भ हे एटले संपादके 'अमोखइ'नो लीधेलो 'सल्कार रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां' ए अर्थ यथायोग्य छे.

अभिक्रमां 'अंबोधण' शब्द मळे छे :

राणी सुदर्शना दीधलां भंगार रे, अंबोषण सह्नि मानिं हवा.

संपादके 'अंबोबण'नो 'कीगळा' अर्थ आप्यो छे, जे भाग्ये ज प्रस्तुत गणाय. प्रसंग महेमानीना स्वागतनी छे एटले 'अंबोषण' ते 'अभोखण'ने स्थाने आवेलो होय एम लागे छे. "बधांने मान रूपे पाणीनुं सिंचन करवामां आव्युं" एवो अर्थ लई शकाय **हे**.

'अबोखण', अलबत्त. सिंहा(शा).मां 'अपोशण' एटले 'भोजन वेळाना आचमन'ना अर्थमां वपरायेलो मळे छे :

अबोट अबोखन अति घणां, को भिक्षावश थाय.

ब्राह्मणना व्यवहारोना वर्णनमां आ आवे छे तेथी अबोट करवा, आचमन लेवुं, **भिक्षा मागवी वगेरेने ब्राह्मणना व्यवहारो** तरीके समजी शकाय छे. आयी संपादके आपेलो 'अपोशण' अर्थ योग्य छे. पण 'अभिवन-ऊझणुं'मां 'अंबोषण' ए 'अभोखण'नो भ्रष्ट पाठ होवानी शक्यता ज बळवान छे.

३१. अमलीमाण, अमलीमान

ऐतिका.मां 'अमलीमान' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो मळे छे :

जग मां<mark>हे अमलीमान</mark> सूरि ज तेज समान.

संपादके 'निर्मल मानवाला' एवो अर्थ आप्यो छे ते भूलभरेलो छे. 'अमली' ए शब्द सं.'अमर्दित' परथी आवेलो छे. 'अमलीमान' एटले 'जेनुं मान अमार्दित, अखंडित रह्युं छे एवो.

जिनरा.मां पंक्ति छे :

बंधव अमलीमाण.

'अमलीमाण'नो अर्थ 'अगंजित' (अपराजित) आप्यो छे ते चाली शके. मान मर्दित न थवुं एटले अपराजित रहेवुं.

३२. अमाइ, अमामो, अमाणुं, अमान, अमानी

तेरका.मां 'अमाइ' शब्द आ प्रमाणे वपरायेलो छे :

लहिय छिद्दं सवि दुख अमाइ.

संपादके शब्दकोशमां 'अमा-' सामे प्रश्नार्थ मूक्यो छे, परंतु एमणे आ पंक्तिनो अनुवाद ''लाग मळतां सौ दु:ख आवी पडे छे'' एवो आप्यो छे. 'अमाइ'नो 'आवी पडे छे' एवो अर्थ संदर्भधी बेसाडेलो छे ए स्पष्ट छे.

'माइ' एटले 'माय, समाय'. 'अमाइ' एनो विरोधी शब्द होवानुं समजाय छे. 'अमाइ' एटले 'न माय' एटलेके 'ऊभराय'. 'छिद्र/लाग मळतां सौ दुःख ऊभराय छे' एम ए अर्थ बराबर बंध बेसी जाय छे. ए नोंधवुं जोईए के राजस्थानी कोश 'अमाइ' शब्दनो 'अप्रमाण, बहुत, अधिक' एवो अर्थ आपे छे. त्यां 'अमाइ' क्रियापद नहीं पण विशेषण छे.

'अमा-' परथी बनेलो बीजो एक विशेषणशब्द छे 'अमामो'. 'जिनराज-कृति-कुसुमांजलि'मां ए वपरायेलो छे :

- (9) एकण दूध अमामो दीयो, घृतनो बीडो बीजी लीयो.
- (२) चरणकरण धन माल, **अमामो** लूटिसी.

पहेली पंक्तिने संदर्भे संपादक 'अमूल्य' अर्थ आप्यो छे तेमां कंईक भ्रान्ति थयेली जणाय छे. 'अमामो' शब्दना मूळमां 'अमा-' होवानुं स्पष्ट छे, आथी एनो अर्थ 'न माय तेटलुं, अमाप, पुष्कळ' एम ज लेवो जोईए. दूधने अमूल्य कहेवामां कंई स्वारस्य नथी, घणुं दूध आप्युं एम ज अभिष्रेत होई शके. बीजी पंक्तिमां पण 'पुष्कळ'नो अर्थ बराबर बेसी जाय छे. राजस्थानी कोश 'अमाव' शब्द 'खूब, बेहद'ना अर्थमां नोंधे छे

ते 'अमाप' साथे तेम 'अमामो' साथे संबद्ध गणाय.

भगवद्गोमंडल तथा बृहद् गुजराती शब्दकोश 'अमामो' शब्दनो 'अमूल्य' अर्थ आपे छे ते पण भ्रान्त गणवुं जोईए. भगवद्गोमंडले 'आनंदकाव्यमहौदिधि'मांथी *पण* सादुं बाझे नहीं, कहे अमामो माल ते उदाहरण आप्युं छे तेमां पहेली दृष्टिए 'अमूल्य' अर्थ बेसी जाय, पण समग्र प्रयोगपरंपरा जोतां 'अमाप, पुष्कळ' ए अर्थ ज लेवो जोईए. प्रसंगसंदर्भ मळे तो आ वात वधारे सारी रीते स्थापित करी शकाय.

अखाका.मां 'अमाणुं', 'अमान', 'अमानी' मळे छे ते पण 'अमा-' साथे संकळायेला ज मानवा जोईए :

> भाईओ ! भव संताप, भात देखीने भूलवुं, अक्षर **अमार्णुं** आप, आठे पहोर अखो कहे.

संपादके 'अमाणुं'ना मूळमां अरबी 'अमान' शब्द मानी 'रक्षण' एवो अर्थ आप्यो छे तेने संदर्भमां केवी रीते बेसाडवो ते कोयडो ज छे. 'अमाणुं' एटले 'मान – माप वगरनुं, अनंत' एवो अर्थ लेतां वाक्यार्थ बराबर बेसी जाय छे: ''आत्मतत्त्व अक्षर अने अनंत छे.''

ए अनुभव अद्भुत अमान.

संपादके 'अमान' शब्दना बे अर्थ आप्या छे : सं.'अ-मान' एटले 'अहंभाव विनानो' अने अरबी 'अमान' एटले 'निर्भयतानो, अमरत्वनो'. 'मान' शब्द संस्कृतमां 'माप'ना अर्थमां पण छे ए संपादकने स्मरणमां आव्युं नथी तेथी ज आवा अर्थोमां खेंचाई जवानुं बन्युं छे. अहीं पण पंक्तिनो अर्थ स्पष्ट छे : "ए अनुभव अद्भुत अने अमाप, अनंत छे."

पिंड-ब्रह्मांड ते काच ज स्थानी, तेहेनुं पोषण वस्तु सदा अमानी.

संपादके 'अमानी'नो 'मानी शकाय नहीं तेवो' एवो अर्थ आप्यो छे त्यां वळी, एमां 'मान' शब्द रहेलो होवानुं वीसराई जवायी त्रीजा ज भळता अर्थ तरफ खेंचाई जवानुं बन्युं छे. अहीं 'वस्तु' शब्द स्त्रीलिंगनो होवाथी 'अमान'नुं 'अमानी' थयुं छे. 'आप' अमान, पण 'वस्तु' अमानी. अर्थ तो एक ज छे. वस्तु एटले ब्रह्मने 'अमाप, अनंत' कहेवामां आवेल छे.

[अनुसंधान-२]

३३. अनिआउ, अन्या, अंन्ना, अन्नैयो, अन्याई

'अन्याय' शब्द आजे आपणे बीजाओ प्रत्येना अणछाजता, हानिकर्ता ने जुलमी वर्तन माटे वापरीए छीए. मध्यकाळमां आ शब्द 'दोष', 'वांक', 'गुनो', 'अटकचाळुं', 'तोफान' एवा अर्थोमां तथा 'अन्यायी' शब्द 'अटकचाळो' 'तोफानी' एवा अर्थोमां वपरातो देखाय छे. जेमके,

उषाह.मां --

अनिआउ अहो सवि कीधा, सांसिंह देव मुरारि.

संपादके 'अनिआउ'नो 'अन्याय' एवो अर्थ आप्यो छे. पण आ बाणासुरना मंत्री कुंभ अने महादेवनी उक्ति छे. कृष्णने शरणे आवतां तेओ आम बोले छे. कुंभ महेता अने महादेवे वळी कया अन्याय कर्या हता ? कृष्णनी सामे धवानो दोष, गुनो एमणे कर्यो ए ज. एथी आ पंक्तिनो अर्थ आम ज करवो योग्य छे : ''अमे घणा वांकगुना कर्या छे मुरारि देव, ए आप सही लो.''

नलरा.मां -

कूबर दुष्टमां मूलगु, सेवइ व्यसन सात रे, अन्या मारगि ते हींडइ, नवि जाणइ पुण्य वात रे.

संपादके 'अन्या'नो 'अन्याय' एटलो ज अर्थ आप्यो छे. पण अहीं पुण्यमार्गनी सामे अन्यायमार्ग मुकायेलो छे, तेथी अन्यायमार्ग एटले दुष्कर्मनो, पापनो मार्ग एवो अर्थ वधारे उचित छे: "'कुबेर दुष्टोनो अग्रणी छे. ए सात व्यसनो सेवे छे ने दुष्कर्म, पापकर्मने मार्गे चाले छे. पुण्यनी वात ए समजतो नथी."

चतुचा.मां --

एहवो अन्या मनमां धरी, वढशो वहालाने साथ.

गोपी साथे क्रीडा करतां कृष्णयी राधानुं नाम लेवाई गयुं ए संदर्भमां बोलायेलुं आ वाक्य छे. संपादके योग्य रीते ज 'अन्या'नो 'दोष, वांक' एवो अर्थ आप्यो छे : ''वहालानो ए दोष मनमां राखीने एनी साथे झघडों करशो ?''

प्रेमाका.-अंतर्गत 'दशमस्कंध'मां --

अमो आचर्या **अन्या** कैं लक्ष.

संपादकोए 'अन्या'नो 'अन्याय, दोष' एवो अर्थ आप्यो छे, परंतु वृक्षनो अवतार पामेला कुबेरना बे पुत्रो नलकुबेर अने मणिग्रीय मद्यपान, विषयलंपटता वगेरे पोतानां निंद्य कर्मोनो स्वीकार करतां आ वाक्य बोले छे तेथी 'अन्या'नो 'दोष, दुष्कर्म' एवो अर्थ ज योग्य गणाय.

ए ज कृतिमां -

स्वभाव छे स्त्री तणो रे, नग्न सर्वथा नाह्य,

एवुं जाणी अमे पेठा जळमां, ए यई आव्यो अन्याय.

संपादके अहीं 'दोष' अर्थ आप्यो छे ए यथायोग्य छे. गोपीओ पोते नदीमां नग्न थईने नाही एने पोतानो दोष गणावे छे. प्रेमानंदकृत 'नळाख्यान'मां पण 'अन्या' शब्द वपरायेलो छे :

नळ छे कुंवारो, नथी कन्या, छे ब्रह्मानो मोटो अन्या.

नळने माटे कन्या नथी सर्जी ए ब्रह्मा एटलेके विधातानो मोटो दोष छे एम ं अहीं अभिप्रेत **छे**.

कस्तवाःमाः –

लोभे लक्षण जाय. अन्या अति अधर्मे.

संपादके 'अन्या'नो 'अन्याय' एवो अर्थ आप्यो छे, पण अहीं लोभनां परिणामो वर्णव्यां हे, तेथी 'दोष'नो अर्घ लेवो ज वाजबी हे : "लोभ करवाथी सारां लक्षण नष्ट थाय छे. अधर्मनो दोष यई जाय छे."

वेताप्रमां -

पारवती बोत्या मावडी. 'ओर शीव, अन्या आवडी, जीव ए सह कोना जाय छे, ए पाप आपरणें थाय छे.'

संपादके 'अन्याय' अर्थ आप्यो छे ते देखीती रीते चाले, पण पांच पुरुषो मरवा तैयार थया छे ते संदर्भमां आ वाक्य बोलायुं छे तेथी 'खोदुं कर्म' एवो अर्थ ज वधारे उचित गणाय : "अरे शिव, आ केटलुं खोटुं थाय छे ! आ सहुना जीव जाय छे एनुं पाप आपणने लागे छे."

चंद्रवा.मां –

जुए सौ को जगत, कोये केहे नहि अंबा.

निशा विशेनी समस्यामां आ पंक्ति आवे छे तेथी संपादके आपेलो अर्थ 'दोष. वांक, खोडखांपण' यथायोग्य छे : "आखुं जगत एने जुए छे अने कोई एमां कशी खोडखांपण होवानं कहेतं नथी."

्एमां ज -

कीधो पितानो काळ. एह पण मोटो अन्या.

छास विशेनी आ समस्या छे तेथी संपादके आपेलो 'दोष' ए अर्थ बराबर छे : "एणे पोताना पितानी हत्या करी छे, ए एनो मोटो दोष / मोट्रं दुष्कृत्य छे."

नरका.मां ---

ओ पेलो ओशियाको आवे. अवैयो अपार.

अहीं 'अन्नैयो' ए 'अन्यायी'ने स्थाने छे. संपादके एना 'वांकाबोलो, अणचियो' एवा अर्थी आप्या छे, एमांथी 'वांकाबोलो' ए अर्थ माटे कोई आधार जणातो नथी. नटखट कृष्णने अनुलक्षीने आ उद्गार छे एटले 'अणचियो' अर्थ चाले, पण वधारे योग्य अर्थ 'अटकचाळो, तोफानी, मस्तीखोर' ए गणाय.

नलाख्या.मां -

राजाइ सा माटि मेहेली, एहेवु नही **अन्याई.**

अहीं 'अन्याई' ए 'अन्यायी'ने स्थाने छे. संपादके 'अन्याय करनार' एवो एनो अर्थ आप्यो छे ते चाले तेम छे. 'खोटुं करनार' पण चाली शके : ''राजाए शा माटे तने तजी ? ए एवो अन्याय करे तेवो, खोटुं करे तेवो नथी.''

३४. अरज

'अरज' शब्द आपणे 'विनंती, प्रार्थना' एवा अर्थमां वापरीए छीए. *मदमो*.मां एनो प्रयोग कईक जुदा अर्थमां होय एवुं जणाय छे :

पापपुन्यनी ए शी अरब, आपणे तो विद्यानी गरज.

मोहनाने पंडित पासे भणाववा मूकती वखते पंडित कोढियो छे, केवांकेवां पाप करवाथी माणस कोढियो थाय अने एनुं मों जोवाथी केवुं पाप लागे ए बधुं राजा मोहनाने समजावे छे त्यारे मोहना आ वाक्य बोले छे. देखीती रीते ज अहीं 'अरज'नो 'प्रार्थना, विनंती' ए अर्थ बंध न बेसे. संपादके 'फरियाद' एवो अर्थ आप्यो छे एनो कशो आधार जणातो नथी, ते उपरांत संदर्भमां ए अर्थ पण भाग्ये ज संतोषकारक गणाय. वस्तुतः अरबी 'अर्ज' शब्दनो 'प्रार्थना' उपरांत 'निवेदन, रजूआत, दरखास्त' एवो अर्थ पण छे अने एवा ज कोईक अर्थमां ए शब्द अहीं प्रयोजायेलो जणाय छे: ''पापपुण्यनी आ शी रजूआत ? (पापपुण्यनी आवी वात शा माटे कहो छो ?) आपणे तो विद्या साथे ज काम छे.''

३५. अलगुं, अलगेरी

'अळगुं' शब्दने आजे आपणे बहुधा 'जुदुं'ना अर्थमां वापरीए छीए. पण एनो एक अर्थ 'वेगळुं, दूर, आघुं' पण छे अने मध्यकाळमां 'अळगुं' शब्द सामान्य रीते ए अर्थमां ज वपरायेलो जोवा मळे छे. जेमके, *आरारा*.मां –

वाडी मांही दीठउ कूउ....

जोवा लागी अलगी थाई...

(वाडीमां कूवो जोयो. आधी जईने एमां जोवा लागी.)

राइ अणावइ **अलगी** गई, कन्या आवइ हरखित थई.

(दूर गयेली ए कन्याने राजा बोलावे छे. ए हर्षित थईने आवे छे.)

अलगांची पाणी रे आणतां, मत तुझ विससंका होइ रे.

(दूरथी पाणी लावीने तने विषनी शंका थाय एवं करवं न हतुं.) संपादके पण 'अलगुं'नो 'दूर, आधुं' एवो अर्थ ज आप्यो छे. *नेमिछं*,मां`—

अलगी नांखड सोवनत्रोटी.

(सोनानी त्रोटी दूर फेंकी दे छे.)

जड़ मझ सरिखी नारि थुक जिम अलगी लांखइ.

(मारा जीवी स्त्रीओने थूंकनी जेम वेगळी करी नाखे छे / तजी दे छे.)

संपादके 'अळगी, जुदी, दूर' एम अर्थी नोंध्या छे तेमां 'जुदी'नी जरूर नधी. 'वेगळूं, दूर' ए अर्थ स्पष्ट ज छे.

कादं(शा).मां --

रा आगली महेली ग्यु अलगु अंत्यज एहवूं भाखी.

((पोपटने) राजानी पासे मुकी, आवुं कहीने अंत्यज आघो जतो रह्यो.)

कां रही अलगी ? एटला मांहां शुं धाकी ?

(केम वेगळी - आघी थर्ड गई ? एटलामां थाकी गई ?)

राजाने नवडाववानुं बंध करनार दासी प्रत्येनी आ उक्ति छे.

संपादके 'जुदं' अर्थ आप्यो छे ए योग्य नयी. बीजा उदाहरण परत्ये केशवलाल ध्रवे पण 'वेगळी' एवो अर्थ ज कर्यो छे.

नलाख्या.मां --

....कोएक नर आ मंदिर रही.

हवडां मुझने स्पर्स ज थयु, झालूं एटलि अलगू थयु.

(कोई एक पुरुष आ महेलमां छे. हमणां मने एनो स्पर्श थयो, पण एने पकड़् एटलामां तो ए दूर जतो रह्यो.)

संपादके 'जुदूं' अर्थ आप्यो छे ते संदर्भमां योग्य रीते बंधबेसतो थतो नथी.

उषाहुमां —

अधमाधम अलगेरी यटी.

संपादके 'अळगी' अर्थ आप्यो छे तेमां एनो आजनो 'जुदी' ए अर्थ अभिप्रेत जणाय छे. देखीती रीते तो ए बेसे. द्वारकामां जुदाजुदा लोकोना वासना वर्णननी आ पंक्ति छे. तेथी सौथी इलका वर्णना लोकोनुं निवासस्थान जुदुं छे एवा आ पंक्तिनो अर्थ लई शकाय. पण निवासस्थान जुदूं ज नहीं, दूर - सौथी दूर - छेल्ले होवानो अर्थ अभिप्रेत होवानो संभव छे.

विमग्र.मां -

भड भडवाय हता घणा, ते तु आपणा **अलग** लेई जीव तु. (पराक्रमी वीर पुरुषो हता ते पण पोताना जीवने वेगळा लई जाय छे / नासीने बचावी ले छे.)

संपादके पण 'अलग'नो अर्थ 'दूर' आप्यो छे.

३६. अंक भरवो

संस्कृतमांथी आवेलो 'अंक' शब्द 'खोळो' ए अर्थमां आपणे त्यां जाणीतो छे. सार्थ गुजराती जोडणीकोश दे. 'अंकिअ' परथी आवेलो बीजो 'अंक' पण नोंधे छे अने एनो 'आलिंगन' एवो अर्थ आपे छे. परंतु आ अर्थमां आ शब्द अत्यारे जाणीतो नथी. मध्यकाळमां 'अंक' शब्दना 'आलिंगन' ए अर्थना प्रयोग मळे छे, पण ए कृतिओना संपादके 'खोळो' एवो अर्थ ज लीघो छे. जेमके,

नरका.मां -

ताहरुं चलण दीसे घणुं घर विशे, समुद्रतनया हींडे **अंक भरतां.**

संपादके 'अंक भरतां'नो अर्थ 'खोळो भरतां, आजीजी करतां' एवो आप्यां छे. आ उक्ति राधाने उद्देशीने कहेवायेली छे. राधानुं जो घरमां चलण होय, तो लक्ष्मीनुं स्थान ऊतरतुं बताववानो उद्देश ज होय एम मानी संपादक 'खोळो भरतां' एटलें 'आजीजी करतां' एवा अर्थ तरफ गया जणाय छे. पण एमां एक मुश्केली छे. 'खोळो भरवो'नो 'आजीजी करवी' एवो अर्थ लेवा माटे कोई आधार नथी. हा, 'खोळो पाथरवो' एटले 'आजीजी करवी' एम अर्थ थाय छे खरो.

पण 'अंक भरवो' एटले 'आलिंगन लेवुं' एवो अर्थ अन्य घणे स्थाने जोवा मळे छे. तेथी उपरना दाखलामां पण ए ज अर्थ लेवो जोईए. राधिकानुं घरमां चलण छे अने लक्ष्मीजी पण आलिंगन लेतां फरे छे ए जातनो वाक्यान्वय थई शके.

नरसिंह महेतानी ज बीजी पंक्तिओमां 'अंक भरवो'नो 'आलिंगन लेवुं' एवो अर्थ बराबर बेसे छे :

प्रेमदा प्रेमसुं पान अधिक रे, अंक भरि नाथ उरमांहे राखे. •(प्रेमदा अधिक प्रेमपान करे छे अने नाथने अलिंगन आपी पोताना हृदयमा राखे

छे.)

अंक भरी आशवाश दईने लई मंदिरमां पधराव्या रे.
(आलिंगन लई. आसनावासना करी लई जईने महेलमां पधराव्या.)

भगवद्गोमंडल पण दयारामनी नीचेनी पंक्ति उद्धृत करी 'अंक मरवो'नो 'बाथ भीडवी' एवो अर्थ आपे छे :

हा ना करतां रे भरी अंक, अधर उठावी रे लाव्या कुंज निःशंक. (गोपी हा-ना करती रही अने कृष्ण एने बाथमां लई, ऊंचे उठावी कुंजभवनमां लाव्याः)

ए नोंधपात्र छे के संस्कृत कोश 'अंक' एटले 'बगल' अने 'अंकपालिका' एटले 'आलिंगन' एवा अर्थो आपे छे.

३७. आधुं, आधेरुं

'आधुं' शब्द अत्यारे सामान्य रीते 'दूर'ना अर्थमां वपराय छे. 'आघो आव' एटले 'पासे आव' एवो प्रयोग विरल छै. परंतु मध्यकाळमां 'आधुं' शब्द 'आगळ, पासे, नजीक' एवा अर्थमां ज मोटे भागे वपरातो जोवा मळे छे. जेमके,

विकर मां -

थरहर कंपड नावड **आध.**

(थरथर कंपे छे अने नजीक आवतो नथी.)

संपादके 'आघा, दूर' एवो अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे.

आरारा.मां —

जेतलि जोई आख़ थई. आराम उपरे मीट ज गई. (आगळ / पासे जईने जुए छे त्यां बगीचा उपर नजर गई.)

तव जोवड ते आधी थाड. उणि हत्यारी लाधउ दाइ.

(त्यारे आगळ / पासे जईने ते जूए छे. पेली हत्यारीने लाग मळी गयो.) संपादके 'आगळ' अर्थ आप्यो छे ते चाले तेम छे.

*नलाख्या.*मां --

एहवूं कही रथ आधु खेड्यु.

(एवं कहीने एणे रथ आगळ चलाव्यो.)

आधेरु जर्डीने चींतवि.

(आगळ जईने विचार करे छे.)

संपादके 'दूर' एवी अर्थ आप्यो छे, ते बीजा 'उदाहरणमां बंधबेसती लागे, पण 'आगळ' अर्थ लेवो ज उचित छे. पहेला उदाहरणमां 'आगळ' ए अर्थनुं औचित्य स्पष्ट हे.

*नरप(द).*मां –

नासी जाए, आधो आवे, सुंदर सांम.

(सुंदरश्याम घडीक नासी जाय छे, घडीक पासे / नजीक आवे छे.)

संपादके 'नजीक' अर्थ आप्यो छे ए बराबर छे.

नरसिंह महेताना एक बीजा पदमां पण आवी पंक्ति मळे छे :

आचा आवीने आलिंगन मागै.

(पासे / नजीक आवीने आलिंगन मागे छे.) *षडावा*.मां –

आयउं पियाणउं न करइ.

(आगळ प्रयाण करता नथी.)

संपादके पण 'आगळ' अर्थ आप्यो छे.

अखाका.मां –

आकाशथी आपेरुं चालवं, श्रुं बेठा छो हारी.

अहीं संपादके आपेलो 'दूर' अर्थ बेसे तेम छे, पण वस्तुतः एना मूळमां 'आगळ' एवो अर्थ ज रहेलो छे : "आकाशथीये आगळ चालवानुं छे. हारी शूं बैठा छो ?"

चित्तसं.मां –

आघो न चाले मारो लक्ष.

(मारुं ध्यान आथी आगळ जतुं नथी.)

निज रूपे थर्ड आघो वट्यो.

(आत्मरूप थर्डने ए आगळ वध्यो.)

आघो उकेल जो न होड कशो.

(जो आनाथी आगळ कोई उकेल न होय.)

संपादके पण 'आगळ' अर्थ ज आपेल छे.

विरापःमां -

कुण मुर्ख जि आवइ आघउ.

संपादके 'समक्ष' अर्थ आप्यो छे ते चाले, पण 'पासे, नजीक' ए अर्थ वधारे योग्य छे : "पासे आवे एवो कोण मुर्ख छे ?"

विमप्रमां --

चाउचीयाविउ वाघलू ए तू, आघलउ कोई न थाइ तू. (वाघ रोषे भरायो. कोई एनी आगळ / पासे आवतं नथी.) संपादके आपेलो 'नजदीक' अर्थ बराबर हो.

'आधुं'ना मूळमां सं. 'अग्र' छे तेथी 'आगळ' ए एनो मूळभूत अर्थ होवानुं समजाय एवं छे.

३८. आडइ, आडौ

सार्थ जोडणीकोश 'आडे आववुं'नो 'वच्चे (विघ्न के राहत तरीके) पडवुं' एवो अर्थ आपे छे. एटलेके विघ्नरूप थवुं के राहतरूप थवुं ए संदर्भ पर आधारित छे. पण राजस्थानी कोश 'आड'ना 'रक्षा, शरण, सहायता, मदद, आश्रय, आधार' एवा अर्थो अने 'आड़ौ आणो/आवणो'नो 'मदद करवी' एवो अर्थ आपे छे. मध्यकालीन गुजरातीमां 'शरण' के 'मदद'ना अर्थना प्रयोगो मळे छे. जेमके.

प्रेमाका मां --

सर्व बेठां मूळ वाढे, तम विना कोण आवे आडे.

संपादके 'आड़े'नो 'वद्ये' एवो अर्थ आप्यो छे ते सीधा शब्दार्थनी दृष्टिए बराबर छे. पण अहीं राहत रूपे वच्चे आववानी वात छे एटले 'आडे आवे'नो 'मददे आवे' एवो अर्थ दधारे सुभग छे : ''बधां मूळ वाढी रह्यां छे त्यारे कोण मददे आवशे ?''

जिनरा.मां –

श्री जिनराज सुविधि साहिब सुं किम पहुंचीजइ आडइ.

(जिनराज सुविधिनाथना शरणमां केम पहोंचीए ?)

संपादके 'आडइ'नो 'हठ करीने' एवो अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे ए स्पष्ट छे.

एमां ज --

प्रहसम धास्यै मुझ वारी, इम चिंतवि चउथी नारी, आडौ तब कोई न आसै...

(चोथी स्त्री विचारे छे के सवारे मारो वारो आवशे, त्यारे कोई मारी मददमां नहीं आवे.)

संपादके 'काममां आवशे' एवा अर्थ आप्यो छे ते पण चाले.

३९. आदर, आदरवं

'आदर' शब्द 'मान-संमान'ना अर्थमां अने 'आदरव्' शब्द 'आरंभ करवो'ना अर्थमां आपणे वापरीए छीए. जोडणीकोश 'आदरवुं' शब्दनो 'स्वीकार करवो' एवो अर्थ पण आपे छे.

मध्यकाळमां 'आदर' शब्द 'प्रयत्न'ना अर्थमां पण वपरातो देखाय छे. अखाछ मां आ अर्थ लेवामां आव्यो छे. जेमके.

ते अन्य **आदरे** आवे हाथ -(अल्प प्रयत्नथी ए हाथमां आवे.)

जेवे आबरे करीने ग्रहे, तेवुं मुक्ता जामी रहे.

(जेवा प्रयत्नथी / जेवी निष्ठाथी स्वीकारे तेवुं मोती बने.)

शुद्ध पारसने जे जे अडे. ते ते कंचन थई नीमडे

पण ते आदर केनो नव करे.

(पण ते कशाने माटे प्रयत्न करतो नथी.) 'आदर' शब्द 'आश्रय, स्वीकार'ना अर्थमां पण मळे छे. जेमके अखाका.मां - सद्गुरु केरा चरण आबर करी....

(सद्गुरुना चरणनो आश्रय लईने....)

संपादके 'प्रयत्न' अर्थ आप्यो छे ते अहीं चाले तेम नथी.

आ ज रीते, 'आदरवुं' पण 'प्रयत्नशील धवुं, प्रवृत्त धवुं, करवुं' एवा अर्धमां वपराय छे. अखाछ मां 'प्रयत्न करवो' एवो अर्थ लेंवायों छे. जेमके,

भूचरनी कांई बीजी पैर, एम जाणी अखाः आदेर.

(भूचरनी कोई बीजी ज रीत छे एम समजीने तुं प्रयत्नशील था.)

एणे रसे जीव करें आदरी.

(आ रसयी जीव प्रकृत याय छे.)

डाह्या पंडित **ब**इ जे **आवरे,** तें अखा वार्युं केम करे ?

(डाह्मा पंडित थईने जे प्रवृत्त थाय है ते वार्युं केम करे ?)

*प्रेमाका.*मां --

जे वेंळा **आदरिया** द्रोण, त्यारे कुंवरने राखे कोण ? (द्रोण ज्याहे प्रवृत्त थया, त्यारे कुंवरनी रक्षा कोण करे ?)

जो अन्तर्रु तो असुरकुळने त्रेवड् तृणमात्र.

(जो हुं प्रकृत थाउं तो असुरकुळने तपखला समुं लेखुं-)

संपादके 'आरंभ करवो' एवो अर्थ लीघो छे पण उपरनो अर्थ वधारे योग्य छे.

अखेगी मां —

अणजाण्ये जे आवरे....

(समज्या विना जे (भक्ति) करे...)

संपादकोए 'आरंभे' अर्थ लीघो छे ते देखीती रीते चाले पण '-ने माटे प्रवृत्त थाय' 'करे' एवो अर्थ अभिग्रेम जणाय छे.

भक्ति उपरे आवर्यो.

(भक्ति विशे प्रवृत्त थयो.)

संपादकोए अहीं 'प्रयत्नशील थयो' एवी अर्थ लीधो छे ते बराबर छे.

नलाख्या.मां —

मंद हास्य करी रा उद्यरि : 'नारी, मूरखता **आदरि.'**

(मंद हास्य करीने राजा बोल्यो : नारी, तुं मूर्खाई करे छे.)

संपादके 'शरू करे छे; मान आपे छे' एवा अर्थो आऱ्या छे ते अहीं अप्रस्तुत

'आदरवुं' शब्द 'स्वीकारवुं, सत्कारवुं, आश्रय लेवो, पामवुं' एवा अर्घोमां पण

छे.

वपरायेलो मळे छे. जेमके, गुर्जरा:मां -

रिसहि राज्यकला धुरि आदरी.

(ऋषभे प्रथम राज्यकला स्वीकारी.)

संपादकोए 'to receive respectfully' (सत्कारवं) एवी अर्थ आप्यो छे ते चाले तेवो है.

आरारा.मां —

मइ पिणि तुझनइ **आवर्यं**उ हो, जाणी आंबानी डालि.

(में आंबानी डाळ जाणीने तारो आश्रय कर्यो हतो.)

तेहनड जाड बेटी एक. यौवनवय आवरीय.

(तेने एक पुत्री जन्मी. ते यौवनवयने पामी.)

संपादके 'आश्रय लीधो' एवो अर्थ आप्यो छे ते पण चाले.

लावल.मां –

केवलकमला आदरी.

(केवळज्ञानरूपी लक्ष्मी पाम्या.)

संपादके 'आदर करी, स्वीकारी' एवा अर्थ आप्या छे तेमांथी 'स्वीकारी' अर्थ नभी शके.

नरका.मां -

ए रस शुकसनकादिके, वळी शिव-शिवाए आदर्यो.

(शुकसनकादिक अने शिव-शिवाए ए रसनो स्वीकार कर्यो / तेओ ए रस पाऱ्या.) **ऊं**य. आहार ने आळस में **आवर्षा.**

(में ऊंध, आहार ने आळसनो आश्रय लीधो.)

भूल्या भमता फरे, अन्यने आवरे.

(भूल्या भटके छे अने अन्यनो आश्रय ले छे.)

संपादके 'आवकारवुं, सत्कारवुं' एवा अर्थो लीधा छे ते आ संदर्भमां सुभग लागता नथी.

आनंस्त.मां -

परम चरणधर्म ते धर्म तृह्मरो जाणीइ आवरीइ.

(परम चारित्रधर्मनो, ते तमारो धर्म जाणीने, आश्रय करीए.)

संपादके 'आदरीए' एवो पर्याय आप्यो छे ते 'शरू करीए' एवा अर्थनां ज अभिप्रेत गणाय, ए अर्थ अहीं उपयुक्त जणाती नथी.

सार्थ जोडणीकोश 'आदरवुं'नो 'संवनन करवुं' ने 'अदरावुं'नो 'विवाह के सगपण

थवुं' एवा अर्थो नोंधे छे. खास करीने पारसीओमां 'अदरावुं' शब्द आ अर्थमां प्रचलित छे. मध्यकाळमां 'आदरवुं' शब्द ज 'विवाह के सगपण करवुं' एवा अर्थमां प्रयोजायेलो मळे छे. जेमके,

*आरारा.*मां –

कुलधर, आविर म था गमार, (कुलधर, (पुत्रीनो) विवाह कर, गमार न था.) संपादके पण 'सगपण कर' ए अर्थ ज आप्यो छे. गुर्जरा.मां —

हुं निव देखी आदरी, आवरी यादवराइ. (यादवराये मारी साथे विवाह करी मने आदरथी जोई नहीं.) संपादकोए योग्य रीते 'betrothed' एवो अर्थ आप्यो छे. चित्तसं.मां 'आदरवं'नो एक विलक्षण प्रयोग मळे छे :

जेम चंबुकगिरिनी सत्ताए करी लोहोनौका आवे आवरी.

संपादके 'खेंचाईने' अर्थ आप्यो छे ते ज आ संदर्भमां बंध बेसे एवो छे. ''जेम लोहचुंबकवाळा पर्वतना प्रभावथी लोढानी नौका खेंचाईने आवे....''

४०. करो

'करो' शब्दनो अर्थ 'घरनी बाजुनी दीवाल' एवा सार्थ जोडणीकोश नोंधे छे अने ए अर्थमां ए शब्द प्रचलित छे. नंदब.मां आ शब्द वपराया छे अने संपादके एना ए अर्थ ज आप्यो छे. पंक्ति आ प्रमाणे छे :

वणीक ते जे नही आकरो. गांम ते जेहमां होये करो.

देखीती रीते ज 'करो' शब्दनी उपर्युक्त अर्थ अहीं बंधबेसती थतो नथी. करो घरने होय, गामने नहीं; अने घरने करो होय ज, पछी करो के करावाळुं घर होय तेने ज गाम कहेवाय एम कहेवानो कंई अर्थ खरो ? वस्तुतः राजस्थानी कोश 'करौ' शब्द 'किसान'ना अर्थमां नोंधे छे. अहीं ए अर्थ बराबर बंध बेसे छे : ''जेमां खेडूत वसतो होय ते ज गाम.''

४१. खगां, खगमंडल, खगाकार

'खग' शब्द आपणे 'पंखी'ना अर्थमां ज लईए छीए. 'ख' एटले आकाश, एमां गति करे ते 'खग'. पण देश्य 'खग' शब्द 'आकाश'ना अर्थमां छे अने ए मध्यकालीन गुजरातीमां प्रचलित होवानुं जणाय छे. जेमके,

वेताप.मां -

डोले **खगमंडल** चित....

(कदाचित आकाशमंडळ डोले...) संपादके पण 'गगनमंडळ' ए अर्थ ज आप्यो छे. *प्रेमाका* मां —

मा भर रे ओहरुं डगां, तुझ-पे त्रटी पडशे खगां. (आगळ डगलां न भरतो, नहीं तो तारा पर आकाश तूटी पडशे.) संपादके आपेलो 'पक्षीओ' अर्थ देखीती रीते ज खोटो हे. संतो. मन रे भारीने मञ्जन करे. परम ज्योतमां भळे.

खगाकार ए तो थई रहे...

(मनने मारीने ब्रह्मभावमां इंबे ने परम ज्योतमां लीन याय ते आकाशवत् / शुन्यवत् थईने रहे....)

संपादके 'पंखीना जेवुं, आकाशमां (ब्रह्ममां) मुक्त रीते विहरनार' एदो अर्थ आप्यो हे ते बराबर नथी.

४२. खराप

जोडणीकोश 'खराब'ना 'नठारुं, अनीतिमान्, भ्रष्ट' एवा अर्थो नोंधे छे अने ए ज प्रचलित अर्थो छे. पण अरबी 'खराब' शब्द 'विनाश, बरबादी' एवो अर्थ पण धरावे छे अने मध्यकाळमां ए अर्थमां आ शब्द वपरायेली मळे छे. जेमके,

अखाका मां --

मध्य अहंता करे **खराप.**

'खराप' अहीं 'खराब'ने स्थाने है अने संपादके ए पर्याय मुकीने ज काम चलाव्यं छे. पण जोई शकाय छे के 'खराब'नो चालू अर्थ अहीं कथयित्वने बराबर प्रगट करतो नथी, "मध्ये अहंता विनाश / बरबादी करे छे" एवो अर्थ लेवायी ज कथियत्व बराबर क्रघड़े हो.

४३. गान, किण गानड

'गान' शब्द 'गीत, गायन' एवा अर्थमां जाणीतो छे. पण मध्यकाळमां ए 'गणना, विसात' एवा अर्थमां पण मळे छे, जेमके, आरारा.मां -

कहइ ब्राह्मण, ''मुझ प्राण, तेह पणि रायना जाण,

त कन्या किण गानइ...."

(ब्राह्मण कहे छे – मारा प्राण पण राजाना छे, तो मारी कन्या शी विसातमां ?) संपादके 'कई विसातमां' एवो ज अर्थ आप्यो छे.

जिनसःमा –

इम विचार करता मन माहे लाखे गाने लोको रे...

(आम मनमां विचारता लाखोनी गणतरी / संख्यामां लोको....) संपादके 'गाने'नो 'ज्ञाने' अर्थ आप्यो छे ते खोटो छे. सं.'गणना' प्रा.'गण्या' परथी 'गान' शब्द आव्यो जणाय छे.

[गुजरात दीपोत्सवी अंक, सं. २०५०]

४४. उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसीकल, ओशिंगळ, ओशींकळ, ओशींगल, ओसंकल, ओसीकल

बोलीकक्षाए वपरातो 'ओशिंगण' शब्द आपणने परिचित छे. ए शब्द आपणे 'आभारी, ऋणी, उपकृत, अहेसानमंद' एवा अर्थमां योजीए छीए अने शब्दकोशो पण ए शब्दने ए अर्थमां ज नोंधे छे. भगवद्गोमंडले एनो एक वधारानो अर्थ 'बदलो वाळी आपनारुं' नोंध्यो छे ते विरल अपवाद छे. कोशो 'ओशिंकळ/ओशिंगळ' ए शब्द पण नोंधे छे अने आ ज अर्थमां नोंधे छे. एक ज शब्दना आ बे उद्यारभेदो होय एवी एमनी समज जणाय छे. भगवद्गोमंडले 'उसंकल, उसीकल' वगेरे घणा उद्यारभेदो नोंध्या छे, पण एणे पण त्यां बधे 'आभारी, ऋणी' एवो ज अर्थ दर्शाव्यो छे.

मध्यकालीन साहित्यमां 'ओशिंगण' एवं 'ण'कारवाळुं रूप जोवा मळ्युं नथी, 'ल'कारवाळुं रूप ज जोवा मळे छे – उशंकल, उसंकल, उसीकल, उसींकल, ओशिंगळ, ओशींकल, ओशींकळ, ओशींगल, ओसंकल, ओसींकल वगेरे. स्वाभाविक रीते ज मध्यकालीन साहित्यना आपणा घणा संपादको-अभ्यासीओ आ मध्यकालीन प्रयोगने 'ओशिंगण'ना अत्यारना अर्थमां – 'आभारी, उपकृत' एवा अर्थमां – वांचवा ललचाया छे, जे आपणा कोशोए पण कर्युं छे. पण मध्यकालीन 'उसींकल' वगेरे शब्द, 'ओशिंगण'थी ऊलटा ज अर्थमां, 'ऋणी' नहीं पण 'ऋणमुक्त', ने एमांथी विकसेला केटलाक अर्थोमां वपरातो होवानुं स्पष्टपणे देखाय छे. ए नोंधपात्र छे के ऐतिराः (१९१६)ए सीप्रथम 'गुण-उसंकल'नो 'गुणनी भरपाई' (=गुण/उपकारनो बदलो) एवो अर्थ आप्यो छे. ते पछी उपवा. (१९३५)मां 'उसंकल'नो 'fulfilling the obligation' (ऋण चूकववुं ते) एवो अर्थ अपायो छे. जा पछी मदमो. (१९५५)मां 'ओशीकल/ओशींगल'नो 'ऋणमुक्त' एवो अर्थ अपायो छे ने एना अर्थनुं भारतीय विद्याभवननां प्रकाशनोमां अने अन्यत्र क्यांक-क्यांक अनुसरण थयेलुं छे, पण आ शब्दने 'ओशिंगण, आभारी, ऋणी' एवा अर्थमां लेवानुं पण व्यापकपणे जोवा मळे छे.

'उसींकल धवुं / करवुं' एटले 'ऋण, उपकार के एना भारमांथी मुक्त धवुं.' एमांथी 'बदलो वाळवो' 'चचन पाळवुं' वमेरे अर्थोनो पण विकास थयो छे. आ विविध अर्थोने अनुलक्षीने 'उसींकल' वगेरेना मध्यकालीन प्रयोगी आपणे जोईए.

मुक्त थवुं के करवुं - ऋण, उपकार के एना भारमांथी

(१) सिंहा(म).मां राजा उपर एक वखते उपकार करनार ब्राह्मण वांकमां आवे छे ने राजसभा एने शूळीए देवानुं सूचवे छे त्यारे राजा कहे छे –

एह उपगार उसीकल केम, पसाउ करी पुहचाड़ो खेम. (१९४)

(एना उपकारना भारमांथी मुक्त केम थवाय ? भेटसोगाद आपी एने क्षेमकुशळ घेर पहोंचाडो.)

संपादके 'आभारी, ओशिंगण' अर्थ लई अनुवाद आप्यो छे – ''एना उपकारनो हुं ओशिंगण छुं,'' एमां 'केम' शब्द बाकात रह्यो छे. उपरांत, संदर्भमां पण ए अर्थ टकी शके तेम नथी.

(२) नलाख्या.मां हंस नळने कहे छे — प्राणदान ति मूझने दीधुं ते ओशीकल थाउं, प्रत्युपकार करेवा, राजा, कुंडिनपुरि हूं जांउं. (६, १९) (तें मने प्राणदान कर्युं छे तेना ऋणमांथी मुक्त थाउं.)

संपादके 'ओवारणा लीधेल, वारी जवायेलुं, उपकृत' एवा अर्थी नोंध्या छे. रा. चू. मोदीए एमना संपादनमां 'आभारी' अर्थ आप्यो छे. आ अर्थी योग्य नथी.

- (३) विक्ररा.मां —

 माता कही गंग समान, अडसिट तीरथ मांहिं प्रध्यान,

 निशिदिन धोई पीइ पाय, तुहि ओसंकल पुत्र न थाय. (४७६)

 (माताना पग धोईने रोज पीए तोये पुत्र एना ऋणमांथी मुक्त न थाय.)
 सैपादके 'ओशिंगण. आभारी' ए अर्थ आप्यो छे, जे टकी शकतो नथी.
- (४) नलरा.मां ताहरी दृष्टिइ संपनु, जीवी दीधू माय, तूझ **उसीकल** नवि थाउं, प्रणमउ तारा पाय. (६९०)

(तारी नजरे चड्यो अने माता ! तें मने जीवतदान आप्युं. तारा ऋणमांथी हुं ' मुक्त नहीं थाउं.)

- (५) ए ज कृतिमां पोताने आश्रय आपनार दिधपर्णने नल कहे छे मित्र सहोदर भाई माहरु, जसीकल नही थाउं ताहरु. (१०२१) (तुं मारो मित्र, सहोदर, भाई छे. तारा ऋणमांथी हुं मुक्त नहीं थाउं.) बंने परत्वे संपादके 'आभारी, ओशिंगण' अर्थ आप्यो छे, जे खोटो छे.
- (६) रलसूरिशिष्यकृत 'रलचूडरास' (१६५३) (संपा. ह. चू. भायाणी, १९७७)-मां —

यमघंटा समजावे छे के शेठे तमने कंईक आपवानुं कह्युं छे तेथी ए घडामां देडको मूकी हाथ नाखवानुं तमने कहेशे अने पछी –

"घडा-माहि कांइ छइ सही", "ओसींकल हूया अन्हे भई." (२२९) (तमे कहेशो के घडामां कांईक छे एटले ए कहेशे के अमे ऋणमुक्त थया.) संपादके शब्दकोश आप्यो छे पण अर्थो आप्या नथी.

(७) ए कृतिमां ज, माळी ज्यारे 'कांईक'नी मागणी करे छे त्यारे शेठ कहे छे --

सउ पंचास लिउ तुम्हे सही, ओसीकल तुम्हे करउ सही. (२०२) (पचास-सो रूपिया लई लो अने अमने ऋणमुक्त करो.)

(८) एमां ज सुतारने राजी करवानुं वचन आपेलुं. एने समाचार आपवामां आवे छे के राजाने त्यां दीकरो अवतर्यों छे. पछी —

''रुलियाइत अम्हे थया छउं सही'', ''ओसीकल अम्हे हूआ भई.'' (२०७) (सुतार कहे छे के अमे राजी थया. एटले शेठे कहाुं के अमे ऋणमांथी छूट्या.)

(९) *प्रेमाका.*-अंतर्गत 'अभिमन्यु-आख्यान'मां पांडवोने पोते दास तरीके राख्या एनो अफसोस व्यक्त करी विराट राजा कहे छे –

ते भार **ओशिंकळ क**रो, उत्तराकुंवरी मारी वरो. (२२, ८) (ते भारमांथी मने मुक्त करो.)

संपादके 'ओशिंगळ; हळवो, ऋममुक्त; आभारी' एवा अर्थो नोंध्या छे, जैमां संपादक अर्थ परत्वे अनिश्चित होवानुं देखाय छे. चिमनलाल त्रिवेदी वगेरेए तथा विनोद अध्वर्यु वगेरेए एमनां संपादनोमां 'आभारी, उपकृत' एवो अर्थ लीधो छे, जे खोटो ज छे.

(१०) *दशस्कं(२)*.मां –

शत कल्प सेवा करवा रहीए, पण माना ओशीकळ नव थईए.

(१०९, ४६)

(सेंकड़ो कल्पो सेवा करीए, तोये माना ऋणमांथी मुक्त न थवाय.) संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे.

(११) ए कृतिमां ज, नंदजी प्रत्ये कृष्ण कहे छे --

अमो ओशंकळ केम थईए रे, गोकुळ-स्वामी ?

एवं कहीने आंसु भरियां अंतरजामी. (१२२, पद ७, १)

(हे गोकुळना मालिक, तमारा ऋणमांथी अमे केम मुक्त थईए ?) संपादके शब्दकोशमां आ संदर्भ नोंध्यो नथी.

भगवद्गोमंडले आ पंक्तिओ उद्धत करी 'ओशियाळुं, गरजु' एवो अर्थ आप्यो छे. जे टकी शके एम नथी.

(१२) *सिंहा(शा)*.मां --

बहु द्रव्य खरच्यो बापनो, आपी **उशंकल** थायुं. (२०, १३४) (पितानुं घणुं द्रव्य में वापर्युं छे, हवे पाछुं आपीने ऋणमुक्त बनुं.) संपादकना शब्दकोशमां आ पंक्तिनो संदर्भ नधी.

(9३) *वेताप*.मां विदाय लेता सिद्धने विक्रम कहे छे -ताहरो भार माथे मुनें, कष्ट एटलूं काप्य, कांईक मागो मुझ-कने, ते उशंकल थाउं. (१, ४३७-३८)

(मारी पासे कंईक मागो, जेथी तमारा ऋण-भारमांथी मुक्त थाउं.) संपादके आ अने पछीना उदाहरण परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आपेल छे.

(१४) एमां ज, वड परथी शबने लावी आपवानुं वचन न पाळी शकेलो विक्रम सिद्धने कहे हे --

महाराम आज रात्ये जाउं छूं, अरुणोदये **जर्भकल** थाउं छूं. (९९, ७) (सवार पडतां ज, वचन आप्युं छे तेना भारमांथी मुक्त थाउं र्डुं.)

(१५) करत्वा.मां कूड करनार गणिकाने विक्रम हरावे छे तेथी मुलताननो राजा पोतानी धन्यता प्रगट करे छे अने -

> उसंकल अमने करो, घणुं वांक विदेक, देहें शुभ छे दीकरी, आपुं तमने एक. (७१७)

(तमने ओळख्या नहीं ए अमारा विवेकनो दोष थयो. हवे तमे करेला उपकारना भारमांथी अमने मुक्त करो. मारी सुंदर दीकरी छे ते हुं तमने आपुं.)

संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे. भगवदुगोमंडले पण आ उदाहरण संदर्भे 'आभारी. उपकार नीचे दबायेलूं, अहेसानमंद' एवा अर्थ नोंध्या छे. आ अर्थी उपयुक्त नथी.

(१६) रूस्तरामां असदखान रूरतनखानने कहे छे -

लूंण-ओसीकल तमारो थाउ, डाभे मोरचे एकलो जाउ. (१२७) (तमारुं लुण खाधुं छे तेना ऋणमांथी मुक्त थाउं. युद्धना डाबे मोरचे हं एकलो जर्डश.)

संपादके 'ओशिंगण' अर्घ अध्यो छे. जे योग्य नथी.

(१७) वस्ताकृत पद (भगवदुगोमंडलमा उद्धत)मा -त्यां लगण सौ रहे एकठां. ज्यां लगी **ओशिंगज** थाय रे

(ऋणमुक्त थाय – ऋणानुबंधनथी मुक्त थाय – त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे.) भगवद्गोमंडले 'बदलो वाळी आपनारुं' एवो अर्थ नोंध्यो छे ते पण बेसे अने आ प्रकारना अर्थने टेको छे ते हवे पछी आपणे जोईशुं.

अहीं 'ण'कारवाळो 'ओशिंगण' शब्द छे ते ध्यान खेंचे छे. मध्यकाळना 'ल'कारवाळा प्रयोगथी ए एकमात्र अपवाद छे अने तेथी भ्रष्ट पाठ होवानो वहेम जाय छे. ए आजनो 'ओशिंगण' शब्द तो नथी ज, केमके आजना अर्थमां 'ओशिंगण थाय त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे' एवी रचना न थई शके, 'ओशिंगण होय त्यां सुधी सौ एकठां रहे छे' एवो प्रयोग थई शके.

वदलो वाळवो

'ऋणमुक्त थवुं' एटले 'ऋण चूकववुं, बदलो वाळवो'. 'उसींकल करवुं' एटले तो, सामान्य रीते, 'ऋणमुक्त करवुं' ज; पण 'उसींकल थवुं' एटले 'बदलो वाळवो' एवा अर्थने अवकाश रहे छे. आ पहेलां आपणे जे उदाहरणो जोयां तेमांथी क्रमांक (७), (९) अने (१५)मां 'उसींकल' 'करवा'नी विनंती छे त्यां ऋण के भारमांथी मुक्त करवानो, ऋण के मार उतारवानो अर्थ ज लई शकाय छे ए जोई शकाय छे. बाकीनां उदाहरणोमां 'उसींकल' 'थवा'नी वात छे त्यां बधे ज 'बदलो वाळवो' एवा अर्थने अवकाश रहे छे. जेमके (१)मां एह उपगार उसीकल केम (थवाय) एटले ''एना उपकारना भारमांथी मुक्त केम थवाय'' तेम 'एना उपकारनो बदलो केम वाळी शकाय ?' एवो अर्थ लीधो ज छे ए आपणे आगळ जोयुं छे. आ पूर्व आपणे नोंधेलां उदाहरणोमां 'ना उसींकल थवुं' एवी रचनाओनो समावेश थयो छे, पण ते उपरांत 'ने उसींकल थवुं' एवी रचनाओनो समावेश थयो छे, पण ते उपरांत 'ने उसींकल थवुं' एवी रचना पण मळे छे अने त्यां 'बदलो वाळवो' ए अर्थ वधु स्वाभाविक लागे छे. अपकारना पण उसींकल थवानी वात आवे छे त्यां तो ए अर्थ लेवो अनिवार्य लागे छे. आ अर्थ 'उसींकल करवुं'ना प्रयोगमां प्रवेश्यानुं पण एक उदाहरण मळे छे ए बतावे छे के मध्यकाळमां 'उसींकल' शब्द धणा संदर्भीमां वपरातां एनो 'मुक्त थवा'नो चोक्रस अर्थ न रहेतां 'बदलो वाळवो' जेवा ज्यापक अर्थीन स्थान मळ्युं छे.

आ अर्थनां केटलांक उदाहरणो हवे जोईप :

(१८) *उपवा*.मां -

समकितना देणहार गुरुनइं घणे भवे बिमणीतिमणी जां लगइ अनंतगुणी इम सघलं गुणाकारे मेली उपगारना सहस्रनी कोडे **उसंकल** थाई न सकइं

(२६९)

(सन्यक्त्वना दातार गुरुने घणां जन्मोमां बमणा तमणाथी मांडीने अनंतगणा सुधीना सर्व प्रकारना गुणाकार करीने हजारो उपकारथी पण बदलो न वाळी शकाय.) अहीं '-ने उसंकल थवुं' एवी प्रयोग छे ते नोंघपात्र छे. संपादके 'ऋण चूकववुं ते' एवी अर्थ आप्यो छे, जे बराबर छे.

(१९) नलरा.मां पोताना हाथने डसनार नागने नल कहे छे -

दूधदायकनइ इसीइ किम ?, उसीकल थयु मझ करी इम ! (७५८) (जेणे दूध पायुं एने केम इसाय ? तें मने आदी रीते बदलो वाळ्यो !) 'ऋणमुक्त थयो' करतां 'बदलो वाळ्यो' ए वधारे संगत लागे छे. संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे, जे खोटो छे.

(२०) ऐतिरा.-अंतर्गत कीर्तिसागरशिष्यकृत 'भीम चोपाई'मां – सोवन बराबर तोलइ जोय, खंधि करी करै तीरथ कोय, इंद्रमाल पहेरावे माय, गुण**उसंकत** तोइ न थाय. (१५२)

(माताने इंद्रमाळ पहेरावे तोये एना गुण-उपकारना भारमांथी मुक्त न थवाय / एना गुण-उपकारनो बदलो न वळे.)

संपादके 'गुणनी भरपाई' एवो अर्थ आप्यो छे.

आ संदर्भमां जुओ आ पूर्व (१) 'उपकार-उसीकल' तथा (१६) 'लूंग-ओसीकल'.

(२१) *दशस्कं(१)*.मां कृष्ण तरीके अवतार लई रहेला विष्णु शेषने पोताना ज्येष्ठ भ्राता – बलराम – तरीके अवतरवा कहे **छे** –

> विष्णु कहे, ''रामा-अवतारे तमो कीधी सेवा सबळ रें; आ वारे कनिष्ठ <mark>थई</mark> सेवुं, थाउं तमने **ओसींगळ** रें'' (८, २२)

(रामावतारमां तमे -- नाना भाई लक्ष्मण बनी -- मारी घणी सेवा करी हती. आ वखते हुं नानो भाई बनी तमारी सेवा करुं अने तमने बदलो वाळुं / तमारा ऋणमांथी मुक्त थाउं.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे.

२२. सिंहा(शा).मां ब्राह्मण पुत्र मेळववा माटे शिवनी अपार भक्ति करे छे, पछी – शिव तो थया अति आकला, ''एह-में सुअ अपाय,

पांचसे पुत्र ज आपतां, **उशंकल न** थाय." (२०, ३०) (एने शूं आपवूं ? पांचसो पुत्र आपतांये एनी भक्तिनो बदलो न वळे.)

संपादके 'ऋगमुक्त' अर्थ आप्यो छे, एने धोडो खेंचीने बेसाडी शकाय, पण 'बदलो वळवा'नो अर्थ साहजिक रीते बेसे छे.

(२३) एमां ज, पापोनी यादी वर्णवतां — नीवांण पुरावें, विष-स्युं वेर, पाडोसी उपर राखें झहेंर, गोडे वाडी लीली घणीं, **उसंकल** न करे विद्या भणीः (१९, ४७२) (विद्या भणीने एनो बदलो न वाळे.)

संपादके 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, पण अहीं तो 'करे'वाळो प्रयोग छे ने 'ऋममुक्त करे' ए अर्थ अभिप्रेत नथी ज. तेथी 'बदलो वाळे' ए अर्थ ज उपयुक्त छे.

(२४) नंदबःमां –

गुण के अवगुण **ओसींकल** थाये, पीत्री पंड तारे तो साहे. (२४१) (पुण के अवगुण – उपकार के अपकारनी बदले वाळीए त्यारे ज पितृ पंड ले.)

अपकारना संदर्भमां 'ऋणमुक्ति' नहीं पण 'बदलो'नो अर्थ ज बेसे. संपादकना शब्दकोशमां आ शब्द नोंधायो नथी.

(२५) कस्तुवा.मां हंसहंसणीनी वातमांथी कस्तुरचंद शुम रात्रि-योग जाणे छे ने पोते पोतानी पत्नीथी दूर छे एनो अफसोस करे छे. हंसना पूछवाथी कारण कहे छे. पछी --

हंसनी कहें रे, "हंस, सुमि, पुछें **उशंकल** थायों, आ वेला तम्यों एहनें मंदिर मध्ये लेइ जायों." (४१६) (हंसणी कहे छे के "हंस, सांभळो. एने पूछ्यानो बदलो वाळो.") संपादके 'आभारी' अर्थ आप्यो छे.

(२६) वेताप.मां लक्ष्मीजी विष्णुने कहे छे — भली भगत्य करें भांमीनि, ते आपणनें भार, कीजें **उशंकल** एहनें, तुं नोंधारां-आधार. (२३, २५)

(आ स्त्रीओ आपणी खूब भक्ति करे छे. एनो आपणने भार चडे. तो एमने बदलो वाळो.)

संपादके आ अने पछीनां उदाहरणो परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे, पण अहीं पण (२३)ना जेवो 'उशंकल कीजे' प्रयोग छे एटले 'बदलो वाळो' ए अर्थ ज लेवानो रहेशे.

(२७) एमां ज, गरीब माबाप चार पुत्रोमां पोतानी जेवी-तेवी मिलकत वहेंची दे छे. पछी –

> माबाप कहें, ''सपूत छो तस्यो, किम जीवीशुं करमां अस्यों'' ''जेहनें शीवजीनि क्रीपा हशें, ते तमने **उशंकल** थशे.

नहीतर वारा फरती वार, ध्यार पुत्र नें दाढा ध्यार.'' (२४, ९३-९८) (माबाप कहे छे के तमे तो सपूत छो पण आ मुश्केल दखतमां अमे केम जीवीशुं ? दीकरा उत्तर आपे छे के जेना उपर शिवजीनी कृपा हशे ते तमने बदलो वाळशे/तमारा ऋणमांथी मुक्त थशे.)

अहीं '-ने उशंकल थवुं' ए प्रयोग छे ए नोंधपात्र छे.

(२८) एमां ज, रोगिष्ठ राजानो उपचार करवा आवनार वैद्य कहे छे -नव नाडी कोठा बोहोतर तणी वखाणी जाणुं वात, ओशंकत थायुं एटलुं रोग-परिख्या ख्यात. (६, २८)

(तमे जे कई पुरस्कार आपवाना छो एनो बदलो वाळी शकुं एटलुं मारुं रोगपरीक्षानुं ब्रान छे.)

राजाए पुरस्कार जाहेर कर्यो छे पण उपचार थयो नथी एथी ए मळ्यो तो नथी. माटे 'ऋषमुक्त' अर्थ लेवानुं अगवडभर्युं छे.

(२९) मदमो.मां काबुलीने गयेली गंगनी पत्नी दूधां, गंग अने काबुली वच्चे युद्ध थाय छे त्यारे, काबुलीने गंगना कमरनी कटार लई एनो घात करवा कहे छे, जे काबुली समजी शकतो नथी. ए वखते गंग कहे छे -

> ए सुं समजे मुरखो, तु जोजे माहारा हाथ. खाधु-पीधुं माहरू, ते ओशींगल कीध, एने कहं ते में लहं, रूडी शीक्षा दीघ. (६९१-९२)

(ए मुर्ख श्रं समजवानो छे. हवे तुं मारो हाथ जोजे. आज सुधी तें मारुं खाधुं-पीधुं तेनो आज बदलो वाळी आप्यो. तें जे एने कह्युं ते हुं समजी गयो. तें सारी शिखामण आपी.)

संपादके आ अने पछीनां उदाहरणो परत्वे 'ऋणमुक्त' अर्थ आप्यो छे पण अहीं 'ओशींगल कीध' एवी रचना छे. 'तारी जातने ऋणमूक्त करी' एम अर्थ लई शकाय, पण 'बदलो वाळयो' ए अर्थ वधु स्वाभाविक लागे छे. अनंतराय रावळे एमना संपादनमां आ अर्थ लीधो है.

(३०) एमां ज, गुणकाना पंजामां सपडायेली मोहना एमांथी छटकी नासी जवा तत्पर थई होय छे त्यारे विचारे छे -

गुणका गुण दीधो मुने, कांईक **ओशीकल** थाउ. (१०१६)

(गुणकाए मने गुण-उपकार कर्यों छे, ते तेना ऋणमांथी कईक मुक्त थाउं / एनो बदलो वाळुं.)

वस्तुतः अहीं 'गुण दीधो' ए कटाक्षमां बोलायेलुं वचन छे. गुणकाए तो अपकार कर्यों छे. एटले 'ऋणमुक्त थवा' करतां 'बदलो वाळवो'नो अर्थ वधु उपयुक्त गणाय. आ उद्गार पछी जेणे जेवं कर्युं होय तेवं साम्ं करीए तेवी मतलबनो छप्पो आवे छे ते पण 'बदलो वाळवो'ना अर्थनुं ज समर्थन करे. मोहना जाय छे पण गुणकाना नाककान कापीने.

(वचन) पाळवुं

'वचन' जेवा शब्दना संदर्भे 'उसींकल' शब्द आवे त्यारे 'वचनना भारमांथी मुक्त थवुं' एवो अर्थ थाय. एमांथी 'वचननी पूर्ति करवी, वचन पाळवुं' एवा सामान्य अर्थ एण विकसी शके. मध्यकाळमां एवो प्रयोग पण सांपडे छे जेमां वचननी पूर्ति करीने एमांथी छूटी जवानुं अभिप्रेत नथी, वचननुं अनुवर्तन — अनुपालन करवानों अर्थ छे. एटलेके '(वचन) पाळवुं'नी व्यापक अर्थछाया आपणे लेवानी रहे छे. अगाउना (२५)मा उदाहरणमां पुछें उशंकत थायों एटले "पूछ्युं छे तो ए मुजब दर्तो — करो" एवो अर्थ अभिप्रेत होवानी पण शक्यता गणाय. 'वचन' जेवा शब्दो साथे आवता 'उसींकल' शब्दना अन्य प्रयोगो हवे आपणे जोईए.

(३१) पद्मनाभकृत 'कान्हडदे-प्रबंध' (१४५६) (भा.३–४, संपा. कांतिलाल ब. व्यास, १९७७)मां विष्णुनो अवतार लेखायेल कान्हडदे कहे छे –

राउल भणइ, ''व्यास कुण साखि, ताहरउ धूम न जोसिउं आंखि,

थ्या उसंकल अवसर भलइ, दीघउं वचन जनमि आगिलइ:" (४,२९१)

(राजा कहे छे – व्यास, कोण साक्षी बनशे ? तुं जौहरनो जे अग्नि पेटावीश तेनो धुमाडो हुं मारी आंखथी जोईश नहीं. आगला जन्ममां अमे जे वचन आप्युं हतुं तेना भारमांथी आ शुभ अवसरे अमे मुक्त धया / ते वचन आ शुभ अवसरे अमे पाळ्युं.)

आ पछी अलूखानना स्कंघ भांगीने रुद्रने छोडाव्यानो तथा वालिवध ने शिशुपालवधनो कान्हडदेने मुखे उल्लेख थयो छे. ते पछी देव कलियुगमां अवतार लई, पोतानुं वचन पाळी स्वस्थाने गया एम वर्णन छे.

संपादके संबंधित पंक्तिनो ''अमे आवा (धर्म)युद्धमां वीरगति पामवानो मंगल अवसर मळतां (ईश्वरना) बहु ओशिंगण थया छीए'' एवो अनुवाद कर्यो छे. एटलेके 'उसंकल' शब्दने एमणे 'उपकृत'ना अर्थमां लीधो छे. भगवद्गोमंडले पण आ पंक्तिने संदर्भे 'आभारी, उपकृत' अर्थ आप्यो छे, जे योग्य नथी.

(३२) शृंगामं.मां युद्ध माटे प्रयाण करती वखते अजितसेन पोतानी पत्नी शीलवतीने कहे छे —

वचन **जंसीकल** आपणा, हवइ म विसारिस चित्ति, दिन दिन अधिक वधारयो, वहाली आपणी प्रीति रें (८६६) (पोतानां वचननुं पालन करजे अने हवे मने चित्तमांथी विसारती नहीं.) संपादके 'ऋणमूक्त' अर्थ आप्यो छे, परंतु 'मुक्ति'नी वात अहीं संगत बने तेम नथी.

(३३) मदमो.मां पुरुषवेशे एक स्त्रीने परण्या पछी विदाय लेतां मोहना कहे है -

जरूर जातरा माहारे जावुं, इष्ट देवने ओशीकल थावुं. (१०५०)

(मारे अवश्य जात्राए जवानुं छे अने इष्टदेवना ऋणमांथी मुक्त थवानुं छे / इष्टदेवने बदलो वाळवानो छे / इष्टदेवनी मानता पूरी करवानी छे.)

अहीं '-ने ओशीकल थवुं' एवो प्रयोग छे तेथी 'बदलो वाळवा'नो अर्थ वधारे साहजिक रीते बेसे. संदर्भ तो जात्रानी मानता (वचन) मानेली होय अने एनं पालन करवानं छे एवो समजाय छे. तेथी 'पाळवुं, पूर्ति करवी'नो अर्थ पण होवानो संभव रहे छे.

संपादके 'ऋणमूक्त' अर्थ आप्यो छे. अनंतराय रावळे पण एमना संपादननां ए ज अर्थ आप्यो छे.

आभारी, ऋणी

'ल'कारवाळुं रूप वपरायुं होय अने 'आभारी, ऋणी' एवो अर्थ - ने एवो ज अर्थ - यतो एवं एक विरल उदाहरण मळे छे ए खास नोंधपात्र छे. आमां बे शक्यता छै: (१) 'ओशिंगण' अने 'ओसिंकल' जुदा ज शब्दो होय अने अहीं 'ओशिंगण'ने स्थाने 'ओसिंकल' कोईक भूलथी आवी गयो होय: (२) 'ल'कारवाळा रूपनो ज अर्थविकास थयो होय - ऋणमुक्त करवुं, 'ऋणमुक्त थवानी तक आपवी, ऋणमुक्त थवानी तक आपी आभारी करवूं. ने पछी 'ल'कारवाळूं रूप 'ण'कारवाळा रूपमां परिवर्तन पाम्यूं होय.

प्राप्त उदाहरण कमलविजयकृत 'चंद्रलेखा रास' (जैन गूर्जर कविओ, बीजी आवृत्ति, भा.६, पृ.४७०)मां छे :

गुरुपदयुग युगतस्युं, वलि वंदु बहु वार,

ओसिकल बह एहना, ग्यानदानदातार. (५)

(गुरुना पदयुग्मने योग्य रीते अनेक वार वंदुं छुं. गुरु ज्ञानदान आपनार छे ने अमे एमना खुब ऋणी छीए.) १९६४ जेटलो वहेलो आ प्रयोग मळे छे ते खास नोंधपात्र हे.

खुत्पत्ति

'उसींकल' शब्दनी जुदीजुदी व्युत्पत्तिओ सूचववामा आवी छे :

- (१) त्रंबकलाल एन. दवे (ए स्टडी ऑव् गुजराती लैंग्विज, १९३५) सं. उत्संकलित, प्रा.उस्संकलिअ एवी व्युत्पत्ति सूचवे छे.
 - (२) हरिवल्लभ भायाणी (मदनमोहना, १९५५) सं.उत्+शृंखला, प्रा.ओ+सिंखला

एवी व्युत्पत्ति सूचवे छे.

- (३) के. का. शास्त्री (नळाख्यान, १९५६) सं.अप-शृंखल परथी 'उसींकल' आव्यो होवानी शक्यता दर्शावे छे.
- (४) कांतिलाल ब. व्यास (कान्हडदे प्रबंध, भा.३-४, १९७७) सं.उपसंग्रह, प्रा.उव-संग्रह साथे 'उसींकल'ने सरखाववानुं सूचवे छे.

आमांथी बीजी व्युत्पत्ति वधारे प्रतीतिकर जणाय छे. सं.उत्+शृंखल परथी आवेलो बीजो एक शब्द 'उच्छृंखल' (मध्यकाळनो 'उछंकल') आपणने जाणीतो छे. एमां नियमनी शृंखला छोडी देवानो अर्थ छे त्यारे 'उसींकल'मां ऋण के भारनी शृंखला. एकमां अ-पालननो अर्थ छे, बीजामां पालननो अर्थ विकसे छे अने आम एक ज मूळमांथी आवेला बन्ने शब्दो, अंते, अर्थना बे विरुद्ध छेडा व्यक्त करता देखाय छे. शब्दार्थना इतिहासनो आ कौतुकमय दाखलो छे.

[फार्बस गुजराती सभा त्रैमासिक, जान्यु.-मार्च, १९९०]

४५. काण, काणि, काणी, कांणि, कुलकाणि, मुहकाणि

'काण' शब्द अत्यारे 'मरण पाछळनी रोककळ, खरखरो, दिलसोजी' ए अर्थमां जाणीतो छे. 'काणे जवुं' 'काण मांडवी' 'मोंकाण' 'काण-मोंकाण' वगेरे प्रयोगो आपणने मळे छे. आपणा कोशो 'काण' शब्दनो आ अर्थ ज नोंधे छे; भगवद्गोमंडल बीजा घणा अर्थो नोंधे छे, पण तेमांथी केटलाक संस्कृत शब्दकोशने आधारे मुकायेला जणाय छे. तो बीजा केटलाक अर्थोनी प्रमाणभूतता शंकास्पद जणाय छे.

'एना घरमां तो रोज आम काण मंडाय छे', 'ए दुखियाराए मारी पासे मोंकाण मांडी' जेवा 'काण'ना लाक्षणिक प्रयोगो एण व्यवहारमां सांभळवा मळे छे, जेमां 'दुःख के झघडानुं वातावरण', 'दुःखभरी कथनी' ए अर्थो विकस्या छे. पण आपणा कोशोए व्यवहारना आ प्रयोगोनी नोंध नथी लीधी, भगवद्गोमंडले पण नहीं.

'काण' शब्दनो पूर्व-इतिहास तो आपणने थोडो मूंझवे एवो छे. छेक अपभ्रंश-काळथी आ शब्द वपरातो आव्यो छे अने एमां विभिन्न अर्थछायाओ जोवा मळे छे. अहीं, आजे जाणीता अर्थथी जुदा अर्थोमां आ शब्द प्रयोजायो छे तेनी नोंघ लेवानो उपक्रम छे.

अपभ्रंशना अने गुजरातीना 'काण' शब्दना प्रयोगो बहुधा जुदी अर्थपरंपरा दर्शावे छे तेथी ए बन्नेने अलग पाडीने आपणे वात करीशुं. (अपभ्रंशना प्रयोगो डॉ. हरिवछ्रभ भायाणी पासेथी मने प्राप्त थया छे, अनुवाद साथे.)

अपभ्रंशना प्रयोगो

(१) स्वयंभूकृत 'पउमचरिय' (नवमी सदीनुं चोथुं चरण) (संपा. हरिवल्लम चू.

भायाणी, १९५३)मां -

आएं समाणुं फिर कवण खत्तु, धाइज्जइ नासंतो वि सत्तु जं फिट्टइ जम्म-सयाहं काणि

किर जाम पधावइ सूल-पाणि. (१०, १२, १-२)

रावण साथेना युद्धमां हारीने नासी जता वैश्रवणने मारी नाखवा माटे कुंभकर्ण तेनी पाछळ जवा करे छे त्यारे बोलायेली आ उक्ति छे. एनो अनुवाद आ प्रमाणे थाय : ''आनी साथे वळी क्षात्रधर्म (पाळवानी) ते वात होय ? (आवा) नासता शत्रुने पण हणवानो ज होय, जेथी सेंकडो जन्मनी 'काणि' फीटे - एवुं कहेतो ज्यां ते हाथमां शूल पकडीने दोडवा जाय छे, त्यां....."

संपादके आ अने पछीना उदाहरणने अनुलक्षीने 'वैर ?' एम अर्थ नोंध्यो छे. वस्तुतः आ संदर्भमां अहीं 'सेंकडो जन्मनं वैर', 'सेंकडो जन्मनो झघडो', 'सेंकडो जन्मधी मने लागेलुं कलंक' एम 'वैर', 'झघडो', 'कलंक' त्रणे अर्थो बेसे छे. 'कलंक' अर्थ पछीथी राजस्थानी-गुजरातीमां विकसेला 'लञ्जा'ना अर्थ साथे संबंध व्यक्त करे, परंतु अपभ्रंशनी 'काणि'ना प्रयोगनी परंपरा 'झघडा'ना अर्थने वधारे टेको आपे छे. जे आपणे हवे पछी जोईशुं. 'वैर'नो अर्थ 'झघडा' साथे संकळायेलो ज गणाय.

देशी शब्दसंग्रहे 'काणि' शब्दनो 'वैर' एवो अर्थ नोंध्यो छे ते आवा कोईक प्रयोगने अनुलक्षीने हशे.

(२) ए ज कृतिमां -

सहं सालएहिं किर कवण काणि, जई घाइय तो तुम्हहुं जि हाणि. (९३, ९१, ९)

भय राक्षस रावणने एना साळाओ खरदूषणने न मारवानी सलाह आपे छे ते प्रसंगनी आ उक्ति छे. एनो अनुवाद आम थाय : ''साळानी साथे ते 'काणि' करवानी होय ? तेने मार्यो होय तो तेथी तने ज हानि थाय."

अहीं 'वैर' के 'झघडो' ए अर्थ बेसी शकशे, पण 'कलंक' ए अर्थ बेसी नहीं शके.

(३) साधारण कविकृत 'विलासवइ कहा' (१०३७) (संपा. र. म. शाह, १९७७)मां -

एह चोरु समप्पि, म करहि काणि. (१, १०, ७)

नायक पोताना आश्रये आवनार चौरने रक्षण आपे छे त्यारे एने पकडवा मागनार नायकने आ शब्दो कहे छे - "आ चोर सोंपी दे. 'काणि' न कर." अहीं स्पष्ट रीते

तो 'झघडो' अर्थ बेसे छे. ''अमारी साथे दुश्मनावट न कर / वेर न बांध'' एम अर्थ पण लई शकाय.

(४) रलप्रभसूरिकृत 'रिसह-पारण-संधि' (११८२) (संधिकाव्यसमुच्चय, संपा. र. म. शाह, १९८०)मां –

धणवंत दिंत न हु करहि काणि. (३, ३)

"धनवान लोको दान देवामां 'काणि' करता नथी" ए वाक्यमां 'काणि'नो 'वेर', 'झघडो' के 'कलंक' अर्थ न ज बेसे, 'संकोच' एवो अर्थ ज बेसे. राजस्थानी-गुजरातीमां 'शरम, संकोच' एवा अर्थमां 'काणि' शब्द वापरवानी दीर्घ परंपरा मळे छे पण ए शब्द आटलो वहेलो आ अर्थमां वपरायेलो मळे छे ए खास नोंधपात्र छे. अपभ्रंशमां 'झघडो' ए अर्थनी व्यापक परंपरानी साथे आ अर्थनुं अस्तित्व सविशेष नोंधपात्र बने.

(५) मेरुतुंगाचार्यकृत 'प्रबंधचिंतामणि' (१३०५) (संपा. जिनविजय मुनि, १९३३)मां –

> त्तच्छि-वाणि**-मुहकाणि,** सा पइं भागी मुह मरउं, हेमसूरि-अत्थाणि, जे ईसर ते पंडिया. (पृ.९२, पद्य २०२)

हेमचंद्राचार्यनी प्रशस्ति करवानी स्पर्धामां ऊतरेला बे चारणोमांनो एक एमने आवता जोईने आ प्रमाणे कहे छे — ''लक्ष्मी अने सरस्वती वद्ये जे 'मुहकाणि' छे, ते तें मिटावी. हुं तारा मों पर ओळघोळ थाउं छुं. हेमसूरिनी सभामां जेओ श्रीमंत छे तेओ पंडित पण छे.''

तक्ष्मी अने सरस्वती एक स्थाने रहेतां नथी, ए रीते एमनी वच्चे 'वेर' के 'झघडो' होवानी वात जाणीती छे. एटले अहीं 'मुहकाणि'नो एवो कोई अर्थ लेवानो थाय. 'मुह' शब्दने तक्षमां तईए एटले 'बोलचालनो झघडो' एम करवानुं थाय. 'कलंक' के 'शरम, संकोच' ए अर्थने अहीं अवकाश जणातो नथी.

आम, अपभ्रंशनां चार उदाहरणोमां 'काणि' शब्दनो जे एक अर्थ सुसंगत अने सरळ रीते बेसे छे ते 'झघडों' छे. एथी एनी प्रमाणभूतता सौथी वधारे गणाय. ए चार उदाहरणोमांथी त्रणेकमां 'वेर' ए अर्थने अवकाश रहे छे, पण 'शरम, संकोच' ए अर्थने लगभग अवकाश नथी. एक उदाहरणमां 'वेर', 'झघडों' ए अर्थिने बिलकुल अवकाश नथी ने निर्विवाद रीते 'संकोच'नो अर्थ बेसे छे, जे अर्थने पछीनी परंपरानो टेको छे. आ परथी 'झघडों'ना अर्थमां 'काणि' ए अपभ्रंशमां जूनो प्रयोग होवानुं समजाय. 'लजा, संकोच'ना अर्थमां 'काणि'नो प्रयोग ए पाछळनो फणगो समजाय. पछीशी नंने प्रयोगो साथे चालता होवानुं पण आ उदाहरणो बतावे छे.

गुजरातीना प्रयोगो 🏅

(१) प्राचीसं-अंतर्गत पाल्हणकृत 'आबूरास' (१२३३)मां — त करिज मंदिर तिजपाल तुहुं, हियइ म धरिजहु काणि. (२३)

राजा सोम तेजपालने आबु पर मंदिर बांधवा माटे जग्या आपे छे त्यारे बोलायेली आ उक्ति छे. संपादकीए अहीं 'काणि'नो अर्थ 'चिंता' कर्यों छे. ए अर्थ संदर्भमां बेसे छे. पण गुजरातीना जे अन्य प्रयोगो मळे छे तेमां 'चिंता' अर्थ भाग्ये ज जोवा मळे छे, 'लञ्जा, शरम, संकोच' ए अर्थ अत्यंत व्यापक छे. एमांथी 'संकोच' ए अर्थ अहीं सरस रीते बेसी जाय छे : "मनमां संकोच न राखतो". अने राजस्थानी शब्दकोश 'काण' 'काणि' ए शब्दोना अनेक अर्थों नोंधे छे तेमां 'मान, प्रतिष्ठा, इजत; लोकलजा, मर्यादा; संकोच; हद, सीमा' ए अर्थों छे, पण 'चिंता' ए अर्थ नथी. एटले चिंता ए अर्थने आ पद्यना संदर्भ सिवाय बीजो टेको नथी एम कहेवाय. आ रीते अहीं 'संकोच' ए अर्थ लेवो ज इष्ट कहेवाय. ('चिंता' ए अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक १९).

(२क) गुर्जरा.-अंतर्गत वस्तिगकृत 'चिहुंगति चोपाई' (१४मी सदी पूर्वाधी)मां — पुद्गल तणीय संख्या जाणि फिरतइं जीवि न कीधी काणि (४९)

संपादके 'a visit of condolence' (खरखरो) ए अर्थ आप्यो छे, जे ए शब्दनो अत्यारे प्रचलित अर्थ छे. पण अहीं ए कोई रीते बंधबेसतो थतो नथी. 'संकोच' ए अर्थ ज संगत बने तेम छे — "पुद्गलनी घणी संख्या छे. एमां मटकवामां जीवे कशो संकोच राख्यो नथी." मतलब के जीव अनेक पुद्गलोमां भन्यो छे.

(२ख) गुर्जरा.-अंतर्गत शालिभद्रसूरिकृत 'पंच पांडव चरित रास' (१३५४)मां --मइं मुरखि अजाणि अविणउ कीधउ तुम्हा रहइं,

मूं मोटि मुहकाणि तुम्हं खमु अवराहु मुह. (८,९२)

वनवास पामेला पांडवोने पुरोचन द्वारा आ शब्दी कहेवडावी दुर्योधन एमने वारणावत जवा विनंती करे छे. संपादकोए अहीं 'मुहकाणि'नो अर्थ 'a visit of condolence' (खरखरों) आप्यों छे, जे 'मोंकाण' शब्दनो अत्यारे प्रचलित अर्थ छे. परंतु ए स्पष्ट छे के आ संदर्भमां ए अर्थ तहन असंगत छे. अपभ्रंशनो 'वेर' 'झघडो' ए अर्थ पण बेसी शके तेम नथी. गुजराती परंपरामां व्यापक रीते जोवा मळतो 'लजा, शरम'नो अर्थ बेसी शके खरो – "में मूरखाए अजाणपणे तमारो अविनय कर्यो. मने एनी खूब शरम आवे छे. तमे मारा अपराधनी क्षमा करो" – परंतु 'दुःख' 'वसवसो' 'अफसोस' एवो अर्थ कदाच वधु उपयुक्त लागे – ''मने एनुं भारे दुःख छे, मने एनो भारे वसवसों / अफसोस छे." तो, 'काणि' शब्दना आ प्रकारना अर्थनो

संभव केटलांक उदाहरणोमां आपणने देखायों छे (जुओ आ पूर्वे ६, १४, १९ अने २० तथा हवे पछी २१) एनुं अहीं समर्थन सांपडे छे एम कहेवाय. 'मुहकाणि'नो आ उदाहरणमां तो 'काणि'थी कई विशेष अर्थ होय एम जणातुं नथी.

- (२) मेरुसुन्दरगणिकृत 'शीलोपदेशमाला' (१४६९) [संपा. ह. चू. भायाणी वगेरे, १९८०]मां शब्दकोशमां 'काणि=मर्यादा, दाक्षिण्य, लाज (काणिइं पाडी = शरममां नाखी, शरमावी)' एवी नोंध मळे छे, परंतु प्रयोगस्थान दर्शाव्युं नथी तेथी आ अर्थोने प्रयोगनो खरेखर केटलो टेको छे ते नकी थई शकतुं नथी. 'काणिइं पाडी' एम ज प्रयोग होय तो 'मर्यादा, दाक्षिण्य' ए अर्थोने अवकाश केटलो रहे ए प्रश्न छे. 'दाक्षिण्य' ए अर्थने तो परंपरानो के कोशोनो टेको पण जणातो नथी. ए अर्थ शाने आधारे अपायो हशे ते स्पष्ट थतुं नथी.
 - (३) *आरारा.*-अंतर्गत राजकीर्तिकृत 'आरामशोभारास' (१४७९)मां जे *थांनकथी आवीयां कहिता मं करिसि कांणि. (६४)*

माथे बगीचावाळी विद्युद्धमा तरफ राजा आकर्षाय छे. मंत्री ए कन्याने तेनो परिचय पूछे छे त्यारे आ वाक्य बोले छे. अहीं 'कांणि' शब्द 'शरम, लजा, संकोच'ना अर्थमां छे ए स्पष्ट छे : "तुं क्यांनी छो वगेरे कहे, लजवाती नहीं."

(४) हरिवि. (संभवतः १५मी सदी)मां – वयरीय विरहीय मारतु मार तु न करि कांणि. (५२)

कृष्णना कामबाणयी वींधायेली विरहिणी गोपीनी आ उक्ति छे. संपादके 'कांणि'नो अर्थ 'लज़ा' नोंध्यो छे अने आ प्रमाणे अनुवाद आप्यो छे — ''कामदेव पोताना वेरी विरहीने मारी नाखतां पण लाजतो नथी.'' 'लज़ा' ए अर्थ, आम, अहीं यथायोग्य छे. ए नोंधपात्र छे के गुजराती संपादन-प्रकाशनमां 'कांणि' शब्दनो 'लज़ा' एवो अर्थ सौ प्रथम अहीं नोंधायो छे — १९६५मां.

(५) नलाख्या. (१५मी सदी)मां – विहिची मेरु महागिरि नाप्यु पात्र तिण तां पाणि, तु शुं दान कर्युं मि महीमांहां, मनि मोटी ए **काणि.** (४, ८)

नळना मननो विचार अहीं व्यक्त थयो छे. संपादके 'काणि' शब्दनो 'खरखरानी कथनी, मरेला पाछळनी रोककळ' एवो अर्थ आप्यो छे ते 'काण' शब्दना अत्यारे प्रचितत प्रयोगनो अर्थ छे, पण आ संदर्भमां ए केम लागु पडे ए कोयडो छे. अहीं 'संकोच' ए अर्थ बंध बेसे छे – "सुपात्रना हाथमां मेरु पर्वत वहेंची न आप्यो तो में आ पृथ्वीमां शुं दान कर्युं कहेवाय एनो नळना मनमां भारे संकोच हतो."

कदाच, 'खटक' 'वसवसो' ए अर्थ वधारे सारी रीते बंध बेसे : "नळना मनमां

भारे वसवसो हतो.'' ('खटक' 'वसवसो' ए अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक १७क अने २१)

(५क) कादं(ध्र). तथा कादं(शा). (१५मी सदी)मां – इतर कन्यानी पिरि जु मेहेलीइ कुल-काणि.

ध्रुवे शब्दकोशमां 'प्रतिष्ठा' अने टिप्पणमां 'कुळनी ख्याति, प्रतिष्ठा' एम अर्थ आप्यो छे अने हिंदी 'कुलकानी' शब्दनो हवालो आप्यो छे. शास्त्रीए 'कुलनी मर्यादा' अर्थ आप्यो छे, जे संदर्भमां बराबर वधारे बंध बेसे छे : "अन्य कन्याओनी पेठे जे कुलमर्यादाने छोडे छे." •

(६) वीसरा. (१४५० के पछी)मां – हम तुम्ह बार वरसकी **कांगि**. (२९)

राजमती वीसलदेवने टोणो मारे छे के तारा देशमां मीठाना खडको छे, पण ओरिस्साना धणीने त्यां तो हीरानी खाणो छे, त्यारे वीसलदेव ओरिस्साना राजदरबारमां जवानुं मनथी नक्की करी ले छे अने आ उक्ति बोले छे. 'कांणि' शब्द आ कृतिमां आ उपरांत बीजां बे स्थाने वपरायो छे, ते बधां स्थानोने अनुलक्षीने संपादक एनो अर्थ 'agreement, convention' (समजूती, रूढि) एवो आपे छे. प्रस्तुत स्थाने ए अनुवाद आम करे छे – 'You and I (must undertake) an agreement (to remain separate) for twelve years.' (तारे अने मारे बार वरस सुधी जुदां रहेवानी समजूती करवी जोईए.)

संपादक स्वीकारे छे के 'कांणि'नो अर्थ कोयडारूप छे. पूर्वे माताप्रसाद गुप्ताए आपेला 'सोगंद', 'प्रतिज्ञा' ए अर्थ माटे कोई प्रमाण न जडवाथी राजस्थानी शब्दकोशे आपेला 'behavioural convention' मांथी 'behavioural constraint, convention' एवो अर्थ विकस्यो होय एवं ए अनुमान करे छे. संपादक अहीं 'behavioural constraint, convention' एवा शब्द वापरे छे ते परथी समजाय छे के एमने 'व्रत, नियम, लोकाचार'नो अर्थ अभिप्रेत छे, जे 'agreement' शब्द व्यक्त न ज करी शके अने 'convention' एण एने माटे पूरतो शब्द न गणाय.

राजस्थानी शब्दकोशे 'कांणि'ना आपेला अर्थ (जे आ पूर्वे आपणे नोंध्या छे)मांथी कयो अर्थ 'behavioural convention' द्वारा संपादकने अभिप्रेत हशे ते समजातुं नथी. कोशमां 'लोकलज्ञा, मर्यादा' अर्थ छे, पण एमां 'अदब' 'आमन्या'नी अर्थछाया छे, 'व्रत, नियम, लोकाचार'ना अर्थने अवकाश आपे एवुं कशुं नथी. समग्र परंपरामां पण अन्यत्र क्यांय आ शब्द आ अर्थमां वपरायेलो देखातो नथी. आ कृतिमांनां बीजां

बे स्थानीए तो ए अर्थने भाग्ये ज अवकाश छे ने 'लज़ा, संकोच'ना अर्थने पूरो अवकाश छे एम हवे पछी आपणे जोईशूं. एटले 'व्रत, नियम, लोकाचार' ए अर्थने कोई टेको होय एवं जणातुं नथी. आ संदर्भमां ए केटलो उपयुक्त छे ए पण विचारवा जेवं छे.

राजस्थानी-गजराती परंपरामां व्यापक रीते मळतो 'लञ्जा, संकोच'नो अर्थ तो अहीं बेसतो नथी ज. अपभ्रंशनो 'झघडो, वेर' ए अर्थ पण नहीं, बृहत्हिन्दीकोशे सरदासनी एक पंक्तिना टेका साथे आपेलो 'कानि, कानी' ए शब्दनो 'कष्ट, दु:ख' ए अर्थ अहीं बराबर बेसी जाय छे - "मारे ने तारे (हवे) बार वरसनुं (वियोगनुं) कष्ट (उठाववानुं).'' परंतु आ अर्थने राजस्थानी-गुजराती परंपरामांथी बहु ओछो टेको मळे छे. ('कष्ट'ना अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्रमांक १९). तेम छतां अन्य प्रमाणभूत अर्थ न सांपडे त्यां सुधी आ अर्थने स्वीकारवानुं विचारी शकाय. गुप्ताने संपादकना अर्थो तो स्वीकार्य जणाता नथी.

(७) ए ज कृतिमां -बोलइ भावज छंडीय काणि. (५०)

राजमतीने छोड़ी परदेश खेडवा तैयार थयेला वीसलदेवने भाभी ठपको आपे छे ते प्रसंगनी आ पंक्ति हो. संपादके अहीं अनुवाद आम आप्यो है - 'His brother's wife spoke, abandoning convention' (भाभी रूढि, लोकाचारनी त्याग करी बोली). आ अनुवाद नभे तेम छे, पण परंपरामां मळता 'लझा, संकोच, लोकलञ्जा, मर्यादा' ए अर्थोथी आगळ जवानी जरूर नरी - ''भाभी संकोच छोडीने, मर्यादा छोड़ीने बोली."

(८) ए ज कृतिमां -चालियउ ऊलग छंडी(य) काणि. (५३)

वीसलदेव नीकळवानी तैयारी करे छे त्यारे आ पंक्ति आवे छे. संपादके अनुवाद आम आप्यो हे - "he (wanted to) go into service as a courtier, abandoning convention" (रूढि तजीने ए राजसेवा माटे जवा तैयार थयो). अहीं पण 'रूढि' करतां 'लोकलजा, कुलमर्यादा' ए अर्थो ज वधु उपयुक्त गणाय.

(९) आरारा.-अंतर्गत विनयसमुद्रकृत 'आरामशोभा चोपाई' (१५२७)मां -मागि मागि हिव म करिसि काणि. (६२)

पोताना उपर उपकार करनार विद्युद्धभा प्रत्ये बोलायेली आ नागनी उक्ति छे. अहीं 'काणि'नो 'संकोच' ए अर्थ अत्यंत स्पष्ट छे - ''माग, माग, हवे संकोच न राखती.''

(१०) नाकरकृत 'आरण्यक-पर्व' (१६मी सदी मध्यभाग) (महाभारत भा.२, संपा. केशवराम का. शास्त्री, १९३४) :

विद्या न भणि, लोपि निजकर्म, अवसर आवि निव करि धर्म, त्रिया तणी जे आणइ **काणि,** तेह तु आलशी चोषु जाणि. (१०६, ४९)

कृतिमां चार प्रकारना आळसुओनुं वर्णन थयेलुं छे, तेमां आ आखी कडीमां चोया प्रकारना आळसुनुं वर्णन छे. संपादके अहीं 'काणि'ने अर्वाचीन गुजराती 'काण'ना अर्थने आधारे घटाव्यो छे अने "स्त्री मरी जतां जे रहतो आवे" एवो अर्थ कर्यो छे. विशेष समजूती पण आपी छे के "मुद्दे तेम न करतां तेणे सत्ताथी बीजी स्त्री करवी, तो ते आळसु न गणाय." देखाई आवे छे के वाक्यान्वय साथे घणी छूट लईने अर्थ करवामां आव्यो छे अने समजूती पण साहसिक छे. अहीं 'लाज, शरम, संकोच' ए अर्थ बेसाडवामां कशी मुश्केली लागती नथी — "स्त्रीनी जे लाज-शरम राखे, एने कहेवा योग्य कही न शके ए चोथो आळसु."

(११**)** *अंबरा***.(**१५८३)मां –

देवादित्य राणी प्रति कहइ, लज्जा कारण मुझ मनि दहइ,

अपयश एक धर्मनी हाणि, कहु साचुं म करु मिन काणि. (१०७-०८) राजाराणी वनवासमां छे. राणीने पहेलेथी पेट रह्युं हतुं ते हवे गर्भ वधतां राजाने एनी जाण थाय छे. ए प्रसंगे राजा राणीने खरी हकीकत पूछतां आ शब्दो बोले छे. संपादके 'काणि' शब्दनो अर्थ 'चिंता' आप्यो छे, जे पहेली दृष्टिए बेसी जाय, परंतु 'चिंता' अर्थने परंपरानो टेको नथी अने क्रमांक १नी पेठे 'लज्जा, संकोच' ए अर्थ वधारे योग्य रिते बंध बेसे छे : ''राजा देवादित्य राणीने कहे छे के (वानप्रस्थमां पुत्रजन्मनो अवसर आवतां) मने लज्जा थाय छे ने तेथी मनमां बळे छे. धर्मभंगनो अपयश आमां रहेलों छे. खरेखर हकीकत शुं छे ते कहो, मनमां कशो संकोच न राखो.''

(१२) *आरारा.*-अंतगर्त समयप्रमोदकृत 'आरामशोभा चोषाई'(१५९५)मां --आव्यउ पीहरि तुम्ह तणइ, खोलउ छंडी **काणो** रे. (१०५)

पोतानो पिता लाडुनो घडो लाव्यो छे ते खोलवा राणी राजाने विनंती करे छे, त्यारे राजा द्वारा बोलायेली आ उक्ति छे. अहीं 'काण' (प्रास-अर्थे 'काणो')नो 'संकोच' ए अर्थ स्पष्ट छे — ''तारा पियरथी ए आव्यो छे, माटे तुं ज संकोच छोडीने एने खोल.'' (१३) आरारा-अंतर्गत पूजाऋषिकृत 'आरामशोभा रास' (१५९६)मां -राजा बोलइ, 'म करु काणि', जोसी जंपइ मधुरी वांणि, 'करउ सजाई वीवाह तणी, जिम सुख हुवइ राजा भणी.' (७२-७३)

प्रधान विद्युक्षभाना पिताने राजा पासे लावे छे ते प्रसंगनुं आ वर्णन छे. अहीं पण 'काणि'नो 'लज़ा, संकोच' ए अर्थ स्पष्ट छे. राजाना शब्दोनुं तात्पर्य एम छे के लज़ा, संकोच राख्या विना तारी शी इच्छा छे ते कहे, जेना जवाबमां ए ब्राह्मण (जोशी) विवाहनी तैयारी करवानुं सूचवे छे.

(१४) कर्पूमं.(१६१९)मां -

उलग करतुत्, प्रभू, ताहरी, कसी काणि म आणेस माहरी. (३१६)

प्रधान राजकुमारना शयनगृहमां छुपाईने सर्पने मारीने राजाने चोथी घातमांथी बचावे छे ने राणीना स्तन पर पडेला लोहीना छांटाने लूछवा जाय छे, त्यारे राजकुमार जागी जाय छे. प्रधानना हाथमां तलवार जोईने ए चमके छे, चिंतातुर बने छे अने पूछे छे — "आ ते तारी रीत ? निर्लज धईने हाथमां खड्ग लईने जोतो हतो ?" जवाबमां प्रधान उपरनी उक्ति बोले छे. संपादके, अलबत्त संदर्भने आधारे ज, अहीं 'काण'नो अर्थ 'शंका' कर्यों छे. ए अर्थ लेतां पंक्तिनो अनुवाद आम थाय — ''स्वामी, हुं तमारी सेवा करतो हतो, मारा पर कशी शंका न लावशो.'' 'शंका' ए अर्थ आ संदर्भमां बराबर बेसी जाय छे. राजकुमार तरत प्रधानने शिक्षा कराववानुं मनमां विचारी पण ले छे, परंतु परंपरामांथी ए अर्थने टेको मळतो नथी ने आगळनी पंक्तिमां 'निर्लज' शब्द वपरायो छे ते जोतां अहीं 'लज्ञा, संकोच'नो अर्थ रहेलो मानवो (मारी कशी शरम न राखशो, मारो कशो संकोच न राखशो) के 'शरम, संकोच' ए अर्थमांथी 'शंका'नो अर्थ विकरयो छे एम मानवुं के पछी 'खटको/(शंकानुं) शल्य' एवो अर्थ लेवो ते कोयडो छे. ('खटको' ए अर्थ माटे जुओ क्रमांक १४ अने २०.)

(१५) जिनरा.-अंतर्गत जिनराजसूरिकृत 'वइरकुमार गीत' (१७मी सदीनुं पहेलुं चरण)मां --

> जउ तइ कबही अवगणी, धोटा, किर लोगणकी **काण**, धोटा, तउ परदेशी मीत ज्युं, धोटा, ऊठि चलेसी प्राण, धोटा.

> > (४, पृ.७१-७२)

दीक्षा लई संयममार्गे पळेला वज्रस्वामीनी मातानी पुत्रवात्सल्यनी लागणी व्यक्त करता गीतनी आ कड़ी छे. संपादके 'काण' शब्दनो 'लिहाज' (लज्जा, संकोच, अदब, मलाजो) अर्थ आप्यो छे ते यथायोग्य छे. माता अहीं कहे छे के लोकलाजने कारणे जो तुं मने अवगणीश तो है पुत्र, मारा प्राण परदेशी मित्रनी पेठे चाली नीकळशे.

(राजस्थानी 'धोटा' एटले पुत्र.)

(१६) उक्तिर.(१७मी सदीनुं पहेलुं चरण)मां -

साधुसुन्दरगणिए 'काणि' शब्द नोंध्यो छे अने एनो संस्कृत पर्याय 'कानिः' आध्यो छे, परंतु आ तो मूळ शब्दनुं संस्कृतीकरण जणाय छे. तेथी 'काणि' शब्दना अर्थ पर कशो प्रकाश पडतो नथी. नहीं तो ते समयनी ज अर्थनी नोंध घणी मार्गदर्शक बनी होत.

(१७) *प्रद्यचु*.(१६२६)मां -

तुम्हे केहनी म करु **कांणि**, हारइ ते शिर मूंडी आणि. (१२०)

सत्यभामा अने ऋक्मिणीने गर्भ छे अने बन्ने वच्चे शरत थाय छे के प्रज्ञन्ममां जे पाछळ रहे ते हारी गणाय. आ संदर्भमां बोलायेली आ उक्ति छे. संपादके 'काणि' शब्दनो 'लजा' एवो अर्थ आप्यो छे अने ए यथायोग्य छे. आ पंक्तिमां एम कहेवायुं छे के समारे कोईनी शरम राखवानी जरूर नथी, जे हारे ते मार्थु मूंडावे.

(१७क) एमां ज --

ऊपनु कोप थई चिचि **कांणि.** (५४८)

आ पंक्तिनो शब्दकोशमां संदर्भ नथी. अहीं 'संकोच, खटको' एवो अर्थ संदर्भमां बराबर बंध बेसे छे: "(कृष्णे प्रद्युम्नकुमार साथे लडवानी) संकोच के खटको छोडी दीधो अने ए क्रोधाविष्ट थया." ('खटको' ए अर्थ माटे जुओ क्र.५ अने २०)

(१७ख) एमां ज -

छांडी हापा शेठनी **कांणि**, धूरत एक घरि घालिउ आंणि. (३२७)

आ पंक्तिनो पण आपेला शब्दकोशमां संदर्भ नथी. अहीं 'लाज, शरम'नो अर्थ स्पष्ट छे : "हापा शेठनी लाज छोडीने एणे एक धूर्तने बोलावी घरमां घाल्यो."

(१७ग) पुण्यसागरकृत 'अंजनासुंदरी रास' (१६५३) (जैन गूर्जर कविओ, भा.३, प्र.२२ पर उद्धत अंश)मां –

सेवकिन सानिधि करी. देवो अविरल वाणि.

जेम वेगे सिद्धि चढइ. काइ म राखिस **काणि**.

सरस्वतीदेवीनी आ स्तुतिमां 'काणि'नो 'संकोच' अर्थ स्पष्ट छे : 'सेवकने सहाय करीने, अविरल वाणी आपजो, जेथी जलदी सिद्धि मळे, जरा पण संकोच न करशो.'

(१८) *हरिख्या*.(१६४८)मां -

तेडी लावो कन्याने ए वर सहित, भगवान !

साथे जनेता तेडजो, तमे रखे करता **काण.** (११, ७)

एक ब्राह्मणनी कन्यानो विवाह करावी आपवानुं हरिश्चन्द्र माथे ले छे त्यारे ए

ब्राह्मण प्रत्ये बोलायेला आ हरिश्चन्द्रना शब्दो छे. संपादके 'ठपकापात्र वर्तणूक' एवी अर्थ लीधो छे (जे भगवद्गोमंडलें समाद्री लीधो छे !), जे संदर्भमां, जरा कढंगी रीते पण बेसे छे — ''कन्यानी माताने पण साथे लावजो, (न लाववानी) ठपकापात्र वर्तणूक (भूल) न करशो.'' परंतु आ अर्थने परंपरानो टेको नथी अने परंपरानो जाणीतो 'संकोच' ए अर्थ अहीं आबाद रीते बेसी जाय छे — ''माताने साथे लावजो, संकोच करशो नहीं.'' आ स्थितिमां, अहीं 'संकोच' ए अर्थ ज रहेलो होवानुं मानवुं जोईए.

(१८क) एमां ज -

ज्यम होय त्यम कहो, ऋषिजी ! रखे करता काण.

अहीं 'संकोच'नो अर्थ स्पष्ट छे : ''जेवुं होय तेवुं कहेशो, रखे कई संकोच करता.''

(१९) *प्राचीका.*-अंतर्गत अज्ञात कविकृत 'माधवानल कथा'(अनुमाने १७मी सदी पूर्वाधीमां --

> सुणी वात काम्यन्य तणी, मन मांहि उपनी **काणि**, जेणि परि राजा दशरथ मूउ, तेणि पिरि माधव जाणि. (४९७)

कामकंदलाना मृत्युना समाचार मळतां एना आघातथी माधव मृत्यु पामे छे ते प्रसंगनुं वर्णन करती आ पंक्तिओ छे. सपादके 'काणि' शब्दनो 'विचार, चिंता, वात' एवा अर्थोनो तर्क कर्यो छे अने गुजराती 'कहाणी, काण' ए शब्दो तरफ ध्यान दोर्युं छे, पण अहीं 'काणि' शब्दनो प्रयोग थोडो कोयडारूप छे. 'लजा, संकोच' ए जाणीतो अर्थ अहीं उपयुक्त नथी; 'चिंता' ए अर्थने परंपरानो टेको नथी (जुओ आ पूर्वे क्रमांक १ अने ११) ते उपरांत अहीं 'चिंता' करतां आघातनी लागणीनो निर्देश वधु संभवित गणाय. तो पछी अहीं ए हिंदी 'कानि' (कष्ट, दुःख) शब्द रहेलो मानवो ? के पछी 'काणि'ना 'संकोच' अर्थमांथी 'खटको, शल्य' एवो अर्थ विकस्यो होवानुं अने अहीं अर्थ होवानुं मानवुं ? ('कष्ट, शल्य' ए अर्थो माटे जुओ क्रमांक ६, १४ अने २१)

(२०) अखाका.-अंतर्गत 'सोरठा' (१७मी सदी मध्यभाग)मां -

सहुय तारो साज, तुं स्वामी सर्वे तणो. (२१७) बहु पग, बहु पाण, बहु नासा ने नेत्र बहु, कर्ता न करे **काण**, अंग-विचरण अळगां अखा. (२१८) नीचथी अतिशे नीच, आचरतुं नव ओसरे, (पाठां. सहुए तोरां काज)

कर्म असंख्यनो कीच, तुंने न लागे, श्रीकमा ! (२१९) आ सृष्टि ब्रह्मनो विस्तार छे, पण ब्रह्म एनाथी अलिप्त छे ए वेदांतना तत्त्वविचारने रजू करती आ पंक्तिओ छे. संपादके 'काण' शब्दनो 'कहाण, कथन' एवो अर्थ आप्यो छे, पण ते संदर्भमां अस्पष्ट ज रहे छे. अहीं पण 'काण' शब्दनो प्रयोग थोडो कोयडारूप छे, पण 'संकीच'नो अर्थ ज वधु प्रतीतिकर छे : ब्रह्म अनेक रूपे विस्तरे छे, एमां ए कर्ता कशो संकोच राखतो नथी, पण एनां ए अंगोनुं प्रवर्तन कर्ताथी जुदुं ज होय छे.

(२१) आनंदघनकृत 'बावीसी'(१७मी सदी उत्तराघी)मां – ज्ञांनस्वरूप अनादि तुह्यारुं ते लीघुं तुह्ये तांणी, जुओ अज्ञानदशा रीसावी, जातां काणि न आंणी हो. (१९, १)

आ मिल्लिजनने संबोधायेली स्तुतिस्त्य उक्ति छे. एमांना 'काणि' शब्दना प्रयोगनुं सिविशेष महत्त्व छे, ते एटला माटे के एनो ज्ञानविमलसूरिए करेलो (१७१३) अर्थ आपणने प्राप्त थाय छे. ज्ञानविमलसूरि आ कडीनी समजूती आ प्रमाणे आपे छे : 'हे नाथ ! तुह्यारुं अनादि ज्ञानस्वरूप निरूपाधिक ज्ञान ते तुह्यारुं तुह्ये ताणी लीधुं — निरावरणी थई संग्रह्युं. ते देखी अज्ञानदशा अनादिनी हती ते रीसावी गई. ते जाती जाणी देखीनइं काई मनमां शंका कांसलि नाणी, मनावी पणि नहीं.'

ए स्पष्ट छे के ज्ञानविमले 'काणि' शब्दना 'शंका' 'कांसलि' ए अर्थो कर्या छे. 'जातां काणि न आणी' ए वाक्य एमणे मिह्ननाथने संदर्भे घटाव्या छे ने अज्ञानदशाने चाली जतां जोईने मिह्ननाथना मनमां कशी 'शंका' के 'कांसलि' न थई एम एमनुं कहेवानुं छे. 'कांसलि' शब्दनो संपादके 'खटक, वसवसो' एवो अर्थ आप्यो छे (ए अर्थ शब्दकोशोमां नोंघायेलो मने मळयो नथी के कोई बीजो प्रयोग पण मळयो नथी; ए 'कासळ' एटले 'नडतर'नुं ज अन्य रूप ?) 'खटक' ए अर्थ अहीं बरावर बेसी जाय छे. 'शंका' शब्दने अहीं 'अचकाट, द्विद्या' एवा अर्थमां आपणे लेवानो रहे, 'वहेम'ना अर्थमां नहीं. आ अर्थो 'संकोच'ना अर्थनी नजीक आवी जाय छे.

गमे तेम, मध्यकाळमां 'काणि' शब्द 'शंका' 'खटक' 'वसवसो' एवी अर्थछायामां समजवामां आवतो हतो एनो पाको पुरावो ज्ञानविमलसूरिना आ विवरणमांथी प्राप्त थाय छे अने आ पूर्वे आ अर्थीनो संभव देखायो छे (शंका – १४; कष्ट, दुःख, खटक – ६, १४, १९, २०, २२) तेने आथी टेको मळे छे.

'जातां काणि न आंणी' ए वाक्यने ज्ञानविमले मिल्लनाथ साथे जोड्युं छे तेने पछीनी कडीओनुं समर्थन छे. पछीथी निद्रा ने स्वप्नदशा रिसाई गई ने नाथे मनावी नहीं, मिच्यामितने अपराधिनी जाणी नाथे घरथी बहार काढी ए प्रकारनी उक्तिओ मळे छे. पहेली दृष्टिए तो आपणे अज्ञानदशानी साथे वाक्य जोडी दईए अने अज्ञानदशाए जातां कई 'काणि' (संकोच, वसवसो) न करी एम अर्थ करी बेसीए. परंतु पछीनी कडीओनी उक्तिलढणो जोतां ज्ञानविमलसूरिना अर्थघटनने न स्वीकारवा कारण जणातुं

नथी.

(२२) सम्यचो.(१७मी उत्तराधी)मां – थया अने थास्ये जे सिद्ध अंश निगोद अनंत प्रसिद्ध, तो जिनशासन सी भयहाणि, बिंदु गयै जलिध सी काणि. (९२)

संपादके 'काणि'नो 'हानि, खोट' एवो अर्थ आप्यो छे ते संदर्भ जोतां यथायोग्य लागे छे. स्वोपज्ञ बालावबोधमां पण 'काणि' शब्द एम ने एम रह्यो छे पण कथयितव्य स्पष्ट छे: ''जे जीवो सिद्ध थया छे अने थशे ए तो निगोदना अनंतमा भाग समान छे, एथी प्रतिपक्षी माने छे तेम जिनमतमां संसारने कशो भय, कशी हानि नथी — संसार चाल्या ज करवानो छे, जेम सागरमांथी एक बिंदु ओछुं थये सागरने कोई हानि के खोट नथी.'' आ, वळी, 'काणी' शब्दनी एक विशिष्ट अर्थछाया छे, जोके 'संकोच' ए अर्थमांथी 'ओछप, खोट' एवा अर्थ सुधी जई शकाय. (आ अर्थ माटे जुओ हवे पछी क्र.२४.)

(२३) जगन्नायकृत 'सुदामो' (१७०० आसपास) (महाकवि प्रेमानंद अने बीजा आठ कविओना सुदामाचरित्र, संपा. मंजुलाल र. मजमुदार, १९२२)

रखे **काण्य (?) करता किशी तो मागतां मन मांहे. (**9९)

संपादके 'काण्य' विशे प्रश्नार्थ कर्यों छे, तेथी एमने ए शब्द बेठो नथी एम समजाय छे. परंतु अहीं एनो 'संकोच' अर्थ स्पष्ट छे : ''मागतां मनमां जराये संकोच न राखशो.''

(२४) प्रीतमदासकृत 'दाणलीला' (१८मी सदी) (प्रीतमदासनां कृष्णभक्तिनां पदो, संपा.अश्विनभाई पटेल, १९८९, प्रस्ता. पृ.२९ तथा ७५ पर उद्धृत अंश)मां —

दूध दहींनी **काण** चलावे, छास दुर्लभ छे ब्रिजवासी.

अहीं क्र.२४नो 'हानि, नुकसान' ए अर्थ ज संभवित लागे छे : ''(कृष्ण) दहीं दूधनुं घणुं नुकसान करे छे. तेथी व्रजवासीओने छास पण दुर्लभ थई गई छे.''

(२५) शामळकृत 'सूडाबहोतेरी' (१७६५)मां – *छापाना थापा करुं. गान करुं केम काण्य ?.*

छापाना थापा करु, गान करु कम **काऱ्य** . गीतानां बतां करुं. हरिकीर्तनमां हाण्य.

कुलटा भगतने पोतानो संग करवा कहे छे तेनो उत्तर आपतां भगत आ प्रमाणे कहे छे. आमां 'काण्य' शब्दनो शो अर्थ करवो ते जरा कोयडो छे. ए तो स्पष्ट छे के कुलटानुं सूचन भगतने हरिकीर्तनमां हानि समान लागे छे. एमां 'छापा'ना 'धापा', 'गान'नी 'काण्य', 'गीता'नां 'बतां' करवा जेवुं एमने लागे छे. 'धापा' 'बतां' ए शब्दो द्वारा अहीं शुं अभिप्रेत छे ते स्पष्ट नथी, पण कंईक विपरीत स्थिति उद्दिष्ट छे ए तो

समजाय छे. आ रीते विचारीए त्यारे 'गान'नी सामे 'काण्य' एटले 'रोककळ' एवो अर्थ ज बेसे. मध्यकाळमां आ अर्थमां 'काण्य' शब्दनो आ विरल प्रयोग जणाय छे.

(२६) छेल्ले एक प्राचीन दुही जोईए:

गुण मोटा, दिन नान्हडा, राति अंधारि जाणि, कागल तेह सांकडा, तिणि लखतां हुइ कांणि.

अहीं 'काणि'नो 'लज़ा' ए अर्थ अत्यंत स्पष्ट छे – ''तारा गुण मोटा, ज्यारे दिवस टूंका छे; वळी अंघारी रात छे अने कागळ सांकडो छे तेथी लखतां मने लज़ा आवे छे – लखतां हुं लाजुं छुं एम तुं जाणजे.''

जोई शकाय छे के गुजरातीमां 'काणि'ना 'शरम, संकोच' ए अर्थनी घणी व्यापक अने दीर्घ परंपरा छे — एनो दाखलो तो आपणने छेक अपभ्रंश-काळमां जड्यो छे. परंतु गुजरातीमांये तेरमी सदीथी सत्तरमी सदी सुधीना दाखला जडे छे. पछी पण एना दाखला हशे ज, पण आपणी पासे एनी नोंध नथी. जैन कविओनी कृतिओमां तो 'काणि' शब्द आ अर्थमां ज जोवा मळे छे ने राजस्थानी कोश एनी घणी अर्थछाया नोंधे छे, तेथी गुजराती-राजस्थानीनो ए सहियारो वारसो होवानुं, राजस्थानमां एनी सविशेष व्यापकता होवानुं समजाय छे.

आपणे त्यां 'काणि' शब्दना बीजा अर्थो लेवाया छे त्यां केटलेक ठेकाणे 'शरम, संकोच'नो अर्थ सरळताथी बेसे छे अने लेवायेला अर्थो छोडावाना थाय छे. 'चिंता', 'शंका' ए अर्थो संदर्भमां नभे छे, परंतु 'शरम, संकोच'नो अर्थ बेसतो होवाथी ए अर्थो पण छोडवा जेवा लेखाय. 'कष्ट, पीडा, दुःख' ए अर्थने अवकाश आपे एवां बेत्रण उदाहरणो सांपडे छे, पण ए अर्थने हजु विशेष समर्थननी आवश्यकता छे एम लागे छे. अखानी पंक्ति जेवा कोई प्रयोग हजु विशेषपणे कोयडारूप रहे छे. अत्यारना अर्थमां 'काण' शब्दनो प्रयोग आ नोंधमां आव्यो नथी, पण ए तो नोंध माटे जे जातना सूचीकरणनी मदद लेवाई छे तेनी मर्यादा होई शके. ए सूचीकरणमां अत्यारना अर्थना प्रयोगो नोंधाया नथी. अपभ्रंशनो 'वेर' के 'झघडो' ए अर्थ गुजराती सुधी पहोंच्यो नथी.

ब्युत्पत्ति

'काण' के 'काणि' शब्दनी व्युत्पत्ति शामांथी ते विशे कशो ज प्रकाश पडतो नथी. उक्तिर.ए एनो 'कानिः' एवो संस्कृत पर्याय आपेलो, परंतु संस्कृतमां आयो कोई शब्द ज नथी, एटले ए कृत्रिम संस्कृतीकरण होवानुं नक्की थाय छे. आ उपरांत 'कथानिका' के 'कदनी'मांथी 'काणि'नी व्युत्पत्ति केटलाक विद्वानोए सूचवी छे, पण काचल , अर्थकंगति वगेरेनी दृष्टिए एमां भाग्ये ज कई प्रतीतिकर छे. आथी हाल

तो 'काणि' शब्दने, केटलांक विद्वा ग्रेए कह्यो छे तेम, 'देश्य' शब्द - अज्ञात मूळनो शब्द ज लेखवो रह्यो. 'वेर' के 'झघडा'ना अर्थनो, 'शरम, संकोच'ना अर्थनो अने 'पीडा, कष्ट' तथा 'रोककळ' (आ बंने अर्थो संकळायेला हशे ?)ना अर्थनो – त्रणे 'काणि', 'काण' जुदा हशे के एक ज अने एक ज होय तो आ अर्थविकास केम समजाववो ए बधो कोयडो ज छे.

गिजरात, दीपोत्सवी अंक, सं.२०४५]



कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षण निधिनां प्रकाशनो

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितमहाकाव्य-ग्रंथ १	संपा. मुनि चरणविजयजी	१९८७	
ग्रंथ २	संपा. मुनि चरणविजयजी	9920	
(पुनर्मुद्रण)			
Studies in Desya Prakrit	H. C. Bhayani	1988	
हैमसमीक्षा (पुनर्मुद्रण)	मधुसूदन मोदी	१९८९	
हैम खाध्यायपोथी (डायरी)	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९	
हेमचन्द्राचार्यकृत अपभ्रंश व्याकरण	संपा. हरिवल्लभ भायाणी	१९९३	
(सिद्धहैमगत) (द्वितीय संस्करण)	•		
विजयपालकृत द्रौपदीस्वयंवर	आद्य संपा. जिनविजयजी मुनि	१९९३	
(पुनर्मुद्रण)	संपा. शान्तिप्रसाद पंड्या		
कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य स्परिणका		१९९३	
अनुसंधान-१ (अनियतकालिक)		१९९३	
अनुसंधान–२–३		१९९४	
अनुसंधान–४		१९९५	
अपभ्रंश व्याकरण (हिन्दी अनुवाद)	प्रा. बिन्दु भट्ट	१९९४	
प्रबंधचतुष्टय	संपा. रमणीक शाह		
हैम संगोष्ठी	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९९५	
आवश्यक-चूर्णि	संपा. मुनि पुण्यविजयजी मुद्रणाधीन		
	सहायक रूपेन्द्रकुमार पगारिया		



नेमिनंदन ग्रंथमालानां हमणानां प्रकाशन

मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९९४
चं. ना. शिनोरवाला	१९९४
मुनि विद्याविजयजी	१११४
	मुनि शीलचन्द्रविजय संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय चं. ना. शिनोरवाला मुनि विद्याविजयजी

आ कोशनी विशिष्टताओ

- एमां मध्यकालीन गुजराती कृतिओना ६६ संपादनग्रंथोमां अपायेला ७१ शब्दकोशो संकलित करेला छे. आशरे २०,००० जेटला शब्दो एमां समाविष्ट छे.
- शब्दो साथे ए ज्यांथी लेवामां आव्या छे ए आधारग्रंथोनो निर्देश करवामां आव्यो छे, जेथी अभ्यासीओने मूळ शब्दप्रयोग सुधी पहोंचवानी सगवड मळे छे.
- मूळ ग्रंथमां अपायेला शब्दार्थों एम ने एम स्वीकारी लेवामां नथी आव्या पण जरूर जणाई त्यां शब्दना प्रयोगस्थान सुधी जई शब्दार्थीने चकास्या छे ने एमां आवश्यक शुद्धि करी छे. आ शुद्धि माटे संपादके संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशी, गुजराती, राजस्थानी, हिंदी, फारसी, उर्दू शब्दकोशो तेमज अन्य संदर्भग्रंथोनी सहाय लीधी छे. ए रीते आ मात्र संकलित कोश नथी, संशोधित कोश छे. एने प्रमाणभूत बनाववानी सर्व कोशिश करवामां आवी छे.
- ४ कोई वार मूळना भ्रष्ट पाठ सुधारीने नवा शब्दने प्रकाशमां लाववानुं पण बर्न्यु छै.
- ☆ संस्कृतादि भाषामांथी शब्दमूळ दर्शाववामां आव्युं छे ते उपरांत राजस्थानी-हिंदी-मराठी
 वगेरे भाषाओना शब्दोनी समान्तरता दर्शाववामां आवी छे.
- आ ग्रंथ मध्यकालीन गुजराती भाषाना ज नहीं पण मध्यकालीन राजस्थानी अने हिंदी भाषाना अभ्यासमां पण उपकारक बनी शके एम छें. त्रणे भाषानो केटलोक समान शब्दवारसो छे ज.

*

एक नूतन शिखरनुं आरोहण

मित्र जयंत कोठारी एक पीढ अने खडतल पर्वतारोहक छे... जयंतभाईए 'गुजराती साहित्यकोश (मध्यकालीन)' अने 'जैन गूर्जर कविओ'नुं नवसंस्करण – एवां बे उन्नत शिखरो सर कर्या पछी हवे आ त्रीजुं शिखर पण सर कर्युं छे.

*

जयंतभाईए मात्र शब्दसूचिओनुं संकलन ज नथी कर्युं. एम करे तो जयंतभाई शाना ? तेमणे ज्यांज्यां अर्थ वगेरे बाबत शंकास्पद जणाई त्यांत्यां चोकसाई अने शुद्धि करी छे, अने ते माटे अनेक कोशो उथलाव्या छे, अनेक मूळ कृतिओ के संलग्न कृतिओने तपासीने यथाशक्य प्रामाण्य साधवानी मथामण करी छे. आ कोशथी मूळ कृतिओने समजवामां जे सहाय मळशे, ते उपरांत घणी अर्थघटननी गूंचो पण ऊकलशे, अने तुलनात्मक सामग्री गुजराद्धी शब्दोना इतिहास माटे पण सहायभूत बनशे... दृढ संकल्पबळे आवा कोशनुं परिश्रमसाध्य काम पार पाडवा माटे 'धन्यवाद' शब्द तो घणो मोळो लागे... जयंतभाईए जे नानो छोड उछेर्यो छे तेमांथी आगळ जतां वृक्ष बने एवी आशा अने श्रद्धा आपणे केम न राखीए ?

हरिवल्लभ भायाणी